لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ

قرآن مجید

पवित्र
क़ुरआन
का
हिन्दी अनुवाद

सूर: परिचय और संक्षिप्त टीका सहित

विश्वव्यापी अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत के चतुर्थ ख़लीफ़ा

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब

रहिमहुल्लाहु तआला के

उर्दू अनुवाद का हिन्दी रूपान्तरण

पवित्र क़ुरआन

का

हिन्दी अनुवाद

सूर: परिचय और संक्षिप्त टीका सहित

मूल अनुवाद (उर्दू)	:	**हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब रहिमहुल्लाहु तआला** विश्वव्यापी अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत के चतुर्थ ख़लीफ़ा
उर्दू से हिन्दी	:	क़मरुल हक़ ख़ाँ अतिय्यतुल क़य्यूम नासिरा
प्रकाशक	:	नज़ारत नश्र-व-इशाअत, सदर अंजुमन अहमदिय्या, क़ादियान-143516, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब

PAVITRA QUR'AN
(The Holy Qur'an)

with

Hindi Translation,

Introduction of Chapters & Brief Explanatory Notes

Translated in Urdu	:	**Hadhrat Mirza Tahir Ahmad**(rh) Fourth Khalifa of Ahmadiyya Muslim Jama'at
Urdu to Hindi	:	Qamarul Haque Khan Atiyatul Qayyum Nasira

1st Edition : 2010

2nd Edition : 2014

Copies : 2000

Published by : **Nazarat Nashr-o-Isha'at,**
Sadr Anjuman Ahmadiyya,
Qadian - 143516
Distt. Gurdaspur, Punjab (INDIA)

Printed by : Fazle Umar Printing Press, Qadian

ISBN : 978 81 7912 293 8

क्रम

بسم الله الرحمن الرحيم

प्रकाशकीय

पवित्र क़ुर्आन सार्वभौमिक धर्मविधान है । जो समस्त लोकों के स्रष्टा और प्रतिपालक अल्लाह की वाणी है । जिसके अनुसरण से मानव जीवन पापमुक्त और सफल हो जाता है । इस ईश्वरीय ग्रंथ में मनुष्य की समस्त समस्याओं का सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया गया है और उसे सन्मार्ग पर परिचालित करने तथा पथभ्रष्टता से बचने के लिए नैसर्गिक उपाय बताये गये हैं ।

दिव्यज्योति से परिपूर्ण इस ज्ञानसागर का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद करके इसकी सुधा को संसार के कोने कोने तक पहुँचाने का काम विश्वव्यापी जमाअत अहमदिय्या कर रही है । इससे पूर्व जमाअत के द्वितीय ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब रज़ि. के द्वारा उर्दू भाषा में पवित्र क़ुर्आन का जो अनुवाद किया गया था उसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है जिससे सुधी पाठक लम्बे समय से उपकृत होते रहे हैं । इसके उपरांत जमाअत के चतुर्थ ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब रहि. ने एक नूतन शैली में पवित्र क़ुर्आन का उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया है, जिसमें वर्तमान युग के नये वैज्ञानिक आविष्कारों का पवित्र क़ुर्आन की आयतों से एक अनूठे रंग में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इस महान कृति का हिन्दी रूपान्तरण बहुत दिनों से अपेक्षित था । जिसे पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए सीमातीत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

प्रस्तुत हिन्दी रूपान्तरण जमाअत के वर्तमान ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब की अनुमति से किया गया है । आदरणीया अतिय्यतुल क़य्यूम नासिरा साहिबा ने कुछ भाग का उर्दू से हिन्दी में अनुवाद किया है जिसको मौलवी क़मरुल हक़ ख़ाँ साहब शास्त्री ने बड़ी मेहनत से परिमार्जित करते हुए अवशिष्ट भाग का हिन्दी अनुवाद किया है। प्रस्तुत अनुवाद की समीक्षा मौलवी अताउर रहमान साहब ख़ालिद, मौलवी अली हसन साहब एम.ए. और मौलवी तबरेज़ अहमद साहब दुर्रानी ने की है । अल्लाह तआला इन सभी की मेहनत को क़ुबूल फ़रमाये और इन्हें अपनी अपार कृपा प्रदान करे ।

अल्लाह के निकट हमारी दुआ है कि वह इस अनुवाद को मानवजगत के लिए लाभदायक एवं पथ-प्रदर्शक बनाए । आमीन

प्रकाशक
नाज़िर नश्र व इशाअत
सदर अंजुमन अहमदिय्या, क़ादियान

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला और बार बार दया करने वाला है ।

परिचय

क़ुर्‌आन करीम शाश्वत और सदा जीवंत अल्लाह की पुस्तक है जो महाप्रलय तक मानवजगत की हिदायत और मार्गदर्शन का प्रमाणपत्र है । इसकी जड़ें मनुष्य की प्रकृति में दृढ़ता पूर्वक गड़ी हैं और इसकी शाखें आकाश की ऊँचाइयों को छूती हैं । यह पवित्र वृक्ष हर समय और हर युग में ज्ञान-विज्ञान के ताज़े फल मनुष्य समाज को उपलब्ध कराता है । हिदायत और कृपा के ये ख़ज़ाने मनुष्य समाज की आवश्यकता, मनुष्य की बुद्धि और अनुभूति की क्षमता और ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में उसके ज्ञान के विस्तार और गहराई के आधार पर क़ुर्‌आनी आयत **हम उसे एक निश्चित अनुमान के अनुसार ही उतारते हैं** (अल-हिज्र, आयत 22) के अनुसार, हर युग में दुनिया को प्राप्त होते रहते हैं और क़यामत तक प्राप्त होते रहेंगे ।

अंत्ययुग के धर्माचार्य, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलै. पर अल्लाह तआला ने क़ुर्‌आन करीम के ज्ञान, उसकी गूढ़ता, उसके भेद और रहस्य तथा आध्यात्मिक मर्म इस अधिकता के साथ प्रकट किये हैं कि आप अलै. के लेख और वाणी इस ज्ञान से ओतप्रोत होकर छलक रहे हैं । इन्हीं आकाशीय ज्ञान-सुधाओं से सिंचित होकर वह प्रतिभाएँ उभरी हैं जो जमाअत अहमदिय्या के ख़लीफ़ाओं के द्वारा किये गये क़ुर्‌आन करीम के अनुवाद और व्याख्याओं में स्पष्ट दिखाई देती हैं । तथापि ''हर एक फूल का रंग और सुगंध भिन्न होता है'' जमाअत अहमदिय्या के प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ि. के अनुवाद और व्याख्या की शैली भिन्न है और द्वितीय ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब रज़ि. के अनुवाद और व्याख्या की महत्ता भिन्न है जो आप रज़ि. की अप्रतिम कृति 'तफ़्सीर सग़ीर' और 'तफ़्सीर कबीर' में उजागर है । इसी प्रकार तृतीय ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहब रहि. की व्याख्या के मर्म एक पृथक रंग रखते हैं ।

क़ुर्‌आन मजीद का प्रस्तुत अनुवाद चतुर्थ ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब रहि. के गहन अध्ययन, चिंतन-मनन और वर्षों की अथक मेहनत के फलस्वरूप सामने आया है । इस अनुवाद में अनेक ऐसे कठिन स्थल थे जिन के समाधान के लिये आप

रहि. ने अल्लाह तआला से मार्गदर्शन चाहा और अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से आप को ऐसे अर्थ समझाये जिन से उन कठिनाइयों का समाधान हो गया ।

प्रस्तुत अनुवाद सरल, सुबोध होने के साथ-साथ अपने आप में एक नयापन रखता है । इस में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि अनुवाद क़ुर्आन करीम के मूलपाठ के अनुरूप हो और किसी प्रकार से भी उसका अतिक्रमण न हो। इस प्रकरण में यह सावधानी बरती गई है कि यदि मूलपाठ के किसी शब्द का अनुवाद करते हुए उसका अर्थ स्पष्ट न होता हो तो अनुवाद को समझने के लिये स्पष्टीकरण स्वरूप जो शब्द अनुवाद में जोड़े गये हैं क़ुर्आन करीम की शुद्धता को ध्यान में रख कर उन्हें कोष्ठक में लिखा गया है ताकि पाठक जान लें कि ये मूलपाठ के अनुवाद नहीं हैं बल्कि अनुवादक के अपने शब्द हैं। इस दृष्टि से यह एक प्रकार का शाब्दिक अनुवाद होते हुए सरल, सुगम और प्रचलित मुहावरा के अनुरूप भी है ।

अनेक स्थान पर अरबी भाषा का संयोजक वर्ण **वाव** और **फ़** का अनुवाद छोड़ दिया गया है क्योंकि अरबी भाषा में **वाव** प्रत्येक क्षेत्र में संयोजन का अर्थ नहीं देता बल्कि कई स्थान पर अर्थ पर ज़ोर देने के लिये इसे एक अतिरिक्त वर्ण के रूप में प्रयोग किया जाता है । इसलिए यदि ऐसे स्थल पर **वाव** का अनुवाद **और** किया जाए तो अनुवाद के प्रवाह और निरन्तरता में केवल बाधा ही उत्पन्न नहीं होगी बल्कि पाठक क़ुरआन करीम के माधुर्य से यथोचित आनन्द प्राप्त नहीं कर सकेगा ।

उदाहरण स्वरूप सूर: अज़-ज़ुख़्रुफ़, आयत 22 में अरबी वर्ण **फ़** का अनुवाद छोड़ दिया गया है । क्योंकि वहाँ पर अरबी भाषा में तो **फ़** विषयवस्तु को स्पष्ट कर देता है परन्तु यदि उसके अनुवाद को उर्दू/हिन्दी वाक्य में जोड़ दिया जाए तो वह वाक्य अस्पष्ट हो जाता है । अत: क़ुरआन करीम के प्रति निष्ठा के लिए ऐसे स्थल पर **वाव** या अन्य संयोजक वर्णों का अनुवाद छोड़ दिया जाना आवश्यक था ।

प्रस्तुत अनुवाद में क़ुर्आन करीम के जिन स्थलों का प्रचलित और प्रसिद्ध अर्थ से हट कर अनुवाद किया गया है वहाँ नये अनुवाद के प्रमाण स्वरूप अरबी शब्दकोश तथा अन्यान्य पुस्तकों का संदर्भ उल्लेख किया गया है ।

इन विशषताओं से युक्त यह अनुवाद एक पृथक शैली अपने अंदर रखता है। आधुनिक ज्ञानोद्घाटन की दृष्टि से इस अमरग्रंथ के एक एक शब्द को फिर से समझने की चेष्टा की गई है और जिन स्थलों पर भी अरबी भाषा और उसके व्याकरण ने अनुमति दी वहाँ पूर्ववर्ती अनुवादों को छोड़ कर नये और अनूठे अर्थ अपनाये गये हैं । इस के कुछ उदाहरण निम्नवत् हैं :-

1. सूरः आले इम्रान की आयत संख्या 195 में आयतांश **रब्बना व आतिना मा**

वअत्तना अला रुसुलि क का साधारणतया यह अनुवाद किया जाता है कि ''हे हमारे रब्ब ! हमें वह प्रदान कर जिस का तूने अपने रसूलों के हाथों पर हमारे सम्बन्ध में वादा किया था ।''

अरबी भाषा में **वअ द** शब्द के साथ संबंधवाचक सर्वनाम **अला** प्रयोग होने का संभवतः यह अकेला उदाहरण है । **अला** का अनुवाद शब्दकोश में ''किसी के हाथों पर'' नहीं मिलता । तथापि वास्तविकता यह है कि **अला** के प्रयोग से यह बात स्पष्ट होती है कि रसूलों पर कोई बात अनिवार्य कर दी गई थी जिसका पालन करना उनके अनुयायिओं का दायित्व था और इस दायित्व के पालन में सुस्ती होने पर क़यामत के दिन अपमानित होने का भय था । इन सारी बातों को ध्यान में रखकर, मूलपाठ के शब्दों को देखते हुए यहाँ यह अनुवाद किया गया :-

''हे हमारे रब्ब ! और हमें वह वचन प्रदान कर जो तूने अपने रसूलों पर हमारे पक्ष में अनिवार्य कर दिया था (अर्थात नबियों से ली गई प्रतिज्ञा*)''

2 . आयतांश- **इन्नल्ला ह ला यस्तह्यी ऐं यज़्रि ब मसलम्मा बऊज़तन फ़मा फ़ौ क़हा** (अल-बक़रः, आयत 27) का साधारणतया यह अनुवाद किया जाता है कि ''अल्लाह तआला किसी मच्छर या उससे भी कमतर (जीवधारी) का उदाहरण वर्णन करने से नहीं झिझकता''।

यद्यपि यह अनुवाद भी अरबी भाषा के अनुरूप है, यथापि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहि. ने इस स्थल पर निम्नांकित अनूठा अर्थ किया है :-

''अल्लाह कोई भी उदाहरण प्रस्तुत करने से कदापि नहीं झिझकता, चाहे मच्छर का हो अथवा उसका भी जो उसके ऊपर हो ।''

अर्थात **ऊपर** शब्द का प्रयोग करके उन कीटाणुओं का भी उल्लेख कर दिया जिन्हें मच्छर अपने साथ उठाये फिरता है । इसका विशद विवरण हुज़ूर रहि. की पुस्तक Revelation Rationality, Knowledge and Truth में देखा जा सकता है । यहाँ केवल यह बताना अभिप्राय है कि इस आयत में अपनाया गया अनुवाद क़ुर्आन करीम के मूलपाठ, अरबी भाषा और उसके व्याकरण के अनुरूप होने के साथ-साथ उस अर्थ का भी द्योतक है जिस में प्रकृति के एक गुप्त रहस्य पर से पर्दा उठाया गया है ।

3. स्वर्ग के प्रकरण में क़ुर्आन करीम में सैंकड़ों स्थल पर **तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु** के वाक्य आते हैं । अरबी शब्दों के अनुसार इस वाक्य का साधारणतया यह अनुवाद किया जाता है कि :-

---

* देखिये सूरः आले इम्रान, आयत 82 और सूरः अल-अहज़ाब, आयत 8

''उन (स्वर्गों) के नीचे नहरें बहती हैं''

परंतु इससे पाठकों के मन में यह स्पष्ट नहीं होता कि स्वर्गों (बाग़ों) के नीचे नहरें बहने का क्या अर्थ है? क्या वे भूमिगत नहरें हैं? हालांकि अरबी में **तह्त** शब्द का अनुवाद ''नीचे'' के अतिरिक्त ''निचली ओर'' तथा ''दामन में'' भी हो सकता है। क़ुर्आन करीम में इस अर्थ का एक उदाहरण सूरः मरियम में आता है जिस में हज़रत मरियम अलैहा. को सम्बोधित करके एक फ़रिश्ता कहता है **क़द जअ ल रब्बुकि तह्तकि सरिय्या** फ़िलिस्तीन की पहाड़ी भूमि के परिप्रेक्ष्य में इस आयतांश का यह अर्थ बनता है कि तेरे रब्ब ने तेरी निचली ओर एक स्रोत जारी किया है। अतः हुज़ूर रहि. ने अनुवाद की इस क्लिष्टता को दृष्टि में रखकर **तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु** का अनुवाद ''उन के दामन में नहरें बहती हैं'' किया है।

4. क़ुर्आन करीम में अग्निवृक्ष का कई स्थल पर वर्णन आया है। साधारणतया इस से यह अर्थ समझा जाता है कि वृक्ष लकड़ी उत्पन्न करता है और लकड़ी से अग्नि बनती है जो मनुष्य के लिये एक दैनिक आवश्यक की वस्तु है। परंतु प्रस्तुत अनुवाद में इस का ''वृक्ष (सदृश लपट)''अनुवाद किया गया है। आग अपने आप में गर्मी तो पैदा करती है जिसकी मनुष्य को हर क्षण आवश्यकता रहती है परंतु आग की एक विशेषता यह है कि उस में लपटें बनती हैं। इस प्रकार लपटें उठती हुई आग जहाँ वृक्ष सदृश हो जाती है वहाँ उसकी इस विशेषता के कारण ही आजकल यातायात और मालढुलाई में काम आने वाले यंत्र जैसे जेट इंजन और राकेट इत्यादि काम करते हैं। इस तथ्य को सामने रखकर ही क़ुर्आन करीम की आयतों (सूरः अल वाक़िअः आयत संख्या 72 से 74) का एक नया अर्थ प्रकट होता है कि अग्निवृक्ष यात्रा करने वालों के लिये प्रकृति का एक वरदान है जिस के द्वारा उनकी यात्रा सुखद और तेज़ रफ़तार बन गयी है।

ये कुछ अनुपम विशेषतायें उदाहरण स्वरूप उल्लेख किये गये हैं, अन्यथा प्रस्तुत अनुवाद में अल्लाह की कृपा से पाठकों को असंख्य विशेषतायें दिखेंगी जो वर्तमान समय के प्रचलित अनुवादों में उपलब्ध नहीं हैं। अल्लाह करे कि यह अनुवाद सर्वप्रकारेण जनहितकर सिद्ध हो और इस का वास्तविक उद्देश्य लाभ हो अर्थात् इसे पढ़ने वाला क़ुर्आन करीम के ध्येय और संदेश को समझे तथा अपनी समझ और सामर्थ्य के अनुसार इससे लाभ उठाये। आमीन

***

पवित्र क़ुरआन की सूरः सूची

पवित्र क़ुरआन की पार: सूची

1– सूरः अल–फ़ातिहः

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई थी । कुछ विश्वसनीय वर्णन के अनुसार यह सूरः मदीना में दोबारा अवतरित हुई । बिस्मिल्लाह समेत इसकी 7 आयतें हैं।

यह सूरः क़ुरआन करीम की समग्र विषयवस्तु का सार है । इसी लिए हदीसों में इस का एक नाम **उम्मुल–किताब** (पुस्तक का मूल) है । इसके अतिरिक्त और भी अनेक नाम उल्लेखित हैं । यथा :- **फ़ातिहतुल–किताब** (पुस्तक का उपक्रम), **अस–सलात** (प्रार्थना), **अल–हम्द** (स्तुति), **उम्मुल–क़ुर्आन** (क़ुर्आन का मूल), **अस–सब्उल मसानी** (बार-बार पढ़ी जाने वाली सात आयतें), **अश–शिफ़ा** (आरोग्यकारी), **अल–कन्ज़** (ख़ज़ाना) इत्यादि ।

अल्लाह तआला ने विशेष रूप से हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस सूरः की व्याख्या समझाई । अतः उन्होंने इस सूरः की विशेष रूप से अरबी भाषा में व्याख्या की है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ②

समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो समस्त लोकों का रब्ब है ।2।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ③

अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।3।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ④

कर्मफल दिवस का मालिक है ।4।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ⑤

हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ ही से हम सहायता चाहते हैं ।5।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ⑥

हमें सीधे रास्ते पर चला ।6।

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ⑦

उन लोगों के रास्ते पर जिन्हें तूने पुरस्कृत किया, जिन पर तेरा प्रकोप नहीं हुआ और जो पथभ्रष्ट नहीं हुए ।7। (रुकू 1)

2- सूर: अल-बक़र:

यह सूर: मदीना जाने पर प्रथम और द्वितीय वर्ष में अवतरित हुई थी । बिस्मिल्लाह समेत इसकी 287 आयतें हैं ।

इस सूर: के आरम्भ में ही अल्लाह तआला, वह्इ और ईशवाणी तथा परलोक पर ईमान जैसे मौलिक आस्थाओं का वर्णन है । सूर: अल्-फ़ातिह: में **पुरस्कृत, प्रकोपग्रस्त** और **पथभ्रष्ट** तीन समूहों का उल्लेख किया गया था । सूर: अल्-बक़र: में 'पुरस्कृत' समूह का वर्णन करने के पश्चात् 'प्रकोपग्रस्त' समूह की बुरी-आस्थाओं, कु-कर्मों और दुराचारों का विस्तार से उल्लेख किया गया है ।

यह सूर: एक आश्चर्यजनक चमत्कार है, जिसने सृष्टि के आरम्भ के वर्णन से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वर्णन तक विभिन्न नबियों की घटनाओं को प्रस्तुत किया है और क़यामत तक के लिए इस्लाम के लिए जो ख़तरे हैं, उनको भी चिह्नित किया है । हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के वर्णन के पश्चात विभिन्न महान धर्मों के रसूलों का वर्णन किया गया है, जिन में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी हैं । इस सूर: को पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि मानो शरीअत (धर्म-विधान) पूर्णत: अवतरित हो चुकी है और इस्लामी शरीअत का कोई पहलू बाकी छूटा हुआ नहीं दिखता । यद्यपि बाद की सूरतों में कुछ और पहलू भी मिलते हैं, परन्तु अपने आप में यह सूर: प्रत्येक विषय पर व्यापित दिखाई देती है । हदीस में वर्णित है कि, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, प्रत्येक वस्तु का एक शीर्ष भाग होता है और क़ुरआन का शीर्ष भाग सूर: अल् बक़र: है । इस में एक ऐसी आयत है जो क़ुरआन की सभी आयतों की सरदार है और वह **आयतुल्-कुर्सी** है । अत: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह विशेष महिमा है कि उन को यह सूर: प्रदान की गई । इस में नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज्ज के विषय भी वर्णित हैं । हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की उन दुआओं का विशेष रूप से उल्लेख है जो ख़ाना का'बा के नव निर्माण के समय उन्होंने कीं ।

इसी सूर: में उस प्रतिज्ञा का भी वर्णन है जिसे अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल के साथ बाँधी थी, जिसे दुर्भाग्यवश उन्होंने तोड़ दिया और फिर यही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आविर्भाव का कारण सिद्ध हुई । इस सूर: के अंत पर एक ऐसी आयत है जिस से यूँ प्रतीत होता है कि प्रत्येक प्रकार की दुआओं का सार भी इस में आ गया है और मानो दुआओं का एक अन्तहीन खज़ाना प्रदान कर दिया गया है ।

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَتَانِ وَ سَبْعٌ وَّ ثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّ اَرْبَعُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓمّٓ ②

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सब से अधिक जानने वाला हूँ ।2।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ③

यह ''वह'' पुस्तक है । इसमें कोई संदेह नहीं । (यह) मुत्तक़ियों को हिदायत देने वाली है ।3।

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ④

जो लोग अदृश्य पर ईमान लाते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं तथा जो कुछ हम उन्हें जीविका देते हैं, उस में से खर्च करते हैं ।4।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ⑤

और वे लोग जो उस पर ईमान लाते हैं जो तेरी ओर उतारा गया और उस पर जो तुझ से पूर्व उतारा गया, और वे परलोक पर विश्वास रखते हैं।5।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑥

यही वे लोग हैं जो अपने रब्ब की ओर से हिदायत पर क़ायम हैं और यही वे हैं जो सफल होने वाले हैं ।6।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑦

नि:सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया (इस अवस्था में) चाहे तू उन्हें सतर्क करे या न करे, उनके लिए एक समान है । वे ईमान नहीं लाएँगे ।7।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَ عَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَ عَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑧

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उनकी श्रवणशक्ति पर भी मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर पर्दा है और उनके लिए बड़ा अज़ाब (निश्चित) है।8। (रुकू $\frac{1}{1}$)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٩

और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और अन्तिम दिन पर भी ईमान ले आए, हालाँकि वे ईमान लाने वाले नहीं हैं ।9।

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝١٠

वे अल्लाह को और उन लोगों को जो ईमान लाए, धोखा देने की चेष्टा करते हैं । जबकि वे अपने सिवा किसी अन्य को धोखा नहीं देते, और वे समझ नहीं रखते ।10।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝١١

उनके दिलों में बीमारी है । अतः अल्लाह ने उनको बीमारी में बढ़ा दिया। और उनके लिए बहुत पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है, क्योंकि वे झूठ बोलते थे।11।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝١٢

और जब उन्हें कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो वे कहते हैं हम तो केवल सुधार करने वाले हैं ।12।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝١٣

सावधान ! निश्चित रूप से वही उपद्रवी हैं, परन्तु वे समझ नहीं रखते ।13।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ۗ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝١٤

और जब उन्हें कहा जाता है, ईमान ले आओ जैसा कि लोग ईमान ले आए हैं । कहते हैं, क्या हम ईमान ले आएँ जैसे मूर्ख ईमान लाए हैं ? सावधान ! वे स्वयं ही तो मूर्ख हैं । परन्तु वे जानते नहीं ।14।

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ

और जब वे उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं, हम भी ईमान ले आए और जब अपने शैतानों की ओर पृथक होकर जाते हैं तो कहते हैं, निश्चित रूप से हम तुम्हारे साथ हैं ।

اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۵﴾

हम तो (उन से) केवल उपहास कर रहे थे ।15।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَ يَمُدُّهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۶﴾

अल्लाह उनके उपहास का (अवश्य) उत्तर देगा । और उन्हें कुछ समय तक ढील देगा ताकि वे अपनी उद्दण्डता में भटकते रहें ।16।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۷﴾

यही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले पथभ्रष्टता को खरीद लिया । अतः उनका व्यापार लाभजनक नहीं हुआ और वे हिदायत पाने वाले न हो सके ।17।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۸﴾

उनका उदाहरण उस व्यक्ति की अवस्था के अनुरूप है जिस ने आग भड़काई । फिर जब उस (आग) ने उस के माहौल को आलोकित कर दिया, अल्लाह उन (भड़काने वालों) की ज्योति को ले गया और उन्हें अन्धकारों में छोड़ दिया कि वे कुछ देख नहीं सकते थे ।18।

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۹﴾

वे बहरे हैं, वे गूँगे हैं, वे अन्धे हैं । अतः वे (हिदायत की ओर) नहीं लौटेंगे ।19।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۰﴾

अथवा (उनका उदाहरण) उस वर्षा की भाँति है जो आकाश से बरसती है। उसमें अंधेरे भी हैं और कड़क भी और बिजली भी । वे बिजली के कड़कों के कारण, मृत्यु के भय से अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लेते हैं । और अल्लाह काफ़िरों को घेरे में लिए हुए है ।20।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ۗ كُلَّمَآ

सम्भव है कि बिजली उनकी दृष्टिशक्ति को उचक ले जाये । जब कभी वह उन (को राह दिखाने) के लिए चमकती है, वे

اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢١﴾

उसमें (कुछ) चलते हैं । और जब वह उन पर अन्धेरा कर देती है तो रुक जाते हैं। और यदि अल्लाह चाहे तो उनकी श्रवणशक्ति को और उनकी दृष्टिशक्ति को भी ले जाए । नि:सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।21। (रुकू $\frac{2}{2}$)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ﴿٢٢﴾

हे लोगो ! तुम अपने रब्ब की उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उनको भी जो तुमसे पहले थे । ताकि तुम तक़वा अपनाओ ।22।

الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۖ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣﴾

जिसने धरती को तुम्हारे लिए बिछौना और आकाश को (तुम्हारे अस्तित्व का) आधार बनाया और आकाश से पानी उतारा और उसके द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल तुम्हारे लिए जीविका-स्वरूप उत्पन्न किए । अत: जानते बूझते हुए अल्लाह के साझीदार न बनाओ ।23।

وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۖ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٤﴾

और यदि तुम इस के बारे में संदेह में हो जो हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो इस जैसी कोई सूर: ला कर दिखाओ और अपने संरक्षकों को भी बुला लाओ जो अल्लाह के सिवा (तुम ने बना रखे) हैं, यदि तुम सच्चे हो ।24।*

* क़ुरआन करीम में कई स्थान पर क़ुरआन की केवल एक सूर: का उदाहरण लाने की चुनौती दी गई है और कुछ स्थान पर दस सूरतों का और कुछ स्थानों पर पूरे क़ुरआन का उदाहरण प्रस्तुत करने की चुनौती दी गई है । जहाँ तक एक सूर: का उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रश्न है इससे अभिप्राय सूर: अल्-बक़र: भी हो सकती है । इस से यूँ लगता है कि मानो सारे क़ुरआन के विषय इस सूर: में वर्णन कर दिये गये हैं । जहाँ दस सूरतों का वर्णन है, तो उससे अभिप्राय यह है कि क़ुरआन की कोई भी दस सूरतें कहीं से भी इकट्ठी कर लें, चाहे अन्तिम भाग की छोटी सूरतें हों या बड़ी, उनके उदाहरण प्रस्तुत करने से मनुष्य सर्वथा असमर्थ रहेगा । पूरे क़ुरआन के उदाहरण लाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता ।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝٢٥

अतः यदि तुम ऐसा न कर सको और कदापि न कर सकोगे, तो उस आग से डरो जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं । वह काफ़िरों के लिए तैयार की गई है ।25।

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٦

और जो लोग ईमान लाए और सत्-कर्म किए, उन्हें शुभ-समाचार दे दे कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं । जब भी उन्हें उन (बाग़ों) में से कोई फल जीविका स्वरूप दिया जाएगा, तो वे कहेंगे यह तो वही है जो हमें पहले भी दिया जा चुका है । हालाँकि इस से पूर्व उनके निकट केवल उससे मिलती-जुलती (जीविका) लाई गयी थी और उनके लिए उन (बाग़ों) में पवित्र बनाये हुए जोड़े होंगे और वे उनमें सदा रहने वाले हैं ।26।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ

अल्लाह कोई भी उदाहरण प्रस्तुत करने से कदापि नहीं झिझकता, चाहे मच्छर का हो अथवा उस का भी जो उस के ऊपर हो । अतः जहाँ तक ईमान लाने वालों का सम्बन्ध है तो वे जानते हैं कि यह उनके रब्ब की ओर से सत्य है । और जहाँ तक इनकार करने वालों का सम्बन्ध है, तो वे कहते हैं, (आख़िर) इस उदाहरण को प्रस्तुत करने से अल्लाह का उद्देश्य क्या है? वह इस (उदाहरण) के द्वारा अनेकों को पथभ्रष्ट ठहराता है और अनेकों को हिदायत देता है और वह इसके द्वारा

كَثِيْرًا ۭ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۷﴾

दुराचारियों के अतिरिक्त किसी को पथभ्रष्ट नहीं ठहराता ।27।*

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۲۸﴾

अर्थात् वे लोग जो अल्लाह से दृढ़ प्रतिज्ञा करने के पश्चात् उसे तोड़ देते हैं और उन (सम्बन्धों) को काट देते हैं जिनको जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है और धरती में उपद्रव फैलाते हैं । यही वे लोग हैं जो घाटा पाने वाले हैं ।28।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۹﴾

तुम किस प्रकार अल्लाह का इनकार करते हो ? जबकि तुम मृत थे, फिर उसने तुम्हें जीवित किया । वह फिर तुम्हें मारेगा और फिर तुम्हें जीवित करेगा । फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे ।29।

ھُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۤ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَاۗءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ۭ وَھُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۳۰﴾ ع

वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो धरती में है । फिर उस ने आकाश की ओर ध्यान दिया और उसे सात आकाशों के रूप में संतुलित कर दिया और वह प्रत्येक विषय का स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।30।

(रुकू $\frac{3}{3}$)

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ۭ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاۗءَ ۚ

और (याद रख) जब तेरे रब्ब ने फ़रिश्तों से कहा कि निश्चित रूप से मैं धरती में एक उत्तराधिकारी बनाने वाला हूँ । उन्होंने कहा, क्या तू उसमें वह बनाएगा जो उसमें उपद्रव करे और रक्तपात करे ? जबकि हम तेरी प्रशंसा

---

* **जो उसके ऊपर हो** से अभिप्राय मच्छर जो वस्तु उठाये हुए है, जो उसके ऊपर है अर्थात मलेरिया के जीवाणु हैं । संसार में सर्वाधिक लोग मलेरिया और मलेरिया जनित बीमारियों से मरते हैं। ''अल्लाह नहीं झिझकता'' से यह अभिप्राय है कि इस अवसर पर झिझकने की कदापि कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह बहुत ही श्रेष्ठ उदाहरण है ।

وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ
قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۱﴾

के साथ गुणगान करते हैं और हम तेरी पवित्रता का बखान करते हैं । उसने कहा, नि:सन्देह मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ।31।

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ
عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ
هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۲﴾

और उस ने आदम को सब नाम सिखाए, फिर उन (पैदा की हुई चीज़ों) को फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा, यदि तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बतलाओ ।32।*

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا
عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۳﴾

उन्होंने कहा, तू पवित्र है । जो तू हमें सिखाये उस के सिवा हमें किसी बात का कोई ज्ञान नहीं । नि:सन्देह तू ही है जो स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।33।

قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ
فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ
اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ
وَ الْاَرْضِ ۙ وَ اَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ
وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۴﴾

उस ने कहा, हे आदम ! तू इनको उनके नाम बता । अत: जब उसने उन्हें उनके नाम बताए तो उसने कहा, क्या मैंने तुम्हें नहीं कहा था कि निश्चित रूप से मैं ही आकाशों और धरती के अदृश्य (विषय) को जानता हूँ और मैं उसे (भी) जानता हूँ जो तुम प्रकट करते हो और उसे (भी जानता हूँ) जो तुम छिपाते हो ।34।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के लिए सजदः करो तो इब्लीस के

---

* यहाँ **नाम** शब्द से अभिप्राय कई बातें हो सकती हैं । जैसे 1. पदार्थों के भेद (देखें पुस्तक **सिर्रुल ख़िलाफ़ः**) । 2. अरबी भाषा की संज्ञाएँ (देखें पुस्तक **मिननु–र्रहमान**) । 3. वे गुण जो फ़रिश्तों में नहीं थे । 4. उन नबियों के नाम जो आदम के वंश में पैदा होने वाले थे । जिनका फ़रिश्तों को कुछ भी ज्ञान नहीं था और आदम ने जब उन नबियों का नाम लिया तो वे चकित हो गये । नबियों के आगमन के परिणामस्वरूप रक्तपात का विषय सत्य सिद्ध होता है परन्तु भिन्न प्रकार से । फ़रिश्तों को यह तो अनुमान था कि यदि अल्लाह के प्रतिनिधि (नबी) का आगमन हुआ तो धरती में रक्तपात होगा, परन्तु उन्हें यह जानकारी नहीं थी कि इस में नबियों का दोष नहीं होगा, बल्कि नबियों के विरोधियों का दोष होगा ।

فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ ٭ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۵﴾

सिवा वे सब सजदः में गिर गये । उस ने इनकार किया और अहंकार किया और वह काफ़िरों में से था ।35।

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۶﴾

और हमने कहा, हे आदम ! तू और तेरी स्त्री स्वर्ग में रहो और तुम दोनों उसमें जहाँ चाहो भरपूर खाओ, परन्तु उस विशेष वृक्ष के निकट न जाना, अन्यथा तुम दोनों अत्याचारियों में से हो जाओगे ।36।*

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۳۷﴾

अतः शैतान ने उन दोनों को उस (वृक्ष) के विषय में फ़ुसला दिया, फिर उन्हें उस से निकाल दिया, जिस में वे पहले थे । और हम ने कहा, तुम निकल जाओ (इस अवस्था में) कि तुम में से कुछ, कुछ और के शत्रु होंगे और तुम्हारे लिए (इस) धरती में एक अवधि तक रहना और लाभ उठाना (निश्चित) है ।37।

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۳۸﴾

फिर आदम ने अपने रब्ब से कुछ वाक्य सीखे । अतः वह प्रायश्चित स्वीकार करते हुए उस पर झुका । निःसन्देह वही बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।38।

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَایَ فَلَا خَوْفٌ

हम ने कहा, तुम सबके सब इसमें से निकल जाओ । अतः जब कभी भी तुम्हारे निकट मेरी ओर से हिदायत

---

* यहाँ **वृक्ष** से अभिप्राय वह धर्मादेश हैं जो निषेधात्मक विषयों से सम्बन्धित हैं । यदि उन नियमों को तोड़ा जाये तो फिर संसार में मनुष्य के लिए शांति उठ जाती है । इस आयत में दो व्यक्तियों को सम्बोधित किया गया है, परन्तु इससे यह अभिप्राय नहीं है कि केवल आदम और हव्वा स्वर्ग में रहते थे, क्योंकि आगे की आयतों में **तुम सब के सब इस में से निकल जाओ** इस बात को प्रकट करता है कि वहाँ आदम के और भी वंशज थे ।

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٣٩

आयी तो जिन्होंने मेरी हिदायत का अनुसरण किया, उन को कोई भय नहीं होगा और न ही वे दु:खी होंगे।39।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٤٠ ع

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारे चिह्नों को झुठलाया, वही हैं जो आग में पड़ने वाले हैं । वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।40।

(रुकू $\frac{4}{4}$)

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ
اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ
بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۝٤١

हे बनी इस्राईल ! उस नेमत को याद करो जो मैं ने तुम पर की और मेरी प्रतिज्ञा को पूरा करो, मैं भी तुम्हारी प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा और केवल मुझ ही से डरो ।41।

وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ
وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا
بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ۝٤٢

और उस पर ईमान ले आओ, जो मैंने उसकी पुष्टि करते हुए उतारा है जो तुम्हारे निकट है । और उसका इनकार करने में पहल न करो और मेरे चिह्नों के बदले अल्प मूल्य ग्रहण न करो और केवल मेरा ही तक़वा अपनाओ ।42।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا
الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤٣

और सत्य को असत्य के साथ गड्ड-मड्ड न करो और सत्य को न छिपाओ जबकि तुम जानते हो ।43।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا
مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝٤٤

और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ ।44।

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ
اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۭ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٤٥

क्या तुम लोगों को नेकी का आदेश देते हो और स्वयं अपने आप को भूल जाते हो, जबकि तुम पुस्तक भी पढ़ते हो । आख़िर तुम क्यों बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।45।

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ وَ اِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۝۴۶ۙ

और धैर्य और नमाज़ के साथ सहायता माँगो और निश्चित रूप से यह (काम) विनम्रता अपनाने वालों के सिवा सब के लिए भारी है ।46।

الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝۴۷ ع

(अर्थात) वे लोग जो विश्वास रखते हैं कि वे अपने रब्ब से मिलने वाले हैं और यह भी कि वे उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं ।47। (रुकू $\frac{5}{5}$)

يٰبَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝۴۸

हे बनी इस्राईल ! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की और यह भी कि मैंने तुम्हें समग्र जगत पर प्रधानता दी ।48।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـــًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝۴۹

और उस दिन से डरो जब कोई जान किसी दूसरी जान के कोई काम नहीं आएगी और न उससे (उसके पक्ष में) कोई सिफ़ारिश स्वीकार की जाएगी और न उससे कोई बदला ग्रहण किया जाएगा और न उन (लोगों) की किसी प्रकार सहायता की जाएगी ।49।

وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَاۗءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝۵۰

और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िर्औन की जाति से मुक्ति प्रदान की, जो तुम्हें कठोर यातना देते थे। वे तुम्हारे पुत्रों की हत्या कर देते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और इसमें तुम्हारे लिए तुम्हारे रब्ब की ओर से बहुत बड़ी परीक्षा थी ।50।

وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝۵۱

और जब हम ने तुम्हारे लिए समुद्र को फाड़ दिया और तुम्हें मुक्ति दी, जबकि हमने फ़िरऔन की जाति को डुबो दिया और तुम देख रहे थे ।51।

وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝٥٢

और जब हमने मूसा से चालीस रातों का वादा किया। फिर उसके (जाने के) बाद तुम बछड़े को (उपास्य) बना बैठे और तुम अत्याचार करने वाले थे।52।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٥٣

फिर इसके बावजूद हमने तुम को क्षमा कर दिया ताकि संभवतः तुम कृतज्ञता प्रकट करो।53।

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝٥٤

और जब हम ने मूसा को पुस्तक और फ़ुर्क़ान (सत्य और असत्य का भेद-ज्ञान) प्रदान किया ताकि संभवतः तुम हिदायत पा जाओ।54।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِىِٕكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىِٕكُمْ ۭ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝٥٥

और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा, हे मेरी जाति ! तुमने बछड़े को (उपास्य) बनाकर निःसन्देह अपनी जानों पर अत्याचार किया। अतः प्रायश्चित करते हुए अपने पैदा करने वाले की ओर लौ लगाओ और अपनी जानों की हत्या करो। यह तुम्हारे पैदा करने वाले के निकट तुम्हारे लिए अत्युत्तम है। अतः वह प्रायश्चित स्वीकार करते हुए तुम पर दयावान हुआ। निःसन्देह वही बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला है (और) बार-बार दया करने वाला है।55।*

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ

और जब तुम ने कहा कि हे मूसा ! हम कदापि तुम्हारी नहीं मानेंगे, जब तक कि हम अल्लाह को प्रत्यक्ष रूप से देख न

---

* यहाँ **अपनी जानों की हत्या करने** से यह अर्थ नहीं कि परस्पर एक दूसरे की हत्या शुरू कर दो, जैसा कि साधारणतः विद्वान यही समझते हैं। वस्तुतः इसका अर्थ यह है कि अपने पापों के प्रति प्रायश्चित करो और अपने तामसिक आवेगों का दमन करो।

وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝٥٦

लें । अतः तुम्हें आकाशीय बिजली ने आ पकड़ा और तुम देखते रह गये ।56।

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ۝٥٧

फिर हमने तुम्हारी मृत्यु (की सी अवस्था) के पश्चात तुम्हें उठाया ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ।57।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ
الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا
رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٥٨

और हमने तुम पर बादलों की छाया बनाई और तुम पर हमने मन्न और सल्वा उतारे । जो जीविका हमने तुम्हें दी है उसमें से पवित्र वस्तु खाओ । और उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया, बल्कि वे स्वयं अपने ऊपर ही अत्याचार करने वाले थे ।58।

وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا
حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٩

और जब हमने कहा कि इस बस्ती में प्रवेश करो और इसमें से जहाँ से भी चाहो भरपूर खाओ और (मुख्य) द्वार में आज्ञापालन करते हुए प्रवेश करो और कहो कि बोझ हल्के किए जायें । हम तुम्हारे अपराधों को क्षमा कर देंगे और उपकार करने वालों को हम अवश्य और भी अधिक देंगे ।59।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ
لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا
مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٦٠ ع

अतः जिन लोगों ने अत्याचार किया, उन्होंने उस बात को जो उन्हें कही गई थी, किसी और बात में बदल दिया । अतः हमने अत्याचार करने वालों पर आकाश से एक अज़ाब उतारा, क्योंकि वे अवज्ञा करते थे ।60। (रुकू 6/6)

وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا
اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

और जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी माँगा तो हमने कहा कि चट्टान पर अपनी लाठी मारो । तब उस में से बारह स्रोत फूट पड़े और सब लोगों ने अपने अपने पानी पीने के स्थान को जान

مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٦١﴾

लिया। (हमने कहा) अल्लाह प्रदत्त जीविका में से खाओ और पियो तथा धरती में उपद्रवी बनकर अशांति न फैलाओ ।61।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦٢﴾ ع

और जब तुमने कहा हे मूसा ! हम एक ही भोजन पर कदापि धैर्य नहीं रख सकेंगे । अतः हमारे लिए अपने रब्ब से दुआ कर कि वह हमारे लिए ऐसी चीज़ें निकाले जो धरती उगाती है, जैसे सब्ज़ियाँ और ककड़ियाँ और गेहूँ और दालें और प्याज़ । उसने कहा, क्या तुम न्यून वस्तु को लेना चाहते हो उत्तम के बदले ? तुम किसी शहर में प्रवेश करो, निश्चित रूप से तुम्हें वह मिल जाएगा जो तुमने माँगा है । और उन पर अपमान और गरीबी की मार डाली गई और वे अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटे । यह इसलिए हुआ क्योंकि वे अल्लाह के चिह्नों का इनकार किया करते थे और नबियों की अन्यायपूर्वक हत्या करते थे । (हाँ) यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अवज्ञा की और वे सीमा का उल्लंघन किया करते थे ।62।

(रुकू $\frac{7}{7}$)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाये और वे जो यहूदी और ईसाई और अन्य ईश-ग्रंथों को मानने वाले हैं, जो भी अल्लाह पर और परकालीन दिवस पर ईमान लाये और नेक-कर्म करे, उन सब के लिए उन का प्रतिफल उनके रब्ब के निकट है और

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٣﴾

उन्हें कोई भय नहीं और न वे दुःखित होंगे |63|*

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٤﴾

और जब हमने (तुम से) तुम्हारी दृढ़ प्रतिज्ञा ली और तूर (पर्वत) को तुम पर ऊँचा किया । (और कहा) जो हमने तुम्हें दिया है, उसे दृढ़तापूर्वक पकड़ लो और जो उसमें है उसे याद रखो ताकि तुम (तबाही) से बच सको |64|**

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾

फिर इसके बाद भी तुम पलट गये । अतः यदि अल्लाह की (विशेष) कृपा और उसकी दया तुम पर न होती तो तुम अवश्य घाटा उठाने वालों में से हो जाते |65|

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِى السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٦﴾ ۚ

और निःसन्देह तुम उन लोगों को जान चुके हो जिन्होंने तुम में से सब्त के विषय में उल्लंघन किया तो हम ने उन से कहा कि नीच बंदर बन जाओ |66|***

---

* यह आयत और इससे मिलती जुलती अन्य आयतें क़ुरआन करीम के न्याय के उत्कृष्ट उदाहरण हैं । इस में कोई सन्देह नहीं है कि मुक्ति सर्वप्रथम उन्हीं को मिलेगी जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सच्चा ईमान लायें । परन्तु ऐसे अनेक लोग हो सकते हैं जिन तक इस्लाम का वास्तविक संदेश न पहुँचा हो । बल्कि दुनिया में अरबों लोग ऐसे हैं जिन तक इस्लाम का संदेश नहीं पहुँचा । इसलिए क़ुरआन करीम घोषणा करता है कि यदि ऐसे लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते हों और यह विश्वास रखते हों कि मरने के बाद हम उठाये और पूछे जाएँगे, तो यदि वे अपने ईश्वरीय धर्म-विधान पर चलें जो उन पर उतरा और जिसका उन्हें ज्ञान है, तो जो नेकियाँ वे अल्लाह के लिए करेंगे उन्हें उन का उत्तम प्रतिफल दिया जाएगा और उन्हें कोई शोक और दुःख नहीं होगा ।

** इस आयत में **और हमने तुम पर तूर पर्वत को ऊँचा किया** वाक्य से कुछ भाष्यकारों का यह विचार है कि तूर पर्वत को धरती से उखाड़ कर ऊँचा कर दिया गया था । हालाँकि इसका अर्थ केवल यह है कि वे उस समय तूर पर्वत की छाया के नीचे थे । कई स्थान पर पहाड़ कुछ आगे को बढ़ा हुआ होता है और निकट से गुज़रने वालों को यूँ लगता है कि जैसे वह उन पर झुका हुआ हो । कई बार ऐसे पहाड़ों की छाया के नीचे एक समूची सेना आ सकती है ।

*** यहाँ **नीच बंदर** से अभिप्राय वास्तविक बंदर नहीं । बल्कि बिगड़े हुए उलेमा हैं जिन को अपनी पूर्वावस्था की ओर लौट जाने का आदेश दिया गया है । डारविन के सिद्धान्त में वर्णन किया गया है कि मनुष्य पहले बंदर था । अतः यह भी क़ुरआन की सच्चाई का एक प्रमाण है कि मनुष्य से पूर्व→

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾

अतः हमने उस (सब्त के अपमान) को उस की पृष्ठभूमि और भावी (अवमाननाओं) के कारण पकड़ का आधार बना दिया तथा मुत्तक़ियों के लिए एक बड़ा उपदेश (बनाया) ।67।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٨﴾

और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि निश्चित रूप से अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम एक (विशिष्ट) गाय को ज़िबह करो । उन्होंने कहा, क्या तू हमें उपहास का पात्र बना रहा है ? उसने कहा कि मैं इस बात से अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मैं मूर्खों में से बन जाऊँ ।68।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٩﴾

उन्होंने कहा, अपने रब्ब से हमारे लिए दुआ कर कि वह हमारे लिए स्पष्ट कर दे कि वह क्या है ? उसने कहा, निश्चित रूप से वह कहता है कि वह एक गाय है, (जो) न बहुत बूढ़ी और न बहुत कम आयु, (बल्कि) इस के बीच-बीच मध्यम आयु की है । अतः वही करो जो तुम्हें आदेश दिया जाता है ।69।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ

उन्होंने कहा, अपने रब्ब से हमारे लिए दुआ कर कि वह हमारे लिए स्पष्ट कर दे कि उसका रंग क्या है ? उस ने कहा, निश्चित रूप से वह कहता है कि वह अवश्य एक पीले रंग की गाय है जिसका

←की अवस्था को बंदर के रूप में प्रकट किया गया । निश्चित रूप से इससे अभिप्राय बिगड़े हुए उलेमा हैं । अतएव हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी यही भविष्यवाणी की है कि **मेरे अनुगामियों में एक घबराहट और बेचैनी उत्पन्न होगी, जिस पर लोग अपने उलेमाओं की ओर जाएँगे तो देखेंगे कि वहाँ तो बंदर और सूअर बैठे हैं ।** ('कंज़-उल्-उम्माल' भाग 16, पृष्ठ 80 हदीस संख्या 387227 प्रकाशक, मु'सिसतुर्रिसालः, बैरूत 1985 ई.)

فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

रंग बहुत गहरा है। वह देखने वालों को प्रसन्न कर देती है ।70।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧١﴾

उन्होंने कहा, अपने रब्ब से हमारे लिए दुआ कर कि वह हम पर (और अधिक) स्पष्ट करे कि वह क्या है ? निश्चित रूप से सब गायें हमारे लिए संदिग्ध हो गई हैं । और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम अवश्य हिदायत पाने वाले हैं ।71।

قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٢﴾ ع

उसने कहा, निःसन्देह वह कहता है कि वह अवश्य एक ऐसी गाय है जो धरती में हल चलाने के उद्देश्य से जोती नहीं गई और न वह खेतों की सिंचाई करती है । वह सही-सलामत है । उसमें कोई दाग़ नहीं है । उन्होंने कहा कि अब तू सच्ची बात लाया है । अतः उन्होंने उसे ज़िबह कर दिया । जबकि वे (पहले ऐसा) करने वाले न थे ।72। (रुकू $\frac{8}{8}$)

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٣﴾

और जब तुम ने एक जान का वध किया और फिर उसके बारे में मतभेद किया, और अल्लाह ने उस भेद को प्रकट करना ही था जिसे तुम छिपाये हुए थे ।73।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٤﴾

अतः हमने कहा, (खोज लगाने के उद्देश्य से) इस जैसी दूसरी घटना पर इस (घटना) को मिला कर देखो । इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को (उनके हत्यारों की पकड़ करके) जीवित करता है और तुम्हें अपने चिह्न दिखाता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो ।74।*

* भाष्यकारों ने इस आयत का भी गलत अर्थ निकाला है । अर्थात यदि किसी व्यक्ति की हत्या की गयी हो तो उस ज़िबह की हुई गाय के माँस के टुकड़ों को उस मृत व्यक्ति के शरीर पर मारो इससे ज्ञात हो जायेगा कि हत्यारा कौन है । (तफ़सीर फ़तहुल-बयान) हालाँकि यहाँ सुस्पष्ट रूप से क़ुरआन→

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ
كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ
الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ
مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ
مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٥﴾

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल कठोर हो गये । मानो वे पत्थरों की भाँति थे अथवा फिर उससे भी बढ़कर कठोर । जबकि पत्थरों में से भी निश्चित रूप से कुछ ऐसे होते हैं कि उन से नहरें फूट पड़ती हैं और निश्चित रूप से उन में से ऐसे भी हैं कि जो फट जायें तो उन में से पानी निकलता है । फिर उनमें ऐसे भी अवश्य हैं जो अल्लाह के भय से गिर पड़ते हैं । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं है ।75।

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ
فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ
يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ
يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٦﴾

क्या तुम यह आशा लगाए बैठे हो कि वे लोग तुम्हारी बात मान जाएँगे ? जबकि उन में से एक गिरोह अल्लाह की वाणी को सुनता है और उसे अच्छी प्रकार समझने के बावजूद उसमें उलट-फेर करता है और वे भली भाँति जानते हैं ।76।

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ
وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا
اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ
لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٧﴾

और जब वे उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाये, तो कहते हैं कि हम भी ईमान ले आये । और जब उनमें से कई, कुछ दूसरों की ओर अलग हो जाते हैं तो वे (उनसे) कहते हैं कि क्या तुम उन को वह बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर प्रकट की हैं ताकि इन्हीं बातों के द्वारा वे तुम्हारे रब्ब के समक्ष तुम से झगड़ा करें । अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ।77।

←करीम कहता है कि जिसकी हत्या हुई है, उसकी हालतों पर ध्यान देते हुए उस जैसी और घटनाओं की जाँच पड़ताल करो कि यह काम कौन कर सकता है ? क्योंकि साधारणतया हत्यारे का हत्या करने का ढंग एक ही होता है । आजकल की जासूसी दुनिया इस बात पर बहुत अधिक निर्भर करती है ।

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝٧٨

क्या वे नहीं जानते कि जो वे छिपाते हैं और जो वे प्रकट करते हैं (उसे) अल्लाह निश्चित रूप से जानता है ।78।

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝٧٩

और उनमें ऐसे अज्ञान भी हैं जो (अपनी) इच्छाओं के अतिरिक्त पुस्तक का कोई ज्ञान नहीं रखते और वे केवल अनुमान लगाते हैं ।79।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۖ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ۝٨٠

अत: उनके लिए सर्वनाश है जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है ताकि वे उसके बदले कुछ थोड़ा सा मूल्य प्राप्त कर लें । अत: जो उनके हाथों ने लिखा उसके परिणाम स्वरूप उनके लिए सर्वनाश है और जो वे कमाते हैं, उसके कारण उनके लिए सर्वनाश है ।80।

وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ۗ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨١

और वे कहते हैं, कुछ गिनती के दिनों के अतिरिक्त हमें आग कदापि नहीं छूएगी। तू कह दे, क्या तुमने अल्लाह से कोई वचन ले रखा है ? अत: अल्लाह कदापि अपने वचन को भंग नहीं करेगा अथवा तुम अल्लाह की ओर ऐसी बातें सम्बन्धित करते हो जिनकी तुम्हें कोई जानकारी नहीं ।81।

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٨٢

वास्तविकता यह है कि जिस ने भी बुराई अर्जित की, यहाँ तक कि उसके अपराधों ने उसको घेरे में ले लिया हो तो यही लोग ही आग वाले हैं । वे उसमें एक लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।82।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, यही लोग स्वर्ग वाले हैं । वे

اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۸۲﴾ ع

उसमें सदा रहने वाले हैं ।83।

(रुकू $\frac{9}{9}$)

وَاِذۡ اَخَذۡنَا مِيۡثَاقَ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ لَا تَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا اللّٰهَ وَبِالۡوَالِدَيۡنِ اِحۡسَانًا وَّذِى الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَقُوۡلُوۡا لِلنَّاسِ حُسۡنًا وَّاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّيۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا مِّنۡكُمۡ وَاَنۡتُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿۸۳﴾

और जब हमने बनी-इस्राईल से दृढ़ प्रतिज्ञा ली कि अल्लाह के सिवा किसी की उपासना नहीं करोगे और माता-पिता से और निकट सम्बन्धियों से और अनाथों से और दरिद्रों से भी दयापूर्ण व्यवहार करोगे । और लोगों से अच्छी बात कहा करो और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो । इसके बावजूद तुम में से कुछ के सिवा तुम सब (इस प्रतिज्ञा से) पीछे हट गये और तुम मुँह फेरने वाले थे ।84।

وَاِذۡ اَخَذۡنَا مِيۡثَاقَكُمۡ لَا تَسۡفِكُوۡنَ دِمَآءَكُمۡ وَلَا تُخۡرِجُوۡنَ اَنۡفُسَكُمۡ مِّنۡ دِيَارِكُمۡ ثُمَّ اَقۡرَرۡتُمۡ وَاَنۡتُمۡ تَشۡهَدُوۡنَ ﴿۸۴﴾

और जब हमने तुम से प्रतिज्ञा ली कि तुम (परस्पर) अपना रक्त नहीं बहाओगे और अपने ही लोगों को अपनी आबादी से नहीं निकालोगे, इसको तुम ने स्वीकार किया और तुम इसके साक्षी थे ।85।

ثُمَّ اَنۡتُمۡ هٰٓؤُلَآءِ تَقۡتُلُوۡنَ اَنۡفُسَكُمۡ وَتُخۡرِجُوۡنَ فَرِيۡقًا مِّنۡكُمۡ مِّنۡ دِيَارِهِمۡ تَظٰهَرُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ بِالۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ ؕ وَاِنۡ يَّاۡتُوۡكُمۡ اُسٰرٰى تُفٰدُوۡهُمۡ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيۡكُمۡ اِخۡرَاجُهُمۡ ؕ اَفَتُؤۡمِنُوۡنَ بِبَعۡضِ الۡكِتٰبِ

इसके बावजूद तुम वे हो कि अपने ही लोगों की हत्या करते हो और तुम अपने में से एक समूह को उन की बस्तियों से निकालते हो । तुम पाप और अत्याचार के द्वारा उनके विरुद्ध एक दूसरे का पृष्ठपोषण करते हो और यदि वे बन्दी बन कर तुम्हारे निकट आयें तो मुक्तिमूल्य लेकर उनको छोड़ देते हो जबकि उन को निकालना ही तुम्हारे लिए निषिद्ध था । अत: क्या तुम पुस्तक के कुछ भागों पर ईमान लाते हो और

وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٦﴾

कुछ का इनकार करते हो ? अत: तुम में से जो ऐसा करे उसका प्रतिफल सांसारिक जीवन में घोर अपमान के सिवा और क्या हो सकता है ? और क़यामत के दिन वे कठोरतम अज़ाब की ओर लौटाये जाएँगे । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं ।86।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۖ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٧﴾ ع

यही वे लोग हैं जिन्होंने परलोक के बदले सांसारिक जीवन को खरीद लिया। अत: न उन से अज़ाब को कम किया जाएगा और न ही उनकी सहायता की जाएगी ।87। (रुकू $\frac{10}{10}$)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۖ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۖ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٨﴾

और नि:सन्देह हम ने मूसा को पुस्तक दी और उसके बाद भी लगातार रसूल भेजते रहे । और हमने मरियम के पुत्र ईसा को खुले-खुले चिह्न प्रदान किये और हमने रूह-उल-क़ुदुस के द्वारा उसका समर्थन किया । अत: जब भी तुम्हारे पास कोई रसूल ऐसी बातें लेकर आयेगा, जो तुम्हें पसन्द नहीं तो क्या तुम अहंकार करोगे ? और उनमें से कुछ को तुम झुठला दोगे और कुछ की तुम हत्या करोगे ? ।88।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۗ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾

और उन्होंने कहा, हमारे दिल साक्षात पर्दा (में) हैं । वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उन पर ला'नत डाल रखी है । अत: वे कम ही ईमान लाते हैं ।89।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ

और जब अल्लाह की ओर से उनके निकट एक ऐसी पुस्तक आयी जो उस (शिक्षा) की पुष्टि कर रही थी जो उनके

يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۡ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۹۰﴾

पास थी । जबकि हाल यह था कि इससे पूर्व वे उन लोगों के विरुद्ध जिन्होंने कुफ्र किया (अल्लाह से) सहायता मांगा करते थे । अतः जब वह उनके पास आ गया जिसे उन्होंने पहचान लिया तो (फिर भी) उस का इनकार कर दिया। अतः काफ़िरों पर अल्लाह की ला'नत हो ।90।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۹۱﴾

बहुत बुरा है जो उन्होंने अपनी जानों को बेच कर उन के बदले में प्राप्त किया, कि जो अल्लाह ने उतारा है उस (सत्य) का इनकार कर रहे हैं, इस बात के विरुद्ध विद्रोह करते हुए कि अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है अपनी कृपा उतारता है । अतः वे (अल्लाह का) प्रकोप पर प्रकोप लिए हुए लौटे और काफ़िरों के लिए अपमान जनक अज़ाब (निश्चित) है ।91।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۹۲﴾

और जब उन से कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उस पर ईमान ले आओ, वे कहते हैं कि जो हम पर उतारा गया है हम उस पर ईमान ले आये हैं, जबकि जो उसके अतिरिक्त (उतारा गया) है वे उसका इनकार करते हैं । हालाँकि वह सत्य है, जो उनके निकट है (वह) उसकी पुष्टि कर रहा है । तू कह दे, यदि वस्तुतः तुम मोमिन हो तो इससे पूर्व अल्लाह के नबियों की क्यों हत्या किया करते थे ? ।92।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ

और निःसन्देह मूसा तुम्हारे निकट स्पष्ट चिह्न लाया था । फिर उसकी अनुपस्थिति में तुम ने बछड़े को

ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٣﴾

(उपास्य) बना लिया और तुम अत्याचारी थे ।93।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٤﴾

और जब हमने (तुम से) तुम्हारी दृढ़ प्रतिज्ञा ली और तूर पहाड़ को (यह कहते हुए) तुम्हारे ऊपर ऊँचा किया कि जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे दृढ़ता पूर्वक पकड़ लो और सुनो । उन्होंने (उत्तर में) कहा, हम ने सुना और हमने अवज्ञा की । और उनके इनकार के कारण उनके दिलों को बछड़े का प्रेम पिला दिया गया । तू (उन से) कह दे कि तुम्हारा ईमान तुम्हें जिसका आदेश देता है, यदि तुम मोमिन हो तो (वह) बहुत ही बुरा है ।94।

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٥﴾

तू कह दे कि यदि अल्लाह के निकट परलोक का घर सब लोगों को छोड़ कर केवल तुम्हारे ही लिए है तो यदि तुम सच्चे हो तो मृत्यु की कामना करो ।95।

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٦﴾

और उनके हाथों ने जो कुछ आगे भेजा, उसके कारण वे कदापि उसकी कामना नहीं करेंगे । और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है ।96।

معانقة ٢ عند المتأخرين

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۛۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

और तू उन्हें सब लोगों से अधिक यहाँ तक कि उन से भी (अधिक) जिन्होंने शिर्क किया, जीवन के प्रति लोलुप पायेगा । उन में से प्रत्येक यह चाहता है कि काश ! उसे एक हज़ार वर्ष की आयु मिल जाती, हालाँकि उसका दीर्घायु प्राप्त करना भी उसे अज़ाब से बचाने वाला नहीं । और जो वे करते हैं अल्लाह

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ ع

उस पर गहन दृष्टि रखे हुए है ।97।
(रुकू $\frac{11}{11}$)

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَإِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٨﴾

तू कह दे कि जो भी जिब्रील का शत्रु है, तो (वह जान ले कि) नि:सन्देह उसी (अर्थात जिब्रील) ने अल्लाह के आदेश से इस (वाणी) को तेरे दिल पर उतारा है जो अपने से पूर्ववर्ती (वाणी) की पुष्टि कर रहा है । और मोमिनों के लिए हिदायत और शुभ समाचार स्वरूप है ।98।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَإِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٩﴾

अत: जो भी अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाईल का शत्रु हो तो नि:सन्देह अल्लाह काफ़िरों का शत्रु है ।99।

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ إِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٠٠﴾

और नि:सन्देह हमने तेरी ओर सुस्पष्ट चिह्न उतारे हैं और दुराचारियों के सिवा कोई उनका इनकार नहीं करता ।100।

أَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ۭ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

क्या जब कभी भी वे कोई प्रतिज्ञा करेंगे, उनमें से एक गिरोह उस (प्रतिज्ञा) को परे फेंक देगा ? बल्कि उन में से अधिकांश ईमान ही नहीं रखते ।101।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

और जब भी उनके पास अल्लाह की ओर से कोई रसूल आया जो उसकी पुष्टि करने वाला था जो उनके पास था तो उनमें से एक समूह ने जिन्हें पुस्तक दी गई, अल्लाह की पुस्तक को पीठ पीछे डाल दिया । मानो वे (उसकी) जानकारी ही न रखते हों ।102।

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ

और उन्होंने उसका अनुसरण किया जो शैतान सुलैमान के साम्राज्य के विरुद्ध

سُلَيۡمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيۡمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيۡنَ كَفَرُوۡا يُعَلِّمُوۡنَ النَّاسَ السِّحۡرَ ۗ وَمَآ اُنۡزِلَ عَلَى الۡمَلَكَيۡنِ بِبَابِلَ هَارُوۡتَ وَمَارُوۡتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنۡ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوۡلَاۤ اِنَّمَا نَحۡنُ فِتۡنَةٌ فَلَا تَكۡفُرۡ ؕ فَيَتَعَلَّمُوۡنَ مِنۡهُمَا مَا يُفَرِّقُوۡنَ بِهٖ بَيۡنَ الۡمَرۡءِ وَزَوۡجِهٖ ؕ وَمَا هُمۡ بِضَآرِّيۡنَ بِهٖ مِنۡ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوۡنَ مَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا يَنۡفَعُهُمۡ ؕ وَلَقَدۡ عَلِمُوۡا لَمَنِ اشۡتَرٰٮهُ مَا لَهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ مِنۡ خَلَاقٍ ؕ وَلَبِئۡسَ مَا شَرَوۡا بِهٖۤ اَنۡفُسَهُمۡ ؕ لَوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۰۳﴾

पढ़ा करते थे और सुलैमान ने इनकार नहीं किया बल्कि उन शैतानों ने ही इनकार किया । वे लोगों को जादू सिखाते थे । और (इसके विपरीत) बाबिल में हारूत और मारूत दो फ़रिश्तों पर जो उतारा गया (उसकी कहानी यह है कि) वे दोनों किसी को भी कुछ नहीं सिखाते थे जब तक वे (उसे) यह न कह देते कि हम तो केवल एक परीक्षा स्वरूप हैं, अतः तू इनकार न कर । अतः वे लोग उन दोनों से ऐसी बात सीखते थे जिसके द्वारा वे पति-पत्नी के बीच जुदाई डाल देते थे और अल्लाह की आज्ञा के बिना वे इस के द्वारा किसी को हानि पहुँचाने वाले नहीं थे । और (इसके विपरीत जो लोग शैतानों से सीखते थे) वे वही बातें सीखते थे जो उनको हानि पहुँचाने वाली थीं और लाभ नहीं पहुँचाती थीं । हालाँकि वे खूब जान चुके थे कि जिस ने भी यह सौदा किया, उसके लिए परलोक में कुछ भाग नहीं रहेगा । अतः वह (अस्थायी लाभ) जिसके बदले में उन्होंने अपनी जानें बेच दीं बहुत ही बुरा था । काश ! कि वे जानते ।103।*

* 'हारूत' और 'मारूत' वस्तुतः दो फ़रिश्ता-समान मनुष्य थे और वे क्रान्ति लाने के लिए कुछ ऐसी बातें लोगों को सिखाते थे जिन के सम्बन्ध में यह निर्देश था कि ये बिल्कुल गुप्त रहें, यहाँ तक कि पत्नी को भी न बताया जाये । उन्होंने तो यह अल्लाह के आदेश से किया था । परन्तु उनका अनुकरण करके बाद में दृढ़ साम्राज्यों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए यह शैली अपनाई गई । क़ुरआन करीम हारूत और मारूत को इससे दोषमुक्त करता है । क्योंकि उन्होंने अल्लाह के आदेशानुसार ऐसा किया था परंतु बाकी लोग अपने अहंकार के कारण ऐसा करते हैं ।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝١٠٤

और यदि वे ईमान ले आते और तक़्वा धारण करते तो अल्लाह की ओर से (उसका) प्रतिफल निश्चित रूप से बहुत अच्छा होता । काश ! वे जानते ।104। (रुकू $\frac{12}{12}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٠٥

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! (हमारे रसूल को) **राइना** न कहा करो बल्कि यह कहा करो कि हम पर कृपादृष्टि डाल और ध्यानपूर्वक सुना करो और काफ़िरों के लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।105।*

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝١٠٦

अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन लोगों ने इनकार किया, वे कदापि नहीं चाहते कि तुम पर तुम्हारे रब्ब की ओर से कोई भलाई उतारी जाये । हालाँकि अल्लाह जिसको चाहता है अपनी कृपा के लिए विशेष कर लेता है और अल्लाह बहुत बड़ा कृपालु है ।106।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَاۤ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٠٧

जो आयत भी हम निरस्त कर दें अथवा उसे भुला दें, उससे उत्कृष्ट अथवा उस जैसी अवश्य ले आते हैं । क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है? ।107।**

---

* इस आयत में **राइना** (हमारी ओर ध्यान दो) कहने से मना करने का यह कारण है कि वे **राइना** के बदले **रायीना** कहते थे जिसका अर्थ है, हे हमारे चरवाहे । जबकि संभवतः वे कह रहे हों कि हम पर कृपादृष्टि डाल । अतः क़ुरआन करीम ने उन को आदेश दिया कि यथार्थ वाक्य का प्रयोग करो और **उनज़ुर्ना** (हम पर कृपादृष्टि डालो) कहा करो ।

** इस आयत में भी साधारणतया भाष्यकार धोखा खाते हैं जो यह अनुवाद करते हैं कि जो आयत अल्लाह ने क़ुरआन करीम में उतारी है वह निरस्त भी हो सकती है । और हम उससे उत्कृष्ट आयत ला सकते हैं । इसी के कारण 'नासिख़ मनसूख़' (निरस्त कारिणी और निरसित) आयतों के बारे में बड़ा लम्बा झगड़ा चल पड़ा । भाष्यकारों ने लगभग पाँच सौ आयतों को निरस्तकारिणी और पाँच→

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٨﴾

क्या तू नहीं जानता कि वह अल्लाह ही है जिसका आकाशों और धरती पर साम्राज्य है ? और अल्लाह को छोड़कर तुम्हारे लिये कोई संरक्षक और सहायक नहीं ।108।

أَمْ تُرِيْدُوْنَ أَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٩﴾

क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने रसूल से भी उसी प्रकार प्रश्न करते रहो जिस प्रकार पहले मूसा से प्रश्न किये गये? अत: जो भी ईमान को कुफ्र से परिवर्तित करे निश्चित रूप से वह सीधे रास्ते से भटक चुका है ।109।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ إِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَأْتِيَ اللّٰهُ بِأَمْرِهٖ ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١١٠﴾

अह्ले किताब में से बहुत से ऐसे हैं जो चाहते हैं कि काश ! तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के बाद (एक बार फिर) काफ़िर बना दें । उस द्वेष के कारण जो उनके अपने दिलों से उत्पन्न होता है (वे ऐसा करते हैं) जबकि सत्य उन पर प्रकट हो चुका है । अत: (उन को) क्षमा करो और छोड़ दो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय प्रकट कर दे । नि:सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।110।

وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ وَمَا

और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो और जो भी भलाई तुम स्वयं

←सौ आयतों को निरसित घोषित किया है । हालाँकि क़ुरआन करीम की एक बिंदी भी निरसित नहीं है । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से पूर्व हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह. के समय तक केवल पाँच आयतों के सिवा शेष सभी नासिख़-मनसूख़ आयतों का समाधान हो चुका था । हज़रत मसीह मौऊद अलै. की व्याख्या के फलस्वरूप इन पाँच आयतों का भी समाधान हो गया। जमाअत-ए-अहमदिय्या का मानना है कि क़ुरआन करीम की एक बिंदी भी निरसित नहीं है । प्रस्तुत क़ुरआनी आयत में 'आयत' शब्द से पूर्वकालीन धर्म-विधान अभिप्रेत हैं, जब भी उन्हें निरस्त किया गया या भुला दिया गया तो वैसे या उनसे उत्कृष्ट धर्म-विधान अवतरित किये गये ।

تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۱﴾

अपने लिए आगे भेजते हो, उसे तुम अल्लाह के निकट मौजूद पाओगे। जो तुम करते हो नि:सन्देह अल्लाह उस पर दृष्टि रखे हुए है।111।

وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

और वे कहते हैं कि जो यहूदी अथवा ईसाई हैं उनके सिवा कदापि कोई स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं होगा। यह केवल उनकी इच्छाएँ हैं। तू कह कि यदि तुम सच्चे हो तो अपना कोई दृढ़ तर्क तो प्रस्तुत करो।112।

بَلٰى ۗ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ ع ۱۳/۹/۱۳

नहीं नहीं, सच यह है कि जो भी स्वयं को अल्लाह के समक्ष समर्पित कर दे और वह उपकार करने वाला हो तो उसका प्रतिफल उसके रब्ब के निकट है। और उन (लोगों) को कोई भय नहीं और न वे दु:खी होंगे।113। (रुकू $\frac{13}{13}$)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۴﴾

और यहूदी कहते हैं कि ईसाइयों (का आधार) किसी बात पर नहीं और ईसाई कहते हैं कि यहूदियों (का आधार) किसी बात पर नहीं, हालाँकि वे पुस्तक पढ़ते हैं। इसी प्रकार उन लोगों ने भी जो कुछ ज्ञान नहीं रखते, उनकी बातों के अनुरूप बात की। अत: अल्लाह क़यामत के दिन उन के बीच उन बातों का निर्णय करेगा जिन में वे मतभेद करते थे।114।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ

और उससे बड़ा अत्याचारी कौन है जिस ने अल्लाह की मस्जिदों में उसका नाम लेने से मना किया और उन्हें उजाड़ने का प्रयास किया। (हालाँकि)

اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ۬ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٥﴾

उनके लिए उन (मस्जिदों) में डरते हुए प्रवेश करने के सिवा और कुछ उचित न था । उनके लिए संसार में अपमान और परलोक में बहुत बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।115।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٦﴾

और पूर्व भी और पश्चिम भी अल्लाह ही का है । अतः जिस ओर भी तुम मुँह फेरो वहीं अल्लाह की झलक पाओगे । निःसन्देह अल्लाह बहुत विस्तार प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।116।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٧﴾

और वे कहते हैं, अल्लाह ने पुत्र बना लिया है । पवित्र है वह । बल्कि (उसकी शान तो यह है कि) जो कुछ आकाशों और धरती में है उसी का है । सब उसी के आज्ञाकारी हैं ।117।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٨﴾

वह आकाशों और धरती की उत्पत्ति का आरम्भ करने वाला है । और जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो वह उसे केवल ''हो जा'' कहता है तो वह होने लगता है और होकर रहता है ।118।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٩﴾

और वे लोग जो कुछ ज्ञान नहीं रखते, कहते हैं कि आखिर अल्लाह हमसे क्यों बात नहीं करता अथवा हमारे पास कोई चिह्न क्यों नहीं आता ? इसी प्रकार उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे, इनकी बातों के समान बात की थी । उनके दिल परस्पर एक समान हो गये हैं । हम विश्वास करने वाले लोगों के लिए चिह्नों को सुस्पष्ट करके वर्णन कर चुके हैं ।119।

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ أَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١٢٠﴾

निश्चित रूप से हमने तुझे सत्य के साथ शुभ-समाचार देने वाला और सतर्क कारी के रूप में भेजा है और तुझ से नरकगामियों के बारे में पूछा नहीं जाएगा ।120।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۭ قُلْ إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۭ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢١﴾

और यहूदी और ईसाई तुझ से कदापि प्रसन्न नहीं होंगे जब तक तू उन के धर्म का अनुसरण न करे । तू कह दे कि निश्चित रूप से अल्लाह की (प्रदत्त) हिदायत ही वास्तविक हिदायत है । और यदि तेरे पास ज्ञान आ जाने के बाद भी तू उनकी इच्छाओं का अनुसरण करे (तो) अल्लाह की ओर से तेरे लिए कोई संरक्षक और कोई सहायक नहीं रहेगा ।121।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ۭ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

वे लोग जिन को हमने पुस्तक दी वस्तुतः वे उसका इस प्रकार पाठ करते हैं जिस प्रकार उसका पाठ करना उचित है । यही वे लोग हैं जो (वास्तव में) उस पर ईमान लाते हैं और जो कोई भी उसका इनकार करे वही अवश्य घाटा उठाने वाले हैं ।122। (रुकू $\frac{14}{14}$)

يٰبَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٣﴾

हे बनी इस्राईल ! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की और इस बात को भी कि मैंने तुम्हें समग्र जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की ।123।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम नहीं आयेगी । और न उससे कोई बदला स्वीकार किया जायेगा और न कोई सिफ़ारिश उसे लाभ देगी । और न

شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

ही उन लोगों की कोई सहायता की जाएगी ।124।

وَاِذِ ابْتَلٰۤی اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ ؕ قَالَ لَا یَنَالُ عَهْدِی الظّٰلِمِیْنَ ﴿١٢٥﴾

और जब इब्राहीम की उसके रब्ब ने कुछ वाक्यों के द्वारा परीक्षा ली और उसने उन सब को पूरा कर दिया तो उसने कहा, नि:सन्देह मैं तुझे लोगों के लिए एक महान इमाम बनाने वाला हूँ । उसने कहा, और मेरी संतान में से भी । उसने कहा, (हाँ परन्तु) अत्याचारियों को मेरा वादा नहीं पहुँचेगा ।125।*

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّی ؕ وَعَهِدْنَاۤ اِلٰۤی اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ اَنْ طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّآىِٕفِیْنَ وَالْعٰكِفِیْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٦﴾

और जब हमने (अपने) घर को लोगों के बार-बार इकट्ठा होने का और शांति का स्थान बनाया । और इब्राहीम के स्थान को नमाज़ का स्थान बनाओ । और हमने इब्राहीम और इस्माईल को निर्देश दिया कि तुम दोनों मेरे घर को परिक्रमा करने वालों और ए'तिकाफ़ करने वालों और रुकू करने वालों (तथा) सजद: करने वालों के लिए अत्यंत स्वच्छ एवं पवित्र बनाये रखो ।126।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا

और इब्राहीम ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! इसको एक शांतिमय और शांतिप्रद

---

* इस आयत में हज़रत इब्राहीम अलै. की उस समय की परीक्षा का वर्णन किया गया है जब वे नबी बन चुके थे । जब इस परीक्षा में वे खरे उतरे तो उन्हें कहा गया कि आपको बहुत से लोगों का इमाम बनाया जायेगा । शीया सम्प्रदाय के लोग इसकी अशुद्ध व्याख्या करते हुए यह कहते हैं कि इमामत का दर्जा नुबुव्वत से भी ऊँचा है । क्योंकि एक नबी को यह कहा जा रहा है कि तुम्हें हम इमाम बना देंगे। यह केवल एक ढकोसला है ताकि इसके द्वारा शीया सम्प्रदाय के इमामों का दर्जा ऊँचा करके दिखाया जाये । वस्तुत: निरी इमामत नुबुव्वत से बड़ी नहीं होती, बल्कि वह इमामत जो नुबुव्वत से मिलती है वह बड़ी होती है । यहाँ हज़रत इब्राहीम अलै. को **लोगों के लिए इमाम** कहा गया है जिस का यह अभिप्राय है कि उन परीक्षाओं में खरा उतरने के कारण क़यामत तक आने वाले लोगों के लिए उनको उदाहरण के रूप में पेश किया जायेगा ।

اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ
مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ
كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى
عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٧﴾

शहर बना दे और इसके निवासियों को जो अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान लाये प्रत्येक प्रकार के फलों में से जीविका प्रदान कर । उस ने कहा कि जो इनकार करेगा, उसे भी मैं कुछ अस्थायी लाभ पहुँचाऊँगा । फिर मैं उसे आग की अज़ाब की ओर जाने पर बाध्य कर दूँगा और (वह) बहुत ही बुरा ठिकाना है ।127।

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ
وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٨﴾

और जब इब्राहीम उस विशेष घर की नींव को ऊँचा कर रहा था और इस्माईल भी (यह दुआ करते हुए कि) हे हमारे रब्ब ! हमारी ओर से स्वीकार कर ले । नि:सन्देह तू ही बहुत सुनने वाला और स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।128।

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ
اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ
عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٩﴾

और हे हमारे रब्ब ! हमें अपने दो आज्ञाकारी भक्त बना दे और हमारी संतान में से भी अपना एक आज्ञाकारी समूह (पैदा कर दे) और हमें अपनी उपासनाओं और कुर्बानियों के ढंग सिखा और प्रायश्चित स्वीकार करते हुए हम पर झुक जा । निश्चित रूप से तू ही बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।129।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ

और हे हमारे रब्ब ! तू उनमें उन्हीं में से एक महान रसूल भेज, जो उन्हें तेरी आयतें पढ़कर सुनाये और उन्हें पुस्तक की शिक्षा दे और (उसका) तत्त्वज्ञान भी सिखाये और उनकी शुद्धि कर दे ।

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٣٠﴾

नि:सन्देह तू ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।130।

(रुकू $\frac{15}{15}$)

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣١﴾

और जिसने अपने आप को मूर्ख बना दिया, उसके सिवा कौन इब्राहीम के धर्म से विमुख होता है ? और नि:सन्देह हमने उस (अर्थात इब्राहीम) को दुनिया में भी चुन लिया और निश्चित रूप से परलोक में भी वह सदाचारियों में से होगा ।131।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣٢﴾

(याद करो) जब अल्लाह ने उससे कहा कि आज्ञाकारी बन जा । तो (सहसा) उसने कहा, मैं तो समस्त लोकों के रब्ब के लिए आज्ञाकारी हो चुका हूँ ।132।

وَوَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ؕ

और इसी बात का इब्राहीम ने अपने पुत्रों को और याक़ूब ने भी ज़ोर के साथ उपदेश किया कि हे मेरे प्यारे बच्चो ! निश्चित रूप से अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस धर्म को चुन लिया है । अत: तुम आज्ञाकारी होने की अवस्था के बिना कदापि न मरना ।133।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٤﴾

क्या तुम उस समय उपस्थित थे, जब याक़ूब पर मृत्यु आयी ? जब उसने अपने बच्चों से पूछा कि तुम मेरे बाद किसकी उपासना करोगे ? उन्होंने कहा, हम आपके उपास्य और आपके पूर्वज इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक के उपास्य की उपासना करते रहेंगे जो एक ही उपास्य है और हम उसी के आज्ञाकारी रहेंगे ।134।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٥﴾

यह एक सम्प्रदाय था जो गुज़र चुका। जो उसने कमाया उसके लिये था और जो तुम कमाते हो तुम्हारे लिए है। और जो वे किया करते थे तुम उसके सम्बन्ध में पूछे नहीं जाओगे।135।

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا ۗ
قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ﴿١٣٦﴾

और वे कहते हैं कि यहूदी अथवा ईसाई बन जाओ तो हिदायत पा जाओगे। तू कह दे (नहीं) बल्कि (अल्लाह की ओर) झुके हुए इब्राहीम के धर्मानुयायी बन जाओ (यही हिदायत प्राप्ति का साधन है) और वह शिर्क करने वालों में से कदापि नहीं था।136।

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا
أُنزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ
وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ ۖ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ ۚ وَنَحْنُ
لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٧﴾

तुम कह दो, हम अल्लाह पर ईमान ले आये और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और जो इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और याकूब और (उसकी) संतान की ओर उतारा गया और जो मूसा और ईसा को दिया गया और उस पर भी जो सब नबियों को उनके रब्ब की ओर से प्रदान किया गया। हम उनमें से किसी के बीच भेद-भाव नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।137।

فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنتُم بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوا ۖ
وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۖ

अत: यदि वे उसी प्रकार ईमान ले आयें जैसे तुम इस पर ईमान लाये हो तो नि:सन्देह वे भी हिदायत पा गये और यदि वे (इससे) मुँह फेर लें तो वे (आदत के अनुसार) सदैव मतभेद में लगे रहते हैं। अत: उनसे (निपटने के लिए) अल्लाह तेरे लिए

فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٨﴾

पर्याप्त होगा और वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।138।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٩﴾

अल्लाह का रंग अपनाओ और रंग में अल्लाह से उत्कृष्ट कौन हो सकता है और हम उसी की उपासना करने वाले हैं ।139।

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٤٠﴾

तू कह दे कि क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ा करते हो ? जबकि वह हमारा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । और हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं और हम तो उसी के प्रति निष्ठावान हो गये हैं ।140।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾

क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और याकूब और (उसकी) संतान यहूदी थे अथवा ईसाई थे ? तू कह दे, क्या तुम अधिक जानते हो या अल्लाह ? और उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो उस साक्ष्य को छिपाये, जो अल्लाह की ओर से उसके पास (अमानत) है और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं है ।141।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٢﴾ ع

ये (भी) एक समुदाय था जो गुज़र चुका। जो उसने कमाया उसके लिए था और जो तुमने कमाया तुम्हारे लिए है । और जो वे करते रहे, उसके बारे में तुमसे पूछ-ताछ नहीं की जाएगी ।142।

(रुकू $\frac{16}{16}$)

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِىْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٤٣﴾

लोगों में से मूर्ख अवश्य कहेंगे कि उनको उस क़िब्ला से किस बात ने हटा दिया है जिस पर वे (पहले) क़ायम थे ? तू कह दे पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं । वह जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है।143।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِىْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٤﴾

और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यमार्गी सम्प्रदाय* बना दिया ताकि तुम लोगों पर निरीक्षक बन जाओ और रसूल तुम पर निरीक्षक बन जाये । और जिस क़िब्ला पर तू (पहले) था उसे हमने केवल इसलिए निर्धारित किया था ताकि हम उसे जान लें जो रसूल का आज्ञापालन करता है उसके मुक़ाबिले पर जो अपनी एड़ियों के बल लौट जाता है । और यद्यपि यह बात बहुत भारी थी परन्तु उन पर (नहीं) जिन को अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमानों को नष्ट कर दे । नि:सन्देह अल्लाह लोगों पर परम कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है ।144।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ

तेरे चेहरे का आकाश की ओर बार-बार फिरना निश्चित रूप से हम देख चुके थे। अत: आवश्यक था कि हम तुझे उस क़िब्ला की ओर फेर दें जिसे तू पसंद करता था । अतएव अपना मुँह मस्जिद-ए-हराम की ओर फेर ले और तुम जहाँ

* प्रत्येक कार्य में मध्यमार्ग उत्तम है । (हदीस)

فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤٥

कहीं भी हो उसी की ओर अपने मुँह फेर लो । और नि:सन्देह जिन लोगों को पुस्तक दी गई है वे अवश्य जानते हैं कि यह उनके रब्ब की ओर से सत्य है और जो वे करते हैं अल्लाह उससे अनजान नहीं है ।145।

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۭ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٤٦

और जिन्हें पुस्तक दी गई थी यदि तू उन लोगों के पास सभी चिह्न ले आता तब भी वे तेरे क़िब्ला का अनुसरण न करते और न ही तू उनके क़िब्ला का अनुसरण करने वाला है । और उन में से कई, कई अन्यों के क़िब्लों का भी अनुसरण नहीं करते । और इसके बाद भी कि तेरे पास ज्ञान आ चुका है, यदि तू उनकी इच्छाओं का अनुसरण करेगा तो अवश्य अत्याचारियों में से हो जाएगा ।146।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۗءَهُمْ ۭ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝١٤٧

वे लोग जिन्हें हमने पुस्तक दी है वे उसे (अर्थात रसूल को, उसमें ईश्वरीय संकेतों को देखकर) उसी प्रकार पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं । और निश्चित रूप से उनमें एक ऐसा गुट भी है (जिसके सदस्य) सत्य को छिपाते हैं हालाँकि वे जानते हैं ।147।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝١٤٨

तेरे रब्ब की ओर से (नि:सन्देह यह) सत्य है । अत: तू सन्देह करने वालों में से कदापि न बन ।148। (रुकू $\frac{17}{1}$)

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا

और हर एक के लिए एक लक्ष्य है जिसकी ओर वह ध्यान देता है । अत: पुण्यकर्म में एक दूसरे से आगे बढ़

الْخَيْرٰتِ ۭ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٩﴾

जाओ। तुम जहाँ कहीं भी होगे अल्लाह तुम्हें इकट्ठा करके ले आयेगा । नि:सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।149।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٠﴾

और जहाँ कहीं से भी तू निकले अपना ध्यान मस्जिद-ए-हराम ही की ओर फेर और वह नि:सन्देह तेरे रब्ब की ओर से सत्य है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं ।150।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۤ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۤ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۤ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥١﴾

और जहाँ कहीं से भी तू निकले अपना ध्यान मस्जिद-ए-हराम ही की ओर फेर और जहाँ कहीं भी तुम हो उसी की ओर अपना ध्यान फेरो ताकि तुम्हारे विरुद्ध लोगों के लिए कोई तर्क न बने । सिवाय उन लोगों के जिन्होंने उन में से अत्याचार किया। अत: उनसे न डरो बल्कि मुझ से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत को पूरा करूँ और तुम हिदायत पा जाओ ।151।

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥٢﴾

जैसा कि हमने तुम्हारे अंदर तुम्हीं में से रसूल भेजा है जो तुम्हें हमारी आयतों को पढ़कर सुनाता है और तुम्हें पवित्र करता है और तुम्हें पुस्तक और (उसका) तत्त्वज्ञान सिखाता है और तुम्हें उन बातों की शिक्षा देता है जिनका तुम्हें पहले कुछ ज्ञान नहीं था ।152।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٣﴾

अत: मेरा स्मरण किया करो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा और मेरी कृतज्ञता करो और मेरी कृतघ्नता न करो ।153।

(रुकू $\frac{18}{2}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اسۡتَعِيۡنُوۡا بِالصَّبۡرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيۡنَ ۝١٥٤

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! (अल्लाह से) धैर्य और नमाज़ के साथ सहायता माँगो । नि:सन्देह अल्लाह धैर्य करने वालों के साथ है ।154।

وَلَا تَقُوۡلُوۡا لِمَنۡ يُّقۡتَلُ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَمۡوَاتٌ ؕ بَلۡ اَحۡيَآءٌ وَّلٰكِنۡ لَّا تَشۡعُرُوۡنَ ۝١٥٥

और जो अल्लाह की राह में वध किये जायें उनको मुर्दे न कहो बल्कि (वे तो) जीवित हैं, परन्तु तुम समझ नहीं रखते ।155।

وَلَنَبۡلُوَنَّكُمۡ بِشَىۡءٍ مِّنَ الۡخَوۡفِ وَالۡجُوۡعِ وَنَقۡصٍ مِّنَ الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَنۡفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيۡنَ ۝١٥٦

और हम तुम्हें अवश्य कुछ भय और कुछ भूख और कुछ धन और जन तथा फलों की हानी के द्वारा परीक्षा करेंगे। और धैर्य करने वालों को सु-समाचार दे दे ।156।

الَّذِيۡنَ اِذَآ اَصَابَتۡهُمۡ مُّصِيۡبَةٌ ۙ قَالُوۡٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيۡهِ رٰجِعُوۡنَ ۝١٥٧

वे लोग जिन पर जब कोई विपत्ति आती है तो वे कहते हैं, निश्चित रूप से हम अल्लाह ही के हैं और नि:सन्देह हम उसी की ओर लौटकर जाने वाले हैं ।157।

اُولٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوٰتٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٌ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُهۡتَدُوۡنَ ۝١٥٨

यही लोग हैं, जिन पर उनके रब्ब की ओर से बरकतें हैं और कृपा है और यही वे लोग हैं जो हिदायत पाने वाले हैं ।158।

اِنَّ الصَّفَا وَالۡمَرۡوَةَ مِنۡ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنۡ حَجَّ الۡبَيۡتَ اَوِ اعۡتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِ اَنۡ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنۡ تَطَوَّعَ خَيۡرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيۡمٌ ۝١٥٩

नि:सन्देह सफ़ा और मर्वा अल्लाह के चिह्नों में से हैं । अत: जो कोई भी इस गृह का हज्ज करे अथवा उम्रा करे तो उसे इन दोनों की परिक्रमा करने पर कोई पाप नहीं । और जो अतिरिक्त उपासना स्वरूप नेकी करना चाहे तो निश्चित रूप से अल्लाह परम गुणग्राही (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।159।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ۙ﴿١٦٠﴾

निश्चित रूप से वे लोग जो उसे छिपाते हैं जिसे हम ने सुस्पष्ट चिह्नों और पूर्ण हिदायत में से उतारा है, इस के बाद भी कि हमने उसको पुस्तक में लोगों के लिए सुस्पष्ट करके वर्णन कर दिया था । यही वे हैं जिन पर अल्लाह ला'नत करता है और उन पर सभी ला'नत करने वाले भी ला'नत करते हैं ।160।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦١﴾

उन लोगों के सिवा जिन्होंने प्रायश्चित किया और सुधार किया और (अल्लाह के चिह्नों को) खोल-खोल कर वर्णन किया । अत: यही वे लोग हैं जिन पर मैं प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुकूँगा और मैं बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला हूँ ।161।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿١٦٢﴾

निश्चित रूप से वे लोग जिन्होंने इनकार किया और इनकार ही की अवस्था में मर गये, यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सब लोगों की ला'नत है ।162।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٣﴾

इस (ला'नत) में वे एक लम्बे समय तक रहने वाले होंगे । उन पर से अज़ाब को हल्का नहीं किया जाएगा और न ही उन्हें छूट दी जाएगी ।163।

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٤﴾ ع

और तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है । वही रहमान (और) रहीम के सिवा कोई उपास्य नहीं ।164। (रुकू $\frac{19}{3}$)

اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِىْ

नि:सन्देह आकाशों और धरती की सृष्टि में और रात और दिन के अदलने-बदलने में और उन नौकाओं में जो समुद्र में उस

تَجۡرِىۡ فِى الۡبَحۡرِ بِمَا يَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَآ
اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡيَا بِهِ
الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ
دَآبَّةٍ ۖ وَّ تَصۡرِيۡفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ
الۡمُسَخَّرِ بَيۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿١٦٥﴾

(सामान) के साथ चलती हैं जो लोगों को लाभ पहुँचाता है । और उस पानी में जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृतावस्था के बाद जीवित कर दिया और उसमें प्रत्येक प्रकार के चलने फिरने वाले जीवधारी फैलाये और इसी प्रकार हवाओं की दिशा बदल-बदल कर चलाने में और बादलों में जो आकाश और धरती के बीच सेवा में नियुक्त हैं, बुद्धि से काम लेने वाले लोगों के लिए चिह्न हैं ।165।

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ
اَنۡدَادًا يُّحِبُّوۡنَهُمۡ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيۡنَ
اٰمَنُوۡٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوۡ يَرَى الَّذِيۡنَ
ظَلَمُوۡٓا اِذۡ يَرَوۡنَ الۡعَذَابَ ۙ اَنَّ الۡقُوَّةَ لِلّٰهِ
جَمِيۡعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعَذَابِ ﴿١٦٦﴾

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह के मुक़ाबले पर (उसका) साझीदार बना लेते हैं । वे अल्लाह से प्रेम करने की भाँति उनसे प्रेम करते हैं । जबकि वे लोग जो ईमान लाये, (प्रत्येक प्रेम से) अल्लाह के प्रेम में अधिक दृढ़ हैं । और काश ! वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया समझ सकें, जब वे अज़ाब को देखेंगे कि समस्त शक्ति (सदा से) अल्लाह ही की है और यह कि अल्लाह अज़ाब (देने) में बहुत कठोर है ।166।

اِذۡ تَبَرَّاَ الَّذِيۡنَ اتُّبِعُوۡا مِنَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا
وَرَاَوُا الۡعَذَابَ وَتَقَطَّعَتۡ بِهِمُ
الۡاَسۡبَابُ ﴿١٦٧﴾

जिन लोगों का अनुसरण किया गया, जब वे उन लोगों से विरक्ति प्रकट करेंगे जिन्होंने (उनका) अनुसरण किया और वे अज़ाब को देखेंगे जबकि (मुक्ति के) सब साधन उनसे कट चुके होंगे ।167।

وَقَالَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا لَوۡ اَنَّ لَنَا كَرَّةً

और वे लोग जिन्होंने अनुसरण किया, कहेंगे, काश ! हमें एक और अवसर मिलता तो हम उनसे उसी प्रकार

فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۸﴾ ع ۲۰

विरक्ति प्रकट करते जिस प्रकार उन्होंने हमसे विरक्ति प्रकट की है । इसी प्रकार अल्लाह उनके कर्मों को उनके लिए खेद (का कारण) बनाकर दिखाएगा और वे (उस) आग से निकल नहीं सकेंगे ।168। (रुकू $\frac{20}{4}$)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۹﴾

हे लोगो ! जो धरती में है उसमें से हलाल और पवित्र खाओ और शैतान के पद्‌चिह्नों के पीछे न चलो । नि:सन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ।169।

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۷۰﴾

निश्चित रूप से वह तुम्हें केवल बुराई और अश्लील बातों का आदेश देता है तथा यह भी कि तुम अल्लाह के विरुद्ध ऐसी बातें कहो जिनका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं ।170।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷۱﴾

और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसका अनुसरण करो तो वे कहते हैं, हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया । क्या ऐसी अवस्था में भी (वे उनका अनुसरण करेंगे) जबकि उनके पूर्वज कोई बुद्धि नहीं रखते थे और हिदायत प्राप्त नहीं थे ? ।171।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷۲﴾

और जिन लोगों ने इनकार किया उनका उदाहरण उस व्यक्ति की भाँति है जो चीख़-चीख़ कर उसे पुकारता है जो सुनता नहीं । (यह केवल) एक पुकार और आवाज़ (के अतिरिक्त कुछ भी नहीं) है । (ऐसे लोग) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं । अत: वे कोई बुद्धि नहीं रखते ।172।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٣﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! जो हमने तुम्हें जीविका दी है उसमें से पवित्र वस्तुओं को खाओ और अल्लाह की कृतज्ञता प्रकट करो, यदि तुम उसी की उपासना करते हो ।173।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٧٤﴾

उसने तुम पर केवल मुर्दार और ख़ून और सूअर का मांस तथा उसे हराम किया है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो । हाँ, जो (भूख से) अत्यधिक विवश हो गया हो, लालच रखने वाला न हो और न सीमा का उल्लंघन करने वाला हो, उस पर कोई पाप नहीं । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।174।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۙ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٥﴾

निःसन्देह वे लोग जो उसे छिपाते हैं जिसे अल्लाह ने पुस्तक में से उतारा है और उसके बदले अल्प मूल्य ग्रहण कर लेते हैं, यही वे लोग हैं जो अपने पेटों में आग के सिवा कुछ नहीं झोंकते और क़यामत के दिन अल्लाह उनसे बात नहीं करेगा और न ही उनको पवित्र करेगा और उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।175।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٦﴾

यही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले पथभ्रष्टता को और क्षमा के बदले अज़ाब को खरीद लिया । अतः आग पर ये क्या ही धैर्य करने वाले होंगे ! ।176।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي

यह इस लिए होगा कि अल्लाह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा है और जिन लोगों ने पुस्तक के बारे में मतभेद

شِقَاقٍۭ بَعِيۡدٍ ﴿۱۷۷﴾ ع

किया है, वे घोर विरोध में (लगे हुए) हैं ।177। (रुकू $\frac{21}{5}$)

لَيۡسَ الۡبِرَّ اَنۡ تُوَلُّوۡا وُجُوۡهَكُمۡ قِبَلَ الۡمَشۡرِقِ وَالۡمَغۡرِبِ وَلٰـكِنَّ الۡبِرَّ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَالۡمَلٰٓـئِكَةِ وَالۡكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ‌ۚ وَاٰتَى الۡمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنَ وَابۡنَ السَّبِيۡلِۙ وَالسَّآئِلِيۡنَ وَفِى الرِّقَابِ‌ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّکٰوةَ‌ ۚ وَالۡمُوۡفُوۡنَ بِعَهۡدِهِمۡ اِذَا عٰهَدُوۡا ۚ وَالصّٰبِرِيۡنَ فِى الۡبَاۡسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيۡنَ الۡبَاۡسِ‌ؕ اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ صَدَقُوۡا ‌ؕ وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡمُتَّقُوۡنَ ﴿۱۷۸﴾

नेकी यह नहीं कि तुम अपने चेहरों को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेरो । बल्कि नेकी उसी की है जो अल्लाह पर और परकालीन दिवस पर और फ़रिश्तों पर और पुस्तक पर तथा नबियों पर ईमान लाये । और उससे प्रेम करते हुए निकट सम्बन्धियों को और अनाथों को और दरिद्रों को और यात्रियों को और याचकों को तथा दासों को मुक्त करने के लिए धन दे । और जो नमाज़ को क़ायम करे और ज़कात दे और वे जो जब प्रतिज्ञा करते हैं तो अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और (वे जो) दुःखों और कष्टों में तथा युद्ध के बीच में भी धैर्य करने वाले हैं । यही वे लोग हैं जिन्होंने सच्चाई को अपनाया और यही वास्तविक मुत्तक़ी हैं ।178।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُتِبَ عَلَيۡکُمُ الۡقِصَاصُ فِى الۡقَتۡلٰى‌ؕ اَلۡحُرُّ بِالۡحُـرِّ وَالۡعَبۡدُ بِالۡعَبۡدِ وَالۡاُنۡثٰى بِالۡاُنۡثٰى‌ؕ فَمَنۡ عُفِىَ لَهٗ مِنۡ اَخِيۡهِ شَىۡءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَاَدَآءٌ اِلَيۡهِ بِاِحۡسَانٍ‌ؕ ذٰلِكَ تَخۡفِيۡفٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! हत्या किये गये व्यक्तियों के बारे में क़िसास (न्यायोचित बदला लेना) तुम पर अनिवार्य कर दिया गया है । स्वतंत्र व्यक्ति का बदला स्वतंत्र व्यक्ति के समान, दास का बदला दास के समान और स्त्री का बदला स्त्री के समान (लिया जाये) । और वह जिसे उसके भाई की ओर से कुछ क्षमा कर दिया जाये तो फिर न्यायपूर्ण शैली का अनुसरण करते हुए और उपकार पूर्वक उसको (क्षतिपूर्ति की राशि) चुकाई

وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۹﴾

जानी चाहिए । यह तुम्हारे रब्ब की ओर से छूट और कृपा है । अतः इसके बाद जो व्यक्ति अत्याचार करे तो उसके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।179।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۰﴾

और हे बुद्धिमान लोगो ! क़िसास (की व्यवस्था) में तुम्हारे लिए जीवन है । ताकि तुम तक़वा धारण करो ।180।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ ؕ

जब तुम में से किसी पर मृत्यु आये, यदि वह (उत्तराधिकार में) कोई धन-सम्पत्ति छोड़ रहा हो तो माता-पिता और निकट सम्बन्धियों के पक्ष में नियमानुसार वसीयत करना तुम पर अनिवार्य कर दिया गया है । मुत्तक़ियों के लिए यह आवश्यक है ।181।

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَاۤ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۸۲﴾ ؕ

अतः जो उस को सुन लेने के बाद उसे परिवर्तित करे तो जो उसे परिवर्तित करते हैं उसका पाप उन्हीं पर होगा । निःसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।182।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸۳﴾ ع

ع ۲۲ ۶

अतः जो किसी वसीयत किये हुए व्यक्ति से (उसके) अनुचित झुकाव अथवा पाप में पड़ जाने की आशंका रखता हो, फिर वह उन (उत्तराधिकारियों) के बीच समझौता कर दे तो उस पर कोई पाप नहीं । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।183। (रुकू $\frac{22}{6}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! तुम पर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं जिस प्रकार तुम से पूर्ववर्ती लोगों पर

لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ﴿۱۸۴﴾

अनिवार्य कर दिये गये थे ताकि तुम तक़वा धारण करो ।184।

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ
مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ
اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ
طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ
خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

गिनती के कुछ दिन हैं । अतः जो भी तुम में से रोगी हो अथवा यात्रा पर हो तो उसे चाहिए कि इतने दिनों के रोज़े दूसरे दिनों में पूरे करे । और जो लोग इसकी शक्ति रखते हों, उन पर एक दरिद्र को भोजन कराना फ़िद्यः (प्रायश्चित स्वरूप) है । अतः जो कोई भी अतिरिक्त पुण्य कर्म करे तो यह उसके लिए बहुत अच्छा है । और यदि तुम ज्ञान रखते हो तो तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए उत्तम है ।185।*

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ
هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى
وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ
فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ
الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫
وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا

रमज़ान का महीना, जिस में मानवजाति के लिए क़ुरआन को महान हिदायत के रूप में और ऐसे स्पष्ट चिह्नों के रूप में उतारा गया, जिनमें हिदायत का विवरण और सत्य और असत्य में प्रभेदक विषय हैं । अतः जो भी तुम में से इस महीने को देखे तो इसके रोज़े रखे और जो रोगी हो अथवा यात्रा पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी करनी होगी । अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और चाहता है कि तुम (आसानी से) गिनती को पूरा करो और उस हिदायत के कारण

---

* इस आयत में अरबी शब्द **युतीक़ू न हू** के दो अर्थ हैं । एक वे जो शक्ति रखते हैं और एक वे जो शक्ति नहीं रखते । क्योंकि इस शब्द में करने और छोड़ देने के दोनों अर्थ पाये जाते हैं । इसका अर्थ यह है कि प्रथम वे लोग जो सामयिक विवशता अथवा रोग के कारण रोज़ः न रख सकें, पर वैसे रोज़े की शक्ति रखते हैं, उनको फ़िद्यः देना चाहिए, हाँ उन्हें छूटे हुए रोज़े बाद में रखने होंगे । द्वितीय वे लोग जो शक्ति ही नहीं रखते, उनके लिए फ़िद्यः पर्याप्त होगा तथा बाद में रोज़े नहीं रखने होंगे ।

هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٦﴾

अल्लाह की बड़ाई बखान करो जो उसने तुम्हें प्रदान किया और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ।186।

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ
اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ
فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَلْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ
یَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٧﴾

और जब मेरे भक्त तुझ से मेरे बारे में प्रश्न करें तो निश्चित रूप से मैं (उनके) निकट हूँ । जब दुआ करने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ का उत्तर देता हूँ । अतः चाहिए कि वे मेरी बात को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लायें ताकि वे हिदायत पायें ।187।

اُحِلَّ لَكُمْ لَیْلَةَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ اِلٰی
نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ
لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ
اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَیْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ
فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ
لَكُمْ ۪ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰی یَتَبَیَّنَ لَكُمُ
الْخَیْطُ الْاَبْیَضُ مِنَ الْخَیْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ
الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّیَامَ اِلَی الَّیْلِ ۚ وَلَا
تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِی
الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا
تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ اٰیٰتِهٖ

रोज़ों (के महीने) की रातों में अपनी पत्नियों से सम्बन्ध बनाना तुम्हारे लिए वैध किया गया है । वे तुम्हारे वस्त्र हैं और तुम उनके वस्त्र हो । अल्लाह जानता है कि तुम अपनी इच्छाओं का दमन करते रहे हो । अतः वह तुम पर कृपापूर्वक झुका और तुम्हें क्षमा कर दिया । अतएव अब उनके साथ (निस्संकोच) दांपत्य सम्बन्ध स्थापित करो और जिसे अल्लाह ने तुम्हारे पक्ष में लिख दिया है उसकी कामना करो और खाओ पियो, यहाँ तक कि प्रभात (उदय) के कारण तुम्हारी दृष्टि में (सुबह की) सफेद धारी (रात की) काली धारी से पृथक हो जाये । फिर रोज़ः को रात तक पूरा करो । और जब तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ बैठे हो तो उन से दांपत्य सम्बन्ध स्थापित न करो । ये अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएँ हैं, अतः उनके निकट भी न जाओ । इसी प्रकार अल्लाह अपनी

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۸﴾

आयतों को लोगों के लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि वे तक़्वा धारण करें ।188।*

وَلَا تَأْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۹﴾ ع ۲۳/۷

और अपने ही धन को परस्पर एक दूसरे के बीच झूठ और छल से न खाया करो । और न तुम उन्हें (इस उद्देश्य से) अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करो कि तुम पाप पूर्वक लोगों के (अर्थात राष्ट्रीय) धन-सम्पत्ति में से कुछ खा सको हालाँकि तुम (भली-भाँति) जानते हो ।189। (रुकू 23/7)

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۹۰﴾

वे तुझ से प्रथम तीन रातों की चन्द्रमाओं के सम्बन्ध में पूछते हैं । तू कह दे कि ये लोगों के लिए समय निर्धारण और हज्ज (के निर्धारण) के भी साधन हैं । और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में उनके पिछवाड़ों से प्रवेश करो बल्कि नेकी उसी की है जो तक़्वा धारण करे । और घरों में उनके दरवाज़ों से प्रवेश किया करो और अल्लाह से डरो ताकि तुम सफल हो जाओ ।190।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۹۱﴾

और अल्लाह के मार्ग में उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हैं और अत्याचार न करो । नि:सन्देह अल्लाह अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करता ।191।

---

* **तुम अपनी इच्छाओं का दमन करते रहे हो** से यह अभिप्राय है कि सहाबा रजि. रमज़ान की रातों में दाम्पत्य सम्बन्ध को भी त्याग देते थे । इस आयत में इसकी अनुमति दी गई है । दूसरी आयत में केवल ए'तिकाफ़ में इसका निषेध किया गया है ।

इसी प्रकार यहाँ सफेद धागे और काले धागे का उल्लेख किया गया है । इसका यह अर्थ नहीं कि अन्धेरे में जाकर सफ़ेद और काले धागे में प्रभेद करो । बल्कि इसका यह अभिप्राय है कि उषाकाल में जो उजाला फैलता है, जब उसकी पहली रश्मि दिखनी शुरू हो जाये तो उस समय सहरी (रोज़: आरम्भ करने के लिए प्रात: पूर्व का भोजन) का समय समाप्त हो जाएगा ।

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۗ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩٢﴾

और (युद्ध के समय) जहाँ कहीं भी तुम उनको पाओ उनकी हत्या करो और उन्हें वहाँ से निकाल दो जहाँ से तुम्हें उन्होंने निकाला था और फ़ित्ना (उपद्रव) हत्या से अधिक भारी होता है । और उन से मस्जिद-ए-हराम के निकट युद्ध न करो जब तक कि वे तुम से वहाँ युद्ध न करें । अत: यदि वे तुम से युद्ध करें तो फिर तुम उनकी हत्या करो । काफ़िरों का ऐसा ही प्रतिफल होता है ।192।

فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٣﴾

अत: यदि वे रुक जायें तो नि:सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।193।

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۗ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٤﴾

और उन से युद्ध करते रहो, यहाँ तक कि उपद्रव बाकी न रहे और धर्म (स्वीकार करना) अल्लाह के लिए हो जाए । अत: यदि वे रुक जाएँ तो (ज़्यादती करने वाले) अत्याचारियों के सिवा किसी पर ज़्यादती नहीं करनी ।194।*

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٥﴾

इज़्ज़त वाला महीना इज़्ज़त वाले महीने का बदल है और सभी इज़्ज़त वाली चीज़ों (के अपमान) का बदला लिया जाएगा । अत: जो तुम पर ज़्यादती करे तो तुम भी उस पर वैसी ही ज़्यादती करो जैसी उसने तुम पर की हो और अल्लाह से डरो और जान लो कि नि:सन्देह अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है ।195।**

---

* इस आयत में **उन लोगों से युद्ध करने का आदेश है** जो लोगों को धर्मत्याग करने पर बाध्य करते हैं। अत: जो तलवार के बल पर धर्मत्याग करने पर बाध्य करें उनसे प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना उचित है, यहाँ तक की वे इस से रुक जाएँ ।

** जिन महीनों में युद्ध करना हराम ठहराया गया है, यदि कोई विरोधी अथवा ग़ैर मुस्लिम इन का→

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا
بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٩٦

معانقة عند المتقدمين

वَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ فَاِنْ
اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ
وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ
الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا
اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ
اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۣ
فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ
فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا
رَجَعْتُمْ ۭ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۭ ذٰلِكَ
لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों से तबाही में न डालो और उपकार करो। निःसन्देह अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है।196।

और अल्लाह के लिए हज्ज और उम्रा को पूरा करो। अतः यदि तुम रोक दिये जाओ तो जो भी क़ुर्बानी उपलब्ध हो (कर दो) और अपने सिरों को न मुंडवाओ जब तक कि क़ुर्बानी अपनी (ज़िबह होने के) निर्धारित स्थान तक पहुँच न जाए। अतः यदि तुम में से कोई बीमार हो अथवा उसके सिर में कोई कष्ट हो तो कुछ रोज़े रखकर अथवा दान देकर या क़ुर्बानी पेश करके फ़िद्यः (बदला) देना होगा। अतः जब तुम निरापद (स्थिति) में आ जाओ तो जो भी उम्रा को हज्ज से मिलाकर लाभ उठाने का इरादा करे तो (चाहिए कि) जो भी उसे क़ुर्बानी उपलब्ध हो (कर दे) और जो (सामर्थ्य) न रखे तो उसे हज्ज के बीच तीन दिन के रोज़े रखने होंगे और जब तुम वापस चले जाओ तो सात (रोज़े रखने होंगे) ये दस (दिन) पूरे हुए। ये (आदेशावली) उसके लिए हैं जिसके परिवार वाले मस्जिद-ए-हराम के निकट निवास न करते हों। और अल्लाह का तक़्वा धारण करो और

←सम्मान न करते हुए मुसलमानों से युद्ध करेगा तब इन महीनों में भी युद्ध करना उचित होगा। क्योंकि मुसलमानों के लिए यह कदापि आवश्यक नहीं कि वे बिना अपनी प्रतिरक्षा किए बैठे रहें।

شَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ﴿١٩٧﴾ ع ٢٤ ٨

जान लो कि दण्ड देने में अल्लाह बहुत कठोर है ।197। (रुकू $\frac{24}{8}$)

اَلۡحَجُّ اَشۡهُرٌ مَّعۡلُوۡمٰتٌ ۚ فَمَنۡ فَرَضَ فِيۡهِنَّ الۡحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوۡقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِى الۡحَجِّ ؕ وَمَا تَفۡعَلُوۡا مِنۡ خَيۡرٍ يَّعۡلَمۡهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوۡا فَاِنَّ خَيۡرَ الزَّادِ التَّقۡوٰى ۚ وَاتَّقُوۡنِ يٰۤاُولِى الۡاَلۡبَابِ ﴿١٩٨﴾

कुछ जाने-माने महीनों में हज्ज होता है। अतः जिसने इन (महीनों) में हज्ज का संकल्प कर लिया तो हज्ज के बीच किसी प्रकार की कामुक बात और दुराचरण तथा झगड़ा (उचित) नहीं होगा । और जो भी नेकी तुम करो अल्लाह उसे जान लेगा और पाथेय इकट्ठा करो । अतः निःसन्देह तक़वा ही सर्वोत्तम पाथेय है और हे बुद्धिमानो ! मुझ ही से डरो ।198।

لَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ جُنَاحٌ اَنۡ تَبۡتَغُوۡا فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّكُمۡ ؕ فَاِذَآ اَفَضۡتُمۡ مِّنۡ عَرَفٰتٍ فَاذۡكُرُوا اللّٰهَ عِنۡدَ الۡمَشۡعَرِ الۡحَـرَامِ ۖ وَاذۡكُرُوۡهُ كَمَا هَدٰٮكُمۡ ۚ وَاِنۡ كُنۡتُمۡ مِّنۡ قَبۡلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيۡنَ ﴿١٩٩﴾

तुम पर कोई पाप तो नहीं कि तुम अपने रब्ब से कृपा कामना करो । अतः जब तुम अरफ़ात से लौटो तो मश्अर-ए-हराम के निकट अल्लाह का स्मरण करो। और उसको उसी प्रकार स्मरण करो जिस प्रकार उसने तुम्हें निर्देश दिया है और इससे पूर्व निश्चित रूप से तुम पथभ्रष्टों में से थे ।199।

ثُمَّ اَفِيۡضُوۡا مِنۡ حَيۡثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسۡتَغۡفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٢٠٠﴾

फिर तुम (भी) वहाँ से लौटो जहाँ से लोग लौटते हैं और अल्लाह से क्षमा याचना करो । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।200।

فَاِذَا قَضَيۡتُمۡ مَّنَاسِكَكُمۡ فَاذۡكُرُوا اللّٰهَ كَذِكۡرِكُمۡ اٰبَآءَكُمۡ اَوۡ اَشَدَّ ذِكۡرًا ؕ فَمِنَ

अतः जब तुम अपने (हज्ज के) अनुष्ठान संपन्न कर चुको तो अल्लाह का स्मरण करो । जिस प्रकार तुम अपने पूर्वजों को स्मरण करते हो, बल्कि उससे बहुत अधिक स्मरण (करो) अतः लोगों में से ऐसा भी

النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝٢٠١

(व्यक्ति) है जो कहता है, हे हमारे रब्ब ! हमें (जो देना है) इहलोक में ही दे दे और उसके लिए परलोक में कोई भाग नहीं होगा ।201।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝٢٠٢

और उन्हीं में से वह भी है जो कहता है, हे हमारे रब्ब ! हमें इहलोक में भी भलाई प्रदान कर और परलोक में भी भलाई प्रदान कर और हमें आग के अज़ाब से बचा ।202।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٢٠٣

यही वे लोग हैं जो उन्होंने कमाया, उसमें से उनके लिए एक बड़ा प्रतिफल होगा और अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है ।203।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٢٠٤

और इन गिनती के कुछ दिनों में अल्लाह को (बहुत) याद करो । अतः जो भी दो दिनों में शीघ्र निवृत्त हो जाए तो उस पर कोई पाप नहीं और जो पीछे रह जाए तो उस पर (भी) कोई पाप नहीं (अर्थात्) उसके लिए जो तक़वा धारण करे । और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम उसी की ओर एकत्रित किए जाओगे ।204।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ۝٢٠٥

और लोगों में से ऐसा (व्यक्ति) भी है जिसकी सांसारिक जीवन सम्बन्धी बात तुझे पसन्द आती है जबकि वह उस पर अल्लाह को साक्षी ठहराता है जो उस के दिल में है, हालाँकि वह बहुत झगड़ालू होता है ।205।

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ

और जब वह अधिकार-संपन्न हो जाए तो धरती में फ़साद फैलाने और खेती और जाति को बर्बाद करने के उद्देश्य से

وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٦﴾

दौड़ता फिरता है, जबकि अल्लाह फ़साद को पसन्द नहीं करता ।206।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٧﴾

और जब उसे कहा जाता है कि अल्लाह का तक़्वा धारण कर तो प्रतिष्ठा (का अहं) उसे पाप पर स्थिर रखता है । अतः उसके लिए नरक पर्याप्त है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है ।207।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٨﴾

और लोगों में से ऐसा (व्यक्ति) भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए अपनी जान बेच डालता है और अल्लाह भक्तों के प्रति बहुत करुणामय है ।208।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٩﴾

हे वे लोगो, जो ईमान लाये हो ! तुम सब के सब आज्ञाकारिता (के घेरे) में प्रविष्ट हो जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर मत चलो । निःसन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ।209।

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢١٠﴾

अतः तुम्हारे निकट स्पष्ट चिह्न आ जाने के बाद भी यदि तुम फिसल जाओ तो जान लो कि अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।210।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١١﴾ ع ٢٥/٩

क्या वे केवल यह प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह बादलों की छाया में उनके निकट आये और फ़रिश्ते भी (आयें) और मामला निपटा दिया जाए। और अल्लाह ही की ओर सभी मामले लौटाए जाते हैं ।211। (रुकू $\frac{25}{9}$)

سَلْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

बनी इस्राईल से पूछ ले कि हमने उनको कितने ही खुले-खुले चिह्न दिये थे । और जो भी अल्लाह की नेमत को बदल दे जबकि वह उसके पास आ चुकी हो तो

مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١٢﴾

नि:सन्देह अल्लाह दण्ड देने में बहुत कठोर है ।212।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٣﴾

जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए सांसारिक जीवन सुन्दर करके दिखाया गया है । और ये उन लोगों का उपहास करते हैं जो ईमान लाये । और वे लोग जिन्होंने तक़वा धारण किया, वे क़यामत के दिन उन से ऊँचे होंगे । और अल्लाह जिसे चाहे बे-हिसाब जीविका प्रदान करता है ।213।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۟ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۖ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٤﴾

सभी मनुष्य एक ही संप्रदाय (के रूप में) थे । अत: अल्लाह ने नबियों को शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी बना कर भेजा और उनके साथ सत्य पर आधारित पुस्तक भी उतारी ताकि वह लोगों के बीच उन विषयों में निर्णय करे जिनमें उन्होंने मतभेद किया । और उन्हीं लोगों ने परस्पर विद्रोह के कारण उस (पुस्तक) में मतभेद किया जिन्हें वह दी गई थी, इसके बावजूद कि उनके पास स्पष्ट चिह्न आ चुके थे । अत: जो लोग ईमान लाये थे, अल्लाह ने उन को अपने आदेश से हिदायत दे दी, इसलिए कि उन्होंने सत्य के कारण उसमें मतभेद किया था और अल्लाह जिसे चाहे सीधे रास्ते की ओर हिदायत देता है ।214।*

* किसी नबी के आने से पूर्व सब लोग एक जैसे हो जाते हैं । चाहे वे पहले नबियों पर ईमान भी लाते हों परन्तु दुष्कर्म और दुराचरण की दृष्टि से उनमें कोई अंतर नहीं रहता । अत: यह एक सर्वमान्य नियम है कि नबी के आने से पूर्व सब लोग चाहे वे मोमिन हों अथवा न हों, सभी एक ही अवस्था में होते हैं । जब नबी की ओर से पुस्तक और कर्तव्य अकर्तव्य विषयों का स्पष्टीकरण हो जाता है तब उनका नबी को अस्वीकार करना लोगों को दो भागों में बाँट देता है । एक वे जो नबी पर ईमान लाते हैं और एक वे जो उसका अस्वीकार करते हैं ।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا
يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ
مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَ الضَّرَّآءُ وَ زُلْزِلُوْا
حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ﴿۲۱۵﴾

क्या तुम सोचते हो कि तुम स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओगे जबकि अभी तक तुम पर उन लोगों जैसी अवस्था नहीं आई जो तुम से पहले बीत चुके हैं ? उन्हें कठिनाइयाँ और कष्ट पहुँचे और वे हिला कर रख दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और वे जो उसके साथ ईमान लाये थे, पुकार उठे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी ? सुनो ! निश्चय ही अल्लाह की सहायता निकट है ।215।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ
مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ
وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا
تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۶﴾

वे तुझ से पूछते हैं कि वे क्या खर्च करें ? तू कह दे कि तुम (अपने) धन में से जो कुछ भी खर्च करना चाहो तो माता-पिता के लिए और निकट सम्बन्धियों के लिए और अनाथों के लिए और दरिद्रों के लिए तथा यात्रियों के लिए करो । और जो नेकी भी तुम करो तो नि:सन्देह अल्लाह उसकी भली-भाँति जानकारी रखता है ।216।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ
وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ
لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱۷﴾ ع ۲٦

तुम पर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया है जबकि वह तुम्हें पसन्द नहीं था । और संभव है कि तुम एक बात को पसन्द न करो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो और संभव है कि एक बात को तुम पसन्द करो परन्तु वह तुम्हारे लिए हानिकारक हो । और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते ।217।

(रुकू $\frac{26}{10}$)

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ

वे तुझ से इज़्ज़त वाले महीने अर्थात उसमें युद्ध करने के बारे में प्रश्न करते हैं। (उनसे) कह दे कि उसमें युद्ध करना

قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ
اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ
اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ
يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ
اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ
دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٨﴾

बहुत बड़ा (पाप) है । और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उसका इनकार करना और मस्जिद-ए-हराम से रोकना और उन लोगों को वहाँ से निकाल देना जो उसके (वास्तविक) अधिवासी हैं अल्लाह के निकट उससे भी बड़ा (पाप) है और फ़ितना (उपद्रव) हत्या से भी बढ़कर है । और यदि उन्हें शक्ति प्राप्त हो तो वे तुम्हें अपने धर्म से हटा देने तक तुमसे सदा युद्ध करते रहेंगे । और तुम में से जो भी अपने धर्म से हट जाए फिर वह काफ़िर होने की अवस्था में मरे तो यही वे लोग हैं जिन के कर्म इहलोक में और परलोक में भी व्यर्थ हो गये और यही वे लोग हैं जो आग वाले हैं । उसमें वे बहुत लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।218।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا
وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ
رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٩﴾

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाये और वे लोग जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही वे लोग हैं जो अल्लाह की कृपा की आशा रखते हैं और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।219।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ
فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫
وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ
وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ

वे तुझ से शराब और जुए के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं । तू कह दे कि इन दोनों में बड़ा पाप (भी) है और लोगों के लिए लाभ भी । और दोनों के पाप (का पहलू) उनके लाभ से बढ़कर है । और वे तुझ से (यह भी) पूछते हैं कि वे क्या ख़र्च करें ? उनसे कह दे कि (आवश्यकताओं में से) जो भी बचता है । इसी प्रकार अल्लाह

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٢٠﴾

तुम्हारे लिए (अपने) चिह्न खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम सोच-विचार करो ।220।*

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢١﴾

इहलोक के बारे में भी और परलोक के बारे में भी और अनाथों के बारे में वे तुझ से पूछते हैं । तू कह दे उनका सुधार अच्छी बात है और यदि तुम उनके साथ मिल जुल कर रहो तो वे तुम्हारे भाई-बन्धु ही हैं । और अल्लाह फ़साद करने वाले का सुधार करने वाले से प्रभेद जानता है । और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में अवश्य डाल देता । नि:सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।221।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى

और मुश्रिक स्त्रियों से निकाह न करो जब तक कि वे ईमान न ले आयें और निश्चित रूप से एक मोमिन दासी एक (स्वतंत्र) मुश्रिक स्त्री से उत्तम है, चाहे वह तुम्हें कैसी ही प्रिय हो । और मुश्रिक पुरुषों से (अपनी लड़कियों का) विवाह न कराओ जब तक कि वे ईमान न ले आयें । और निश्चित रूप से एक मोमिन दास एक (स्वतंत्र) मुश्रिक से उत्तम है, चाहे वह तुम्हें कैसा ही प्रिय हो । ये वे लोग हैं जो आग की ओर बुलाते हैं और

---

* इस आयत में हलाल और हराम (वैध-अवैध) का एक स्थायी सिद्धान्त वर्णन किया गया है कि वे वस्तुयें जिनके उपयोग में लाभ अधिक है और हानि कम हैं, वे हलाल हैं और वे वस्तुयें जिनके लाभ तो हैं परन्तु उन में हानिकारक तत्त्व अधिक हैं, वे हराम हैं । एल्कोहॉल को यदि पिया जाए तो हानिकारक है इसलिए उसका थोड़ा पीना भी हराम है । परन्तु चिकित्सा क्षेत्र में एल्कोहॉल का बहुत महत्व है । इसके अतिरिक्त यदि इत्र के रूप में एल्कोहॉल के घोल में सुगंध को मिला दिया जाए तो उसे जितना चाहो कपड़ों पर छिड़क लो, इससे नशा चढ़ना असंभव है ।

النَّارِ ۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ
وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۲﴾ ع ۲۷/۱۱

अल्लाह अपनी आज्ञा से (तुम्हें) स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और वह लोगों के लिए अपने चिह्न खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि वे उपदेश ग्रहण करें।222। (रुकू $\frac{27}{11}$)

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ
فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا
تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ
فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۳﴾

और वे तुझ से मासिक धर्म की अवस्था के बारे में प्रश्न करते हैं। तू कह दे कि यह एक कष्टदायक (अवस्था) है। अतः मासिक धर्म के समय स्त्रियों से पृथक रहो और उन से दांपत्य संबंध स्थापित न करो जब तक कि वे शुद्ध न हो जायें। फिर जब वे शुद्ध-पूत हो जायें तो उनके निकट उसी प्रकार जाओ जैसा कि अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है। निःसन्देह अल्लाह अधिकता पूर्वक प्रायश्चित करने वालों से प्रेम करता है और शुद्ध-पूत रहने वालों से (भी) प्रेम करता है।223।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ
اَنّٰى شِئْتُمْ ۫ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ۭ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ۭ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۴﴾

तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारी खेतियाँ हैं। अतः अपनी खेतियों के निकट जैसे चाहो आओ और अपने लिए (कुछ) आगे भेजो। और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम उससे अवश्य मिलने वाले हो और मोमिनों को (इस बात की) शुभ-सूचना दे दे।224।*

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ

और अल्लाह को इस उद्देश्य से अपनी क़समों का लक्ष्य न बनाओ ताकि तुम

* इस आयत के अर्थ को बिगाड़ कर कई अत्याचारी प्रवृत्ति के लोगों ने स्त्रियों से अस्वभाविक रूप से सम्बन्ध स्थापित करने का औचित्य निकाला है। (इस प्रकार की मानसिकता से हम अल्लाह की शरण चाहते हैं), यह भारी अत्याचार है। खेती से यह अभिप्राय है कि स्त्री संतानोत्पत्ति का साधन है परन्तु अस्वभाविक सम्बन्ध के परिणाम स्वरूप कदापि संतानोत्पत्ति नहीं हो सकती।

تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾

भलाई करने अथवा तक़वा धारण करने या लोगों के बीच सुधार करने से बच जाओ और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।225।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْۤ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾

तुम्हारी व्यर्थ क़समों पर अल्लाह तुम्हारी पकड़ नहीं करेगा । परन्तु जो तुम्हारे दिल (पाप) कमाते हैं, उस पर तुम्हारी पकड़ करेगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) सहनशील है ।226।

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾

जो लोग अपनी पत्नियों से सम्बन्ध स्थापित न करने की क़सम खाते हैं, उनके लिए चार महीने तक प्रतीक्षा करना (उचित) होगा । अत: यदि वे (संधि की ओर) लौट आएँ तो अल्लाह नि:सन्देह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।227।

وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾

और यदि वे तलाक़ का पक्का निर्णय कर लें तो निश्चित रूप से अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।228।

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْۤ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ

और तलाक़ शुदा स्त्रियों को तीन मासिक धर्म की अवधि तक स्वयं को रोके रखना होगा । यदि वे अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान लाती हैं तो अल्लाह ने जो कुछ उनके गर्भाशयों में पैदा कर दी है, उस को छिपाना उनके लिए उचित नहीं और इस परिस्थिति में यदि उनके पति सुधार चाहते हैं तो वे उन्हें वापस लेने के अधिक हक़दार हैं ।

وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِىْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪
وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿٢٢٩﴾ ع ٢٨/٧/١٢

और उन (स्त्रियों) का विधि के अनुसार (पुरुषों पर) उतना ही अधिकार है जितना (पुरुषों का) उन पर है । हालाँकि पुरुषों को उन पर एक प्रकार की प्रधानता भी है । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है।229। (रुकू $\frac{28}{12}$)

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ
تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ
تَاْخُذُوْا مِمَّاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّاۤ اَنْ
يَّخَافَاۤ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ
خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ
فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾

तलाक़ दो बार है । अत: (इसके बाद स्त्री को) या तो समुचित ढंग से रोक रखना होगा अथवा उपकार पूर्वक विदा करना होगा । और जो तुम उन्हें दे चुके हो उसमें से कुछ भी वापस लेना तुम्हारे लिए उचित नहीं । सिवाय इसके कि वे दोनों डरें कि वे अल्लाह की (निर्धारित) सीमाओं का पालन नहीं कर सकेंगे और यदि तुम डरो कि वे दोनों अल्लाह की निर्धारित सीमाओं का पालन नहीं कर सकेंगे तो वह स्त्री (झगड़ा निपटाने के उद्देश्य से जो धन पुरुष के पक्ष में) छोड़ दे उसके बारे में उन दोनों पर कोई पाप नहीं । ये अल्लाह की निर्धारित सीमाएँ हैं, अत: उनका उल्लंघन न करो और जो कोई अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो वस्तुत: वही लोग अत्याचारी हैं ।230।

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى
تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا

फिर यदि वह (पुरुष) उसे तलाक़ दे दे तो इसके बाद उस के लिए पुन: उस पुरुष के निकाह में आना वैध नहीं होगा जब तक कि वह उसके सिवा किसी अन्य पुरुष से विवाह न कर ले । फिर

جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ
يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ
يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣١﴾

यदि वह (भी) उसे तलाक़ दे दे तो फिर उन दोनों का एक दूसरे की ओर लौटने पर कोई पाप नहीं, यदि वे यह धारणा रखते हों कि (इस बार) वे अल्लाह की (निर्धारित) सीमाओं का पालन कर सकेंगे। और ये अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएँ हैं जिन्हें वह उन लोगों के लिए सुस्पष्ट रूप से वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हैं ।231।

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ
فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ
بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا
لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۡ
وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ
عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ
بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ
شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣٢﴾ ع ٢٩/١٣

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वे अपनी निश्चित अवधि को पूरी कर लें (तो चाहो) तो तुम उन्हें विधि पूर्वक रोक लो अथवा (चाहो तो) समुचित ढंग से विदा करो । और तुम उन्हें कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से न रोको ताकि तुम उन पर अत्याचार कर सको । और जो भी ऐसा करे तो निश्चित रूप से उसने अपनी ही जान पर अत्याचार किया । और अल्लाह की आयतों को उपहास का पात्र न बनाओ और अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो तुम पर है और जो उस ने तुम पर पुस्तक और तत्त्वज्ञान में से उतारा, वह उसके द्वारा तुम्हें उपदेश देता है । और अल्लाह का तक़्वा धारण करो और जान लो कि अल्लाह प्रत्येक विषय का भली भाँति ज्ञान रखता है ।232। (रुकू $\frac{29}{13}$)

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا
تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वे अपनी अवधि पूरी कर लें तो उन्हें अपने (भावी) पतियों से विवाह करने से न रोको, जब वे समुचित ढंग से परस्पर

تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ؕ ذٰلِكَ
يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ
وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٣﴾

इस बात पर सहमत हो जायें । यह उपदेश उसे किया जा रहा है जो तुम में से अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान लाता है । ये तुम्हें अधिक नेक और अधिक पवित्र बनाने वाला उपाय है और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते ।233।

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ
كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ
وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا
وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا
مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ
ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا
وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ
اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ
بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

और माँएँ अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलायें, उस (पुरुष) के लिए जो दुग्धपान (की अवधि) को पूरा करना चाहता है । और जिस (पुरुष) का बच्चा है, उसके ज़िम्मे ऐसी स्त्रियों के खाद्य और वस्त्र (की व्यवस्था) समुचित ढंग से करना है । किसी जान पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ डाला नहीं जाता। माँ को उसके बच्चे के सम्बन्ध में कष्ट न दिया जाये और न ही बाप को उसके बच्चे के सम्बन्ध में। और उत्तराधिकारी पर भी ऐसा ही आदेश लागू होगा । अतः यदि वे दोनों परस्पर सहमति और विचार-विमर्श से दूध छुड़ाने का निर्णय कर लें तो उन दोनों पर कोई पाप नहीं और यदि तुम अपनी संतान को (किसी और से) दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कोई पाप नहीं, बशर्तेकि तुम ने समुचित ढंग से जो कुछ (उन्हें) देना था, (उनके) सुपुर्द कर चुके हो । और अल्लाह का तक़वा धारण करो और जान लो कि जो तुम करते हो अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।234।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۵﴾

और तुम में से जो मृत्यु प्राप्त करें और पत्नियाँ छोड़ जाएँ तो वे (विधवाएँ) अपने आप को चार महीने और दस दिन तक रोके रखें । अतः जब वे अपनी (निश्चित) अवधि को पहुँच जायें तो फिर वे (स्त्रियाँ) अपने बारे में समुचित ढंग से जो भी करें, उस बारे में तुम पर कोई पाप नहीं और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदैव अवगत रहता है ।235।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاۗءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ڛ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۳۶﴾ ع

और इस बारे में तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम (उन) स्त्रियों से विवाह के प्रस्ताव सम्बन्धी कोई इशारा करो या (उसे) अपने दिलों में छिपाये रखो । अल्लाह जानता है कि तुम्हें अवश्य उनका विचार आयेगा । परन्तु तुम कोई अच्छी बात कहने के सिवा उनसे गुप्त वादे न करना । और जब तक निर्धारित इद्दत अपनी अवधि को न पहुँच जाये, निकाह करने का संकल्प न करो और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह उसकी जानकारी रखता है । अतः उस (की पकड़) से बचो और जान लो कि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) सहनशील है ।236।

(रुकू $\frac{30}{14}$)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ښ

तुम पर कोई पाप नहीं कि यदि तुम स्त्रियों को तलाक़ दे दो जबकि तुम ने अभी उन्हें स्पर्श न किया हो अथवा अभी तुमने उनके लिए हक़ महर निश्चित न किया हो और उन्हें कुछ लाभ भी

وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٧﴾

पहुँचाओ । संपन्न व्यक्ति पर उसकी सामर्थ्य के अनुसार और निर्धन व्यक्ति पर उसकी सामर्थ्य के अनुसार अनिवार्य है । (यह) विधिसंगत कुछ माल-सामान हो। उपकार करने वालों पर तो (यह) अनिवार्य है ।237।

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٨﴾

और यदि तुम उन्हें स्पर्श करने से पूर्व तलाक़ दे दो जबकि तुम उनका हक़ महर निश्चित कर चुके हो, तो फिर जो तुम ने निश्चित किया है, उसका आधा (देना) होगा सिवाय इसके कि वे (स्त्रियाँ) क्षमा कर दें अथवा वह व्यक्ति क्षमा कर दे जिसके हाथ में निकाह का बंधन है । और तुम्हारा क्षमा कर देना तक़वा के अधिक निकट है और परस्पर उपकार (पूर्ण व्यवहार) को भूल न जाया करो । जो तुम करते हो, नि:सन्देह अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।238।

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۤ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٩﴾

(अपनी) नमाज़ों की सुरक्षा करो विशेष रूप से मध्यवर्ती नमाज़ की । और अल्लाह के समक्ष आज्ञापालन करते हुए खड़े हो जाओ ।239।*

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ

अत: यदि तुम्हें कोई भय हो तो चलते फिरते अथवा सवारी की अवस्था में ही (नमाज़ पढ़ लो) । फिर जब तुम निरापद (स्थिति) में आ जाओ तो फिर (उसी प्रकार) अल्लाह को याद करो

---

* अरबी शब्द **सलातुल उस्ता** (मध्यवर्ती नमाज़) का अर्थ साधारणतया अस्र की नमाज़ किया गया है। हालाँकि सलातुल उस्ता प्रत्येक वह नमाज़ है जो बिल्कुल काम-काज के बीच में पढ़नी पड़े। व्यस्तता जितनी अधिक हो उस नमाज़ का महत्व उतना बढ़ जाता है ।

تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۴۰﴾

जिस प्रकार उसने तुम्हें सिखाया है, जो तुम (इससे पूर्व) नहीं जानते थे ।240।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۴۱﴾

और तुम में से जो लोग मृत्यु प्राप्त करें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ रहे हों, उनकी पत्नियों के पक्ष में यह वसीयत है कि वे (अपने घरों में) एक वर्ष तक लाभ उठायें और (उन्हें) न निकाला जाये । हाँ, यदि वे स्वयं निकल जायें तो जो वे अपने सम्बन्ध में स्वयं कोई समुचित निर्णय करें तो तुम पर कोई पाप नहीं और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।241।

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۴۲﴾

और तलाक़शुदा स्त्रियों को भी विधिपूर्वक कुछ लाभ पहुँचाना है । (यह) मुत्तक़ियों पर अनिवार्य है।242।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲۴۳﴾ ع

इसी प्रकार अल्लाह अपने चिह्नों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो ।243।

(रुकू $\frac{31}{15}$)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۲۴۴﴾

क्या तुझे उन लोगों की सूचना नहीं मिली जो मृत्यु के भय से अपने घरों से निकले और वे हज़ारों की संख्या में थे । तो अल्लाह ने उन से कहा, तुम मृत्यु को स्वीकार करो । और फिर (इस प्रकार) उन्हें जीवित कर दिया । निश्चित रूप से अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है परन्तु अधिकतर लोग (उसकी) कृतज्ञता प्रकट नहीं करते ।244।*

* इस आयत में भी अरबी शब्द **मूतू** (तुम मृत्यु को स्वीकार करो) से अभिप्राय भौतिक मृत्यु नहीं है, क्योंकि आत्महत्या तो हराम है । इसी प्रकार क़ुरआन स्पष्ट रूप से बार-बार यह घोषणा करता→

وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٥﴾

और अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो और जान लो कि अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।245।

مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ وَاللّٰهُ
يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۪ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٦﴾

कौन है जो अल्लाह को उत्तम ऋण दे ताकि वह उसके लिए उसे कई गुना बढ़ाये ? और अल्लाह (जीविका को) रोक भी लेता है और खोल भी देता है और तुम उसी की ओर लौटाये जाओगे ।246।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ
بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا
مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ
عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا
تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا
وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ
تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٧﴾

क्या तू ने मूसा के बाद बनी इस्राईल के मुखिआओं का हाल नहीं देखा ? जब उन्होंने अपने एक नबी से कहा कि हमारे लिए एक राजा नियुक्त कर ताकि हम अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें। उसने कहा, कहीं ऐसा तो नहीं कि यदि तुम पर युद्ध अनिवार्य कर दिया जाये तो तुम युद्ध न करो । उन्होंने कहा, आख़िर हमें हुआ क्या है कि अल्लाह के मार्ग में (हम) युद्ध न करें!! जबकि हमें अपने घरों से निकाल दिया गया है और अपनी संतान से अलग कर दिया गया है । अतः जब (अंततोगत्वा) उन पर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया तो उनमें से कुछ एक के सिवा सभी ने पीठ फेर ली और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है ।247।

←है कि जो लोग एक बार इस दुनिया से विदा हो जायेंगे वे दोबारा कभी इसमें लौटकर आ नहीं सकते । यहाँ **मूतू** शब्द से अभिप्राय अपने तामसिक आवेगों को मारना है । जैसा कि सूफ़ीवाद का कथन है : **मूतू क़ब ल अन तमूतू** अर्थात मृत्यु आने से पूर्व तुम स्वयं ही मर जाओ ।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ
لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ
لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ
وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ
اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ
وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٨﴾

और उनके नबी ने उनसे कहा कि निश्चित रूप से अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को राजा नियुक्त किया है । उन्होंने कहा कि उस को हम पर राजत्व करने का कैसे अधिकार मिल गया ? जबकि हम उसकी तुलना में राजत्व के अधिक हक़दार हैं और उसे तो आर्थिक समृद्धि (भी) नहीं दी है। उस (नबी) ने कहा, निश्चित रूप से अल्लाह ने उसे तुम पर श्रेष्ठता प्रदान की है और उसे ज्ञान और शारीरिक अभिवृद्धि की दृष्टि से बढ़ोतरी दी गई है और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करता है और अल्लाह समृद्धि प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।248।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ
يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ
تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٤٩﴾ ع ٣٢ ١٦

और उनके नबी ने उनसे कहा कि उसके राजत्व का चिह्न यह है कि वह संदूक तुम्हारे पास आयेगा जिसमें तुम्हारे रब्ब की ओर से शांति होगी और (उस चीज़ का) अवशिष्टांश होगा जिसे मूसा के वंशज और हारून के वंशज ने (अपने पीछे) छोड़ा । उसे फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे । यदि तुम ईमान रखते हो तो निश्चित रूपसे इसमें तुम्हारे लिए (एक बड़ा) चिह्न है ।249। (रुकू $\frac{32}{16}$)

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ
اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ
فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّىْٓ

अत: जब तालूत सेना लेकर निकला तो उसने कहा कि नि:सन्देह अल्लाह एक नदी के द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है । अत: जिसने उस में से (पानी) पिया उसका मुझ से सम्बन्ध नहीं रहेगा और जिसने उसे (जी

اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا
مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ
لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَ جُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ
الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ
فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً ۢ بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾

भरके) नहीं पिया तो निःसन्देह वह मेरा है, सिवाय इसके जो एक-आध बार चुल्लू भर कर पी ले । तथापि गिनती के कुछ के सिवा उन में से अधिकतर ने उस में से पी लिया । अतः जब वह और वे भी जो उसके साथ ईमान लाये थे उस नदी के पार पहुँचे तो वे (अवज्ञाकारी) बोले कि आज जालूत और उसकी सेना से निबटने की हम में कोई शक्ति नहीं । (तब) उन लोगों ने, जो विश्वास रखते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं, कहा कि कितने ही अल्पसंख्यक समुदाय हैं जो अल्लाह के आदेश से बहुसंख्यक समुदायों पर विजयी हो गये और अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ होता है ।250।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ
اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا
وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ؕ

अतः जब वे जालूत और उसकी सेना से मुठभेड़ के लिए निकले तो उन्होंने कहा, हे हमारे रब्ब ! हमें धैर्य प्रदान कर और हमारे पैरों को दृढ़ता प्रदान कर और काफ़िर लोगों के विरुद्ध हमारी सहायता कर ।251।

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَقَتَلَ دَاوٗدُ
جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ
وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ

अतः उन्होंने अल्लाह के आदेश से उन्हें पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत का वध कर दिया । और अल्लाह ने उसे राज्य और तत्त्वज्ञान प्रदान किये और जो चाहा उसे उसकी शिक्षा दी । और यदि अल्लाह की ओर से लोगों को एक दूसरे के हाथों बचाने का उपाय न किया जाता तो

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥٢﴾

धरती फ़साद से अवश्य भर जाती । परन्तु अल्लाह समस्त लोकों पर बहुत कृपा करने वाला है ।252।*

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٥٣﴾

ये अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम तेरे समक्ष सत्य के साथ पढ़ते हैं और निःसन्देह तू पैग़म्बरों में से है ।253।

* आयत सं. 248 से 252 तक को यदि ध्यान पूर्वक पढ़ा जाये तो ज्ञात होता है कि तालूत हज़रत दाऊद अलै. ही हैं, जिनका विरोधी जालूत था । अतः इन आयतों को क्रमशः पढ़ें तो आगे चल कर **दाऊद ने जालूत का वध कर दिया** उल्लेख है । अतः जिस जालूत का वर्णन है वह हज़रत दाऊद अलै. का शत्रु था, जिसे उन्होंने पराजित कर दिया । उनको इससे पहले दाऊद के नाम से सम्बोधित न करने का यह कारण प्रतीत होता है कि संभवतः इस विजय के उपरांत उन्हें नुबुव्वत और तत्त्वज्ञान प्रदान किया गया । जैसा कि आगे आयत में कहा गया **और अल्लाह ने उसे राज्य और तत्त्वज्ञान प्रदान किये** तत्त्वज्ञान से शरीअत (धर्म-विधान) विहीन नुबुव्वत होती है ।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۫ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٤﴾

ये वे रसूल हैं जिनमें से कुछ को हमने कुछ (अन्य) पर श्रेष्ठता दी । उनमें से कुछ वे हैं जिनसे अल्लाह ने (आमने-सामने) बात की और उनमें से कुछ को (कुछ अन्य से) पदवी में ऊँचा किया । और हम ने मरियम के पुत्र ईसा को खुले-खुले चिह्न दिये और रूह-उल-क़ुदुस के द्वारा उसका समर्थन किया । और यदि अल्लाह चाहता तो वे लोग जो उनके बाद आये, उनके निकट सुस्पष्ट चिह्न आने के बाद परस्पर मार-काट न करते। परन्तु उन्होंने (आपस में) मतभेद किया । अतः जो ईमान लाये वे उन्हीं में से थे और जो इनकार किये वे भी उन्हीं में से थे । और यदि अल्लाह चाहता तो वे परस्पर मार-काट न करते। परन्तु अल्लाह जो चाहता है वही करता है ।254। (रुकू $\frac{33}{1}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٥﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! जो हमने तुम्हें दिया है उसमें से उस दिन के आने से पूर्व ख़र्च करो जिस में न कोई व्यापार होगा और न कोई मित्रता और न कोई सिफ़ारिश । और काफ़िर ही हैं जो अत्याचार करने वाले हैं ।255।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا

अल्लाह ! उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं, (वह) सदा जीवित रहने वाला (और) स्वयं प्रतिष्ठित है। उसे न तो ऊँघ आती है न नींद । आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी के लिए है। कौन है जो उसकी आज्ञा के बिना उसके समक्ष

خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٦﴾

सिफ़ारिश करे ? जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है वह (सब) जानता है । और जितना वह चाहे उसके सिवा वे उसके ज्ञान में से कुछ भी पा नहीं सकते । उसका साम्राज्य आकाशों और धरती पर व्याप्त है और उन दोनों की सुरक्षा उसे थकाती नहीं और वह अत्युच्च प्रतिष्ठा युक्त (और) बड़ा गौरवशाली है ।256।

لَآ إِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۖ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۖ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٧﴾

धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं । निश्चित रूप से हिदायत पथभ्रष्टता से खुलकर स्पष्ट हो चुकी है । अत: जो कोई शैतान का इनकार करे और अल्लाह पर ईमान लाये तो नि:सन्देह उसने एक ऐसे सशक्त कड़े को पकड़ लिया जिसका टूटना संभव नहीं । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।257।*

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ۖ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَوْلِيٰٓؤُهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ إِلَى الظُّلُمٰتِ ۗ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٨﴾

अल्लाह उन लोगों का मित्र है जो ईमान लाये । वह उनको अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकालता है और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उनके मित्र शैतान हैं । वे उनको प्रकाश से अन्धकारों की ओर निकालते हैं । यही लोग आग वाले हैं, वे उसमें लम्बी अवधि तक रहने वाले हैं ।258।

(रुकू $\frac{34}{2}$)

* इस आयत में बलपूर्वक किसी का ईमान बदलने की बिल्कुल मनाही है । आयतांश **ला इक्रा ह फ़िद्दीन** का अर्थ धर्म के विषय में लेश मात्र ज़बरदस्ती उचित नहीं । हाँ, जिस पर सच्चाई खुल जाये, उसका उदाहरण तो ऐसा है कि जिसने सशक्त कड़े पर हाथ दिया है । वह हाथ काटा तो जा सकता है परन्तु उस कड़े से पृथक नहीं किया जा सकता ।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰھٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ
اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰھٖمُ رَبِّیَ
الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْیٖ
وَاُمِیْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰھٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ
بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ
الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَ ؕ وَاللّٰهُ
لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ۚ﴿۲۵۹﴾

क्या तूने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया जिसने इब्राहीम से उसके रब्ब के बारे में इस लिए झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे राजत्व प्रदान किया था । जब इब्राहीम ने कहा, मेरा रब्ब वह है जो जीवित करता है और मारता भी है । उसने कहा, मैं (भी) जीवित करता हूँ और मारता हूँ । इब्राहीम ने कहा, निःसन्देह अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू उसे पश्चिम से ले आ, तो वह व्यक्ति जिसने इनकार किया था, भौचक रह गया और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।259।*

اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰى قَرْیَةٍ وَّهِیَ خَاوِیَةٌ
عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ
بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ یَوْمًا
اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ
عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ

अथवा फिर उस व्यक्ति के उदाहरण (पर तूने ध्यान दिया ?) जिस का एक बस्ती से गुज़र हुआ, जबकि वह अपनी छतों के बल गिरी हुई थी । उसने कहा, अल्लाह इसके उजड़ने के बाद इसे कैसे बसायेगा? तो अल्लाह ने उसे एक सौ वर्ष तक मृत्यु (जैसी अवस्था में) डाल दिया । फिर उसे उठाया (और) पूछा, तू (इस अवस्था में) कितना समय रहा है? उसने कहा, मैं एक दिन या दिन का कुछ भाग रहा हूँ । उस ने कहा, बल्कि तू सौ वर्ष रहा है । अतः तू अपने खाद्य और पेय को देख कि वे गले-सड़े नहीं और अपने गधे की ओर

---

* हज़रत इब्राहीम अलै. का प्रतिपक्षी सूर्य को ख़ुदा मानता था । आप अलै. की तर्कशैली यह थी कि आप अलै. ने कहा कि सूर्य को अपने अधीन कर के दिखाओ । मेरा ख़ुदा तो उसे पूर्व से निकालता है, तू उसे पश्चिम से लाकर दिखा । इस पर वह भौचक रह गया । क्योंकि वह अपने धर्म के विरुद्ध दावा भी नहीं कर सकता था ।

يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ۗ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦٠﴾

भी देख । यह (प्रदर्शन) इसलिए है ताकि हम तुझे लोगों के लिए एक चिह्न बना दें । और हड्डियों की ओर देख कि किस प्रकार हम उनको उठाते हैं और उन पर माँस चढ़ा देते हैं । अत: जब उस पर बात खुल गई तो उसने कहा, मैं जान गया हूँ कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे, स्थायी सामर्थ्य रखता है ।260।*

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى ۗ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۗ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ ۗ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِيْنَكَ سَعْيًا ۗ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦١﴾ ع ٣٥/٣

और (क्या तूने उस पर भी ध्यान दिया?) जब इब्राहीम ने कहा, हे मेरे रब्ब मुझे दिखला कि तू मुर्दों को कैसे जीवित करता है । उसने कहा, क्या तू ईमान नहीं ला चुका ? उस ने कहा, क्यों नहीं । परन्तु इसलिए (पूछा है) ताकि मेरा दिल संतुष्ट हो जाये । उस (अल्लाह) ने कहा, तू चार पक्षी पकड़ ले और उन्हें अपने साथ सिधा ले । फिर उनमें से एक-एक को प्रत्येक पहाड़ पर छोड़ दे । फिर उन्हें बुला, वे शीघ्रता पूर्वक तेरी ओर चले आयेंगे । और जान ले कि अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।261।**

(रुकू $\frac{35}{3}$)

---

* इस आयत से ऐसा प्रतीत होता है और व्याख्याकारों ने भी यही व्याख्या की है कि एक व्यक्ति को अल्लाह ने सौ वर्ष तक के लिए मृत्यु दे दी । फिर सौ वर्ष पश्चात उसे जीवित किया तो उसका खाद्य और पेय तथा उसका गधा आदि सब ठीक-ठाक थे । यह बिल्कुल असंगत व्याख्या है जो क़ुरआन का अपमान है । इस आयत से केवल यही अभिप्राय है कि एक रात की नींद में उस व्यक्ति को आने वाले सौ वर्ष में घटित होने वाली घटनाएँ दिखाई गईं । परन्तु जब उसकी आँख खुली तो अल्लाह ने उसे कहा, देख ! तेरा गधा उसी प्रकार है और खाद्य भी उसी प्रकार तरो-ताज़ा है जैसा रात को रखा गया था ।

** इस आयत के सम्बन्ध में भी भाष्यकारों ने भ्रामक कल्पना की है कि हज़रत इब्राहीम अलै. को आदेश दिया गया था कि चार पक्षी पालो, फिर उनके छोटे-छोटे टुकड़े करके उत्तर, दक्षिण, पूर्व→

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٢﴾

जो लोग अल्लाह के रास्ते में अपना धन खर्च करते हैं उनका उदाहरण ऐसे बीज सदृश हैं जो सात बालियाँ उगाता हो । प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसे चाहे (इससे भी) बहुत बढ़ा कर देता है । और अल्लाह प्राचुर्य प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।262।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٣﴾

वे लोग जो अपने धन को अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर जो वे खर्च करते हैं उसका उपकार जताते हुए अथवा कष्ट पहुँचाते हुए पीछा नहीं करते, उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास है और उन्हें कोई भय नहीं होगा और न वे दु:खी होंगे ।263।

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٤﴾

अच्छी बात कहना और क्षमा कर देना ऐसे दान से अधिक उत्तम है जिसके पीछे कोई कष्ट आ रहा हो । और अल्लाह निस्पृह (और) सहनशील है ।264।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

हे लोगो जो ईमान लाये हो ! अपने दान को उपकार जता कर अथवा कष्ट देकर उस व्यक्ति के सदृश नष्ट न करो जो अपना धन लोगों को दिखाने के लिए खर्च करता है और न तो अल्लाह पर और

←और पश्चिम में थोड़ा-थोड़ा रख दो । फिर उन को बुलाओ तो वे आ जायेंगे । अरबी शब्दकोश इस प्रकार का अर्थ करने की कदापि अनुमति नहीं देता । आयतांश **सुर हुन्न इलैक** में **सुर** शब्द की क्रिया **सौरन्** धातु से बनी है जिस का अर्थ है **आकृष्ट करना** । अत: आयतांश का अर्थ है उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करो, उन्हें अपने साथ सिधा लो । कई विद्वानों ने कहा है कि **सुर हुन्न इलैक** का अर्थ है उन्हें आवाज़ देकर अपनी ओर बुलाओ । (मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.) अत: इसी प्रकार जो आत्मायें अल्लाह से अनुरक्त होना चाहती हैं, जब अल्लाह उन्हें आवाज़ देता है तो वे तुरन्त उसकी की ओर वापस लौट आती हैं ।

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶۵﴾

न अन्तिम दिवस पर ईमान रखता है । अत: उसका उदाहरण एक ऐसे चट्टान के सदृश है जिस पर मिट्टी (की परत) हो । फिर उस पर मुसलाधार वर्षा हो तो उसे चटियल बना दे । जो कुछ वे कमाते हैं उसमें से किसी चीज़ पर वे कोई अधिकार नहीं रखते और अल्लाह काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं देता ।265।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۶﴾

और जो लोग अपने धन को अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए और अपनों में से कइयों को दृढ़ता प्रदान करने के लिए खर्च करते हैं, उनका उदाहरण ऐसे उद्यान सदृश है जो उच्च स्थान पर स्थित हो और उस पर तेज़ वर्षा हो तो वह बढ़-चढ़ कर अपना फल दे, और यदि उस पर तेज़ वर्षा न हो तो ओस ही पर्याप्त हो । और जो तुम करते हो अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।266।

اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۶۷﴾ ع

ع ٣٦ ٤

क्या तुम में से कोई पसन्द करेगा कि उसके लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, जिसके दामन में नहरें बहती हों । उसके लिए उसमें प्रत्येक प्रकार के फल हों । इसी प्रकार उस पर बुढ़ापा आ जाए जबकि उसके बच्चे अभी कमज़ोर (और छोटे) हों । तब उस (बाग़) पर एक बवंडर चल पड़े जिस में आग (की ताप) हो, फिर वह जल जाये । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपने (चिह्न) खूब स्पष्ट करता है ताकि तुम सोच-विचार करो ।267। (रुकू $\frac{36}{4}$)

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! जो कुछ तुम कमाते हो उसमें से और जो हमने तुम्हारे लिए धरती में से निकाला है, उसमें से भी पवित्र वस्तुओं को खर्च करो और (अल्लाह के रास्ते में) खर्च करते समय उसमें से ऐसे अपवित्र वस्तु का इरादा न किया करो कि जिसे तुम (अपने लिये) कदापि स्वीकार करने वाले न हो, सिवाए इसके कि तुम (अपमान के भय से) उससे अनदेखा कर लो और जान लो कि अल्लाह निस्पृह (और) अति प्रशंसनीय है ।268।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوٓا أَنفِقُوا مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ الْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِـَٔاخِذِيهِ إِلَّآ أَن تُغْمِضُوا فِيهِ ۚ وَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٨﴾

शैतान तुम्हें ग़रीबी से डराता है और तुम्हें अश्लीलता का आदेश देता है । जबकि अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से क्षमा और कृपा का वचन देता है और अल्लाह प्राचुर्य प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।269।

الشَّيْطَٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَآءِ ۖ وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٩﴾

वह जिसे चाहता है तत्त्वज्ञान प्रदान करता है और जिसे तत्त्वज्ञान दिया जाये तो निश्चित रूप से उसे अत्यधिक भलाई प्रदान किया गया और बुद्धिमानों के सिवा कोई उपदेश ग्रहण नहीं करता ।270।

يُؤْتِى الْحِكْمَةَ مَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِىَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُولُوا الْأَلْبَٰبِ ﴿٢٧٠﴾

और खर्च करने योग्य वस्तुओं में से जो भी तुम खर्च करो अथवा किसी प्रकार की कोई मन्नत मानो तो नि:सन्देह अल्लाह उसे जानता है और अत्याचारियों के लिए कोई सहायक नहीं ।271।

وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۗ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٢٧١﴾

यदि तुम दान को प्रकट करो तो यह भी अच्छी बात है और यदि तुम उन्हें छिपाओ और अभावग्रस्तों को दो तो

إِن تُبْدُوا الصَّدَقَٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۖ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ

لَّكُمْ ۗ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧٢﴾

यह तुम्हारे लिए उत्तम है और वह (अल्लाह) तुम्हारी बहुत सी बुराइयाँ तुम से दूर कर देगा और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।272।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٣﴾

उनको हिदायत देना तेरा दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है और जो भी धन तुम खर्च करो तो वह तुम्हारे अपने ही हित में है । जबकि तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के सिवा (कभी) खर्च नहीं करते और जो भी तुम धन में से खर्च करो वह तुम्हें भरपूर वापस कर दिया जाएगा और तुम पर कदापि कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा ।273।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٤﴾ ع ٣٧/٥

(यह खर्च) उन अभावग्रस्तों के लिए है जिन्हें अल्लाह के रास्ते में घेर दिया गया है (और) वे धरती में चलने फिरने की शक्ति नहीं रखते । एक अज्ञान (उनकी) याचना न करने (की अभ्यास) के कारण उन्हें धनवान समझता है । (परन्तु) तू उनके लक्षणों से उन्हें पहचानता है । वे लोगों से पीछे पड़ कर नहीं माँगते और जो कुछ धन में से तुम खर्च करो तो अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है ।274।

(रुकू $\frac{37}{5}$)

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ

वे लोग जो अपने धन रात को भी और दिन को भी, छिप कर भी और खुले-आम भी खर्च करते हैं, तो उनके लिए उनका प्रतिफल उनके

رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٥﴾

रब्ब के निकट है और उन्हें कोई भय नहीं होगा और न वे दु:खित होंगे।275।

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا
كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ
الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ
الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ
فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ
مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ
فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٦﴾

वे लोग जो ब्याज खाते हैं वे उसी प्रकार खड़े होते हैं जैसे वह व्यक्ति खड़ा होता है जिसे शैतान ने (अपने) स्पर्श से भौचक कर दिया हो । यह इसलिए है कि उन्होंने कहा, निश्चित रूप से व्यापार ब्याज ही के सदृश है । जबकि अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज को अवैध ठहराया है। अत: जिसके पास उसके रब्ब की ओर से उपदेश आ जाये और वह रुक जाये तो जो पहले हो चुका वह उसी का रहेगा और उसका मामला अल्लाह के सुपुर्द है । और जो कोई पुन: ऐसा करे तो यही लोग ही आग वाले हैं । वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।276।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٧﴾

अल्लाह ब्याज को मिटाता है और दान को बढ़ाता है और अल्लाह प्रत्येक बड़े कृतघ्न (और) महापापी को पसंद नहीं करता ।277।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٨﴾

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाये और नेक कर्म किये और उन्होंने नमाज़ को क़ायम किया और ज़कात दी, उनके लिए उनका प्रतिफल उनके रब्ब के निकट है और उन्हें कोई भय नहीं होगा और न वे दु:खित होंगे ।278।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا
بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٩﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! अल्लाह से डरो और यदि तुम (वस्तुत:) मोमिन हो तो ब्याज में से जो बाकी रह गया है छोड़ दो ।279।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾

और यदि तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर से युद्ध की घोषणा सुन लो । और यदि तुम प्रायश्चित करो तो तुम्हारे मूल धन तुम्हारे ही रहेंगे । न तुम अत्याचार करोगे, न तुम पर अत्याचार किया जाएगा ।280।

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ۗ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾

और यदि कोई अभावग्रस्त हो तो (उसे) सम्पन्नता प्राप्ति तक छूट देनी चाहिए और यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो तो तुम दान (स्वरूप मूलधन को भी छोड़) दो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है ।281।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨٢﴾ ع

और उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की ओर लौटाये जाओगे । फिर हर जान को जो उसने कमाया पूरा-पूरा दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।282। (रुकू $\frac{38}{6}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۗ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۖ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ۗ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ

हे लोगो जो ईमान लाये हो ! जब तुम एक निश्चित अवधि तक के लिए ऋण का आदान प्रदान करो तो उसे लिख लिया करो । और चाहिए कि तुम्हारे बीच लिखने वाला न्याय पूर्वक लिखे और कोई लिपिक लिखने से इनकार न करे । अतः वह लिखे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया है और वह व्यक्ति लिखवाये जिस के ज़िम्मे (दूसरे का) देय है, और अपने रब्ब अल्लाह का तक़वा धारण करे, और उसमें से कुछ भी कम न करे । अतः यदि वह व्यक्ति जिसके ज़िम्मे (दूसरे

عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا
يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ
بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ
رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ
الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ
اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ
اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ
صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ
عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا
تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً
تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪
وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ۬ وَاِنْ تَفْعَلُوْا

का) देय है, ना-समझ हो अथवा दुर्बल हो अथवा लिखवाने से असमर्थ हो तो उसका संरक्षक (उसका प्रतिनिधित्व करते हुए) न्याय पूर्वक लिखवाये । और अपने पुरुषों में से दो को साक्षी ठहरा लिया करो । और यदि दो पुरुष उपलब्ध न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ जिन्हें तुम चाहो, साक्षी ठहरा लो । (यह) इसलिए (है) कि उन दो स्त्रियों में से यदि एक भूल जाये तो दूसरी उसे याद करवा दे । और जब साक्षियों को बुलाया जाये तो वे इनकार न करें और (लेन-देन) चाहे छोटा हो या बड़ा, उसे उसकी निश्चित अवधि तक (अर्थात संपूर्ण अनुबंधन) लिखने से न उकताओ । तुम्हारी यह कार्यशैली अल्लाह के निकट अत्यन्त न्यायसंगत ठहरेगी और साक्ष्य स्थापित करने के लिए ठोस प्रमाण होगा, और इस बात के अधिक निकट होगा कि तुम सन्देहों में न पड़ो । (लिखना अनिवार्य है) सिवाय इसके कि वह हाथों-हाथ व्यापार हो जिसे तुम (उसी समय) आपस में ले-दे लेते हो, इस अवस्था में उसे नहीं लिखने से तुम पर कोई पाप नहीं । और जब तुम कोई (लम्बा) क्रय-विक्रय करो तो साक्षी ठहरा लिया करो । और लिपिक को तथा साक्षी को (किसी प्रकार का कोई)

فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ۝۲۸۳

कष्ट न दिया जाये। यदि तुम ने ऐसा किया तो निश्चित रूप से यह तुम्हारे लिए बड़े पाप की बात होगी । और अल्लाह से डरो, जबकि अल्लाह ही तुम्हें शिक्षा देता है और अल्लाह प्रत्येक विषय का भली-भाँति ज्ञान रखता है ।283।

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝۲۸۴ ع ۳۹ ۷

और यदि तुम यात्रा पर हो और तुम्हें लिपिक न मिले तो बंधक के रूप में कोई वस्तु ही सही क़ब्ज़ा में ले लो। अतः यदि तुम में से कोई किसी दूसरे के पास अमानत रखे तो जिस के पास अमानत रखवाई गई है उसे चाहिए कि वह उसकी अमानत को अवश्य वापस करे और अपने रब्ब अल्लाह का तक़वा धारण करे । और तुम साक्ष्य को न छिपाओ और जो कोई भी उसे छिपायेगा तो निश्चित रूप से उसका दिल पापी हो जाएगा और जो तुम करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है ।284।

(रुकू $\frac{39}{7}$)

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝۲۸۵

जो कुछ आकाशों में है और जो धरती में है, अल्लाह ही का है । और जो तुम्हारे दिलों में है चाहे तुम उसे छिपाओ या प्रकट करो, अल्लाह उसके बारे में तुम से हिसाब लेगा । अतः वह जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।285।

آمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۟ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٦﴾

रसूल उस पर ईमान ले आया जो उसके रब्ब की ओर से उस की ओर उतारा गया और मोमिन भी । (उन में से) हर एक अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी पुस्तकों पर और उसके रसूलों पर (यह कहते हुए) ईमान ले आया कि हम उसके रसूलों में से किसी के बीच प्रभेद नहीं करेंगे और उन्होंने कहा कि हमने सुना और हमने आज्ञापालन किया । हे हमारे रब्ब ! हम तुझ से क्षमा याचना करते हैं और (हमें) तेरी ओर ही लौट कर जाना है ।286।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٧﴾

अल्लाह किसी जान पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ नहीं डालता । जो उसने कमाया उसके लिए है और जो उसने (बुराई) अर्जित की उसका दुष्परिणाम भी उसी पर है । हे हमारे रब्ब ! यदि हम भूल जायें अथवा हमसे कोई अपराध हो जाए तो हमारी पकड़ न कर । और हे हमारे रब्ब ! हम पर ऐसा बोझ न डाल जैसा हमसे पहले लोगों पर (उनके पापों के परिणाम स्वरूप) तू ने डाला । और हे हमारे रब्ब ! हम पर कोई ऐसा बोझ न डाल जो हमारी शक्ति से बढ़कर हो। और हम से ढिलाई बरत और हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर । तू ही हमारा संरक्षक है । अतः काफ़िर लोगों के विरुद्ध हमें सहायता प्रदान कर ।287। (रुकू $\frac{40}{8}$)

3– सूर: आले इम्रान

यह सूर: हिजरत के तीसरे वर्ष अवतरित हुई । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 201 आयतें हैं ।

इस सूर: में सूर: अल फ़ातिह: में वर्णित तीसरे गिरोह **ज़ाल्लीन** (पथभ्रष्टों) का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है । इस पहलू से ईसाई धर्म का आरंभ, हज़रत मरियम का जन्म और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कारिक जन्म का वर्णन किया गया है । हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के साथ अल्लाह तआला का जो असाधारण दया और कृपापूर्ण बर्ताव था और जिस प्रकार अल्लाह तआला परोक्ष रूप से उन्हें जीविका प्रदान करता था, उसका भी इस सूर: में वर्णन मिलता है । मालूम होता है कि हज़रत मरियम अलैहस्सलाम की पवित्रता को देख कर ही हज़रत ज़करिया अलै. के मन में पवित्र संतान प्राप्ति की उत्कट इच्छा जगी थी ।

इस सूर: में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कारों का भी इस रंग में उल्लेख मिलता है कि बाइबिल पढ़कर दिल में जो भ्रम उत्पन्न होते हैं, उन सब का क़ुरआन करीम ने चमत्कारों की वास्तविकता का वर्णन करते हुए खंडन कर दिया है । इस सूर: में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की स्वभाविक मृत्यु की भी चर्चा की गई है ।

इस सूर: में यहूदियों की प्रतिज्ञा के मुक़ाबले पर नबियों की प्रतिज्ञा का उल्लेख मिलता है, जो सब नबियों से ली गई थी, जिस का सार यह है कि यदि तुम्हारे पश्चात अल्लाह के ऐसे रसूल पैदा हों, जो तुम्हारी नेक शिक्षाओं की पुष्टि करने वाले और उनका पालन करने वाले हों तो तुम्हारी जाति के लिए उनकी सहायता करना अनिवार्य है । यह वह प्रतिज्ञा है जिसका सूर: अल अह्ज़ाब में भी वर्णन है और यही प्रतिज्ञा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ली गई थी ।

इस सूर: में अनेक विषयों के साथ-साथ अर्थदान के सिद्धांत का भी उल्लेख हुआ है और कहा गया कि जब तक तुम अल्लाह के रास्ते में उसे खर्च न करो जिस से तुम प्रेम करते हो और जो तुम्हें अच्छा लगे, तब तक तुम्हारा दान स्वीकार्य नहीं हो सकता ।

इस सूर: में बद्र युद्ध के समय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस चमत्कारिक विजय का भी उल्लेख है जिस के पश्चात इस्लाम की विजय यात्रा आरंभ होती है । इसी प्रकार उहद युद्ध का भी वर्णन है कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की क़ुर्बानी की याद को ताज़ा करते हुए किस प्रकार सहाबा रज़ि. भेड़ बकरियों की भाँति मारे गये, परन्तु उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ नहीं छोड़ा।

☆☆☆

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَتَا اٰيَةٍ وَّ اٰيَةٌ وَّ عِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓمّٓ ②

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ ।2।

اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ③

अल्लाह ! उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । सदा जीवित रहने वाला (और) स्वयं प्रतिष्ठित है ।3।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ④

उसने तुझ पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी है, उसकी पुष्टि करती हुई जो उसके सामने है । और उसी ने तौरात और इंजील को उतारा है ।4।

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ⑤

इससे पहले, लोगों के लिए हिदायत के रूप में और उसी ने फ़ुर्क़ान उतारा । निस्संदेह वे लोग जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया उनके लिए कठोर अज़ाब (निश्चित) है । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) प्रतिशोध लेने वाला है ।5।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ⑥

निस्सन्देह अल्लाह वह है जिस पर धरती या आकाश में स्थित कोई वस्तु छिपी नहीं रहती ।6।

هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ⑦

वही है जो तुम्हें गर्भाशयों में जैसे रूप में चाहे ढालता है । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।7।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ

वही है जिसने तुझ पर पुस्तक उतारी उसी में से मुहकम (निश्चायक) आयतें

مُّحۡكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الۡكِتٰبِ وَاُخَرُ
مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ زَيۡغٌ
فَيَتَّبِعُوۡنَ مَا تَشَابَهَ مِنۡهُ ابۡتِغَآءَ الۡفِتۡنَةِ
وَابۡتِغَآءَ تَاۡوِيۡلِهٖ ۚ وَمَا يَعۡلَمُ تَاۡوِيۡلَهٗۤ اِلَّا
اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوۡنَ فِى الۡعِلۡمِ يَقُوۡلُوۡنَ
اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنۡ عِنۡدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ
اُولُوا الۡاَلۡبَابِ ﴿۸﴾

हैं, जो पुस्तक के मूल हैं और कुछ अन्य मुतशाबिह (अनेकार्थक) हैं । अतः वे लोग जिन के दिलों में टेढ़ापन है वे फ़साद करने की इच्छा से उसका भावार्थ करते हुए उसमें से उसका अनुसरण करते हैं जो मुतशाबिह है । हालाँकि अल्लाह और परिपक्व ज्ञानियों के सिवा कोई उसका भावार्थ नहीं जानता । वे कहते हैं हम इस पर ईमान ले आए, सब हमारे रब्ब की ओर से है और बुद्धिमान व्यक्तियों के सिवा कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करता ।8।*

رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوۡبَنَا بَعۡدَ اِذۡ هَدَيۡتَنَا وَهَبۡ
لَنَا مِنۡ لَّدُنۡكَ رَحۡمَةً ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ
الۡوَهَّابُ ﴿۹﴾

हे हमारे रब्ब ! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे । और हमें अपनी ओर से कृपा प्रदान कर । निस्संदेह तू ही महादानी है ।9।

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوۡمٍ لَّا رَيۡبَ
فِيۡهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخۡلِفُ الۡمِيۡعَادَ ﴿۱۰﴾ ع

हे हमारे रब्ब ! निस्संदेह तू लोगों को उस दिन के लिए एकत्रित करने वाला है जिसमें कोई संदेह नहीं । निस्संदेह अल्लाह वचन भंग नहीं करता ।10।

(रुकू $\frac{1}{9}$)

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَنۡ تُغۡنِىَ عَنۡهُمۡ
اَمۡوَالُهُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ شَيۡـًٔا ؕ
وَاُولٰٓـئِكَ هُمۡ وَقُوۡدُ النَّارِ ۙ ﴿۱۱﴾

वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके धन और उनकी संतान अल्लाह के मुक़ाबिले पर उनके किसी काम नहीं आएँगे और यही लोग आग का ईंधन हैं ।11।

كَدَاۡبِ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ ۙ وَالَّذِيۡنَ مِنۡ

फ़िरऔन की जाति की कार्यशैली की भाँति और उन लोगों की भाँति जो

* कुर्आन करीम की कुछ आयतें इस अर्थ में **मुहकम** हैं कि उनके किसी प्रकार से ग़लत अर्थ किए ही नहीं जा सकते । परन्तु कुछ **मुतशाबिह** आयतों के भावार्थ में यह संदेह रहता है कि उनके ग़लत अर्थ न निकाल लिए जाएँ । यदि मुहकम आयतों की ओर उस ग़लत भावार्थ को लौटाया जाए तो मुहकम आयतें उसको नकार देती हैं । इसी कारण उनको **उम्मुल किताब** (पुस्तक का मूल) कहा गया ।

قَبْلِهِمْ ۗ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٢﴾

उनसे पहले थे। उन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया तो अल्लाह ने उनके पापों के कारण उनको पकड़ लिया और अल्लाह दंड देने में अत्यन्त कठोर है।12।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ۗ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٣﴾

जिन्होंने इनकार किया उनसे कह दे कि तुम अवश्य पराजित किए जाओगे और नरक की ओर इकट्ठे ले जाए जाओगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है।13।

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۗ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ۗ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿١٤﴾

निस्संदेह उन दो गिरोहों में तुम्हारे लिए एक बड़ा चिह्न था, जिनकी मुठभेड़ हुई। एक गिरोह अल्लाह के लिए लड़ रहा था और दूसरा काफ़िर था। वे उन्हें भौतिक दृष्टि से अपने से दुगना देख रहे थे और अल्लाह जिसे चाहे अपनी सहायता के साथ समर्थन देता है। निस्संदेह इसमें ज्ञान-दृष्टि रखने वालों के लिए अवश्य एक बड़ी सीख है।14।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٥﴾

लोगों के लिए स्वभाविक रूप से पसन्द की जाने वाली चीज़ें यथा :- स्त्रियों और संतान और ढेरों-ढेर सोने चाँदी और विशेष चिह्न अंकित किये गये घोड़ों और चौपायों तथा खेतियों का प्रेम सुन्दर करके दिखाया गया है। यह सांसारिक जीवन का अस्थायी सामान है और अल्लाह वह है जिस के पास बहुत उत्तम लौटने का स्थान है।15।

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۗ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ

तू कह दे कि क्या मैं तुम्हें इन से उत्तम वस्तुओं की सूचना दूँ ? उनके लिए जो तक़्वा अपनाते हैं उनके रब्ब के पास ऐसे बाग़ान हैं जिनके दामन में नहरें

تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا وَاَزۡوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضۡوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ‌ؕ وَاللّٰهُ بَصِيۡرٌۢ بِالۡعِبَادِ ۚ‏ ﴿۱۶﴾

बहती हैं । वे उनमें सदा रहने वाले हैं और (उनके लिए) पवित्र किए हुए जोड़े हैं और अल्लाह की ओर से प्रसन्नता है । और अल्लाह भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।16।

اَلَّذِيۡنَ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ‌ ۚ‏ ﴿۱۷﴾

(यह उन लोगों के लिए है) जो कहते हैं, हे हमारे रब्ब ! निस्संदेह हम ईमान ले आए । अतः हमारे पाप क्षमा कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा ।17।

اَلصّٰبِرِيۡنَ وَالصّٰدِقِيۡنَ وَالۡقٰنِتِيۡنَ وَالۡمُنۡفِقِيۡنَ وَالۡمُسۡتَغۡفِرِيۡنَ بِالۡاَسۡحَارِ‏ ﴿۱۸﴾

(ये बाग़ान उनके लिए हैं) जो धैर्य रखने वाले हैं और सच बोलने वाले हैं और आज्ञापालन करने वाले हैं और ख़र्च करने वाले हैं तथा प्रातःकाल क्षमायाचना करने वाले हैं ।18।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالۡمَلٰٓـئِكَةُ وَاُولُوا الۡعِلۡمِ قَآئِمًا ۢ بِالۡقِسۡطِ‌ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ؕ‏ ﴿۱۹﴾

अल्लाह न्याय पर स्थित होकर गवाही देता है कि उसके अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं और फ़रिश्ते और ज्ञानी जन भी (यही गवाही देते हैं) । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।19।

اِنَّ الدِّيۡنَ عِنۡدَ اللّٰهِ الۡاِسۡلَامُ قف وَمَا اخۡتَلَفَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ بَغۡيًاۢ بَيۡنَهُمۡ‌ ؕ وَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيۡعُ الۡحِسَابِ‏ ﴿۲۰﴾

निश्चित रूप से धर्म अल्लाह के निकट **इस्लाम** ही है । और उन लोगों ने जिन्हें पुस्तक दी गई उन्होंने केवल परस्पर विद्रोह करते हुए मतभेद किया, जबकि उनके पास ज्ञान आ चुका था । और जो अल्लाह की आयतों का इनकार करता है तो निस्संदेह अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है ।20।

فَاِنۡ حَآجُّوۡكَ فَقُلۡ اَسۡلَمۡتُ وَجۡهِىَ لِلّٰهِ

अतः यदि वे तुझ से झगड़ा करें तो कह दे कि मैं तो अपना ध्यान विशुद्ध रूप से

وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ۗ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢١﴾ ع

अल्लाह की इच्छा के अधीन कर चुका हूँ और वे भी जिन्होंने मेरा अनुसरण किया। और जिन्हें पुस्तक दी गई उन्हें और उन अज्ञानियों से भी कह दे कि क्या तुम इस्लाम स्वीकार कर लिये हो? अतः यदि वे इस्लाम स्वीकार कर लिये हैं तो निस्संदेह वे हिदायत पा चुके और यदि वे पीठ फेर लें तो तुझ पर केवल (संदेश) पहुँचाना अनिवार्य है। और अल्लाह भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है।21। (रुकू $\frac{2}{10}$)

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٢﴾

निस्संदेह वे लोग जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं और नबियों का अकारण घोर विरोध करते हैं और लोगों में से उनका भी घोर विरोध करते हैं जो न्याय का आदेश देते हैं। तू उन्हें पीड़ाजनक अज़ाब का समाचार दे दे।22।*

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

यही वे लोग हैं जिनके कर्म इहलोक में और परलोक में भी नष्ट हो गए। और उनके कोई सहायक नहीं होंगे।23।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

क्या तूने उनकी ओर नज़र नहीं दौड़ाई जिन्हें पुस्तक में से एक भाग दिया गया था। उन्हें अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करे, फिर भी उनमें से एक पक्ष पीठ फेर कर चला जाता है और वे विमुख होने वाले होते हैं।24।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ

(उनकी) यह दशा इस लिए है कि उन्होंने कहा कि हमें गिनती के कुछ दिन

* अरबी शब्द **क़तल** का अर्थ घोर विरोध और सामाजिक बहिष्कार के भी हैं। (लिसान-उल-अरब)

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۖ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

के सिवा आग कदापि नहीं छुएगी, और जो वे झूठ बोला करते थे उसने उनको उनके धर्म के विषय में धोखे में डाल दिया ।25।

فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۫ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

अतः क्या दशा होगी उनकी जब हम उन्हें एक ऐसे दिन के लिए एकत्रित करेंगे जिसमें कोई संदेह नहीं और प्रत्येक जान को जो उसने कमाया उसका पूरा प्रतिफल दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा ।26।

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٧﴾

तू कह दे हे मेरे अल्लाह ! राज्य के अधिपति ! तू जिसे चाहे सत्ता प्रदान करता है और जिससे चाहे सत्ता छीन लेता है । और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है । भलाई तेरे हाथ ही में है । निस्संदेह तू हर चीज़ पर जिसे तू चाहे, स्थायी सामर्थ्य रखता है ।27।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۡ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٨﴾

तू रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और तू मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालता है । और तू जिसे चाहता है बे-हिसाब जीविका प्रदान करता है ।28।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ

मोमिन, मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को मित्र न बनाएँ और जो कोई ऐसा करेगा तो वह अल्लाह से बिल्कुल कोई सम्बंध नहीं रखता । सिवाए इसके कि तुम उनसे पूरी तरह सतर्क रहो और अल्लाह तुम्हें अपने आप से सावधान

وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٩﴾

करता है और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है ।29।

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِىْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٠﴾

तू कह दे, जो तुम्हारे सीनों में है चाहे तुम उसे छिपाओ या प्रकट करो अल्लाह उसे जान लेगा । और वह जानता है जो आसमानों में है और जो धरती में है । और अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।30।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۖۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿٣١﴾

معانقة ٤ عند المتأخرين

ع

जिस दिन प्रत्येक जान, जो भी नेकी उसने की होगी उसे अपने सामने उपस्थित पाएगी और उस बुराई को भी जो उसने की होगी । वह इच्छा करेगी कि काश ! उसके और उस (बुराई) के मध्य बहुत दूर का फ़ासला होता । और अल्लाह तुम्हें अपने आप से सावधान करता है । हालाँकि अल्लाह भक्तों से बहुत दया पूर्वक पेश आने वाला है ।31।

(रुकू $\frac{3}{11}$)

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٢﴾

तू कह दे यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।32।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

तू कह दे अल्लाह का और रसूल का आज्ञापालन करो । फिर यदि वे मुँह फेर लें तो अल्लाह काफ़िरों को निश्चित रूप से पसन्द नहीं करता ।33।

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٤﴾ۙ

निस्संदेह अल्लाह ने आदम और नूह और इब्राहीम के वंशज तथा इम्रान के वंशज को समग्र जगत के मुक़ाबले पर चुन लिया ।34।

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۵﴾

उनमें से कुछ, कुछ की संतान में से हैं और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।35।

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۶﴾

जब इम्रान की एक स्त्री ने कहा, हे मेरे रब्ब ! जो कुछ भी मेरे पेट में है निस्संदेह उसे मैंने (संसार के झमेलों से) मुक्त करते हुए तुझे भेंट कर दिया । अतः तू मुझ से स्वीकार कर ले । निस्संदेह तू ही बहुत सुनने वाला (और) बहुत जानने वाला है ।36।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ۗ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْٓ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿۳۷﴾

फिर जब उसने उसे जन्म दिया तो उसने कहा हे मेरे रब्ब ! मैंने तो पुत्री को जन्म दिया है । जबकि अल्लाह बेहतर जानता है कि उसने किसे जन्म दिया था और नर मादा की भाँति नहीं होता और (उस इम्रान की स्त्री ने कहा) मैंने इसका नाम मरियम रखा है, और मैं इसे और इसकी संतान को धुतकारे हुए शैतान से तेरी शरण में देती हूँ ।37।*

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۚ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ۗ قَالَتْ هُوَ مِنْ

अतः उसके रब्ब ने उसे अच्छी प्रकार से स्वीकार कर लिया और उसका उत्तम ढंग से पालन-बर्धन किया और ज़करिया को उसका अभिभावक ठहराया । जब कभी भी ज़करिया ने उसके पास मेहराब (उपासना-कक्ष) में प्रवेश किया तो उसने उसके पास कोई

---

* जब इम्रान की स्त्री ने अपने हाँ पैदा होने वाली बच्ची (हज़रत मरियम) के विषय में कहा कि यह तो लड़की है हालाँकि मैंने अल्लाह से लड़का माँगा था । अल्लाह तआला उत्तर देता है कि, अल्लाह भली-भाँति जानता है कि लड़का और लड़की अलग-अलग होते हैं । परन्तु यह लड़की जो तुम्हें प्रदान की गई है, यह साधारण लड़कियों की भाँति नहीं है इसमें अल्लाह तआला ने यह क्षमता रख दी है कि बिना दांपत्य सम्बन्ध के इसका बच्चा पैदा हो सकता है ।

عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

भोजन पाया । उसने कहा हे मरियम ! तेरे पास यह कहाँ से आता है ? उसने (उत्तर में) कहा यह अल्लाह की ओर से है । निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है बिना हिसाब के जीविका प्रदान करता है ।38।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾

इस अवसर पर ज़करिया ने अपने रब्ब से दुआ की, हे मेरे रब्ब ! मुझे अपनी ओर से पवित्र संतान प्रदान कर । निस्संदेह तू बहुत दुआ सुनने वाला है ।39।

فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٠﴾

अत: फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी जबकि वह मेहराब में खड़ा उपासना कर रहा था, कि अल्लाह तुझे यह्या की खुशख़बरी देता है जो अल्लाह की एक महान वाक्य की पुष्टि करने वाला होगा और वह सरदार और अपने अन्त:करण की पूरी सुरक्षा करने वाला, और सदाचारियों में से एक नबी होगा ।40।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤١﴾

उसने कहा हे मेरे रब्ब ! मेरा कैसे पुत्र होगा जबकि मुझ पर बुढ़ापा आ गया है और मेरी पत्नी बांझ है । उसने कहा इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है करता है ।41।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤٢﴾ ع ١١/١٢

उसने कहा हे मेरे रब्ब ! मेरे लिए कोई चिह्न निश्चित कर दे । उसने कहा तेरा चिह्न यह है कि केवल इशारों के अतिरिक्त तू तीन दिन लोगों से बात न करे और अपने रब्ब को बहुत अधिकता से याद कर और शाम को और सुबह को उसका गुणगान कर ।42। (रुकू $\frac{4}{12}$)

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾

और जब फ़रिश्तों ने कहा, हे मरियम ! निस्संदेह अल्लाह ने तुझे चुन लिया है और तुझे पवित्र कर दिया है और तुझे समग्र जगत की स्त्रियों पर श्रेष्ठता प्रदान की है ।43।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِىْ وَارْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٤﴾

हे मरियम ! अपने रब्ब की आज्ञाकारिणी हो जा और सजदः कर और झुकने वालों के साथ झुक जा ।44।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

यह अदृष्ट समाचारों में से है जो हम तेरी ओर वह्इ कर रहे हैं और तू उनके पास नहीं था जबकि वे इस विषय पर पर्ची डाल रहे थे कि उनमें से कौन मरियम का भरण-पोषण करेगा और तू उनके पास नहीं था जब वे (इस विषय में) झगड़ रहे थे ।45।

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖۗ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۙ﴿٤٦﴾

जब फ़रिश्तों ने कहा हे मरियम ! निस्संदेह अल्लाह तुझे अपनी ओर से एक पवित्र कलिमा का शुभ-समाचार देता है जिसका नाम मरियम का पुत्र ईसा मसीह होगा । (जो) इहलोक और परलोक में प्रतिष्ठित और (अल्लाह के) निकटस्थों में से होगा ।46।*

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٧﴾

और वह लोगों से पालने में और अधेड़ आयु में भी बातें करेगा और पाकबाज़ों में से होगा ।47।**

---

* यहाँ **कलिमा** (वचन) से अभिप्राय अल्लाह तआला का **कुन** (हो जा) कहना है परन्तु ईसाइयों की ओर से यह अर्थ किया जाता है कि केवल मसीह अल्लाह के कलिमा थे, शेष सारे नबी उनसे कमतर थे । वे बाइबिल की इस आयत से तर्क देते हैं कि ''आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था'' (युहन्ना 1:1) क़ुरआन करीम इसका ज़ोरदार खण्डन सूरः अल कहफ़ के अन्त में करता है कि अल्लाह तआला के तो इतने कलिमे हैं कि यदि समुद्र सियाही बन जाए और उसी प्रकार के और समुद्र भी आ जाएँ तो अल्लाह तआला के कलिमे समाप्त नहीं हो सकते । अतः **कलिमा** के ग़लत अर्थ निकाल कर हज़रत मसीह अलै. को मनुष्य से ऊँचा दिखाया गया है ।

** इस आयत की एक व्याख्या यह की जाती है कि वह पालने में भी बात किया करता था और नबी→

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ
يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ
مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ
كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۸﴾

उस ने कहा हे मेरे रब्ब ! मुझे कैसे बेटा होगा, जबकि किसी मनुष्य ने मुझे नहीं छुआ । उसने कहा इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है । जब वह किसी बात का निर्णय कर ले तो उसे केवल यह कहता है कि ''हो जा'' तो वह होने लगता है और हो कर रहता है ।48।

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ
وَالْاِنْجِيْلَ ﴿۴۹﴾ۚ

और वह उसे पुस्तक और तत्त्वज्ञान और तौरात और इंजील की शिक्षा देगा ।49।

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْۤ اَخْلُقُ
لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ
فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ
الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ
اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا
تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

और वह बनी इस्राईल की ओर रसूल होगा (यह संदेश देते हुए) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक चिह्न ले कर आया हूँ कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षियों के रूप में पैदा करूँगा । फिर मैं उसमें फुँकूँगा तो (साथ ही) वह अल्लाह के आदेश से पक्षी (अर्थात् आध्यात्मिक पक्षी) बन जाएगा । और मैं जन्म-जात अंधे और श्वेतकुष्ठ रोगियों को आरोग्य प्रदान करूँगा और मैं अल्लाह के आदेश से (आध्यात्मिक) मुर्दों को ज़िंदा करूँगा और मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम क्या खाओगे और अपने घरों में क्या इकट्ठा करोगे । यदि तुम ईमान लाने

←होने का दावेदार था । यदि ऐसी बात होती तो यहूदी उसका बचपन में ही वध कर देते । वास्तव में पालने में वह अपने स्वप्न बताता था तथा पालने में खेलने वाले छोटे बच्चे अच्छे स्वप्न देख भी सकते हैं और सुना भी सकते हैं । परन्तु नुबुव्वत उनको अधेड़ आयु में ही प्रदान की गई और उस समय यहूदियों ने विरोध आरम्भ कर दिया ।

لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۵۰﴾

वाले हो तो निस्संदेह इसमें तुम्हारे लिए एक बड़ा चिह्न है ।50।*

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۵۱﴾

और उसके सत्यापक के रूप में आया हूँ जो तौरात में से मेरे सामने है ताकि मैं उन चीज़ों में से जो तुम्हारे लिए हराम कर दी गई थीं कुछ तुम्हारे लिए हलाल घोषित कर दूँ । और मैं तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारे पास एक (बड़ा) चिह्न लेकर आया हूँ । अतः अल्लाह का तक़्वा अपनाओ और मेरा आज्ञापालन करो ।51।

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۵۲﴾

निस्संदेह अल्लाह मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । अतः उसी की उपासना करो (और) यही सन्मार्ग है ।52।

فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۳﴾

अतः जब ईसा ने उनमें इनकार (का रुझान) अनुभव किया तो उसने कहा, कौन अल्लाह की ओर (बुलाने में) मेरे सहायक होंगे ? हवारियों ने कहा हम अल्लाह के सहायक हैं, हम अल्लाह पर ईमान ले आए हैं और तू गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हैं ।53।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ

हे हमारे रब्ब ! हम उस पर ईमान ले आए जो तूने उतारा और हमने रसूल का

---

* इस आयत में सारी बातें व्याख्या के योग्य हैं । मिट्टी को फूंक कर उड़ने वाला पक्षी बना देना इस बात की उपमा है कि हज़रत मसीह अलै. की फूँक से संसारिक लोग आध्यात्मिक ऊँचाइयों में उड़ान भरने लगे । इसी प्रकार जन्म-जात श्वेतकुष्ठ रोगी और अंधे वे लोग हैं, जिनके मन कोढ़ ग्रस्त हों और कुछ न देख सकें जैसा कि क़ुर्आन करीम की अधिकांश आयतों से पता चलता है कि अंधों से अभिप्राय भौतिक अंधे नहीं बल्कि दिल के अंधे हैं । मुर्दों को ज़िन्दा करने से भी यही अभिप्राय है कि आध्यात्मिक मुर्दों को आध्यात्मिक जीवन प्रदान किया जाए । **मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम क्या खाओगे** से अभिप्राय संभवतः खान-पान की शिक्षा है और यह वर्णन किया गया है कि हज़रत ईसा अलै. अपनी जाति को निर्देश दिया करते थे कि क्या चीज़ खाओ और किस चीज़ से बचो ।

فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٤﴾

अनुसरण किया । अतः हमें (सत्य की) गवाही देने वालों में लिख दे ।54।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٥﴾ ع

और उन्होंने (अर्थात् मसीह के इनकार करने वालों ने भी) योजना बनाई और अल्लाह ने भी योजना बनाई और अल्लाह योजना बनाने वालों में सर्वोत्तम है ।55। (रुकू $\frac{5}{13}$)

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٦﴾

जब अल्लाह ने कहा हे ईसा ! निस्संदेह मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ और अपनी ओर तेरा उत्थान करने वाला हूँ और तुझे उन लोगों से निथार कर अलग करने वाला हूँ जो काफ़िर हुए, और उन लोगों को जिन्होंने तेरा अनुसरण किया है, उन लोगों पर जिन्होंने इनकार किया है क़यामत के दिन तक प्रभुत्व प्रदान करने वाला हूँ । फिर मेरी ही ओर तुम्हारा लौट कर आना है जिसके बाद मैं तुम्हारे बीच उन बातों का फ़ैसला करूँगा जिनमें तुम मतभेद किया करते थे ।56।*

فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

अतः जहाँ तक उन लोगों का सम्बन्ध है जिन्होंने इनकार किया, तो उनको मैं इस लोक में भी और परलोक में भी कठोर अज़ाब दूँगा और उनके कोई सहायक नहीं होंगे ।57।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो उनको वह उनके भरपूर

---

* यहाँ **मुतवफ़्फ़ीका** (मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ) पहले आया है और **राफ़िउका** (अपनी ओर तेरा उत्थान करूँगा) बाद में आया है । यद्यपि **राफ़िउका** शब्द से अभिप्राय दर्जेका बढ़ना होता है परन्तु जो ज़िद करते हैं कि इससे सशरीर उत्थान करना अभिप्राय है उनके विरुद्ध यह मज़बूत तर्क है कि पहले मृत्यु हुई, बाद में उठाए गए, अतः प्रमाणित हुआ कि यहाँ आध्यात्मिक उत्थान अभिप्रेत है ।

فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٨

प्रतिफल देगा और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता ।58।

ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ۝٥٩

यह है वह जिसे हम आयतों और तत्त्वज्ञान पूर्ण अनुस्मरण में से तेरे सामने पढ़ते हैं ।59।

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۗ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٦٠

निस्संदेह ईसा का उदाहरण अल्लाह के निकट आदम के उदाहरण के समान है । उसे उस ने मिट्टी से पैदा किया, फिर उसे कहा कि 'हो जा' तो वह होने लगा (और हो कर रहा) ।60।*

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝٦١

(निश्चित रूप से यह) तेरे रब्ब की ओर से सत्य है । अतः तू संदेह करने वालों में से न बन ।61।

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ۝٦٢

अतः जो तुझ से इस विषय में तेरे पास ज्ञान आ जाने के बाद भी झगड़ा करे तो तू कह दे, आओ हम बुलायें अपने पुत्रों को और तुम्हारे पुत्रों को भी और अपनी स्त्रियों को और तुम्हारी स्त्रियों को भी और (हम) अपने आप को और तुम अपने आप को भी । फिर हम मुबाहलः करें** और झूठों पर अल्लाह की ला'नत डालें ।62।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ

निस्संदेह यही सच्चा वर्णन है और अल्लाह के सिवा और कोई उपास्य नहीं।

---

* हज़रत आदम अलै. के साथ हज़रत ईसा अलै. का उदाहरण इसलिए दिया गया है कि हज़रत आदम अलै. भी आरम्भ में अल्लाह तआला के वाक्य **कुन** (हो जा) के परिणाम स्वरूप मिट्टी से पैदा हुए थे। इस के बावजूद आप अलै. मनुष्य ही थे । हज़रत ईसा अलै. भी ख़ुदा तआला के वाक्य **कुन** के फलस्वरूप पैदा हुए हैं । इसलिए आप भी मनुष्य ही हैं ।

यहाँ **कुन फ़यकून** (हो जा तो वह होने लगा) से मनुष्य जन्म के आरम्भ की ओर संकेत है और तात्पर्य यह है कि जब अल्लाह तआला ने मनुष्य को पैदा करने का इरादा किया तो कहा 'हो जा' तो वह होने लगा और उसके लिए निश्चित था कि वह अपनी सृष्टि की पूर्णता को प्राप्त होने तक होता रहे ।

** अर्थात एक दूसरे के विरुद्ध अमंगल की दुआ करें ।

إِلَّا اللّٰهُ ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٣﴾
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾ ع

और निस्संदेह अल्लाह ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।63।
फिर यदि वे मुँह फेर लें तो अवश्य (जान लो कि) अल्लाह उपद्रवियों को भली-भाँति जानता है ।64। (रुकू $\frac{6}{14}$)

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ
سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللّٰهَ
وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا
بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا
فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٥﴾

तू कह दे हे अहले किताब ! उस बात की ओर आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच सांझी है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना नहीं करेंगे और न ही किसी चीज़ को उसका साझीदार ठहराएँगे और हम में से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब्ब नहीं बनाएगा। अतः यदि वे फिर जाएँ तो तुम कह दो कि गवाह रहना कि निश्चित रूप से हम मुसलमान हैं ।65।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ
وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ
بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٦﴾

हे अहले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो ? हालाँकि तौरात और इंजील उसके बाद उतारी गईं। अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।66।

هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ
عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ
عِلْمٌ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

सुनो ! तुम ऐसे लोग हो कि उस विषय में झगड़ते हो जिसका तुम्हें ज्ञान है । तो फिर ऐसी बातों में क्यों झगड़ते हो जिनका तुम्हें कोई ज्ञान ही नहीं । और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।67।

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا
وَلَٰكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٨﴾

इब्राहीम न तो यहूदी था न ईसाई बल्कि वह तो (सदा अल्लाह की ओर) झुकने वाला आज्ञाकारी था और वह (कदापि) मुश्रिकों में से नहीं था ।68।

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

निस्संदेह इब्राहीम के अधिक निकट तो वही लोग हैं जिन्होंने उसका अनुसरण किया और यह नबी भी और वे लोग भी जो (इस पर) ईमान लाए। और अल्लाह मोमिनों का मित्र है।69।

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

अहले किताब मैं से एक गिरोह चाहता है कि काश वह तुम्हें पथभ्रष्ट कर सके। और वे स्वयं अपने सिवा किसी और को पथभ्रष्ट नहीं कर सकेंगे और वे समझ नहीं रखते।70।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧١﴾

हे अहले किताब ! तुम अल्लाह के चिह्नों को क्यों झुठलाते हो जबकि तुम देख रहे हो।71।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٢﴾ ع

हे अहले किताब ! तुम सच को झूठ के साथ क्यों संदिग्ध बनाते हो और तुम सच छिपाते हो हालाँकि तुम जानते हो।72। (रुकू $\frac{7}{15}$)

وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٣﴾

और अह्ले किताब में से एक गिरोह ने कहा कि जो मोमिनों पर उतारा गया है उस पर दिन के पहले भाग में ईमान ले आओ और उसके अंत में इनकार कर दो ताकि संभवतः वे लौट आयें।73।

وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ

और किसी की बात पर ईमान न लाओ सिवाय उसके जो तुम्हारे धर्म का अनुसरण करे। तू कह दे कि वास्तविक हिदायत तो अल्लाह ही की हिदायत है। यह (आवश्यक नहीं) कि किसी को वही कुछ दिया जाए जैसा तुम्हें दिया गया अथवा (यदि न दिया जाए तो मानो उनका अधिकार हो जाएगा कि) वे

तुम्हारे रब्ब के समक्ष तुम से झगड़ा करें।

اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۚۙ ۝٧٤

तू कह दे दया करना निश्चित रूप से अल्लाह के हाथ में है। वह उसे जिसको चाहता है देता है और अल्लाह बहुत समृद्धि प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है।74।

يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٧٥

वह अपनी दया के लिए जिसको चाहे चुन लेता है और अल्लाह बहुत बड़ा दयावान है।75।

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِى الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٧٦

और अहले किताब में से वह व्यक्ति भी है कि यदि तू ढेरों ढेर अमानत उसके पास रखवा दे तो वह अवश्य तुझे वापस कर देगा और उन में ऐसा व्यक्ति भी है कि यदि तू उसको एक दीनार भी दे तो वह उसे तुझे वापस नहीं करेगा, सिवाए इसके कि तू उस पर निगरान स्वरूप खड़ा रहे। यह इस कारण है कि वे कहते हैं कि हम पर अनपढ़ों के बारे में कोई (आरोप लगाने का) रास्ता नहीं और वे अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं जबकि वे (इस बात को) जानते हैं।76।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧٧

हाँ, क्यों नहीं! जिस ने भी अपने वचन को पूरा किया और तक़वा अपनाया तो अल्लाह मुत्तक़ियों से प्रेम करने वाला है।77।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ

निस्संदेह वे लोग जो अल्लाह के वचनों और अपनी क़समों को थोड़ी सी क़ीमतों में बेच देते हैं, यही हैं जिनका परलोक में कोई भाग न होगा और अल्लाह न उनसे बात करेगा और न क़यामत के दिन उन पर दृष्टि डालेगा और न उन्हें पवित्र

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٨﴾

करेगा और उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।78।

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٩﴾

और निस्संदेह उन (अहले किताब) में एक गिरोह ऐसा भी है जो पुस्तक पढ़ते समय अपनी ज़बानों को मरोड़ देता है ताकि तुम उसे पुस्तक में से समझो हालाँकि वह पुस्तक में से नहीं और वे कहते हैं कि वह अल्लाह की ओर से है जबकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता और वे अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं जबकि वे जानते हैं ।79।

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۙ﴿٨٠﴾

किसी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं कि अल्लाह उसे पुस्तक और तत्त्वज्ञान और नुबुव्वत दे, फिर वह लोगों से यह कहे कि अल्लाह के सिवा मेरी उपासना करने वाले बन जाओ । बल्कि (वह तो यही कहता है कि) रब्ब वाले हो जाओ, इस कारण कि तुम पुस्तक पढ़ाते हो और इस कारण कि तुम (उसे) पढ़ते हो ।80।

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ ع ٨/٩ ١٦

और न वह तुम्हें यह आदेश दे सकता है कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को ही रब्ब बना बैठो । क्या वह तुम्हें इनकार की शिक्षा देगा जबकि तुम आज्ञाकारी हो चुके हो ।81। (रुकू $\frac{8}{16}$)

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ

और जब अल्लाह ने नबियों से दृढ़ प्रतिज्ञा ली कि यद्यपि मैं तुम्हें पुस्तक और तत्त्वज्ञान दे चुका हूँ, फिर यदि कोई ऐसा रसूल तुम्हारे पास आए जो उस बात की पुष्टि करने वाला हो जो तुम्हारे पास है तो तुम अवश्य उस पर ईमान ले आओगे और अवश्य उसकी सहायता

وَاَخَذۡتُمۡ عَلٰی ذٰلِکُمۡ اِصۡرِیۡ ؕ قَالُوۡۤا اَقۡرَرۡنَا ؕ قَالَ فَاشۡہَدُوۡا وَاَنَا مَعَکُمۡ مِّنَ الشّٰہِدِیۡنَ ﴿۸۲﴾

करोगे । कहा, क्या तुम स्वीकार करते हो और इस बात पर मुझ से प्रतिज्ञा करते हो ? उन्होंने कहा, (हाँ) हम स्वीकार करते हैं । उसने कहा, अत: तुम गवाही दो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ ।82।*

فَمَنۡ تَوَلّٰی بَعۡدَ ذٰلِکَ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿۸۳﴾

अत: जो कोई इसके बाद फिर जाए तो यही दुराचारी लोग हैं ।83।

اَفَغَیۡرَ دِیۡنِ اللّٰہِ یَبۡغُوۡنَ وَلَہٗۤ اَسۡلَمَ مَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّکَرۡہًا وَّاِلَیۡہِ یُرۡجَعُوۡنَ ﴿۸۴﴾

क्या अल्लाह के धर्म के सिवा वे कुछ (और) पसंद करेंगे जबकि जो कुछ आकाशों और धरती में है स्वेच्छा पूर्वक और अनिच्छा पूर्वक उसका आज्ञाकारी हो चुका है और वे उसी की ओर लौटाए जाएँगे ।84।

قُلۡ اٰمَنَّا بِاللّٰہِ وَمَاۤ اُنۡزِلَ عَلَیۡنَا وَمَاۤ اُنۡزِلَ عَلٰۤی اِبۡرٰہِیۡمَ وَاِسۡمٰعِیۡلَ وَاِسۡحٰقَ وَیَعۡقُوۡبَ وَالۡاَسۡبَاطِ وَمَاۤ اُوۡتِیَ مُوۡسٰی وَعِیۡسٰی وَالنَّبِیُّوۡنَ مِنۡ رَّبِّہِمۡ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَیۡنَ اَحَدٍ مِّنۡہُمۡ ۫ وَنَحۡنُ لَہٗ مُسۡلِمُوۡنَ ﴿۸۵﴾

तू कह दे अल्लाह पर और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और जो इब्राहीम पर उतारा गया और इसमाईल पर और इसहाक़ पर और याक़ूब पर और (उसकी) संतानों पर और जो मूसा और ईसा को और जो नबियों को उनके रब्ब की ओर से दिया गया, हम ईमान ले आए। हम उनमें से किसी के बीच कोई अन्तर नहीं करते और हम उसी की आज्ञा का पालन करने वाले हैं ।85।

* क़ुरआन करीम में दो प्रतिज्ञाओं का वर्णन है । एक बनी इस्राईल की प्रतिज्ञा का और एक नबियों की प्रतिज्ञा का, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी ली गई थी । (सूर: अल् अहज़ाब : 8) इसका केन्द्रबिन्दु यह है कि जब तुम्हारे पास रसूल आएँ जो वही बातें कहें जो तुम कहते थे तो वचन दो कि कदापि उनका इनकार नहीं करोगे, बल्कि उनकी पुष्टि करोगे । यहाँ यह स्पष्टीकरण आवश्यक है कि नबियों की ओर तो रसूल भेजे नहीं जाते, उनकी जातियों के पास रसूल आते हैं । अत: यही अभिप्राय है कि अपनी जाति को उपदेश देते रहें कि जब भी तुम्हारे पास कोई रसूल आए जो मुझे सच्चा जानने वाला हो तो उसका इनकार नहीं करना बल्कि अवश्य उसकी सहायता करनी है।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

और जो भी **इस्लाम** के सिवा कोई धर्म पसन्द करे तो कदापि उससे स्वीकार नहीं किया जाएगा और परलोक में वह घाटा पाने वालों में से होगा ।86।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

भला कैसे अल्लाह ऐसे लोगों को हिदायत देगा जो अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए हों और वे गवाही दे चुके हों कि यह रसूल सच्चा है और उनके पास खुले-खुले प्रमाण आ चुके हों और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।87।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٨﴾

यही वे लोग हैं जिनका प्रतिफल यह है कि उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सब लोगों की ला'नत है ।88।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं। उनसे अज़ाब को हल्का नहीं किया जाएगा और न वे कोई ढील दिए जाएँगे ।89।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٠﴾

सिवाए उनके, जिन्होंने इसके बाद प्रायश्चित किया और सुधार कर लिया तो निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।90।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿٩١﴾

निस्संदेह वे लोग जिन्होंने अपने ईमान लाने के बाद इनकार किया, फिर इनकार में बढ़ते गए, उनका प्रायश्चित कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और यही वे लोग हैं जो पथभ्रष्ट हैं ।91।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ

निस्संदेह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और मर गए जबकि वे काफ़िर थे। उनमें से किसी से धरती के बराबर भी सोना

الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٩٢ ع

कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा यद्यपि वे उसे मुक्तिमूल्य के रूप में देना चाहे । यही वे लोग हैं जिनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है और उनके कोई सहायक नहीं होंगे ।92।

(रुकू $\frac{9}{17}$)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٩٣﴾

तुम कदापि नेकी प्रात नहीं कर सकोगे जब तक कि तुम उन वस्तुओं में से खर्च न करो जिनसे तुम प्रेम करते हो और तुम जो कुछ भी खर्च करते हो तो निस्संदेह अल्लाह उसको ख़ूब जानता है ।93।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾

समस्त प्रकार के भोजन बनी इस्राईल के लिए वैध थे सिवाए उनके जिन्हें स्वयं इस्राईल ने अपने ऊपर अवैध कर लिए इससे पहले कि तौरात उतारी जाती । तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और उसे पढ़ (कर देख) लो ।94।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٥﴾

अत: जो भी इसके बाद अल्लाह पर झूठ गढ़े तो यही लोग ही अत्याचारी हैं ।95।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٦﴾

तू कह, अल्लाह ने सच्च कहा । अत: (अल्लाह की ओर) झुकने वाले इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करो और वह मुश्रिकों में से नहीं था ।96।

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٧﴾ ۚ

निस्संदेह पहला घर जो मानव जाति (के लाभ) के लिए बनाया गया वह **बक्का** में है । (वह) समस्त जगत के लिए मंगलमय और हिदायत का कारण बनाया गया ।97।*

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ

इसमें खुले-खुले चिह्न हैं (अर्थात्) इब्राहीम का स्थान । और जो भी इसमें

---

* यहाँ **अव्व-ल बैतिन्** (प्रथम गृह) को लोगों के लाभ लिए कहा गया है, अल्लाह के लिए नहीं कहा गया । इसमें यह संकेत है कि मनुष्य गुफाओं से निकल कर जब धरती के ऊपर बसने लगा तो ख़ाना का'बा का प्रथम निर्माण ही उसको सभ्यता और शिष्टाचार सिखाने का साधन बना । इसी कारण यहाँ मक्का नहीं कहा बल्कि **बक्का** कहा, जो मक्का का प्राचीनतम नाम है ।

وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ
حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ
وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۸﴾

प्रविष्ट हुआ वह शांति पाने वाला बन गया । और लोगों पर अल्लाह का अधिकार है कि वे (उसके) घर का हज्ज करें (अर्थात्) जो भी उस (घर) तक जाने का सामर्थ्य रखता हो । और जो इनकार कर दे तो निस्संदेह अल्लाह समस्त संसार से बे-परवाह है ।98।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۹﴾

(उनसे) कह दे, हे अह्ले किताब ! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इनकार करते हो जबकि अल्लाह उस पर गवाह है जो तुम करते हो ।99।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ
شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

(और) कह दे, हे अह्ले किताब ! जो ईमान लाया है तुम उसे अल्लाह के मार्ग से क्यों रोकते हो, यह चाहते हुए कि इस (मार्ग) में कुटिलता पैदा कर दो जबकि तुम (वास्तविकता पर) गवाह हो और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं ।100।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ
اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۱﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! यदि तुमने उन लोगों में से जिन्हें पुस्तक दी गई किसी गिरोह का आज्ञापालन किया तो वे तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के बाद (एक बार फिर) काफ़िर बना देंगे ।101।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ
بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِىَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۰۲﴾ ع

और तुम कैसे इनकार कर सकते हो जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उसका रसूल (मौजूद) है । और जो दृढ़ता से अल्लाह को पकड़ ले तो निस्सन्देह वह सीधे मार्ग की ओर हिदायत दिया गया ।102।

(रुकू $\frac{10}{1}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٣﴾

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का ऐसा तक़वा धारण करो जैसा उसके तक़वा का अधिकार है और पूर्ण आज्ञाकारी होने की अवस्था के बिना कदापि न मरो ।103।*

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾

और अल्लाह की रस्सी को सब के सब दृढ़ता से पकड़ लो और मतभेद न करो और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो कि जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे तो उसने तुम्हारे दिलों को परस्पर बांध दिया और फिर उसकी नेमत से तुम भाई-भाई हो गए । और तुम आग के गढ़े के किनारे पर (खड़े) थे तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर वर्णन करता है । ताकि सम्भवतः तुम हिदायत पा जाओ ।104।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअत हो । वे भलाई की ओर बुलाते रहें और अच्छी बातों की शिक्षा दें और बुरी बातों से रोकें । और यही वे हैं, जो सफल होने वाले हैं ।105।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

और उन लोगों की भाँति न बनो जो अलग-अलग हो गए और उन्होंने मतभेद किया, इसके बाद भी कि उनके पास स्पष्ट चिह्न आ चुके थे । और यही वे हैं जिन के लिए बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।106।

---

* **तुम पूर्ण आज्ञाकारी होने की अवस्था के बिना कदापि न मरो** का यह अर्थ नहीं है कि मरने से पूर्व मुसलमान (आज्ञाकारी) हो जाओ क्योंकि मृत्यु तो मनुष्य के वश में नहीं है । इससे यह अभिप्राय है कि कभी भी जीवन के किसी भाग में भी इस्लाम को नहीं छोड़ना ताकि जब भी तुम पर मृत्यु आए इस्लाम पर ही आए ।

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۣ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾

जिस दिन कुछ चेहरे उज्ज्वल हो जाएँगे और कुछ चेहरे काले पड़ जाएँगे । अतः वे लोग जिनके चेहरे काले पड़ गए (उनसे कहा जाएगा) क्या तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए थे ? अतः अज़ाब को चखो, इस कारण कि तुम इनकार किया करते थे ।107।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ۭ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٨﴾

और जहाँ तक उन लोगों का सम्बन्ध है जिनके चेहरे उज्ज्वल हो गए तो वे अल्लाह की करुणा में होंगे । वे उसमें सदा रहने वाले हैं ।108।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

ये अल्लाह की आयतें हैं । हम इन्हें तेरे सामने सच्चाई के साथ पढ़ते हैं और अल्लाह समस्त लोकों के लिए कोई अत्याचार नहीं चाहता ।109।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١١٠﴾ ع

और अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों में है और जो धरती में है और अल्लाह ही की ओर समस्त मामले लौटाए जाएँगे ।110। (रुकू $\frac{11}{2}$)

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۭ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١١﴾

तुम सर्वश्रेष्ठ उम्मत (जाति) हो जो समस्त मनुष्यों के लाभ के लिए उत्पन्न की गई हो । तुम अच्छी बातों का आदेश देते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो । और यदि अह्ले किताब भी ईमान ले आते तो यह उनके लिए बहुत अच्छा होता । उनमें मोमिन भी हैं परन्तु अधिकतर उन में पापी लोग हैं ।111।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۭ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ

वे तुम्हें मामूली कष्ट के अतिरिक्त कदापि हानि नहीं पहुँचा सकेंगे । और यदि वे तुम से युद्ध करेंगे तो अवश्य तुम्हें

لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

पीठ दिखा जाएँगे । फिर उन्हें सहायता नहीं दी जाएगी ।112।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٣﴾

जहाँ कहीं भी वे पाए गए उन पर तिरस्कार (की मार) डाली गई । सिवाए उनके जो अल्लाह के वचन और लोगों के वचन (की शरण) में हैं और वे अल्लाह के प्रकोप के साथ वापस लौटे और उन पर विवशता (की मार) डाली गई । यह इस कारण हुआ कि वे अल्लाह के चिह्नों का इनकार किया करते थे और वे नबियों का अकारण घोर विरोध करते थे। यह इसलिये हुआ क्योंकि उन्होंने अवज्ञा की और वे सीमा का उल्लंघन किया करते थे ।113।*

لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٤﴾

वे सब एक समान नहीं । अहले किताब में से एक समुदाय (अपने सिद्धान्त पर) स्थित है । वे रात के समय अल्लाह की आयतों का पाठ करते हैं और वे सजद: कर रहे होते हैं ।114।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٥﴾

वे अल्लाह पर और अन्तिम दिवस पर ईमान लाते हैं और अच्छी बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं और यही वे लोग हैं जो सदाचारियों में से हैं ।115।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٦﴾

और जो भी नेकी वे करेंगे कदापि उनसे उसके विषय में कृतघ्नता का व्यवहार नहीं किया जाएगा और अल्लाह मुत्तक़ियों को भली-भाँति जानता है ।116।

* अरबी शब्द **क़तल** का अर्थ घोर-विरोध करने और सामाजिक बहिष्कार करने के भी होते हैं । (देखें लिसान-उल-अरब)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

निस्सन्देह जिन लोगों ने इनकार किया उनके धन और उनकी संतान उन्हें अल्लाह से बचाने में कुछ भी काम नहीं आएँगे । और यही वे लोग हैं जो आग वाले हैं । वे इसमें एक बहुत लम्बी अवधि तक रहने वाले हैं ।117।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

इस संसार के जीवन में वे जो भी खर्च करते हैं उसका उदाहरण एक ऐसी हवा की भाँति है जिसमें खूब सर्दी हो जो ऐसे लोगों की खेती पर (विपत्ति बन कर) पड़े जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया हो और वह उसे नष्ट कर दे । और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वे स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार करते हैं ।118।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۹﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने लोगों को छोड़ कर दूसरों को अंतरंग मित्र न बनाओ । वे तुमसे बुराई करने में कोई कमी नहीं करते । वे पसन्द करते हैं कि तुम कठिनाई में पड़ो । निस्सन्देह द्वेषभाव उनके मुहों से प्रकट हो चुका है और जो कुछ उनके दिल छिपाते हैं वे उससे भी बढ़कर है । यदि तुम विवेक रखते हो तो निस्सन्देह हम तुम्हारे लिए आयतों को खोल-खोल कर वर्णन कर चुके हैं ।119।

هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ

तुम ऐसे विचित्र (लोग) हो कि उनसे प्रेम करते हो जबकि वे तुमसे प्रेम नहीं करते और तुम पूरी पुस्तक पर ईमान लाते हो । और जब वे तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं

الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۲۰﴾

और जब अलग होते हैं तो तुम्हारे विरुद्ध क्रोध से अपनी उंगलियों के पोरों को काटते हैं । तू कह दे कि अपने ही क्रोध से मर जाओ । निस्सन्देह अल्लाह सीनों की बातों का ख़ूब ज्ञान रखता है ।120।

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫ وَ اِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۱﴾ ع

यदि तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है और यदि तुम पर कोई विपत्ति पड़े तो उससे प्रसन्न होते हैं । और यदि तुम धैर्य धरो और तक़्वा धारण करो तो उनकी योजना तुम्हें कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेगी । जो वे करते हैं निस्संदेह अल्लाह उसको घेरे हुए है ।121।

(रुकू $\frac{12}{3}$)

وَ اِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۙ﴿۱۲۲﴾

और (याद कर) जब तू मोमिनों को (उनकी) लड़ाई के ठिकानों पर बिठाने के लिए सवेरे अपने घर वालों से अलग हुआ और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।122।

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَ اللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि वे कायरता दिखाएँ हालाँकि अल्लाह दोनों का मित्र था । और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिए ।123।

وَ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

और निस्सन्देह अल्लाह **बद्र** (की लड़ाई) में तुम्हारी सहायता कर चुका है जबकि तुम कमज़ोर थे । अत: अल्लाह का तक़्वा धारण करो ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट कर सको ।124।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ

जब तू मोमिनों से यह कह रहा था कि क्या तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं

يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٥﴾

होगा कि तुम्हारा रब्ब तीन हज़ार उतारे जाने वाले फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करे ? ।125।

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ
فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ
اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

क्यों नहीं ! यदि तुम धैर्य धरो और तक़वा धारण करो, जब वे अपने इसी जोश में (उफनते हुए) तुम पर टूट पड़ें तो तुम्हारा रब्ब पाँच हज़ार अज़ाब देने वाले फ़रिश्तों के साथ तुम्हारी सहायता करेगा ।126।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ
وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا النَّصْرُ
اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٧﴾

और अल्लाह ने यह (वादा) केवल तुम्हें शुभ संदेश देने के लिए किया है ताकि इससे तुम्हारे दिल संतुष्टि अनुभव करें और (वास्तविकता यह है कि) सहायता केवल अल्लाह ही की ओर से मिलती है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।127।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ
يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٨﴾

ताकि वे लोग जिन्होंने इनकार किया, वह उनके एक भाग को काट फैंके अथवा उनको घोर अपमानित कर दे, फिर वे असफल वापस लौटें ।128।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ
عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٩﴾

तेरे पास कुछ अधिकार नहीं, चाहे वह उन पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुक जाए अथवा उन्हें अज़ाब दे, हर हाल में वे अत्याचारी लोग हैं ।129।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٣٠﴾

और अल्लाह ही का है जो आकाशों में है और जो धरती में है । वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है अज़ाब देता है । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।130।

(रुकू 13/4)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۱۳۱﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! बढ़ा चढ़ा कर ब्याज न खाया करो और अल्लाह का तक़वा धारण करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।131।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۚ﴿۱۳۲﴾

और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है ।132।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۚ﴿۱۳۳﴾

और अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो ताकि तुम पर दया की जाये ।133।

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۱۳۴﴾

और अपने रब्ब की क्षमा और उस स्वर्ग की ओर दौड़ो जिसका विस्तार आकाशों और धरती पर फैला है । वह मुत्तक़ियों के लिए तैयार किया गया है ।134।*

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۚ﴿۱۳۵﴾

(अर्थात) वे लोग जो खुशहाली में खर्च करते हैं और तंगी में भी । और क्रोध को पी जाने वाले और लोगों से क्षमापूर्ण व्यवहार करने वाले हैं और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है ।135।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا

और वे लोग जो यदि कोई अश्लील कर्म कर बैठें अथवा अपने आप पर (कोई) अत्याचार करें, फिर वे अल्लाह का (बहुत) स्मरण करते हैं और अपने पापों के लिए क्षमा याचना करते हैं

---

* इस आयत से ज्ञात होता है कि स्वर्ग कहीं आकाश के ऊपर कोई पृथक स्थान नहीं है । क्योंकि इस आयत में बताया गया है कि धरती और आकाश की जितनी चौड़ाई है स्वर्ग की चौड़ाई भी वैसी ही है। जब यह आयत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा के सामने पढ़ कर सुनाई तो एक सहाबी ने पूछा कि हे अल्लाह के रसूल ! यदि धरती और आकाश पर स्वर्ग ही छाया है तो फिर नरक कहाँ है ? तो आप सल्ल. ने वर्णन किया **सुब्हानल्लाहि फ़ ऐनल्लै लु इज़ा जाअन्नहारु** (मसनद अहमद बिन हम्बल, मसनद-उल-मकीन, हदीस सं. 15100, और तफ़सीर कबीर, इमाम राज़ी रहि.) अर्थात पवित्र है अल्लाह ! जब दिन आता है तो रात कहाँ होती है । अर्थात नरक भी वहीं है परन्तु तुम्हें इसकी समझ नहीं । अत: यह कल्पना झूठ है कि स्वर्ग और नरक के लिए अलग-अलग क्षेत्र हैं । एक ही ब्रह्मांड में स्वर्गवासी भी रह रहे हैं और नरक् वासी भी ।

اللّٰهُ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

और अल्लाह के सिवा कौन है जो पाप क्षमा करता है । और जो कुछ वे कर बैठे हों उस पर जानते बूझते हुए हठ नहीं करते ।136।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٧﴾

यही वे लोग हैं जिनका प्रतिफल उनके रब्ब की ओर से क्षमादान है और ऐसे स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं और कर्म करने वालों का क्या ही अच्छा प्रतिफल है ।137।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾

निस्सन्देह तुम से पहले कई सुन्नतें (आचार-पद्धतियाँ) गुज़र चुकी हैं । अतः धरती में भ्रमण करो और देखो कि झुठलाने वालों का अन्त कैसा था ।138।

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٩﴾

यह लोगों के लिए (खोटे-खरे में अन्तर कर देने वाला) एक वर्णन है और मुत्तक़ियों के लिए हिदायत और उपदेश है ।139।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٠﴾

और यदि तुम मोमिन हो तो कमज़ोरी न दिखाओ और शोक न करो जबकि तुम ही (अवश्य) विजय पाने वाले हो ।140।

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۗ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۙ ﴿١٤١﴾

यदि तुम्हें कोई आघात लगा है तो वैसा ही आघात (प्रदिद्वंद्वी) जाति को भी तो लगा है । और ये वे दिन हैं जिन्हें हम लोगों के बीच अदलते-बदलते रहते हैं ताकि अल्लाह उनको जाँच ले जो ईमान लाए और तुम में से कुछ को शहीदों के रूप में अपना ले । और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता ।141।

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾

और ताकि अल्लाह उन लोगों को जो मोमिन हैं ख़ूब पवित्र कर दे और काफ़िरों को मिटा डाले ।142।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٣﴾

क्या तुम समझते हो कि तुम स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओगे जबकि अल्लाह ने तुम में से जिहाद करने वालों को अभी परखा नहीं और (अल्लाह का यह नियम इस कारण है) ताकि वह धैर्य धरने वालों को जाँच ले ।143।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٤﴾ ع

और निस्सन्देह तुम मृत्यु को प्राप्त करने से पूर्व ही उस की इच्छा किया करते थे । अतः अब तुमने उसे इस अवस्था में देख लिया है कि (स्तब्ध होकर) देखते रह गए हो ।144। (रुकू $\frac{14}{5}$)

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

और **मुहम्मद** केवल एक रसूल है । निस्सन्देह इससे पूर्व रसूल गुज़र चुके हैं। अतः क्या यदि यह भी मृत्यु पा जाए अथवा वध कर दिया जाए तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे ? और जो भी अपनी एड़ियों के बल फिर जाएगा तो वह कदापि अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेगा । और निस्सन्देह अल्लाह कृतज्ञों को प्रतिफल देगा ।145।*

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ

और अल्लाह के आदेश के बिना किसी जीवधारी के लिए मरना सम्भव नहीं है ।

* इस आयत में हज़रत ईसा अलै. की मृत्यु की निश्चित रूप से घोषणा की गई है जैसा कि वर्णन किया कि मुहम्मद भी अल्लाह के रसूल हैं और रसूल से बढ़ कर कुछ नहीं और आप सल्ल. से पहले जितने भी रसूल थे, सब मृत्यु पा चुके हैं । अरबी में **ख़ला** शब्द जब निश्चित रूप से किसी के सम्बन्ध में बोला जाए तो उससे अभिप्राय ऐसा गुज़रना नहीं जैसे यात्री गुज़रता है बल्कि गुज़र जाने से अभिप्राय मृत्यु को प्राप्त करना है । अतः यदि ईसा अलै. अल्लाह के रसूल थे तो अवश्य मृत्यु प्राप्त कर चुके हैं।

كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا
نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ
نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾

यह एक निश्चित लेख है और जो कोई संसारिक प्रतिफल चाहे हम उसे उसमें से प्रदान करते हैं और जो कोई परकालीन प्रतिफल चाहे हम उसे उसी में से प्रदान करते हैं और हम कृतज्ञों को निस्सन्देह प्रतिफल देंगे ।146।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ
كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

और कितने ही नबी थे कि जिन के साथ मिल कर बहुत से ईश्वरनिष्ठ लोगों ने युद्ध किया । फिर वे उस संकट के कारण कदापि कमज़ोर नहीं पड़े जो अल्लाह के मार्ग में उन्हें पहुँचा । और उन्होंने कमज़ोरी नहीं दिखाई और वे (शत्रु के सामने) झुके नहीं और अल्लाह धैर्य धरने वालों से प्रेम करता है ।147।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا
اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْٓ اَمْرِنَا
وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٨﴾

और उनका कहना इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने विनती की, हे हमारे रब्ब! हमारे पाप और निजी मामलों में हमारे ज़्यादती भी क्षमा कर दे और हमारे क़दमों को दृढ़ता प्रदान कर और हमें काफ़िर लोगों के विरुद्ध सहायता प्रदान कर ।148।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ
الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٩﴾ ع

तो अल्लाह ने उन्हें संसार का प्रतिफल और परकाल का बहुत उत्तम प्रतिफल भी प्रदान किया और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है ।149।

(रुकू $\frac{15}{6}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ
فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! यदि तुमने उन लोगों का आज्ञापालन किया जो काफ़िर हुए तो वे तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल लौटा देंगे । फिर तुम हानि उठाते हुए लौटोगे ।150।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ
النّٰصِرِيْنَ ۝١٥١

बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा मित्र है और वह सब सहायता करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है ।151।

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ
سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَبِئْسَ
مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٥٢

हम अवश्य उन लोगों के दिलों में रोब डाल देंगे जिन्होंने इनकार किया, क्योंकि उन्होंने उसको अल्लाह का समकक्ष ठहराया जिसके विषय में उसने कोई भी दलील नहीं उतारी और उनका ठिकाना आग है और अत्याचारियों का क्या ही बुरा ठिकाना है ।152।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ
بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي
الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا
تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ
مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ
عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٥٣

और निस्सन्देह अल्लाह ने तुमसे अपना वादा सच कर दिखाया जब तुम उसके आदेश से उनका सर्वनाश कर रहे थे । यहाँ तक कि जब तुमने कायरता दिखाई और तुम वास्तविक आदेश के विषय में परस्पर झगड़ने लगे और तुमने इस के बावजूद भी अवज्ञा की कि उसने तुम्हें वह कुछ दिखला दिया था जो तुम पसन्द करते थे । तुम में ऐसे भी थे जो संसार की चाहत रखते थे और तुम में ऐसे भी थे जो परलोक की चाहत रखते थे । फिर उसने तुम्हें उनसे परे हटा लिया ताकि तुम्हें परखे और (जो भी हुआ) निस्सन्देह वह तुम्हें क्षमा कर चुका है और अल्लाह मोमिनों पर बहुत कृपा करने वाला है ।153।

اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓي اَحَدٍ
وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ
فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا

जब तुम भाग रहे थे और किसी की ओर भी मुड़ कर नहीं देखते थे और रसूल तुम्हारे दूसरे जत्थे में (खड़ा) तुम्हें बुला रहा था, तो अल्लाह ने तुम्हें एक शोक के बदले बड़ा शोक पहुँचाया ताकि तुम

عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٤﴾

उस पर जो तुम से जाता रहा और उस पीड़ा पर जो तुम्हें पहुँची, दुःखी न हो और अल्लाह उससे भली-भाँति अवगत है जो तुम करते हो ।154।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً
نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ
وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ
يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ
يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ
قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ
كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ
قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ
وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ
وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٥﴾

फिर उसने तुम पर शोक के पश्चात् सांत्वना प्रदान करने के लिये ऊंघ उतारी जो तुम में से एक समूह पर छा रही थी । जबकि एक वह समूह था कि जिन्हें उनके जानों ने चिंतित कर रखा था । वे अल्लाह के विषय में अज्ञानता पूर्वक धारणा करने की भाँति भूल धारणा कर रहे थे । वे कह रहे थे, क्या महत्वपूर्ण निर्णयों में हमारा भी कोई हस्तक्षेप है ? तू कह दे कि निस्सन्देह निर्णय का अधिकार पूर्णतया अल्लाह ही का है । वे अपने दिलों में वह बातें छिपाते हैं जो तुझ पर प्रकट नहीं करते । वे कहते हैं यदि हमें कुछ भी निर्णय का अधिकार होता तो हम कभी यहाँ (इस प्रकार) मारे न जाते । कह दे, यदि तुम अपने घरों में भी होते तो तुम में से वे जिनका वध होना निश्चित हो चुका होता, अवश्य अपने (पछाड़ खा कर) गिरने के स्थानों की ओर निकल खड़े होते और (यह इस कारण है) ताकि अल्लाह उसे खंगाले जो तुम्हारे सीनों में (छुपा) है और उसे ख़ूब निथार दे जो तुम्हारे दिलों में है और अल्लाह सीनों की बातों को ख़ूब जानता है ।155।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى

निस्सन्देह तुम में से वे लोग जो उस दिन फिर गए जिस दिन दो गिरोह भिड़ गये ।

الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٦﴾ ع

निस्सन्देह शैतान ने उन्हें फुसला दिया, कुछ ऐसे कर्मों के कारण जो उन्होंने किए । और निस्सन्देह अल्लाह उनको क्षमा कर चुका है । निश्चित रूप से अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत सहनशील है ।156। (रुकू $\frac{16}{7}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِى الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٧﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! उन लोगों की भाँति न बन जाओ जिन्होंने इनकार किया और अपने भाइयों के सम्बन्ध में जब उन्होंने धरती में कोई यात्रा की अथवा युद्ध के लिए निकले कहा, यदि वे हमारे साथ होते तो (यूँ) न मरते और न वध किए जाते । (उन्हें ढील दी जा रही है) ताकि अल्लाह इसे उनके दिलों में पश्चाताप बना दे । और अल्लाह ही है जो जीवित भी करता है और मारता भी है । और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस पर गहरी नज़र रखने वाला है ।157।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٨﴾

और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में वध किए जाओ अथवा (स्वभाविक रूप से) मर जाओ तो निस्सन्देह अल्लाह की क्षमा और दया उससे अत्युत्तम है जो वे इकट्ठा करते हैं ।158।

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٩﴾

और यदि तुम मर जाओ अथवा वध किए जाओ तो अवश्य अल्लाह ही की ओर इकट्ठे किए जाओगे ।159।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا

अतः अल्लाह की विशेष दया के कारण तू उनके प्रति नरम हो गया और यदि तू क्रुद्ध स्वभाव (और) कठोर हृदयी होता तो वे अवश्य तेरे पास से दूर भाग जाते ।

مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۚ
فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٦٠﴾

अतः उन्हें माफ़ कर और उनके लिए क्षमा की दुआ कर और (प्रत्येक) महत्वपूर्ण विषय में उनसे परामर्श कर । फिर जब तू (कोई) निर्णय कर ले तो फिर अल्लाह पर ही भरोसा कर । निस्सन्देह अल्लाह भरोसा करने वालों से प्रेम करता है ।160।*

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ
وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي
يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦١﴾

यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो कोई तुम पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता और यदि वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो उसके विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा ? और चाहिए कि मोमिन अल्लाह पर ही भरोसा करें ।161।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ ۗ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ
بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ
مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٢﴾

और किसी नबी के लिए संभव नहीं कि वह ख़यानत करे और जो भी ख़यानत करेगा वह अपनी ख़यानत का (कुपरिणाम) क़यामत के दिन अपने साथ लाएगा । फिर प्रत्येक जान को पूरा-पूरा दिया जाएगा जो उसने कमाया और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।162।

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْ بَاءَ

क्या वह व्यक्ति जो अल्लाह की इच्छा का अनुसरण करे उस की भाँति हो

* इस पवित्र आयत में सर्वप्रथम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कोमल हृदयी होने का उल्लेख है जैसा कि दूसरे स्थान पर वर्णन किया गया है, **मोमिनों के लिए अत्यन्त कृपालु और बार-बार दया करने वाला है** (अत तौबः 128) द्वितीयतः इस बात की घोषणा की गई है कि सहाबा रज़ि. किसी लालच के कारण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एकत्रित नहीं हुए थे और यदि हज़रत मुहम्मद सल्ल. दुनिया भर का ख़ज़ाना उन पर खर्च करते तो भी कदापि वे परवानों की भाँति इकट्ठा नहीं हो सकते थे । इस के बावजूद यह कहा गया कि महत्वपूर्ण विषयों में उनसे परामर्श भी कर लिया कर परन्तु निर्णय तेरा होगा और आवश्यक नहीं कि उनका परामर्श माना जाए । और जब तू निर्णय करे तो अल्लाह पर भरोसा रख कि वह अवश्य तेरा सहायक होगा ।

सकता है जो अल्लाह की नाराज़गी ले कर लौटे और उसका ठिकाना नरक हो? और वह तो लौट कर जाने का बहुत बुरा स्थान है ।163।

بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٣﴾

वे अल्लाह के निकट विभिन्न श्रेणियों में बटे हुए (लोग) हैं और जो वे करते हैं अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।164।

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٤﴾

निस्सन्देह अल्लाह ने मोमिनों पर उपकार किया जब उसने उनके अंदर उन्हीं में से एक रसूल आविर्भूत किया । वह उन के समक्ष उसकी आयतों का पाठ करता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें पुस्तक और तत्त्वज्ञान सिखाता है । जबकि इससे पहले वे निश्चित रूप से खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े थे ।165।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ ۚ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٥﴾ النصف

क्या जब भी तुम्हें कोई ऐसी विपत्ति पहुँचे कि तुम उससे दुगनी विपत्ति (शत्रु को) पहुँचा चुके हो, तो फिर भी यही कहोगे कि यह कहाँ से आ गई ? तू कह दे कि यह स्वयं तुम्हारी ही ओर से है । निश्चित रूप से अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।166।

اَوَ لَمَّاۤ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٦﴾

और जो कष्ट तुम्हें उस दिन पहुँचा, जब दो गिरोह (परस्पर) भिड़ गये थे तो वह अल्लाह के आदेश से था, ताकि वह मोमिनों को विशिष्ट कर दे ।167।

وَ مَاۤ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَ لِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿١٦٧﴾

और उन लोगों को भी जाँच ले जिन्होंने कपट किया और (जब) उनसे कहा

وَ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۖۚ وَ قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا

قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ۚ﴿۱۶۸﴾

गया, आओ अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो अथवा प्रतिरक्षा करो तो उन्होंने कहा कि यदि हम लड़ना जानते तो अवश्य तुम्हारे पीछे आते । वे उस दिन ईमान की तुलना में इनकार के अधिक निकट थे । वे अपने मुँह से ऐसी बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं और अल्लाह सबसे अधिक जानता है जो वे छिपा रहे हैं ।168।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۶۹﴾

वे लोग जो स्वयं बैठे रहे और अपने भाइयों के सम्बन्ध में कहा कि यदि ये हमारी बात मानते तो वध न किए जाते। तू कह, यदि तुम सच्चे हो तो स्वयं अपने ऊपर से मृत्यु को टाल कर तो दिखाओ ।169।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۙ﴿۱۷۰﴾

और जो लोग अल्लाह के मार्ग में वध किए गए उनको कदापि मृत न समझ, बल्कि (वे तो) जीवित हैं (और) उन्हें उनके रब्ब के पास जीविका प्रदान की जा ही है ।170।

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۱﴾

وقف لازم

उस पर बहुत प्रसन्न हैं जो अल्लाह ने अपनी कृपा से उन्हें दिया है और वे अपने पीछे रह जाने वालों के सम्बन्ध में, जो अभी उनसे नहीं मिले शुभ-समाचार पाते हैं कि उन्हें भी कोई भय नहीं होगा और वे शोकग्रस्त नहीं होंगे ।171।

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ﴿۱۷۲﴾

ع ۱۷/۸

वे अल्लाह की नेमत और करुणा के सम्बन्ध में शुभ समाचार पाते हैं और यह (शुभ-समाचार भी पाते हैं) कि अल्लाह मोमिनों का प्रतिफल नष्ट नहीं करेगा ।172। (रुकू $\frac{17}{8}$)

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۳﴾

वे लोग जिनको आघात पहुँचने के बाद भी उन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार का जवाब दिया, उनमें से उन लोगों के लिए जिन्होंने उपकार किया और तक़्वा धारण किया, बहुत बड़ा प्रतिफल है ।173।

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۴﴾

(अर्थात) वे जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे विरुद्ध लोग एकत्रित हो गए हैं अतः उनसे डरो, तो इस बात ने उनको ईमान में बढ़ा दिया और उन्होंने कहा हमें अल्लाह पर्याप्त है और (वह) क्या ही अच्छा कार्य-साधक है ।174।

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۷۵﴾

अतः वे अल्लाह की नेमत और करुणा ले कर लौटे, उन्हें कष्ट ने छुआ तक नहीं और उन्होंने अल्लाह की इच्छा का अनुसरण किया और अल्लाह अत्यधिक करुणा वाला है ।175।

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۶﴾

निस्सन्देह यह शैतान ही है जो अपने मित्रों को डराता है । अतः तुम उनसे न डरो और यदि तुम मोमिन हो तो मुझ से डरो ।176।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۷﴾

और तुझे वे लोग दु:ख में न डालें जो इनकार करने में तीव्रता से आगे बढ़ रहे हैं । निस्सन्देह वे कदापि अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे । अल्लाह यह चाहता है कि परलोक में उनका कुछ भी भाग न रखे और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।177।

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने ईमान के बदले इनकार को ख़रीद लिया, वे कदापि अल्लाह को कोई हानि नहीं

يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِىْ
لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ۗ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ
لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٩﴾

पहुँचा सकेंगे और उनके लिए बहुत कष्ट दायक अज़ाब (निश्चित) है ।178।
और जिन्होंने इनकार किया, वे कदापि यह धारणा न रखें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं, यह उनके लिए उत्तम है । हम तो उन्हें केवल इस कारण ढील दे रहे हैं ताकि वे पाप में और भी बढ़ जाएँ और उनके लिए अपमान जनक अज़ाब (निश्चित) है ।179।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ
اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ
الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى
الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ
تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٨٠﴾

अल्लाह ऐसा नहीं कि वह मोमिनों को इस अवस्था में छोड़ दे जिस पर तुम हो, यहाँ तक कि अपवित्र को पवित्र से निथार कर अलग कर दे और अल्लाह का यह विधान नहीं कि तुम (सब) को अदृष्ट (विषय) से अवगत करे । बल्कि अल्लाह अपने पैग़म्बरों में से जिसको चाहता है चुन लेता है । अतः अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यदि तुम ईमान ले आओ और तक़वा धारण करो तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है ।180।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۗ بَلْ هُوَ شَرٌّ
لَّهُمْ ۗ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۗ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ

और वे लोग जो उसमें कृपणता करते हैं जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से प्रदान किया है, कदापि न सोचें कि यह उन के लिए उत्तम है । बल्कि यह तो उनके लिए बहुत बुरा है । जिस (धन) में उन्होंने कृपणता से काम लिया क़यामत के दिन अवश्य उन्हें उसके तौक़ पहनाए जाएँगे । और अल्लाह ही के लिए आसामानों और धरती का स्वामित्व है । और जो तुम

وَالْاَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨١﴾ ع

करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।181। (रुकू $\frac{18}{9}$)

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨٢﴾

अल्लाह ने निश्चित रूप से उन लोगों का कथन सुन लिया जिन्होंने कहा कि अल्लाह दरिद्र है और हम धनवान हैं । हम अवश्य उसे जो उन्होंने कहा और उनके (द्वारा) नबियों का अन्यायपूर्वक घोर विरोध करने को भी लिख रखेंगे और हम कहेंगे, जलन वाला अज़ाब भुगतो ।182।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٣﴾ ج

यह इस कारण है कि जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और जबकि अल्लाह (अपने) भक्तों पर लेश-मात्र भी अत्याचार करने वाला नहीं ।183।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٤﴾

वे लोग जिन्होंने कहा कि निश्चित रूप से अल्लाह ने हमसे वचन ले रखा है कि हम तब तक कदापि किसी रसूल पर ईमान नहीं लाएँगे जब तक वह हमारे पास ऐसी क़ुर्बानी न ले आए जिसे आग खा जाए,* तू (उन से) कह दे कि मुझ से पहले भी तो रसूल तुम्हारे पास खुले-खुले चिह्न और वह बात भी ला चुके हैं जो तुम कहते हो। फिर तुमने क्यों उन्हें कठोर यातनाएँ दीं, यदि तुम सच्चे हो ।184।**

* यहूदियों की आस्था यह थी कि जो भी क़ुर्बानी अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत की जाए उसके स्वीकार होने का लक्षण यह है कि आकाश से आग बरसती है और उस क़ुर्बानी को खा जाती है । अतः इसके अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह माँग की गई कि ऐसी क़ुर्बानी करके दिखा जिस पर सीधे आकाश से आग उतरे और उसे खा जाए । इसके उत्तर में अल्लाह तआला ने कहा है कि यदि सच्चे रसूल की यही निशानी है तो तुम्हारे कथनानुसार पहले रसूलों के समय भी क़ुर्बानियाँ होती थीं और आग आकाश से उतर कर उसे खा जाती थी तो इसके बावजूद तुमने उन नबियों का घोर विरोध क्यों किया ?

** अरबी शब्द **क़तल** का अर्थ गम्भीर आघात के भी होते हैं । (तफ़सीर रूह-उल-मआनी, सूरः अल फ़त्ह)

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۵﴾

अत: यदि उन्होंने तुझे झुठला दिया है तो तुझ से पहले भी तो रसूल झुठलाए गए थे । वे खुले-खुले चिह्न और (ईश्वरीय) ग्रंथ और सुस्पष्ट पुस्तक लाए थे ।185।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۶﴾

प्रत्येक जान मृत्यु का स्वाद चखने वाली है और क़यामत के दिन ही तुम्हें अपने (कर्मों का) भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा । अत: जो आग से दूर रखा गया और स्वर्ग में प्रविष्ट किया गया तो निस्सन्देह वह सफल हो गया और संसार का जीवन तो धोखा-पूर्ण अस्थायी लाभ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं ।186।

لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۫ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۷﴾

तुम अवश्य अपने धन और अपनी जानों के विषय में परखे जाओगे और तुम अवश्य उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले पुस्तक दी गई और उनसे जिन्होंने शिर्क किया, बहुत दु:ख-दाई बातें सुनोगे और यदि तुम धैर्य धरो और तक़्वा धारण करो तो निस्सन्देह यह एक बड़ा साहसिक कार्य है ।187।

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۫ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۸﴾

और जब अल्लाह ने उन लोगों से जिन्हें पुस्तक दी गई **दृढ़ वचन** लिया कि तुम लोगों की भलाई के लिए इसको खोल-खोल कर बताओगे और इसे छुपाओगे नहीं । फिर उन्होंने इस **(दृढ़ वचन)** को अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उसके बदले मामूली क़ीमत वसूल कर ली । अत: जो वे ख़रीद रहे हैं, बहुत ही बुरा है ।188।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا

तू उन लोगों के सम्बन्ध में जो अपने कर्मों पर ख़ुश हो रहे हैं और पसन्द

وَّ يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨٩﴾

करते हैं कि उनके उन कामों की भी प्रशंसा की जाए जो उन्होंने नहीं किए। (हाँ) कदापि उन के सम्बन्ध में धारणा न रख कि वे अज़ाब से बच सकेंगे जबकि उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।189।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٩٠﴾ ع ١٩/١٠

और आसमानों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।190। (रुकू $\frac{19}{10}$)

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩١﴾

निस्सन्देह आसमानों और धरती की उत्पत्ति में और रात और दिन के अदलने-बदलने में बुद्धिमान लोगों के लिए चिह्न हैं ।191।

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩٢﴾

वे लोग जो खड़े हुए भी और बैठे हुए भी और अपने पहलुओं के बल भी अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और धरती की उत्पत्ति में चिन्तन-मनन करते रहते हैं। (और सहसा कहते हैं) हे हमारे रब्ब ! तू ने कदापि इसे बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया। पवित्र है तू। अत: हमें आग के अज़ाब से बचा ले ।192।

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٣﴾

हे हमारे रब्ब ! जिसे तू अग्नि में प्रविष्ट कर दे तो निस्सन्देह उसे तू ने अपमानित कर दिया और अत्याचारियों के कोई सहायक नहीं होंगे ।193।

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ

हे हमारे रब्ब ! निस्सन्देह हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान के लिए पुकार रहा था कि अपने रब्ब पर

اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ
الْاَبْرَارِ ۚ﴿١٩٤﴾

ईमान ले आओ । तो हम ईमान ले आए। हे हमारे रब्ब ! अतः हमारे पाप क्षमा कर दे और हमसे हमारी बुराइयाँ दूर कर दे और हमें सदाचारियों के साथ मृत्यु दे ।194।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا
تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ﴿١٩٥﴾

हे हमारे रब्ब ! और हमें वह वचन प्रदान कर दे जो तू ने अपने रसूलों पर हमारे पक्ष में अनिवार्य कर दिया था (अर्थात् नबियों से ली गई प्रतिज्ञा) और हमें क़यामत के दिन अपमानित न करना । निस्सन्देह तू वचनभंग नहीं करता ।195।*

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَاۤ اُضِيْعُ
عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ
بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا
وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ
سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ
عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٦﴾

अतः उनके रब्ब ने उनकी दुआ स्वीकार कर ली (और कहा) कि मैं तुम में से किसी कर्म करने वाले का कर्म कदापि निष्फल नहीं करूँगा चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री । तुम में से कुछ, कुछ से सम्बन्ध रखते हैं । अतः वे लोग जिन्होंने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरे रास्ते में दुःख दिए गए और उन्होंने युद्ध किया और उनका वध किया गया मैं अवश्य उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दूँगा और अवश्य उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करूँगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । (यह) अल्लाह की ओर से पुण्यफल स्वरूप (है) और अल्लाह ही के पास सर्वोत्तम पुण्यफल है ।196।

* नबियों की प्रतिज्ञा के लिए देखें सूरः आले इम्रान आयत 82 और सूरः अल् अहज़ाब आयत-8 । इस आयत में **अला** (पर) शब्द के पश्चात् **लिसानि रुसुलिका** (तेरे नबियों की ज़ुबानी) नहीं कहा गया है बल्कि केवल 'रुसुलिका' (तेरे सब रसूल) शब्द है । यह **अला** शब्द अनिवार्यता का सूचक है और तात्पर्य यह है कि नबियों पर जिस प्रकार तूने अनिवार्य कर दिया था कि वे अर्थात् उनकी जातियाँ आने वाले रसूल की अवश्य सहायता करें और यदि उन्होंने ऐसा न किया तो उनकी ग़लती होगी । अन्यथा अल्लाह तो प्रत्येक अवस्था में अपने वचनानुसार अपने रसूलों को विजयी किया करता है ।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٧﴾

उन लोगों का जिन्होंने इनकार किया, बस्तियों में आना-जाना तुझे कदापि धोखा में न डाले ।197।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٨﴾

थोड़ा सा अस्थायी लाभ है । फिर उनका ठिकाना नरक होगा और वह बहुत बुरा ठिकाना है ।198।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٩﴾

परन्तु वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब का तक़्वा धारण किया उनके लिए स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं । (यह) अल्लाह की ओर से उनके आतिथ्य स्वरूप (होगा) और वह जो अल्लाह के पास है वह नेक लोगों के लिए बहुत ही अच्छा है ।199।

وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٠﴾

और निस्सन्देह अह्ले किताब में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह के समक्ष विनम्रता पूर्वक झुकते हुए अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उस पर भी जो तुम्हारी ओर उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया था । वे अल्लाह की आयतों को मामूली क़ीमत के बदले नहीं बेचते । यही वे लोग हैं जिनके लिए उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास है । निस्सन्देह अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है ।200।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠١﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! धैर्य धरो और धैर्य का उपदेश दो और सीमाओं की सुरक्षा पर चौकन्ने रहो और अल्लाह से डरो ताकि तुम सफल हो जाओ ।201।* (रुकू $\frac{20}{11}$)

---

* यहाँ **राबितू** शब्द से अभिप्राय सीमाओं पर घोड़े बांधना है । जिसका अर्थ यह है कि कभी भी शत्रु के आक्रमण से असावधान न रहो बल्कि जैसे सीमा पर खड़े होने से सीमा पार के समाचार पता चलते रहते हैं इसी प्रकार अपनी सीमाओं की सुरक्षा करो और शत्रु को सहसा अपने ऊपर आक्रमण करने का अवसर न दो।

4- सूरः अन-निसा

यह सूरः हिजरत के तीसरे और पाँचवें वर्ष के बीच अवतरित हुई । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 177 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ एक ऐसी आयत से होता है जिसमें एक ही जान से मनुष्य जन्म के चमत्कारिक आरम्भ का वर्णन मिलता है । इस प्रकार **आदम** शब्द की एक और व्याख्या प्रस्तुत की गई है ।

इस सूरः का इससे पूर्ववर्ती सूरः के अंतिम भाग से गहरा संबंध है । पिछली सूरः के अंत पर धैर्य धरने की शिक्षा के अतिरिक्त यह शिक्षा भी दी गई थी कि एक दूसरे को धैर्य धरने का उपदेश भी करते रहो और अपनी सीमाओं की सुरक्षा भी करो । इस सूरः में शत्रु के साथ भयानक युद्धों का वर्णन है जिसके परिणाम स्वरूप अधिकता से स्त्रियाँ विधवा और बच्चे अनाथ हो जाएँगे । युद्धों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों और विधवाओं तथा अनाथों के अधिकारों के सम्बन्ध में इस समस्या का एक समाधान एक से अधिक विवाह करने के रूप में प्रस्तुत किया गया है, बशर्ते मोमिन न्याय पर अटल रह सके । यदि न्याय पर अटल नहीं रह सकता तो केवल एक विवाह पर ही संतुष्ट होना पड़ेगा ।

इस सूरः में इस्लामी उत्तराधिकार व्यवस्था के मौलिक सिद्धान्त और उनके विवरण का उल्लेख हुआ है ।

इसी सूरः में यहूदियत और ईसाइयत के परस्पर संबंध और हज़रत ईसा अलै. के आविर्भाव का वर्णन इस प्रकार मिलता है कि जब यहूदियों ने अपने समस्त वचन तोड़ दिये और कठोर दिल हो गए और हज़रत ईसा अलै. को सूली पर चढ़ा कर मारने का प्रयत्न किया तो किस प्रकार अल्लाह तआला ने सूली के द्वारा हज़रत ईसा अलै. का वध करने की उनकी चेष्टा को असफल कर दिया और हज़रत ईसा अलै. का उन सभी आरोपों से मुक्त होना साबित किया जो आप पर और आपकी माता पर यहूदियों की ओर से लगाए गए थे ।

इस सूर में हज़रत ईसा अलै. की हिजरत का भी वर्णन मिलता है और यह भविष्यवाणी भी वर्णित है कि अह्ले किताब में से कोई भी गिरोह ऐसा नहीं रहेगा जो हज़रत ईसा अलै. की सत्यता और आप की स्वभाविक मृत्यु पर ईमान न ले आया हो । यह भविष्यवाणी अफ़ग़ानिस्तान के रास्ते कश्मीर में आप के प्रवास से अक्षरशः पूरी हो गई ।

☆☆☆

سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ سَبْعٌ وَّ سَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّ اَرْبَعَةٌ وَّ عِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّ نِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ②

हे लोगो ! अपने रब्ब का तक़्वा धारण करो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया और फिर उन दोनों में से पुरुषों और स्त्रियों को बहुसंख्या में फैला दिया । और अल्लाह से डरो जिसके नाम की दुहाई दे कर तुम एक दूसरे से माँगते हो और निकट सम्बंधियों (की आवश्यकताओं) का भी ध्यान रखो । निस्सन्देह अल्लाह तुम पर निगरान है ।2।

وَ اٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ③

और अनाथों को उनके धन दे दो और अपवित्र चीज़ें पवित्र चीज़ों के बदले में न लिया करो और उनके धन अपने धन से मिला कर न खा जाया करो । निस्सन्देह यह बहुत बड़ा पाप है ।3।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ

और यदि तुम डरो कि तुम अनाथों के विषय में न्याय नहीं कर सकोगे तो स्त्रियों में से जो तुम्हें पसन्द आएँ उनसे निकाह करो । दो-दो और तीन-तीन और चार-चार । परन्तु यदि तुम्हें भय हो कि तुम न्याय नहीं कर सकोगे तो फिर केवल एक (पर्याप्त है) अथवा वे जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक बन गये । यह

اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ؕ ۝٤

(उपाय इस बात के) अधिक निकट है कि तुम अन्याय से बचो ।4।*

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓــًٔا مَّرِیْٓــًٔا ۝٥

और स्त्रियों को उनके महर हार्दिक प्रसन्नता से अदा करो । फिर यदि वे अपनी हार्दिक प्रसन्नता से उसमें से कुछ तुम्हें देने के लिए सहमत हों तो उसे बिना असमंजस के चाव से खाओ ।5।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِیْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِیٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِیْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٦

और अपने वह धन बुद्धिहीनों के सुपुर्द न किया करो जिनको अल्लाह ने तुम्हारे लिए (आर्थिक) स्थिरता का साधन बनाया है । और उन्हें उस (धन) में से खिलाओ और पहनाओ और उनसे अच्छी बात कहा करो ।6।

وَابْتَلُوا الْیَتٰمٰى حَتّٰۤى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْۤا اِلَیْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَاۤ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ یَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ غَنِیًّا فَلْیَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِیْرًا فَلْیَاْكُلْ

और अनाथों को जाँचते रहो यहाँ तक कि वे निकाह (की आयु) को पहुँच जाएँ। अतः यदि तुम उनमें बुद्धि (के लक्षण) देखो तो उनके धन उनको वापस कर दो और इस डर से अपव्यय और शीघ्रता के साथ उनको न खाओ कि कहीं वे बड़े न हो जाएँ। और जो धनवान् हो तो

---

* इस आयत में यह आदेश नहीं दिया गया है कि अवश्य दो-दो, तीन-तीन, चार-चार विवाह करो। बल्कि तात्पर्य यह है कि एक समय में अधिक से अधिक चार पत्नियाँ रख सकते हो । जबकि इससे पूर्व अरबवासियों में शादियों की कोई सीमा निर्धारित नहीं होती थी । अतः इस प्रकार अनिर्धारित संख्या में शादियाँ करने के विपरीत शादियों की पाबंदी कराने वाली यह आयत है। विशेषकर ऐसी परिस्थितियों में जबकि युद्धों के कारण बहुत सी क़ैदी औरतें हाथ आती हैं और अनाथों के पालन-पोषण के लिए भी एक ही पत्नी पर्याप्त नहीं हो सकती । इस कारण ऐसी परिस्थिति में एक से अधिक शादी करने की आज्ञा है बशर्ते न्याय पर अटल रह कर ऐसा किया जाए । इस आयत के दोनों छोर पर न्याय की शर्त को प्राथमिकता दी गई है । वे लोग जो इस बहाने से, कि एक से अधिक विवाह की अनुमति है, पहली पत्नी को अधर में लटकती हुई वस्तु की भाँति छोड़ देते हैं, वे कदापि इस्लाम के आदेश का पालन नहीं करते बल्कि वासना-पूर्ति के लिए ही एकाधिक विवाह करते हैं ।

بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَھُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝

चाहिए कि वह (उनका धन खाने से) पूर्णतया परहेज़ करे । हाँ जो निर्धन हो तो वह उचित रूप से खाए। फिर जब तुम उनको उनका धन लौटाओ तो उन पर गवाह बना लिया करो । और अल्लाह हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है ।7।

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝

पुरुषों के लिए उस तरका में से एक भाग है जो माता-पिता और निकट सम्बंधियों ने छोड़ा । और स्त्रियों के लिए भी उस तरका में एक भाग है जो माता-पिता तथा निकट सम्बंधियों ने छोड़ा । चाहे वह थोड़ा हो चाहे अधिक। (यह एक) निश्चित किया गया भाग (है) ।8।

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْھُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَھُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝

और जब (तरका के) विभाजन के समय पर (ऐसे) निकट सम्बंधी (जिनकों विधि के अनुसार भाग नहीं मिलता) और अनाथ और निर्धन भी आ जाएँ तो कुछ उसमें से उनको भी दो और उनसे अच्छी बात कहा करो ।9।

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِھِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْھِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝

और वे लोग इस बात से डरें कि यदि वे अपने पीछे कमज़ोर संतान छोड़ जाते, तो उनके विषय में डरते । अत: चाहिए कि वे अल्लाह से डरें और साफ़-सीधी बात कहें ।10।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِھِمْ نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝ۧ

निस्सन्देह वे लोग जो अनाथों का धन अत्याचार पूर्वक खाते हैं वे अपने पेटों में केवल आग झोंकते हैं और निश्चित रूप से वे धधकती हुई अग्नि में पड़ेंगे ।11।

(रुकू $\frac{1}{12}$)

يُوصِيكُمُ اللّٰهُ فِيٓ اَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ
مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً
فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ
كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۗ وَلِاَبَوَيْهِ
لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ
اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ
وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ
لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ اٰبَآؤُكُمْ
وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ
لَكُمْ نَفْعًا ۗ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٢﴾

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी संतान के बारे में वसीयत करता है । पुरुष के लिए दो स्त्रियों के भाग के समान (भाग) है । और यदि वे दो से अधिक स्त्रियाँ हों तो उनके लिए दो तिहाई है, उसमें से जो उस (मरने वाले) ने छोड़ा । और यदि वह अकेली हो तो उसके लिए आधा है । और यदि उस (मृतक) की संतान हो तो उस के माता-पिता में से प्रत्येक के लिए उसके तरका में से छठा भाग है । और यदि उसकी संतान न हो और उसके माता-पिता ही उसके उत्तराधिकारी हों तो उसकी माता के लिए तीसरा भाग है और यदि उस (मृतक) के भाई (बहन) हों तो फिर उसकी माता के लिए छठा भाग होगा, वसीयत के अदा करने के बाद जो उसने की हो अथवा कर्ज़ चुकाने के बाद । तुम्हारे पूर्वज और तुम्हारी संतान, तुम नहीं जानते कि उन में से कौन लाभ पहुँचाने में तुम्हारे अधिक निकट है । यह अल्लाह की ओर से (निर्धारित) कर्त्तव्य है । निस्सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।12।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ
لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ
فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

और जो तुम्हारी पत्नियों ने तरका छोड़ा है, यदि उनकी कोई संतान न हो तो तुम्हारे लिए उसमें से आधा होगा । अत: यदि उनकी कोई संतान हो तो तुम्हारे लिए उसमें से चौथा भाग होगा जो उन्होंने छोड़ा, वसीयत के अदा करने के बाद जो उन्होंने की हो अथवा कर्ज़

يُوصِينَ بِهَآ اَوْدَيْنٍ ۗ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَآ اَوْدَيْنٍ ۗ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٣﴾

चुकाने के बाद । और उनके लिए उसमें से चौथा भाग होगा जो तुमने छोड़ा यदि तुम्हारी कोई संतान न हो । और यदि तुम्हारी कोई संतान हो तो उन (पत्नियों) का उसमें से आठवां भाग होगा, उसमें से जो तुमने छोड़ा, वसीयत के अदा करने के बाद जो तुमने की हो अथवा क़र्ज़ चुकाने के पश्चात । और यदि किसी ऐसे पुरुष अथवा स्त्री के छोड़े हुए धन को विभाजित किया जा रहा हो जो **कलालः** हो (अर्थात् न उसके माता-पिता हों न ही कोई संतान हो) परन्तु उसका भाई अथवा बहन हो तो उन दोनों में से प्रत्येक के लिए छठा भाग होगा । और यदि वे (बहन भाई) इससे अधिक हों तो वे सब तीसरे भाग में भागीदार होंगे, वसीयत के अदा करने के बाद जो की गई हो अथवा क़र्ज़ चुकाने के पश्चात् बिना किसी को कष्ट में डाले (ये) वसीयत है अल्लाह की ओर से । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला और बड़ा सहनशील है ।13।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٤﴾

यह अल्लाह की (निर्धारित की हुई) सीमाएँ हैं और जो अल्लाह का और उसके रसूल का आज्ञापालन करे तो वह उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । वे उनमें एक लम्बे समय तक रहने वाले होंगे और यह बहुत बड़ी सफलता है ।14।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ

और जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करे और उसकी सीमाओं का

حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۖ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۟﴿١٥﴾ ع

उल्लंघन करे तो वह उसे एक (ऐसी) अग्नि में डालेगा, जिसमें वह एक लम्बे समय तक रहने वाला होगा और उसके लिए अपमानित कर देने वाला अज़ाब (निश्चित) है ।15। (रुकू $\frac{2}{13}$)

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٦﴾

और तुम्हारी स्त्रियों में से वे जिन्होंने कुकर्म किया हो, उन पर अपने में से चार गवाह बना लो । अतः यदि वे गवाही दें तो उनको घरों में रोके रखो यहाँ तक कि उन पर मौत आजाए अथवा उनके लिए अल्लाह कोई (और) मार्ग निकाल दे ।16।*

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٧﴾

और तुम में से वे दो पुरुष जो इस (कुकर्म) को किए हुए हों उन्हें (शारीरिक) दंड दो । फिर यदि वे प्रायश्चित कर लें और सुधार कर लें तो उनको छोड़ दो । निस्सन्देह अल्लाह बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।17।**

---

* **अल्लाह उनके लिए मार्ग निकाल दे** से दो बातें अभिप्राय हो सकती हैं । प्रथम यह कि पति पहले मर जाए और पत्नी स्वतः स्वतन्त्र हो जाए तथा दूसरा यह कि पति उसे तलाक़ दे दे ताकि वह किसी और पुरुष से विवाह कर ले ।

** आयत संख्या 16,17 का उस यौनविकृति से सम्बन्ध है जिसे आज कल समलैंगिकता (Gay Movement) कहते हैं । अर्थात् स्त्रियों का स्त्रियों के साथ और पुरुषों का पुरुषों के साथ दुष्कर्म करना। स्त्रियों पर आरोप सिद्ध करने के लिए तो चार गवाह आवश्यक हैं परन्तु पुरुषों के विषय में चार गवाहों की कोई शर्त नहीं । यह स्त्रियों के इज़्ज़त की सुरक्षा और उन्हें आरोप से बचाने के लिए है । ऐसी स्त्रियों के विषय में यह जो कहा गया है कि उन्हें घरों में रखो, इसका तात्पर्य यह नहीं कि उन्हें क़ैद कर दो और घरों से बाहर ही न निकलने दो, बल्कि यह अर्थ है कि उन्हें अकेला बाहर न जाने दो और बिना आज्ञा के निकलने न दो ताकि यह अश्लीलता न फैले । प्रश्न यह है कि ऐसे पुरुषों पर पाबन्दी क्यों नहीं ? इसका कारण स्पष्ट है । क़ुर्आन करीम पुरुषों पर घर को चलाने और परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का दायित्व डालता है । यदि पुरुषों को घरों में क़ैद कर→

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٨﴾

निस्सन्देह उन्हीं लोगों का प्रायश्चित स्वीकार करना अल्लाह के ज़िम्मे है जो (अपनी) अज्ञानतावश बुराई कर बैठते हैं, फिर शीघ्र प्रायश्चित कर लेते हैं । अतः यही लोग हैं जिन पर अल्लाह प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुकता है। और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।18।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٩﴾

और उन लोगों का कोई प्रायश्चित नहीं जो कुकर्म करते हैं यहाँ तक कि उनमें से जब किसी को मृत्यु आ जाए तो वह कहता है मैं अब अवश्य प्रायश्चित करता हूँ । और न उन लोगों का प्रायश्चित है जो काफ़िर होने की दशा में मर जाते हैं । यही वे लोग हैं जिनके लिए हमने पीड़ाजनक अज़ाब तैयार कर रखा है ।19।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَن يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम्हारे लिए उचित नहीं कि तुम ज़बरदस्ती करते हुए स्त्रियों का उत्तराधिकार प्राप्त करो । और उन्हें इस उद्देश्य से तंग न करो कि जो कुछ तुम उन्हें दे बैठे हो उसमें से कुछ (फिर) ले भागो, सिवाय इसके कि वे खुल्लम-खुल्ला कुकर्म में पड़ चुकी हों और उनके साथ सद्व्यवहार करते हुए जीवन बिताओ । और यदि

←दिया जाता तो उनके घर कैसे चलते और गुज़ारा कैसे होता ? इसके स्थान पर कहा कि पुरुषों को शारीरिक दंड दो और दंड में 80 या 100 कोड़े लगाना नहीं कहा बल्कि परिस्थिति के अनुसार दंड निर्धारित हो सकता है । साथ ही पकड़े जाने के बाद उनकी निगरानी करनी है । इसके बाद यदि वे प्रायश्चित करें और भविष्य में सुधार का वचन दें तो फिर उनको बार-बार अपनी दृष्टि में रख कर अथवा कोई और प्रतिबंध लगा कर तंग नहीं करना चाहिए ।

شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿٢٠﴾

तुम उन्हें नापसन्द करो तो संभव है कि तुम एक वस्तु को नापसन्द करो और अल्लाह उसमें बहुत भलाई रख दे ।20।

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ
زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا
مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢١﴾

और यदि तुम एक पत्नी को दूसरी पत्नी के स्थान पर बदलने की इच्छा करो और तुम उन में से एक को ढ़ेरों धन भी दे चुके हो तो उसमें से कुछ वापस न लो । क्या तुम उसे आरोप लगाते हुए और खुल्लम-खुल्ला पाप में पड़ते हुए लोगे ? ।21।

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ
اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢٢﴾

और तुम उसे कैसे ले लोगे जब कि तुम एक दूसरे से (एकांत में) मिल चुके हो और वे तुम से (वफ़ादारी का) पक्का वचन ले चुकी हैं ।22।

وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ
اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً
وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٣﴾ ع

और स्त्रियों में से उनसे निकाह न करो जिनसे तुम्हारे बाप-दादे निकाह कर चुके हों। सिवाय इसके जो पहले गुज़र चुका (सो गुज़र चुका) निस्सन्देह यह बड़ा अश्लील और घृणा योग्य (कर्म) है और बहुत ही बुरा मार्ग है ।23।

(रुकू $\frac{3}{14}$)

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ
وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ
الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ
اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ
وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ
حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ

तुम पर तुम्हारी माताएँ हराम (अवैध) कर दी गई हैं। और तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फूफियाँ और तुम्हारी मौसियाँ और भाई की बेटियाँ और बहिन की बेटियाँ और तुम्हारी वे माताएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया है और तुम्हारी दूध-बहनें और तुम्हारी पत्नियों की माताएँ और जिन पत्नियों से तुम दांपत्य सम्बन्ध स्थापित कर चुको उनकी वे पिछलग बेटियाँ भी जो तुम्हारे

بِهِنَّ ۫ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ
الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ
الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۙ﴿٢٤﴾

घर में पली हों तुम पर हराम हैं । हाँ यदि तुम उन (अर्थात् पत्नियों) से दांपत्य सम्बन्ध स्थापित न कर चुके हो तो फिर तुम पर कोई पाप नहीं । इसी प्रकार तुम्हारे उन औरस पुत्रों की पत्नियाँ भी तथा यह भी (तुम पर हराम है) कि तुम दो बहिनों को (अपने निकाह में) इकट्ठा करो । सिवाय इसके जो पहले हो चुका (सो हो चुका) । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।24।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ
وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا
بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۗ
فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝٢٥

और स्त्रियों में से वे (भी तुम पर हराम हैं) जिनके पति मौजूद हों, सिवाय उनके जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हों । यह अल्लाह की ओर से तुम पर अनिवार्य है और तुम्हारे लिए हलाल (वैध) कर दिया गया है जो इसके अतिरिक्त है कि तुम (उन्हें) अपनाना चाहो, अपने धन के द्वारा, अपने चरित्र की सुरक्षा करते हुए न कि कुकर्म का मार्ग अपनाते हुए । अतः उनको उनके महर इस आधार पर कि तुम उनसे लाभ उठा चुके हो, अनिवार्य रूप से अदा करो । और तुम पर इस विषय में कोई दोष नहीं कि तुम महर निर्धारित होने के बाद (किसी परिवर्तन पर) परस्पर सहमत हो जाओ । निस्संदेह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।25।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ
الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۗ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ
بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ
وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ

और तुम में से जो कोई आर्थिक रूप से सामर्थ्य न रखते हों कि स्वतंत्र मोमिन स्त्रियों से निकाह कर सकें तो वे तुम्हारी मोमिन दासियों में से जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हुए (किसी से) निकाह कर लें । और अल्लाह तुम्हारे ईमानों को भली-भाँति जानता है । तुम में से कुछ, कुछ के साथ सम्बन्ध रखते हैं। अतः उनके मालिकों की आज्ञा से उनसे निकाह करो तथा उनको उनके हक़ महर विधि पूर्वक अदा करो, ऐसी अवस्था में कि वे अपनी इज़्ज़त को बचाने वालियाँ हों न कि अश्लील कृत्य करने वालियाँ और न ही छिपे मित्र

أَخْدَانٍ ۚ فَإِذَا أُحْصِنَّ فَإِنْ أَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٦﴾ ع

बनाने वालियाँ हों । अतः जब वे निकाह कर चुकीं, फिर यदि वे अशलीलता में पड़ें तो उनका दंड स्वतन्त्र स्त्रियों की तुलना में आधा होगा । यह (छूट) उस के लिए है जो तुम में से पाप से डरता हो । और तुम्हारा धैर्य धरना तुम्हारे लिए बेहतर है । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।26। (रुकू $\frac{4}{1}$)

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾

अल्लाह चाहता है कि वह तुम पर बात ख़ूब स्पष्ट कर दे और उन लोगों के तरीक़ों की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करे जो तुमसे पहले थे और प्रायश्चित स्वीकार करते हुए तुम पर झुके और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।27।

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٨﴾

और अल्लाह चाहता है कि तुम पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुके । और वे लोग जो तामसिक इच्छाओं के पीछे लगे रहते हैं, चाहते हैं कि तुम बड़े ज़ोर से (उनकी ओर) आकर्षित हो जाओ ।28।

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا ﴿٢٩﴾

अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ हल्का कर दे और मनुष्य दुर्बल पैदा किया गया है ।29।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने धन को परस्पर अवैध ढंग से न खाया करो । हाँ यदि वह ऐसा व्यापार हो जो तुम्हारी परस्पर सहमती से हो और तुम अपने आप की (आर्थिक रूप से) हत्या

اَنْفُسَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٣٠﴾

न करो । निस्सन्देह अल्लाह तुम पर बार-बर दया करने वाला है ।30।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣١﴾

और जो सीमा का उल्लंघन करते हुए और अत्याचार करते हुए ऐसा करे तो हम उसे शीघ्र एक आग में डालेंगे और यह बात अल्लाह पर आसान है ।31।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣٢﴾

यदि तुम उन बड़े पापों से बचते रहो जिनसे तुम्हें रोका गया है तो हम तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देंगे और हम तुम्हें एक बड़े प्रतिष्ठित स्थान में प्रविष्ट करेंगे ।32।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۗ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ۗ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۗ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٣﴾

और अल्लाह ने जो तुम में से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की है, उसकी लालच न किया करो । पुरुषों के लिए उसमें से भाग है जो वे अर्जित करें तथा स्त्रियों के लिए उसमें से भाग है जो वे अर्जित करें और अल्लाह से उसकी कृपा को माँगो । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय का ख़ूब ज्ञान रखता है ।33।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۗ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٤﴾ ع

और हमने प्रत्येक के लिए उस (धन) के उत्तराधिकारी बनाए हैं जो माता-पिता और निकट सम्बन्धी छोड़ें ।* और वे जिनसे तुमने पक्के वचन लिए हैं, उनको भी उनका भाग दो । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय पर निरीक्षक है ।34।

(रुकू $\frac{5}{2}$)

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ

पुरुष स्त्रियों पर उस श्रेष्ठता के कारण निगरान हैं जो अल्लाह ने उनमें से कुछ को कुछ पर प्रदान की है और इस कारण

* यह अनुवाद हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ुरआन अनुवाद से उद्धृत किया गया है ।

اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّ بِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۭ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۭ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ۝۳۵

से भी कि वे अपने धन (उन पर) खर्च करते हैं । अत: नेक स्त्रियाँ आज्ञाकारिणी और (उनकी) अनुपस्थिति में भी उन वस्तुओं की सुरक्षा करने वाली होती हैं, जिनकी सुरक्षा का अल्लाह ने आदेश दिया है और वे स्त्रियाँ जिनसे तुम्हें विद्रोह-पूर्ण व्यवहार का भय हो तो उनको (पहले तो) नसीहत करो, फिर उनको बिस्तरों में अलग छोड़ दो और फिर (आवश्यकतानुसार) उन्हें शारीरिक दंड भी दो । अत: यदि वे तुम्हारा आज्ञापालन करें तो फिर उनके विरुद्ध कोई तर्क न खोजो । निस्सन्देह अल्लाह उत्युच्च (और) बहुत बड़ा है ।35।*

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا

और यदि तुम्हें उन दो (पति-पत्नी) के बीच अत्यधिक मतभेद का भय हो तो

---

* **अर्रिजालु क़व्वामून** (पुरुष निगरान हैं) का एक सीधा अर्थ तो यह है कि साधारणतया पुरुष स्त्रियों से अधिक सबल और उनको सीधे रास्ते पर स्थित रखने वाले होते हैं । यदि पुरुष **क़व्वाम** (निगरान) नहीं होंगे तो स्त्रियों के बहकने की सम्भावना अधिक है । दूसरा यह कि वे पुरुष **क़व्वाम** हैं जो अपनी पत्नियों के खर्चे उठाते हैं । वे निखट्टू जो पत्नियों की कमाई पर पलते हैं वे कदापि **क़व्वाम** नहीं होते । आयत के अन्तिम भाग में यह वर्णन किया गया है कि यदि तुम **क़व्वाम** हो और इसके बाद भी तुम्हारी पत्नी बहुत अधिक विद्रोहपूर्ण सोच रखती हो तो इस अवस्था में यह अनुमति नहीं है कि उसको तुरन्त शारीरिक दंड दो, बल्कि पहले उसे नसीहत करो । यदि नसीहत न माने तो दांपत्य सम्बन्ध स्थापित करने से कुछ समय तक परहेज़ करो । (वास्तव में यह दंड स्त्री से अधिक पुरुष को मिलता है) । यदि इस पर भी उसकी विद्रोहपूर्ण सोच दूर न हो तब जाकर तुम्हें उस पर हाथ उठाने की अनुमति है । परन्तु इसके सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है कि ऐसी चोट न लगे जो चेहरे पर हो और जिससे उस पर कोई दाग़ लग जाए । इस आयत का संदर्भ देकर बहुत से लोग अपनी पत्नियों पर अनुचित सख़्ती करते हैं, कि पुरुष को अपनी पत्नी को मारने की अनुमति है । हालांकि यदि उपरोक्त शर्तें पूरी करें तो प्रबल सम्भावना है कि किसी प्रकार सख़्ती करने की आवश्यकता ही न पड़े । यदि सख़्ती करना उचित होता तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में आपकी पत्नियों को शारीरिक रूप से दण्ड देने का कोई एक भी उदाहरण मिल जाता । हालाँकि कई पत्नियाँ कई बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाराज़गी का पात्र भी बन जाती थीं ।

مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ۳۶

उस (अर्थात् पति) के घर वालों में से एक विवेकशील फैसला करने वाला व्यक्ति और उस (अर्थात् पत्नी) के घर वालों में से एक विवेकशील फैसला करने वाला व्यक्ति निश्चित करो । यदि वे दोनों (अपना) सुधार चाहें तो अल्लाह उन दोनों के बीच सहमति उत्पन्न कर देगा । निस्सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) ख़ूब ख़बर रखने वाला है ।36।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ ۳۷

और अल्लाह की उपासना करो और किसी वस्तु को उसका साझीदार न ठहराओ और माता-पिता के साथ भलाई करो और निकट सम्बंधियों से और अनाथों से और निर्धन लोगों से और नातेदार पड़ोसियों से और उन पड़ोसियों से भी जो नातेदार न हों तथा अपने साथ उठने बैठने वालों से और यात्रियों से और उनसे भी जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हुए (भलाई करो) । निस्सन्देह अल्लाह उसको पसन्द नहीं करता जो अभिमानी (और) डींग हाँकने वाला हो ।37।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ ۳۸

(अर्थात्) वे लोग जो (स्वयं भी) कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी की शिक्षा देते हैं और उसको छिपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से दिया है । और हमने काफ़िरों के लिए घोर अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार किया है ।38।

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ

और वे लोग जो अपने धन को लोगों के सामने दिखावे के लिए ख़र्च करते हैं और

وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ۝٣٩

न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न अंतिम दिवस पर । और वह जिसका शैतान साथी हो तो वह बहुत ही बुरा साथी है ।39।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ۝٤٠

और उन पर क्या कठिनाई थी यदि वे अल्लाह पर ईमान ले आते और अंतिम दिवस पर भी और उसमें से खर्च करते जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया और अल्लाह उन्हें भली-भाँति जानता है ।40।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٤١

निस्सन्देह अल्लाह कण भर भी अत्याचार नहीं करता । और यदि कोई नेकी की बात हो तो वह उसे बढ़ाता है तथा अपनी ओर से भी बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है ।41।

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ۝٤٢

अतः क्या हाल होगा, जब हम प्रत्येक उम्मत में से एक गवाह ले कर आएँगे। और हम तुझे उन सब पर गवाह बना कर लाएँगे ।42।

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ۝٤٣ ع

उस दिन वे लोग जिन्होंने इनकार किया और रसूल की अवज्ञा की, चाहेंगे कि काश ! (वे गाड़ दिये जाते और) धरती उन पर बराबर कर दी जाती । और वे अल्लाह से कोई बात छिपा न सकेंगे ।43। (रुकू $\frac{6}{3}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम नमाज़ के निकट न जाओ जब तुम बेसुधपने की हालत में हो । यहाँ तक कि इस लायक हो जाओ कि तुम्हें ज्ञान हो कि तुम क्या कह रहे हो । और न ही जुंबी होने की दशा में (नमाज़ के निकट

تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ۝٤٤

न जाओ) जब तक कि स्नान न कर लो सिवाय इसके कि तुम यात्री हो । और यदि तुम बीमार हो अथवा यात्रा पर हो अथवा तुम में से कोई शौचादि करके आया हुआ हो अथवा तुमने स्त्रियों से संभोग किया हो और तुम्हें पानी न मिले तो शुष्क पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो । अतएव तुम अपने चेहरों और हाथों पर मसह् करो । निस्सन्देह अल्लाह बहुत मार्जना करने वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।44।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ۝٤٥

क्या तूने ऐसे लोगों पर ध्यान नहीं दिया जिन्हें पुस्तक में से एक भाग दिया गया, वे पथभ्रष्टता को ख़रीद लेते हैं और चाहते हैं कि तुम (सीधे) रास्ते से हट जाओ ।45।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝٤٦

और अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को सबसे अधिक जानता है और अल्लाह मित्र होने की दृष्टि से पर्याप्त है और अल्लाह ही सहायक के रूप में पर्याप्त है ।46।

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّاۢ بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ

यहूदियों में से ऐसे भी हैं जो कलिमों (धर्मवाक्यों) को उनके वास्तविक स्थानों से बदल देते हैं । और वे कहते हैं हमने सुना और हमने अवज्ञा की । और इस अवस्था में बात सुन, कि तुझे कुछ भी न सुनाई दे और वे अपनी जिह्वा को मरोड़ते हुए और धर्म में व्यंग कसते हुए **राइना** कहते हैं ।* और यदि ऐसा होता कि वे कहते कि हमने सुना और हमने

* मानो वे **रायीना** कह रहे हों अर्थात् हे हमारे चरवाहे ।

قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٤٧

आज्ञापालन किया और सुन और हम पर दृष्टि डाल, तो यह उनके लिए उत्तम और सबसे अधिक दृढ़ (वाक्य) होता । परन्तु अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उन पर ला'नत् कर दी है । अतः वे बहुत ही कम ईमान लाते हैं ।47।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝٤٨

हे वे लोगो जिन्हें पुस्तक दी गई है ! उस पर ईमान ले आओ, जो हमने उतारा है उसकी पुष्टि करता हुआ जो तुम्हारे पास है । इससे पहले कि हम कुछ चेहरों को दाग़ दें और उन्हें उनकी पीठों के बल लौटा दें अथवा उन पर इसी प्रकार ला'नत डालें जिस प्रकार हमने सब्त वालों पर ला'नत डाली थी । और अल्लाह का निर्णय तो पूरा हो कर रहने वाला है ।48।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ۝٤٩

निस्सन्देह अल्लाह (यह) क्षमा नहीं करेगा कि उसका कोई साझीदार ठहराया जाए और उसके अतिरिक्त सब कुछ क्षमा कर देगा, जिसके लिए वह चाहे । और जो अल्लाह का साझीदार ठहराए तो निस्सन्देह उसने बहुत बड़ा पाप गढ़ा है ।49।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝٥٠

क्या तूने उन लोगों पर ध्यान नहीं दिया, जो अपने आप को पवित्र ठहराते हैं । वास्तविकता यह है कि अल्लाह ही है जिसे चाहे पवित्र घोषित कर दे । और उन पर खजूर की गुठली की लकीर के समान भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।50।

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

देख वे अल्लाह पर किस प्रकार झूठ गढ़ते हैं और यह बात एक खुल्लम-खुल्ला

الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ؔ۵۱ ع

पाप के रूप में पर्याप्त है ।51।

(रुकू $\frac{7}{4}$)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَاۗءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۝۵۲

क्या तूने उनकी ओर दृष्टि नहीं दौड़ाई जिनको पुस्तक में से एक भाग दिया गया था । वे मूर्तियों और शैतान पर ईमान लाते हैं और उन लोगों के सम्बन्ध में जिन्होंने इनकार किया, कहते हैं कि ये लोग पंथ की दृष्टि से ईमान लाने वालों से अधिक सही हैं ।52।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَھُمُ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۝ؕ۵۳

यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने ला'नत की है और जिस पर अल्लाह ला'नत करे उसके लिए तू कोई सहायक नहीं पाएगा ।53।

اَمْ لَھُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ۝ۙ۵۴

क्या उनका राजत्व में से कोई भाग है । तब तो वे लोगों को (कदापि उसमें से) खजूर की गुठली की लकीर के समान भी नहीं देंगे ।54।

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰي مَآ اٰتٰىھُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰھُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ۝۵۵

क्या वे उस पर लोगों से ईर्ष्या करते हैं जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से प्रदान किया है । तो निस्सन्देह इब्राहीम के वंशज को भी हम पुस्तक और तत्त्वज्ञान प्रदान कर चुके हैं तथा हमने उन्हें एक बड़ा साम्राज्य प्रदान किया था ।55।

فَمِنْھُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْھُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۭ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ۝۵۶

अत: उन्हीं में से वे थे जो उस पर ईमान लाए और उन्हीं में से वे भी थे जो उस (पर ईमान लाने) से रुक गए । और (ऐसे लोगों को) जलाने के लिए नर्क पर्याप्त है ।56।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया है हम उन्हें

نَارًا ۭ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٧﴾

आग में प्रविष्ट करेंगे । जब कभी उनकी त्वचाएँ गल जाएँगी हम उन्हें बदल कर दूसरी त्वचाएँ दे देंगे ताकि वे अज़ाब को चखें। निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।57।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۡ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٨﴾

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनको हम अवश्य ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेंगे जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । वे उनमें सदा सर्वदा रहने वाले हैं । उनमें उन के लिए पवित्र किए हुए जोड़े होंगे । तथा हम उन्हें घनी छावों में प्रविष्ट करेंगे ।58।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿٥٩﴾

निस्सन्देह अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम अमानतें उनके हक़दारों के सुपुर्द किया करो और जब तुम लोगों के बीच शासन करो तो न्याय के साथ शासन करो । निस्सन्देह अल्लाह तुम्हें जो उपदेश देता है, सर्वोत्तम है । निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।59।*

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो तथा अपने शासकों का भी । और यदि तुम किसी विषय में (शासकों) से मतभेद करो तो ऐसे

✻ यहाँ **अमानत** से तात्पर्य निर्वाचन का अधिकार है जिसके परिणामस्वरूप किसी को शासन करने का अधिकार मिलता है । अत: वोट भी एक अमानत है जिसे उसी को देना चाहिए जो उसका योग्य हो। यही सच्चा लोकतन्त्र है और जब सत्ता मिले तो फिर न्याय से काम करना अनिवार्य है न कि पार्टीबाज़ी का ध्यान करना है । आजकल के झूठे लोकतन्त्रों में अपनी पार्टी के सदस्यों के साथ तो न्याय किया जाता है परन्तु विपक्षी पार्टी से न्याय नहीं किया जाता ।

تَنَازَعْتُمْ فِىْ شَىْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۶۰﴾ ع

विषय अल्लाह और रसूल की ओर लौटा दिया करो, यदि (वास्तव में) तुम अल्लाह पर और अन्तिम दिवस पर ईमान लाने वाले हो । यह अत्युत्त्म (उपाय) है और परिणाम की दृष्टि से बहुत अच्छा है ।60।* (रुकू $\frac{8}{5}$)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۶۱﴾

क्या तूने उन लोगों की दशा पर दृष्टि डाली है जो विचार करते हैं कि वे उस पर ईमान ले आए हैं जो तुझ पर उतारा गया तथा उस पर भी जो तुझ से पूर्व उतारा गया है । वे चाहते हैं कि शैतान से फैसले करवाएँ जबकि उन्हें आदेश दिया गया था कि वे उसका इनकार करें। और शैतान यह चाहता है कि वह उन्हें घोर पथभ्रष्टता में बहका दे ।61।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿۶۲﴾ ج

और जब उनसे कहा जाता है कि उसकी ओर आओ जो अल्लाह ने उतारा है और रसूल की ओर आओ तो मुनाफ़िक़ों को तू देखेगा कि वे तुझ से बहुत परे हट जाते हैं ।62।

فَكَيْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا

फिर उन्हें क्या हो जाता है जो उनके हाथों ने आगे भेजा है, उसके कारण

---

* इस आयत में **ऊलिल अम्रि मिन्कुम** (अपने शासकों) में **मिन्कुम** शब्द का अनुवाद करते हुए कुछ विद्वान यह अर्थ करते हैं कि मुसलमानों ही में से अपना शासक बनाओ और ग़ैर मुस्लिम शासक के आज्ञापालन की आवश्यकता नहीं । यह एक अनर्थ विचार है जो सरसरी नज़र डालने से ही ग़लत प्रमाणित होता है । सब मुसलमान जो ग़ैर-मुस्लिम राज्य में बसते हैं अथवा वहाँ हिजरत कर जाते हैं वे उन राज्यों के कानून के अधीन होते हैं ।

दूसरा यह कि जो मुसलमान शासक हो उससे किसी विषय में मतभेद का प्रश्न ही नहीं है, जिसको अल्लाह और रसूल की ओर लौटाया जाए । यहाँ अल्लाह और रसूल से स्पष्टतया क़ुर्आन की शिक्षा अभीष्ट है । अत: कोई भी शासक हो, मुस्लिम हो अथवा ग़ैर मुस्लिम, यदि क़ुर्आन की मौलिक शिक्षा के विरुद्ध कार्य करने का आदेश दे तो ऐसी अवस्था में क़ुर्आन की बात मान्य होगी न कि शासक की ।

قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ۖ
بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٣﴾

जब उन पर कोई विपत्ति पड़ती है, तब वे तेरे पास अल्लाह की क़समें खाते हुए आते हैं कि हमारा तो उपकार करने और सुधार करने के अतिरिक्त कोई उद्देश्य नहीं था ।63।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ قَوْلًاۢ بَلِيْغًا ﴿٦٤﴾

यह वे लोग हैं जिनके दिलों का हाल अल्लाह भली-भाँति जानता है । अत: उनसे विमुख हो जा और उन्हें उपदेश कर और उन्हें ऐसी बात कह जो उनकी अंतरात्माओं पर गहरा प्रभाव छोड़ने वाली हो ।64।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ
لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٥﴾

और हमने हर एक रसूल को केवल इसलिए भेजा ताकि अल्लाह के आदेश से उसका आज्ञापालन किया जाए । और जब उन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया यदि उस समय वे तेरे पास उपस्थित होते और अल्लाह से क्षमा माँगते और रसूल भी उनके लिए क्षमा माँगता तो वे अवश्य अल्लाह को बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला पाते ।65।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ
فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٦﴾

नहीं ! तेरे रब्ब की सौगन्ध ! वे कभी ईमान नहीं ला सकते जब तक वे तुझे उन विषयों में न्यायकर्ता न बना लें जिनमें उनके बीच झगड़ा हुआ है । फिर तू जो भी निर्णय करे उसके सम्बन्ध में वे अपने मन में कोई तंगी न पाएँ और पूर्ण रूप से आज्ञापालन करें ।66।

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا
اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا

और यदि हमने उन पर यह अनिवार्य कर दिया होता कि तुम अपनी जानों की हत्या करो अथवा अपने घरों से निकल

فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ۙ﴿۶۷﴾

खड़े हो, तो उन में से कुछ एक के सिवा कोई ऐसा न करता । और यदि वे वही करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उनके लिए बहुत बेहतर होता तथा उनकी स्थिरता के लिए एक मज़बूत उपाय सिद्ध होता ।67।

وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّاۤ اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿۶۸﴾

और ऐसी दशा में हम उन्हें अपनी ओर से बड़ा प्रतिफल अवश्य प्रदान करते ।68।

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۶۹﴾

और हम अवश्य उन्हें सीधे मार्ग की ओर हिदायत देते ।69।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ؕ﴿۷۰﴾

और जो भी अल्लाह का और इस रसूल का आज्ञापालन करे तो यही वे लोग हैं, जो उन लोगों के साथ होंगे जिन को अल्लाह ने पुरस्कृत किया है । (अर्थात्) नबियों में से, सिद्दीक़ों (सत्यनिष्ठों) में से, शहीदों में से और सालेहों (सदाचारियों) में से । और ये बहुत ही अच्छे साथी हैं ।70।*

---

* इस आयत में ध्यान देने योग्य बहुत से विषय हैं । पहला यह कि **अर्रसूल** से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं अर्थात् यह विशेष रसूल । दूसरा यह कि यदि तुम इस रसूल का आज्ञापालन करोगे तो उन लोगों में से हो जाओगे जिन में नबी भी हैं और सिद्दीक़ भी और शहीद भी और सालेह भी हैं । इसका अर्थ यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आनुगत्य में नबी भी आ सकता है, अर्थात् वह जो इस रसूल का आज्ञापालन करने वाला हो ।
इस स्थान पर अरबी शब्द **म अ** का कुछ विद्वानों की ओर से हठधर्मिता के साथ यह अर्थ किया जाता है कि वे उनके साथ होंगे उन में से नहीं होंगे । इसके समर्थन में वे कहते हैं कि आयतांश **हसु न उलाइ क रफ़ीक़ा** (वे अच्छे साथी हैं) कहा गया है । अर्थात् वे नबियों के साथ होंगे, स्वयं नबी नहीं होंगे । इस आयत का यह अनुवाद करना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घोर अपमान है । क्योंकि इस प्रकार इस आयत का अर्थ यूँ होगा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञापालन करने वाले नबियों के साथ होंगे परन्तु स्वयं नबी नहीं होंगे । वे सिद्दीक़ों के साथ होंगे परन्तु स्वयं सिद्दीक़ नहीं होंगे । वे शहीदों के साथ होंगे परन्तु स्वयं शहीद नहीं होंगे। वे सालेहों के साथ होंगे परन्तु स्वयं सालेह न होंगे । क़ुर्आन मजीद की कई आयतों में **म अ** शब्द **मिन** (में से) के अर्थों में प्रयुक्त हुआ है उदाहरणार्थ देखें सूरः आले इम्रान : 194, सूरः अन निसा 147, सूरः अल हिज्र :32 ।→

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧١﴾ ع

यह अल्लाह की विशेष दया है और अल्लाह सर्वज्ञ होने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है ।71। (रुकू $\frac{9}{6}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧٢﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने बचाव का सामान रखा करो । फिर चाहे छोटे-छोटे गिरोहों में निकलो अथवा बड़े समूह के रूप में ।72।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٣﴾

और निस्सन्देह तुम में ऐसे भी हैं जो अवश्य देर करेंगे और जब तुम पर कोई विपत्ति आ पड़े तो ऐसा व्यक्ति कहेगा कि अल्लाह ने मुझ पर अनुग्रह किया कि मैं उनके साथ (यह विपत्ति) देखने वाला नहीं बना ।73।

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾

मानो तुम्हारे और उसके बीच कोई प्रेम का सम्बन्ध ही नहीं और यदि तुम्हें अल्लाह की ओर से कोई कृपा प्राप्त हो तो वह अवश्य इस प्रकार कहेगा कि काश ! मैं भी उनके साथ होता तो बहुत बड़ी सफलता प्राप्त करता ।74।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۭ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٥﴾

अतः अल्लाह के मार्ग में वे लोग युद्ध करें जो परलोक के बदले सांसारिक जीवन (को) बेच डालते हैं । और जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करे, फिर (उसकी) हत्या हो जाए अथवा वह विजयी हो जाए तो (प्रत्येक दशा में) हम अवश्य उसे बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे ।75।

←इसके अतिरिक्त यहाँ आयतांश **मअल्लज़ी न अन्अमल्लाहु अलैहिम** के पश्चात **मिनन्नबिय्यीन** कहा गया है । यह **मिन बयानिया** कहलाता है । तात्पर्य यह है कि 'उनके साथ' अर्थात् 'उन में से' ।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۙۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝٧٦

और तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के मार्ग में ऐसे पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए युद्ध नहीं करते जिन्हें दुर्बल बना दिया गया था (और) जो दुआ करते हैं कि हे हमारे रब्ब ! तू हमें इस बस्ती से निकाल जिसके रहने वाले अत्याचारी हैं और हमारे लिए अपनी ओर से कोई संरक्षक बना दे तथा हमारे लिए अपनी ओर से कोई सहायक नियुक्त कर दे ।76।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝٧٧ ع

वे लोग जो ईमान लाए हैं वे अल्लाह के रास्ते में युद्ध करते हैं और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, वे शैतान के रास्ते में युद्ध करते हैं । अत: तुम शैतान के मित्रों से युद्ध करो । शैतान की योजना अवश्य दुर्बल होती है ।77।

(रुकू $\frac{10}{7}$)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۭ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ

क्या तूने उन लोगों की ओर नज़र नहीं दौड़ाई जिन्हें कहा गया था कि अपने हाथ रोक लो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो । फिर जब युद्ध करना उन पर अनिवार्य किया गया तो सहसा उनमें से एक गिरोह लोगों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरा जाता है या उससे भी बढ़ कर और उन्होंने कहा, हे हमारे रब्ब ! तूने क्यों हम पर युद्ध (करना) अनिवार्य कर दिया? क्यों न तूने हमें थोड़े समय के लिए ढील दी ? तू कह दे कि सांसारिक लाभ थोड़ा है और परलोक उसके लिए अत्युत्तम है जिसने तक़वा धारण किया। और तुम पर खजूर की गुठली

وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٨﴾

की लकीर के समान भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।78।

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٩﴾

तुम जहाँ कहीं भी हो मृत्यु तुम्हें पकड़ लेगी, चाहे तुम अत्यन्त सुदृढ़ बुर्जों में ही हो । और यदि उन्हें कोई भलाई पहुँचती है तो वे कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है और यदि उन्हें कोई बुराई पहुँचती है तो कहते हैं (हे मुहम्मद !) यह तेरी ओर से है । तू कह दे कि सब कुछ अल्लाह ही की ओर से होता है । अतः उन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात समझने के निकट ही नहीं आते ।79।

مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٨٠﴾

जो भलाई तुझे पहुँचे तो वह अल्लाह ही की ओर से होती है और जो हानिकारक बात तुझे पहुँचे तो वह तेरी अपनी ओर से होती है । और हमने तुझे समस्त मनुष्यों के लिए रसूल बना कर भेजा है और अल्लाह गवाह के रूप में पर्याप्त है ।80।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨١﴾ؕ

जो इस रसूल का आज्ञापालन करे तो उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया और जो फिर जाए तो हमने तूझे उन पर संरक्षक बना कर नहीं भेजा ।81।

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ

और वे (केवल मुँह से) आज्ञापालन का दम भरते हैं । फिर जब वे तुझ से अलग होते हैं तो उनमें से एक गिरोह ऐसी बातें करते हुए रात गुज़ारता है, जो तेरी कही हुई बात से भिन्न होती है और अल्लाह उनकी रात की बातों को लिपिबद्ध कर लेता है । अतः उन से

وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨٢﴾

विमुख हो जा और अल्लाह पर भरोसा कर और अल्लाह कार्यसाधक के रूप में पर्याप्त है ।82।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٣﴾

अतः क्या वे क़ुरआन पर चिंतन-मनन नहीं करते ? हालाँकि यदि वह अल्लाह के सिवा किसी और की ओर से होता तो (वे) अवश्य उसमें बहुत विभेद पाते ।83।*

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٤﴾

और जब भी उनके पास कोई शांति अथवा भय की बात आए तो वे उसे फैला देते हैं । और यदि वे उसे (फैलाने के स्थान पर) रसूल की ओर अथवा अपने में से किसी अधिकारी के सामने प्रस्तुत कर देते तो उनमें से जो उसका निष्कर्ष निकालते वे अवश्य उस (की वास्तविकता) को जान लेते । और यदि तुम पर अल्लाह की दया और उसकी कृपा न होती तो तुम, कुछ एक के सिवा अवश्य शैतान का अनुसरण करने लगते ।84।

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ

अतः अल्लाह के मार्ग में युद्ध कर । तुझ पर तेरी अपनी जान के सिवा किसी और का बोझ नहीं डाला जाएगा और मोमिनों को भी (युद्ध करने की) प्रेरणा दे । असम्भव नहीं कि अल्लाह उन लोगों के युद्ध को रोक दे जिन्होंने इनकार किया तथा अल्लाह युद्ध करने में सबसे

---

* इस आयत में क़ुर्आन की सत्यता की यह दलील दी गई है कि इसकी आयतों में कोई विभेद नहीं पाया जाता हालाँकि यह तेईस वर्षों तक एक निरक्षर नबी पर अवतरित होता रहा है । तेईस वर्ष की अवधि में कितनी ही बातें अधिकतर ज़्यादा पढ़े लिखे व्यक्तियों को भी भूल जाती हैं, तो एक निरक्षर नबी के लिए कैसे संभव था कि वह अपनी ओर से पुस्तक बनाता और उसमें कोई विभेद न होता ।

وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّ اَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٥﴾

अधिक कठोर और शिक्षाप्रद दंड देने में अधिक कठोर है ।85।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٦﴾

जो कोई अच्छी सिफ़ारिश करे उसमें से उसका भी भाग होगा और जो कोई बुरी सिफ़ारिश करे उसका कुछ बोझ उसके लिए भी होगा । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर बहुत सामर्थ्य रखने वाला है ।86।

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٧﴾ النصف

और यदि तुम्हें कोई शुभ-कामना की भेंट दी जाए तो उससे बढ़िया दिया करो अथवा वही लौटा दो । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु का हिसाब लेने वाला है ।87।*

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٨﴾ ع

अल्लाह ! उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । वह अवश्य तुम्हें क़यामत के दिन तक एकत्र करता चला जाएगा, जिसमें कोई संदेह नहीं । और बात में अल्लाह से अधिक कौन सच्चा हो सकता है ।88। (रुकू $\frac{11}{8}$)

فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

अतः तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गिरोह में बटे हुए हो, हालाँकि अल्लाह ने उसके कारण जो उन्होंने अर्जित किया उन्हें औंधा कर दिया है । क्या तुम चाहते हो कि उसे हिदायत दो जिसे अल्लाह ने पथभ्रष्ट घोषित कर दिया है और जिसे अल्लाह

* इस आयत में यह भी बताया गया है कि जब भेंट दी जाए तो कम से कम उतना ही भेंट देने वाले को वापस किया जाए अथवा उससे बेहतर दिया जाए । इससे तात्पर्य यह नहीं कि वही भेंट लौटा दो उसके बदले अवश्य ही कोई उत्तम वस्तु दो । बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हमें **जज़ाकुमुल्लाहु ख़ैरन्** कहने की शिक्षा दी है, यह सर्वोत्तम भेंट है । परन्तु कुछ लोग इसे अपने लोभ को छिपाने का साधन भी बना लेते हैं । वे भेंट स्वीकार तो करते हैं परन्तु भेंट देते नहीं और **जज़ाकुमुल्लाह** कहने को ही पर्याप्त समझते हैं ।

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿٨٩﴾

पथभ्रष्ट घोषित कर दे तो उसके लिए कदापि तू कोई रास्ता नहीं पायेगा ।89।

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۠ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٩٠﴾

वे चाहते हैं कि काश तुम भी उसी प्रकार इनकार करो जिस प्रकार उन्होंने इनकार किया । फलतः तुम एक जैसे हो जाओ। अतः उनमें से कोई मित्र न बनाया करो यहाँ तक कि वे अल्लाह के मार्ग में हिजरत करें । फिर यदि वे पीठ दिखा जाएँ तो उनको पकड़ो और उनकी हत्या करो जहाँ कहीं भी तुम उनको पाओ। और उनमें से किसी को मित्र अथवा सहायक न बनाओ ।90।

اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩١﴾

सिवाय उन लोगों के जो ऐसी जाति से सम्बन्ध रखते हैं जिनके और तुम्हारे बीच समझौते हुए हैं । अथवा वे इस हालत में तुम्हारे पास आएँ कि उनके मन इस बात पर तंगी अनुभव करते हों कि वे तुम से लड़ें अथवा स्वयं अपनी ही जाति से लड़ें । और यदि अल्लाह चाहता तो उनको तुम पर हावी कर देता फिर वे अवश्य तुम से युद्ध करते । अतः यदि वे तुमसे अलग रहें, फिर तुमसे युद्ध न करें और तुम्हें शांति का संदेश दें तो फिर अल्लाह ने तुम्हें उनके विरुद्ध कोई औचित्य प्रदान नहीं किया ।91।

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ

तुम कुछ दूसरे लोग ऐसे भी पाओगे जो चाहते हैं कि वे तुम से भी शांति में रहें और अपनी जाति से भी शांति में रहें । जब कभी भी उनको उपद्रव की ओर ले जाया जाए तो वे उसमें औंधे मुँह गिराये जाते हैं । अतः यदि वे तुम्हारा पीछा न

وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۹۲﴾ ع ١٢/٩

छोड़ें और तुम्हें शांति का संदेश न दें और अपने हाथ न रोकें तो उनको पकड़ो और उनकी हत्या करो, जहाँ कहीं भी तुम उन्हें पाओ । और यही वे (तुम्हारे शत्रु) हैं जिनके विरुद्ध हमने तुम्हें खुला-खुला तर्क प्रदान किया है ।92। (रुकू $\frac{12}{9}$)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۹۳﴾

और किसी मोमिन के लिए उचित नहीं कि किसी मोमिन की हत्या करे सिवाय इसके कि ग़लती से ऐसा हो जाये । और जो कोई ग़लती से किसी मोमिन की हत्या कर बैठे तो एक मोमिन दास को स्वतन्त्र करना है और (निर्धारित) दिय्यत (मुवावज़ा) उसके घर वालों को अदा करनी होगी, सिवाय इसके कि वे क्षमा कर दें और यदि वह (जिसकी की हत्या हुई हो) तुम्हारी शत्रु जाति से सम्बन्ध रखता हो और मोमिन हो तब (भी) एक मोमिन दास को स्वतन्त्र करना है । और यदि वह ऐसी जाति से सम्बन्ध रखने वाला हो कि तुम्हारे और उनके बीच समझौते हुए हों तो उसके घर वालों को (निर्धारित) दिय्यत देना और एक मोमिन दास को स्वतन्त्र करना भी अनिवार्य है । और जिसको इसका सामर्थ्य न हो तो (उसे) दो महीने लगातार रोज़े रखने होंगे । अल्लाह की ओर से यह प्रायश्चित स्वरूप (अनिवार्य किया गया) है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।93।

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٤﴾

और जो जान-बूझ कर किसी मोमिन की हत्या करे तो उसका प्रतिफल नरक है । वह उसमें बहुत लम्बा समय रहने वाला है और अल्लाह उस पर क्रोधित हुआ और उस पर ला'नत् की, तथा उसने उसके लिए बहुत बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है ।94।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٥﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम अल्लाह के मार्ग में यात्रा कर रहे हो तो भली-भाँति छान बीन कर लिया करो और जो तुम पर सलाम भेजे उससे यह न कहा करो कि तू मोमिन नहीं है। तुम सांसारिक जीवन के धन चाहते हो अल्लाह के पास ग़नीमत के बहुत सामान हैं । इससे पूर्व तुम इसी प्रकार हुआ करते थे फिर अल्लाह ने तुम पर दया की । अत: भली-भाँति छान बीन कर लिया करो । निस्सन्देह अल्लाह जो तुम करते हो उससे बहुत अवगत है ।95।*

لَا يَسْتَوِى الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ

मोमिनों में से, बिना किसी रोग के घर बैठे रहने वाले और (दूसरे) अल्लाह के मार्ग में अपने धन और अपनी जानों के साथ जिहाद करने वाले समान नहीं हो सकते। अल्लाह ने अपने धन और अपनी जानों के द्वारा जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर एक विशेष पद प्रदान किया है। जबकि प्रत्येक से अल्लाह ने

---

* इस आयत से स्पष्ट है कि प्रत्येक राह चलते व्यक्ति को शत्रु समझ कर उस पर अत्याचार करने की अनुमति नहीं है । किसी को पहचानने के लिए यही पर्याप्त है कि वह तुम्हें सलाम कहे । आश्चर्य है कि इस बिगड़े हुए युग में बिगड़े हुए उलेमा सलाम कहने के फलस्वरूप अत्याचार करते हैं ।

الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿٩٦﴾

भलाई का ही वादा किया है । और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर महान प्रतिफल स्वरूप एक श्रेष्ठता प्रदान की है ।96।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٧﴾ ع

(यह) उसकी ओर से दर्जे और पुरस्कार तथा कृपा स्वरूप (है) । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।97। (रुकू $\frac{13}{10}$)

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۙ﴿٩٨﴾

निस्सन्देह वे लोग जिनको फ़रिश्ते इस अवस्था में मृत्यु देते हैं कि वे अपनी जानों पर अत्याचार करने वाले हैं वे (उनसे) कहते हैं कि तुम किस अवस्था में रहे ? वे (उत्तर में) कहते हैं, हम तो स्वदेश में बहुत कमज़ोर बना दिए गए थे। वे (फ़रिश्ते) कहेंगे कि क्या अल्लाह की धरती विस्तृत नहीं थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते ? अत: यही लोग हैं जिनका ठिकाना नरक है और वह बहुत बुरा ठिकाना है ।98।

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ۙ﴿٩٩﴾

सिवाय उन पुरुषों और स्त्रियों तथा बच्चों के जिन्हें कमज़ोर बना दिया गया था, जिनको कोई साधन उपलब्ध नहीं था और न ही वे (निकलने) की कोई राह पाते थे ।99।

فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿١٠٠﴾

अत: यही वे लोग हैं, सम्भव है कि अल्लाह उन की मार्जना करे और अल्लाह बहुत मार्जना करने वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।100।

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ

और जो अल्लाह के मार्ग में हिजरत करे तो वह धरती में (शत्रु को) असफल करने के बहुत से अवसर और खुशहाली

بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ
يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٠١ ع

पाएगा । और जो अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की ओर हिजरत करते हुए निकलता है फिर (इस अवस्था में) उस पर मृत्यु आ जाती है तो उसका प्रतिफल अल्लाह पर अनिवार्य हो गया है। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।101। (रुकू $\frac{14}{11}$)

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖۗ
اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ
اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝١٠٢

और जब तुम धरती में (जिहाद करते हुए) यात्रा पर निकलो तो तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम नमाज़ क़सर (छोटी) कर लिया करो, यदि तुम्हें भय हो कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया है तुम्हें परीक्षा में डालेंगे । निस्सन्देह काफ़िर तुम्हारे खुले-खुले शत्रु हैं ।102।

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ
فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا
اَسْلِحَتَهُمْ ۣ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ
وَّرَآئِكُمْ ۠ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ
يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا
حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ
فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ

और जब तू भी उनमें हो और तू उन्हें नमाज़ पढ़ाए तो उनमें से एक गिरोह (नमाज़ के लिए) तेरे साथ खड़ा हो जाए। और चाहिए कि वे (जिहाद करने वाले) अपने शस्त्र साथ रखें । अत: जब वे सजद: कर लें तो वे तुम्हारे पीछे हो जाएँ और दूसरा गिरोह आ जाए जिन्होंने नमाज़ नहीं पढ़ी, फिर वे तेरे साथ नमाज़ पढ़ें और वे अपने बचाव के सामान और शस्त्र साथ रखें । जिन लोगों ने इनकार किया है वे चाहते हैं कि काश तुम अपने हथियारों और सामान से असावधान हो जाओ तो वे सहसा तुम पर टूट पड़ें और यदि तुम्हें वर्षा के कारण कोई कठिनाई हो अथवा तुम बीमार हो, तुम पर कोई पाप नहीं कि अपने शस्त्र

مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٠٢﴾

रख दो और अपने बचाव का साधन (हर हाल में) धारण किए रहो । निस्सन्देह अल्लाह ने काफ़िरों के लिए घोर अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है ।103।

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो, खड़े होने की अवस्था में भी और बैठे हुए भी और अपने पहलुओं पर भी । फिर जब तुम निश्चिंत हो जाओ तो नमाज़ को क़ायम करो । निस्सन्देह नमाज़ मोमिनों पर एक निर्धारित समय की पाबन्दी के साथ अनिवार्य है ।104।

وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٠٤﴾

और (विरोधी) लोगों का पीछा करने में कमज़ोरी न दिखाओ । यदि तुम कष्ट उठा रहे हो तो तुम्हारी भाँति निश्चित रूप से वे भी कष्ट उठा रहे हैं । और तुम अल्लाह से उसकी आशा रखते हो जिसकी वे आशा नहीं रखते । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।105। (रुकू $\frac{15}{12}$)

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ۙ﴿١٠٥﴾

निस्सन्देह हमने तेरी ओर पुस्तक को सत्य के साथ अवतरित किया है ताकि तू लोगों के बीच उसके अनुसार फैसला करे जो अल्लाह ने तुझे समझाया है । और ख़यानत करने वालों के पक्ष में बहस करने वाला न बन ।106।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۚ﴿١٠٦﴾

और अल्लाह से क्षमा याचना कर । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला है ।107।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۚ﴿۱۰۸﴾

और उन लोगों की ओर से बहस न कर जो अपने आप से ख़यानत करते हैं । निस्सन्देह अल्लाह अत्यधिक ख़यानत करने वाले महापापी को पसन्द नहीं करता ।108।

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿۱۰۹﴾

वे लोगों से तो छिप जाते हैं परन्तु अल्लाह से नहीं छिप सकते और वह उनके साथ होता है जब वे ऐसी बातें करते हुए रात गुज़ारते हैं जिसे वह पसन्द नहीं करता । और जो वे करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है ।109।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۟ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۱۱۰﴾

देखो, तुम वे लोग हो कि तुम सांसारिक जीवन में तो उनके पक्ष में बहसें करते हो । परन्तु क़यामत के दिन उनके पक्ष में अल्लाह से कौन बहस करेगा अथवा कौन है जो उनका समर्थक होगा ? ।110।

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۱﴾

और जो भी कोई कुकर्म करे अथवा अपनी जान पर अत्याचार करे, फिर अल्लाह से क्षमा याचना करे, वह अल्लाह को बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला पाएगा ।111।

وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱۲﴾

और जो कोई पाप कमाता है तो निस्सन्देह वह उसे अपने ही विरुद्ध कमाता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।112।

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ

और जो कोई अपराध कर बैठे अथवा पाप करे, फिर किसी निरपराध पर उसका आरोप लगा दे तो उसने बहुत

بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٣﴾	बड़ा आरोप और खुल्लम-खुल्ला पाप (का बोझ) उठा लिया ।113। (रुकू $\frac{16}{13}$)
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾	और यदि तुझ पर अल्लाह की दया और उसकी कृपा न होती तो उनमें से एक गिरोह ने तो ठान लिया था कि वे अवश्य तुझे पथभ्रष्ट कर देंगे । परन्तु वे अपने अतिरिक्त किसी को पथभ्रष्ट नहीं कर सकते । वे तुझे कदापि कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और अल्लाह ने तुझ पर पुस्तक और तत्त्वज्ञान उतारे हैं और तुझे वह कुछ सिखाया है जो तू नहीं जानता था और तुझ पर अल्लाह की दया बहुत बड़ी है ।114।
لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٥﴾	उनके अधिकतर गुप्त मन्त्रणाओं में कोई भलाई की बात नहीं । सिवाय इसके कि कोई दान अथवा भलाई की बात अथवा लोगों के बीच सुधार की सीख दे। और जो भी अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने की इच्छा से ऐसा करता है तो अवश्य हम उसे एक बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे ।115।
وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٦﴾	और जो रसूल का विरोध करे इसके बावजूद कि हिदायत उस पर स्पष्ट हो चुकी हो और मोमिनों के मार्ग के अतिरिक्त कोई और मार्ग अपनाए तो हम उसे उसी ओर फेर देंगे जिस ओर वह मुड़ गया है और हम उसे नरक में प्रविष्ट करेंगे । और वह बहुत बुरा ठिकाना है ।116। (रुकू $\frac{17}{14}$)

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا ﴿١١٧﴾

निस्सन्देह अल्लाह क्षमा नहीं करता कि इसका साझीदार ठहराया जाए और जो इसके अतिरिक्त (पाप) है जिसके लिए चाहे क्षमा कर देता है । और जो अल्लाह का साझीदार ठहराए तो निस्सन्देह वह घोर पथभ्रष्टता में बहक गया ।117।

إِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ إِلَّآ إِنٰثًا ۚ وَإِنْ يَّدْعُوْنَ إِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٨﴾

वे उसको छोड़कर स्त्रियों (अर्थात मूर्तियों) के सिवा किसी को नहीं पुकारते और वे उद्दंडी शैतान के सिवा (किसी को) नहीं पुकारते ।118।

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٩﴾

अल्लाह ने उस पर ला'नत की जबकि उसने कहा कि मैं तेरे भक्तों में से अवश्य एक निर्धारित भाग को ले लूँगा ।119।

وَّلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١٢٠﴾

और मैं अवश्य उन को पथभ्रष्ट करूँगा और उन्हें अवश्य आशाएँ दिलाऊँगा और ज़रूर उन्हें आदेश दूँगा तो वे अवश्य पशुओं के कानों पर आघात लगाएँगे और मैं ज़रूर उन्हें आदेश दूँगा तो वे अवश्य अल्लाह की सृष्टि में परिवर्तन कर देंगे । और जिसने भी अल्लाह को छोड़ कर शैतान को मित्र बनाया तो निस्सन्देह उसने खुला-खुला घाटा उठाया ।120।*

✼ इस आयत में एक महान भविष्यवाणी की गई है कि एक समय आनुवंशिकी इंजीनियरिंग (Genetic Engineering) का आविष्कार होगा अर्थात् वैज्ञानिक अल्लाह की सृष्टि को परिवर्तन करने की चेष्टा करेंगे, जैसा कि आजकल हो रहा है । चूँकि यह शैतानी आदेश से होगा अत: उन को खुला-खुला घाटा उठाने वाला कहा गया है और उन को नरक का दंड मिलेगा । विभिन्न आविष्कारों के संबन्ध में केवल यही एक भविष्यवाणी है जो अपने साथ भयानक चेतावनी भी रखती है । इसके इतर क़ुरआन करीम ऐसी अनेक भविष्यवाणियों से भरा पड़ा है । परन्तु किसी अन्य भविष्यवाणी के परिणामस्वरूप भयानक चेतावनी नहीं दी गई । अत: आनुवंशिकी इंजीनियरिंग उसी सीमा तक उचित है जिस सीमा तक उसे अल्लाह तआला की सृष्टि की रक्षार्थ उपयोग किया जाये । यदि सृष्टि को परिवर्तित करने के लिए इसका उपयोग किया जाये तो इससे बहुत क्षति हो सकती है । आजकल के वैज्ञानिकों का एक बड़ा गिरोह भी आनुवंशिकी इंजीनियरिंग के द्वारा अल्लाह की सृष्टि को परिवर्तित करने का विरोध करता है ।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢١﴾

वह उन्हें वचन देता है और आशाएँ दिलाता है और धोखे के अतिरिक्त शैतान उनसे कोई वादा नहीं करता ।121।

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۫ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢٢﴾

यही वे लोग हैं जिनका ठिकाना नरक है और वे उससे बचने का कोई स्थान नहीं पाएँगे ।122।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۖ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۖ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٣﴾

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, हम अवश्य उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेंगे जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं । यह अल्लाह का सत्यवचन है । और (अपने) कथन में अल्लाह से अधिक सत्यवादी और कौन है ? ।123।

لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ۖ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٤﴾

(निर्णय) न तो तुम्हारी आकांक्षाओं के अनुसार होगा और न अह्ले किताब की आकांक्षाओं के अनुसार होगा । जो भी कुकर्म करेगा उसे उसका प्रतिफल दिया जाएगा और वह अपने लिए अल्लाह को छोड़ कर न कोई मित्र पाएगा, न कोई सहायक ।124।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٥﴾

और पुरुषों में से अथवा स्त्रियों में से जो नेक कर्म करे और वह मोमिन हो तो यही वे लोग हैं जो स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे और उन पर खजूर की गुठली के छेद के समान भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।125।

وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۖ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٦﴾

और धर्म में उससे बेहतर कौन हो सकता है जो अपना सारा ध्यान अल्लाह के लिए अर्पित कर दे और वह उपकार करने वाला हो तथा उसने सत्यनिष्ठ इब्राहीम के धर्म का अनुसरण किया हो । और अल्लाह ने इब्राहीम को मित्र बना लिया था ।126।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۷﴾

और अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और जो धरती में है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु को घेरे हुए है ।127।

(रुकू 18/15)

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۸﴾

और वे तुझ से स्त्रियों के विषय में फ़तवा पूछते हैं । तू कह दे कि अल्लाह तुम्हें उनके सम्बन्ध में फ़तवा देता है और उस ओर (ध्यान आकर्षित करता है) जो तुम्हारे समक्ष पुस्तक में उन अनाथ स्त्रियों के सम्बन्ध में पढ़ा जा चुका है जिनको तुम वह (सब) नहीं देते जो उनके पक्ष में अनिवार्य किया गया है, हालाँकि तुम इच्छा रखते हो कि उनसे निकाह करो । इसी प्रकार बच्चों में से (असहाय) कमज़ोरों के सम्बन्ध में (अल्लाह फ़तवा देता है) और (ताकीद करता है) कि तुम अनाथों के पक्ष में न्याय के साथ दृढ़ता पूर्वक खड़े हो जाओ । अत: जो नेकी भी तुम करोगे तो निस्सन्देह अल्लाह उसका भली-भाँति ज्ञान रखता है ।128।

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۲۹﴾

और यदि कोई स्त्री अपने पति से कलहपूर्ण व्यवहार अथवा उपेक्षा भाव का भय करे तो उन दोनों पर कोई पाप तो नहीं कि अपने बीच सुधार करते हुए मेल कर लें । और मेल करना (हर हाल में) बेहतर है । और मानव (स्वभाव में) कंजूसी रख दी गई है और यदि तुम उपकार करो और तक़वा से काम लो तो निस्सन्देह अल्लाह जो तुम करते हो उससे भली-भाँति अवगत है ।129।

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٣٠﴾

और तुम यह सामर्थ्य नहीं रख सकोगे कि स्त्रियों के बीच पूर्ण रूप से न्याय का मामला करो चाहे तुम कितना ही चाहो। इस कारण (यह तो करो कि किसी एक की ओर) पूर्णतया न झुक जाओ कि उस (दूसरी) को मानो लटकता हुआ छोड़ दो और यदि तुम सुधार करो तथा तक़वा धारण करो तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।130।*

وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣١﴾

और यदि वे दोनों अलग हो जाएँ तो अल्लाह प्रत्येक को उसके सामर्थ्य के अनुसार धनवान् कर देगा और अल्लाह बहुत विस्तार प्रदान करने वाला (और) परम विवेकशील है।131।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣٢﴾

और अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और जो धरती में है । और निस्सन्देह हम ने उन लोगों को जिनको तुमसे पूर्व पुस्तक दी गई थी ताकीदी आदेश दिया था और स्वयं तुम्हें भी, कि अल्लाह का तक़वा अपनाओ और यदि तुम इनकार करो तो निस्सन्देह अल्लाह ही का है जो आकाशों में है और जो धरती में है (और) अल्लाह निस्पृह और स्तुति योग्य है।132।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ

और अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और जो धरती में है और

* एक से अधिक विवाहों के फलस्वरूप यह तो असम्भव है कि प्रत्येक पत्नी से एक समान प्रेम हो । प्रेम का संबंध तो दिल से है । परन्तु न्याय का संबंध मनुष्य के वश में है । इस कारण ताकीद की गई कि यदि एक से अधिक पत्नियाँ हों तो न्याय से काम लेना है और किसी एक को ऐसे न छोड़ दिया जाए कि तुम उसकी देखभाल ही न करो ।

وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۳۳﴾

अल्लाह कार्यसाधक के रूप में बहुत पर्याप्त है ।133।

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۴﴾

हे मानव जाति ! यदि वह चाहे तो तुम्हें नष्ट कर दे और दूसरों को ले आए । और अल्लाह इस बात पर स्थायी सामर्थ्य रखता है ।134।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿۱۳۵﴾ ع ۱۹/۱۶

जो सांसारिक प्रतिफल चाहता है तो अल्लाह के पास संसार का प्रतिफल भी है और परलोक का भी । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) बहुत देखने वाला है ।135। (रुकू $\frac{19}{16}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۳۶﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए गवाह बनते हुए न्याय को दृढ़ता पूर्वक स्थापित करने वाले बन जाओ । चाहे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देनी पड़े अथवा माता-पिता और निकट सम्बंधियों के विरुद्ध ।* चाहे कोई धनवान हो अथवा निर्धन, दोनों का अल्लाह ही उत्तम निरीक्षक है । अत: अपनी अभिलाषाओं का अनुसरण न करो ऐसा न हो कि न्याय से हट जाओ । और यदि तुमने गोल-मोल बात की अथवा मुँह फेर लिया तो निस्सन्देह जो तुम करते हो उससे अल्लाह बहुत अवगत है ।136।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ और उस पुस्तक पर भी जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उस पुस्तक पर भी जो

✻ क़ुर्आन करीम की यह आयत गवाही देने के अवसर पर भी न्याय की शिक्षा लागू करती है । अर्थात् प्रत्येक गवाह पर अनिवार्य है कि न्यायपूर्ण गवाही दे, चाहे स्वयं अपने विरुद्ध अथवा माता-पिता या सगे सम्बंधियों के विरुद्ध गवाही देनी पड़े ।

وَالْكِتٰبِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۱۳۷﴾

उसने पहले उतारी थी । और जो अल्लाह का इनकार करे और उसके फ़रिश्तों का और उसकी पुस्तकों का और उसके रसूलों का और अंतिम दिवस का, तो निस्सन्देह वह बहुत ही घोर पथभ्रष्टता में (पड़कर) भटक चुका है ।137।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ؕ﴿۱۳۸﴾

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाए फिर इनकार कर दिया फिर ईमान लाए फिर इनकार कर दिया फिर इनकार में बढ़ते चले गए, अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें क्षमा कर दे और उन्हें सन्मार्ग की हिदायत दे ।138।*

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمَا ۙ﴿۱۳۹﴾

मुनाफ़िक़ों को खुशखबरी दे दे कि उनके लिए बहुत पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।139।

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ﴿۱۴۰﴾

(अर्थात्) उन लोगों को जो मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को मित्र बना लेते हैं। क्या वे उनके निकट सम्मान के अभिलाषी हैं ? अत: निश्चित रूप से सम्मान सब का सब अल्लाह के क़ब्ज़े में है ।140।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ

और निस्संदेह उसने तुम पर पुस्तक में यह आदेश उतारा है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इनकार किया जा रहा है अथवा उनसे उपहास किया जा रहा है तो उन लोगों के पास न

---

* यह आयत इस विचारधारा को नकारती है कि मुर्तद (धर्मत्यागी) का दंड हत्या है । अत: कहा कि यदि कोई मुर्तद हो जाए, फिर ईमान ले आए । पुन: मुर्तद हो जाए पुन: ईमान ले आए तो उसका फैसला अल्लाह तआला के सुपुर्द है और यदि इनकार की अवस्था में मरेगा तो निश्चित रूप से नरकगामी होगा । यदि मुर्तद का दंड हत्या होती तो उसके बार-बार ईमान लाने और इनकार करने का प्रश्न ही नहीं उठता था ।

حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ۙ﴿١٤١﴾

बैठो यहाँ तक कि वे उसके सिवा किसी और बात में लग जाएँ । ज़रूर है कि इस अवस्था में तुम सहसा उन जैसे ही हो जाओ । निस्संदेह अल्लाह सब मुनाफ़िकों और काफ़िरों को नरक में एकत्रित करने वाला है ।141।*

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤٢﴾ ع ٢٠/١٧

(अर्थात्) उन लोगों को जो तुम्हारे सम्बंध में (बुरे समाचारों) की प्रतीक्षा कर रहे हैं । अत: यदि तुम्हें अल्लाह की ओर से विजय प्राप्त हो तो कहेंगे, क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे ? और यदि काफ़िरों को (विजय) प्राप्त हो तो (उनसे) कहते हैं क्या हमने तुम पर (पहले) प्रभुत्व नहीं पाया था और तुम्हें मोमिनों से बचाया नहीं था ? अत: अल्लाह ही क़यामत के दिन तुम्हारे बीच निर्णय करेगा । और अल्लाह काफ़िरों को मोमिनों पर कोई अधिकार नहीं देगा ।142। (रुकू $\frac{20}{17}$)

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٣﴾

निस्सन्देह मुनाफ़िक़ अल्लाह से धोखा-धड़ी करते हैं जबकि वह उन्हीं को धोखे में डाल देता है । और जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं सुस्ती के साथ खड़े होते हैं । लोगों के सामने दिखावा करते हैं और अल्लाह का बहुत ही थोड़ा स्मरण करते हैं ।143।

✻ इस आयत में स्पष्ट रूप से आदेश है कि वे लोग जो नबियों और ईशवाणी से उपहास करते हैं, उनके साथ न बैठा करो अन्यथा तुम उन जैसे ही हो जाओगे । परन्तु उन लोगों का स्थायी रूप से बहिष्कार करने का यहाँ आदेश नहीं है । उनमें से जो लोग अपने इस कृत्य का प्रायश्चित कर लें उन से मेल-मिलाप की अनुमति है ।

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۱۴۴﴾

वे इसके बीच दुविधा में पड़े रहते हैं । न इनकी ओर होते हैं न उनकी ओर । और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए तू कोई (हिदायत की) राह नहीं पाएगा ।144।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۴۵﴾

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को मित्र न बनाओ । क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह को अपने विरुद्ध खुली-खुली दलील दे दो ।145।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۙ﴿۱۴۶﴾

निस्सन्देह मुनाफ़िक़ नरक की अत्यन्त गहराई में होंगे और तू उनके लिए कोई सहायक न पाएगा ।146।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۴۷﴾

परन्तु वे लोग जिन्होंने प्रायश्चित किया और सुधार किया और अल्लाह को दृढ़ता से पकड़ लिया और अपने धर्म को अल्लाह के लिए विशिष्ट कर लिया, तो यही वे लोग हैं जो मोमिनों के साथ हैं और शीघ्र ही अल्लाह मोमिनों को एक बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा ।147।

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾

यदि तुम कृतज्ञता प्रकट करो और ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम्हें दंड दे कर क्या करेगा । और अल्लाह कृतज्ञता का बहुत हक़ अदा करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।148।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٩﴾

अल्लाह खुले आम बुरी बात कहने को पसन्द नहीं करता परन्तु वह (व्यक्ति इससे) अलग है, जिस पर अत्याचार किया गया हो । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।149।*

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٥٠﴾

यदि तुम कोई नेकी प्रकट करो अथवा उसे छिपाए रखो अथवा किसी बुराई की अनदेखी करो तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है ।150।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥١﴾ ۙ

निस्सन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच भेद-भाव करें और कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान लाएँगे और कुछ का इनकार कर देंगे और चाहते हैं कि उसके बीच का कोई रास्ता अपनाएँ ।151।**

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥٢﴾

यही लोग हैं जो पक्के काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के लिए अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है ।152।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ

और वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी के बीच भेद-भाव नहीं किया, यही वे लोग हैं जिन्हें वह अवश्य उनके

---

* ऊँची आवाज़ से खुले आम किसी को बुरा-भला कहना उचित नहीं । सिवाय इसके कि उसने उस पर अत्याचार किया हो ।

** इस आयत में हदीस के इनकारी (अहले-क़ुर्आन सम्प्रदाय) का खंडन है । वे अल्लाह के कथन और रसूल के कथन में अन्तर करते हैं और हदीस को नहीं मानते । आयत 153 में इसी विषय को और पक्का किया गया है कि जो लोग अल्लाह और रसूल पर सच्चा ईमान लाते हैं वे अल्लाह के कथन और रसूल के कथन में कोई अन्तर नहीं करते ।

أُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٣﴾ ع

प्रतिफल प्रदान करेगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।153। (रुकू $\frac{21}{1}$)

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰۤى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْۤا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٤﴾

तुझ से अह्ले किताब प्रश्न करते हैं कि तू उन पर आकाश से (प्रत्यक्ष रूप से) कोई पुस्तक उतार लाये । अतः वे मूसा से इस से भी बड़ी बातों की माँग कर चुके हैं । अतः उन्होंने (उससे) कहा कि हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष रूप से दिखा दे। अतः उनके अत्याचार के कारण उन्हें आकाशीय बिजली ने आ पकड़ा । फिर उन्होंने बछड़े को (उपास्य के रूप में) अपना लिया, बावजूद इसके कि उनके पास खुली-खुली निशानियाँ आ चुकी थीं । इसके बावजूद हमने इस विषय में क्षमा से काम लिया और हमने मूसा को सुस्पष्ट युक्ति प्रदान की ।154।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٥﴾

और हमने उनकी प्रतिज्ञा के कारण उन पर तूर को ऊँचा किया और हमने उनसे कहा कि (अल्लाह का) आज्ञापालन करते हुए द्वार में प्रविष्ट हो जाओ और हमने उन्हें कहा कि सब्त के बारे में किसी प्रकार सीमा का उल्लंघन न करो। और उनसे हमने एक बहुत पक्का वचन लिया ।155।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا

अतः उनके अपना वचन तोड़ने के कारण और अल्लाह की आयतों के इनकार और नबियों का अकारण घोर-विरोध करने के कारण तथा उनके यह कहने के कारण कि हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने

بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٦﴾

उनके इनकार के कारण उन (दिलों) पर मुहर लगा रखी है । अत: वे बहुत ही कम ईमान लाएँगे ।156।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٧﴾

और उनके इनकार के कारण और मरियम के विरुद्ध एक बहुत बड़े आरोप की बात कहने के कारण ।157।

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿١٥٨﴾

और उनके इस कथन के कारण कि निस्सन्देह हमने मरियम के पुत्र ईसा मसीह की जो अल्लाह का रसूल था, हत्या कर दी है । और निस्सन्देह वे उसकी हत्या नहीं कर सके और न उसे सूली दे (कर मार) सके बल्कि उन पर (यह) विषय संदिग्ध कर दिया गया और निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने इस विषय में मतभेद किया है, इसके सम्बन्ध में संदेह में पड़े हैं। उनके पास भ्रम का अनुसरण करने के अतिरिक्त कोई ज्ञान नहीं है । और वे निश्चित रूप से उसकी हत्या न कर सके ।158।*

---

* इस आयत में यहूदियों के ग़लत दावे का खण्डन किया गया है कि हमने मसीह का वध किया है । हालाँकि न उन्होंने मसीह को हत्या करके मारा, न सूली देकर मारा । **सलबूहु** शब्द से अभिप्राय केवल सूली पर चढ़ाना नहीं है बल्कि सूली पर चढ़ाने का उद्देश्य प्राप्त करना है अर्थात सूली पर मार देना है । बहुत से लोग सूली पर चढ़ा कर जीवित भी उतार लिए जाते हैं । उनकी मृत्यु पर कभी नहीं कहा जाता कि वे सूली दिए गए । अन्तिम परिणाम इस आयत में यह निकाला गया है कि निस्सन्देह वे मसीह की हत्या करने में सफल नहीं हो सके ।

शुब्बिहा लहुम शब्द (उन पर विषय संदिग्ध कर दिया गया) की ग़लत व्याख्या यह की जाती है कि कोई और व्यक्ति मसीह का समरूप हो गया और फिर उसे सूली दे दी गई । हालाँकि निश्चित रूप से यह अरबी भाषा के मुहावरे के विपरीत है अन्यथा उस व्यक्ति का उल्लेख होना चाहिए था जिसने मसीह का रूप धारण किया और मसीह का समरूप बन गया । **शुब्बिहा लहुम** के स्पष्ट रूप से यह अर्थ हैं कि वे शंका में पड़ गए, उन पर यह विषय संदिग्ध हो गया । हज़रत इमाम राज़ी रह. ने इस आयत की व्याख्या में लिखा है : **वलाकिन वकअ लहुमुश्शुब्बह** (लेकिन उनके लिए संदेह उत्पन्न हो गया) तफ़सीर कबीर, इमाम राज़ी रहि. ।

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۹﴾

बल्कि अल्लाह ने अपनी ओर उसका उत्थान कर लिया और निस्संदेह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।159।*

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ﴿۱۶۰﴾ۚ

और अहले किताब में से कोई (गिरोह ऐसा) नहीं जो उसकी मृत्यु से पूर्व निश्चित रूप से उस पर ईमान न ले आयेगा और क़यामत के दिन वह उन पर गवाह होगा ।160।**

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ﴿۱۶۱﴾ۙ

अत: वे लोग जो यहूदी थे उनके अत्याचार के कारण और अल्लाह के मार्ग में उनके द्वारा बहुत रोक डालने के कारण हमने उन पर वह पवित्र वस्तुएँ भी हराम (अवैध) कर दीं जो (इससे पूर्व) उनके लिए हलाल (वैध) की गईं थीं ।161।

وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا

और उनके सूद लेने के कारण, हालाँकि वे इससे रोक दिए गए थे और लोगों के धन अनुचित ढंग से

---

* यह आयत कुछ विद्वानों के इस दावे का खण्डन करती है कि हज़रत ईसा अलै. का उत्थान आकाश की ओर किया गया था । यह आयत स्पष्ट रूप से कह रही है कि **बर्रफ़अहुल्लाहु इलैहि** अल्लाह ने उनका रफ़अ (उत्थान) अपनी ओर किया था । प्रश्न उठता है कि कौन सा स्थान अल्लाह से खाली है जिसकी ओर मसीह उठाए गए ? वास्तविकता यह है कि जहाँ मसीह उपस्थित थे वहीं अल्लाह भी था । अत: **रफ़अ** शब्द का अर्थ दर्जों का उत्थान है ।

** आयतांश **इम्मिन अह्लिल किताबि** (अह्ले किताब में से) के दो अर्थ हो सकते हैं । एक यह कि अह्ले किताब में से एक व्यक्ति भी नहीं जो उसकी मृत्यु से पूर्व उस पर ईमान न लाए । दूसरा यह कि अह्ले किताब में से एक भी गिरोह नहीं जो उसकी मृत्यु से पूर्व उस पर ईमान न लाए और यही ठीक है । यदि पहला अर्थ किया जाए अर्थात उसकी मृत्यु से यदि मसीह की मृत्यु समझी जाए तो यह केवल एक दावा है । करोड़ों यहूदी मर गए जो न अपनी मृत्यु से पूर्व मसीह पर ईमान लाए और न मसीह की मृत्यु से पहले उस पर ईमान लाए । 'गिरोह' वाला अर्थ इस कारण ठीक लगता है कि हज़रत मसीह अलै. गुमशुदा क़बीलों की ओर हिजरत के पश्चात् उस समय मृत्यु पाए जब इन सभी गुमशुदा क़बीलों में से प्रत्येक क़बीला के कुछ न कुछ व्यक्तियों ने आपको स्वीकार कर लिया। यह घटना कश्मीर में घटी ।

لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦٢﴾

खाने के कारण (उनको यह दंड दिया) । और उनमें से जो काफ़िर थे उनके लिए हमने अत्यन्त पीड़ाजनक अज़ाब तैयार कर रखा है ।162।

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٦٣﴾ ع

परन्तु उन (यहूदियों) में से जो ज्ञान में परिपक्व और (सच्चे) मोमिन हैं वे उस पर ईमान लाते हैं जो तेरी ओर उतारा गया और उस पर भी जो तुझ से पूर्व उतारा गया तथा नमाज़ को क़ायम करने वाले और ज़कात अदा करने वाले और अल्लाह और अंतिम दिवस पर ईमान लाने वाले हैं । यही वे लोग हैं जिन्हें हम अवश्य एक बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे ।163। (रुकू $\frac{22}{2}$)

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٤﴾

निस्सन्देह हमने तेरी ओर वैसे ही वह्इ की जैसा नूह की ओर वह्इ की थी और उसके बाद आने वाले नबियों की ओर । और हमने वह्इ की इब्राहीम और इसमाईल और इस्हाक़ और याक़ूब की ओर, और (उसकी) संतान की ओर तथा ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की ओर । और हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान किया ।164।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿١٦٥﴾

और कई रसूल हैं जिनका वर्णन हम तेरे समक्ष पहले ही कर चुके हैं और कई रसूल हैं जिनकी कथाएँ हमने तेरे समक्ष नहीं पढ़ीं और मूसा से अल्लाह ने अत्यधिक वार्तालाप किया ।165।*

* हदीसों से प्रमाणित होता है कि पूरे संसार में नबियों की संख्या एक लाख चौबीस हज़ार थी । उन सब में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्वश्रेष्ठ रसूल हैं । क़ुरआन करीम में केवल→

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٦﴾

कई शुभ-समाचार देने वाले और सतर्ककारी रसूल (भेजे) ताकि लोगों के पास रसूलों के आने के बाद अल्लाह के विरुद्ध कोई तर्क न रहे और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।166।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٧﴾ؕ

परन्तु अल्लाह गवाही देता है कि जो उसने तेरी ओर उतारा है उसे अपने (निश्चित) ज्ञान के आधार पर उतारा है तथा फ़रिश्ते भी (यही) गवाही देते हैं, जबकि गवाह के रूप में अल्लाह ही बहुत पर्याप्त है ।167।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿١٦٨﴾

निस्सन्देह वे लोग जो काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के मार्ग से रोका निस्सन्देह वे घोर पथभ्रष्टता में पड़ चुके हैं ।168।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿١٦٩﴾ۙ

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अत्याचार किए, हो नहीं सकता कि अल्लाह उन्हें क्षमा कर दे और न ही यह सम्भव है कि वह उन्हें किसी मार्ग पर डाले ।169।

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٧٠﴾

परन्तु नरक के मार्ग पर, जिसमें वे लम्बी अवधि तक रहने वाले हैं और अल्लाह के लिए ऐसा करना सरल है ।170।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से सत्य के साथ रसूल आ चुका है । अतः ईमान ले आओ (यह) तुम्हारे लिए बेहतर होगा । फिर भी यदि तुम इनकार करो तो निस्सन्देह अल्लाह ही का है जो

←कुछ नबियों का उदाहरण के रूप में वर्णन किया गया है और उन पर और उनकी जातियों पर जो परिस्थितियाँ गुज़रीं, पूरे संसार के नबियों और उनकी जातियों पर ऐसी ही परिस्थितियाँ गुज़रीं हैं ।

وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧١﴾

आसमानों और धरती में है और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।171।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَاۤ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧٢﴾ ع

हे अह्ले किताब ! अपने धर्म में सीमा का उल्लंघन न करो और अल्लाह के सम्बन्ध में सत्य के सिवा कुछ न कहो। निस्सन्देह मरियम का पुत्र ईसा मसीह केवल अल्लाह का रसूल है और उसका कलिमा (वाक्य) है जो उसने मरियम की ओर उतारा और उसकी ओर से एक रूह है । अत: अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान ले आओ । और तीन मत कहो । (इससे) रुक जाओ कि इसी में तुम्हारी भलाई है । निस्सन्देह अल्लाह ही एक उपास्य है । वह इस से पवित्र है कि उसका कोई पुत्र हो । उसी का है जो आसमानों में है और जो धरती में है और कार्य-साधक के रूप में अल्लाह बहुत पर्याप्त है ।172।* (रुकू $\frac{23}{3}$)

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ

मसीह तो कदापि नापसंद नहीं करता कि वह अल्लाह का भक्त हो और न ही निकटस्थ फ़रिश्ते (नापसंद करते हैं)

✲ ईसाई इस आयत से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मसीह साधारण रसूल नहीं थे बल्कि अल्लाह के कलिमा थे और बाइबिल के उस प्रसंग का उल्लेख करते हैं जिसमें कहा गया कि ''आदि में वचन था और वचन ईश्वर के साथ था और वचन ईश्वर था'' (यूहन्ना 1:1) वे हज़रत मसीह को **कलिमतुल्लाह** अथवा **कलामुल्लाह** (अल्लाह का वाक्य या वचन) घोषित करते हैं । इसका खण्डन सूर: कहफ़ की अन्तिम दस आयतों में मौजूद है । विशेषकर इस आयत में कि यदि सारे समुद्र सयाही बन जाएँ तथा उन जैसे और समुद्र भी उनकी सहायता को आएँ तो अल्लाह तआला के कलिमे समाप्त नहीं हो सकते । अत: अल्लाह के **कलिमा** से अभिप्राय अल्लाह का **कुन** (हो जा) कहना है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त जीवधारी और निर्जीव चीज़ें अस्तित्व में आईं । मसीह भी उनमें से एक थे ।

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ
جَمِيْعًا ﴿۱۷۳﴾

और जो भी उसकी उपासना को नापसंद करे और अहंकार से काम ले, उन सभी को वह अपनी ओर अवश्य इकट्ठा करके ले आएगा ।173।*

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ
فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا
فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۷۴﴾

अतः वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो वह उनको उनके भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने अनुग्रह से उनको अधिक देगा । और वे लोग जिन्होंने (उपासना को) नापसंद किया और अहंकार किया तो उन्हें वह पीड़ाजनक अज़ाब देगा और अल्लाह के सिवा वे अपने लिए कोई मित्र और सहायक नहीं पाएँगे ।174।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿۱۷۵﴾

हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक बड़ी युक्ति आ चुकी है और हमने तुम्हारी ओर एक प्रकाशित कर देने वाला नूर उतारा है ।175।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ
فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ
وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۱۷۶﴾ ؕ

अतः वे लोग जो अल्लाह पर ईमान ले आए और उसको दृढ़ता से पकड़ लिया तो वह अवश्य उन्हें अपनी दया और अपने अनुग्रह में प्रविष्ट करेगा और उन्हें अपनी ओर से सन्मार्ग प्रदर्शित करेगा ।176।

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ؕ
اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ

वे तुझ से फ़तवा माँगते हैं । कह दे कि अल्लाह तुम्हें **कलालः** के विषय में फ़तवा देता है । यदि कोई ऐसा पुरुष मर जाए, जिसकी संतान न हो परन्तु उसकी बहन हो तो जो (तरका) उसने छोड़ा

* इस आयत में हज़रत मसीह अलै. पर लगे इस आरोप का खण्डन किया गया है कि वह अल्लाह के **भक्त** होने से इनकार करते थे । क्योंकि यह एक बहुत गंभीर आरोप है जो हज़रत मसीह का दर्जा नहीं बढ़ाता बल्कि उनको अहंकारी साबित करता है ।

أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ إِن لَّمْ يَكُن لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوٓا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾ ع ٢٤

उस बहन के लिए उसका आधा भाग होगा, परन्तु वह उस (पूरे तरका) के (पूर्णांश) का उत्तराधिकारी होगा यदि उसकी कोई संतान न हो । और यदि वे (बहनें) दो हों तो उनके लिए उसमें से दो तिहाई भाग होगा जो उस (भाई ने तरका) छोड़ा और यदि बहन-भाई पुरुष और महिलाएँ (मिले जुले) हों तो (प्रत्येक) पुरुष के लिए दो महिलाओं के समान भाग होगा । अल्लाह तुम्हारे लिए (बात) खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि ऐसा न हो कि तुम गुमराह हो जाओ और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का ख़ूब ज्ञान रखता है ।177। (रुकू $\frac{24}{4}$)

5- सूर: अल-माइद:

यह सूर: मदीना निवास-काल के अन्त में उतरी थी। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 121 आयतें हैं।

इस सूर: में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बहुत से चमत्कारों की वास्तविकता का उल्लेख किया गया है। भाष्यों में जो यह उल्लेख किया गया है कि उनपर आसमान से भौतिक रूप में भोज्य वस्तुओं से परिपूर्ण थाल उतरा था, उसकी वास्तविकता पर से यह कह कर पर्दा उठाया गया है कि वस्तुत: यह भविष्यवाणी थी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआओं और क़ुर्बानियों के फलस्वरूप ईसाइयों को अपार जीविका दी जाएगी परन्तु यदि उन्होंने इस का अनादर किया, जिसके चिह्न दुर्भाग्यवश प्रकट हो चुके हैं, तो फिर उनको दंड भी ऐसा भयंकर दिया जाएगा कि ऐसा दंड कभी संसार में किसी को नहीं दिया गया होगा।

प्रतिज्ञा भंग करने के फलस्वरूप जो बुराइयाँ यहूदियों व ईसाइयों में उत्पन्न होती रहीं उनको ध्यान में रखकर इस सूर: के आरम्भ में ही मुस्लिम जगत को सावधान कर दिया गया है। इससे पूर्व सूर: अल्-बक़र: में विभिन्न भोज्य वस्तुओं की वैधता व अवैधता का वर्णन हो चुका है परन्तु यहाँ एक नई बात कही गई है जो इस्लाम को दूसरे धर्मों से अलग करती है। वह यह कि भोजन केवल हलाल (वैध) ही नहीं बल्कि पवित्र भी होना चाहिए। अत: एक भोजन यदि हलाल भी हो तो बेहतर यही है कि जब तक वह अत्यन्त पवित्र और स्वास्थ्य वर्धक न हो, उससे परहेज़ किया जाना चाहिए।

इससे पूर्व हर हाल में न्याय पर अडिग रहने की शिक्षा दी जा चुकी है। अब इस सूर: में गवाही का विषयवस्तु आरम्भ होता है और गवाही देने में पूर्णतया न्याय पर स्थित रहने का उपदेश इस प्रकार उत्तम ढंग से वर्णन किया गया है कि यदि किसी जाति से शत्रुता भी हो तब भी उसके अधिकारों का ध्यान रखो और उसके साथ अपने झगड़े निपटाते हुए न्याय का पहलू कदापि न छोड़ो।

इस सूर: में प्रतिज्ञापालन का एक बार फिर उल्लेख मिलता है कि किस प्रकार यहूदियों ने जब प्रतिज्ञा भंग की थी तो वे परस्पर द्वेष और शत्रुता के शिकार हो गए और बहत्तर सम्प्रदायों में विभाजित हो गए। इस पर हज़रत ईसा अलै. का आगमन हुआ जिन्होंने तेहत्तरवां मुक्तिगामी सम्प्रदाय की नींव डाली। परन्तु भविष्यवाणी के रूप में इस बात का भी उल्लेख हुआ है कि उन की जाति भी उपदेश से लाभ नहीं उठाएगी और गिरोह दर गिरोह बँटती चली जाएगी स्वयं उनके बीच भी ईर्ष्या द्वेष और स्वार्थपरता के फलस्वरूप बड़े-बड़े विश्व युद्धों की नींव पड़ेगी जिनमें स्वयं ईसाई जातियाँ, ईसाई

जातियों के विरुद्ध भिड़ेंगी ।

इस सूरः में जातियों के परस्पर युद्ध और रक्तपात का वर्णन होने के साथ-साथ एक ऐसे गिरोह का भी उल्लेख हुआ है जो अत्याचार और क्रूरता में सीमा से बढ़ जाएगा (आयत सं. 34) जैसा कि आजकल छोटे छोटे बच्चों पर पशुओं जैसे अत्याचार का वर्णन पश्चिमी जगत में मिलता है और पूर्वी जगत तो ऐसी घटनाओं से भरी पड़ी है और ऐसे भयानक अपराध भी हो रहे हैं जिनका दंड अत्यन्त कठोर होना चाहिए ताकि **फ़ शर्रिद बिहिम् मन ख़ल्फ़हुम** सूरः अल अन्फ़ाल : 58 (अर्थात् उन के पीछे आने वालों को भी तितर-बितर कर दे) वाली विषयवस्तु चरितार्थ हो और उनके अत्यन्त भयानक अन्त को देख कर शेष अपराधी भी अपराध करने से रुक जाएँ ।

यह सूरः हर प्रकार के अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाती है । इसी प्रसंग में यह कहा गया है कि बलपूर्वक किसी का धर्म परिवर्तित करने की कदापि अनुमति नहीं दी जा सकती । यदि बल प्रयोग के फलस्वरूप कुछ लोग इस्लाम धर्म त्याग दें तो अल्लाह तआला उनके बदले बड़ी-बड़ी जातियाँ प्रदान करेगा जो संख्या में उन धर्मत्यागियों से बहुत अधिक होंगे तथा मोमिनों से बहुत प्रेम करने वाले और काफ़िरों के प्रति बहुत कठोर होंगे ।

इस सूरः में क़ुर्आनी शिक्षा की न्यायप्रणाली का एक ऐसा विवरण मिलता है जो संसार की किसी और पुस्तक में मौजूद नहीं है, जिसमें यह कहा गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने वालों के अतिरिक्त दूसरे धर्मों के अनुयायी जो अपनी धार्मिक शिक्षाओं का पालन करने में सच्चे हों, नेक कर्म करने वाले हों तथा परलोक अर्थात् अपने कर्मों की जवाबदेही के सिद्धान्त पर दृढ़ता से स्थित हों । अल्लाह तआला उनको उनके नेक कर्मों का उत्तम प्रतिफल प्रदान करेगा । उनको चाहिए कि वे अपने अन्त के बारे में कोई भय और शोक न करें ।

पारस्परिक द्वेष और शत्रुता का जो वर्णन इस सूरः में चल रहा है इस प्रकरण में और कारणों का भी उल्लेख किया गया है, जो घोर द्वेष एवं शत्रुता उत्पन्न करने का कारण बनते हैं । उनमें एक शराब और दूसरा जुआ है । यद्यपि उनमें कुछ मामूली लाभ भी हैं परन्तु उनके हानिकारक तत्त्व उन लाभ के मुक़ाबले में बहुत अधिक हैं ।

इस सूरः के अन्त पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु का स्पष्ट उल्लेख किया गया है तथा आपको एक पूर्ण एकेश्वरवादी रसूल के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसने कभी भी अपनी जाति को तस्लीस (त्रीश्वरवाद) अथवा शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की शिक्षा नहीं दी और न ही यह कहा कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा उपास्य बना लो ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّاِحْدٰى وَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ سِتَّةَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनन्त कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ②

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! प्रतिज्ञाओं का पालन करो । तुम्हारे लिए चरने वाले चौपाये हलाल ठहराए गए । सिवाए इसके जिनका (विवरण) तुम्हारे समक्ष पढ़ा जाता है । परन्तु शिकार को हलाल न ठहराना जबकि तुम एहराम की अवस्था में हो । निस्सन्देह अल्लाह वही निर्णय करता है जो वह चाहता है ।2।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رِضْوَانًا ؕ وَ اِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَ التَّقْوٰى

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! शाएरुल्लाह (अल्लाह के चिह्नों) का अपमान न करो और न ही सम्मान योग्य महीने का और न क़ुर्बानी के पशुओं का और न ही क़ुर्बानी के चिह्न स्वरूप पट्टे पहनाए हुए पशुओं का और न ही उन लोगों का जो अपने रब्ब की ओर से कृपा और प्रसन्नता की अभिलाषा रखते हुए सम्मान योग्य घर का संकल्प कर चुके हों । और जब तुम एहराम खोल दो तो (भले ही) शिकार करो । और तुम्हें किसी जाति की शत्रुता इस कारण से कि उन्होंने तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोका था, इस बात पर न उकसाये कि तुम अत्याचार करो । और नेकी और तक़वा में एक दूसरे का सहयोग करो

وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ٣

और पाप और अत्याचार (वाले कामों) में सहयोग न करो और अल्लाह से डरो । निस्सन्देह अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है ।3।*

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۟ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ

तुम पर मुरदार हराम कर दिया गया है और रक्त एवं सूअर का माँस और जो अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर ज़िबह किया गया हो तथा दम घुट कर मरने वाला और चोट लग कर मरने वाला और गिर कर मरने वाला तथा सींग लगने से मरने वाला और वह भी जिसे हिंस्र-जन्तुओं ने खाया हो, सिवाय इसके कि जिसे तुम (उसके मरने से पूर्व) ज़िबह कर लो और वह (भी हराम है) जो झूठे उपास्यों के बलि-स्थानों पर ज़िबह किया जाए और यह बात भी कि तुम तीर चला कर परस्पर भाग बाँटो । यह सब दुष्कर्म हैं । आज के दिन वे लोग जो काफ़िर हुए तुम्हारे धर्म (में हस्तक्षेप) करने से निराश हो चुके हैं। अतः तुम उनसे न डरो बल्कि मुझ से डरो। आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म सम्पूर्ण कर दिया और तुम पर मैंने अपनी नेमत पूरी कर दी है तथा मैंने **इस्लाम** को तुम्हारे लिए धर्म के रूप में पसन्द कर लिया है । अतः जो भूख

---

* इस सूरः की आयत सं. 3 और सं. 9 में शत्रु से भी न्यायपूर्ण व्यवहार करने का आदेश दिया गया है चाहे शत्रुता सांसारिक कारणों से हो अथवा धार्मिक कारणों से, अतएव आयत सं. 3 में कहा है कि यद्यपि किसी शत्रु ने आपको ख़ाना का'बा में जाने से रोक दिया हो तब भी इस धार्मिक शत्रुता के कारण उस से अन्याय करने की अनुमति नहीं है । इन दो आयतों का यदि मुस्लिम जगत सच्चे मन से पालन करता तो कभी पथभ्रष्ट न होता ।

لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِي
مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ ۙ فَإِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤﴾

की अधिकता के कारण (निषिद्ध वस्तु खाने पर) विवश हो चुका हो, इस दशा में कि वह पाप की ओर झुकने वाला न हो तो अल्लाह अवश्य बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।4।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ ۖ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ
الطَّيِّبَاتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ
مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۖ
فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥﴾

वे तुझ से पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल किया गया है ? तू कह दे कि तुम्हारे लिए समस्त पवित्र वस्तुएँ हलाल की गई हैं । और शिकारी पशुओं में से जिन को सिधाते हुए जो तुम शिक्षा देते हो तो (याद रखो कि) तुम उन्हें उस (ज्ञान) में से सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है । अतः तुम उस (शिकार) में से खाओ जिसे वे तुम्हारे लिए रोक रखें और उस पर अल्लाह का नाम पढ़ लिया करो और अल्लाह का तक़्वा अपनाओ । निस्सन्देह अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है ।5।

اَلْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۖ وَطَعَامُ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ ۖ
وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ ۖ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ
الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ
أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ
وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ

आज के दिन तुम्हारे लिए समस्त पवित्र वस्तुएँ हलाल घोषित की गई हैं और अहले किताब का (पवित्र) भोजन भी तुम्हारे लिए हलाल है जबकि तुम्हारा भोजन उनके लिए हलाल है । और पवित्र मोमिन महिलायें भी और उन लोगों में से पवित्र महिलायें भी जिनको तुम से पहले पुस्तक दी गई, तुम्हारे लिए वैध हैं । जब कि तुम उन्हें निकाह में लाते हुए उनके हक़ महर अदा करो, न कि कुकर्म में पड़ते हुए और न ही गुप्त मित्र बनाते हुए । और जो ईमान ही का

بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٦ ع

इनकार कर दे उसका कर्म निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है और वह परलोक में घाटा पाने वालों में से होगा ।6।

(रुकू $\frac{1}{5}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ
جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ
عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ
اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاۗءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاۗءً
فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا
بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ۭ مَا يُرِيْدُ
اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ
يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٧

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम नमाज़ की ओर जाने के लिए उठो तो अपने चेहरों को और अपने हाथों को भी कुहनियों तक धो लिया करो । तथा अपने सिरों का मसह करो और टख़नों तक अपने पाँव भी धो लिया करो । और यदि तुम जुम्बीं हो तो (पूरा स्नान करके) भली-भाँति शुद्ध-पूत हो जाया करो । और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा पर हो अथवा तुम में से कोई शौचादि करके आया हो अथवा तुमने स्त्रियों से सम्बन्ध स्थापित किया हो और इस अवस्था में तुम्हें पानी न मिले तो शुष्क पवित्र मिट्टी का तयम्मुम करो और अपने चेहरों और हाथों पर इससे मसह कर लिया करो । अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले परन्तु चाहता है कि तुम्हें बहुत पवित्र करे और तुम पर अपनी नेमत पूरी करे ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट किया करो ।7।

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ
الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝٨

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके वचन को भी, जिसे उसने तुम्हारे साथ दृढ़ता से बाँधा, जब तुमने कहा कि हमने सुना और हमने आज्ञापालन किया और अल्लाह से डरो । निस्सन्देह अल्लाह दिलों की बातें खूब जानता है ।8।

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ
شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ
قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ۚ اِعْدِلُوْا ۖ هُوَ
اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ
خَبِيْرٌ ۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में साक्षी बन जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात की ओर प्रेरित न करे कि तुम न्याय न करो । न्याय करो, यह तक़्वा के सबसे अधिक निकट है और अल्लाह से डरो । जो तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।9।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠﴾

अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, (कि) उनके लिए क्षमादान और एक बहुत बड़ा प्रतिफल है ।10।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١﴾

और वे लोग जो काफ़िर हुए और उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, यही हैं जो नरक वाले हैं ।11।

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ
اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ ع

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो । जब एक जाति ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह तुम्हारी ओर अपने (शरारत के) हाथ लम्बे करेगी परन्तु उसने तुमसे उनके हाथों को रोक लिया । और अल्लाह से डरो और चाहिए कि अल्लाह ही पर मोमिन भरोसा करें ।12। (रुकू $\frac{2}{6}$)

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۚ وَقَالَ
اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ۚ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ
وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ

और निस्सन्देह अल्लाह बनी इस्राईल से (भी) दृढ़ प्रतिज्ञा ले चुका है और हमने उनमें से बारह सरदार नियुक्त कर दिए थे । और अल्लाह ने कहा निस्सन्देह मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुमने नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी

وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۳﴾

और मेरे रसूलों पर ईमान लाए और तुमने उनकी सहायता की और अल्लाह को उत्तम ऋण दिया तो मैं अवश्य तुम्हारी बुराइयों को तुम से दूर कर दूँगा । और तुम्हें अवश्य ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करूँगा जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । अतः तुम में से जिसने इसके बाद इनकार किया तो निस्सन्देह वह सीधे मार्ग से भटक गया ।13।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴﴾

अतएव उनके अपने वचन भंग करने के कारण हमने उन पर ला'नत की और उनके दिलों को कठोर कर दिया । वे वाक्यों को उनके वास्तविक स्थानों से हटा देते थे और वे उसमें से जिसकी उन्हें खूब नसीहत की गई थी, एक भाग भूल गए । और उनमें से कुछ एक के सिवा तू सर्वदा उनकी किसी न किसी ख़यानत पर अवगत होता रहेगा । अतः उन्हें क्षमा कर और अनदेखा कर । निस्सन्देह अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है ।14।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۖ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۵﴾

और उन लोगों से (भी) जिन्होंने कहा कि हम ईसाई हैं, हमने उनका दृढ़ वचन लिया । फिर वे भी उसमें से एक भाग भुला बैठे जिसकी उन्हें विशेष नसीहत की गई थी । अतः हमने उनके बीच क़यामत के दिन तक परस्पर शत्रुता और द्वेष निश्चित कर दिए हैं और अल्लाह अवश्य उनको उस (के कुपरिणाम) से अवगत करायेगा जो (उद्योग) वे बनाया करते थे ।15।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ
لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٦﴾

हे अहले किताब ! निस्सन्देह तुम्हारे पास हमारा वह रसूल आ चुका है जो तुम्हारे सामने बहुत सी बातें, जो तुम (अपनी) पुस्तक में से छिपाया करते थे ख़ूब खोल कर वर्णन कर रहा है। और बहुत सी ऐसी हैं जिनको वह छोड़ देता है । निस्सन्देह तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से एक नूर आ चुका है और एक सुस्पष्ट पुस्तक भी ।16।

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ
السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ
بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٧﴾

अलाह इसके द्वारा उन्हें, जो उसकी प्रसन्नता का अनुसरण करें, शांति के रास्तों की ओर मार्ग दर्शन करता है और अपने आदेश से उन्हें अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकाल लाता है और उन्हें सीधे रास्ते की ओर हिदायत देता है ।17।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ
ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا
اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ
وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ
يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿١٨﴾

निस्सन्देह उन लोगों ने इनकार किया जिन्होंने कहा कि निश्चित रूप से अल्लाह ही मरियम का पुत्र मसीह है । तू कह दे कि कौन है जो अल्लाह के मुक़ाबले पर कुछ भी अधिकार रखता है, यदि वह निर्णय करे कि मरियम का पुत्र मसीह को और उसकी माता को तथा जो कुछ धरती में है, सब को नष्ट करे । और आसमानों और धरती की बादशाहत अल्लाह ही की है और उसकी भी जो उन दोनों के बीच है । वह जो चाहे पैदा करता है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।18।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؗ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝١٩

और यहूदियों और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह की संतान हैं और उसके प्रिय हैं । तू कह दे, फिर वह तुम्हें तुम्हारे पापों के कारण अज़ाब क्यों देता है ? नहीं, बल्कि तुम उनमें से जिनको उसने पैदा किया, केवल मनुष्य हो । वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है अज़ाब देता है और आसमानों और धरती की बादशाहत अल्लाह ही की है और उसकी भी जो उन दोनों के बीच है । और अन्ततः उसी की ओर लौट कर जाना है ।19।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٠ ع ٣ ٨ ٧

हे अह्ले किताब ! रसूलों के एक लम्बे अन्तराल के बाद तुम्हारे पास निस्सन्देह हमारा वह रसूल आ चुका है जो तुम्हारे सामने (महत्वपूर्ण विषयों को) खोल कर वर्णन कर रहा है ताकि ऐसा न हो कि तुम यह कहो कि हमारे पास न कोई सुसमाचार दाता आया और न कोई सतर्ककारी आया । अतएव निस्सन्देह तुम्हारे पास सुसमाचार दाता और सतर्ककारी आ चुका है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।20। (रुकू $\frac{3}{7}$)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢١

और (याद करो) वह समय जब मूसा ने अपनी जाति से कहा, हे मेरी जाति ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो जब उसने तुम्हारे बीच नबी बनाए और तुम्हें शासक बनाया और उसने तुम्हें वह कुछ दिया जो समग्र जगत में किसी और को नहीं दिया ।21।

يٰقَوۡمِ ادۡخُلُوا الۡاَرۡضَ الۡمُقَدَّسَةَ الَّتِىۡ
كَتَبَ اللّٰهُ لَـكُمۡ وَلَا تَرۡتَدُّوۡا عَلٰٓى اَدۡبَارِكُمۡ
فَتَـنۡقَلِبُوۡا خٰسِرِيۡنَ ﴿٢٢﴾

हे मेरी जाति ! पवित्र भूमि में प्रविष्ट हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख रखी है और अपनी पीठ दिखाते हुए मुड़ न जाओ, अन्यथा तुम इस अवस्था में लौटोगे कि घाटा उठाने वाले होगे ।22।

قَالُوۡا يٰمُوۡسٰٓى اِنَّ فِيۡهَا قَوۡمًا جَبَّارِيۡنَ ‌ۖ
وَاِنَّا لَنۡ نَّدۡخُلَهَا حَتّٰى يَخۡرُجُوۡا مِنۡهَا‌ ۚ
فَاِنۡ يَّخۡرُجُوۡا مِنۡهَا فَاِنَّا دٰخِلُوۡنَ ﴿٢٣﴾

उन्होंने कहा, हे मूसा ! निश्चित रूप से उसमें अति निर्दयी लोग रहते हैं और हम कदापि उसमें प्रविष्ट नहीं होंगे जब तक कि वे उसमें से न निकल जाएँ । अतः यदि वे उसमें से निकल जाएँ तो हम अवश्य प्रविष्ट हो जाएँगे ।23।

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيۡنَ يَخَافُوۡنَ اَنۡعَمَ اللّٰهُ
عَلَيۡهِمَا ادۡخُلُوۡا عَلَيۡهِمُ الۡبَابَ‌ ۚ فَاِذَا
دَخَلۡتُمُوۡهُ فَاِنَّكُمۡ غٰلِبُوۡنَ ۙ وَعَلَى اللّٰهِ
فَتَوَكَّلُوۡۤا اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿٢٤﴾

उन लोगों में से जो डर रहे थे, दो ऐसे पुरुषों ने जिन को अल्लाह ने पुरस्कृत किया था कहा, इन पर मुख्य-द्वार से चढ़ाई करो । फिर जब तुम (एक बार) इस (द्वार) से प्रविष्ट हो गए तो तुम अवश्य विजयी होगे और अल्लाह पर ही भरोसा करो, यदि तुम मोमिन हो ।24।

قَالُوۡا يٰمُوۡسٰٓى اِنَّا لَنۡ نَّدۡخُلَهَاۤ اَبَدًا مَّا دَامُوۡا
فِيۡهَا فَاذۡهَبۡ اَنۡتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا
قٰعِدُوۡنَ ﴿٢٥﴾

उन्होंने कहा, हे मूसा ! हम तो कदापि इस (बस्ती) में प्रवेश नहीं करेंगे जब तक वे इसमें उपस्थित हैं । अतः जा तू और तेरा रब्ब दोनों लड़ो हम तो यहीं बैठे रहेंगे ।25।

قَالَ رَبِّ اِنِّىۡ لَاۤ اَمۡلِكُ اِلَّا نَفۡسِىۡ وَاَخِىۡ
فَافۡرُقۡ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَ الۡقَوۡمِ الۡفٰسِقِيۡنَ ﴿٢٦﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! निस्सन्देह मैं किसी पर अधिकार नहीं रखता सिवाय अपने आप और अपने भाई के । अतः हमारे और दुराचारी लोगों के बीच अन्तर कर दे ।26।

قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيۡهِمۡ اَرۡبَعِيۡنَ سَنَةً‌ ۚ
يَتِيۡهُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ‌ ؕ فَلَا تَاۡسَ عَلَى

उस (अर्थात् अल्लाह) ने कहा, अतएव यह (पवित्र भूमि) उन पर निश्चित रूप से चालीस वर्षों तक हराम कर दी गई है।

الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٧ ع

वे धरती में मारे मारे फिरेंगे । अतः दुराचारी लोगों पर कोई खेद न कर ।27।

(रुकू $\frac{4}{8}$)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَىْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ۭ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ۭ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝٢٨

और उनके सामने सच्चाई के साथ आदम के दो पुत्रों की घटना पढ़ कर सुना । जब उन दोनों ने क़ुर्बानी पेश की तो उनमें से एक की स्वीकार कर ली गई और दूसरे से स्वीकार न की गई । उसने कहा, मैं अवश्य तेरा वध कर दूँगा (उत्तर में) उसने कहा, निस्सन्देह अल्लाह मुत्तक़ियों की ही (क़ुर्बानी) स्वीकार करता है ।28।

لَىِٕنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٩

यदि तूने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाया ताकि तू मेरा वध करे (तो) मैं (मुक़ाबले में) तेरी ओर अपना हाथ बढ़ाने वाला नहीं, ताकि तेरा वध करूँ । निस्सन्देह मैं अल्लाह से डरता हूँ जो समस्त लोकों का रब्ब है ।29।

اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٠

निस्सन्देह मैं चाहता हूँ कि तू मेरे और अपने पाप उठाए हुए लौटे । फिर तू अग्निगामियों में से हो जाए और अत्याचार करने वालों का यही प्रतिफल होता है ।30।

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٣١

तब उसके अंत:करण ने उसके लिए अपने भाई का वध करना अच्छा बना कर दिखाया । अतएव उसने उसका वध कर दिया और वह हानि उठाने वालों में से हो गया ।31।

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ۭ قَالَ

फिर अल्लाह ने एक कौवे को भेजा जो धरती को (पंजों से) खोद रहा था ताकि वह (अर्थात् अल्लाह) उसे समझा दे कि

يٰوَيۡلَتٰۤى اَعَجَزۡتُ اَنۡ اَكُوۡنَ مِثۡلَ هٰذَا الۡغُرَابِ فَاُوَارِىَ سَوۡءَةَ اَخِىۡ ۚ فَاَصۡبَحَ مِنَ النّٰدِمِيۡنَ ۛۚ ﴿۳۲﴾

معانقة ○ عند المتأخرين

किस प्रकार वह अपने भाई के शव को ढाँप दे । वह बोल उठा, हाय ! क्या मैं इस बात से भी विवश हो गया कि इस कौवे जैसा ही हो जाता और अपने भाई का शव ढाँप देता । अत: वह पछताने वालों में से बन गया ।32।

مِنۡ اَجۡلِ ذٰلِكَ ۛۚ كَتَبۡنَا عَلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ اَنَّهٗ مَنۡ قَتَلَ نَفۡسًۢا بِغَيۡرِ نَفۡسٍ اَوۡ فَسَادٍ فِى الۡاَرۡضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيۡعًا ؕ وَمَنۡ اَحۡيَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحۡيَا النَّاسَ جَمِيۡعًا ؕ وَلَقَدۡ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُنَا بِالۡبَيِّنٰتِ ۙ ثُمَّ اِنَّ كَثِيۡرًا مِّنۡهُمۡ بَعۡدَ ذٰلِكَ فِى الۡاَرۡضِ لَمُسۡرِفُوۡنَ ﴿۳۳﴾

وقف النبي ﷺ

इसी आधार पर हमने बनी इस्राईल पर यह अनिवार्य कर दिया कि जिसने भी किसी ऐसे व्यक्ति का वध किया जिसने किसी दूसरे की जान न ली हो अथवा धरती में उपद्रव न किया हो, तो मानो उसने समस्त मनुष्यों का वध कर दिया । और जिसने उसे जीवित रखा तो मानो उसने समस्त मनुष्यों को जीवित कर दिया और निस्सन्देह उनके पास हमारे रसूल खुले-खुले चिह्न ले कर आ चुके हैं। फिर उसके बाद भी उनमें से अधिकतर लोग धरती में सीमा का उल्लंघन करते हैं ।33।

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيۡنَ يُحَارِبُوۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ وَيَسۡعَوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ فَسَادًا اَنۡ يُّقَتَّلُوۡۤا اَوۡ يُصَلَّبُوۡۤا اَوۡ تُقَطَّعَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَاَرۡجُلُهُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ اَوۡ يُنۡفَوۡا مِنَ الۡاَرۡضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمۡ خِزۡىٌ فِى الدُّنۡيَا وَلَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۙ ﴿۳۴﴾

निस्सन्देह उन लोगों का प्रतिफल, जो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में उपद्रव फैलाने का प्रयत्न करते हैं, यह है कि उन्हें कठोरता पूर्वक वध कर दिया जाए अथवा सूली पर चढ़ाया जाए या उनके हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिए जाएँ अथवा उन्हें देश निकाला कर दिया जाए । यह उनके लिए संसार में अपमान और निन्दा का कारण है और परलोक में तो उनके लिए बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।34।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٥﴾ ع	सिवाय उन लोगों के जो इससे पूर्व कि तुम उन पर विजय प्राप्त कर लो, प्रायश्चित कर लें । अतः जान लो कि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।35। (रुकू $\frac{5}{9}$)
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٦﴾	हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक़्वा अपनाओ और उसकी निकटता प्राप्ति का माध्यम ढूँढो और उसके रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।36।*
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٧﴾	निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया यदि वह सब कुछ जो धरती में है, उनका होता बल्कि इसके अतिरिक्त इस जैसा और भी (होता) ताकि वे उसे क़यामत के दिन के अज़ाब से बचने के लिए मुक्तिधन के रूप में दे सकते तो भी उनसे वह स्वीकार न किया जाता । और उनके लिए अत्यन्त पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।37।
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٨﴾	वे चाहेंगे कि अग्नि से निकल जाएँ, जबकि वे कदापि उससे निकल न सकेंगे । और उनके लिए एक ठहर जाने वाला अज़ाब (निश्चित) है ।38।
وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ	और चोर पुरुष और चोर महिला, अतः दोनों के हाथ काट दो उसके प्रतिफल स्वरूप, जो उन्होंने कमाया (यह)

* अल्लाह की निकटता प्राप्ति के लिए **माध्यम** ढूँढने से तात्पर्य हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं । अब सीधे अल्लाह तआला से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता जब तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को माध्यम के रूप में अपनाया न जाए । अज़ान के बाद की दुआ भी, जिसमें माध्यम (वसीलः) का उल्लेख है, इसी विषयवस्तु का समर्थन करती है ।

عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٩﴾

अल्लाह की ओर से सीख स्वरूप (है) । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।39।*

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤٠﴾

अतः जो भी अपने अत्याचार करने के पश्चात् प्रायश्चित करे और सुधार करे तो निस्सन्देह अल्लाह उस पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुकेगा । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।40।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही है जिसकी आसमानों और धरती की बादशाही है । वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिसे चाहता है क्षमा कर देता है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।41।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۛ سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّاعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۖ

हे रसूल ! तुझे वे लोग दुःखी न करें जो इनकार में तीव्रता से बढ़ रहे हैं, अर्थात् वे जो अपने मुँह से कहते हैं कि हम ईमान ले आए हालाँकि उनके दिल ईमान नहीं लाए थे । इसी प्रकार वे लोग भी जो यहूदी हुए । ये झूठ को बड़े ध्यान से सुनने वाले हैं (और) एक दूसरी जाति की बातों को भी, जो तेरे पास नहीं आए, बड़े ध्यानपूर्वक सुनते हैं। वे कलिमों (वाक्यों) को उनके उचित स्थानों पर रखे जाने के बाद

* आयतांश **अस् सारिकु वस् सारिक़तु** से अभ्यस्त और पेशावर पुरुष चोर और महिला चोर अभीष्ट हैं । निर्धनता के कारण जीवन यापन के लिए अत्यावश्यक खाने पीने की वस्तु की चोरी करना इस आदेश के अन्तर्गत नहीं । असह्य भूख के समय तो सूअर भी हलाल हो जाता है । भूखे का बिना अनुमति के कुछ खा लेना, कदापि उसको हाथ काटने योग्य अपराधी नहीं बनाता ।

يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۖۚ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤٢﴾

परिवर्तित कर देते हैं। वे (अपने साथियों से) कहते हैं कि यदि तुम्हें यह दिया जाए तो स्वीकार कर लो और यदि तुम्हें यह न दिया जाए तो बच कर रहो। और जिसको अल्लाह परीक्षा में डालना चाहे तू उसके लिए अल्लाह से (बचाने का) कोई अधिकार नहीं रखता। यही वे लोग हैं कि अल्लाह कदापि नहीं चाहता कि उनके दिलों को पवित्र करे। उनके लिए संसार में अपमान है और परलोक में उनके लिए एक बड़ा अज़ाब (निश्चित) है।42।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٣﴾

झूठ को बड़े ध्यान से सुनने वाले, बहुत बढ़-चढ़ कर अवैध धन खाने वाले। अतः यदि वे तेरे पास आएँ तो चाहे तू उनके बीच निर्णय कर अथवा उनसे विमुख हो जा। और यदि तू उनसे विमुख हो जाए तो वे कदापि तुझे कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे और यदि तू निर्णय करे तो उनके बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर। निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।43।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع

और वे तुझे कैसे निर्णयकर्ता बना सकते हैं जबकि उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का आदेश मौजूद है। फिर वे उसके बाद भी पीठ फेर लेते हैं और ये लोग कदापि ईमान लाने वाले नहीं।44।

(रुकू $\frac{6}{10}$)

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ

निस्सन्देह हमने तौरात उतारी, उसमें हिदायत थी और नूर भी था। उससे नबी जिन्होंने अपने आप को (पूर्णतया

هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا
اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ
شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ
وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ
يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

अल्लाह का) आज्ञाकारी बना दिया था, यहूदियों के लिए निर्णय करते थे । और इसी प्रकार अल्लाह वाले लोग और विद्वान भी, इस कारण से कि उनको अल्लाह की पुस्तक की सुरक्षा का भार सौंपा गया था (निर्णय करते थे) और वे इस पर गवाह थे । अत: तुम लोगों से न डरो और मुझ से डरो और मेरी आयतों को तुच्छ मूल्य के बदले न बेचो । और जो उसके अनुसार निर्णय न करे जो अल्लाह ने उतारा है, तो यही लोग काफ़िर हैं ।45।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ
وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ
وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ
وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ
فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

और हमने उन पर उस (अर्थात् तौरात) में अनिवार्य कर दिया था कि जान के बदले जान (होगी) और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और घावों का भी बराबर का बदला लेना होगा । अत: जो कोई (अपनी ओर से) दान स्वरूप उस (बदला) को क्षमा कर दे तो यह उसके लिए (उसके पापों का) प्रायश्चित बन जाएगा और जो कोई इसके अनुसार निर्णय न करे जो अल्लाह ने उतारा है, तो वही लोग अत्याचारी हैं ।46।

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۖ
وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ
وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ

और हमने उन्हीं के पद चिह्नों पर उनके पीछे मरियम के पुत्र ईसा को उसके पुष्टिकर्ता स्वरूप भेजा जो तौरात में से उसके सामने था । और हमने उसे इंजील प्रदान की जिस में हिदायत थी और नूर था । और वह उसकी पुष्टि करने वाली

وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٧﴾

थी जो तौरात में से उसके सामने था और मुत्तक़ियों के लिए एक हिदायत और उपदेश (स्वरूप) था ।47।

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٨﴾

अतः इंजील वाले उसके अनुसार निर्णय करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है । और जो उसके अनुसार निर्णय न करे जो अल्लाह ने उतारा है, तो यही लोग दुराचारी हैं ।48।

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ عَمَّا جَاۗءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۭ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٩﴾

और हमने तेरी ओर सत्य पर आधारित पुस्तक उतारी है, उसकी पुष्टि करने वाली है जो (पहले की) पुस्तक में से उसके समक्ष है और उस पर निरीक्षक स्वरूप है । अतः उनके बीच उसके अनुसार निर्णय कर जो अल्लाह ने उतारा है । और जो तेरे पास सत्य आया है उसे छोड़ कर उनकी कामनाओं का अनुसरण न कर । तुम में से प्रत्येक के लिए हमने एक पंथ और एक धर्म बनाया है और यदि अल्लाह चाहता तो अवश्य तुम्हें एक ही समुदाय बना देता परन्तु वह उसके द्वारा जो उसने तुम्हें दिया, तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है । अतः तुम नेकियों में एक दूसरे से आगे निकल जाओ । अल्लाह ही की ओर तुम सबका लौट कर जाना है । अतः वह तुम्हें उन बातों की वास्तविकता से अवगत कराएगा जिनमें तुम मतभेद किया करते थे ।49।

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ

और (फिर ताकीद है) कि जो भी अल्लाह ने उतारा है उसके अनुसार उनके बीच निर्णय कर और उनकी

يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝٥٠

कामनाओं का अनुसरण न कर और उनसे बच कर रह कि (वे) उस शिक्षा के किसी भाग के सम्बन्ध में तुझे फसाद में डाल न दें, जो अल्लाह ने तेरी ओर उतारा । अतः यदि वे पीठ फेर लें तो जान ले कि अल्लाह अवश्य इरादा रखता है कि उनके कुछ पापों के कारण उन पर कोई विपत्ति डाल दे और निस्सन्देह लोगों में से बहुत से दुराचारी हैं ।50।

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٥١ ع

अतः क्या वे मूर्खतापूर्ण निर्णय (शैली) पसन्द करते हैं । और विश्वास करने वालों के लिए निर्णय करने में अल्लाह से बेहतर कौन हो सकता है ? ।51।

(रुकू $\frac{7}{11}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ؔ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٢

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! यहूदियों और ईसाइयों को मित्र न बनाओ । वे (परस्पर ही) एक दूसरे के मित्र हैं । और तुम में से जो उनसे मित्रता करेगा वह उन्हीं का होकर रहेगा । निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।52।

فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ۝٥٣ ؕ

अतः जिनके दिलों में रोग है तू उनको देखेगा कि वे उन लोगों में दौड़े फिरते हैं वे कहते हैं कि हमें डर है कि हम पर समय की कोई मार न पड़ जाए । अतः सम्भव है कि अल्लाह विजय (का दिन) ले आए अथवा अपना कोई निर्णय लागू कर दे तो उस पर जो वे अपने दिलों में छिपा रहे हैं, लज्जित हो जाएँ ।53।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ

और वे जो ईमान लाए कहते हैं, क्या यही वे लोग हैं जिन्होंने अपनी (और

اَقۡسَمُوۡا بِاللّٰهِ جَهۡدَ اَيۡمَانِهِمۡ ۙ اِنَّهُمۡ لَمَعَكُمۡ ؕ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ فَاَصۡبَحُوۡا خٰسِرِيۡنَ ۝٥٤

से) अल्लाह की पक्की क़समें खाई थीं कि निस्सन्देह वे तुम्हारे साथ हैं । उनके कर्म नष्ट हो गए । अतः वे घाटा उठाने वाले बन गए ।54।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَنۡ يَّرۡتَدَّ مِنۡكُمۡ عَنۡ دِيۡنِهٖ فَسَوۡفَ يَاۡتِى اللّٰهُ بِقَوۡمٍ يُّحِبُّهُمۡ وَيُحِبُّوۡنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ يُجَاهِدُوۡنَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوۡنَ لَوۡمَةَ لَاۤئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضۡلُ اللّٰهِ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ۝٥٥

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम में से जो अपना धर्म त्याग कर दे तो अल्लाह (उसके बदले) अवश्य एक ऐसी जाति ले आएगा जिससे वह प्रेम करता हो और वे उससे प्रेम करते हों । मोमिनों पर वे बहुत मेहरबान (और) काफ़िरों पर बहुत कठोर होंगे । वे अल्लाह के मार्ग में जिहाद करेंगे और किसी भर्त्सना करने वाले की भर्त्सना का कोई भय न करते होंगे । यह अल्लाह का अनुग्रह है, वह जिसे चाहता है इसको देता है और अल्लाह बहुत समृद्धि प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।55।*

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوا الَّذِيۡنَ يُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَهُمۡ رٰكِعُوۡنَ ۝٥٦

निस्सन्देह तुम्हारा मित्र अल्लाह और उस का रसूल और वे लोग हैं जो ईमान लाए, जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वे (अल्लाह के समक्ष) झुके रहने वाले हैं ।56।

وَمَنۡ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا فَاِنَّ حِزۡبَ اللّٰهِ هُمُ الۡغٰلِبُوۡنَ ۝٥٧

और जो अल्लाह को और उसके रसूल को और उन लोगों को मित्र बनाये जो ईमान लाए, तो अल्लाह ही का गिरोह निश्चित रूप से विजयी होने वाला है ।57। (रुकू $\frac{8}{12}$)

* इस आयत में इस विचार का खण्डन है कि मुर्तद (धर्मत्यागी) का दंड मृत्यु है और कहा गया है कि यदि कोई तुम में से मुरतद हो जाए तो अल्लाह तआला उसके बदले एक बड़ा गिरोह तुम्हें प्रदान करेगा जो मोमिनों से प्रेम करने वाले और काफ़िरों के प्रति कठोर होंगे ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ
اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! यदि तुम मोमिन हो तो जिन्हें तुम से पूर्व पुस्तक दी गई उन लोगों में से उनको जिन्होंने तुम्हारे धर्म को उपहास का पात्र और खेल तमाशा बना रखा है और काफ़िरों को अपना मित्र न बनाओ और अल्लाह से डरो ।58।

وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا
وَّلَعِبًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٩﴾

और जब तुम नमाज़ के लिए बुलाते हो तो वे उसे उपहास और खेल-तमाशा बना लेते हैं । यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि नहीं रखते ।59।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ
اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٦٠﴾

तू कह दे, हे अह्ले किताब ! क्या तुम हम पर केवल इस लिए कटाक्ष करते हो कि हम अल्लाह पर और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और जो हमसे पहले उतारा गया था ईमान ले आए ? और सत्य यह है कि तुम में अधिकतर दुराचारी लोग हैं ।60।

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً
عِنْدَ اللّٰهِ ۭ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ
وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ
الطَّاغُوْتَ ۭ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ
عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦١﴾

तू कह दे कि क्या मैं तुम्हें इससे भी अधिक बुरी चीज़ का समाचर दूँ जो (तुम्हारे लिए) अल्लाह के पास प्रतिफल स्वरूप है ? वह जिस पर अल्लाह ने ला'नत की और उस पर क्रोधित हुआ और उनमें से कुछ को बन्दर और सूअर बना दिया, जब कि उन्होंने शैतान की उपासना की । यही लोग पद की दृष्टि से निकृष्ट और सीधे राह से सर्वाधिक भटके हुए हैं ।61।

وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا
بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हालाँकि वे इनकार के साथ ही (तुम्हारे अन्दर)

بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿٦٢﴾

प्रविष्ट हुए थे और उसके साथ ही बाहर निकल गए। और अल्लाह उसको सबसे अधिक जानता है जो वे छिपाते हैं।62।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٣﴾

और तू उनमें से अधिकतर को पापों और अनियमितताओं तथा हराम के धन को खाने में एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर प्रयत्न करता हुआ पाएगा। जो वे कर्म करते हैं, निस्सन्देह बहुत ही बुरा है।63।

لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٤﴾

क्यों न अल्लाह वालों ने और (अल्लाह की वाणी की सुरक्षा पर नियुक्त) विद्वानों ने उन्हें पाप की बात कहने और हराम खाने से रोका ? निस्सन्देह बहुत ही बुरा है, जो वे किया करते थे।64।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۭ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاۗءُ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۭ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٥﴾

और यहूदियों ने कहा, अल्लाह का हाथ बन्द किया हुआ है। (वास्तव में) स्वयं उन्हीं के हाथ बन्द किए गए हैं और जो उन्होंने कहा उसके कारण उन पर ला'नत डाली गई है। बल्कि उसके तो दोनों हाथ खुले हैं। वह जैसे चाहे खर्च करता है। और जो तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से उतारा गया, वह उनमें से बहुतों को विद्रोह और इनकार करने में निश्चित रूप से बढ़ा देगा। और हमने उनके बीच क़यामत के दिन तक शत्रुता और द्वेषभाव डाल दिए हैं। जब भी वे युद्ध की अग्नि भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है। और वे धरती में उपद्रव फैलाने के लिए दौड़े फिरते हैं और अल्लाह उपद्रव फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।65।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٦﴾

और यदि अह्ले किताब ईमान ले आते और तक़्वा को अपनाते तो हम अवश्य उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देते और हम अवश्य उन्हें नेमतों वाले स्वर्गों में प्रविष्ट कर देते ।66।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٧﴾ ع

और यदि वे तौरात और इंजील (की शिक्षा) को तथा जो कुछ उनकी ओर उनके रब्ब की ओर से उतारा गया, स्थापित करते तो वे अपने ऊपर से और अपने पाँव के नीचे (धरती) से भी खाते। उनमें से ही एक समुदाय मध्यमार्गी है जबकि उनमें से बहुत हैं कि जो वे करते हैं वह बहुत बुरा है ।67।

(रुकू $\frac{9}{13}$)

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

हे रसूल ! (उसे) भली-भाँति पहुँचा दे जो तेरे रब्ब की ओर से तेरी ओर उतारा गया है । और यदि तूने ऐसा न किया तो मानो तूने उसके संदेश को नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तुझे लोगों से बचाएगा । निस्सन्देह अल्लाह काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं देता ।68।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٩﴾

कह दे, हे अह्ले किताब ! तुम किसी बात पर भी नहीं जब तक तौरात और इंजील को तथा उसे क़ायम न करो जो तुम्हारी ओर तुम्हारे रब्ब की ओर से उतारा गया है । और जो तेरे रब्ब की ओर से तेरी ओर उतारा गया है वह उनमें से बड़ी संख्या को निश्चित रूप से विद्रोह और इनकार में बढ़ाएगा । अतः तू काफ़िरों पर खेद न कर ।69।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٧٠﴾

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और जो यहूदी और साबी और ईसाई हुए, जो भी (उनमें से) अल्लाह पर और अंतिम दिवस पर ईमान लाया और नेक कर्म किए, उन्हें कोई भय नहीं और वे कोई शोक नहीं करेंगे ।70।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧١﴾

निस्सन्देह हमने बनी-इस्राईल से दृढ़ वचन लिया और उनकी ओर कई रसूल भेजे। जब भी कोई रसूल ऐसी चीज़ के साथ उनके पास आता जिसको उनके दिल पसन्द नहीं करते थे, तो एक पक्ष को तो वे झुठला देते थे और एक पक्ष का अत्याचार पूर्वक विरोध करते थे ।71।

وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾

और उन्होंने सोच लिया कि कोई उपद्रव नहीं होगा। अतएव वे अंधे और बहरे हो गए। इसके पश्चात् अल्लाह प्रायश्चित स्वीकार करते हुए उन पर झुका। फिर भी उनमें से अधिकतर लोग अंधे और बहरे ही रहे। और जो वे करते थे अल्लाह उस पर गहरी नज़र रखने वाला था ।72।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٣﴾

निस्सन्देह उन लोगों ने इनकार किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह ही मरियम का पुत्र मसीह है। जबकि मसीह ने तो यही कहा था, हे बनी इस्राईल ! अल्लाह की उपासना करो जो मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है। निस्सन्देह वह जो अल्लाह का साझीदार ठहराए उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना अग्नि है। और अत्याचारियों के कोई सहायक नहीं होंगे ।73।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۭ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٤﴾	निस्सन्देह उन लोगों ने (भी) इनकार किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में से एक है। हालाँकि एक ही उपास्य के अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं। और जो वे कहते हैं यदि उससे न रुके तो उनमें से जिन्होंने इनकार किया उन लोगों को पीड़ाजनक अज़ाब अवश्य आ पकड़ेगा।74।
اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٥﴾	अतः क्या वे अल्लाह की ओर प्रायश्चित करते हुए झुकते नहीं और उससे क्षमा नहीं माँगते। जबकि अल्लाह बहुत ही क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।75।
مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۭ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ۭ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٦﴾	मरियम का पुत्र मसीह एक रसूल ही तो है। उससे पहले जितने रसूल थे सब के सब गुज़र चुके हैं। और उसकी माँ सत्यवती थी। दोनों भोजन किया करते थे। देख, किस प्रकार हम उनके लिए अपनी आयतों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं। फिर देख, वे किधर भटकाए जा रहे हैं।76।*
قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۭ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ	तू कह दे, क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर उसकी उपासना करते हो जो तुम्हें न हानि पहुँचाने पर सक्षम है और न लाभ

* इस आयत में भी निश्चित रूप से हज़रत ईसा अलै. की मृत्यु का वर्णन है। क्योंकि शब्द **क़द ख़लत** (सब गुज़र चुके) जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, किसी के रास्ते पर से गुज़रने के लिए नहीं कहा जाता बल्कि मृत्यु पर बोला जाता है। इसकी और दलील यह दी गई है कि वह और उनकी माँ दोनों भोजन किया करते थे अर्थात् अब वे दोनों भोजन नहीं करते क्योंकि अब वे दोनों मर चुके हैं। यदि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने आसमान की ओर उठाये जाने के कारण भोजन करना छोड़ा हो, तो हज़रत मरियम तो आकाश पर नहीं चढ़ीं, उन्होंने फिर भोजन करना क्यों छोड़ दिया? स्पष्ट है, मृत्यु के कारण। अतः हज़रत मसीह भी अब अपनी माँ की भाँति इसलिए भोजन नहीं करते क्योंकि वह भी मर चुके हैं।

الْعَلِيْمُ ﴿٧٧﴾

पहुँचाने पर । और अल्लाह वह है, जो बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।77।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٨﴾ ع ١١

तू कह दे, हे अह्ले किताब ! तुम अपने धर्म में अनुचित अतिशयोक्ति न करो और ऐसे लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करो जो पहले पथभ्रष्ट हो चुके हैं और उन्होंने और भी बहुतों को पथभ्रष्ट किया और वे संतुलित रास्ते से भटक गए ।78। (रुकू $\frac{10}{14}$)

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۭ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٩﴾

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने इनकार किया उन पर दाऊद की ज़ुबान से और मरियम के पुत्र ईसा की ज़ुबान से भी ला'नत डाली गयी । उनके अवज्ञाकारी हो जाने के कारण और सीमा का उल्लंघन करने के कारण ऐसा हुआ ।79।

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٨٠﴾

वे उस बुराई से रुकते नहीं थे जो वे करते थे । जो वे किया करते थे निश्चित रूप से बहुत बुरा था ।80।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

तू उनमें से बहुतों को देखेगा कि वे उन को मित्र बनाते हैं जो काफ़िर हुए । निस्सन्देह बहुत ही बुरा है वह जो उनकी जानों ने अपने लिए आगे भेजा है, कि अल्लाह उन पर खूब नाराज़ हो गया और वे अज़ाब में बहुत लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।81।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ

और यदि वे अल्लाह पर और इस नबी पर तथा उस पर ईमान रखते जो इसकी ओर उतारा गया तो उन (काफ़िरों) को मित्र न बनाते ।

وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

परन्तु उनमें से बड़ी संख्या दुराचारियों की है ।82।

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٣﴾

निस्सन्देह तू मोमिनों से शत्रुता करने में सबसे अधिक कट्टर यहूदियों को और उनको पाएगा जिन्होंने शिर्क किया । और निस्सन्देह तू मोमिनों से प्रेम करने में अधिक निकट उन लोगों को पाएगा जिन्होंने कहा कि हम ईसाई हैं । यह इस कारण है कि उनमें से अनेक साधक और वैराग्य अपनाने वाले हैं और इसलिए कि वे अहंकार नहीं करते ।83।

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

और जब वे उसे सुनते हैं जो इस रसूल की ओर उतारा गया, तो तू देखेगा कि उनकी आँखें इसलिए आँसू बहाने लगती हैं कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया । वे कहते हैं, हे हमारे रब्ब ! हम ईमान लाए । अतः हमें गवाही देने वालों में लिख ले ।84।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾

और हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह और उस सत्य पर ईमान न लाएँ जो हमारे पास आया । जबकि हम यह अभिलाषा रखते हैं कि हमारा रब्ब हमें नेक लोगों के समूह में सम्मिलित करेगा ।85।

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٦﴾

अतः अल्लाह ने इस आधार पर जो उन्होंने कहा, उनको पुण्यफल स्वरूप ऐसे स्वर्ग दिए जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं और उपकार करने वालों का यही प्रतिफल हुआ करता है ।86।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٧﴾

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, यही लोग हैं जो नरक वाले हैं ।87। (रुकू $\frac{11}{1}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٨﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! उन पवित्र वस्तुओं को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कर दी हैं, हराम न ठहराया करो और सीमा का उल्लंघन न करो । निस्सन्देह अल्लाह सीमा लांघने वालों को पसन्द नहीं करता ।88।

وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ

और जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है उसमें से हलाल (और) पवित्र खाया करो और अल्लाह का

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾

तक़्वा अपनाओ जिस पर तुम ईमान लाते हो ।89।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِىٓ اَيْمَانِكُمْ
وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ
الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ
مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ
اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ
رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ
اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا
حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿٩٠﴾

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी व्यर्थ की क़समों पर नहीं पकड़ेगा परन्तु वह तुम्हें उन पर पकड़ेगा जो तुमने क़समें खा कर वायदे किए हैं । अतः इसका प्रायश्चित दस दरिद्रों को (ऐसा) भोजन कराना है, जो मध्यम दर्जे का तुम अपने घर वालों को भोजन कराते हो । अथवा उन्हें कपड़े पहनाना है या एक दास को स्वतन्त्र करना है । और जो इसका सामर्थ्य न रखे तो तीन दिन के रोज़े (उसको रखने होंगे) । यह तुम्हारी प्रतिज्ञा का प्रायश्चित है जब तुम क़सम खा लो । और (जहाँ तक वश चले) अपनी क़समों की सुरक्षा किया करो । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ।90।*

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ
وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ
عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿٩١﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! मतवाला करने वाली चीज़ और जुआ खेलना और मूर्ति (पूजा) तथा तीर चलाकर भाग्य आज़माना, निस्सन्देह ये सब अपवित्र शैतानी कर्म हैं । अतः इनसे पूर्णतया बचो ताकि तुम सफल हो जाओ ।91।

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ

शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुआ के द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष उत्पन्न कर दे और

* व्यर्थ की क़सम का तात्पर्य यह है कि दैनिक वार्तालाप में **अल्लाह क़सम** कहना या **ख़ुदा की क़सम** का मुहावरा जिसे कुछ लोग अभ्यासतः प्रयोग करते हैं, इस पर अल्लाह तआला की ओर से कोई पकड़ नहीं होगी । परन्तु यदि सोच समझ कर झूठी क़सम खाई जाए तो इस पर पकड़ होगी ।

وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩٢﴾

तुम्हें अल्लाह के स्मरण और नमाज़ से रोके रखे । तो क्या तुम रुक जाने वाले हो ? ।92।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٣﴾

और अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो और (बुराई से) बचते रहो । और यदि तुम पीठ फेर जाओ तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल स्पष्ट संदेश पहुँचाने (की ज़िम्मेदारी) है ।93।

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٤﴾ ع

वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उन पर इसमें कोई पाप नहीं जो वे खाते हैं, इस शर्त के साथ कि वे तक़वा अपनाएँ और ईमान लाएँ और नेक कर्म करें । फिर (और अधिक) तक़वा अपनाएँ तथा (और अधिक) ईमान लायें। पुनः और भी तक़वा अपनाएँ और उपकार करें । और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है ।94।

(रुकू $\frac{12}{2}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٥﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह कुछ ऐसे शिकार के द्वारा तुम्हारी अवश्य परीक्षा लेगा जिस तक तुम्हारे हाथों और भालों की पहुँच होगी ताकि अल्लाह उन लोगों को स्पष्ट करे जो एकान्त में उससे डरते हैं । अतः जो उसके बाद सीमा का उल्लंघन करेगा उसके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) होगा ।95।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम एहराम की अवस्था में हो शिकार न किया करो और तुम में से जो उसे जान बूझ कर मारे तो उसका दंड यह है कि

مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ
يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ
الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ
عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ
عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ
اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٦﴾

वह ख़ाना का’बा तक पहुँचने वाली ऐसी कुर्बानी पेश करे जो उस जानवर के समान हो जिसे उसने मारा है, जिसका निर्णय तुम में से दो न्याय-कर्ता करें । या फिर इसका प्रायश्चित दरिद्रों को भोजन कराना है । या फिर उसके समान रोज़े (रखे) ताकि वह अपने कर्म का कुपरिणाम भोगे । जो गुज़र चुका अल्लाह ने उसे क्षमा किया है । फिर जो दोबारा करेगा तो अल्लाह उससे प्रतिशोध लेगा और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) प्रतिशोध लेने वाला है ।96।

اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا
لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ
الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٧﴾

तुम्हारे लिए समुद्री शिकार करना और उसको खाना हलाल कर दिया गया है । यह तुम्हारे और यात्रियों के लाभ के लिए है । और तुम पर स्थल भाग पर शिकार उस समय तक हराम कर दिया गया है जब तक तुम एहराम बाँधे हुए हो । और अल्लाह का तक़वा अपनाओ जिस की ओर तुम एकत्रित किए जाओगे ।97।

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ
قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ
وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾

अल्लाह ने सम्माननीय गृह का’बा को और सम्माननीय महीने को और क़ुर्बानी के पशुओं को और क़ुर्बानी के चिह्न स्वरूप पट्टे पहनाए हुए पशुओं को लोगों के (धार्मिक और आर्थिक) दृढ़ता का साधन बनाया है । यह (चेतावनी) इस लिए है कि तुम जान लो कि अल्लाह उसे ख़ूब जानता है जो भी आसमानों में है और जो धरती में है । और यह कि अल्लाह प्रत्येक विषय का ख़ूब ज्ञान रखने वाला है ।98।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

जान लो कि अल्लाह पकड़ करने में बहुत कठोर है और यह भी कि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।99।

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١٠٠﴾

रसूल पर भली-भाँति संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त और कोई ज़िम्मेदारी नहीं । और अल्लाह जानता है जो तुम प्रकट करते हो और जो तुम छिपाते हो ।100।

قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠١﴾ ع

तू कह दे कि अपवित्र और पवित्र समान नहीं हो सकते, चाहे तुझे अपवित्र की अधिकता कैसी ही पसन्द आए । अतः हे बुद्धिमानो ! अल्लाह का तक़वा अपनाओ ताकि तुम सफल हो जाओ ।101। (रुकू $\frac{13}{3}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! ऐसी वस्तुओं के बारे में प्रश्न न किया करो कि यदि उन्हें तुम पर प्रकट कर दिया जाए तो वे तुम्हें कष्ट में डाल दें । और यदि तुम उन के बारे में प्रश्न करोगे जब क़ुर्आन उतर रहा हो तो वे तुम पर खोल दी जाएँगी । अल्लाह ने उनसे आँख फेर ली है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत सहनशील है ।102।*

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٣﴾

तुम से पहले भी एक जाति ने ये बातें पूछी थीं । फिर वे उनके इनकार करने वाले हो गए ।103।

* बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनको स्पष्ट रूप से निषिद्ध नहीं ठहराया गया और यह मानव जाति के लिए एक कृपा स्वरूप है और स्वयं अपने दिमाग़ से परिस्थिति के अनुसार निर्णय करने की छूट है । परन्तु कुछ लोगों का यह स्वभाव था कि वह्इ अवतरण के समय उल्टे-पुल्टे प्रश्न करते रहते थे । उस समय आवश्यक था कि उनका उत्तर दिया जाता अन्यथा वे यह समझते कि जो प्रश्न मन में उत्पन्न होते हैं, वह्इ उनका उत्तर नहीं देती । इससे अगली आयत में अतीत की एक जाति का उल्लेख है जिसने इसी प्रकार वह्इ उतरने के समय प्रश्न करके अपने आप को कठिनाई में डाल दिया था ।

अल्लाह ने न तो कोई **बहीरः** बनाया है, न **साइबः**, न **वसीलः** और न **हाम** (बनाया है) । परन्तु वे लोग जिन्होंने इनकार किया, अल्लाह पर झूठ घड़ते हैं और उनमें से अधिकतर समझ नहीं रखते ।104।*	مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝١٠٤
और जब उन्हें कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसकी ओर आओ और रसूल की ओर आओ तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही बहुत पर्याप्त है जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया । (उनसे पूछो कि) क्या इस दशा में भी (पर्याप्त है) जब कि उनके पूर्वज कुछ भी नहीं जानते थे और न हिदायत प्राप्त करते थे ? ।105।	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝١٠٥
हे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम अपनी ही जानों के उत्तरदायी हो । जो पथभ्रष्ट हो गया तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकेगा यदि तुम हिदायत पर रहो । अल्लाह ही की ओर तुम सब का	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

---

* **बहीरः** - अरबी शब्दकोश के अनुसार **बहर्तुल् बई र** का अर्थ है मैंने ऊँट के कान को अच्छी तरह फाड़ दिया । (मुफ़रदात) बहीरः उस ऊँटनी को कहते हैं जिसके कान फाड़ दिए गए हों। इस्लाम से पूर्व यह रीति थी कि जब कोई ऊँटनी दस बच्चे दे चुकती तो उसके कान छेद दिये जाते और उसे स्वतन्त्र छोड़ दिया जाता था । न तो उस पर कोई सवार होता और न कोई उस पर बोझ लादता था (मुफ़रदात) ।

साइबः - वह ऊँटनी जो चरागाह में खुली छोड़ दी जाए । न जलकुँड से उसे रोका जाए और न चारे से । इस्लाम से पूर्व लोग ऐसा उस समय करते थे जब कोई ऊँटनी पाँच बच्चे दे चुकी होती।

वसीलः - इस्लाम से पूर्व एक रीति यह भी थी कि जब बकरी नर और मादा इकट्ठे दो बच्चे देती तो उन को ज़िबह नहीं किया जाता था ताकि एक के ज़िबह होने से दूसरे को कष्ट न हो ।

हाम - वह सांड जिसकी नस्ल से दस बच्चे हो जाएँ उसको छोड़ दिया जाता था । न उस पर कोई सवार होता था और न उससे और कोई काम लिया जाता था तथा उसे चरागाह और पानी से नहीं रोका जाता था ।

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ١٠٦

लौट कर जाना है । फिर वह तुम्हें उससे सूचित करेगा जो तुम किया करते थे ।106।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا
حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ
اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ
مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى
الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ
تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ
بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ
كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّآ
اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ١٠٧

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम में से किसी तक मृत्यु आ पहुँचे तो तुम्हारे बीच गवाही के रूप में वसीयत (इच्छापत्र लेखन) के समय अपने में से दो न्यायपरायण साक्षियों की नियुक्ति आवश्यक है । हाँ यदि तुम धरती पर यात्रा कर रहे हो और तुम पर मृत्यु का संकट आ जाये तो अपनों के स्थान पर परायों में से दो गवाह बना सकते हो । तुम उन दोनों को किसी नमाज़ के बाद रोक लो । और यदि तुम्हें संदेह हो तो वे दोनों अल्लाह की क़सम खा कर यह प्रतिज्ञा करें कि हम इस (गवाही) के बदले कदापि कोई क़ीमत वसूल नहीं करेंगे चाहे कोई (हमारा) निकट संबंधी ही क्यों न हो । और हम अल्लाह की निर्धारित की हुई गवाही को नहीं छिपाएँगे अन्यथा हम तो अवश्य पापियों में से हो जाएँगे ।107।

فَاِنْ عُثِرَ عَلٰٓى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ اِثْمًا
فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ
اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ
لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا

फिर यदि यह ज्ञात हो जाए कि वे दोनों पाप में पड़ गये हैं, तो उनके स्थान पर उन लोगों में से दो अन्य खड़े हो जाएँ, जिनका अधिकार पहले दो ने हड़प लिया हो । अत: वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सच्ची है और हमने (न्याय का) कोई उल्लंघन नहीं किया । (यदि ऐसा करें) तब तो

اعْتَدَيْنَآ ۖ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

हम निस्सन्देह अत्याचारियों में से हो जाएँगे ।108।

ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى
وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ
بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ۗ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع

यह (उपाय इस बात के) अधिक निकट है कि वे (पहले के साक्षी) ज्यों की त्यों सच्ची गवाही प्रस्तुत करें, अन्यथा उन्हें भय लगा रहे कि उन (दूसरों) की क़समों के बाद उनकी क़समें नकार दी जाएँगी । और अल्लाह का तक़्वा अपनाओ और ध्यानपूर्वक सुना करो और अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।109। (रुकू $\frac{14}{4}$)

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ
اُجِبْتُمْ ۗ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ۗ اِنَّكَ
اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٠﴾

जिस दिन अल्लाह समस्त रसूलों को एकत्रित करेगा और पूछेगा कि तुम्हें क्या उत्तर दिया गया ? वे कहेंगे हमें कोई (वास्तविक) जानकारी नहीं । निस्सन्देह तू ही समस्त अज्ञात विषयों का बहुत ज्ञान रखने वाला है ।110।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ
نِعْمَتِىْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۣ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى
الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ
تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِىْ
فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِاِذْنِىْ وَتُبْرِئُ
الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِىْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ

जब अल्लाह ने कहा, हे मरियम के पुत्र ईसा ! अपने ऊपर तथा अपनी माता पर मेरी नेमत को याद कर, जब मैंने रूह-उल-क़ुदुस से तेरा समर्थन किया । तू लोगों से पालने (अर्थात् बाल्यकाल) में और अधेड़ आयु में भी बातें करता था । और उस समय को भी (याद कर) जब मैंने तुझे पुस्तक और तत्त्वज्ञान और तौरात और इंजील भी सिखाई । और जब तू मेरे आदेश से मिट्टी से पक्षियों की आकृति के सदृश पैदा करता था, फिर तू उनमें फूँकता था तो वे मेरे आदेश से पक्षी बन जाते थे । और तू जन्मजात अंधों और श्वेतकुष्ठों को मेरी आज्ञा से ठीक करता

الْمَوْتٰى بِاِذْنِىْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١١﴾

था। और जब तू मेरे आदेश से मृतकों को (जीवित) निकालता था और जब मैंने बनी इस्राईल को तुझ से रोके रखा, जब तू उनके पास उज्ज्वल चिह्नों को ले कर आया तो उनमें से जिन्होंने इनकार किया कहा, निस्सन्देह यह एक खुल्लम-खुल्ला जादू के सिवा कुछ नहीं ।111।

وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِىْ وَبِرَسُوْلِىْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١٢﴾

और जब मैंने हवारियों की ओर वह्इ की कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान ले आओ तो उन्होंने कहा हम ईमान ले आए, अतः गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हो चुके हैं ।112।

اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٣﴾

जब हवारियों ने कहा, हे मरियम के पुत्र ईसा ! क्या तेरे रब्ब के लिए संभव है कि हम पर आकाश से (नेमतों से परिपूर्ण) थाल उतार दे ? उस (अर्थात् ईसा) ने कहा, यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह का तक़्वा अपनाओ ।113।

قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٤﴾

उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएँ और हमारे मन संतुष्ट हो जाएँ और हम जान लें कि तूने हम से सच कहा है और इस पर हम गवाह बन जाएँ ।114।

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٥﴾

मरियम के पुत्र ईसा ने कहा, हे अल्लाह हमारे रब्ब ! हम पर आकाश से (नेमतों से परिपूर्ण) थाल उतार जो हमारे पूर्ववर्तियों और हमारे परवर्तियों के लिए ईद बन जाए और तेरी ओर से एक महान चिह्न स्वरूप हो । और हमें जीविका प्रदान कर और तू जीविका प्रदान करने वालों में सबसे बेहतर है ।115।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّیْ مُنَزِّلُهَا عَلَیْكُمْ ۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّیْۤ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّاۤ اُعَذِّبُهٗۤ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۱۶﴾

अल्लाह ने कहा कि मैं उसे तुम पर अवश्य उतारूँगा । अत: जो कोई इसके बाद तुम में से कृतघ्नता करे तो मैं उसे अवश्य ऐसा अज़ाब दूँगा जैसा समग्र जगत में किसी और को नहीं दूँगा ।116।

(रुकू $\frac{15}{5}$)

وَ اِذْ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسَی ابْنَ مَرْیَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِیْ وَ اُمِّیَ اِلٰهَیْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا یَكُوْنُ لِیْۤ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَیْسَ لِیْ ۗ بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ وَ لَاۤ اَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ﴿۱۱۷﴾

और (याद करो) जब अल्लाह मरियम के पुत्र ईसा से कहेगा कि क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो उपास्य बना लो ? वह कहेगा, पवित्र है तू। मुझ से हो ही नहीं सकता कि मैं ऐसी बात कहूँ जिसका मुझे कोई अधिकार न हो । यदि मैंने वह बात कही होती तो अवश्य तू उसे जान लेता । तू जानता है जो मेरे मन में है और मैं नहीं जानता जो तेरे मन में है । निस्सन्देह तू सभी अज्ञात विषयों को ख़ूब जानने वाला है ।117।*

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَاۤ اَمَرْتَنِیْ بِهٖۤ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبَّكُمْ ۚ وَ كُنْتُ عَلَیْهِمْ شَهِیْدًا مَّا دُمْتُ فِیْهِمْ ۚ فَلَمَّا

मैंने तो उन्हें इसके सिवा कुछ नहीं कहा जो तूने मुझे आदेश दिया था कि अल्लाह की उपासना करो जो मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । और जब तक मैं उनमें रहा मैं उन का निरीक्षक था । फिर जब तूने

* इस आयत में उल्लेख हुआ है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम क़यामत के दिन कहेंगे कि ''मैंने कभी भी लोगों को यह शिक्षा नहीं दी कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा उपास्य बना लो'' यह बात बाइबिल से निश्चित रूप से प्रमाणित है । एक भी आयत इंजील में ऐसी नहीं जिसमें मसीह अलैहिस्सलाम ने कहा हो कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा उपास्य बना लो । बल्कि जब शैतान ने उनको परीक्षा करने के लिए कहा कि मुझे सजद: करो तब भी उन्होंने उत्तर में यह नहीं कहा कि तुम मुझे सजद: करो ।

تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٨﴾

मुझे मृत्यु दे दी, केवल एक तू ही उन का निरीक्षक रहा और तू हर चीज़ पर गवाह है ।118।*

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٩﴾

यदि तू इन्हें अज़ाब दे तो अन्ततः यह तेरे भक्त हैं । और यदि तू इन्हें क्षमा कर दे तो निस्सन्देह तू पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।119।**

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٢٠﴾

अल्लाह ने कहा, यह वह दिन है कि सच्चों को उनका सच्च लाभ पहुँचाने वाला है । उनके लिए स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं । उनमें वे सदा-सर्वदा रहने वाले हैं । अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया और वे उससे प्रसन्न हो गए । यह बहुत बड़ी सफलता है ।120।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢١﴾ ع

आसमानों और धरती की बादशाही अल्लाह ही की है और उसकी भी जो उनके अन्दर है । और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।121। (रुकू $\frac{16}{6}$)

---

* इस आयत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का स्पष्ट रूप से उल्लेख है और इससे यह भी प्रमाणित होता है कि जब तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित रहे उनकी अपनी जाति (बनी इस्राईल) में शिर्क नहीं फैला । जब आप अलै. फ़िलिस्तीन से हिजरत कर गए तो सेंट पॉल ने यूनानियों को जो बनी इस्राईल नहीं थे, पथभ्रष्ट कर दिया और उन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को अपना उपास्य बना लिया । बनी इस्राईल जिनके सुधार के लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आये थे, उनमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन में शिर्क नहीं फैला ।

** इस आयत की दृष्टि से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने बड़ी बुद्धिमत्ता पूर्वक पापियों की क्षमा के लिए दुआ की है कि यदि तू इन्हें दंड दे तो वे तेरे भक्त हैं और यदि क्षमा कर दे तो तू पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील है ।

6- सूरः अल-अन्आम

यह सूरः मक्का निवास काल में अवतरित हुई । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 166 आयतें हैं ।

पिछली सूरः की अन्तिम आयत में यह वर्णन किया गया है कि समस्त लोकों और जो कुछ भी उनके बीच है उनका स्वामी अल्लाह है और इस सूरः के आरम्भ में और अधिक स्पष्ट और शान के साथ यही वर्णन किया गया है । अर्थात् समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए है जिसने धरती और आकाश को उत्पन्न किया और उनके भेद को ज्ञात करने के मार्ग में कई प्रकार के अंधकार होने के बावजूद उसने बुद्धि रूपी प्रकाश भी प्रदान किया, जिसके द्वारा वे अंधकार छटते चले जाएँगे । अतएव आज विज्ञान की प्रगति ने धरती और आकाश की उत्पत्ति के रहस्य पर से इस प्रकार पर्दा उठाया है कि उन की वास्तविकता का और उनके अन्दर जो कुछ है उनका अधिक से अधिक ज्ञान मनुष्य को प्राप्त होता चला जा रहा है । जिस प्रकार प्रारम्भ में आकाश के अंधकारों को दूर किये जाने का उल्लेख मिलता है इसी प्रकार भू-गर्भ और समुद्र के अंधकारों को प्रकाश में परिवर्तित किए जाने का भी उल्लेख मिलता है । इसी प्रकार आकाश से मनुष्यों पर अज़ाब भी उतरते हैं, जिनको मनुष्य के भीतरी अंधकार खींचते हैं । इस विषयवस्तु का वर्णन इस सूरः की आयत संख्या 66 में मिलता है ।

एक तो वैज्ञानिक हैं, जिनपर धरती और आकाश के अंधकार उनके अन्वेषणों के फलस्वरूप प्रकाशित किए जाते हैं । और दूसरे अल्लाह के वे महान भक्त हैं, जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, जिनको अल्लाह तआला धरती और आकाश के शासनतन्त्र का दर्शन करा देता है तथा आकाश से उन पर नूर बरसता है, जैसा कि आयत संख्या 76 में वर्णन किया गया है ।

इस सूरः में नबियों और उन पर पुस्तकों के उतरने और हिदायत की रौशनी अवतरित होने का बार-बार वर्णन मिल रहा है ।

इसी सूरः में बंद बीजों और गुठलियों को फाड़कर उन के अन्धकारों में से जीवन के लहलहाते हुए पौधे निकालने का उल्लेख भी है । इसी प्रकार नक्षत्रों का वर्णन है कि किस प्रकार वे जल, स्थल के अन्धकारों को दूर करके यात्रियों के मार्गदर्शन का साधन बनते हैं ।

आयत संख्या 96 से आरम्भ होने वाले रुकू में एक बहुत ही महत्वपूर्ण आयत इस विषयवस्तु पर आधारित है कि हरियाली से परत दर परत हर प्रकार के बीज फूटते हैं और फिर प्रत्येक प्रकार के फल उगते हैं । इन फलों के पकने की प्रक्रिया पर ध्यान दो ।

वे लोग जो अल्लाह तआला की आयतों पर ईमान रखते हैं, उनके लिए इस में अनगिनत चिह्न हैं।

क्लोरोफिल (Chlorophyll) से हरियाली बनती है जो अपने आप में एक बड़ा चिह्न है जिस में वैज्ञानिकों को कोई भी विकासपरक पड़ाव दिखाई नहीं दिये। यह एक बड़ा ही जटिल रासायनिक तत्त्व है जो अन्य रासायनिक तत्त्वों से अधिक जटिल है। जीवन के आरम्भ में ही क्लोरोफिल की आवश्यकता होती है, जिससे मनुष्य उत्पन्न हुआ। उस समय क्लोरोफिल कौन कौन से विकासपरक पड़ावों को पार करके उत्पन्न हुआ, इस प्रश्न का अभी तक समाधान नहीं मिला है। विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात यह है कि क्लोरोफिल नूर (प्रकाश) से जीवन बनाता है, अग्नि से नहीं। वही नूर का विषयवस्तु कि उसने धरती और आकाश में क्या-क्या उलटफेर किये हैं, इस सूरः के अन्त पर अपने उत्कर्ष को पहुँच जाती है।

इस सूरः में मुश्रिकों की ऐसी घिसी-पिटी भ्रान्त धारणाओं का उल्लेख है जिनका सम्बन्ध **अन्आम** अर्थात् मवेशियों से है, जिन्हें अल्लाह ने मानव जीवन यापन का साधन बनाया है। परन्तु उन्होंने भाँति-भाँति की मुश्रिक-रीतियों के द्वारा मवेशियों से सम्बन्धित समस्त तत्त्वपूर्ण बातों को नष्ट कर दिया।

इस सूरः के अन्त पर न केवल मवेशियों से सम्बन्धित हलाल-हराम का स्पष्टीकरण किया गया है अपितु शिष्टाचार सम्बन्धी हलाल और हराम की बातें भी वर्णन कर दी गईं। इस प्रकार भौतिक भोज्य-वस्तुओं के हलाल और हराम के साथ आध्यात्मिक हलाल और हराम का भी उल्लेख कर दिया। तथा माँ-बाप के प्रति सदयभाव प्रदर्शन करने की शिक्षा दी गई जो अपने बच्चों के लिए अनेक कष्ट सहन करते हैं।

इस सूरः के अन्त पर एक ऐसी आयत है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपने रब्ब के समक्ष पूर्ण आज्ञाकारी होने का इस सुन्दरता से उल्लेख करती है कि इस से उत्तम ढंग से उल्लेख करना असंभव है। और सारी दुनिया की ईश्वरीय पुस्तकों में इस विषय की कोई आयत मौजूद नहीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह घोषणा करने का आदेश दिया गया है कि मेरी नमाज़ें और मेरी समस्त क़ुर्बानियाँ अर्थात् केवल चौपायों की क़ुर्बानियाँ नहीं अपितु अपने हार्दिक भावनाओं की क़ुर्बानियाँ तथा मेरा जीवन और मेरी मृत्यु विशुद्ध रूप से अपने अल्लाह के लिए समर्पित हो चुकी हैं।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِیَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ سِتٌّ وَّ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّ عِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार बार दया करने वाला है ।1।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬ؕ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ②

समस्त स्तुति अल्लाह ही की है, जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया और अन्धकार और प्रकाश बनाए । फिर भी वे लोग जिन्होंने इनकार किया अपने रब्ब का साझीदार ठहराते हैं ।2।

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤی اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّی عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ③

वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया । फिर एक अवधि निश्चित की और निश्चित अवधि का (ज्ञान) उसी के पास है । फिर भी तुम संदेह में पड़ते हो ।3।*

وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ ؕ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَیَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ④

और वही अल्लाह आसमानों में भी है और धरती में भी है । वह तुम्हारे छिपे हुए को जानता है और तुम्हारे प्रकाश्य को भी । और जो तुम कमाई करते हो उसे भी जानता है ।4।

وَمَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِیْنَ ⑤

और उनके पास उनके रब्ब की आयतों में से जब भी कोई आयत आती है वे उससे मुँह फेरने लगते हैं ।5।

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ

अत: उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब वह उनके पास आया । अत: अवश्य

* इस आयत में जो पहला **अजल** (निश्चित अवधि) शब्द आया है इस से अभिप्राय दुर्घटना में होने वाली मृत्यु अथवा बीमारी से होने वाली मृत्यु है जो उस निश्चित अवधि से पहले घटित हो सकती है जो किसी की अन्तिम सम्भावित आयु निश्चित होती है । संसार में मनुष्य भी अपने उत्पादों के सम्बन्ध में एक विशेष अवधि निश्चित करता है । उदाहरण स्वरूप अमुक पुल अधिक से अधिक इतने वर्ष तक ठीक रह सकता है । इसके बाद उसको नष्ट करना होगा । परन्तु दुर्घटनाओं के परिणाम स्वरूप वह अपनी निर्धारित अवधि से पूर्व भी नष्ट हो सकता है ।

يَأْتِيهِمْ أَنْبٰٓؤُا مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦

उन्हें उन (बातों के पूरा होने) के समाचार मिलेंगे जिनकी वे खिल्ली उड़ाया करते थे ।6।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٧

क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले हमने कितनी ही जातियाँ तबाह कर दीं जिनको हमने धरती में ऐसी दृढ़ता प्रदान की थी जैसी दृढ़ता तुम्हें प्रदान नहीं की । और हमने उन पर मुसलाधार वर्षा करते हुए बादल भेजे और हमने ऐसी नदियाँ बनाईं जो उनके अधीन बहती थीं । फिर हमने उनको उनके पापों के कारण हलाक कर दिया और उनके बाद हमने दूसरी जातियों को उन्नति प्रदान की ।7।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٨

और यदि हम तुझ पर किसी कागज़ में कोई लिखित प्रमाण उतारते फिर वे उसे अपने हाथों से छू भी लेते तो फिर भी काफ़िर अवश्य कहते कि यह तो एक खुले-खुले जादू के सिवा कुछ नहीं ।8।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝٩

और वे कहते हैं कि इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया ? और यदि हम कोई फ़रिश्ता उतारते तो अवश्य मामला निपटा दिया जाता । फिर उन्हें कोई ढील न दी जाती ।9।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝١٠

और यदि हम उस (रसूल) को फ़रिश्ता बनाते तो हम उसे फिर भी मनुष्य (के रूप में) बनाते और हम उन पर वह (विषय) संदिग्ध रखते जिसे वे (अब) संदिग्ध समझ रहे हैं ।10।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ

और निस्सन्देह तुझ से पहले भी रसूलों से उपहास किया गया । अतएव जिन्होंने उन (रसूलों) से उपहास किया, उन्हें

فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١ ع

उन्हीं बातों ने घेर लिया जिन के द्वारा वे उपहास किया करते थे ।11।

(रुकू $\frac{1}{7}$)

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٢

तू कह दे धरती में ख़ूब भ्रमण करो फिर ध्यान दो कि झुठलाने वालों का कैसा (बुरा) अंत हुआ था ।12।

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٣

पूछ कि किसका है जो आसमानों और धरती में है ? कह दे कि अल्लाह ही का है । उसने दया करना अपने ऊपर अनिवार्य कर रखा है । वह अवश्य तुम्हें क़यामत के दिन तक इकट्ठा करता चला जाएगा जिसमें कोई संदेह नहीं । वे लोग जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला अत: वे तो ईमान नहीं लाएँगे ।13।

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝١٤

और उसी का है जो रात में और दिन में ठहर जाता है । और वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।14।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٥

तू कहदे कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी अन्य को मित्र बना लूँ जो असामानों और धरती की उत्पत्ति का आरम्भ करने वाला है और वह (सब को) खिलाता है जबकि उसे खिलाया नहीं जाता । तू कह दे कि निस्सन्देह मुझे आदेश दिया गया है कि मैं हर एक से जिसने आज्ञापालन किया, प्रथम रहूँ । और तू कदापि मुश्रिकों में से न बन ।15।

قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٦

तू कह दे कि यदि मैंने अपने रब्ब की अवज्ञा की तो निस्सन्देह मैं एक महान दिवस के अज़ाब से डरता हूँ ।16।

مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۷﴾

जिससे उस दिन वह (अज़ाब) टाल दिया जाएगा, तो उस पर उसने दया की और यह बहुत खुली-खुली सफलता है ।17।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸﴾

अतः यदि तुझे अल्लाह कोई हानि पहुँचाए तो उसके सिवा उसे कोई दूर करने वाला नहीं और यदि वह तुझे कोई भलाई पहुँचाए तो वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।18।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۹﴾

और वह अपने भक्तों पर बड़ी शान के साथ प्रभुत्व रखता है और वह परम विवेकशील और (सदा) अवगत रहने वाला है ।19।

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌۢ بَيْنِیْ وَبَيْنَكُمْ ۚ وَاُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۲۰﴾

तू पूछ कि कौन सी बात गवाही के रूप में सब से बड़ी हो सकती है । कह दे कि अल्लाह ही तुम्हारे और मेरे बीच गवाह है । और मेरी ओर यह क़ुर्आन वह्इ किया गया है ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें सतर्क करूँ और प्रत्येक उस व्यक्ति को भी जिस तक यह पहुँचे । क्या तुम निश्चित रूप से गवाही देते हो कि अल्लाह के अतिरिक्त भी कोई दूसरे उपास्य हैं ? तू कह दे कि मैं (यह) गवाही नहीं देता । कह दे कि निस्सन्देह वही एक ही उपास्य है और मैं निश्चित रूप से उससे बरी हूँ, जो तुम शिर्क करते हो ।20।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا

वे लोग जिन्हें हमने पुस्तक दी वे इस (पुस्तक और इस रसूल) को उसी प्रकार पहचानते हैं जिस प्रकार अपने बेटों को पहचानते हैं । वे लोग जिन्होंने अपने

أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢١﴾ ع

आप को घाटे में डाला वे तो ईमान नहीं लाएँगे ।21। (रुकू $\frac{2}{8}$)

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۗ إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢﴾

और उससे बढ़ कर अत्याचारी कौन हो सकता है जिसने अल्लाह पर कोई झूठ गढ़ा अथवा उसकी आयतों को झुठलाया। निस्सन्देह अत्याचारी सफल नहीं होते ।22।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٣﴾

और (याद करो) जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर हम उन्हें जिन्होंने शिर्क किया, पूछेंगे कि तुम्हारे वे उपास्य कहाँ हैं जिन्हें तुम (अल्लाह के साझीदार) समझा करते थे ।23।

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٤﴾

फिर उनका (गढ़ा हुआ) षड्यन्त्र कुछ शेष नहीं रहेगा, परन्तु इतना कि वे कहेंगे हमारे रब्ब अल्लाह की क़सम । हम कदापि मुश्रिक नहीं थे ।24।

أُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰى أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

देख कैसे वे अपने ही विरुद्ध झूठ बोलते हैं । और जो वे झूठ गढ़ा करते थे वह उनसे गुम हो जाएगा ।25।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۗ وَإِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۗ حَتّٰٓى إِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِنْ هٰذَآ إِلَّآ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾

और उनमें से ऐसे भी हैं जो देखने में तेरी बातों पर कान धरते हैं, जबकि हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं (जिनके कारण सम्भव नहीं) कि वे उसको समझ जाएँ । और उनके कानों में एक बहरापन सा रख दिया है । और यदि वे सभी चिह्न देख भी लें तो उन पर ईमान नहीं लाएँगे। इस सीमा तक (वे मुँह फट हैं) कि जब तेरे पास आते हैं तो तुझ से झगड़ते हैं । जो लोग काफ़िर हुए कहते हैं यह तो पहले लोगों की कहानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं ।26।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٧﴾

और वे उससे रोकते भी हैं और स्वयं भी उससे दूर रहते हैं और वे अपने सिवा और किसी का विनाश नहीं करते और वे समझ नहीं रखते ।27।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٨﴾

और काश तू देख सकता कि जब वे अग्नि के पास (थोड़ा) ठहराए जाएँगे तो कहेंगे काश ! हमें वापस लौटा दिया जाता, फिर हम अपने रब्ब की आयतों को न झुठलाते और हम मोमिनों में से हो जाते ।28।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٩﴾

सत्य यह है कि जो इससे पूर्व वे छिपाया करते थे वह उन पर प्रकट हो चुका है । और यदि वे लौटा भी दिए जाएँ तो अवश्य दोबारा वही करेंगे जिससे उनको रोका गया था । और निश्चित रूप से वे झूठे हैं ।29।

وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٠﴾

और वे कहते थे कि हमारा यह (जीवन) सांसारिक जीवन के अतिरिक्त कुछ नहीं और हमें कभी उठाया नहीं जाएगा ।30।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣١﴾ ع

और काश ! तू देख सकता जब वे अपने रब्ब के समक्ष ठहराए जाएँगे । वह (उनसे) पूछेगा, क्या यह सत्य नहीं है ? वे कहेंगे क्यों नहीं ! हमारे रब्ब की क़सम (यह सत्य है) । वह कहेगा, तब तुम उस इनकार के कारण जो तुम किया करते थे अज़ाब को चखो ।31। (रुकू $\frac{3}{9}$)

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ

निस्सन्देह उन लोगों ने घाटा उठाया जिन्होंने अल्लाह से मिलने का इनकार किया । यहाँ तक कि जब अचानक उनके पास (वह) घड़ी आ गई तो कहने लगे हाय अफसोस, उस भूल पर जो हम

يَحۡمِلُوۡنَ اَوۡزَارَهُمۡ عَلٰى ظُهُوۡرِهِمۡ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوۡنَ ﴿٣٢﴾

इस बारे में किया करते थे ! और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे । सावधान ! क्या ही बुरा है, जो वे उठाए हुए हैं ।32।

وَمَا الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَاۤ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهۡوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الۡاٰخِرَةُ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ يَتَّقُوۡنَ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿٣٣﴾

और सांसारिक जीवन केवल खेल-कूद और मन की इच्छाओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो श्रेष्ठ उद्देश्य से असावधान कर दे । और निस्सन्देह परलोक का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो तक़्वा अपनाते हैं । अतः क्या तुम समझते नहीं ? ।33।

قَدۡ نَعۡلَمُ اِنَّهٗ لَيَحۡزُنُكَ الَّذِىۡ يَقُوۡلُوۡنَ فَاِنَّهُمۡ لَا يُكَذِّبُوۡنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ﴿٣٤﴾

निस्सन्देह हम जानते हैं कि जो वे कहते हैं, तुझे अवश्य दुःख में डालता है । अतः निश्चित रूप से वे तुझे ही नहीं झुठलाते बल्कि अत्याचारी लोग अल्लाह की आयतों का ही इनकार करते हैं ।34।

وَلَقَدۡ كُذِّبَتۡ رُسُلٌ مِّنۡ قَبۡلِكَ فَصَبَرُوۡا عَلٰى مَا كُذِّبُوۡا وَاُوۡذُوۡا حَتّٰٓى اَتٰٮهُمۡ نَصۡرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدۡ جَآءَكَ مِنۡ نَّبَاِى الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿٣٥﴾

और निश्चित रूप से तुझ से पहले भी रसूल झुठलाए गए थे । और बावजूद इसके कि वे झुठलाए गए और बहुत सताए गए उन्होंने धैर्य रखा, यहाँ तक कि उन तक हमारी सहायता आ पहुँची। और अल्लाह की बातों को कोई परिवर्तित करने वाला नहीं । और निश्चित रूप से तेरे पास रसूलों की ख़बरें आ चुकी हैं ।35।

وَاِنۡ كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكَ اِعۡرَاضُهُمۡ فَاِنِ اسۡتَطَعۡتَ اَنۡ تَبۡتَغِىَ نَفَقًا فِى الۡاَرۡضِ اَوۡ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَاۡتِيَهُمۡ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوۡ

और यदि उनका मुँह फेरना तुझ पर नागवार गुज़रता है तो यदि तुझ में सामर्थ्य है तो धरती में कोई सुरंग अथवा आकाश में कोई सीढ़ी खोज ले । फिर (उसके द्वारा) उनके पास कोई चिह्न ला सके (तो ऐसा करके देख ले) । और यदि

شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٦﴾

अल्लाह चाहता तो उन्हें अवश्य हिदायत पर एकत्रित कर देता । अत: तू कदापि मूर्खों में से न बन ।36।

النصف

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؔ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٧﴾

وقف غفران

وقف منزل وعند البعض على يسمعون

वही स्वीकार करते हैं जो सुनते हैं । और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर उसी की ओर वे लौटाए जाएँगे ।37।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

वे कहते हैं कि क्यों न उसके रब्ब की ओर से उस पर कोई बड़ा चिह्न उतारा गया ? तू कह दे कि निस्सन्देह अल्लाह इस बात पर समर्थ है कि वह कोई बड़ा चिह्न उतारे । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।38।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٩﴾

और धरती में जो भी चलने फिरने वाला जीवधारी है और हर एक पक्षी जो अपने दो परों के द्वारा उड़ता है, वे तुम्हारी ही भाँति समुदाय हैं । हमने पुस्तक में किसी चीज़ का उल्लेख नहीं छोड़ा । अन्तत: वे अपने रब्ब की ओर एकत्रित किए जाएँगे ।39।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٠﴾

और वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया वे अन्धकारों में (भटकते हुए) बहरे और गूँगे हैं । जिसे अल्लाह चाहता है पथभ्रष्ट ठहरा देता है और जिसे चाहे सीधे मार्ग पर (अग्रसर) करा देता है ।40।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ

तू कह दे कि क्या तुमने कभी विचार किया है कि यदि तुम पर अल्लाह का अज़ाब आ जाए अथवा तुम पर (निश्चित) कठिन घड़ी आ जाए, यदि

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤١

तुम सच्चे हो तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को भी पुकारोगे ? ।41।

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ۝٤٢ ع

(नहीं) बल्कि उसी को तुम पुकारोगे । अतः यदि वह चाहे तो उस (विपत्ति) को दूर कर देगा, जिसकी ओर तुम उसे (सहायता के लिए) बुलाते हो । और तुम भूल जाओगे उन वस्तुओं को, जिनको तुम (अल्लाह का) साझीदार ठहराते रहे हो ।42। (रुकू $\frac{4}{10}$)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٤٣

और निस्सन्देह हमने तुझ से पहले कई समुदायों की ओर (रसूल) भेजे । फिर हमने उनको (कभी) कठिनाई और (कभी) तंगी में डाला ताकि वे विनम्रता अपनाएँ ।43।

فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٤٤

अतः जब हमारी ओर से उन पर कठिनाई (की विपत्ति) आई तो क्यों न वे गिड़गिड़ाए, परन्तु उनके दिल कठोर हो चुके थे और शैतान ने उनको वे कर्म सुन्दर करके दिखाए जो वे किया करते थे ।44।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝٤٥

अतः जब वे उसे भूल गए जो उन्हें बार-बार याद दिलाया गया था तो हमने उन पर हर चीज़ के द्वार खोल दिए । यहाँ तक कि जब वे उस पर जो उन्हें दिया गया इतराने लगे तो हमने अचनाक उन्हें पकड़ लिया तो वे एक दम बहुत निराश हो गए ।45।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٦

अतः उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने अत्याचार किया था । और समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है ।46।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٧﴾

तू पूछ कि क्या कभी तुमने विचार किया है कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने और देखने की शक्ति को ले जाए और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो अल्लाह के सिवा कौन सा उपास्य है जो उन (खोई हुई शक्तियों) को तुम्हारे पास (वापस) ले आए । देख कि हम किस प्रकार आयतों को फेर-फेर कर वर्णन करते हैं फिर भी वे मुख फेर लेते हैं ।47।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٨﴾

तू कह दे, क्या तुमने कभी विचार किया है कि यदि तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब अचानक अथवा स्पष्ट रूप से (दिखाई देता हुआ) आ जाए तो क्या अत्याचारी लोगों के अतिरिक्त भी कोई तबाह किया जाएगा ? ।48।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

और हम पैग़म्बरों को केवल इस हैसियत से भेजते हैं कि वे शुभ-समाचार देने वाले और सतर्क करने वाले होते हैं । अत: जो ईमान ले आए और सुधार करे तो उन को कोई भय नहीं और न वे कोई शोक करेंगे ।49।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٠﴾

और वे लोग जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया उनको अवश्य उस कारण अज़ाब आ पकड़ेगा, जो वे कुकर्म करते थे ।50।

قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى

तू कह दे, मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न ही मैं अदृश्य का ज्ञान रखता हूँ और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ । मैं उसके अतिरिक्त, जो मेरी ओर वह्इ की जाती है, किसी का अनुसरण नहीं

اَلْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۭ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝51

करता। कह दे, क्या अंधा और देखने वाला समान होते हैं ? फिर क्या तुम सोचते नहीं ।51। (रुकू $\frac{5}{11}$)

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝52

और इस (क़ुर्आन) के द्वारा तू उन्हें सतर्क कर जो भय रखते हैं कि वे अपने रब्ब की ओर एकत्रित किए जाएँगे । इस (क़ुर्आन) के अतिरिक्त उनका कोई मित्र और कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा । ताकि वे तक़वा अपनाएँ ।52।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۭ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝53

और तू उन लोगों को न धुतकार, जो अपने रब्ब को उसकी प्रसन्नता चाहते हुए प्रातः काल और सायंकाल भी पुकारते हैं । तेरे ज़िम्मे उनका कुछ भी हिसाब नहीं और न ही तेरा कुछ हिसाब उनके ज़िम्मे है । अतः यदि फिर भी तू उन्हें धुतकार देगा तो तू अत्याचारियों में से हो जाएगा ।53।

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝54

और इसी प्रकार हम उनमें से कुछ को कुछ के द्वारा परीक्षा में डालते हैं । यहाँ तक कि वे कहने लगते हैं कि क्या हमारे बीच (बस) यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने अनुग्रह किया है । क्या अल्लाह कृतज्ञों को सबसे अधिक नहीं जानता ।54।

وَاِذَا جَاۗءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْۗءًا

और जब तेरे पास वे लोग आएँ जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो (उनसे) कहा कर, तुम पर सलाम हो । (तुम्हारे लिए) तुम्हारे रब्ब ने दया करना अपने ऊपर अनिवार्य कर दिया है। (अर्थात्) यह कि तुम में से जो कोई अज्ञानता वश कुकर्म कर बैठे फिर

بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٥﴾

उसके बाद प्रायश्चित कर ले और सुधार कर ले तो (याद रखे कि) वह (अल्लाह) निस्सन्देह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।55।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ
سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٦﴾ ع

और इसी प्रकार हम आयतों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं और (यह) इस लिए है कि अपराधियों का रास्ता खूब खुल कर प्रकट हो जाए ।56।

(रुकू $\frac{6}{12}$)

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَاۗءَكُمْ ۙ
قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٧﴾

तू कह दे कि निश्चित रूप से मुझे मना कर दिया गया है कि मैं उनकी उपासना करूँ, जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो । तू कह दे मैं तो तम्हारी इच्छाओं का अनुसरण नहीं करूँगा (अन्यथा) मैं उसी समय पथभ्रष्ट हो जाऊँगा और मैं हिदायत पाने वालों में से न बन सकूँगा ।57।

قُلْ اِنِّيْ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ۭ
مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ۭ
اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ
خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

तू कह दे कि निस्सन्देह मैं अपने रब्ब की ओर से एक उज्ज्वल प्रमाण पर हूँ और तुम उसको झुठला बैठे हो । मेरे अधीन वह नहीं है जिस की तुम जल्दी करते हो। फैसले का अधिकार अल्लाह के सिवा किसी को नहीं । वह सत्य ही वर्णन करता है और वह सर्वोत्तम फैसला करने वाला है ।58।

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ
لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

तू कह दे कि यदि वह बात जिसकी तुम जल्दी करते हो, मेरे हाथ में होती तो (अब तक) अवश्य मेरे और तुम्हारे बीच फ़ैसला हो चुका होता और अल्लाह अत्याचारियों को सबसे अधिक जानने वाला है ।59।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦٠

और उसके पास अदृश्य की कुंजियाँ हैं* जिन्हें उसके सिवा और कोई नहीं जानता । और वह जानता है जो जल और स्थल में है । कोई पत्ता भी गिरता है तो वह उसका ज्ञान रखता है । और कोई दाना धरती के अन्धकारों में (छिपा हुआ) नहीं और कोई आर्द्र अथवा शुष्क वस्तु ऐसी नहीं (जिसका वर्णन) एक सुस्पष्ट पुस्तक में न हो ।60।

وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٦١ ع

और वही है जो रात को (नींद के रूप में) तुम्हें मृत्यु देता है, जबकि वह जानता है जो तुम दिन के समय कर चुके हो और फिर वह तुम्हें उसमें (अर्थात् दिन के समय) उठा देता है ताकि (तुम्हारा) निर्धारित समय पूरा किया जाए । फिर उसी की ओर तुम्हारा लौट कर जाना है । फिर जो भी तुम किया करते थे वह उससे तुम्हें सूचित करेगा ।61। (रुकू $\frac{7}{13}$)

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ۝٦٢

और वह अपने भक्तों पर बड़ी शान के साथ प्रभुत्व रखता है और वह तुम पर सुरक्षा करने वाले (निरीक्षक) भेजता है । यहाँ तक कि जब तुम में से किसी को मृत्यु आजाए तो उसे हमारे रसूल (फ़रिश्ते) मौत दे देते हैं और वे किसी पहलू की अनदेखी नहीं करते ।62।

ثُمَّ رُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ

फिर वे अल्लाह की ओर लौटाए जाते हैं जो उनका वास्तविक मालिक है ।

* इस अर्थ के लिए देखें मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि. ।

الْحُكْمُ قف وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ۝٦٣

सावधान ! शासन उसी का है और वह हिसाब लेने वालों में सबसे तेज़ है ।63।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ج لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝٦٤

पूछ कि कौन है जो तुम्हें जल और स्थल के अन्धकारों से मुक्ति देता है, जब तुम उसे गिड़गिड़ा कर पुकार रहे होते हो और गुप्त रूप से भी कि यदि उसने हमें इस विपत्ति से मुक्ति दे दी तो हम अवश्य कृतज्ञों में से हो जाएँगे ।64।

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝٦٥

कह दे अल्लाह ही है जो तुम्हें इससे भी मुक्ति प्रदान करता है और प्रत्येक बेचैनी से भी । फिर भी तुम शिर्क करने लगते हो ।65।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ط اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ۝٦٦

कह दे कि वह समर्थ है कि तुम्हारे ऊपर से अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे से तुम पर अज़ाब भेजे या तुम्हें शंकाओं में डाल कर गिरोहों में बाँट दे और तुम में से कुछ को कुछ अन्य की ओर से अज़ाब का स्वाद चखाए । देख किस प्रकार हम चिह्नों को फेर-फेर कर वर्णन करते हैं ताकि वे किसी प्रकार समझ जाएँ ।66।

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ط قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ط ۝٦٧

और तेरी जाति ने उसको झुठला दिया है हालाँकि वही सत्य है । तू कह दे कि मैं तुम पर कदापि निरीक्षक नहीं हूँ ।67।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ز وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٦٨

प्रत्येक भविष्यवाणी का एक समय और स्थान निश्चित है और शीघ्र ही तुम जान लोगे ।68।

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ط وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ

और जब तू उन लोगों को देखे, जो हमारी आयतों से उपहास करते हैं तो फिर उनसे अलग हो जा, यहाँ तक कि वे किसी दूसरी बात में लग जाएँ ।

فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٦٩

और यदि कभी शैतान तुझ से इस मामले में भूल-चूक करवा दे तो यह याद आ जाने पर अत्याचारी लोगों के साथ न बैठ* ।69।

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٧٠

और जो लोग तक़्वा अपनाते हैं उन पर उन लोगों के हिसाब की कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं । परन्तु यह केवल एक बड़ा उपदेश है, ताकि वे तक़्वा अपनाएँ ।70।

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٧١ ع

और तू उन लोगों को छोड़ दे जिन्होंने अपने धर्म को खेल-कूद और मनोकामनाओं को पूरा करने का साधन बना रखा है और उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया है । और तू इस (क़ुर्आन) के द्वारा उपदेश दे ताकि कहीं ऐसा न हो कि कोई जान अपनी कमाई के कारण नष्ट हो जाए । जबकि उसके लिए अल्लाह के सिवा न कोई मित्र होगा और न कोई सिफ़ारिश स्वीकार करने वाला । और यदि वह बराबर का बदला प्रस्तुत भी कर दे तब भी उससे कुछ नहीं लिया जाएगा । यही वे लोग हैं कि जो कुछ उन्होंने कमाया उसके कारण वे हलाक किए गए । जो वे इनकार करते थे उसके कारण उनके लिए पेय-पदार्थ स्वरूप खौलता हुआ पानी और पीड़ाजनक अज़ाब होगा ।71।

(रुकू $\frac{8}{14}$)

---

* इसका अर्थ सदा के लिए उनसे पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना नहीं बल्कि यह अर्थ है कि इस्लाम के लिए ग़ैरत दिखाते हुए उनसे उस समय तक मेल-जोल न रखा जाए जब तक कि वे अपनी उन निंदनीय गतिविधियों से रुक नहीं जाते ।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿٧٢﴾

तू पूछ क्या हम अल्लाह के सिवा उसको पुकारें जो न हमें लाभ पहुँचा सकता है न हानि ? और क्या इसके बाद भी कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी है, हमें एक ऐसे व्यक्ति की भाँति अपनी एड़ियों पर लौटा दिया जाए जिसे शैतानों ने संज्ञाहीन करके धरती पर हैरान और परेशान छोड़ दिया हो ? उसके ऐसे मित्र हों जो उसे हिदायत की ओर बुलाते हुए पुकारें कि हमारे पास आ जा । तू कह दे कि निस्सन्देह अल्लाह की (दी हुई) हिदायत ही वास्तविक हिदायत है । और हमें आदेश दिया गया है कि हम समस्त लोकों के रब्ब के आज्ञाकारी हो जाएँ ।72।

وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِىٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٣﴾

और यह (कह दे) कि नमाज़ को क़ायम करो और उसका तक़्वा अपनाओ और वही है जिसकी ओर तुम एकत्रित किए जाओगे ।73।

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ؕ۬ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٤﴾

और वही है जिसने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया और जिस दिन वह कहता है 'हो जा' तो वह होने लगता है और हो कर रहता है । उसका कथन सच्चा है और उसी की बादशाही होगी जिस दिन बिगुल फूँका जाएगा । अदृश्य और दृश्य का ज्ञाता है और वह परम विवेकशील (और) सदा अवगत रहने वाला है ।74।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّىْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ

और (याद कर) जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा, क्या आप मूर्तियों को उपास्य बना बैठे हैं ? निस्सन्देह मैं

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٧٥

आपको और आपकी जाति को खुली-खुली पथभ्रष्टता में पाता हूँ ।75।

وَكَذٰلِكَ نُرِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۝٧٦

और इसी प्रकार हम इब्राहीम को आसमानों और धरती की बादशाहत (की वास्तविकता) दिखाते रहे ताकि वह (और अधिक) विश्वास करने वालों में से हो जाए ।76।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ۝٧٧

अत: जब उस पर रात छा गई, उसने एक सितारे को देखा तो कहा, सम्भवत: यह मेरा रब्ब है । फिर जब वह डूब गया तो कहने लगा, मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता* ।77।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّاۤلِّيْنَ ۝٧٨

फिर जब उसने चन्द्रमा को चमकते हुए देखा तो कहा, सम्भवत: यह मेरा रब्ब है। फिर जब वह (भी) डूब गया तो उसने कहा यदि मेरे रब्ब ने मुझे हिदायत न दी होती तो मैं अवश्य पथभ्रष्ट लोगों में से हो जाता ।78।

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ

फिर जब उसने सूर्य को चमकता हुआ देखा तो कहा, सम्भवत: यह मेरा रब्ब है। यह (उन) सबसे बड़ा है ।

---

* आयत संख्या 77 से 79 तक में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपनी जाति के साथ एक शास्त्रार्थ का उल्लेख है जो यदा-कदा तीन दिन तक जारी रहा । हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी जाति को झूठा साबित करने के लिए सितारों का उल्लेख किया कि तुम इनको उपास्य बनाते हो जबकि वे तो डूब जाते हैं । फिर इससे बढ़ कर चन्द्रमा का वर्णन किया कि तुम में से कुछ चन्द्रमा को उपास्य बनाते हैं जबकि वह भी डूब जाने वाली वस्तु है और अन्तत: सूर्य का वर्णन किया, क्योंकि उस जाति के बहुसंख्यक लोग सूर्य के उपासक थे । आपने कहा, यद्यपि यह बहुत बड़ा है और इसको तुम रब्ब मान कर इसका सम्मान करते हो । परन्तु देख लो यह भी डूब जाता है । अत: तुम्हारा अल्लाह के सिवा किसी अन्य को उपास्य बनाना केवल झूठ है ।

इस आयत के सम्बन्ध में इस युग में कई व्याख्याकार आश्चर्यजनक कहानी वर्णन करते हैं कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पिता ने उन को एक गुफा में क़ैद कर दिया था । जब वह वहाँ से बाहर निकले तो पहली बार सितारा देखा, फिर चन्द्रमा और फिर सूर्य को देखा और पहली बार उनको ज्ञात हुआ कि ये तीनों डूब जाने वाली वस्तुएँ हैं । परन्तु यह व्याख्या सही नहीं है ।

هٰذَآ اَكۡبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتۡ قَالَ يٰقَوۡمِ اِنِّىۡ بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تُشۡرِكُوۡنَ ۝٧٩

अत: जब वह भी डूब गया तो उसने कहा, हे मेरी जाति ! निस्सन्देह मैं उस शिर्क से जो तुम करते हो, बहुत विरक्त हूँ ।79।

اِنِّىۡ وَجَّهۡتُ وَجۡهِىَ لِلَّذِىۡ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ حَنِيۡفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ۝٨٠ ۚ

मैं तो निश्चित रूप से अपने ध्यान को उसी की ओर सदा मायल रहते हुए फेर चुका हूँ, जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ ।80।

وَحَآجَّهٗ قَوۡمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوۡٓنِّىۡ فِى اللّٰهِ وَقَدۡ هَدٰٮنِ ؕ وَلَاۤ اَخَافُ مَا تُشۡرِكُوۡنَ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ يَّشَآءَ رَبِّىۡ شَيۡـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّىۡ كُلَّ شَىۡءٍ عِلۡمًا ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوۡنَ ۝٨١

और उसकी जाति उससे झगड़ती रही । उसने कहा, क्या तुम अल्लाह के बारे में मुझ से झगड़ते हो जबकि वह मुझे हिदायत दे चुका है और मैं उन वस्तुओं (की हानि पहुँचाने) से बिल्कुल नहीं डरता जिन्हें तुम उसका साझीदार बना रहे हो । (मैं वही चाहता हूँ) जो कुछ मेरा रब्ब चाहे । जानकारी रखने की दृष्टि से मेरा रब्ब प्रत्येक वस्तु पर हावी है । अत: क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? ।81।

وَكَيۡفَ اَخَافُ مَاۤ اَشۡرَكۡتُمۡ وَلَا تَخَافُوۡنَ اَنَّكُمۡ اَشۡرَكۡتُمۡ بِاللّٰهِ مَا لَمۡ يُنَزِّلۡ بِهٖ عَلَيۡكُمۡ سُلۡطٰنًا ؕ فَاَىُّ الۡفَرِيۡقَيۡنِ اَحَقُّ بِالۡاَمۡنِ ۚ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ۝٨٢

وقف لازم

और मैं उससे कैसे डरूँ जिसे तुम (अल्लाह का) साझीदार बना रहे हो, जबकि तुम नहीं डरते कि तुम उनको अल्लाह के साझीदार ठहरा रहे हो जिनके पक्ष में उसने तुम पर कोई युक्ति नहीं उतारी । अत: यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो (तो बताओ कि) दोनों में से कौन सा गिरोह सलामती का अधिक हक़दार है ।82।

اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَلَمۡ يَلۡبِسُوۡۤا اِيۡمَانَهُمۡ

वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान को किसी अत्याचार के

بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ
مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع

द्वारा संदिग्ध नहीं बनाया, यही वे लोग हैं जिन्हें शान्ति प्राप्त होगी और वे हिदायत प्राप्त हैं ।83। (रुकू $\frac{9}{15}$)

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى
قَوْمِهٖ ۭ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَاۗءُ ۭ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٤﴾

यह हमारी युक्ति थी जो हमने इब्राहीम को उसकी जाति के विरुद्ध प्रदान की । हम जिसको चाहते हैं दर्जों में ऊँचा कर देते हैं । निस्सन्देह तेरा रब्ब परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।84।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ كُلًّا
هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ
وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۭ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾

और उसको हमने इसहाक़ और याकूब प्रदान किए । सबको हमने हिदायत दी और उससे पूर्व नूह को हमने हिदायत दी थी और उसकी संतान में से दाऊद को और सुलैमान को और अय्यूब को और यूसुफ़ को और मूसा को और हारून को भी (हिदायत दी थी) । और इसी प्रकार हम उपकार करने वालों को प्रतिफल प्रदान किया करते हैं ।85।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ۭ كُلٌّ
مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

और ज़करिया और यह्या और ईसा और इलियास (को भी हिदायत दी)। ये सबके सब सदाचारियों में से थे ।86।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ۭ
وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

और इस्माईल को और अल्-यसअ को और यूनुस और लूत को भी । और इन सब को हमने समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की ।87।

وَمِنْ اٰبَاۗىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ
وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٨﴾

और उनके पूर्वजों में से और उनके वंशजों में से और उनके भाइयों में से (भी कुछ को श्रेष्ठता प्रदान की) और उन्हें हमने चुन लिया और सीधी राह की ओर उन्हें हिदायत दी ।88।

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٩﴾

यह है अल्लाह की हिदायत, जिसके द्वारा वह अपने भक्तों में से जिसको चाहता है पथ प्रदर्शित करता है । और यदि वे शिर्क कर बैठते तो उनके वे कर्म नष्ट हो जाते जो वे करते रहे ।89।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٩٠﴾

ये वे लोग थे जिनको हमने पुस्तक और तत्त्वज्ञान और नुबुव्वत प्रदान की । अतः यदि ये लोग उसका इनकार कर दें तो हम यह (मामला) ऐसे लोगों के सुपुर्द कर देंगे जो कदापि उसके इनकारी नहीं होंगे ।90।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ ع

यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी । अतः उनकी (उस) हिदायत का अनुसरण कर (जो अल्लाह ही ने प्रदान की थी) । तू कह दे कि मैं तुम से इसका कोई प्रतिफल नहीं माँगता यह तो समस्त लोकों के लिए एक उपदेश है ।91। (रुकू $\frac{10}{16}$)

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٢﴾

और उन्होंने अल्लाह का मान नहीं किया जैसा कि उसका मान होना चाहिए था, जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ भी नहीं उतारा । तू पूछ वह पुस्तक किसने उतारी थी जिसे रौशनी और हिदायत के रूप में मूसा लोगों के लिए लाया था । तुम उसे पन्ना पन्ना कर बैठे । (तुम) कुछ उसमें से प्रकट करते थे और बहुत कुछ छिपा जाते थे हलाँकि तुम्हें वह कुछ सिखाया गया था जो न तुम और न तुम्हारे पूर्वज जानते थे । कह दे, अल्लाह (ही मेरा सब कुछ है) फिर उन्हें अपनी लचर बातों में खेलते हुए छोड़ दे ।92।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى
وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰي صَلَاتِهِمْ
يُحَافِظُوْنَ ۝٩٣

और यह एक मंगलमय पुस्तक है जिसे हमने उतारा । (वह) उसकी पुष्टि करने वाली है जो उसके सामने है ताकि तू बस्तियों की जननी (मक्का) और उसके इर्द-गिर्द बसने वालों को सतर्क करे । और वे लोग जो परलोक पर ईमान रखते हैं वे इस (पुस्तक) पर ईमान लाते हैं और वे अपनी नमाज़ की सदा सुरक्षा करते हैं ।93।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ
وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ۭ
وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ
اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ
تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٩٤

और उससे अधिक अत्याचारी कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ घड़ा या कहा कि मेरी ओर वह्इ की गई है जबकि उसकी ओर कुछ भी वह्इ नहीं की गई । और जो यह कहे कि मैं वैसी ही वाणी उतारूँगा जैसी अल्लाह ने उतारी है । और काश ! तू देख सकता, जब अत्याचारी मृत्यु के आक्रमणों के घेरे में होंगे और फ़रिश्ते उनकी ओर अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे (और कह रहे होंगे कि) अपनी जानों को बाहर निकालो । आज के दिन तुम्हें घोर अपमानजनक अज़ाब उन बातों के कारण दिया जाएगा जो तुम अल्लाह पर अकारण कहा करते थे और उसके चिह्नों से अहंकार पूर्वक बर्ताव करते थे ।94।

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَاۗءَ
ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ

और निस्सन्देह तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ पहुँचे हो जैसा कि हमने तुम्हें पहली बार (अकेले-अकेले ही) पैदा किया था । और तुम अपनी पीठों के पीछे उन नेमतों को छोड़ आये हो जो हमने तुम्हें प्रदान की थीं । और (क्या कारण है कि) हम तुम्हारे साथ तुम्हारे

شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ۭ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝٩٥ ع ١١/١٧

उन सिफ़ारिश करने वालों को नहीं देख रहे जिन के बारे में तुम विचार करते थे कि वे तुम्हारे स्वार्थ की रक्षा करने में (अल्लाह के) समकक्ष हैं । तुम परस्पर पृथक हो चुके हो और तुम से वह खोया गया है जिसे तुम (अल्लाह का समकक्ष) समझा करते थे ।95। (रुकू $\frac{11}{17}$)

اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ۭ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝٩٦

निस्सन्देह अल्लाह बीजों और गुठलियों का फाड़ने वाला है । वह जीवित को मृतक से निकालता है और मृतक को जीवित से निकालने वाला है । यह है तुम्हारा रब्ब । फिर तुम कहाँ बहकाए जा रहे हो ।96।

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝٩٧

वह सुबहों को निकालने वाला है और उसने रात को स्थिर बनाया है । जबकि सूर्य और चन्द्रमा एक हिसाब के अनुसार परिक्रमणशील हैं । यह पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) ज्ञान वाले का (जारी किया हुआ) विधान है* ।97।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٩٨

और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उनके द्वारा स्थल और जल के अन्धकारों में हिदायत (अर्थात रास्ता) पा जाओ । हमने निश्चित रूप से उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं चिह्नों को ख़ूब खोल-खोल कर वर्णन कर दिया है ।98।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ

और वही है जिसने तुम्हें एक जान से उत्पन्न किया । फिर अस्थायी ठहरने का स्थान और स्थायी सुरक्षा का स्थान (बनाया) ।

---

* यहाँ सूर्य, चन्द्रमा के परिक्रमण के मुक़ाबले पर धरती के बदले रात के लिए **साकिन** (स्थिर) शब्द प्रयुक्त किया गया है । क्योंकि उस युग के लोग धरती को स्थिर ही समझते थे । रात्रि के लिए अरबी में प्रयुक्त **सकनन्** शब्द में यह अर्थ भी है कि वह संतोष प्राप्ति का साधन है ।

فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٩﴾

निस्सन्देह हमने चिह्नों को उन लोगों के लिए ख़ूब खोल-खोल कर वर्णन कर दिया है जो समझदारी से काम लेते हैं ।99।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾

और वही है जिसने आकाश से पानी उतारा । फिर हमने उससे प्रत्येक प्रकार का अंकुर पैदा किया । फिर हमने उसमें से एक हरियाली निकाली जिसमें से हम परत दर परत बीज निकालते हैं । और खजूर के वृक्षों में से भी उनके गुच्छों से भरपूर झुके हुए तह ब तह फल और इसी प्रकार अंगूरों के बाग़ और ज़ैतून और अनार एक दूसरे से मिलते जुलते को भी और न मिलते जुलते को भी (पैदा किया)। उनके फलों की ओर जब वह फल दें और उनके पकने की ओर ध्यान से देखो । निस्सन्देह उन सब में ईमान लाने वाले लोगों के लिए बड़े चिह्न हैं ।100।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠١﴾ ع ١٢/١٨

और उन्होंने जिन्नों को अल्लाह के साझीदार बना लिया है जबकि उसी ने उन्हें पैदा किया है । और उन्होंने बिना किसी ज्ञान के उसके लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ लिए हैं । वह पवित्र है और उससे बहुत ऊँचा है जो वे वर्णन करते हैं ।101। (रुकू $\frac{12}{18}$)

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

वह आसमानों और धरती को अनस्तित्वता से पैदा करने वाला है । उसकी कोई संतान कहाँ से हो गई जबकि उसकी कोई पत्नी ही नहीं । और उसने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है । और वह प्रत्येक वस्तु का भली-भाँति ज्ञान रखता है ।102।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٣﴾

यह है **अल्लाह** तुम्हारा रब्ब । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, प्रत्येक वस्तु का सृष्टिकर्ता है । अत: उसी की उपासना करो और वह हर चीज़ पर निरीक्षक है ।103।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٤﴾

आँखें उसको नहीं पा सकतीं, हाँ वह स्वयं आँखों तक पहुँचता है । और वह बहुत सूक्ष्मदर्शी और सदा अवगत रहने वाला है ।104।[*]

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٥﴾

निस्सन्देह तुम तक तुम्हारे रब्ब की ओर से बहुत सी ज्ञानपरक बातें पहुँच चुकी हैं । अत: जो ज्ञान प्राप्त करे तो स्वयं अपने लिए ही करेगा और जो अंधा रहे तो स्वयं अपने विरुद्ध ही अंधा रहेगा और मैं तुम पर निरीक्षक नहीं हूँ ।105।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٦﴾

और इसी प्रकार हम चिह्नों को फेर-फेर कर वर्णन करते हैं ताकि वे कह उठें कि तूने ख़ूब सीखा और ख़ूब सिखाया । और ताकि हम ज्ञानी लोगों पर इस (विषय) को ख़ूब स्पष्ट कर दें ।106।

اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٧﴾

तू उसका अनुसरण कर जो तेरे रब्ब की ओर से तेरी ओर वह्इ किया गया है । उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और शिर्क करने वालों से मुँह फेर ले ।107।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ

और यदि अल्लाह चाहता तो वे शिर्क न करते और हमने तुझे उन पर रक्षक नहीं बनाया और न ही तू उन पर

---

* जन साधारण समझते हैं कि नज़र आँख की पुतली से निकल कर दूर की वस्तुओं को देखती है। हालाँकि इस आयत में इसका स्पष्ट रूप से खंडन किया गया है और बताया गया है कि रौशनी स्वयं आँख तक पहुँचती है । और यही विषयवस्तु अल्लाह तआला के बारे में ज्ञान रखने वालों के लिए सत्य सिद्ध होती है । किसी को सामर्थ्य प्राप्त नहीं कि वह स्वयं अल्लाह तआला को अपने दिल की आँख से भी देख सके । हाँ अल्लाह तआला जब स्वयं चाहे तो अपने नेक भक्तों पर प्रकट होता है ।

بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾

निगरान है ।108।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٩﴾

और तुम उन को गालियाँ न दो जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं । अन्यथा वे शत्रुता करते हुए अज्ञानता के कारण अल्लाह को गालियाँ देंगे । इसी प्रकार हमने प्रत्येक जाति को उनके कर्म सुन्दर बना कर दिखाए हैं । फिर उनको अपने रब्ब की ओर लौट कर जाना है। तब वह उन्हें उससे सूचित करेगा जो वे किया करते थे ।109।*

وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١١٠﴾

और वे अल्लाह की पक्की क़समें खा कर कहते हैं कि यदि उनके पास एक भी चिह्न आ जाए तो वे उस पर अवश्य ईमान ले आएँगे । तू कह दे कि प्रत्येक प्रकार के चिह्न अल्लाह के पास हैं परन्तु तुम्हें क्या समझाया जाये कि जब वे (चिह्न) आते हैं, वे ईमान नहीं लाते ।110।

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١١﴾ ع ١٣/١٩

और हम उनके दिलों को और उनकी नज़रों को उलट-पुलट कर देते हैं, जैसे वे पहली बार इस (रसूल) पर ईमान नहीं लाए थे और हम उन्हें उनकी उद्दण्डताओं में भटकता छोड़ देते हैं ।111।

(रुकू $\frac{13}{19}$)

---

* इस आयत में महानतम न्याय की शिक्षा दी गई है कि अपने विरोधियों के झूठे उपास्यों को भी गालियाँ न दो क्योंकि तुम तो उन्हें झूठा जानते हो परन्तु वे नहीं जानते । इस लिये यदि उत्तर में उन्होंने अपनी अज्ञानतावश अल्लाह को गालियाँ दीं तो तुम ज़िम्मेदार होगे । फिर यह निश्चित नियम वर्णन किया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना ईमान ही अच्छा दिखाई देता है । अल्लाह तआला क़यामत के दिन निर्णय करेगा कि कौन सच्चा था और कौन झूठा । परन्तु क़यामत से पूर्व भी इस संसार में यह निर्णय हो जाता है, केवल झूठों को इसका पता नहीं लगता ।

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَاۤ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١٢﴾

और यदि हमने उनकी ओर फ़रिश्तों को उतारा होता और उनसे मुर्दे बातचीत करते और हम उनके समक्ष समस्त वस्तुओं को एकत्रित कर देते तब भी वे ऐसे न थे कि ईमान ले आते, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहता । परन्तु उनमें से अधिकतर अज्ञानता प्रकट करते हैं ।112।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٣﴾

और इसी प्रकार हमने प्रत्येक नबी के लिए जिन्न और मनुष्य रूपी शैतानों को शत्रु बना दिया । उनमें से कुछ, कुछ अन्य की ओर चापलूसी की बातें धोखा देते हुए वह्इ करते हैं । और यदि तेरा रब्ब चाहता तो वे ऐसा न करते । अतः तू उनको छोड़ दे और उसे भी जो वे झूठ गढ़ते हैं ।113।

وَلِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٤﴾

ताकि उनके दिल जो परलोक पर ईमान नहीं लाते इस (धोखे की) ओर आकर्षित हो जाएँ और वे उसे पसन्द करने लगें और (कुकर्म) करते रहें जो वे करते ही रहते हैं ।114।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٥﴾

क्या मैं अल्लाह के सिवा अन्य को न्यायकर्ता बनाना पसन्द कर लूँ । हालाँकि वह (अल्लाह) ही है जिसने तुम्हारी ओर एक ऐसी पुस्तक उतारी है जिसमें समस्त विवरण उल्लेख कर दिए गये है । और वे लोग जिनको हमने पुस्तक दी जानते हैं कि यह तेरे रब्ब की ओर से सत्य के साथ उतारी गई है । अतः तू कदापि संदेह करने वालों में से न बन ।115।

وَتَمَّتۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدۡقًا وَّعَدۡلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۱۱۶﴾

और तेरे रब्ब की बात सच्चाई और न्याय की दृष्टि से पूर्णता को पहुँची । कोई उसके वाक्यों को परिवर्तित करने वाला नहीं और वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।116।

وَاِنۡ تُطِعۡ اَكۡثَرَ مَنۡ فِى الۡاَرۡضِ يُضِلُّوۡكَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ اِنۡ يَّتَّبِعُوۡنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنۡ هُمۡ اِلَّا يَخۡرُصُوۡنَ ﴿۱۱۷﴾

और यदि तू धरती वासियों में से अधिकतर का आज्ञापालन करे तो वे तुझे अल्लाह के पथ से भटका देंगे । वे तो भ्रम के अतिरिक्त किसी बात का अनुसरण नहीं करते और वे तो केवल अटकल पच्चू से काम लेते हैं ।117।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ مَنۡ يَّضِلُّ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿۱۱۸﴾

निस्सन्देह तेरा रब्ब सबसे अधिक उसे जानता है जो उसके पथ से भटक गया है और वह हिदायत पाने वालों को भी सबसे अधिक जानता है ।118।

فَكُلُوۡا مِمَّا ذُكِرَ اسۡمُ اللّٰهِ عَلَيۡهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ بِاٰيٰتِهٖ مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۱۹﴾

अतः यदि तुम उसकी आयतों पर ईमान लाने वाले हो तो उसी में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो ।119।

وَمَا لَكُمۡ اَلَّا تَاۡكُلُوۡا مِمَّا ذُكِرَ اسۡمُ اللّٰهِ عَلَيۡهِ وَقَدۡ فَصَّلَ لَكُمۡ مَّا حَرَّمَ عَلَيۡكُمۡ اِلَّا مَا اضۡطُرِرۡتُمۡ اِلَيۡهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيۡرًا لَّيُضِلُّوۡنَ بِاَهۡوَآئِهِمۡ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُعۡتَدِيۡنَ ﴿۱۲۰﴾

और तुम्हें क्या हुआ है कि तुम उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो जबकि वह तुम्हारे लिए विस्तारपूर्वक वर्णन कर चुका है जो उसने तुम पर हराम किया है । सिवाय इसके कि तुम (असहनीय भूख से) उसकी ओर (आकर्षित होने पर) विवश कर दिए गए हो । और निस्सन्देह बहुत से ऐसे हैं जो बिना किसी ज्ञान के केवल निजी लालसाओं से (लोगों को) पथभ्रष्ट करते हैं । निस्सन्देह तेरा रब्ब सीमा से बढ़ने वालों को सबसे अधिक जानता है ।120।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢١﴾

और तुम पाप के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (दोनों रूप) को छोड़ दो । निस्सन्देह वे लोग जो पाप अर्जित करते हैं उन्हें अवश्य उसका प्रतिफल दिया जाएगा जो (कुकर्म) वे करते थे ।121।

وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢٢﴾ ع

और उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो । निस्सन्देह वह अपवित्र है और निश्चित रूप से शैतान अपने मित्रों की ओर वह्इ करते हैं ताकि वे तुमसे झगड़ा करें । और यदि तुम उनका आज्ञापालन करोगे तो तुम अवश्य मुश्रिक हो जाओगे ।122।

(रुकू $\frac{14}{1}$)

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾

और क्या वह जो मुर्दा था फिर हमने उसे जीवित किया और हमने उसके लिए वह नूर बनाया जिसके द्वारा वह लोगों के बीच फिरता है, उस व्यक्ति की भाँति हो सकता है जिसका उदाहरण यह है कि वह अन्धकारों में पड़ा हुआ हो (और) उनसे कभी निकलने वाला न हो । इसी प्रकार काफ़िरों के लिए वह कर्म सुन्दर करके दिखाया जाता है, जो वे किया करते थे ।123।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

और इसी प्रकार हमने प्रत्येक बस्ती में उसके अपराधियों के मुखिया बनाए कि वे उसमें छल और कपट करते रहें । और वे अपनी जानों के अतिरिक्त किसी से छल नहीं करते और वे समझ नहीं रखते ।124।

وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى

और जब उन के पास कोई चिह्न आता है वे कहते हैं हम कदापि ईमान नहीं लाएँगे

نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔ اَللّٰهُ اَعْلَمُ
حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ
اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ
بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾

जब तक कि हमें वैसा ही (चिह्न) न दिया जाए जैसा (पहले) अल्लाह के रसूलों को दिया गया था । अल्लाह सबसे अधिक जानता है कि अपने रसूल का चयन कहाँ से करे । जो लोग अपराध करते हैं निस्सन्देह अल्लाह के समक्ष उन्हें उनके छल कपट के कारण अपमान और एक कठोर अज़ाब भी पहुँचेगा ।125।

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ
لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ
صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى
السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۶﴾

अत: जिसे अल्लाह चाहे कि उसे हिदायत दे उसका सीना **इस्लाम** के लिए खोल देता है । और जिसे चाहे कि उसे पथभ्रष्ट ठहराए उसका सीना तंग, घुटा हुआ कर देता है, मानो वह ज़ोर लगाते हुए आकाश (की ऊँचाई) की ओर चढ़ रहा हो । इसी प्रकार अल्लाह उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते अपवित्रता डाल देता है ।126।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

और यही तेरे रब्ब का सीधा रास्ता है । निस्सन्देह हम उन लोगों के लिए जो उपदेश ग्रहण करते हैं, आयतों को भली-भाँति खोल खोल कर वर्णन कर रहे हैं ।127।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۸﴾

उनके लिए उनके रब्ब के पास शान्ति का घर है । और वह उन (पुण्य) कर्मों के कारण जो वे किया करते थे उनका मित्र हो गया है ।128।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ
قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ
اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ

और (याद रख) उस दिन जब वह उन सब को एकत्रित करेगा (और कहेगा) हे जिन्नों के समूह ! तुमने जन-साधारण का शोषण किया । और जन-साधारण में से उनके मित्र कहेंगे, हे हमारे रब्ब !

بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِىٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٩﴾

हम में से कुछ ने कुछ दूसरों से लाभ उठाया और हम अपनी इस निर्धारित घड़ी तक आ पहुँचे जो तूने हमारे लिए निश्चित की थी । वह कहेगा, तुम्हारा ठिकाना आग है (तुम) उसमें लम्बे समय तक रहने वाले होगे, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे । निस्सन्देह तेरा रब्ब परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।129।

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّىْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٣٠﴾ ع

और इसी प्रकार हम कुछ अत्याचारियों को कुछ पर उनकी उस कमाई के कारण जो वे करते हैं प्रभुत्व प्रदान कर देते हैं ।130। (रुकू $\frac{15}{2}$)

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِىْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾

हे जिन्नों और जन साधारण के समूहो ! क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए जो तुम्हारे सामने मेरी आयतें वर्णन किया करते थे और तुम्हें तुम्हारी इस दिन की भेंट से सतर्क किया करते थे ? तो वे कहेंगे कि (हाँ) हम अपनी ही जानों के विरुद्ध गवाही देते हैं । और उन्हें संसार के जीवन ने धोखा में डाल दिया था और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वे इनकार करने वाले थे* ।131।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

यह इस लिए (होगा) कि अल्लाह किसी बस्ती को अत्याचार पूर्वक तबाह नहीं करता जब कि उसके निवासी बेख़बर हों ।132।

---

* **मअशरल् जिन्न** शब्द से तात्पर्य मनुष्य से भिन्न कोई सृष्टि नहीं है बल्कि **जिन्न** और **इन्स** शब्द बड़े लोगों अथवा बड़ी जातियों और छोटे लोगों और छोटी जातियों की ओर संकेत करते हैं । यदि यह भावार्थ ठीक नहीं है तो फिर जिन्नों की ओर जो रसूल, जिन्नों में से आते थे उनकी बात मानने पर उनको स्वर्ग का शुभ-समाचार क्यों न दिया गया । क़ुर्आन की किसी आयत अथवा किसी हदीस में स्वर्ग में जिन्नों की उपस्थिति का कोई विवरण नहीं मिलता ।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٣﴾

और सबके लिए जो उन्होंने कर्म किए उनके अनुसार दर्जे हैं और तेरा रब्ब उससे बे खबर नहीं जो वे किया करते हैं ।133।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٤﴾

और तेरा रब्ब निस्पृह और दयावान है। यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और तुम्हारे बाद जिसे चाहे उत्तराधिकारी बना दे । जिस प्रकार उसने तुम्हें भी एक दूसरी जाति के वंश से उत्पन्न किया था ।134।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٥﴾

जिससे तुम्हें डराया जाता है निश्चित रूप से वह आकर रहेगा और तुम कदापि (हमें) विवश नहीं कर सकते ।135।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

तू कह दे हे मेरी जाति ! तुम अपनी जगह जो करना है करते फिरो, मैं भी करता रहूँगा । अत: तुम अवश्य जान लोगे कि घर का (सर्वोत्तम) परिणाम किसके पक्ष में होता है । निस्सन्देह अत्याचार करने वाले कभी सफल नहीं होते ।136।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٧﴾

और उन्होंने अल्लाह के लिए उसमें से जो उसी ने खेतियों और पशुओं में से पैदा किया, बस एक भाग निर्धारित कर रखा है । और वे अपनी धारणा के अनुसार कहते हैं, यह अल्लाह के लिए है और यह हमारे उपास्यों के लिए है । अत: जो उनके उपास्यों के लिए है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता । हाँ जो अल्लाह का है वह उनके उपास्यों को मिल जाता है । क्या ही बुरा है, जो वे निर्णय करते हैं ।137।

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ
وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝١٣٨

और इसी प्रकार मुश्रिकों में से एक बड़ी संख्या को उनके (कल्पित) उपास्यों ने उनकी संतान की हत्या करना सुन्दर बना कर दिखाया ताकि वे उन्हें बर्बाद करें और उन का धर्म उन पर संदिग्ध कर दें । और यदि अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते । अतः उन्हें अपनी अवस्था पर छोड़ दे और उसे भी जो वे झूठ गढ़ते हैं ।138।

وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا
يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ
وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا
يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ
سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝١٣٩

और वे अपनी सोच के अनुसार कहते हैं, ये मवेशी और खेतियाँ निषिद्ध हैं । (अर्थात्) उन्हें केवल वही खाये जिसके बारे में हम चाहें । और इसी प्रकार ऐसे चौपाय हैं जिनकी पीठें (सवारी के लिए) हराम कर दी गईं और ऐसे चौपाय भी जिन पर वे अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए उस का नाम नहीं पढ़ते । वह उन्हें अवश्य उसका दंड देगा जो वे झूठ गढ़ते हैं ।139।

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ
خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰۤى
اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ
شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ
حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝١٤٠

और वे कहते हैं जो कुछ इन चौपायों के पेटों में है यह केवल हमारे पुरुषों के लिए विशिष्ट है और हमारी पत्नियों पर हराम किया गया है । हाँ यदि वह मुर्दा हो तो उस (के लाभ) में वे सब सम्मिलित हैं । अतः वह उन्हें उनके (इस) कथन का अवश्य दंड देगा । निस्सन्देह वह परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।140।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْۤا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ

निस्सन्देह बहुत हानि उठाई उन लोगों ने जिन्होंने मूर्खता से बिना किसी ज्ञान के आधार पर अपनी संतान का वध कर

اَفْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۭ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ١٤١

दिया और उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए उसको हराम घोषित कर दिया जो अल्लाह ने उनको जीविका प्रदान की थी। निस्सन्देह ये लोग पथभ्रष्ट हुए और हिदायत पाने वाले न हुए ।141।

(रुकू $\frac{16}{3}$)

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّ غَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّ النَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ١٤٢

और वही है जिसने ऐसे बाग़ान उगाए जो सहारों के द्वारा उठाये जाते हैं और ऐसे भी जो सहारों के द्वारा उठाये नहीं जाते, और खजूर और फसलें जिनके फल भिन्न-भिन्न हैं, और ज़ैतून तथा अनार परस्पर एक मेल के हैं और बेमेल भी हैं । जब वह फलें तो उनके फल में से खाया करो और उसकी फसल प्राप्ति के दिन उसका हक़ अदा किया करो और अपव्यय से काम न लो । निस्सन्देह वह अपव्यय करने वालों को पसन्द नहीं करता ।142।

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ١٤٣

और चौपायों में से भार उठाने वाले और सवारी ढ़ोने वाले (पैदा किए) । उसमें से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है और शैतान के पद्चिह्नों का अनुसरण न करो । निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ।143।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ١٤٤

(अल्लाह ने) आठ जोड़े बनाए हैं । भेड़ों में से दो और बकरियों में से दो । तू पूछ, क्या (उनमें से) दो नर उस (अल्लाह) ने हराम किए हैं अथवा दो मादाएँ, या वह जिन पर आधारित उन दो मादाओं का गर्भ है ? मुझे किसी ज्ञान के आधार पर बताओ, यदि तुम सच्चे हो ।144।

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ
آٰلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا
اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ
كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ ع ١٧

और ऊँटों में से भी दो और गाय बैल में से भी दो हैं। पूछ कि क्या दो नर उसने हराम किए हैं अथवा दो मादाएँ अथवा वह जिन पर उन दो मादाओं के गर्भ आधारित हैं ? क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसकी ताकीद की थी ? अतः उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े ताकि बिना किसी ज्ञान के लोगों को पथभ्रष्ट कर दे। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचार करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता।145।

(रुकू $\frac{17}{4}$)

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِىْ مَآ اُوْحِىَ اِلَىَّ مُحَرَّمًا عَلٰى
طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً
اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ
رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٦﴾

तू कह दे कि मैं उस वह्इ में जो मेरी ओर की गई है किसी खाने वाले पर वह भोजन हराम घोषित किया हुआ नहीं पाता जो वह खाता है। सिवाय इसके कि मुरदार हो अथवा बहाया हुआ ख़ून अथवा सूअर का माँस। अतः वह तो हर हाल में अपवित्र है। अथवा ऐसी भ्रष्ट चीज़ जो अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर ज़िबह् की गई हो। परन्तु जो भूख से विवश कर दिया गया हो जबकि वह इच्छा न रखता हो और न ही सीमा का उल्लंघन करने वाला हो तो निस्सन्देह तेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला (और) बार बार दया करने वाला है।146।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ
وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ

जो यहूदी हुए उन लोगों पर हमने प्रत्येक नाख़ुन वाला पशु हराम कर दिया था और गायों में से और भेड़ बकरियों में से

شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٧﴾

उनकी चर्बियाँ उन पर हराम कर दी थीं। सिवाय इसके जो उनकी रीढ़ की हड्डी पर चढ़ी हुई हो अथवा अंतड़ियों के साथ लगी हो अथवा हड्डी के साथ मिली जुली हो । हमने उन्हें उनके विद्रोह का यह प्रतिफल दिया और हम निस्सन्देह सच्चे हैं ।147।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾

अत: यदि वे तुझे झुठला दें तो कह दे कि तुम्हारा रब्ब बहुत अपार कृपाशील है जबकि उसका अज़ाब अपराधी लोगों से टाला नहीं जा सकता ।148।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿١٤٩﴾

और वे लोग जिन्होंने शिर्क किया वे अवश्य कहेंगे, यदि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते और न हमारे पूर्वज और न ही हम किसी चीज़ को हराम ठहराते । इसी प्रकार उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे यहाँ तक कि उन्होंने हमारे अज़ाब को चख लिया। तू पूछ कि क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है तो उसे हमारे सामने निकालो तो सही । तुम तो भ्रम के अतिरिक्त और किसी चीज़ का अनुसरण नहीं करते और तुम तो केवल अटकल पच्चू करते हो*।149।

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ

तू कह दे कि पूर्णता को प्राप्त युक्ति तो अल्लाह ही की है । अत: यदि वह

---

* इस आयत में पहले तो यह सैद्धांतिक प्रश्न उठाया गया है कि यह कहना कि यदि अल्लाह तआला हमें शिर्क की अनुमति न देता तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा ऐसा करते । बाप-दादा के वर्णन के साथ ही यह समस्या हल हो जाती है कि वे बाप-दादों का अनुसरण कर रहे हैं । अन्यथा अल्लाह तआला ने शिर्क की कोई शिक्षा नहीं दी । इसके तुरन्त बाद कहा कि यदि शिर्क से सम्बन्धित तुम्हारे पास कोई ईश्वरीय पुस्तक है जिसमें इसका वर्णन मिलता हो तो लाकर दिखाओ ।

لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٥٠﴾

चाहता तो तुम सब को अवश्य हिदायत दे देता ।150।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥١﴾ ع

तू कह दे, तुम अपने उन गवाहों को बुलाओ तो सही जो यह गवाही देते हैं कि अल्लाह ने इन चीज़ों को हराम कर दिया है । अतः यदि वे गवाही दें तो तू कदापि उनके साथ गवाही न दे और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न कर जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया और जो परलोक पर ईमान नहीं लाते और वे अपने रब्ब का साझीदार ठहराते हैं ।151। (रुकू $\frac{18}{5}$)

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥٢﴾

तू कह दे, आओ मैं पढ़कर सुनाऊँ जो तुम्हारे रब्ब ने तुम पर हराम कर दिया है (अर्थात्) यह कि किसी चीज़ को उसका साझीदार न ठहराओ और (आवश्यक कर दिया है कि) माता-पिता के साथ भलाई के साथ पेश आओ और जीविका की तंगी के भय से अपनी संतान का वध न करो । हम ही तुम्हें जीविका प्रदान करते हैं और उनको भी । और तुम अश्लीलताओं के जो उन में प्रकट हों और जो उनके अन्दर छुपी हुई हों (दोनों के) समीप न फटको और न्यायोचित ढंग के सिवा किसी ऐसी जान की हत्या न करो जिसे अल्लाह ने प्रतिष्ठा प्रदान की है । यही है जिसकी वह तुम्हें सख़्त ताकीद करता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो* ।152।

* **संतान का वध** वास्तव में जीविका की कमी के डर से बच्चे पैदा न करने पर कहा गया है । अन्यथा चिकित्सा संबन्धी मजबूरियों के आधार पर गर्भनिरोध वैध है ।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٣﴾

और सिवाए ऐसे ढंग के जो बहुत अच्छा हो, अनाथ के धन के निकट न जाओ यहाँ तक कि वे अपनी परिपक्व आयु को पहुँच जाएँ और माप और तौल को न्याय के साथ पूरे किया करो। हम किसी जान पर उसके सामर्थ्य से बढ़ कर ज़िम्मेदारी नहीं डालते । और जब भी तुम कोई बात करो तो न्याय से काम लो चाहे कोई निकट संबंधी ही (क्यों न) हो और अल्लाह के (साथ किए गए) वचन को पूरा करो । यह वह विषय है जिसकी वह तुम्हें सख्त ताकीद करता है ताकि तुम उपदेश ग्रहण करो ।153।

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٤﴾

और यह (भी ताकीद करता है) कि यही मेरा सीधा रास्ता है । अतः इसका अनुसरण करो और विभिन्न रास्तों का अनुसरण न करो अन्यथा वह तुम्हें उसके रास्ते से हटा देंगे । यह है वह, जिसकी वह तुम्हें ताकीदी नसीहत करता है ताकि तुम तक़वा अपनाओ ।154।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٥﴾

फिर मूसा को भी हमने पुस्तक दी जो प्रत्येक उस व्यक्ति की आवश्यकता पर पूरी उतरती थी जो उपकार पूर्वक काम लेता, और प्रत्येक विषय की व्याख्या पर आधारित थी और हिदायत थी और करुणा थी । ताकि वे अपने रब्ब से भेंट करने पर ईमान ले आएँ ।155।

(रुकू $\frac{19}{6}$)

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ

और यह बहुत मंगलमय पुस्तक है जिसे हमने उतारा है । अतः इसका अनुसरण

وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۙ﴿۱۵۶﴾

करो और तक़्वा अपनाओ ताकि तुम पर दया की जाये ।156।

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى
طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ
دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۙ﴿۱۵۷﴾

ताकि तुम यह न कह दो कि हमसे पहले बस दो बड़े गिरोहों पर पुस्तक उतारी गई । जबकि हम उनके पढ़ने से बिल्कुल अनजान रहे ।157।

اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ
لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ
بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ
عَنْهَا ؕ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ
اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

अथवा यह कह दो कि यदि हम पर पुस्तक उतारी जाती तो अवश्य हम उन की तुलना में अधिक हिदायत पर होते। अत: (अब तो) तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक खुली-खुली दलील आ चुकी है और हिदायत भी और दया भी । अत: उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे मुँह फेर ले । हम उन लोगों को जो हमारे चिह्नों से मुँह फेरते हैं अवश्य एक कठोर अज़ाब के (रूप में) प्रतिफल देंगे क्योंकि वे विमुख हो गये थे ।158।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ
يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ
يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا
اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ
كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا
اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

क्या वे इसके सिवा भी कोई प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ अथवा तेरा रब्ब आ जाए या तेरे रब्ब के कुछ चिह्न आएँ । (परन्तु) उस दिन जब तेरे रब्ब के कुछ चिह्न प्रकट होंगे किसी ऐसी जान को उसका ईमान लाभ नहीं देगा जो इससे पहले ईमान न लाई हो अथवा अपने ईमान की अवस्था में कोई नेकी न अर्जित की हो । तू कह दे कि प्रतीक्षा करो निस्सन्देह हम भी प्रतीक्षा करने वाले हैं ।159।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ۭ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٦٠﴾

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने अपने धर्म को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और गिरोह दर गिरोह हो गये, तेरा उनसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं । उनका मामला अल्लाह ही के हाथ में है । फिर वह उनको उसकी सूचना देगा जो वे किया करते थे ।160।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾

जो नेकी करे तो उसके लिए उसका दस गुना प्रतिफल है और जो बुराई करे तो उसे उसके बराबर ही प्रतिफल दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।161।

قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦٢﴾

तू कह दे कि निस्सन्देह मेरे रब्ब ने मुझे सन्मार्ग की ओर हिदायत दी है (जिसे) एक क़ायम रहने वाला धर्म, सत्यनिष्ठ इब्राहीम का धर्म (बनाया है) और वह कदापि मुश्रिकों में से नहीं था ।162।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٣﴾

तू कह दे कि मेरी उपासना और मेरी क़ुर्बानियाँ और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह ही के लिए है, जो समस्त लोकों का रब्ब है ।163।

لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٤﴾

उसका कोई समकक्ष नहीं और इसी का मुझे आदेश दिया गया है और मैं मुसलमानों में सर्वप्रथम हूँ ।164।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۭ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى

तू (उनसे) कह दे कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी को अपना रब्ब पसन्द कर लूँ ? जबकि वही है जो प्रत्येक वस्तु का रब्ब है । और कोई जान (बुराई) नहीं कमाती परन्तु अपने ही विरुद्ध और कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरी का बोझ

رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٥﴾

नहीं उठाती । फिर तुम्हारे रब्ब ही की ओर तुम्हारा लौट कर जाना है । अतः वह तुम्हें उस की जानकारी देगा जिस के सम्बन्ध में तुम परस्पर मतभेद किया करते थे ।165।

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ
وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ
لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۗ اِنَّ رَبَّكَ
سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٦﴾ ع

और वही है जिसने तुम्हें धरती का उत्तराधिकारी बना दिया और तुम में से कुछ को कुछ पर दर्जों में ऊँचाई प्रदान की ताकि वह तुम्हें उन चीज़ों से जो उसने तुम्हें प्रदान की हैं परीक्षा ले । निस्सन्देह तेरा रब्ब बदला देने में बहुत तेज़ है और निस्सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला है ।166। (रुकू $\frac{20}{7}$)

7- सूर: अल-आ'राफ़

यह सूर: कुछ आयतों को छोड़कर मक्का में अवतरित हुई थी । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 207 आयतें हैं ।

इससे पहले दो सूरतों अर्थात सूर: अल-बक़र: एवं सूर: आले-इम्रान का आरम्भ मुक़त्तआत-ए-क़ुर्आन* **अलिफ़-लाम-मीम** से हुआ था । इस सूर: में **अलिफ़-लाम-मीम** के साथ **साद** भी है जिससे ज्ञात होता है कि जो विषयवस्तु पहली सूरतों में गुज़र चुके हैं उन के साथ कुछ और विषयों की वृद्धि होने वाली है जो अल्लाह के **सादिक** (सत्यवादी) होने से सम्बन्ध रखते हैं ।

इस सूर: में **साद** से सत्यवादी होने का भाव भी लिया जाता है । परन्तु आयत सं. 3 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र हृदय का वर्णन अरबी शब्द **सद्र** के रूप में मिलता है जिससे ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को **अलिफ़-लाम-मीम** से आरम्भ होने वाली सूरतों के विषयवस्तुओं और उनके अल्लाह तआला की ओर से होने पर पूर्ण विश्वास था ।

इस सूर: में पहली सूरतों से एक अतिरिक्त विषय यह वर्णन हुआ है कि केवल वे लोग ही नहीं पूछे जाएँगे जो नबियों का इनकार करते हैं, बल्कि नबी भी पूछे जाएँगे कि उन्होंने किस सीमा तक अपने उत्तरदायित्व को पूरा किया ।

इस सूर: में हज़रत आदम अलै. का फिर से वर्णन किया गया है जो अल्लाह तआला के आदेश से पैदा किये गये और जब उनमें अल्लाह तआला ने अपनी रूह (आत्मा) फूँकी, तो फिर मानव जाति को उनके आज्ञापालन का आदेश दिया । यहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वर्णन इन अर्थों में है कि अल्लाह तआला के समक्ष सबसे महान सजद: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया था और इसी सम्बन्ध से समस्त मानव जाति को आप सल्ल. के आज्ञापालन का आदेश दिया गया । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस सजद: का वर्णन पिछली सूर: के अन्तिम भाग पर इन शब्दों में मिलता है :- **तू कह दे कि मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानियाँ और मेरा जीवन मरण अल्लाह ही के लिए है; जो समस्त लोकों का रब्ब है ।** अत: जिसका सब कुछ अल्लाह तआला के लिए समर्पित हो जाए उसके समक्ष

---

* मुक़त्तआत के अर्थ छाँटे और तराशे हुए के हैं, यह ऐसे खण्डाक्षरों को कहा जाता है जो क़ुरआन मजीद की कुछ सूरतों के आरम्भ में आए हैं । जैसे अलिफ, लाम, मीम, साद इत्यादि । इन में से प्रत्येक अक्षर एक एक शब्द का संक्षिप्त रूप होता है । इन खण्डाक्षरों के द्वारा सूरतों में वर्णित अल्लाह के गुणों की ओर संकेत होता है ।

झुकना कोई शिर्क़ नहीं बल्कि उसका आज्ञापालन वस्तुत: अल्लाह का आज्ञापालन करना होगा ।

इसके पश्चात् उस वस्त्र का वर्णन है जिसे पत्तों के रूप में आदम अलै. ने ओढ़ा था परन्तु इससे तात्पर्य तक़वा रूपी वस्त्र के अतिरिक्त और कोई वस्त्र नहीं था । इसी प्रकार मानवजाति को चेतावनी दी गई है कि जिस प्रकार एक बार शैतान ने आदम अलै. की जाति को फुसलाया था वह आज भी उसी प्रकार नबियों के अनुयायियों को फुसला रहा है । स्वर्ग से निकलने का वास्तविक अर्थ शरीअत के घेरे से बाहर निकलने का है, क्योंकि शरीअत के घेरे में ही स्वर्ग है और इससे बाहर नरक के अतिरिक्त कुछ नहीं । आज भी क़ुर्आन करीम की शरीअत के घेरे से बाहर निकलने के फलस्वरूप समस्त मानव जाति को प्रत्येक प्रकार के भौतिक और आध्यात्मिक नरक में डाल दिया गया है । इसी विषय को कि 'सुन्दरता वास्तव में तक़वा की सुन्दरता है' इस आयत में वर्णन किया गया कि मस्जिद में जाने से तुमको तब तक कोई शोभा नहीं मिलेगी जब तक तुम अपनी सुन्दरता अर्थात तक़वा को साथ ले कर नहीं जाओगे ।

इस सूर: में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर्वोच्च पद का वर्णन मिलता है जो किसी और नबी को प्राप्त नहीं हुआ । अर्थात् आप सल्ल. और आप के सहाबा रजि. को स्वर्ग निवासियों का ऐसा ज्ञान प्राप्त हुआ था कि वे अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता के द्वारा क़यामत के दिन प्रत्येक आत्मा को पहचान लेंगे कि वह स्वर्गगामी आत्मा है अथवा नरकगामी ।

इसके पश्चात् इस सूर: में पिछले कई नबियों का वर्णन है जो अपनी जातियों के पथप्रर्दशन के लिए ही भेजे गए थे और उन्होंने अपनी अपनी जातियों के लिए अपार त्याग दे कर उनकी हिदायत के उपाय किए थे । परन्तु उन समस्त नबियों से बढ़ कर हिदायत का उपाय करने वाले नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे ।

इसके पश्चात् विस्तार से इस बात का वर्णन किया गया कि पिछले नबी भी बड़े-बड़े आध्यात्मिक पदों पर आसीन थे । परन्तु उनका उपकार सीमित था और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले कोई विश्वव्यापी स्तर पर भलाई पहुँचाने वाला नहीं आया । अत: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सब नबियों के सरदार के रूप में इस लिए निर्वाचित किया गया कि आप सल्ल. समग्र विश्व के लिए साक्षात दया और कृपा थे । अर्थात पूर्व और पश्चिम के लिए भी कृपा स्वरूप थे तथा अरब और अरब से भिन्न लोगों के लिए भी कृपा स्वरूप थे । मनुष्यों के लिए भी कृपा स्वरूप थे और जानवरों के लिए भी कृपा स्वरूप थे । यह वह विषय है जिसका वर्णन हदीस के ग्रन्थों में अधिकता पूर्वक मिलता है ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा जो क़यामत होने वाली थी, इसमें से पहली क़यामत तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में ही घटित हो गई थी जिसका वर्णन आयत **निश्चित घड़ी आ गई है और चाँद फट गया।** (सूरः अल-क़मर : 2) में मिलता है। दूसरी क़यामत अंत्ययुगीनों में (अर्थात इमाम महदी के समय) होने वाली थी कि वे मुर्दे जो जीवित किए जाने के पश्चात् फिर मुर्दे बन गए, उनको नए सिरे से जीवित किया जाना था। फिर एक वह भी क़यामत है जो दुष्ट लोगों पर आनी थी। यह सभी क़यामतें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के साथ गहरा सम्बन्ध रखती हैं।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَتَانِ وَ سَبْعُ اٰيَاتٍ وَّ اَرْبَعَةٌ وَّ عِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार बार दया करने वाला है ।1।

الٓمّٓصٓ ۝٢

अनल्लाहु आ'लमु, सादिकुल क़ौलि : मैं अल्लाह सब से अधिक जानने वाला हूँ, बात का सच्चा हूँ ।2।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣

(यह) एक महान पुस्तक है जो तेरी ओर उतारी गई है । अतः तेरे सीने में इससे कोई तंगी का आभास न हो कि तू इसके द्वारा (लोगों को) सतर्क करे । और मोमिनों के लिए यह एक बड़ा उपदेश है ।3।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٤

उसका अनुसरण करो जो तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है और उसे छोड़ कर दूसरे संरक्षकों का अनुसरण न करो । तुम बहुत कम उपदेश ग्रहण करते हो ।4।

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ۝٥

और कितनी ही बस्तियाँ हैं कि उन्हें हमने नष्ट कर दिया । अतः उन पर हमारा अज़ाब रात को (सोते समय) आया अथवा जब वे दोपहर के समय आराम कर रहे थे ।5।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٦

जब उनके पास हमारा अज़ाब आया तो फिर उनकी पुकार इसके अतिरिक्त कुछ न थी कि निस्संदेह हम ही अत्याचार करने वाले थे ।6।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧

अतः हम अवश्य उनसे पूछेंगे जिनकी ओर रसूल भेजे गए थे । और हम रसूलों से भी अवश्य पूछेंगे ।7।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ۝٨

और हम उन के समक्ष ज्ञान के आधार पर ऐतिहासिक घटनाएँ पढ़ेंगे और हम कभी भी अनुपस्थित नहीं रहे ।8।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٩

और सत्य ही उस दिन भारी सिद्ध होगा। अत: वे जिनके पलड़े भारी होंगे वही सफल होने वाले हैं ।9।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝١٠

और जिनके पलड़े हल्के होंगे तो उन्हीं लोगों ने अपने आप को घाटे में डाला । इस कारण कि वे हमारी आयतों के साथ अन्याय किया करते थे ।10।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝١١ ع

और निस्सन्देह हमने तुम्हें धरती में दृढ़ता प्रदान की और तुम्हारे लिए उसमें जीविका के साधन बनाए । पर तुम बहुत कम कृतज्ञता प्रकट करते हो ।11।

(रुकू $\frac{1}{8}$)

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝١٢

और निस्सन्देह हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें आकृतियों में ढाला। फिर हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के लिए सजद: करो तो इब्लीस के अतिरिक्त उन सबने सजद: किया । वह सजद: करने वालों में से न बना ।12।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝١٣

उस (अल्लाह) ने कहा तुझे सजद: करने से किस ने रोका ? जबकि मैं ने तुझे आदेश दिया था । उसने कहा कि मैं उससे श्रेष्ठ हूँ । तूने मुझे तो अग्नि से पैदा किया है और उसे गीली मिट्टी से पैदा किया है ।13।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ

उसने कहा अत: तू इस (स्थान) से निकल जा । तुझे इसमें अहंकार

تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝١٤

करने का सामर्थ्य न होगा । अतः निकल जा, निस्सन्देह तू नीच लोगों में से है ।14।

قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٥

उसने कहा, मुझे उस दिन तक ढील प्रदान कर जब वे उठाए जएँगे ।15।

قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝١٦

उसने कहा, तू अवश्य ढील दिए जाने वालों में से है ।16।

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝١٧

उसने कहा कि तूने मुझे पथभ्रष्ट घोषित किया है, इसलिए मैं अवश्य उनकी घात में तेरे सन्मार्ग पर बैठूँगा ।17।*

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝١٨

फिर मैं अवश्य उन तक उनके सामने से भी और उनके पीछे से भी और उनके दाईं ओर से भी और उनकी बाईं ओर से भी आऊँगा । और तू उनमें से अधिकांश को कृतज्ञ नहीं पाएगा ।18।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝١٩

उसने कहा, तू यहाँ से निन्दित और तिरस्कृत होकर निकल जा । उनमें से जो भी तेरा अनुसरण करेगा मैं निस्सन्देह तुम सब से नरक को भर दूँगा ।19।

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٢٠

और हे आदम ! तू और तेरी पत्नी स्वर्ग में निवास करो और दोनों जहाँ से चाहो खाओ । हाँ तुम दोनों इस वृक्ष के निकट न जाना, अन्यथा तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे ।20।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَاوٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا

फिर शैतान ने उनके मन में दुविधा डाली ताकि वह उनकी ऐसी दुर्बलताओं में से कुछ को उन पर प्रकट कर दे जो उनसे छुपाई गई थीं । और उसने कहा कि तुम्हें

---

* जब तक अल्लाह तआला की विशेष सुरक्षा न हो सन्माार्ग पर चलने वाले भी शैतान के बहकावे से सुरक्षित नहीं होते । क़ुर्आन करीम ने जिनके सम्बन्ध में प्रकोपग्रस्त और पथभ्रष्ट कहा है, वे सन्मार्ग पर ही चलने वाले थे, परन्तु भटक गए ।

نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢١﴾

तुम्हारे रब्ब ने इस वृक्ष से केवल इस लिए रोका कि कहीं तुम दोनों फ़रिश्ते ही न बन जाओ अथवा अमर न हो जाओ ।21।

وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٢﴾

और उसने उन दोनों से क़सम खा कर कहा कि निस्सन्देह मैं तुम दोनों के पक्ष में केवल (नेक) नसीहत करने वालों में से हूँ ।22।

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۭ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٣﴾

अत: उसने उन्हें एक बड़े धोखे से बहका दिया । फिर जब उन दोनों ने उस वृक्ष को चखा तो उनकी दुर्बलताएँ उन पर प्रकट हो गईं और वे दोनों स्वर्ग के पत्तों में से कुछ अपने ऊपर ओढ़ने लगे । और उनके रब्ब ने उनको आवाज़ दी कि क्या मैंने तुम्हें उस वृक्ष से मना नहीं किया था और तुमसे यह नहीं कहा था कि निस्सन्देह शैतान तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ? ।23।

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

उन दोनों ने कहा कि हे हमारे रब्ब ! हमने अपनी जानों पर अत्याचार किया है। और यदि तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न की तो निस्सन्देह हम घाटा पाने वालों में से हो जाएँगे ।24।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾

उसने कहा कि तुम सब (यहाँ से) इस दशा में निकल जाओ कि तुम में से कुछ, कुछ के शत्रु होंगे । और तुम्हारे लिए धरती में कुछ समय का निवास और कुछ समय के लिए मामूली लाभ उठाना (तय) है ।25।

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٦﴾ ع

उसने कहा तुम उसी में जिओगे और उसी में मरोगे और उसी में से तुम निकाले जाओगे ।26। (रुकू $\frac{2}{9}$)

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۭ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۭ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝٢٧

हे आदम की संतान ! निस्सन्देह हमने तुम पर वस्त्र उतारा है जो तुम्हारी दुर्बलताओं को ढाँपता है और शोभा स्वरूप है। और रहा तक़वा का वस्त्र तो वह सबसे उत्तम है । ये अल्लाह की आयतों में से कुछ हैं ताकि वे उपदेश ग्रहण करें ।27।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٢٨

हे आदम की संतान ! शैतान कदापि तुम्हें भी परीक्षा में न डाले जैसे उसने तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकलवा दिया था। उसने उनसे उनके वस्त्र छीन लिए ताकि उनकी बुराइयाँ उनको दिखाए । निस्सन्देह वह और उसके गिरोह तुम्हें देख रहे हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। निस्सन्देह हम ने शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया है जो ईमान नहीं लाते ।28।

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَاۗءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٢٩

और जब वे कोई अश्लील बात करें तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को इसी पर पाया और अल्लाह ही ने हमें इसका आदेश दिया है । तू कह दे निस्सन्देह अल्लाह अश्लीलता का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह पर वह बातें कहते हो जो तुम नहीं जानते ? ।29।

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۣ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڛ كَمَا بَدَاَكُمْ

तू कह दे कि मेरे रब्ब ने न्याय का आदेश दिया है । और यह (आदेश दिया है) कि तुम प्रत्येक मस्जिद में अपना ध्यान (अल्लाह की ओर) लगाए रखो । और धर्म को उसके लिए विशिष्ट करते हुए उसी को पुकारा करो। जिस प्रकार उसने तुम्हें पहली

تَعُوْدُوْنَ ۝٣٠

बार पैदा किया उसी प्रकार तुम (मृत्यु के बाद) लौटोगे ।30।

فَرِيْقًا هَدٰى وَ فَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٣١

एक गुट को उसने हिदायत प्रदान की और एक गुट के लिए पथभ्रष्टता अनिवार्य हो गई । निस्सन्देह ये वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को मित्र बना लिया और यह विचार करते हैं कि वे हिदायत प्राप्त हैं ।31।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٣٢ ع

हे आदम की संतान ! प्रत्येक मस्जिद में अपनी शोभा (अर्थात् तक़वा का वस्त्र) साथ ले जाया करो । और खाओ और पिओ परन्तु सीमा का उल्लंघन न करो । निस्सन्देह वह सीमा का उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता ।32। (रुकू $\frac{3}{10}$)

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٣٣

तू पूछ कि अल्लाह की (उत्पन्न की हुई) सुन्दरता को किसने हराम किया है जो उसने अपने भक्तों के लिए निकाली है । और जीविका में से पवित्र चीज़ों को भी । तू कह दे कि ये इस संसार के जीवन में भी उनके लिए हैं जो ईमान लाए (और) क़यामत के दिन तो विशेष कर (बिना किसी की साझेदारी के केवल उन्हीं के लिए होंगी) । इसी प्रकार हम चिह्नों को खोल-खोल कर ऐसे लोगों के लिए वर्णन करते हैं जो ज्ञान रखते हैं ।33।

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ

तू कह दे कि मेरे रब्ब ने केवल अश्लीलता की बातों को हराम घोषित

مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

किया है, उसे भी जो उसमें से प्रकट हो और उसे भी जो गुप्त हो । इसी प्रकार पाप और अनैतिक विद्रोह को भी और इस बात को भी कि तुम उसको अल्लाह का साझीदार ठहराओ जिसके पक्ष में उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा । और यह (भी) कि तुम अल्लाह की ओर ऐसी बातें आरोपित करो जिनका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है ।34।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٥﴾

और प्रत्येक समुदाय के लिए एक समय निर्धारित है । अत: जब उनका निर्धारित समय आ जाए तो एक पल भी न वे उससे पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं ।35।

يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي ۙ فَمَنِ اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٦﴾

हे आदम की संतान ! यदि तुम्हारे पास तुम में से रसूल आएँ जो तुम्हारे समक्ष मेरी आयतें पढ़ते हों तो जो भी तक़वा धारण करे और (अपना) सुधार करे तो उन लोगों को कोई भय नहीं होगा और वे दु:खी नहीं होंगे ।36।*

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٧﴾

और वे लोग जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठला दिया और उनसे अहंकार पूर्वक व्यवहार किया, वही लोग आग वाले हैं। वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।37।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ

अत: उससे अधिक अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े अथवा उसके चिह्नों को झुठलाए । यही वे लोग हैं जिन्हें भाग्य के लेखों में से उनका

* यह आदम के वंशज के लिए सार्वजनिक उद्‌बोधन है कि जब भी उनके पास रसूल आएँ और अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाएँ तो वे उनसे विमुख न हों ।

مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْۤا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۳۸﴾

(निश्चित) भाग मिलेगा यहाँ तक कि जब हमारे दूत उन्हें मृत्यु देते हुए उनके पास पहुँचेगे तो वे उन्हें कहेंगे कि कहाँ हैं वे, जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते रहे हो । (उत्तर में) वे कहेंगे, वे सब हमसे खो गए । और वे (स्वयं) अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वे काफ़िर थे ।38।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ۬ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾

(तब) वह (उनसे) कहेगा कि उन जातियों के साथ जो जिन्नों और मनुष्यों में से तुम से पहले गुज़र गई हैं, तुम भी अग्नि में प्रविष्ट हो जाओ । जब भी कोई जाति (उसमें) प्रवेश करेगी वह अपने जैसे चाल-चलन वाली जाति पर ला’नत डालेगी । यहाँ तक कि जब वे सब के सब उसमें एकत्रित हो जाएँगे तो उनमें से बाद में आने वाली (जाति) अपने से पहली के बारे में कहेगी, हे हमारे रब्ब ! यही वे लोग हैं जिन्होंने हमें पथभ्रष्ट किया । अत: उनको आग का दुगना अज़ाब दे । वह कहेगा कि प्रत्येक को दुगना (अज़ाब) ही मिल रहा है परन्तु तुम जानते नहीं ।39।

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۴۰﴾ ع

और उनमें से पहला (समुदाय) दूसरे से कहेगा तुम्हें हम पर कोई श्रेष्ठता नहीं थी । अत: जो तुम अर्जित किया करते थे उसके कारण अज़ाब चखो ।40। (रुकू $\frac{4}{11}$)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया और उनसे अहंकार किया, उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले

الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾

जाएँगे और वे स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं होंगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके से निकल जाए । और इसी प्रकार हम अपराधियों को प्रतिफल दिया करते हैं ।41।

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾

उनके लिए नरक में तैयार की हुई एक जगह होगी और उनके ऊपर परत दर परत (अन्धकार के) पर्दे होंगे । और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिफल दिया करते हैं ।42।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٣﴾

और वे लोग जो ईमान लाए और सत्-कर्म किए हम (उन में से) किसी पर उसके सामर्थ्य से बढ़ कर बोझ नहीं डालेंगे । यही वे लोग हैं जो स्वर्गगामी हैं वे उसमें सदैव रहने वाले हैं ।43।

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٤﴾

और हम उनके सीनों से द्वेषभाव को खींच निकालेंगे । उनके नियंत्रणाधीन नहरें बहती होंगी । और वे कहेंगे कि समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए है जिस ने हमें यहाँ पहुँचने का मार्ग दिखाया । जबकि हम कभी हिदायत पा नहीं सकते थे यदि अल्लाह हमें हिदायत प्रदान न करता । निस्सन्देह हमारे पास हमारे रब्ब के रसूल सत्य के साथ आए थे । और उन्हें आवाज़ दी जाएगी कि जो तुम कर्म करते थे उसके फलस्वरूप यह वह स्वर्ग है जिसका तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया गया है ।44।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ

और स्वर्गवासी अग्नि (नरक) वासियों को आवाज़ देंगे कि हमने उस वायदा को जो हमारे रब्ब ने हमसे किया था सत्य पाया है तो क्या तुमने भी उस वायदा को

وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٥﴾

सत्य पाया जो तुम्हारे रब्ब ने (तुम से) किया था । वे कहेंगे हाँ, तब एक घोषणा करने वाला उनके मध्य घोषणा करेगा कि अत्याचारियों पर अल्लाह की ला'नत हो ।45।

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٦﴾

वقف لازم

जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसे टेढ़ा (देखना) चाहते हैं और वे परलोक का इनकार करने वाले हैं ।46।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۟ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٧﴾

और उनके मध्य पर्दा पड़ा होगा और ऊँचे स्थानों पर ऐसे पुरुष होंगे जो सबको उनके लक्षणों से पहचान लेंगे और वे स्वर्ग वासियों को आवाज़ देंगे कि तुम पर सलाम हो, जबकि अभी वे उस (स्वर्ग) में प्रविष्ट नहीं हुए होंगे और (उसकी) इच्छा रख रहे होंगे ।47।

وَ اِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٨﴾ ع

और जब उनकी नज़रें अग्नि गामियों की ओर फेरी जाएँगी तो वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! हमें अत्याचारी लोगों में से न बनाना ।48। (रुकू $\frac{5}{12}$)

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

और ऊँची जगहों वाले ऐसे लोगों से सम्बोधित होंगे जिनको वे उनके लक्षणों से पहचान लेंगे । और कहेंगे तुम्हारा समूह और जो तुम अहंकार किया करते थे, तुम्हारे काम न आ सके ।49।

اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ

क्या यही वे लोग हैं कि जिनके बारे में तुम क़समें खाया करते थे कि अल्लाह उन पर दया नहीं करेगा । (फिर स्वर्गगामियों से कहा जाएगा, हे मोमिनो!) स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ ।

عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝٥٠

तुम पर कोई भय नहीं होगा और न तुम
कभी दु:खी होगे ।50।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ
اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ
قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥١

और अग्निगामी, स्वर्गवासियों को
आवाज़ देंगे कि उस पानी में से या
उस जीविका में से जो अल्लाह ने तुम्हें
प्रदान किया है हमें भी कुछ प्रदान
करो । वे उत्तर देंगे निस्सन्देह अल्लाह
ने यह दोनों काफ़िरों के लिए हराम
कर दिए हैं ।51।

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّ لَعِبًا
وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ
كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝٥٢

(उन के लिए) जिन्होंने अपने धर्म को
दिल्लगी और खेल कूद बना रखा था और
उन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल
दिया । अत: आज के दिन हम भी उन्हें
उसी प्रकार भुला देंगे जैसे वे अपने इस
दिन की भेंट को भुला बैठे थे । और इस
लिए कि वे हमारी आयतों का इनकार
किया करते थे ।52।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ
هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٣

और निस्सन्देह हम उनके पास एक ऐसी
पुस्तक लाए थे जिसे हमने ज्ञान के
आधार पर विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया
था । वह उन लोगों के लिए हिदायत
और दया (स्वरूप) थी जो ईमान ले
आते हैं ।53।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ
تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ
جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ
شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ

क्या वे केवल उसके परिणाम की
प्रतीक्षा कर रहे हैं । जिस दिन उसका
परिणाम आ जाएगा तो वे लोग जो
इससे पहले उस (पुस्तक) को भुला बैठे
थे, कहेंगे कि निस्सन्देह हमारे रब्ब के
रसूल सत्य के साथ आए थे । अत: क्या
कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं जो
हमारी सिफ़ारिश करें या फिर हमें

غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٤﴾

वापिस लौटा दिया जाए तो हम उन कर्मों के बदले जो हम किया करते थे कुछ और कर्म करेंगे। निस्सन्देह उन्होंने अपने आप को घाटे में डाल दिया। और जो भी वे झूठ गढ़ा करते थे, (वह) उनसे खोया गया।54। (रुकू $\frac{6}{13}$)

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٥﴾

निस्सन्देह तुम्हारा रब्ब वह अल्लाह है जिसने आसमानों और धरती को छः दिनों में पैदा किया, फिर वह अर्श पर विराजमान हो गया। वह रात के द्वारा दिन को ढाँप देता है जबकि वह उसे शीघ्रता पूर्वक चाह रहा होता है। और सूर्य और चन्द्रमा और सितारे (पैदा किए) जो उसके आदेश से काम पर लगाए गए हैं। सावधान! पैदा करना और शासन चलाना भी उसी का काम है। बस एक वही अल्लाह बरकत वाला सिद्ध हुआ जो समस्त लोकों का रब्ब है।55।*

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

अपने रब्ब को विनम्रता पूर्वक और अप्रकाश्य रूप से पुकारते रहो। निस्सन्देह वह सीमा का उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता।56।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

और धरती में उसके सुधार के बाद उपद्रव न फैलाओ और उसे भय और अभिलाषा रखते हुए पुकारते रहो। निस्सन्देह अल्लाह की दया उपकार करने वालों के निकट रहती है।57।

---

* छः दिनों से अभिप्राय छः युग हैं और एक युग करोड़ों वर्ष का भी हो सकता है। अर्श पर विराजमान होने से भाव यह है कि सब कुछ सृष्टि करने के पश्चात् अल्लाह तआला अपनी सृष्टि से सम्बन्ध नहीं तोड़ता बल्कि जिस प्रकार एक शासक प्रजा की निगरानी करता है, इसी प्रकार अल्लाह अपनी समस्त सृष्टि की निगरानी करता है

وَهُوَ الَّذِىۡ يُرۡسِلُ الرِّيٰحَ بُشۡرًاۢ بَيۡنَ يَدَىۡ رَحۡمَتِهٖؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتۡ سَحَابًا ثِقَالًا سُقۡنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنۡزَلۡنَا بِهِ الۡمَآءَ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِؕ كَذٰلِكَ نُخۡرِجُ الۡمَوۡتٰى لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ﴿۵۸﴾

और वही है जो अपनी कृपा (वृष्टि) के आगे आगे हवाओं को शुभ-समाचार देते हुए भेजता है । यहाँ तक कि जब वे भारी बादल उठा लेती हैं तो हम उसे एक मृत भू-भाग की ओर हाँक कर ले जाते हैं । फिर उससे हम पानी उतारते हैं और उस (पानी) से प्रत्येक प्रकार के फल उगाते हैं । इसी प्रकार हम मुर्दों को (जीवित करके) निकालते हैं ताकि तुम उपदेश ग्रहण करो ।58।

وَالۡبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخۡرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذۡنِ رَبِّهٖۚ وَالَّذِىۡ خَبُثَ لَا يَخۡرُجُ اِلَّا نَكِدًاؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّشۡكُرُوۡنَ ﴿۵۹﴾ ع

और पवित्र भू-भाग (वह होता है) जिसकी हरियाली उसके रब्ब के आदेश से (पवित्र ही) निकलती है और जो अपवित्र हो (उसमें से) बेकार चीज़ों के सिवा कुछ नहीं निकलता । इसी प्रकार हम चिह्नों को उन लोगों के लिए फेर-फेर कर वर्णन करते हैं जो कृतज्ञता प्रकट किया करते हैं ।59। (रुकू $\frac{7}{14}$)

لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا اِلٰى قَوۡمِهٖ فَقَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَـكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗؕ اِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۶۰﴾

निस्सन्देह हमने नूह को भी उसकी जाति की ओर भेजा था । अत: उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो। उसके सिवा तुम्हारा और कोई उपास्य नहीं । निस्संदेह मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ ।60।

قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِهٖۤ اِنَّا لَـنَرٰٮكَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۶۱﴾

उसकी जाति के सरदारों ने कहा, हम तो तुझे निश्चित रूप से एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा हुआ देखते हैं ।61।

قَالَ يٰقَوۡمِ لَيۡسَ بِىۡ ضَلٰلَةٌ وَّلٰـكِنِّىۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۶۲﴾

उसने कहा, हे मेरी जाति ! मैं किसी पथभ्रष्टता में पड़ा नहीं हूँ बल्कि मैं तो समस्त लोकों के रब्ब की ओर से एक रसूल हूँ ।62।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦٣

मैं तुम्हें अपने रब्ब के संदेश पहुँचाता हूँ और तुम्हें उपदेश देता हूँ और मैं अल्लाह से वह ज्ञान प्राप्त करता हूँ जो तुम नहीं जानते ।63।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٦٤

क्या तुमने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक अनुस्मारक-ग्रन्थ आया है जो तुम ही में से एक पुरुष पर उतरा है ताकि वह तुम्हें सतर्क करे । और ताकि तुम तक़वा धारण करो और ताकि संभवतः तुम पर दया की जाए ।64।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ۝٦٥

अतः उन्होंने उसे झुठला दिया और हमने उसे और उनको जो नौका में उसके साथ (सवार) थे, मुक्ति प्रदान की । और उन्हें डुबो दिया जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया था । निस्सन्देह वे अंधे लोग थे ।65। (रुकू $\frac{8}{15}$)

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٦٦

और आद (जाति) की ओर उनके भाई हूद को (हमने भेजा) । उसने कहा, कि हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो । उसके सिवा तुम्हारा और कोई उपास्य नहीं । क्या तुम तक़वा धारण नहीं करोगे ? ।66।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٦٧

उसकी जाति में से उन सरदारों ने जिन्होंने कुफ़्र किया था कहा, निस्सन्देह हम तुझे एक बड़ी मूर्खता में पड़े देखते हैं और हम समझते हैं कि तू अवश्य झूठे लोगों में से है ।67।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦٨

उसने कहा, हे मेरी जाति ! मुझ में कोई मूर्खता नहीं बल्कि मैं तो समस्त लोकों के रब्ब की ओर से एक रसूल हूँ ।68।

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ۝٦٩

मैं तुम्हें अपने रब्ब के संदेश पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारे लिए एक विश्वस्त उपदेश देने वाला हूँ ।69।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِى الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٧٠

क्या तुमने आश्चर्य व्यक्त किया है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक अनुस्मारक-ग्रन्थ आया है जो तुम ही में से एक पुरुष पर अवतरित हुआ है ताकि वह तुम्हें सतर्क करे ? और याद करो जब उसने नूह की जाति के बाद तुम्हें उत्तराधिकारी बना दिया था और तुम्हें वंशवृद्धि के द्वारा बहुत बढ़ाया । अत: अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि तुम सफलता पा जाओ ।70।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧١

उन्होंने कहा क्या तू इस कारण हमारे पास आया है कि हम केवल एक अल्लाह ही की उपासना करें और उनको छोड़ दें जिनकी हमारे पूर्वज उपासना किया करते थे । अत: यदि तू सच्चों में से है तो हमारे पास उसे ले आ जिससे तू हमें डराता है ।71।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِىْ فِىْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝٧٢

उसने कहा, तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम पर अपवित्रता और प्रकोप अनिवार्य हो चुके हैं । क्या तुम मुझ से ऐसे नामों के विषय में झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने गढ़ लिए हैं जबकि अल्लाह ने उनके पक्ष में कोई प्रमाण नहीं उतारा । अत: प्रतीक्षा करो । निस्सन्देह मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ ।72।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

अत: हमने उसे अपनी कृपा से मुक्ति प्रदान की और उनको भी जो उसके साथ

وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٣﴾ ع

थे और हमने उन लोगों की जड़ काट डाली जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया था और वे (किसी प्रकार) ईमान लाने वाले नहीं थे ।73। (रुकू $\frac{9}{16}$)

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٤﴾

और समूद (जाति) की ओर उनके भाई सालेह को (भेजा) । उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो । तुम्हारे लिए उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । निस्संदेह तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक उज्ज्वल प्रमाण आ चुका है । यह अल्लाह की ऊंटनी है, जो तुम्हारे लिए एक चिह्न है, अतः इसे छोड़ दो कि यह अल्लाह की धरती में खाती फिरे और इसे कोई कष्ट न पहुँचाओ । अन्यथा इसके परिणाम स्वरूप तुम्हें पीड़ाजनक अज़ाब पकड़ लेगा ।74।*

وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٥﴾

और (उस समय को) याद करो जब उसने तुम को आद (जाति) के बाद उत्तराधिकारी बनाया और धरती में तुम्हें आबाद किया । तुम उसके मैदानों में दुर्गों का निर्माण करते हो और घर बनाने के लिए पहाड़ तराशते हो । अतः अल्लाह की नेमतों को याद करो और उपद्रवी बनते हुए धरती में तोड़फोड़ न करो ।75।

* **नाक़तुल्लाह** (अल्लाह की ऊंटनी) से तात्पर्य हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की वह ऊँटनी है जिस पर सवार हो कर वह लोगों को अपना संदेश पहुँचाया करते थे । जब कुछ दुष्ट सरदारों ने उस ऊँटनी की कूँचें काट दीं और उनके संदेश प्रसारण का साधन समाप्त कर दिया तो उसके परिणामस्वरूप अज़ाब के पात्र हो गए । कहा जाता है कि नौ सरदार थे जिन्होंने इस बात पर सहमति बनाई थी ।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝٧٦

उसकी जाति में से उन सरदारों ने जिन्होंने अहंकार किया था, उन लोगों को जो निर्बल समझे जाते थे अर्थात उनको जो उनमें से ईमान लाए थे कहा, क्या तुम ज्ञान रखते हो कि सालेह अपने रब्ब की ओर से पैग़म्बर बनाया गया है। उन्होंने उत्तर दिया कि वह जिस (संदेश) के साथ भेजा गया है हम उस पर अवश्य ईमान लाते हैं ।76।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا بِالَّذِيْۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝٧٧

उन लोगों ने जिन्होंने अहंकार किया था, कहा कि जिस पर तुम ईमान लाते हो निस्सन्देह हम उसका इनकार करने वाले हैं ।77।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧٨

अतः उन्होंने ऊंटनी की कूँचें काट दीं और अपने रब्ब के आदेश की अवज्ञा की। और कहा, हे सालेह ! यदि तू वास्तव में (अल्लाह का) भेजा हुआ है तो हमारे पास उसे ले आ जिसका तू हमें डरावा देता है ।78।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝٧٩

अतः उन्हें एक प्रबल भूकम्प ने आ पकड़ा । अतः वे अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए ।79।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٨٠

अतः उसने उनसे मुख मोड़ लिया और कहा, हे मेरी जाति ! निस्सन्देह मैं तुम्हें अपने रब्ब का संदेश पहुँचा चुका हूँ और तुम्हें उपदेश दे चुका हूँ । परन्तु तुम उपदेश देने वालों को पसन्द नहीं करते ।80।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ

और लूत को (भी भेजा) जब उसने अपनी जाति से कहा, क्या तुम ऐसी अश्लीलता करते हो जैसी तुम से

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨١

पहले समस्त जगत में किसी ने नहीं की ।81।

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝٨٢

निस्सन्देह तुम काम-वासना के लिए स्त्रियों को छोड़ कर पुरुषों के पास आते हो । बल्कि तुम सीमा उल्लंघनकारी लोग हो ।82।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٨٣

और उसकी जाति का इसके सिवा कोई उत्तर न था कि उन्होंने कहा, इनको अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो । निस्सन्देह ये वे लोग हैं जो बहुत पवित्र बनते हैं ।83।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٨٤

अतः हमने उसे और उसके परिवार को मुक्ति प्रदान की सिवाय उसकी पत्नी के, वह पीछे रहने वालों में से हो गई ।84।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٨٥ ع

और हमने उन पर एक प्रकार की बारिश बरसाई । अतः देख कि अपराधियों का कैसा अंत होता है ? ।85।

(रुकू $\frac{10}{17}$)

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨٦

और मद्‌यन (जाति) की ओर उनके भाई शुऐब को (भेजा) । उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो उसके सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं । निस्सन्देह तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से खुली-खुली निशानी आ चुकी है। अतः नाप और तौल पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो । और धरती में उसके सुधार के पश्चात उपद्रव न फैलाया करो । यदि तुम ईमान लाने वाले होते तो यह तुम्हारे लिए अच्छा होता ।86।

وَلَا تَقۡعُدُوۡا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوۡعِدُوۡنَ وَتَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ مَنۡ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذۡكُرُوۡۤا اِذۡ كُنۡتُمۡ قَلِيۡلًا فَكَثَّرَكُمۡ ۖ وَانۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝٨٧

और प्रत्येक मुख्यमार्ग पर उस व्यक्ति को धमकाते हुए और अल्लाह के मार्ग से रोकते हुए न बैठा करो जो उस पर ईमान लाया है, जबकि तुम उस (मार्ग) को टेढ़ा (देखना) चाहते हो । और याद करो जब तुम बहुत थोड़े थे फिर उसने तुम्हारी संख्या वृद्धि कर दी । और विचार करो कि उपद्रव मचाने वालों का अंत कैसा था ? ।87।

وَاِنۡ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنۡكُمۡ اٰمَنُوۡا بِالَّذِىۡۤ اُرۡسِلۡتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمۡ يُؤۡمِنُوۡا فَاصۡبِرُوۡا حَتّٰى يَحۡكُمَ اللّٰهُ بَيۡنَنَا ۚ وَهُوَ خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ۝٨٨

और यदि तुम में से एक गिरोह उस हिदायत पर ईमान ले आया है जिसे दे कर मुझे भिजवाया गया । और एक गिरोह ऐसा है जो ईमान नहीं लाया, तो धैर्य रखो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे और वह निर्णय करने वालों में सबसे अच्छा है ।88।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٩﴾

उसकी जाति के उन सरदारों ने जिन्होंने अहंकार किया था कहा, हे शुऐब ! हम अवश्य तुझे अपनी बस्ती से निकाल देंगे और उन लोगों को भी जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अथवा तुम अवश्य हमारे धर्म में वापस आ जाओगे । उसने कहा, क्या तब भी जब कि हम अत्यन्त घृणा कर रहे हों ? ।89।

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٩٠﴾

यदि हम इसके बाद भी तुम्हारे धर्म में लौट आएँ जब कि अल्लाह हमें उससे मुक्ति प्रदान कर चुका है तब निस्सन्देह हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे । और हमारे लिए कदापि संभव नहीं कि हम उसमें वापस आएँ सिवाए इसके कि हमारा रब्ब अल्लाह ऐसा चाहे । हमारा रब्ब ज्ञान की दृष्टि से प्रत्येक वस्तु पर हावी है । अल्लाह पर ही हम भरोसा करते हैं । हे हमारे रब्ब ! हमारे और हमारी जाति के बीच सत्य के साथ निर्णय कर दे । और तू निर्णय करने वालों में सर्वोत्तम है ।90।

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩١﴾

और उसकी जाति के उन सरदारों ने जिन्होंने इनकार किया, कहा कि यदि तुमने शुऐब का अनुसरण किया तो तुम निस्सन्देह हानि उठाने वाले होगे ।91।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٢﴾

तो उन्हें (भी) एक प्रबल भूकम्प ने आ पकड़ा । अत: वे अपने घरों में औंधे मुँह जा गिरे ।92।

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۛۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا

वे लोग जिन्होंने शुऐब को झुठलाया मानो वे कभी उस (धरती) में बसे ही न थे । जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया

هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٣﴾

वही हानि उठाने वाले थे ।93।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٤﴾ ع

अत: उसने उनसे मुख मोड़ लिया और कहा, हे मेरी जाति ! निस्सन्देह मैं तुम्हें अपने रब्ब के सभी संदेश भली भाँति पहुँचा चुका हूँ और तुम्हें उपदेश दे चुका हूँ । अत: मैं इनकार करने वाले लोगों पर कैसे खेद प्रकट करूँ ? ।94।

(रुकू $\frac{11}{1}$)

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٥﴾

और हमने किसी बस्ती में जब भी कोई नबी भेजा, उसके रहनेवालों को कभी तंगी और कभी पीड़ा के द्वारा पकड़ लिया ताकि वे गिड़गिड़ाएँ ।95।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٦﴾

फिर हमने बुरी हालत को अच्छी हालत से बदल दिया । यहाँ तक कि उन्होंने (उसे) अनदेखा कर दिया और कहने लगे कि (पहले भी) हमारे पूर्वजों को कष्ट और आराम पहुँचा करता था । अत: हमने उनको सहसा पकड़ लिया जबकि वे कुछ समझ नहीं पाये थे ।96।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٧﴾

और यदि बस्तियों वाले ईमान ले आते और तक़वा धारण करते तो हम अवश्य उन पर आसमान से भी और धरती से भी बरकतों के द्वार खोल देते । परन्तु उन्होंने झुठला दिया । अत: हमने उनको उसकी दण्ड के रूप में जो वे कमाई किया करते थे पकड़ लिया ।97।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا

तो क्या बस्तियों के रहने वाले इस बात से सुरक्षित हैं कि हमारा अज़ाब उनको

بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝٩٨

रात्रि के समय पकड़ ले जबकि वे सोए हुए हों ।98।

اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٩٩

और क्या बस्तियों वाले इस बात से सुरक्षित हैं कि हमारा अज़ाब उन्हें ऐसे समय आ पकड़े कि (जब) दिन चढ़ आया हो और वे खेल कूद में व्यस्त हों ।99।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝١٠٠

अतः क्या वे अल्लाह की योजना से सुरक्षित हैं । अतः अल्लाह की योजना से सिवाय हानि उठाने वाले लोगों के कोई सुरक्षित बोध नहीं करता ।100।

(रुकू $\frac{12}{2}$)

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝١٠١

और जिन्होंने धरती को उसमें बसने वालों के पश्चात् उत्तराधिकार में प्राप्त किया, क्या उन लोगों को यह बात हिदायत न दे सकी कि यदि हम चाहें तो उन्हें उनके पापों के परिणाम स्वरूप दंड दें और उनके दिलों पर मुहर कर दें। फिर वे कुछ सुन (और समझ) न सकें ।101।

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٠٢

ये वे बस्तियाँ हैं जिनके समाचारों में से कुछ हम तेरे सामने वर्णन करते हैं । और निस्सन्देह उनके पास उनके रसूल खुले खुले चिह्न ले कर आए थे । परन्तु वे इस योग्य नहीं बन पाए कि उन पर ईमान लाएँ, क्योंकि वे इससे पहले (भी रसूलों को) झुठला चुके थे । इसी प्रकार अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है ।102।

وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ

और हमने उनमें से अधिकांश को किसी प्रतिज्ञा की रक्षा करते नहीं देखा और

وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٣﴾

निस्सन्देह हमने उनमें से अधिकांश को दुराचारी पाया ।103।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٤﴾

फिर उनके बाद हमने मूसा को अपने चिह्नों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर भेजा तो उन्होंने उन (चिह्नों) के साथ अन्याय किया । अतः देख कि उपद्रवियों का अंत कैसा था ।104।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٥﴾

और मूसा ने कहा, हे फ़िरऔन ! निस्सन्देह मैं समस्त लोकों के रब्ब की ओर से एक रसूल हूँ ।105।

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٦﴾

मुझ पर अनिवार्य है कि अल्लाह के बारे में सत्य के अतिरिक्त कुछ न कहूँ । निस्सन्देह मैं तुम्हारे रब्ब की ओर से एक उज्ज्वल चिह्न ले कर आया हूँ । अतः तू मेरे सथ बनी-इस्राईल को भेज दे ।106।

قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٧﴾

उसने कहा, यदि तू एक भी चिह्न लाया है तो उसे पेश कर यदि तू सच्चों में से है ।107।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٨﴾

तब उसने अपनी लाठी फेंकी तो सहसा वह स्पष्ट दिखाई देने वाला अजगर बन गया ।108।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٩﴾

और उसने अपना हाथ निकाला तो सहसा वह देखने वालों को सफ़ेद दिखाई देने लगा ।109।* (रुकू 13/3)

* आयत 108-109 में वर्णित दो चिह्न उन नौ चिह्नों में से हैं जो हज़रत मूसा व हारून अलै. को अल्लाह तआला की ओर से प्राप्त हुए थे । अन्य आयतों से पता चलता है कि निश्चित रूप से लाठी साँप नहीं बनी थी बल्कि देखने वालों की दृष्टि अल्लाह तआला के चमत्कार के फलस्वरूप लाठी को सँप देख रही थी । यही हाल हाथ का भी था कि हज़रत मूसा अलै. के हाथ का रंग वही था जो उसका प्राकृतिक रूप से था परन्तु चिह्न स्वरूप देखने वालों को दमकता हुआ दिखाई दिया ।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾

फ़िरऔन की जाति के सरदारों ने कहा, निस्सन्देह यह एक कुशल जादूगर है ।110।

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दे । (इस पर फ़िरऔन बोला) तो फिर तुम क्या परामर्श देते हो ? ।111।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

उन्होंने कहा कि इसे और इसके भाई को कुछ ढील दे और विभिन्न शहरों में एकत्र करने वालों को भेज दे ।112।

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿۱۱۳﴾

वे तेरे पास हर एक प्रकार के कुशल जादूगर ले आएँ ।113।

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

और फ़िरऔन के पास जादूगर आए और उन्होंने कहा, यदि हम ही विजयी हो गए तो निश्चित रूप से हमारे लिए कोई बड़ा प्रतिफल होगा ।114।

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

उसने कहा, हाँ ! अवश्य तुम निकटस्थों में भी हो जाओगे ।115।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِىَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿۱۱۶﴾

उन्होंने कहा, हे मूसा ! या तो तू (पहले) फेंक अथवा हम (पहले) फेंकने वाले बनें ।116।

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۱۷﴾

उसने कहा तुम फेंको । अतः जब उन्होंने फेंका तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें बहुत डरा दिया । और वे एक बहुत बड़ा जादू लाए ।117।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

और हमने मूसा की ओर वह्इ की कि तू अपनी लाठी फेंक । अतः सहसा वह उस झूठ को निगलने लगा जो वे गढ़ रहे थे ।118।*

* आयत सं. 117-118 में अरबी शब्द **सिह्र** (जादू) की वास्तविकता स्पष्ट कर दी गई है । **सहरू अ'युनन्नासि** (लोगों की आँखों पर जादू कर दिया) कह कर बताया गया है कि उन की आँखों→

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٩﴾

अतः सत्य सिद्ध हो गया और जो कुछ वे करते थे झूठ निकला ।119।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١٢٠﴾

इस प्रकार वे पराजित कर दिए गए और अपमानित हो कर लौटे ।120।

وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢١﴾

और जादूगर सजदः की अवस्था में गिरा दिए गए ।121।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

उन्होंने कहा, हम समस्त लोकों के रब्ब पर ईमान ले आए हैं ।122।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

जो मूसा और हारून का भी रब्ब है ।123।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٤﴾

फ़िरऔन ने कहा, क्या तुम इस पर ईमान ले आए हो इसके पूर्व कि मैं तुम्हें आज्ञा देता । निस्सन्देह यह एक षड्यन्त्र है जो तुमने नगर में रचा है ताकि उसके निवासियों को उसमें से निकाल ले जाओ । अतः शीघ्र ही तुम जान लोगे ।124।

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٥﴾

मैं अवश्य तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा फिर अवश्य तुम सब को इकट्ठा सूली पर चढ़ा दूँगा ।125।

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٦﴾

उन्होंने कहा, निस्सन्देह हम अपने रब्ब ही की ओर लौट कर जाने वाले हैं ।126।

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا

और तू हम पर केवल यही व्यंग कसता है कि हम अपने रब्ब के निशानों पर

←पर एक प्रकार का सम्मोहन सा हो गया था जबकि उनकी रस्सियाँ उसी प्रकार रस्सियाँ ही थीं। हज़रत मूसा अलै. पर भी उसका प्रभाव था, परन्तु जब अल्लाह तआला ने लाठी फेंकने का आदेश दिया तो सहसा उन जादूगरों का जादू टूट गया और देखने वालों के मस्तिष्कों से उनका प्रभाव समाप्त हो गया ।

جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٧﴾ ع

ईमान ले आए जब वे हमारे पास आए । हे हमारे रब्ब ! हमें धैर्य प्रदान कर और हमें मुसलमान होने की अवस्था में मृत्यु दे ।127। (रुकू $\frac{14}{4}$)

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٨﴾

और फ़िरऔन की जाति के सरदारों ने कहा, क्या तू मूसा और उसकी जाति को खुला छोड़ देगा कि वे धरती में उपद्रव करते फिरें और वे तुझे और तेरे उपास्यों को भी छोड़ दें । उसने कहा, हम अवश्य निर्दयता पूर्वक उनके पुत्रों का वध करेंगे और उनकी स्त्रियों को जीवित रखेंगे और निस्सन्देह हम उनके प्रति अत्यन्त निष्ठुर हैं ।128।

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ۫ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٩﴾

मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह से सहायता चाहो और धैर्य रखो । निस्सन्देह राज्य अल्लाह ही का है, वह अपने भक्तों में से जिसे चाहेगा उसका उत्तराधिकारी बना देगा और शुभ-अंत मुत्तक़ियों का ही हुआ करता है ।129।

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٠﴾ ع

उन्होंने कहा, हमारे पास तेरे आने से पहले भी और हमारे पास तेरे आ जाने के बाद भी हमें दु:ख दिया गया । उसने कहा, संभव है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हारे शत्रुओं का विनाश कर दे और तुम्हें राज्य में उत्तराधिकारी बना दे, फिर वह देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो ।130। (रुकू $\frac{15}{5}$)

وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣١﴾

और निस्सन्देह हमने फ़िरऔन के वंशज को अकाल के द्वारा और फलों में हानि के द्वारा पकड़ लिया ताकि वे उपदेश ग्रहण करें ।131।

فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَٰذِهِۦ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُۥٓ ۗ أَلَآ إِنَّمَا طَٰٓئِرُهُمْ عِندَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾

अतः जब उनके पास कोई भलाई आती थी तो वे कहते थे, यह हमारे लिए ही है और जब उन्हें कोई संकट पहुँचता तो वे उसे मूसा और उसके साथियों का अमंगल ठहराते । सावधाान ! उनके अमंगल का आज्ञापत्र अल्लाह ही के पास है । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।132।

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِۦ مِنْ ءَايَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٣﴾

और उन्होंने कहा, तू जो भी चाहे चिह्न ले आ ताकि तू उसके द्वारा हमें सम्मोहित कर दे तब भी हम तुझ पर कदापि ईमान लाने वाले नहीं ।133।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ ءَايَٰتٍ مُّفَصَّلَٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿١٣٤﴾

अतः हमने उन पर तूफ़ान भेजा और टिड्डी दल और जूएँ और मेंढक और खून भी, (भेजा) जो पृथक-पृथक चिह्न थे । तब भी उन्होंने अहंकार किया और वे अपराधी लोग थे ।134।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يَٰمُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ ۖ لَئِن كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٣٥﴾

और जब भी उन पर अज़ाब आता वे कहते हे मूसा ! हमारे लिए अपने रब्ब से उस वादा के नाम पर जो उसने तेरे साथ किया है, दुआ कर । अतः यदि तूने हमसे यह अज़ाब टाल दिया तो हम अवश्य तेरी बात मान लेंगे और अवश्य बनी-इस्राईल को तेरे साथ भेज देंगे ।135।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ هُم بَٰلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿١٣٦﴾

अतः जब हमने उनसे अज़ाब को एक निर्धारित अवधि तक टाल दिया जिस तक उन्हें हर हाल में पहुँचना था, तो सहसा वे वचन-भंग करने लगे ।136।

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ فِى الْيَمِّ

अतः हमने उनसे प्रतिशोध लिया और उन्हें समुद्र में डुबो दिया । क्योंकि

بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٧﴾

उन्होंने हमारे चिह्नों को झुठला दिया था और वे उनसे बेपरवाह थे ।137।

وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿١٣٨﴾

और हमने उन लोगों को जो (धरती में) निर्बल समझे गए थे उस धरती के पूर्व और पश्चिम का उत्तराधिकारी बना दिया जिसे हमने बरकत दी थी । और बनी-इस्राईल के पक्ष में तेरे रब्ब की अच्छी बातें उस धैर्य के कारण पूरी हुईं जो वे किया करते थे । और जो फ़िरऔन और उसकी जाति (के लोग) बनाया करते थे और जो ऊँचे भवन वे निर्माण किया करते थे उनको हम ने नष्ट कर दिया ।138।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾

और हम बनी-इस्राईल को समुद्र के पार ले आए । फिर एक ऐसी जाति के निकट से उनका गुज़र हुआ जो अपनी मूर्तियों के समक्ष (उन की उपासना करते हुए) बैठी थी । उन्होंने कहा, हे मूसा ! हमारे लिए भी वैसा ही उपास्य बना दे जैसे उनके उपास्य हैं, उसने उत्तर दिया कि निस्संदेह तुम बड़े मूर्ख लोग हो ।139।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾

निस्सन्देह ये लोग जिस अवस्था में हैं वह नष्ट हो जाने वाली है और जो कर्म वे करते हैं वह मिथ्या है ।140।

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤١﴾

उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई उपास्य पसन्द कर सकता हूँ? जबकि वही है जिसने तुम्हें समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की है ।141।

وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ

और (याद करो) जब हमने तुम्हें फ़िरऔन की जाति से मुक्ति प्रदान की जो तुम्हें

يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۗ وَفِيْ
ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ ع

बहुत कठोर यातना देती थी । वे तुम्हारे पुत्रों की निर्दयता पूर्वक हत्या करते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और उसमें तुम्हारे रब्ब की ओर से बहुत बड़ी परीक्षा थी ।142। (रुकू $\frac{16}{6}$)

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا
بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ
وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ
فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٣﴾

और हमने मूसा के साथ तीस रातों का वादा किया और उन्हें दस (अतिरिक्त रातों) के साथ सम्पूर्ण किया । अत: उसके रब्ब की निर्धारित अवधि चालीस रातों में पूरी हुई । और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरी जाति में मेरा कार्यवाहक बन और (उनका) सुधार कर तथा उपद्रवियों के पथ का अनुसरण न कर ।143।

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ
قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۗ قَالَ لَنْ
تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ
اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا
تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ
مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ
سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٤﴾

और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर उपस्थित हुआ और उसके रब्ब ने उससे वार्तालाप किया तो उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे दिखला दे कि मैं तेरी ओर आँख भर देखूँ । उसने कहा, तू कदापि मुझे न देख सकेगा । परन्तु तू पर्वत की ओर देख, यदि यह अपने स्थान पर स्थिर रहा तो फिर तू भी मुझे देख सकेगा । अत: जब उसके रब्ब ने पर्वत पर जल्वा दिखाया तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया और मूसा मूर्छित हो कर गिर पड़ा । अत: जब वह होश में आया तो उसने कहा, पवित्र है तू । मैं तेरी ओर प्रायश्चित करते हुए आता हूँ और मैं मोमिनों में सर्वप्रथम हूँ ।144।*

* हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने सरल स्वभाव के कारण यह विचार करते थे कि यदि अल्लाह चाहे तो वह अल्लाह तआला को भौतिक आँख से भी देख सकेंगे । अत: इस माँग पर अल्लाह तआला ने→

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَ بِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

उसने कहा, हे मूसा ! निस्सन्देह मैंने तुझे अपने संदेशों और वाणी के द्वारा सब लोगों पर श्रेष्ठता प्रदान की है । अतः उसे पकड़े रख जो मैंने तुझे दिया और कृतज्ञों में से होजा ।145।

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٦﴾

और हमने उसके लिए तख्तियों में हर चीज़ लिख रखी थी (जो) उपदेश के रूप में थी और हर चीज़ की विवरण प्रस्तुत करने वाली थी । अतः दृढ़ता पूर्वक उसे पकड़ ले और अपनी जाति को आदेश दे कि इस शिक्षा के सर्वोत्तम पहलुओं को थामे रखें । मैं शीघ्र तुम्हें दुराचारियों का घर भी दिखा दूँगा ।146।

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٧﴾

मैं उन लोगों (के ध्यान) को अपनी आयतों से फेर दूँगा जो अनुचित धरती में अहंकार करते हैं । और यदि वे प्रत्येक चिह्न को भी देख लें तो उस पर ईमान नहीं लाते । और यदि वे हिदायत का मार्ग देखें तो उसे मार्ग के रूप में नहीं अपनाते । हालाँकि यदि वे पथभ्रष्टता का मार्ग देख लें तो उसे मार्ग के रूप में अपना लेते हैं । यह इस कारण है कि उन्होंने हमारे चिह्नों को झुठला दिया और वे उनसे बे-परवाह रहने वाले थे ।147।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ

और वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को और परलोक की भेंट को झुठला दिया,

---

←कहा कि मनुष्य तो बिजली की कड़क को भी सहन कर नहीं सकता तो अल्लाह तआला का चेहरा कैसे देख सकता है । अतः एक चिह्न स्वरूप जब पर्वत पर बिजली गिरी तो हज़रत मूसा मूर्छित हो गए । फिर जब होश आई तो प्रायश्चित करते हुए अल्लाह तआला की ओर झुके ।

حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٨﴾

उनके कर्म नष्ट हो गए । उन्हें अपने कर्म के सिवा अन्य कोई प्रतिफल नहीं दिया जाएगा ।148। (रुकू $\frac{17}{7}$)

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۘ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٩﴾

और मूसा की जाति ने उसके पीछे अपने आभूषणों से एक ऐसे बछड़े को (उपास्य) बना लिया जो एक (निर्जीव) शरीर था, जिससे बछड़े की सी आवाज़ निकलती थी । क्या उन्होंने विचार नहीं किया कि वह न उनसे बात करता है और न उन्हें (सीधे) मार्ग की हिदायत देता है । वे उसे पकड़ बैठे और वे अत्याचार करने वाले थे ।149।

وَلَمَّا سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِنْ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٥٠﴾

और जब वे लज्जित हो गए और उन्होंने जान लिया कि वे पथभ्रष्ट हो चुके हैं तो उन्होंने कहा, यदि हमारे रब्ब ने हम पर दया न की और हमें क्षमा न किया तो हम अवश्य हानि उठाने वालों में से हो जाएँगे ।150।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا

और जब मूसा अपनी जाती की ओर अत्यन्त क्रोधित होकर खेद प्रकट करता हुआ लौटा तो उसने कहा, मेरे पश्चात् तुम लोगों ने मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया है । क्या तुमने अपने रब्ब के आदेश के बारे में शीघ्रता से काम लिया ? और उसने तख़्तियाँ (नीचे) डाल दीं और उसने अपने भाई को अपनी ओर खींचते हुए उस के सिर को पकड़ा । उसने कहा, हे मेरी माँ के बेटे ! निस्सन्देह जाति ने मुझे विवश कर दिया और संभव था कि वे मेरा वध कर देते । अतः मुझे शत्रुओं की हंसी

تَجْعَلْنِىْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٥١

का पात्र न बना और मुझे अत्याचारियों की श्रेणी में न गिन ।151।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِاَخِىْ وَاَدْخِلْنَا فِىْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝١٥٢ ع

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरे भाई को भी क्षमा कर दे और हमें अपनी दया में प्रविष्ट कर । और तू दया करने वालों में सबसे बढ़ कर दया करने वाला है ।152। (रुकू $\frac{18}{8}$)

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ۝١٥٣

निस्सन्देह वे लोग जो बछड़े को पकड़ बैठे उन्हें अवश्य उनके रब्ब का क्रोध और भौतिक जीवन में अपमान भी पहुँचेगा । और इसी प्रकार हम झूठ गढ़ने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।153।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۡ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٥٤

और वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ कीं फिर उसके बाद प्रायश्चित कर लिया और ईमान लाए । निस्सन्देह तेरा रब्ब उसके बाद भी अत्यन्त क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।154।

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۚ وَفِىْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ۝١٥٥

और जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो उसने तख़्तियाँ पकड़ लीं और उनकी लिखितों में हिदायत और कृपा उन लोगों के लिए थी जो अपने रब्ब का भय रखते हैं ।155।

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّاىَ ۗ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۗ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ

और मूसा ने हमारे निर्धारित समय के लिए अपनी जाति के सत्तर व्यक्तियों का चयन किया । अत: जब उनको भूकम्प ने पकड़ा तो उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! यदि तू चाहता तो इससे पूर्व ही इन सब को और मुझे भी नष्ट कर देता । क्या तू उस कर्म के कारण जो हमारे मूर्खों से हो गया, हमें नष्ट कर देगा ? निस्सन्देह यह तेरी ओर से एक परीक्षा है । तू इस

وَتَهۡدِىۡ مَنۡ تَشَآءُ ؕ اَنۡتَ وَلِيُّنَا فَاغۡفِرۡ لَنَا وَارۡحَمۡنَا وَاَنۡتَ خَيۡرُ الۡغٰفِرِيۡنَ ﴿۱۵۶﴾

(परीक्षा) के द्वारा जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत प्रदान करता है । तू ही हमारा संरक्षक है । अतः हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर । और तू क्षमा करने वालों में सर्वोत्तम है ।156।

وَاكۡتُبۡ لَنَا فِىۡ هٰذِهِ الدُّنۡيَا حَسَنَةً وَّفِى الۡاٰخِرَةِ اِنَّا هُدۡنَاۤ اِلَيۡكَ ؕ قَالَ عَذَابِىۡۤ اُصِيۡبُ بِهٖ مَنۡ اَشَآءُ ۚ وَرَحۡمَتِىۡ وَسِعَتۡ كُلَّ شَىۡءٍ ؕ فَسَاَكۡتُبُهَا لِلَّذِيۡنَ يَتَّقُوۡنَ وَيُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ بِاٰيٰتِنَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۚ ﴿۱۵۷﴾

और हमारे लिए इस संसार में भी भलाई लिख दे और परलोक में भी । निस्सन्देह हम तेरी ओर (प्रायश्चित करते हुए) आ गए हैं । उसने कहा, मेरा अज़ाब वह है कि जिस पर मैं चाहूँ उसे डाल देता हूँ । और मेरी दया प्रत्येक वस्तु पर छाई है । अतः मैं उस दया को उन लोगों के लिए निश्चित कर दूँगा जो तक़्वा धारण करते हैं और ज़कात देते हैं । और वे जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं ।157।

اَلَّذِيۡنَ يَتَّبِعُوۡنَ الرَّسُوۡلَ النَّبِىَّ الۡاُمِّىَّ الَّذِىۡ يَجِدُوۡنَهٗ مَكۡتُوۡبًا عِنۡدَهُمۡ فِى التَّوۡرٰٮةِ وَالۡاِنۡجِيۡلِ يَاۡمُرُهُمۡ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَيَنۡهٰٮهُمۡ عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ الۡخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنۡهُمۡ اِصۡرَهُمۡ وَالۡاَغۡلٰلَ الَّتِىۡ كَانَتۡ عَلَيۡهِمۡ ؕ فَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِهٖ وَعَزَّرُوۡهُ وَنَصَرُوۡهُ وَاتَّبَعُوا النُّوۡرَ الَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ مَعَهٗ ۙ اُولٰۤـئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۵۸﴾ ع ١٩/٦/٩

जो इस रसूल, निरक्षर नबी पर ईमान लाते हैं जिस का (वर्णन) वे अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उनको नेक बातों का आदेश देता है और उन्हें बुरी बातों से रोकता है । और उनके लिए पवित्र चीज़ें हलाल घोषित करता है और उनपर अपवित्र चीज़ें हराम घोषित करता है । और उनसे उनके बोझ और तौक़ उतार देता है जो उन पर पड़े हुए थे । अतः वे लोग जो उस पर ईमान लाते हैं और उसे सम्मान देते हैं और उसकी सहायता करते हैं और उस नूर का अनुसरण करते हैं जो उसके साथ उतारा गया है । यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं ।158। (रुकू $\frac{19}{9}$)

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ
جَمِيْعَا ِۨالَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ الَّذِىْ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٩﴾

तू कह दे कि हे लोगो ! निस्सन्देह मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूँ जिसके अधीन आसमानों और धरती की बादशाही है । उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । वह जीवित करता है और मारता भी है । अतः अल्लाह पर और उसके रसूल, निरक्षर नबी पर ईमान ले आओ जो अल्लाह पर और उसकी बातों पर ईमान रखता है । और उसी का अनुसरण करो ताकि तुम हिदायत पा जाओ ।159।

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ
وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٦٠﴾

और मूसा की जाति में भी कुछ ऐसे लोग थे जो सच्चाई के साथ (लोगों को) हिदायत देते थे और उसी के द्वारा न्याय करते थे ।160।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَىْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ
وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اِذِ اسْتَسْقٰهُ
قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ
فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ
عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ
الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ
كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا
ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦١﴾

और हमने उनको बारह क़बीलों अर्थात जातियों में विभाजित कर दिया और जब मूसा से उसकी जाति ने पानी माँगा तो हमने उसकी ओर वह्इ की कि चट्टान पर अपनी लाठी से प्रहार कर, तो उससे बारह स्रोत फूट पड़े और सब लोगों ने अपने अपने पीने का स्थान ज्ञात कर लिया। और हमने उन पर बादलों की छाया की और उन पर मन्न और सल्वा उतारे । (और कहा कि) जो कुछ हमने तुम्हें जीविका प्रदान की है उसमें से पवित्र चीज़ें खाओ । और उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार करने वाले थे ।161।

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦٢﴾

और (याद करो) जब उनसे कहा गया कि इस बस्ती में रहो और इसमें से जहाँ से चाहो खाओ । और कहो (हे अल्लाह!) हमें क्षमा कर दे और आज्ञापालन करते हुए मुख्यद्वार में प्रवेश कर जाओ । हम तुम्हारी ग़ल्तियाँ क्षमा कर देंगे, हम उपकार करने वालों को अवश्य बढ़ाएँगे ।162।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٣﴾

तो उनमें से जिन लोगों ने अत्याचार किया, (उसे) एक ऐसे कथन से बदल दिया जो उन्हें नहीं कहा गया था । इस पर हमने उन पर उस अत्याचार के कारण जो वे किया करते थे आकाश से अज़ाब उतारा ।163। (रुकू $\frac{20}{10}$)

وَاسْأَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُم بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٤﴾

और तू उनसे उस बस्ती (वालों) के बारे में पूछ जो समुद्र के किनारे स्थित थी जब वे (बस्ती वाले) सब्त के विषय में (आदेश का) उल्लंघन किया करते थे। जब उनके पास उनके सब्त के दिन उनकी मछलियाँ झुंड के झुंड आती थीं और जिस दिन वे सब्त नहीं करते थे वे उनके पास नहीं आती थीं । वे जो कुकर्म किया करते थे उसके कारण इसी प्रकार हम उनकी परीक्षा करते रहे ।164।

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ

और (याद करो) जब उनमें से एक गिरोह ने कहा, तुम क्यों ऐसे लोगों को उपदेश देते हो जिन्हें अल्लाह नष्ट करने वाला है अथवा कठोर अज़ाब देने वाला है । उन्होंने कहा, तुम्हारे रब्ब के समक्ष दोषमुक्त होने के लिए (हम ऐसा करते

وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٥﴾

हैं) और इस उद्देश्य से कि संभवतः वे तक़्वा धारण करें ।165।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٔيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٦﴾

अतः जब उन्होंने उसे भुला दिया जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी तो हमने उनको बचा लिया जो बुराई से रोका करते थे । और जिन्होंने अत्याचार किया उनके कुकर्मों के कारण उन लोगों को एक कठोर अज़ाब में जकड़ लिया ।166।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿١٦٧﴾

जब फिर भी उन्होंने इस विषय में अवज्ञा की, जिससे उनको रोका गया था तो हमने उन्हें कहा तुम नीच बन्दर बन जाओ ।167।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ښ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٨﴾

और (याद करो) जब तेरे रब्ब ने यह सार्वजनिक घोषणा की कि वह अवश्य उन पर क़यामत तक ऐसे लोग नियुक्त करता रहेगा जो उन्हें कठोर अज़ाब देते रहेंगे। निस्सन्देह तेरा रब्ब दंड देने में बहुत तेज़ है । हालाँकि वह निश्चय ही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।168।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۡ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٩﴾

और हमने उन्हें धरती पर विभिन्न जातियों में विभाजित कर दिया । उनमें नेक लोग भी थे और उन्हीं में इस से भिन्न भी थे । और हमने उनकी अच्छी और बुरी दशा से परीक्षा ली ताकि वे (हिदायत की ओर) लौट आएँ ।169।

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى

अतः उनके पश्चात ऐसे उत्तराधिकारियों ने उनका प्रतिनिधित्व किया जिन्होंने पुस्तक को उत्तराधिकार में पाया । वे इस संसार के अस्थायी लाभ

وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷۰﴾

को पकड़ बैठे । और कहते थे, हमें क्षमा कर दिया जाएगा । यदि इसी प्रकार का धन उनके पास आता वे उसे ले लेते थे । क्या उनसे पुस्तक की प्रतिज्ञा नहीं ली गई थी जो उन पर अनिवार्य थी, कि वे अल्लाह के बारे में सत्य के अतिरिक्त कोई बात नहीं कहेंगे । और जो उस में था वे उसे पढ़ चुके थे । और उन लोगों के लिए जो तक़वा धारण करते हैं परलोक का घर उत्तम है । अत: क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लोगे ? ।170।

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۱﴾

और वे लोग जो पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ लेते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं, हम निस्सन्देह सुधार करने वालों के प्रतिफल को नष्ट नहीं किया करते ।171।

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۲﴾ ع

और (याद करो) जब हमने पर्वत को उन पर ऊँचा किया, मानो वह एक सायबान था और उन्होंने सोचा कि वह उन पर गिरने ही वाला है । (हे इस्राईल के वंशज !) जो हमने तुम्हें प्रदान किया है उसे दृढ़ता से पकड़ लो और जो उसमें है (उसे) याद रखो ताकि तुम मुत्तक़ी बन जाओ ।172।* (रुकू $\frac{21}{11}$)

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى

और (याद करो) जब तेरे रब्ब ने आदम की संतान की पीठों से उनकी पीढ़ियों (की सृष्टि के मूल-तत्त्व) को ग्रहण

---

* यहाँ पर्वत के उन पर ऊँचा करने का कदापि यह अर्थ नहीं कि पर्वत उखड़ कर उनके सिरों पर तन गया था । कई पर्वत इतने अधिक सड़क पर झुके हुए होते हैं कि मनुष्य उस सड़क से गुज़रते हुए उनकी छावों के नीचे आ जाता है । इस जगह भी यही भाव है । परन्तु उस समय उन पर जो भय की अवस्था छाई थी उसको उनके हित में प्रयोग करते हुए अल्लाह तआला ने उनको दृढ़ता के साथ तौरात की शिक्षा को पकड़ने का निर्देश दिया ।

اَنۡفُسِهِمۡ اَلَسۡتُ بِرَبِّكُمۡ قَالُوۡا بَلٰى شَهِدۡنَا اَنۡ تَقُوۡلُوۡا يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنۡ هٰذَا غٰفِلِيۡنَ ﴿١٧٣﴾

किया और स्वयं उन्हें अपने अस्तित्व पर साक्षी बना दिया। (और पूछा) कि क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं हूँ ? उन्होंने कहा, क्यों नहीं ! हम गवाही देते हैं। ऐसा न हो कि तुम क़यामत के दिन यह कहो कि हम तो इससे अनजान थे।173।*

اَوۡ تَقُوۡلُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَشۡرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنۡ قَبۡلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنۡۢ بَعۡدِهِمۡ اَفَتُهۡلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الۡمُبۡطِلُوۡنَ ﴿١٧٤﴾

अथवा तुम कह दो कि शिर्क तो पहले हमारे पूर्वजों ने ही किया था और हम तो उनके बाद आने वाली पीढ़ी हैं। तो क्या झूठे लोगों ने जो किया उसके कारण तू हमें नष्ट कर देगा ? ।174।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ﴿١٧٥﴾

और इसी प्रकार हम आयतों को ख़ूब खोल-खोल कर वर्णन करते हैं ताकि संभवत: वे (सत्य की ओर) लौट आएँ ।175।

وَاتۡلُ عَلَيۡهِمۡ نَبَاَ الَّذِيۡۤ اٰتَيۡنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانۡسَلَخَ مِنۡهَا فَاَتۡبَعَهُ الشَّيۡطٰنُ فَكَانَ مِنَ الۡغٰوِيۡنَ ﴿١٧٦﴾

और तू उन्हें उस व्यक्ति की घटना पढ़ (कर सुना) जिसे हमने अपनी आयतें प्रदान की थीं। अत: वह उनसे बाहर निकल गया। फिर शैतान ने उसका पीछा किया और वह पथभ्रष्टों में से हो गया ।176।

وَلَوۡ شِئۡنَا لَرَفَعۡنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗۤ اَخۡلَدَ اِلَى الۡاَرۡضِ وَاتَّبَعَ هَوٰٮهُ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الۡكَلۡبِ اِنۡ تَحۡمِلۡ عَلَيۡهِ يَلۡهَثۡ اَوۡ

और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) के द्वारा अवश्य उसका उत्थान करते परन्तु वह धरती की ओर झुक गया और अपनी वासना का अनुसरण किया। अत: उसका उदाहरण कुत्ते के समान है कि यदि तू उस

* जब आदम की संतान से उनके जन्म से भी पूर्व उनकी संतान के सम्बन्ध में आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह तआला के अस्तित्व पर साक्षी रहें। जो संतान अभी पैदा भी नहीं हुई उससे किस प्रकार वचन लिया जा सकता था ? इससे केवल यही तात्पर्य निकलता है कि मनुष्य के स्वभाव में ही अल्लाह तआला के अस्तित्व पर ईमान लाना शामिल है। अत: समस्त संसार में अल्लाह तआला की जो कल्पना पाई जाती है यह आकस्मिक घटना नहीं है। बल्कि इसे मनुष्य के स्वभाव में ही अंकित कर दिया गया है।

تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

पर हाथ उठाए तो हाँफते हुए जीभ निकाल देगा और यदि उसे छोड़ दे तब भी हाँफते हुए जीभ निकाल देगा । यह उन लोगों का उदाहरण है जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया । अत: तू (इनके सामने) यह (ऐतिहासिक) घटनाएँ पढ़ कर सुना ताकि वे सोच-विचार करें ।177।*

سَآءَ مَثَلَا ۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۸﴾

उन लोगों का उदाहरण बहुत बुरा है जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया । और वे अपनी ही जानों पर अत्याचार किया करते थे ।178।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

जिसे अल्लाह हिदायत प्रदान करे तो वही हिदायत प्राप्त किया हुआ होता है और जिन्से वह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो यही हैं वे जो घाटा उठाने वाले हैं ।179।

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾

और निस्सन्देह हमने नरक के लिए जिन्नों और मनुष्यों में से एक बड़ी संख्या को उत्पन्न किया है । उनके दिल ऐसे हैं जिनसे वे समझते नहीं और उनकी आँखें ऐसी हैं कि जिनसे वे देखते नहीं और उनके कान ऐसे हैं जिनसे वे सुनते नहीं । ये लोग तो पशुओं की भाँति हैं बल्कि ये (उनसे भी) अधिक भटके हुए हैं । ये ही असावधान लोग हैं ।180।

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪

और अल्लाह ही के सब सुन्दर नाम हैं । अत: उसे उन (नामों) से पुकारा करो

* इस पवित्र आयत में जिस व्यक्ति का वर्णन है, भाष्यकार उसका नाम ''बल्अम बा'ऊर'' बताते हैं । यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसे अल्लाह तआला ने इस प्रकार के आध्यात्मिक गुण प्रदान किए थे जिनके द्वारा वह अल्लाह के निकट हो सकता था । परन्तु दुर्भाग्य से उसने संसार की ओर झुकना अपने लिए स्वीकार कर लिया । फिर उसका उदाहरण एक ऐसे कुत्ते से दिया गया है जिस पर चाहे कोई पत्थर उठाए या न उठाए उसने भौंकते भौंकते थक कर चूर हो जाना है । अत: यह व्यक्ति भी सन्मार्ग से बिदक कर सत्य के विरुद्ध अनर्गल बकने लगा था ।

وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨١﴾

और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों के विषय में कुटिलता अपनाते हैं। जो कुछ वे करते रहे उसका उन्हें अवश्य प्रतिफल दिया जाएगा।181।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨٢﴾ ع ٢٢/١٢

और उनमें से जिन्हें हमने पैदा किया ऐसे लोग भी थे जो सत्य के साथ (लोगों को) हिदायत देते थे और उसी के द्वारा न्याय करते थे।182। (रुकू $\frac{22}{12}$)

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٣﴾

और वे लोग जिन्होंने हमारे चिह्नों का इनकार किया, हम अवश्य उन्हें क्रमशः उस ओर से पकड़ेंगे जिसका उन्हें कोई ज्ञान नहीं होगा।183।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿١٨٤﴾

और मैं उन्हें छूट देता हूँ निस्सन्देह मेरा उपाय बहुत सुदृढ़ है।184।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ٚ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٥﴾

क्या उन्होंने कभी विचार नहीं किया कि उनके साथी को कोई पागलपन नहीं। वह तो केवल एक खुला-खुला सतर्ककारी है।185।

اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٦﴾

क्या उन्होंने आसमानों और धरती की बादशाहत में तथा प्रत्येक वस्तु में जो अल्लाह ने पैदा की है कभी सोच विचार नहीं किया (और इस बात पर भी) कि संभव है कि उनका निर्धारित समय निकट आ चुका हो। तो इसके पश्चात फिर वे और किस बात पर ईमान लाएँगे।186।

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٧﴾

जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहराए उसे कोई हिदायत प्रदान करने वाला नहीं और वह उन्हें अपनी उद्दण्डताओं में भटकता हुआ छोड़ देता है।187।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ

वे तुझसे क़यामत के बारे में प्रश्न करते हैं कि कब उसे घटित होना है ? तू

إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ إِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ لَا تَأْتِيْكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۗ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾

कहदे कि उसका ज्ञान केवल मेरे रब्ब के पास है । उसे अपने समय पर उसी के अतिरिक्त कोई प्रकट नहीं करेगा । वह आसमानों और धरती पर भारी है। वह तुम पर अकस्मात् आएगी । वे (इस विषय में) तुझ से इस प्रकार प्रश्न करते हैं मानो तू इसके सम्बन्ध में सब कुछ जानता है । तू कह दे कि इसका ज्ञान केवल अल्लाह ही के पास है । परन्तु अधिकतर लोग (यह बात) नहीं जानते ।188।

قُلْ لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۛ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٩﴾

तू कह दे कि मैं अल्लाह की इच्छा के अतिरिक्त अपनी जान के लिए (एक कण भर भी) लाभ अथवा हानि का अधिकार नहीं रखता । और यदि मैं अदृश्य को जानने वाला होता तो निस्सन्देह मैं बहुत धन एकत्रित कर सकता था और मुझे कभी कोई कष्ट न पहुँचता । परन्तु मैं तो केवल उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं एक सतर्ककारी और एक शुभ-समाचार देने वाला हूँ ।189। (रुकू $\frac{23}{13}$)

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ أَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا

वही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया ताकि वह सन्तुष्टि के लिए उसकी ओर आकृष्ट हो । फिर जब उसने उसे ढाँप लिया तो उसने एक हल्का सा बोझ उठा लिया । फिर वह उसे उठाए हुए चलने लगी । अत: जब वह बोझल हो गई तो उन दोनों ने अपने रब्ब को पुकारा कि यदि तू हमें एक स्वस्थ (पुत्र) प्रदान

صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٩٠﴾

करेगा तो निस्सन्देह हम कृतज्ञों में से होंगे ।190।

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩١﴾

अतः जब उन दोनों को उस (अर्थात् अल्लाह) ने एक स्वस्थ (पुत्र) प्रदान किया तो जो उसने उन्हें प्रदान किया उस (वरदान) में वे उसके साझीदार बनाने लगे । अतः जो वे शिर्क करते हैं अल्लाह उससे बहुत ऊँचा है ।191।

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩٢﴾

क्या वे उसे (अल्लाह का) साझीदार बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकता बल्कि वे स्वयं पैदा किए गए हैं ।192।

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّ لَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٣﴾

और वे उनकी किसी प्रकार की सहायता करने की शक्ति नहीं रखते । और वे तो स्वयं अपनी सहायता भी नहीं कर सकते ।193।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٤﴾

और यदि तुम उन्हें हिदायत की ओर बुलाओ तो वे कभी तुम्हारा अनुसरण नहीं करेंगे । चाहे तुम उन्हें बुलाओ या चुप रहो तुम्हारे लिए बराबर है ।194।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٥﴾

निस्सन्देह वे लोग जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं । अतः तुम उन्हें पुकारते रहो, यदि तुम सच्चे हो तो चाहिए कि वे तुम्हें उत्तर भी तो दें ।195।

اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا

क्या उनके पाँव हैं जिनसे वे चलते हैं अथवा उनके हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हैं अथवा उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते हैं अथवा उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हैं ? तू कह दे कि तुम अपने साझीदारों को बुलाओ और फिर मेरे विरुद्ध प्रत्येक प्रकार की

تُنۡظِرُوۡنِ ﴿۱۹۶﴾

चाल चल कर देखो और मुझे कोई ढील न दो ।196।

اِنَّ وَلِیِّ‌ۧ اللّٰهُ الَّذِیۡ نَزَّلَ الۡكِتٰبَ ‌ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيۡنَ ﴿۱۹۷﴾

निस्सन्देह मेरा संरक्षक वह अल्लाह है जिसने पुस्तक उतारी और वह नेक लोगों ही का संरक्षक बनता है ।197।

وَالَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ نَصۡرَكُمۡ وَلَاۤ اَنۡفُسَهُمۡ يَنۡصُرُوۡنَ ﴿۱۹۸﴾

और वे लोग जिन्हें तुम उसके सिवा पुकारते हो वे तुम्हारी सहायता की कोई शक्ति नहीं रखते और न वे स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं ।198।

وَاِنۡ تَدۡعُوۡهُمۡ اِلَى الۡهُدٰى لَا يَسۡمَعُوۡا ‌ؕ وَتَرٰٮهُمۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَيۡكَ وَهُمۡ لَا يُبۡصِرُوۡنَ ﴿۱۹۹﴾

और यदि तुम उनको हिदायत की ओर बुलाओ तो वे सुनेंगे नहीं और । तू उन्हें देखेगा कि मानो वे तेरी ओर देख रहे हैं जबकि वे देख नहीं रहे होते ।199।

خُذِ الۡعَفۡوَ وَاۡمُرۡ بِالۡعُرۡفِ وَاَعۡرِضۡ عَنِ الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿۲۰۰﴾

क्षमाशीलता को अपनाओ और नैतिकता का आदेश दो और मूर्खों से किनाराकशी कर लो ।200।

وَاِمَّا يَنۡزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيۡطٰنِ نَزۡغٌ فَاسۡتَعِذۡ بِاللّٰهِ ‌ؕ اِنَّهٗ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۰۱﴾

और यदि तुझे शैतान की ओर से किसी दुविधा में डाला जाये तो अल्लाह की शरण माँग । निस्सन्देह वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।201।

اِنَّ الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا اِذَا مَسَّهُمۡ طٰۤـئِفٌ مِّنَ الشَّيۡطٰنِ تَذَكَّرُوۡا فَاِذَا هُمۡ مُّبۡصِرُوۡنَ ‌ۚ‏ ﴿۲۰۲﴾

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने तक़वा धारण किया जब शैतान की ओर से उन्हें कोई कष्टदायक विचार पहुँचे तो वे (अल्लाह का) बहुत अधिक स्मरण करते हैं । फिर अचानक वे दिव्य-दृष्टि वाले हो जाते हैं ।202।

وَاِخۡوَانُهُمۡ يَمُدُّوۡنَهُمۡ فِى الۡغَىِّ ثُمَّ لَا يُقۡصِرُوۡنَ ﴿۲۰۳﴾

और इन (काफ़िरों) के (शैतानी) भाई उन्हें पथभ्रष्टता की ओर खींचे लिए जाते हैं, फिर वे कोई कमी नहीं छोड़ते ।203।

وَاِذَا لَمۡ تَاۡتِهِمۡ بِاٰيَةٍ قَالُوۡا لَوۡ لَا

और जब कभी तू उनके पास कोई चिह्न नहीं लाता तो कहते हैं कि तू क्यों न उसे

اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَآ أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّ مِن رَّبِّي ۚ هَٰذَا بَصَآئِرُ مِن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٤﴾

चुन लाया । तू कह दे कि मैं बस उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे रब्ब की ओर से मेरी ओर वह्इ की जाती है । ये ज्ञानपूर्ण बातें तुम्हारे रब्ब की ओर से हैं। और उन लोगों के लिए जो ईमान ले आते हैं हिदायत और दया है ।204।

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٥﴾

और जब क़ुर्आन पढ़ा जाए तो उसे ध्यान से सुनो और चुप रहो ताकि तुम पर दया की जाए ।205।

وَاذْكُر رَّبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠٦﴾

और तू अपने रब्ब को अपने मन में कभी गिड़गिड़ते हुए और कभी डरते डरते और बिना ऊँची आवाज़ किए प्रातः और सायंकालों में स्मरण किया कर और बेपरवाहों में से न बन ।206।

إِنَّ الَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۩ ﴿٢٠٧﴾ ع

निस्सन्देह वे लोग जो तेरे रब्ब के समक्ष उपस्थित रहते हैं, उसकी उपासना करने में अहंकार नहीं करते और उसकी स्तुति करते हैं और उसी के सामने सजदः करते हैं ।207। (रुकू $\frac{24}{14}$)

8- सूरः अल-अन्फ़ाल

यह सूरः मदीना में अवतरित हुई । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 76 आयतें हैं । युद्ध के फलस्वरूप अल्लाह तआला जो आर्थिक लाभ प्रदान करता है उनको **अन्फ़ाल** कहा जाता है ।

पिछली सूरः अल्-आ'राफ़ (आयत : 188) में काफ़िरों की ओर से जिस घड़ी अथवा क़यामत के प्रकट होने का समय पूछा गया था उस घड़ी के प्रथम प्रकटीकरण का इस सूरः में विस्तार से वर्णन है और बताया गया है अरब-निवासियों पर वह घड़ी आ चुकी है जिसके फलस्वरूप इनकार और शिर्क का युग समाप्त होगा ।

पिछली सूरः के अंत पर यह चेतावनी दी गई थी कि बहुत कठिन परिस्थितियाँ प्रकट होने वाली हैं । इसलिए अभी से अल्लाह तआला के समक्ष विनम्रता से झुकते हुए गुप्त रूप से और ऊँची आवाज़ से गिड़गिड़ाते हुए दुआएँ कर क्योंकि तेरी दुआओं के द्वारा ही सब कठिनाइयाँ दूर होंगी ।

इस सूरः के आरम्भ में ही यह शुभ समाचार दे दिया गया है कि इन कठिनाइयों के फलस्वरूप मोमिनों की निर्धनता दूर कर दी जाएगी । पुनः कठिनाइयों के प्रकरण में सबसे पहले बद्र युद्ध का वर्णन किया और जैसा कि इससे पहली सूरः के अंत पर दुआओं की ओर विशेष ध्यान दिलाया गया था, हम देखते हैं कि बद्र युद्ध में मुसलमानों को मिलने वाली विजय भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेष दुआओं ही के परिणामस्वरूप मिली थी । अन्यथा 313 सहाबा जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इस युद्ध में सम्मिलित थे, उनके मुक़ाबले पर मक्का के मुश्रिकों की आक्रामक सेना आध्यात्मिक क्षेत्र के सिवा अन्य समस्त प्रकार से उन पर भारी थी । उत्तम सवारियाँ उनको प्राप्त थीं । उत्तम अस्त्र-शस्त्र उन्हें उपलब्ध थे । तीर-अन्दाज़ी की कला में निपुण सैन्य टुकड़ियाँ उनकी सेना में सम्मिलित थीं । इसके अतिरिक्त युद्ध की भावनाओं को भड़काने के लिए ऐसी राग अलापने वाली दक्ष स्त्रियाँ भी थीं जिनके गीतों के परिणाम स्वरूप सेना में एक प्रकार का उन्माद उत्पन्न हो जाता था । इसके मुक़ाबले पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह दुआएँ ही सफल हुईं जो आपने अपने ख़ेमे में अत्यन्त अनुनय-विनय के साथ इस अवस्था में माँगीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कंधे से चादर बार-बार गिर जाती थी और हज़रत अबुबकर सिद्दीक़ रज़ि. उसे संभालते रहते थे । इस दुआ की चरमावस्था तब हुई जब आप सल्ल. ने बार-बार यह प्रार्थना की :-

अल्लाहु-म्म इन तुह्लिक हाज़िहिल इसाबतु मिन अह्लिल इस्लामि ला

तु'बद फ़िल अर्ज़ि (मुस्लिम, किताबुल जिहाद)

अर्थात् (हे अल्लाह !) जिन्नों और मनुष्यों के जन्म का उद्देश्य तो उपासना करना ही है और ये भक्तजन जिन्हें मैंने शुद्ध रूप से तेरी ही उपासना की शिक्षा दी है, यदि ये मारे गए तो फिर कभी संसार में तेरी सच्ची उपासना करने वाली कोई जाति पैदा नहीं होगी । अतः बद्र युद्ध की सफलता का समस्त श्रेय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं को ही प्राप्त था ।

इसके अतिरिक्त मोमिनों को यह भी समझा दिया गया कि सच्चों और झूठों के बीच भारी फर्क़ कर देने वाला हथियार तो तक़्वा ही है । यदि आगे भी तुम संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियों पर विजयी होने का विचार संजोये बैठे हो तो वह केवल इस दशा में पूरा होगा कि तुम तक़्वा पर स्थिर रहो ।

यहाँ यह भी समझा दिया गया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथी कदापि युद्ध न करते जब तक युद्ध के द्वारा आप का धर्म परिवर्तन करने का प्रयास न किया जाता । सबसे बड़ा उपद्रव संसार में सदैव इसी प्रकार उत्पन्न होता रहा है और होता रहेगा कि शस्त्रबल के द्वारा लोगों के धर्म परिवर्तित करने का प्रयास किया जाता रहेगा । इस दशा में केवल उस समय तक प्रतिरक्षा की अनुमति है जब तक कि यह उपद्रव पूर्णतया समाप्त न हो जाए ।

इसी प्रकार बताया कि दृढता के लिए अधिकता से अल्लाह को स्मरण करने की आवश्यकता है । अतः भयंकर युद्धों के समय भी लगातार अल्लाह को स्मरण करने वालों को यह शुभ-समाचार दिया जा रहा है कि तुम ही सफलता प्राप्त करोगे । क्योंकि प्रत्येक सफलता ईश्वर स्मरण (ज़िक्र-ए-इलाही) से संबद्ध है ।

इस सूरः की अन्तिम दो आयतों में इस विषय का वर्णन है कि यदि शत्रु का दबाव बहुत बढ़ जाए और विवश हो कर तुम्हें अपने देश को त्यागना पड़े तो अल्लाह के मार्ग में यह त्याग स्वीकार होगा और इसके बदले में अल्लाह तआला की ओर से सहायता प्रदान की जाएगी और (अतीत के दोषों को) क्षमा करने के अतिरिक्त अल्लाह तआला देशत्याग करने वालों की जीविका में भी बहुत बढ़ोत्तरी प्रदान करेगा । यह भविष्यवाणी सदा से बड़ी शान के साथ पूरी होती रही है और जीविका में जिस बढ़ोत्तरी का वर्णन इस सूरः के आरम्भ में **अन्फ़ाल** (युद्धलब्ध धन) प्रदान किए जाने के रूप में किया गया था उसके अब और अनेक रूप यहाँ वर्णन कर दिए गए कि हिजरत (देशत्याग) के फलस्वरूप मुहाजिरीन (देशत्याग करने वालों) के जीविका के मार्ग बहुत प्रशस्त किए जाएँगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ سَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّ عَشَرَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٢

वे तुझ से युद्धलब्ध धन के बारे में प्रश्न करते हैं । तू कह दे कि युद्धलब्ध धन अल्लाह और रसूल के हैं । अत: यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह का तक़्वा धारण करो और अपने बीच सुधार करो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो ।2।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٣

मोमिन केवल वही हैं कि जब अल्लाह की चर्चा की जाती है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब उन के समक्ष उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह उनको ईमान में बढ़ा देती हैं और वे अपने रब्ब पर ही भरोसा करते हैं ।3।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ؕ ۝٤

वे लोग जो नमाज़ को क़ायम करते हैं और जो हमने उनको प्रदान किया उसमें से ही वे खर्च करते हैं ।4।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٥

यही हैं जो (खरे और) सच्चे मोमिन हैं । उनके लिए उनके रब्ब के निकट ऊँचे दर्जे हैं और क्षमादान तथा बहुत सम्मान जनक जीविका भी है ।5।

كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝٦

(उनका ईमान ऐसा ही सत्य है) जैसे तेरे रब्ब ने तुझे सत्य के साथ तेरे घर से निकाला था जबकि मोमिनों में से एक गुट इसे निश्चित रूप से नापसंद करता था ।6।

يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٧

वे सत्य के बारे में तुझ से बहस कर रहे थे जब कि सत्य (उन पर) खुल चुका था। मानो उन्हें मृत्यु की ओर हाँक कर ले जाया जा रहा था और वे (उसे अपनी आँखों से) देख रहे थे ।7।

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٨

और (याद करो) जब अल्लाह तुम्हें दो गिरोहों में से एक का वादा दे रहा था कि वह तुम्हारे लिए है और तुम चाहते थे कि तुम्हारे भाग में वह आए जिसमें हानि पहुँचाने की शक्ति न हो और अल्लाह चाहता था कि वह अपने कथनों के द्वारा सत्य को सिद्ध कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे ।8।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٩

ताकि वह सत्य को प्रमाणित कर दे और असत्य का खंडन कर दे चाहे अपराधी कैसा ही नापसंद करें ।9।

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝١٠

(याद करो) जब तुम अपने रब्ब से विनती कर रहे थे तो उसने तुम्हारी विनती को (इस वचन के साथ) स्वीकार कर लिया कि मैं अवश्य एक हज़ार पंक्तिबद्ध फ़रिश्तों के साथ तुम्हारी सहायता करूँगा ।10।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝١١

और अल्लाह ने उसे (तुम्हारे लिए) केवल एक शुभ-समाचार बनाया था और इस कारण कि तुम्हारे मन इससे संतुष्ट हो जाएँ जबकि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की ओर से कोई सहायता नहीं (आती) । निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।11। (रुकू $\frac{1}{15}$)

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١٢﴾

(और याद करो) जब वह अपनी ओर से शांति देते हुए तुम पर ऊँघ उतार रहा था और तुम्हारे लिए आकाश से एक पानी उतार रहा था ताकि वह तुम्हें उसके द्वारा ख़ूब पवित्र कर दे और शैतान की अपवित्रता तुमसे दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को दृढ़ता प्रदान करे और इसके द्वारा पैरों को स्थिरता प्रदान करे ।12।

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٣﴾

(याद करो) जब तेरा रब्ब फ़रिश्तों की ओर वह्इ कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ । अतः उन लोगों को जो ईमान लाए हैं दृढ़ता प्रदान करो । मैं अवश्य उन लोगों के दिलों में जिन्होंने इनकार किया रोब जमा दूँगा । अतः (उनकी) गर्दनों पर प्रहार करो और उनके जोड़-जोड़ पर चोटें लगाओ ।13।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٤﴾

यह इस कारण है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का घोर विरोध किया और जो भी अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है तो निस्सन्देह अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है ।14।

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٥﴾

यह है (तुम्हारा दंड) अतः इसे चखो और (जान लो) कि काफ़िरों के लिए निश्चय ही आग का अज़ाब है ।15।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٦﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब उनकी किसी विशाल सेना से जिन्होंने इनकार किया तुम्हारी मुठभेड़ हो तो उन्हें पीठ न दिखाओ ।16।

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا

और जो उस दिन उन्हें पीठ दिखाएगा सिवाए इसके कि रणनीति के रूप में

لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۷﴾

पहलू बदल रहा हो अथवा (अपने ही) किसी दल से मिलने का प्रयत्न कर रहा हो तो निश्चित रूप से वह अल्लाह के क्रोध के साथ वापस लौटेगा और उसका ठिकाना नरक् होगा और (वह) बहुत ही बुरा ठिकाना है ।17।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۸﴾

अतः तुमने उन्हें वध नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें वध किया है । और (हे मुहम्मद !) जब तूने (उनकी ओर कंकर) फेंके तो तूने नहीं फेंके बल्कि अल्लाह ने फेंके । और यह इस कारण हुआ ताकि वह अपनी ओर से मोमिनों को एक अच्छी परीक्षा में डाले । निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।18।*

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹﴾

यह थी तुम्हारी दशा और यह (भी सच है) कि अल्लाह ही काफ़िरों की चाल को कमज़ोर करने वाला है ।19।

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا

(अतः हे मोमिनों !) यदि तुम विजय-कामना करते थे तो विजय तो तुम्हारे पास आ गई । और (हे इनकार करने वालो ! अब भी) यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिए अच्छा है और यदि तुम (शरारत की) पुनरावृत्ति करोगे तो हम

---

* इस आयत में बद्र युद्ध की शानदार विजय का वर्णन है जो देखने में सहाबा के द्वारा प्राप्त हुई परन्तु जब वे काफ़िरों का वध कर रहे थे तो वास्तव में अल्लाह की शक्ति से ऐसा कर रहे थे । इस विजय लाभ का एक बड़ा प्रत्यक्ष कारण यह बना कि जब हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने कंकर उठा कर काफ़िरों की ओर फेंके तो उसके साथ ही एक तेज़ आँधी मुसलमानों की सेना की ओर से काफ़िरों की सेना की ओर चल पड़ी । इसी बात में अल्लाह तआला का उन्हें वध करने का रहस्य छिपा है कि शत्रुओं की आँखें इस आँधी के कारण से लगभग दृष्टिहीन हो गईं और उनका वध करना मुसलमानों की सेना के लिए बहुत सरल हो गया । फ़रिश्तों की सहायता से भी यही अभिप्राय है ।

نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۰﴾

भी (अज़ाब की) पुनरावृत्ति करेंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हारे किसी काम न आएगा चाहे (वह) कितना ही अधिक हो और यह (जान लो) कि अल्लाह मोमिनों के साथ है ।20। (रुकू $\frac{2}{16}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿۲۱﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो और उससे मुँह न मोड़ो जब कि तुम सुन रहे हो ।21।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۲﴾

और उन लोगों की भाँति न बनो जिन्होंने कहा था, हमने सुन लिया । जबकि वास्तव में वे सुन नहीं रहे थे ।22।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۲۳﴾

निस्सन्देह अल्लाह के निकट समस्त प्राणियों में सबसे बुरे वे बहरे और गूँगे हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते ।23।

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۴﴾

और यदि अल्लाह उनके अन्दर कोई भी अच्छी बात देखता तो उन्हें अवश्य सुना देता और यदि उन्हें सुना भी देता तो अवश्य वे उपेक्षा भाव दिखाते हुए पीठ फेर जाते ।24।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۵﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ को जब वह तुम्हें बुलाए स्वीकार करने आ जाता। ताकि वह तुम्हें जीवित करे और जान लो कि अल्लाह मनुष्य और उसके दिल के बीच आ जाता है और यह भी (जान लो) कि तुम उसी की ओर एकत्रित किए जाओगे ।25।*

* इस आयत में मृतकों के जीवित होने की स्पष्ट व्याख्या मौजूद है । भ्रम वश ईसाई हज़रत ईसा अलै. के द्वारा मृतकों को जीवित करने से प्रत्यक्ष रूप से मृतकों को जीवित करना विचार करते हैं । अतः जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आध्यात्मिक मुर्दों को अपनी ओर बुलाया कि→

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۶﴾

और उस फ़साद से डरो जो केवल उन लोगों को ही आक्रांत नहीं करेगा जिन्होंने तुम में से अत्याचार किया और जान लो कि अल्लाह पकड़ करने में बहुत कठोर है ।26।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۷﴾

और याद करो जब तुम बहुत थोड़े थे (और) धरती में दुर्बल माने जाते थे (और तुम) डरा करते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न ले जाएँ तो उसने तुम्हें शरण दी और अपनी सहायता के साथ तुम्हारा समर्थन किया और तुम्हें पवित्र चीज़ों में से जीविका प्रदान किया ताकि तुम कृतज्ञ बनो ।27।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और (उसके) रसूल से ख़यानत न करो अन्यथा इसके फलस्वरूप तुम स्वयं अपनी अमानतों से ख़यानत करने लगोगे जबकि तुम (इस ख़यानत को) जानते होगे ।28।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۹﴾ ع

और जान लो कि तुम्हारे धन-दौलत और तुम्हारी संतान केवल एक परीक्षा स्वरूप हैं और यह (भी) कि अल्लाह के पास एक बहुत बड़ा प्रतिफल है ।29।

(रुकू $\frac{3}{17}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۳۰﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! यदि तुम अल्लाह से डरो तो वह तुम्हारे लिए एक विशेष चिह्न बना देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा और तुम्हें क्षमा प्रदान करेगा और अल्लाह अपार कृपा का स्वामी है ।30।

←आओ मैं तुम्हें जीवित करूँ तो यह बात खुल गई कि वे क़ब्रों में पड़े हुए मुर्दे नहीं थे बल्कि अरब के आध्यात्मिक मुर्दे थे ।

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣١﴾

और (याद करो) वे लोग जो काफ़िर हुए जब तेरे विरुद्ध षड़यन्त्र कर रहे थे ताकि तुझे (एक ही स्थान) पर घेर दें अथवा तेरी हत्या कर दें अथवा तुझे (देश से) निकाल दें । और वे योजना में व्यस्त थे और अल्लाह भी उनकी योजना का तोड़ निकाल रहा था और अल्लाह योजना करने वालों में से सबसे अच्छा है ।31।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٢﴾

और जब हमारी आयतें उन के समक्ष पढ़ी जाती हैं तो वे कहते हैं बस हम सुन चुके, हम भी यदि चाहें तो ऐसी ही बातें कह सकते हैं । ये तो पुराने लोगों की कहानियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं ।32।

وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٣﴾

और (याद करो) जब वे कह रहे थे कि हे अल्लाह ! यदि यही तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर अथवा हम पर एक पीड़ादायक अज़ाब ले आ ।33।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें अज़ाब दे जब कि तू उनमें उपस्थित हो । और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें अज़ाब दे जबकि वे क्षमा याचना कर रहे हों ।34।

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

और अख़िरकार उनमें क्या बात है जो अल्लाह उन्हें अज़ाब न दे जबकि वे इज़्ज़त वाली मस्जिद से लोगों को रोकते हैं हालाँकि वे उसके (वास्तविक) संरक्षक नहीं हैं । उसके (वास्तविक) संरक्षक तो मुत्तक़ियों के

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۵﴾

अतिरिक्त और कोई नहीं परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।35।*

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۶﴾

और (अल्लाह के) घर के निकट उनकी उपासना सीटियाँ और तालियाँ बजाने के अतिरिक्त कुछ नहीं है । अतः (हे इनकार करने वालो ! अल्लाह के) अज़ाब को चखो क्योंकि तुम इनकार किया करते थे ।36।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۷﴾

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया अपने धन को इसलिए खर्च करते हैं ताकि अल्लाह के मार्ग से रोकें । अतः वे उनको (इसी प्रकार) खर्च करते रहेंगे फिर वह (धन) उन के लिए खेद का विषय बन जाएगा, फिर वे परास्त कर दिए जाएँगे । और वे लोग जिन्होंने इनकार किया नर्क की ओर इकट्ठे करके ले जाए जाएँगे ।37।

لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۸﴾ ع

ताकि अल्लाह अपवित्र को पवित्र से पृथक कर दे और अपवित्रता के एक भाग को दूसरे पर डाल दे । फिर इस सारे को (ढेर के रूप में) परत दर परत इकट्ठा कर दे फिर उसे नर्क में झोंक दे । यही लोग हैं जो घाटा उठाने वाले हैं ।38।

(रुकू $\frac{4}{18}$)

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا

जिन्होंने इनकार किया उनसे कह दे कि यदि वे रुक जाएँ तो जो कुछ गुज़र चुका उसके लिए उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा परन्तु यदि वे (अपराध की) पुनरावृत्ति करें तो निस्सन्देह (इन जैसे लोगों का

* मस्जिद-ए-हराम पर मुश्रिकों का जब तक क़ब्ज़ा रहा वह केवल अवैध क़ब्ज़ा था । वास्तविक रूप से मस्जिद-ए-हराम के अधिकारी मोमिन ही रहे, क़ब्ज़े से पहले भी और क़ब्ज़े के बाद भी ।

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾

वही हाल होगा) जो पहलों के साथ हो चुका है ।39।

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾

और तुम उनसे युद्ध करते रहो यहाँ तक कि कोई उपद्रव बाकी न रहे और धर्म विशुद्ध रूप से अल्लाह के लिए हो जाए । यदि वे रुक जाएँ तो जो कर्म वे करते हैं निस्सन्देह अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।40।*

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤١﴾

और यदि वे पीठ फेर लें तो जान लो कि अल्लाह ही तुम्हारा संरक्षक है । क्या ही अच्छा संरक्षक और क्या ही अच्छा सहायक है ।41।

* यह आयत धर्मान्तरण के विरुद्ध एक दृढ प्रमाण है । यहाँ उपद्रव का तात्पर्य बलपूर्वक अपने धर्म से किसी को हटाना है । अतः जब तक धर्म पूर्णतया अल्लाह के लिए स्वतन्त्र न हो जाए उस समय तक ऐसे बल प्रयोग करने वालों के विरुद्ध उन्हीं हथियारों से जिहाद करना उचित है जिन हथियारों से वे ज़बरदस्ती मोमिनों को धर्मच्युत करने का प्रयत्न करते हैं । फ़ित्ना (उपद्रव) से तात्पर्य आग पर भुनना भी है ।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٢﴾

और तुम जान लो कि जो भी युद्धलब्ध धन तुम्हारे हाथ लगे तो उसका पाँचवाँ भाग अल्लाह (अर्थात् धर्म-कार्यों के लिए) और रसूल के लिए और निकट सम्बन्धियों के लिए और अनाथों और दीन-दु:खियों एवं यात्रियों के लिए है, यदि तुम अल्लाह पर और उस पर ईमान लाते हो जो हमने अपने भक्त पर निर्णय कर देने वाले दिन में उतारा था जिस दिन दो समूहों की मुठभेड़ हुई थी । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।42।

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ۭ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ڏ لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٤٣﴾

(याद करो) जब तुम (घाटी के) इस ओर थे और वे दूसरी ओर थे और यात्री दल तुम दोनों से नीचे की ओर था । और यदि तुम (किसी गिरोह से युद्ध की) परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा भी कर लेते तब भी उसका (समय) निर्धारित करने में तुम मतभेद करते । परन्तु यह इस कारण (हुआ) कि अल्लाह उस कार्य का फ़ैसला कर दे जो हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला था । ताकि सुस्पष्ट तर्क के आधार पर जिसके विनाश का औचित्य हो वही विनष्ट हो । और सुस्पष्ट तर्क के आधार पर जिसे जीवित रहना चाहिए वही जीवित रहे । और निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।43।

اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ۭ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ

(याद करो) जब अल्लाह तुझे तेरी नींद की अवस्था में उन (शत्रुओं) को कम करके दिखा रहा था और यदि

وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٤﴾

वह तुझे उनको अधिक संख्या में दिखाता तो (हे मोमिनों !) तुम अवश्य कायरता दिखाते और इस महत्त्वपूर्ण विषय में मतभेद करते । परन्तु अल्लाह ने (तुम्हें) बचा लिया । निस्सन्देह वह दिलों के भेदों को खूब जानता है ।44।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٥﴾ ع

और (याद करो) जब तुम्हारी उनसे मुठभेड़ हुई, वह तुम्हारी दृष्टि में उनको बहुत कम करके दिखा रहा था और उनकी दृष्टि में तुम्हें बहुत कम करके दिखा रहा था । ताकि अल्लाह उस कार्य का फैसला कर दे जो हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला था । और अल्लाह ही की ओर समस्त विषय लौटाए जाते हैं ।45।* (रुकू $\frac{5}{1}$)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٦﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब भी किसी सैन्य टुकड़ी से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो पाँव जमाये रखो और बहुत अधिक अल्लाह को याद करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।46।

---

* आयत संख्या 43 से 45 : बद्र युद्ध से पूर्व मुसलमानों को किसी लड़ाई का विचार नहीं था बल्कि मक्का वालों के व्यापारिक दल का समाचार मिला था जिसको रोकने के उद्देश्य से मुसलमान निकले हुए थे । क्योंकि कुरैश का यह उद्देश्य था कि इस व्यापारिक दल का सारा लाभ मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध में उपयोग किया जाए । यह अल्लाह तआला की ओर से एक विशेष योजना थी कि मुसलमानों को अपनी संख्या बहुत थोड़े होने पर भी एक बड़े समूह से मुक़ाबले का साहस पैदा हुआ अन्यथा बहुत से दुर्बलमन इतनी बड़ी सेना के मुक़ाबले के लिए घर से ही न निकलते । आयतांश **लि यह् लि क मन ह ल क अम बय्यिनतिन** (अर्थात् खुले-खुले तर्क के आधार पर जिसके विनाश का औचित्य हो वही विनष्ट हो) यहाँ बहुत ही गूढ़ मर्म की बात यह वर्णन की गई है कि जो खुले-खुले स्पष्ट तर्क रखते हों जिसे **बय्यिनः** कहा गया है वे इस तर्क के बल पर अवश्य विजय प्राप्त करते हैं। जिनके पास कोई तर्क न हो तो वे हर हाल में नष्ट कर दिए जाते हैं । इस कारण प्रत्यक्ष लड़ाई हो अथवा विचार-धारा की लड़ाई हो जिनके पास **बय्यिनः** (स्पष्ट तर्क) हो वे अवश्य विजयी होंगे । जिनके पास यह न हो वे अवश्य पराजित हो जाते हैं ।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ﴿۴۷﴾

और अल्लाह की और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो और परस्पर मत झगड़ो अन्यथा तुम कायर बन जाओगे और तुम्हारा रोब जाता रहेगा। और धैर्य से काम लो। निस्संदेह अल्लाह धैर्य करने वालों के साथ होता है।47।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۴۸﴾

और उन लोगों की भाँति न बनना जो इतराते हुए और लोगों को दिखाने के लिए अपने घरों से निकले और वे अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोक रहे थे और जो वे करते थे अल्लाह उसे घेरे में लिए हुए था।48।

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۠﴿۴۹﴾ ع

और (याद करो) जब (एक) शैतान (तुल्य मनुष्य) ने उनके कर्म उन्हें सुन्दर करके दिखाए और कहा कि आज के दिन लोगों में से तुम पर कोई विजयी नहीं हो पाएगा और निस्सन्देह मैं तुम्हें शरण देने वाला हूँ। फिर जब दोनों गुट आमने-सामने हुए तो वह अपनी एड़ियों के बल फिर गया। और उसने कहा निस्सन्देह मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ। मैं अवश्य वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे। मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है।49। (रुकू $\frac{6}{2}$)

اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۰﴾

(याद करो) जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कहने लगे कि इन लोगों को इनके धर्म ने धोखे में डाल रखा है। हालाँकि जो भी अल्लाह पर भरोसा करता है तो निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है।50।

وَلَوْ تَرٰۤی اِذْ یَتَوَفَّی الَّذِیْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ یَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِیْقِ ﴿۵۱﴾

और यदि तू देख सके (तो यह देखेगा) कि जब फ़रिश्ते उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया मृत्यु देते हैं तो वे उनके चेहरों और उनकी पीठों को चोटें लगाते हैं। और (यह कहते हैं कि) खूब जलन वाले अज़ाब को चखो ।51।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ۙ﴿۵۲﴾

यह उसके कारण है जो तुम्हारे (अपने ही) हाथों ने आगे भेजा । जबकि अल्लाह कदापि ऐसा नहीं कि अपने भक्तों पर लेश-मात्र भी अत्याचार करने वाला हो ।52।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۵۳﴾

फ़िरऔन की जाति और जो उनसे पहले थे उन की रीति के अनुरूप (तुम्हारी भी रीति है) । उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया था । अतः अल्लाह ने उन्हें उनके पापों के कारण पकड़ लिया । निस्सन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) दंड देने में बहुत कठोर है ।53।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ یَكُ مُغَیِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰی قَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۙ﴿۵۴﴾

यह इसलिए कि अल्लाह कभी उस नेमत को परिवर्तित नहीं करता जिसे उसने किसी जाती को प्रदान किया हो। यहाँ तक कि वे स्वयं अपनी अवस्था को परिवर्तित कर दें । और (याद रखो) कि निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।54।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ

फ़िरऔन की जाति और जो उन से पहले थे उन लोगों की रीति के अनुरूप (तुम्हारी भी रीति है) । उन्होंने अपने रब्ब की आयतों को झुठला दिया तो

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۵۵﴾

हमने उन्हें उनके पापों के कारण नष्ट कर दिया । और फ़िरऔन की जाति को हमने डुबो दिया और वे सब के सब अत्याचारी थे ।55।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۶﴾

निस्सन्देह अल्लाह के निकट निकृष्टतम जीवधारी वे हैं जिन्होंने इनकार किया और वे किसी प्रकार से ईमान नहीं लाते ।56।

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۷﴾

(अर्थात) वे लोग जिनसे तूने समझौता किया फिर वे हर बार अपना वचन तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं ।57।

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۵۸﴾

अत: यदि तू उनसे लड़ाई में भिड़ जाए तो उन (की दुर्गत) से उनके पिछलों को भी तितर-बितर कर दे ताकि संभवत: वे शिक्षा ग्रहण करें ।58।

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۹﴾ ع

और यदि किसी जाति से तू ख़यानत का भय करे तो उनसे वैसा ही कर जैसा उन्होंने किया हो । अल्लाह ख़यानत करने वालों को कदापि पसन्द नहीं करता ।59। (रुकू $\frac{7}{3}$)

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ۗ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿۶۰﴾

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया कदापि इस भ्रम में न पड़ें कि वे आगे बढ़ गए हैं । वे कदापि विवश नहीं कर सकेंगे ।60।

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا

और जहाँ तक तुम्हारी समार्थ्य हो उनके लिए तैयारी रखो, कुछ शक्ति संचय करके और कुछ सीमाओं पर घोड़े बांध कर । इससे तुम अल्लाह के शत्रु और अपने शत्रु तथा उनके अतिरिक्त दूसरों पर भी रोब डालोगे । तुम उन्हें नहीं जानते अल्लाह उन्हें जानता है । और जो

مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦١﴾

कुछ भी तुम अल्लाह के मार्ग में खर्च करोगे तुम्हें पूर्णरूप से वापस किया जाएगा और तुम्हारा अधिकार हनन नहीं किया जाएगा ।61।

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٢﴾

और यदि वे संधि के लिए झुक जाएँ तो तू भी उसके लिए झुक जा और अल्लाह पर भरोसा कर । निस्सन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।62।

وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٣﴾

और यदि वे इरादा करें कि तुझे धोखा दें तो निस्सन्देह अल्लाह तेरे लिए पर्याप्त है । वही है जिसने अपनी सहायता और मोमिनों के द्वारा तेरी सहायता की ।63।

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٤﴾

और उसने उनके दिलों को परस्पर बांध दिया । यदि तू वह सब कुछ खर्च कर देता जो धरती में है तब भी तू उनके दिलों को परस्पर बाँध नहीं सकता था । परन्तु यह अल्लाह ही है जिसने उन (के दिलों) को परस्पर बाँधा । वह निस्सन्देह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।64।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٥﴾ ع

हे नबी ! तेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है और उनके लिए भी जो मोमिनों में से तेरा अनुसरण करें ।65। (रुकू $\frac{8}{4}$)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ

हे नबी ! मोमिनों को युद्ध की प्रेरणा दे । यदि तुम में से बीस धैर्य धारण करने वाले होंगे तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे । और यदि तुम में से एक सौ (धैर्य धारण करने वाले) होंगे तो वे इनकार करने वालों के एक हज़ार पर

كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٦﴾

विजय पा जाएँगे क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो कुछ समझते नहीं ।66।*

اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

इस समय अल्लाह ने तुमसे बोझ हल्का कर दिया है क्योंकि वह जानता है कि तुम में अभी कमज़ोरी है । अत: यदि तुम में से एक सौ धैर्य धारण करने वाले हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे । और यदि तुम में से एक हज़ार (धैर्य धरने वाले) हों तो वे अल्लाह के आदेश से दो हज़ाार पर विजयी हो जाएँगे । और अल्लाह धैर्य धरने वालों के साथ होता है ।67।**

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٨﴾

किसी नबी के लिए उचित नहीं कि धरती में रक्तपात-पूर्ण युद्ध किए बिना (किसी को) क़ैदी बनाए । तुम सांसारिक धन सम्पत्ति चाहते हो जब कि अल्लाह परलोक को पसंद करता है । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।68।

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ

यदि अल्लाह की ओर से (तुम से क्षमापूर्ण व्यवहार करने का) पहले से विधान जारी न किया गया होता तो

---

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया है कि मोमिनों को युद्ध के लिए प्रेरित करें । यद्यपि वे थोड़े हैं परन्तु अल्लाह तआला का यह वादा है कि वे अपने से दस गुना अधिक संख्या पर विजयी हो सकते हैं । परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक अकेला व्यक्ति अपने से दस गुना अधिक संख्या के लोगों पर विजय प्राप्त कर लेगा । यह एक निश्चित संख्या वर्णन की गई है कि यदि सौ हों तो हज़ार पर विजय प्राप्त कर लेंगे जो बिल्कुल संभव है ।

** इस आयत में यह वर्णन है कि इस समय तुम्हारी दुर्बलता की स्थिति है । न तो पर्याप्त भोजन उपलब्ध है और न ही हथियार उपलब्ध हैं । इस कारण तुम यदि सौ होगे तो दो सौ पर विजय प्राप्त करोगे । परन्तु जब तुम्हारा रोब जम जाएगा तो आने वाली पीढ़ियों में एक हज़ार, दस हज़ार की संख्या पर भी विजय प्राप्त कर सकेंगे । आने वाली पीढ़ियों के लिए जिस वृहत विजय की भविष्यवाणी की गई है उसकी नींव आरम्भिक युगीन मोमिनों ने ही डाली थी ।

أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٩﴾

जो तुम ने प्राप्त किया उसके प्रतिफल स्वरूप अवश्य तुम्हें बहुत बड़ा अज़ाब मिलता ।69।

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧٠﴾ ع

अत: जो युद्धलब्ध धन तुम प्राप्त करो उसमें से हलाल और पवित्र खाओ और अल्लाह का तक़वा धारण करो । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।70। (रुकू $\frac{9}{5}$)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧١﴾

हे नबी ! तुम्हारे हाथों में जो क़ैदी हैं उन से कह दे कि यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में कोई भलाई देखी तो तुम्हें उससे भी उत्तम देगा जो तुम से ले लिया गया है । और तुम्हें क्षमा कर देगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।71।

وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧٢﴾

और यदि वे तुझ से ख़यानत का इरादा करें तो वे इस से पूर्व अल्लाह से भी ख़यानत कर चुके हैं । अत: उसने उनको लाचार कर दिया । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।72।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने हिजरत (देशत्याग) की और अपने धन और जीवन के साथ अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया और वे लोग जिन्होंने (इन देशत्यागियों को) शरण दी और (उनकी) सहायता की, यही लोग हैं जिनमें से कुछ, कुछ अन्य के मित्र हैं । और वे लोग जो ईमान लाए परन्तु उन्होंने हिजरत न की तुम्हारे लिए (तब

حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٣﴾

तक) उनसे मित्रता का कोई औचित्य नहीं यहाँ तक कि वे हिजरत कर जएँ । हाँ यदि वे धर्म के विषय में तुमसे सहायता चाहें तो सहायता करना तुम पर अनिवार्य है । सिवाय इसके कि किसी ऐसी जाति के विरुद्ध (सहायता का प्रश्न) हो जिसके और तुम्हारे बीच समझौता हो चुका हो । और जो कुछ तुम करते हो उस पर अल्लाह गहन दृष्टि रखने वाला है ।73।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ؕ﴿٧٤﴾

और वे लोग जो काफ़िर हुए उनमें से कुछ, कुछ अन्य के मित्र हैं । यदि तुम ने उसका पालन न किया (जिसकी तुम्हें शिक्षा दी गई) तो धरती में उपद्रव और बड़ा दंगा होगा ।74।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٥﴾

और वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया और वे लोग जिन्होंने (उनको) शरण दी और सहायता की यही लोग सच्चे मोमिन हैं। उनके लिए क्षमा और सम्मानजनक जीविका है ।75।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ ع

और वे लोग जो बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया तो वे तुम ही में से हैं। और जहाँ तक सगे सम्बन्धियों की बात है, तो अल्लाह की पुस्तक में उनमें से कुछ कुछ अन्य के अधिक निकट हैं । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय की ख़ूब जानकारी रखता है ।76। (रुकू $\frac{10}{6}$)

9- सूर: अत-तौब:

यह सूर: मदीना में सूर: अल अन्फ़ाल के तुरन्त पश्चात् अवतरित हुई । इसकी 129 आयतें हैं ।

जिन युद्धों और उनके परिणामस्वरूप संकटपूर्ण स्थितियों और फिर पुरस्कारों का विवरण सूर: अल अन्फ़ाल के अन्त पर मिलता है उनके कारण उत्पन्न होने वाले विषयों का इस सूर: के आरम्भ में ही वर्णन कर दिया गया कि शत्रु अवश्य पराजित होगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि. से संधि करने पर विवश हो जाएगा । अत: न्याय संगत यह है कि जब तक वे अपनी संधियों पर अटल रहें मुसलमानों की ओर से कदापि प्रतिज्ञाभंग नहीं होनी चाहिए ।

प्रतिज्ञाभंग के कुपरिणामों का विवरण जो सूर: अल-फ़ातिह: से आरम्भ हो कर पिछली समस्त सूरतों में विभिन्न रूपों में मिलता है उसका वर्णन इस सूर: में भी मौजूद है। परन्तु जिस प्रकार शत्रु प्रतिज्ञाभंग करता है और दण्ड पाता है, मोमिनों को भी चेतावनी है कि उन्हें भी प्रत्येक अवस्था में प्रतिज्ञा का पालन करना होगा ।

इस सूर: में बार-बार यह वर्णन मिलता है कि मोमिनों की कोई भी विजय प्राप्ति हथियारों की अधिकता अथवा संख्या बल के कारण नहीं होती और न हो सकती है । इसी प्रकरण में हुनैन युद्ध का वर्णन किया गया है जबकि मुसलमानों को काफ़िरों पर भारी संख्याधिक्यता प्राप्त थी और कुछ मुसलमान इस भ्रम में थे कि जब हम अल्पसंख्या में थे तो उनके विशाल समूहों पर विजयी होते रहे हैं, अब काफ़िर हम पर कैसे विजयी हो सकते हैं ? उन्हें चेताया गया कि जब तुम अल्प संख्या में थे तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं से विजयी होते रहे हो । इस कारण अब तुम्हारी संख्याधिक्यता का भ्रम तोड़ा जा रहा है, परन्तु अत्यन्त भयंकर पराजय के पश्चात दोबारा तुम इसी रसूल सल्ल. की दुआओं और धैर्य व हिम्मत के फलस्वरूप पुन: विजयी किए जाओगे ।

इसके पश्चात् अधिकता पूर्वक धन-दौलत प्राप्त होने का वर्णन है जिसके फलस्वरूप ईर्ष्यालु मुनाफ़िक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आरोप लगाने से भी बाज़ न आए कि आप धन के बटवारे में अन्याय करते हैं । जबकि जो भी धन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाँटते थे वह अपने प्रियजनों में नहीं अपितु मुहाजिरों (देशत्यागियों) दीन दु:खियों, दरिद्रों, कठिनाइयों में फंसे हुए, क़र्ज़ों के बोझ तले दबे हुए निर्धन लोगों की भलाई के लिए बाँटते थे । अत: चेतावनी दी गई है कि यदि तुम इस सत्यनिष्ठ रसूल पर भी बेईमानी का आरोप लगाओगे तो नष्ट कर दिए

जाओगे । वास्तव में ऐसे आरोप लगाने वाले स्वयं ही बेईमान और ख़यानत करने वाले होते हैं ।

इस सूर: के अंत पर यह आयत आती है कि यह वह रसूल है जो केवल तुम्हारी भलाई के लिए दु:ख उठाता है । तुम अल्लाह के मार्ग में जो भी कष्ट उठाते हो उस से वह बहुत व्यथित होता है और काफ़िरों पर सख़्ती करना उसके दिल की कठोरता का परिचायक नहीं है । उसका दिल तो इतनी दया और कृपा करने वाला है कि वह दयालु और कृपालु अल्लाह का एक जीवंत नमूना है ।

☆☆☆

नोट :– यह बात वर्णन योग्य है कि सूर: अत्-तौब: से पूर्व बिस्मिल्लाह नहीं है । क़ुर्आन मजीद की कुल 114 सूरतें हैं और बिस्मिल्लाह का केवल 113 सूरतों के आरम्भ में उल्लेख है । परन्तु क़ुर्आन करीम की यह विशेषता है कि अन्यत्र सूर: अन-नम्ल में हज़रत सुलैमान अलै. के महारानी सबा के नाम पत्र में **बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम** पूरा लिखा है । इस प्रकार बिस्मिल्लाह की संख्या सूरतों की संख्या के समान 114 हो जाती है।

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّتِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١

अल्लाह और उसके रसूल की ओर से उन मुश्रिकों की ओर विमुखता (का सन्देश प्रेरित किया जा रहा) है जिनसे तुमने समझौता किया है ।1।

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۝٢

अत: चार महीने तक तुम धरती में ख़ूब चलो फिरो और जान लो कि तुम अल्लाह को कदापि विवश नहीं कर सकोगे । और यह (भी जान लो) कि निस्सन्देह अल्लाह काफ़िरों को अपमानित कर देगा ।2।

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِىْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣

और हज्जे-अकबर के दिन सब लोगों के सामने अल्लाह और उसके रसूल की ओर से सार्वजनिक घोषणा की जाती है कि अल्लाह और उसका रसूल भी मुश्रिकों से पूर्णतया विमुख हैं । अत: यदि तुम प्रायश्चित कर लो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है । और यदि तुम विमुख हो जाओ तो जान लो कि तुम कदापि अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे । अत: वे लोग जो काफ़िर हुए उन्हें एक पीड़ाजनक अज़ाब का शुभ समाचार दे दे ।3।

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ

मुश्रिकों में से ऐसे लोगों को छोड़कर जिनके साथ तुमने समझौता किया फिर उन्होंने तुमसे कोई प्रतिज्ञाभंग नहीं किया और तुम्हारे विरुद्ध किसी और की सहायता भी नहीं की । अत: तुम उनके साथ समझौते को तय की हुइ अवधि

إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ٤

तक पूरा करो । निस्सन्देह अल्लाह मुत्तक़ियों से प्रेम करता है ।4।

فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٥

अतः जब इज़्ज़त वाले महीने गुज़र जाएँ तो जहाँ भी तुम (प्रतिज्ञाभंग करने वाले) मुश्रिकों को पाओ तो उनसे लड़ो और उन्हें पकड़ो और उनका घेराव करो और प्रत्येक घात लगाने के स्थान पर उनकी घात में बैठो । अतः यदि वे प्रायश्चित करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उनका रास्ता छोड़ दो । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।5।

وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ٦ ع

और मुश्रिकों में से यदि कोई तुझ से शरण माँगे तो उसे शरण दे । यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दे । यह (छूट) इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो ज्ञान नहीं रखते।6। (रुकू $\frac{1}{7}$)

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ٧

अल्लाह और उसके रसूल के निकट मुश्रिकों का वचन कैसे सही माना जा सकता है सिवाय उनके जिनसे तुमने मस्जिद-ए-हराम में वचन लिया हो । अतः जब तक वे तुम्हारे हित में (अपने वचन पर) अटल रहें तुम भी उनके हित में अटल रहो । निस्सन्देह अल्लाह मुत्तक़ियों से प्रेम करता है ।7।

كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُم

कैसे (उनका वचन भरोसे योग्य) हो सकता है जबकि परिस्थिति यह है कि यदि वे तुम पर विजयी हो जाएँ तो तुम

بِاَفۡوَاهِهِمۡ وَتَاۡبٰى قُلُوۡبُهُمۡ‌ۚ وَاَكۡثَرُهُمۡ فٰسِقُوۡنَ‌ۚ ۝٨

से सम्बन्धित किसी वचन अथवा कर्त्तव्य की परवाह नहीं करते । (केवल) वे तुम्हें अपने मुँह की बातों से प्रसन्न कर देते हैं जबकि उनके दिल (उन बातों के) इनकारी होते हैं और उनमें से अधिकतर दुराचारी लोग हैं ।8।

اِشۡتَرَوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيۡلًا فَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِهٖ‌ؕ اِنَّهُمۡ سَآءَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۝٩

उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तुच्छ मोल को ग्रहण कर लिया । फिर उसके मार्ग से (लोगों को) रोका । जो वे करते हैं निस्सन्देह बहुत बुरा है ।9।

لَا يَرۡقُبُوۡنَ فِىۡ مُؤۡمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً‌ ؕ وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡمُعۡتَدُوۡنَ ۝١٠

किसी मोमिन के विषय में वे न किसी प्रतिज्ञा की परवाह करते हैं और न किसी उत्तरदायित्व का । और यही लोग सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं ।10।

فَاِنۡ تَابُوۡا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخۡوَانُكُمۡ فِى الدِّيۡنِ‌ؕ وَنُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّعۡلَمُوۡنَ ۝١١

अतः यदि वे प्रायश्चित कर लें और नमाज़ को क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो धर्म की दृष्टि से तुम्हारे भाई हैं । और हम ऐसे लोगों के लिए चिह्नों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं जो ज्ञान रखते हैं ।11।

وَاِنۡ نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ عَهۡدِهِمۡ وَطَعَنُوۡا فِىۡ دِيۡـنِكُمۡ فَقَاتِلُوۡۤا اَئِمَّةَ الۡـكُفۡرِ‌ۙ اِنَّهُمۡ لَاۤ اَيۡمَانَ لَهُمۡ لَعَلَّهُمۡ يَنۡتَهُوۡنَ ۝١٢

और यदि वे अपनी प्रतिज्ञा के पश्चात् अपनी क़समों को तोड़ दें और तुम्हारे धर्म पर कटाक्ष करें तो इनकार करने वालों के मुखियाओं से लड़ाई करो । निस्सन्देह वे ऐसे हैं कि उनकी क़समों का कोई भरोसा नहीं (अतः उनसे लड़ाई करो । इस प्रकार) हो सकता है कि वे बाज़ आजाएँ ।12।

اَلَا تُقَاتِلُوۡنَ قَوۡمًا نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ وَهَمُّوۡا بِاِخۡرَاجِ الرَّسُوۡلِ وَهُمۡ

क्या तुम ऐसे लोगों से युद्ध नहीं करोगे जो अपनी क़समों को तोड़ बैठे हों । और रसूल को (देश से) निकाल देने का

بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳﴾

संकल्प किए हुए हों । और वही हैं जिन्होंने पहले-पहल तुम पर (अत्याचार का) आरम्भ किया । क्या तुम उनसे डर जाओगे ? यदि तुम मेमिन हो तो अल्लाह अधिक हक़दार है कि तुम उससे डरो ।13।

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۙ﴿۱۴﴾

उनसे लड़ाई करो । अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों से अज़ाब देगा और उन्हें अपमानित कर देगा । और तुम्हें उनके विरुद्ध सहायता प्रदान करेगा और मोमिनों के दिलों को आरोग्य प्रदान करेगा ।14।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۵﴾

और उनके दिलों से क्रोध दूर कर देगा । और अल्लाह जिस पर चाहे प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुकता है । और अल्लाह बहुत जानने वाला (और) परम विवेकशील है ।15।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ ع

क्या तुम यह विचार करते हो कि तुम इसी प्रकार छोड़ दिए जाओगे जबकि अभी तक अल्लाह ने (परीक्षा में डाल कर) तुम में से ऐसे लोगों को छाँट कर अलग नहीं किया जिन्होंने जिहाद किया और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के अतिरिक्त किसी को गहरा मित्र नहीं बनाया । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदैव अवगत रहता है ।16। (रुकू $\frac{2}{8}$)

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَفِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۷﴾

मुश्रिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें जबकि वे स्वयं अपने विरुद्ध इनकार के साक्षी हैं । यही वे हैं जिनके कर्म नष्ट हो गए और वे अग्नि में दीर्घ काल तक पड़े रहने वाले हैं ।17।

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰۤى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝١٨

अल्लाह की मस्जिदें तो वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और परकालीन दिवस पर ईमान लाए और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे और अल्लाह के सिवा किसी से भय न करे। अत: सम्भव है कि ये लोग हिदायत प्राप्त लोगों में गिने जाएँ।18।

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٩

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिद-ए-हराम की देख भाल करना ऐसा ही समझ रखा है जैसे कोई अल्लाह पर और परकाल के दिन पर ईमान ले आए और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करे। वे अल्लाह के निकट कदापि एक समान नहीं हो सकते। और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत प्रदान नहीं करता।19।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝٢٠

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में अपने धन और जीवन के साथ जिहाद किया वे अल्लाह के निकट पदवी में बहुत बड़े हैं और यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं।20।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۙ ۝٢١

उनका रब्ब उन्हें अपनी ओर से दया, प्रसन्नता और ऐसे स्वर्ग का शुभ समाचार देता है जिनमें उनके लिए सदा रहने वाली नेमतें होंगी।21।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٢٢

वे सदा-सदा के लिए उनमें रहने वाले हैं। निस्सन्देह अल्लाह के पास एक बड़ा प्रतिफल है।22।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! यदि तुम्हारे पूर्वजों और भाइयों ने ईमान

وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾

की अपेक्षा इनकार को पसन्द कर लिया है तो तुम उन्हें (अपना) मित्र न बनाओ । और तुम में से जो भी उन्हें मित्र बनाएँगे तो यही हैं जो अत्याचारी हैं ।23।

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ
وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ
وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ
كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ
اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ
سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۴﴾ ع

तू कह दे कि यदि तुम्हारे पूर्वज और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे वंश तथा वह धन जो तुम कमाते हो और वह व्यापार जिसमें हानि का भय रखते हो और वे घर जो तुम्हें पसन्द हैं अल्लाह और उसके रसूल से तथा अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने की अपेक्षा तुम्हें अधिक प्रिय हैं तो फिर प्रतीक्षा करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय ले आए । और अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत प्रदान नहीं करता ।24। (रुकू $\frac{3}{9}$)

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ
وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ
فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ
الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ
مُّدْبِرِيْنَ ﴿۲۵﴾ ج

निस्सन्देह अल्लाह बहुत से रणक्षेत्रों में तुम्हारी सहायता कर चुका है और (विशेषकर) हुनैन के दिन भी, जब तुम्हारी अधिकता ने तुम्हें अहंकार में डाल दिया था । अत: वह तुम्हारे किसी काम न आ सकी और धरती विस्तृत होने के बावजूद तुम पर तंग हो गई । फिर तुम पीठ दिखाते हुए भाग खड़े हुए ।25।

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ
وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ
تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ
جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶﴾

फिर अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनों पर अपनी शांति उतारी और ऐसी सेनाएँ उतारीं जिन्हें तुम देख नहीं सकते थे । और उसने उन लोगों को अज़ाब दिया जिन्होंने इनकार किया था । और काफ़िरों का ऐसा ही प्रतिफल हुआ करता है ।26।

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾

फिर उसके बाद भी अल्लाह जिस पर चाहेगा प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुक जाएगा । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।27।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! मुश्रिक तो अपवित्र हैं । अतः वे अपने इस वर्ष के बाद मस्जिद-ए-हराम के निकट न फटकें । और यदि तुम्हें निर्धनता का भय हो तो यदि अल्लाह चाहे तो तुम्हें अपनी कृपा के साथ धनवान बना देगा । निस्सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।28।*

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا

अहले किताब में से उन से युद्ध करो जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न परकालीन दिवस पर और न ही उसे हराम ठहराते हैं जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम घोषित किया है । और न ही सत्यधर्म को धर्म के रूप में अपनाते हैं । यहाँ तक कि वे (अपने)

* मुश्रिकों के अपवित्र होने का तात्पर्य उनकी आस्था का अपवित्र होना है । शारीरिक अपवित्रता भाव नहीं । अतः मुश्रिकों को हज्ज से रोकने का तात्पर्य यह है कि उनको अपनी मुश्रिकाना रीतियों का पालन करते हुए हज्ज न करने दिया जाए । क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्व अज्ञानता के समय में वे कई बार वस्त्रहीन हो कर और अपने आराध्य मूर्तियों आदि को साथ ले कर हज्ज किया करते थे । अतएव हज़रत इमाम अबु-हनीफ़ा रह. और दूसरे हनफ़ी फ़ुक़हा (धर्मज्ञों) के अनुसार मुश्रिक मुसलमानों की प्रत्येक मस्जिद में यहाँ तक कि मस्जिद-ए-हराम में भी प्रवेश कर सकते हैं । हाँ उन्हें वहाँ अपनी मुश्रिकाना रीतियों के अनुसार हज्ज या उमरा करने की आज्ञा नहीं । अतः लिखा है : **आयत (मुश्रिक तो अपवित्र हैं । अतः वे मस्जिद–ए–हराम के निकट न फटकें) से यह अभिप्राय नहीं कि मस्जिद–ए–हराम में उनका प्रवेश निषिद्ध है बल्कि इससे यह अभिप्राय है कि उनका उन रीति रिवाजों के साथ हज्ज या उमरा करना मना है, जिन का पालन वे (इस्लाम से पूर्व) अज्ञानता के दिनों में करते थे ।** (अल-फ़िक़:-अल-इस्लामी व अदिल्लतुहू, तालीफ़-उद-दकतूर वहबतुज़्ज़ुहैली भाग 6 पृष्ठ 434, 435, दार-उल-फ़िक्र, दमिश्क़)

الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝٢٩ ع

हाथ से जिज़्या अदा करें और वे लाचार हो चुके हों ।29। (रुकू $\frac{4}{10}$)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ
النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى
يُؤْفَكُوْنَ ۝٣٠

और यहूदियों ने कहा कि उज़ैर अल्लाह का पुत्र है और ईसाइयों ने कहा कि मसीह अल्लाह का पुत्र है । यह केवल उनकी मौखिक बातें हैं । ये उन लोगों के कथन का नक़ल कर रहे हैं जिन्होंने (उनसे) पहले इनकार किया था। अल्लाह उन्हें नष्ट करे । ये कहाँ उल्टे फिराए जाते हैं ।30।

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ
اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣١

उन्होंने अपने धर्मज्ञों और राहिबों (अर्थात सन्तों) और इसी प्रकार मरियम के पुत्र मसीह को भी अल्लाह के अतिरिक्त रब्ब बना रखा है । हालाँकि उन्हें इसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया था कि वे एक ही उपास्य की उपासना करें । उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । जो वे शिर्क करते हैं उससे वह पवित्र है ।31।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ
بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ
وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٣٢

वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुहों से बुझा दें । और अल्लाह अपने नूर को सम्पूर्ण करने के सिवा (हर दूसरी बात) को रद्द करता है चाहे काफ़िर कैसा ही नापसंद करें ।32।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُشْرِكُوْنَ ۝٣٣ النصف

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे समस्त धर्मों पर विजय प्रदान करे चाहे मुश्रिक कैसा ही नापसंद करें ।33।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! निस्सन्देह धार्मिक विद्वानों और

وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ
وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ
وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٤﴾

राहिबों में से बहुत से ऐसे हैं जो लोगों का धन अवैध ढंग से खाते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं । और जो लोग सोना और चाँदी इकट्ठा करते हैं और उन्हें अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते तू उन्हें पीड़ाजनक अज़ाब का शुभ-समाचार दे दे ।34।

يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا
جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ۖ هَٰذَا
مَا كَنَزْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا
كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ ﴿٣٥﴾

जिस दिन नरक की आग उस (सोने चाँदी) पर भड़काई जाएगी । फिर उससे उनके माथे और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएँगी (तो कहा जाएगा) यह है जो तुमने अपनी जानों के लिए इकट्ठा किया था । अत: जो तुम इकट्ठा किया करते थे उसे चखो ।35।

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ
شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۗ ذَٰلِكَ
الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ
أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً
كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾

निस्सन्देह अल्लाह के निकट, जब से उसने आसमानों और धरती को पैदा किया है, अल्लाह की पुस्तक में महीनों की गिनती बारह ही हैं । उनमें से चार इज़्ज़त वाले हैं । यही क़ायम रहने वाला और क़ायम रखने वाला धर्म है । अत: इन (महीनों) में अपनी जानों पर अत्याचार न करना । और (दूसरे महीनों में) मुश्रिकों से इकट्ठे हो कर लड़ाई करो जिस प्रकार वे तुमसे इकट्ठे होकर लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है ।36।

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ
بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا
وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا

निस्सन्देह **नसी** इनकार में एक बढ़त है। इससे उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, गुमराह कर दिया जाता है । किसी वर्ष तो वे उसे वैध घोषित करते हैं और किसी वर्ष उसे अवैध घोषित कर

حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ
لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى
الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٣٧ ع

देते हैं। ताकि जिनको अल्लाह ने इज़्ज़त वाला (महीना) घोषित किया है उनकी गिनती पूरी करें, ताकि वे उसे वैध बना दें जिसे अल्लाह ने अवैध घोषित किया है। उनके लिए उनके कर्मों की बुराई सुन्दर करके दिखाई गई है। और अल्लाह काफ़िर लोगों को हिदायत प्रदान नहीं करता।37।* (रुकू $\frac{5}{11}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ
انْفِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى
الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ
الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِى
الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝٣٨

हे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम्हें क्या हो जाता है जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह के मार्ग में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम बोझल बन कर धरती की ओर झुक जाते हो। क्या तुम परलोक के बदले संसार के जीवन से संतुष्ट हो गए हो? अत: सांसारिक जीवन की सामग्री परलोक में किंचित मात्र के सिवा कुछ भी (प्रमाणित) न होगी।38।

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ
وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ
شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝٣٩

यदि तुम (जिहाद के लिए) न निकलोगे तो वह तुम्हें एक पीड़ाजनक अज़ाब देगा और तुम्हारे स्थान पर एक और जाति को बदल कर लाएगा और तुम उसे (अर्थात अल्लाह को) कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह प्रत्येक विषय पर जिसे वह चाहे सदा सामर्थ्य रखता है।39।

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِىَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِى الْغَارِ

यदि तुम इस (रसूल) की सहायता न भी करो तो अल्लाह (पहले भी) इसकी सहायता कर चुका है जब इनकार करने

* **नसी** का तात्पर्य यह है कि इस्लाम से पूर्व अरब वाले इज़्ज़त वाले महीनों को अपनी मर्ज़ी से आगे पीछे कर देते थे। ताकि इज़्ज़त वाले महीनों में लड़ाई आदि जो अवैध कर्म हैं उन्हें कर सकें और बाद में कुछ अन्य महीनों को इज़्ज़त वाले महीने घोषित कर दें।

اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۴۰﴾

वालों ने उसे (देश से) इस स्थिति में निकाल दिया था कि वह दो में से एक था । जब वे दोनों गुफा में थे और वह अपने साथी से कह रहा था कि दु:खी न हो, निस्सन्देह अल्लाह हमारे साथ है । अत: अल्लाह ने उस पर अपनी शांति अवतरित की और ऐसी सेनाओं से उसकी सहायता की जिनको तुम ने कभी नहीं देखा । और उसने उन लोगों की बात नीची कर दिखायी जिन्होंने इनकार किया था । और अल्लाह ही की बात सर्वोपरि होती है । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील वाला है ।40।

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾

(तुम) हल्के भी और भारी भी निकल खड़े हो और अल्लाह के मार्ग में अपने धन और जीवन के साथ जिहाद करो । यदि तुम ज्ञान रखते हो तो यही तुम्हारे लिए उत्तम है ।41।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۴۲﴾ ع

यदि दूरी कम होती और यात्रा आसान होती तो वे अवश्य तेरे पीछे चलते । परन्तु कठिनाइयाँ झेलना उन के लिए बहुत दूर (की बात) है । वे अवश्य अल्लाह की सौगन्ध खाएँगे कि यदि हमें सामर्थ्य होता तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकलते । वे अपनी ही जानों को नष्ट कर रहे हैं । और अल्लाह जानता है कि निस्सन्देह ये झूठे लोग हैं ।42। (रुकू $\frac{6}{12}$)

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ

अल्लाह तुझे माफ़ करे । तूने उन्हें आज्ञा ही क्यों दी ? यहाँ तक कि उन लोगों का तुझे भली-भाँति पता लग जाता जो सच

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾

कहते थे और तू झूठों को भी पहचान लेता ।43।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾

जो लोग अल्लाह और परकाल के दिन पर ईमान लाते हैं, वे तुझ से अपने धन और जीवन के साथ जिहाद करने से छूट नहीं माँगते । और अल्लाह मुत्तक़ियों को ख़ूब जानता है ।44।

اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾

केवल वही लोग तुझ से छूट माँगते हैं जो अल्लाह और परकाल के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शंका में घिरे हैं और वे अपनी शंका के कारण असमंजस में पड़े हुए हैं ।45।

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

और यदि उनका (जिहाद के लिए) निकलने का इरादा होता तो वे अवश्य उसकी तैयारी भी करते । परन्तु अल्लाह ने पसंद ही नहीं किया कि वे (इस विशेष उद्देश्य के लिए) निकल खड़े हों । और उसने उन्हें (वहीं) पड़ा रहने दिया। और (उन्हें) कहा गया कि बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो ।46।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاۡاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

यदि वे तुम में सम्मिलित होकर (जिहाद के लिए) निकलते तो अव्यवस्था फैलाने के सिवा तुम्हें किसी चीज़ में न बढ़ाते । और तुम्हारे लिए उपद्रव की कामना करते हुए तुम्हारे बीच तेज़ तेज़ सवारियाँ दौड़ाते । जबकि तुम्हारे बीच उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनने वाले भी हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को ख़ूब जानता है ।47।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ

निस्सन्देह पहले भी वे उपद्रव चाहते थे और उन्होंने तेरे सामने मामले उलट-

الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

पुलट कर प्रस्तुत किए । यहाँ तक कि सत्य आ गया और अल्लाह का निर्णय प्रकट हो गया जबकि वे (उसे) बहुत नापसंद कर रहे थे ।48।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۭ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ۭ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

और उन में वह भी है जो कहता है मुझे छूट दे दे और मुझे परीक्षा में न डाल । सावधान ! वे तो परीक्षा में पड़ चुके हैं । और निस्सन्देह नरक क़ाफ़िरों को प्रत्येक ओर से घेर लेने वाला है ।49।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾

यदि तुझे कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है । और यदि तुझ पर कोई विपत्ति आ पड़े तो कहते हैं कि हम तो अपना मामला पहले ही (अपने हाथ में) ले बैठे थे । और वे (खुशी से) इठलाते हुए पीठ फेर कर चले जाते हैं ।50।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

तू (उनसे) कह दे कि हमें तो कोई विपत्ति नहीं पहुँचेगी सिवाय उसके जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख रखा है । वही हमारा मालिक है । अतएव चाहिए कि अल्लाह पर ही मोमिन भरोसा करें ।51।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۭ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ڮ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

तू कह दे कि क्या तुम हमारे लिए दो अच्छी बातों में से एक के सिवा भी किसी और की आशा रख सकते हो । जबकि हम तुम्हारे लिए इस प्रतीक्षा में हैं कि अल्लाह स्वयं अपनी ओर से या फिर हमारे हाथों से तुम पर अज़ाब भेजे । अत: तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी निश्चित रूप से तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाले हैं ।52।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۭ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾

तू कह दे कि चाहे तुम इच्छापूर्वक खर्च करो या अनिच्छापूर्वक । तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा । निस्सन्देह तुम दुराचारी लोग हो ।53।

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

और उन के धन को स्वीकार किये जाने से उन्हें किसी चीज़ ने वंचित नहीं किया सिवाय इसके कि वे अल्लाह और उसके रसूल का इनकार कर बैठे थे । और इसी प्रकार नमाज़ के निकट अत्यन्त आलस्य के साथ आते थे और अत्यन्त घृणा भाव अनुभव करते हुए (अल्लाह के लिए) खर्च करते थे ।54।

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

अतः उनके धन और उनकी संतान तेरे लिए कोई आकर्षण उत्पन्न न करें । निस्सन्देह अल्लाह की यही इच्छा है कि उनको उन्हीं के द्वारा इस संसार के जीवन ही में अज़ाब दे । और उनके प्राण ऐसी अवस्था में निकलें कि वे काफ़िर हों ।55।

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۭ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾

और वे अल्लाह की कसमें खाते हैं कि निस्सन्देह वे तुम्हीं में से हैं । हालाँकि वे तुम में से नहीं हैं । परन्तु वे कायर लोग हैं ।56।

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾

यदि वे कोई शरणस्थल या गुफा अथवा कोई छिपने का स्थान पाएँ तो वे अवश्य उसकी ओर इस प्रकार मुड़कर दौड़ेंगे कि तेज़ी से झपट रहे होंगे ।57।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾

और उनमें से ऐसे भी हैं जो तुझ पर दान के बारे में आरोप लगाते हैं । यदि उन (दान समूह) में से कुछ उन्हें दे दिया जाए तो खुश हो जाते हैं । और यदि उन्हें उन में से न दिया जाए तो वे तुरन्त रूठ जाते हैं ।58।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

और काश वे उस पर संतुष्ट हो जाते जो अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें प्रदान किया । और (वे) कहते हैं कि अल्लाह हमारे लिए पर्याप्त है (और) अल्लाह अवश्य हमें अपनी कृपा से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा और उसका रसूल भी । निस्सन्देह हम अल्लाह ही की ओर हार्दिक इच्छा से आकृष्ट हैं ।59।

(रुकू $\frac{7}{13}$)

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾

दान (के रूप में प्राप्त धन) तो केवल अभावग्रस्तों और दीन दु:खियों तथा उन (दान) की व्यवस्था करने वालों और जिन की दिलजोई की जा रही हो और दासों को मुक्त कराने और चट्टी में दबे हुए लोगों तथा अल्लाह के मार्ग में साधारणतया खर्च करने वालों एवं यात्रियों के लिए हैं । यह अल्लाह की ओर से एक कर्त्तव्य है और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।60।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِىَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾

और उन में से ऐसे लोग भी हैं जो नबी को दु:ख पहुँचाते हैं और कहते हैं यह तो कान ही कान है । तू कह दे, हाँ वह सिर से पाँव तक कान तुम्हारी भलाई के लिए है । वह अल्लाह पर ईमान लाता है और मेमिनों की मानता है । और तुम में से जो ईमान लाए हैं उनके लिए कृपा (स्वरूप) है । और वे लोग जो अल्लाह के रसूल को दु:ख देते हैं उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।61।

يَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ لَكُمۡ لِيُرۡضُوۡكُمۡ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗۤ اَحَقُّ اَنۡ يُّرۡضُوۡهُ اِنۡ كَانُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٦٢﴾

वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें संतुष्ट करें हालाँकि यदि वे मेमिन थे तो अल्लाह और उसके रसूल इस बात के अधिक हकदार हैं कि वे उन्हें संतुष्ट करते ।62।

اَلَمۡ يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّهٗ مَنۡ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيۡهَا ؕ ذٰلِكَ الۡخِزۡىُ الۡعَظِيۡمُ ﴿٦٣﴾

क्या उन्हें जानकारी नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल से शत्रुता करता है तो उसके लिए नरक की आग है जिसमें वह बहुत लम्बे समय तक रहने वाला है । वह बहुत बड़ी रुसवाई है ।63।

يَحۡذَرُ الۡمُنٰفِقُوۡنَ اَنۡ تُنَزَّلَ عَلَيۡهِمۡ سُوۡرَةٌ تُنَبِّئُهُمۡ بِمَا فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ قُلِ اسۡتَهۡزِءُوۡا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخۡرِجٌ مَّا تَحۡذَرُوۡنَ ﴿٦٤﴾

मुनाफ़िक़ डरते हैं कि उनके विरुद्ध कोई सूर: अवतरित न कर दी जाए जो उनको उसकी जानकारी दे दे जो उनके दिलों में है । तू कह दे कि (चाहे) खिल्ली उड़ाते रहो । जिसका तुम्हें डर है, अल्लाह उसे अवश्य प्रकट करके रहेगा ।64।

وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ لَيَقُوۡلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوۡضُ وَنَلۡعَبُ ؕ قُلۡ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوۡلِهٖ كُنۡتُمۡ تَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٦٥﴾

और यदि तू उनसे पूछे तो अवश्य कहेंगे हम तो केवल गप-शप में व्यस्त थे और खेलें खेल रहे थे । तू पूछ, क्या अल्लाह और उसके चिह्नों और उसके रसूल से तुम हँसी ठट्ठा कर रहे थे ? ।65।

لَا تَعۡتَذِرُوۡا قَدۡ كَفَرۡتُمۡ بَعۡدَ اِيۡمَانِكُمۡ ؕ اِنۡ نَّعۡفُ عَنۡ طَآئِفَةٍ مِّنۡكُمۡ نُعَذِّبۡ طَآئِفَةً ۢ بِاَنَّهُمۡ كَانُوۡا مُجۡرِمِيۡنَ ﴿٦٦﴾

कोई बहाना न बनाओ । निस्सन्देह तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो चुके हो । यदि हम तुम में से किसी एक गिरोह को क्षमा कर दें तो किसी दूसरे गिरोह को अज़ाब भी दे सकते हैं । इस कारण कि वे अवश्य अपराधी हैं ।66। (रुकू $\frac{8}{14}$)

اَلۡمُنٰفِقُوۡنَ وَالۡمُنٰفِقٰتُ بَعۡضُهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡضٍ ۘ يَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمُنۡكَرِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ

मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ एक दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं । वे बुरी बातों का आदेश देते हैं और अच्छी बातों से रोकते हैं । और अपनी

الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا
اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾

मुट्ठियाँ (अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने से) बन्द रखते हैं । वे अल्लाह को भूल गए तो उसने भी उन्हें भुला दिया। निस्सन्देह मुनाफ़िक़ ही हैं जो दुराचारी लोग हैं ।67।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ
نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ
وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾

अल्लाह ने मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों और काफ़िरों से नरक की आग का वायदा किया है । वे लम्बे समय तक इस में (पड़े) रहने वाले हैं । यह उनके लिए पर्याप्त होगा । और अल्लाह ने उन पर ला'नत डाली है और उनके लिए एक ठहर जाने वाला अज़ाब (निश्चित) है ।68।

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً
وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا
اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ
وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

उन लोगों की भाँति जो तुम से पहले थे । वे शक्ति में तुम से अधिक और धन एवं संतान में बढ़ कर थे । उन्होंने अपने भाग्य से जितना लाभ उठाना था उठा लिया । तुम भी अपने भाग्य से लाभ उठा चुके हो । जिस प्रकार उन लोगों ने जो तुमसे पहले थे अपने भाग्य से लाभ उठाया । और तुम भी व्यर्थ की बातों में तल्लीन हो जैसे वे व्यर्थ की बातों में तल्लीन रहे । यही वे लोग हैं जिनके कर्म इहलोक में भी और परलोक में भी नष्ट हो गए । और यही वे लोग हैं जो वास्तव में घाटा पाने वाले हैं ।69।

اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ
نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ

क्या उनके पास उन लोगों का समाचाार नहीं आया जो उनसे पहले थे । (अर्थात्) नूह की जाति का और आद एवं समूद की (जाति) का तथा इब्राहीम की जाति और मदयन वालों

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾

का और उन बस्तियों का जो उलट-पुलट हो गईं । उनके पास भी उनके रसूल खुले-खुले निशान ले कर आए । अतः अल्लाह तो ऐसा न था कि उन पर अत्याचार करता, परन्तु वे स्वयं ही अपनी जानों पर अत्याचार किया करते थे ।70।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

وقف لازم

मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ एक दूसरे के मित्र हैं । वे अच्छी बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं । और नमाज़ को क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं । तथा अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं । यही हैं जिन पर अल्लाह अवश्य कृपा करेगा। निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।71।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾ ع

अल्लाह ने मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों से ऐसे स्वर्गों का वायदा किया है जिनके दामन में नहरें बहती होंगी। वे उनमें सदा रहने वाले हैं । इसी प्रकार बहुत पवित्र निवास स्थानों का भी जो सदा रहने वाले स्वर्गों में स्थित होंगे । तथापि अल्लाह की प्रसन्नता सब से बढ़ कर है । यही बहुत बड़ी सफलता है ।72।

(रुकू $\frac{9}{15}$)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾

हे नबी ! काफ़िरों एवं मुनाफ़िक़ों से जिहाद कर और उन पर सख़्ती कर । और उनका ठिकाना नरक है और क्या ही बुरा ठिकाना है ।73।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا
كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ
وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ
اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ
فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا
يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِى الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ
وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾

वे अल्लाह की कसमें खाते हैं (कि) उन्होंने (कुछ) नहीं कहा। हालाँकि वे निश्चित रूप से कुफ़्र का कलिमा (इन्कारोक्ति) कह चुके हैं जबकि वे इस्लाम स्वीकार करने के बाद काफ़िर हो गए। और वे ऐसे दृढ़ संकल्प रखते थे जिन्हें वे प्राप्त न कर सके। और उन्होंने (मोमिनों से) केवल इस कारण शत्रुता की कि अल्लाह और उसके रसूल ने उनको अपनी अनुकंपा से मालामाल कर दिया। अतः यदि वे प्रायश्चित कर लें तो उनके लिए अच्छा होगा। हाँ यदि वे लौट जाएँ तो अल्लाह उन्हें इहलोक और परलोक में पीड़ाजनक अज़ाब देगा। और उनके लिए सारी धरती में न कोई मित्र होगा और न कोई सहायक।74।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ
فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

और उन्हीं में से ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से प्रण किया था कि यदि वह हमें अपनी अनुकंपा से कुछ प्रदान करे तो हम अवश्य दान देंगे और हम अवश्य नेक लोगों में से हो जाएँगे।75।

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا
وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

अतः जब उसने अपनी अनुकंपा से उन्हें प्रदान किया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और वे विमुख होकर (अपनी प्रतिज्ञा से) पीछे हट गये।76।

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ
يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ
وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾

अतः परिणामस्वरूप अल्लाह ने उनके दिलों में उस दिन तक के लिए कपटता डाल दी जब वे उस से मिलेंगे। क्योंकि उन्होंने अल्लाह से वचन-भंग किया और वे झूठ बोलते थे।77।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۚ﴿۷۸﴾

क्या उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उनके रहस्यों और उनके गुप्त परामर्शों को जानता है । और अल्लाह समस्त अप्रत्यक्ष (विषयों) का बहुत अधिक ज्ञान रखता है ।78।

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۹﴾

वे लोग जो मोमिनों में से हार्दिक रुचि से नेकी करने वालों पर दान के विषय में आरोप लगाते हैं और उन लोगों पर भी जो अपने परिश्रम के अतिरिक्त (अपने पास) कुछ नहीं पाते । अत: वे उनसे उपहास करते हैं । अल्लाह उनके उपहास का उत्तर देगा और उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।79।

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۧ﴿۸۰﴾

तू उनके लिए क्षमायाचना कर अथवा न कर । यदि तू उनके लिए सत्तर बार भी क्षमायाचना करे तब भी अल्लाह कदापि उन्हें क्षमा नहीं करेगा । क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इनकार किया । और अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत प्रदान नहीं करता ।80।

(रुकू $\frac{10}{16}$)

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۱﴾

पीछे छोड़ दिए जाने वाले अल्लाह के रसूल के विरुद्ध अपने बैठे रहने पर प्रसन्न हो रहे हैं । और उन्होंने नापसंद किया कि अल्लाह के मार्ग में अपने धन और अपने जीवन के साथ जिहाद करें । और वे कहते थे कि तेज़ गर्मी में यात्रा पर न निकलो । तू कह दे कि नरक की अग्नि जलन की दृष्टि से अधिक तेज़ है । काश ! वे समझ सकते ।81।

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

अत: जो वे कमाई किया करते थे उसके प्रतिफल स्वरूप चाहिए कि वे थोड़ा हँसें और अधिक रोयें ।82।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ
فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ
تَخْرُجُوْا مَعِىَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِىَ
عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ
مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

अत: यदि अल्लाह तुझे उनमें से किसी गिरोह की ओर दोबारा ले जाए और वे तुझ से (साथ) निकलने की आज्ञा माँगे, तो तू उन्हें कह दे कि कदापि तुम भविष्य में मेरे साथ (जिहाद के लिए) नहीं निकलोगे और कदापि मेरे साथ होकर शत्रु से युद्ध नहीं करोगे । निस्सन्देह तुम पहली बार (घर) बैठे रहने पर संतुष्ट हो गए थे । अत: अब पीछे रहने वालों के साथ ही बैठे रहो ।83।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا
وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾

और तू उन में से किसी मरने वाले की कभी (जनाज़: की) नमाज़ न पढ़ और उसकी क़ब्र पर (दुआ के लिए) कभी खड़ा न हो । निस्सन्देह उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इनकार कर दिया है और वे इस दशा में मरे कि वे दुराचारी थे ।84।

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا
يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الدُّنْيَا
وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

और उनके धन और उनकी संतान तेरे लिए कोई आकर्षण उत्पन्न न करें । अल्लाह केवल यह चाहता है कि उन ही के द्वारा उन्हें इस संसार में ही अज़ाब दे । और उनकी जानें इस दशा में निकलें कि वे काफ़िर हों ।85।

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا

और जब भी कोई सूर: उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान ले आओ और उसके रसूल के साथ सम्मिलित होकर जिहाद करो तो उन में से धनवान तुझ

الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُن مَّعَ الْقَاعِدِينَ ۝٨٦

से छूट चाहते हैं । और कहते हैं हमें छोड़, ताकि हम बैठे रहने वालों के साथ हो जाएँ ।86।

رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝٨٧

वे इस बात पर संतुष्ट हो गए हैं कि वे पीछे बैठे रह जाने वाली स्त्रियों के साथ हो जाएँ । और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई है । अत: वे समझ नहीं सकते ।87।

لَٰكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝٨٨

परन्तु रसूल और वे लोग जो उसके साथ ईमान लाए, वे अपने धन और जीवन के साथ जिहाद करते हैं । और यही हैं जिनके लिए समस्त भलाइयाँ (निश्चित) हैं और ये ही हैं जो सफल होने वाले हैं ।88।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝٨٩ ع

अल्लाह ने उनके लिए ऐसे स्वर्ग तैयार कर रखे हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं । यह बहुत बड़ी सफलता है ।89।

(रुकू $\frac{11}{17}$)

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝٩٠

और मरुभूमि निवासियों में से भी बहाने करने वाले आए ताकि उन्हें (पीछे रहने की) आज्ञा दी जाए । और (इस प्रकार) वे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोला, वे पीछे बैठे रहे । उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया अवश्य पीड़ाजनक अज़ाब पहुँचेगा ।90।

لَّيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ مَا

न दुर्बलों पर आपत्ति है और न रोगियों पर और न उन लोगों पर जो (अपने पास) खर्च करने के लिए कुछ नहीं पाते । बशर्ते कि वे अल्लाह और उसके रसूल के प्रति निष्ठावान हों । उपकार

عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿۹۱﴾

करने वालों पर पकड़ का कोई औचित्य नहीं । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।91।

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَاۤ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ؕ﴿۹۲﴾

और न उन लोगों पर कोई आपत्ति है कि जब वे तेरे पास आते हैं ताकि तू उन्हें (जिहाद के लिए) किसी सवारी पर बिठा ले । तो तू उन्हें उत्तर देता है मैं तो कुछ नहीं पाता जिस पर तुम्हें सवार करा सकूँ । इस पर वे इस प्रकार वापस होते हैं कि उनकी आँखें इस दु:ख में आँसू बहा रही होती हैं कि वे कुछ नहीं रखते जिसे वे (अल्लाह के मार्ग में) खर्च कर सकें ।92।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۳﴾

पकड़ का औचित्य तो केवल उन लोगों के विरुद्ध है जो तुझ से छूट माँगते हैं हालाँकि वे धनवान हैं । वे इस बात पर संतुष्ट हो गए कि वे पीछे बैठे रह जाने वाली स्त्रियों के साथ हो जाएँ । और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी । अत: वे कोई ज्ञान नहीं रखते ।93।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ۭ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ۭ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۹۴

जब तुम उनकी ओर वापस आओगे तो वे तुम से क्षमा याचना करेंगे । तू कह दे कोई बहाना न करो । हम कदापि तुम पर भरोसा नहीं करेंगे । अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात से अवगत करा दिया है । और अल्लाह निस्सन्देह तुम्हारे कर्मों को देख रहा है, इसी प्रकार उसका रसूल भी। फिर (ऐसा होगा कि) तुम अदृश्य एवं दृश्य का ज्ञान रखने वाले की ओर लौटाए जाओगे । फिर वह तुम्हें उसकी सूचना देगा जो तुम किया करते थे ।94।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۡ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝۹۵

वे निस्सन्देह तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएँगे जब तुम उनकी ओर लौटोगे ताकि तुम उन्हें छोड़ दो । अत: (अवश्य) उन्हें छोड़ दो । वे निश्चित रूप से अपवित्र हैं । और जो वे अर्जित करते थे उसके प्रतिफल स्वरूप उनका ठिकाना नरक है ।95।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝۹۶

वे तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ । अत: यदि तुम उन से राज़ी भी हो जाओ तो भी अल्लाह दुराचारी लोगों से कदापि राज़ी नहीं होता ।96।

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰي رَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۹۷

मरुभूमि निवासी इनकार करने एवं कपटता करने में सबसे अधिक बढ़े हुए हैं । और अधिक झुकाव (इस ओर) रखते हैं कि जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल पर अवतरित किया है उसकी सीमाओं को न पहचानें । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।97।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾

और मरुभूमि निवासियों में से ऐसे भी हैं कि जो भी वे (अल्लाह के मार्ग में) खर्च करते हैं उसे बोझ समझते हैं । और तुम पर समय की मारों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। समय की मारें तो उन्हीं पर पड़ने वाली हैं । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।98।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾ ع

और (इन) मरुभूमि निवासियों में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाते हैं । और जो कुछ अल्लाह के मार्ग में खर्च करते हैं उसे अल्लाह के सान्निध्य प्राप्ति का उपाय और रसूल की दुआएँ लेने का एक माध्यम समझते हैं । सुनो ! कि निस्सन्देह यह उन के लिए सान्निध्य प्राप्ति का उपाय ही है । अल्लाह अवश्य उन्हें अपनी करुणा में प्रविष्ट करेगा । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बाार दया करने वाला है ।99। (रुकू $\frac{12}{1}$)

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾

और मुहाजिरों और अन्सार में से आगे निकल जाने वाले प्रथम श्रेणी के तथा वे लोग जिन्होंने अच्छे कर्मों के साथ उनका अनुसरण किया । अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया और वे उस से प्रसन्न हो गए और उसने उनके लिए ऐसे स्वर्ग तैयार किए हैं जिन के दामन में नहरें बहती हैं। वे सदा उन में रहने वाले हैं । यह बहुत बड़ी सफलता है ।100।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا

और तुम्हारे इर्द-गिर्द के मरुभूमि निवासियों में से मुनाफ़िक़ भी हैं और इसी प्रकार मदीना में बसने वालों में से

عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ
نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ
يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۚ﴿۱۰۱﴾

भी हैं । वे कपटता पर जम चुके हैं । तू उन्हें नहीं जानता (परन्तु) हम उन्हें जानते हैं । हम उन्हें दो बार अज़ाब देंगे, फिर वे बड़े अज़ाब की ओर लौटा दिए जाएँगे ।101।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا
عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ
يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰۲﴾

और कुछ दूसरे हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया । उन्होंने अच्छे कर्मों के साथ दूसरे बुरे कर्म मिला जुला दिए । संभव है कि अल्लाह उन पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुके । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।102।

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ
صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿۱۰۳﴾

तू उनके धन में से दान स्वीकार कर लिया कर । इसके द्वारा तू उन्हें पवित्र करेगा एवं उनकी शुद्धि करेगा । और उनके लिए दुआ किया कर । निस्सन्देह तेरी दुआ उनके लिए शांति का कारण होगी । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।103।

اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾

क्या उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि बस अल्लाह ही अपने भक्तों का प्रायश्चित स्वीकार करता है । और दान स्वीकार करता है । और अल्लाह ही बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।104।

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ
وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى
عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا

और तू कह दे कि तुम कर्म करते रहो । अत: अल्लाह तुम्हारे कर्म को देख रहा है और उसका रसूल भी और सब मोमिन भी (देख रहे हैं) । और तुम (अन्तत:) अदृश्य और दृश्य का ज्ञान रखने वाले की ओर लौटाए जाओगे फिर वह तुम्हें

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

उससे सूचित करेगा जो तुम किया करते थे ।105।

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

और कुछ दूसरे लोग हैं जो अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा में छोड़े गए हैं । चाहे वह उन्हें अज़ाब दे अथवा उन पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुक जाए। और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।106।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًاۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾

और वे लोग जिन्होंने कष्ट पहुँचाने और कुफ्र फैलाने और मोमिनों के मध्य फूट डालने और ऐसे व्यक्ति को जो अल्लाह और उसके रसूल से पहले ही से लड़ाई कर रहा है घात लगाने का स्थान उपलब्ध कराने के लिए एक मस्जिद बनाई । वे ज़रूर क़समें खाएँगे कि हम भलाई के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते थे। जबकि अल्लाह गवाही देता है कि निस्सन्देह वे झूठे हैं ।107।*

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

तू उस में कभी खड़ा न हो । निस्सन्देह वह मस्जिद जिसकी नींव पहले दिन ही से तक़वा पर रखी गई हो अधिक हक़दार है कि तू उसमें (नमाज़ के लिए) खड़ा हो । उस में ऐसे पुरुष हैं जो इच्छा रखते हैं कि वे पवित्र हो जाएँ । और अल्लाह पवित्र होने वालों से प्रेम करता है ।108।

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى

अत: जिसने अपने भवन की नींव अल्लाह के तक़वा और (उसकी) प्रसन्नता पर रखी हो क्या वह उत्तम है

---

* **मस्जिद–ए–ज़िरार** (कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से निर्मित मस्जिद) को गिराने का स्पष्ट रूप से आदेश इस लिए दिया गया है कि वह इस्लाम के विरुद्ध मुश्रिकों की गुप्त कार्यवाहियों के लिए एक अड्डा बना हुआ था । अन्यथा मस्जिदों का सम्मान अनिवार्य है ।

شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

अथवा वह जिसने अपने भवन की नींव एक खोखले, धराशायी हो जाने वाले छोर पर रखी हो ? अतः वह उसे नरक की अग्नि में साथ ले गिरेगी । और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।109।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾ ع

उन का भवन जो उन्होंने बनाया है सदा उनके दिलों में शंका उत्पन्न करता रहेगा। सिवाय इसके कि उनके दिल (अल्लाह के भय से) टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।110। (रुकू $\frac{13}{2}$)

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ ۫ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾

निस्सन्देह अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानें और उनके धन ख़रीद लिए हैं ताकि इसके बदले में उन्हें स्वर्ग मिले । वे अल्लाह के मार्ग में लड़ाई करते हैं, फिर वे वध करते हैं और वध किए जाते हैं । उसके ज़िम्मे यह पक्का वायदा है जो तौरात और इंजील और क़ुर्आन में (वर्णित) है । और अल्लाह से बढ़ कर कौन अपने वचन को पूरा करने वाला है। अतः तुम अपने उस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने उसके साथ किया है और यही बहुत बड़ी सफलता है ।111।

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ

प्रायश्चित करने वाले, उपासना करने वाले, स्तुति करने वाले, (अल्लाह के मार्ग में) यात्रा करने वाले, (अल्लाह के लिए) रुकू करने वाले, सजदः करने वाले, नेक बातों का आदेश देने वाले और बुरी बातों से रोकने वाले और अल्लाह की सीमाओं की सुरक्षा करने

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

वाले (सब सच्चे मोमिन हैं) और तू मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे ।112।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾

नबी के लिए संभव नहीं और न ही उनके लिए जो ईमान लाए हैं कि वे मुश्रिकों के लिए क्षमायाचना करें । चाहे वे (उनके) निकट सम्बन्धी ही क्यों न हों, जबकि उन पर प्रकट हो चुका हो कि वे नरकगामी हैं ।113।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

और इब्राहीम का अपने पिता के लिए क्षमायाचना करना केवल उस वादा के कारण था जो उसने उस से किया था । अत: जब उस पर यह बात ख़ूब खुल गई कि वह अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे विमुख हो गया । निस्सन्देह इब्राहीम बहुत कोमल हृदयी (और) शहनशील था ।114।*

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

और अल्लाह ऐसा नहीं कि लोगों को हिदायत देने के बाद पथभ्रष्ट ठहरा दे । यहाँ तक कि उन पर ख़ूब खोल दिया हो कि वे किस किस चीज़ से पूरी तरह बचें। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय को ख़ूब जानने वाला है ।115।

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

निस्सन्देह अल्लाह ही है जिसकी आसमानों और धरती की बादशाही है । वह जीवित करता है और मारता भी है ।

* आयत सं. 113-114 किसी नबी अथवा मोमिनों के लिए उचित नहीं है कि वे ऐसे व्यक्ति के लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत (अल्लाह से क्षमाप्रार्थना) करें जो शिर्क की अवस्था में मर गया हो । जहाँतक हज़रत इब्राहीम अलै. के अपने पिता के लिए क्षमाप्रार्थना करने का सम्बन्ध है तो चूँकि उन्होंने अपने पिता को वचन दिया था कि मैं आपके लिए क्षमा प्रार्थना करूँगा । इस कारण कुछ समय तक अल्लाह तआला ने उन्हें अपना वचन पूरा करने का अवसर प्रदान किया । परन्तु जब उन पर प्रकट कर दिया गया कि वह अल्लाह का शत्रु था तो हज़रत इब्राहीम अलै. उस के लिए क्षमा प्रार्थना करने से रुक गए ।

مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾

और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई मित्र और सहायक नहीं ।116।

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿١١٧﴾

निस्सन्देह अल्लाह नबी पर और मुहाजिरों एवं अन्सार पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुका । जिन्होंने तंगी के समय उसका अनुसरण किया था । संभव था कि इसके बाद उनमें से एक पक्ष के दिल टेढ़े हो जाते, फिर भी उसने उनका प्रायश्चित स्वीकार किया । निस्सन्देह वह उनके लिए बहुत ही दयालु (और) बार-बार कृपा करने वाला है ।117।

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾ ع

और उन तीनों पर भी (अल्लाह प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुका) जो पीछे छोड़ दिए गए थे । यहाँ तक कि जब धरती उन पर विस्तृत होते हुए भी संकुचित हो गई । और उनकी जानें तंगी का अनुभव करने लगीं । और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह (के अज़ाब) से (बचने के लिए) उसी की ओर (जाने के अतिरिक्त) कोई शरणस्थान नहीं । फिर वह स्वीकृति देने की ओर प्रवृत्त होते हुए उन पर झुक गया ताकि वे प्रायश्चित कर सकें । निस्सन्देह अल्लाह ही बार-बार प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।118।* (रुकू $\frac{14}{3}$)

---

* यहाँ उन तीन सहाबा रजि. का वर्णन है जो तबूक युद्ध से पीछे रहे और जब उन से इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने झूठ का सहारा नहीं लिया । अन्यथा कई मुनाफ़िक़ थे जिन्होंने झूठे बहाने बना लिए थे । उन को तो कोई सज़ा नहीं दी गई केवल उन तीनों को सामाजिक बहिष्कार की सज़ा मिली और फिर अल्लाह के आदेश से यह सज़ा माफ़ कर दी गई ।→

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَكُونُوا۟ مَعَ
ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿١١٩﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक़्वा धारण करो और सत्यवादियों के साथ हो जाओ ।119।

مَا كَانَ لِأَهْلِ ٱلْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ
ٱلْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا۟ عَن رَّسُولِ ٱللَّهِ
وَلَا يَرْغَبُوا۟ بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا
مَخْمَصَةٌ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَلَا يَطَـُٔونَ مَوْطِئًا
يَغِيظُ ٱلْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا
إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِۦ عَمَلٌ صَٰلِحٌ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾

मदीना वासियों के लिए और उनके इर्द-गिर्द बसने वाले ग्रामीणों के लिए उचित न था कि अल्लाह के रसूल को छोड़ कर पीछे रह जाते । और न ही यह उचित था कि उस के मुक़ाबले में अपने आप को पसन्द कर लेते । (यह प्राणों का बलिदान आवश्यक था) क्योंकि वास्तविकता यही है कि उन्हें अल्लाह के मार्ग में जो प्यास और कठिनाई और भूख की विपत्ति पहुँचती है और वे ऐसे मार्गों पर चलते हैं जिन पर (उनका) चलना काफ़िरों को गुस्सा दिलाता है । और वे शत्रु से (युद्ध के समय) जो कुछ प्राप्त करते हैं उसके बदले उनके हक़ में एक नेक-कर्म अवश्य लिख दिया जाता है । अल्लाह उपकार करने वालों का प्रतिफल कदापि नष्ट नहीं करता ।120।

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ
لِيَجْزِيَهُمُ ٱللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

इसी प्रकार वे न कोई छोटा खर्च करते हैं और न कोई बड़ा और न ही किसी घाटी की दूरी लाँघते हैं परन्तु (यह कर्म) उनके हक़ में लिख दिया जाता है । ताकि जो उत्तम कर्म वे किया करते थे अल्लाह उन्हें उनके अनुसार प्रतिफल प्रदान करे ।121।

←इस प्रसंग में इस आयत से यह भी ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला के अस्तित्व और क़यामत पर पक्का विश्वास था, वरना इन तीनों से मुनाफ़िक़ अधिक सज़ा के योग्य थे जिन्होंने झूठे बहाने प्रस्तुत किए । परन्तु आप सल्ल. ने उनको कोई सज़ा नहीं दी बल्कि उन की सज़ा का मामला परकाल के दिन पर छोड़ दिया ।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾ ع

मोमिनों के लिए संभव नहीं कि वे सब के सब इकट्ठे निकल खड़े हों । अत: ऐसा क्यों नहीं होता कि उन के हर समुदाय में से एक गिरोह निकल खड़ा होता कि वह धर्म का ज्ञान प्राप्त करे और जब वे अपनी जाति की ओर वापस लौटें तो उन्हें सतर्क कर सकें जिससे संभवत: वे (विनाश से) बच जायें ।122।

(रुकू $\frac{15}{4}$)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने उन निकट सम्बन्धियों से भी लड़ो जो काफ़िरों में से हैं । और चाहिए कि वे तुम्हारे अन्दर दृढ़ता अनुभव करें और जान लो कि अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है ।123।

وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

और जब भी कोई सूर: उतारी जाती है तो उनमें से कुछ लोग हैं जो कहते हैं कि तुम में से कौन है जिसे इस (सूर:) ने ईमान में बढ़ा दिया हो । अतएव वे लोग जो ईमान लाए हैं उन्हें तो उस ने ईमान में बढ़ा दिया है । और वे (भविष्य के सम्बन्ध में) शुभ-समाचार प्राप्त करते हैं ।124।

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

हाँ वे लोग जिनके दिलों में रोग है यह (सूर:) उनकी अपवित्रता में और अपवित्रता की बढ़ोत्तरी कर देती है और वे काफ़िर होने की दशा में मरते हैं ।125।

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ

क्या वे नहीं देखते कि प्रत्येक वर्ष उनकी एक दो बार परीक्षा ली जाती है । परन्तु फिर भी प्रायश्चित नहीं

يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

करते और न ही वे उपदेश ग्रहण करते हैं ।126।

وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾

और जब भी कोई सूर: उतारी जाती है तो उनमें से कुछ, कुछ दूसरों की ओर देखते हैं । (मानों संकेतों से कह रहे हों कि) तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा । फिर वे उल्टे लौट जाते हैं । अल्लाह ने उनके दिलों को उलट दिया है । इस लिए कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं ।127।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾

निस्सन्देह तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया । तुम जो कष्ट उठाते हो उस के लिए बड़ा भारी गुज़रता है (और) वह तुम्हारे लिए (भलाई का) अभिलाषी (रहता) है । मोमिनों के लिए अत्यन्त कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है ।128।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾ ع

अत: यदि वे पीठ फेर लें तो कह दे, मेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है । उसके अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं । उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और वही महान अर्श का रब्ब है ।129। (रुकू $\frac{16}{5}$)

10– सूरः यूनुस

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 110 आयतें हैं ।

सूरः अल-बकरः और सूरः आले इम्रान में **अलिफ़ लाम मीम** खण्डाक्षर वर्णित हुए हैं । जबकि इस सूरः में **मीम** के बदले **रा** आया है । इस प्रकार पिछली अनुवाद शैली को अपनाते हुए यहाँ यह अनुवाद किया जा सकता है कि **मैं अल्लाह हूँ, मैं देखता हूँ ।**

हज़रत यूनुस अलै. पर आने वाली विपत्ति इस सूरः का मुख्य विषय है । इस लिए इस सूरः का नाम 'सूरः यूनुस' रखा गया है । इस के आरम्भ में ही अल्लाह तआला ने एक प्रश्न उठाया है कि क्या लोगों के लिए यह बात विस्मयजनक है कि हमने उन्हीं में से एक व्यक्ति पर वह्इ की है ? इसका उत्तर जो इस सूरः में निहित है, वह यह है कि लोगों के विस्मय का कारण स्वयं उनकी अपनी जानों की गवाही है । क्योंकि वे लोग संसार के कीड़े बन गये हैं । इसलिए अल्लाह तआला उन पर वह्इ नहीं उतारता । वास्तव में वे अपने बनाये हुए मापदण्ड के आधार पर यह समझते हैं कि अल्लाह तआला किसी मनुष्य पर वह्इ अवतरित नहीं कर सकता ।

इसके तुरन्त बाद अल्लाह तआला यह वर्णन करता है कि वह अल्लाह जिस ने समग्र ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया और प्रत्येक विषय में एक उत्तम योजना बनाई, क्या वह इस कार्य को व्यर्थ जाने देगा ? इस योजना का चरम उद्देश्य एक ऐसा सिफ़ारिश करने वाला अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैदा करना है जो अल्लाह तआला की अनुमति से उसके समक्ष केवल अपने योग्य अनुयायियों की ही सिफ़ारिश नहीं करेंगे अपितु पिछले धर्मानुयायियों में से नेक व्यक्तियों के पक्ष में भी सिफ़ारिश करेंगे ।

इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उदाहरण एक सूर्य के रूप में दिया गया है जिसके प्रकाश से संसार में जीवन व्यवस्था उपकृत हो रही है और इस के फलस्वरूप एक पूर्ण-चन्द्रमा ने जन्म लेना है, जो रात्रि के अंधकार में भी उस प्रकाश के किरणों को पृथ्वी तक पहुँचाता रहेगा । यह विषय अत्यन्त विस्मयकर है कि भौतिक जगत में भी चन्द्रमा की ज्योति में कई सब्ज़ियाँ इस वेग से बढ़ती हैं कि उनके बढ़ने की आवाज सुनाई देती है । अतएव ककड़ियों के बारे में वैज्ञानिक कहते हैं कि उनके बढ़ने की वेग के कारण एक आवाज़ उत्पन्न होती है जिसे मनुष्य सुन सकता है । अतः वही अल्लाह है जिसने दिन को भी जीवन का आधार बनाया और रात को भी जीवन का आधार बनाया है ।

सूरः यूनुस में एक ऐसी जाति का वर्णन है जिसे संसार में उस अज़ाब से पूर्णरूपेण बचा लिया गया जिस की चेतावनी उन्हें दी गई थी । इस सूरः के बाद आने वाली सूरः हूद में उन जातियों का उल्लेख है जिन्हें इनकार करने के कारण संपूर्ण रूप से तबाह कर दिया गया ।

سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ عَشْرُ اٰيَاتٍ وَّ اَحَدَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ②

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ । मैं देखता हूँ । ये एक तत्त्वज्ञान पूर्ण पुस्तक की आयतें हैं ।2।

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ③

क्या लोगों के लिए विस्मयकर (विषय) है कि हमने उन्हीं में से एक व्यक्ति की ओर (इस आदेश के साथ) वह्इ उतारी कि लोगों को सतर्क कर । और उन लोगों को जो ईमान लाये हैं शुभ-समाचार दे कि उन का क़दम उनके रब्ब के निकट सच्चाई पर है । काफ़िरों ने कहा, नि:सन्देह यह तो एक खुला-खुला जादूगर है ।3।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ④

नि:सन्देह तुम्हारा रब्ब अल्लाह है जिसने आकाशों और धरती की छ: दिनों में सृष्टि की । फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ । वह प्रत्येक कार्य को योजनाबद्ध रूप से करता है । उसकी अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं । यह है तुम्हारा रब्ब अल्लाह । अत: उसी की उपासना करो । क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? ।4।

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ

उसी की ओर तुम सब को लौटकर जाना है । यह अल्लाह का सच्चा वादा है । निश्चित रूप से वह सृष्टि का

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَھُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٥

आरम्भ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करता है, ताकि जो लोग ईमान लाये और नेक कर्म किये, उन्हें न्यायपूर्वक प्रतिफल प्रदान करे। और जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए खौलता हुआ पानी पेय स्वरूप और पीड़ाजनक अज़ाब होगा क्योंकि वे इनकार किया करते थे।5।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاۗءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ۭ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٦

वही है जिसने सूर्य को प्रकाश का साधन और चन्द्रमा को ज्योति (विशिष्ट) बनाया और उसके लिए पड़ाव निश्चित किये ताकि तुम वर्षों की गणना और हिसाब सीख लो। अल्लाह ने यह (सब कुछ) नितांत सत्य के साथ पैदा किया है। वह आयतों को ऐसे लोगों के लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है जो ज्ञान रखते हैं।6।

اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٧

निश्चित रूप से रात और दिन के अदलने बदलने में और उसमें जो अल्लाह ने आकाशों और धरती में पैदा किया है तक़वा धारण करने वाले लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं।7।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٨ ۙ

निश्चित रूप से वे लोग जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते और सांसारिक जीवन पर प्रसन्न हो चुके हैं और उसी पर संतुष्ट हो गये हैं और वे लोग भी जो हमारे चिह्नों से बेपरवाह हैं।8।

اُولٰۗىِٕكَ مَاْوٰىھُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٩

यही वे लोग हैं जो वे कमाते रहे उसके कारण उनका ठिकाना आग है।9।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٠﴾

निश्चित रूप से वे लोग जो ईमान लाये और नेक कर्म किये, उनके ईमान के फलस्वरूप उनका रब्ब उन्हें हिदायत देगा । नेमतों वाले स्वर्गों के बीच उनके आदेशाधीन नहरें बह रही होंगी ।10।

دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١﴾ ع

वहाँ उनकी घोषणा यह होगी कि हे (हमारे) अल्लाह ! तू पवित्र है । और वहाँ उनका आशीर्वचन **सलाम** होगा और उनकी अंतिम घोषणा यह होगी कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो समग्र लोकों का रब्ब है ।11।

(रुकू $\frac{1}{6}$)

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۗ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٢﴾

और यदि अल्लाह लोगों को उनकी शरारत का बदला उसी प्रकार शीघ्रता पूर्वक दे देता जिस शीघ्रता से वे भलाई चाहते हैं तो उन्हें उनके अंत का निर्णय सुना दिया जाता । अतः जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते हम उनको उनकी उद्दण्डता में भटकता हुआ छोड़ देते हैं ।12।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ۗ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾

और जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचे तो वह अपने करवट के बल (लेटे हुए) अथवा बैठे हुए या खड़े हुए हमें पुकारता है । परन्तु जब हम उससे उसका कष्ट दूर कर देते हैं तो वह यूँ गुज़र जाता है जैसे उसने उस दुःख के लिए जो उसे पहुँचा हो, कभी हमें बुलाया ही न हो । इसी प्रकार सीमा उल्लंघन करने वालों को उनका कर्म सुन्दर करके दिखाया जाता है ।13।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤﴾

और निश्चित रूप से हमने तुम से पहले कितने ही युगों के लोगों को विनष्ट कर दिया था जब उन्होंने अत्याचार किया, हालाँकि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्न ले कर आये और वे ऐसे थे ही नहीं कि ईमान ले आते । इसी प्रकार हम अपराधी लोगों को प्रतिफल दिया करते हैं ।14।

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

फिर उनके बाद हमने तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बना दिया ताकि हम देखें कि तुम कैसा कर्म करते हो ।15।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِىْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٦﴾

और वे लोग जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, जब उनके समक्ष हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे कहते हैं, इसके बदले कोई अन्य क़ुरआन ले आ अथवा इसे ही परिवर्तित कर दे । तू कह दे कि मुझे अधिकार नहीं कि मैं इसे अपनी ओर से बदल दूँ। मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर वह्इ किया जाता है । यदि मैं अपने रब्ब की अवज्ञा करूँ तो अवश्य एक बड़े दिन के अज़ाब से मैं डरता हूँ ।16।

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾

तू कह दे, यदि अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हारे समक्ष इसको नहीं पढ़ता और न वह (अल्लाह) तुम को इसकी सूचना देता । अतः इस (नुबुव्वत) से पूर्व भी मैं तुम्हारे बीच एक लम्बी आयु गुज़ार चुका हूँ, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।17।*

* मुश्रिक लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आरोप लगाते थे कि आप सल्ल. ने→

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٨﴾

अत: उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जिस ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा अथवा उसकी आयतों को झुठलाया । वास्तविकता यही है कि अपराधी कभी सफल नहीं हुआ करते ।18।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾

और वे अल्लाह के सिवा उसकी उपासना करते हैं जो न उन्हें हानि पहुँचा सकता है और न लाभ पहुँचा सकता है । और वे कहते हैं कि ये (सब) अल्लाह के समक्ष हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं । तू पूछ कि क्या तुम अल्लाह को वह समाचार देते हो जिस (के अस्तित्व) का न उसे आकाशों में और न धरती में कोई ज्ञान है। पवित्र है वह । और जो वे शिर्क करते हैं वह उससे बहुत ऊँचा है ।19।

وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٠﴾

और सब लोग एक ही समुदाय थे । फिर उन्होंने मतभेद आरम्भ कर दिया और यदि तेरे रब्ब की ओर से (नियति का) आदेश जारी न हो चुका होता तो जिस में वे मतभेद किया करते थे उनके बीच उसका निर्णय कर दिया जाता ।20।

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ

और वे कहते हैं, उस पर उसके रब्ब की ओर से क्यों कोई आयत नहीं उतारी जाती ? तू कह दे, नि:सन्देह अल्लाह ही का अदृश्य (पर प्रभुत्व) है। अत: प्रतीक्षा करो, निश्चित रूप से

←अल्लाह पर झूठ बोलते हुए अपनी ओर से क़ुरआन गढ़ लिया है । आयतांश **फ़क़द लबिस्तु फ़ीकुम उमुरन** (मैं तुम्हारे बीच एक लम्बी आयु गुज़ार चुका हूँ) में इस आरोप का पूर्णत: खण्डन किया गया है कि वह रसूल जिस को तुम **सत्यवादी** और **विश्वस्त** कहा करते थे, उसके नबी होने की घोषणा करने से पूर्व चालीस वर्ष की आयु तक तो उसने कभी किसी के बारे में झूठ नहीं बोला, अब अचानक अल्लाह के बारे में कैसे झूठ बोलने लग गया ?

اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢١﴾ ع

मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ ।21। (रुकू $\frac{2}{7}$)

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِىْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢٢﴾

और जब हम लोगों को किसी ऐसे कष्ट के पश्चात जो उन्हें पहुँचा हो अनुग्रह का स्वाद चखाते हैं तो अचानक हमारी आयतों में छल-कपट करना उनकी रीति बन जाती है । उन से कह दे कि (प्रतिकारात्मक) उपाय करने में अल्लाह अधिक तेज़ है । जो तुम छल कर रहे हो हमारे भेजे हुए दूत उसे अवश्य लिख रहे हैं ।22।

هُوَ الَّذِىْ يُسَيِّرُكُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِى الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

वही है जो तुम्हें स्थल भाग और जल भाग पर चलाता है । यहाँ तक कि जब तुम नौकाओं में होते हो और वे अनुकूल हवाओं की सहायता से उन्हें लिये हुए चलती हैं । और वे (लोग) उससे बहुत प्रसन्न होते हैं तो अचानक बहुत तेज़ हवा उन्हें आ घेरती है और हर ओर से लहर उन की ओर बढ़ती है और वे धारणा करने लगते हैं कि वे घिर चुके हैं, तब वे अल्लाह के प्रति अपनी आस्था को विशुद्ध करते हुए उसी को पुकारते हैं कि यदि तू हमें इससे मुक्ति दे दे तो निश्चित रूप से हम कृतज्ञों में से हो जाएँगे ।23।

فَلَمَّآ اَنْجٰهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ

फिर जब वह उन्हें मुक्ति दे देता है तो वे धरती में अनुचित रूप से विद्रोह करने लगते हैं । हे लोगो ! तुम्हारा विद्रोह निश्चित रूप से तुम्हारे अपने ही विरुद्ध है । (तुम्हें) सांसारिक जीवन का अल्पमात्र लाभ उठाना है । फिर तुम्हें

اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

हमारी ओर ही लौटकर आना है । फिर हम तुम्हें उन कर्मों के बारे में सूचित करेंगे जो तुम किया करते थे ।24।

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ
النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ
الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ
اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰهَآ
اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا
كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾

नि:सन्देह सांसारिक जीवन का उदाहरण तो उस पानी के सदृश है जिसे हम ने आकाश से उतारा । फिर उसमें धरती की हरियाली घुल-मिल गई । जिसमें से मनुष्य और पशु भी खाते हैं । यहाँ तक कि जब धरती अपना शृंगार धारण करती है और खूब सज जाती है। और उसके निवासी यह धारणा करने लगते हैं कि वे उस पर पूरा अधिकार रखते हैं तो हमारा निर्णय रात या दिन (किसी भी समय) उसे आ पकड़ता है । और हम उसे एक ऐसे कटे हुए खेत के समान बना देते हैं (जो फल देने से पहले ही कट गिरा हो) मानो कल तक उसका कोई अस्तित्व न था । इसी प्रकार हम चिंतन-मनन करने वालों के लिए चिह्नों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं ।25।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِىْ مَنْ
يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٦﴾

और अल्लाह शांति के घर की ओर बुलाता है और जिसे चाहता है उसका सीधे रास्ते की ओर मार्ग-दर्शन करता है ।26।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا
يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾

जिन लोगों ने उपकार किया उनके लिए सर्वोत्कृष्ट प्रतिफल तथा उससे भी अधिक है । और उनके चेहरों पर कभी कालिमा और रुसवाई नहीं छाएगी । यही स्वर्ग के निवासी हैं, वे उसमें सदा रहने वाले हैं ।27।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَاۤ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۸﴾

और वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ अर्जित कीं (उनके लिए) हर बुराई का प्रतिफल उस के समान होगा और उन पर रुसवाई छा जाएगी । उनको अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं होगा। मानो अंधकार कर देने वाली रात्रि के एक टुकड़े के द्वारा उनके चेहरे ढाँप दिये गये हैं । यही अग्नि वासी हैं, वे उसमें लम्बा समय रहने वाले हैं ।28।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۹﴾

और (याद रखो) उस दिन जब हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर जिन्होंने शिर्क किया हम उनसे कहेंगे, तुम (भी) और तुम्हारे (बनाए हुए) उपास्य भी अपने स्थान पर ठहर जाओ । फिर हम उनके बीच प्रभेद कर देंगे और उनके (कल्पित) उपास्य कहेंगे, तुम हमारी उपासना तो नहीं किया करते थे ।29।

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿۳۰﴾

अतः अल्लाह ही हमारे और तुम्हारे बीच साक्षी के रूप में पर्याप्त है । निःसन्देह हम तुम्हारी उपासना करने से अनजान थे ।30।

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّاۤ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۳۱﴾ ع

प्रत्येक आत्मा जो कुछ करती रही है वह वहाँ जान लेगी और वे अपने वास्तविक स्वामी अल्लाह की ओर लौटाये जायेंगे और जो वे झूठ गढ़ा करते थे वह उनसे छूटता रहेगा ।31।

(रुकू $\frac{3}{8}$)

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ

पूछ कि कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती में से जीविका प्रदान करता है ? या वह कौन है जो कानों और आँखों पर अधिकार रखता है और जीवित को मृत

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ٣٢

से निकालता है और मृत को जीवित से निकालता है। और कौन है जो सृष्टि-प्रबंधन को योजनाबद्ध रूप से चलाता है? अतः वे कहेंगे कि **अल्लाह**। तू कह दे कि फिर क्या तुम तक़वा धारण नहीं करोगे ?।32।

فَذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۖ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ٣٣

अतः वही है अल्लाह, तुम्हारा वास्तविक रब्ब। फिर सच्चाई के बाद पथभ्रष्टता के अतिरिक्त और क्या रह जाता है ? अतः तुम कहाँ फिराये जा रहे हो ?।33।

كَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٣٤

इसी प्रकार तेरे रब्ब का आदेश उन लोगों पर सत्य सिद्ध होता है जिन्होंने दुराचरण किया। वे कदापि ईमान नहीं लायेंगे।34।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ٣٥

पूछ, कि क्या तुम्हारे उपास्यों में से भी कोई है जो सृष्टि का आरम्भ करता हो फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करता हो ? तू (उनसे) कह दे, अल्लाह ही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करता है। अतः तुम कहाँ भटकाये जा रहे हो ?।35।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ ۚ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۗ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمَّنْ لَا يَهِدِّي إِلَّا أَنْ يُهْدَىٰ ۖ فَمَا لَكُمْ

पूछ, कि क्या तुम्हारे उपास्यों में से कोई ऐसा भी है जो सच्चाई की ओर मार्ग-दर्शन कराये ? कह दे, अल्लाह ही है जो सच्चाई की ओर मार्ग-दर्शन करता है। अतः क्या वह जो सच्चाई की ओर मार्ग-दर्शन करता है अधिक अनुकरण योग्य है ? अथवा वह जो स्वयं सन्मार्ग प्राप्त नहीं कर सकता जब तक उसका मार्ग-दर्शन न कराया जाये ? अतः तुम्हें

كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾

क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो ? ।36।

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ۭ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـــًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٧﴾

और उनमें से अधिकतर लोग अनुमान के सिवा किसी चीज़ का अनुसरण नहीं करते (जबकि) अनुमान सच्चाई के सामने कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता। जो वे करते हैं नि:सन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है ।37।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٨﴾

और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि अल्लाह से अलग रह कर (केवल) झूठ के रूप में गढ़ लिया जाये । परन्तु यह उसकी पुष्टि (करता) है जो उसके सामने है । और उस पुस्तक का विवरण है जिस में कोई सन्देह नहीं । (यह) समस्त लोकों के रब्ब की ओर से है ।38।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

क्या वे यह कहते हैं कि इसने इसे झूठे रूप से गढ़ लिया है । तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो फिर इस (की सूर:) जैसी कोई सूर: तो बना लाओ । और अल्लाह के सिवा जिन को बुलाने की शक्ति रखते हो, बुला लो ।39।

بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ۭ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

वास्तविकता यह है कि वे उसे झुठला रहे हैं जिस के ज्ञान को वे पूर्णत: पा नहीं सके और अभी तक उसका अर्थ उन पर प्रकट नहीं हुआ । इसी प्रकार उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे । अत: तू देख कि अत्याचारियों का कैसा अन्त हुआ ।40।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا

और उनमें से वह भी है जो उस पर ईमान लाता है । और उन में से वह भी

يُؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝٤١ ع

है जो उस पर ईमान नहीं लाता । और तेरा रब्ब उपद्रवियों को सर्वाधिक जानता है ।41। (रुकू $\frac{4}{9}$)

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْۗـــُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٤٢

और यदि वे झुठला दें तो कह दे कि मेरे लिए मेरा कर्म है और तुम्हारे लिए तुम्हारा कर्म है । जो मैं करता हूँ तुम उसके लिए उत्तरदायी नहीं हो और जो तुम करते हो मैं उसके लिए उत्तरदायी नहीं हूँ ।42।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٤٣

और उनमें से ऐसे भी हैं जो तेरी ओर कान लगाये रखते हैं । अत: क्या तू बहरों को भी सुना सकता है यद्यपि वे बुद्धि भी न रखते हों ? ।43।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝٤٤

और उनमें से वह भी है जो तुझ पर नज़र लगाए हुए है । अत: क्या तू अंधों को भी हिदायत दे सकता है यद्यपि वे ज्ञान-दृष्टि न रखते हों ? ।44।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَـيْـــًٔـا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٤٥

नि:सन्देह अल्लाह लोगों पर कुछ भी अत्याचार नहीं करता । परन्तु लोग स्वयं अपनी ही जानों पर अत्याचार करते हैं ।45।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ۭ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝٤٦

और (याद करो) वह दिन जब वह उन्हें इकट्ठा करेगा, उनको लगेगा कि वे (धरती पर) दिन की एक घड़ी से अधिक नहीं रहे । वे एक दूसरे का परिचय प्राप्त करेंगे । जिन्होंने अल्लाह की भेंट का इनकार कर दिया था वे अवश्य घाटे में रहे और वे हिदायत पाने वालों में से न हो सके ।46।

وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ

और यदि हम तुझे उस (चेतावनी) में से कुछ दिखा दें जिससे हम उन्हें सतर्क

نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيۡنَا مَرۡجِعُهُمۡ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيۡدٌ عَلٰى مَا يَفۡعَلُوۡنَ ﴿۴۷﴾

किया करते थे अथवा तुझे मृत्यु दे दें तो (अवश्यमेव) हमारी ओर ही उन को लौट कर आना है । फिर जो वे करते हैं अल्लाह ही उस पर साक्षी है ।47।*

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوۡلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوۡلُهُمۡ قُضِىَ بَيۡنَهُمۡ بِالۡقِسۡطِ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۴۸﴾

और प्रत्येक संप्रदाय के लिए कोई न कोई रसूल होता है । अतः जब उनका रसूल उनके निकट आ जाये तो उनके बीच न्यायपूर्ण ढंग से निर्णय कर दिया जाता है और उन पर कदापि अत्याचार नहीं किया जाता ।48।

وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۴۹﴾

और वे कहते हैं, यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा ? ।49।

قُلۡ لَّاۤ اَمۡلِكُ لِنَفۡسِىۡ ضَرًّا وَّلَا نَفۡعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ فَلَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ﴿۵۰﴾

तू कह दे कि जितनी अल्लाह की इच्छा हो (उससे अधिक) मैं तो अपने आप के लिए भी न किसी हानि का और न किसी लाभ का कोई अधिकार रखता हूँ । प्रत्येक जाति के लिए एक समय निश्चित है । जब उनका निश्चित समय आ जाये तो न वे क्षण भर पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं ।50।

قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ اَتٰٮكُمۡ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوۡ نَهَارًا مَّاذَا يَسۡتَعۡجِلُ مِنۡهُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۵۱﴾

तू कह दे, बताओ तो सही कि यदि तुम्हारे पास उसका अज़ाब रात को अथवा दिन को आ पहुँचे तो अपराधी किस के बल पर उससे भागने में शीघ्रता करेंगे ? ।51।

---

* इस आयत से ज्ञात होता है कि यह आवश्यक नहीं कि नबी के जीवनकाल में ही उसकी समस्त भविष्यवाणियाँ पूरी हों । हाँ कुछ उसके जीवनकाल में अवश्य पूरी होती हैं । क़ुरआन करीम जो कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरा, क़यामत तक के लिए अनगिनत ऐसी भविष्यवाणियों का वर्णन कर रहा है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहान्त के पश्चात पूरी होनी आरम्भ हुईं और अब तक पूरी होती रहीं और क़यामत तक पूरी होती रहेंगी ।

اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْئٰنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٥٢

तो फिर क्या जब वह घटित हो चुका होगा उस समय तुम उस पर ईमान लाओगे ? क्या अब (भाग निकलने का कोई रास्ता है ?) और तुम तो उसे शीघ्र लाने की माँग करते थे ।52।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝٥٣

फिर जिन्होंने अत्याचार किया उनसे कहा जायेगा कि (अब) स्थायी अज़ाब को चखो । जो तुम कमाई किया करते थे क्या तुम्हें उनके सिवा भी प्रतिफल दिया जा रहा है ? ।53।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٥٤ ع

और वे तुझ से पूछते हैं कि क्या वह सत्य है ? तू कह दे, हाँ ! मुझे अपने रब्ब की क़सम कि नि:सन्देह वह सत्य है और तुम (उसे) असमर्थ करने वाले नहीं बन सकोगे ।54। (रुकू $\frac{5}{10}$)

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٥٥

और धरती में जो कुछ है यदि वह सब कुछ प्रत्येक उस व्यक्ति का होता जिसने अत्याचार किया तो वह उसे मुक्तिमूल्य स्वरूप दे देता । और जब वे अज़ाब को देखेंगे तो अपने शर्मिंदगी को छिपाते फिरेंगे और उनके बीच न्याय पूर्वक निर्णय किया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।55।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٦

सावधान ! जो आकाशों और धरती पर है निश्चित रूप से अल्लाह ही का है। सावधान ! नि:सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।56।

هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٥٧

वही जीवित करता है और मारता भी है और उसी की ओर तुम्हें लौटाया जाएगा ।57।

يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٨﴾

हे लोगो ! नि:सन्देह तुम्हारे निकट तुम्हारे रब्ब की ओर से उपदेश की बात और सीनों में जो (रोग) है उसका उपचार तथा मोमिनों के लिए हिदायत और करुणा भी आ चुकी है ।58।

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٩﴾

तू कह दे कि (यह) केवल अल्लाह का अनुग्रह और उसकी कृपा से है । अत: उन्हें इस पर अत्यन्त प्रसन्न होना चाहिए । जो वे इकट्ठा करते हैं वह उससे उत्तम है ।59।

قُلْ أَرَءَيْتُم مَّآ أَنزَلَ اللَّهُ لَكُم مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُم مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَٰلًا قُلْ ءَآللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ﴿٦٠﴾

तू कह दे, क्या तुम नहीं सोचते कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो जीविका उतारी है, उसमें से तुम ने स्वयं ही हराम और हलाल बना लिये हैं । तू (उनसे) पूछ कि क्या अल्लाह ने तुम्हें (इन बातों की) अनुमति दी है या तुम केवल अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हो ? ।60।

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾ ع ٦/١١

और वे लोग जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं क़ियामत के दिन उनकी क्या सोच होगी ? नि:सन्देह अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है परन्तु उनमें से अधिकतर कृतज्ञता प्रकट नहीं करते ।61। (रुकू $\frac{6}{11}$)

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِن قُرْءَانٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَآ أَصْغَرَ مِن

और तू जब भी किसी विशेष परिस्थिति में होता है और उस परिस्थिति में क़ुरआन का पाठ करता है, इसी प्रकार (हे मोमिनो !) तुम किसी (सत्) कर्म करने में तल्लीन होते हो (तब) हम तुम पर साक्षी होते हैं । और तेरे रब्ब से एक कण भर कोई वस्तु छुपी नहीं रहती, न धरती में और न आकाश में । और न ही

ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦٢

उससे कोई छोटी और न कोई बड़ी चीज़ है जिसका खुली-खुली पुस्तक में (उल्लेख) न हो ।62।

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٦٣

सुनो कि नि:सन्देह अल्लाह के मित्र ही हैं जिन्हें कोई भय नहीं होगा और न वे दु:खित होंगे ।63।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝٦٤

वे लोग जो ईमान लाये और वे तक़वा का पालन करते थे ।64।

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٦٥

उनके लिए सांसारिक जीवन में भी और परलोक में भी शुभ-समाचार है। अल्लाह के वाक्यों में कोई परिवर्तन नहीं । यही बहुत बड़ी सफलता है।65।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦٦

और तुझे उनकी बात दु:खित न करे । निश्चित रूप से समस्त सम्मान अल्लाह के ही अधिकार में है । वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।66।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝٦٧

सावधान ! जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं निश्चित रूपेण अल्लाह ही के हैं । और जो लोग अल्लाह के सिवा (अन्य किसी) को पुकारते हैं वे (कल्पित) उपास्यों का अनुसरण नहीं करते, वे तो केवल अनुमान का अनुसरण करते हैं और केवल अटकलों से काम लेते हैं ।67।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝٦٨

वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम प्राप्त करो और दिन को प्रकाशदायक बनाया । नि:सन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो (बात को) सुनते हैं ।68।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾

वे कहते हैं अल्लाह ने पुत्र बना लिया। (हालाँकि इससे) वह पवित्र है, वह निस्पृह है । जो आकाशों में है और जो धरती में है उसी का है । तुम्हारे पास इस (दावा) का कोई भी प्रमाण नहीं । क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी (बात) कहते हो जिस की तुम्हें जानकारी नहीं ।69।

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٧٠﴾ ؕ

तू कह दे नि:सन्देह वे लोग जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं सफल नहीं होंगे ।70।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧١﴾ ع

(उनको) दुनिया में कुछ लाभ उठाना है। फिर हमारी ओर ही उनका लौटना है। फिर उनके इनकार करने के कारण हम उन्हें कठोर अज़ाब चखाएँगे ।71।

(रुकू $\frac{7}{12}$)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧٢﴾

और तू उन के समक्ष नूह का वृत्तांत पढ़ । जब उसने अपनी जाति से कहा, हे मेरी जाति ! यदि मेरा मत और अल्लाह के चिह्नों के द्वारा मेरा उपदेश देना तुम्हारे लिए कष्टप्रद होता है तो मैं अल्लाह पर ही भरोसा करता हूँ। अत: तुम अपनी सारी शक्ति और अपने साझीदारों को भी इकट्ठा कर लो फिर अपनी शक्ति पर तुम्हें कोई संदेह न रहे, फिर मुझ पर जो करना है कर गुज़रो और मुझे कोई ढील न दो ।72।

فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ

अत: यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो मैं तुम से कोई प्रतिफल तो नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल अल्लाह के सिवा किसी पर

مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٣﴾

नहीं। और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में से बन जाऊँ ।73।

فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِی الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٤﴾

अतः उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने उसे और उनको जो उसके साथ नौका में थे, बचा लिया । और उनको उत्तराधिकारी बना दिया और हमने उन लोगों को जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया था, डुबो दिया । अतः जिनको चेतावनी दी गई थी, देख ! कि उनका अन्त कैसा था ? ।74।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٥﴾

फिर उसके बाद हमने कई रसूलों को उनकी अपनी-अपनी जाति की ओर भेजा । अतः वे उनके पास खुले-खुले चिह्न लेकर आये । परन्तु जिसे वे पहले से झुठला चुके थे वे उस पर ईमान लाने वाले नहीं बने । इसी प्रकार हम सीमा का उल्लंघन करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं ।75।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٦﴾

फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके मुखियाओं की ओर अपने चिह्नों के साथ भेजा तो उन्होंने अहंकार किया और वे अपराधी लोग थे ।76।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾

अतः जब हमारी ओर से उनके पास सत्य आया तो उन्होंने कहा, निःसन्देह यह एक खुला-खुला जादू है ।77।

قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٨﴾

मूसा ने कहा, जब तुम्हारे निकट सत्य आ गया तो क्या तुम उस के सम्बन्ध में (यह) कह रहे हो कि क्या यह जादू है ? जबकि जादूगर तो सफल नहीं हुआ करते ।78।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٩﴾

उन्होंने कहा, क्या तू हमारे पास इसलिये आया है ताकि तू हमें उस (पंथ) से हटा दे जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया, और (ताकि) तुम दोनों का धरती में मानवर्धन हो । जबकि हम तो तुम दोनों पर कभी ईमान लाने वाले नहीं ।79।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٨٠﴾

और फ़िरऔन ने कहा, मेरे पास प्रत्येक कुशल जादूगर ले आओ ।80।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨١﴾

अत: जब जादूगर आ गये तो मूसा ने उनसे कहा, जो भी तुम डालने वाले हो डाल दो ।81।

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٢﴾

अत: (जो डालना था) जब उन्होंने डाल दिया तो मूसा ने कहा, तुम जो कुछ लाये हो वह केवल दृष्टि का भ्रम है । अल्लाह उसे अवश्य रद्द कर देगा । नि:सन्देह अल्लाह उपद्रवियों के कर्म को उचित नहीं ठहराता ।82।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع

और अल्लाह अपने वाक्यों के द्वारा सत्य को सत्य सिद्ध कर दिखाता है । चाहे अपराधी कैसा ही नापसन्द करें ।83।

(रुकू $\frac{8}{13}$)

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٤﴾

अत: मूसा की जाति में से थोड़े ही युवक इस भय के बावजूद कि फ़िरऔन और उनके मुखिया उन्हें किसी कष्टदायक परीक्षा में न डाल दें, उस पर ईमान लाये। और नि:सन्देह फ़िरऔन धरती में बहुत उद्दण्डता करने वाला और निश्चित रूप से वह सीमा उल्लंघन करने वालों में से था ।84।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾

और मूसा ने कहा, हे मेरी जाति ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो यदि (वस्तुत:) तुम आज्ञाकारी हो तो उसी पर भरोसा करो ।85।

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾

तो उन्होंने (उत्तर में) कहा, अल्लाह पर ही हम भरोसा रखते हैं । हे हमारे रब्ब ! हमें अत्याचारी लोगों के लिए परीक्षा (का कारण) न बना ।86।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٧﴾

और हमें अपनी कृपा से काफ़िर लोगों से मुक्ति प्रदान कर ।87।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

और हमने मूसा और उसके भाई की ओर वह्इ की कि तुम दोनों अपनी जाति के लिए मिस्र में घरों का निर्माण करो और अपने घरों को क़िब्ला-मुखी बनाओ और नमाज़ को क़ायम करो । और तू मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे ।88।*

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا

और मूसा ने कहा, हे हमारे रब्ब ! नि:सन्देह तूने फ़िरऔन और उसके मुखियाओं को इस सांसारिक जीवन में एक वृहद् शोभा और धन-सम्पदा दिये हैं, हे हमारे रब्ब ! (क्या) इसलिए कि वे तेरे रास्ते से (लोगों को) भटका दें । हे हमारे रब्ब ! उनकी धन-सम्पदा को बर्बाद कर दे और उनके दिलों को कठोर बना दे । अत: जब तक वे

* इस आयत में एक ऐसी बात का उल्लेख है जिसकी कल्पना भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं नहीं कर सकते थे और न ही बाइबिल में इसका वर्णन है । अत: यह आरोप भी झूठा है कि बाइबिल के जानकारों का वर्णन सुन कर आप सल्ल. को इसका ज्ञान हुआ । परन्तु अब पुरातत्त्वविदों ने मिस्र में बनी इस्राईल के गड़े हुए आवासों को खोज निकाला है जिनसे स्पष्ट हो चुका है कि बनी इस्राईल के घर एक ही दिशा में अर्थात् क़िब्ला-मुखी बने थे ।

يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۸۹﴾

पीड़ाजनक अज़ाब को देख न लें, ईमान नहीं लायेंगे ।89।*

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۰﴾

उसने कहा, तुम दोनों की दुआ स्वीकार कर ली गई । अतः तुम दोनों दृढ़ता दिखाओ और कदापि उन लोगों के रास्ते का अनुसरण न करो जो कुछ नहीं जानते ।90।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۹۱﴾

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र पार कराया तो फ़िरऔन और उस की सेना ने विद्रोह और अत्याचार करते हुए उनका पीछा किया । यहाँ तक कि जब उसे जलप्लावन ने आ घेरा तो उसने कहा, मैं उस पर ईमान लाता हूँ जिस पर बनी-इस्राईल ईमान लाये हैं, उसके सिवा कोई उपास्य नहीं और मैं (भी) आज्ञाकारियों में से हूँ ।91।

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۹۲﴾

क्या अब (ईमान लाया है) ! जब कि इससे पूर्व तू अवज्ञा करता रहा और तू फ़साद करने वालों में से था ।92।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۳﴾ ع

अतः आज के दिन हम तुझे तेरे शरीर के साथ बचा लेंगे ताकि तू अपने बाद आने वालों के लिए एक (शिक्षाप्रद) चिह्न बन जाये । जब कि लोगों में से अधिकांश हमारे चिह्नों से बिल्कुल बेख़बर हैं ।93।** (रुकू 9/14)

---

* इन अर्थों के लिए देखें पुस्तक 'इम्ला मा मन्न बिहिर्रहमान' ।

** यह आयत भी सिद्ध करती है कि क़ुरआन मजीद अदृश्यवेत्ता (अल्लाह) की ओर से अवतरित हुआ है। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में तो फ़िरऔन की लाश के बारे में सांकेतिक वर्णन भी नहीं था । परन्तु वर्तमान युग में हज़रत मूसा अलै. के विरुद्ध खड़े होने वाले फ़िरऔन की लाश को पुरातत्त्वविदों ने ढूँढ लिया है । इस लाश से ज्ञात होता है कि फ़िरऔन डूबने के बावजूद मरने से पहले बचा लिया गया था । इस के बाद लगभग साठ वर्ष तक अपाहिज होकर शय्याग्रस्त रहा । इस प्रकार उसने कुल नव्वे वर्ष की आयु प्राप्त की । (अधिक जानकारी के लिए देखें Ian Wilson : Exodus Enigma 1985)

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٤﴾

और हमने बनी इस्राईल को एक सच्चाई का ठिकाना प्रदान किया और उन्हें पवित्र वस्तुओं में से जीविका प्रदान किया । जब तक उनके निकट ज्ञान नहीं आ गया उन्होंने मतभेद नहीं किया । नि:सन्देह तेरा रब्ब क़यामत के दिन उनके बीच में उन बातों का निर्णय करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे ।94।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۙ﴿٩٥﴾

अत: जो हमने तेरी ओर उतारा है यदि तू उस के बारे में किसी असमंजस में पड़ा है तो उन से पूछ ले जो तुझ से पहले (भेजी हुई) पुस्तक को पढ़ते हैं। जो तेरे रब्ब की ओर से तेरे पास आया है नि:सन्देह वह सत्य ही है । अत: तू सन्देह करने वालों में से कदापि न बन ।95।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٦﴾

और तू कदापि उन लोगों में से न बन जिन्होंने अल्लाह के चिह्नों को झुठला दिया अन्यथा तू हानी उठाने वालों में से हो जायेगा ।96।

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿٩٧﴾

निश्चित रूप से वे लोग जिन पर तेरे रब्ब का आदेश लागू हो चुका है, ईमान नहीं लायेंगे ।97।

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٨﴾

यद्यपि उनके पास प्रत्येक चिह्न आ चुका हो यहाँ तक कि वे पीड़ाजनक अज़ाब को देख लें ।98।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ

अत: यूनुस की जाति के सिवा क्यों ऐसी कोई बस्ती वाले नहीं हुए जो ईमान लाये हों और जिनको उनके ईमान ने लाभ पहुँचाया हो । जब वे ईमान लाये तो

عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٩﴾

हमने उनसे इस सांसारिक जीवन में अपमानजनक अज़ाब को दूर कर दिया और उन्हें एक समय तक जीवन यापन के साधन प्रदान किये ।99।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٠﴾

और यदि तेरा रब्ब चाहता तो जो भी धरती पर बसते हैं इकट्ठे सब के सब ईमान ले आते । तो क्या तू लोगों को बाध्य कर सकता है, यहाँ तक कि वे ईमान लाने वाले बन जायें ।100।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠١﴾

और अल्लाह की आज्ञा के बिना किसी व्यक्ति को ईमान लाने का अधिकार नहीं । और जो बुद्धि से काम नहीं लेते वह (अल्लाह उनके दिल की) गंदगी को उन (के चेहरों) पर थोप देता है ।101।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٢﴾

तू कह दे कि जो कुछ भी आकाशों और धरती में है उस पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालो । और जो लोग ईमान नहीं लाते चिह्न समूह और चेतावनी की बातें उनके कुछ काम नहीं आतीं ।102।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٣﴾

अतः क्या वे उसी प्रकार के दौर की ही प्रतीक्षा कर रहे हैं जैसा उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों पर आया था । तू कह दे कि प्रतीक्षा करते रहो, निश्चित रूप से मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ ।103।

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ ع

फिर (अज़ाब के समय) हम अपने रसूलों को और उनको जो ईमान लाये, इसी प्रकार बचा लेते हैं । ईमान लाने वालों को बचाना हम पर अनिवार्य है ।104।

(रुकू $\frac{10}{15}$)

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ
دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ
يَتَوَفّٰىكُمْ ۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿١٠٥﴾

तू कह दे कि हे लोगो ! यदि तुम मेरे धर्म के सम्बन्ध में किसी सन्देह में हो तो मैं तो उनकी उपासना नहीं करूँगा जिनकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो । परन्तु मैं उसी अल्लाह की उपासना करूँगा जो तुम्हें मृत्यु देता है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं मोमिनों में से बन जाऊँ ।105।

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ
وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾

और सर्वदा (अल्लाह की ओर) झुकाव रखते हुए धर्म पर अपना ध्यान केन्द्रित रख और तू मुश्रिकों में से कदापि न बन ।106।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ
وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ
اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे लाभ पहुँचाता है और न हानि पहुँचाता है और यदि तूने ऐसा किया तो नि:सन्देह तू अत्याचारियों में से हो जायेगा ।107।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ
اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ
لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ
وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٨﴾

और यदि अल्लाह तुझे कोई हानि पहुँचाए तो उसी के सिवा उसे दूर करने वाला कोई नहीं । और यदि वह तेरे लिए किसी भलाई का इरादा करे तो उसकी कृपा को टालने वाला कोई नहीं । अपने भक्तों में से जिसे वह चाहता है वह (कृपा) प्रदान करता है । और वह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।108।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ

तू कह दे कि हे लोगो ! निश्चित रूप से तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से सत्य आ चुका है । अत: जो हिदायत पा गया वह अपने लिए ही हिदायत

لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيۡهَا ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيۡكُمۡ بِوَكِيۡلٍ ؕ﴿۱۰۹﴾

पाता है और जो पथभ्रष्ट हुआ, वह अपनी जान के विरुद्ध ही पथभ्रष्ट होता है । और मैं तुम पर निरीक्षक नहीं हूँ ।109।

وَاتَّبِعۡ مَا يُوۡحٰۤى اِلَيۡكَ وَاصۡبِرۡ حَتّٰى يَحۡكُمَ اللّٰهُ ۚۖ وَهُوَ خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۱۱۰﴾ ع

और जो तेरी ओर वह्इ किया जाता है उसका अनुसरण कर और धैर्य धारण कर, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और निर्णय करने वालों में वह सर्वोत्तम है ।110। (रुकू $\frac{11}{16}$)

11– सूरः हूद

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 124 आयतें हैं ।

इस सूरः का पिछली सूरः के साथ जो संबंध है उसे पिछली सूरः की टिप्पणी में स्पष्ट कर दिया गया है । इस सूरः की प्रमुख बातों में आयत संख्या 113 है । जिसमें आयतांश **फ़स्तक़िम कमा उमिर त व मन ता ब मअक** (जैसा तुझे आदेश दिया जाता है उस पर दृढ़ता पूर्वक डट जा और जिन्होंने तेरे साथ प्रायश्चित किया है, वे भी डट जायें) की दृष्टि से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ऐसी भारी ज़िम्मेदारी आ पड़ी कि आप सल्ल. ने फ़रमाया **शय्यबत नी हूदु** अर्थात् सूरः हूद ने मुझे बूढ़ा कर दिया । इसी प्रकार इस सूरः में उन जातियों का वर्णन है जिन्हें इनकार करने के कारण विनष्ट कर दिया गया । उन लोगों के शोक के कारण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी बहुत दुःख पहुँचा ।

इस सूरः की आयत सं. 18 हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पक्ष में एक साक्ष्य का उल्लेख करती है जो आप सल्ल. से पहले का है । अर्थात् हज़रत मूसा अलै. का साक्ष्य । इसी प्रकार एक ऐसे साक्षी का भी वर्णन है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पश्चात जन्म लेने वाला है । इस साक्षी का वर्णन 'सूरः अल-बुरूज' में इन शब्दों में मिलता है **व शाहिद्यों व मशूहद** अर्थात् एक समय आयेगा जब एक महान साक्षी एक महानतम पुरुष अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पक्ष में उनकी सच्चाई की गवाही देगा ।

इस सूरः के बाद सूरः यूसुफ़ का आरम्भ उस आयत से हुआ है जिसमें वृत्तांतों में से सर्वोत्तम वृत्तांत का वर्णन हुआ है । इसलिए इस सूरः के अंत पर अल्लाह तआला का यह कथन है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष नबियों के वृत्तांत इसलिए वर्णन किये जा रहे हैं ताकि इन्हें सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उत्साहवर्धन हो । इसमें इस ओर भी इशारा है कि सूरः हूद में इन वृत्तांतों के वर्णन से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल को ठेस पहुँचाना उद्देश्य नहीं था ।

☆☆☆

سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ اَرْبَعٌ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ عَشَرَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحۡكِمَتۡ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِنۡ لَّدُنۡ حَكِيۡمٍ خَبِيۡرٍۙ ٢

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ । मैं देखता हूँ । (यह) एक ऐसी पुस्तक है जिसकी आयतों को सुदृढ़ बनाया गया है (और उन्हें) फिर परम विवेकशील (और) सदा अवगत (अल्लाह) की ओर से भली-भाँति स्पष्ट कर दिया गया है ।2।

اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِىۡ لَـكُمۡ مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ وَّبَشِيۡرٌۙ ٣

(सतर्क कर रही हैं) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो । निश्चित रूप से मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक सतर्ककारी और एक सु-समाचार दाता हूँ ।3।

وَّاَنِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّكُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَيۡهِ يُمَتِّعۡكُمۡ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤۡتِ كُلَّ ذِىۡ فَضۡلٍ فَضۡلَهٗ ؕ وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ كَبِيۡرٍ ٤

और यह भी कि तुम अपने रब्ब से क्षमा याचना करो और प्रायश्चित करते हुए उसी की ओर झुको तो वह तुम्हें एक निश्चित अवधि तक उत्कृष्ट जीवन-साधन प्रदान करेगा । और वह प्रत्येक गौरवशाली व्यक्ति को उसकी प्रतिष्ठा के अनुरूप कृपा प्रदान करेगा । और यदि तुम लौट जाओ तो निश्चित रूप से मैं तुम्हारे संबंध में एक बहुत बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ ।4।

اِلَى اللّٰهِ مَرۡجِعُكُمۡ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ٥

अल्लाह ही की ओर तुम्हारा लौटकर जाना है और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।5।

أَلَآ إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۚ أَلَا حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُۥ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ۝٦

सावधान ! निश्चित रूप से वे अपने सीनों को मोड़ते हैं ताकि वे उससे छिप सकें । सावधान ! जब वे अपने वस्त्र पहन रहे होते हैं तो जो वे छिपाते हैं और जो प्रकट करते हैं, वह उसे जानता है । निःसन्देह वह सीनों की बातों को भली-भाँति जानता है ।6।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٧

और धरती में चलने फिरने वाला कोई ऐसा जीवधारी नहीं जिसकी जीविका (का दायित्व) अल्लाह पर न हो । और वह उसके अस्थायी निवास-स्थान को और स्थायी निवास-स्थान को भी जानता है । प्रत्येक विषय एक सुस्पष्ट पुस्तक में है ।7।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٨

और वही है जिसने आकाशों और धरती को छ: दिनों में पैदा किया और उसका सिंहासन पानी पर था ताकि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में से कौन उत्कृष्ट कर्म करने वाला है । और यदि तू कहे कि तुम मरने के बाद अवश्य उठाये जाओगे तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि यह तो खुले-खुले झूठ के सिवा कुछ नहीं ।8।*

وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٩ ع

और यदि हम कुछ समय के लिए उन से अज़ाब को टाल दें तो वे अवश्य कहेंगे कि किस बात ने उसे रोक रखा है । सावधान ! जिस दिन वह उन तक आयेगा तो उसे उनसे टाला जाना असंभव होगा और वही (चेतावनी) उन्हें घेर लेगी जिस की वे हँसी उड़ाया करते थे ।9। (रुकू $\frac{1}{1}$)

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا

और यदि हम अपनी ओर से मनुष्य को किसी कृपा का स्वाद चखायें फिर उसको उससे छीन लें तो निश्चित रूप से वह

---

* आयतांश **का न अर्शुहू अलल माइ** (उसका सिंहासन पानी पर था) से यह तात्पर्य नहीं है कि अल्लाह की आत्मा पानी पर विचरण कर रही थी । बल्कि इससे यह तात्पर्य है कि उसने पानी को समस्त प्राणियों के जीवन का आधार बनाया । आध्यात्मिक जीवन भी आध्यात्मिक पानी पर निर्भर है, जो आकाश से नबियों पर उतारा जाता है ।

مِنْهُ ۚ إِنَّهُۥ لَيَـُٔوسٌ كَفُورٌ ﴿١٠﴾

बहुत निराश और बड़ा कृतघ्न हो जाता है ।10।

وَلَئِنْ أَذَقْنَٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ ٱلسَّيِّـَٔاتُ عَنِّىٓ ۚ إِنَّهُۥ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ﴿١١﴾

और यदि किसी कष्ट के बाद जो उसे पहुँचा हो हम उसे नेमत प्रदान करें तो वह अवश्य कहता है कि सारे कष्ट मुझ से दूर हो गये । निश्चित रूस से वह (छोटी सी बात पर) बहुत प्रसन्न हो जाने वाला (और) बढ़-बढ़ कर इतराने वाला है ।11।

إِلَّا ٱلَّذِينَ صَبَرُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾

सिवाय उन लोगों के जिन्होंने धैर्य धारण किया और नेक कर्म किये । यही वे लोग हैं जिनके लिए एक वृहद क्षमा और एक बहुत बड़ा प्रतिफल है ।12।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهِۦ صَدْرُكَ أَن يَقُولُوا۟ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهُۥ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَآ أَنتَ نَذِيرٌ ۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٣﴾

अत: क्या (किसी प्रकार भी) तेरे लिए संभव है कि तेरी ओर की जाने वाली वह्इ में से कुछ छोड़ दे । इससे तेरा सीना बहुत तंग होता है कि वे कहते हैं कि क्यों न इसके साथ कोई ख़ज़ाना उतारा गया अथवा इसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया ? तू केवल एक सतर्ककारी है और अल्लाह प्रत्येक विषय पर निरीक्षक है ।13।

أَمْ يَقُولُونَ ٱفْتَرَىٰهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا۟ بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِۦ مُفْتَرَيَٰتٍ وَٱدْعُوا۟ مَنِ ٱسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿١٤﴾

अथवा वे कहते हैं कि इसने इसे गढ़ लिया है । तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो फिर इसके सदृश दस गढ़ी हुई सूरतें तो लाओ और अल्लाह के सिवा जिसे (सहायता के लिए) पुकार सकते हो पुकारो ।14।

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا۟ لَكُمْ فَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّمَآ

अत: यदि वे तुम्हें इसका सकारात्मक उत्तर न दें तो जान लो कि इसे केवल अल्लाह के ज्ञान के साथ उतारा गया है

اُنۡزِلَ بِعِلۡمِ اللّٰهِ وَاَنۡ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ‌ ۚ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ۝١٥

और यह भी जान लो कि उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अत: क्या तुम आज्ञापालन करने वाले बनोगे (भी या नहीं) ? ।15।

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا وَزِيۡنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيۡهِمۡ اَعۡمَالَهُمۡ فِيۡهَا وَهُمۡ فِيۡهَا لَا يُبۡخَسُوۡنَ ۝١٦

जो कोई सांसारिक जीवन और उसकी शोभा की इच्छा करे हम उन्हें उनके कर्मों का पूरा पूरा बदला इसी (लोक) में दे देंगे और इसमें उनका कोई अधिकार-हनन नहीं किया जाएगा ।16।

اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ لَيۡسَ لَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ‌ ‌ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوۡا فِيۡهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۝١٧

यही वे लोग हैं जिनके लिए परलोक में आग के सिवा कुछ नहीं और उन्होंने इस (लोक) में जो औद्योगिक काम किया होगा वह व्यर्थ हो जाएगा और जो कुछ भी वे किया करते थे ग़लत ठहरेगा ।17।

اَفَمَنۡ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّهٖ وَيَتۡلُوۡهُ شَاهِدٌ مِّنۡهُ وَمِنۡ قَبۡلِهٖ كِتٰبُ مُوۡسٰۤى اِمَامًا وَّرَحۡمَةً‌ ؕ اُولٰٓـئِكَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ‌ ؕ وَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بِهٖ مِنَ الۡاَحۡزَابِ فَالنَّارُ مَوۡعِدُهٗ‌ ۚ فَلَا تَكُ فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّنۡهُ‌ ۗ اِنَّهُ الۡحَـقُّ مِنۡ رَّبِّكَ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٨

अत: क्या वह व्यक्ति जो अपने रब्ब की ओर से एक सुस्पष्ट युक्ति पर (स्थित) है और उसके पीछे उसका एक साक्षी आने वाला है और उससे पूर्व मूसा की पुस्तक मार्ग-दर्शक और कृपा स्वरूप मौजूद है, (वह झूठा हो सकता है ?) ये ही (उस प्रतिश्रुत रसूल के संबोध्य अंतत:) उसे स्वीकार कर लेंगे । अत: (विरोधी) गुटों में से जो भी उसका इनकार करेगा तो उसका प्रतिश्रुत ठिकाना आग होगा । अत: इस विषय में तू किसी शंका में न पड़ । नि:सन्देह यही तेरे रब्ब की ओर से सत्य है परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते ।18।

وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا‌ ؕ اُولٰٓـئِكَ يُعۡرَضُوۡنَ عَلٰى رَبِّهِمۡ وَيَقُوۡلُ

और उससे बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े । यही लोग अपने रब्ब के समक्ष पेश किये

الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿١٩﴾

जाएँगे और साक्ष्य देने वाले कहेंगे, यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब्ब पर झूठ बोला था। सावधान ! अत्याचार करने वालों पर अल्लाह की ला'नत है।19।

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۭ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

वे लोग जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसे टेढ़ा (करना) चाहते हैं और वही परलोक का इनकार करने वाले हैं।20।

اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۭ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾

यही वे लोग हैं जो धरती में (अल्लाह वालों को) कभी असमर्थ नहीं कर सकेंगे। और उनके लिए अल्लाह को छोड़ कर कोई और मित्र नहीं। उनके लिए अज़ाब को बढ़ा दिया जाएगा। न उन्हें कुछ सुनने की शक्ति होगी और न ही वे कुछ देख सकेंगे।21।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٢﴾

यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला और जो भी वे झूठ गढ़ा करते थे वह उनके हाथ से जाता रहा।22।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٣﴾

नि:सन्देह परलोक में वही सर्वाधिक घाटा उठाने वाले होंगे।23।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٤﴾

निश्चित रूप से वे लोग जो ईमान लाये और उन्होंने नेक कर्म किये और वे अपने रब्ब की ओर झुके। यही वे लोग हैं जो स्वर्गवासी हैं। वे उसमें सदा रहने वाले हैं।24।

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ

(इन) दोनों गिरोहों का उदाहरण अंधे और बहरे तथा खूब देखने वाले और खूब सुनने वाले के सदृश है। क्या ये दोनों

مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۵﴾ ع

उदाहरण की दृष्टि से एक समान हो सकते हैं ? अतः क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? ।25। (रुकू $\frac{2}{2}$)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ ۡ اِنِّیْ لَكُمْ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۶﴾

और निःसन्देह हमने नूह को भी उसकी जाति की ओर भेजा था । (जिसने कहा) निश्चित रूप से मैं तुम्हारे लिए एक खुला-खुला सतर्ककारी हूँ ।26।

اَنْ لَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۷﴾

(और यह) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो । निश्चित रूप से मैं तुम पर एक कष्टदायक दिन के अज़ाब से डरता हूँ ।27।

فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِیْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَیْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِیْنَ ﴿۲۸﴾

अतः उसकी जाति में से उन मुखियाओं ने जिन्होंने इनकार किया कहा, कि हम तो तुझे केवल अपने समान ही एक मनुष्य समझते हैं । इसी प्रकार हम यह भी देखते हैं कि जिन लोगों ने तेरा अनुसरण किया है, सरसरी नज़र में वे हम में से निकृष्टतम लोग हैं । और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई श्रेष्ठता नहीं समझते बल्कि तुम्हें झूठा समझते हैं ।28।

قَالَ یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَاٰتٰىنِیْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّیَتْ عَلَیْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿۲۹﴾

उसने कहा, हे मेरी जाति ! विचार तो करो कि यदि मैं अपने रब्ब की ओर से एक सुस्पष्ट युक्ति पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से कृपा प्रदान की है और यह बात तुम पर अस्पष्ट रह गई है । तो क्या हम बलपूर्वक तुम्हें उसका आज्ञाकारी बना सकते हैं जबकि तुम उससे घृणा करते हो ? ।29।

وَیٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ

और हे मेरी जाति ! इस पर मैं तुम से कोई धन नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल तो अल्लाह के सिवा किसी पर नहीं । और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝٣٠

जो लोग ईमान लाये हैं मैं उनको कभी दुतकारने वाला नहीं। नि:सन्देह वे लोग अपने रब्ब से भेंट करने वाले हैं। परन्तु मैं तुम्हें अज्ञानता बरतने वाले लोगों (के रूप में) देखता हूँ।30।

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣١

और हे मेरी जाति ! यदि मैं इनको दुतकार दूँ तो मुझे अल्लाह से बचाने में कौन मेरी सहायता करेगा ? अत: क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ?।31।

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّيْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٢

और मैं तुम्हें यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं। और न ही मैं अदृश्य (विषय) की जानकारी रखता हूँ। और न ही मैं कहता हूँ कि मैं एक फ़रिश्ता हूँ और न ही मैं यह कहता हूँ कि जिन लोगों को तुम्हारी आँखें तुच्छ और तिरस्कृत देखती हैं अल्लाह उन्हें कदापि कोई भलाई प्रदान नहीं करेगा। जो उनके दिलों में है उसे अल्लाह ही सर्वाधिक जानता है। (यदि मैं भी वह कहूँ जो तुम कहते हो) तब तो अवश्य मैं अत्याचारियों में हो जाऊँगा।32।

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٣٣

उन्होंने कहा, हे नूह ! तूने हमसे झगड़ा किया और हमसे झगड़ने में बहुत बढ़ गया। अत: यदि तू सच्चों में से है तो जिसका तू हमें डरावा देता है अब उसे हमारे पास ले आ।33।

قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٣٤

उसने कहा, यदि अल्लाह चाहेगा तो वही उसे लिये हुए तुम्हारे पास आयेगा और तुम कभी (उसे) असमर्थ करने वाले नहीं बन सकते।34।

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۟ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ؕ﴿۳۵﴾

और यदि अल्लाह चाहे कि तुम्हें पथभ्रष्ट ठहरा दे तो चाहे मैं तुम्हें उपदेश देने का इरादा भी करूँ तो मेरा उपदेश तुम्हें कोई लाभ नहीं देगा । वह तुम्हारा रब्ब है और तुम्हें उसी की ओर लौटाया जायेगा ।35।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿۳۶﴾ ع

क्या वे कहते हैं कि उसने उसे (अपनी ओर से) गढ़ लिया है ? तू कह दे कि यदि मैं ने इसे गढ़ लिया होता तो मुझ पर ही मेरे अपराध का दुष्परिणाम पड़ता। और जो तुम अपराध किया करते हो मैं उससे बरी हूँ ।36। (रुकू $\frac{3}{3}$)

وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۷﴾

और नूह की ओर वह्इ की गई कि तेरी जाति में से जो ईमान ला चुका उसके सिवा कोई और ईमान नहीं लायेगा । अत: जो वे करते हैं उस पर खेद न कर ।37।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۳۸﴾

और हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्इ के अनुसार नौका बना और जिन लोगों ने अत्याचार किया उनके बारे में मुझ से कोई बात न कर । निश्चित रूप से वे डुबोये जाने वाले हैं ।38।

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۟ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ؕ﴿۳۹﴾

और वह नौका बनाता रहा और जब कभी उसकी जाति के मुखियाओं का उसके पास से गुज़र हुआ तो वे उसकी हँसी उड़ाते रहे । उसने कहा, यदि तुम हम से हँसी करते हो तो निश्चित रूप से हम भी तुम से उसी प्रकार हँसी करेंगे जैसे तुम कर रहे हो ।39।

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ

अत: तुम शीघ्र ही जान लोगे कि वह कौन है जिस पर वह अज़ाब आएगा जो

يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٤٠

उसे अपमानित कर देगा और उस पर एक ठहर जाने वाला अज़ाब उतरेगा ।40।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝٤١

यहाँ तक कि जब हमारा निर्णय आ पहुँचा और भारी उफान के साथ स्रोत फूट पड़े तो हमने (नूह से) कहा कि इस (नौका) में प्रत्येक (आवश्यक पशुओं) में से जोड़ा-जोड़ा और अपने परिवार को भी सवार कर । सिवाय उसके जिसके विरुद्ध निर्णय हो चुका है और (उसे भी सवार कर) जो ईमान लाया है । और उसके साथ थोड़े लोगों के सिवा और कोई ईमान नहीं लाया ।41।*

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٤٢

और उसने कहा कि इस में सवार हो जाओ । अल्लाह के नाम के साथ ही इसका चलना और ठहरना है । नि:सन्देह मेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।42।

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۟ وَنَادٰى نُوْحُ ۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٤٣

और वह (नौका) उन्हें लिये हुए पहाड़ों के समान लहरों में चलती रही । और नूह ने अपने पुत्र को पुकारा जबकि वह एक पृथक स्थान में था, हे मेरे पुत्र ! हमारे साथ सवार हो जा और काफिरों के साथ न हो ।43।

قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ

उसने उत्तर दिया, मैं शीघ्र ही एक पहाड़ पर आश्रय (ढूँढ) लूँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा । उसने कहा, आज के दिन अल्लाह के निर्णय से कोई बचाने वाला नहीं, परन्तु जिस पर वह कृपा करे (केवल वही बचेगा) । अत: उनके बीच

* यहाँ प्रत्येक पशु का जोड़ा अभिप्रेत नहीं है । अन्यथा नौका तो पशुओं के लिए ही अपर्याप्त थी । यहाँ तात्पर्य यह है कि मनुष्य के लिए जो आवश्यक पशु हैं उनके जोड़ों में से दो-दो को साथ ले लो।

فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٤﴾

एक लहर आ गई और वह डूबोये जाने वालों में से बन गया ।44।

وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِىْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ
اَقْلِعِىْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِىَ الْاَمْرُ
وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا
لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٥﴾ ع

और कहा गया कि हे धरती ! अपना पानी निगल जा । और हे आकाश ! थम जा । और पानी सुखा दिया गया और निर्णय पूरा कर दिया गया । और वह (नौका) जूदी (पहाड़) पर ठहर गई । और कहा गया कि अत्याचारी लोगों का सर्वनाश हो ।45।

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِىْ
مِنْ اَهْلِىْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ
اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٦﴾

और नूह ने अपने रब्ब को पुकारा और कहा, हे मेरे रब्ब ! निश्चित रूप से मेरा पुत्र भी मेरे परिवार में से है । और तेरा वादा अवश्य सच्चा है । और तू निर्णय करने वालों में से सर्वोत्कृष्ट है ।46।

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ
عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْئَلْنِ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّىْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ
مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٧﴾

उसने कहा, हे नूह ! वह तेरे परिवार में से कदापि नहीं । वह तो सिर से पैर तक असत् कर्म (करने वाला) था। अतः मुझ से वह न माँग जिसकी तुझे कोई जानकारी नहीं । मैं तुझे उपदेश देता हूँ ऐसा न हो कि तू अज्ञानों में से हो जाये ।47।

قَالَ رَبِّ اِنِّىْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْئَلَكَ مَا
لَيْسَ لِىْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِىْ
وَتَرْحَمْنِىْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٨﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! निश्चित रूप से मैं इस बात से तेरी शरण-याचना करता हूँ कि तुझ से वह बात पूछूँ जिस (के गुप्त रखने के कारण) का मुझे कोई ज्ञान नहीं । और यदि तूने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया नहीं की तो मैं हानि उठाने वालों में से हो जाऊँगा ।48।

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ

(तब) कहा गया, हे नूह ! तू हमारी ओर से शांति और उन बरकतों के साथ उतर

عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤٩

जो तुझ पर और उन जातियों पर भी हैं जो तेरे साथ (सवार) हैं । कुछ और जातियाँ (भी) हैं जिन्हें हम अवश्य लाभ पहुँचाएँगे । (परन्तु) फिर उन्हें हमारी ओर से पीड़ाजनक अज़ाब पहुँचेगा ।49।

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ؕۛ فَاصْبِرْ ؕۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٥٠ ع

معانقة ٩ عند المتأخرين

यह उन अदृश्य समाचारों में से है जिन्हें हम तेरी ओर वह्इ कर रहे हैं । इससे पूर्व तू इसे नहीं जानता था और न तेरी जाति (जानती थी) । अत: धैर्य धारण कर । निश्चित रूप से मुत्तक़ियों का ही (शुभ) अंत होता है ।50। (रुकू $\frac{4}{4}$)

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝٥١

और आद (जाति) की ओर उनके भाई हूद को (हमने भेजा) । उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं और तुम तो केवल झूठ गढ़ने वाले हो ।51।

يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى الَّذِىْ فَطَرَنِىْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٥٢

हे मेरी जाति ! इस (सेवा) के लिए मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल तो उस के सिवा किसी पर नहीं जिसने मुझे पैदा किया । अत: क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।52।

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٥٣

और हे मेरी जाति ! अपने रब्ब से क्षमा याचना करो फिर प्रायश्चित करते हुए उसी की ओर झुको । वह तुम पर निरंतर वृष्टिकर बादल भेजेगा और तुम्हारी शक्ति में और शक्ति वृद्धि करेगा । और तुम अपराध करते हुए पीठ फेर कर चले न जाओ ।53।

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ

उन्होंने कहा, हे हूद ! तू हमारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं लाया है और हम

بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٤

केवल तेरे कहने पर अपने उपास्यों को छोड़ने वाले नहीं और हम तुझ पर कदापि ईमान लाने वाले नहीं हो सकते ।54।

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝٥٥

हम तो इसके सिवा कुछ नहीं कहते कि तुझ पर हमारे उपास्यों में से किसी ने कोई दुष्प्रभाव डाल दिया है । उसने कहा, निश्चित रूप से मैं अल्लाह को साक्षी ठहराता हूँ और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उनसे विरक्त हूँ जिन्हें तुम (अल्लाह का) साझीदार ठहराते हो ।55।

مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ۝٥٦

(अर्थात्) उसके सिवा । अतः तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध चालें चलो । फिर मुझे कोई छूट न दो ।56।

اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٥٧

निश्चित रूप से मैं अल्लाह पर ही भरोसा करता हूँ जो मेरा रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । चलने फिरने वाला कोई ऐसा जीवधारी नहीं (जिसे) वह उसके माथे के बालों से पकड़े हुए न हो। निःसन्देह मेरा रब्ब सन्मार्ग पर (मिलता) है ।57।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝٥٨

अतः यदि तुम फिर जाओ तो जिन बातों के साथ मैं तुम्हारी ओर भेजा गया था वह सब मैं तुम्हें पहुँचा चुका हूँ। और मेरा रब्ब तुम्हारे अतिरिक्त किसी और जाति को उत्तराधिकारी बना देगा और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे । निःसन्देह मेरा रब्ब हर चीज़ का रक्षक है ।58।

وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ

अतः जब हमारा निर्णय आ गया तो हमने हूद और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाये थे अपनी कृपा से बचा

عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٩﴾

लिया और हमने उन्हें कठिन अज़ाब से मुक्ति प्रदान की ।59।

وَتِلْكَ عَادٌ ۟ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٦٠﴾

और ये हैं आद (जाति के लोग) । उन्होंने अपने रब्ब की आयतों का इनकार कर दिया और उसके रसूलों की अवज्ञा की और प्रत्येक घोर अत्याचारी (और) उद्दण्डी की आज्ञा का अनुसरण करते रहे ।60।

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦١﴾

और इस लोक में भी और क़यामत के दिन भी उनके पीछे ला'नत लगा दी गई। सावधान ! निश्चित रूप से आद (जाति) ने अपने रब्ब का इनकार किया। सावधान ! हूद की जाति आद का सर्वनाश हो ।61। (रुकू $\frac{5}{5}$)

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿٦٢﴾

और समूद (जाति) की ओर उनके भाई सालेह को (भेजा) । उसने कहा हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं । उसी ने धरती से तुम्हें विकसित किया और तुम्हें उसमें बसाया । अतः उससे क्षमा याचना करते रहो, फिर प्रायश्चित करते हुए उसी की ओर झुको । निःसन्देह मेरा रब्ब समीप है (और दुआ) स्वीकार करने वाला है ।62।

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٣﴾

उन्होंने कहा, हे सालेह ! इससे पूर्व निश्चित रूप से तू हमारे बीच आशाओं का केन्द्र था । क्या तू हमें उसकी पूजा करने से रोकता है जिसे हमारे पूर्वज पूजते रहे। और जिस ओर तू हमें बुलाता है उसके बारे में निश्चित रूप से हम बेचैन कर देने वाली शंका में (पड़े) हैं ।63।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٤﴾

उसने कहा, हे मेरी जाति ! मुझे बताओ तो सही कि यदि मैं अपने रब्ब की ओर से एक स्पष्ट तर्क पर स्थित हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से कृपा प्रदान की हो, यदि मैं उसकी अवमानना करूँ तो कौन मुझे अल्लाह से बचाने में मेरी सहायता करेगा । अत: तुम तो मुझे घाटे के अतिरिक्त किसी और बात में नहीं बढ़ाओगे ।64।

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٥﴾

और हे मेरी जाति ! अल्लाह के (रास्ते में समर्पित) यह ऊँटनी तुम्हारे लिए एक चिह्न है । अत: इसे (अपने हाल पर) छोड़ दो कि यह अल्लाह की धरती में चरती फिरे और इसे कोई कष्ट न पहुँचाओ । अन्यथा एक शीघ्र पहुँचने वाला अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा ।65।

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٦﴾

फिर (भी) उन्होंने उस की कूँचें काट दीं तो उसने कहा, अपने घर में बस तीन दिन तक अस्थायी लाभ उठा लो । यह एक वादा है जिसे झुठलाया जा नहीं सकता ।66।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٧﴾

अत: जब हमारा निर्णय आ गया तो हमने सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाये थे, अपनी कृपा के साथ मुक्ति प्रदान की और उस दिन के अपमान से बचा लिया । नि:सन्देह तेरा रब्ब ही स्थायी शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।67।

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا

और जिन्होंने अत्याचार किया उन्हें एक तेज़ धमाकेदार आवाज़ ने आ पकड़ा ।

فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۙ﴿٦٨﴾

अत: वे अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गये ।68।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٩﴾ ع

मानों वे उनमें कभी बसे न थे । सावधान! समूद ने अपने रब्ब का इनकार किया । सावधान ! समूद का सर्वनाश हो ।69। (रुकू $\frac{6}{6}$)

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٧٠﴾

और नि:सन्देह इब्राहीम के निकट हमारे दूत सु-समाचार लेकर आये । उन्होंने सलाम कहा । उसने भी सलाम कहा और अविलंब उनके पास एक भूना हुआ बछड़ा ले आया ।70।

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ؕ﴿٧١﴾

फिर जब उसने देखा कि उनके हाथ उस (भोजन) की ओर नहीं बढ़ रहे तो उसने उन्हें अजनबी समझा और उन से भय का आभास किया । उन्होंने कहा, भय न कर निश्चित रूप से हमें लूत की जाति की ओर भेजा गया है ।71।

وَامْرَاَتُهٗ قَآىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧٢﴾

और उसकी पत्नी (पास ही) खड़ी थी । अत: वह हँसी तो हमने उसे इसहाक़ का सु-समाचार दिया और इसहाक़ के पश्चात् याक़ूब का भी ।72।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٣﴾

उसने कहा, हाय मेरा दुर्भाग्य, क्या मैं बच्चा जनूँगी !! जबकि मैं एक बुढ़िया हूँ और यह मेरा पति बूढ़ा है । निश्चित रूप से यह तो बड़ी विचित्र बात है ।73।

قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٤﴾

उन्होंने कहा, क्या तू अल्लाह के निर्णय पर आश्चर्य व्यक्त करती है ? हे घर वालो ! तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी बरकतें हों । नि:सन्देह वह प्रशंसनीय और गौरवशाली है ।74।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنۡ اِبۡرٰهِيۡمَ الرَّوۡعُ وَجَآءَتۡهُ الۡبُشۡرٰى يُجَادِلُنَا فِىۡ قَوۡمِ لُوۡطٍؕ‏ ﴿۷۵﴾

फिर जब इब्राहीम से भय दूर हुआ और उसके पास सु-समाचार आ गया तो वह हमसे लूत की जाति के संबंध में बहस करने लगा ।75।

اِنَّ اِبۡرٰهِيۡمَ لَحَلِيۡمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيۡبٌ‏ ﴿۷۶﴾

नि:सन्देह इब्राहीम बड़ा ही सहनशील, कोमल हृदयी (और हमारे समक्ष) झुकने वाला था ।76।

يٰۤاِبۡرٰهِيۡمُ اَعۡرِضۡ عَنۡ هٰذَا‌ ۚ اِنَّهٗ قَدۡ جَآءَ اَمۡرُ رَبِّكَ‌ ۚ وَاِنَّهُمۡ اٰتِيۡهِمۡ عَذَابٌ غَيۡرُ مَرۡدُوۡدٍ‏ ﴿۷۷﴾

हे इब्राहीम ! इस (बात) से पीछे हट जा। निश्चित रूप से तेरे रब्ब का निर्णय हो चुका है और उन पर एक न टाला जाने वाला अज़ाब अवश्य आयेगा ।77।

وَلَمَّا جَآءَتۡ رُسُلُنَا لُوۡطًا سِىۡٓءَ بِهِمۡ وَضَاقَ بِهِمۡ ذَرۡعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوۡمٌ عَصِيۡبٌ‏ ﴿۷۸﴾

और जब हमारे दूत लूत के निकट पहुँचे तो वह उनके कारण अप्रसन्न हुआ और उनके कारण बहुत उदास हुआ और कहा, यह बड़ा कठिन दिन है ।78।

وَجَآءَهٗ قَوۡمُهٗ يُهۡرَعُوۡنَ اِلَيۡهِ ؕ وَمِنۡ قَبۡلُ كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ السَّيِّاٰتِ‌ ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ هٰٓؤُلَۤاءِ بَنَاتِىۡ هُنَّ اَطۡهَرُ لَـكُمۡ‌ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ فِىۡ ضَيۡفِىۡ‌ ؕ اَلَيۡسَ مِنۡكُمۡ رَجُلٌ رَّشِيۡدٌ‏ ﴿۷۹﴾

और उसकी जाति उसकी ओर दौड़ी चली आई । जबकि इससे पूर्व भी वे कु-कर्म किया करते थे । उसने कहा, हे मेरी जाति! ये मेरी पुत्रियाँ हैं । ये तुम्हारे निकट भी बहुत पवित्र हैं । अत: अल्लाह का तक़वा धारण करो और मुझे मेरे अतिथियों के बीच अपमानित न करो । क्या तुम में एक भी बुद्धिमान व्यक्ति नहीं ? ।79।

قَالُوۡا لَـقَدۡ عَلِمۡتَ مَا لَنَا فِىۡ بَنٰتِكَ مِنۡ حَقٍّ‌ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعۡلَمُ مَا نُرِيۡدُ‏ ﴿۸۰﴾

उन्होंने (बात को मरोड़ते हुए) उत्तर दिया : तू तो भली-भाँति जानता है कि तेरी पुत्रियों के विषय में हमारा कोई अधिकार नहीं और निश्चित रूप से तू उसे भी जानता है जो हम चाहते हैं ।80।*

* आयत संख्या 78-80 : कई भाष्यकारों का यह कहना है कि हज़रत लूत अलै. ने अपनी जाति के→

قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝٨١

उसने कहा, काश ! तुम्हारा सामना करने की मुझ में शक्ति होती अथवा मैं किसी सशक्त सहारे का आश्रय ले पाता ।81।

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ۭ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ۭ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۭ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ۝٨٢

उन्होंने कहा, हे लूत ! निश्चित रूप से हम तेरे रब्ब के भेजे हुए हैं । ये लोग कदापि तुझ तक पहुँच नहीं सकेंगे । अत: रात्रि के एक भाग में अपने परिवार समेत घर से निकल जा और तुम में से कोई मुड़ कर न देखे । परन्तु तेरी पत्नी, नि:सन्देह उस पर वही विपत्ति आयेगी जो उन पर आने वाली है । उन का प्रतिश्रुत समय प्रात: काल है । क्या प्रात: काल निकट नहीं है ? ।82।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ڏ مَّنْضُوْدٍ ۝٨٣

अत: जब हमारा निर्णय आ गया तो हमने उस (बस्ती) को उलट-पुलट कर दिया और उस पर हमने परत दर परत सूखी मिट्टी से बने पत्थरों की बारिश बरसा दी ।83।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۭ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ۝٨٤

जो तेरे रब्ब के निकट चिह्नित किये हुए थे । और यह (बर्ताव) अत्याचारियों से दूर नहीं ।84। (रुकू $\frac{7}{7}$)

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ وَلَا

और मद्‌यन (जाति) की ओर उनके भाई शुऐब को (हमने भेजा) उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो। उसके सिवा तुम्हारा

←समक्ष अपनी पुत्रियों को पेश किया था, यह ठीक नहीं है । (ऐसी सोच से अल्लाह बचाये) वास्तविकता यह है कि हज़रत लूत अलै. का इनकार करने के पश्चात उनकी जाति यह सोचती थी कि संभवत: अब यह बाहर से लोग बुला कर हमारे विरुद्ध कोई षड़यन्त्र रच रहा है । इसलिए हज़रत लूत अलै. ने अपनी जाति को शर्म दिलाई कि मेरी पुत्रियाँ तुम्हारे घरों में ब्याही हुई हैं । ऐसे में तुम्हारा अनिष्ट चाहते हुए मैं तुम्हारे विरुद्ध कैसे कोई षडयन्त्र रच सकता हूँ ?

تَنۡقُصُوا الۡمِكۡيَالَ وَالۡمِيۡزَانَ اِنِّىۡۤ اَرٰٮكُمۡ بِخَيۡرٍ وَّاِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ مُّحِيۡطٍ ﴿۸۵﴾

कोई उपास्य नहीं और नाप-तौल में कमी न किया करो । निश्चित रूप से मैं तुम्हें धनवान देखता हूँ और मैं तुम पर एक घेराव कर लेने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ ।85।

وَيٰقَوۡمِ اَوۡفُوا الۡمِكۡيَالَ وَالۡمِيۡزَانَ بِالۡقِسۡطِ وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ مُفۡسِدِيۡنَ ﴿۸۶﴾

और हे मेरी जाति ! नाप और तौल को न्यायपूर्वक पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम करके न दिया करो और उपद्रवी बनकर धरती में अशांति न फैलाओ ।86।

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيۡكُمۡ بِحَفِيۡظٍ ﴿۸۷﴾

यदि तुम (सच्चे) मोमिन हो तो अल्लाह की ओर से (व्यापार में) जो कुछ बचता है वही तुम्हारे लिए उत्तम है । और मैं तुम पर निरीक्षक नहीं हूँ ।87।

قَالُوۡا يٰشُعَيۡبُ اَصَلٰوتُكَ تَاۡمُرُكَ اَنۡ نَّتۡرُكَ مَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوۡ اَنۡ نَّفۡعَلَ فِىۡۤ اَمۡوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنۡتَ الۡحَلِيۡمُ الرَّشِيۡدُ ﴿۸۸﴾

उन्होंने कहा, हे शुऐब ! क्या तेरी नमाज़ तुझे आदेश देती है कि हम उसे छोड़ दें जिस की हमारे पूर्वज उपासना किया करते थे । अथवा हम अपनी इच्छानुसार अपनी धन-सम्पत्तियों का (उपयोग न) करें । निश्चित रूप से तू अवश्य बड़ा सहनशील (और) बुद्धिमान (बना फिरता) है ।88।

قَالَ يٰقَوۡمِ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ كُنۡتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّىۡ وَرَزَقَنِىۡ مِنۡهُ رِزۡقًا حَسَنًا ؕ وَمَاۤ اُرِيۡدُ اَنۡ اُخَالِفَكُمۡ اِلٰى مَاۤ اَنۡهٰٮكُمۡ عَنۡهُ ؕ اِنۡ اُرِيۡدُ اِلَّا الۡاِصۡلَاحَ مَا

उसने कहा, हे मेरी जाति ! मुझे बताओ तो सही कि यदि मैं अपने रब्ब की ओर से एक स्पष्ट युक्ति पर हूँ और वह मुझे अपनी ओर से पवित्र जीविका प्रदान करता है (क्या फिर भी मैं वही करूँ जो तुम चाहते हो ?) जबकि मैं नहीं चाहता जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ, स्वयं मैं उसे करने लग जाऊँ । मैं तो केवल सामर्थ्यानुसार सुधार करना

اسْتَطَعْتُ ۭ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۸۹﴾

चाहता हूँ। और अल्लाह के समर्थन के सिवा मुझे कोई सहायता प्राप्त नहीं। उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर झुकता हूँ।89।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿۹۰﴾

और हे मेरी जाति ! मेरी शत्रुता तुम्हें कदापि ऐसी बात पर आमादा न करे कि तुम पर भी वैसी विपत्ति आ जाये, जैसी नूह की जाति और हूद की जाति तथा सालेह की जाति पर आई थी। और लूत की जाति भी तुम से कुछ दूर नहीं।90।

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿۹۱﴾

और अपने रब्ब से क्षमायाचना करो। फिर प्रायश्चित करते हुए उसी की ओर झुको। नि:सन्देह मेरा रब्ब बार-बार दया करने वाला (और) बहुत प्रेम करने वाला है।91।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿۹۲﴾

उन्होंने कहा, हे शुऐब ! तू जो कहता है उसमें से बहुत सा हम समझ नहीं सकते। जबकि तुझे हम अपने बीच बहुत दुर्बल देखते हैं और यदि तेरा समुदाय न होता तो हम तुझे अवश्य संगसार कर देते और हमारे सामने तू कोई प्रभुत्व नहीं रखता।92।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۹۳﴾

उसने कहा, हे मेरी जाति ! क्या मेरा समुदाय तुम्हारे निकट अल्लाह से अधिक शक्तिशाली है और तुम ने उसे एक महत्वहीन वस्तु समझ कर पीठ पीछे फेंक रखा है। जो तुम करते हो नि:सन्देह मेरा रब्ब उसे घेरे हुए है।93।

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ

और हे मेरी जाति ! तुम अपने स्थान पर जो कर सकते हो करते रहो। निश्चित

عَامِلٌ ؕ سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ يَّاۡتِيۡهِ عَذَابٌ يُّخۡزِيۡهِ وَمَنۡ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارۡتَقِبُوۡۤا اِنِّىۡ مَعَكُمۡ رَقِيۡبٌ ﴿۹۴﴾

रूप से मैं भी करता रहूँगा। तुम शीघ्र ही जान लोगे कि किसे वह अज़ाब आ पकड़ेगा जो उसे अपमानित कर देगा और (तुम जान लोगे कि) कौन है वह जो झूठा है। और दृष्टि रखो, मैं भी अवश्य तुम्हारे साथ दृष्टि रखने वाला हूँ।94।

وَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا نَجَّيۡنَا شُعَيۡبًا وَّالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ بِرَحۡمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوا الصَّيۡحَةُ فَاَصۡبَحُوۡا فِىۡ دِيَارِهِمۡ جٰثِمِيۡنَ ۙ ﴿۹۵﴾

और जब हमारा निर्णय आ गया तो हमने शुऐब को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाये थे अपनी कृपा से मुक्ति प्रदान की। और जिन लोगों ने अत्याचार किया था उन्हें एक धमाकेदार अज़ाब ने पकड़ लिया। अत: वे अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गये।95।

كَاَنۡ لَّمۡ يَغۡنَوۡا فِيۡهَا ؕ اَلَا بُعۡدًا لِّمَدۡيَنَ كَمَا بَعِدَتۡ ثَمُوۡدُ ﴿۹۶﴾ ع

मानों वे उनमें कभी बसे ही न थे। सावधान! जिस प्रकार समूद की जाति विनष्ट हुई, उसी प्रकार मद्यन का भी सर्वनाश हो।96। (रुकू $\frac{8}{8}$)

وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مُوۡسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ۙ ﴿۹۷﴾

और निश्चित रूप से हमने मूसा को अपने चिह्नों और एक सुस्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा।97।

اِلٰى فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۟ٮِٕهٖ فَاتَّبَعُوۡۤا اَمۡرَ فِرۡعَوۡنَ ۚ وَمَاۤ اَمۡرُ فِرۡعَوۡنَ بِرَشِيۡدٍ ﴿۹۸﴾

फ़िरऔन और उसके मुखियाओं की ओर। तो उन्होंने फ़िरऔन के आदेश का अनुसरण किया, जबकि फ़िरऔन का आदेश उचित न था।98।

يَقۡدُمُ قَوۡمَهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فَاَوۡرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئۡسَ الۡوِرۡدُ الۡمَوۡرُوۡدُ ﴿۹۹﴾

क़यामत के दिन वह अपनी जाति के आगे आगे चलेगा और उन्हें आग के घाट पर ला उतारेगा और जिस घाट पर ले जाया जाता है (वह) बहुत ही बुरा है।99।

وَاُتۡبِعُوۡا فِىۡ هٰذِهٖ لَعۡنَةً وَّيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ

और इस (लोक) में भी और क़यामत के दिन भी उनके पीछे ला'नत लगा दी

بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿١٠٠﴾

गई । क्या ही बुरा अनुदान है जो दिया गया ।100।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا
قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠١﴾

यह उन बस्तियों के समाचारों में से (एक समाचार) है जिस का वृत्तान्त हम तेरे समक्ष वर्णन करते हैं । उनमें से कई (अब तक) विद्यमान हैं और कई मलियामेट हो चुकी हैं ।101।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِىْ يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ
رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠٢﴾

और हमने उनपर अत्याचार नहीं किया बल्कि उन्होंने स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार किया । अत: जब तेरे रब्ब का निर्णय आ गया तो उनके वे उपास्य उनके कुछ भी काम न आ सके जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे और उन्होंने उन्हें तबाही के सिवा किसी और चीज़ में नहीं बढ़ाया ।102।

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى
وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿١٠٣﴾

और तेरा रब्ब बस्तियों की तभी पकड़ करता है जब वे अत्याचारी होती हैं । उसकी पकड़ इसी प्रकार होती है । नि:सन्देह उसकी पकड़ बड़ी कष्टदायक (और) बहुत कठोर है ।103।

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ
الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ
النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٤﴾

जो व्यक्ति परकालीन अज़ाब से डरता हो निश्चित रूप से उसके लिए इस बात में एक वृहत चिह्न है । यह वह दिन है जिसके लिए लोगों को इकट्ठा किया जाएगा । और यह वह दिन है जिसकी गवाही दी गई है ।104।

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ؕ ﴿١٠٥﴾

और हम उसे एक गिने हुए निश्चित समय तक ही पीछे डालेंगे ।105।

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ

जिस दिन वह आ जाएगा तो कोई भी जान उसकी आज्ञा के बिना बात न कर

فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٦﴾

सकेगी । अतः उनमें से भाग्यहीन भी हैं और भाग्यशाली भी हैं ।106।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٧﴾

अतः वे लोग जो भाग्यहीन हुए तो वे आग में होंगे । उसमें उनके लिए चिल्लाना और चीख़ना है ।107।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٨﴾

जब तक आकाश और धरती शेष हैं वे उसमें रहने वाले हैं, सिवाए इसके जो तेरा रब्ब चाहे । निःसन्देह तेरा रब्ब जिस की इच्छा करता उसे अवश्य करके रहता है ।108।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۭ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٩﴾

और वे लोग जो भाग्यशाली बनाये गये तो वे स्वर्ग में होंगे जब तक कि आकाश और धरती शेष हैं । वे उसमें रहने वाले हैं सिवाए इसके जो तेरा रब्ब चाहे । यह एक अखण्ड प्रतिफल स्वरूप होगा ।109।*

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ۭ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١١٠﴾ ع

अतः ये लोग जिस (असत्य) की उपासना करते हैं तू उसके संबंध में किसी शंका में न पड़ । ये केवल उसी प्रकार उपासना करते हैं जैसे पहले से उनके पूर्वज करते रहे हैं और निश्चित रूप से हम उन्हें उनका भाग कम किये बिना पूरा-पूरा देंगे ।110। (रुकू $\frac{9}{9}$)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ

और निःसन्देह हमने मूसा को भी पुस्तक दी थी तो उसमें भी मतभेद किया गया । और यदि तेरे रब्ब की ओर

* आयत संख्या 108-109 : देखने में इन दोनों आयतों से यह शंका उत्पन्न होती है कि स्वर्ग की भाँति नरक भी चिरस्थायी है । परन्तु नरक के बारे में वर्णन करने वाली आयत में **इल्ला मा शाअ रब्बु क** (सिवाए इसके जो तेरा रब्ब चाहे) कह कर बात समाप्त कर दी गई है । जबकि स्वर्ग वाली आयत (सं. 109) में इसके अतिरिक्त **अता अन् ग़ै र मजज़ूज़** भी कह दिया गया । अर्थात वह एक ऐसा वरदान है जो कभी खण्डित नहीं होगा । इसी प्रकार अरबी में **ख़ुलूद्** शब्द लम्बे समय के लिए कहा जाता है । अतः यहाँ चिरस्थायी रूप से रहने का अर्थ करना ज़रूरी नहीं ।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١١﴾

से पहले से ही एक आदेश जारी न हो चुका होता तो अवश्य उनके बीच निर्णय कर दिया जाता । और वे अवश्य उसके संबंध में एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े हैं ।111।

وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١٢﴾

और नि:सन्देह तेरा रब्ब उन सब को उनके कर्मों का अवश्य पूरा-पूरा प्रतिफल देगा । जो वे करते हैं निश्चित रूप से वह उससे सर्वदा अवगत रहता है ।112।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٣﴾

अत: जैसे तुझे आदेश दिया जाता है (उस पर) दृढ़ता पूर्वक क़ायम हो जा । और वे भी (क़ायम हो जायें) जिन्होंने तेरे साथ प्रायश्चित किया है । और सीमा का उल्लंघन न करो । नि:सन्देह जो तुम करते हो वह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।113।

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٤﴾

और उन लोगों की ओर न झुको जिन्होंने अत्याचार किया अन्यथा तुम्हें भी आग आ पकड़ेगी और अल्लाह को छोड़कर तुम्हारे कोई संरक्षक नहीं होंगे। फिर तुम्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी ।114।

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّاكِرِينَ ﴿١١٥﴾

और दिन के दोनों छोर पर और रात के कुछ भागों में भी नमाज़ को क़ायम कर। नि:सन्देह नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं । उपदेश करने वालों के लिए यह एक बहुत बड़ा उपदेश है ।115।

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٦﴾

और धैर्य धारण कर । अत: अल्लाह उपकार करने वालों का प्रतिफल कदापि नष्ट नहीं करता ।116।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٧﴾

अतः तुम से पूर्व युगों में क्यों न कुछ ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति हुए जो धरती में उपद्रव को रोकते । परन्तु उन कुछ एक का मामला अलग है जिनको उनमें से हमने मुक्ति प्रदान की । और जिन लोगों ने अत्याचार किया, उन्होंने उसका अनुसरण किया जिसके कारण वे (पहले लोग) विद्रोही ठहराये गये । और वे अपराधी (लोग) थे ।117।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٨﴾

और तेरा रब्ब ऐसा नहीं कि बस्तियों को अत्याचारपूर्वक तबाह कर दे जबकि उनके निवासी सुधार-कार्य कर रहे हों ।118।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٩﴾

और यदि तेरा रब्ब चाहता तो लोगों को एक ही समुदाय बना देता । परन्तु वे सदैव मतभेद करते रहेंगे ।119।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٠﴾

सिवाए उसके जिस पर तेरा रब्ब कृपा करे और इसी उद्देश्य से उसने उन्हें पैदा किया था । और तेरे रब्ब की यह बात भी पूरी हुई कि मैं नरक को जिन्नों और जन-साधारण सब से अवश्य भर दूँगा ।120।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

और नबियों के समाचारों में से वह सब जो हम तेरे समक्ष वर्णन करते हैं वह है जिस के द्वारा हम तेरे दिल को दृढ़ता प्रदान करते हैं । और उन (समाचारों) में तेरे पास सत्य आ चुका है और (वह) उपदेश की बात भी और मोमिनों के लिए एक बड़ी सीख भी है ।121।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى

और जो ईमान नहीं लाते तू उनसे कह दे कि अपने स्थान पर तुम जो कर सकते

مَكَانَتِكُمْ ۭ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝١٢٢ۙ

हो करते रहो । निश्चित रूप से हम भी कुछ करने वाले हैं ।122।

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝١٢٣

और प्रतीक्षा करो । निश्चित रूप से हम भी प्रतीक्षा करने वाले हैं ।123।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝١٢٤ۧ

और आकाशों और धरती का अदृश्य (तत्त्व) अल्लाह ही का है और उसी की और सारे का सारा मामला लौटाया जाता है । अत: उसकी उपासना कर और उस पर भरोसा कर । और जो तुम लोग करते हो, तेरा रब्ब उससे अनजान नहीं है ।124। (रुकू $\frac{10}{10}$)

12- सूरः यूसुफ़

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 112 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरंभ भी **अलिफ़ लाम रा** खण्डाक्षरों से हो रहा है और वही अर्थ देता है जो पहले वर्णन किये जा चुके हैं ।

इसके तुरंत बाद समस्त वृत्तान्तों (क़सस) में से उस सर्वोत्तम वृत्तान्त का उल्लेख हुआ है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हार्दिक प्रसन्नता का कारण बनने वाला था, जो सूरः हूद में वर्णित घटनाओं से पहुँचे मानसिक आघात का सर्वोत्कृष्ट उपचार है । यहाँ पर क़सस का स्पष्टीकरण करना आवश्यक है । क़सस से अभिप्राय साधारण कथा-कहानी नहीं बल्कि अतीत की वे घटनायें हैं जो खोज लगाने पर ज्यों की त्यों सटीक सिद्ध होती हैं ।

इस सूरः का आरंभ हज़रत यूसुफ़ अलै. के एक स्वप्न के वर्णन के साथ किया गया है जिसमें उनके साथ घटने वाली समस्त घटनाओं का वर्णन है, जिसकी हज़रत याक़ूब अलै. ने यह व्याख्या की, कि हज़रत यूसुफ़ अलै. को उनके भाइयों से भारी क्षति पहुँचने का ख़तरा है । इसलिए उन्होंने यह उपदेश दिया कि यह स्वप्न अपने भाइयों को बताना नहीं ।

हज़रत यूसुफ़ अलै. को स्वप्न-फल का जो ज्ञान दिया गया था, यह पूरी सूरः उससे संबद्ध है । उदाहरणार्थ उनके साथ जो दो बन्दी थे, उन दोनों के स्वप्न की हज़रत यूसुफ़ अलै. ने ऐसी व्याख्या की जो ज्यों की त्यों पूरी हुई और इसी के फलस्वरूप वह व्यक्ति राजा के उस स्वप्न की व्याख्या हज़रत यूसुफ़ अलै. से करवाने का माध्यम बन गया, जिसकी राजकीय विद्वानों ने मात्र निजी विचार के आधार पर व्याख्या की थी । हज़रत यूसुफ़ अलै. की व्याख्या ही के परिणाम स्वरूप वह महान घटना घटी कि मिस्र और उसके आस-पास के वे दरिद्र लोग जो भुखमरी के कारण अवश्य मर जाते, इस प्रकोप से बचाये गये और निरंतर सात वर्ष तक उन्हें खाद्यान्न उपलब्ध कराया गया । हज़रत यूसुफ़ अलै. स्वयं इस व्यवस्था के निरीक्षक बनाये गये और इसी कारण अंततोगत्वा उनके माता-पिता और भाइयों को उनकी शरण में आना पड़ा और उनके लिए वे अल्लाह के समक्ष सजदः में गिर गये ।

इतिहास की ये ऐसी घटनाएँ हैं जिन का हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को व्यक्तिगत रूप से किसी प्रकार भी ज्ञान नहीं हो सकता था । इसलिए इस सूरः में कहा गया कि जब ये सब घट रहा था तब तू उन लोगों में मौजूद नहीं था ।

यह केवल सर्वज्ञ और सर्व अवगत अल्लाह ही है जो तुझे इन घटनाओं की वास्तविकता बता रहा है ।

इस सूर: का अंत इस आयत से किया गया है कि इन घटनाओं का वर्णन ऐसा नहीं जैसे कथा-कहानियाँ वर्णन की जाती हैं, बल्कि बुद्धिमानों के लिए इन घटनाओं में बहुत सी शिक्षाएँ हैं । नि:सन्देह सूर: यूसुफ़ अनगिनत शिक्षाओं की ओर ध्यानाकृष्ट करा रही है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّاثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ اثْنَا عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ । मैं देखता हूँ । ये एक सुस्पष्ट पुस्तक की आयतें हैं ।2।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ③

नि:सन्देह हमने इसे अरबी क़ुरआन के रूप में अवतरित किया ताकि तुम समझो ।3।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ④

हमने जो यह क़ुरआन तुझ पर वह्इ किया इसके द्वारा हम तेरे समक्ष प्रमाणित ऐतिहासिक तथ्यों में से सर्वोत्तम (तथ्य का) वर्णन करते हैं । जबकि इससे पूर्व (इस के बारे में) तू अनजान (लोगों) में से था ।4।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ⑤

(याद करो) जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता ! निश्चित रूप से मैं ने (स्वप्न में) ग्यारह नक्षत्र तथा सूर्य और चन्द्रमा को देखा है । (और) मैं ने उन्हें अपने लिए सजद: करते हुए देखा ।5।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ⑥

उसने कहा, हे मेरे प्रिय पुत्र ! अपना स्वप्न अपने भाइयों के समक्ष वर्णन नहीं करना । अन्यथा वे तेरे विरुद्ध कोई चाल चलेंगे । नि:सन्देह शैतान मनुष्य का खुला खुला शत्रु है ।6।

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ

और इसी प्रकार तेरा रब्ब तुझे (अपने लिए) चुन लेगा और तुझे मामलों की

تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ
وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ
مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۧ ۝٧ ع

तह तक पहुँचने की विद्या सिखा देगा। और तुझ पर तथा याक़ूब की संतान पर अपनी नेमत पूरी करेगा। जैसा कि उसने उसे तेरे पूर्वज इब्राहीम और इसहाक़ पर इस से पहले पूरा किया था। नि:सन्देह तेरा रब्ब स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है।7।

(रुकू $\frac{1}{11}$)

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ
لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝٨

निश्चित रूप से यूसुफ़ और उसके भाइयों (की घटना) में जिज्ञासुओं के लिए कई चिह्न हैं।8।

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى
اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۝٩

(याद करो) जब उन्होंने कहा कि नि:सन्देह यूसुफ़ और उसका भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय हैं जबकि हम एक सशक्त टोली हैं। निश्चित रूप से हमारे पिता एक स्पष्ट भूल में पड़े हैं।9।

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ
لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ
قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝١٠

यूसुफ़ की हत्या कर डालो अथवा उसे किसी स्थान पर फेंक आओ तो तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी ओर हो जाएगा। और तुम इसके बाद नेक लोग बन जाना।10।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ
وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ
بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١١

उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ़ की हत्या न करो बल्कि उसे किसी अंधे कुएँ की तह में फेंक दो जो चरागाह के निकट स्थित हो। उसे कोई यात्रीदल उठा ले जायेगा। यदि तुम कुछ करने वाले हो (तो यही करो)।11।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ

उन्होंने (अपने पिता से) कहा, हे हमारे पिता! आप को क्या हुआ है कि आप यूसुफ़ के विषय में हम पर भरोसा नहीं

وَ اِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ١٢

करते ? जबकि हम तो निश्चित रूप से उसके शुभ-चिंतक हैं ।12।

اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ١٣

उसे कल हमारे साथ भेज दीजिये ताकि वह खाता फिरे और खेले-कूदे और हम अवश्य उसके रक्षक होंगे ।13।

قَالَ اِنِّىْ لَيَحْزُنُنِىْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ١٤

उसने कहा, तुम्हारा इसे ले जाना निश्चित रूप से मुझे चिंतित करता है। और मैं डरता हूँ कि कहीं तुम्हारी असावधानी में उसे भेड़िया न खा जाये ।14।

قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ١٥

उन्होंने कहा, हमारे एक सशक्त टोली होने पर भी यदि उसे भेड़िया खा जाये तब तो हम निश्चित रूप से बहुत घाटा उठाने वाले होंगे ।15।

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِىْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ١٦

अतः जब वे उसे ले गये और चरागाह के निकटस्थ अंधे कुएँ की तह में उसे फेंक देने पर सहमत हो गये तो हमने उसकी ओर वह्इ की कि तू (एक दिन) अवश्य उन्हें उनकी इस शरारत से अवगत कराएगा और उन्हें कुछ जानकारी नहीं होगी (कि तू कौन है) ।16।

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ١٧

और रात्रि के समय वे अपने पिता के निकट रोते हुए आये ।17।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ١٨

उन्होंने कहा, हे हमारे पिता ! निश्चित रूप से हम दौड़ लगाते हुए एक दूसरे से (दूर) चले गये और यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया । अतः उसे भेड़िया खा गया और आप हमारी (बात) कदापि मानने वाले नहीं चाहे हम सच्चे ही हों ।18।

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۹﴾

और वे उसके कुर्ते पर झूठा खून लगा लाये । उसने कहा, (यह सच नहीं) बल्कि तुम्हारी आत्मा ने एक संगीन मामले को तुम्हारे लिए साधारण और सरल बना दिया है । अतः सम्यक रूपेण धीरज धरने (के अतिरिक्त मैं क्या कर सकता हूँ ?) और जो तुम वर्णन करते हो उस (बात) पर अल्लाह ही है जिस से सहायता माँगी जा सकती है ।19।

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۰﴾

और एक यात्रीदल आया और उन्होंने अपने जलवाहक को (पानी लाने के लिए) भेजा तो उसने (कूएँ में) अपना डोल डाल दिया । उसने कहा, हे (यात्री दल !) ख़ुशख़बरी ! यह तो एक बालक है । और उन्होंने उसे एक पूंजी के रूप में छुपा लिया । और जो वे करते थे अल्लाह उसे भली-भाँति जानता था ।20।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿۲۱﴾ ع

और उन्होंने उसे अल्प मूल्य पर कुछ दिरहमों के बदले बेच दिया । और उनको इसके बारे में बिल्कुल अभिरुचि नहीं थी ।21। (रुकू $\frac{2}{12}$)

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۫ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ

और जिस ने उसे मिस्र से ख़रीदा अपनी पत्नी से कहा, इसे सम्मानपूर्वक रखो । संभवतः यह हमें लाभ पहुँचाये अथवा इसे हम अपना पुत्र बना लें । और इस प्रकार हमने यूसुफ़ के लिए धरती में ठिकाना बना दिया और (यह विशेष व्यवस्था इसलिए की) ताकि हम उसे मामलों की तह तक पहुँचने का ज्ञान सिखा दें और अल्लाह अपने निर्णय पर सामर्थ्य

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

रखता है । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।22।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣﴾

और जब वह अपनी परिपक्व आयु को पहुँचा तो हमने उसे विवेक और ज्ञान प्रदान किये । और इसी प्रकार हम उपकार करने वालों को प्रतिफल प्रदान करते हैं ।23।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٤﴾

और जिस स्त्री के घर में वह था उसने उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध फुसलाने की चेष्टा की और द्वार बंद कर दिये और कहा, तुम मेरी ओर आओ । उस (यूसुफ़) ने कहा, अल्लाह बचाये ! नि:सन्देह मेरा रब्ब वह है जिसने मेरा बहुत अच्छा ठिकाना बनाया है । निश्चित रूप से अत्याचारी सफल नहीं हुआ करते ।24।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٥﴾

और निश्चित रूप से वह (स्त्री) उसका दृढ़ संकल्प कर चुकी थी और यदि वह (अर्थात् यूसुफ़) अपने रब्ब का एक वृहद चिह्न न देख चुका होता तो वह भी उसकी कामना कर लेता । यह ढंग इसलिए अपनाया ताकि हम उससे बुराई और निर्लज्जता को दूर रखें। नि:सन्देह वह हमारे शुद्ध किए गये भक्तों में से था ।25।*

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ

और वे दोनों द्वार की ओर लपके और उस (स्त्री) ने पीछे से (उसे खींचते हुए)

* इस आयत में अरबी शब्द **हम्म बिहा** का यह अर्थ नहीं है कि हज़रत यूसुफ़ अलै. ने भी बुराई का इरादा किया था । बल्कि इसे आयतांश **लौ ला अर्रा बुर्हा न रब्बिहि** के साथ मिलाकर पढ़ना चाहिए । इसका यह अर्थ है कि यदि इससे पूर्व यूसुफ़ ने अल्लाह के चिह्न न देखे होते तो वह भी उसके साथ बुरी कामना कर लेते । चिह्न से अभिप्राय कोई ऐसा चिह्न नहीं जिसे उन्होंने उसी क्षण देखा था, जैसा कि कई भाष्यकारों ने लिखा है । बल्कि बचपन से ही हज़रत यूसुफ़ अलै. को अल्लाह के चिह्न दिखाये गये थे, जिसके पश्चात उन के किसी बुरी कामना करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था ।

وَّ اَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۶﴾

उसका कुर्ता फाड़ दिया और उन दोनों ने उसके स्वामी को द्वार के निकट पाया। उस (स्त्री) ने कहा, जो तेरी घरवाली से दुष्कर्म का इरादा करे उसका प्रतिफल क़ैद किये जाने अथवा पीड़ाजनक दण्ड के सिवा और क्या हो सकता है ? ।26।

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۷﴾

उस (अर्थात् यूसुफ़) ने कहा, इसी ने मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध फुसलाने की चेष्टा की थी। और उसके घर वालों में से ही एक गवाह ने गवाही दी कि यदि उसका कुर्ता सामने से फटा है तो ये सच बोलती है और वह झूठों में से है ।27।

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۸﴾

और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो ये झूठ बोल रही है और वह सच्चों में से है ।28।

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿۲۹﴾

अतः जब उस (अर्थात पति) ने उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो (अपनी पत्नी से) कहा, निश्चित रूप से यह (घटना) तुम्हारी चालाकी से घटी है। (हे स्त्रियो !) तुम्हारी चालाकी निश्चित रूप से बहुत बड़ी होती है ।29।

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٜ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۚۖ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿۳۰﴾ ع

हे यूसुफ़ ! इससे विमुख हो जा और (हे स्त्री !) तू अपने पाप के लिए क्षमायाचना कर। निश्चित रूप से तू ही अपराधियों में से थी ।30। (रुकू $\frac{3}{13}$)

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا

और नगर की महिलाओं ने कहा कि सरदार की पत्नी अपने दास को उसकी इच्छा के विरुद्ध फुसलाती है। उस ने प्रेम की दृष्टि से उसके दिल में घर कर लिया है। निश्चित रूप से हम उसे

حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣١﴾

अवश्य एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पाती हैं ।31।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا ۖ إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣٢﴾

अत: जब उस ने उनकी छलपूर्ण बात सुनी तो उन्हें बुला भेजा । और उन के लिए एक टेक लगा कर बैठने का स्थान तैयार किया और उनमें से हर एक को एक-एक छुरी पकड़ा दी और उस (अर्थात् यूसुफ़) से कहा कि उनके सामने जा । अत: जब उन्होंने उसे देखा तो उसे बड़ा महात्मा पुरुष पाया और अपने हाथ काट लिये और कहा, पवित्र है अल्लाह । यह मनुष्य नहीं, यह तो एक सम्माननीय फ़रिश्ता के अतिरिक्त कुछ नहीं ।32।*

قَالَتْ فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدتُّهُ عَن نَّفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٣﴾

वह बोली, यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में तुम मेरी निंदा करती थीं और निश्चित रूप से मैं ने इसे इसकी इच्छा के विरुद्ध फुसलाने की चेष्टा की, पर वह बच गया और मैं इसे जो आदेश देती हूँ यदि इसने वह न किया तो वह अवश्य बंदी बना दिया जायेगा और अवश्य अपमानित जनों में से हो जाएगा ।33।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٤﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! जिस ओर वे मुझे बुलाती हैं उससे कारागार मुझे अधिक प्रिय है । और यदि तू उनकी योजना (का लक्ष्य) मुझ से न हटा दे तो मैं उनकी और झुक जाऊँगा और मैं अज्ञानों में से हो जाऊँगा ।34।

---

* आयतांश **क़त्तअ न ऐदियहुन्न** (उन्होंने अपने हाथ काट लिये) से यह अभिप्राय नहीं कि हज़रत यूसुफ़ अलै. के सौंदर्य पर मुग्ध हो कर उन महिलाओं ने अपने हाथों पर छुरियाँ चला दीं । बल्कि इसका एक अर्थ यह है कि उन्होंने उसे अपने हाथों की पहुँच से बहुत ऊपर पाया । अरबी वाक्य **अकबर न हू** (उन्होंने उसे बड़ा महात्मा पुरुष पाया) भी इस अर्थ का समर्थन करता है ।

فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٣٥

अत: उसके रब्ब ने उसकी दुआ को सुना और उससे उनकी चाल को फेर दिया । नि:सन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।35।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ۝٣٦ ع

फिर उसके बाद उन्होंने जो लक्षण देखे (तो) उन पर स्पष्ट हुआ कि कुछ समय के लिए उसे कारागार में अवश्य डाल दें ।36। (रुकू $\frac{4}{14}$)

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٣٧

और उसके साथ दो युवक भी कारागार में प्रविष्ट हुए । उनमें से एक ने कहा कि मैं (स्वप्न में) अपने आप को देखता हूँ कि मैं मदिरा बनाने के उद्देश्य से रस निचोड़ रहा हूँ । और दूसरे ने कहा कि मैं (स्वप्न में) अपने आप को देखता हूँ कि मैं अपने सिर पर रोटियाँ उठाये हुए हूँ जिस में से पक्षी खा रहे हैं । हमें इनके अर्थ बता। हम तुझे उपकार करने वाला समझते हैं ।37।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٣٨

उसने कहा कि तुम्हें जो भोजन दिया जाता है, वह तुम्हारे पास आने से पहले ही मैं इन (स्वप्नों) के फलाफल से तुम दोनों को अवगत करा दूँगा । यह (अर्थ) उस (ज्ञान) में से है जो मेरे रब्ब ने मुझे सिखाया। मैं उन लोगों के धर्म को छोड़ बैठा हूँ जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते थे और परलोक का इनकार करते थे ।38।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ

और मैं ने अपने पूर्वज इब्राहीम और इसहाक और याक़ूब के धर्म का

وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٣٩

अनुसरण किया । किसी वस्तु को अल्लाह का समकक्ष ठहराना हमारे लिए संभव न था । यह अल्लाह की कृपा ही से था जो उसने हम पर और (मोमिन) लोगों पर किया । परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता प्रकट नहीं करते ।39।

يٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤٠

हे कारागार के मेरे दोनों साथियो ! क्या भिन्न-भिन्न कई रब्ब अच्छे हैं अथवा एक पूर्ण प्रभुत्वशाली अल्लाह ? ।40।

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤١

तुम उसे छोड़कर ऐसे नामों की उपासना करते हो जो तुम और तुम्हारे पूर्वजों ने स्वयं ही उन (काल्पनिक उपास्यों) को दे रखे हैं जिनके समर्थन में अल्लाह तआला ने कोई प्रबल प्रमाण नहीं उतारा। निर्णय का अधिकार अल्लाह के सिवा किसी को नहीं । उसने आदेश दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की उपासना न करो । यह स्थायी रहने वाला और स्थायित्व प्रदानकारी धर्म है । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।41।

يٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِیْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِیَ الْاَمْرُ الَّذِیْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ۝٤٢

हे कारागार के दोनों साथियो ! तुम दोनों में से एक तो अपने स्वामी को मदिरा पिलायेगा और दूसरा सूली पर चढ़ाया जायेगा । फिर उसके सिर में से पक्षी कुछ (नोच-नोच कर) खायेंगे। जिसके बारे में तुम पूछताछ कर रहे थे उस बात का निर्णय सुना दिया गया है ।42।

وَقَالَ لِلَّذِیْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِیْ

और जिस व्यक्ति के बारे में उसने सोचा था कि उन दोनों में से वह बच जायेगा,

عِنْدَ رَبِّكَ ۡ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ
فَلَبِثَ فِى السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٣﴾ ع

उसने उससे कहा कि अपने स्वामी के निकट मेरी चर्चा करना । परन्तु अपने स्वामी के निकट (यह) चर्चा करने से उसे शैतान ने भुला दिया । अत: वह (यूसुफ़) कई वर्षों तक कारागार में पड़ा रहा ।43। (रुकू $\frac{5}{15}$)

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّىْۤ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ
سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ
خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ
اَفْتُوْنِىْ فِىْ رُءْيَاىَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا
تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٤﴾

और राजा ने (एक दिन राजसभा में) कहा कि मैं (स्वप्न में) सात हृष्ट-पुष्ट गायें देखता हूँ जिन्हें सात दुबली-पतली गायें खा रही हैं । और सात हरी-भरी बालियाँ और कुछ दूसरी सूखी हुई (बालियाँ भी देखता हूँ) । हे सभासदो ! यदि तुम स्वप्नफल बता सकते हो तो मुझे मेरा स्वप्नफल बताओ ।44।

قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ
بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٥﴾

उन्होंने कहा, ये निजी कल्पनाओं पर आधारित निरर्थक स्वप्न हैं और हम निरर्थक स्वप्नों के अर्थ का ज्ञान नहीं रखते ।45।

وَقَالَ الَّذِىْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ
اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٦﴾

उन दोनों (बन्दियों) में से जो बच गया था और एक लम्बी अवधि के बाद उसने (यूसुफ़ को) याद किया और कहा, मैं आपको इस (स्वप्न) का अर्थ बताऊँगा । अत: मुझे (यूसुफ़ के पास) भेज दें ।46।

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِىْ سَبْعِ
بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّىْۤ
اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

(उसने यूसुफ़ के पास जा कर कहा) हे सत्यवादी यूसुफ़ ! हमें सात हृष्ट-पुष्ट गायों को जिन्हें सात दुबली-पतली गायें खा रही हैं और सात हरी-भरी बालियों और सात सूखी हुई बालियों (को स्वप्न में देखने) का अर्थ समझा ताकि मैं लोगों की ओर वापस जाऊँ सम्भवत: वे (इस स्वप्नफल) को जान लें ।47।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۝٤٨

उसने कहा कि तुम लगातार सात वर्ष तक खेती करोगे । अतः जो तुम काटो उसमें से अल्प मात्रा के सिवा जिसे तुम खाओगे (शेष) को उसकी बालियों में ही रहने दो ।48।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ۝٤٩

फिर इसके बाद सात अत्यन्त कठिन (वर्ष) आयेंगे, जो तुम उन (दिनों) के लिए संचय कर रखे होगे वे उसे निगल जायेंगे । सिवाय उसमें से अल्पांश के जिसे तुम (भविष्य में खेती करने के लिए) संभाल रखोगे ।49।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝٥٠ ع

फिर उसके पश्चात एक (ऐसा) वर्ष आयेगा जिसमें लोग ख़ूब तृप्त किये जायेंगे और उसमें वे रस निचोड़ेंगे ।50।

(रुकू $\frac{6}{16}$)

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۗ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ۝٥١

राजा ने कहा, उसे मेरे पास लाओ । अतः जब दूत उस (अर्थात यूसुफ़) के पास पहुँचा तो उसने कहा, अपने स्वामी के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन महिलाओं का क्या हाल है जो अपने हाथ काट बैठी थीं । निःसन्देह मेरा रब्ब उन की चाल को भली-भाँति जानता है ।51।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْۤءٍ ۗ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ

उस (अर्थात राजा) ने पूछा, (हे स्त्रियो!) बताओ, जब तुम ने यूसुफ़ को उसकी इच्छा के विरुद्ध फुसलाने की चेष्टा की थी तब तुम्हारा क्या मामला था ? उन्होंने कहा, पवित्र है अल्लाह ! हमें तो उसके विरुद्ध किसी बुराई की जानकारी नहीं । तब सरदार की पत्नी ने कहा, अब सच्चाई खुल चुकी है ।

نَّفۡسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيۡنَ۝۵۲

मैंने ही उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध फुसलाना चाहा था और नि:सन्देह वह सत्यवादियों में से है ।52।

ذٰلِكَ لِيَعۡلَمَ اَنِّىۡ لَمۡ اَخُنۡهُ بِالۡغَيۡبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِىۡ كَيۡدَ الۡخَآئِنِيۡنَ۝۵۳

(यूसुफ़ ने कहा) यह इसलिए हुआ ताकि वह (अर्थात् सरदार) जान ले कि मैं ने उसकी अनुपस्थिति में उसके साथ कोई विश्वासघात नहीं किया । और विश्वासघातियों की चाल को अल्लाह कदापि सफल होने नहीं देता ।53।

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِیۡ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوۡٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ ؕ اِنَّ رَبِّیۡ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۵۴﴾

और मैं अपनी आत्मा को निर्दोष नहीं ठहराता । आत्मा तो अवश्य बुराई का आदेश देने वाली है, सिवाए इसके जिस पर मेरा रब्ब कृपा करे । नि:सन्देह मेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।54।

وَقَالَ الۡمَلِکُ ائۡتُوۡنِیۡ بِهٖۤ اَسۡتَخۡلِصۡهُ لِنَفۡسِیۡ ۚ فَلَمَّا کَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّکَ الۡیَوۡمَ لَدَیۡنَا مَکِیۡنٌ اَمِیۡنٌ ﴿۵۵﴾

और राजा ने आदेश दिया कि उसे मेरे पास ले आओ । मैं उसे अपने लिए चुन लूँ । फिर जब उस ने उससे बात-चीत की तो कहा, निश्चित रूप से तू आज (से) हमारे निकट प्रतिष्ठित (और) विश्वासपात्र है ।55।

قَالَ اجۡعَلۡنِیۡ عَلٰی خَزَآئِنِ الۡاَرۡضِ ۚ اِنِّیۡ حَفِیۡظٌ عَلِیۡمٌ ﴿۵۶﴾

उस (अर्थात यूसुफ़) ने कहा, मुझे राज-कोषों पर नियुक्त कर दें । निश्चित रूप से मैं बहुत सुरक्षा करने वाला (और) जानकारी रखने वाला हूँ ।56।

وَکَذٰلِکَ مَکَّنَّا لِیُوۡسُفَ فِی الۡاَرۡضِ ۚ یَتَبَوَّاُ مِنۡهَا حَیۡثُ یَشَآءُ ؕ نُصِیۡبُ بِرَحۡمَتِنَا مَنۡ نَّشَآءُ وَلَا نُضِیۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۵۷﴾

और इस प्रकार हमने यूसुफ़ को देश में प्रतिष्ठा प्रदान की । वह उस में जहाँ चाहता ठहरता । हम जिसे चाहते हैं अपनी कृपा प्रदान करते हैं । और हम उपकार करने वालों के प्रतिफल को नष्ट नहीं करते ।57।

وَلَاَجۡرُ الۡاٰخِرَةِ خَیۡرٌ لِّلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَکَانُوۡا یَتَّقُوۡنَ ﴿۵۸﴾ ع

और जो लोग ईमान ले आये और तक़वा धारण करते रहे, निश्चित रूप से उनके लिए परकालीन प्रतिफल उत्तम है ।58।

(रुकू $\frac{7}{1}$)

وَجَآءَ اِخۡوَةُ یُوۡسُفَ فَدَخَلُوۡا عَلَیۡهِ فَعَرَفَهُمۡ وَهُمۡ لَهٗ مُنۡکِرُوۡنَ ﴿۵۹﴾

और (अकाल के दिनों में खाद्यान्न लेने) यूसुफ़ के भाई (वहाँ) आये और उसके समक्ष उपस्थित हुए । उसने तो उन्हें पहचान लिया, परन्तु वे उसे पहचान न सके ।59।

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ٦٠

और जब उसने उन्हें उनके सामान के साथ (विदा करने के लिए) तैयार किया तो कहा, तुम्हारे पिता की ओर से जो तुम्हारा (एक और) भाई है उसे भी मेरे पास लाना । क्या तुम देखते नहीं कि मैं भरपूर माप देता हूँ और मैं सर्वोत्तम अतिथि-सेवक हूँ ।60।

فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ٦١

अत: यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो फिर तुम्हारे लिए मेरे पास कुछ माप (अर्थात खाद्यान्न) नहीं होगा और तुम कदापि मेरे निकट नहीं आना ।61।

قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ٦٢

उन्होंने कहा, हम उसके बारे में उसके पिता को अवश्य फुसलायेंगे और निश्चित रूप से हम (ऐसा) करके रहेंगे ।62।

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ٦٣

और उसने अपने कर्मचारियों से कहा कि इनकी पूँजी इनके सामान ही में रख दो ताकि जब वे अपने घर वालों की ओर वापस जायें तो इस बात का ध्यान रखें । संभवत: वे फिर लौट आयें ।63।

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ٦٤

अत: जब वे अपने पिता के पास लौटे तो उन्होंने कहा हे हमारे पिता ! हमें माप से रोक दिया गया है । अत: हमारे साथ हमारे भाई को भेजें ताकि हम माप प्राप्त कर सकें और निश्चित रूप से हम उसकी सुरक्षा करेंगे ।64।

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمِنتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِن قَبْلُ ۖ فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا ۖ

उसने कहा, उसके संबंध में क्या मैं इस के सिवा भी तुम पर कोई भरोसा कर सकता हूँ जैसा कि (इससे) पहले मैं ने उसके भाई के संबंध में तुम पर

وَّهُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ۝٦٥

किया था ? अतः अल्लाह ही है जो सर्वोत्तम रक्षक और वही सभी कृपा करने वालों से बढ़कर कृपा करने वाला है ।65।

وَلَمَّا فَتَحُوۡا مَتَاعَهُمۡ وَجَدُوۡا بِضَاعَتَهُمۡ رُدَّتۡ اِلَيۡهِمۡ‌ؕ قَالُوۡا يٰۤاَبَانَا مَا نَبۡغِىۡ‌ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتۡ اِلَيۡنَا‌ ۚ وَنَمِيۡرُ اَهۡلَنَا وَنَحۡفَظُ اَخَانَا وَنَزۡدَادُ كَيۡلَ بَعِيۡرٍ‌ ؕ ذٰ لِكَ كَيۡلٌ يَّسِيۡرٌ‏۝٦٦

फिर जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपनी पूँजी को अपनी ओर वापस किया हुआ पाया । उन्होंने कहा, हे हमारे पिता ! हमें (और) क्या चाहिए? यह है हमारी पूँजी जो हमें वापस लौटा दी गई है । और हम अपने घर वालों के लिए खाद्यान्न लायेंगे और अपने भाई की सुरक्षा करेंगे और एक ऊँट के भार (समान खाद्यान्न) अधिक प्राप्त करेंगे । यह सौदा बड़ा ही सरल है ।66।

قَالَ لَنۡ اُرۡسِلَهٗ مَعَكُمۡ حَتّٰى تُؤۡتُوۡنِ مَوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَـتَاۡتُنَّنِىۡ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ يُّحَاطَ بِكُمۡ‌ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوۡهُ مَوۡثِقَهُمۡ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوۡلُ وَكِيۡلٌ‏۝٦٧

उसने कहा, मैं उसे कदापि तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा जब तक कि तुम अल्लाह की दुहाई देकर मुझ से दृढ़ प्रतिज्ञा न कर लो कि तुम उसे अवश्य मेरे पास (वापस) ले आओगे, सिवाय इसके कि तुम को घेर लिया जाये । अतः जब उन्होंने उसे अपना दृढ़वचन दे दिया तो उसने कहा, जो हम कह रहे हैं अल्लाह उस का निरीक्षक है ।67।

وَقَالَ يٰبَنِىَّ لَا تَدۡخُلُوۡا مِنۡۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادۡخُلُوۡا مِنۡ اَبۡوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ‌ ؕ وَمَاۤ اُغۡنِىۡ عَنۡكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ‌ ؕ اِنِ الۡحُكۡمُ اِلَّا لِلّٰهِ‌ ؕ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ‌ ۚ وَعَلَيۡهِ

और उसने कहा, हे मेरे पुत्रो ! (उस नगर में) एक ही द्वार से प्रवेश न करना । बल्कि भिन्न-भिन्न द्वारों से प्रवेश करना और अल्लाह (के निर्णय) से मैं तुम्हें लेश-मात्र भी बचा नहीं सकता । आदेश अल्लाह ही का चलता है । उसी पर मैं भरोसा रखता हूँ और फिर चाहिए कि

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝٦٨

सभी भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करें ।68।

وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ
مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا
حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ
لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦٩ ع

अतः अपने पिता के आज्ञानुसार जब वे वहाँ से प्रविष्ट हुए (तो) अल्लाह के निर्णय से तो वह उन्हें कदापि बचा नहीं सकता था परन्तु (यह) याक़ूब के दिल की एक इच्छा थी जो उसने पूरी की । और निश्चित रूप से वह ज्ञानी पुरुष था। क्योंकि हमने उसे भली-भाँति ज्ञान सिखाया था । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।69। (रुकू $\frac{8}{2}$)

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ
اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٧٠

अतः जब वे यूसुफ़ के समक्ष पेश हुए, उसने अपने भाई को अपने निकट स्थान दिया (और उसे) कहा, निश्चित रूप से मैं तेरा भाई हूँ । अतः जो कुछ वे करते रहे हैं उस पर तू दुःखित न हो ।70।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ
السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ
اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ۝٧١

फिर जब उसने उन्हें उनके सामान समेत (विदा करने के लिए) तैयार किया तो उसने (अनजाने में) अपने भाई के सामान में पीने का बर्तन रख दिया । फिर एक ढढोरची ने घोषणा की कि हे यात्रीदल ! तुम अवश्य चोर हो ।71।

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝٧٢

उन्होंने उनकी ओर मुड़ कर उत्तर दिया, तुम क्या गुम पाते हो ? ।72।

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ
حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝٧٣

उन्होंने कहा, हम राजा के माप-तौल करने का बर्तन गुमशुदा पाते हैं और जो भी उसे लाएगा उसे एक ऊँट के भार (के समान खाद्यान्न पुरस्कार स्वरूप) दिया जाएगा और मैं इस बात का ज़िम्मेदार हूँ ।73।*

* राजा का माप-तौल का बर्तन जान बूझ कर नहीं रखा गया था बल्कि अनजाने में ऐसा हो गया →

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝٧٤

उन्होंने (उत्तर में) कहा, अल्लाह की क़सम ! तुम अवश्य जान चुके हो कि हम धरती में फ़साद करने नहीं आये और हम कदाचित चोर नहीं हैं ।74।

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝٧٥

उन्होंने पूछा, यदि तुम झूठे निकले तो उसका क्या दण्ड होगा ? ।75।

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٦

उन्होंने उत्तर दिया, इसका दण्ड यह है कि जिसके सामान में वह (नाप-तौल का पात्र) पाया जाये वही उसका बदला होगा । इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्डित करते हैं ।76।

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝٧٧

फिर उस (ढंढोरची) ने उस (अर्थात यूसुफ़) के भाई के बोरे से पूर्व उनके बोरों से (तलाशी) आरम्भ की । फिर उसके भाई के बोरे में से उस (नाप-तौल के पात्र) को निकाल लिया । इस प्रकार हमने यूसुफ़ के लिए उपाय किया । अल्लाह की इच्छा के बिना उसके लिए अपने भाई को राजा के शासन में रोक पाना संभव न था । हम जिसे चाहें उच्च पदस्थ बना देते हैं । और प्रत्येक ज्ञान रखने वाले से बढ़कर एक ज्ञानी है ।77।

قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ

उन्होंने कहा, यदि इसने चोरी की है तो इसके एक भाई ने भी इससे पूर्व चोरी की थी । तब यूसुफ़ ने इस (आरोप के प्रभाव) को अपने दिल में छिपा लिया और उसे उन पर प्रकट न किया । (हाँ मन ही मन में) कहा, तुम अत्यन्त निकृष्ट श्रेणि के (लोग) हो और जो तुम

←था । अन्यथा अल्लाह यह न कहता कि हमने यूसुफ़ के लिए उपाय किया (आयत : 77) यदि यह उपाय यूसुफ़ अलै. का होता तो उसे अल्लाह अपने साथ न जोड़ता ।

اَعۡلَمُ بِمَا تَصِفُوۡنَ ﴿۷۸﴾

वर्णन करते हो उसे अल्लाह ही भली-भाँति जानता है ।78।

قَالُوۡا يٰۤاَيُّهَا الۡعَزِيۡزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيۡخًا كَبِيۡرًا فَخُذۡ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰٮكَ مِنَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۷۹﴾

उन्होंने कहा, हे प्राधिकारी ! नि:सन्देह इसके पिता अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति हैं । अत: इसके बदले हम में से किसी एक को रख लीजिये । हम आपको अवश्य परोपकारियों में से समझते हैं ।79।

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنۡ نَّاۡخُذَ اِلَّا مَنۡ وَّجَدۡنَا مَتَاعَنَا عِنۡدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوۡنَ ﴿۸۰﴾ ع

उसने कहा, अल्लाह बचाये ! कि जिसके पास हम अपना सामान पायें उसके सिवा किसी और को पकड़ें । ऐसे में तो हम निश्चित रूप से अत्याचारी बन जायेंगे ।80। (रुकू $\frac{9}{3}$)

فَلَمَّا اسۡتَيۡـَٔسُوۡا مِنۡهُ خَلَصُوۡا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيۡرُهُمۡ اَلَمۡ تَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اَبَاكُمۡ قَدۡ اَخَذَ عَلَيۡكُمۡ مَّوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنۡ قَبۡلُ مَا فَرَّطْتُّمۡ فِىۡ يُوۡسُفَ ۚ فَلَنۡ اَبۡرَحَ الۡاَرۡضَ حَتّٰى يَاۡذَنَ لِىۡۤ اَبِىۡۤ اَوۡ يَحۡكُمَ اللّٰهُ لِىۡ ۚ وَهُوَ خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۸۱﴾

अत: जब वे उससे निराश हो गये तो (परस्पर) विचार-विमर्श के लिए अलग हो गये । उनमें से बड़े ने कहा, क्या तुम जानते नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह की दुहाई देकर अनिवार्य रूप से दृढ़ प्रतिज्ञा ली थी और (इससे) पूर्व भी तुम यूसुफ़ के मामले में ज़्यादती कर चुके हो । अत: मैं इस देश को कदापि नहीं छोड़ूँगा जब तक कि मेरे पिता मुझे अनुमति न दें अथवा मेरे लिए अल्लाह कोई निर्णय न कर दे । और वह निर्णय करने वालों में सर्वोत्तम है ।81।

اِرۡجِعُوۡۤا اِلٰٓى اَبِيۡكُمۡ فَقُوۡلُوۡا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابۡنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدۡنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمۡنَا وَمَا كُنَّا لِلۡغَيۡبِ حٰفِظِيۡنَ ﴿۸۲﴾

अपने पिता के पास जाओ और उन्हें कहो कि हे हमारे पिता ! निश्चित रूप से आप के पुत्र ने चोरी की है और हम केवल उसी की गवाही दे रहे हैं जिसकी हमें जानकारी है । और हम अप्रत्यक्ष विषय के कदापि रक्षक नहीं हैं ।82।

وَسۡـَٔلِ الۡقَرۡيَةَ الَّتِىۡ كُنَّا فِيۡهَا وَالۡعِيۡرَ الَّتِىۡۤ اَقۡبَلۡنَا فِيۡهَا‌ ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوۡنَ ﴿۸۳﴾

अतः उस बस्ती (वालों) से पूछें जिस में हम थे और उस यात्रीदल से भी जिस के साथ हम आये हैं । और निश्चित रूप से हम सच्चे हैं ।83।

قَالَ بَلۡ سَوَّلَتۡ لَـكُمۡ اَنۡفُسُكُمۡ اَمۡرًا‌ ؕ فَصَبۡرٌ جَمِيۡلٌ‌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنۡ يَّاۡتِيَنِىۡ بِهِمۡ جَمِيۡعًا‌ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۸۴﴾

उसने कहा, (नहीं) बल्कि तुम्हारे मन ने एक गंभीर विषय को तुम्हारे लिए हल्का और साधारण बना दिया है । अतः सम्यक् रूपेण धीरज धरने (के अतिरिक्त मैं क्या कर सकता हूँ ?) बिल्कुल संभव है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आये । निःसन्देह वही है जो स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।84।

وَتَوَلّٰى عَنۡهُمۡ وَقَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوۡسُفَ وَابۡيَـضَّتۡ عَيۡنٰهُ مِنَ الۡحُـزۡنِ فَهُوَ كَظِيۡمٌ ﴿۸۵﴾

और उसने उनसे मुँह फेर लिया और कहा, आह ! यूसुफ़ के लिए खेद है । और शोक के कारण उसकी आँखें भर आईं और वह अपना शोक दबाये रखने वाला था ।85।*

قَالُوۡا تَاللّٰهِ تَفۡتَؤُا تَذۡكُرُ يُوۡسُفَ حَتّٰى تَكُوۡنَ حَرَضًا اَوۡ تَكُوۡنَ مِنَ الۡهٰلِكِيۡنَ ﴿۸۶﴾

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! आप सदैव यूसुफ़ की ही चर्चा करते रहेंगे जब तक कि आप (शोक से) निढ़ाल हो न जायें अथवा हलाक हो न जायें ।86।

قَالَ اِنَّمَاۤ اَشۡكُوۡا بَثِّىۡ وَحُزۡنِىۡۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعۡلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۷﴾

उसने कहा, मैं तो अपने दुःख-दर्द की फ़रियाद केवल अल्लाह के समक्ष करता हूँ । और अल्लाह की ओर से मैं वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ।87।

---

* आयतांश : **इब् यज़्ज़त ऐनाहु** (उसकी आँखें सफेद हो गईं) यहाँ पर आँखें सफेद होने से अंधा हो जाना अभिप्राय नहीं है, बल्कि आँखों का आँसुओं से भर जाना है । हज़रत इमाम राज़ी रहि. ने लिखा है **इब यज़्ज़त ऐनाहु** अत्यधिक रोने की ओर इंगित करता है । फिर लिखते हैं **अत्यधिक रोने के कारण आँखों में बहुत पानी भर आता है । उस पानी की सफेदी के कारण आँख सफेद हो जाती है।** (तफ़्सीर कबीर, इमाम राज़ी रहि.) इस आयत का **कज़ीम** शब्द भी इस अर्थ का समर्थन करता है । क्योंकि यह **क़ज़्म** धातु से बना है, जिसका अर्थ है शोकपूर्ण भाव को सहन करना । इसी के कारण हज़रत याक़ूब अलै. की आँखें भर आईं थीं ।

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۸﴾

हे मेरे पुत्रो ! जाओ, और यूसुफ़ तथा उसके भाई के संबंध में खोज लगाओ और अल्लाह की कृपा से निराश मत हो । नि:सन्देह काफ़िरों के सिवा अल्लाह की कृपा से कोई निराश नहीं होता ।88।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿۸۹﴾

अत: जब वे उस (अर्थात यूसुफ़) के समक्ष (पुन:) उपस्थित हुए तो उन्होंने कहा, हे प्राधिकारी ! हमें और हमारे परिवार को बहुत कष्ट पहुँचा है और हम थोड़ी सी पूँजी लाये हैं । अत: हमें भरपूर तौल (अर्थात खाद्यान्न) प्रदान करें और हमें (कुछ) दान दें । निश्चित रूप से दान-पुण्य करने वालों को अल्लाह प्रतिफल प्रदान करता है ।89।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿۹۰﴾

उसने कहा, क्या तुम जानते हो कि जब तुम लोग अज्ञान थे तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था ? ।90।

قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ۗ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۫ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۗ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۱﴾

उन्होंने कहा, क्या सचमुच तू ही यूसुफ़ है ? उसने कहा, मैं ही यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है । निश्चित रूप से अल्लाह ने हम पर भारी अनुग्रह किया है । नि:सन्देह जो भी तक़्वा अपनाये और धैर्य धारण करे तो अल्लाह उपकार करने वालों का प्रतिफल कदापि नष्ट नहीं करता ।91।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۲﴾

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! नि:सन्देह अल्लाह ने तुझे हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है और हम ही अवश्य दोषी थे ।92।

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ؗ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۳﴾

उसने कहा, आज के दिन तुम पर कोई दोषारोपण नहीं होगा । अल्लाह तुम्हें क्षमा कर देगा और वह सभी कृपा करने वालों से सर्वाधिक कृपा करने वाला है ।93।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۴﴾ ع

मेरा यह कुर्ता साथ ले जाओ और मेरे पिता के समक्ष इसे रख दो, उन पर वास्तविकता खुल जायेगी और (बाद में) अपने सब घरवालों को मेरे पास ले आओ ।94। (रुकू $\frac{10}{4}$)

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۵﴾

अत: जब यात्रीदल चल पड़ा तो उनके पिता ने कहा, मुझे निश्चित रूप से यूसुफ़ की महक आ रही है, चाहे तुम मुझे पागल ठहराते रहो ।95।

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿۹۶﴾

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! निश्चित रूप से आप अपने उसी पुराने भ्रम में पड़े हैं ।96।

فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۷﴾

फिर जब शुभ-समाचारदाता आया (और) उसने उस (कुर्ते) को उस के समक्ष रख दिया तो उस पर वास्तविकता खुल गई । उस ने कहा, क्या मैं तुम्हें नहीं कहता था कि मैं अल्लाह की ओर से उन बातों की निश्चित रूप से जानकारी रखता हूँ, जो तुम नहीं जानते ? ।97।

قَالُوْا يٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۸﴾

उन्होंने कहा, हे हमारे पिता ! हमारे लिए (अल्लाह से) हमारे पापों की क्षमायाचना करें । निश्चित रूप से हम दोषी थे ।98।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ

उसने कहा, मैं तुम्हारे लिए अवश्य अपने रब्ब से क्षमायाचना करूँगा । नि:सन्देह

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٩﴾

वही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।99।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰى اِلَيْهِ
اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
اٰمِنِيْنَ ﴿١٠٠﴾

अतः जब वे यूसुफ़ के समक्ष पेश हुए तो उसने अपने माता-पिता को अपने निकट स्थान दिया और कहा कि यदि अल्लाह की इच्छा हो तो मिस्र में शांतिपूर्वक प्रवेश करो ।100।

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ
سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ
مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۗ وَقَدْ
اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ
وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ
الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۗ اِنَّ رَبِّيْ
لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠١﴾

और उसने अपने माता-पिता को सम्मान पूर्वक आसन पर बिठाया और वे सभी उसके लिए (अल्लाह के समक्ष) सजदः में गिर पड़े और उसने कहा, हे मेरे पिता ! मेरे पहले से देखे हुए स्वप्न का यह था स्वप्नफल । मेरे रब्ब ने इसे निश्चित रूप से सच कर दिखाया और मुझ पर बहुत कृपा की, जब उसने मुझे कारागार से निकाला और तुम्हें मरुभूमि से ले आया । जबकि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फूट डाल दी थी । निःसन्देह मेरा रब्ब जिसके लिए चाहे बहुत दया और अनुकंपा करने वाला है । निःसन्देह वही स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।101।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ
تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ
تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٢﴾

हे मेरे रब्ब ! तूने मुझे राज-कार्य में अंश प्रदान किया और बातों की वास्तविकता को समझने का ज्ञान दिया । हे आकाशों और धरती के सृष्टिकर्ता ! तू इहलोक और परलोक में मेरा मित्र है । मुझे आज्ञाकारी होने की अवस्था में मृत्यु दे । और मुझे सदाचारियों के वर्ग में शामिल कर ।102।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٣﴾

यह (वृत्तांत) अज्ञात समाचारों में से है जिसे हम तेरी ओर वह्इ करते हैं और तू उनके पास नहीं था जब उन्होंने अपनी बात पर सहमति बना ली थी जब कि वे (बुरी) योजनाएँ बना रहे थे ।103।

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

और चाहे तू कितनी भी इच्छा करे अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं बनेंगे ।104।

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٥﴾ ع

और तू उनसे इस (सेवा) का कोई प्रतिफल नहीं माँगता । यह तो समस्त लोकों के लिए केवल एक उपदेश है ।105। (रुकू $\frac{11}{5}$)

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٦﴾

और आकाशों और धरती में कितने ही चिह्न हैं जिन पर से वे मुँह फेरते हुए गुज़रते रहते हैं ।106।

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٧﴾

और उनमें से अधिकतर अल्लाह पर केवल इस प्रकार ईमान लाते हैं कि वे (साथ ही) शिर्क भी कर रहे होते हैं।107।

اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٨﴾

अतः क्या वे इस बात से निश्चिंत हो गये हैं कि अल्लाह के अज़ाब में से कोई ढाँप देने वाली (विपत्ति) उन पर आये। अथवा (क्रांति की) घड़ी अकस्मात आ जाये, जबकि वे (उसके) बारे में कोई जानकारी न रखते हों ।108।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؔ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٩﴾

तू कह दे कि यह मेरा रास्ता है । मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूँ । मैं और मेरे अनुगामी सुस्पष्ट ज्ञान पर स्थित हैं । और पवित्र है अल्लाह और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ ।109।

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡقُرٰى ؕ اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ۝١١٠

और हम ने तुझ से पहले बस्तियों के वासियों में से केवल पुरुषों को ही (रसूल के रूप में) भेजा, जिनकी ओर हम वह्इ किया करते थे । अत: क्या वे धरती पर घूमे-फिरे नहीं ताकि वे देख सकते कि उनके पूर्ववर्ती लोगों का कैसा परिणाम हुआ था ? और जिन्होंने तक़्वा धारण किया उनके लिए परलोक का घर ही उत्तम है । अत: क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।110।

حَتّٰٓى اِذَا اسۡتَيۡــَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ قَدۡ كُذِبُوۡا جَآءَهُمۡ نَصۡرُنَا ۙ فَنُجِّىَ مَنۡ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاۡسُنَا عَنِ الۡقَوۡمِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ۝١١١

यहाँ तक कि जब रसूल (उनसे) निराश हो गये और (लोगों ने) सोचा कि उनसे झूठ बोला गया है ।* तो हमारी सहायता उन तक पहुँची । अत: जिसे हमने चाहा वह बचा लिया गया और हमारा अज़ाब अपराधी लोगों से टाला नहीं जा सकता ।111।

لَقَدۡ كَانَ فِىۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِى الۡاَلۡبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيۡثًا يُّفۡتَرٰى وَلٰـكِنۡ تَصۡدِيۡقَ الَّذِىۡ بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَتَفۡصِيۡلَ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ۝١١٢ ع

उनकी ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन में बुद्धिमान व्यक्तियों के लिए निश्चित रूप से एक बड़ी शिक्षा है । यह कोई झूठे रूप से बनायी हुई कथा नहीं बल्कि उस (बात की) पुष्टि है जो उसके सामने है । और प्रत्येक विषय का स्पष्टीकरण है तथा जो लोग ईमान लाते हैं उन के लिए हिदायत और करुणा है ।112। (रुकू $\frac{12}{6}$)

---

* अरबी शब्द **कुज़िबू** (उनसे झूठ बोला गया) का यह अभिप्राय है कि उन्होंने यह समझा कि हम से नबियों ने झूठ बोला है । जब अल्लाह की सहायता नबियों को प्राप्त हो गई तब उन लोगों को समझ आ गई कि उन नबियों ने जो भी कहा था वह सच था ।

13- सूरः अर-राद

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 44 आयतें हैं ।

यहाँ अरबी खंडाक्षर **अलिफ़-लाम-मीम** के अतिरिक्त **रा** भी आया है और इस प्रकार **अलिफ़-लाम-मीम-रा** का अर्थ हुआ **अनल्लाहु आ'लमु व अरा** अर्थात् मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ और देखता हूँ ।

इस सूरः में ब्रह्माण्ड के ऐसे छिपे रहस्यों पर से पर्दा उठाया गया है जिन की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रत्यक्ष रूप से कोई भी जानकारी नहीं थी । इसमें इस ओर भी संकेत है कि इससे पूर्व जो सूचनायें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने वर्णन की गई हैं वे भी निस्सन्देह एक सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से बताई गई थीं, जिनमें संदेह का कोई स्थान नहीं ।

ब्रह्माण्ड के रहस्यों में से सबसे मौलिक विषय जिसे यहाँ बताया गया है वह है गुरुत्वाकर्षण (Gravity) की वास्तविकता । अल्लाह ने वर्णन किया कि धरती और आकाश अपने आप संयोगवश अपने कक्ष पर स्थित नहीं हो गये बल्कि समस्त आकाशीय पिंडों के मध्य एक ऐसी गुप्त शक्ति कार्य कर रही है जिसे तुम आँखों से देख नहीं सकते । इस शक्ति के परिणामस्वरूप अपने कक्ष पर स्थित समस्त आकाशीय पिंड मानो स्तंभों पर उठाए हुए हैं । अंतरिक्ष विज्ञान के जानकार गुरुत्वाकर्षण का यही अर्थ करते हैं । इसके विस्तृत विवरण का यहाँ अवसर नहीं ।

एक दूसरा महत्त्वपूर्ण विषय इस सूरः में यह वर्णित हुआ है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने स्वच्छ जल से धरती की प्रत्येक वस्तु को जीवन प्रदान किया है । समुद्र का जल तो अत्यन्त खारा होता है कि इससे स्थल भाग पर बसने वाले प्राणी और वनस्पति जीवन धारण करने के विपरीत मृत्यु का शिकार हो जाते हैं । इसमें समुद्र के पानी को निथार कर ऊँचें पहाड़ों की ओर ले जाने और फिर वहाँ से इसके बरसने और समुद्र की ओर वापस पहुँचते पहुँचते चारों ओर जीवन बिखेरने की व्यवस्था का उल्लेख किया गया है । इस व्यवस्था का बहुत गहरा सम्बन्ध आकाशीय बिजलियों से है जो समुद्र से वाष्प उठने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं और पानी भी बादलों के मध्य बिजली की कौंध के बिना बूँदों के रूप में धरती पर नहीं बरस सकता । बिजली की ये कड़कें कई बार ऐसी भयंकर होती हैं कि कुछ के लिए वे जीवन दायक होने के बदले उनके विनाश का कारण बन जाती हैं । इस लिए कहा कि फ़रिश्ते ऐसे समय में अल्लाह तआला के समक्ष भय से काँपते हैं । इससे पूर्व अल्लाह तआला ने यह वर्णन भी कर दिया है कि प्रत्येक मनुष्य की सुरक्षा के लिए उसके आगे और पीछे ऐसे गुप्त रक्षक हैं जो

अल्लाह तआला के विधान और आदेशानुसार ही उसकी सुरक्षा करते हैं। यह एक बहुत ही गहरा विज्ञान संबंधी विषयवस्तु है जिसका विस्तृत उल्लेख करना यहाँ संभव नहीं परन्तु जिसको भी सामर्थ्य है वह इसके अर्थ-सागर में डुबकी लगा कर ज्ञान के मोती निकाल सकता है।

फिर इस सूर: में यह भी कहा गया कि हमने प्रत्येक वस्तु को जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है। अरब वासी इतना तो जानते थे कि खजूर के जोड़े होते हैं। परन्तु अन्य वृक्षों और फलों के सम्बन्ध में उनकी कल्पना में भी नहीं था कि वे भी जोड़े-जोड़े हैं। अत: यह एक नया विषयवस्तु वर्णन कर दिया गया जिसको आज के वैज्ञानिकों ने इस गहराई से समझ लिया है कि उनके अनुसार केवल प्रत्येक जीवित वनस्पति के जोड़े नहीं हैं बल्कि अणु-परमाणु में भी जोड़े मिलते हैं। द्रव्य (Matter) के मुक़ाबले पर प्रतिद्रव्य (Anti-matter) का भी एक जोड़ा है। इस प्रकार यदि समस्त ब्रह्माण्ड को समेट दिया जाए तो उसका सकारात्मक तत्त्व उसके नकारात्मक तत्त्व से मिल कर समाप्त हो जाएगा और अनस्तित्व से अस्तित्व-निर्माण का सिद्धांत भी इन आयतों में छिपे अर्थों से सुलझ जाता है।

इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शत्रुओं पर तर्क पूरा करने के लिए एक ज़बरदस्त प्रमाण दिया जा रहा है कि यह महान नबी और इसके सहाबा रज़ि. कैसे पराजित हो सकते हैं जबकि उनका क्षेत्र बढ़ता चला जा रहा है और उनके शत्रुओं का क्षेत्र घटता चला जा रहा है। इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सांत्वना दी गई कि अन्तत: चाहे इस्लाम की भव्य विजय तू अपनी आँख से देख सके अथवा न देख सके, हम हर हाल में तेरे धर्म को समस्त संसार पर विजयी कर देंगे।

☆☆☆

سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعٌ وَّ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّ سِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٢

अनल्लाहु आ'लमु व अरा : मैं अल्लाह हूँ सबसे अधिक जानने वाला हूँ और मैं देखता हूँ । ये संपूर्ण पुस्तक की आयतें हैं। और जो तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से उतारा गया, सत्य है परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते ।2।

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝٣

अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना ऐसे स्तंभों के ऊँचा किया जिन्हें तुम देख सको । फिर वह अर्श पर स्थिर हुआ और सूर्य एवं चन्द्रमा को सेवा पर नियुक्त किया । प्रत्येक वस्तु एक निश्चित अवधि तक के लिए गतिशील है। वह प्रत्येक काम को योजनापूर्वक करता है (और) अपने चिह्नों को खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम अपने रब्ब से मिलने का विश्वास करो ।3।

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٤

और वही है जिसने धरती को फैला दिया और इसमें पर्वत और नदियाँ बनाईं और हर प्रकार के फलों में से उसने उसमें दो-दो जोड़े बनाए । वह रात के द्वारा दिन को ढाँप देता है । निस्सन्देह इसमें सोच-विचार करने वाले लोगों के लिए चिह्न हैं ।4।

وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ

और धरती में एक दूसरे से जुड़े हुए क्षेत्र हैं और अंगूरों के बाग़ और खेतियाँ और

مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ
وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۟
وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ ؕ
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٥

खजूर के वृक्ष भी, एक जड़ से एक से अधिक कोंपलें निकालने वाले और एक जड़ से अधिक कोंपलें न निकालने वाले हैं। ये (सब कुछ) एक ही पानी से सींचे जाते हैं। और हमने इनमें से कुछ को कुछ पर फलों की दृष्टि से महत्ता प्रदान की है। निस्सन्देह इसमें बुद्धिमान लोगों के लिए चिह्न हैं।5।

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا
تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ۬ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ
الْاَغْلٰلُ فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٦

और यदि तू आश्चर्य करे तो उनका यह कथन भी तो बहुत आश्चर्यजनक है कि क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हम अवश्य एक नयी सृष्टि में ढाले जाएँगे ? यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब्ब का इनकार किया और यही हैं वे जिनकी गर्दनों में तौक़ होंगे तथा यही आग वाले लोग हैं। वे उसमें दीर्घ काल तक रहने वाले हैं।6।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ
وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ
رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٧

और वे तुझ से बुराई को भलाई से पहले शीघ्रतापूर्वक माँगते हैं। जबकि उनसे पहले बुहत से शिक्षाप्रद उदाहरण गुज़र चुके हैं। और निस्सन्देह तेरा रब्ब लोगों के लिए उनके अत्याचार के बावजूद बहुत क्षमा करने वाला है। और निस्सन्देह तेरा रब्ब दंड देने में बहुत कठोर है।7।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ
وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٨ ع

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया कहते हैं, ऐसा क्यों न हुआ कि इसके रब्ब की ओर से इस पर कोई एक निशान ही उतारा जाता। निस्सन्देह तू केवल एक सतर्ककारी है। और प्रत्येक जाति के लिए एक पथ-प्रदर्शक होता है।8।

(रुकू $\frac{1}{7}$)

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۭ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٩

अल्लाह जानता है जो प्रत्येक मादा (गर्भ के रूप में) उठाती है और (उसे भी) जिसे गर्भाशय कम करते हैं और जिसे बढ़ाते हैं । और प्रत्येक वस्तु उसके निकट एक विशेष अनुमान के अनुसार होती है ।9।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝١٠

वह परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञाता है, बहुत बड़ा (और) बहुत ऊँची शान वाला है ।10।

سَوَاۗءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝١١

बराबर है तुम में से वह जिसने बात छिपाई और जिसने बात को प्रकट किया । और वह जो रात को छिप जाता है और दिन को (सरे आम) चलता फिरता है ।11।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْۗءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝١٢

उसके लिए उसके आगे और पीछे चलने वाले रक्षक (नियुक्त) हैं जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा करते हैं । निस्सन्देह अल्लाह किसी जाति की अवस्था को नहीं बदलता जब तक वे स्वयं अपने आप को न बदलें । और जब अल्लाह किसी जाति के बुरे अन्त का निर्णय कर ले तो किसी प्रकार उसको टालना संभव नहीं । और उस के सिवा उनके लिए कोई कार्यसाधक नहीं ।12।*

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝١٣

वही है जो तुम्हें आसमानी बिजली दिखाता है जिससे कभी तुम भय और कभी लालच में पड़ जाते हो और (वही) बोझल बादलों को (ऊँचा) उठा देता है ।13।

---

* अरबी वाक्य **मिन् अम्रिल्लाहि** यूँ तो अरबी मुहावरा की दृष्टि से **बि अम्रिल्लाहि** होना चाहिए था अर्थात् अल्लाह के आदेश से । परन्तु यह विशेष ढंग दो अर्थ रखता है कि अल्लाह के आदेश से, अल्लाह ही के विधान से बचाने के लिए अल्लाह का आदेश प्रकट होता है ।

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٤﴾

और बिजली की घन-गरज उसकी स्तुति के साथ (उसका) गुणगान करती है और फ़रिश्ते भी उसके भय से (गुणगान कर रहे होते हैं) । और वह कड़कती हुई बिजलियाँ भेजता है और उनके द्वारा जिसे चाहे विपत्ति में डालता है । जबकि वे अल्लाह के बारे में झगड़ रहे होते हैं । और वह पकड़ करने में बहुत कठोर है ।14।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۗ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ۗ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿١٥﴾

सच्ची दुआ उसी से माँगी जाती है । और जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं वे उनकी किसी बात का उत्तर नहीं देते । हाँ परन्तु (वे) उस व्यक्ति की भाँति (हैं) जो अपने दोनों हाथ जल की ओर बढ़ाए ताकि वह उसके मुँह तक पहुँच जाए । हालाँकि वह (जल) किसी प्रकार उस तक पहुँचने वाला नहीं । और काफ़िरों की दुआ पथभ्रष्टता में भटकने के सिवा और कुछ नहीं ।15।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿١٦﴾ السجدة

और जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह ही को सजदः करते हैं । चाहे खुशी से करें चाहे विवशता से और उनकी परछाइयाँ भी सुबह और शाम (के समय सजदः करती हैं) ।16।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ قُلِ اللّٰهُ ۗ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ

तू पूछ, आकाशों और धरती का रब्ब कौन है ? (और) कह दे कि अल्लाह ही है । तू कह दे, क्या फिर तुम उसके सिवा ऐसे मित्र बना बैठे हो जो स्वयं अपने लिए भी न लाभ की और न हानि की कुछ शक्ति रखते हैं ? तू पूछ, क्या अंधा और देखने वाला बराबर हो सकते हैं ?

تَسْتَوِى الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا
لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ
الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ
وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۷﴾

और अंधकार और प्रकाश एक समान हो सकते हैं ? अथवा क्या उन्होंने अल्लाह के सिवा ऐसे साझीदार बना रखे हैं जिन्होंने उसकी सृष्टि की भाँति सृष्टि रचना की है, फिर उन पर सृष्टि सन्दिग्ध हो गई ? तू कह दे कि अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा है । और वह अद्वितीय (और) प्रतापवान् है ।17।

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ
بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا
يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِى النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ
مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ
جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى
الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
الْاَمْثَالَ ؕ ﴿۱۸﴾

उसने आसमान से पानी उतारा तो घाटियाँ अपनी सामर्थ्य के अनुसार बह उठीं और बाढ़ ने ऊपर आजाने वाली झाग को उठा लिया । और वे जिस वस्तु को आग में डाल कर दहकाते हैं ताकि ज़ेवर या दूसरे सामान बनाएँ उससे भी इसी प्रकार की झाग उठती है। इसी प्रकार अल्लाह सच और झूठ का उदाहरण वर्णन करता है । अतः जो झाग है वह तो बेकार चली जाती है । और जो लोगों को लाभ पहुँचाता है वह धरती में ठहर जाता है । इसी प्रकार अल्लाह उदाहरणों का वर्णन करता है ।18।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ
وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى
الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ

जो लोग अपने रब्ब की बात को स्वीकार करते हैं उनके लिए भलाई है और वे लोग जो उसकी (बात को) स्वीकार नहीं करते यदि वह सब का सब उनका हो जाये जो धरती में है और उसके बराबर और भी हो तो वे उसको देकर अवश्य अपनी जानें छुड़ाने का प्रयत्न करेंगे । ये वे लोग हैं जिनके लिए बहुत बुरा हिसाब (निश्चित) है और उनका

جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩﴾ ع

ठिकाना नरक है । और क्या ही बुरा ठिकाना है ।19। (रुकू $\frac{2}{8}$)

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ
الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۖ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٠﴾

तो क्या वह जो जानता है कि जो तेरे रब्ब की ओर से तेरी ओर उतारा गया है सत्य है, उसकी भाँति हो सकता है जो अंधा हो ? निस्सन्देह उपदेश केवल बुद्धिमान लोग ही ग्रहण करते हैं ।20।

الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ
الْمِيْثَاقَ ﴿٢١﴾

(अर्थात) वे लोग जो अल्लाह के (साथ की हुई) प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और दृढ़ प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ते ।21।

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ
يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ
سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿٢٢﴾

और वे लोग जो उसे जोड़ते हैं जिसे जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया और अपने रब्ब से डरते हैं और बुरे हिसाब से भय करते हैं ।22।

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ
وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٣﴾

और वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब की प्रसन्नता के लिए धैर्य धारण किया और नमाज़ को क़ायम किया और जो कुछ हमने उनको दिया उसमें से छुपा कर भी और दिखा कर भी ख़र्च किया और जो नेकियों के द्वारा बुराइयों को दूर करते रहते हैं । यही वे लोग हैं जिनके लिए (परकालीन) घर का (सर्वोत्तम) परिणाम है ।23।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ
مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ
وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٤﴾

(अर्थात) स्थायी स्वर्ग हैं । उनमें वे प्रविष्ट होंगे और वे भी जो उनके पूर्वजों और उनकी पत्नियों और उनकी संतानों में से सुधर गए । और फ़रिश्ते उन के पास प्रत्येक द्वार से आ रहे होंगे ।24।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

(यह कहते हुए) सलाम हो तुम पर उस कारण जो तुम ने धैर्य धारण किया ।

عُقۡبَى الدَّارِ ۝٢٥

अत: क्या ही अच्छा है (परकालीन) घर का परिणाम ।25।

وَالَّذِيۡنَ يَنۡقُضُوۡنَ عَهۡدَ اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مِيۡثَاقِهٖ وَيَقۡطَعُوۡنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنۡ يُّوۡصَلَ وَيُفۡسِدُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعۡنَةُ وَلَهُمۡ سُوۡۤءُ الدَّارِ ۝٢٦

और वे लोग जो अल्लाह से की गई प्रतिज्ञा को पक्का करने के बाद तोड़ देते हैं और उसे काटते हैं जिसके जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है और धरती में फ़साद करते फिरते हैं । यही वे लोग हैं जिनके लिए ला'नत है और उनके लिए सबसे बुरा घर होगा ।26।

اَللّٰهُ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيَقۡدِرُ ؕ وَفَرِحُوۡا بِالۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ؕ وَمَا الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا فِى الۡاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝٢٧ ع

अल्लाह जिसके लिए चाहे जीविका बढ़ा देता है और संकुचित भी करता है । और वे लोग सांसारिक जीवन पर ही प्रसन्न हो गए हैं । और परलोक में सांसारिक जीवन की वास्तविकता एक तुच्छ सुख-साधन के सिवा कुछ (याद) न रहेगी ।27। (रुकू $\frac{3}{9}$)

وَيَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ اٰيَةٌ مِّنۡ رَّبِّهٖ ؕ قُلۡ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنۡ يَّشَآءُ وَيَهۡدِىۡۤ اِلَيۡهِ مَنۡ اَنَابَ ۝٢٨

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, कहते हैं क्यों न इस पर इसके रब्ब की ओर से कोई एक चिह्न ही उतारा गया । तू कह दे निस्सन्देह अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और अपनी ओर (केवल) उसे हिदायत प्रदान करता है जो (उसकी ओर) झुकता है ।28।

اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَتَطۡمَٮِٕنُّ قُلُوۡبُهُمۡ بِذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَٮِٕنُّ الۡقُلُوۡبُ ۝٢٩

(अर्थात्) वे लोग जो ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह की याद से संतुष्ट हो जाते हैं। सुनो ! अल्लाह ही की याद से दिल संतुष्टि पाते हैं ।29।

اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوۡبٰى لَهُمۡ وَحُسۡنُ مَاٰبٍ ۝٣٠

वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए बहुत पवित्र स्थान और बहुत ही उत्तम लौटने की जगह है ।30।

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿۳۱﴾

इसी प्रकार हमने तुझे एक ऐसी उम्मत में भेजा जिससे पहले कई उम्मतें गुज़र चुकी थीं ताकि तू उन पर उसे पाठ करे जो हमने तेरी ओर वह्इ किया, हालाँकि वे रहमान का इनकार कर रहे हैं । तू कह दे, वह मेरा रब्ब है । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर मेरा विनम्रता पूर्वक झुकना है ।31।

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۳۲﴾ ع

और यदि क़ुर्आन ऐसा होता कि उससे पहाड़ चलाए जा सकते अथवा उससे धरती फाड़ी जा सकती अथवा उसके द्वारा मुर्दों से बात-चीत की जा सकती (तो भी वे संदेह करते) । वास्तविकता यह है कि फैसला पूर्णतया अल्लाह ही का होता है । अत: क्या वे लोग जो ईमान लाए हैं इस बात से अवगत नहीं हुए कि यदि अल्लाह चाहता तो सब के सब मनुष्यों को हिदायत दे देता ? और वे लोग जो काफ़िर हुए उन्हें उनके कर्मों के कारण (दिलों को) खटखटाने वाली एक विपत्ति पहुँचती रहेगी अथवा वह (चेतावनी) उनके घरों के निकट उतरेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन आ पहुँचे। निस्सन्देह अल्लाह वचन भंग नहीं करता ।32।*

(रुकू $\frac{4}{10}$)

* क़ुर्आन पाठ करने से न तो पहाड़ टलते हैं, न धरती फाड़ी जा सकती है, न मुर्दों से बात-चीत की जा सकती है, बल्कि ये बातें अल्लाह के आदेश से संभव हो सकती हैं । इसमें इस ओर भी संकेत है कि हज़रत मसीह अलै. के कहने पर न पहाड़ टलते थे, न धरती फाड़ी जाती थी, न मुर्दे जीवित किए जाते थे बल्कि अल्लाह ही का आदेश चलता था ।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٣﴾

और निस्सन्देह तुझ से पहले रसूलों से भी उपहास किया गया । फिर मैंने उन्हें जिन्होंने इनकार किया, कुछ ढील दी फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया । तो मेरा दंड कैसा (शिक्षाप्रद) था ? ।33।

اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٤﴾

तो क्या वह जो हर एक जान पर निरीक्षक है कि उसने क्या कमाया (सच्चाई के साथ जाँच-पड़ताल करने का अधिकारी नहीं ?) । और उन्होंने अल्लाह के साझीदार बनाये हैं । तू कह दे, उनके नाम तो गिनाओ । अथवा क्या फिर तुम उसे ऐसी बात से अवगत कराओगे जिसकी वह समग्र धरती में कोई जानकारी नहीं रखता ? अथवा (ये) केवल दिखावे की बातें हैं ? वास्तविकता यह है कि जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए उनके छल-कपट सुन्दर बना दिए गए और वे (हिदायत के) मार्ग से रोक दिए जाएँगे। और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट घोषित कर दे उसे हिदायत देने वाला कोई नहीं ।34।

لَهُمْ عَذَابٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٥﴾

उनके लिए सांसारिक जीवन में अज़ाब है और परलोक का अज़ाब अत्यन्त कठोर है । और अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई नहीं ।35।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ

उस स्वर्ग का उदाहरण जिसका मुत्तक़ियों से वादा किया गया है (यह है) कि उसके दामन में नहरें बहती हैं । उसका फल और उसकी छाया भी

وَّ ظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ڰ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝٣٦

चिरस्थायी हैं । यह उन लोगों का अंत है जिन्होंने तक़वा धारण किया जबकि काफ़िरों का अंत आग है ।36।

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۭ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۭ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝٣٧

और जिन लोगों को हमने पुस्तक दी वे उससे जो तेरी ओर उतारा जाता है प्रसन्न होते हैं । और विभिन्न गिरोहों में से कुछ ऐसे हैं जो इसके कुछ भागों का इनकार कर देते हैं । तू कह दे कि निस्सन्देह मुझे यही आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की उपासना करूँ और उसका कोई समकक्ष न ठहराऊँ । उसी की ओर मैं बुलाता हूँ और उसी की ओर मेरा लौटना है ।37।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝٣٨ ع

और इसी प्रकार हमने उसे एक सरल और शुद्ध भाषा संपन्न आदेश के रूप में उतारा है । और तेरे पास ज्ञान आ चुकने बाद यदि तू उनकी इच्छाओं का अनुसरण करे तो तुझे अल्लाह की ओर से कोई मित्र और कोई बचाने वाला न मिलेगा ।38। (रुकू $\frac{5}{11}$)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝٣٩

और निस्सन्देह हमने तुझ से पहले बहुत से रसूल भेजे और हमने उनके लिए पत्नियाँ बनाईं और सन्तान भी (बनाये) । और किसी रसूल के लिए यह संभव नहीं कि कोई एक आयत भी अल्लाह की आज्ञा के बिना ला सके । और प्रत्येक निश्चित घड़ी के लिए एक लेखपत्र है ।39।

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ وَيُثْبِتُ ښ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝٤٠

अल्लाह जो चाहे मिटा देता है और क़ायम भी रखता है और उसके पास सभी लेखपत्रों का मूल है ।40।

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

और यदि हम तुझे उन डरावने वादों में से कुछ दिखा दें जो हम उनसे करते हैं अथवा तुझे मृत्यु दे दें तो (प्रत्येक दशा में) तेरा काम केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है और हिसाब लेना हमारे ज़िम्मे है ।41।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤٢﴾

क्या उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि निश्चित रूप से हम धरती को उसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं और अल्लाह ही निर्णय करता है । उसके निर्णय को टालने वाला कोई नहीं और वह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है ।42।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٣﴾

और निस्सन्देह उनसे पहले लोगों ने भी योजना बनायी थी । अतः प्रत्येक योजना पूर्णतया अल्लाह ही के अधिकार में है । वह जानता है जो हर एक जान कमाती है और इनकार करने वाले अवश्य जान लेंगे कि (भावी) घर का (सर्वोत्तम) परिणाम किस के लिए है ।43।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٤﴾ ع

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, कहते हैं कि तू (अल्लाह की ओर से) भेजा हुआ नहीं है । तू कह दे कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह के रूप में पर्याप्त है और वह भी (गवाह है) जिसके पास पुस्तक का ज्ञान है ।44।

(रुकू $\frac{6}{12}$)

14- सूर: इब्राहीम

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 53 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरम्भ भी खंडाक्षरों से हुआ है । सूर: यूनुस में भी **अलिफ़-लाम-रा** आ चुका है वही व्याख्या यहाँ पर भी लागू होती है ।

इससे पूर्ववर्ती सूर: का अंत इस आयत पर हुआ है :-

''और वे लोग जिन्होंने इनकार किया कहते हैं कि तू (अल्लाह की ओर से भेजा हुआ) नहीं है । तू कह दे कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह के रूप में पर्याप्त है और वह भी (गवाह है) जिसके पास पुस्तक का ज्ञान है ।''

इस सूर: का आरम्भ भी पुस्तक की चर्चा से हुआ है और पुस्तक के उतरने का यह रहस्य वर्णन किया गया है कि यह तुझ पर इस कारण उतारी जा रही है ताकि लोगों को अन्धेरों से प्रकाश की ओर निकाला जाए । फिर यह भी चर्चा की गई है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी इसी उद्देश्य से पुस्तक दी गई थी । फिर हज़रत मूसा अलै. की उस चेतावनी का वर्णन है जिससे आपने अपनी जाति को सतर्क किया कि यदि तुम और वे सभी जो धरती में बसते हैं मेरा इनकार कर दोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे इनकार से बेपरवाह है और तुम उसकी स्तुति न भी करो तो वह अपने आप में स्वयं स्तुति के योग्य है ।

उसके बाद विभिन्न नबियों का वर्णन है कि उनकी जातियों ने इनकार क्यों किया। उनके इनकार का आधार यही था कि वे रसूलों को अपने जैसा एक मनुष्य समझते थे जिन पर अल्लाह तआला की पवित्र वह्इ उतर ही नहीं सकती ।

इस सूर: में एक नई बात यह भी पाई जाती है कि क़त्ले मुर्तद (धर्मत्यागी की हत्या करना) के सिद्धान्त की बहस उठाई गई है और कहा गया है कि धर्मत्यागी की हत्या का सिद्धान्त रसूलों के इनकार करने वालों का साझा सिद्धान्त था । अत: उन्होंने प्रत्येक रसूल को अपनी सोच के अनुसार धर्मत्यागी समझते हुए उसके अन्त से सावधान किया कि हम धर्मत्यागी को अवश्य दंड दिया करते हैं जो कि अपनी धरती से तब तक निर्वासित होता है जब तक वह हमारे धर्म में न लौट आए । अत: अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर वह्इ की कि तुम्हारे विनाश का दावा करने वाले स्वयं ही नष्ट कर दिए जाएँगे, यहाँ तक कि जिन धरतियों के वे स्वामी बन बैठे हैं उनके बाद तुम उनके उत्तराधिकारी बना दिए जाओगे ।

इसी सूर: में अरबी शब्द **कलिम:** (उक्ति) की एक शानदार व्याख्या की गई है और इसी प्रकार शब्द **शजर:** (वृक्ष) के अर्थ भी ख़ूब खोल दिए गए हैं । पवित्र वृक्ष का

उदाहरण पवित्र व्यक्तियों अर्थात नबियों की भाँति है जिनकी जड़ें देखने में धरती में गड़ी होती हैं परन्तु वे अपना आध्यात्मिक भोजन आसमान से प्राप्त करते हैं और हर हाल में उनको यह भोजन प्रदान किया जाता है चाहे सुख के दिन हों अथवा दु:ख के दिन हों । और अपवित्र वृक्ष से अभिप्राय नबियों के विरोधी हैं, जो इस प्रकार धरती से उखाड़ फेंक दिए जाएँगे जैसे वे पौधे जो तेज़ हवाओं के कारण धरती से उखड़ जाते हैं और हवाएँ उन्हें उसी दशा में एक स्थान से दूसरे स्थान तक इधर-उधर करती रहती हैं । अत: नबियों के विरोधियों की भी यही दशा होगी । वे बार-बार अपने सिद्धान्त परिवर्तित करेंगे और अन्तत: मिट्टी में मिला दिए जाएँगे ।

इसके बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वह दुआ वर्णित हुई है जो ख़ाना-क़ा'बा से सम्बन्धित है और इसमें अल्लाह तआला से यह प्रार्थना की गई है कि ख़ाना-का'बा के पास रहने वालों को दूर-दराज़ से हर प्रकार के फल प्रदान किए जाएँ । यह दुआ इसी प्रकार पूरी हुई । मक्का वालों को भौतिक फल भी दिये गए और आध्यात्मिक फल भी दिये गये और इसका संक्षिप्त वर्णन सूर: क़ुरैश में किया गया है । आध्यात्मिक फलों में सबसे बड़ा फल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रूप में प्रकट हुआ अर्थात आप वह पवित्र कलिम: बन कर उभरे जो मानव समाज को आसमानी फल प्रदान करता है ।

इस सूर: के अन्त पर वर्णन किया गया है कि काफ़िर इस्लाम के विरुद्ध या रसूलों के विरुद्ध जितने भी षड़यन्त्र करना चाहें, यहाँ तक कि उनके षड़यन्त्रों के द्वारा पहाड़ जड़ों से उखेड़ फेंकें जाएँ तब भी वे अल्लाह के रसूलों को असफल नहीं कर सकते ।

यहाँ पहाड़ों का उदाहरण इस लिए दिया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी विशाल पहाड़ के समान सर्वश्रेष्ठ रसूल के रूप में दर्शाया गया है । अत: इस सूर: का अंत इन शब्दों पर होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इनकार करने वालों की धरती और उनके आकाश परिवर्तित कर दिए जाएँगे और नयी धरती व आकाश बनाए जाएँगे जिसके परिणामस्वरूप पूर्ण प्रभुत्व वाले अल्लाह की ओर वे गिरोह-दर-गिरोह निकल खड़े होंगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ اِبْرَاهِيْمَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٢

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ, मैं देखता हूँ । यह एक पुस्तक है जिसे हमने तेरी ओर उतारी है ताकि तू लोगों को उनके रब्ब के आदेश से अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकालते हुए उस मार्ग पर डाल दे जो पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) स्तुतियों वाले का मार्ग है ।2।

اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ۝٣

अर्थात अल्लाह (का मार्ग) जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और धरती में है और काफ़िरों के लिए एक कठोर अज़ाब से विनाश (निश्चित) है ।3।

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝٤

(अर्थात) उनके लिए जो परलोक के मुक़ाबले पर सांसारिक जीवन से अधिक प्रेम रखते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसे टेढ़ा (करना) चाहते हैं । ये लोग घोर पथभ्रष्टता में लिप्त हैं ।4।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥

और हमने प्रत्येक पैग़म्बर को उसकी जातीय भाषा के साथ भेजा ताकि वह उन्हें ख़ूब खोल कर समझा सके । अत: अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।5।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝٦

और निस्सन्देह हमने मूसा को अपने चिह्नों के साथ (यह आदेश देकर) भेजा कि अपनी जाति को अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकाल ला और उन्हें अल्लाह के दिन याद करा । निस्सन्देह इसमें प्रत्येक धैर्य धारण करने वाले (और) बहुत कृतज्ञ व्यक्ति के लिए अनेक चिह्न हैं ।6।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝٧ ع

और (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह की नेमत को याद करो जो उसने तुम पर की, जब उसने तुम्हें फ़िरऔन की जाति से मुक्ति प्रदान की । वे तुम्हें बहुत बुरी यातना देते थे और तुम्हारे बेटों की तो हत्या कर देते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे । और इसमें तुम्हारे रब्ब की ओर से (तुम्हारे लिए) बहुत बड़ी परीक्षा थी ।7। (रुकू $\frac{1}{13}$)

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝٨

और जब तुम्हारे रब्ब ने यह घोषणा की कि यदि तुम कृतज्ञता प्रकट करोगे तो मैं अवश्य तुम्हें बढ़ाऊँगा । और यदि तुम कृतघ्नता करोगे तो निस्सन्देह मेरा अज़ाब बहुत कठोर है ।8।

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٩

और मूसा ने कहा, यदि तुम और वे जो धरती में (बसते) हैं सब के सब कृतघ्नता करें तो निस्सन्देह अल्लाह बे-परवाह (और) स्तुति योग्य है ।9।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ

क्या तुम तक उन लोगों के समाचार नहीं आए जो तुम से पहले थे अर्थात् नूह की जाति के, और आद और समूद (जाति) के और उन लोगों के जे उनके बाद थे ।

بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فِيْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْۤا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝١٠

उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। उनके पास उनके रसूल सुस्पष्ट चिह्न ले कर आए तो उन्होंने (अहंकार करते हुए) अपने हाथ अपने मुहों में रख लिए और कहा, निस्सन्देह हम उस बात का जिसके साथ तुम भेजे गए हो, इनकार करते हैं। और निस्सन्देह हम उसके बारे में जिसकी ओर तुम हमें बुलाते हो बैचैन कर देने वाली शंका में पड़े हुए हैं ।10।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١١

उनके रसूलों ने कहा, क्या अल्लाह के बारे में कोई सन्देह है जो आसमानों और धरती का पैदा करने वाला है ? वह तुम्हें बुलाता है ताकि वह तुम्हारे पाप क्षमा कर दे और तुम्हें अन्तिम निश्चित अवधि तक कुछ और ढील दे दे । उन्होंने कहा कि तुम हमारी तरह के मनुष्य ही हो । तुम चाहते हो कि हमें उन (मूर्तियों) से रोक दो जिनकी हमारे पूर्वज उपासना किया करते थे । अत: हमारे पास कोई सुस्पष्ट प्रबल तर्क तो लाओ ।11।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٢

उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम तुम्हारी तरह के मनुष्य होने के अतिरिक्त कुछ नहीं । परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे दया करता है । और हम में सामर्थ्य नहीं कि कोई बड़ा चिह्न अल्लाह के आदेश के बिना ले आयें । और फिर चाहिए कि अल्लाह ही पर मोमिन भरोसा करें ।12।

وَمَا لَنَاۤ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا

और हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें जब कि उसने हमारी राहों

سُبُلَنَا ۖ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٣﴾

की ओर (स्वयं) हमें हिदायत दी है । और जो तुम हमें कष्ट पहुँचाओगे हम निस्सन्देह उस पर धैर्य धारण करेंगे । और फिर चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा करने वाले भरोसा करें ।13।

(रुकू $\frac{2}{14}$)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤﴾

और उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया अपने रसूलों से कहा कि हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे अथवा तुम अवश्य हमारे धर्म में वापस आ जाओगे । तब उनके रब्ब ने उनकी ओर वह्इ की कि निस्सन्देह हम अत्याचारियों का विनाश कर देंगे ।14।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١٥﴾

और अवश्य हम तुम्हें उनके बाद राज्य में बसा देंगे । यह उसके लिए है जो मेरी सत्ता से डरता है और मेरी चेतावनी से भयभीत होता है ।15।

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٦﴾

और उन्होंने (अल्लाह से) विजय माँगी और प्रत्येक अत्याचारी शत्रु हलाक हो गया ।16।

مِنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَاءٍ صَدِيدٍ ﴿١٧﴾

उस से परे नरक है और उसे पीप मिला हुआ पानी पिलाया जाएगा ।17।

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿١٨﴾

वह उसे घूँट-घूँट पिएगा और सरलता से उसे निगल न सकेगा । और प्रत्येक दिशा से मृत्यु उस की ओर लपकेगी जबकि वह मर नहीं सकेगा । और उससे परे एक और कठोर अज़ाब है ।18।

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ

उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अपने रब्ब का इनकार किया, यह है कि उनके कर्म उस राख की भाँति हैं जिस पर एक

عَاصِفٍ ۖ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٩﴾

आँधी वाले दिन तेज़ हवा चले । जो कुछ उन्होंने कमाया उसमें से किसी चीज़ पर वे अधिकार नहीं रखते । यही वह घोर पथभ्रष्टता है ।19।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ يَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿٢٠﴾

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है । (हे मनुष्यो !) यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और नई सृष्टि ले आए ।20।*

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢١﴾

और अल्लाह के लिए वह कुछ कठिन नहीं ।21।

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ۚ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢٢﴾ ع

और अल्लाह के समक्ष वे इकट्ठे निकल खड़े होंगे । अत: जिन्होंने अहंकार किया, दुर्बल लोग उनसे कहेंगे हम तो तुम्हारे ही पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम अल्लाह के अज़ाब में से कुछ थोड़ा सा हम से टाल सकते हो । वे कहेंगे, यदि अल्लाह हमें हिदायत प्रदान करता तो हम तुम्हें भी अवश्य हिदायत दे देते। (अब) चाहे हम विलाप करें या धैर्य धरें हमारे लिए बराबर है । बच निकलने की हमें कोई राह उपलब्ध नहीं ।22।

(रुकू $\frac{3}{15}$)

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ۚ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ

और जबकि फ़ैसला निपटा दिया जाएगा। शैतान कहेगा कि निस्सन्देह अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था जबकि मैं तुम से वादा करके फिर वादा तोड़ता रहा । और मुझे तुम पर कोई

* यहाँ इस बात की सम्भावना दर्शाई गई है कि यदि अल्लाह चाहे तो मनुष्य-जाति को पूर्णतया नष्ट करके एक नई सृष्टि को धरती का उत्तराधिकारी बना सकता है । और यह अल्लाह तआला के लिए कोई कठिन काम नहीं ।

سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾

प्रभुत्व प्राप्त न था सिवाए इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरे निमंत्रण को स्वीकार कर लिया । अतः मुझे न धिक्कारो बल्कि अपने आप को धिक्कारो । न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पूरा कर सकता हूँ न तुम मेरी फ़रियाद को पूरा कर सकते हो । निस्सन्देह मैं उसका इनकार करता हूँ जो तुम मुझे इससे पूर्व (अल्लाह का) साझीदार बनाया करते थे । निस्सन्देह अत्याचारियों के लिए ही पीड़ादायक अज़ाब (निश्चित) है ।23।

وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۭ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٤﴾

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए ऐसे बाग़ों में प्रविष्ट किए जाएँगे जिनके दामन में नहरें बहती हैं। वे अपने रब्ब के आदेश के साथ उनमें सदा रहने वाले हैं । उन (स्वर्गों) में उनका उपहार **सलाम** होगा ।24।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٥﴾

क्या तूने ध्यान नहीं दिया कि किस प्रकार अल्लाह ने एक पवित्र उक्ति का एक पवित्र वृक्ष के साथ उदाहरण वर्णन किया है । उसकी जड़ मज़बूती से गड़ी है और उसकी चोटी आसमान में है ।25।

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۭ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾

वह हर घड़ी अपने रब्ब के आदेश से अपना फल देता है । और अल्लाह मनुष्यों के लिए उदाहरण वर्णन करता है ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें ।26।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۨ

और अपवित्र उक्ति का उदाहरण अपवित्र वृक्ष के समान है जिसे धरती पर

اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٧﴾

से उखाड़ दिया गया हो । उसके लिए (किसी एक स्थान पर) टिकना निश्चित न हो ।27।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٨﴾ ع

अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए दृढ़वचन के साथ सांसारिक जीवन में और परलोक में स्थिरता प्रदान करता है। जबकि अल्लाह अत्याचारियों को पथभ्रष्ट ठहराता है और अल्लाह जो चाहता है करता है ।28। (रुकू $\frac{4}{16}$)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٩﴾

क्या तूने उन लोगों की ओर नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत को इनकार में परिवर्तित कर दिया और अपनी जाति को विनाश के घर में उतार दिया ।29।

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٣٠﴾

अर्थात् नरक में । वे उसमें प्रविष्ठ होंगे और क्या ही बुरा ठहरने (का स्थान) है ।30।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣١﴾

और उन्होंने अल्लाह के लिए साझीदार बना लिए ताकि वे उसके मार्ग से (लोगों को) बहकाएँ । तू कह दे कि कुछ लाभ उठालो । फिर निश्चय तुम्हारी यात्रा आग ही की ओर है ।31।

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣٢﴾

तू मेरे उन भक्तों से कह दे जो ईमान लाए हैं कि वे नमाज़ को क़ायम करें और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसमें से छुपा कर भी और दिखा कर भी खर्च करें । इस से पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें कोई क्रय-विक्रय नहीं होगा और न कोई मित्रता (काम आएगी) ।32।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

अल्लाह वह है जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया और आसमान से

وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿۳۳﴾

पानी उतारा । फिर उसके द्वारा कई फल उगाए (जो) तुम्हारे लिए जीविका के रूप में (हैं) । और तुम्हारे लिए नौकाओं को सेवा में लगाया ताकि वे उसके आदेश से समुद्र में चलें । और तुम्हारे लिए नदियों को सेवा में लगा दिया ।33।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿۳۴﴾

और तुम्हारे लिए सूर्य और चन्द्रमा को सेवा में इस प्रकार लगाया कि वे दोनों सदा चक्कर काट रहे हैं । और तुम्हारे लिए रात और दिन को सेवा में लगा दिया ।34।

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿۳۵﴾ ع

और उसने हर एक चीज़ तुम्हें दी जो तुमने उससे माँगी और यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो कभी उनकी गणना नहीं कर सकोगे । निस्सन्देह मनुष्य बहुत अत्याचार करने वाला (और) बड़ा कृतघ्न है ।35।

(रुकू $\frac{5}{17}$)

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿۳۶﴾

और (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा, हे मेरे रब्ब ! इस शहर को शांति का स्थान बना दे । और मुझे और मेरे बेटों को इस बात से बचा कि हम मूर्तियों की उपासना करें ।36।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۷﴾

हे मेरे रब्ब ! इन्होंने लोगों में से अधिकतर को निश्चित रूप से पथभ्रष्ट कर दिया है । अतः जिसने मेरा अनुसरण किया तो वह निस्सन्देह मुझ से है । और जिसने मेरी अवज्ञा की तो निस्सन्देह तू बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।37।

رَبَّنَآ اِنِّىۡۤ اَسۡكَنۡتُ مِنۡ ذُرِّيَّتِىۡ بِوَادٍ غَيۡرِ ذِىۡ زَرۡعٍ عِنۡدَ بَيۡتِكَ الۡمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ فَاجۡعَلۡ اَفۡـئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهۡوِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ وَارۡزُقۡهُمۡ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَشۡكُرُوۡنَ ﴿۳۸﴾

हे हमारे रब्ब ! निश्चित रूप से मैंने अपनी संतान में से कुछ को एक अन्न-जल विहीन घाटी में तेरे आदरणीय घर के निकट बसा दिया है । हे हमारे रब्ब! ताकि वे नमाज़ को क़ायम करें। अत: लोगों के दिलों को उनकी ओर झुका दे । और उन्हें फलों में से जीविका प्रदान कर ताकि वे कृतज्ञता प्रकट करें ।38।

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعۡلَمُ مَا نُخۡفِىۡ وَمَا نُعۡلِنُ ؕ وَمَا يَخۡفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ فِى الۡاَرۡضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ﴿۳۹﴾

हे हमारे रब्ब ! निस्सन्देह तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो हम प्रकट करते हैं। और निश्चित रूप से अल्लाह से धरती और आकाश में कुछ छुप नहीं सकता ।39।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ وَهَبَ لِىۡ عَلَى الۡكِبَرِ اِسۡمٰعِيۡلَ وَ اِسۡحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّىۡ لَسَمِيۡعُ الدُّعَآءِ ﴿۴۰﴾

समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए है जिसने मुझे बुढ़ापे के बावजूद इस्माईल और इसहाक़ प्रदान किए । निस्सन्देह मेरा रब्ब दुआ को बहुत सुनने वाला है ।40।

رَبِّ اجۡعَلۡنِىۡ مُقِيۡمَ الصَّلٰوةِ وَمِنۡ ذُرِّيَّتِىۡ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلۡ دُعَآءِ ﴿۴۱﴾

हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरी संतान को भी नमाज़ क़ायम करने वाला बना। हे हमारे रब्ब ! और मेरी दुआ स्वीकार कर ।41।

رَبَّنَا اغۡفِرۡ لِىۡ وَلِوَالِدَىَّ وَلِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ يَوۡمَ يَقُوۡمُ الۡحِسَابُ ﴿۴۲﴾

हे हमारे रब्ब ! मुझे (उस दिन) और मेरे माता-पिता को भी और मोमिनों को भी क्षमा प्रदान कर जिस दिन हिसाब-किताब होगा ।42। (रुकू $\frac{6}{18}$)

وَلَا تَحۡسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعۡمَلُ الظّٰلِمُوۡنَ ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمۡ لِيَوۡمٍ تَشۡخَصُ فِيۡهِ الۡاَبۡصَارُ ۙ ﴿۴۳﴾

और जो कर्म अत्याचारी करते हैं तू अल्लाह को कदापि उस से बे-ख़बर न समझ । वह उन्हें केवल उस दिन तक ढील दे रहा है जिस दिन आँखें फटी की फटी रह जाएँगी ।43।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٤﴾

वे अपने सिर उठाए हुए भय से दौड़ते फिर रहे होंगे । उनकी दृष्टि उनकी ओर लौट कर नहीं आएगी (अर्थात कुछ दिखाई नहीं देगा) और उनके दिल वीरान होंगे ।44।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۭ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿٤٥﴾

और लोगों को उस दिन से डरा जिस दिन उन पर अज़ाब आएगा । तो वे लोग जिन्होंने अत्याचार किए, कहेंगे हे हमारे रब्ब ! हमें थोड़े समय तक ढील दे, हम तेरा निमंत्रण स्वीकार करेंगे और रसूलों का अनुसरण करेंगे। (उनसे कहा जायेगा) क्या तुम इससे पूर्व कसमें नहीं खाया करते थे कि तुम पर कभी पतन नहीं आएगा।45।

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٦﴾

और तुम उनके घरों में बस रहे थे जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया और तुम पर भली-भँति खुल चुका था कि हमने उनसे कैसा बर्ताव किया और हमने तुम्हारे सामने ख़ूब खोल कर उदाहरण वर्णन किए ।46।

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۭ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٧﴾

और उन्होंने (यथाशक्ति) अपनी योजना कर देखी और उनकी चालाकी योजना के सामने है । चाहे उनकी योजना ऐसी होती कि उससे पहाड़ टल सकते ।47।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٨﴾

अत: तू कदापि अल्लाह को अपने रसूलों से किए हुए वादों को तोड़ने वाला न समझ । निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) कठोर प्रतिशोध लेने वाला है ।48।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٩﴾

जिस दिन धरती एक दूसरी धरती में परिवर्तित करदी जाएगी और आसमान भी। और वे एक, अद्वितीय और पूर्ण प्रभुत्व वाले अल्लाह के समक्ष (उपस्थित होने के लिए) निकल खड़े होंगे।49।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٥٠﴾

और तू उस दिन अपराधियों को ज़ंजीरों में जकड़े हुए देखेगा।50।

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥١﴾

उनके वस्त्र तारकोल से (बने हुए) होंगे। और उनके चेहरों को आग ढाँप लेगी।51।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥٢﴾

ताकि अल्लाह हर एक जान को (उसका) प्रतिफल दे जो उसने कमाया। निस्सन्देह अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है।52।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٣﴾ ع

यह लोगों के लिए एक खुला-खुला संदेश है और (उद्देश्य यह है) कि उन्हें इस के द्वारा सतर्क किया जाये। और वे जान लें कि वही है जो एक ही उपास्य है और बुद्धिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।53।

(रुकू $\frac{7}{19}$)

15- सूरः अल-हिज्र

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 100 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ **अलिफ़-लाम-रा** खंडाक्षरों से होता है और इसके पश्चात् इन खंडाक्षरों को नहीं दोहराया गया है ।

पिछली सूरः में वर्णित रौद्र और सौम्य चिह्नों के परिणामस्वरूप कई बार काफ़िरों के दिल भी भयभीत हो जाते हैं । इसका वर्णन इस सूरः में यूँ किया गया कि वे भी दिल ही दिल में कभी तो पश्चाताप करते हैं कि हाय ! हम सत्य को स्वीकार करने वालों में से हो जाते । परन्तु इसके पश्चात् फिर अपनी पहली अवस्था की ओर लौट जाते हैं और रसूलों के प्रभुत्व का इनकार तो नहीं कर सकते परन्तु आरोप यह लगाते हैं कि संभवतः यह हमारी आँखों पर जादू कर दिया गया है ।

इसके अतिरिक्त इस सूरः में अल्लाह तआला बड़े ज़ोर से यह घोषणा करता है कि शत्रु चाहे कुछ भी कहे निस्सन्देह हमने ही इस पुस्तक को अवतरित किया है और भविष्य में भी इसकी सुरक्षा करते चले जाएँगे ।

इसके बाद की आयतों में **बुरूज** (तारामण्डल) का उल्लेख किया गया है जो सूरः अल बुरूज की याद दिलाता है और आयतांश 'हम ही इस वाणी की सुरक्षा करेंगे' पर से पर्दा उठाता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दासों में से अल्लाह तआला की ओर से ऐसे लोग जन्म लेते रहेंगे जो क़ुरआन करीम की सुरक्षा के लिए हर समय तत्पर रहेंगे । यहाँ बुरूज शब्द में इस ओर भी संकेत है कि जो मुजद्दिदीन (सुधारक) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात् बारह नक्षत्रों के रूप में जन्म लेते रहे वे भी इसी कार्य पर नियुक्त थे ।

जिस प्रकार क़ुरआन करीम के विषयवस्तु अंतहीन हैं इसी प्रकार मानवजाति की समस्त आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला समय समय पर ऐसे ख़ज़ाने प्रदान करता रहता है जो समाप्त होने वाले नहीं हैं । जैसा कि ईंधन की व्यवस्था इसका एक बड़ा उदाहरण है । कभी मनुष्य को चिंता थी कि लकड़ी समाप्त हो जाएगी तो क्या करेंगे ? कभी यह चिंता उत्पन्न हुई कि कोयला समाप्त हो जाएगा तो क्या करेंगे? कभी यह चिंता सताने लगी कि तेल समाप्त हो जाएगा तो क्या करेंगे ? परन्तु इससे पहले कि तेल समाप्त होता अल्लाह तआला ने एक और न समाप्त होने वाली ऊर्जा के स्रोत की ओर मनुष्य का ध्यान आकर्षित करवा दिया है । अर्थात् परमाणु ऊर्जा । मनुष्य यदि इस ऊर्जा से पूरा लाभ उठाने के योग्य हो जाए और उसके दुष्प्रभावों से बचाव के उपाय खोज ले तो यह वह ऊर्जा है जो महाप्रलय तक कभी समाप्त नहीं हो

सकती । अत: क़ुरआन के आध्यात्मिक ख़ज़ानों की भाँति मनुष्य जीवन यापन के भौतिक ख़ज़ाने भी अंतहीन हैं ।

इसके पश्चात् यह भी वर्णन है कि यह दोनों प्रकार के ख़ज़ाने जो मनुष्य के लिए क़यामत तक उतारे जाते रहेंगे । इनके परिणामस्वरूप शैतान भी नानाविध भ्रांतियाँ उत्पन्न करता रहेगा जिन का क्रम क़यामत तक समाप्त नहीं होगा ।

इसके बाद इस सूर: में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के अतिरिक्त कुछ अन्य नबियों और उनकी जातियों का वर्णन मिलता है । इस क्रम में **अस्हाब–उल–ऐक:** (अरण्य निवासी) और **अस्हाब–उल–हिज्र** (दुर्गवासी) जातियों का उदाहरण भी दिया गया है, यह बताने के लिए कि इसी प्रकार भविष्य में भी अल्लाह तआला रसूलों के विरोधियों को समाप्त करता चला जाएगा ।

इसी प्रकार इस सूर: में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को एक पुत्र के जन्म के शुभ-समाचार का भी विवरण है । इस भविष्यवाणी में यद्यपि हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम और याक़ूब अलैहिस्सलाम का भी वर्णन है परन्तु प्राथमिक रूप से यह भविष्यवाणी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पर लागू होती है जिनकी शारीरिक और आध्यात्मिक संतान में से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पैदा होना था ।

अत: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह तसल्ली दी गई है कि जो तेरा उपहास करते हैं उन्हें क्षमा कर । हम स्वयं ही उनसे निपटने वाले हैं और जब भी तेरे दिल को उनकी बातों से पीड़ा पहुँचे तो धैर्य के साथ अपने रब्ब की प्रशंसा करता चला जा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةُ اٰيَةٍ وَّ سِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ②

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ । मैं देखता हूँ । यह पुस्तक और एक सुस्पष्ट क़ुरआन की आयतें हैं ।2।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ③

कभी-कभी वे लोग जिन्होंने इनकार किया इच्छा करेंगे कि काश ! वे मुसलमान होते ।3।

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ④

उन्हें (अपनी दशा पर) छोड़ दे । वे खाएँ, पीएँ और अस्थायी लाभ उठाएँ और (उनकी) आशा उन्हें असावधान किए रखे । अतः वे शीघ्र ही जान लेंगे ।4।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ⑤

और हमने किसी बस्ती का सर्वनाश नहीं किया, परन्तु उसके लिए एक सुस्पष्ट पुस्तक (चेतावनी स्वरूप) थी ।5।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ⑥

कोई जाति अपनी निर्धारित अवधि से आगे नहीं बढ़ सकती और न वे पीछे हट सकते हैं ।6।

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ⑦

और उन्होंने कहा, हे वह व्यक्ति जिस पर अनुस्मृति (अर्थात क़ुरआन) उतारी गई है । निस्सन्देह तू पागल है ।7।

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑧

तू हमारे पास फ़रिश्ते लिए हुए क्यों नहीं आता, यदि तू सच्चों में से है ।8।

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ⑨

हम केवल सत्य के साथ ही फ़रिश्ते उतारा करते हैं और उस समय वे ढील नहीं दिए जाते ।9।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝١٠

निस्सन्देह हमने ही इस अनुस्मृति को अवतरित किया और निस्संदेह हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं ।10।*

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١١

और हमने तुझ से पूर्व भी पहले के गिरोहों में (रसूल) भेजे थे ।11।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٢

और कोई रसूल उनके पास नहीं आता था परन्तु वे उससे उपहास ही किया करते थे ।12।

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٣

इसी प्रकार हम अपराधियों के मन में इस (ढिठाई) को प्रविष्ट कर देते हैं ।13।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٤

वे इस (रसूल) पर ईमान नहीं लाते हालाँकि इससे पहले लोगों का परिणाम बीत चुका है ।14।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝١٥

और यदि हम आसमान का कोई द्वार उन पर खोल देते, फिर वे उस पर चढ़ने भी लगते (ताकि स्वयं अपनी आँखों से रसूल की सच्चाई का चिह्न देख लेते) ।15।

لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٦ ع

तब भी वे अवश्य कहते कि हमारी आँखें तो (किसी नशे से) मदहोश कर दी गई हैं । बल्कि हम तो ऐसे लोग हैं जिन पर जादू कर दिया गया है ।16।

(रुकू $\frac{1}{1}$)

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٧

और निस्सन्देह हमने आकाश में तारामण्डल बनाये हैं और उस (आकाश) को देखने वालों के लिए सुसज्जित कर दिया है ।17।

---

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ुरआन की सुरक्षा का जो वादा किया गया है वह चिरस्थायी वादा है । जब भी क़ुरआन करीम के भूल-अर्थ किए जाते हैं अल्लाह तआला अपनी कृपा से किसी आध्यात्मिक व्यक्तित्व को उनके सुधार के लिए अवतरित कर देता है ।

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿۱۸﴾

और हमने प्रत्येक धुतकारे हुए शैतान से उसकी सुरक्षा की है ।18।

اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۹﴾

सिवाए इसके जो सुनने की कोई बात उचक ले तो एक उज्ज्वल अग्निशिखा उसका पीछा करती है ।19।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿۲۰﴾

और धरती को हमने बिछा दिया और उसमें हमने दृढ़तापूर्वक गड़े हुए (पर्वत) रख दिए और उसमें उचित अनुपात में प्रत्येक प्रकार की चीज़ उगाई ।20।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿۲۱﴾

और हमने उसमें तुम्हारे लिए और उनके लिए भी जीविका के साधन बनाए हैं जिनके तुम अन्नदाता नहीं ।21।

وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۲۲﴾

और कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसका हमारे पास ख़ज़ाना न हो और हम उसे एक निश्चित अनुमान के अनुसार ही उतारते हैं ।22।

وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ وَمَاۤ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿۲۳﴾

और हमने (पानी से) बोझिल हवाओं को भेजा । फिर आसमान से हमने पानी उतारा और तुम्हें उससे सिंचित किया जबकि तुम उसको संचित कर लेने पर समर्थ नहीं थे ।23।

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿۲۴﴾

और निस्सन्देह हम ही हैं जो ज़िन्दा भी करते हैं और मारते भी हैं और हम ही हैं जो (प्रत्येक वस्तु के) उत्तराधिकारी होंगे ।24।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿۲۵﴾

और हमने निस्सन्देह तुम में से आगे निकल जाने वालों को जान लिया है और उन को भी जान लिया है जो पीछे रहते हैं ।25।

وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۗ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ

और तेरा रब्ब उन्हें अवश्य इकट्ठा करेगा। निस्सन्देह वह परम विवेकशील

عَلِيْمٌ ﴿٢٦﴾

(और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।26। (रुकू $\frac{2}{2}$)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٧﴾

और निस्सन्देह हमने मनुष्य को गले-सड़े कीचड़ से बनी हुई शुष्क खनकती हुई ठीकरियों से पैदा किया है ।27।

وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٨﴾

और जिन्नों को हमने उससे पहले अत्यन्त उत्तप्त-वायु युक्त अग्नि से बनाया ।28।

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾

और (याद कर) जब तेरे रब्ब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं गले-सड़े कीचड़ से बनी हुई, शुष्क खनकती हुई ठीकरियों से मनुष्य की सृष्टि करने वाला हूँ ।29।

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٣٠﴾

अत: जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ और उसमें अपनी वाणी प्रविष्ट करूँ तो उसकी आज्ञाकारिता के लिए सजद: में गिर जाना ।30।*

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣١﴾

तो सभी फ़रिश्तों ने सजद: किया ।31।

اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣٢﴾

सिवाय इब्लीस के, उसने सजद: करने वालों के साथ सम्मिलित होने से इनकार कर दिया ।32।

* आयत संख्या 27 से 30 :- इन पवित्र आयतों में दो बातें विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं । प्रथम यह कि मनुष्य को केवल गीली मिट्टी से पैदा नहीं किया गया । बल्कि ऐसी गीली मिट्टी से जिसमें सड़ायँध उत्पन्न हो चुकी थी और फिर वह खनकती हुई ठीकरियाँ बन गई । यह वह विषय है जो स्वयं हज़रत अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सोच के किसी कोने में भी नहीं आ सकता था । किसी और ईश्वरीय पुस्तक में भी खनकती हुई ठीकरियों से मानव की उत्पत्ति का कोई उल्लेख नहीं मिलता । इस समस्या का इस युग में वैज्ञानिकों ने समाधान किया है । दूसरी बात यह है कि मनुष्य की उत्पत्ति के आरम्भ होने से पूर्व जिन्नों को आसमान से बरसने वाली ऐसी उत्तप्त वायु से जो अग्नि की भाँति गर्म थी, पैदा किया गया है । यह विषय भी ऐसा है जो हज़रत अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कल्पना में भी नहीं आ सकता था जब तक सर्वज्ञा अल्लाह इसकी जानकारी प्रदान न करता । **नारुस्समूम** (उत्तप्त वायु युक्त अग्नि) से उत्पन्न होने वाले जिन्नों से अभिप्राय बैक्टीरिया हैं और इससे यह समस्या भी हल हो गई कि गला-सड़ा कीचड़ कैसे बना । जब तक बैक्टीरिया उपस्थित न हों गीली मिट्टी में सड़ायँध उत्पन्न नहीं हो सकती ।

قَالَ يٰٓاِبۡلِيۡسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوۡنَ مَعَ السّٰجِدِيۡنَ ﴿٣٣﴾

उस (अर्थात अल्लाह) ने कहा, हे इब्लीस ! तुझे क्या हुआ कि तू सजदः करने वालों के साथ सम्मिलित नहीं हुआ ? ।33।

قَالَ لَمۡ اَكُنۡ لِّاَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهٗ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿٣٤﴾

उसने कहा, मैं ऐसा नहीं कि मैं एक ऐसे मनुष्य के लिए सजदः करूँ जिसे तूने गले-सड़े कीचड़ से बनी हुई शुष्क खनकती हुई ठीकरियों से पैदा किया है ।34।

قَالَ فَاخۡرُجۡ مِنۡهَا فَاِنَّكَ رَجِيۡمٌ ۙ﴿٣٥﴾

उसने कहा, इस (स्थान) में से निकल जा । निस्सन्देह तू धुतकारा हुआ है ।35।

وَّاِنَّ عَلَيۡكَ اللَّعۡنَةَ اِلٰى يَوۡمِ الدِّيۡنِ ﴿٣٦﴾

और निस्सन्देह तुझ पर कर्मफल दिवस तक ला'नत रहेगी ।36।

قَالَ رَبِّ فَاَنۡظِرۡنِىۡۤ اِلٰى يَوۡمِ يُبۡعَثُوۡنَ ﴿٣٧﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे उस दिन तक ढील दे जब वे (मनुष्य) उठाए जाएँगे ।37।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الۡمُنۡظَرِيۡنَ ۙ﴿٣٨﴾

उसने कहा, निस्सन्देह तू ढील दिए जाने वालों में से है ।38।

اِلٰى يَوۡمِ الۡوَقۡتِ الۡمَعۡلُوۡمِ ﴿٣٩﴾

एक निश्चित समय के दिन तक ।39।

قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغۡوَيۡتَنِىۡ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ وَلَاُغۡوِيَنَّهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۙ﴿٤٠﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! क्योंकि तूने मुझे पथभ्रष्ट ठहरा दिया है । इस कारण मैं अवश्य धरती में (निवास करना) इनके लिए सुन्दर करके दिखाऊँगा और मैं अवश्य इन सबको पथभ्रष्ट कर दूँगा ।40।

اِلَّا عِبَادَكَ مِنۡهُمُ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿٤١﴾

सिवाय उनमें से तेरे चुने हुए भक्तों के ।41।

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَىَّ مُسۡتَقِيۡمٌ ﴿٤٢﴾

उसने कहा, यह सीधा मार्ग (दिखाना) मेरे ज़िम्मे है ।42।

اِنَّ عِبَادِىۡ لَيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ

निस्सन्देह (जो) मेरे भक्त (हैं) उन पर तुझे कोई प्रभुत्व प्राप्त न होगा सिवाय

اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝٤٣

उनके जो पथभ्रष्टों में से (स्वयं) तेरा अनुसरण करेंगे ।43।

وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٤٤

और निस्सन्देह नरक उन सब का प्रतिश्रुत ठिकाना है ।44।

لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ۝٤٥

उसके सात द्वार हैं प्रत्येक द्वार के लिए इन (पथभ्रष्टों) का एक निश्चित भाग है ।45। (रुकू $\frac{3}{3}$)

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ۝٤٦

निस्सन्देह मुत्तक़ी बाग़ों और जलस्रोतों में (ठहरे हुए) होंगे ।46।

اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ۝٤٧

उनमें शान्ति के साथ संतुष्ट और निर्भय होकर प्रविष्ट हो जाओ ।47।

وَ نَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝٤٨

और हम उनके दिलों से जो भी द्वेष हैं निकाल बाहर करेंगे । भाई-भाई बनते हुए आसनों पर आमने सामने बैठे होंगे ।48।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّ مَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ۝٤٩

उन्हें उनमें न कोई थकान छूएगी और न वे कभी उनमें से निकाले जाएँगे ।49।

نَبِّئْ عِبَادِيْۤ اَنِّيْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥٠

मेरे भक्तों को सूचित कर दे कि निस्सन्देह मैं ही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला हूँ ।50।

وَ اَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ۝٥١

और यह भी कि निस्सन्देह मेरा अज़ाब ही बहुत पीड़ादायक अज़ाब है ।51।

وَ نَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ۝٥٢

और उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के सम्बन्ध में सूचित कर दे ।52।

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ۝٥٣

जब वे उसके पास आए तो उन्होंने कहा, सलाम ! उसने कहा हम तो तुम से भयभीत हैं ।53।

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝٥٤

उन्होंने कहा, भय मत कर । हम निस्सन्देह तुझे एक ज्ञानवन्त पुत्र का शुभ-समाचार देते हैं ।54।

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰۤى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝٥٥

उसने कहा, क्या तुमने मुझे शुभ-समाचार दिया है, जब कि मुझे बुढ़ापे ने घेर लिया है । अत: तुम किस आधार पर शुभ-समाचार दे रहे हो ? ।55।

قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ۝٥٦

उन्होंने कहा, हमने तुझे सच्चा शुभ-समाचार दिया है । अत: निराश होने वालों में से न बन ।56।

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ۝٥٧

उसने कहा, भला पथभ्रष्टों के अतिरिक्त कौन है जो अपने रब्ब की कृपा से निराश हो जाए ।57।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٨

उसने कहा, हे भेजे हुए दूतो ! तुम्हारा वास्तविक उद्देश्य क्या है ? ।58।

قَالُوْۤا اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۙ۝٥٩

उन्होंने कहा, निस्सन्देह हम एक अपराधी जाति की ओर भेजे गए हैं।59।

اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ۝٦٠

सिवाय लूत के घरवालों के । हम उन सब को अवश्य बचा लेंगे ।60।

اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَاۤ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٦١

उसकी पत्नी के अतिरिक्त । हमने (उसका परिणाम) जाँच लिया है कि वह अवश्य पीछे रह जाने वालों में से होगी ।61। (रुकू $\frac{4}{4}$)

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ۙ۝٦٢

अत: जब लूत के घरवालों के पास दूत पहुँचे ।62।

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝٦٣

उसने कहा, तुम निस्सन्देह अपरिचित लोग हो ।63।

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝٦٤

उन्होंने उत्तर दिया, बल्कि हम तो तेरे पास वह (समाचार) लाए हैं जिसके सम्बन्ध में वे सन्देहग्रस्त रहते थे ।64।

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٦٥

और हम तेरे पास सत्य के साथ आए हैं और निस्सन्देह हम सच्चे हैं ।65।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٦﴾

अत: अपने परिवार को लेकर रात के एक भाग में निकल पड़ । और उनके पीछे चल और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे । और तुम चलते रहो जिस ओर (चलने का) तुम्हें आदेश दिया जाता है ।66।

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٧﴾

और हमने उसे यह निर्णय सुना दिया कि इन लोगों की जड़ सुबह होते ही काटी जा चुकी होगी ।67।

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٨﴾

और नगर निवासी खुशियाँ मनाते हुए आए ।68।

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٩﴾

उसने कहा, ये मेरे अतिथि हैं । अत: मुझे अपमानित न करो ।69।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٧٠﴾

और अल्लाह से डरो और मुझे अपमानित न करो ।70।

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾

उन्होंने कहा, क्या हमने तुझे समग्र जगत (से मेल-मिलाप रखने) से मना नहीं किया था ? ।71।

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧٢﴾

उसने कहा (देखो) ये मेरी बेटियाँ हैं (इनकी शर्म करो), यदि तुम कुछ करने वाले हो ।72।

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٣﴾

(अल्लाह ने वह्इ की कि) तेरी आयु की सौगन्ध ! निस्सन्देह वे अपनी मदमस्ती में भटक रहे हैं ।73।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٤﴾

अत: उन्हें एक धमाकेदार अज़ाब ने सवेरा होते ही आ पकड़ा ।74।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٥﴾

अत: हमने उस (बस्ती) को उथल-पुथल कर दिया और उन पर हमने कंकरों वाली मिट्टी से बने हुए पत्थरों की बारिश बरसाई ।75।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٦﴾

निस्सन्देह इस (घटना) में खोज लगाने वालों के लिए अनेक चिह्न हैं ।76।

وَاِنَّهَا لَبِسَبِيۡلٍ مُّقِيۡمٍ ۝٧٧

और वह (बस्ती) निस्सन्देह एक स्थायी राजमार्ग पर (स्थित) है ।77।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ؕ ۝٧٨

निस्सन्देह इसमें मोमिनों के लिए एक बहुत बड़ा चिह्न है ।78।

وَاِنۡ كَانَ اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ لَظٰلِمِيۡنَ ۙ ۝٧٩

और घने वृक्षों के क्षेत्र (में बसने) वाले भी निश्चित रूप से अत्याचारी थे ।79।

فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ؕ ۝٨٠

अत: हमने उनसे बदला लिया और ये दोनों (बस्तियाँ) एक प्रमुख राजमार्ग पर (स्थित) हैं ।80। (रुकू $\frac{5}{5}$)

وَلَقَدۡ كَذَّبَ اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۙ ۝٨١

और निस्सन्देह हिज्र (के रहने) वालों ने भी पैग़म्बरों को झुठला दिया था ।81।

وَاٰتَيۡنٰهُمۡ اٰيٰتِنَا فَكَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ۙ ۝٨٢

और हमने उनको अपने चिह्न दिए तो वे उनसे विमुखता प्रकट करते रहे ।82।

وَكَانُوۡا يَنۡحِتُوۡنَ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا اٰمِنِيۡنَ ۝٨٣

और वे पर्वतों में निर्भिक होकर घर तराशते थे ।83।

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُصۡبِحِيۡنَ ۙ ۝٨٤

अत: उन्हें भी एक धमाकेदार अज़ाब ने सुबह होते ही आ पकड़ा ।84।

فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ؕ ۝٨٥

अत: जो वे अर्जित किया करते थे वह उनके काम न आ सका ।85।

وَمَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصۡفَحِ الصَّفۡحَ الۡجَمِيۡلَ ۝٨٦

और हमने आसमानों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है सत्य के साथ पैदा किया है । और (निर्धारित) घड़ी अवश्य आने वाली है । अत: बहुत उत्तम ढ़ंग से क्षमा कर ।86।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الۡخَلّٰقُ الۡعَلِيۡمُ ۝٨٧

तेरा रब्ब ही निस्सन्देह अत्यन्त कुशल स्रष्टा और सर्वज्ञ है ।87।

وَلَقَدۡ اٰتَيۡنٰكَ سَبۡعًا مِّنَ الۡمَثَانِىۡ وَالۡقُرۡاٰنَ الۡعَظِيۡمَ ۝٨٨

और निस्सन्देह हमने तुझे सात बार-बार दोहराई जाने वाली (आयतें) और महानतम क़ुरआन प्रदान किया है।88।*

* **सब्अम मिनल मसानी** (सात बार-बार दोहराई जाने वाली) से अभिप्राय सूर: अल फ़ातिह: की→

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۹﴾

अपनी आँखें इस अस्थायी सामग्री की ओर न पसार जो हमने इनमें से कुछ गिरोहों को प्रदान की है । और उन पर शोक न कर और मोमिनों के लिए अपने (दया के) पर झुका दे ।89।

وَقُلْ اِنِّيْۤ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿۹۰﴾

और कह दे कि निस्सन्देह मैं तो एक खुला-खुला सतर्ककारी हूँ ।90।

كَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿۹۱﴾

(उस अज़ाब से) जैसा हमने परस्पर बट जाने वालों पर उतारा था ।91।

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿۹۲﴾

जिन्होंने क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया ।92।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۳﴾

अतः तेरे रब्ब की सौगन्ध ! निस्सन्देह हम उन सबसे अवश्य पूछेंगे ।93।

عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾

उस के सम्बन्ध में जो वे किया करते थे ।94।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۹۵﴾

अतः जो तुझे आदेश दिया जाता है ख़ूब खोल कर वर्णन कर और शिर्क करने वालों से विमुख हो जा ।95।

اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿۹۶﴾

निस्सन्देह हम उपहास करने वालों के मुक़ाबले पर तेरे लिए बहुत पर्याप्त हैं ।96।

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۷﴾

जिन्होंने अल्लाह के साथ एक दूसरा उपास्य बना लिया है । अतः शीघ्र ही वे जान लेंगे ।97।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿۹۸﴾

और निस्सन्देह हम जानते हैं कि उन बातों से जो वे कहते हैं तेरा सीना तंग होता है ।98।

←आयतें प्रतीत होती हैं जिनके अर्थ पवित्र क़ुरआन में अत्यधिक दोहराए गए हैं और सभी मुक़त्तआत (खण्डाक्षर) भी सूरः अल फ़ातिहः ही से लिए गए हैं । मुक़त्तआत में एक अक्षर भी ऐसा नहीं जो सूरः अल फ़ातिहः से बाहर हो । जबकि सूरः अल फ़ातिहः में उनके अतिरिक्त सात अक्षर ऐसे हैं जिनको मुक़त्तआत के रूप में प्रयोग नहीं किया गया ।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٩﴾	अत: अपने रब्ब की स्तुति के साथ गुणगान कर और सजद: करने वालों में से हो जा ।99।
وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿١٠٠﴾	और अपने रब्ब की उपासना करता चला जा यहाँ तक कि तुझे पूर्ण विश्वास हो जाए ।100। (रुकू $\frac{6}{6}$)

16– सूरः अन–नह्ल

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 129 आयतें हैं ।

पिछली सूरः की अन्तिम आयत में जिस **विश्वास** का उल्लेख किया गया है उसका एक अर्थ मृत्यु भी माना गया है । परन्तु पहला अर्थ हर हाल में 'विश्वास' ही है । इस सूरः का आरम्भ भी इस बात से किया गया है कि जिस विश्वसनीय बात का तुझसे वादा किया गया था वह बस आने ही वाली है । अतः हे इनकार करने वालो ! तुम उसकी चाहत में जल्दी न करो और विश्वास रखो कि आकाश से अल्लाह तआला अपने भक्तों में से जिस पर चाहे अपने फ़रिश्ते उतारता है ।

इसके बाद प्रत्येक प्रकार के पशुओं की सृष्टि का उल्लेख करने के पश्चात् यह महान भविष्यवाणी की गई है कि इस प्रकार यात्रा के साधन भी अल्लाह तआला उत्पन्न करेगा जिनका तुम्हें इस समय कोई ज्ञान नहीं । अतः वर्तमान युग में आविष्कृत नई-नई सवारियों की भविष्यवाणी इस आयत में कर दी गई है ।

इसी तरह प्रत्येक प्रकार के प्राणियों के जीवित रहने के सम्बन्ध में वर्णन किया कि वे आसमान से उतरने वाले पानी ही के द्वारा जीवित रहते हैं । इस पानी के द्वारा धरती से हरियाली उगती है और हर प्रकार के वृक्ष और फल पैदा होते हैं । परन्तु आकाशीय पानी का एक पक्ष वह भी है जिसे वे **अन्आम** (चौपाय) नहीं जानते जो घास इत्यादि चरते तो हैं परन्तु इसके रहस्य को नहीं समझते । अतः आध्यात्मिक पानी से जो जीवन अल्लाह के रसूल पाते हैं और इस वरदान को आगे जारी करते हैं । उसे वे लोग नहीं समझ सकते जिनका उदाहरण पवित्र क़ुरआन ने चौपाय के साथ दिया है बल्कि उनको प्राणी-जगत में सर्वाधिक निकृष्ट ठहराया है । क्योंकि चौपाय तो उसको समझने की योग्यता ही नहीं रखते परन्तु ये धर्म को स्पष्ट रूप से समझने के उपरान्त भी उसके लाभ से वंचित रहते हैं ।

इसके बाद अल्लाह तआला की असंख्य नेमतों का वर्णन करते हुए समुद्र में पाई जाने वाली नेमतों एवं समुद्र के खारे पानी में पलने वाली मछलियों इत्यादि का भी वर्णन कर दिया जो खारा पानी पीती हैं और उसी में जीवन व्यतीत करती हैं परन्तु उनके माँस में खारेपन का कोई मामूली सा भी चिह्न नहीं पाया जाता । और इस ओर भी ध्यान खींचा कि पानी के द्वारा यह जीवन-व्यवस्था उन पर्वतों पर निर्भर है जो बड़ी दृढ़ता पूर्वक धरती में गड़े होते हैं । यदि ये पर्वत न होते तो समुद्र से स्वच्छ जलकणों के ऊपर उठने और फिर नीचे बरसने की यह व्यवस्था जारी रह नहीं सकती थी ।

पवित्र क़ुरआन ने छाँवों के धरती पर बिछे होने का वर्णन इस रंग में किया है मानो वे सजदः कर रहे हैं । परन्तु प्राणीवर्ग और फ़रिश्ते भी अल्लाह की बड़ाई के समक्ष सजदः

में पड़े रहते हैं। प्राणीवर्ग धरती से अपने जीवन का साधन प्राप्त करने के फलस्वरूप अपनी स्थिति से सदा अल्लाह के समक्ष सजदः करते हुए प्रतीत होते हैं। और फ़रिश्ते आकाश से उतरने वाले (आध्यात्मिक) पानी का रहस्य बोध करके सदा नतमस्तक रहते हैं।

आयत संख्या : 62 में यह आश्चर्यजनक विषय वर्णन किया गया है कि यदि अल्लाह मनुष्य के प्रत्येक दोष पर तुरन्त पकड़ना आरम्भ कर दे तो धरती पर चलने फिरने वाले प्राणियों की समाप्ति हो जाए। वास्तव में मनुष्य को इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि यदि प्राणीवर्ग न होते तो मनुष्य का जीवित रहना सम्भव ही न था। इसी लिए तुरन्त बाद यह कहा कि चौपायों में तुम्हारे लिए बहुत बड़ी शिक्षा है।

इसके पश्चात **वह्इ** की महानता का वर्णन मधुमक्खी का उदाहरण देकर किया गया। किसी दूसरे पशु पर वह्इ के उतरने का उल्लेख नहीं मिलता। देखा जाए तो मधुमक्खी उसी प्रकार एक मक्खी ही है जैसे गंदगी पर पलने वाली कोई मक्खी होती है। अन्तर केवल यह है कि वह्इ के द्वारा अल्लाह ने इसको हर गंदगी से पवित्र कर दिया है। यह अपने घर भी पर्वतों पर और ऊँचे वृक्षों तथा उन लताओं पर बनाती है जो ऊँचे सहारों पर चढ़ाई जाती हैं। फिर उस पर वह्इ की गई कि वह हर फूल का रस चूसे। यद्यपि यहाँ **समर** (फल) शब्द का प्रयोग किया गया है परन्तु इसमें दोहरा भेद यह है कि मक्खी के उस फूल को चूसने के परिणाम स्वरूप ही उसमें से फल उत्पन्न होता है और हर फल का अर्क और निचोड़ भी वह फूल से ही चूसती है और इसके द्वारा जो मधु बनाती है उसमें मनुष्य के लिए आरोग्य प्राप्ति का एक चमत्कारिक गुण रख दिया गया है।

यहाँ **यख़्रुजु मिन् बुतूनिहा** (जो उसके पेट से निकलता है) कह कर इस ओर संकेत कर दिया गया कि मधु केवल फूलों के रस से नहीं बनता बल्कि मधुमक्खी के पेट से जो लार निकलती है उसे वह फूलों के रस से मिलाकर और अपनी जिह्वा को बार-बार हवा में निकाल कर उसे गाढ़ा करके मधु में परिवर्तित करने के पश्चात् छत्तों में सुरक्षित करती है।

फिर इसके बाद दो दासों का उदाहरण दिया गया है। एक ऐसा मूर्ख दास जिसके कामों में कोई भी भलाई नहीं होती और दूसरा वह जिसे अल्लाह तआला उत्तम जीविका प्रदान करता है। और फिर वह उसे आगे मानव कल्याण के लिए खर्च करता है। उसका भी मधुमक्खी से एक बहुत गहरा सम्बन्ध है। साधारण मक्खी तो ऐसे दास की भाँति है जिसमें कोई लाभ नहीं परन्तु मधुमक्खी ऐसा दास है जिसे उत्तम जीविका प्रदान की जाती है और फिर वह आगे भी मानव कल्याण के लिए इसे बाँटती है।

इसके बाद विभिन्न प्रकार के दासों के उदाहरण-क्रम को आगे बढ़ा कर उसे मनुष्य पर लागू किया गया है। वह दास (मनुष्य) जो अल्लाह की वह्इ से लाभान्वित नहीं होता और अल्लाह को गूँगा समझता है वह स्वयं ही गूँगा है। वह तो ऐसा ही है कि

जिस काम में भी हाथ डालेगा घाटे का ही सौदा करेगा । वह **ख़सिरद्दुनिया वल् आख़िर:** (अर्थात् इहलोक और परलोक में घाटा उठाने वाला) है । दूसरे दास अल्लाह के नबी होते हैं, जो मानव जाति को न्याय की शिक्षा देते हैं और सदा सन्मार्ग पर चलते रहते हैं । याद रखना चाहिए कि मधुमक्खी के सम्बन्ध में भी यही कहा गया था कि अपने रब्ब के रास्तों पर चल । तो नबी इस पहलू से यह श्रेष्ठता रखते हैं कि वे उस एक सीधे मार्ग पर चलते हैं जो अवश्य अल्लाह तक पहुँचा देता है ।

इसके बाद इसी सूर: में पक्षियों के सम्बन्ध में यह कहा गया कि ये जो आकाश पर उड़ते फिरते हैं यह मत सोचो कि केवल संयोग से उनको पंख प्रदान किए गए हैं और उड़ने की क्षमता उत्पन्न हो गई है । केवल पंखों का उगना ही पक्षियों में उड़ने की क्षमता पैदा नहीं कर सकता था जब तक उनकी खोखली हड्डियाँ, उनकी छाती की विशेष बनावट और छाती के दोनों ओर अत्यन्त मज़बूत मांसपेशियाँ न बनायी जातीं जो उन्हें भारी बोझ उठा कर ऊँची उड़ान का सामर्थ्य प्रदान करतीं हैं । यह एक ऐसा आश्चर्यजनक चमत्कार है कि भारी भरकम सारस भी लगातार कई हज़ार मील तक उड़ते चले जाते हैं और उड़ते समय उनकी जो आन्तरिक संरचना है वह इस प्रकार है कि जैसे जेट विमान के सामने का भाग हवा को बिखेर देता है, इसी प्रकार हवा का दबाव उन पर इस बनावट के कारण कम से कम पड़ता है । और जो सारस सबसे अधिक इस दबाव को सहन करने के लिए दूसरों से आगे होता है, कुछ देर के पश्चात् पीछे से एक ओर सारस आकर उसका स्थान ले लेता है। फिर यही पक्षी जल-पक्षी भी बनते हैं और डूबते नहीं हालाँकि उनको अपने भार के कारण डूब जाना चाहिए था । न डूबने का कारण यह है कि उनके शरीर के ऊपर छोटे-छोटे पंख हवा को समेटे हुए होते हैं और परों में आबद्ध हवा उनको डूबने से बचाती है । और ऐसा अपने आप हो ही नहीं सकता क्योंकि आवश्यक है कि उन पंखों के गिर्द कोई ऐसा चिकना पदार्थ हो जो पंखों को पानी से तर होने से बचाए । आप देखते हैं कि ये पक्षी अपने पंखों को अपनी चोंचों में से गुज़ारते हैं । यह अद्भुत बात है कि उस समय उनके मुँह से अल्लाह तआला ग्रीस (grease) की भाँति ऐसा पदार्थ निकालता है जिसे पंखों पर मलना आवश्यक है । वह पदार्थ अपने आप कैसे पैदा हुआ और उनके मुँह तक कैसे पहुँचा और उन पक्षियों को कैसे ज्ञात हुआ कि शरीर तक पानी के पहुँचने को रोकना आवश्यक है अन्यथा वे डूब जाएँगे ?

आगे पवित्र क़ुरआन के इस आश्चर्यजनक चमत्कार का वर्णन किया गया है कि वह प्रत्येक विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन कर रहा है । इस दृष्टि से दूसरी पुस्तकों पर पवित्र क़ुरआन को जो श्रेष्ठता प्राप्त है वही श्रेष्ठता हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूसरे नबियों पर प्राप्त है । इसी कारण जैसे वे नबी अपनी जातियों पर साक्षी

थे । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन सब नबियों पर साक्षी नियुक्त किया गया है ।

पवित्र क़ुरआन की शिक्षा प्रत्येक विषय पर हावी है । इसका उदाहरण आयत संख्या 91 है जो स्वयं समस्त चारित्रिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं को समेटे हुए है और उन पर हावी है । सबसे पहले **न्याय** का वर्णन किया गया है जिसके बिना संसार में कोई सुधार सम्भव नहीं । फिर **उपकार** का वर्णन किया गया जो मनुष्य को न्याय से एक ऊँचा दर्जा प्रदान करता है । फिर **ईताइज़िल क़ुर्बा** (निकट सम्बन्धियों से सद्व्यवहार) कह कर इस विषय को अन्तिम ऊँचाई तक पहुँचा दिया गया कि वे मानव समाज की सहानुभूति में इस प्रकार खर्च करते हैं कि जैसे माँ अपने बच्चों पर करती है और उसके बदले में किसी सेवा या श्रेय का भ्रम तक उसके दिल में नहीं होता । यह सर्वोच्च दर्जा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रदान किया गया था कि आप प्रत्येक प्रकार के प्रतिफल की कल्पना से पवित्र हो कर समस्त मानव समाज को लाभ पहुँचा रहे थे ।

इस सूर: के अन्तिम रुकू में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जो एक व्यक्ति थे, पूरी उम्मत (समुदाय) के रूप में प्रस्तुत किया गया है । क्योंकि आप ही से बहुत सी उम्मतों ने पैदा होना था । और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुँच कर यह विषय अपने उत्कर्ष तक पहुँच जाता है । अत: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यही वह्इ की गई कि उस इब्राहीमी परम्परा का अनुसरण कर और इसका सारांश यह पेश कर दिया गया कि अपने रब्ब की ओर विवेकपूर्ण ढंग से और सदुपदेश के द्वारा बुलाओ । परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य अत्यन्त धैर्य धरने वाला हो । आयतांश **ला तस्तअजिल** (उसकी चाहत में जल्दी न करो) में जो आदेश है, इसमें भी इस विषय की ओर संकेत है । महान अध्यात्मिक परिवर्तन अकस्मात नहीं हुआ करते । बल्कि उसके लिए अत्यन्त धैर्य की आवश्यकता होती है । अत: यह धैर्य तो तक़्वा के बिना प्राप्त नहीं हो सकता बल्कि इससे भी बढ़ कर उन लोगों को प्रदान किया जाता है जो उपकार करने वाले हैं ।

यहाँ एहसान (उपकार) का एक विषय तो आयतांश **यअ्मुरु बिल अद्‌लि वल इह्सानि** (वह न्याय और उपकार का आदेश देता है) में वर्णन कर दिया गया है और दूसरा उसकी वह व्याख्या है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं वर्णन कर दी है कि एहसान यह है कि जब तू उपासना के लिए खड़ा हो तो ऐसे खड़ा हो मानो तू अल्लाह को देख रहा है और एहसान के लिए कम से कम यह आवश्यक है कि तू इस प्रकार शिष्टतापूर्वक खड़ा हो, मानो वह तुझे देख रहा है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ تِسْعٌ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ سِتَّةَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ٢

अल्लाह का आदेश आने ही को है, अत: उसकी चाहत में जल्दी न करो । पवित्र है वह और ऊँचा है उससे जो वे शिर्क करते हैं ।2।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ٣

वह अपने आदेश से अपने भक्तों में से जिस पर चाहे फ़रिश्तों को रूह-उल-कुदुस के साथ उतारता है (और उन्हें कहता है) कि सावधान करो कि निश्चित रूप से मेरे सिवा कोई उपास्य नहीं । अत: मुझ ही से डरो ।3।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ٤

उसने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है । वह बहुत ऊँचा है उससे जो वे शिर्क करते हैं ।4।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ٥

उसने मनुष्य को वीर्य से पैदा किया फिर सहसा वह (मनुष्य) खुला-खुला झगड़ालू बन गया ।5।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۪ ٦

और चौपायों को भी उसने तुम्हारे लिए पैदा किया । उनमें गर्मी प्राप्त करने के साधन और बहुत से लाभ हैं। और उनमें से कुछ को तुम खाते (भी) हो ।6।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۪ ٧

और जब तुम उन्हें शाम को चरा कर लाते हो और जब तुम उन्हें (सवेरे) चरने के लिए खुला छोड़ देते हो, तुम्हारे लिए उनमें शोभा होती है ।7।

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿۸﴾

और वे तुम्हारे बोझ उठाए हुए ऐसी बस्ती की ओर चलते हैं जिस तक तुम स्वयं को कठिनाई में डाले बिना नहीं पहुँच सकते । निस्सन्देह तुम्हारा रब्ब अत्यंत कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है ।8।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹﴾

और घोड़े और खच्चर और गधे (पैदा किए) ताकि तुम उन पर सवारी करो और (वे) शोभा स्वरूप (भी) हों । इसी प्रकार वह (तुम्हारे लिए) उसे भी पैदा करेगा जिसे तुम नहीं जानते ।9।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۰﴾ ع

और सीधा मार्ग दिखाना अल्लाह पर (भक्तों का) अधिकार है । जबकि उन (मार्गों) में से कुछ टेढ़े भी हैं । और यदि वह चाहता तो अवश्य तुम सब को हिदायत दे देता ।10। (रुकू $\frac{1}{7}$)

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿۱۱﴾

वही है जिसने तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा । उसमें पीने का सामान है और उसी से पौधे निकलते हैं जिनमें तुम (चौपाय) चराते हो ।11।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۲﴾

वह तुम्हारे लिए इसके द्वारा खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और प्रत्येक प्रकार के फल उत्पन्न करता है। निस्सन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए बहुत बड़ा चिह्न है जो सोच-विचार करते हैं ।12।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۙ﴿۱۳﴾

और उसने तुम्हारे लिए रात को और दिन को और सूर्य और चन्द्रमा को सेवा में लगाया है । और नक्षत्र भी उसी के आदेश से सेवारत हैं । निस्सन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं बहुत बड़े चिह्न हैं ।13।

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٤﴾

और उसने तुम्हारे लिए जो विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ धरती में पैदा की हैं (वे सब तुम्हारे लिए सेवारत हैं) । इसमें उपदेश ग्रहण करने वाले लोगों के लिए निस्सन्देह बहुत बड़ा चिह्न है ।14।

وَهُوَ الَّذِىْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٥﴾

और वही है जिसने समुद्र को सेवा में लगाया ताकि तुम उसमें से ताज़ा माँस खाओ और उसमें से तुम सौन्दर्य की सामग्रियाँ निकालो जिन्हें तुम पहनते हो। और तू नौकाओं को देखता है कि वे उसमें जल को चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसकी कृपा को ढूँढो और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ।15।

وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ۙ

और उसने धरती में पर्वत रख दिये ताकि तुम्हारे लिए (वे) भोजन के सामान उपलब्ध करें । और नदियाँ और रास्ते भी (बना दिये) ताकि तुम हिदायत पाओ ।16।

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧﴾

और बहुत से मार्गदर्शन करने वाले चिह्न। और वे नक्षत्रों से भी मार्ग-दर्शन लेते हैं ।17।

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٨﴾

तो क्या वह जो पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता ? अत: क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ।18।

وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩﴾

और यदि तुम अल्लाह की नेमत की गणना करना चाहो तो उसे गिन नहीं सकोगे । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।19।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

और अल्लाह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम प्रकट करते हो ।20।

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿٢١﴾

और जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वे कुछ पैदा नहीं करते जबकि वे स्वयं पैदा किए जाते हैं ।21।

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢٢﴾ ع

मुर्दे हैं, जीवित नहीं । और समझ नहीं रखते कि वे कब उठाए जाएँगे ।22।*

(रुकू $\frac{2}{8}$)

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٣﴾

तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है । अतः वे लोग जो परकाल पर ईमान नहीं लाते उनके दिल अस्वीकारी हैं । और वे अहंकार करने वाले हैं ।23।

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٤﴾

कोई सन्देह नहीं कि अल्लाह अवश्य जानता है जो वे छिपाते हैं और जो वे प्रकट करते हैं । निस्सन्देह वह अहंकार करने वालों को पसन्द नहीं करता ।24।

وَاِذَا قِيلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوٓا اَسَاطِيرُ الْاَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾

और जब उनसे पूछा जाता है कि वह क्या है जो तुम्हारे रब्ब ने उतारा है ? तो वे कहते हैं कि पहले लोगों की कथाएँ हैं ।25।

لِيَحْمِلُوٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٦﴾ ع

(मानो वे चाहते हैं) कि क़यामत के दिन अपने समस्त बोझ भी और उन लोगों के बोझ भी उठाएँ जिन्हें वे ज्ञान के बिना पथभ्रष्ट किया करते थे । सावधान! बहुत ही बुरा है जो वे उठाते हैं ।26। (रुकू $\frac{3}{9}$)

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ

निस्सन्देह उन लोगों ने भी जो उन से पहले थे षड्यन्त्र किए । तो अल्लाह ने उनके भवनों को नींव से उखेड़ दिया, तब उन पर छत उनके ऊपर से आ

* इस आयत में उन मुश्रिकों का खंडन है जो काल्पनिक उपास्यों पर ईमान लाते थे । जो मुर्दों की भाँति थे और जीवन के कोई चिह्न उनमें नहीं पाए जाते थे ।

مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٧﴾

गिरी । और उनके पास अज़ाब वहाँ से आया जहाँ से उनको अनुमान तक न था ।27।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨﴾ۙ

फिर क़यामत के दिन वह उन्हें अपमानित कर देगा और कहेगा, कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन के लिए तुम विरोध किया करते थे ? वे लोग जिन्हें ज्ञान दिया गया था कहेंगे कि निस्सन्देह आज के दिन अपमान और दुर्दशा क़ाफ़िरों पर (पड़ रही) है ।28।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۖ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

(उन पर) जिनको फ़रिश्ते इस अवस्था में मृत्यु देते हैं कि वे लोग अपनी जानों पर अत्याचार कर रहे होते हैं । और वे (यह कहते हुए) संधि का प्रस्ताव रखते हैं कि हम तो कोई बुराई नहीं किया करते थे । क्यों नहीं ! निस्सन्देह अल्लाह उसका भली-भाँति ज्ञान रखता है जो तुम किया करते थे ।29।

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٣٠﴾

अतः नरक के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ। लम्बे समय तक उसमें रहते चले जाओ । अतः अहंकार करने वालों का ठिकाना निश्चित रूप से बहुत बुरा है ।30।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ۙ

और उन लोगों से जिन्होंने तक़वा धारण किया कहा जाएगा कि वह क्या है जो तुम्हारे रब्ब ने उतारा है ? वे कहेंगे भलाई ही भलाई ! उन लोगों के लिए जिन्होंने इस संसार में पुण्यकर्म किए, भलाई (निश्चित) है । और परलोक का घर बहुत उत्तम है । और मुत्तक़ियों का घर क्या ही उत्तम है ।31।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ
يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۲﴾

सदा रहने वाले बाग़ हैं जिनमें वे प्रविष्ट होंगे, जिनके दामन में नहरें बहती होंगी। उनके लिए उन में वही कुछ होगा जो वे चाहेंगे । इसी प्रकार अल्लाह मुत्तक़ियों को प्रतिफल दिया करता है ।32।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ
يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۳﴾

(अर्थात्) वे लोग जिनको फ़रिश्ते इस अवस्था में मृत्यु देते हैं कि वे पवित्र होते हैं । वे (उन्हें) कहते हैं, तुम पर सलाम हो । जो तुम कर्म करते थे उसके कारण स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ ।33।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۳۴﴾

क्या वे इसके अतिरिक्त कोई और मार्ग देख रहे हैं कि फ़रिश्ते उनके पास आएँ अथवा तेरे रब्ब का निर्णय आ पहुँचे । इसी प्रकार उन लोगों ने किया था जो उनसे पहले थे । और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार किया करते थे ।34।

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۵﴾ ع

अतः उन्हें उनके कर्मों का कुपरिणाम पहुँचा और उन्हें उसने घेर लिया जिसके साथ वे उपहास किया करते थे ।35।

(रुकू $\frac{4}{10}$)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا
عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ
اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ
كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۶﴾

और उन लोगों ने जिन्होंने शिर्क किया कहा, यदि अल्लाह चाहता तो हमने उसके सिवा किसी चीज़ की उपासना न की होती न हमने न हमारे पूर्वजों ने । और न ही हमने उसके सिवा किसी वस्तु को सम्मान दिया होता । इसी प्रकार उन लोगों ने किया था जो उनसे पहले थे। अतः क्या पैगम्बरों पर खुला-खुला संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त भी कोई दायित्व है ? ।36।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۷﴾

और निश्चित रूप से हमने प्रत्येक जाति में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की उपासना करो और मूर्ति (पूजा) से परहेज़ करो । अतः उनमें से कुछ ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी । और उन्हीं में ऐसे भी हैं जिन की पथभ्रष्टता निश्चित हो गई । अतः धरती में भ्रमण करो फिर देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा था ।37।

اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۸﴾

यदि तू उनकी हिदायत का लालसी है तो अल्लाह उनको हिदायत नहीं देता जो पथभ्रष्ट करते हैं । और उनके कोई सहायक नहीं होंगे ।38।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ۙ

और उन्होंने अल्लाह की पक्की क़समें खाई है कि जो मर जाएगा अल्लाह उसे फिर कभी नहीं उठाएगा । क्यों नहीं ! यह ऐसा वादा है जिसे पूरा करना उस पर अनिवार्य है । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।39।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿۴۰﴾

ताकि वह उन पर वह बात ख़ूब खोल दे जिसमें वे मतभेद किया करते थे । और ताकि वे लोग जिन्होंने इनकार किया जान लें कि वे झूठे हैं ।40।

اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۱﴾

जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो उस के लिए हमारा केवल यह कहना होता है कि ‘हो जा’ तो वह होने लगती है और हो कर रहती है ।41। (रुकू $\frac{5}{11}$)

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ

और वे लोग जिन्होंने अत्याचार सहने के बाद अल्लाह के लिए हिजरत की हम अवश्य उन्हें संसार में उत्तम स्थान प्रदान

وَلَاَجۡرُ الۡاٰخِرَةِ اَكۡبَرُ ۘ لَوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ ۙ﴿۴۲﴾	करेंगे । और परलोक का प्रतिफल तो सब (प्रतिफलों) से बड़ा है । काश वे समझ रखते ।42।
الَّذِيۡنَ صَبَرُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿۴۳﴾	(यह प्रतिफल उनके लिए है) जिन्होंने धैर्य धारण किया और वे अपने रब्ब पर भरोसा करते हैं ।43।
وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۙ﴿۴۴﴾	और हमने तुझ से पहले केवल ऐसे पुरुषों को ही भेजा जिनकी ओर हम वह्इ किया करते थे । अतः यदि तुम नहीं जानते तो (पूर्ववर्ती) पुस्तक वालों से पूछ लो ।44।
بِالۡبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۴۵﴾	(उन्हें हमने) खुले-खुले चिह्नों और धर्मग्रन्थों के साथ (भेजा) । और हमने तेरी ओर भी अनुस्मारक-ग्रन्थ उतारा है ताकि तू अच्छी प्रकार से लोगों पर उसका स्पष्टीकरण कर दे जो उनकी ओर उतारा गया था और ताकि वे सोच-विचार करें ।45।
اَفَاَمِنَ الَّذِيۡنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ يَّخۡسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الۡاَرۡضَ اَوۡ يَاۡتِيَهُمُ الۡعَذَابُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ۙ﴿۴۶﴾	क्या वे लोग जिन्होंने बुरी योजनाएँ बनाईं (इस बात से) सुरक्षित हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धँसा दे अथवा उनके पास अज़ाब वहाँ से आ जाए जहाँ से (आने का) वे विचार तक न करते हों ।46।
اَوۡ يَاۡخُذَهُمۡ فِىۡ تَقَلُّبِهِمۡ فَمَا هُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ۙ﴿۴۷﴾	अथवा उन्हें उनके चलने फिरने की अवस्था में आ पकड़े । अतः वे (अल्लाह को उसके उद्देश्य में) असमर्थ करने वाले नहीं ।47।
اَوۡ يَاۡخُذَهُمۡ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمۡ لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۴۸﴾	या (वह) उन्हें क्रमशः घटाते हुए पकड़ ले । अतः निस्सन्देह तुम्हारा रब्ब बहुत ही मेहरबान (और) बार-बार दया करने वाला है ।48।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ۝٤٩

क्या उन्होंने देखा नहीं कि जो वस्तु भी अल्लाह ने पैदा की है उसकी परछाइयाँ कभी दाहिनी ओर से और कभी बाईं ओर से स्थान बदलते हुए अल्लाह के समक्ष सजदः कर रही हैं । और वे विनम्रता करने वाली होती हैं ।49।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٥٠

और आसमानों और धरती में जो भी जीवधारी हैं और सब फ़रिश्ते भी अल्लाह ही को सजदः करते हैं । और वे अहंकार नहीं करते ।50।

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٥١ ۩

अपने ऊपर प्रभुत्व रखने वाले रब्ब से वे डरते हैं । और वही कुछ करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है ।51।

(रुकू $\frac{6}{12}$)

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّایَ فَارْهَبُوْنِ ۝٥٢

और अल्लाह ने कहा कि दो-दो उपास्य मत बना बैठो । निस्सन्देह वह एक ही उपास्य है । इसलिए केवल मुझ ही से डरो ।52।

وَلَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ۝٥٣

और जो आसमानों और धरती में है उसी का है । और उसी का आज्ञापालन करना आवश्यक है । तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और से डरते रहोगे ।53।

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ۝٥٤ ۚ

और जो भी तुम्हारे पास नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है । फिर जब तुम्हें कोई कष्ट पहुँचता है तो उसी की ओर तुम गिड़गिड़ाते (हुए झुकते) हो ।54।

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝٥٥ ۙ

फिर जब वह तुम से कष्ट को दूर कर देता तो तुम में से एक गिरोह तुरन्त अपने रब्ब का साझीदार ठहराने लगता है ।55।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾

ताकि जो हमने उन्हें प्रदान किया है उसकी कृतघ्नता करें । अतः कुछ लाभ उठा लो । तुम अवश्य (इसका परिणाम) जान लोगे ।56।

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۭ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔـلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٧﴾

और वे उसके लिए जिसे वे जानते नहीं उस जीविका में से जो हमने उनको प्रदान किया एक भाग निश्चित कर बैठते हैं । अल्लाह की सौगन्ध ! जो तुम झूठ गढ़ते रहे हो अवश्य उस विषय में पूछे जाओगे ।57।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٨﴾

और उन्होंने अल्लाह के लिए बेटियाँ बना ली हैं । पवित्र है वह । जबकि उनके लिए वह कुछ है जो वे पसन्द करते हैं ।58।

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٩﴾ ۚ

और जब उनमें से किसी को लड़की का शुभ-समाचार दिया जाए तो उसका चेहरा शोक से काला पड़ जाता है । और वह (शोक को) दबाने का प्रयत्न कर रहा होता है ।59।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْۗءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۭ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰي هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٦٠﴾

वह उस (सूचना) की पीड़ा के कारण जिस का शुभ-समाचार उसे दिया गया लोगों से छिपता फिरता है । क्या वह अपमानित होने पर भी (अल्लाह के) उस (अनुदान) को रोक रखे अथवा उसे मिट्टी में गाड़ दे ? सावधान ! बहुत ही बुरा है जो वे फ़ैसला करते हैं ।60।

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦١﴾ ۧ

उन लोगों के लिए जो परलोक पर ईमान नहीं लाते बहुत बुरा उदाहरण है । और सर्वोत्तम उदाहरण अल्लाह ही के लिए है। और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) तत्त्वज्ञ है ।61। (रुकू $\frac{7}{13}$)

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦٢﴾

और यदि अल्लाह मनुष्यों की उनकी अत्याचारों के आधार पर पकड़-धकड़ करता तो इस (धरती) पर किसी जीवधारी को शेष न छोड़ता । परन्तु वह उन्हें एक निश्चित अवधि तक ढील देता है । अतः जब उनका समय आ पहुँचे तो न वे (उससे) एक क्षण पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं ।62।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٣﴾

और वे अल्लाह की ओर वह (बात) आरोपित करते हैं जिससे वे स्वयं घृणा करते हैं और उनकी ज़बानें झूठ बोलती हैं कि अच्छी वस्तुएँ उन्हीं के लिए हैं । निस्सन्देह उनके लिए आग (निश्चित) है । और निस्सन्देह वे निस्सहाय छोड़ दिए जाएँगे ।63।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾

अल्लाह की सौगन्ध ! निस्सन्देह हमने तुझ से पहली जातियों की ओर रसूल भेजे तो शैतान ने उनके कर्म उन्हें सुन्दर बनाकर दिखाए । अतः आज वह उनका संरक्षक (बन बैठा) है । हालाँकि उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।64।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٥﴾

और हमने केवल इसलिए तुझ पर पुस्तक उतारी कि जिस विषय में वे मतभेद करते हैं तू (उसे) उनके लिए ख़ूब खोल कर वर्णन कर दे और (इस लिए कि यह पुस्तक) ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और अनुकंपा का साधन हो ।65।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो इससे धरती को उसके मर जाने के पश्चात् जीवित कर दिया । निस्सन्देह

الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿۶۶﴾ ع

इसमें उन लोगों के लिए बहुत बड़ा चिह्न है जो (बात को) सुनते हैं ।66।

(रुकू 8/14)

وَ اِنَّ لَكُمْ فِی الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِیْكُمْ مِّمَّا فِیْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَیْنِ فَرْثٍ وَّ دَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِیْنَ ﴿۶۷﴾

और निस्सन्देह तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक बड़ा चिह्न है । हम तुम्हें उस में से जो उनके पेटों में गोबर और ख़ून के बीच से उत्पन्न होता है वह शुद्ध दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट है ।67।

وَ مِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِیْلِ وَ الْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۶۸﴾

और खजूरों के फलों और अंगूरों से भी (हम पिलाते हैं) । तुम इससे नशा* और उत्तम जीविका भी बनाते हो । निस्सन्देह इसमें बुद्धि रखने वालों के लिए एक बड़ा चिह्न है ।68।

وَ اَوْحٰی رَبُّكَ اِلَی النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَ مِمَّا یَعْرِشُوْنَ ۙ﴿۶۹﴾

और तेरे रब्ब ने मधुमक्खी की ओर वह्इ की कि पर्वतों में भी और वृक्षों में भी और उन (लताओं) में जिन्हें वे ऊँचे सहारों पर चढ़ाते हैं, घर बना ।69।

ثُمَّ كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ یَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِیْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۷۰﴾

फिर प्रत्येक प्रकार के फलों में से खा और अपने रब्ब के रास्तों पर विनम्रता पूर्वक चल । उनके पेटों में से ऐसा पेय निकलता है जिसके रंग भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं । और इसमें मनुष्यों के लिए एक बड़ी आरोग्य प्रदानकारी शक्ति है । निस्सन्देह इसमें सोच-विचार करने वालों के लिए बहुत बड़ा चिह्न है ।70।

وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ یَتَوَفّٰىكُمْ ۛۚ وَ مِنْكُمْ

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया फिर वह तुम्हें मृत्यु देगा । और तुम ही में से वह भी है जिसे सुध-बुध खो देने की आयु

* मुहावरा है : ''नशा उसने पिया ख़ुमार तुम्हें चढ़ा'' देखिए जामे-उल-लुग़ात ।

مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝٧١ۧ

तक पहुँचाया जाता है ताकि ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात पूर्णतया ज्ञान विहीन हो जाए। निस्सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है ।71। (रुकू $\frac{9}{15}$)

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَاۗدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰي مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝٧٢

और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ दूसरों पर जीविका में बढ़ोत्तरी प्रदान की है । अतः वे लोग जिन्हें बढ़ोत्तरी प्रदान की गई वे कभी अपनी जीविका को उनकी ओर जो उनके अधीन हैं इस प्रकार लौटाने वाले नहीं कि वे उसमें उनके समान हो जाएँ । फिर क्या वे (इस) वास्तविकता के जानने के बाद भी अल्लाह की नेमत का इनकार करते हैं ? ।72।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝٧٣ۙ

और अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही वर्ग में से जोड़े पैदा किए और तुम्हारे जोड़ों में से ही तुम्हें बेटे और पोते प्रदान किए और तुम्हें पवित्र वस्तुओं में से जीविका प्रदान की । तो फिर क्या वे झूठ पर तो ईमान लाएँगे और अल्लाह की नेमतों का इनकार कर देंगे ? ।73।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝٧٤ۚ

और वे अल्लाह के सिवा उसकी उपासना करते हैं जो उनके लिए आसमानों और धरती में किसी जीविका पर कुछ भी आधिपत्य नहीं रखते और वे तो कोई सामर्थ्य नहीं रखते ।74।

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧٥

अतः अल्लाह के बारे में दृष्टान्त न दिया करो । निस्सन्देह अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।75।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّ جَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٦﴾

इसी प्रकार अल्लाह एक भक्त का उदाहरण प्रस्तुत करता है जो किसी का दास हो और किसी चीज़ पर कोई प्रभुत्व न रखता हो और उसका भी (उदाहरण देता है) जिसे हमने अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है और वह उसमें से गुप्त रूप से और प्रकाश्य रूप से भी खर्च करता है । क्या वे समान हो सकते हैं ? समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है । जबकि वास्तविकता यह है कि अधिकतर उनमें से नहीं जानते ।76।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٧﴾ ع

इसी प्रकार अल्लाह दो व्यक्तियों का उदाहरण प्रस्तुत करता है । उन दोनों में से एक गूँगा है जो किसी चीज़ पर कोई सामर्थ्य नहीं रखता और वह अपने स्वामी पर एक बोझ है । वह उसे जिस ओर भी भेजे वह कोई भलाई (का समाचार) नहीं लाता । क्या वह व्यक्ति और वह समान हो सकते हैं जो न्याय का आदेश देता है और सन्मार्ग पर (अग्रसर) है ? ।77। (रुकू $\frac{10}{16}$)

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٨﴾

और आसमानों और धरती की अदृश्य (बातें) अल्लाह ही की सम्पत्ति है । और (प्रतिश्रुत) घड़ी का मामला तो आँख झपकने के समान या इससे भी शीघ्रतर है । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।78।

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों से निकाला जब कि तुम कुछ नहीं जानते थे । और उसने तुम्हारे लिए कान

وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٩﴾

और आँखें और दिल बनाए ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ।79।

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٠﴾

क्या उन्होंने पक्षियों को आकाश के वायुमण्डल में काम पर लगाए हुए नहीं देखा ? उन्हें अल्लाह के सिवा कोई थामे हुए नहीं होता । निस्सन्देह इसमें उन लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो ईमान लाते हैं ।80।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨١﴾

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में शान्ति रख दी और तुम्हारे लिए पशुओं के चमड़ों से एक प्रकार के घर बना दिए जिन्हें तुम यात्रा के दिन और पड़ाव के दिन हल्का पाते हो । और उनकी पशम और उनकी ऊन और उनके बालों से अनेक साज़ो-सामान बनाया और एक समय तक लाभ उठाना निश्चित किया ।81।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

और अल्लाह ने जो कुछ पैदा किया है उसमें से तुम्हारे लिए छायादार चीज़ें भी बनाईं । और तुम्हारे लिए पहाड़ों में आश्रयस्थल बनाए । और तुम्हारे लिए ओढ़ने का सामान बनाया जो तुम्हें गर्मी से बचाता है । और ओढ़ने का वह सामान भी जो युद्ध के समय तुम्हारा बचाव करता है । इसी प्रकार वह तुम पर अपनी नेमत को पूरा करता है ताकि तुम आज्ञाकारी बन जाओ ।82।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٣﴾

अतः यदि वे फिर जाएँ तो तुझ पर तो केवल खुला-खुला संदेश पहुँचाना अनिवार्य है ।83।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٤﴾ ع

वे अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं फिर भी उसका इनकार कर देते हैं । और उनमें से अधिकतर काफ़िर लोग हैं ।84।

(रुकू $\frac{11}{17}$)

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٥﴾

और जब हम प्रत्येक जाति में से एक गवाह खड़ा करेंगे फिर वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनको (कुछ कहने की) अनुमति नहीं दी जाएगी । और न उन की पहुँच (अल्लाह की) चौखट तक होगी ।85।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٦﴾

और वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया जब वे अज़ाब को देखेंगे तो वह उनसे हल्का नहीं किया जाएगा और न ही वे ढील दिए जाएँगे ।86।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٧﴾

और जब वे लोग जिन्होंने शिर्क किया अपने (घड़े हुए) उपास्यों को देखेंगे तो कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! ये हैं हमारे उपास्य जिनको हम तेरे सिवा पुकारा करते थे । तो वे (उनकी) यह बात उन पर ही दे मारेंगे कि निस्सन्देह तुम झूठे हो ।87।

وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِنِ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٨﴾

अत: उस दिन वे अल्लाह से संधि के इच्छुक होंगे । और जो कुछ वे झूठ गढ़ा करते थे, उन से खो चुका होगा ।88।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٩﴾

वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका हम उन्हें अज़ाब पर अज़ाब में बढ़ाते चले जाएँगे क्योंकि वे फ़साद किया करते थे ।89।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ

और जिस दिन हम प्रत्येक जाति में उन्हीं में से उन पर एक गवाह खड़ा

اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ
وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ ع ١٢/١٨

करेंगे और तुझे हम उन (सब) पर गवाह बना कर लाएँगे और हमने तेरी ओर ऐसी पुस्तक उतारी है जो कि प्रत्येक बात को खोल-खोल कर वर्णन करने वाली है । और हिदायत और कृपा स्वरूप है तथा आज्ञाकारियों के लिए शुभ-समाचार है ।90। (रुकू $\frac{12}{18}$)

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ
ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩١﴾

निस्सन्देह अल्लाह न्याय और उपकार करने का और निकट सम्बन्धियों को दिया जाने वाला अनुदान के समान अनुदान करने का आदेश देता है । और निर्लज्जता और नापसंदीदा बातों और विद्रोह करने से मना करता है । वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो ।91।

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ
عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُوْنَ ﴿٩٢﴾

और जब तुम प्रतिज्ञा करो तो अल्लाह से की गई प्रतिज्ञा को पूरा करो । और क़समों को उनके पक्का करने के बाद न तोड़ो जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर ज़ामिन बना चुके हो । जो कुछ तुम करते हो अल्लाह निश्चित रूप से जानता है ।92।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ
بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ
دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى
مِنْ اُمَّةٍ ۭ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۭ وَلَيُبَيِّنَنَّ
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ

और उस स्त्री की भाँति मत बनो जिसने अपने काते हुए सूत को मज़बूत हो जाने के बाद टुकड़े-टुकड़े कर दिया। तुम अपनी क़समों को परस्पर धोखा देने के लिए प्रयोग करते हो, ऐसा न हो कि एक जाति दूसरी जाति पर बढ़ोत्तरी प्राप्त कर ले । निस्सन्देह अल्लाह इसके द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेता है । और वह अवश्य तुम पर क़यामत के दिन उसे

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

खोल देगा जिसके सम्बन्ध में तुम मतभेद किया करते थे ।93।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾

और यदि अल्लाह चाहता तो अवश्य तुम्हें एक समुदाय बना देता । परन्तु वह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है । और तुम निस्सन्देह उन कर्मों के विषय में पूछे जाओगे जो तुम करते थे ।94।

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٥﴾

और तुम अपनी क़समों को आपस में धोखा देने का साधन न बनाओ । ऐसा न हो कि (तुम्हारा) क़दम जम जाने के बाद उखड़ जाए । और तुम बुराई (का दुष्परिणाम) चखो क्योंकि तुम अल्लाह के मार्ग से रोकते रहे और तुम्हारे लिए एक बड़ा अज़ाब (निश्चित) हो ।95।

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

और अल्लाह की प्रतिज्ञा को थोड़ी क़ीमत पर बेच न दिया करो । निस्सन्देह जो अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए उत्तम है यदि तुम जानते ।96।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾

जो तुम्हारे पास है वह समाप्त हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है वह शेष रहने वाला है । और अवश्य हम उन लोगों को जिन्होंने धैर्य धारण किया उनके उत्कृष्ट कर्मों के अनुसार प्रतिफल देंगे जो वे किया करते थे ।97।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ

पुरुष या स्त्री में से जो भी पुण्यकर्म करेगा बशर्तेकि वह मोमिन हो, तो उसे हम निस्सन्देह एक पवित्र जीवन के रूप में जीवित कर देंगे । और उन्हें अवश्य

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٩٨

उनका प्रतिफल उनके उत्कृष्ट कर्मों के अनुसार देंगे जो वे करते रहे ।98।

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝٩٩

अतः जब तू क़ुरआन पढ़े तो धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँग ।99।

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝١٠٠

निस्सन्देह उसे उन लोगों पर कोई प्रभुत्व नहीं जो ईमान लाए हैं और अपने रब्ब पर भरोसा करते हैं ।100।

اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝١٠١ ع

ع ١٣ ١١ ١٩

उसका प्रभुत्व तो केवल उन लोगों पर है जो उसे मित्र बनाते हैं । और उन पर है जो उस (अर्थात् अल्लाह) का साझीदार ठहराते हैं ।101। (रुकू $\frac{13}{19}$)

وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٠٢

और जब हम कोई आयत बदल कर उस के स्थान पर दूसरी आयत ले आते हैं, और अल्लाह अधिक जानता है जो वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि तू केवल एक झूठ गढ़ने वाला है । जबकि वास्तविकता यह है कि उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।102।

قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝١٠٣

तू कह दे कि इसे रूह-उल-क़ुदुस ने तेरे रब्ब की ओर से सत्य के साथ उतारा है ताकि वह उन लोगों को दृढ़ता प्रदान करे जो ईमान लाए । और आज्ञाकारियों के लिए हिदायत और शुभ-समाचार हो ।103।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٠٤

और निस्सन्देह हम जानते हैं कि वे कहते हैं इसे किसी मनुष्य ने सिखाया है । जिसकी ओर यह बात आरोपित करते हैं, उसकी भाषा अ'जमी (अर्थात् अस्पष्ट) है । जबकि यह (क़ुरआन की भाषा) एक स्पष्ट और उज्ज्वल अरबी भाषा है ।104।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٠٥

निस्सन्देह वे लोग जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देगा । और उनके लिए अति पीड़ादायक अज़ाब (निश्चित) है ।105।

اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝١٠٦

झूठ केवल वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते और यही लोग ही झूठे हैं ।106।

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠٧

जो भी अपने ईमान लाने के पश्चात् अल्लाह का इनकार करे सिवाय इसके कि जो विवश कर दिया गया हो, जबकि उसका दिल ईमान पर संतुष्ट हो (वह दोषमुक्त है) । परन्तु वे लोग जो इनकार करने पर दिल से संतुष्ट हो गए उन पर अल्लाह का प्रकोप होगा । और उनके लिए एक बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।107।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٠٨

यह इसलिए है कि उन्होंने सांसारिक जीवन को परलोक पर (प्राथमिकता देते हुए) पसन्द कर लिया । और इस कारण से (भी) है कि अल्लाह कदापि काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं देता ।108।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝١٠٩

यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी । और यही वे लोग हैं जो लापरवाह हैं ।109।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝١١٠

कोई सन्देह नहीं कि परलोक में निश्चित रूप से यही लोग घाटा पाने वाले होंगे ।110।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا

फिर निस्सन्देह तेरा रब्ब उन लोगों को जिन्होंने परीक्षा में डाले जाने के बाद

فُتِنُوا ثُمَّ جٰهَدُوا وَصَبَرُوٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١١﴾ ع

हिजरत की फिर उन्होंने जिहाद किया और धैर्य किया । तो निश्चित रूप से तेरा रब्ब उसके बाद बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।111। (रुकू $\frac{14}{20}$)

يَوْمَ تَاْتِىْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١٢﴾

जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी जान के बचाव में झगड़ता हुआ आएगा और प्रत्येक जान को जो कुछ उसने किया पूरा-पूरा दिया जाएगा । और उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।112।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٣﴾

और अल्लाह एक ऐसी बस्ती का उदाहरण वर्णन करता है जो बड़ी शान्तिपूर्ण और संतुष्ट थी । उसके पास प्रत्येक दिशा से उसकी जीविका प्रचुर मात्रा में आती थी । फिर उस (के निवासियों) ने अल्लाह की नेमतों की कृतघ्नता की तो अल्लाह ने उन्हें उन कर्मों के कारण जो वे किया करते थे भय और भूख का वस्त्र पहना दिया ।113।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٤﴾

और निस्सन्देह उनके पास उन्हीं में से एक रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया । अतः अज़ाब ने उनको आ पकड़ा जबकि वे अत्याचार करने वाले थे ।114।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٥﴾

अतः जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने जीविका प्रदान की है उसमें से हलाल (और) पवित्र खाओ और अल्लाह की नेमत के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करो यदि तुम उसी की उपासना करते हो ।115।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ

उसने तुम पर केवल मुर्दार और ख़ून और सूअर का माँस और वह (भोजन) हराम किया है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी

اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٦﴾

और का नाम लिया गया हो । हाँ जो अत्यन्त विवश हो जाए, न (हराम भोजन की) चाहत रखने वाला और न सीमा का उल्लंघन करने वाला हो । तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।116।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ﴿١١٧﴾

और तुम उन चीज़ों के बारे में जिनके बारे में तुम्हारी ज़ुबानें झूठ वर्णन करती हैं यह न कहा करो कि यह हलाल है और यह हराम, ताकि तुम अल्लाह पर झूठे आरोप लगाओ । निस्सन्देह वे लोग जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं सफल नहीं हुआ करते ।117।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٨﴾

एक थोड़ा सा लाभ है और (फिर) उनके लिए एक बड़ा पीड़ादायक अज़ाब (निश्चित) है ।118।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٩﴾

और जो यहूदी हुए उन लोगों पर भी हमने उन वस्तुओं को हराम ठहरा दिया था जिनका वर्णन हम तुझ से पहले कर चुके हैं । और उन पर हमने अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार करते थे ।119।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٠﴾ ع

फिर तेरा रब्ब उन लोगों के लिए जिन्होंने अनजाने में अपकर्म किए फिर उसके पश्चात् प्रायश्चित कर लिया और सुधार किया । निस्सन्देह तेरा रब्ब इस (पवित्र परिवर्तन) के बाद बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।120। (रुकू $\frac{15}{21}$)

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ

निस्सन्देह इब्राहीम (अपने आप में) एक समुदाय (स्वरूप) था जो सदा अल्लाह

وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢١﴾

का आज्ञाकारी उसी की ओर झुका रहने वाला था । और वह मुश्रिकों में से नहीं था ।121।

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۭ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢٢﴾

उसकी नेमतों की कृतज्ञता प्रकट करने वाला था । उस (अल्लाह) ने उसे चुन लिया और उसे सन्मार्ग की ओर हिदायत दी ।122।

وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٣﴾

और हमने उसे संसार में भलाई प्रदान की और परलोक में वह निश्चित रूप से सदाचारियों में से होगा ।123।

ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٤﴾

फिर हमने तेरी ओर वह्इ की कि तू (अल्लाह की ओर) झुके रहने वाले इब्राहीम के पथ का अनुसरण कर । और वह मुश्रिकों में से न था ।124।

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۭ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٥﴾

निस्सन्देह सब्त उन लोगों के लिए (परीक्षा स्वरूप) बनाया गया जिन्होंने उसके बारे में मतभेद किया । और तेरा रब्ब निश्चित रूप से उनके बीच क़यामत के दिन उन बातों का अवश्य फ़ैसला करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे ।125।

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٦﴾

अपने रब्ब के रास्ते की ओर विवेकशीलता और सदुपदेश के साथ बुला । और उनसे ऐसी दलील के साथ तर्क कर जो सर्वोत्तम हो । निस्सन्देह तेरा रब्ब ही उसे जो उसके रास्ते से भटक चुका हो सबसे अधिक जानता है। और वह हिदायत पाने वालों का भी सबसे अधिक ज्ञान रखता है ।126।

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا

और यदि तुम दंड दो तो उतना ही दंड दो जितना तुम पर अत्याचार किया

عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٧﴾	गया था । और यदि तुम धैर्य धरो तो निस्सन्देह धैर्य धरने वालों के लिए यह उत्तम है ।127।
وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٨﴾	और तू धैर्य धर और तेरा धैर्य अल्लाह के सिवा किसी और के लिए नहीं । और तू उन पर शोक न कर और जो वे षड़यन्त्र रचते हैं तू उस से तंगी में न पड़ ।128।
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع ١٦/٩ ٢٢	निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़वा धारण करते हैं और जो उपकार करने वाले हैं ।129। (रुकू $\frac{16}{22}$)

17- सूरः बनी इस्राईल

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 112 आयतें हैं । इसे **सूरः अल-इस्रा** भी कहा जाता है ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आध्यात्मिक उत्थान का विषयवस्तु जो पिछली सूरः में जारी था उसी का वर्णन इस सूरः में भी है । इसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल. को यह दिखाया गया कि जिन नुबुव्वतों का समापन फ़िलिस्तीन में हुआ तेरी यात्रा वहीं समाप्त नहीं होती बल्कि वहाँ से और ऊँचाइयों की ओर बढ़ती है । इस प्रकरण में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत का वर्णन किया । यद्यपि हज़रत मूसा अलै. भी बहुत ऊँचाइयों तक पहुँचे परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उत्थान इससे भी उच्चतर था ।

यह सूरः अब यहूदियों के वर्णन को इस प्रकार प्रस्तुत कर रही है कि उनको अपने अपराध के कारण अपने देश फ़िलिस्तीन से निकाल दिया गया था । और अल्लाह तआला के अत्यन्त कड़े निरीक्षक भक्त उन के ऊपर तैनात किए गए थे जो उनके शहर की गलियों में प्रवेश करके तीव्रता से आगे बढ़े और पूरे शहर को ध्वस्त कर दिया । परन्तु अल्लाह तआला फिर उन पर दया करेगा और एक और अवसर उन्हें देगा कि वे दोबारा फ़िलिस्तीन पर क़ब्ज़ा कर लें जैसा कि इस समय हो चुका है । परन्तु यह भी कहा है कि यदि उन्होंने प्रायश्चित न किया और अल्लाह के भक्तों के साथ दयापूर्ण व्यवहार न किया तो फिर अल्लाह तआला उन्हें फ़िलिस्तीन से स्वयं निकालेगा, न कि मुसलमानों से युद्ध के फलस्वरूप ऐसा होगा । फिर उनके स्थान पर अल्लाह तआला अपने सदाचारी भक्तों को फ़िलिस्तीन का शासक बना देगा । स्पष्ट है कि मुसलमानों को तब तक फ़िलिस्तीन पर विजय प्राप्त नहीं हो सकती जब तक वे इस शर्त को पूरा न करें अर्थात अल्लाह के सदाचारी भक्त न बन जाएँ ।

इसके बाद उन बुराइयों का वर्णन है जो यहूदियों में उस समय जड़ें जमा चुकी थीं। जब उनके दिल कठोर हो गये थे । अर्थात् कंजूसी, अपव्यय, व्यभिचार, हत्या-लूटपाट, अनाथ का धन हड़पना, वचन भंग करना, अहंकार इत्यादि । मुसलमानों को इनसे बचे रहने की शिक्षा दी गई है ।

फिर इस सूरः में वर्णन किया गया कि जब तू इस महान ग्रंथ क़ुरआन का पाठ करता है तो ये उसको समझने से वंचित रहते हैं । और इनमें शिर्क इतना घर कर चुका है कि जब तू केवल अल्लाह के अद्वितीय होने का वर्णन करता है तो पीठ फेर कर चले जाते हैं । इनको एकेश्वरवाद की बातों में कोई रुचि नहीं रहती । चूँकि इनके दिलों में

नास्तिकता घर कर जाती है इस कारण परकालीन दिवस पर से भी इनका विश्वास पूर्णतया उठ जाता है । और जो जाति परलोक पर विश्वास न रखे और अपनी जवाबदेही का अस्वीकारी हो वह अपने अपराध और पाप में सदा बिना रोक-टोक बढ़ती चली जाती है ।

इसके बाद उस स्वप्न का उल्लेख किया गया है जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल. को फ़िलिस्तीन की अवस्था दिखाई गई । और फिर अधिक आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर आपका गमन हुआ ।

फिर जिस **शजर–ए–मल्ऊन:** (अभिशप्त वृक्ष) का वर्णन हुआ है इससे अभिप्राय यहूदी हैं जिनका सूर: अल फ़ातिह: की अन्तिम आयत में वर्णन है कि वे सदा अल्लाह के प्रकोप के नीचे रहेंगे और भक्तजनों के प्रकोप के नीचे भी रहेंगे । जो लोग क्रोध और प्रतिशोध के अभ्यस्त हों उनका उदाहरण अग्नि समान है जो प्रत्येक प्रकार की उन्नति को भस्म कर देती है । और जो नम्र स्वभाव के भक्त हैं वे मिट्टी की विशेषता रखते हैं प्रत्येक प्रकार की उन्नति उन्हीं के द्वारा होती है । अत: इस चर्चा का यह अर्थ निकलता है कि यहूदि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रचनात्मक प्रयासों को समाप्त करने की सदैव चेष्टा करते रहेंगे । और यह सोचेंगे कि ये मिट्टी से उठने वाले कैसे हमारा मुक़ाबला कर सकते हैं । परन्तु समस्त संसार की उन्नति इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की प्रकृति से उत्पन्न होने वाली हरियाली को आग कभी भस्म नहीं कर सकी । सभी लहलहाते हुए बाग़ और हरे भरे मैदान इस बात के साक्षी हैं ।

इसके बाद क़ुरआन करीम की वह आयतें हैं जो आयत **अक़िमिस्सलात** (नमाज़ को क़ायम कर) से आरम्भ होती हैं और हज़रत मुहम्मद सल्ल. के प्रशंसित पद का वर्णन करती हैं । अत: हज़रत मुहम्मद सल्ल. के विरोधी आपको अपमानित करने का जो प्रयत्न कर सकते हैं करते चले जाएँगे । परन्तु इसके परिणामस्वरूप अल्लाह तआला आप सल्ल. को उच्चतर दर्जा की ओर उठाता चला जाएगा । इस प्रकार आपके आध्यात्मिक उत्थान को इस रंग में भी ऊँचा किया, यहाँ तक कि आप उस प्रशंसित पद तक पहुँच जाएँगे जिस तक किसी दूसरे की पहुँच नहीं हुई । परन्तु यह पद यूँ ही प्राप्त नहीं हुआ करता इसके लिए **फ़तहज्जद् बिही ना फ़िलतल लक** (इस क़ुरआन के साथ तहज्जुद की नमाज़ पढ़, जो तेरे लिए अतिरिक्त पुरस्कार स्वरूप होगा) कह कर यह बताया कि इसके लिए रातों को उठ कर हमेशा दुआएँ करता चला जा ।

यह दावा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वास्तव में प्रशंसित पद तक पहुँचाए जाएँगे प्रत्यक्ष रूप से भी आप सल्ल. के जीवन में शत्रुओं ने पूरा होता हुआ देख लिया कि जब आप सल्ल. एक प्रकार से पराजित हो कर मक्का से निकले तो इसी

सूर: में एक दुआ के रूप में यह भविष्यवाणी थी कि तू दोबारा इस नगर में वापस लौटेगा। और यह घोषणा करेगा कि **जाअल हक़्क़ु व ज़हकल बातिलु इन्नल बाति ल का न ज़हूक़ा** अर्थात सत्य आ गया और मिथ्या पलायन कर गया और मिथ्या के भाग्य में पलायन करना ही है । यह ऐसा ही है जैसा कि प्रकाश के आगमन पर अंधकार पलायन कर जाता है ।

इसके बाद आयत सं. 86 आत्मा से सम्बन्धित है । हज़रत मुहम्मद सल्ल. से जब लोगों ने कहा कि हमें बता कि आत्मा क्या चीज़ है । अल्लाह तआला ने यह उत्तर बताया कि उनसे कह दे कि आत्मा मेरे रब्ब के आदेश के अतिरिक्त और कुछ नहीं ।

ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को **रूहुल्लाह** (अल्लाह की आत्मा) मानते हैं और मुसलमान भी यही उपनाम उनको देते हैं परन्तु इस बात में हज़रत ईसा अलै. को कोई विशेषता प्राप्त नहीं । क्योंकि वह भी केवल उसी प्रकार अल्लाह के आदेश से पैदा हुए हैं जैसा कि सृष्टि के आरम्भ में समग्र जीवजगत अल्लाह के आदेश से उत्पन्न हुआ है।

सूर: के अन्त पर इस विषय को अधिक खोल दिया गया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को केवल इस कारण कि वे बिन बाप के थे, अल्लाह का पुत्र घोषित करना बहुत बड़ा अन्याय है । अत: समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जिसको किसी पुत्र की कोई आवश्यकता नहीं और न उसके प्रभुत्व में कोई साझीदार है । और उसे कभी ऐसे साथी की आवश्यकता नहीं पड़ी जो मानों दुर्बल अवस्था में उसका सहायक बनता ।

☆☆☆

سُوْرَةُ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ مَکِّیَّۃٌ وَّ ھِیَ مَعَ الْبَسْمَلَۃِ مِائَۃٌ وَّ اثْنَتَا عَشْرَۃَ اٰیَۃً وَّ اثْنَاعَشَرَ رُکُوْعًا

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴿۱﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَکْنَا حَوْلَہٗ لِنُرِیَہٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّہٗ ھُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۲﴾

पवित्र है वह जो रात के समय अपने भक्त को मस्जिद-ए-हराम से मस्जिद-ए-अक़्सा की ओर ले गया जिसके आस-पास को हमने बरकत दी है । ताकि हम उसे अपने चिह्नों में से कुछ दिखाएँ । नि:सन्देह वह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।2।*

وَاٰتَیْنَا مُوْسَی الْکِتٰبَ وَجَعَلْنٰہُ ھُدًی لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِیْ وَکِیْلًا ؕ﴿۳﴾

और हमने मूसा को भी पुस्तक दी थी और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया था, कि तुम मेरे सिवा किसी को अपना कार्य-साधक न बनाना ।3।

ذُرِّیَّۃَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّہٗ کَانَ عَبْدًا شَکُوْرًا ﴿۴﴾

(ये लोग) उन की संतान थे जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था । नि:सन्देह वह बड़ा ही कृतज्ञ भक्त था ।4।

* क़ुरआन करीम में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आध्यात्मिक यात्रा की दो घटनाएँ वर्णन हुई हैं । एक को **इस्रा** कहा जाता है और दूसरे को **मे'राज** । 'इस्रा' की आध्यात्मिक यात्रा में आप सल्ल. को फ़िलिस्तीन का भ्रमण कराया गया जो भौतिक शरीर के साथ फ़िलिस्तीन जाने को सिद्ध नहीं करता। बल्कि इसका अभिप्राय आध्यात्मिक रूप से भ्रमण करना है । इसी कारण जब किसी ने खड़े हो कर पूछा कि बताएँ फ़िलिस्तीन का अमुक भवन किस-किस प्रकार का है तो हदीस में आता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. की आँखों के सामने उस समय वह भवन प्रकट हुआ और आप सल्ल. देख-देख कर उसके प्रश्नों के उत्तर देने लगे । अत: हदीस में लिखा है :- **जब क़ुरैश के काफ़िरों ने मुझे झुठलाया तो मैं हिज्र (ख़ाना का'बा से संलग्न स्थान) में खड़ा हुआ । अल्लाह तआला ने मुझ पर बैतुल मुक़द्दस को प्रकट किया । मैं उनको वहाँ की निशानियाँ बतलाने लगा और मैं उसे देख रहा था ।**

(**बुख़ारी,** किताब-उत-तफ़सीर, सूर: बनी इस्राईल की व्याख्या)

وَقَضَيْنَآ إِلَىٰ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ فِى ٱلْكِتَٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِى ٱلْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝

और हमने पुस्तक में बनी इस्राईल को इस फ़ैसले से स्पष्ट रूप से अवगत कर दिया था कि तुम अवश्य धरती में दो बार फ़साद करोगे और घोर उद्दण्डता करते हुए छा जाओगे ।5।

فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ أُولَىٰهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ أُو۟لِى بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا۟ خِلَٰلَ ٱلدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۝٦

अत: जब उन दोनों में से पहले वादे का समय आ पहुँचा, हमने तुम्हारे विरुद्ध अपने ऐसे भक्तों को खड़ा कर दिया जो बड़े योद्धा थे । अत: वे बस्तियों के बीचों-बीच तबाही मचाते हुए प्रविष्ट हो गए ।* और यह पूरा हो कर रहने वाला वादा था ।6।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ ٱلْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَٰكُم بِأَمْوَٰلٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَٰكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ۝٧

फिर हमने तुम्हें दोबारा उन पर विजय प्रदान की और हमने धन और संतान के द्वारा तुम्हारी सहायता की । और तुम्हें हमने एक बहुत बड़ा जत्था बना दिया ।7।

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ ٱلْءَاخِرَةِ لِيَسُۥٓـُٔوا۟ وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا۟ ٱلْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا۟ مَا عَلَوْا۟ تَتْبِيرًا ۝٨

यदि तुम अच्छे कर्म करोगे तो अपने लिए ही अच्छे कर्म करोगे । और यदि तुम बुरा करो तो स्वयं अपने लिए ही बुरा करोगे । अत: जब अन्तिम वादे (का समय) आएगा (तब भी यही निश्चित है) कि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और वे मस्जिद में उसी प्रकार प्रविष्ट हो जाएँ जैसा कि पहली बार प्रविष्ट हुए थे । और ताकि वे जिस पर विजय प्राप्त करें उसे सर्वथा नष्ट कर दें ।8।

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ

संभव है कि तुम्हारा रब्ब तुम पर दया करे । और यदि तुमने पुनरावृत्ति की तो हम भी पुनरावृत्ति करेंगे । और हमने

* इन अर्थों के लिए देखें 'अल्-मुन्जिद' शब्दकोश ।

عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ﴿٩﴾

नरक को काफ़िरों को घेर लेने वाला बनाया है ।9।*

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ﴿١٠﴾

नि:सन्देह यह क़ुरआन उस (मार्ग) की ओर हिदायत देता है जो सबसे अधिक दृढ़ रहने वाला है । और उन मोमिनों को जो नेक काम करते हैं शुभ-समाचार देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल (निश्चित) है ।10।

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١١﴾ ع

और यह कि जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते उनके लिए हमने पीड़ादायक अज़ाब तैयार किया है ।11। (रुकू $\frac{1}{1}$)

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿١٢﴾

और मनुष्य बुराई को ऐसे मांगता है जैसे भलाई मांग रहा हो और मनुष्य बहुत जल्दबाज़ है ।12।

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا

और हमने रात और दिन के दो चिह्न बनाए हैं । फिर हम रात के चिह्न को मिटा देते हैं और दिन के चिह्न को प्रकाश दायक बना देते हैं ताकि तुम अपने रब्ब की कृपा को ढूँढो और ताकि

---

* आयत सं. 5 से 9 :- बनी इस्राईल के सम्बन्ध में अल्लाह तआला का यह विधान जारी हुआ था कि जब वे दुष्कर्मों में बहुत बढ़ गये तो उन पर बाबिल (बेबिलोनिया) के राजा नबू कद नज़र को विजय प्रदान की गई । वे लोग उनकी गलियों में भी घुस गए और उनको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया अथवा हिजरत कर के बाहर चले जाने पर विवश कर दिया ।

फिर अल्लाह तआला ने जब पहली बार बनी इस्राईल को दोबारा फिलिस्तीन पर विजय प्रदान की तो उन पर दया करते हुए उनकी संख्या में भी बरकत दी और उनके धन में बढ़ोत्तरी की । और यह उपदेश दिया, कि यदि तुमने सद्-व्यवहार से काम लिया तो तुम्हारे अपने ही हित में है और यदि तुमने पिछले दुष्कर्मों की पुनरावृत्ति की तो स्वयं अपने हित के विपरीत ही ऐसा करोगे । अत: जब अन्तिम युग में उनको फ़िलिस्तीन पर दोबारा विजय प्रदान की जाएगी तो ऐसा फ़िलिस्तीन पर क़ाबिज़ मुसलमानों के दुष्कर्म के कारण होगा । और यहूदियों को फिर परीक्षा में डाला जाएगा । यदि वे विजित क्षेत्रों में न्याय और दया पूर्ण व्यवहार करेंगे तो उनका यह विजय दीर्घकालीन हो जाएगा । और इसके विपरीत कर्मों के करने से संसार की कोई जाति उनको पराजित नहीं करेगी । बल्कि अल्लाह तआला अपनी शक्ति से ऐसे उपाय करेगा कि संसार की बड़ी शक्तियाँ यहूदियों को फ़िलिस्तीन में शरण देने से अस्वीकार करेंगी ।

عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ۝١٣

तुम वर्षों की गणना और हिसाब सीख सको । और प्रत्येक बात हमने ख़ूब खोल-खोल कर वर्णन कर दी है ।13।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ۝١٤

और प्रत्येक मनुष्य के कर्मों का लेखा-जोखा हमने उसकी गर्दन से चिमटा दिया है । और हम क़यामत के दिन उसके लिए उसे एक ऐसी पुस्तक के रूप में निकालेंगे जिसे वह खुली हुई पाएगा ।14।*

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝١٥ؕ

अपनी पुस्तक को पढ़ ! आज के दिन तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है ।15।

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝١٦

जो हिदायत पा जाए वह स्वयं अपनी जान ही के लिए हिदायत पाता है । और जो पथभ्रष्ट हो तो वह अपने हित के विरुद्ध पथभ्रष्ट होता है । और कोई बोझ उठाने वाली (जान) किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी । और हम कदापि अज़ाब नहीं देते जब तक कि कोई रसूल न भेज दें (और सत्य को सिद्ध न कर दें) ।16।

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۝١٧

और जब हम निश्चय कर लेते हैं कि किसी बस्ती को तबाह कर दें तो उसके खुशहाल लोगों को आदेश दे देते हैं (कि मनमानी करते फिरें) । फिर वे उसमें कू-कर्म करते हैं तो उस पर आदेश लागू हो जाता है । फिर हम उसको मलियामेट कर देते हैं ।17।

* यहाँ पर अरबी शब्द **ताइर** से अभिप्राय पक्षी नहीं है कि मानो प्रत्येक मनुष्य की गर्दन में एक पक्षी लटक रहा है । बल्कि इससे अभिप्राय उसके कर्मों का लेखा-जोखा है जो दिखने में लटका हुआ तो नहीं है परन्तु क़यामत के दिन उसे प्रकट कर दिया जाएगा । यह ऐसा ही मुहावरा है जैसे कहा जाता है कि गिरेबान में मुँह डाल कर देखो कि तुम कैसे हो ।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿١٨﴾

और कितने ही युगों के लोग हैं जिन्हें हमने नूह के बाद तबाह किया । और तेरा रब्ब अपने भक्तों के पापों की जानकारी रखने (और) उन पर नज़र रखने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है ।18।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٩﴾

जो सांसारिक जीवन की इच्छा रखता है उसे हम इसी जीवन में (वह) जो हम चाहें और जिसके लिए हम निश्चय करें शीघ्र प्रदान करते हैं । फिर हमने उसके लिए नरक बना रखा है । वह उसमें तिरस्कृत किया हुआ (और) धिक्कारा हुआ प्रवेश करेगा ।19।

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٠﴾

और वह जिसने परलोक की इच्छा की हो और उसके अनुरूप प्रयत्न किया हो बशर्तेकि वह मोमिन हो । तो यही वे लोग हैं जिनका प्रयत्न सत्कार योग्य होगा ।20।

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۗ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢١﴾

हर एक को हम तेरे रब्ब के वरदान से सहायता देते हैं । उनको भी और इनको भी । और तेरे रब्ब का वरदान रोका नहीं जाता ।21।

اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۗ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿٢٢﴾

देख हमने किस प्रकार उनमें से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता दी । और परलोक दर्जों की दृष्टि से भी बहुत बड़ा है और श्रेष्ठता प्रदान करने की दृष्टि से भी बहुत बड़ा है ।22।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿٢٣﴾ ع

तू अल्लाह के साथ कोई दूसरा उपास्य न बना । अन्यथा तू तिरस्कार किया हुआ (और) असहाय बैठा रह जाएगा ।23।

(रुकू $\frac{2}{2}$)

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ وَبِالۡوَالِدَيۡنِ اِحۡسَانًا ؕ اِمَّا يَبۡلُغَنَّ عِنۡدَكَ الۡكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوۡ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنۡهَرۡهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوۡلًا كَرِيۡمًا ﴿۲۴﴾

और तेरे रब्ब ने फैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की उपासना न करो और माता-पिता से उपकार पूर्वक बर्ताव करो । यदि तेरे सामने उन दोनों में से कोई एक अथवा वे दोनों ही वृद्धावस्था की आयु को पहुँचें तो उन्हें उफ़ तक न कह । और उन्हें झिड़क नहीं और उन्हें विनम्रता और सम्मान के साथ सम्बोधित कर ।24।

وَاخۡفِضۡ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحۡمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارۡحَمۡهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِىۡ صَغِيۡرًا ؕ﴿۲۵﴾

और उन दोनों के लिए दया भाव से विनम्रता के पर झुका दे । और कह कि हे मेरे रब्ब ! इन दोनों पर दया कर, जिस प्रकार इन दोनों ने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया ।25।

رَبُّكُمۡ اَعۡلَمُ بِمَا فِىۡ نُفُوۡسِكُمۡ ؕ اِنۡ تَكُوۡنُوۡا صٰلِحِيۡنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلۡاَوَّابِيۡنَ غَفُوۡرًا ﴿۲۶﴾

तुम्हारा रब्ब सबसे अधिक जानता है जो तुम्हारे दिलों में है । यदि तुम नेक हो तो अधिकता के साथ प्रायश्चित करने वालों को वह निस्सन्देह बहुत क्षमा करने वाला है ।26।

وَاٰتِ ذَا الۡقُرۡبٰى حَقَّهٗ وَالۡمِسۡكِيۡنَ وَابۡنَ السَّبِيۡلِ وَلَا تُبَذِّرۡ تَبۡذِيۡرًا ﴿۲۷﴾

और निकट संपर्कीय व्यक्ति को और निर्धन को भी और यात्री को भी उसका अधिकार प्रदान कर परन्तु फ़िज़ूल-ख़र्ची न कर ।27।

اِنَّ الۡمُبَذِّرِيۡنَ كَانُوۡۤا اِخۡوَانَ الشَّيٰطِيۡنِ ؕ وَكَانَ الشَّيۡطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوۡرًا ﴿۲۸﴾

नि:सन्देह फ़िज़ूल-ख़र्ची लोग शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब्ब का बड़ा कृतघ्न है ।28।

وَاِمَّا تُعۡرِضَنَّ عَنۡهُمُ ابۡتِغَآءَ رَحۡمَةٍ مِّنۡ رَّبِّكَ تَرۡجُوۡهَا فَقُلْ لَّهُمۡ قَوۡلًا مَّيۡسُوۡرًا ﴿۲۹﴾

और यदि तुझे उनसे मुँह फेरना ही पड़े तो अपने रब्ब की कृपा प्राप्ति के लिए, जिसकी तू आशा रखता है, उनसे नम्रता पूर्वक बात कर ।29।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿٣٠﴾

और अपनी मुट्ठी (कंजूसी के साथ) बंद करते हुए गर्दन से न लगा ले । और न ही उसे पूरे का पूरा खोल दे कि उसके परिणाम स्वरूप तू धिक्कारा हुआ (और) पश्चाताप करता हुआ बैठा रह ।30।

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿٣١﴾ ع

नि:सन्देह तेरा रब्ब जिसके लिए चाहता है जीविका को फैला होता है और संकुचित भी करता है । नि:सन्देह वह अपने भक्तों से बहुत अवगत (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।31।

(रुकू $\frac{3}{3}$)

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْـًٔا كَبِيْرًا ﴿٣٢﴾

और कंगाल होने की भय से अपनी संतान का वध न करो । हम ही हैं जो उन्हें जीविका प्रदान करते हैं और तुम्हें भी । उनको वध करना निश्चित रूप से बहुत बड़ा अपराध है ।32।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٣٣﴾

और व्यभिचार के निकट न जाओ । नि:सन्देह यह निर्लज्जता है और बहुत बुरा मार्ग है ।33।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّى الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿٣٤﴾

और उस जान को अनुचित ढंग से वध न करो जिसे अल्लाह ने प्रतिष्ठा प्रदान की हो । और जो अत्याचार सहन करता हुआ मारा जाए तो हमने उसके संरक्षक को (बदला लेने का) प्रबल अधिकार प्रदान किया है । अत: वह वध के मामले में ज़्यादती न करे । नि:सन्देह वह समर्थन-प्राप्त है ।34।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا

और उत्तम ढंग के बिना अनाथ के धन के निकट न जाओ, यहाँ तक कि वह अपनी परिपक्व आयु को पहुँच जाए और

بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝٣٥

प्रतिज्ञा को पूरा करो । निःसन्देह प्रतिज्ञा के बारे में पूछा जाएगा ।35।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝٣٦

और जब तुम मापा करो तो पूरा मापा करो । और सीधी डंडी से तौलो । यह बात अत्युत्तम और परिणाम की दृष्टि से सब से अच्छी है ।36।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝٣٧

और उस विचारधारा को न अपना जिसका तुझे ज्ञान नहीं ।* निःसन्देह कान और आँख और दिल में से प्रत्येक के बारे में पूछा जाएगा ।37।

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝٣٨

और धरती में अकड़ कर न चल । निःसन्देह तू धरती को फाड़ नहीं सकता और न डील-डौल में पर्वतों की ऊँचाई तक पहुँच सकता है ।38।

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝٣٩

ये सब ऐसी बातें हैं जिनकी बुराई तेरे रब्ब के निकट बहुत नापसंदीदा है ।39।

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝٤٠

ये उन ज्ञानपरक बातों में से है जो तेरे रब्ब ने तेरी ओर वह्इ की । और तू अल्लाह के साथ किसी और को उपास्य न बना अन्यथा तू नरक में निन्दित (और) धुतकारा हुआ फेंक दिया जाएगा ।40।

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝٤١ ع

क्या तुम्हें तो तुम्हारे रब्ब ने बेटों के लिए चुन लिया है और स्वयं फ़रिश्तों में से बेटियाँ बना बैठा ? निःसन्देह तुम बहुत बड़ी बात कर रहे हो ।41। (रुकू $\frac{4}{4}$) ع ١٠ ٤

* इस अर्थ के लिए देखिए मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤٢﴾

और नि:सन्देह हमने इस क़ुर्आन में (आयतों को) बार-बार वर्णन किया है ताकि वे उपदेश प्राप्त करें । इसके उपरान्त भी यह उन्हें घृणा करते हुए दूर भागने के सिवा किसी और चीज़ में नहीं बढ़ाता ।42।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٣﴾

तू कह दे कि यदि उसके साथ कुछ और उपास्य होते जैसा ये कहते हैं, तो वे भी अवश्य अर्श के स्वामी तक पहुँचने की राह बड़ी चाह से ढूँढते ।43।

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٤﴾

पवित्र है वह और बहुत ऊँचा है उन बातों से जो वे कहते हैं ।44।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٥﴾

सात आसमान और धरती और जो भी उनमें है उसी का गुणगान कर रहे हैं । और कोई वस्तु (ऐसी) नहीं जो प्रशंसा पूर्वक उसका गुणगान न कर रही हो । परन्तु वास्तविकता यह है कि तुम उनके गुणगान को समझते नहीं । नि:सन्देह वह बहुत सहनशील (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।45।

وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٦﴾ۙ

और जब तू क़ुर्आन का पाठ करता है तो हम तेरे और उन लोगों के बीच जो परलोक पर ईमान नहीं लाते एक गुप्त पर्दा डाल देते हैं ।46।

وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٧﴾

और हम उनके दिलों पर पर्दे डाल देते हैं कि वे उसे समझ न सकें । और उनके कानों में बहरापन (है) और जब तू क़ुर्आन में अपने अद्वितीय रब्ब का वर्णन करता है तो वे घृणा से पीठ फेरते हुए पलट जाते हैं ।47।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ
اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى
اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا
رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۴۸﴾

हम सबसे अधिक जानते हैं कि वे क्या बात सुनना चाहते हैं जब वे तेरी ओर कान धरते हैं और जब वे गुप्त परामर्शों में व्यस्त होते हैं । जब अत्याचारी लोग कहते हैं कि तुम केवल एक ऐसे व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो जिस पर जादू किया गया है ।48।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ
فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۴۹﴾

देख तेरे बारे में वे कैसे कैसे उदाहरण वर्णन करते हैं । अत: वे मार्ग से भटक गए हैं और सीधे मार्ग तक नहीं पहुँच सकते ।49।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۵۰﴾

और वे कहते हैं कि जब हम केवल हड्डियाँ बन कर रह जाएँगे और कण-कण हो जाएँगे तो क्या हम अवश्य एक नवीन सृष्टि के रूप में उठाए जाएँगे ? ।50।

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿۵۱﴾

तू कह दे (चाहे) तुम पत्थर बन जाओ अथवा लोहा ।51।

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ۭ قُلِ الَّذِيْ
فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ
اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۭ
قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿۵۲﴾

अथवा ऐसी सृष्टि जो तुम्हारी समझ में (कठोरता में) इससे भी बढ़ कर हो । तो उस पर वे अवश्य कहेंगे कि कौन (है जो) हमें लौटाएगा ? तू कह दे, वही जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था । तो वे तेरी ओर (मुख करके) अपने सिर मटकाएँगे और कहेंगे, ऐसा कब होगा ? तू कह दे, हो सकता है कि शीघ्र ऐसा हो ।52।

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ
وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۵۳﴾

जिस दिन वह तुम्हें बुलाएगा, तुम उसकी प्रशंसा करते हुए (उसके बुलावे को) स्वीकार करोगे और तुम धारणा करोगे कि तुम अल्प समय के अतिरिक्त नहीं ठहरे ।53। (रुकू $\frac{5}{5}$)

وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٤﴾

और तू मेरे भक्तों से कह दे कि ऐसी बात किया करें जो सबसे अच्छी हो । नि:सन्देह शैतान उनके बीच फ़साद डालता है । शैतान नि:सन्देह मनुष्य का खुला-खुला शत्रु है ।54।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٥﴾

तुम्हारा रब्ब तुम्हें सबसे अधिक जानता है । यदि वह चाहे तो तुम पर दया करे और यदि चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे । और हमने तुझे उन पर प्रहरी बना कर नहीं भेजा ।55।

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٦﴾

और तेरा रब्ब सबसे अधिक उसे जानता है जो आसमानों और धरती में है । और नि:सन्देह हमने नबियों में से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की । और दाऊद को हमने ज़बूर प्रदान किया ।56।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٧﴾

तू कह दे उन लोगों को पुकारो जिन्हें तुम उसके सिवा (उपास्य) समझा करते थे। अत: वे तुमसे न पीड़ा दूर करने की कोई शक्ति रखते हैं और न उसे परिवर्तित करने की ।57।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٨﴾

यही लोग जिन्हें ये पुकारते हैं वे तो स्वयं अपने रब्ब की ओर जाने का साधन ढूँढेंगे कि कौन है इनमें से जो (साधन बनने का) अधिक योग्य है । और वे उसकी दया की आशा रखेंगे और उसके अज़ाब से डरेंगे । नि:सन्देह तेरे रब्ब का अज़ाब इस लायक है कि उससे बचा जाए ।58।

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٩﴾

और कोई बस्ती नहीं जिसे हम क़यामत के दिन से पहले नष्ट करने या उसे बहुत कठोर अज़ाब देने वाले न हों । यह बात पुस्तक में लिपिबद्ध है ।59।

وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۭ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ۭ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۝٦٠

और किसी बात ने हमें नहीं रोका कि हम अपनी आयतें भेजें, सिवाए इसके कि पहले लोगों ने उनका इनकार कर दिया था । और हमने समूद को भी एक सुस्पष्ट चिह्न के रूप में ऊँटनी प्रदान की थी । तो वे उससे अत्याचार के साथ पेश आए । और हम क्रमश: सतर्क करने के लिए ही चिह्न भेजते हैं ।60।

وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ۭ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ۭ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝٦١

और (याद कर) जब हमने तुझे कहा नि:सन्देह तेरे रब्ब ने मनुष्यों को घेर लिया है । और वह स्वप्न जो हमने तुझे दिखाया और उस वृक्ष को भी जिसे क़ुर्आन में अभिशप्त घोषित किया गया है, उसे हमने लोगों के लिए केवल परीक्षा स्वरूप बनाया । और हम उन्हें क्रमश: सतर्क करते हैं । परन्तु वह उन्हें बड़ी उद्दण्डता के सिवा और किसी चीज़ में नहीं बढ़ाता ।61। (रुकू $\frac{6}{6}$)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۝٦٢

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, आदम के लिए सजद: में गिर जाओ तो उन्होंने सजद: किया सिवाए इब्लीस के। उसने कहा क्या मैं उसके लिए सजद: करूँ जिसे तूने गीली मिट्टी से पैदा किया है ? ।62।

قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ۡ لَىِٕنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٦٣

उसने कहा, मुझे बता तो सही कि क्या यह वह (चीज़) है जिसे तूने मुझ पर श्रेष्ठता प्रदान की है ? यदि तू मुझे क़यामत के दिन तक ढील दे दे तो मैं अवश्य उसकी संतान को कुछ एक के सिवा नष्ट कर दूँगा ।63।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ
جَهَنَّمَ جَزَاؤُكُمْ جَزَاءً مَّوْفُورًا ﴿٦٤﴾

उसने कहा, जा ! अतः जो भी उनमें से तेरा अनुसरण करेगा तो निःसन्देह नरक तुम सब का पूरा-पूरा बदला होगा ।64।

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ
بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ
وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ
وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿٦٥﴾

अतः अपनी आवाज़ से उनमें से जिसे चाहे बहका और उन पर अपने घुड़सवारों और पैदल सिपाहियों को चढ़ा ला । और धन-दौलत में और संतान में उनका साझीदार बन जा । और उनसे वादे कर और शैतान धोखे के सिवा उनसे कोई वादा नहीं करता ।65।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ۚ
وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿٦٦﴾

निःसन्देह (जो) मेरे भक्त (हैं) उन पर तुझे कोई प्रभुत्व प्राप्त न होगा । और तेरा रब्ब ही कार्य-साधक के रूप में पर्याप्त है ।66।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ
فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٦٧﴾

तुम्हारा रब्ब वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौकाएँ चलाता है ताकि तुम उसकी अनुकम्पाओं को ढूँढ़ो । निःसन्देह वह तुम्हारे प्रति बार-बार दया करने वाला है ।67।

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ
تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ
أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ﴿٦٨﴾

और जब तुम्हें समुद्र में कोई कष्ट पहुँचता है तो उसके सिवा हर वह सत्ता जिसे तुम पुकारते हो साथ छोड़ जाती है। फिर जब वह तुम्हें स्थल-भाग की ओर बचा कर ले जाता है तो तुम (उससे) मुँह मोड़ लेते हो । और मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है ।68।

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ
يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا

अतः क्या तुम इस बात से सुरक्षित हो कि वह तुम्हें स्थल-भाग के किनारे पर ले जाकर धंसा दे या तुम पर तेज़ आँधी

لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٩﴾

चलाए । फिर तुम अपने लिए कोई कार्य-साधक न पाओ ।69।

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ
فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيحِ
فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوا
لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٧٠﴾

अथवा क्या तुम सुरक्षित हो कि वह तुम्हें इसी में दोबारा लौटा दे और फिर तुम पर अत्यन्त तीव्र हवा चलाए और तुम्हें तुम्हारी कृतघ्नताओं के कारण डुबो दे । फिर तुम हमारे विरुद्ध अपने लिए उसका कोई बदला लेने वाला न पाओ ।70।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ
عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ﴿٧١﴾ ع

और नि:सन्देह हमने आदम की संतान को सम्मान दिया । और उन्हें स्थल-भाग और जल भाग में सवारी प्रदान की और उन्हें पवित्र चीज़ों में से जीविका प्रदान की । और जो हमने पैदा कीं उनमें से अधिकतर वस्तुओं पर उन्हें खूब श्रेष्ठता प्रदान की ।71। (रुकू $\frac{7}{7}$)

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۖ فَمَنْ
أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ
كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٢﴾

वह दिन (याद करो) जब हम प्रत्येक जाति को उसके अगुआ के मार्फत बुलाएँगे । अत: जिस को उस के कर्मों का लेखा-जोखा दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो यही वे लोग होंगे जो अपने कर्मों का लेखा-जोखा पढ़ेंगे । और उन पर एक सूत के बराबर भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।72।

وَمَنْ كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ
أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٧٣﴾

और जो इसी संसार में अंधा हो वह परलोक में भी अंधा होगा और रास्ते से सर्वाधिक भटका हुआ होगा ।73।*

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي

और सम्भव था कि वे तुझे उसके विषय में जो हमने तेरी ओर वह्इ की

* यहाँ **आ'मा** (अंधा) से अभिप्राय यह नहीं कि भौतिक आँख से जो अंधा हो वह क़यामत के दिन भी अंधा ही होगा । बल्कि भौतिक आँखों वाले जो ज्ञान से वंचित हैं वे क़यामत के दिन भी ज्ञान से वंचित होंगे ।

اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٤﴾

है परीक्षा में डाल देते ताकि तू हमारे विरुद्ध उसके सिवा कुछ और गढ़ लेता। तब वे अवश्य तुझे अविलम्ब मित्र बना लेते ।74।

وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۖ ﴿٧٥﴾

और यदि हमने तुझे दृढ़ता प्रदान न की होती तो हो सकता था कि तू उनकी ओर कुछ न कुछ झुक जाता ।75।

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٦﴾

फिर हम अवश्य तुझे जीवन का भी दोहरा अज़ाब और मौत का भी दोहरा अज़ाब चखाते । तब तू हमारे विरुद्ध अपने लिए कोई सहायक न पाता ।76।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٧﴾

और उनसे असम्भव नहीं था कि वे देश से तेरे पाँव उखाड़ देते ताकि तुझे उससे बाहर निकाल दें । ऐसी अवस्था में वे भी तेरे बाद अधिक देर न रह सकते ।77।

سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٨﴾ ع

यह विधान हमारे उन रसूलों के सम्बन्ध में था जिन्हें हमने तुझ से पहले भेजा । और तू हमारे विधान में कोई परिवर्तन नहीं पाएगा ।78। (रुकू $\frac{8}{8}$)

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۗ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٩﴾

सूर्य के ढलने से आरम्भ हो कर रात के छा जाने तक नमाज़ को क़ायम कर । और प्रातः कालीन क़ुरआन पाठ को महत्त्व दे। निःसन्देह प्रातःकाल में क़ुर्आन पाठ करना ऐसा (कर्म) है, जिसकी गवाही दी जाती है ।79।

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٨٠﴾

और रात के एक भाग में भी इस (क़ुर्आन) के साथ तहज्जुद (की नमाज़ पढ़ा कर) । यह तेरे लिए अतिरिक्त (उपासना) स्वरूप होगा । सम्भव है कि तेरा रब्ब तुझे प्रशंसित पद पर आसीन कर दे ।80।

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝٨١

और तू कह, हे मेरे रब्ब ! मुझे इस प्रकार प्रविष्ट कर कि मेरा प्रवेश करना सत्य के साथ हो और मुझे इस प्रकार निकाल कि मेरा निकलना सत्य के साथ हो और अपनी ओर से मेरे लिए शक्तिशाली सहायक प्रदान कर ।81।

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝٨٢

और कह दे, सत्य आ गया और मिथ्या भाग गया । नि:सन्देह मिथ्या भाग जाने वाला ही है ।82।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝٨٣

और हम क़ुर्आन में से उसे उतारते हैं जो आरोग्य प्रदानकारी और मोमिनों के लिए कृपा है । और वह अत्याचारियों को घाटे के सिवा किसी और चीज़ में नहीं बढ़ाता ।83।

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ۝٨٤

और जब हम मनुष्य को पुरस्कृत करते हैं तो वह विमुख हो जाता है और अपना पहलू बचाते हुए परे हट जाता है । और जब उसे कोई अनिष्ट पहुँचे तो अत्यन्त निराश हो जाता है ।84।

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝٨٥ ع

तू कह दे कि प्रत्येक अपनी प्रकृति के अनुरूप कर्म करता है । अतः तुम्हारा रब्ब उसे सबसे अधिक जानने वाला है जो सबसे अधिक सन्मार्ग पर है ।85।

(रुकू $\frac{9}{9}$)

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّىْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٨٦

और वे तुझ से रूह के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं । तू कह दे कि रूह मेरे रब्ब के आदेश से है । और तुम्हें अल्प ज्ञान के अतिरिक्त कुछ नहीं दिया गया ।86।

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِىْٓ اَوْحَيْنَآ

और यदि हम चाहते तो नि:सन्देह उसे वापस ले जाते जो हमने तेरी ओर वह्इ

اِلَيۡكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيۡنَا وَكِيۡلًا ۟ۙ﴿۸۷﴾

किया है । फिर तू अपने लिए हमारे विरुद्ध इस पर कोई कार्य-साधक न पाता ।87।

اِلَّا رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضۡلَهٗ كَانَ عَلَيۡكَ كَبِيۡرًا ﴿۸۸﴾

परन्तु केवल अपने रब्ब की दया के द्वारा (तू बचाया गया) । नि:सन्देह तुझ पर उसकी कृपा बहुत बड़ी है ।88।

قُلۡ لَّئِنِ اجۡتَمَعَتِ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلٰٓى اَنۡ يَّاۡتُوۡا بِمِثۡلِ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لَا يَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِهٖ وَلَوۡ كَانَ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ ظَهِيۡرًا ﴿۸۹﴾

तू कह दे कि यदि जिन्न और मनुष्य सभी इकट्ठे हो जाएँ कि इस क़ुर्आन के अनुरूप (ग्रंथ) ले आएँ तो वे इस के अनुरूप नहीं ला सकेंगे चाहे उनमें से कुछ, कुछ के सहायक हों ।89।

وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا لِلنَّاسِ فِىۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ ۚ فَاَبٰٓى اَكۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۹۰﴾

और नि:सन्देह हम ने इस क़ुर्आन में लोगों के लिए प्रत्येक प्रकार के उदाहरण ख़ूब फेर-फेर कर वर्णन किए हैं । अत: अधिकतर मनुष्यों ने केवल कृतघ्नता करते हुए अस्वीकार कर दिया ।90।

وَقَالُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفۡجُرَ لَنَا مِنَ الۡاَرۡضِ يَنۡۢبُوۡعًا ۟ۙ﴿۹۱﴾

और वे कहते हैं कि हम कदापि तुझ पर ईमान नहीं लाएँगे यहाँ तक कि तू हमारे लिए धरती से कोई स्रोत निकाल लाए ।91।

اَوۡ تَكُوۡنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الۡاَنۡهٰرَ خِلٰلَهَا تَفۡجِيۡرًا ۟ۙ﴿۹۲﴾

या तेरे लिए खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो, फिर तू उसके बीचों-बीच ख़ूब नहरें खोद डाले ।92।

اَوۡ تُسۡقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمۡتَ عَلَيۡنَا كِسَفًا اَوۡ تَاۡتِىَ بِاللّٰهِ وَالۡمَلٰٓئِكَةِ قَبِيۡلًا ۟ۙ﴿۹۳﴾

या जैसा कि तू धारणा करता है हम पर आसमान को टुकड़ों के रूप में गिरा दे या अल्लाह और फ़रिश्तों को सामने ले आए ।93।

اَوۡ يَكُوۡنَ لَكَ بَيۡتٌ مِّنۡ زُخۡرُفٍ اَوۡ تَرۡقٰى فِى السَّمَآءِ ؕ وَلَنۡ نُّؤۡمِنَ لِرُقِيِّكَ

या तेरे लिए सोने का कोई घर हो या तू आसमान में चढ़ जाए । परन्तु हम तेरे चढ़ने पर भी कदापि ईमान नहीं लाएँगे

حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾

यहाँ तक कि तू हम पर ऐसी पुस्तक उतारे जिसे हम पढ़ सकें । तू कह दे कि मेरा रब्ब (इन बातों से) पवित्र है । (और) मैं तो एक मनुष्य, रसूल के अतिरिक्त कुछ नहीं ।94। (रुकू $\frac{10}{10}$)

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾

और लोगों को, जब उनके पास हिदायत आई, इसके अतिरिक्त किसी चीज़ ने ईमान लाने से नहीं रोका कि उन्होंने कहा, क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है ? ।95।

قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٦﴾

तू कह दे कि यदि धरती में निश्चिन्त होकर चलने फिरने वाले फ़रिश्ते होते तो अवश्य हम उन पर आसमान से फ़रिश्ते ही रसूल के रूप में उतारते ।96।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

तू कह दे कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के रूप में पर्याप्त है । निःसन्देह वह अपने भक्तों से सदा अवगत (और उन पर) गहन दृष्टि रखने वाला है ।97।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٨﴾

और जिसे अल्लाह हिदायत दे तो वही हिदायत पाने वाला है और जिसे वह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो ऐसों के लिए तू उसके मुक़ाबिले पर कोई साथी न पाएगा और क़यामत के दिन हम उन्हें अंधे, गूँगे और बहरे (बनाकर) उनके मुँह के बल औंधे इकट्ठा करेंगे । उनका ठिकाना नरक होगा । जब कभी वह (उन पर) धीमा पड़ने लगेगा हम उन्हें जलन में बढ़ा देंगे ।98।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٩﴾

यह उनका प्रतिफल है । क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया और कहा, जब हम हड्डियाँ हो जाएँगे और कण-कण बन जाएँगे तो क्या फिर भी हम अवश्य एक नई सृष्टि के रूप में उठाए जाएँगे ? ।99।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿١٠٠﴾

क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया, इस बात पर समर्थ है कि उन जैसा और पैदा कर दे । और उसने उनके लिए एक ऐसी अवधि निर्धारित कर दी है जिस में कोई सन्देह नहीं । अत: अत्याचारियों ने केवल कृतघ्नता पूर्वक अस्वीकार कर दिया ।100।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠١﴾ ع

तू कह दे कि यदि तुम मेरे रब्ब की कृपा के भण्डारों के स्वामी होते तब भी तुम उनके ख़र्च हो जाने के डर से उन्हें रोक रखते । और नि:सन्देह मनुष्य बड़ा कंजूस बना है ।101। (रुकू $\frac{11}{11}$)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠٢﴾

और नि:सन्देह हमने मूसा को नौ सुस्पष्ट चिह्न प्रदान किए थे । अत: बनी इस्राईल से पूछ (कर देख ले) कि जब वह उनके पास आया तो फ़िर्औन ने उसे कहा कि हे मूसा ! मैं तो तुझे केवल जादू का वशीभूत समझता हूँ ।102।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٣﴾

उसने कहा, तू जान चूका है कि ये चिह्न जो ज्ञानवर्धक हैं आसमानों और धरती के रब्ब के सिवा किसी ने नहीं उतारे । और हे फ़िरऔन ! मैं निश्चित रूप से तुझे विनाशप्राप्त समझता हूँ ।103।

فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ۙ﴿۱۰۴﴾

अत: उसने इरादा किया कि उन्हें धरती से उखाड़ डाले तो हमने उसे और जो उसके साथ थे सब के सब को डुबो दिया ।104।

وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ؕ﴿۱۰۵﴾

और इसके बाद हमने बनी-इस्राईल से कहा कि प्रतिश्रुत धरती में निवास करो। फिर जब अंतिम वादा आएगा तो हम तुम्हें फिर इकट्ठा करके ले आएँगे ।105।

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۱۰۶﴾

और हमने सत्य के साथ इसे उतारा है और सच्ची आवश्यकता के साथ यह उतरा है । और हमने तुझे केवल एक शुभ-समाचार देने वाले और एक सावधान करने वाले के रूप में ही भेजा है ।106।

وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿۱۰۷﴾

और क़ुरआन वह है कि उसे हमने टुकड़ों में विभाजित किया है ताकि तू उसे लोगों के समक्ष ठहर-ठहर कर पढ़े । और हमने इसे बड़ी शक्ति के साथ और क्रमश: उतारा है ।107।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ﴿۱۰۸﴾

तू कह दे कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा न लाओ । नि:सन्देह वे लोग जिन्हें इससे पूर्व ज्ञान प्रदान किया गया था जब उन पर इसका पाठ किया जाता था, तो वे ठुड्डियों के बल सजद: करते हुए गिर जाते थे ।108।

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۹﴾

और वे कहते थे हमारा रब्ब पवित्र है। नि:सन्देह हमारे रब्ब का वादा तो हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला है ।109।

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۩ ١١٠

वे ठुड्डियों के बल रोते हुए गिर जाते थे और ये उन्हें विनम्रता में बढ़ा देता था ।110।

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۭ اَيًّامَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ١١١

तू कह दे कि चाहे अल्लाह को पुकारो चाहे रहमान को । जिस नाम से भी तुम पुकारो सब अच्छे नाम उसी के है । और अपनी नमाज़ न बहुत ऊँची आवाज़ में पढ़ और न उसे बहुत धीमा कर और इनके बीच का रास्ता अपना ।111।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ١١٢ ع

और कह कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिस ने कभी कोई पुत्र नहीं अपनाया । और जिसके शासन में कभी कोई साझीदार नहीं बना और कभी उसे ऐसे साथी की आवश्यकता नहीं पड़ी जो (मानो) दुर्बलता की अवस्था में उसका सहायक बनता । और तू बड़े ज़ोर से उसकी बड़ाई वर्णन किया कर ।112।

(रुकू $\frac{12}{12}$)

18- सूरः अल-कहफ़

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 111 आयतें हैं । इसके अवतरण का समय नबुव्वत का चौथा या पाँचवाँ वर्ष है ।

सूरः अल्-कहफ़ का आरम्भ सूरः बनी इस्राईल के उसी विषय से हुआ है जिसमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मनुष्य होना विस्तारपूर्वक और ख़ूब ज़ोर देकर प्रस्तुत किया गया है । और बहुत ही सरल शब्दों में यह घोषणा की गई कि उन्हें (अर्थात् ईसाइयों को) ज्ञान ही कोई नहीं कि हज़रत ईसा अलै. कैसे पैदा हुए । और न यह ज्ञान है कि अल्लाह तआला प्रजनन प्रक्रिया से पूर्णतया पवित्र है । वे अल्लाह पर बहुत ही बड़ा झूठ बोलते हैं । उनके दावे का कोई महत्व नहीं ।

इसके बाद आरंभिक युगीन ईसाइयों का वर्णन किया गया कि किस प्रकार वे एकेश्वरवाद की सुरक्षा के लिए जनपदों को छोड़ कर गुफा-कंदराओं में चले गए । गुफा निवासियों के उल्लेख से पूर्व इन आरम्भिक आयतों में यह कहा गया था कि संसार की जो भौतिक सुख सुविधायें मानव जाति को प्रदान की गई हैं वह उनकी परीक्षा के लिए हैं। परन्तु एक ऐसा युग आने वाला है कि ये नेमतें उनसे छीन ली जाएँगी और उन लोगों को प्रदान कर दी जाएँगी जिन्होंने अल्लाह के लिए सांसारिक सुख सुविधाओं के बदले गुफाओं में जीवन व्यतीत करने को प्राथमिकता दी ।

इसके बाद दो ऐसे स्वर्गों अर्थात् बाग़ों का उदाहरण दिया गया है जिनके कारण एक व्यक्ति दूसरे पर अहंकार करता है कि मुझे तो यह सब कुछ मिला हुआ है और मेरे मुक़ाबले पर तुम ख़ाली हाथ हो । परन्तु साथ ही यह चेतावनी भी दी गई कि जब अल्लाह तआला की नाराज़गी की आग तुम्हारी संपन्नता पर भड़केगी तो तुम्हें मलियामेट कर देगी ।

इसी सूरः में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनके साथ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की यात्रा का वर्णन मिलता है जिसमें उन्हें अपनी उम्मत की अन्तिम सीमायें दिखा दी गईं । और उस स्थान को चिह्नित कर दिया गया जहाँ आध्यात्मिक आहार रूपी मछली वापस समुद्र में चली गई । और यह इस्लाम से पूर्व ईसाइयत के उस काल की ओर संकेत है जब वह आध्यात्मिकता खो चुकी थी ।

इसके बाद उदाहरण स्वरूप हज़रत मुहम्मद सल्ल. को उस महात्मा के रूप में चित्रित किया गया है जिसे जन-साधारण हज़रत ख़िज़्र कहते हैं । और बताया गया कि जो तत्त्वज्ञान उनको प्रदान किए जायेंगे वह मूसा अलैहिस्सलाम की पहुँच से परे हैं और उसकी गहराई को पाने के लिए जिस धैर्य की आवश्यकता है वह हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम को प्राप्त नहीं था । हज़रत मुहम्मद सल्ल. को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर यह श्रेष्ठता भी प्राप्त है कि आप सल्ल. ईश्वरीय तत्त्वज्ञान के मर्मज्ञ बनाए गए ।

इसके बाद ज़ुल क़र्नैन का वर्णन आया है जो फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की ओर संकेत कर रहा है कि आपको दो युगों पर प्रभुत्व दिया जाएगा । एक प्रारम्भिक युगीनों का और एक अंत्ययुगीनों का । इसमें ज़ुल क़र्नैन की यात्राओं का जो वृत्तान्त वर्णन किया गया है अपने अन्दर बहुत से संकेत रखता है । जिसका विस्तवारपूर्वक यहाँ उल्लेख नहीं किया जा सकता । परन्तु एक बात निश्चित है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. की उम्मत का विस्तार पश्चिमी जगत तक भी होगा जहाँ पश्चिम वासियों के झूठे विचारों के दूषित जल में सूर्य अस्त होता दिखाई देता है । और पूर्व में विस्तार उस भू-भाग तक होगा जिससे परे सूर्य और धरती के बीच कोई आड़ नहीं ।

इस सूर: के अन्त में निश्चित रूप से प्रमाणित हो जाता है कि इसमें ईसाइयत के उत्थान और पतन का वर्णन किया गया है । उत्थान आरम्भिक एकेश्वरवादियों के कारण हुआ था और पतन उस समय हुआ जबकि एकेश्वरवाद का सिद्धान्त बिगड़ते बिगड़ते सैंकड़ों बल्कि हज़ारों संतों को ईश्वर मानने तक जा पहुँचा । अत: व्यवहारिक रूप से आज काल्पनिक Saints (सन्तों) को जो ईश्वरत्व का पद दिया जा रहा है, उस का इस सूर: के अन्त पर यूँ वर्णन है कि **अ फ़ हसिबल्लज़ी न क़फ़रू ऐंयत्तखिज़ू इबादी मिन् दूनी औलिया** अर्थात वे लोग जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. का इनकार कर रहे हैं क्या वे समझते हैं कि अल्लाह के भक्तों को उसके सिवा **औलिया** (मित्र) बना लेंगे ।

हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इस बात का स्पष्ट ज्ञान दिया गया था कि इस सूर: का सम्बन्ध **दज्जाल** से है । अत: आपने यह उपदेश किया कि जो व्यक्ति इस सूर: की पहली दस आयतों और अंतिम दस आयतों का पाठ किया करेगा वह दज्जाल के षड्यन्त्र से सुरक्षित रहेगा । इसके उपरान्त हज़रत मुहम्मद सल्ल. से यह घोषणा करवाई गई कि मैं मनुष्य तो हूँ परन्तु प्रत्येक प्रकार के शिर्क से पवित्र । अत: यदि तुम भी चाहते हो कि अल्लाह तआला का साक्षातकार तुम्हें प्राप्त हो तो अपने आप को प्रत्येक प्रकार के शिर्क से पवित्र कर लो । यहाँ वह्इ के जारी रहने की भविष्यवाणी भी की गई है । अल्लाह के भक्त जो अपने आपको शिर्क से पवित्र रखेंगे, अल्लाह तआला उनसे भी वार्तालाप करेगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ اثْنَاعَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۜ ②

समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने अपने भक्त पर पुस्तक उतारी और इसमें कोई कुटिलता नहीं रखी ।2।

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ ③

दृढ़ता पूर्वक स्थित और स्थिर रखने वाला, ताकि वह उसकी ओर से कठोर अज़ाब से सतर्क करे और मोमिनों को जो पुण्यकर्म करते हैं शुभ-समाचार दे कि उन के लिए बहुत अच्छा प्रतिफल (निश्चित) है ।3।

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ ④

वे उसमें सदैव रहने वाले हैं ।4।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ ⑤

और वह उन लोगों को सतर्क करे जिन्होंने कहा, अल्लाह ने पुत्र बना लिया है ।5।

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ⑥

उनको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं, न ही उनके पूर्वजों को था । बहुत बड़ी बात है जो उनके मुँह से निकलती है । वे झूठ के सिवा कुछ नहीं कहते ।6।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ⑦

अत: यदि वे इस बात पर ईमान न लायें तो क्या तू गहरे शोक के कारण उनके पीछे अपनी जान को नष्ट कर देगा ।7।

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا

नि:सन्देह हमने जो कुछ धरती पर है उसके लिए शोभा स्वरूप बनाया है

لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ⑧

ताकि हम उनकी परीक्षा लें कि उनमें से कौन सर्वोत्तम कर्म करने वाला है ।8।

وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ⑨

और निःसन्देह हम जो कुछ इस पर है उसे शुष्क बंजर मिट्टी बना देंगे ।9।

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ⑩

क्या तू विचार करता है कि गुफाओं वाले और अभिलेखों वाले हमारे चिह्नों में से एक अद्‌भुत चिह्न थे ? ।10।*

اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ⑪

जब कुछ युवकों ने एक गुफा में शरण ली तो उन्होंने कहा, हे हमारे रब्ब ! हमें अपने निकट से कृपा प्रदान कर और हमारे मामले में हमारा मार्ग दर्शन कर ।11।

فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۙ⑫

अतः हमने गुफा के अन्दर उनके कानों को कुछ वर्षों तक (बाहर के हालात से) विच्छिन्न रखा ।12।**

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ⑬ ع

फिर हमने उन्हें उठाया ताकि हम जान लें कि दोनों गिरोहों में से कौन अधिक सही गणना करता है कि वे कितना समय (इसमें) रहे ।13। (रुकू $\frac{1}{13}$)

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّهُمْ

हम तेरे सामने उनका समाचार सच्चाई के साथ वर्णन करते हैं । निःसन्देह वे कुछ युवक थे जो अपने रब्ब पर ईमान ले

---

* **अस्हाबुर्रक़ीम** का अर्थ है अभिलेखों वाले । इन लोगों ने अपनी गुफा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख छोड़े थे जिन पर वर्तमान युग के युरोप वासियों ने बहुत खोज की है । यह आयत भी एक विशेषता रखती है । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गुफा वालों का तो ज्ञान हुआ होगा परन्तु, उनको अभिलेख वाले कहना यह बात सर्वज्ञ अल्लाह के अतिरिक्त कोई आप को बता नहीं सकता था।

** यहाँ **सिनीन** (कुछ वर्ष) शब्द से अभिप्राय नौ वर्षों की अवधि है । क्योंकि यह **सनतुन** शब्द का बहुवचन है जो तीन से नौ तक के अंक के लिए प्रयुक्त होता है । यद्यपि एकेश्ववादी ईसाइयों का गुफाओं में जाकर अपने ईमान को बचाने की पूरी अवधि तीन सौ वर्षों से कुछ अधिक है । परन्तु वस्तुतः वे एक समय में लगातार नौ वर्षों से अधिक गुफाओं में नहीं रहे । क्योंकि इस तीन सौ वर्षों की अवधि में जब विरोध कम हो जाता था तो वे गुफाओं से बाहर आ जाते थे ।

فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿١٤﴾

आए और हमने उन्हें हिदायत में अग्रसर किया ।14।

وَّ رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاْ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿١٥﴾

और जब वे खड़े हुए, हमने उनके दिलों को दृढ़ता प्रदान की । फिर उन्होंने कहा कि हमारा रब्ब तो आसमानों और धरती का रब्ब है । हम कदापि उसके सिवा किसी को उपास्य (के रूप में) नहीं पुकारेंगे । यदि ऐसा हुआ तो नि:सन्देह हम संगत बात कहने वाले होंगे ।15।

هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٦﴾

यह हैं हमारी जाति (के लोग), जिन्होंने उस (अल्लाह) के सिवा उपास्य बना रखे हैं । वे क्यों उनके पक्ष में कोई प्रभावशाली उज्ज्वल प्रमाण नहीं लाते ? अत: उससे बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े ।16।

وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٧﴾

अत: जबकि तुमने उन्हें और उनको जिनकी वे अल्लाह के सिवा उपासना करते हैं, त्याग दिया है, तो गुफा की ओर शरण लेने के लिए चले जाओ । तुम्हारा रब्ब तुम्हारे लिए अपनी कृपा को फैलाएगा और तुम्हारा काम तुम्हारे लिए आसान कर देगा ।17।

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ

और तू सूर्य को देखता है कि जब वह चढ़ता है तो उनकी गुफा से दायीं ओर हट जाता है । और जब वह डूबता है तो उनसे रास्ता कतराता हुआ बाईं ओर से गुज़रता है । और वे उसके बीच में एक खुले स्थान में हैं । यह अल्लाह के चिह्नों में से है । जिसे अल्लाह हिदायत दे तो वही हिदायत पाने वाला है । और जिसे

فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ
وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۸﴾ ع ۲ ۱۴

वह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके पक्ष में तू कोई हिदायत देने वाला मित्र नहीं पाएगा ।18। (रुकू $\frac{2}{14}$)

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّ هُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ
وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ
وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ
لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا
وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۹﴾

और तू उन्हें जागा हुआ विचार करता है जबकि वे सोये हुए हैं । और हम उन्हें दाएँ और बाएँ अदलते-बदलते रहते हैं । और उनका कुत्ता चौखट पर अपनी अगली दोनों टाँगे फैलाए हुए है । यदि तू उन्हें झांक कर देखे तो अवश्य पीठ फेर कर उनसे भाग जाए और उनके रोब में आ जाए ।19।*

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ
قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا
يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ
اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ
اَيُّهَاۤ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ
وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿۲۰﴾

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان التاء بعد الياء من النصف الاول واللام الثانية من النصف الآخر

और इसी प्रकार हमने उन्हें (बेख़बरी से) जगाया ताकि वे परस्पर एक दूसरे से प्रश्न करें । उनमें से एक कहने वाले ने प्रश्न किया, तुम कितनी देर रहे ? तो उन्होंने कहा, हम तो केवल एक दिन या उसका कुछ भाग रहे हैं । उन्होंने कहा, तुम्हारा रब्ब ही भलीभाँति जानता है कि तुम कितना समय रहे हो । अत: अपने में से किसी को यह अपना सिक्का दे कर शहर की ओर भेजो । फिर वह देखे कि सबसे अच्छा भोजन कौन सा है, तो फिर उसमें से वह तुम्हारे पास कुछ भोजन ले आए । और बहाना बनाते हुए उनके भेद मालूम करे और तुम्हारे बारे में कदापि किसी को जानकारी न दे ।20।

* **तू उन्हें जागा हुआ समझता है जबकि वे सोये हुए हैं** इसका अभिप्राय व्याख्याकारों के निकट भौतिक नींद है, जो कि सही नहीं है । ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि वे (गुफा वाले) बाहर के हालात से अपरिचित थे । मानो यह अवधि उनके लिए नींद स्वरूप थी । यदि भौतिक रूप से सोया हुआ अभिप्राय होता तो यह उल्लेख न होता कि तू उनको देखे तो उनसे भयभीत हो जाए और तेरा दिल रोब में आ जाए । सोये हुए मनुष्य को देख कर कोई न तो रोब में आता है और न भयभीत→

إِنَّهُمْ إِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَن تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٢١﴾

नि:सन्देह वे ऐसे लोग हैं कि यदि तुम पर विजयी हो गए तो तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें अपने धर्म में वापस ले जाएँगे और परिणामस्वरूप तुम कभी सफलता नहीं पा सकोगे ।21।

وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ﴿٢٢﴾

और इसी प्रकार हमने उनके हालात की जानकारी दी ताकि वे लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क्रांति की घड़ी वह है जिसमें कोई शंका नहीं । जब वे आपस में तर्क-वितर्क कर रहे थे तो उनमें से कुछ ने कहा कि इन पर कोई स्मारक भवन का निर्माण करो । उनका रब्ब उनके बारे में सबसे अधिक ज्ञान रखता है । उन लोगों ने जो अपने निर्णय में विजयी हो गये, कहा कि हम तो अवश्य इन पर एक मस्जिद का निर्माण करेंगे ।22।

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا

अवश्य वे कहेंगे कि वे तीन थे और चौथा उनका कुत्ता था और वे बिना देखे अनुमान लगा कर कहेंगे कि वे पाँच थे और छठा उनका कुत्ता था । और कहेंगे कि वे सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता था । तू कह दे मेरा रब्ब ही उनकी संख्या को भली भाँति जानता है और (उसके सिवा) कोई एक भी उन्हें नहीं जानता।* अत: तू उनके बारे में सरसरी बातचीत के सिवा वाद-विवाद न कर । और उनसे

←होता है । वास्तव में वे बड़े पराक्रमी लोग थे और जब भी रोम निवासियों ने गुफाओं में प्रवेश कर उन्हें पकड़ने की चेष्टा की तो गुफा के द्वार में एक कुत्ते को उनकी सुरक्षा करता हुआ पाया । उसके भौंकने से गुफावालों को समझ आ जाती थी कि आक्रमण हुआ है । और वे अपनी प्रतिरक्षा के लिए और छिपने के लिए पहले ही से तैयार हो जाते थे ।

* **इल्ला क़लीलुन** (उसके सिवा कोई एक) अर्थ के लिए देखें, शब्दकोश 'अक़रब-उल-मवारिद' ।

تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٣﴾ ع

सम्बन्धित उनमें से किसी से भी कोई बात न पूछ ।23।* (रुकू $\frac{3}{15}$)

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٤﴾

और कदापि किसी बात के बारे में यह न कहा कर कि मैं कल इसे अवश्य करूँगा ।24।

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۫ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٥﴾

सिवाए इसके कि अल्लाह चाहे । और जब तू भूल जाए तो अपने रब्ब को याद किया कर । और कह दे कि असम्भव नहीं कि मेरा रब्ब इससे अधिक सटीक बात की ओर मेरा मार्गदर्शन कर दे ।25।

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٦﴾

और वे अपनी गुफा में तीन सौ साल के बीच गिनती के कुछ वर्ष रहे और इस पर उन्होंने और नौ की बढ़ोत्तरी की ।26।

قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۫ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٧﴾

तू कह दे कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे कितना समय रहे । आसमानों और धरती का अदृश्य (ज्ञान) उसी को है । क्या ही ख़ूब देखने वाला और क्या ही ख़ूब सुनने वाला है । उसके सिवा उनका कोई मित्र नहीं और वह अपनी सत्ता में किसी को साझीदार नहीं बनाता ।27।

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ

और तेरे रब्ब की पुस्तक में से जो तेरी ओर वह्इ किया जाता है, उसका पाठ कर । उसके वाक्यों को कोई परिवर्तित

---

* **असहाबे कहफ़** (गुफा निवासियों) की संख्या के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के वर्णन मिलते हैं परन्तु हर जगह स्पष्ट संख्या के साथ उनके कुत्ते का भी उल्लेख है । ईसाई लोग जो कुत्ते से प्रेम करते हैं उनको अभी तक यह ज्ञान नहीं कि वे कुत्ते से क्यों प्रेम करते हैं । बाइबिल में तो ऐसा कोई वर्णन नहीं मिलता । पवित्र क़ुर्आन से पता चलता है कि एक बहुत लम्बे समय तक सच्चे ईसाई अपनी सुरक्षा के लिए कुत्ते का उपयोग करते रहे । इस कारण उनका अपने वफ़ादार मित्र से प्रेम उत्पन्न होना एक स्वाभाविक बात है ।

जहाँ तक उनकी संख्या का सम्बन्ध है, इसके बारे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया कि असहाबे-कहफ़ के बारे में विस्तृत जानकारी किसी को नहीं दी गई । इस कारण उनसे इस विषय में सरसरी बात किया कर, विस्तृत वाद-विवाद में न पड़ा कर ।

مُلْتَحَدًا ﴿٢٨﴾

नहीं कर सकता । और तू उसके सिवा कोई आश्रयस्थल नहीं पाएगा ।28।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٩﴾

और तू उन लोगों के साथ स्वयं भी धैर्य धारण कर जो सुबह भी और शाम को भी अपने रब्ब को उसकी प्रसन्नता चाहते हुए पुकारते हैं । और तेरी निगाहें इस कारण उनसे आगे न बढ़ें कि तू संसारिक जीवन की शोभा चाहता हो । और उसका अनुसरण न कर जिसके हृदय को हमने अपनी स्मरण से भुला रखा है । और वह अपनी लालसा के पीछे लग गया है और उसका मामला सीमा से बढ़ा हुआ है ।29।

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۗ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۗ بِئْسَ الشَّرَابُ ۗ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣٠﴾

और कह दे कि सत्य वही है जो तुम्हारे रब्ब की ओर से हो । अतः जो चाहे वह ईमान ले आए और जो चाहे सो इनकार कर दे । निःसन्देह हमने अत्याचारियों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी दीवारें उन्हें घेरे में ले लेंगी । और यदि वे पानी माँगेंगे तो उन्हें ऐसा पानी दिया जाएगा जो पिघले हुए ताँबे की भाँति होगा जो उनके चेहरों को झुलसा देगा । बहुत ही बुरा पेय है और बहुत ही बुरा विश्राम-स्थल है ।30।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ۚ ﴿٣١﴾

निःसन्देह वे लोग जो ईमान ले आए और नेक कर्म किए (सुन लें कि) हम कदापि उसका प्रतिफल नष्ट नहीं करते जिसने कर्म को अच्छा बनाया हो ।31।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ

यही हैं वे जिनके लिए स्थायी बाग़ हैं। उनके (पैरों के) नीचे नहरें बहती हैं । उन्हें वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएँगे

مِنْ ذَهَبٍ وَّ يَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣٢﴾

ع ٩/١٦

और वे बारीक रेशम और मोटे रेशम के हरे कपड़े पहनेंगे। उनमें वे तख़्तों पर टेक लगाए होंगे । बहुत ही उत्तम प्रतिफल और बहुत ही अच्छा विश्रामस्थल है ।32। (रुकू $\frac{4}{16}$)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّ حَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّ جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ؕ﴿٣٣﴾

और उनके सामने दो व्यक्तियों का उदाहरण वर्णन कर जिनमें से एक के लिए हमने अंगूरों के दो बाग़ बनाए थे और उन दोनों (बाग़ों) को खजूरों से घेर रखा था और उन दोनों के बीच खेत बनाए थे ।33।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّ فَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۙ﴿٣٤﴾

वे दोनों बाग़ अपना फल देते थे और उसमें कोई कमी नहीं करते थे और उनके बीच हमने एक नहर जारी की थी ।34।

وَّ كَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّ اَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٥﴾

और उसके बहुत फल (वाले बाग़) थे । अतः उसने अपने साथी से जब कि वह उससे वार्तालाप कर रहा था, कहा कि मैं तुझ से धन में अधिक और जत्थे में अधिक शक्तिशाली हूँ ।35।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۙ﴿٣٦﴾

और वह अपने बाग़ में इस अवस्था में प्रविष्ट हुआ कि वह अपनी जान पर अत्याचार करने वाला था । उसने कहा, मैं तो यह सोच भी नहीं सकता कि यह कभी नष्ट हो जाएगा ।36।

وَّ مَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآىِٕمَةً ۙ وَّ لَىِٕنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٧﴾

और मैं विश्वास नहीं करता कि क़यामत आयेगी । और यदि मैं अपने रब्ब की ओर लौटाया भी गया तो अवश्य इससे उत्तम लौटने का स्थान प्राप्त करूँगा ।37।

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ

उससे उसके साथी ने, जबकि वह उससे वार्तालाप कर रहा था कहा, क्या तू उस

اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿۳۸﴾

सत्ता का इनकार करता है जिसने तुझे मिट्टी से पैदा किया फिर वीर्य से बनाया फिर तुझे एक चलने फिरने वाले मनुष्य के रूप में पूर्णता प्रदान की ? ।38।

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّىْۤ اَحَدًا ﴿۳۹﴾

परन्तु (मैं कहता हूँ)* मेरा रब्ब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब्ब के साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराऊँगा ।39।

وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّ وَلَدًا ﴿۴۰﴾

और जब तू ने अपने बाग़ में प्रवेश किया तो क्यों तूने **माशा–अल्लाह**** न कहा और यह (न कहा) कि अल्लाह के सिवा किसी को कोई शक्ति प्राप्त नहीं । यदि तू मुझे धन और संतान के आधार पर अपने से न्यूनतम समझ रहा है ।40।

فَعَسٰى رَبِّىْۤ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿۴۱﴾

तो असम्भव नहीं कि मेरा रब्ब मुझे तेरे से उत्तम बाग़ प्रदान कर दे और इस (तेरे बाग़) पर आसमान से पकड़ के रूप में कोई अज़ाब उतारे । फिर वह चटियल बंजर धरती में परिवर्तित हो जाए ।41।

اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿۴۲﴾

अथवा उसका पानी बहुत नीचे उतर जाए । फिर तू कदापि सामर्थ्य नहीं रखेगा कि उसे (वापस) खींच लाए ।42।

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَاۤ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُشْرِكْ

और उसके फल को (आपदाओं के द्वारा) घेर लिया गया । और वह उस पूंजी पर अपने दोनों हाथ मलता रह गया जो उसने उस में लगायी थी । जबकि वह (बाग़) अपने सहारों समेत धरती में गिर चुका था । और वह कहने लगा,

* यह अर्थ तफ़्सीर रूह-उल-मआनी से लिया गया है ।

** अर्थात् जो अल्लाह चाहेगा वही होगा

بِرَبِّيٓ اَحَدًا ﴿٤٣﴾	हाय ! मैं किसी को अपने रब्ब का साझीदार न ठहराता ।43।
وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٤﴾	और उसके लिए कोई जत्था न था जो अल्लाह के विरुद्ध उसकी सहायता कर सकता और वह किसी प्रकार का प्रतिशोध न ले सका ।44।
هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٥﴾ ع	उस समय अधिकार पूर्णतया अल्लाह ही का था जो सत्य है । वह प्रतिफल देने में भी अच्छा और सुखद परिणाम तक पहुँचाने में भी अच्छा है ।45।
	(रुकू $\frac{5}{17}$)
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٦﴾	और उनके सामने सांसारिक जीवन का उदाहरण वर्णन कर जो ऐसे पानी की भाँति है जिसे हमने आकाश से उतारा फिर उसके साथ धरती की हरियाली मिल गई । फिर वह चूरा-चूरा हो गया जिसे हवाएँ उड़ाए लिए फिरती हैं । और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर पूर्णतया सामर्थ्य रखने वाला है ।46।
اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٧﴾	धन और संतान सांसारिक जीवन की शोभा हैं । और शेष रहने वाली नेकियाँ तेरे रब्ब के निकट पुण्यफल स्वरूप उत्तम और उमंग की दृष्टि से अत्युत्तम हैं ।47।
وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٨﴾	और जिस दिन हम पहाड़ों को हिलाएँगे और तू धरती को देखेगा कि वह अपना अन्दरूना प्रकट कर देगी और हम (इस आपदा में) इन सब को इकट्ठा करेंगे और इनमें से किसी एक को भी नहीं छोड़ेंगे ।48।
وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا	और वह तेरे रब्ब के समक्ष पंक्तिबद्ध हो कर उपस्थित किए जाएँगे । (वह उनसे

كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٩﴾

कहेगा) निःसन्देह तुम हमारे समक्ष उपस्थित हो गए हो जिस प्रकार हमने पहली बार तुम्हें पैदा किया था । परन्तु तुम विचार कर बैठे थे कि हम कदापि तुम्हारे लिए कोई प्रतिश्रुत दिवस निर्धारित नहीं करेंगे ।49।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰهَا وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٥٠﴾ ع

और पुस्तक प्रस्तुत की जाएगी, तो अपराधियों को तू देखेगा कि जो कुछ इसमें है वे उससे डर रहे होंगे और कहेंगे! हम पर खेद है ! इस पुस्तक को क्या हुआ है कि न यह कोई छोटी बात छोड़ती है और न कोई बड़ी बात । परन्तु इसने इन सब को समाहित कर लिया है। और वे जो कुछ करते रहे हैं, उसे मौजूद पाएँगे और तेरा रब्ब किसी पर अत्याचार नहीं करेगा ।50।

(रुकू $\frac{6}{18}$)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥١﴾

और जब हमने फ़रिश्तों को कहा कि आदम के लिए सजदः करो तो इब्लीस के सिवा सबने सजदः किया । वह जिन्नों में से था । अतः उसने अपने रब्ब के आदेश की अवमानना की । तो क्या तुम उसे और उसके चेलों को मेरे सिवा मित्र बनाओगे जबकि वे तुम्हारे शत्रु हैं ? अत्याचारियों के लिए यह तो बहुत ही बुरा विकल्प है ।51।

مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥٢﴾

मैंने इन्हें आसमानों और धरती की उत्पत्ति पर साक्षी नहीं बनाया और न ही उनकी अपनी उत्पत्ति पर । और न ही मैं ऐसा हूँ कि पथभ्रष्ट करने वालों को सहायक बनाऊँ ।52।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٣﴾

और जिस दिन वह कहेगा कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुम मेरा साझीदार समझते थे तो वे उन्हें पुकारेंगे । परन्तु वे उन्हें उत्तर न देंगे । और हम उनके बीच एक विनाश की दीवार खड़ी कर देंगे ।53।

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٤﴾ ع ٧/١٩

और अपराधी आग को देखेंगे तो समझ जाएँगे कि वे उसमें पड़ने वाले हैं । और वे उससे निकल भागने की कोई राह नहीं पाएँगे ।54। (रुकू $\frac{7}{19}$)

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٥﴾

और हमने ख़ूब फेर फेर कर लोगों के लिए इस क़ुर्आन में प्रत्येक प्रकार के उदाहरण वर्णन किए हैं । जबकि मनुष्य सब से अधिक झगड़ालू है ।55।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٦﴾

और किसी चीज़ ने लोगों को नहीं रोका कि जब हिदायत उनके पास आ जाए तो ईमान ले आएँ और अपने रब्ब से क्षमायाचना करें । सिवाए इसके कि (वे चाहते थे) उन पर पहलों के इतिहास की पुनरावृत्ति की जाए अथवा फिर उनकी ओर तीव्रता से बढ़ने वाला अज़ाब उन्हें आ पकड़े ।56।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٧﴾

और हम पैग़म्बरों को केवल शुभ-समाचार देने वाले और सतर्क करने वाले के रूप में ही भेजते हैं । और जिन लोगों ने अस्वीकार किया वे मिथ्या का सहारा लेकर झगड़ते हैं ताकि इसके द्वारा सत्य को झुठला दें । और उन्होंने मेरे चिह्नों को और उन बातों को जिनसे वे सतर्क किए गये उपहास का पात्र बना लिया ।57।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ

और उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जिसे उसके रब्ब की आयतें याद दिलाई

فَاَعۡرَضَ عَنۡهَا وَنَسِیَ مَا قَدَّمَتۡ یَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلۡنَا عَلٰی قُلُوۡبِهِمۡ اَکِنَّةً اَنۡ یَّفۡقَهُوۡهُ وَفِیۡۤ اٰذَانِهِمۡ وَقۡرًا ؕ وَاِنۡ تَدۡعُهُمۡ اِلَی الۡهُدٰی فَلَنۡ یَّهۡتَدُوۡۤا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۸﴾

गईं फिर भी वह उनसे विमुख हो गया। और जो उसके दोनों हाथों ने आगे भेजा है उसे भूल गया। निःसन्देह हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे समझ न सकें। और उनके कानों में बहरापन रख दिया है। और यदि तू उन्हें हिदायत की ओर बुलाए भी तो (वे) कदापि हिदायत नहीं पाएँगे।58।

وَرَبُّکَ الۡغَفُوۡرُ ذُو الرَّحۡمَةِ ؕ لَوۡ یُؤَاخِذُهُمۡ بِمَا کَسَبُوۡا لَعَجَّلَ لَهُمُ الۡعَذَابَ ؕ بَلۡ لَّهُمۡ مَّوۡعِدٌ لَّنۡ یَّجِدُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖ مَوۡئِلًا ﴿۵۹﴾

और तेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला और बड़ा दयालु है। जो वे कमाई करते हैं यदि वह उस पर उनकी पकड़-धकड़ करे तो उन पर तुरन्त अज़ाब ले आये। परन्तु उनके लिए एक समय निश्चित है जिससे बच निकलने की वे कोई राह नहीं पाएँगे।59।

وَتِلۡکَ الۡقُرٰۤی اَهۡلَکۡنٰهُمۡ لَمَّا ظَلَمُوۡا وَجَعَلۡنَا لِمَهۡلِکِهِمۡ مَّوۡعِدًا ﴿۶۰﴾ ع

और ये वे बस्तियाँ हैं जिन्होंने जब भी अत्याचार किया तो हमने उन्हें नष्ट कर दिया। और हमने उनके विनाश के लिए एक समय निश्चित कर रखा है।60।

(रुकू $\frac{8}{20}$)

وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰی لِفَتٰىهُ لَاۤ اَبۡرَحُ حَتّٰۤی اَبۡلُغَ مَجۡمَعَ الۡبَحۡرَیۡنِ اَوۡ اَمۡضِیَ حُقُبًا ﴿۶۱﴾

और जब मूसा ने अपने युवा साथी से कहा, जब तक दो समुद्रों के संगम स्थल तक न पहुँच जाऊँ, मैं नहीं रुकुँगा। चाहे मुझे शताब्दियों तक चलना पड़े।61।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجۡمَعَ بَیۡنِهِمَا نَسِیَا حُوۡتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِیۡلَهٗ فِی الۡبَحۡرِ سَرَبًا ﴿۶۲﴾

अतः जब वे दोनों उन समुद्रों के संगम तक पहुँचे तो वे अपनी मछली भूल गए। और उसने चुपके से समुद्र के अन्दर अपनी राह ले ली।62।*

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۫

अतः जब वे दोनों आगे निकल गए तो उसने अपने युवा साथी से कहा, हमें

* आयत सं. 61-62 :- इन आयतों में हज़रत मूसा के एक कश्फ़ की ओर संकेत है जिसमें उनके→

لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٣﴾

हमारा भोजन ला दे। अपनी इस यात्रा से अवश्य हमें बहुत थकान हो गई है।63।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۫ وَمَاۤ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٤﴾

उसने कहा, क्या तुझे पता चला कि जब हमने चट्टान पर शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया ? और यह बात याद रखने से मुझे शैतान के सिवा किसी ने न भुलाया। अतः उसने समुद्र में विचित्र ढंग से अपनी राह ले ली।64।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٥﴾

उसने कहा, यही तो हम चाहते थे। अतः वे दोनों अपने पदचिह्नों का खोज लगाते हुए लौट गए।65।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٦﴾

अतः वहाँ उन्होंने हमारे भक्तों में से एक महान भक्त को पाया जिसे हमने अपनी ओर से बड़ी कृपा प्रदान की थी और उसे अपनी ओर से ज्ञान प्रदान किया था।66।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٧﴾

मूसा ने उससे कहा, क्या मैं इस उद्देश्य से तेरा अनुसरण कर सकता हूँ कि मुझे भी उस हिदायत में से कुछ सिखा दे जो तुझे सिखलाई गई है ?।67।

قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٨﴾

उसने कहा, निश्चित रूप से तू कदापि मेरे साथ धैर्य का सामर्थ्य नहीं रख सकेगा।68।

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٩﴾

और तू कैसे उस पर धैर्य कर सकेगा जिसको तू अनुभव के द्वारा जान न सका।69।

←अनुयायियों में प्रकट होने वाले ईसा अलै. को उनके साथ यात्रा करते हुए दिखाया गया। **हूत** (मछली) से अभिप्राय आध्यात्मिक शिक्षा है जो आध्यात्मिक भोजन का कारण बनती है। **मज्मउल बह्रैन** (दो समुद्रों के संगम) से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत और मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का संगम है। अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वालों के समेत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत हज़रत मुहम्मद सल्ल. के युग तक चलेगी। परन्तु इससे बहुत पहले ईसाइयत बिगड़ चुकी होगी। मछली के हाथ से निकल जाने से यही अभिप्राय है।

قَالَ سَتَجِدُنِیۡۤ اِنۡ شَآءَ اللّٰہُ صَابِرًا وَّلَاۤ اَعۡصِیۡ لَکَ اَمۡرًا ﴿۷۰﴾

उसने कहा, यदि अल्लाह ने चाहा तो मुझे तू धैर्य धारण करने वाला पाएगा । और मैं किसी बात में तेरी अवज्ञा नहीं करूँगा ।70।

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعۡتَنِیۡ فَلَا تَسۡـَٔلۡنِیۡ عَنۡ شَیۡءٍ حَتّٰۤی اُحۡدِثَ لَکَ مِنۡہُ ذِکۡرًا ﴿۷۱﴾ ع ۹/۲۱

उसने कहा, फिर यदि तू मेरे पीछे चले तो मुझ से किसी चीज़ के बारे में प्रश्न नहीं करना जब न तक कि मैं स्वयं तुझ से उसकी कोई चर्चा न छेड़ूँ ।71।

(रुकू $\frac{9}{21}$)

فَانۡطَلَقَا ٝ حَتّٰۤی اِذَا رَکِبَا فِی السَّفِیۡنَۃِ خَرَقَہَا ؕ قَالَ اَخَرَقۡتَہَا لِتُغۡرِقَ اَہۡلَہَا ۚ لَقَدۡ جِئۡتَ شَیۡـًٔا اِمۡرًا ﴿۷۲﴾

अतः उन दोनों ने प्रस्थान किया । यहाँ तक कि वे ऐसी नौका में सवार हुए जिसे (इसके पश्चात्) उस (अल्लाह के भक्त) ने तोड़-फोड़ दिया । उस (मूसा) ने कहा, क्या तूने इस लिए इसे तोड़-फोड़ दिया है कि तू इसकी सवारियों को डूबो दे ? निस्सन्देह तूने एक बहुत बुरा काम किया है ।72।

قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ اِنَّکَ لَنۡ تَسۡتَطِیۡعَ مَعِیَ صَبۡرًا ﴿۷۳﴾

उसने कहा, क्या मैंने कहा नहीं था कि तू कदापि मेरे साथ धैर्य का सामर्थ्य नहीं रख सकेगा ।73।

قَالَ لَا تُؤَاخِذۡنِیۡ بِمَا نَسِیۡتُ وَلَا تُرۡہِقۡنِیۡ مِنۡ اَمۡرِیۡ عُسۡرًا ﴿۷۴﴾

उस (मूसा) ने कहा, जो मैं भूल गया उसके लिए मेरी पकड़ न कर । और मेरे बारे में सख़्ती करते हुए मुझे कठिनाई में न डाल ।74।

فَانۡطَلَقَا ٝ حَتّٰۤی اِذَا لَقِیَا غُلٰمًا فَقَتَلَہٗ ۙ قَالَ اَقَتَلۡتَ نَفۡسًا زَکِیَّۃًۢ بِغَیۡرِ نَفۡسٍ ؕ لَقَدۡ جِئۡتَ شَیۡـًٔا نُّکۡرًا ﴿۷۵﴾

वे दोनों फिर आगे निकले, यहाँ तक कि जब वे एक लड़के से मिले तो उस (ईश-भक्त) ने उस का वध कर दिया । उस (मूसा) ने कहा, क्या तूने एक अबोध जान का वध कर दिया है, जिसने किसी की जान नहीं ली ? निःसन्देह तूने एक अत्यन्त घृणित कर्म किया है ।75।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝٧٦

उसने कहा, क्या तुझे मैंने नहीं कहा था कि तू कदापि मेरे साथ धैर्य का सामर्थ्य नहीं रख सकेगा ।76।

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۭ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ۝٧٧

उस (मूसा) ने कहा, यदि इसके बाद मैं तुझ से कोई प्रश्न करूँ तो फिर मुझे अपने साथ न रखना । मेरी ओर से तू अवश्य प्रत्येक प्रकार का औचित्य प्राप्त कर चुका है ।77।

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهْلَ قَرْيَةِ اِۨسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ۝٧٨

वे दोनों फिर आगे बढ़े । यहाँ तक कि जब वे एक बस्ती वालों के पास पहुँचे तो उन से उन्होंने भोजन माँगा । इस पर उन्होंने इनकार कर दिया कि (वे) उनका आतिथ्य करें । वहाँ उन्होंने एक दीवार देखी जो गिरने ही वाली थी । तो उस (ईश-भक्त) ने उसे ठीक कर दिया। उस (मूसा) ने कहा, यदि तू चाहता तो अवश्य इस काम पर मज़दूरी ले सकता था ।78।

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝٧٩

उसने कहा, यह मेरे और तुम्हारे बीच जुदाई (का समय) है । अब मैं तुझे इसकी वास्तविकता बताता हूँ जिस पर तू धैर्य नहीं धर सका ।79।

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ۝٨٠

जहाँ तक नौका का सम्बन्ध है तो वह कुछ निर्धनों की सम्पत्ति थी जो समुद्र में मेहनत मज़दूरी करते थे । अत: मैंने चाहा कि उसमें खोट डाल दूँ क्योंकि उनके पीछे-पीछे एक राजा (आ रहा) था जो प्रत्येक नौका को हड़प लेता था ।80।

وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَاۤ

और जहाँ तक लड़के का सम्बन्ध है तो उसके माता-पिता दोनों मोमिन थे ।

اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨١﴾

इसलिए हम डरे कि कहीं वह (लड़का) उद्दंडता और कृतघ्नता करते हुए उन पर असहनीय बोझ न डाल दे ।81।

فَاَرَدْنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨٢﴾

अतः हमने चाहा कि उनका रब्ब उन्हें पवित्रता में इससे उत्तम और अधिक दया करने वाला (पुत्र) बदले में प्रदान करे ।82।

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٣﴾ ع

और जहाँ तक दीवार का सम्बन्ध है तो वह शहर में रहने वाले दो अनाथ लड़कों की थी । और उसके नीचे उनके लिए ख़ज़ाना था और उनका बाप एक सदाचारी व्यक्ति था । अतः तेरे रब्ब ने इरादा किया कि वे दोनों अपनी परिपक्व आयु को पहुँच जाएँ और अपना ख़ज़ाना निकालें । यह तेरे रब्ब की ओर से कृपा स्वरूप था । और मैंने ऐसा अपनी इच्छा से नहीं किया । यह उन बातों का भेद था जिन पर तुझे धैर्य का सामर्थ्य न था ।83।

(रुकू $\frac{10}{1}$)

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٤﴾

और वे तुझ से ज़ुल् क़र्नैन के बारे में प्रश्न करते हैं । कह दे कि मैं अवश्य उसका कुछ विवरण तुम्हारे समक्ष पढूँगा ।84।

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

हमने निःसन्देह उसे धरती में दृढ़ता प्रदान की थी । और उसे प्रत्येक प्रकार के काम के साधन प्रदान किए थे ।85।

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٦﴾

फिर वह एक मार्ग पर चल पड़ा ।86।

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا

यहाँ तक कि जब वह सूर्य के अस्त होने के स्थान तक पहुँचा, उसने उसे एक बदबूदार कीचड़ के स्रोत में अस्त होते देखा । और उसके पास ही एक जाति को

قَوْمًا ۬ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿۸۷﴾

पाया । हमने कहा, हे ज़ुल् क़र्नैन चाहे तो अज़ाब दे और चाहे तो इनके मामले में उत्तम व्यवहार प्रदर्शन कर ।87।*

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿۸۸﴾

उसने कहा, जिसने भी अत्याचार किया हम उसे अवश्य अज़ाब देंगे । फिर वह अपने रब्ब की ओर लौटाया जाएगा तो वह उसे (और भी) अधिक कठोर अज़ाब देगा ।88।

وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿۸۹﴾

और वह जो ईमान लाया और उसने नेक कर्म किए तो उसके लिए प्रतिफल स्वरूप भलाई ही भलाई होगी । और हम उसके लिए अपने आदेश से आसानी का निर्णय करेंगे ।89।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۹۰﴾

फिर वह एक और मार्ग पर चल पड़ा।90।

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿۹۱﴾

यहाँ तक कि वह जब सूर्य के उदय होने के स्थान पर पहुँचा तो उसने उसे ऐसे लोगों पर उदय होते पाया जिनके लिए हमने उस (अर्थात् सूर्य) के इस ओर कोई आड़ नहीं बनाई थी ।91।

كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿۹۲﴾

इसी प्रकार हुआ । हम ने उसके प्रत्येक अनुभव का पूर्ण ज्ञान रखा हुआ था ।92।

* आयत संख्या :- 84 से 87 **ज़ुल् क़र्नैन** से वास्तविक अभिप्राय तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जिन्होंने प्रथमत: हज़रत मूसा अलै. और उनकी उम्मत के युग को पाया । और द्वितीयत: आने वाले युग में आपकी उम्मत की पुनरुत्थान के लिए अल्लाह आपके किसी सेवक और आज्ञाकारी को नियुक्त करेगा । इस प्रकार यह दोनों युग हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साथ संबद्ध होते हैं । परन्तु इस बात को जिस आलंकारिक भाषा में वर्णन किया गया है वह एक ऐतिहासिक घटना है जिससे संभवत: सम्राट ख़ोरस (Cyrus) अभिप्राय है । जिसके बारे में बाइबिल में भी वर्णन है । वह असाधारण आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न व्यक्ति था और एकेश्वरवादी था । उसके पूर्व और पश्चिम की यात्राओं का विवरण इन पवित्र आयतों में मिलता है । और दीवार बनाने का जो वर्णन है, वह एक नहीं बल्कि कई दीवारें हैं जो प्राचीन काल से आक्रमणकारियों को रोकने और ऐसी जातियों को बचाने के लिए बनाई गईं जो स्वयं प्रतिरक्षा करने का सामर्थ्य नहीं रखती थीं । उनमें से एक दीवार तो रूस में है और एक चीन की दीवार भी है । अर्थात् दीवारों के द्वारा सुरक्षा करना उस युग की परम्परा थी ।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٣﴾

फिर वह एक और मार्ग पर चल पड़ा।93।

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٤﴾

यहाँ तक कि जब वह दो दीवारों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के इस ओर उसने एक और जाति को पाया जिनके लिए बात समझना कठिन था ।94।

قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٥﴾

उन्होंने कहा हे ज़ुल् क़र्नैन ! नि:सन्देह या'जूज और मा'जूज धरती में उपद्रव करने वाले हैं । अत: क्या हम तेरे लिए इस पर कोई कर निर्धारित कर दें कि तू उनके और हमारे बीच कोई रोक बना दे ।95।

قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۙ ﴿٩٦﴾

उसने कहा, मेरे रब्ब ने मुझे जो शक्ति प्रदान की है वह उत्तम है । अत: तुम केवल श्रम-शक्ति के द्वारा मेरी सहायता करो । मैं तुम्हारे और उनके बीच एक बड़ी रोक बना दूँगा ।96।

اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْۤ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ؕ ﴿٩٧﴾

मुझे लोहे के टुकड़े ला दो । यहाँ तक कि जब उसने दोनों पहाड़ों के बीच की जगह को (भर कर) बराबर कर दिया तो उसने कहा, अब आग धोंको । यहाँ तक कि जब उसने उसे आग बना दिया, उसने कहा कि मुझे ताँबा दो ताकि मैं उस पर डालूँ ।97।*

---

* आयत सं. 94 से 97 :- इन आयतों में जिस दीवार का वर्णन चल रहा है वह तुर्की और रूस के बीच 'दरबंद' की दीवार है जिसके द्वारा कैसपियन सागर और काकेशिया पर्वत के बीच के रास्ते को बन्द कर दिया गया था, जिसे कुछ कमज़ोर जातियों को पश्चिमी जातियों के आक्रमण से बचाने के लिए सम्राट ख़ोरस ने निर्माण करवाया था । ख़ोरस ने इसके बदले उनसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगा, बल्कि परिश्रम, लोहा और ताँबा माँगा था और निर्माण कार्य भी ख़ोरस के निर्देशानुसार उन्होंने ही किया ।

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿۹۸﴾

अतः उसे लांघने की उनमें शक्ति न थी और न उसमें सेंध लगाने का वे सामर्थ्य रखते थे ।98।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿۹۹﴾ؕ

उसने कहा, यह मेरे रब्ब की कृपा है । अतः जब मेरे रब्ब के वादे (का समय) आएगा तो वह इसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा और निःसन्देह मेरे रब्ब का वादा सच्चा है ।99।*

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿۱۰۰﴾ۙ

और उस दिन हम उनमें से कुछ को कुछ पर लहर दर लहर चढ़ाई करने देंगे । और बिगुल फूँका जाएगा और हम उन सब को इकट्ठा कर देंगे।100।

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ﴿۱۰۱﴾ۙ

फिर हम उस दिन नरक को काफ़िरों के सामने ला खड़ा करेंगे ।101।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿۱۰۲﴾ ع

जिनकी आँखें मेरे स्मरण से पर्दे में थीं और वे सुनने का भी सामर्थ्य नहीं रखते थे ।102। (रुकू $\frac{11}{2}$)

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ؕ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿۱۰۳﴾

अतः क्या वे लोग जिन्होंने इनकार किया, धारणा रखते हैं कि वे मेरे बदले मेरे भक्तों को अपना मित्र बना लेंगे ? निःसन्देह हमने काफ़िरों के लिए नरक को आतिथ्य स्वरूप तैयार कर रखा है ।103।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿۱۰۴﴾ؕ

कह दे कि क्या हम तुम्हें उन की सूचना दें जो कर्मों की दृष्टि से सबसे अधिक हानि उठाने वाले हैं ।104।

---

* वह युग जिसमें या'जूज मा'जूज संसार में प्रकट होंगे उस युग में ये दीवारें महत्त्वहीन हो चुकी होंगी । या'जूज मा'जूज का पूरी दुनिया पर विजय प्राप्ति का उल्लेख इस प्रकार मिलता है जिस प्रकार समुद्री लहरें बड़ी उफान के साथ आगे बढ़ती हैं । अतः उनकी विजय वास्तव में समुद्र पर विजय प्राप्ति के परिणाम स्वरूप आरम्भ होनी थी ।

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٥﴾

जिनके समस्त प्रयास सांसारिक जीवन की चाहत में गुम हो गए । और वे विचार करते हैं कि वे उद्योग (क्षेत्र) में कुशलता दिखा रहे हैं ।105।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٦﴾

यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब्ब की आयतों और उसके मिलन से इनकार कर दिया । अत: उनके कर्म नष्ट हो गए । और क़यामत के दिन हम उन लोगों को कोई महत्व नहीं देंगे ।106।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٧﴾

यह नरक है उनका प्रतिफल । इस लिए कि उन्होंने इनकार किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को उपहास का पात्र बना बैठे ।107।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٨﴾

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किये, उनके लिए आतिथ्य स्वरूप फ़िर्दौस के स्वर्ग हैं ।108।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٩﴾

वे सदा उनमें रहने वाले हैं । कभी उनसे अलग होना नहीं चाहेंगे ।109।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١١٠﴾

कह दे कि यदि समुद्र मेरे रब्ब के कलिमों (वाक्यों) के लिए स्याही बन जाएँ तो इससे पूर्व कि मेरे रब्ब के कलिमे समाप्त हों समुद्र अवश्य समाप्त हो जाएँगे । चाहे हम सहायता स्वरूप उस जैसे और (समुद्र) ले आएँ ।110।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١١﴾ ع

कह दे कि मैं तो केवल तुम्हारे सदृश एक मनुष्य हूँ । मेरी ओर वह्इ की जाती है कि तुम्हारा उपास्य बस एक ही उपास्य है । अत: जो कोई अपने रब्ब का मिलन चाहता है वह (भी) नेक कर्म करे और अपने रब्ब की उपासना में किसी को साझीदार न ठहराए ।111। (रुकू $\frac{12}{3}$)

19– सूरः मरियम

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 99 आयतें हैं । इसका अवतरणकाल हब्शा (इथिओपिया) प्रवास से पूर्व नुबुव्वत का चौथा अथवा पाँचवां वर्ष है ।

इस सूरः में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बिन बाप जन्म लेने का उल्लेख है और बताया गया है कि उनका इस प्रकार का जन्मलाभ एक चमत्कार स्वरूप था, जिसको दुनिया उस समय समझ नहीं सकती थी । इस प्रसंग में यह बताना आवश्यक है कि आजकल स्वयं ईसाई अनुसंधानकारियों ने इस विषय को स्पष्ट रूप से प्रमाणित कर दिया है कि पुरुष से संबंध स्थापित किये बिना भी एक कुवाँरी लड़की के गर्भ से बच्चा जन्म ले सकता है । पहले यह धारणा थी कि केवल लड़की पैदा हो सकती है, परन्तु बाद के अनुसंधान से प्रमाणित हुआ है कि लड़का भी पैदा हो सकता है ।

साधारणतः माँ बाप के मिलन से ही बच्चा जन्म लेता है परन्तु जहाँ तक चमत्कारिक जन्म का सम्बन्ध है, कई बार स्त्री पुरुष की ऐसी आयु में सन्तान उत्पत्ति होती है जबकि सामान्य रूप से सन्तान का होना असम्भव हो । यही अवस्था हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की थी । उन को संतान की चाहत थी परन्तु वे स्वंय इतने वृद्ध हो चुके थे कि वृद्धावस्था के कारण सिर भड़क उठा था और उनकी पत्नी न केवल वृद्धा हो चुकी थीं, बल्कि बाँझ भी थीं । अतएव चमत्कारिक जन्म का एक दृष्टान्त यह भी है कि इन दोनों दोष के बावजूद उन्हें पुत्र स्वरूप हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम प्राप्त हुए । उनमें पुत्र प्राप्ति की इच्छा, हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के हालात पर ध्यान देने के कारण उत्पन्न हुई थी जिन से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बिन बाप जन्मलाभ का चमत्कार प्रकट होना था ।

इसके पश्चात् उन विवरणों का उल्लेख है जिनमें हज़रत मरियम अलैहस्सलाम फिलिस्तीन को छोड़कर पूर्वदिशा में किसी ओर चली गईं थीं । और वहाँ दिन रात अल्लाह के स्मरण में लगी रहती थीं । और वहीं पहली बार मनुष्य रूप में प्रकट हुए एक फ़रिश्ता के द्वारा पुत्र प्राप्ति का शुभ समाचार मिला ।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को उनके जन्म के बाद जब हज़रत मरियम अलैहस्सलाम साथ लेकर फिलिस्तीन पहुँचीं तो यहूदियों ने खुब शोर मचाया कि यह तो अवैध सन्तान है । इस पर अल्लाह तआला ने हज़रत मरियम अलैहस्लसाम को आदेश दिया कि तुम अल्लाह के लिए मौन व्रत धारण करो । और यह पुत्र (जो उस समय पालने में ही था अर्थात् दो तीन वर्ष की आयु का था) स्वयं उत्तर देगा । हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यहूदी विद्वानों के समक्ष ज्ञान की वह बातें कीं जो एक कलंकित बालक सोच भी नहीं सकता । इन बातों में भविष्य में उनके नबी बनने की भविष्यवाणी भी

शामिल थी । और हज़रत ईसा अलै. ने यह भी भविष्यवाणी की कि मुझे वध करने के तुम्हारे षडयंत्र से अल्लाह तआला बचाएगा । अतएव कहा **वस्सलामु अलैय्य यौ म बुलिद्तु व यौ म अमूतु व यौ म उब्असु हय्यन्** अर्थात् जब मैं पैदा किया गया उस समय मुझे अल्लाह की ओर से सलामती प्राप्त थी । और जब मैं मृत्यु को प्राप्त करूँगा तो सामान्य रूप से ही मृत्यु प्राप्त करूँगा । और फिर जब मुझे पुनर्जिवित किया जाएगा उस समय भी मुझ पर अल्लाह तआला की सलामती होगी ।

इस से बहुत मिलती जुलती आयत हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम के बारे में भी आती है, जिसमें कहा **सलामुन् अलैहि यौ म वुलि द व यौ म यमूतु व यौ म युब्असु हय्यन्** अर्थात् जब उसका जन्म हुआ उस पर सलामती थी और जब वह मृत्यु को प्राप्त करेगा तो उस पर सलामती होगी । और जब उसको पुनर्जिवित किया जाएगा तब भी उस पर सलामती होगी। इस आयत से मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम भी वध नहीं किये गये थे । इसके पश्चात् हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वृत्तांत वर्णन करते हुए उनकी चमत्कारिक संतान का उल्लेख किया गया । जबकि वृद्धावस्था में उन को हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम भी प्रदान किये गये । इसी प्रकार उनके बाद उनकी संतान से हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम जन्म हुए ।

इसके बाद अन्य नबियों का उल्लेख मिलता है जिसमें आध्यात्मिक संतान की विभिन्न अवस्थाएँ वर्णन की गई हैं । और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के उत्थान का उदाहरण हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम के उत्थान के समान प्रस्तुत किया गया है । ये सभी अल्लाह तआला के वे सच्चे भक्त थे जिनकी भावी सन्तान सदाचारी न रह सकी और उन्होंने अपनी नमाज़ों को नष्ट कर दिया और तामसिक इच्छाओं का अनुसरण किया । इसलिए उनके लिए चेतावनी है कि वे अपनी कुटिलता का बदला अवश्य पायेंगे।

इस सूर: में अल्लाह के गुणवाचक नाम **रहमान** का अधिकता से वर्णन है । रहमान का अर्थ अनंत कृपा करने वाला और बिन माँगे प्रदान करने वाला है । इस सूर: का विषयवस्तु अल्लाह के इस गुण के साथ यथारूप समानता रखता है ।

इस सूर: के अन्त पर रहमान अल्लाह की ओर पुत्र आरोपित करने को एक बहुत बड़ा पाप घोषित किया गया है । इस के फलस्वरूप सम्भव है कि धरती और आकाश फट जायें । तात्पर्य यह है कि यही लोग अत्यन्त भयानक युद्धों में धकेल दिये जाएँगे जो ऐसी भयानक होंगे कि मानो आकाश उन पर फट पड़ा है ।

इसके विपरीत इस सूर: की अन्तिम आयत में उन लोगों का वर्णन है जो अल्लाह से डरते हैं और नेक कर्म करते हैं । उनके दिलों में रहमान अल्लाह पूर्व वर्णित पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष के बदले पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर देगा ।

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَّ تِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّ سِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿٢﴾

अन त काफ़िन व हादिन या आलिमु या सादिकु : हे सर्वज्ञ, हे सत्यवादी ! तू पर्याप्त है और हिदायत देने वाला है ।2।

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٣﴾

यह वर्णन तेरे रब्ब की दया का है (जो उसने) अपने भक्त ज़करिया पर की ।3।

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٤﴾

जब उसने अपने रब्ब को निम्न स्वर में पुकारा ।4।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٥﴾

कहा, हे मेरे रब्ब ! नि:सन्देह मेरी हड्डियाँ कमज़ोर पड़ गई हैं और सिर बुढ़ापे के कारण भड़क उठा है । फिर भी मेरे रब्ब ! मैं तुझ से दुआ माँगते हुए कभी अभागा नहीं हुआ ।5।

وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿٦﴾

और मैं अपने पीछे अपने भागीदारों से डरता हूँ जबकि मेरी पत्नी भी बाँझ है । अत: मुझे स्वयं अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर ।6।

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٧﴾

जो मेरा उत्तराधिकार प्राप्त करे और याकूब की संतान का भी उत्तराधिकार प्राप्त करे । और हे मेरे रब्ब ! उसे बड़ा चहेता बना ।7।

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿٨﴾

हे ज़करिया ! नि:सन्देह हम तुझे एक महान पुत्र का शुभ-समाचार देते हैं जिसका नाम यह्या होगा । हमने उसका पहले कोई हमनाम नहीं बनाया ।8।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٩

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरा पुत्र कैसे होगा जबकि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे की चरम सीमा को पहुँच गया हूँ ? ।9।

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْــًٔا ۝١٠

उसने कहा, इसी प्रकार तेरे रब्ब ने कहा है कि यह मेरे लिए सरल है । और नि:सन्देह मैं तुझे भी तो पहले पैदा कर चुका हूँ जबकि तू कुछ चीज़ न था ।10।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١١

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरे लिए कोई चिह्न निर्धारण कर । उसने कहा, तेरा चिह्न यह है कि तू लोगों से निरन्तर तीन रातों तक बात न करे ।11।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝١٢

अत: वह मेहराब (उपासना कक्ष) से अपनी जाति के समक्ष प्रकट हुआ और उन्हें संकेत से बताया कि सवेरे और शाम (अल्लाह की) स्तुति करो ।12।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٣ۙ

हे यह्या ! पुस्तक को दृढ़तापूर्वक पकड़ ले और हमने उसे बचपन ही से तत्त्वज्ञान प्रदान किया था ।13।

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۝١٤ۙ

और अपनी ओर से सहृदयता और पवित्रता प्रदान की थी और वह सयंमी था ।14।

وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝١٥

और अपने माता-पिता से सद्-व्यवहार करने वाला था और कदाचित कठोर हृदयी (और) अवज्ञाकारी नहीं था ।15।

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٦ع

और सलामती है उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मृत्यु को प्राप्त करेगा और जिस दिन उसे पुनर्जीवित करके उठाया जाएगा ।16।

(रुकू $\frac{1}{4}$)

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٧﴾

और (इस) पुस्तक के अनुसार मरियम का वर्णन कर । जब वह अपने घर वालों से अलग हो कर पूरब की ओर एक जगह चली गई ।17।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۗ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٨﴾

फिर उसने अपने और उनके बीच एक आड़ बना ली । तब हम ने उसकी ओर अपना फ़रिश्ता भेजा और उसने उसके लिए एक सुगठित मनुष्य का रूप धारण किया ।18।

قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٩﴾

उसने कहा, मैं तुझ से रहमान (अल्लाह) की शरण में आती हूँ । यदि तू (उससे) डरता है ।19।

قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿٢٠﴾

उसने कहा, मैं तो तेरे रब्ब का केवल एक दूत हूँ ताकि तुझे एक सच्चरित्र पुत्र प्रदान करूँ ।20।

قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢١﴾

उसने कहा, मेरे कोई पुत्र कैसे होगा जबकि मुझे किसी पुरुष ने स्पर्श तक नहीं किया और मैं कोई चरित्रहीन नहीं ? ।21।

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢٢﴾

उसने कहा, इसी प्रकार । तेरे रब्ब ने कहा है कि यह बात मेरे लिए सरल है और (हम उसे पैदा करेंगे)* ताकि हम उसे लोगों के लिए चिह्न स्वरूप और अपनी ओर से साक्षात दया स्वरूप बना दें । और यह एक पूर्वनिश्चित बात है ।22।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٣﴾

अत: उस (पुत्र) को उसने गर्भ में धारण कर लिया । वह उसे लिए हुए एक दूर के स्थान की ओर चली गई ।23।

---

* कोष्ठक वाले शब्द अल्लामा क़ुर्तुबी के निकट आयत के भावार्थ में शामिल हैं । (देखिये तफ़सीर-उल-क़ुर्तुबी)

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٤﴾

फिर प्रसवपीड़ा उसे खजूर के तने की ओर ले गयी । उसने कहा, हाय ! मैं इससे पहले मर जाती और भूली-बिसरी हो चुकी होती ।24।

فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٥﴾

तब (एक पुकारने वाले ने) उसे उसकी निचली ओर से पुकारा कि कोई चिंता न कर । तेरे रब्ब ने तेरी निचली ओर एक स्रोत जारी कर दिया है ।25।

وَهُزِّىْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٦﴾

और खजूर के तने को तू अपनी ओर हिला वह तुझ पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिराएगा ।26।

فَكُلِىْ وَاشْرَبِىْ وَقَرِّىْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِىْٓ اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ ﴿٢٧﴾

अतः तू खा और पी और अपनी आँखें ठंडी कर । और यदि तू किसी व्यक्ति को देखे तो कह दे कि अवश्य मैंने रहमान के लिए उपवास का संकल्प किया हुआ है, इसलिए आज मैं किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी ।27।

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۗ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٨﴾

फिर वह उसे उठाये हुए अपनी जाति की ओर ले आई । उन्होंने कहा, हे मरियम ! निःसन्देह तूने बहुत बूरा काम किया है ।28।

يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۖ ﴿٢٩﴾

हे हारून की बहिन ! तेरा पिता तो बुरा व्यक्ति न था और न तेरी माता चरित्रहीन थी ।29।*

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۗ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ

तो उसने उसकी ओर संकेत किया । उन्होंने कहा हम कैसे उससे बात करें

* यहाँ हज़रत मरियम को जो **उख़्ता–हारून** (हरून की बहिन) कहा गया है, इसी सूरः के अन्तिम भाग से पता चलता है कि वह मूसा अलै. के भाई हारून अलै. नहीं थे । वहाँ स्पष्ट रूप से हज़रत मूसा अलै. के भाई हारून का नाम लिया गया है और हज़रत मरियम बहुत बाद की हैं । या तो जाति ने व्यंग्यस्वरूप 'हारून की बहिन' कहा है । अथवा मरियम का कोई भाई हारून नामी होगा जो कदापि हज़रत मूसा अलै. का भाई नहीं है ।

كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝٣٠

जो अभी पालने में पलने वाला बालक है ।30।

قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ ۗ اٰتٰنِىَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِىْ نَبِيًّا ۝٣١

उस (अर्थात ईसा) ने कहा, नि:सन्देह मैं अल्लाह का भक्त हूँ । उसने मुझे पुस्तक प्रदान की है और मुझे नबी बनाया है ।31।

وَّجَعَلَنِىْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۖ وَاَوْصٰنِىْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝٣٢

और जहाँ कहीं मैं हूँ मुझे मंगलमय बना दिया है और जब तक मैं जीवित हूँ मुझे नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया है ।32।

وَّبَرًّا بِوَالِدَتِىْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِىْ جَبَّارًا شَقِيًّا ۝٣٣

और अपनी माता से सद्-व्यवहार करने वाला (बनाया) । और मुझे निर्दयी और कठोर हृदयी नहीं बनाया ।33।

وَالسَّلٰمُ عَلَىَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ۝٣٤

और सलामती है मुझ पर जिस दिन मुझे जन्म दिया गया और जिस दिन मैं मरूँगा और जिस दिन मैं जीवित करके उठाया जाऊँगा ।34।

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِىْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝٣٥

यह है मरियम का पुत्र ईसा । (यही) वह सच्ची बात है जिस में वे शंका कर रहे हैं ।35।

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ؕ ۝٣٦

अल्लाह की मर्यादा के विपरीत है कि वह कोई पुत्र बना ले । पवित्र है वह । जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो वह उसे केवल ‘हो जा’ कहता है तो वह होने लगती है और हो कर रहती है ।36।

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٣٧

और नि:सन्देह अल्लाह ही मेरा रब्ब और तुम्हारा रब्ब है । अत: तुम उसकी उपासना करो । यही सीधा रास्ता है ।37।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٣٨﴾

अतः उनके अन्दर ही से समूहों ने मतभेद किया । फिर जिन्होंने एक बहुत बड़े दिन में उपस्थित होने का अस्वीकार किया, (जिस) के परिणाम स्वरूप उनके लिए विनाश (निश्चित) होगा ।38।

اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٩﴾

जिस दिन वे हमारे पास आयेंगे, उनका सुनना और उनका देखना क्या खूब होगा । परन्तु अत्याचारी लोग तो आज एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े हुए हैं ।39।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّ هُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٠﴾

और उन्हें (उस) पछतावे के दिन से डरा जब निर्णय पूरा कर दिया जाएगा । वास्तविकता यह है कि वे अज्ञानता मैं हैं और ईमान नहीं लाते ।40।

اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٤١﴾

नि:सन्देह हम ही धरती के उत्तराधिकारी होंगे और उनके भी जो उस पर हैं । और हमारी ओर ही वे लौटाए जाएँगे ।41।

(रुकू $\frac{2}{5}$)

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٤٢﴾

और (इस) पुस्तक के अनुसार इब्राहीम का वर्णन भी कर । नि:सन्देह वह एक सच्चा नबी था ।42।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٣﴾

जब उसने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता ! आप क्यों उसकी उपासना करते हैं जो न सुनता है और न देखता है । और आपके किसी काम नहीं आता ।43।

يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٤﴾

हे मेरे पिता ! नि:सन्देह मेरे पास वह ज्ञान आ चुका है जो आप के पास नहीं आया । अतः मेरा अनुसरण करें । मैं सीधे रास्ते की ओर आप का मार्गदर्शन करूँगा ।44।

يَٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٥﴾

हे मेरे पिता ! शैतान की उपासना न करें। नि:सन्देह शैतान रहमान का अवज्ञाकारी है ।45।

يَٰٓاَبَتِ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٦﴾

हे मेरे पिता ! मैं अवश्य डरता हूँ कि रहमान की ओर से आपको कोई अज़ाब पहुँचे । फिर आप (उस समय) शैतान का मित्र सिद्ध हों।46।

قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٧﴾

उस (अर्थात इब्राहीम के पिता) ने कहा, क्या तू मेरे उपास्यों से विमुख हो रहा है ? हे इब्राहीम ! यदि तू न रुका तो मैं अवश्य तुझे संगसार कर दूँगा । तू मुझे लम्बे समय के लिए अकेला छोड़ दे ।47।

قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٨﴾

उसने कहा, आप पर सलाम । मैं अवश्य अपने रब्ब से आप के लिए क्षमायाचना करूँगा । नि:सन्देह वह मुझ पर बहुत कृपालु है ।48।

وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٩﴾

और मैं आपको और उनको भी छोड़ कर चला जाऊँगा जिन्हें आप लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं । और मैं अपने रब्ब से दुआ करूँगा । बिल्कुल संभव है कि मैं अपने रब्ब से दुआ करते हुए अभागा न रहूँ ।49।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٥٠﴾

फिर जब उसने उन्हें छोड़ दिया और उनको भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा उपासना करते थे, हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए और सबको हमने नबी बनाया ।50।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥١﴾

और हमने उन्हें अपनी कृपा प्रदान की और उन्हें एक उच्चकोटि की प्रसिद्धि प्रदान की ।51। (रुकू $\frac{3}{6}$)

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰى ۡ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٢﴾

और (इस) पुस्तक के अनुसार मूसा का वर्णन भी कर । नि:सन्देह वह शुद्ध किया गया था और एक रसूल (और) नबी था ।52।

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٣﴾

और हमने उसे तूर के दाहिनी ओर से आवाज़ दी और धीमी आवाज़ से बात करते हुए उसे अपने समीप कर लिया ।53।

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٤﴾

और हमने उसे अपनी कृपा से उसके भाई हारून को नबी स्वरूप प्रदान किया ।54।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٥﴾

और (इस) पुस्तक के अनुसार इस्माईल का वर्णन भी कर । नि:सन्देह वह सच्चे वादे वाला और रसूल (और) नबी था ।55।

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۠ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٦﴾

और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया करता था । और अपने रब्ब के निकट बहुत ही प्रियपात्र था ।56।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٧﴾

और (इस) पुस्तक के अनुसार इद्रीस का वर्णन भी कर । नि:सन्देह वह बहुत सच्चा (और) नबी था ।57।

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٨﴾

और हमने एक उच्च स्थान की ओर उसका उत्थान किया था ।58।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۡ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۡ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ

यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने पुरस्कृत किया जो आदम की संतान में से नबी थे। और उनमें से थे जिन्हें हमने नूह के साथ (नौका में) सवार किया । और इब्राहीम और इस्राईल की संतान में से थे। और उनमें से थे जिन्हें हमने हिदायत दी और चुन लिया । जब उन के समक्ष

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِيًّا ۩ ﴿٥٩﴾

السجدة

रहमान (अल्लाह) की आयतें पाठ की जाती थीं (तो) वे सजदः करते हुए और रोते हुए गिर जाते थे।59।

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۙ﴿٦٠﴾

फिर उनके बाद ऐसे उत्तराधिकारियों ने (उनका) स्थान ले लिया जिन्होंने नमाज़ को गवाँ दिया और कामनाओं का अनुसरण किया । अतएव वे अवश्य पथभ्रष्टता का परिणाम देख लेंगे।60।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ﴿٦١﴾

सिवाए उसके जिसने प्रायश्चित किया और ईमान लाया और नेक कर्म किए । तो यही लोग ही स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे और उन पर लेशमात्र भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।61।

جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦٢﴾

स्थायी स्वर्गों में । जिनका रहमान ने अपने भक्तों से अदृश्य से वादा किया है। नि:सन्देह उसका वादा अवश्य पूरा किया जाता है।62।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٣﴾

वे उनमें सलाम के सिवा कोई व्यर्थ (बात) नहीं सुनेंगे । और उनके लिए उनकी जीविका उनमें सुबह शाम उपलब्ध होगी।63।

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٤﴾

यह वह स्वर्ग है जिसका उत्तराधिकारी हम अपने भक्तों में से उसको बनाएँगे जो मुत्तक़ी होगा।64।

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۚ﴿٦٥﴾

और (फ़रिश्ते कहते हैं कि) हम तेरे रब्ब के आदेश से ही उतरते हैं । उसी का है जो हमारे सामने है और जो हमारे पीछे है और जो उनके बीच है । और तेरा रब्ब भूलने वाला नहीं।65।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

(वह) आसमानों और धरती का रब्ब है और उसका भी जो उन दोनों के बीच

فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٦﴾ ع	है। अतः उसकी उपासना कर । और उसकी उपासना पर धैर्य पूर्वक अटल रह। क्या तू उसका कोई हमनाम जानता है ? ।66। (रुकू $\frac{4}{7}$)
وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٧﴾	और मनुष्य कहता है, क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर जीवित करके निकाला जाऊँगा ।67।
اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٨﴾	तो क्या मनुष्य याद नहीं करता कि हमने उसे पहले भी इस अवस्था में पैदा किया था कि वह कुछ भी न था ।68।
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٩﴾	अतः तेरे रब्ब की क़सम ! हम उन्हें और शैतानों को भी अवश्य इकट्ठा करेंगे । फिर हम उन्हें अवश्य नरक के गिर्द इस प्रकार उपस्थित करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे हुए होंगे ।69।
ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٧٠﴾	तब हम प्रत्येक समुदाय में से उसे खींच निकालेंगे जो रहमान के विरुद्ध विद्रोह करने में सबसे अधिक तेज़ था ।70।
ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧١﴾	फिर हम ही तो हैं जो उन लोगों को सबसे अधिक जानते हैं जो उसमें जलने के अधिक योग्य हैं ।71।
وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧٢﴾	और तुम (अत्याचारियों) में से प्रत्येक अवश्य उस में उतरने वाला है । यह तेरे रब्ब पर एक निश्चित निर्णय के रूप में अनिवार्य है ।72।*
ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٣﴾	फिर हम उनको बचा लेंगे जिन्होंने तक़वा धारण किया और हम अत्याचारियों को उसमें घुटनों के बल गिरे हुए छोड़ देंगे ।73।

* इस आयत में **इम् मिन्कुम इल्ला वारिदुहा** (अर्थात् तुम में से प्रत्येक व्यक्ति उस में उतरने वाला है) इस से यह अभिप्राय नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति अवश्य नरक में प्रविष्ट होगा । पवित्र क़ुरआन तो→

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٤﴾

और जब उन पर हमारी उज्ज्वल आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन लोगों ने इनकार किया वे उन लोगों से जो ईमान लाए कहते हैं, दोनों समूहों में से प्रतिष्ठा की दृष्टि से कौन उत्तम और मंडली की दृष्टि से (कौन) अधिक अच्छा है ? ।74।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ﴿٧٥﴾

और हमने कितनी ही ऐसी पीढ़ियों को उनसे पहले नष्ट कर दिया जो धन-दौलत और आडम्बर में (उनसे) उत्तम थीं ।75।

قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضْعَفُ جُندًا ﴿٧٦﴾

तू कह दे जो पथभ्रष्टता में होता है रहमान (अल्लाह) उसे अवश्य कुछ ढील देता है । अंतत: जब वे उसे देख लेंगे जिसकी उन्हें प्रतिश्रुति दी जाती है, चाहे वह अज़ाब हो अथवा क़यामत की घड़ी (हो) । तो वे अवश्य जान लेंगे कि कौन प्रतिष्ठा की दृष्टि से निकृष्ट और जत्था की दृष्टि से सर्वाधिक दुर्बल था ।76।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٧﴾

और अल्लाह उन्हें हिदायत में बढ़ा देगा जो हिदायत पा चुके हैं । और शेष रहने वाली नेकियाँ तेरे रब्ब के निकट प्रतिफल की दृष्टि से भी उत्तम और परिणाम की दृष्टि से भी उत्तम हैं ।77।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٧٨﴾

क्या तूने उस पर ध्यान दिया जिसने हमारी आयतों का इनकार कर दिया और कहा कि अवश्य मुझे धन और संतान दी जाएगी ।78।

←सदाचारी व्यक्तियों के सम्बन्ध में कहता है कि वे तो नरक की हल्की सी आवाज़ भी नहीं सुनेंगे । यहाँ नरक से तात्पर्य संसार का नरक है जिसे सदाचारी व्यक्ति अल्लाह के लिए सहन करते हैं । कई बार पापियों को भी मृत्यु से पूर्व अत्यन्त पीड़ा जनक यंत्रणा पहुँचती है, वह भी एक प्रकार का नरक ही है जो इसी संसार में मिल जाता है ।

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٩﴾

क्या उसने अदृश्य की सूचना पाई है । अथवा रहमान की ओर से कोई वचन ले लिया है ? ।79।

كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٨٠﴾

सावधान ! हम अवश्य लिख रखेंगे जो वह कहता है । और हम उसके लिए अज़ाब को बढ़ाते चले जाएँगे ।80।

وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨١﴾

और जिसकी वह बातें करता है उसके हम उत्तराधिकारी हो जाएँगे । जबकि हमारे पास वह अकेला आएगा ।81।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨٢﴾

और उन्होंने अल्लाह के सिवा और उपास्य बना रखे हैं ताकि उनके लिए वे सम्मान का कारण बनें ।82।

كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٣﴾ ع

जाएँगे ।83। (रुकू $\frac{5}{8}$)

सावधान ! वे अवश्य उनकी उपासना का इनकार कर देंगे और उनके विरुद्ध हो जाएँगे ।83। (रुकू $\frac{5}{8}$)

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيٰطِينَ عَلَى الْكٰفِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٤﴾

क्या तूने नहीं देखा कि हम शैतानों को काफ़िरों के विरुद्ध भेजते हैं जो उन्हें भाँति-भाँति से उकसाते हैं ।84।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٥﴾

अतः तू उनके विषय में जल्दी न कर । हम उनकी पल-पल गणना कर रहे हैं ।85।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٦﴾

उस दिन जब हम मुत्तक़ियों को रहमान की ओर एक (सम्माननीय) शिष्टमण्डल के रूप में एकत्रित करके ले जाएँगे ।86।

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٧﴾ وقف لازم

और हम अपराधियों को नरक की ओर एक घाट पर उतरने वाली जाति के रूप में हाँक कर ले जाएँगे ।87।

لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٨﴾ وقف لازم

वे किसी सिफ़ारिश का अधिकार न रखेंगे सिवाए उसके जिसने रहमान की ओर से वचन ले रखा हो ।88।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٩﴾

और वे कहते हैं रहमान ने बेटा बना लिया है ।89।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٩٠﴾

नि:सन्देह तुम एक बड़ी अनर्थ बात बना लाए हो ।90।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩١﴾

सम्भव है कि आसमान इस कारण फट पड़ें और धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाए और पहाड़ काँपते हुए गिर पड़ें ।91।

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

कि उन्होंने रहमान के लिए बेटे का दावा किया है ।92।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٣﴾

हालाँकि रहमान की मर्यादानुकूल नहीं कि वह कोई बेटा अपनाए ।93।

اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٤﴾

नि:सन्देह आसमानों और धरती में जो कोई भी है वह रहमान के समक्ष एक दास के रूप में अवश्य आने वाला है ।94।

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٥﴾

नि:सन्देह उसने उनका घेराव किया हुआ है और उन्हें ख़ूब गिन रखा है।95।

وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٦﴾

और उनमें से हर एक क़यामत के दिन उसके समक्ष अकेला आएगा ।96।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٧﴾

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किये उनके लिए रहमान प्रेम उत्पन्न कर देगा ।97।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٨﴾

अत: अवश्य हमने इसे तेरी भाषा में सुगम कर दिया है ताकि तू मुत्तक़ियों को इसके द्वारा शुभ-सामाचार दे । और झगड़ालू लोगों को इसके द्वारा सतर्क करे ।98।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٩﴾

और कितनी ही पीढ़ियाँ हैं जिन्हें हमने उनसे पहले नष्ट कर दिया । क्या तू उनमें से किसी का आभास पाता है अथवा उनकी आहट सुनता है ? ।99।

(रुकू $\frac{6}{9}$)

20– सूरः ताहा

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 136 आयतें हैं ।

यह सूरः **ता हा** खण्ड़ाक्षरों से आरम्भ होती है । ये खण्ड़ाक्षर किसी अन्य सूरः के आरम्भ में नहीं आये हैं । इनके भावार्थ यह हैं 'हे पवित्र रसूल और संपूर्ण मार्ग-प्रदर्शक' ।

इससे पहली सूरः में जिन भयानक युद्धों की सूचना दी गई है, अवश्य उन सूचनाओं से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल को कष्ट पहुँचा होगा । इसलिए अल्लाह तआला ने ज़ोर देकर कहा कि इन के कारण तू किसी प्रकार का दुःख न कर । ये उसकी ओर से उतरा है जिस ने धरती और आकाश की सृष्टि की । और वह रहमान है जो अर्श पर विराजमान हो गया ।

क्योंकि अल्लाह के रहमान गुण के अन्तर्गत ही समस्त रसूलों का आगमन होता है। पिछली सूरः की भाँति इस सूरः में भी रहमानियत ही का विषयवस्तु जारी है । इसलिए एक बार फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का उल्लेख है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने रहमानियत के कारण उनको अपना रसूल बनाया । समस्त प्रकार की कृपा जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर की गई वह सब की सब रहमानियत के फलस्वरूप थीं।

इसी सूरः में जादूगरों के सजदा करने और फ़िर्औन की ओर से उनको अत्यन्त भयानक दंड दिये जाने की धमकी का भी वर्णन है । परन्तु जिन्होंने रहमान अल्लाह के ऐसे चमत्कारों को देख लिया हो वे ऐसी धमकियों से भयभीत नहीं होते । अतः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर उनका ईमान प्रत्येक प्रकार की धमकियों के बावजूद अटल रहा ।

इसके पश्चात् हज़रत मुहम्मद सल्ल. को संबोधित करके अल्लाह तआला कहता है कि तुझ से वे पहाड़ों के बारे में प्रश्न करते हैं । पहाड़ों के बारे में तो हज़रत मुहम्मद सल्ल. से कभी प्रश्न नहीं किया गया था । हाँ पहाड़ों जैसी बड़ी शक्तियों के सम्बन्ध में मुश्रिक पूछते थे कि उनके होते हुए तू कैसे सफल हो सकेगा । एक ओर पहाड़ सदृश्य किस्रा (ईरान) का साम्राज्य था तो दूसरी ओर भी पहाड़ समान क़ैसर (रोम) का साम्राज्य था । तो इसका यह उत्तर सिखाया गया कि संसार की बड़ी बड़ी अहंकारी जाति चाहे वे पहाड़ों की भाँति उँची हों उस समय तक ईमान नहीं लातीं जब तक उनका अहंकार तोड़ न दिया जाए । और वे ऐसी मरुभूमि की रेत की भाँति न हो जाएँ जो पूर्ण रूप से समतल हो और उसमें कोई ऊँच-नीच दिखाई न दे । जब ऐसा होगा तो फिर वे एक ऐसे रसूल का अनुसरण करेंगे जिस में कोई कुटिलता नहीं पाई जाती ।

आयत संख्या 109 में भी रहमान गुण की पुनरावृत्ति की गई है । इसके बाद आने

वाली आयत संख्या 110 में भी रहमान ही के चमत्कार का वर्णन है, जिसके रोब और प्रताप के समक्ष सभी आवाज़ें धीमी पड़ जाएँगी । मानो यदि सब लोग बातें करते भी हों तो धीमी आवाज़ से ही करते होंगे ।

इसके बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पुन: उल्लेख किया गया है । क्योंकि उनकी उत्पत्ति भी रहमानियत के चमत्कार के अन्तर्गत थी । पहली बार उनकी शरीयत (धर्म-विधान) के चार मौलिक पक्ष वर्णन किये गये हैं । अर्थात् यह कि जो कोई भी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को स्वीकार करेगा उसके लिए प्रतिश्रुति है कि वह न भूखा रहेगा और न नंगा और न प्यासा रहेगा और न धूप में जलेगा ।

इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल. को एक बार फिर धैर्य की शिक्षा दी गई है कि शत्रु के कष्ट देने पर धैर्य से काम ले । और सूर्योदय से पूर्व तथा सूर्यास्त से पूर्व भी और रात्रि काल में भी तथा दिन के दोनों भागों में भी अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ गुणगान कर । इस पवित्र आयत में दिन रात की समस्त नमाज़ों का उल्लेख कर दिया गया है ।

इस सूर: के अन्त में वर्णन किया गया है कि कहो, सब प्रतिक्षा कर रहे हैं कि इस दुविधा का क्या परिणाम निकलता है, अत: तुम भी प्रतिक्षा करो । तुम पर खूब खोल दिया जाएगा कि सन्मार्ग पर चलने वाला कौन है और वह कौन है जो हिदायत पाता है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ سِتٌّ وَّ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَمَانِيَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अंनत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

طٰهٰ ②

तैय्यिबुन–हादिय्युन : हे पवित्र (रसूल) और सम्पूर्ण मार्ग-प्रदर्शक ! ।2।

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ③

हमने तुझ पर क़ुरआन इस लिए नहीं उतारा कि तू दु:ख में पड़ जाए ।3।

اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ④

परन्तु (यह) उसके लिए केवल उपदेश के रूप में है जो डरता है ।4।

تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ⑤

इसका उतारा जाना उसकी ओर से है जिसने धरती और ऊँचे आसमानों की सृष्टि की ।5।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ⑥

रहमान । वह अर्श पर विराजमान हुआ।6।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ⑦

उसी के लिए है जो आसमानों में है और जो धरती में है और जो इन दोनों के बीच है और वह भी जो धरती की गहराइयों में है ।7।

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ⑧

और यदि तू ऊँची आवाज़ में बात करे तो नि:सन्देह वह तो प्रत्येक गुप्त से गुप्त (बातों) को भी जानता है ।8।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ⑨

अल्लाह, उसके सिवा कोई और उपास्य नहीं । समस्त सुन्दर नाम उसी के हैं ।9।

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ⑩ وقف لازم

और क्या मूसा का वृत्तांत तुझ तक पहुँचा है ।10।

اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ

जब उसने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा ज़रा ठहरो, मैंने एक

اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝١١

आग सी देखी है । आशा है कि मैं तुम्हारे पास उसमें से कोई अंगारा ले आऊँ अथवा उस आग के निकट मुझे मार्गदर्शन मिल जाए ।11।

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ۝١٢

अत: जब वह उस तक पहुँचा तो आवाज़ दी गई, हे मूसा ! ।12।

اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝١٣

नि:सन्देह मैं तेरा रब्ब हूँ । अत: अपने दोनों जुते उतार दे । नि:सन्देह तू **तुवा** की पवित्र घाटी में है ।13।*

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝١٤

और मैंने तुझे चुन लिया है । अत: उसे ध्यानपूर्वक सुन जो वह्इ किया जाता है ।14।

اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝١٥

नि:सन्देह मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा और कोई उपास्य नहीं । अत: मेरी उपासना कर और मेरे स्मरण के लिए नमाज़ को क़ायम कर ।15।

اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ۝١٦

निश्चित घड़ी अवश्य आने वाली है । संभव है कि मैं उसे छिपाए रखूँ, ताकि प्रत्येक जान को उसका प्रतिफल दिया जाए जो वह प्रयत्न करती है ।16।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ۝١٧

अत: कदापि तुझे उस (का आवश्यक उपाय करने) से वह रोक न सके जो उस पर ईमान नहीं लाता और अपनी कामना का अनुसरण करता है अन्यथा तू बर्बाद हो जाएगा ।17।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ۝١٨

और हे मूसा ! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? ।18।

---

* आयत संख्या 10 से 13 :- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आग का सा प्रकाश देख कर जो संभावना प्रकट की थी कि **औ अजिदु अलन्नारि हुदन्** अर्थात् संभव है कि इस आग के निकट से मैं हिदायत ले कर आऊँ, वही सच्चा साबित हुआ । क्योंकि वह कोई साधारण आग नहीं थी जिस का अंगारा लेकर वह लौटे हों ।

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ﴿١٩﴾	उसने कहा यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ और इसके द्वारा अपनी भेड़ बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ । और इसमें मेरे लिए और भी बहुत से लाभ हैं ।19।
قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ ﴿٢٠﴾	उसने कहा, हे मूसा ! इसे फेंक दे ।20।
فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ﴿٢١﴾	इस पर उसने उसे फेंक दिया तो सहसा वह एक हिलता हुआ साँप समान बन गया ।21।
قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ﴿٢٢﴾	उसने कहा, इसे पकड़ ले और मत डर । हम इसे इसकी पूर्व की अवस्था मैं लौटा देंगे ।22।
وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٣﴾	और तू अपने हाथ को अपने बगल में दबा ले, वह बिना रोग के सफेद होकर निकलेगा । यह दूसरा चिह्न है।23।
لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٤﴾	ताकि भविष्य में हम तुझे अपने बड़े-बड़े चिह्नों में से भी कुछ दिखाएँ ।24।
اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٥﴾ ع	फ़िरऔन की ओर जा, नि:सन्देह उसने उद्दण्डता मचाई है ।25। (रुकू $\frac{1}{10}$)
قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٦﴾	उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे ।26।
وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٧﴾	और मेरा मामला मुझ पर सरल कर दे ।27।
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٨﴾	और मेरी जीभ की गाँठ खोल दे ।28।
يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٩﴾	ताकि वे मेरी बात समझ सकें ।29।
وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٣٠﴾	और मेरे लिए मेरे परिवार में से मेरा सहयोगी बना दे ।30।

هٰرُوْنَ اَخِی ﴿۳۱﴾

मेरे भाई हारून को ।31।

اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِیْ ﴿۳۲﴾

उसके द्वारा मेरी कमर को मज़बूत कर ।32।

وَ اَشْرِكْهُ فِیْۤ اَمْرِیْ ﴿۳۳﴾

और उसे मेरे कार्य में सहभागी बना दे ।33।

كَیْ نُسَبِّحَكَ كَثِیْرًا ﴿۳۴﴾

ताकि हम अधिकता से तेरा गुणगान करें ।34।

وَّ نَذْكُرَكَ كَثِیْرًا ﴿۳۵﴾

और तुझे बहुत स्मरण करें ।35।

اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِیْرًا ﴿۳۶﴾

नि:सन्देह तू हमारी अवस्था पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।36।

قَالَ قَدْ اُوْتِیْتَ سُؤْلَكَ یٰمُوْسٰی ﴿۳۷﴾

उसने कहा, हे मूसा ! तेरी मुँह माँगी (मनोकामना) पूरी कर दी गई ।37।

وَ لَقَدْ مَنَنَّا عَلَیْكَ مَرَّةً اُخْرٰۤی ﴿۳۸﴾

और नि:सन्देह हमने एक और बार भी तुझ पर उपकार किया था ।38।

اِذْ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤی اُمِّكَ مَا یُوْحٰۤی ﴿۳۹﴾

जब हमने तेरी माँ की ओर वह वह्इ की जैसा कि वह्इ की जाती है ।39।

اَنِ اقْذِفِیْهِ فِی التَّابُوْتِ فَاقْذِفِیْهِ فِی الْیَمِّ فَلْیُلْقِهِ الْیَمُّ بِالسَّاحِلِ یَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّیْ وَ عَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَ اَلْقَیْتُ عَلَیْكَ مَحَبَّةً مِّنِّیْ ۚ۬ وَ لِتُصْنَعَ عَلٰی عَیْنِیْ ﴿۴۰﴾

कि इसे सन्दूक में डाल दे । फिर इसे नदी में बहा दे । फिर नदी इसे तट पर जा पहुँचाए ताकि मेरा शत्रु और इसका शत्रु इसे उठा ले । और मैंने तुझ पर अपना प्रेम उंडेल दिया ताकि तू मेरी आँख के सामने पले बढ़े ।40।

اِذْ تَمْشِیْۤ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰی مَنْ یَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰۤی اُمِّكَ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ ؕ۬ وَ قَتَلْتَ

(कल्पना कर कि) जब तेरी बहिन चल रही थी और कहती जा रही थी कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि कौन है जो इस बच्चे का पालन-पोषण कर सकेगा ? फिर हमने तुझे तेरी माँ की ओर लौटा दिया ताकि उसकी आँख ठंडी हो ।

نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۬ۚ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْۤ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿٤١﴾

और वह शोक न करे । इसी प्रकार तूने एक जान को वध किया तो हमने तुझे शोक से मुक्ति प्रदान की और विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं में डाला । फिर तू मदयन वासियों में कुछ वर्ष रहा । फिर हे मूसा ! तू (नबी बनने के लिए) एक उचित आयु को पहुँच गया ।41।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ﴿٤٢﴾ ۚ

और मैंने तुझे अपने लिए चुन लिया।42।*

اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ﴿٤٣﴾ ۚ

तू और तेरा भाई मेरे चिह्नों को लेकर जाओ और मेरे स्मरण करने में सुस्ती न दिखाना ।43।

اِذْهَبَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٤﴾ ۚۖ

तुम दोनों फ़िर्औन की ओर जाओ । नि:सन्देह उसने उद्दण्डता की है ।44।

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٥﴾

अत: उससे नरमी से बात करो । संभव है वह शिक्षा पकड़े या डर जाए ।45।

قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَاۤ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٦﴾

उन दोनों ने कहा, हे हमारे रब्ब ! नि:सन्देह हम डरते हैं कि वह हम पर अत्याचार करे अथवा उद्दण्डता करे ।46।

قَالَ لَا تَخَافَاۤ اِنَّنِيْ مَعَكُمَاۤ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٧﴾

उसने कहा कि तुम डरो नहीं । नि:सन्देह मैं तुम दोनों के साथ हूँ । मैं सुनता हूँ और देखता हूँ ।47।

فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٨﴾

अत: तुम दोनों उसके पास जाओ और उसे कहो कि हम तेरे रब्ब के दो दूत हैं। अत: हमारे साथ तू बनी-इस्राईल को भेज दे और इनको अज़ाब न दे । नि:सन्देह हम तेरे रब्ब की ओर से एक बहुत बड़ा चिह्न ले कर आए हैं । और जो भी हिदायत का अनुसरण करे उस पर सलामती हो ।48।

* देखें अरबी शब्दकोश 'लिसान-उल-अरब' ।

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٩﴾

नि:सन्देह हमारी ओर वह्इ की गई है कि जो झूठ बोलता है और उल्टा फिर जाता है उस पर अज़ाब होगा ।49।

قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٥٠﴾

उसने कहा, हे मूसा ! तुम दोनों का रब्ब है कौन ? ।50।

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥١﴾

उसने कहा, हमारा रब्ब वह है जिसने प्रत्येक वस्तु को उसकी आकृति प्रदान की फिर हिदायत के मार्ग पर डाल दिया ।51।

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥٢﴾

उसने कहा, फिर पहली जातियों की क्या दशा हुई ? ।52।

قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى ﴿٥٣﴾

उसने उत्तर दिया कि उनकी जानकारी मेरे रब्ब के पास एक पुस्तक में है । मेरा रब्ब न भटकता है न भूलता है ।53।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٤﴾

(वह) जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें कई मार्ग बनाए और उसने आसमान से पानी उतारा । फिर हमने उससे विभिन्न प्रकार के वनस्पति के कई-एक जोड़े उत्पन्न किए ।54।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ﴿٥٥﴾

खाओ और अपने पशुओं को चराओ । इसमें नि:सन्देह बुद्धिमान लोगों के लिए कई बड़े चिह्न हैं ।55। (रुकू $\frac{2}{11}$)

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ﴿٥٦﴾

इसी से हमने तुम्हें पैदा किया है और इसी में हम तुम्हें लौटा देंगे और इसी से तुम्हें हम दूसरी बार निकालेंगे ।56।*

---

* इस पवित्र आयत में जो यह कहा गया है कि इसी धरती से तुम उत्पन्न किए गए हो और इसी में से तुम निकलोगे, इस पर यह आपत्ति की जा सकती है कि आजकल के युग में जो लोग अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यानों में मर जाते हैं उन पर यह कैसे लागू हो सकता है ? इसका उत्तर यह है कि मनुष्य जहाँ भी चला जाए वह धरती की हवा, धरती का भोजन इत्यादि साथ रखता है और कभी भी इससे स्वयं को पृथक नहीं कर सकता ।

وَلَقَدْ أَرَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿٥٧﴾

और निःसन्देह हमने उसे अपने समस्त चिह्न दिखाए। परन्तु उसने झुठला दिया और इनकार कर दिया।57।

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿٥٨﴾

उसने कहा, हे मूसा! क्या तू हमारे पास आया है कि हमें हमारे देश से अपने जादू के द्वारा बाहर निकाल दे? ।58।

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِۦ فَٱجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُۥ نَحْنُ وَلَآ أَنتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٩﴾

अतः हम अवश्य तेरे सामने एक ऐसा ही जादू लाएँगे। फिर तू अपने और हमारे बीच वादे का दिन और स्थान निश्चित कर जिसकी न हम अवमानना करेंगे, न तू। यह स्थान (दोनों के लिए) एक समान हो।59।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ ٱلزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ ٱلنَّاسُ ضُحًى ﴿٦٠﴾

उसने कहा, तुम्हारे लिए निर्धारित दिन त्यौहार का दिन है। और ऐसा हो कि दिन के कुछ चढ़ने पर लोगों को इकट्ठा किया जाए।60।

فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُۥ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿٦١﴾

अतः फ़िर्औन मुँह मोड़ कर चला गया। फिर उसने अपनी योजना सम्पूर्ण की, फिर दोबारा आया।61।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُم بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ ٱفْتَرَىٰ ﴿٦٢﴾

मूसा ने उनसे कहा, हाय खेद है तुम पर! अल्लाह पर झूठ न गढ़ो, अन्यथा वह तुम्हें अज़ाब देकर नष्ट-भ्रष्ट कर देगा। और निःसन्देह वह असफल हो जाता है जो झूठ गढ़ता है।62।

فَتَنَٰزَعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا۟ ٱلنَّجْوَىٰ ﴿٦٣﴾

अतः वे अपने मामले में एक दूसरे से झगड़ते रहे और छिप-छिप कर गुप्त परामर्श करते रहे।63।

قَالُوٓا۟ إِنْ هَٰذَٰنِ لَسَٰحِرَٰنِ يُرِيدَانِ أَن يُخْرِجَٰكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ ٱلْمُثْلَىٰ ﴿٦٤﴾

उन्होंने कहा, निःसन्देह ये दोनों तो केवल जादूगर हैं जो चाहते हैं कि तुम्हें अपने जादू के द्वारा तुम्हारे देश से निकाल दें। और तुम्हारे आदर्श रीति-रिवाजों को नष्ट कर दें।64।

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ
وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٥﴾

अत: अपने समस्त उपाय को एकत्रित कर लो, फिर पंक्तिबद्ध होकर चले आओ । और आज अवश्य वही सफल होगा जो श्रेष्ठ होगा ।65।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَ اِمَّآ
اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٦﴾

उन्होंने कहा, हे मूसा ! क्या तू डालेगा अथवा फिर हम पहले (अपना जादू) डालें ।66।

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ
وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ
اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٧﴾

उसने कहा, अच्छा तुम ही डालो । अत: सहसा उनके जादू के कारण से उस के मन में डाला गया कि उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ दौड़ रही हैं ।67।

فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٨﴾

तो मूसा ने अपने मन में भय का आभास किया ।68।

قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٩﴾

हमने कहा, डर मत । नि:सन्देह तू ही विजयी होने वाला है ।69।

وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا
صَنَعُوْا ؕ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ؕ
وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٧٠﴾

और जो तेरे दाहिने हाथ में है उसे फेंक दे। जो कुछ उन्होंने बनाया यह उसे निगल जाएगा । उन्होंने जो बनाया है वह केवल एक जादूगर का छल है । और जादूगर जिस ओर से भी आए सफल नहीं हुआ करता ।70।

فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا
بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧١﴾

अत: सभी जादूगर सजद: की अवस्था में गिरा दिए गए । उन्होंने कहा, हम हारून और मूसा के रब्ब पर ईमान ले आए हैं ।71।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ؕ اِنَّهٗ
لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ
فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ

उस (फ़िरऔन) ने कहा क्या तुम मेरी अनुमति से पहले उस पर ईमान ले आए ? नि:सन्देह यह तुम्हारा ही मुखिया है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। अत: अवश्य में तुम्हारे हाथ और

خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧٢﴾

तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा । और अवश्य तुम्हें खजूर के तनों पर सूली चढ़ाऊँगा । और तुम अवश्य जान लोगे कि हम में से कौन अज़ाब देने में अधिक कठोर और स्थायी रहने वाला है ? ।72।

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٣﴾

उन्होंने कहा, हम उन उज्ज्वल चिह्नों के मुक़ाबिल पर तुझे कदापि श्रेष्ठता नहीं देंगे जो हम तक पहुँचे हैं । और न ही उस पर (श्रेष्ठता देंगे) जिसने हमें पैदा किया। अत: कर डाल जो तू करने वाला है । तू केवल इस संसार के जीवन का निर्णय कर सकता है।73।

اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٤﴾

नि:सन्देह हम अपने रब्ब पर ईमान ले आए हैं ताकि वह हमारी त्रुटियों और हमारे जादू के काम पर जिन के करने के लिए तूने हमें विवश किया था, हमें क्षमा कर दे । और अल्लाह श्रेष्ठ और सर्वाधिक स्थायी रहने वाला है ।74।

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٥﴾

नि:सन्देह वह जो अपने रब्ब के समक्ष अपराधी के रूप में आएगा तो निश्चित ही उसके लिए नरक है । न वह उसमें मरेगा और न जीवित रहेगा ।75।

وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٦﴾

और जो मोमिन होते हुए उसके पास इस अवस्था में आयेगा कि वह नेक कर्म करता हो, तो यही वे लोग हैं जिनके लिए अनेक उच्च स्थान हैं ।76।

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

(वे) चिरस्थायी स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बह रही होंगी । वे उनमें सदा रहने वाले होंगे । और यह उसका प्रतिफल है

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۝٧٧ ع

जिसने पवित्रता धारण की ।77।

(रुकू $\frac{3}{12}$)

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۝٧٨

और नि:सन्देह हमने मूसा की ओर वह्इ की थी कि मेरे भक्तों को रात के समय ले चल और उनके लिए समुद्र में ऐसा रास्ता पकड़ जो शुष्क हो । न तुझे पकड़े जाने का भय होगा और न तू डरेगा ।78।

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝٧٩

फिर फ़िर्औन ने अपनी सेनाओं के साथ उनका पीछा किया तो समुद्र में से उस चीज़ ने उन्हें ढाँप लिया जिसने उन्हें ढाँपना था ।79।

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝٨٠

और फ़िरऔन ने अपनी जाति को पथभ्रष्ट कर दिया और हिदायत न दी।80।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝٨١

हे बनी-इस्राईल ! नि:सन्देह हमने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से मुक्ति प्रदान की और तुम से तूर की दाईं ओर एक समझौता किया और तुम पर मन्न और सल्वा उतारे ।81।

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ۝٨٢

जो जीविका हमने तुम्हें प्रदान की है उस में से पवित्र चीज़ें खाओ और इस बारे में सीमा का उल्लघंन न करो । अन्यथा तुम पर मेरा क्रोध उतरेगा । और जिस पर मेरा क्रोध उतरा हो तो वह अवश्य हलाक हो गया ।82।

وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ۝٨٣

और नि:सन्देह मैं उसे बहुत क्षमा करने वाला हूँ जो प्रायश्चित करे और ईमान लाए और नेक कर्म करे फिर हिदायत पर अटल रहे ।83।

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝٨٤

और हे मूसा ! किस बात ने तुझे अपनी जाति से शीघ्रता पूर्वक अलग होने पर विवश किया ? ।84।

قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِىْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٥﴾

उसने कहा, वे मेरे ही पदचिह्नों पर हैं। और हे मेरे रब्ब ! मैं इस कारण तेरी ओर शीघ्रता पूर्वक चला आया कि तू प्रसन्न हो जाए।85।

قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِىُّ ﴿٨٦﴾

उसने कहा, नि:सन्देह तेरी जाति की तेरी अनुपस्थिति में हमने परीक्षा ली और सामरी ने उन्हें पथभ्रष्ट कर दिया।86।

فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۬ؕ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِىْ ﴿٨٧﴾

तब मूसा अत्यन्त क्रोध और खेद करते हुए अपनी जाति की ओर वापस लौटा। उसने कहा, हे मेरी जाति ! क्या तुम्हारे रब्ब ने तुम से एक बहुत अच्छा वादा नहीं किया था। फिर क्या तुम पर वादे की अवधि बहुत लम्बी हो गयी अथवा तुम यह निश्चय कर चुके थे कि तुम पर तुम्हारे रब्ब का क्रोध उतरे ? अत: तुम ने मेरे साथ की हुई प्रतिज्ञा का उल्लंघन किया।87।

قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِىُّ ۙ﴿٨٨﴾

उन्होंने कहा, हमने तेरे प्रतिज्ञा का उल्लंघन अपनी इच्छा से नहीं किया। परन्तु हम पर जाति के आभूषणों का बोझ लादा गया था तो हमने उसे उतार फैंका। फिर इस प्रकार सामरी ने जुगत लगाई।88।*

فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۬

फिर वह उनके लिए एक ऐसा बछड़ा बना लाया जो एक (निर्जीव) शरीर था जिसकी गाय जैसी आवाज़ थी। तब

---

* हज़रत मूसा अलै. की जाति अपने साथ जो आभूषण उठाए फिरती थी वह बहुत भारी थे। तो इस पर सामरी ने यह लालच दिया कि वह आभूषण मेरे हवाले करो, मैं इनसे तुम्हारे लिए एक बछड़ा बना दूँगा जो वास्तव में तुम्हारा उपास्य है। उस जाति ने सामरी को आभूषण देने का हज़रत मूसा अलै. के सामने यह बहाना बनाया कि वह हम पर बोझ था जो हमने उतार दिया।

فَنَسِيَ ﴿٨٩﴾

उन्होंने कहा, यह है तुम्हारा उपास्य और मूसा का भी । वस्तुत: उससे भूल हो गई ।89।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٩٠﴾ ع

क्या वे देख नहीं रहे थे कि वह (बछड़ा) उन्हें किसी बात का उत्तर नहीं देता और उनके लिए न किसी हानि पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है और न लाभ का ? ।90। (रुकू $\frac{4}{13}$)

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن قَبْلُ يَا قَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿٩١﴾

हालाँकि हारून उनको पहले से कह चुका था कि हे मेरी जाति ! तुम इसके द्वारा परीक्षा में डाले गए हो और नि:सन्देह तुम्हारा रब्ब अनंत कृपा करने वाला है । अत: तुम मेरा अनुसरण करो और मेरी बात मानो ।91।

قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَاكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿٩٢﴾

उन्होंने कहा, हम इसके सामने अवश्य बैठे रहेंगे, यहाँ तक कि मूसा हमारी ओर लौट आए ।92।

قَالَ يَا هَارُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ﴿٩٣﴾

उस (मूसा) ने कहा, हे हारून ! जब तूने उन्हें देखा कि वे पथभ्रष्ट हो रहे हैं, तो तुझे किस बात ने (उनकी पकड़ करने से) रोका था ।93।

أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٤﴾

कि तू मेरा अनुसरण न करता ? अत: क्या तूने मेरे आदेश की अवज्ञा की ? ।94।

قَالَ يَا ابْنَ أُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٥﴾

उसने कहा, हे मेरी माँ के पुत्र ! तू मेरी दाढ़ी और मेरा सिर न पकड़ । मैं तो इस बात से डर गया था कि कहीं तू यह न कहे कि तूने बनी इस्राईल के बीच फूट डाल दी और मेरे निर्णय की प्रतीक्षा न की ।95।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ﴿٩٦﴾

उसने कहा, हे सामरी ! तेरा क्या मामला है ? ।96।

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ﴿۹۷﴾

उसने कहा, मैंने वह बात जान ली थी जिसे ये नहीं जान सके । तो मैंने रसूल के पद्-चिह्नों में से कुछ अपना लिया फिर उसे त्याग दिया । और मेरे मन ने मेरे लिए यही कुछ अच्छा करके दिखाया ।97।*

قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ۪ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰۤى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ؕ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿۹۸﴾

उसने कहा, चला जा । निश्चित रूप से आजीवन तेरा कहना यही होगा कि ''कदापि न छुओ'' और नि:सन्देह तेरे लिए एक निर्धारित समय का वादा है जिसकी तुझ से वादा-ख़िलाफ़ी नहीं की जाएगी । और अपने इस उपास्य की ओर दृष्टि डाल जिसके समक्ष तू बैठा रहा । हम अवश्य उसे भस्म कर देंगे फिर उसे समुद्र में भली प्रकार बिखेर देंगे ।98।**

اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿۹۹﴾

नि:सन्देह तुम्हारा उपास्य केवल अल्लाह ही है जिसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । वह ज्ञान की दृष्टि से प्रत्येक वस्तु को घेरे हुए है ।99।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۖ﴿۱۰۰﴾

इसी प्रकार हम उसकी ख़बरें तेरे समक्ष वर्णन करते हैं जो बीत चुका और हमने निश्चित रूप से अपनी ओर से तुझे अनुस्मारक-ग्रन्थ प्रदान किया है ।100।

---

* सामरी ने अपना बहाना यह बनाया कि मैंने नुबुव्वत के बारे में भाँप लिया था कि यह चालाकी है और इस कारण मैंने इसे एक ओर फेंक दिया और मेरे इस कर्म को मेरे मन ने अच्छा करके दिखाया ।

** सामरी के इस अपराध के दंड स्वरूप हज़रत मूसा अलै. ने उसको कहा कि अब तू इस अवस्था में जीवित रह कि स्वंय कहा कर कि मुझे कोई न छुए । इससे ज्ञात होता है कि उसको कुष्ठ रोग हो गया था और वह लोगों को अपने रोग से बचाने के लिए स्वंय आवाज़ दिया करता था कि मेरे निकट न आओ और मुझे हाथ न लगाओ । यह परम्परा यूरोप में पिछली शताब्दी तक प्रचलित रही है कि कुष्ठ रोगियों को आदेश होता था कि वे अपने गले में घंटी बाँध कर चलें ताकि सड़क के दूसरी ओर भी लोगों को पता चल जाए कि कोई कुष्ठ रोगी गुज़र रहा है ।

مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۙ﴿۱۰۱﴾

जो भी इससे विमुख हुआ तो क़यामत के दिन अवश्य वह एक बड़ा बोझ उठाएगा ।101।

خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ؕ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۙ﴿۱۰۲﴾

वे लम्बे समय तक इस (दशा) में रहने वाले हैं । और वह उनके लिए क़यामत के दिन एक बहुत बुरा बोझ (सिद्ध) होगा ।102।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۚ﴿۱۰۳﴾

जिस दिन बिगुल फूंका जाएगा और उस दिन हम अपराधियों को इकट्ठा करेंगे अर्थात् (अधिकतर) नीली आँखों वालों को ।103।*

يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿۱۰۴﴾

वे परस्पर धीरे-धीरे बातें कर रहे होंगे कि तुम केवल दस (दिन तक) रहे।104।**

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿۱۰۵﴾ ع

हम सब से अधिक जानते हैं जो वे कहेंगे। जब उनमें सबसे अच्छा मार्ग अपनाने वाला कहेगा कि तुम केवल एक दिन से अधिक नहीं रहे ।105।

(रुकू 5/14)

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۙ﴿۱۰۶﴾

और वे तुझ से पर्वतों के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं । तू कह दे कि उन्हें मेरा रब्ब टुकड़े-टुकड़े कर देगा ।106।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۙ﴿۱۰۷﴾

फिर वह उन्हें एक साफ़ चटियल मैदान बना छोड़ेगा ।107।

---

* यहाँ **ज़ुर्क़न** शब्द से अभिप्राय नीली आँखों वाले लोग हैं । और सम्भवत: ईसाई जातियों का वर्णन है, जिनके बहुसंख्यक नीली आँखों वाले हैं ।

** वे क़यामत के दिन अपने महान सांसारिक प्रभुत्व को इतनी देर और दूर से देख रहे होंगे और परस्पर बातें करेंगे कि मानो उनका प्रभुत्व दस से अधिक नहीं रहा । इससे तात्पर्य है दस शताब्दियाँ, अर्थात् हज़ार वर्ष से अधिक । ईसाइयत के प्रभुत्व का इतिहास यही बताता है कि उनको हज़ार वर्ष तक प्रभुत्व प्राप्त था । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पहली तीन शताब्दियों के बाद पश्चिमी ईसाई जातियों का प्रभुत्व लगभग हज़ार वर्ष रहा है और इसके बाद पतन के चिह्न दिखने लगे ।

لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٨﴾

तू उसमें न कोई टेढ़ापन देखेगा और न उतार-चढ़ाव ।108।

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٩﴾

उस दिन वे उस पुकारने वाले का अनुसरण करेंगे जिसमें कोई कुटिलता नहीं । और रहमान के सम्मान में आवाज़ें धीमी हो जाएँगी और तू कानाफूसी के अतिरिक्त कुछ न सुनेगा ।109।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١١٠﴾

उस दिन, जिसके लिए रहमान अनुमति दे और जिसके पक्ष में बात करने को वह पसन्द करे उसके सिवा सिफ़ारिश (किसी को) लाभ न देगी ।110।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١١﴾

जो उन के सामने है और जो उनके पीछे है वह जानता है । जबकि वे ज्ञान के बल पर उसके अंत को पा नहीं सकते ।111।

وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١٢﴾

और सदा जीवित और स्वयं प्रतिष्ठित (अल्लाह) के समक्ष चेहरे झुक जाएँगे। और जिसने कोई अत्याचार का बोझ उठाया होगा वह असफल होगा ।112।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٣﴾

और वह जिसने मोमिन होने की अवस्था में नेक कर्म किए होंगे तो वह किसी अत्याचार अथवा अधिकार हनन का भय नहीं करेगा ।113।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٤﴾

और इसी प्रकार हमने उसे सरल और शुद्ध भाषा संपन्न क़ुरआन के रूप में उतारा है। और उसमें प्रत्येक प्रकार की चेतावनी वर्णन की हैं ताकि हो सके तो वे तक़्वा धारण करें या वह उनके लिए कोई शिक्षाप्रद चिह्न प्रकट कर दे ।114।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ

अत: अल्लाह, सच्चा सम्राट, अत्युच्च मर्यादा सम्पन्न है । अत: क़ुरआन (के

بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٥﴾

पढ़ने) में जल्दबाज़ी न किया कर इससे पूर्व कि उसकी वह्इ तुझ पर पूर्ण कर दी जाए । और यह कहा कर कि हे मेरे रब्ब! मुझे ज्ञान में बढ़ा दे ।115।

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٦﴾

और निःसन्देह हमने इससे पूर्व आदम से भी वचन लिया था फिर वह भूल गया और (उसे भंग करने का) उसका कोई इरादा हमने नहीं पाया ।116।

(रुकू $\frac{6}{15}$)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٧﴾

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के लिए सजद: करो तो इब्लीस के सिवा सबने सजद: किया । उसने इनकार कर दिया ।117।

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٨﴾

अत: हमने कहा, हे आदम ! निःसन्देह यह तेरा और तेरी पत्नी का शत्रु है । अत: यह कदाचित तुम दोनों को स्वर्ग से निकाल न दे, अन्यथा तू अभागा हो जाएगा ।118।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٩﴾

तेरे लिए निश्चित है कि न तू इसमें भूखा रहे और न नंगा ।119।

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١٢٠﴾

और यह (भी) कि न तू इसमें प्यासा रहे और न धूप में जले ।120।

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢١﴾

अत: शैतान ने उसे भ्रम में डाल दिया । कहा, हे आदम ! क्या मैं तुझे एक ऐसे वृक्ष की जानकारी दूँ जो अमरत्व पाने का वृक्ष है । और एक ऐसे राज्य की जो कभी जीर्ण नहीं होगा ।121।

فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۡ

अत: दोनों ने उसमें से कुछ खाया और उनकी नग्नता उनपर प्रकट हो गयी । और वे स्वर्ग के पत्तों से अपने आप को ढांपने लगे । और आदम ने

وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ۖ ﴿١٢٢﴾

अपने रब्ब की अवज्ञा की और मार्ग से भटक गया ।122।

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٣﴾

फिर उसके रब्ब ने उसे चुन लिया और प्रायश्चित स्वीकार करते हुए उस पर झुका और उसे हिदायत दी ।123।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٤﴾

उसने कहा, तुम दोनों सब साथियों के समेत इसमें से निकल जाओ इस अवस्था में कि तुम में से कुछ, कुछ के शत्रु हो चुके हैं । अत: निश्चित है कि जब भी मेरी ओर से तुम तक हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का अनुसरण करेगा तो न वह पथभ्रष्ट होगा और न अभागा रहेगा ।124।

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّ نَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٥﴾

और जो मेरी याद से विमुख होगा नि:सन्देह उसके लिए अभावपूर्ण जीवन होगा और हम उसे क़यामत के दिन दृष्टिहीन बनाकर उठाएँगे ।125।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٦﴾

वह कहेगा, हे मेरे रब्ब ! तूने मुझे दृष्टिहीन क्यों उठाया है ? जबकि मैं दृष्टिवान हुआ करता था ।126।

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٧﴾

उसने कहा, इसी प्रकार (होगा) । तेरे पास हमारी आयतें आती रहीं फिर भी तू उन्हें भुलाता रहा । अत: आज के दिन तू भी इसी प्रकार भुला दिया जाएगा ।127।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٨﴾

और इसी प्रकार हम उसे बदला देते हैं जिसने अपव्यय से काम लिया और वह अपने रब्ब की आयतों पर ईमान नहीं लाया और परलोक का अज़ाब अधिक कठोर और देर तक रहने वाला है ।128।

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿١٢٩﴾ ع ٧ ١٦

अत: क्या यह बात उनकी हिदायत का कारण नहीं बनी कि उनसे पहले कितने ही युगों के लोगों को हमने तबाह कर दिया जिनके आवास स्थल में वे चलते फिरते हैं । नि:सन्देह इसमें बुद्धिमान लोगों के लिए चिह्न हैं ।129।

(रुकू $\frac{7}{16}$)

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٣٠﴾

और यदि तेरे रब्ब की ओर से एक बात और एक निर्धारित अवधि तय न हो चुकी होती तो वह एक चिमटे रहने वाला (अज़ाब) बन जाता ।130।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣١﴾

अत: जो वे कहते हैं उस पर धैर्य धर । और सूर्य निकलने से पूर्व और उसके अस्त होने से पूर्व अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ गुणगान कर । इसी प्रकार रात्रि की घड़ियों में और दिन के किनारों में भी गुणगान कर ताकि तुझे सन्तुष्टि प्राप्त हो जाए ।131।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۗ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣٢﴾

और अपनी आँखें उस अस्थायी धन-सम्पत्ति की ओर न फैला जो हमने उनमें से कुछ समूहों को सांसारिक जीवन की शोभा स्वरूप प्रदान की है ताकि हम उसमें उनकी परीक्षा करें । और तेरे रब्ब की (ओर से प्राप्त) जीविका उत्तम और अधिक देर तक रहने वाली है ।132।

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۗ لَا نَسْئَلُكَ رِزْقًا ۗ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٣﴾

और अपने घर वालों को नमाज़ की ताकीद करता रह और इस पर सदा अडिग रह । हम तुझ से किसी प्रकार की जीविका की माँग नहीं करते । हम ही तो तुझे जीविका प्रदान करते हैं । और सुखद अंत तक़वा ही का होता है ।133।

وَقَالُوْا لَوْلَا يَأْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿۱۳۴﴾

और वे कहते हैं कि वह अपने रब्ब की ओर से हमारे पास क्यों कोई एक चिह्न भी नहीं लाता । क्या उनके पास वह खुला-खुला उज्ज्वल प्रमाण नहीं आया जो पहले धर्मग्रन्थों में वर्णित है ? ।134।

وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿۱۳۵﴾

और यदि हम उन्हें इससे पूर्व किसी अज़ाब से तबाह कर देते तो वे अवश्य कहते, हे हमारे रब्ब ! क्यों न तूने हमारी ओर रसूल भेजा, इससे पूर्व कि हम लांच्छित और अपमानित होते, तेरी आयतों का अनुसरण करते ।135।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿۱۳۶﴾ ع ٨/١٧

तू कह दे कि हर एक प्रतीक्षा में है अत: तुम भी प्रतीक्षा करो । फिर तुम अवश्य जान लोगे कि कौन सन्मार्ग को पाने वाले हैं । और वह कौन है, जिसने हिदायत पाई ।136। (रुकू $\frac{8}{17}$)

21– सूर: अल–अम्बिया

यह मक्की सूर: है और इसके अवतरण का समय नुबुव्वत का चौथा अथवा पाँचवां वर्ष है। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 113 आयतें हैं।

पिछली सूर: के अन्त पर जिस हिसाब का उल्लेख था कि लोग उत्तरदायी होंगे और तुझ पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि तू ही हिदायत पर स्थित है, इस सूर: के आरम्भ में वर्णन किया गया कि वह हिसाब की घड़ी आ पहुँची है। परन्तु अधिकतर लोग इस बात से लापरवाह हैं।

फिर इस सूर: में कहा गया कि तुझ से पूर्व भी हम ने पुरुषों ही में से रसूल बनाकर भेजे थे। और उन्हें ऐसे शरीर प्रदान नहीं किये गये जो बिना खाये पिये जीवित रह सकें। यहाँ प्रासांगिक रूप से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के ईश्वरत्व का भी खण्डन किया गया है, क्योंकि वह तो जीवन भर खाते पीते रहे।

इसके तुरन्त बाद यह वर्णन किया गया कि ना समझ लोगों ने धरती में से ही उपास्य गढ़ लिए हैं। फिर एक महत्वपूर्ण तर्क इस बात पर यह दिया है कि दो अल्लाह हो ही नहीं सकते। यदि ऐसा होता तो धरती और आकाश में फ़साद फैल जाता और प्रत्येक अल्लाह अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता। और ब्रह्माण्ड में ऐसा बिगाड़ और फ़साद पैदा होता कि फिर कभी दूर न हो सकता। हालाँकि ब्रह्माण्ड में जिधर भी दृष्टि डालो उसमें द्वित्वभाव का कोई नामो-निशान तक नहीं मिलता। इसी लिए कहा कि हमने इस से पूर्व भी जितने रसूल भेजे उनकी ओर भी वह्इ करते रहे कि एक अल्लाह के सिवा और कोई उपास्य नहीं।

आयत संख्या 27 में उन के झूठे दावा का वर्णन है कि अल्लाह तआला ने एक बेटा बना लिया है। परन्तु जब भी एक बेटे को काल्पनिक उपास्य बनाया जाए तो फिर वह एक काल्पनिक उपास्य नहीं रहता बल्कि इस कल्पना में और भी उपास्य शामिल कर दिए जाते हैं। अतएव तुरन्त बाद कहा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भाँति अल्लाह तआला के और भी अनेक पवित्र भक्त हैं जिनको अल्लाह का साझीदार ठहराया गया।

इसके तुरन्त बाद एक ऐसी आयत है जो ब्रह्माण्ड के रहस्यों से ऐसा पर्दा उठाती है जो उस समय के मनुष्य की कल्पना में भी नहीं आ सकता था। कहा, यह सारा ब्रह्माण्ड मज़बूती से बंद किए हुए एक ऐसे गेंद के रूप में था जिसमें से कोई वस्तु बाहर निकल नहीं सकती थी। फिर हमने उसको फाड़ा और अचानक सारा ब्रह्माण्ड उसमें से फूट पड़ा। और फिर पानी के द्वारा प्रत्येक जीवित वस्तु को उत्पन्न किया। पानी के तुरन्त बाद पहाड़ के साथ उस पानी के उतरने की प्रक्रिया का वर्णन कर दिया गया। फिर यह

उल्लेख किया कि किस प्रकार से आकाश, धरती और उसके निवासियों की सुरक्षा करता है। फिर धरती और आकाश तथा समस्त ग्रह नक्षत्रों के स्थायी परिक्रमण का वर्णन किया। और जिस प्रकार धरती और आकाश स्थायी नहीं हैं इसी प्रकार यह भी ध्यान दिलाया कि मनुष्य भी स्थायी रहने वाला नहीं है और कहा, हे रसूल ! तुझ से पहले जितने लोग जीवित थे उनमें से किसी को भी स्थायित्व प्रदान नहीं किया गया।

फिर इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्व के समस्त नबियों का उल्लेख है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने उनको अपनी 'रहमानियत' का लाभ पहुँचाया। और यह अटल विषय वर्णन कर दिया कि जब किसी बस्ती के निवासियों को एक बार तबाह कर दिया जाये तो वे दोबारा कभी उसकी ओर लौटकर नहीं आएँगे। यहाँ तक कि या'जूज मा'जूज के समय में भी जब वैज्ञानिक मुर्दों को जीवित करने का दावा करेंगे, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं हो सकेगा।

इस सूर: में आगे चल कर धरती और आकाश को ध्वंस कर देने का वर्णन है। और साथ ही यह भी कहा गया कि यह सदा के लिए नहीं, बल्कि यह ब्रह्माण्ड जो एक बार अस्तित्व विहीन हो जाएगा, इसके स्थान पर नये ब्रह्माण्ड का निर्माण किया जाएगा। इस प्रकिया की पुनरावृत्ति करते रहने पर अल्लाह तआला समर्थ है।

इस सूर: के अन्तिम रुकू में हज़रत मुहम्मद सल्ल. को समस्त संसार के के लिए रहमान अल्लाह का द्योतक घोषित करते हुए कहा कि तुझे भी हम ने समस्त संसार के लिए कृपा स्वरूप बनाकर भेजा है।

इस सूर: की अन्तिम आयत में हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपने रब्ब के समक्ष यह विनती करते हैं कि तू मेरे और मेरे झुठलाने वालों के बीच सत्य के साथ निर्णय कर। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्ल. रहमान अल्लाह के प्रतिनिधि हैं। इसलिए समस्त जगत को सतर्क कर रहे हैं कि रहमान अल्लाह अपने इस भक्त को अकेला नहीं छोड़ेगा जो समस्त संसार के लिए उसकी रहमानियत का द्योतक है।

इस सूर: के बाद सूर: अल्-हज्ज आती है जो इस बात का ठोस प्रमाण है कि समस्त जगत के मनुष्यों के लिए हज़रत मुहम्मद सल्ल. कृपा स्वरूप प्रकट हुए हैं। और बैतुल्लाह (खाना का'बा) वह एक मात्र स्थान है जहाँ हज्ज करने के लिए समस्त जगत के मनुष्य उपस्थित होते हैं।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ ثَلَاثَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ سَبْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अंनत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ②	लोगों के लिए उनके हिसाब (का समय) निकट आ चुका है । और वे इस के बावजूद असावधानता पूर्वक मुँह फेरे हुए हैं ।2।
مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ③	उनके पास जब भी कोई नया अनुस्मरण उनके रब्ब की ओर से आता, वे उसे इस प्रकार सुनते हैं कि मानो वे खिल्ली उड़ा रहे हों ।3।
لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ④	इस अवस्था में कि उनके दिल बेख़बर होते हैं । और जिन लोगों ने अत्याचार किया उन्होंने अपने गुप्त परामर्शों को छिपा रखा है । क्या यह तुम जैसे मनुष्य के सिवा भी कुछ है ? अत: क्या तुम जादू की ओर बढ़े जाते हो, हालाँकि तुम देख रहे हो ? ।4।
قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ⑤	उसने कहा, मेरा रब्ब प्रत्येक बात को जो आसमान में है और धरती में है ख़ूब जानता है । और वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।5।
بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۖ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ⑥	इसके विपरीत उन्होंने कहा कि ये निरर्थक स्वप्न हैं बल्कि उसने यह भी झूठ से गढ़ा है । वास्तव में यह तो केवल एक कवि है । अत: चाहिए कि यह हमारे पास कोई बड़ा चिह्न लाए जिस प्रकार पहले पैग़म्बर भेजे गए थे ।6।

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٧

उनसे पहले कोई बस्ती जिसे हमने तबाह कर दिया हो ईमान नहीं लाई थी। तो फिर क्या ये ईमान ले आएँगे ? ।7।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨

और तुझ से पहले हमने केवल पुरुषों को ही (नबी बनाकर) भेजा जिनकी ओर हम वह्इ करते थे । अत: (पूर्ववर्ती) पुस्तक वालों से पूछ लो, यदि तुम नहीं जानते ।8।

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٩

और हमने उन्हें ऐसा शरीरधारी नहीं बनाया था कि वे भोजन न करते हों और वे सदा रहने वाले नहीं थे ।9।*

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝١٠

फिर हमने उनसे किया हुआ वादा सच्चा कर दिखाया । अत: हमने उनको और उसे जिसे हमने चाहा मुक्ति प्रदान की । और सीमा उल्लंघन करने वालों को तबाह कर दिया ।10।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١١ ع

नि:सन्देह हमने तुम्हारी ओर वह पुस्तक उतारी है जिसमें तुम्हारे लिए उपदेश है। अत: क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।11। (रुकू $\frac{1}{1}$)

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١٢

और कितनी ही बस्तियों को हमने तबाह कर दिया जो अत्याचार करने वाली थीं । और उनके पश्चात हमने दूसरे लोगों को पैदा कर दिया ।12।

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝١٣ ۭ

अत: जब उन्होंने हमारे अज़ाब को भाँप लिया तो सहसा वे उससे भागने लगे।13।

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ

भागो मत और उस स्थान की ओर वापस जाओ जहाँ तुम्हें सुख-समृद्धि

---

* इस आयत से ज्ञात होता है कि कोई भी नबी संसार में ऐसा नहीं आया जो भोजन किये बिना जीवित रहता था । अत: किसी नबी को जो भोजन करता रहा हो असाधारण रूप से दीर्घायु प्राप्त नहीं हुई।

فِيۡهِ وَمَسٰكِنِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿۱۴﴾

प्रदान की गई थी और अपने घरौंदों की ओर (लौटो) ताकि तुमसे पूछा जाए ।14।

قَالُوۡا يٰوَيۡلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ﴿۱۵﴾

उन्होंने कहा हाय खेद हम पर ! हम निश्चित रूप से अत्याचार करने वाले थे ।15।

فَمَا زَالَتۡ تِّلۡكَ دَعۡوٰىهُمۡ حَتّٰى جَعَلۡنٰهُمۡ حَصِيۡدًا خٰمِدِيۡنَ ﴿۱۶﴾

अतः यही उनकी पुकार रही । यहाँ तक कि हमने उन्हें कटी हुई उजाड़ खेतियों की भाँति बना दिया ।16।

وَمَا خَلَقۡنَا السَّمَآءَ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا لٰعِبِيۡنَ ﴿۱۷﴾

और हमने आकाश और धरती को और जो कुछ इनके बीच है खेल-तमाशा करते हुए पैदा नहीं किया ।17।

لَوۡ اَرَدۡنَاۤ اَنۡ نَّتَّخِذَ لَهۡوًا لَّاتَّخَذۡنٰهُ مِنۡ لَّدُنَّاۤ ‌ۖ اِنۡ كُنَّا فٰعِلِيۡنَ ﴿۱۸﴾

यदि हम चाहते कि कोई मनोविनोद करें, यदि हम (ऐसा) करने वाले होते, तो हम उसे स्वयं अपना लेते ।18।

بَلۡ نَقۡذِفُ بِالۡحَقِّ عَلَى الۡبَاطِلِ فَيَدۡمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ‌ ؕ وَلَـكُمُ الۡوَيۡلُ مِمَّا تَصِفُوۡنَ ﴿۱۹﴾

बल्कि हम सत्य को मिथ्या पर पटकते हैं तो वह उसे कुचल डालता है । और सहसा वह मिट जाता है । और जो तुम बातें बनाते हो उसके कारण तुम्हारा सर्वनाश हो ।19।

وَلَهٗ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ‌ ؕ وَمَنۡ عِنۡدَهٗ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ عَنۡ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسۡتَحۡسِرُوۡنَ‌ ۚ ﴿۲۰﴾

और उसी का है जो आसमानों और धरती में है । और जो उसके निकट रहते हैं वे उसकी उपासना करने में अहंकार से काम नहीं लेते और न कभी थकते हैं ।20।

يُسَبِّحُوۡنَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفۡتُرُوۡنَ ﴿۲۱﴾

वह रात और दिन स्तुति करते हैं (और) कोई सुस्ती नहीं करते ।21।

اَمِ اتَّخَذُوۡۤا اٰلِهَةً مِّنَ الۡاَرۡضِ هُمۡ يُنۡشِرُوۡنَ ﴿۲۲﴾

क्या उन्होंने धरती में से ऐसे उपास्य बना लिए हैं जो पैदा (भी) करते हैं ? ।22।

لَوۡ كَانَ فِيۡهِمَاۤ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا‌ ۚ

यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में अल्लाह के सिवा कोई और उपास्य होते

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٣﴾

तो दोनों तबाह हो जाते । अतः जो वे वर्णन करते हैं उससे पवित्र है अल्लाह (जो) अर्श का रब्ब (है) ।23।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٤﴾

जो वह करता है उसपर वह पूछा नहीं जाता जबकि वे पूछे जाएँगे ।24।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٥﴾

क्या उन्होंने उसके सिवा और उपास्य बना रखे हैं ? तू कह दे कि अपना स्पष्ट प्रमाण लाओ । यह अनुस्मरण उनका है जो मेरे साथ हैं और उनका (भी) अनुस्मरण है जो मुझ से पहले थे। परन्तु उनमें से अधिकतर लोग सत्य का ज्ञान नहीं रखते और वे विमुख होने वाले हैं ।25।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٦﴾

और हमने तुझ से पहले जो भी रसूल भेजा है, हम उसकी ओर वह्इ करते थे कि निःसन्देह मेरे सिवा कोई उपास्य नहीं । अतः मेरी ही उपासना करो ।26।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿٢٧﴾

और उन्होंने कहा कि रहमान (अल्लाह) ने बेटा अपना लिया है । पवित्र है वह । वे सम्माननीय भक्त हैं ।27।

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

वे उसकी बातों से आगे नहीं बढ़ते और वे उसी की आज्ञा के अनुसार कार्य करते हैं ।28।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٩﴾

वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है । और वे केवल उसी की सिफ़ारिश करते हैं जिससे वह प्रसन्न हो और वे उसके प्रताप से डरते रहते हैं ।29।

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ

और उनमें से जो कहे कि मैं उसके सिवा उपास्य हूँ तो वही है जिसे हम

فَذٰلِكَ نَجۡزِيۡهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجۡزِى الظّٰلِمِيۡنَ ۝٣٠

नरक का प्रतिफल देंगे । इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिफल दिया करते हैं ।30। (रुकू $\frac{2}{2}$)

اَوَلَمۡ يَرَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ كَانَتَا رَتۡقًا فَفَتَقۡنٰهُمَا ؕ وَجَعَلۡنَا مِنَ الۡمَآءِ كُلَّ شَىۡءٍ حَىٍّ ؕ اَفَلَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝٣١

क्या उन्होंने देखा नहीं जिन्होंने इनकार किया कि आसमान और धरती दोनों दृढ़ता पूर्वक बन्द थे । फिर हमने उनको फाड़ कर अलग कर दिया और हमने पानी से प्रत्येक सजीव वस्तु उत्पन्न की । तो क्या वे ईमान नहीं लाएँगे ? ।31।

وَجَعَلۡنَا فِى الۡاَرۡضِ رَوَاسِىَ اَنۡ تَمِيۡدَ بِهِمۡ ۖ وَجَعَلۡنَا فِيۡهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمۡ يَهۡتَدُوۡنَ ۝٣٢

और हमने धरती में पर्वत बनाए ताकि वे उनके लिए आहार उपलब्ध करें । और हमने उसमें खुले मार्ग बनाए ताकि वे हिदायत प्राप्त करें ।32।

وَجَعَلۡنَا السَّمَآءَ سَقۡفًا مَّحۡفُوۡظًا ۖۚ وَّهُمۡ عَنۡ اٰيٰتِهَا مُعۡرِضُوۡنَ ۝٣٣

और हमने आकाश को सुरक्षित छत के रूप में बनाया और वे उसके चिह्नों से मुँह फेरे हुए हैं ।33।

وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ۝٣٤

और वही है जिसने रात और दिन को और सूर्य और चन्द्रमा को पैदा किया। सब (अपने-अपने) कक्ष में गतिशील हैं ।34।

وَمَا جَعَلۡنَا لِبَشَرٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ الۡخُلۡدَ ؕ اَفَا۟ئِنۡ مِّتَّ فَهُمُ الۡخٰلِدُوۡنَ ۝٣٥

और हमने किसी मनुष्य को तुझ से पहले अमरत्व प्रदान नहीं किया । अत: यदि तू मर जाए तो क्या वे सदैव रहने वाले होंगे ? ।35।*

كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ ؕ

प्रत्येक जान मृत्यु का स्वाद चखने वाली है । और हम बुराई और भलाई

---

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके कहा गया है कि तुझ से पहले किसी को भी हमने असाधारण रूप से लम्बी आयु प्रदान नहीं की । यह कैसे हो सकता है कि तू मृत्यु को प्राप्त हो जाए जबकि दूसरे असाधारण रूप से लम्बी आयु पायें ? इस आयत से हज़रत ईसा अलै. की मृत्यु भी स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है ।

وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ٣٦

के द्वारा तुम्हारी कठोर परीक्षा लेंगे। और हमारी ओर (ही) तुम लौटाए जाओगे।36।

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۖ أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ٣٧

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, जब भी तुझे देखते हैं तो तुझे केवल (यह कहते हुए) उपहास का पात्र बनाते हैं कि क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे उपास्यों के बारे में बातें करता है ? और ये वही लोग हैं जो रहमान के स्मरण का इनकार करते हैं।37।

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُورِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ٣٨

मनुष्य को उतावलापन प्रवृत्ति-युक्त पैदा किया गया है। मैं अवश्य तुम्हें अपने चिह्न दिखाऊँगा। अतः मुझ से जल्दी करने की माँग न करो।38।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٣٩

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा ?।39।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ٤٠

काश ! वे लोग जो काफ़िर हुए ज्ञान रखते (कि उनका कुछ बस न चलेगा) जब वे अग्नि को न अपने चेहरों से रोक सकेंगे और न अपनी पीठों से। और न ही उन्हें सहायता दी जायेगी।40।

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ٤١

बल्कि वह (घड़ी) उन तक सहसा आएगी और उन्हें हतप्रभ कर देगी। और वे उसे (अपने से) परे हटा देने का सामर्थ्य नहीं रखेंगे। और न ही वे ढील दिए जाएँगे।41।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا

और तुझ से पहले रसूलों से भी उपहास किया गया। अतः जिन्होंने उन (रसूलों) से उपहास किया उन्हें उन्हीं बातों ने घेर लिया जिनके द्वारा वे

بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٢﴾ ع

उपहास किया करते थे ।42।

(रुकू $\frac{3}{3}$)

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۭ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٣﴾

तू कह दे, कौन है जो रात को और दिन को तुम्हें रहमान की पकड़ से बचा सकता है ? बल्कि वे तो अपने रब्ब के स्मरण से ही विमुख हो बैठे हैं ।43।

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۭ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٤﴾

क्या उनके ऐसे उपास्य हैं जो हमारे विरुद्ध उनका बचाव कर सकें ? वे तो स्वयं अपनी सहायता का भी सामर्थ्य नहीं रखते और न ही हमारी ओर से उनका साथ दिया जाएगा ।44।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَاۗءِ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۭ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٥﴾

बल्कि हमने उनको भी और उनके पूर्वजों को भी कुछ लाभ पहुँचाया । यहाँ तक कि उन पर आयु दीर्घ हो गई। अत: क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उसके किनारों से घटाते चले आते हैं ? तो क्या वे फिर भी विजयी हो सकते हैं ? ।45।

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ڮ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٦﴾

तू कह दे कि मैं तो तुम्हें केवल वह्इ के द्वारा सचेत करता हूँ । और बहरे लोग बुलावा नहीं सुनते जब वे सचेत किए जाते हैं ।46।

وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

और यदि उन्हें तेरे रब्ब के अज़ाब की कोई लपट छूएगी तो अवश्य कहेंगे कि हाय हमारा सर्वनाश ! नि:सन्देह हम अत्याचार करने वाले थे ।47।

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۭ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ

और हम न्याय के तराज़ू क़यामत के दिन के लिए स्थापित करेंगे । अत: किसी जान पर लेश मात्र भी अत्याचार नहीं किया जाएगा । चाहे राई के दाने के

حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٨﴾

समान भी कुछ हो हम उसे उपस्थित करेंगे। और हम हिसाब लेने की दृष्टि से पर्याप्त हैं।48।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾

और निःसन्देह हमने मूसा और हारून को फ़ुर्क़ान (सत्य और असत्य में प्रभेदक) और प्रकाश तथा मुत्तक़ियों के लिए अनुस्मारक-ग्रंथ प्रदान किया।49।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٥٠﴾

(अर्थात्) उन लोगों के लिए जो अपने रब्ब से परोक्ष में डरते रहते हैं और निश्चित घड़ी का भय रखते हैं।50।

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥١﴾

और यह मंगलमय अनुस्मारक-ग्रन्थ है जिसे हमने उतारा है। तो क्या तुम इसका इनकार कर रहे हो ?।51। (रुकू $\frac{4}{4}$)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾

और निःसन्देह हमने इब्राहीम को पहले ही उसकी हिदायत प्रदान की थी। और हम उसके बारे में ख़ूब जानकारी रखते थे।52।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٣﴾

जब उसने अपने पिता से और अपनी जाति से कहा, ये मूर्तियाँ क्या चीज़ हैं जिनके लिए तुम समर्पित हुए बैठे हो ?।53।

قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٤﴾

उन्होंने कहा, हमने अपने बाप-दादा को इनकी पूजा करते हुए पाया।54।

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٥﴾

उसने कहा, तो फिर तुम भी और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े रहे।55।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٦﴾

उन्होंने कहा, क्या तू हमारे पास कोई सत्य लाया है अथवा तू केवल मनोविनोद करने वालों में से है ?।56।

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ

उसने कहा, बल्कि तुम्हारा रब्ब आसमानों और धरती का रब्ब है जिसने उनको उत्पन्न किया। और मैं

مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝٥٧

तुम्हारे लिए इस पर गवाही देने वालों में से हूँ ।57।

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٥٨

और अल्लाह की क़सम ! तुम्हारे पीठ फेर कर चले जाने के पश्चात् मैं तुम्हारे मूर्तियों के विरुद्ध कुछ योजना बनाऊँगा ।58।

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝٥٩

अत: उसने उनको टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवाए उनकी बड़ी (मूर्ति) के । ताकि वे उसकी ओर लौट कर आएँ ।59।

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٦٠

उन्होंने कहा, हमारे उपास्यों के साथ ऐसा किसने किया है ? नि:सन्देह वह अत्याचारियों में से है ।60।

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ۝٦١

उन्होंने कहा, हमने एक युवक को सुना था जो उनकी चर्चा कर रहा था । उसे इब्राहीम कहते हैं ।61।

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ۝٦٢

उन्होंने कहा, फिर उसे लोगों की दृष्टि के सामने ले आओ ताकि वे देख लें ।62।

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۝٦٣

उन्होंने कहा, हे इब्राहीम ! क्या तूने हमारे उपास्यों के साथ यह कुछ किया है ? ।63।

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ۝٦٤

उसने कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने यह कार्य किया है । अत: उनसे पूछ लो यदि वे बोल सकते हैं ।64।*

* इस आयत के बारे में कहा जाता है कि **बल फ़अलहू** (बल्कि इस ने किया है) के बाद विराम किया जाए ताकि यह परिणाम निकले कि किसी ने किया है । परन्तु मेरे निकट इसकी कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि हज़रत इब्राहीम अलै. ने स्वयं ही सबको बता दिया था कि मैं तुम्हारे उपास्यों के साथ कुछ करने वाला हूँ । इस लिए यह झूठ नहीं । बल्कि एक असम्भव बात को सम्भव के रूप में प्रस्तुत करना तर्क की एक शैली है जो विशेषकर हज़रत इब्राहीम अलै. को प्राप्त थी । उन के विरोधियों में से एक ने भी इस बात को नहीं माना कि उन मूर्तियों में से बड़ी मूर्ति ने सब को तोड़ा है और इस बात को असम्भव समझना उनकी इस आस्था को झूठा साबित करता है कि उनके उपास्यों में कुछ शक्ति है ।

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٥﴾

फ़िर वे अपने साथियों की ओर चले गए और कहा कि नि:सन्देह तुम ही अत्याचारी हो ।65।

ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٦﴾

फिर उनके सिर शर्मिंदगी से झुक गए (और वे बोले) निश्चित रूप से तू जानता है कि ये बात नहीं करते ।66।

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٧﴾

उसने कहा, फिर क्या तुम अल्लाह के सिवा उसकी उपासना करते हो जो न तुम्हें लेश मात्र लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है ? ।67।

اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

तुम पर और उस पर खेद है जिसकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो । फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।68।

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٩﴾

उन्होंने कहा, यदि तुम कुछ करने वाले हो तो इसको जला डालो और अपने उपास्यों की सहायता करो ।69।

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٧٠﴾

हमने कहा, हे अग्नि ! तू ठंडी पड़ जा और सलामती बन जा इब्राहीम के लिए ।70।*

وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧١﴾

और उन्होंने उससे एक चाल चलने का इरादा किया तो हमने स्वयं उन्हीं को ही पूर्ण रूपेण असफल कर दिया।71।

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٢﴾

और हम उसे और लूत को एक ऐसी धरती की ओर सुरक्षित बचा लाए जिसमें हमने समस्त जगत के लिए बरकत रखी थी ।72।

---

* यहाँ अग्नि से अभिप्राय विरोध की अग्नि भी है और वास्तविक अग्नि भी हो सकती है । अत: वर्तमान युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह ईशवाणी प्राप्त हुई थी कि ''मुझे आग से मत डराओ क्योंकि आग हमारी गुलाम बल्कि गुलामों की गुलाम है ।'' (अरबईन नं. 3, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 429) अग्नि के ठंडा पड़ जाने से अभिप्राय यह है कि उसकी ज्वलनशीलता में किसी को भस्म करने की शक्ति नहीं रहेगी बल्कि वह अग्नि स्वत: ठंडी पड़ जाएगी ।

وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ ؕ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ
وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٣﴾

और उसे हमने इसहाक़ प्रदान किया और पोते के रूप में याकूब और सबको हमने सदाचारी बनाया था ।73।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا
وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ
الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا
لَنَا عٰبِدِيْنَ ۙ ﴿٧٤﴾

और हमने उन्हें ऐसे इमाम बनाया जो हमारे निर्देश से हिदायत देते थे और हम उन्हें अच्छी बातें करने और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने की वह्इ करते थे और वे हमारी उपासना करने वाले थे ।74।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ
مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۙ ﴿٧٥﴾

और लूत को हमने विवेचन-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया और हमने उसे ऐसी बस्ती से मुक्ति प्रदान की जो दुष्कर्म किया करती थी । नि:सन्देह वे एक बड़ी बुराई में लिप्त कुकर्मी लोग थे ।75।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٦﴾ ع

और हमने उसे अपनी कृपा में प्रविष्ट किया । नि:सन्देह वह सदाचारियों में से था ।76। (रुकू $\frac{5}{5}$)

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا
لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيْمِ ۚ ﴿٧٧﴾

और नूह (की भी चर्चा कर) इससे पूर्व जब उसने पुकारा तो हमने उसे उसकी पुकार का उत्तर दिया और उसे और उसके परिवार को एक बड़ी बेचैनी से मुक्ति प्रदान की ।77।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٨﴾

और हमने उन लोगों के विरुद्ध उसकी सहायता की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया था । नि:सन्देह वे एक बड़ी बुराई में लिप्त लोग थे । फिर हमने उन सब को डुबो दिया ।78।

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ
اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا

और दाऊद और सुलैमान (की भी चर्चा कर) जब वे दोनों एक खेत के बारे में निर्णय कर रहे थे जबकि उसमें लोगों

لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٩﴾

की भेड़ बकरियाँ रात को चर गई थीं और हम उनके निर्णय का निरीक्षण कर रहे थे ।79।

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٨٠﴾

अत: हमने सुलैमान को वह बात समझा दी और प्रत्येक को हमने विवेचन-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया और हमने दाऊद के साथ (अल्लाह के) गुणगान करते हुए पर्वतों को और पक्षियों को भी सेवा पर लगा दिया और हम ही (यह सब कुछ) करने वाले थे ।80।*

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

और तुम्हारे लिए हमने उसे कवच बनाने की कला सिखाई ताकि वह तुम्हें तुम्हारी लड़ाइयों (की आघात) से बचाएँ । अत: क्या तुम कृतज्ञ बनोगे ? ।81।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨٢﴾

और सुलैमान के लिए (हमने) तेज़ हवा को (सेवा पर लगाया) जो उसके आदेश से उस धरती की ओर चलती थी जिसमें हमने बरकत रखी थी जबकि हम प्रत्येक वस्तु का ज्ञान रखने वाले थे ।82।**

---

* यहाँ पर्वतों को सेवा पर लगाने से अभिप्राय पर्वतीय जातियों को हज़रत दाऊद अलै. का आज्ञाकारी बनाना है । इसी प्रकार हज़रत सुलैमान अलै. की सेना में पक्षियों की सेना का उल्लेख मिलता है । यह भी आलंकारिक भाषा है । इसके दो अर्थ हैं :- वे मनुष्य जिनको आध्यात्मिक रूप में उड़ने की शक्ति दी गई और वे तीव्र गति वाले यान जो पक्षियों की भाँति तीव्र गति से एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचते थे । हज़रत सुलैमान अलै. की सेना की सबसे तीव्र गति वाली सैन्य टुकड़ी को भी पक्षियों की सेना कहा गया है ।

** हज़रत सुलैमान अलै. के लिए हवाओं को सेवा पर लगाने से अभिप्राय यह है कि फ़िलिस्तीन के तटीय क्षेत्र में एक-एक महीने के पश्चात् हवा की दिशा परिवर्तित होती थी और इस पर हज़रत सुलैमान अलै. के समुद्री जहाज़ उन हवाओं के ज़ोर से चलते थे और एक महीने के पश्चात् फिर दूसरी ओर की हवा चल पड़ती थी ।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۙ﴿٨٣﴾

और शैतानों में से ऐसे भी थे जो उसके लिए ग़ोते लगाते थे और उसके अतिरिक्त अन्य कार्य भी करते थे और हम उनकी सुरक्षा करने वाले थे।83।*

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚ﴿٨٤﴾

और अय्यूब (की भी चर्चा कर) जब उसने अपने रब्ब को पुकारा कि मुझे अत्यन्त कष्ट पहुँचा है और तू कृपा करने वालों में से सबसे बढ़कर कृपा करने वाला है।84।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٥﴾

अत: हमने उसकी दुआ स्वीकार कर ली और उसको जो भी कष्ट था उसे दूर कर दिया और हमने उसे उसके घर वाले प्रदान कर दिए और उनके साथ और भी उन जैसे प्रदान किये जो हमारी ओर से एक कृपा स्वरूप था और उपासनाकारियों के लिए सीख थी।85।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ﴿٨٦﴾

और इस्माईल और इदरीस और ज़ुल क़िफ़्ल (की भी चर्चा कर वे) सब धैर्य धरने वालों में से थे।86।

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٧﴾

और हमने उनको अपनी कृपा में प्रविष्ट किया। नि:सन्देह वे सदाचारियों में से थे।87।

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ

और मछली वाले (की भी चर्चा कर) जब वह क्रोध में भरा हुआ चला और उसने विचार किया कि हम उस की पकड़ नहीं करेंगे। फिर अंधेरों में घिरे हुए उसने पुकारा कि तेरे सिवा कोई

---

* यहाँ शैतानों से अभिप्राय आग से बने हुए शैतान नहीं हैं। अन्यथा समुद्रों में ग़ोता लगाने से यह आग बुझ जाती। बल्कि इससे तात्पर्य उद्दण्डी जातियाँ हैं जिन्हें हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने सेवाधीन किया था। उनमें से कुछ ग़ोताख़ोर भी थे।

مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٨﴾

उपास्य नहीं। तू पवित्र है। नि:सन्देह मैं ही अत्याचारियों में से था।88।*

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـنْجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٩﴾

अत: हमने उसकी दुआ स्वीकार कर ली और उसे शोकमुक्त किया और इसी प्रकार हम ईमान लाने वालों को मुक्ति प्रदान करते हैं।89।

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٩٠﴾

और ज़करिया (की भी चर्चा कर) जब उसने अपने रब्ब को पुकारा कि हे मेरे रब्ब ! मुझे अकेला न छोड़ और तू उत्तराधिकारियों में सर्वश्रेष्ठ है।90।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩١﴾

अत: हमने उसकी दुआ को स्वीकार किया और उसे यह्या प्रदान किया और हमने उसकी पत्नी को उसके लिए स्वस्थ कर दिया। नि:सन्देह वे नेकियों में बहुत बढ़-चढ़ कर भाग लेने वाले थे और हमें चाहत और भय से पुकारा करते थे और हमारे सामने विनयपूर्वक झुकने वाले थे।91।

وَالَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٢﴾

और वह स्त्री जिसने अपनी सतीत्व की भली-भाँति रक्षा की तो हमने उसमें अपने आदेश में से कुछ फूँका और उसे और उसके पुत्र को हमने समस्त जगत के लिए एक चिह्न बना दिया।92।

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٣﴾

नि:सन्देह यही तुम्हारा समुदाय है जो एक समुदाय है और मैं तुम्हारा रब्ब हूँ। अत: तुम मेरी उपासना करो।93।

* हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने जब देखा कि उनकी चेतावनी युक्त भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई तो, चूँकि उनको यह ज्ञान नहीं था कि चेतावनी स्वरूप भविष्यवाणियाँ अनुनय-विनय पूर्वक प्रार्थना करने से अल्लाह तआला टाल दिया करता है, इस लिए वे रूठ कर समुद्र की ओर चले गए जहाँ उनको व्हैल मछली ने निगल लिया और फिर जीवित ही उगल दिया। उस अन्धेरे के समय उनके हृदय से यह दुआ निकली थी कि हे अल्लाह ! तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं। तू पवित्र है और नि:सन्देह मैं अत्याचार करने वालों में से था।

وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٤﴾

और (बाद में) उन्होंने अपने धर्म को टुकड़े-टुकड़े करके परस्पर बांट लिया। सभी हमारी ओर लौट कर आने वाले हैं ।94। (रुकू $\frac{6}{6}$)

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

अत: जो भी कुछ नेकी करेगा और वह मोमिन होगा तो उसके प्रयास का निरादर नहीं किया जाएगा और नि:सन्देह हम उसके पक्ष में (यह बात) लिखने वाले हैं ।95।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٦﴾

और उस बस्ती के लिए पूर्णतया अनिवार्य कर दिया है कि जिस (के रहने वालों) को हमने तबाह कर दिया हो वे पुन: लौट कर नहीं आएँगे ।96।

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٧﴾

यहाँ तक कि जब या'जूज मा'जूज को खोला जाएगा और वे हर ऊँचे स्थान से दौड़े चले आएँगे ।97।*

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِىَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٨﴾

और अटल वादा निकट आ जाएगा तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनकी आँखें सहसा फटी की फटी रह जाएँगी । (वे कहेंगे) हाय हमारा विनाश ! कि हम इस बात से बेख़बर थे, बल्कि हम तो अत्याचार करने वाले थे ।98।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٩﴾

नि:सन्देह तुम और वह जिसकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते थे नरक का ईंधन हो । तुम उसमें उतरने वाले हो ।99।

* आयत संख्या 96, 97 :- इन आयतों में **क़र्यतन्** शब्द से अभिप्राय बस्तीवासी हैं । कोई भी जाति जब तबाह कर दी जाए तो वह दोबारा संसार में वापस नहीं आया करती । अरबी शब्द **हत्ता** से तात्पर्य यह नहीं कि या'जूज मा'जूज के समय में मृत जातियाँ वापस आ जाएँगी । बल्कि **हत्ता** इन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है कि या'जूज मा'जूज के युग में भी कभी मुर्दों को वापस आने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा । अत: देखने में ये लोग (या'जूज मा'जूज) इस प्रकार के चमत्कार दिखाते हैं कि मानों मुर्दों को जीवित कर देते हैं, परन्तु वास्तविक मुर्दों को कदापि जीवित नहीं कर सकते ।

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١٠٠

यदि ये वास्तव में उपास्य होते तो कभी उसमें न उतरते और सभी उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।100।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ۝١٠١

उसके अन्दर उनके भाग्य में चीख़ व पुकार होगी और वे उसमें (कुछ) न सुन सकेंगे ।101।

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ۝١٠٢

नि:सन्देह वे लोग जिनके पक्ष में हमारी ओर से भलाई का आदेश पारित हो चुका है, यही वे लोग हैं जो उससे दूर रखे जाएँगे ।102।

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۝١٠٣

वे उसकी सरसराहट भी न सुनेंगे और जो भी उनके दिल चाहा करते थे (उसके अनुसार) वे उसमें सदा रहने वाले होंगे ।103।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝١٠٤

उन्हें सबसे बड़ी घबराहट भी बेचैन नहीं करेगी और फ़रिश्ते उनसे अधिक से अधिक (यह कहते हुए) मिलेंगे कि यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुम्हें वादा दिया जाता था ।104।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝١٠٥

जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जैसे बही लेखों को लपेटते हैं । जिस प्रकार हमने प्रथम सृष्टि का आरम्भ किया था, उसकी पुनरावृत्ति करेंगे । यह वादा हम पर अनिवार्य है । अवश्य हम यह कर गुज़रने वाले हैं ।105।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ۝١٠٦

और नि:सन्देह हमने ज़बूर में उपदेश के पश्चात् यह लिख रखा था कि प्रतिश्रुत धरती को मेरे सदाचारी भक्त ही उत्तराधिकार में अवश्य पाएँगे।106।*

* यहाँ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की उस भविष्यवाणी की ओर संकेत है जिसका बाइबिल के पुराने-नियम की पुस्तक 'भजन संहिता' अध्याय 37 में उल्लेख है ।

اِنَّ فِیۡ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوۡمٍ عٰبِدِیۡنَ ؕ﴿۱۰۷﴾

इसमें उपासना करने वाले लोगों के लिए नि:सन्देह एक महत्वपूर्ण संदेश है।107।

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۰۸﴾

और हमने तुझे समस्त लोकों के लिए कृपा स्वरूप भेजा है ।108।

قُلۡ اِنَّمَا یُوۡحٰۤی اِلَیَّ اَنَّمَاۤ اِلٰـهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ﴿۱۰۹﴾

तू कह दे कि नि:सन्देह मेरी ओर वह्इ की जाती है कि तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है । अत: क्या तुम आज्ञाकारी बनोगे ? ।109।

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ اٰذَنۡتُكُمۡ عَلٰی سَوَآءٍ ؕ وَاِنۡ اَدۡرِیۡۤ اَقَرِیۡبٌ اَمۡ بَعِیۡدٌ مَّا تُوۡعَدُوۡنَ ﴿۱۱۰﴾

अत: यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दे कि मैंने तुम सबको समान रूप में सूचित कर दिया है और मैं नहीं जानता कि जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है, वह निकट है अथवा दूर ।110।

اِنَّهٗ یَعۡلَمُ الۡجَهۡرَ مِنَ الۡقَوۡلِ وَیَعۡلَمُ مَا تَكۡتُمُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾

नि:सन्देह वह ऊँची आवाज़ में (की गई) बात की भी जानकारी रखता है और उसकी भी जानकारी रखता है जो तुम छिपाते हो ।111।

وَاِنۡ اَدۡرِیۡ لَعَلَّهٗ فِتۡنَةٌ لَّكُمۡ وَمَتَاعٌ اِلٰی حِیۡنٍ ﴿۱۱۲﴾

और मैं नहीं जानता कि सम्भवत: वह तुम्हारे लिए परीक्षा हो और एक समय तक अस्थायी लाभ उठाना हो ।112।

قٰلَ رَبِّ احۡكُمۡ بِالۡحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحۡمٰنُ الۡمُسۡتَعَانُ عَلٰی مَا تَصِفُوۡنَ ﴿۱۱۳﴾ ع

उस (अर्थात् रसूल) ने कहा, हे मेरे रब्ब! तू सत्य के साथ निर्णय कर और हमारा रब्ब वह रहमान है जिससे सहायता की प्रार्थना की जाती है, उसके विरुद्ध जो तुम बातें बनाते हो ।113।

(रुकू $\frac{7}{7}$)

22– सूरः अल–हज्ज

यह मदनी सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 79 आयतें हैं ।

इसकी पहली आयत में समस्त मानव जाति को क़यामत के महाविनाश से डराया गया है । क्योंकि एक ऐसा रसूल आ चुका है जिसने समस्त मानव जाति को रहमान अल्लाह की सुरक्षा में चले आने का निमंत्रण दिया था । जिसको स्वीकार न करने के परिणामस्वरूप ऐसे भयंकर युद्धों से एक बार फिर डराया जा रहा है, मानो समग्र धरती पर महा-प्रलय टूट पड़ेगा, वह ऐसी भयंकर तबाही होगी कि माताएँ अपने दूध पीते बच्चों की रक्षा का विचार भूल जाएँगी और प्रत्येक गर्भवती का गर्भपात हो जाएगा और तू लोगों को ऐसे देखेगा जैसे वे नशे से मदहोश हो चुके हैं । वस्तुतः वे मदहोश नहीं होंगे बल्कि अल्लाह तआला की ओर से अवतरित होने वाले कठोर अज़ाब के कारण वे अपनी चेतना खो चुके होंगे ।

क़यामत से यह भी विचार उत्पन्न होता है कि जब समस्त मानव जाति तबाह हो जायेगी तो दोबारा कैसे जीवित की जाएगी । कहा, जिस अल्लाह ने तुम्हें इससे पूर्व मिट्टी से उत्पन्न किया और फिर माँ की कोख में विभिन्न आकृतियों में से गुज़ारा, वही अल्लाह है जो तुम्हें फिर जीवित कर देगा ।

फिर कहा, लोगों में से वह भी है जो अल्लाह तआला की उपासना ऐसे करता है मानो वह किसी गड्ढे के छोर पर खड़ा हो । जब तक उसको भलाई पहुँचती रहती है वह संतुष्ट रहता है और जब वह परीक्षा में डाला जाता है तो औंधे मुँह गड्ढे में जा गिरता है। यह ऐसा व्यक्ति है जो इहलोक और परलोक दोनों में घाटे में रहता है ।

इसके पश्चात् समस्त धर्मों के अनुयायियों का संक्षेप में वर्णन कर दिया गया कि उनके मध्य अल्लाह तआला क़यामत के दिन निर्णय करेगा ।

इसके बाद अल्लाह तआला का यह ज़रूरी आदेश है कि बैतुल्लाह के हज्ज के लिए आने वालों को ख़ाना का'बा तक पहुँचने से कदापि न रोको । इसके तुरन्त बाद बैतुल्लाह का वर्णन है और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने जो आदेश दिया है, उसका वर्णन है कि मेरे घर को हज्ज पर आने वाले और ए'तिकाफ़ करने वाले के लिए सदैव पवित्र और स्वच्छ रखो । हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जो उपरोक्त आदेश दिया गया, वह केवल उनको ही नहीं बल्कि उनके और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों को क़यामत तक के लिए है ।

फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया गया है कि समस्त मानव जाति को हज्ज के उद्देश्य से ख़ाना का'बा में आने के लिए एक सार्वजनिक

निमंत्रण दो । इसके पश्चात् क़ुर्बानियों इत्यादि का वर्णन किया गया कि वे भी ख़ाना का'बा की भाँति अल्लाह के पवित्र चिह्नों में से हैं, यदि उनका अपमान करोगे तो ख़ाना का'बा का अपमान करोगे । परन्तु ख़ाना का'बा के लिए की जाने वाली सारी क़ुर्बानियाँ उस समय स्वीकार होंगी जब तक़वा के साथ की जाएँगी, क्योंकि अल्लाह तआला को न तो क़ुर्बानियों का माँस पहुँचता है न उनका रक्त बल्कि केवल क़ुर्बानी करने वालों के तक़वा का भाव पहुँचता है ।

इसके पश्चात् जिहाद-बिस्सैफ़ (सशस्त्र संघर्ष) के विषय पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया है और बताया गया है कि केवल उन लोगों को अपनी प्रतिरक्षा के लिए जिहाद बिस्सैफ़ की अनुमति दी जा रही है जिन पर इससे पहले शत्रु की ओर से तलवार उठाई गई और उनको अपने घरों से निकाल दिया गया, केवल इस कारण कि वे यह घोषणा करते थे कि अल्लाह हमारा रब्ब है । इसके पश्चात् इस अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय का भी उल्लेख कर दिया गया कि यदि प्रतिरक्षा की आज्ञा न दी जाती तो केवल मुसलमानों की मस्जिदें ही धराशाई न कर दी जातीं बल्कि यहूदियों और ईसाइयों आदि के उपासनास्थलों और आश्रमों को भी तबाह कर दिया जाता ।

फिर पिछले नबियों का इनकार करने वाली जातियों के विनाश का वर्णन करते हुए इस ओर संकेत किया गया है कि यदि मनुष्य धरती पर भ्रमण करे और आँखें खोल कर विनाश-प्राप्त उन जातियों के समाधिस्थलों को ढूँढे तो अवश्य वह उनके दुःखद अन्त पर जानकारी पाएगा । आजकल प्राचीन अवशेषों के विशेषज्ञ यही कार्य कर रहे हैं और अतीत की अनेक जातियों की समाधियों की खोज कर चुके हैं ।

इसके पश्चात् आयत संख्या 53 में यह कहा गया है कि रसूल की इच्छाओं में यदि कोई स्वार्थ शामिल हो भी जाए तो अल्लाह तआला वह्इ के द्वारा उस स्वार्थ को समाप्त कर देता है । यहाँ शैतान से अभिप्राय तथाकथित अभिशप्त शैतान नहीं अपितु मनुष्य की रगों में रक्त की भाँति दौड़ते-फिरते रहने वाला शैतान है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है :- **वलाकिन्नल्ला ह अआननी अलैहि फ़ अस ल म** (मसनद अहमद बिन हम्बल, मसनद बनी हाशिम) अर्थात अल्लाह तआला ने उस (शैतान) के विरुद्ध मेरी सहायता की और वह मुसलमान हो गया है । अतः आयत संख्या 53 का कदापि यह तात्पर्य नहीं कि वास्तव में कोई शैतान नबियों के दिलों में दुर्भावना उत्पन्न करता है क्योंकि एक दूसरे स्थान (सूरः अश-शुअरा आयत 222, 223) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शैतान को रसूलों के निकट भी फटकने की आज्ञा नहीं हो सकती। वह तो अत्यन्त झूठे और कुकर्मी दुराचारी लोगों पर ही उतरता है और रसूलों पर यह कथन किसी रूप में लागू नहीं हो सकता ।

इस सूरः के अन्तिम रुकू में यह वर्णन किया गया है कि जिन्हें ये लोग अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं उन काल्पनिक साझीदारों को तो इतना भी सामर्थ्य नहीं कि एक मक्खी यदि किसी वस्तु को चाट जाए तो उसे उसके मुख से वापिस ले सकें। वास्तव में एक मक्खी के मुख में किसी वस्तु के प्रवेश होते ही उसकी लार के प्रभाव से और उसके पेट में रासायनिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप वह वस्तु अपनी असली हालत में रह ही नहीं सकती।

इस सूरः की अन्तिम आयत में अल्लाह के मार्ग में वह जिहाद करने का उपदेश दिया गया है, जिसकी व्याख्या इससे पहले कर दी गई है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके अनुयायियों को अल्लाह तआला ने ही मुस्लिम घोषित किया है। वह सबसे अधिक जानता है कि कौन उसके समक्ष शीष झुका कर पूर्णतया आज्ञा का पालन करता है।

अन्त में इस घोषणा की पुनरावृत्ति की गयी है कि हज़रत **मुहम्मद** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक सार्वभौमिक रसूल हैं।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَّ سَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّ عَشَرَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ
السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ۝٢

हे लोगो ! अपने रब्ब का तक़्वा धारण करो । नि:सन्देह निर्धारित घड़ी का भूकम्प एक बहुत बड़ी चीज़ होगी ।2।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ
اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ
بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ۝٣

जिस दिन तुम उसे देखोगे, प्रत्येक दूध पिलाने वाली उसे भूल जाएगी जिसे वह दूध पिलाती थी और प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और तू लोगों को मदहोश देखेगा हालाँकि वे मदहोश नहीं होंगे परन्तु अल्लाह का अज़ाब बहुत कठोर होगा ।3।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۙ۝٤

और लोगों में से ऐसा भी है जो बिना किसी जानकारी के अल्लाह के विषय में झगड़ा करता है और प्रत्येक उद्दण्डी शैतान का अनुसरण करता है ।4।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ
وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٥

उस पर यह बात निश्चित कर दी गई है कि जो उससे मित्रता करेगा तो वह उसे भी अवश्य पथभ्रष्ट कर देगा और उसे भड़कती हुई अग्नि के अज़ाब की ओर ले जाएगा ।5।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ
الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ

हे लोगो ! यदि तुम पुनर्जीवित होने के सम्बन्ध में शंका में पड़े हो तो नि:सन्देह हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया था, फिर वीर्य से, फिर ख़ून के थक्के से, फिर माँस पिंड से, जिसे विशेष रचनात्मक प्रक्रिया अथवा साधारण रचनात्मक प्रक्रिया से

مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ
وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ
لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا
يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَتَرَى الْاَرْضَ
هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ
وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝٦

बनाया गया ताकि हम तुम पर (सृष्टि के भेद) खोल दें और हम जिसे चाहें कोख के भीतर एक निर्धारित समय तक ठहराते हैं, फिर हम तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालते हैं ताकि फिर तुम अपनी परिपक्व आयु को पहुँचो । और तुम ही में से वह है जिसको मृत्यु दे दी जाती है और तुम ही में से वह भी है जो चेतना खो देने की आयु तक पहुँचाया जाता है ताकि ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् पूर्णतया ज्ञान रहित हो जाए और तू धरती को शुष्क बंजर पाता है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह (विकसित होने की दृष्टि से) गतिशील हो जाती है और फूलने लगती है और (वह) प्रत्येक प्रकार के हरे-भरे सुन्दर जोड़े उगाती है ।6।*

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى
وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٧

यह इस कारण है कि निःसन्देह अल्लाह ही सत्य है और वही मुर्दों को जीवित करता है और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।7।

---

* इस आयत में सबसे पहले तो उल्लेखनीय बात यह है कि मानव विकास के समस्त चरण इसमें वर्णन कर दिए गये हैं । यहाँ तक कि माँ के गर्भस्थ भ्रूण में जो परिवर्तन होते हैं वह भी क्रमशः बिल्कुल उसी प्रकार वर्णन कर दिये गये हैं जैसा कि वैज्ञानिकों ने इस युग में खोज निकाला है । यह आयत इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इन विषयों में कोई निजी ज्ञान नहीं था और सर्वज्ञ अल्लाह के सिवा कोई आप सल्ल. को इन बातों की जानकारी नहीं दे सकता था।

फिर आगे चल कर इस पवित्र आयत में यह वर्णन किया गया है कि हमने शुष्क मिट्टी पर पानी बरसा कर धरती को भी जीवन प्रदान किया था । यह अद्‌भुत और विस्मय जनक खोज है कि वैज्ञानिकों के कथनानुसार शुष्क धरती पर जब पानी बरसता है तो वास्तव में उसमें जीवन के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं । यहाँ वास्तविक रूप से इस ओर संकेत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर जो आसमानी पानी बरसा है उसने एक निर्जीव धरती अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टि से मृत जाति को जीवित कर दिया ।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ۝٨

और क़यामत अवश्य आकर रहेगी । उसमें कोई संदेह नहीं और निःसन्देह अल्लाह उन्हें उठाएगा जो क़ब्रों में पड़े हुए हैं ।8।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ ۝٩

और लोगों में से ऐसा भी है जो बिना ज्ञान के और बिना हिदायत के और बिना किसी उज्ज्वल पुस्तक के अल्लाह के बारे में झगड़ा करता है ।9।

ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝١٠

(अहंकार पूर्वक) अपना पहलू मोड़ते हुए। ताकि अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) पथभ्रष्ट कर दे । उसके लिए संसार में अपमान होगा और क़यामत के दिन भी हम उसे अग्नि का अज़ाब चखाएँगे ।10।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١١ ع

यह उसके फलस्वरूप है जो तेरे दोनों हाथों ने आगे भेजा और निःसन्देह अल्लाह भक्तों पर लेश-मात्र भी अत्याचार करने वाला नहीं ।11।

(रुकू $\frac{1}{8}$)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝١٢

और लोगों में से वह भी है जो केवल सरसरी ढंग से अल्लाह की उपासना करता है । अतः यदि उसे कोई भलाई पहुँच जाए तो उससे संतुष्ट हो जाता है और यदि उसे किसी परीक्षा में डाला जाए तो वह विमुख हो जाता है। वह इहलोक भी गंवा बैठा और परलोक भी । यह तो बहुत खुल्लम-खुल्ला घाटा है ।12।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝١٣

वह अल्लाह के सिवा उसे पुकारता है जो न उसे हानि पहुँचा सकता है और न उसे लाभ पहुँचा सकता है । यही घोर पथभ्रष्टता है ।13।

يَدْعُوا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٤﴾

वह उसे पुकारता है जिस के हानि पहुँचाने की सम्भावना उसके लाभ पहुँचाने से अधिक है । क्या ही बुरा संरक्षक है और क्या ही बुरा साथी है ।14।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٥﴾

नि:सन्देह अल्लाह उन्हें जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । नि:सन्देह अल्लाह जो चाहता है करता है ।15।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٦﴾

जो व्यक्ति यह विचार करने लगा है कि अल्लाह इस (रसूल) की इहलोक और परलोक में सहायता नहीं करेगा, तो चाहिए कि वह आकाश की ओर मार्ग बनाए, फिर (इस सहायता को) विच्छिन्न कर दे, फिर देख ले कि क्या उसका उपाय उस बात को दूर कर सकता है जो (उसे) क्रोध दिलाता है ।16।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٧﴾

और इसी प्रकार हमने इसे खुली-खुली उज्ज्वल आयतों के रूप में उतारा है और (सत्य यह है कि) अल्लाह उसे हिदायत देता है जो (हिदायत) चाहता है ।17।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٨﴾

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और वे जो यहूदी हुए और साबी और ईसाई और पारसी तथा वे लोग जिन्होंने शिर्क किया, अल्लाह अवश्य उनके बीच क़यामत के दिन निर्णय करेगा । नि:सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है ।18।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही है कि जो कुछ आसमानों में है और जो धरती में है और सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, पर्वत,

وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۗ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿١٩﴾ ۩

वृक्ष और चलने फिरने वाले समस्त जीवधारी तथा बहुसंख्यक मनुष्य भी उसे सजद: करते हैं । जबकि बहुत से ऐसे हैं जिन पर उसका अज़ाब अनिवार्य हो चुका है और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे तो उसको सम्मान देने वाला कोई नहीं । नि:सन्देह अल्लाह जो चाहता है करता है ।19।

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۗ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۚ ﴿٢٠﴾

ये दो झगड़ालू हैं जिन्होंने अपने रब्ब के बारे में झगड़ा किया । अत: वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके लिए अग्नि के वस्त्र तैयार किये जाएँगे । उनके सिरों के ऊपर से अत्यन्त गर्म पानी उंडेला जाएगा ।20।

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ۗ ﴿٢١﴾

इससे जो कुछ उनके पेटों में है, गला दिया जाएगा और उनकी त्वचाएँ भी ।21।

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢٢﴾

और उनके लिए लोहे के हथौड़े होंगे।22।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٣﴾ ع

जब कभी वे इरादा करेंगे कि शोक की अधिकता के कारण उसमें से निकल जाएँ, वे उसी में लौटा दिए जाएँगे और (उनसे कहा जाएगा कि) तुम अग्नि का अज़ाब चखो ।23। (रुकू $\frac{2}{9}$)

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۗ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٤﴾

नि:सन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । उनमें उन्हें सोने के कड़े और मोती पहनाए जाएँगे और उनमें उनका वस्त्र रेशम (का) होगा ।24।

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ

और पवित्र वचन की ओर उनका मार्ग-दर्शन किया जाएगा और अति प्रशंसनीय

وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٥﴾

(अल्लाह) की राह की ओर उनका मार्गदर्शन किया जाएगा ।25।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨالْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾

नि:सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और वे अल्लाह के मार्ग से और उस मस्जिद-ए-हराम से रोकते हैं जिसे हमने समस्त मनुष्यों के हित के लिए इस प्रकार बनाया है कि इसमें (अल्लाह के लिए) बैठे रहने वाले और मरुभूमि निवासी (सब) समान हैं, और जो भी अत्याचार पूर्वक इसमें बिगाड़ उत्पन्न करने की चेष्टा करेगा उसे हम पीड़ाजनक अज़ाब चखाएँगे ।26।

(रुकू $\frac{3}{10}$)

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٧﴾

और जब हमने इब्राहीम के लिए ख़ाना का'बा का स्थान निरूपित किया (यह कहते हुए कि) किसी को मेरा साझीदार न ठहरा और मेरे घर को, परिक्रमा करने वालों और खड़े होकर उपासना करने वालों तथा रुकू करने वालों (और) सजद: करने वालों के लिए पवित्र एवं स्वच्छ रख ।27।

وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ۙ﴿٢٨﴾

और लोगों में हज्ज की घोषणा कर दे । वे तेरे पास पैदल चल कर आएँगे और प्रत्येक ऐसी सवारी पर भी जो लम्बी यात्रा की थकान से दुबली हो गई हो । वे (सवारियाँ और चीज़ें) प्रत्येक गहरे और दूर के मार्ग से आएँगी ।28।

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ

ताकि वे वहाँ पर अपने हितों को देख सकें और कुछ निश्चित दिनों में उस (अनुकम्पा) के कारण अल्लाह के नाम की चर्चा करें कि उसने मवेशी

مِّنۢ بَهِيۡمَةِ الۡاَنۡعَامِ‌ ۚ فَكُلُوۡا مِنۡهَا وَاَطۡعِمُوا الۡبَآٮِٕسَ الۡفَقِيۡرَ ‏۝٢٩

चौपायों के द्वारा उन्हें जीविका प्रदान की है । अतः उनमें से (स्वयं भी) खाओ और अभावग्रस्त निर्धनों को भी खिलाओ ।29।

ثُمَّ لۡيَقۡضُوۡا تَفَثَهُمۡ وَلۡيُوۡفُوۡا نُذُوۡرَهُمۡ وَلۡيَطَّوَّفُوۡا بِالۡبَيۡتِ الۡعَتِيۡقِ‏ ۝٣٠

फिर चाहिए कि वे अपने (पाप की) मैल को दूर करें और अपनी मन्नतों को पूरा करें और इस प्राचीन घर की परिक्रमा करें ।30।

ذٰ لِكَ ۚ وَمَنۡ يُّعَظِّمۡ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيۡرٌ لَّهٗ عِنۡدَ رَبِّهٖ‌ ؕ وَاُحِلَّتۡ لَـكُمُ الۡاَنۡعَامُ اِلَّا مَا يُتۡلٰى عَلَيۡكُمۡ‌ فَاجۡتَنِبُوا الرِّجۡسَ مِنَ الۡاَوۡثَانِ وَاجۡتَنِبُوۡا قَوۡلَ الزُّوۡرِ ۙ‏ ۝٣١

यह (हमने आदेश दिया) और जो भी उन वस्तुओं का आदर करेगा जिन्हें अल्लाह ने सम्मान प्रदान किया है तो यह उसके लिए उसके रब्ब के निकट उत्तम है । और तुम्हारे लिए चौपाये वैध कर दिए गए सिवाय उनके जिनका वर्णन तुम से किया जाता है । अतः मूर्तियों की अपवित्रता से दूर रहो और झूठ बोलने से बचो ।31।

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيۡرَ مُشۡرِكِيۡنَ بِهٖ‌ ؕ وَمَنۡ يُّشۡرِكۡ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخۡطَفُهُ الطَّيۡرُ اَوۡ تَهۡوِىۡ بِهِ الرِّيۡحُ فِىۡ مَكَانٍ سَحِيۡقٍ‏ ۝٣٢

सदा अल्लाह की ओर झुकते हुए उसका साझीदार न ठहराते हुए । और जो भी अल्लाह का साझीदार ठहराएगा तो मानो वह आकाश से गिर गया । फिर या तो उसे पक्षी उचक लेंगे अथवा हवा उसे किसी दूर जगह जा फेंकेगी ।32।

ذٰ لِكَ ۚ وَمَنۡ يُّعَظِّمۡ شَعَآٮِٕرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنۡ تَقۡوَى الۡقُلُوۡبِ‏ ۝٣٣

यह (महत्वपूर्ण बात है) और जो कोई अल्लाह के पवित्र चिह्नों के प्रति सम्मान प्रदर्शन करेगा तो निःसन्देह यह बात दिलों में तक़वा (होने) का लक्षण है ।33।

لَـكُمۡ فِيۡهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

तुम्हारे लिए उन (क़ुर्बानी के चौपायों) में एक निर्धारित समय तक लाभ निहित हैं । फिर उन्हें पुरातन घर

ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝٣٤ ع

(ख़ाना का'बा) तक पहुँचाना है ।34।
(रुकू $\frac{4}{11}$)

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝٣٥

और हमने प्रत्येक समुदाय के लिए क़ुर्बानी की विधि निश्चित की है ताकि वे उस पर अल्लाह का नाम उच्चारण करें जो उसने उन्हें मवेशी चौपाय प्रदान किए हैं । अत: तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है । अत: उसके लिए आज्ञाकारी हो जाओ । और विनम्रता करने वालों को शुभ-समाचार दे दे ।35।

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣٦

उन लोगों को, कि जब अल्लाह की चर्चा की जाती है तो उनके दिल भयभीत हो जाते हैं । और जो कष्ट उन्हें पहुँचा हो उस पर धैर्य धरने वाले हैं । और नमाज़ को क़ायम करने वाले हैं और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसमें से ख़र्च करते हैं ।36।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖۗ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٣٧

और क़ुर्बानी के ऊँट, जिन्हें हमने तुम्हारे लिए अल्लाह के पवित्र चिह्नों में शामिल कर दिया है उनमें तुम्हारे लिए भलाई है। अत: पंक्ति में खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम उच्चारण करो । फिर जब (ज़िबह करने के पश्चात्) उनके धड़ धरती पर गिर जाएँ तो उनमें से खाओ और अभावग्रस्त होने पर भी संतुष्ट रहने वालों को और माँगने वालों को भी खिलाओ । इसी प्रकार हमने उन्हें तुम्हारी सेवा में लगा रखा है ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ।37।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا

अल्लाह तक उनके माँस कदापि नहीं पहुँचेंगे और न उनके रक्त । परन्तु

وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۗ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٣٨

तुम्हारा तक़वा उस तक पहुँचेगा । इसी प्रकार उसने तुम्हारे लिए उन्हें सेवा में लगा दिया है ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई का वर्णन करो । इस कारण कि उसने तुम्हें हिदायत प्रदान की और उपकार करने वालों को शुभ-समाचार दे दे ।38।

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝٣٩ ع

नि:सन्देह अल्लाह उनका जो ईमान लाए बचाव करता है । नि:सन्देह अल्लाह किसी ग़बन करने वाले कृतघ्न को पसन्द नहीं करता ।39। (रुकू $\frac{5}{12}$)

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝٤٠

उन लोगों को, जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है (युद्ध करने की) अनुमति दी जाती है क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया और निश्चित रूप से अल्लाह उनकी सहायता करने पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है ।40।

الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٤١

(अर्थात्) वे लोग जिन्हें उनके घरों से अन्यायपूर्वक निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब्ब है । और यदि अल्लाह की ओर से उनमें से कुछ को कुछ अन्यों से भिड़ा कर लोगों का बचाव न किया जाता तो मठ और गिरजे और यहूदियों के उपासना गृह तथा मस्जिदें भी ध्वस्त कर दी जातीं जिनमें अधिकतापूर्वक अल्लाह का नाम लिया जाता है । और अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा जो उसकी सहायता करता है । नि:सन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।41।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٤٢﴾

जिन्हें हम धरती में यदि दृढ़ता प्रदान करें तो वे नमाज़ को क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं । और नेक बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं । और प्रत्येक बात का परिणाम अल्लाह ही के अधिकार में है ।42।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿٤٣﴾

और यदि वे तुझे झुठला दें तो उनसे पहले नूह की जाति ने और आद और समूद (जाति) ने भी (अपने नबियों को) झुठला दिया था ।43।

وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٤﴾

और इब्राहीम की जाति ने और लूत की जाति ने भी ।44।

وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾

और मदयन निवासियों ने (भी ऐसा ही किया) और मूसा को भी झुठलाया गया। अतः मैंने काफ़िरों को कुछ ढील दी फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया । अतः कैसी थी मेरी पकड़ ! ।45।

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٦﴾

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने तबाह कर दिया जबकि वे अत्याचार करने वाली थीं । अतः अब वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं । और कितने ही परित्यक्त कुएँ हैं और दृढ़ निर्मित महल हैं (जिन से ऐसा ही व्यवहार किया गया) ।46।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَاۤ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٧﴾

अतः क्या वे धरती में नहीं फिरे ताकि उन्हें ऐसे दिल मिलते जिनसे वे बुद्धिमत्तापूर्वक काम लेते । अथवा ऐसे कान मिलते जिनसे वे सुन सकते । वस्तुतः आँखें अंधी नहीं होतीं बल्कि दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं ।47।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿۴۸﴾

और वे तुझ से शीघ्रतापूर्वक अज़ाब माँगते हैं जबकि अल्लाह कदापि अपना वादा नहीं तोड़ेगा। और नि:सन्देह तेरे रब्ब के पास ऐसा भी दिन है जो तुम्हारी गणनानुसार एक हज़ार वर्ष का है।48।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿۴۹﴾ ع

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें मैंने ढील दी जबकि वे अत्याचारी थीं। फिर मैंने उनको पकड़ लिया और मेरी ही ओर लौटना है।49। (रुकू $\frac{6}{13}$)

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ ﴿۵۰﴾

तू कह दे कि हे सभी लोगो! मैं तुम्हारे लिए केवल एक खुला-खुला सतर्ककारी हूँ।50।

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۵۱﴾

अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए क्षमादान है और एक सम्मान युक्त जीविका है।51।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۵۲﴾

और वे लोग जिन्होंने हमारी चिह्नों को विफल करने की चेष्टा करते हुए बहुत भाग दौड़ की, वही नरक वाले हैं।52।

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۙ ﴿۵۳﴾

और हमने तुझ से पहले न कोई रसूल भेजा और न नबी, परन्तु जब भी उसने (कोई) अभिलाषा की (मन के) शैतान ने उसकी अभिलाषा में (मिलावट के रूप में कुछ) डाल दिया। तब अल्लाह उसे मिटा देता है जो शैतान डालता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों को सुदृढ़ कर देता है। और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है।53।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

(यह इस लिए है) ताकि वह उसे जो शैतान अपनी ओर से डाले केवल उन लोगों के लिए परीक्षा का कारण बना दे

وَّالۡقَاسِيَةِ قُلُوۡبُهُمۡ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ لَفِىۡ شِقَاقٍۭ بَعِيۡدٍ ۙ﴿۵۴﴾

जिनके दिलों में रोग है और जिनके हृदय कठोर हो चुके हैं । और नि:सन्देह अत्याचार करने वाले घोर विरोध में पड़े हुए हैं ।54।

وَّلِيَـعۡلَمَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ اَنَّهُ الۡحَـقُّ مِنۡ رَّبِّكَ فَيُؤۡمِنُوۡا بِهٖ فَتُخۡبِتَ لَهٗ قُلُوۡبُهُمۡ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۵۵﴾

और (यह इस लिए है) ताकि वे लोग जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया जान लें कि यह तेरे रब्ब की ओर से सत्य है । अत: वे उस पर ईमान ले आएँ और उसकी ओर उनके दिल झुक जाएँ । और नि:सन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए सन्मार्ग की ओर हिदायत देने वाला है ।55।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّنۡهُ حَتّٰى تَاۡتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً اَوۡ يَاۡتِيَهُمۡ عَذَابُ يَوۡمٍ عَقِيۡمٍ ﴿۵۶﴾

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया सदा उसके विषय में शंका में पड़े रहेंगे यहाँ तक कि सहसा उन तक क्रांति का पल आ पहुँचेगा । अथवा ऐसे दिन का अज़ाब उन्हें आ पकड़ेगा जो खुशियों से विहीन होगा ।56।

اَلۡمُلۡكُ يَوۡمَٮِٕذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحۡكُمُ بَيۡنَهُمۡ ؕ فَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىۡ جَنّٰتِ النَّعِيۡمِ ﴿۵۷﴾

शासन उस दिन अल्लाह ही का होगा । वह उनके बीच निर्णय करेगा । अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किये नेमतों वाले स्वर्गों में होंगे ।57।

وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَكَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓٮِٕكَ لَهُمۡ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ﴿۵۸﴾ ع

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारे चिह्नों को झुठलाया तो यही हैं वे जिनके लिए अपमान जनक अज़ाब (निश्चित) है ।58। (रुकू $\frac{7}{14}$)

وَالَّذِيۡنَ هَاجَرُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوۡۤا اَوۡ مَاتُوۡا لَيَرۡزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزۡقًا حَسَنًا ؕ

और वे लोग जिन्होंने अल्लाह के मार्ग में हिजरत की, फिर वे वध किए गए अथवा स्वभाविक मृत्यु को प्राप्त हुए, अल्लाह उनको अवश्य उत्तम जीविका

وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٩﴾

प्रदान करेगा । और नि:सन्देह अल्लाह ही है जो जीविका प्रदान करने वालों में सर्वोत्तम है ।59।

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾

वह अवश्य उन्हें ऐसे स्थान में प्रविष्ट करेगा जिसे वे पसन्द करेंगे । और नि:सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सहनशील है ।60।

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦١﴾

यह इसी प्रकार होगा । और जो (किसी पर) वैसी ही सख़्ती करे जैसी सख़्ती उस पर की गई हो और फिर उसके विरुद्ध (इसके परिणाम स्वरूप) उद्दंडता मचाई जाए तो नि:सन्देह अल्लाह उसकी अवश्य सहायता करेगा । नि:सन्देह अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला (और) अत्यन्त क्षमाशील है ।61।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦٢﴾

यह इस कारण है कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।62।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٣﴾

यह उसी प्रकार है क्योंकि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे उसके सिवा पुकारते हैं वही मिथ्या है । और नि:सन्देह अल्लाह ही बहुत ऊँची शान वाला है (और) बहुत बड़ा है ।63।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٤﴾ۚ

क्या तूने देखा नहीं कि अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा तो धरती उससे हरी-भरी हो जाती है । नि:सन्देह अल्लाह बहुत सूक्ष्मदर्शी और सदा अवगत रहता है ।64।

لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الۡغَنِىُّ الۡحَمِيۡدُ ﴿۶۵﴾ ع ۸/۱۵

उसी का है जो आसमानों में है और जो धरती में है । और नि:सन्देह अल्लाह ही है जो बेपरवा (और) अति प्रशंसनीय है ।65। (रुकू $\frac{8}{15}$)

اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَـكُمۡ مَّا فِى الۡاَرۡضِ وَالۡـفُلۡكَ تَجۡرِىۡ فِى الۡبَحۡرِ بِاَمۡرِهٖ ؕ وَيُمۡسِكُ السَّمَآءَ اَنۡ تَقَعَ عَلَى الۡاَرۡضِ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۶۶﴾

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने जो कुछ धरती में है तुम्हारे लिए सेवा पर लगा दिया है और नौकाओं को भी । वे उसकी आज्ञा से समुद्र में चलती हैं । और वह आसमान को रोके हुए है कि वह उसके आदेश के बिना धरती पर न गिरे। नि:सन्देह अल्लाह मनुष्यों पर बहुत ही दयाशील (और) बार-बार कृपा करने वाला है ।66।

وَهُوَ الَّذِىۡۤ اَحۡيَاكُمۡ ثُمَّ يُمِيۡتُكُمۡ ثُمَّ يُحۡيِيۡكُمۡ ؕ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَـكَفُوۡرٌ ﴿۶۷﴾

और वही है जिसने तुम्हें जीवित किया है । फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जीवित करेगा । नि:सन्देह मनुष्य बड़ा कृतघ्न है ।67।

لِـكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلۡنَا مَنۡسَكًا هُمۡ نَاسِكُوۡهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِى الۡاَمۡرِ وَادۡعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۶۸﴾

प्रत्येक संप्रदाय के लिए हमने क़ुर्बानी की विधि निर्धारित की है जिसके अनुसार वे क़ुर्बानी करते हैं । अत: वे इस विषय में तुझ से कदापि कोई झगड़ा न करें और तू अपने रब्ब की ओर बुला । नि:सन्देह तू हिदायत की सीधी राह पर (अग्रसर) है ।68।

وَاِنۡ جٰدَلُوۡكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۶۹﴾

और यदि वे तुझ से झगड़ा करें तो कह दे कि अल्लाह उसे ख़ूब जानता है जो तुम करते हो ।69।

اَللّٰهُ يَحۡكُمُ بَيۡنَكُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كُنۡتُمۡ فِيۡهِ تَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۷۰﴾

अल्लाह क़यामत के दिन तुम्हारे बीच उस विषय में फ़ैसला करेगा जिस में तुम मतभेद करते थे ।70।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧١﴾

क्या तुझे जानकारी नहीं कि अल्लाह उसे जानता है जो आसमान और धरती में है। निश्चित रूप से यह (सब कुछ) एक पुस्तक में है । निःसन्देह यह बात अल्लाह के लिए सरल है ।71।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُم بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٧٢﴾

और वे अल्लाह के सिवा उसकी उपासना करते हैं जिस के बारे में उसने कोई निर्णायक तर्क नहीं उतारा और जिसकी उन्हें कोई जानकारी नहीं । और अत्याचारियों के लिए कोई सहायक नहीं होगा ।72।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۗ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ ۗ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾ ع

और जब उन के समक्ष हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनके चेहरों पर जिन्होंने इनकार किया तू अप्रियता (के लक्षण) पहचान लेता है। सम्भव है कि वे उन पर झपट पड़ें जो उनके सामने हमारी आयतें पढ़ते हैं । अतः तू कह दे कि क्या मैं तुम्हें इससे अधिक बुराई वाली बात से अवगत करूँ । (अर्थात) आग । उसका अल्लाह ने उनसे वादा किया है जिन्होंने इनकार किया और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है ।73। (रुकू $\frac{9}{16}$)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۗ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۗ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ

हे मनुष्यो ! एक महत्वपूर्ण उदाहरण वर्णन किया जा रहा है । अतः इसे ध्यानपूर्वक सुनो । निःसन्देह वे लोग जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो कदापि एक मक्खी भी न बना सकेंगे चाहे वे इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ । और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसको उससे छुड़ा नहीं सकते । क्या

مِنْهُ ۭ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٤﴾

ही असहाय है (वरदान) माँगने वाला और वह जिससे (वरदान) माँगा जाता है ।74।

مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٥﴾

उन्होंने अल्लाह की महानता का वैसा अनुमान नहीं लगाया जैसा कि उसका अनुमान लगाना चाहिए था । नि:सन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।75।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٧٦﴾ۚ

अल्लाह फ़रिश्तों में से रसूल चुनता है और मनुष्यों में से भी । नि:सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।76।*

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٧٧﴾

वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है । और अल्लाह ही की ओर (सब) मामले लौटाए जाएँगे ।77।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٨﴾ۚ السجدة

السجدة عند الإمام الشافعي

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! रुकू करो और सजद: करो और अपने रब्ब की उपासना करो । और अच्छे कर्म करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।78।

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ۭ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ۭ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ۭ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ڏ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ

और अल्लाह के संबंध में जिहाद करो जिस प्रकार उसके लिए जिहाद करना उचित है । उसने तुम्हें चुन लिया है और तुम पर धर्म के मामलों में कोई तंगी नहीं डाली । यही तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म था । उस (अर्थात् अल्लाह) ने तुम्हारा नाम **मुसलमान** रखा । (इस से) पूर्व भी और इस (क़ुरआन) में भी ।

* इस पवित्र आयत में एक ईश्वरीय परम्परा को निश्चित नियम स्वरूप वर्णन किया गया है जिसके समाप्त होने का कोई उल्लेख नहीं । अर्थात् यह कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों को अथवा मनुष्यों को सदा अपना रसूल बना कर भेजा करता है ।

وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۖ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ۗ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٩﴾ ع

ताकि रसूल तुम सब पर निरीक्षक बन जाए और तुम समस्त मनुष्यों पर निरीक्षक बन जाओ । अत: नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात दो और अल्लाह को दृढ़ता पूर्वक थाम लो । वही तुम्हारा स्वामी है । अत: क्या ही अच्छा स्वामी और क्या ही अच्छा सहायक है ।79।*

(रुकू $\frac{10}{17}$)

---

* इस आयत में ध्यान देने योग्य बात मुख्यत: यह है कि **मुस्लिम** शब्द पर किसी का एकाधिकार नहीं। इस्लाम से बहुत पूर्व ही अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को और उनकी जाति को मुस्लिम घोषित किया था ।

इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का समस्त मुसलमानों पर शहीद अर्थात् निरीक्षक होने का उल्लेख है और मुसलमानों का शेष दूसरी जातियों पर शहीद होने का वर्णन है । जिन अर्थों में हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपने समय में शहीद थे, ठीक उसी प्रकार आप सल्ल. का अनुसरण करते हुए मुसलमान दूसरों पर शहीद हैं । परन्तु शहीद होने का यह अर्थ नहीं कि दूसरों को ज़बरदस्ती अपनी पसंद का मुसलमान बनाया जाए । क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने शहीद होते हुए भी कभी आक्रामक रूप से युद्ध नहीं किया और न ही किसी को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया ।

23- सूर: अल-मु'मिनून

मक्का में अवतरित होने वाली यह अन्तिम सूरतों में से है । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 119 आयतें हैं ।

पिछली सूर: के अन्त पर यह उल्लेख था कि वास्तविक सफलता नमाज़ को क़ायम करने और ज़कात अदा करने तथा इस बात में है कि अल्लाह तआला को दृढ़ता पूर्वक थाम लिया जाए । अतएव जिस महान सफलता का इसमें संकेत मिलता है उसका विस्तृत विवरण सूर: अल मु'मिनून की प्रारम्भिक आयतों में उल्लेख है कि सफलता प्राप्त करने वाले वे मोमिन हैं जो केवल नमाज़ को क़ायम नहीं करते और ज़कात अदा नहीं करते बल्कि उनमें और भी अनेकों गुण पाये जाते हैं । वे दोनों प्रकार के गुण हैं अर्थात् किन-किन बातों से बचते हैं और किस प्रकार के नेक कर्म करते हैं ।

इसके बाद यह भी कहा गया है कि यद्यपि जीवन का पानी आकाश से उतरता है और उसके बार-बार आकाश से उतरने की व्यवस्था मौजूद है । परन्तु यदि किसी कारण अल्लाह तआला मानव जाति को सीख देना चाहे तो वह इस बात पर समर्थ है कि इस पानी को वापस ले जाए । ये दो प्रकार से सम्भव है । पहला यह कि आकाश की ऊँचाइयों से पानी को बार-बार वापस भेजने की जो व्यवस्था है, उसमें अल्लाह तआला कोई परिवर्तन कर दे । जैसा कि सृष्टि के प्रारम्भ में धरती का पानी निरन्तर वाष्प के रूप में आकाश की ओर उठता रहा और जब बरसता था तो बीच की तप्त वायुमण्डल के कारण पुन: वापस उठ जाता था । दूसरा वह है जो साधारणत: दिखाई देता है कि जब पानी धरती की गहराई में उतर जाए तो फिर गहरे कुओं की निम्नस्तर से भी नीचे चला जाता है ।

इसके बाद फिर पानी के विषयवस्तु को आगे बढ़ा कर उन नौकाओं का वर्णन है जो पानी पर चलती हैं । और इसी प्रकरण में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की नौका का भी वर्णन आया है कि पानी के ऊपर नौकाओं को चलने की क्षमता तभी प्राप्त होती है जब अल्लाह तआला की आज्ञा हो । भारी से भारी तूफान में भी नौकाएँ पानी पर सुरक्षित चलती रहती हैं । और कभी-कभी हल्के से तूफान से भी डूब जाती हैं । जब जातियाँ अपने ऊपर उतारी गई आध्यात्मिक आसमानी पानी से कृतघ्नता पूर्वक व्यवहार करती हैं तो भौतिक पानी की भाँति उस आध्यात्मिक पानी से भी अल्लाह उन्हें वंचित कर देता है और यह बात भी उन्हें लाभ नहीं पहुँचाती कि मूसलाधार वर्षा की भाँति लगातार उन में रसूल आते रहे हैं, परन्तु सब के इनकार करने पर वे अड़े रहते हैं ।

फिर ऐसे पहाड़ी क्षेत्रों का वर्णन किया गया जहाँ पानी के स्रोत फूटते थे । जो दिल

की शान्ति और सन्तुष्टि के कारण बनते थे । हज़रत मसीह अलै. और उनकी माता को शत्रुओं से बचाते हुए अल्लाह तआला इसी घाटी की ओर ले गया । अनुमान और निशानियों से स्पष्ट होता है कि यह कश्मीर की घाटी ही है ।

इसके बाद आयत संख्या 79 में यह विषयवस्तु वर्णन किया गया है कि विकास के क्रम में मनुष्य को सब से पहले श्रवण शक्ति प्रदान की गई थी । और इसके बाद दृष्टिशक्ति और फिर वे हृदय प्रदान किये गये जो गहन ज्ञान शक्ति रखते हैं और प्रत्येक प्रकार के आध्यात्मिक विषय को समझने का सामर्थ्य रखते हैं ।

इसके बाद कुछ ऐसी आयतें आती हैं जिनके विषयवस्तु उन आयतों से मिलते जुलते हैं जिन का विस्तृत विवरण पहले हो चुका है । फिर एक ऐसी आयत है जो एक नये विषयवस्तु को प्रस्तुत कर रही है । क़यामत के दिन जब मनुष्यों से यह प्रश्न किया जाएगा कि तुम धरती में कितनी देर रहे हो ? तो वे कहेंगे, शायद एक दिन अथवा उस का कुछ भाग । इसके उत्तर में अल्लाह तआला यह कहेगा कि वास्तव में तुम इस से भी बहुत कम समय वहाँ ठहरे हो । इससे तात्पर्य मृत्यु के पश्चात् पुनर्जीवित होने तक के समय की लम्बाई है । भौतिक जगत इतना दूर दिखाई देगा कि जैसे अचानक बीत गया । और यह वह विषय जो मनुष्य के दैनिक अनुभव में आया है कि बहुत दूर के सितारे जो अपनी विशालता में सूर्य और चन्द्रमा तथा समग्र सौर मण्डल से भी बहुत बड़े हैं देखने में वे मात्र छोटे छोटे बिन्दुओं की भाँति लगते हैं ।

इस सूर: की अन्तिम आयत एक दुआ के रूप में है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन शब्दों में सिखाई गई कि अपने रब्ब को सम्बोधन करके यह विनती किया कर कि हे मेरे रब्ब ! क्षमा कर दे और दया कर । तू सब दया करने वालों में बेहतर दया करने वाला है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ سِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ②

नि:सन्देह मोमिन सफल हो गए ।2।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ③

वे जो अपनी नमाज़ में विनम्रता करने वाले हैं ।3।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ④

और वे जो व्यर्थ (बातों) से बचने वाले हैं ।4।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ⑤

और वे जो (विधिवत) ज़कात अदा करने वाले हैं ।5।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ⑥

और वे जो अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करने वाले हैं ।6।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ⑦

परन्तु अपनी पत्नियों से नहीं अथवा उनसे (भी नहीं) जिनके स्वामी उनके दाहिने हाथ हुए । नि:सन्देह वे धिक्कारे नहीं जाएँगे ।7।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ⑧

फिर जो इससे हट कर कुछ चाहे तो यही लोग ही सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं ।8।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ⑨

और वे लोग जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा की निगरानी करने वाले हैं ।9।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ⑩

और वे लोग जो अपनी नमाज़ों के रक्षक बने रहते हैं ।10।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ⑪

यही हैं वे जो उत्तराधिकारी बनने वाले हैं ।11।

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ۭ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ١٢

(अर्थात्) वे जो फ़िरदौस के उत्तराधिकारी होंगे। वे उसमें सदा रहने वाले हैं।12।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ١٣

और नि:सन्देह हमने मनुष्य को गीली मिट्टी के सार-तत्त्व से पैदा किया।13।

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ١٤

फिर हमने उसे वीर्य के रूप में एक ठहरने के सुरक्षित स्थान में रखा।14।

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۤ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۭ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ١٥

फिर हमने उस वीर्य को एक (खून का) थक्का बनाया। फिर थक्के को मांसपिंड (की भाँति जमा हुआ खून) बना दिया। फिर उस मांसपिंड को हड्डियाँ बनाया, फिर हड्डियों को माँस पहनाया। फिर हमने उसे एक नई सृष्टि के रूप में विकसित किया। अत: एक वही अल्लाह मंगलमय सिद्ध हुआ जो सर्वोत्कृष्ट सृष्टिकर्ता है।15।

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ١٦

फिर अवश्य तुम उसके पश्चात् मृत्यु को प्राप्त करने वाले हो।16।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ١٧

फिर अवश्य तुम क़यामत के दिन उठाए जाओगे।17।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَاۗىِٕقَ ڰ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ١٨

और नि:सन्देह हमने तुम्हारे ऊपर सात मार्ग बनाए हैं और हम सृष्टि से बेख़बर रहने वाले नहीं।18।*

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ڰ وَاِنَّا عَلٰي ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ١٩

और हमने आसमान से एक अनुमान के अनुसार पानी उतारा। फिर उसे धरती में ठहरा दिया और हम उसे (वापस) ले जाने पर भी अवश्य सामर्थ्य रखते हैं।19।

* यहाँ मनुष्यों के ऊपर सात आसमानी मार्गों का वर्णन मिलता है। सात के अंक से अभिप्राय ऐसा अंक है जो बार-बार दोहराया जाता है जैसा कि सप्ताह, प्रत्येक सात दिन के बाद दोबारा आता है। अत: सात मार्ग से तात्पर्य अनगिनत अकाशीय मार्ग हैं।

فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۰﴾

फिर हमने उसके द्वारा तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बगीचे विकसित किये । उनमें तुम्हारे लिए बहुत फल (लगते) हैं । और उनमें से तुम खाते भी हो ।20।

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿۲۱﴾

और एक ऐसा वृक्ष उगाया जो सैना पर्वत में निकलता है, जो तेल और खाने वालों के लिए एक प्रकार की तरकारी के रूप में उगता है ।21।

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۲﴾

और निःसन्देह तुम्हारे लिए चौपायों में एक शिक्षा है । हम तुम्हें उसमें से जो उनके पेटों में है पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से लाभ हैं । और उन्हीं में से कुछ तुम खाते भी हो ।22।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿۲۳﴾ ع

और उन पर तथा नौकाओं पर भी तुम सवार किए जाते हो ।23। (रुकू $\frac{1}{1}$)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۲۴﴾

और निःसन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा तो उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो। तुम्हारे लिए उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अतः क्या तुम तक़वा धारण नहीं करोगे ? ।24।

فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰۗىِٕكَةً ښ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَاۗىِٕنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۵﴾

इस पर उन सरदारों ने जिन्होंने उस की जाति में से इनकार किया, कहा यह तो तुम्हारी भाँति एक मानव के अतिरिक्त कुछ नहीं । यह चाहता है कि तुम पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करे। और यदि अल्लाह चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता । हमने तो अपने पिछले पूर्वजों के सम्बन्ध में ऐसा नहीं सुना ।25।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌۢ بِهِۦ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا۟ بِهِۦ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٦﴾

यह तो केवल एक मनुष्य है जो उन्मादग्रस्त हो गया है । अतः कुछ समय तक इसके (परिणाम के) बारे में प्रतीक्षा करो ।26।

قَالَ رَبِّ ٱنصُرْنِى بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٧﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरी सहायता कर, क्योंकि इन्होंने मुझे झुठला दिया है ।27।

فَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ أَنِ ٱصْنَعِ ٱلْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَآءَ أَمْرُنَا وَفَارَ ٱلتَّنُّورُ ۙ فَٱسْلُكْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ ٱثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ ٱلْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَـٰطِبْنِى فِى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓا۟ ۖ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٢٨﴾

अतः हमने उसकी ओर वह्इ की, कि हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्इ के अनुसार एक नौका निर्मित कर। फिर जब हमारा आदेश आ जाए और (धरती का) स्रोत फूट पड़े तो इसमें प्रत्येक (आवश्यक जीव-जन्तु) में से जोड़ा-जोड़ा और अपने घर वालों को भी सवार कर ले । उनमें से सिवाए उसके जिसके विरुद्ध निर्णय हो चुका है। और मुझ से उन लोगों के बारे में कोई बात न कर जिन्होंने अत्याचार किया । निःसन्देह वे डुबो दिए जाने वाले हैं ।28।

فَإِذَا ٱسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى ٱلْفُلْكِ فَقُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى نَجَّىٰنَا مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾

अतः जब तू और वे जो तेरे साथ हैं नौका पर सवार हो जायँ, तो यह कह कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें अत्याचारी लोगों से मुक्ति प्रदान की ।29।

وَقُل رَّبِّ أَنزِلْنِى مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْمُنزِلِينَ ﴿٣٠﴾

और तू कह कि हे मेरे रब्ब ! तू मुझे एक ऐसे स्थान पर उतार जो मंगलमय हो । और तू उतारने वालों में सबसे उत्तम है ।30।

إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَـٰتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣١﴾

निःसन्देह इसमें बड़े-बड़े चिह्न हैं । और हम अवश्य परीक्षा में डालने वाले थे ।31।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣٢﴾

फिर हमने उनके पश्चात् दूसरे युग के लोग पैदा कर दिए ।32।

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾

फिर हमने उनमें भी उन्हीं में से एक रसूल भेजा (जो कहता था) कि अल्लाह की उपासना करो । उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई उपास्य नहीं । अतः क्या तुम तक़्वा धारण नहीं करोगे ? ।33।

(रुकू $\frac{2}{2}$)

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٤﴾

और उसकी जाति के उन सरदारों ने जिन्होंने कुफ़्र किया और परकालीन साक्षातकार का इनकार कर दिया । जबकि हमने सांसारिक जीवन में उनको बहुत समृद्धि प्रदान की थी, कहा कि यह तो तुम्हारी भाँति मनुष्य के सिवा कुछ नहीं । उन्हीं वस्तुओं में से खाता है जिनमें से तुम खाते हो और उन्हीं पदार्थों में से पीता है जिनमें से तुम पीते हो ।34।

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٥﴾

और यदि तुमने अपने ही जैसे किसी मनुष्य का आज्ञापालन किया तो निःसन्देह तुम बहुत हानि उठाने वाले हो जाओगे ।35।

اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٦﴾

क्या यह तुम्हें इस बात से डराता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम (जीवित करके) निकाले जाओगे ।36।

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

दूर की बात है, बहुत दूर की बात है जिसका तुम से वादा किया जाता है ।37।

اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا

हमारा तो केवल यही संसार का जीवन है । हम (यहीं) मरते भी हैं और जीवित

وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝٣٨

भी रहते हैं और हम कदापि उठाए नहीं जाएँगे ।38।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٣٩

यह केवल एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है और हम इस पर ईमान लाने वाले नहीं ।39।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝٤٠

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरी सहायता कर क्योंकि इन्होंने मुझे झुठला दिया है ।40।

قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ۝٤١

उस ने कहा थोड़ी देर में ही वे अवश्य लज्जित हो जाएँगे ।41।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٢

अत: उनको एक धमाकेदार ध्वनि ने सत्य (वचन) के अनुरूप आ पकड़ा और हमने उन्हें कूड़ा-करकट बना दिया। अत: अत्याचारी लोगों पर ला'नत हो ।42।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٤٣

फिर हमने उनके पश्चात् दूसरे युग वालों को पैदा किया ।43।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٤٤

कोई जाति अपनी निर्धारित अवधि से न आगे बढ़ सकती है और न पीछे हट सकती है ।44।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۭ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝٤٥

फिर हमने अपने रसूल लगातार भेजे । जब भी किसी जाति की ओर उसका रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया। अत: हम उनमें से कुछ को कुछ दूसरों के पीछे लाए । फिर हमने उन्हें क़िस्से-कहानियाँ बना दिया । अत: ला'नत हो ऐसे लोगों पर जो ईमान नहीं लाते ।45।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٤٦

फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपने चिह्न और खुला-खुला अकाट्य प्रमाण के साथ भेजा ।46।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ۝٤٧

फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर, तो उन्होंने अहंकार किया और वे उद्दंडी लोग थे ।47।

فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ۝٤٨

अतः उन्होंने कहा, क्या हम अपने जैसे दो मनुष्यों पर ईमान ले आएँ जबकि इन दोनों की जाति हमारी दास है ।48।

فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ۝٤٩

अतः उन दोनों को उन्होंने झुठला दिया और वे स्वयं तबाह किए जाने वालों में से बन गए ।49।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝٥٠

और निःसन्देह हमने मूसा को पुस्तक प्रदान की थी ताकि वे हिदायत पाएँ ।50।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۝٥١

और मरियम के पुत्र को और उसकी माँ को भी हमने एक चिह्न बनाया था। और उन दोनों को हमने एक ऊँचे स्थान की ओर शरण दी जो शांतिमय और जलस्रोत युक्त था ।51। (रुकू $\frac{3}{3}$)

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝٥٢

हे रसूलो ! पवित्र वस्तुओं में से खाया करो और नेक कर्म किया करो। जो कुछ तुम करते हो उसका मैं अवश्य स्थायी ज्ञान रखता हूँ ।52।

وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ۝٥٣

और निःसन्देह यह तुम्हारी जाति एक ही जाति है और मैं तुम्हारा रब्ब हूँ। अतः मुझ से डरो ।53।

فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝٥٤

फिर उन्होंने अपने मामले को अपने बीच टुकड़े-टुकड़े (कर) बाँट लिया। सभी समूह उस पर जो उनके पास था अहंकार करने लगे ।54।

فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝٥٥

अतः उन्हें उनकी अज्ञानता में कुछ समय के लिए छोड़ दे ।55।

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ
وَّبَنِينَ ﴿٥٦﴾

क्या वे यह विचार करते हैं कि हम जो धन और संतान के द्वारा उनकी सहायता करते हैं, ।56।

نُسَارِعُ لَهُمْ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ بَل لَّا
يَشْعُرُونَ ﴿٥٧﴾

हम उन्हें भलाइयों में आगे बढ़ा रहे हैं ? नहीं, नहीं ! वे कुछ सूझ-बूझ नहीं रखते ।57।

اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ
مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٨﴾

नि:सन्देह वे लोग जो अपने रब्ब के रोब से डरने वाले हैं ।58।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾

और वे लोग जो अपने रब्ब की आयतों पर ईमान लाते हैं ।59।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٠﴾

और वे लोग जो अपने रब्ब के साथ साझीदार नहीं ठहराते ।60।

وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ
اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦١﴾

और वे लोग कि, जो भी वे देते हैं इस प्रकार देते हैं कि उनके दिल (इस सोच से) डरते रहते हैं कि वे अवश्य अपने रब्ब के पास लौट कर जाने वाले हैं ।61।

اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا
سٰبِقُوْنَ ﴿٦٢﴾

यही वे लोग हैं जो भलाइयों में तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं और वे उनमें आगे बढ़ जाने वाले हैं ।62।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا
كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٣﴾

और हम हर एक जान को उसकी शक्ति के अनुसार ही बाध्य करते हैं । और हमारे पास एक पुस्तक है जो सच बोलती है । और उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।63।

بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ
اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٤﴾

वास्तविकता यह है कि उनके दिल उससे बेख़बर हैं । और इसके अतिरिक्त भी उनके ऐसे कर्म हैं जो वे किया करते हैं ।64।

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ

यहाँ तक कि जब हम उनके सम्पन्न व्यक्तियों को अज़ाब के द्वारा पकड़ लेते

اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٥﴾

हैं तो सहसा वे चीख़ने-चिल्लाने लगते हैं ।65।

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٦﴾

आज के दिन न चिल्लाओ । कदापि तुम्हें हमारी ओर से कोई सहायता नहीं दी जाएगी ।66।

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٧﴾

तुम्हारे समक्ष मेरी आयतें पाठ की जाती थीं फिर भी तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाते थे ।67।

مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٨﴾

(उस पर) अहंकार करते हुए, इसके बारे में रातों को बैठकें लगाते हुए निरर्थक बातें करते थे ।68।

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٩﴾

अत: क्या उन्होंने इस बात पर विचार नहीं किया अथवा उन तक कोई ऐसी बात पहुँची है जो उनके पिछले पूर्वजों तक नहीं पहुँची थी ? ।69।

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٧٠﴾

अथवा क्या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं इसलिए वे उसके इनकार करने वाले हो गए हैं ।70।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧١﴾

अथवा वे कहते हैं कि उसे उन्माद हो गया है ? नहीं, बल्कि वह उनके पास सत्य लेकर आया है । जबकि उनमें से अधिकतर सत्य को नापसंद करने वाले हैं ।71।

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٢﴾

और यदि सत्य उनकी इच्छाओं का अनुसरण करता तो अवश्य आकाश और धरती और जो कुछ उनमें है सबके सब बिगड़ जाते । वास्तविकता यह है कि हम उन्हीं का उपदेश उनके पास लाए हैं और वे अपने ही उपदेश से मुंह मोड़ रहे हैं ।72।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٧٣﴾

क्या तू उनसे कोई प्रतिफल मांगता है ? अत: (वे याद रखें कि) तेरे रब्ब का अनुदान अत्युत्तम है और वह जीविका प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है ।73।

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٤﴾

और नि:सन्देह तू उन्हें सन्मार्ग की ओर बुला रहा है ।74।

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ﴿٧٥﴾

और नि:सन्देह वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते सन्मार्ग से भटक जाने वाले हैं ।75।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِم مِّن ضُرٍّ لَّلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٦﴾

और यदि हम उन पर दया करते और जो पीड़ा उन्हें है उसे दूर कर देते तो वे अवश्य अपनी उद्दण्डता में भटकने लगते ।76।

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٧﴾

और नि:सन्देह हमने उन्हें अज़ाब के द्वारा पकड़ लिया । अत: न उन्होंने अपने रब्ब के समक्ष विनम्रता अपनाई और न वे अनुनय-विनय करते थे ।77।

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٨﴾

यहाँ तक कि जब हमने कठोर अज़ाब का द्वार उन पर खोल दिया तो इस पर सहसा वे पूर्ण रूप से निराश हो गए ।78।

(रुकू $\frac{4}{4}$)

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٩﴾

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किए । तुम जो कृतज्ञता प्रकट करते हो (वह) बहुत कम है ।79।

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٨٠﴾

और वही है जिसने धरती में तुम्हारा बीजारोपण किया और उसी की ओर तुम इकट्ठे किए जाओगे ।80।

وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ

और वही है जो जीवित करता है और मारता है और रात और दिन की भिन्नता

الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۸۱﴾

भी उसी के अधिकार में है। अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।81।

بَلۡ قَالُوۡا مِثۡلَ مَا قَالَ الۡاَوَّلُوۡنَ ﴿۸۲﴾

बल्कि उन्होंने वैसी ही बात कही जैसी पहले लोग कहा करते थे ।82।

قَالُوۡۤا ءَاِذَا مِتۡنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ ﴿۸۳﴾

वे कहते थे कि क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम फिर भी अवश्य उठाए जाएँगे ? ।83।

لَقَدۡ وُعِدۡنَا نَحۡنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنۡ قَبۡلُ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۸۴﴾

निःसन्देह हमसे और हमारे पूर्वजों से भी इससे पूर्व यही वादा किया गया था। यह तो केवल पहले लोगों की कहानियाँ हैं ।84।

قُلۡ لِّمَنِ الۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِيۡهَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۵﴾

तू पूछ कि धरती और जो कुछ उसमें है वह किसका है ? (बताओ) यदि तुम्हें ज्ञान है ।85।

سَيَقُوۡلُوۡنَ لِلّٰهِ ؕ قُلۡ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿۸۶﴾

वे कहेंगे अल्लाह ही का है। कह दे कि क्या फिर तुम सीख नहीं लोगे ? ।86।

قُلۡ مَنۡ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبۡعِ وَرَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ ﴿۸۷﴾

पूछ कि कौन है सात आसमानों और महान अर्श का रब्ब ? ।87।

سَيَقُوۡلُوۡنَ لِلّٰهِ ؕ قُلۡ اَفَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿۸۸﴾

वे कहेंगे अल्लाह ही के हैं। कह, क्या फिर तुम तक़्वा धारण नहीं करोगे ? ।88।

قُلۡ مَنۡۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوۡتُ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُوَ يُجِيۡرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيۡهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۹﴾

तू पूछ कि यदि तुम जानते हो (तो बताओ) कि वह कौन है जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का स्वामित्व है और वह शरण देता है परन्तु उसके विरुद्ध शरण नहीं दी जाती ? ।89।

سَيَقُوۡلُوۡنَ لِلّٰهِ ؕ قُلۡ فَاَنّٰى تُسۡحَرُوۡنَ ﴿۹۰﴾

वे कहेंगे, अल्लाह ही की है। पूछ, फिर तुम कहाँ बहकाए जा रहे हो ? ।90।

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩١﴾

वास्तविकता यह है कि हम उनके पास सत्य लाए हैं और निःसन्देह वे झूठ बोलने वाले हैं ।91।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۙ﴿٩٢﴾

अल्लाह ने कोई बेटा नहीं अपनाया और न ही उसके साथ कोई और उपास्य है । ऐसा होता तो अवश्य प्रत्येक उपास्य अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता । और अवश्य उनमें से कुछ, कुछ दूसरों पर चढ़ाई करते । पवित्र है अल्लाह उससे जो वे वर्णन करते हैं ।92।

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع

जो अदृश्य और दृश्य का जानने वाला है। और वह उससे बहुत उच्च है जो वे साझीदार ठहराते हैं ।93। (रुकू $\frac{5}{5}$)

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ﴿٩٤﴾

तू कह, हे मेरे रब्ब ! यदि तू मुझे वह दिखा ही दे जिससे उनको डराया जाता है (तो यह एक विनती है) ।94।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾

हे मेरे रब्ब ! अतः मुझे अत्याचारी लोगों में से न बना देना ।95।

وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٦﴾

और निःसन्देह हम उस पर अवश्य समर्थ हैं कि तुझे वह दिखा दें जिससे हम उनको डराते हैं ।96।

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٧﴾

उस (ढंग) से जो उत्तम है बुराई को हटा दे । हम उसे सब से अधिक जानते हैं जो वे बातें बनाते हैं ।97।

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۙ﴿٩٨﴾

और तू कह कि हे मेरे रब्ब ! मैं शैतानों की कु-प्रेरणा से तेरी शरण माँगता हूँ ।98।

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٩﴾

और हे मेरे रब्ब मैं (इस बात से भी) तेरी शरण माँगता हूँ कि वे मेरे निकट फटकें ।99।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿١٠٠﴾

यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मृत्यु आ जाती है तो वह कहता है, हे मेरे रब्ब ! मुझे लौटा दीजिए ।100।

لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ۭ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَاۗىِٕلُهَا ۭ وَمِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠١﴾

सम्भवतः मैं उस (संसार) में अच्छे काम करूँ जिसे छोड़ आया हूँ । कदापि नहीं । यह तो केवल एक बात है जो वह कह रहा है । और उनके पीछे उस दिन तक एक रोक खड़ी रहेगी कि वे उठाए जाएँगे ।101।

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَىِٕذٍ وَّلَا يَتَسَاۗءَلُوْنَ ﴿١٠٢﴾

अतः जब बिगुल फूँका जाएगा तो उस दिन उनके बीच कोई सम्बन्ध नहीं रहेंगे। और न ही वे एक दूसरे से प्रश्न कर सकेंगे ।102।

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٣﴾

अतः वे जिसके (कर्म के) पलड़े भारी हुए, तो वही लोग सफल होने वाले हैं ।103।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٤﴾

और वे जिनके (कर्मों के) पलड़े हल्के हुए तो वही लोग हैं जिन्होंने अपने आप को हानि पहुँचाई । नरक में वे लम्बे समय तक रहने वाले होंगे ।104।

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾

अग्नि उनके चेहरों को झुलसाएगी और उसमें (चेहरे के पीड़ाजनक खिचाव से) उनकी दाढ़ें दिखाई देने लगेंगी ।105।

اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٦﴾

क्या तुम्हारे समक्ष मेरी आयतें नहीं पढ़ी जातीं थीं ? फिर तुम उन्हें झुठलाया करते थे ।106।

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَاۗلِّيْنَ ﴿١٠٧﴾

वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! हम पर हमारा दुर्भाग्य छा गया और हम पथभ्रष्ट लोग थे ।107।

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا

हे हमारे रब्ब ! हमें इससे निकाल दे । फिर यदि हम पुनः ऐसा करें तो

ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۰۸﴾

निःसन्देह हम अत्याचार करने वाले होंगे ।108।

قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿۱۰۹﴾

वह कहेगा, इसी में चले जाओ और मुझ से बात न करो ।109।

اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۰﴾

निःसन्देह मेरे भक्तों में से एक समूह ऐसा भी था जो कहा करता था, हे हमारे रब्ब ! हम ईमान ले आए । अतः हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर और तू दया करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है ।110।

فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

अतः तुमने उन्हें उपहास का पात्र बना लिया यहाँ तक कि उन्होंने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उनसे उपहास करते रहे ।111।

اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

जो वे धैर्य किया करते थे, निःसन्देह आज मैंने उनको उसका प्रतिफल दिया है कि वही अवश्य सफल होने वाले हैं ।112।

قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿۱۱۳﴾

वह उनसे पूछेगा, तुम धरती में गिनती के कितने वर्ष रहे ? ।113।

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿۱۱۴﴾

तो वे कहेंगे, हम एक दिन अथवा दिन का कुछ भाग रहे । अतः गणना करने वालों से पूछ ।114।

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۱۵﴾

वह कहेगा, तुम बहुत ही थोड़ा रहे । यदि तुम ज्ञान रखते (तो अच्छा होता) ।115।

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

अतः क्या तुमने विचार किया था कि हमने तुम्हें बिना उद्देश्य के पैदा किया है और यह कि तुम कदापि हमारी ओर लौटाए नहीं जाओगे ? ।116।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

अतः बहुत महान है अल्लाह सच्चा सम्राट । उसके सिवा और कोई

رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٧﴾

उपास्य नहीं । प्रतिष्ठित अर्श का रब्ब है ।117।

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٨﴾

और जो अल्लाह के साथ किसी और उपास्य को पुकारे जिसका उसके पास कोई तर्क नहीं तो नि:सन्देह उसका हिसाब उसके रब्ब के पास है । नि:सन्देह काफ़िर सफल नहीं होते ।118।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٩﴾ ع

और तू कह, हे मेरे रब्ब ! क्षमा कर दे और दया कर । और तू दया करने वालों में सर्वोत्तम है ।119। (रुकू $\frac{6}{6}$)

24- सूर: अन-नूर

यह मदनी सूर: है जो हिजरत के पाँचवे वर्ष अवतरित हुई । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 65 आयतें हैं ।

इससे पूर्व सूर: अल्-मु'मिनून के आरम्भ में मोमिनों के लक्षण बताते हुए गुप्तांगों की सुरक्षा का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है और सूर: अन-नूर का विषयवस्तु भी मूल रूप से इसी विषय से सम्बन्ध रखता है । इस सूर: में व्यभिचारी पुरुष तथा व्यभिचारिणी स्त्री के दण्ड का उल्लेख है और इस बात का वर्णन है कि गंदे लोग गंदे साथियों ही से सम्बन्ध रखा करते हैं और मोमिन इस बात का ख़ूब ध्यान रखते हैं कि उनको पवित्र साथी मिलें । इस प्रकरण में इस बात पर भी ज़ोर दिया गया है कि वे दुष्ट लोग जो पवित्र स्त्रियों पर मिथ्यारोप लगाते हैं उन्हें इसका बहुत बड़ा दण्ड मिलेगा । हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रजि. अन्हा जो अत्यन्त पुण्यवती स्त्री थीं, उन पर कुछ दुष्टों के द्वारा आरोप लगाने तथा इसके दण्ड पाने का भी इसी सूर: में उल्लेख मिलता है ।

इसके पश्चात् पवित्र जीवन-यापन करने वालों को वह उपदेश दिए गए हैं जिनका पालन करने से उनको अल्लाह तआला अधिक पवित्रता प्रदान करेगा । इनमें से एक उपदेश यह है कि जब किसी के घर में प्रवेश करना हो तो सर्वप्रथम सलाम कर लिया करो ताकि घर वालों को असावधान अवस्था में इस प्रकार न पाओ जिससे तुम्हारे विचार भटक जाएँ ।

इस प्रकरण में अग्रिम रोकथाम स्वरूप दूसरा उपाय यह बताया गया कि मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ दोनों अपनी आँखें नीची रखें और उन्हें अनावश्यक इधर उधर अनियन्त्रित भटकने न दें ।

इस संपूर्ण विवरण के पश्चात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला के प्रकाश के एक महान द्योतक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिनकी मौलिक विशेषताएँ यह हैं कि वह न केवल पूर्वी जगत के लिए हैं और न पश्चिमी जगत के लिए बल्कि वह पूर्व और पश्चिम को समान रूप से अपने प्रकाश से प्रकाशित करेंगे । और ऐसे दीपक की भाँति हैं जो और बहुत से दीपकों को प्रज्वलित करेगा । इसके साथ सहाबा रजि. के घरों का उल्लेख है कि किस प्रकार उन घरों में भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दीपक प्रज्वलित कर दिए ।

इसके पश्चात काफ़िरों का उदाहरण दो प्रकार से दिया गया है । एक तो यह कि वे सांसारिक भोग-विलास के वशीभूत होकर अपनी तृष्णा बुझाने का जो प्रयत्न करते हैं अंतत: वह पछतावे में परिवर्तित हो जाता है । जैसे मरुस्थल में कोई प्यासा मृगतृष्णा को

पानी समझता है परन्तु जब वह वहाँ पहुँचता है तो उसका अंत यही होता है कि अल्लाह तआला उसको उसके समझ के धोखे का दण्ड देता है । इसी प्रकार प्रकाश के विपरीत उन काफ़िरों पर इस प्रकार परत दर परत अंधकार छा जाते हैं जिस प्रकार आसमान पर जब घने बादल छाये हुए हों उस समय एक डूबने वाला घन अंधकारपूर्ण गहरे समुद्र में डूब रहा होता है और तब अंधकार इतना अधिक होता है कि वह अपने हाथ को देखने का भी सामर्थ्य नहीं रखता ।

आयत संख्या 52 में वर्णन किया गया है कि सच्चे मोमिनों की परिभाषा यह है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाते हैं तो उस बुलावे को अविलम्ब स्वीकार करते हैं । पिछली सूर: की आयत सं. 2 **कद् अफ़ ल हल मु'मिनून** (नि:सन्देह मोमिन सफल हो गये) में वर्णित सफलता का भी यहाँ उल्लेख कर दिया गया है कि यही वे लोग हैं जो सफलता पाने वाले हैं ।

इसी सूर: में ख़िलाफ़त से सम्बंधित आयत भी है जो इस विषय को प्रस्तुत करती है कि जिस प्रकार पहले नबियों के पश्चात् अल्लाह तआला ने उनके ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) नियुक्त किये थे इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पश्चात आपके ख़लीफ़ा अल्लाह की आज्ञा ही से नियुक्त होंगे, चाहे प्रत्यक्ष रूप से किसी मानवीय चुनाव द्वारा ही हों । उन ख़लीफ़ाओं की एक पहचान यह होगी कि ख़तरों और दंगों के समय जब उनके अनुयायी समझ रहे होंगे कि शत्रु उन पर विजय पा रहा है, तब हम उन ख़तरों को पुन: शांति में परिवर्तित कर देंगे ।

मोमिनों के पूर्ण आज्ञापालन का जो बार-बार वर्णन किया गया है इस आज्ञापालन का एक चिह्न यह है कि वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का केवल आज्ञापालन ही नहीं करते बल्कि आपका अत्यंत आदर-सत्कार भी करते हैं । यहाँ तक कि जब किसी सामूहिक विषय में विचार विमर्श के लिए एकत्रित हों तो कदापि वे हज़रत मुहम्मद सल्ल. की आज्ञा के बिना सभा से बाहर नहीं जाते । अज्ञानों को शिष्टाचार सिखाते हुए इस सूर: में यह कहा गया है कि जिस प्रकार तुम एक दूसरे को आवाज़ें दिया करते हो हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इस प्रकार आवाज़ें देकर न बुलाया करो।

इस सूर: की अंतिम आयत में अल्लाह तआला वर्णन करता है कि तुम जो भी दावा करो वह निष्कपटता पूर्ण भी हो सकता है और कपटता पूर्ण भी । अल्लाह ही भली-भाँति जानता है कि तुम किस अवस्था में हो ।

☆☆☆

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَّ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّ تِسْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَ فَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَاۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ②

एक महान सूर: जिसे हमने अवतरित किया और इसे अनिवार्य कर दिया और इसमें खुली-खुली आयतें उतारीं ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो ।2।

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ③

व्यभिचारीणि स्त्री और व्यभिचारी पुरुष, अत: इनमें से प्रत्येक को सौ कोड़े लगाओ और यदि तुम अल्लाह और अंतिम दिवस पर ईमान लाने वाले हो तो अल्लाह के विधान को लागू करने में उन दोनों के पक्ष में नरमी करने का कोई (विचार) तुम को प्रभावित न कर दे और उनके दण्ड को मोमिनों में से एक समूह देखे ।3।

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّ الزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَاۤ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ④

और एक व्यभिचारी (स्वभावत:) किसी व्यभिचारिणी अथवा मुश्रिक स्त्री से ही विवाह करता है और (स्वभावत:) एक व्यभिचारिणी स्त्री से व्यभिचारी अथवा मुश्रिक के सिवा कोई विवाह नहीं करता और यह (कुकर्म) मोमिनों के लिए अवैध कर दिया गया है ।4।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ

वे लोग जो सतवंती स्त्रियों पर आरोप लगाते हैं फिर चार गवाह प्रस्तुत नहीं करते तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ । और भविष्य में कभी उनकी गवाही

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٥

स्वीकार न करो और यही लोग ही कुकर्मी हैं ।5।*

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٦

परन्तु वे लोग जिन्होंने इसके पश्चात प्रायश्चित कर लिया और अपना सुधार कर लिया तो निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।6।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧

और वे लोग जो अपनी पत्नियों पर आरोप लगाते हैं और उनके पास स्वयं के अतिरिक्त कोई साक्षी न हो तो उनमें से प्रत्येक को अल्लाह की क़सम खा कर चार बार गवाही देनी होगी कि वह निःसन्देह सच्चों में से है ।7।

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٨

और पाँचवीं बार यह (कहना होगा) कि यदि वह झूठों में से है तो उस पर अल्लाह की ला'नत हो ।8।

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٩

और उस (स्त्री) से यह बात दण्ड को टाल देगी कि वह अल्लाह की क़सम खा कर चार बार गवाही दे कि निःसन्देह वह (पुरुष) झूठों में से है ।9।

وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝١٠

और पाँचवी बार यह (कहना होगा) कि उस (अर्थात स्त्री) पर अल्लाह का प्रकोप उतरे यदि वह (पुरुष) सच्चों में से हो ।10।

* इस आयत में व्यभिचार का मिथ्यारोप लगाने पर प्रतिबंध लगाया गया है । क्योंकि ऐसे आरोप लगाने वालों के लिए चार प्रत्यक्षदर्शी गवाह प्रस्तुत करने का आदेश है । अन्यथा उन्हें कठोर दण्ड मिलेगा । इससे केवल संदेह के आधार पर आरोप लगाने वालों का साहस कम होता है । दूसरी महत्वपूर्ण बात इसमें यह है कि, क्योंकि यह स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी पत्नी का मामला था और अधिकांश लोग सुनी सुनाई बातें कर रहे थे इस कारण जब तक अल्लाह तआला ने आप सल्ल. पर हज़रत आइशा रज़ि. अन्हा का दोषमुक्त होना सिद्ध नहीं किया उस समय तक आप सल्ल. मौन रहे । हदीस से यही प्रमाणित होता है ।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝١١ ع

और यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती (तो तुम्हारा क्या बनता) । और वस्तुतः अल्लाह बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) परम विवेकशील है ।11। (रुकू $\frac{1}{7}$)

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِیٴٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِیْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٢

निःसन्देह वे लोग जो झूठ गढ़ लाए, तुम ही में से एक समूह है । इस (मामले) को अपने हित में बुरा न समझो बल्कि वह तुम्हारे लिए उत्तम है। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए उतना निश्चित है जो उसने पाप अर्जित किया । जबकि उनमें से वह जो उस (पाप) के अधिकांश का उत्तरदायी है उसके लिए बहुत बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।12।

لَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَاۤ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣

ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने उसे सुना तो मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ अपनों के सम्बन्ध में सु-धारणा करते और कहते कि यह खुला-खुला मिथ्यारोप है ।13।

لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝١٤

क्यों न वे इस बारे में चार गवाह ले आए । अतः जब वे गवाह नहीं लाए तो वही हैं जो अल्लाह के निकट झूठे हैं ।14।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِیْ مَاۤ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٥ ۚ

और यदि इहलोक और परलोक में तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो इस (परीक्षा) के परिणाम स्वरूप जिसमें तुम पड़ गए थे, अवश्य तुम्हें एक बहुत बड़ा अज़ाब आ पकड़ता ।15।

اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖۗ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾

जब तुम उस (झूठ) को अपनी जिह्वा पर लेते थे और अपने मुँह से वह (बात) कहते थे जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं था। और तुम उसको मामूली बात समझते थे जबकि अल्लाह के निकट वह बहुत बड़ी थी ।16।

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖۗ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧﴾

और ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने उसे सुना तो तुम कह देते हमें कोई अधिकार नहीं कि हम इस मामले में मुँह खोलें । पवित्र है तू (हे अल्लाह !) यह तो एक बहुत बड़ा मिथ्यारोप है ।17।

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٨﴾ ۚ

यदि तुम मोमिन हो तो, अल्लाह तुम्हें उपदेश देता है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम आगे कभी ऐसी बात को दोहराओ ।18।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٩﴾

और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें खोल खोल कर वर्णन करता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।19।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٠﴾

नि:सन्देह वे लोग जो चाहते हैं कि उन लोगों में जो ईमान लाए अश्लीलता फैल जाए, उनके लिए इहलोक में भी और परलोक में भी पीड़ाजनक अज़ाब होगा । और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते ।20।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١﴾ ع

और यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती (तो तुम में अश्लीलता फैल जाती) और अल्लाह नि:सन्देह बहुत कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है ।21।

(रुकू $\frac{2}{8}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! शैतान के पद्चिह्नों पर मत चलो । और जो कोई शैतान के पदचिह्नों पर चलता है तो वह नि:सन्देह अश्लीलता और नापसंद बातों का आदेश देता है । और यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती तो तुम में से कोई एक भी कभी पवित्र न हो सकता । परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है पवित्र कर देता है । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।22।

وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِى الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۳﴾

और तुम में से सम्पन्न और समर्थ व्यक्ति अपने निकट सम्बन्धियों और दरिद्रों एवं अल्लाह के मार्ग में हिजरत करने वालों को कुछ न देने की क़सम न खाएँ । अत: चाहिए कि वे क्षमा कर दें और माफ़ कर दें । क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।23।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ﴿۲۴﴾

नि:सन्देह वे लोग जो सतवंती, बेख़बर मोमिन स्त्रियों पर मिथ्यारोप लगाते हैं, (वे) इस लोक में भी ला'नत किए गए और परलोक में भी । और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।24।

يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۵﴾

वह दिन (याद करो) जब उनकी जिह्वा और उनके हाथ और उनके पाँव उनके विरुद्ध उन बातों की गवाही देंगे जो वे किया करते थे ।25।

يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ

उस दिन अल्लाह उन्हें उनका पूरा-पूरा प्रतिफल देगा जिसके वे योग्य हैं । और

وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٦﴾

वे जान लेंगे कि नि:सन्देह अल्लाह ही है जो पूर्ण सत्य है ।26।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ۗ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٧﴾ ع

अपवित्र स्त्रियाँ अपवित्र पुरुषों के लिए हैं और अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिए हैं । और पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरुषों के लिए हैं तथा पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के लिए हैं । ये लोग उस के उत्तरदायी नहीं जो वे कहते हैं । इन्हीं के लिए क्षमादान है और सम्मान युक्त जीविका है ।27।* (रुकू $\frac{3}{9}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٨﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में प्रविष्ट न हुआ करो जब तक कि तुम अनुमति प्राप्त न कर लो और उन में रहने वालों पर सलाम न भेज लो । यह तुम्हारे लिए उत्तम है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो ।28।

فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾

और यदि तुम उन (घरों) में किसी को न पाओ तो उनमें प्रविष्ट न हो जब तक कि तुम्हें (उसकी) अनुमति न दी जाए । और यदि तुम्हें कहा जाए वापस चले जाओ तो वापस चले जाया करो । तुम्हारे लिए यह बात अधिक पवित्रता (प्राप्ति) का कारण है । और अल्लाह उसे जो तुम करते हो भली-भाँति जानता है ।29।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا

तुम पर पाप नहीं कि तुम ऐसे घरों में प्रविष्ट हो जो आबाद नहीं हैं और उनमें

---

* यहाँ एक साधारण नियम वर्णन किया गया है कि जो गंदे लोग हैं वे साधारणतया गंदी स्त्रियों से ही विवाह करते हैं । परन्तु यह कोई निश्चित नियम नहीं, इसमें अपवाद भी है । और जो पवित्र पुरुष हैं वे पवित्र स्त्रियों से ही विवाह किया करते हैं । इसमें भी कई बार अपवाद होते हैं ।

غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٣٠﴾

तुम्हारा सामान पड़ा हो । और अल्लाह (उसे) जानता है जो तुम प्रकट करते हो और जो तुम छिपाते हो ।30।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ
وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣١﴾

मोमिनों को कह दे कि अपनी आँखें नीची रखा करें और अपने गुप्तागों की सुरक्षा किया करें । यह बात उनके लिए अधिक पवित्रता का कारण है। नि:सन्देह अल्लाह, जो वे करते हैं उससे सदा अवगत रहता है ।31।

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ
وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ
زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ
بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَلَا يُبْدِيْنَ
زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ
اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ
بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اِخْوَانِهِنَّ
اَوْ بَنِيْۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِى الْاِرْبَةِ
مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ
يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَلَا
يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ

और मोमिन स्त्रियों से कह दे कि वे अपनी आँखें नीची रखा करें । और अपने गुप्ताँगों की सुरक्षा करें तथा अपनी सुन्दरता प्रकट न किया करें । सिवाय इस के कि जो उसमें से स्वयं प्रकट हो जाये । और अपने वक्षस्थलों पर अपनी ओढ़नियाँ डाल लिया करें । और अपनी सुंदरता को प्रकट न किया करें । सिवाय अपने पतियों के समक्ष अथवा अपने पिताओं अथवा अपने पतियों के पिताओं अथवा अपने पुत्रों अथवा अपने पतियों के पुत्रों अथवा अपने भाइयों अथवा अपने भाइयों के पुत्रों अथवा अपनी बहनों के पुत्रों अथवा अपनी जैसी स्त्रियों अथवा अपने अधीनस्थ पुरुषों अथवा पुरुषों में ऐसे सेवकों (के समक्ष) जो कोई (यौन सम्बन्धी) इच्छा नहीं रखते अथवा ऐसे बच्चों के (के समक्ष) जो स्त्रियों की छुपे हुए अंगों के बारे में बेख़बर हैं । और वे अपने पाँव को इस प्रकार न पटकें कि (लोगों पर) उसे प्रकट कर दिया जाए जिसे (स्त्रियाँ

مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَ تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٣٢

साधारणतया) अपनी सुंदरता में से छिपाती हैं । और हे मोमिनों ! तुम सब के सब अल्लाह की ओर प्रायश्चित करते हुए झुको ताकि तुम सफल हो जाओ ।32।

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝٣٣

और तुम्हारे बीच जो विधवाएँ हैं उनके भी विवाह कराओ, इसी प्रकार जो तुम्हारे दासों एवं दासियों में से सच्चरित्र हों उनका भी विवाह कराओ । यदि वे निर्धन हों तो अल्लाह अपनी कृपा से उन्हें धनवान बना देगा । और अल्लाह प्राचुर्य प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।33।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖۗ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ

और वे लोग जो विवाह करने का सामर्थ्य नहीं रखते उन्हें चाहिए कि स्वयं को बचाए रखें यहाँ तक कि अल्लाह उन्हें अपनी कृपा से धनवान बना दे । और तुम्हारे जो दास तुम्हें मुक्तिमूल्य दे कर अपनी स्वतन्त्रता का लिखित समझौता करना चाहें, यदि तुम उनके अंदर योग्यता पाओ तो उनको लिखित समझौते के साथ स्वतन्त्र कर दो। और वह धन जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उसमें से कुछ उनको भी दो । और अपनी दासियों को, यदि वे विवाह करना चाहें तो (रोक कर गुप्त रूप से) कुकर्म करने पर विवश न करो ताकि तुम सांसारिक जीवन का लाभ उठाना चाहो । और यदि कोई उनको विवश कर देगा तो उनके विवश किए जाने के

اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣٤

पश्चात् नि:सन्देह अल्लाह (उनके प्रति) बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।34।

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٣٥ ع ٤/١٠

और हमने तुम्हारी ओर सुस्पष्ट आयतें उतारी हैं । और उन लोगों का उदाहरण भी जो तुमसे पहले गुज़र गए और मुत्तक़ियों के लिए उपदेश ।35।

(रुकू $\frac{4}{10}$)

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۙ ۝٣٦

अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है । उसके प्रकाश का उदाहरण एक ताक़ की भाँति है जिसमें एक दीपक हो । वह दीपक काँच की चिमनी में हो । वह काँच ऐसा हो मानो एक चमकता हुआ उज्ज्वल नक्षत्र है । वह (दीपक) ऐसे मंगलमय ज़ैतून के वृक्ष से प्रज्वलित किया गया हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी । उस (वृक्ष) का तेल ऐसा है कि सम्भव है कि वह स्वयं भड़क कर प्रज्वलित हो उठे चाहे उसे आग ने न भी छुआ हो । यह प्रकाश पर प्रकाश है । अल्लाह अपने प्रकाश की ओर जिसे चाहता है हिदायत देता है । और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करता है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।36।*

* इस उदाहरण में ज़ैतून के तेल का वर्णन है । ज़ैतून के तेल को जलाया जाए तो इससे प्रकाश तो उत्पन्न होता है परन्तु धुआँ नहीं उठता । **ला शर्क़िय्यतिन् वला ग़र्बिय्यतिन** का अर्थ है कि अल्लाह का प्रकाश न केवल पूरब के लिए है और न पश्चिम के लिए । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह उदाहरण सत्य सिद्ध होता है । क्योंकि आप सल्ल. पूरब और पश्चिम दोनों जगत के अकेले रसूल हैं और यही प्रकाश है जो आप के माध्यम से सहाबा रज़ि. को भी प्रदान हुआ। अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस प्रकाश को केवल अपने तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे सार्वजनिक कर दिया । अत: अगली आयत में इसी का वर्णन है कि वह प्रकाश→

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا
اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۙ﴿۳۷﴾

ऐसे घरों में, जिनके सम्बन्ध में अल्लाह ने आदेश दिया है कि उन्हें ऊँचा किया जाए और उनमें उसके नाम का स्मरण किया जाए । उनमें सुबह और शाम उसका गुणगान करते हैं ।37।

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ
ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ ۖ
يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ
وَالْاَبْصَارُ ۙ﴿۳۸﴾

ऐसे महान पुरुष, जिन्हें न कोई व्यापार और न कोई क्रय-बिक्रय अल्लाह के स्मरण से अथवा नमाज़ को क़ायम करने से अथवा ज़कात देने से लापरवाह करता है । वे उस दिन से डरते हैं जिसमें (भय से) दिल और आँखें उलट-पुलट हो रहे होंगे ।38।

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا
وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۹﴾

ताकि अल्लाह उन्हें उनके सर्वश्रेष्ठ कर्मों के अनुसार प्रतिफल प्रदान करे, जो वे करते रहे हैं । और अपनी कृपा से उन्हें अधिक भी दे और अल्लाह जिसे चाहता है बिना हिसाब के जीविका देता है ।39।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ
بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۗ حَتّٰٓى اِذَا
جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके कर्म ऐसी मृग तृष्णा की भाँति हैं जो बंजर मैदान में हो, जिसे अत्यन्त प्यासा (व्यक्ति) पानी समझे । यहाँ तक कि जब वह उस तक पहुँचे, उसे कुछ न पाए । और अल्लाह को उस स्थान पर

←सहाबा रज़ि. के घरों में भी चमकता है ।

नक्षत्रों का उदाहरण इस लिए दिया कि उनका प्रकाश दूर-दूर से दिखाई देता है । इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्ल. का तथा सहाबा का प्रकाश भी दूर-दूर से दिखाई देगा ।

मिश्कात उस सुरक्षित ताक़ को कहते हैं जिसमें दीपक रखा जाता है । लैम्प का प्रकाश काँच से प्रतिबिम्बित होकर केवल उस ताक़ को प्रकाशित नहीं करता जिसमें वह प्रकाश है बल्कि बाहर भी प्रतिबिम्बित होता है । लैम्प के चारों ओर जो काँच होता है उसके दो उद्देश्य हैं । प्रथम यह कि काँच हो तो फिर लैम्प से धुआँ नहीं निकलता । द्वितीय यह कि उसका प्रकाश अधिक चमक के साथ बाहर निकलता और फैलता है ।

فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۟ۙ ﴿٤٠﴾

पाए। फिर वह (अल्लाह) उसे उसका पूरा-पूरा हिसाब दे और अल्लाह हिसाब चुकाने में तेज़ है ।40।

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ۟ ﴿٤١﴾ ع

अथवा (उनके कर्म) अन्धकारों की भाँति हैं जो गहरे समुद्रों में हों, जिसको लहर के ऊपर एक और लहर ने ढाँप रखा हो और उसके ऊपर बादल हों । यह ऐसे अन्धेरे हैं कि उनमें से कुछ, कुछ पर छाए हुए हैं । जब वह अपना हाथ निकालता है तो उसे भी देख नहीं सकता। और वह जिसके लिए अल्लाह ने कोई प्रकाश न बनायी हो तो उसके भाग में कोई प्रकाश नहीं ।41। (रुकू $\frac{5}{11}$)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٢﴾

क्या तूने नहीं देखा कि जो आसमानों और धरती में है अल्लाह ही का गुणगान करता है और पंख फैलाए हुए पक्षी भी । उनमें से प्रत्येक अपनी उपासना और स्तुति करने की विधि को जान चुका है । और अल्लाह उसका ख़ूब ज्ञान रखने वाला है जो वे करते हैं ।42।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾

और आसमानों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है । और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है ।43।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को चलाता है फिर उसे इकट्ठा कर देता है । फिर उसे परत दर परत बना देता है। फिर तू देखता है कि उसके बीच से वर्षा निकलने लगती है । और वह ऊँचाइयों से अर्थात् उन पर्वतों से जो उनमें स्थित हैं ओले उतारता है । और फिर जिस पर चाहता है उस पर उन्हें बरसाता है ।

وَيَصۡرِفُهٗ عَنۡ مَّنۡ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرۡقِهٖ يَذۡهَبُ بِالۡاَبۡصَارِ ؕ﴿۴۴﴾

और जिससे चाहे उनकी दिशा मोड़ देता है । सम्भव है कि उसकी बिजली की चमक (उनकी) दृष्टि शक्ति को उचक ले जाए ।44।

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّاُولِى الۡاَبۡصَارِ ﴿۴۵﴾

अल्लाह रात और दिन को अदलता बदलता रहता है । नि:सन्देह इसमें समझ रखने वालों के लिए शिक्षा है ।45।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنۡ مَّآءٍ ۚ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّمۡشِىۡ عَلٰى بَطۡنِهٖ ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّمۡشِىۡ عَلٰى رِجۡلَيۡنِ ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّمۡشِىۡ عَلٰٓى اَرۡبَعٍ ؕ يَخۡلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۴۶﴾

और अल्लाह ने प्रत्येक चलने फिरने वाले जीव को पानी से पैदा किया । अत: उनमें ऐसे भी हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं । और उनमें से ऐसे भी हैं जो दो पाँव पर चलते हैं । और ऐसे भी हैं जो चार (पाँव) पर चलते हैं । अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है । नि:सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।46।

لَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۴۷﴾

नि:सन्देह हमने स्पष्ट कर देने वाले चिह्न उतारे हैं । और अल्लाह जिसे चाहता है सन्मार्ग की ओर हिदायत देता है ।47।

وَيَقُوۡلُوۡنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوۡلِ وَاَطَعۡنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۴۸﴾

और वे कहते हैं कि हम अल्लाह पर और रसूल पर ईमान लाए और हमने आज्ञापालन किया । फिर भी उनमें से एक समूह उसके बाद पीठ फेर कर चला जाता है । और ये लोग कदाचित मोमिन नहीं हैं ।48।

وَاِذَا دُعُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ لِيَحۡكُمَ بَيۡنَهُمۡ اِذَا فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿۴۹﴾

और जब वे अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाते हैं ताकि वह उनके बीच निर्णय करे तो उनमें से सहसा कुछ लोग विमुख होने लगते हैं ।49।

وَاِنۡ يَّكُنۡ لَّهُمُ الۡحَقُّ يَاۡتُوۡۤا اِلَيۡهِ

और यदि उनको कोई हित दिखाई दे तो जल्दी से उस (अर्थात् रसूल) की ओर

مُذْعِنِينَ ۝٥٠

आज्ञापालन का दम भरते हुए चले आते हैं ।50।

أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۚ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝٥١ ع

क्या उनके मन में रोग है अथवा वे शंका में पड़ गए हैं, या डरते हैं कि अल्लाह उन पर अत्याचार करेगा और उसका रसूल भी । बल्कि यही हैं जो स्वयं अत्याचारी हैं ।51। (रुकू $\frac{6}{12}$)

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝٥٢

मोमिनों को जब अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उनके बीच निर्णय करे तो उनका उत्तर केवल यह होता है कि हमने सुना और आज्ञापालन किया । और यही हैं जो कृतार्थ होने वाले हैं ।52।

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝٥٣

और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे और अल्लाह से डरे और उसका तक़वा धारण करे तो यही हैं जो सफल होने वाले हैं ।53।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُل لَّا تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝٥٤

और उन्होंने अल्लाह की पक्की क़समें खाईं कि यदि तू उन्हें आदेश दे तो वे अवश्य निकल खड़े होंगे । तू कह दे कि क़समें न खाओ । नियमानुसार आज्ञापालन (करो) । नि:सन्देह अल्लाह जो तुम करते हो उससे सदा अवगत रहता है ।54।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا

कह दे कि अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो । फिर यदि तुम विमुख हो जाओ तो उस पर केवल उतना ही उत्तरदायित्व है जो उस पर डाला गया । और तुम पर भी उतना ही उत्तरदायित्व है जितना तुम पर डाला गया है । और यदि तुम उसका आज्ञापालन

عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۵۵﴾

करो तो हिदायत पा जाओगे। और रसूल पर खोल-खोल कर संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त कोई ज़िम्मेदारी नहीं ।55।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۶﴾

तुम में से जो लोग ईमान लाए और पुण्य कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती में ख़लीफ़ा बनाएगा । जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया । और उनके लिए उनके धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया, अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा । और उनकी भयपूर्ण अवस्था के बाद अवश्य उन्हें शांतिपूर्ण अवस्था में परिवर्तित कर देगा । वे मेरी उपासना करेंगे, मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएँगे । और जो उसके बाद भी कृतघ्नता करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं ।56।*

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۷﴾

और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल का आज्ञापालन करो ताकि तुम पर दया की जाए ।57।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ

कदापि विचार न कर कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया वे (मोमिनों को)

* इस आयत को आयते इस्तिख़्लाफ़ कहा जाता है । जिसमें यह बात प्रकट की गई है कि जिस प्रकार अल्लाह ने पहले नबियों के पश्चात् ख़िलाफ़त का क्रम जारी किया था उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात भी जारी करेगा । और वह ख़िलाफ़त नबी के प्रकाश को लेकर आगे बढ़ेगी । और हर बार जब कोई ख़लीफ़ा मृत्यु को प्राप्त होगा तो जमाअत को एक भय का सामना करना पड़ेगा । जो अल्लाह तआला की कृपा के साथ ख़िलाफ़त की बरकत से शांति में परिवर्तित हो जाएगा । अत: सच्ची ख़िलाफ़त की निशानी यह है कि वह मोमिनों की जमाअत को अशांति से शांति की ओर ले कर आएगी । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 'अल्-वसीयत' पुस्तिका में यही कहा है कि एक नबी या ख़लीफ़ा के गुज़रने के पश्चात् उस समय यही प्रतीत होता है कि अब शत्रु उस प्रकाश को बुझा देगा परन्तु आयते इस्तिख़्लाफ़ में स्पष्ट वादा है कि शत्रु हर बार असफल रहेगा ।
नुबुव्वत के आने का उद्देश्य संसार में एकेश्वरवाद की स्थापना करना है । अत: सच्ची ख़िलाफ़त की भी यही निशानी रखी है कि उसका अंतिम उद्देश्य एकेश्वरवाद की स्थापना करना होगा ।

فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٥٨﴾ ع ٧/١٣

धरती में असहाय करते फिरेंगे, जबकि उनका ठिकाना अग्नि है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है ।58। (रुकू $\frac{7}{13}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۚ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम में से वे, जिनके तुम स्वामी हो और वे जो तुम में से अभी वयस्क नहीं हुए, चाहिए कि वे तीन समयों में (तुम्हारे शयनकक्षों में प्रविष्ट होने से पूर्व) तुम से अनुमति लिया करें । सुबह की नमाज़ से पूर्व और उस समय जब तुम मध्यान्न विश्राम के समय (अतिरिक्त) वस्त्र उतार देते हो और इशा की नमाज़ के बाद । यह तीन तुम्हारे पर्दे के समय हैं । इनके अतिरिक्त (बिना अनुमति आने जाने पर) न तुम पर कोई पाप है, न उन पर । तुम में से कुछ-कुछ और के पास अधिकांश आते-जाते रहते हैं । इसी प्रकार अल्लाह आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।59।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾

और जब तुम में से बच्चे परिपक्व आयु को पहुँच जाएँ तो उसी प्रकार अनुमति लिया करें जिस प्रकार उनसे पहले लोग अनुमति लेते रहे । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को खोल-खोल कर वर्णन करता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।60।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ

और बैठी रह जाने वाली स्त्रियाँ जो विवाह की आशा न रखती हों यदि वे अपने (अतिरिक्त) कपड़े सुंदरता का

ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ۭ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٦١﴾

प्रदर्शन न करते हुए उतार दें तो उन पर कोई पाप नहीं । और यदि वे (इससे) बचें तो उनके लिए उत्तम है । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) बहुत जानने वाला है ।61।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ۭ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ۭ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾

अन्धे पर कोई आपत्ति नहीं और न अपंग पर आपत्ति है और न रोगी पर और न तुम लोगों पर कि तुम अपने घरों से अथवा अपने बाप-दादा के घरों से अथवा अपनी माताओं के घरों से अथवा अपने भाइयों के घरों से अथवा अपनी बहनों के घरों से अथवा अपने चाचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा उस (घर) से जिसकी चाबियाँ तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं अथवा अपने मित्रों के घरों से भोजन करो । तुम पर कोई पाप नहीं कि चाहे तुम इकट्ठे भोजन करो अथवा अलग-अलग । अतः जब तुम घरों में प्रविष्ट हुआ करो तो अपने लोगों पर अल्लाह की ओर से एक मंगलमय, पवित्र उपहार स्वरूप सलाम भेजा करो । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों को खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो ।62। (रुकू $\frac{8}{14}$)

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ۭ

सच्चे मोमिन तो वही हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाएँ और जब किसी महत्वपूर्ण सामूहिक विषय पर (विचार विमर्श के लिए) उस (रसूल) के पास एकत्रित हों तो जब

اِنَّ الَّذِیۡنَ یَسۡتَاۡذِنُوۡنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوۡلِهٖ ۚ فَاِذَا اسۡتَاۡذَنُوۡكَ لِبَعۡضِ شَاۡنِهِمۡ فَاۡذَنۡ لِّمَنۡ شِئۡتَ مِنۡهُمۡ وَاسۡتَغۡفِرۡ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۶۳﴾

तक उससे अनुमति न ले लें, उठ कर न जाएँ । नि:सन्देह वे लोग जो तुझ से अनुमति लेते हैं यही वे लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने वाले हैं । अत: जब वे तुझ से अपने कुछ कार्यों के लिए अनुमति लें तो उनमें से जिसे चाहे अनुमति दे दे । और उनके लिए अल्लाह से क्षमा याचना करता रह। नि:सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।63।

لَا تَجۡعَلُوۡا دُعَآءَ الرَّسُوۡلِ بَیۡنَكُمۡ كَدُعَآءِ بَعۡضِكُمۡ بَعۡضًا ؕ قَدۡ یَعۡلَمُ اللّٰهُ الَّذِیۡنَ یَتَسَلَّلُوۡنَ مِنۡكُمۡ لِوَاذًا ۚ فَلۡیَحۡذَرِ الَّذِیۡنَ یُخَالِفُوۡنَ عَنۡ اَمۡرِهٖۤ اَنۡ تُصِیۡبَهُمۡ فِتۡنَةٌ اَوۡ یُصِیۡبَهُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ﴿۶۴﴾

रसूल का (तुम्हें) बुलाना इस प्रकार न समझो जैसे तुम्हारे बीच तुम एक दूसरे को बुलाते हो । अल्लाह नि:सन्देह उन लोगों को जानता है जो तुम में से नज़र बचा कर चुपके से निकल जाते हैं । अत: वे लोग जो उसके आदेश का विरोध करने वाले हैं वे इस बात से डरें कि उन पर कोई विपत्ति न आ जाए अथवा पीड़ाजनक अज़ाब न आ पहुँचे ।64।

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ قَدۡ یَعۡلَمُ مَاۤ اَنۡتُمۡ عَلَیۡهِ ؕ وَ یَوۡمَ یُرۡجَعُوۡنَ اِلَیۡهِ فَیُنَبِّئُهُمۡ بِمَا عَمِلُوۡا ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیۡءٍ عَلِیۡمٌ ﴿۶۵﴾ ع

सावधान ! अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और धरती में है । वह जानता है जिस (अवस्था) पर तुम हो । और जिस दिन वे (लोग) उसकी ओर लौटाए जाएँगे तब वह उन्हें, उससे अवगत कराएगा जो वे किया करते थे । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का ख़ूब ज्ञान रखने वाला है ।65। (रुकू $\frac{9}{15}$)

25- सूरः अल-फ़ुर्क़ान

यह सूरः मक्की दौर के अन्त में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 78 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में यह वर्णन है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह **फ़ुर्क़ान** अर्थात महान कसौटी प्रदान की है जो सच्चे और झूठे के बीच सुस्पष्ट अंतर दिखाती है । यह वही कसौटी है जिसका बार-बार सूरः अन्-नूर में वर्णन हो चुका है । इस सूरः में इसके और उदाहरण प्रस्तुत किए गये हैं ।

एक तो यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न केवल अपने आस-पास के लोगों ही में स्पष्ट अंतर करने की योग्यता रखते थे बल्कि समग्र जगत के सच्चों और झूठों को परखने के लिए भी आपको एक महान फ़ुर्क़ान, क़ुरआन के रूप में प्रदान किया गया है ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आश्चर्यजनक चमत्कारों को देख कर आप सल्ल. के विरोधी सच्चे रसूल के लिए यह मनगढ़ंत कसौटी प्रस्तुत करते हुए यह कहते थे कि इस रसूल को क्या हो गया है कि यह भोजन करता है और बाज़ारों में भी फिरता है । इसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया ताकि इसके साथ मिल कर वह भी चेतावनी देता । इसी प्रकार उन्होंने एक यह मापदंड भी बना रखा था कि रसूल पर आसमान से कोई भौतिक ख़ज़ाना उतरना चाहिए था । हालाँकि रसूल पर उसकी शिक्षा के रूप में एक अंतहीन ख़ज़ाना उतरा करता है न कि कोई भौतिक ख़ज़ाना उतरता है ।

इसी प्रकार उनके अनुसार रसूल के पास अनेक विशाल बाग़ होने चाहिए जिनमें से वह बिना किसी परिश्रम के जितना चाहे खाता फिरे । अल्लाह तआला इसका उत्तर यह देता है कि हे रसूल ! हमने तेरे लिए स्वर्ग के जो बाग़ निश्चित कर रखे हैं उनकी ये अज्ञानी कल्पना भी नहीं कर सकते । उन बाग़ों में वह आध्यात्मिक महल भी होंगे जो केवल तेरे लिए ही बनाए गए हैं ।

इसी प्रकार काफ़िरों के दावे का खण्डन करते हुए यह कहा गया कि इससे पहले जितने भी रसूल गुज़रे हैं उनमें कोई एक ऐसा रसूल दिखाओ जो मनुष्यों की भाँति गलियों में चलता फिरता न हो । यदि नहीं दिखा सकते तो यह पूर्णतः रसूलों का इनकार करना है मानो अल्लाह किसी को रसूल बना ही नहीं सकता । और जहाँ तक उन काफ़िरों पर फ़रिश्तों के उतरने का सम्बन्ध है तो उन पर अवश्य फ़रिश्ते उतरेंगे परन्तु उनके विनाश का संदेश लेकर । और ऐसे अज़ाब की सूचना देते हुए जिससे मुक्ति प्राप्त करना सम्भव नहीं।

एक आपत्ति यह भी उठाई गई कि पवित्र क़ुरआन को इकट्ठा क्यों नहीं उतारा गया? वास्तविकता यह है कि पवित्र क़ुरआन इकट्ठा न उतारे जाने में बहुत से रहस्य छुपे हैं । एक तो यह है कि उस युग के परिवेश की आवश्यकता यह थी कि जैसे जैसे उनके रोग प्रकट होते चले जाएँ उनके अनुसार पवित्र क़ुरआन की ऐसी आयतों का अवतरण हो जो उस विषय से सम्बन्ध रखती हों । दूसरे, हर क्षण नए चिह्नों के द्वारा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल को दृढ़ता प्राप्त हो । और सारे क़ुरआन के अवतरण काल में आप एक नहीं, अनंत चिह्न देखते चले जाएँ । फिर यह भी कि तेईस वर्ष की अवधि में अवतरित हुए पवित्र क़ुरआन को यदि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं बनाया होता तो इसमें आयतें ऐसे सरल-सुगम और क्रमबद्ध न होतीं । जो लिखना पढ़ना भी न जानता हो तेईस वर्षों की अवधि पर उसकी कैसी दृष्टि पड़ सकती है ।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस रहस्य की ओर भी ध्यानाकर्षित करवाया है कि इस पूरी तेईस वर्षीय अवधि में हज़रत मुहम्मद सल्ल. को अत्यंत ख़तरनाक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा । बड़ी-बड़ी भयानक परिस्थितियों में सहाबा से आगे बढ़ कर बिल्कुल ख़तरों के बीच शत्रु से संघर्ष करते रहे । विष के द्वारा भी आपको मारने की चेष्टा की गयी । परन्तु जब तक शरीअत सम्पूर्ण न हुई अल्लाह तआला ने आपको वापस नहीं बुलाया । अत: पवित्र क़ुरआन का धीरे-धीरे उतरना एक महानतम चमत्कार है । इसी प्रकार **इबादुर्रहमान** (रहमान अल्लाह के भक्तों) के लक्षण वर्णन करते हुए सूर: के अंत पर यह उल्लेख किया है कि जिस प्रकार आकाश पर बारह नक्षत्र हैं उसी प्रकार तेरे बाद बारह सुधारक तेरे धर्म की सुरक्षा के लिए पैदा होंगे और फिर तेरे प्रकाश से पूर्णतया प्रकाश ग्रहण करने वाला पूर्ण चन्द्रमा भी आएगा ।

इसी रुकू में **इबादुर्रहमान** के लक्षणों में से उनका मध्यमार्गी होना, उनकी नम्रता, खड़े होकर तथा सजद: करते हुए उपासना में उनका जीवन व्यतीत करना उल्लेख है, जिसके परिणाम स्वरूप ही उनको समस्त प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त होती है । इस सूर: की अन्तिम आयत यह बताती है कि वे लोग क्यों सजद: करते हुए तथा खड़े होकर दुआएँ करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं । इस लिए कि दुआ के बिना अल्लाह तआला से जीवन प्राप्त करने का कोई साधन नहीं है । और जो उसको झुठला दें और अल्लाह से सम्बन्ध तोड़ दें उनको अनगिनत प्रकार के भयंकर रोग लग जाएँगे जो उनका पीछा नहीं छोड़ेंगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانٍ وَّ سَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّ سِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۙ②

बस एक वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसने अपने भक्त पर फ़ुर्क़ान* उतारा ताकि वह समस्त जगत के लिए सतर्ककारी बने ।2।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ③

वही जिसका आकाशों और धरती का साम्राज्य है और उसने कोई पुत्र नहीं अपनाया और न साम्राज्य में कोई उसका साझीदार है । और उसने हर चीज़ को पैदा किया और उसे बहुत अच्छे अनुमान के अनुसार ढाला ।3।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ④

और उन्होंने उसके अतिरिक्त ऐसे उपास्य बना रखे हैं जो कुछ पैदा नहीं करते । जबकि वे स्वयं पैदा किए गए हैं। और वे अपने लिए भी हानि अथवा लाभ पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखते । और न उनके अधिकार में मृत्यु है न जीवन और न ही पुनरुत्थान ।4।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۛۚ⑤

معانقة: عند المتاخرين

और जिन लोगों ने इनकार किया उन्होंने कहा कि यह झूठ के सिवा कुछ नहीं जो उसने गढ़ लिया है । और इस विषय में उसकी दूसरे लोगों ने सहायता की है । अत: नि:सन्देह वे पूर्णतया अत्याचार और झूठ बना लाए हैं ।5।

* सत्यासत्य में पार्थक्य करने वाला ग्रंथ ।

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝٦

और उन्होंने कहा कि पहले लोगों की कहानियाँ हैं जो उसने लिखवा ली हैं। अत: यह सुबह और शाम उस के समक्ष पढ़ी जाती हैं।6।

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٧

तू कह दे कि इसे उसने उतारा है जो आकाशों और धरती के भेद जानता है। नि:सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।7।

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝٨

और वे कहते हैं कि इस रसूल को क्या हो गया है कि भोजन करता है और बाज़ारों में चलता है। क्यों न इसकी ओर कोई फ़रिश्ता उतारा गया जो इसके साथ मिल कर (लोगों को) सतर्क करने वाला होता।8।

اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٩

अथवा इसकी ओर कोई ख़ज़ाना उतारा जाता अथवा इसका कोई बाग़ होता जिससे यह खाता। और अत्याचारियों ने कहा कि तुम लोग नि:सन्देह एक ऐसे व्यक्ति के सिवा किसी का अनुसरण नहीं कर रहे जिस पर जादू किया गया है।9।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝١٠ ع

देख! तेरे बारे में वे कैसे उदाहरण वर्णन करते हैं। अत: वे पथभ्रष्ट हो चुके हैं। और किसी मार्ग (प्राप्ति) का सामर्थ्य नहीं रखते।10। (रुकू $\frac{1}{16}$)

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝١١

बस एक वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जो यदि चाहता तो तेरे लिए इससे बहुत उत्तम चीज़ें बनाता अर्थात् ऐसे बाग़ जिनके दामन में नहरें बहतीं हों। और तेरे लिए बहुत से भव्य महल बना देता।11।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۚ﴿١٢﴾

बल्कि वे तो निश्चित घड़ी ही को झुठला बैठे हैं । और जो निश्चित घड़ी को झुठला दें, हमने उनके लिए एक भड़कती हुई अग्नि तैयार की है ।12।

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّ زَفِيْرًا ﴿١٣﴾

जब वह उन्हें अभी दूर से ही देखेगी तो वे उसकी क्रोध से भड़कती हुई आवाज़ और चीख़ें सुनेंगे ।13।

وَاِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ؕ﴿١٤﴾

जब वे उसमें ज़ंजीरों में जकड़े हुए संकीर्ण स्थान में डाले जाएँगे तो उस समय वे विनाश को पुकारेंगे ।14।

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّ ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿١٥﴾

आज के दिन तुम केवल एक ही विनाश को न पुकारो बल्कि अनेक विनाशों को पुकारो ।15।

قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ﴿١٦﴾

तू पूछ कि क्या यह (वस्तु) अच्छी है अथवा चिरस्थायी स्वर्ग, जिसका मुत्तक़ियों से वादा किया गया है । जो उनके लिए प्रतिफल और लौट कर आने का स्थान होगा ।16।

لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٧﴾

सदा (उसमें) रहते हुए वे जो चाहेंगे उसमें उनको प्राप्त होगा । यह ऐसा वादा है जिसे (पूरा करना) तेरे रब्ब पर अनिवार्य है ।17।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰۤؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ؕ﴿١٨﴾

और (याद करो) जिस दिन वह उनको इकट्ठा करेगा और उनको भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा उपासना करते थे, फिर उनसे कहेगा कि क्या तुमने मेरे इन भक्तों को पथभ्रष्ट कर दिया था अथवा वे स्वयं मार्ग से हट गए थे ? ।18।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَاۤ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ

वे कहेंगे, पवित्र है तू । हमें शोभा नहीं देता कि हम तुझे छोड़ कर कोई दूसरा स्वामी बना लेते । परन्तु तूने उनको

مَتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٩﴾

और उनके पूर्वजों को कुछ लाभ पहुँचाया, यहाँ तक कि वे (तेरे) अनुस्मरण को भूल गए और विनष्ट हो जाने वाले लोग बन गए ।19।

فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾

अतः वे तो जो तुम कहते हो, उसे झुठला चुके हैं । अतः न तुम (अज़ाब) को टालने का सामर्थ्य रखोगे न सहायता (प्राप्त करने) का । और तुम में से जो अत्याचार करे हम उसे एक बड़ा अज़ाब चखाएँगे ।20।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۗ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢١﴾ ع

और हमने, तुझ से पहले जितने भी रसूल भेजे वे अवश्य भोजन किया करते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे । और हमने तुम में से कुछ को कुछ के लिए परीक्षा का कारण बना दिया । क्या तुम धैर्य धरोगे ? और तेरा रब्ब गहन दृष्टि रखने वाला है ।21।

(रुकू $\frac{2}{17}$)

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢٢﴾

और जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, उन्होंने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए अथवा हम अपने रब्ब को देख लेते। नि:सन्देह उन्होंने स्वयं को बहुत बड़ा समझा है और बहुत बड़ी उद्दण्डता की है ।22।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَ يَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٣﴾

जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन अपराधियों के लिए कोई शुभ-समाचार नहीं होगा । और वे कहेंगे (अज़ाब देने वाले उन फ़रिश्तों से) ऐसी रोक ही उत्तम है जो पाटी न जा सके ।23।

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٤﴾

और जो कर्म भी उन्होंने किया हम उसकी ओर अग्रसर होंगे और हम उसे बिखरी हुई धूल बना देंगे ।24।

اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٥﴾

स्वर्ग के रहने वाले उस दिन स्थायी ठिकाने की दृष्टि से भी सबसे अच्छे होंगे और अस्थायी विश्राम स्थल की दृष्टि से भी उत्कृष्ट होंगे ।25।

وَ يَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٦﴾

और (याद करो) जिस दिन आकाश बादलों (की घोर गर्जन) से फटने लगेगा और फ़रिश्ते झुंड के झुंड उतारे जाएँगे ।26।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ٱلْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٧﴾

सच्चा राजत्व उस दिन रहमान का होगा और काफ़िरों के लिए वह दिन बहुत कठिन होगा ।27।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٨﴾

और (याद करो) जिस दिन अत्याचारी (पछतावा करते हुए) अपने हाथ काटेगा और कहेगा हाय! मैं ने रसूल के साथ ही मार्ग अपनाया होता ।28।

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٩﴾

हाय सर्वनाश ! काश मैं अमुक व्यक्ति को घनिष्ट मित्र न बनाता ।29।

لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٣٠﴾

(अल्लाह की) अनुस्मृति मेरे पास आने के पश्चात निःसन्देह उसने मुझे उस से विमुख कर दिया । और शैतान तो मनुष्य को असहाय छोड़ जाने वाला है ।30।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣١﴾

और रसूल कहेगा हे मेरे रब्ब ! निःसन्देह मेरी जाति ने इस क़ुरआन को परित्यक्त कर छोड़ा है ।31।*

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣٢﴾

और इसी प्रकार हम प्रत्येक नबी के लिए अपराधियों में से शत्रु बना देते हैं । और तेरा रब्ब हिदायत देने वाले के रूप में तथा सहायक के रूप में पर्याप्त है ।32।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚۛ كَذٰلِكَ ۚۛ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٣﴾

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, वे कहेंगे कि इस पर क़ुरआन एक बार में क्यों न उतारा गया । इसी प्रकार (उतारा जाना था) ताकि हम इसके द्वारा तेरे दिल को दृढ़ता प्रदान करें । और (इसी प्रकार) हमने इसे बहुत ठोस और सरल बनाया है ।33।

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ؕ ﴿٣٤﴾

और वे तेरे समक्ष जो भी तर्क लाते हम (उस के खण्डन के लिए) तेरे पास सच्चाई और (उसकी) सर्वोत्तम व्याख्या भी ले आते हैं ।34।

اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى

वे लोग जो औंधे मुँह इकट्ठे करके नरक की ओर ले जाए जाएँगे यही वे लोग हैं

* यह आयत सहाबा रजि. के बारे में तो कदापि नहीं है क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन काल में बल्कि आप सल्ल. के पश्चात तीन शताब्दियों तक आने वाले सहाबा और ताबईन और तबअ ताबईन ने क़ुरआन को नहीं छोड़ा । वस्तुतः यह एक भविष्यवाणी है जो भविष्य में पूरी होने वाली थी, जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जाति व्यवहारिक रूप से क़ुरआन को छोड़ देगी और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला से इस बात की शिकायत करेंगे ।

جَهَنَّمَ ۙ أُولَٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٣٥﴾

जो दर्जे की दृष्टि से सबसे निकृष्ट और सबसे अधिक पथभ्रष्ट हैं ।35।

(रुकू $\frac{3}{1}$)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٦﴾

और नि:सन्देह हमने मूसा को ग्रंथ प्रदान किया और उसके साथ हमने उसके भाई हारून को (उसका) सहायक बनाया ।36।

فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٧﴾

अत: हमने कहा तुम दोनों उन लोगों की ओर जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है । फिर हमने उन (झुठलाने वालों) को बुरी प्रकार से विनष्ट कर दिया ।37।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٨﴾

और नूह की जाति को भी, जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया हमने उन्हें डुबो दिया । और उन्हें हमने लोगों के लिए एक चिह्न बना दिया । और अत्याचारियों के लिए हमने पीड़ाजनक अज़ाब तैयार कर रखा है ।38।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٩﴾

और आद और समूद और कुएँ वालों को भी तथा बहुत सी उन जातियों को भी जो उस (समय) थीं ।39।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٤٠﴾

और प्रत्येक के लिए हमने (शिक्षाप्रद) उदाहरण वर्णन किये । और सबको हमने (अंतत:) बुरी प्रकार से विनष्ट कर दिया ।40।

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿٤١﴾

और वे (तेरे विरोधी) ऐसी बस्ती के पास से (कई बार) गुज़र चुके हैं जिस पर बुरी वर्षा बरसाई गई थी । अत: क्या वे उस पर विचार न कर सके ? वास्तविकता यह है कि वे पुनरुत्थान की आशा ही नहीं रखते ।41।

وَ اِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِىْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤٢﴾

और जब वे तुझे देखते हैं तो (यह कहते हुए) तुझे केवल उपहास का पात्र बनाते हैं कि क्या यह है वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा किया है ? ।42।

اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَاۤ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٣﴾

यदि हम अपने उपास्यों पर धैर्यपूर्वक (अडिग) न रहते तो सम्भव था कि यह हमें उन से भटका देता । और वे अवश्य जान लेंगे जब अज़ाब को देखेंगे कि कौन सबसे अधिक पथभ्रष्ट था ।43।

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿٤٤﴾

क्या तूने उस पर ध्यान दिया जिसने अपनी इच्छा ही को अपना उपास्य बना लिया । तो क्या तू उसका भी ज़ामिन बन सकता है ? ।44।

اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٥﴾

क्या तू धारणा करता है कि उनमें से अधिकतर सुनते हैं अथवा बुद्धि रखते हैं ? वे केवल पशुओं की भाँति हैं बल्कि वे (उनसे भी) अधिक पथभ्रष्ट हैं ।45।

(रुकू $\frac{4}{2}$)

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿٤٦﴾

क्या तूने अपने रब्ब की ओर नहीं देखा कि वह कैसे छाया को फैलाता जाता है और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर कर देता । फिर हमने सूर्य को उस का पता देने वाला बनाया है ।46।

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٧﴾

फिर हम उस (छाया) को अपनी ओर धीरे-धीरे समेट लेते हैं ।47।

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٨﴾

और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात्रि को वस्त्र और नींद को आराम तथा दिन को उन्नति का साधन बनाया ।48।

وَهُوَ الَّذِىْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ

और वही है जिसने अपनी कृपा-वृष्टि के आगे आगे हवाओं को शुभ-समाचार देते

رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿۴۹﴾

हुए भेजा । और हमने आकाश से पवित्र जल उतारा ।49।

لِّنُحْیِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّیْتًا وَّ نُسْقِیَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّ اَنَاسِیَّ كَثِیْرًا ﴿۵۰﴾

ताकि हम उसके द्वारा एक मृत-भूमि को जीवित करें और उस (जल) से उन्हें तृप्त करें जिन्हें हमने बहुलता के साथ पशुओं और मनुष्यों के रूप में पैदा किया ।50।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَیْنَهُمْ لِیَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤی اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۵۱﴾

और नि:सन्देह हमने उसे उनके बीच फेर-फेर कर वर्णन किया ताकि वे उपदेश ग्रहण करें । परन्तु अधिकतर लोगों ने केवल कृतघ्नता करते हुए इनकार कर दिया ।51।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِیْ كُلِّ قَرْیَةٍ نَّذِیْرًا ﴿۵۲﴾

और यदि हम चाहते तो प्रत्येक बस्ती में अवश्य कोई सचेतक भेज देते ।52।

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِیْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِیْرًا ﴿۵۳﴾

अत: काफ़िरों का अनुसरण न कर और इस (क़ुरआन) के द्वारा उनसे एक बड़ा जिहाद कर ।53।

وَهُوَ الَّذِیْ مَرَجَ الْبَحْرَیْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَیْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۵۴﴾

और वही है जो दो समुद्रों को मिला देगा, एक बहुत मीठा और एक बहुत खारा (और) कड़वा है । और उसने उन दोनों के बीच (अभी) एक रोक और जुदाई डाल रखी है जो पाटी नहीं जा सकती ।54।*

وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِیْرًا ﴿۵۵﴾

और वही है जिसने जल से मनुष्य को पैदा किया और उसे पैतृक और ससुराली रिश्तों में बांधा । और तेरा रब्ब स्थायी सामर्थ्य रखता है ।55।

---

* इसमें प्रशान्त महासागर और अतलांतिक महासागर का उल्लेख है । प्रशान्त महासागर अपेक्षाकृत मीठे पानी का समुद्र है और अतलांतिक महासागर कड़वे पानी का । इन दोनों के बीच एक रोक है जिसके बारे में एक अन्य आयत में कहा गया है कि यह रोक दूर कर दी जाएगी और इन दोनों समुद्र को मिला दिया जाएगा ।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿٥٦﴾

और वे अल्लाह को छोड़ कर उनकी उपासना करते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि पहुँचा सकते हैं । और काफ़िर अपने रब्ब के मुक़ाबले पर (दूसरों का) समर्थन करने वाला है ।56।

وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿٥٧﴾

और हमने तुझे केवल एक शुभ-समाचार देने वाला और सतर्ककारी के रूप में भेजा है ।57।

قُلْ مَا اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٨﴾

तू कह दे कि मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । परन्तु जो चाहे अपने रब्ब की ओर जाने वाला मार्ग अपना सकता है ।58।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۗ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾

और भरोसा कर उस जीवन्त पर जो कभी नहीं मरेगा । और उसकी स्तुति के साथ उसकी पवित्रता का बखान कर । और वह अपने भक्तों के पापों की जानकारी रखने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है ।59।

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٦٠﴾

जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में पैदा किया । फिर वह अर्श पर विराजमान हो गया । वह रहमान है । अतः उसके बारे में किसी जानकार से प्रश्न कर ।60।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿٦١﴾

और जब उन्हें कहा जाता है कि रहमान के समक्ष सजदः करो तो वे कहते हैं कि रहमान है क्या चीज़ ? क्या हम उसे सजदः करें जिसका तू हमें आदेश देता है? और उनको इस (बात) ने घृणा में और भी बढ़ा दिया ।61। (रुकू $\frac{5}{3}$)

تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا

अतः एक वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसने आकाश में नक्षत्र बनाए । और

وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦٢﴾

उस (आकाश) में एक उज्ज्वल दीपक (अर्थात् सूर्य) और एक चमकता हुआ चन्द्रमा बनाया ।62।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٣﴾

और वही है जिसने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, उसके लिए जो उपदेश प्राप्त करना चाहे अथवा कृतज्ञता व्यक्त करना चाहे ।63।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٤﴾

और रहमान के भक्त वे हैं जो धरती पर विनम्रता के साथ चलते हैं । और जब मूर्ख लोग उनसे सम्बोधित होते हैं तो (उत्तर में) कहते हैं 'सलाम' ।64।

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٥﴾

और वे लोग जो अपने रब्ब (की उपासना) के लिए रातें सजद: करते हुए और खड़े रह कर गुज़ारते हैं ।65।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٦﴾

और वे लोग जो कहते हैं हे हमारे रब्ब ! हमसे नरक का अज़ाब टाल दे । नि:सन्देह उसका अज़ाब चिमट जाने वाला है ।66।

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٧﴾

नि:सन्देह वह अस्थायी ठिकाने के रूप में और स्थायी ठिकाने के रूप में भी बहुत बुरा है ।67।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٨﴾

और वे लोग कि जब खर्च करते हैं तो अपव्यय नहीं करते और न कृपणता से काम लेते हैं । बल्कि इस के बीच सन्तुलन होता है ।68।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

और वे लोग जो अल्लाह के साथ किसी अन्य उपास्य को नहीं पुकारते और किसी ऐसी जान का जिसे अल्लाह ने प्रतिष्ठा प्रदान की हो अन्यायपूर्वक वध नहीं करते और व्यभिचार नहीं करते

يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٩﴾

और जो कोई ऐसा करेगा पाप (का दण्ड) पाएगा ।69।

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٧٠﴾

उसके लिए क़यामत के दिन अज़ाब को बढ़ाया जाएगा और वह उसमें लम्बे समय तक अपमानित व लज्जित अवस्था में रहेगा ।70।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧١﴾

सिवाए उसके जो प्रायश्चित करे और ईमान लाए और नेक कर्म करे । अत: यही वे लोग हैं जिनकी बुराइयों को अल्लाह अच्छाइयों में परिवर्तित कर देगा । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।71।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧٢﴾

और जो प्रायश्चित करे और पुण्य कर्म करे तो वही वास्तव में अल्लाह की ओर प्रायश्चित करते हुए लौटता है ।72।

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٣﴾

और वे लोग जो झुठी गवाही नहीं देते और जब वे व्यर्थ * (चीज़ों) के निकट से गुज़रते हैं तो शालीनता के साथ गुज़रते हैं ।73।

وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٤﴾

और वे लोग, कि जब उन्हें उनके रब्ब की आयतें स्मरण करवाई जाती हैं तो उन पर वे बहरे और अंधे बन कर नहीं गिरते ।74।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٥﴾

और वे लोग जो यह कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें अपने जीवन-साथियों से और अपनी संतान से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना दे ।75।

---

* यहाँ 'व्यर्थ' वस्तुवाचक संज्ञा के रूप में लिया गया है ।

أُولَٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝٧٦

यही वे लोग हैं जिन्हें उनके धैर्य धरने के प्रतिफल स्वरूप अट्टालिकायें दी जाएँगी। और वहाँ उनका अभिवादन किया जाएगा और उन्हें सलाम पहुँचाया जाएगा ।76।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٧٧

वे सदा उन (स्वर्गों) में रहने वाले होंगे । वे अस्थायी ठिकाने के रूप में और स्थायी ठिकाने के रूप में भी क्या ही अच्छे हैं ।77।

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝٧٨

तू कह दे कि यदि तुम्हारी दुआ न होती तो मेरा रब्ब तुम्हारी कोई परवाह न करता । पर तुम उसे झुठला चुके हो । अतः अवश्य उसका दुष्परिणाम तुम से चिमट जाने वाला है ।78। (रुकू $\frac{6}{4}$)

26- सूर: अश-शुअरा

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 228 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरम्भ पुन: एक बार कुछ खण्डाक्षरों से किया गया है और इसके साथ **सीन** अक्षर पहली बार खण्डाक्षर के रूप में अवतरित किया गया है । इसके अनेक अर्थ हो सकते हैं और हैं । परन्तु कुछ विद्वान इन खण्डाक्षरों की व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि **ता** अक्षर से अभिप्राय पवित्र और **सीन** से अभिप्राय सुनने वाला तथा **मीम** से अभिप्राय जानने वाला है ।

पिछली सूर: के अंत में बताया गया था कि जब मनुष्य दुआ का इनकार करके अल्लाह तआला से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेता है तो उसे इसके परिणाम स्वरूप प्रत्येक प्रकार के आध्यात्मिक रोग चिमट जाते हैं । इस सूर: में उसी के उदाहरणस्वरूप उन जातियों का वर्णन है जिनसे दुआ के इनकार के परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला ने यही बर्ताव किया । उन सब इनकार करने वाली जातियों के वर्णन के पश्चात **अल अज़ीज़ुर्रहीम** (प्रबल प्रतापी और बारबार दया करने वाला) शब्द की जो पुनरावृत्ति की गयी है इस से स्पष्ट होता है कि फिर अल्लाह तआला ने दयालु होने के कारण उनको दोबारा अवसर प्रदान किया कि शायद वे वापस लौटें । परन्तु बारम्बार ऐसा होते रहने पर भी अंतत: वे सत्य को ठुकराते रहे और फिर अल्लाह तआला नवीन कृपा के साथ उन पर उतरता रहा ।

यहाँ **अल अज़ीज़** (प्रबल प्रतापी) शब्द की पुनरावृत्ति यह बता रही है कि अल्लाह के शत्रुओं ने तो नबियों को तिरस्कृत और अपमानित करने का प्रयत्न किया परन्तु उनके रब्ब ने उनको चिरस्थायी सम्मान प्रदान किया ।

इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया है कि अपने निकट सम्बन्धियों को उनके बुरे अन्त से सतर्क कर । और जो आध्यात्मिक परिजन तुझे प्रदान किए गए हैं उन पर अपनी करुणा के पंख झुका दे । यदि अस्वीकार करने वाले अपने अस्वीकार पर डटे रहें तो यह घोषणा कर दे कि मैं तुम्हारे अस्वीकार करने से विमुख हुँ । और मेरा भरोसा तो केवल अल्लाह ही पर है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील तथा बार-बार दया करने वाला है । और दुआओं को बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है ।

इसके पश्चात् एक ऐसा तर्क दिया गया है जिससे निश्चित रूप से सिद्ध होता है कि नबियों पर कदापि शैतान नहीं उतर सकते क्योंकि न वे **अफ़्फ़ाक़** होते हैं और न **असीम** अर्थात् वे न तो झूठ बोलने वाले होते हैं और न पापी होते हैं । और उनके सच्चे

होने पर उनके आस पास रहने वाले सब साक्षी हैं ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरने वाली वाणी की महानता में एक यह बात भी है कि यह उत्कृष्ट काव्यरस से परिपूर्ण है । और पवित्र क़ुरआन की काव्यात्मक शुद्धता और सुगमता से प्रभावित हो कर बहुत से कवियों ने कविता कहनी ही छोड़ दी थी । परन्तु इससे यह परिणाम निकालना कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं एक उच्चकोटि के कवि थे इस दृष्टि से असत्य है कि कवि तो अपनी कल्पना में भटकता फिरता है परन्तु क़ुरआन तो अकारण काल्पनिक बातें नहीं करता ।

इसके साथ ही उन मुसलमान कवियों को अपवाद स्वरूप बरी कर दिया गया जो ईमान लाए, पुण्य कर्म किए और वे अधिकता के साथ अल्लाह तआला का स्मरण करते हैं । और जब उन पर अत्याचार किया गया तो उसका प्रतिशोध लेते हैं । यहाँ उन मुसलमान कवियों की ओर संकेत है जिन्होंने उस समय अपनी कविता के द्वारा प्रतिशोध लिया जब काफ़िरों के निन्दक कवियों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आक्रमण किया ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَتَانِ وَثَمَانٍ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ اَحَدَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

طٰسٓمّٓ ②

तय्यिबुन्, समीउन, अलीमुन : पवित्र, बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला ।2।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ③

यह सुस्पष्ट कर देने वाली एक पुस्तक की आयतें हैं ।3।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ④

क्या तू अपनी जान को इस लिए नष्ट कर देगा कि वे मोमिन नहीं होते ।4।

اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ⑤

यदि हम चाहें तो उन पर आकाश से एक ऐसा चिह्न उतारें जिसके सामने उनकी गर्दनें झुक जाएँ ।5।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ⑥

और उनके पास रहमान की ओर से जो भी ताज़ा उपदेश आता है वे उससे विमुख होने वाले बनते हैं ।6।

فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑦

अत: नि:सन्देह उन्होंने (प्रत्येक ताज़ा चिह्न को) झुठला दिया है । अत: अवश्य उन्हें उन (बातों के पूरा होने) के समाचार मिलेंगे जिनकी वे खिल्ली उड़ाया करते थे ।7।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ⑧

क्या उन्होंने धरती को नहीं देखा कि हमने उसमें (वनस्पति के) कितने ही उत्तम प्रजाति के जोड़े उगाए हैं ।8।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ⑨

नि:सन्देह इसमें एक बहुत बड़ा चिह्न है । जबकि अधिकतर उनमें से ईमान लाने वाले नहीं ।9।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠﴾ ع

और नि:सन्देह तेरा रब्ब ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।10। (रुकू $\frac{1}{5}$)

وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰۤى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١١﴾

और जब तेरे रब्ब ने मूसा को आवाज़ दी कि तू अत्याचारी जाति की ओर जा ।11।

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿١٢﴾

(अर्थात्) फ़िरऔन की जाति की ओर (यह कहते हुए कि) क्या वे तक़्वा धारण नहीं करेंगे ? ।12।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿١٣﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! नि:सन्देह मैं डरता हूँ कि वे मुझे झुठला देंगे ।13।

وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿١٤﴾

और मेरा सीना तंगी अनुभव करता है और मेरी ज़ुबान नहीं चलती । अत: हारून की ओर अपनी रिसालत (अर्थात पैग़म्बरी) भेज ।14।

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿١٥﴾

और मुझ पर उनकी ओर से एक अपराध (का आरोप) भी है । अत: मैं डरता हूँ कि वे मेरी हत्या न कर दें ।15।

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٦﴾

उस (अल्लाह) ने कहा, कदापि नहीं ! अत: तुम दोनों हमारे चिह्नों के साथ जाओ । नि:सन्देह हम तुम्हारे साथ ख़ूब सुनने वाले हैं ।16।

فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٧﴾

अत: दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और (उसे) कहो कि हम नि:सन्देह समस्त लोकों के रब्ब की ओर से पैग़म्बर हैं ।17।

اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٨﴾

(यह संदेश देने के लिए) कि हमारे साथ बनी-इस्राईल को भेज दे ।18।

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿١٩﴾

उसने कहा, क्या हमने तुझे बचपन से अपने बीच नहीं पाला और जबकि तू अपनी आयु के कई वर्ष हमारे बीच रहा ? ।19।

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِىْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٠﴾

और तूने वह कर्म किया जो तूने ही किया और तू कृतघ्नों में से है ।20।

قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٢١﴾

उसने कहा, मैंने वह कर्म उस समय किया जब मैं राह से भटका हुआ था ।21।

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِىْ رَبِّىْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِىْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٢﴾

इसलिए जब मैं तुमसे भयभीत हुआ तो मैं तुम से फ़रार हो गया । तब मेरे रब्ब ने मुझे तत्त्वज्ञान प्रदान किया और मुझे पैग़म्बरों में से बना दिया ।22।

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَىَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾

और (क्या तेरा) यह उपकार है, जो तू मुझ पर जता रहा है कि तूने बनी इस्राईल को दास बना डाला ? ।23।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٤﴾

फ़िरऔन ने कहा, और वह समस्त लोकों का रब्ब है क्या चीज़ ? ।24।

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٥﴾

उसने कहा, आसमानों और धरती का रब्ब और उसका (भी) जो उन दोनों के बीच है । (अच्छा होता) यदि तुम विश्वास करने वाले होते ।25।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٦﴾

उसने उनसे जो उसके चारों ओर थे कहा, क्या तुम सुन नहीं रहे ? ।26।

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٧﴾

उस (अर्थात मूसा) ने कहा, (वह) तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब्ब है ।27।

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِىْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٨﴾

उस (अर्थात फ़िरऔन) ने कहा निःसन्देह यह तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, अवश्य पागल है ।28।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٩﴾

उस (अर्थात मूसा) ने कहा (वह) पूरब का भी रब्ब है और पश्चिम का भी और उसका भी जो उन दोनों के मध्य है । (अच्छा होता) यदि तुम बुद्धि से काम लेते ।29।

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝٣٠

उसने कहा, यदि तूने मेरे सिवा किसी को उपास्य बनाया तो मैं अवश्य तुझे बन्दी बना दूँगा ।30।

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ۝٣١

उसने कहा, क्या ऐसी अवस्था में भी कि मैं तेरे समक्ष कोई खुली-खुली वस्तु प्रस्तुत करूँ ? ।31।

قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٣٢

उसने कहा, फिर उसे ले आ यदि तू सच्चों में से है ।32।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝٣٣

तब उसने अपनी लाठी फेंकी तो सहसा वह स्पष्ट दिखाई देने वाला अजगर बन गया ।33।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝٣٤ ع

फिर उसने अपना हाथ निकाला तो सहसा वह देखने वालों को सफ़ेद दिखाई देने लगा ।34। (रुकू $\frac{2}{6}$)

قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝٣٥

उस (फ़िरऔन) ने अपनी चारों ओर के सरदारों से कहा, निःसन्देह यह कोई बड़ा कुशल जादूगर है ।35।

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝٣٦

यह चाहता है कि अपने जादू के बल पर तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दे । अतः तुम क्या परामर्श देते हो ? ।36।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝٣٧

उन्होंने कहा, इसको और इसके भाई को कुछ ढील दे और शहरों में (लोगों को) एकत्रित करने वाले भेज दे ।37।

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ۝٣٨

वे तेरे पास प्रत्येक प्रकार के कुशल जादूगर ले आएँगे ।38।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٣٩

अतः जादूगरों को एक निर्धारित दिन के निश्चित समय पर इकट्ठा किया गया ।39।

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۝٤٠

और लोगों से कहा गया कि क्या तुम एकत्रित हो सकोगे ? ।40।

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾

ताकि यदि जादूगर विजयी हो जाएँ तो हम उन्हीं के पीछे चलें ।41।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٢﴾

अतः जब जादूगर आ गए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा यदि हम ही विजयी हो गये तो क्या हमारे लिए कोई प्रतिफल भी होगा ? ।42।

قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٣﴾

उसने कहा, हाँ और निश्चित रूप से तुम इस अवस्था में निकटवर्तियों में भी सम्मिलित हो जाओगे ।43।

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٤﴾

मूसा ने उनसे कहा, जो (जादू) तुम डालने वाले हो डाल दो ।44।

فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَ عِصِيَّهُمْ وَ قَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٥﴾

तब उन्होंने अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ (धरती पर) डाल दीं और कहा, फ़िरऔन के सम्मान की सौगन्ध ! निःसन्देह हम ही विजयी होने वाले हैं ।45।

فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٦﴾

तब मूसा ने अपनी लाठी फेंकी तो सहसा वह उस झूठ को निगलने लगी जो उन्होंने गढ़ा था ।46।

فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٧﴾

तब जादूगर सजदः करते हुए (धरती पर) गिरा दिए गए ।47।

قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٨﴾

उन्होंने कहा, हम समस्त लोकों के रब्ब पर ईमान ले आए हैं ।48।

رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿٤٩﴾

मूसा और हारून के रब्ब पर ।49।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ

उस (अर्थात फ़िरऔन) ने कहा, क्या मेरी अनुमति से पूर्व ही तुम उस पर ईमान ले आए हो ? निःसन्देह यह तुम्हारा मुखिया है जिसने तुम्हें जादू सिखाया था। अतः तुम शीघ्र ही (इसका

وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۚ﴿٥٠﴾

परिणाम) जान लोगे। मैं अवश्य तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से काट डालूँगा। और निःसन्देह मैं तुम सब को सूली पर लटका दूँगा।50।

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۚ﴿٥١﴾

उन्होंने कहा, कोई आपत्ति नहीं निःसन्देह हम अपने रब्ब ही की ओर लौटने वाले हैं।51।

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۟ؑ﴿٥٢﴾

निःसन्देह हम आशा लगाए बैठे हैं कि हमारा रब्ब हमारी भूलों को क्षमा कर देगा क्योंकि हम सर्वप्रथम ईमान लाने वालों में से हो गए।52। (रुकू $\frac{3}{7}$)

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٣﴾

और हमने मूसा की ओर वह्इ की कि रात को किसी समय हमारे भक्तों को यहाँ से ले चल। निःसन्देह तुम्हारा पीछा किया जाएगा।53।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۚ﴿٥٤﴾

अतः फ़िरऔन ने विभिन्न शहरों में एकत्रित करने वाले भेजे।54।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۙ﴿٥٥﴾

(यह घोषणा करते हुए कि) निःसन्देह ये लोग एक अल्पसंख्यक तुच्छ समुदाय हैं।55।

وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۙ﴿٥٦﴾

और इस पर भी ये अवश्य हमें क्रोध दिला कर रहते हैं।56।

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۗ﴿٥٧﴾

जबकि हम सब अवश्य सतर्क रहने वाले हैं।57।

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿٥٨﴾

अतः हमने उन्हें बाग़ों और झरनों (वाले भू-भाग) से निकाल दिया।58।

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۙ﴿٥٩﴾

तथा ख़ज़ानों और सम्मानजनक स्थान से भी।59।

كَذٰلِكَ ۗ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۗ﴿٦٠﴾

इसी प्रकार (हुआ)। और हमने बनी-इस्राईल को उस (भू-भाग) का उत्तराधिकारी बना दिया।60।

فَاَتۡبَعُوۡهُمۡ مُّشۡرِقِيۡنَ﴿۶۱﴾

अत: वे (फ़िरऔन और उसके साथी) तड़के ही उनके पीछे लग गए ।61।

فَلَمَّا تَرَآءَ الۡجَمۡعٰنِ قَالَ اَصۡحٰبُ مُوۡسٰۤى اِنَّا لَمُدۡرَكُوۡنَ﴿۶۲﴾

फिर जब दोनों समूहों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा के साथियों ने कहा, नि:सन्देह हम तो पकड़े गए ।62।

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىۡ سَيَهۡدِيۡنِ﴿۶۳﴾

उस (अर्थात् मूसा) ने कहा, कदापि नहीं । नि:सन्देह मेरा रब्ब मेरे साथ है (और) अवश्य वह मेरा मार्गदर्शन करेगा ।63।

فَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰى مُوۡسٰۤى اَنِ اضۡرِبْ بِّعَصَاكَ الۡبَحۡرَ ؕ فَانۡفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرۡقٍ كَالطَّوۡدِ الۡعَظِيۡمِ﴿۶۴﴾

अत: हमने मूसा की ओर वह्इ की कि अपनी लाठी से समुद्र पर प्रहार कर । इस पर (समुद्र) फट गया और प्रत्येक टुकड़ा ऐसा हो गया जैसे कोई बड़ा टीला हो ।64।*

وَاَزۡلَفۡنَا ثَمَّ الۡاٰخَرِيۡنَ﴿۶۵﴾

और उस स्थान पर हमने दूसरों को (पहलों के) निकट कर दिया ।65।

وَاَنۡجَيۡنَا مُوۡسٰى وَمَنۡ مَّعَهٗۤ اَجۡمَعِيۡنَ﴿۶۶﴾

और हमने मूसा को और उन सब को भी जो उसके साथ थे मुक्ति प्रदान की ।66।

ثُمَّ اَغۡرَقۡنَا الۡاٰخَرِيۡنَ﴿۶۷﴾

फिर हमने दूसरों को डुबो दिया ।67।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ﴿۶۸﴾

नि:सन्देह इसमें एक बहुत बड़ा चिह्न था और (बावजूद इसके) उनमें से अधिकतर मोमिन नहीं बने ।68।

---

* इस आयत में हज़रत मूसा अलै. के समुद्र को उस स्थान से पार करने का उल्लेख है जहाँ नील नदी और समुद्र परस्पर मिलते हैं । अत: कभी कभार नील नदी में ऊपरी क्षेत्र से बाढ़ का पानी तीव्र वेग से इस प्रकार आ रहा होता है और लगता है कि पानी की एक दीवार चली आ रही है । इसी प्रकार समुद्र भी ज्वार के समय तूफ़ानी लहरों के साथ उठ कर आगे बढ़ता है । हज़रत मूसा अलै. को ऐसे समय में अल्लाह तआला ने नदी और समुद्र के उस संगम स्थल से सुरक्षित पार करवा दिया जबकि यह दोनों विशाल जलराशि अभी परस्पर मिले नहीं थे । परन्तु पीछे जो फ़िरऔन की जाति उनको पकड़ने के लिए आ रही थी वे सब के सब फ़िरऔन सहित उस समय डूब गए जब विपरीत दिशाओं से आ रही ये दोनों विशाल जलराशियाँ परस्पर मिल गईं ।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٩﴾	और निःसन्देह तेरा रब्ब ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।69। (रुकू $\frac{4}{8}$)
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٧٠﴾	और उन के समक्ष इब्राहीम की ख़बर पढ़ ।70।
اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧١﴾	जब उसने अपने पिता और उसकी जाति से कहा, तुम किस वस्तु की उपासना करते हो ? ।71।
قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧٢﴾	उन्होंने कहा, हम मूर्तियों की उपासना करते हैं और उनकी (उपासना के) लिए बैठे रहते हैं ।72।
قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٣﴾	उसने कहा, जब तुम (उन्हें) पुकारते हो तो क्या वे तुम्हारी पुकार सुनते हैं ? ।73।
اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٤﴾	अथवा तुम्हें लाभ पहुँचाते हैं या कोई हानि पहुँचाते हैं ? ।74।
قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٥﴾	उन्होंने कहा, बल्कि हमने अपने पूर्वजों को देखा कि वे इसी प्रकार किया करते थे ।75।
قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٦﴾	उसने कहा, क्या तुमने ध्यान दिया कि तुम किसकी उपासना करते रहे हो ? ।76।
اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٧﴾	(अर्थात) तुम और तुम्हारे पूर्वज ।77।
فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٨﴾	अतः निःसन्देह ये (सब के सब) मेरे शत्रु हैं सिवाय समस्त लोकों के रब्ब के ।78।
الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٩﴾	जिसने मुझे पैदा किया । अतः वही है जो मेरा मार्गदर्शन करता है ।79।
وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٨٠﴾	और वही है जो मुझे खिलाता है और पिलाता है ।80।

وَاِذَا مَرِضۡتُ فَهُوَ يَشۡفِيۡنِ ۙ﴿٨١﴾

और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही है जो मुझे आरोग्य प्रदान करता है ।81।

وَالَّذِىۡ يُمِيۡتُنِىۡ ثُمَّ يُحۡيِيۡنِ ۙ﴿٨٢﴾

और जो मुझे मारेगा और फिर जीवित करेगा ।82।

وَالَّذِىۡۤ اَطۡمَعُ اَنۡ يَّغۡفِرَ لِىۡ خَطِيۡٓـئَتِىۡ يَوۡمَ الدِّيۡنِ ؕ﴿٨٣﴾

और जिससे मैं आशा रखता हूँ कि कर्मफल प्राप्ति के दिन मेरे दोष क्षमा कर देगा ।83।

رَبِّ هَبۡ لِىۡ حُكۡمًا وَّاَلۡحِقۡنِىۡ بِالصّٰلِحِيۡنَ ۙ﴿٨٤﴾

हे मेरे रब्ब ! मुझे तत्त्वज्ञान प्रदान कर और मुझे नेक लोगों में सम्मिलित कर ।84।

وَاجۡعَلۡ لِّىۡ لِسَانَ صِدۡقٍ فِى الۡاٰخِرِيۡنَ ۙ﴿٨٥﴾

और मेरे लिए बाद के आने वालों में सच कहने वाली ज़ुबान निश्चित कर दे ।85।

وَاجۡعَلۡنِىۡ مِنۡ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيۡمِ ۙ﴿٨٦﴾

और मुझे नेमतों वाले स्वर्ग के उत्तराधिकारियों में से बना ।86।

وَاغۡفِرۡ لِاَبِىۡۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيۡنَ ۙ﴿٨٧﴾

और मेरे पिता को भी क्षमा कर दे । नि:सन्देह वह पथभ्रष्टों में से था ।87।

وَلَا تُخۡزِنِىۡ يَوۡمَ يُبۡعَثُوۡنَ ۙ﴿٨٨﴾

और मुझे उस दिन अपमानित न करना जिस दिन वे (सब) उठाए जाएँगे ।88।

يَوۡمَ لَا يَنۡفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوۡنَ ۙ﴿٨٩﴾

जिस दिन न कोई धन लाभ देगा और न पुत्र ।89।

اِلَّا مَنۡ اَتَى اللّٰهَ بِقَلۡبٍ سَلِيۡمٍ ؕ﴿٩٠﴾

परन्तु वही (लाभ में रहेगा) जो अल्लाह के समक्ष आज्ञाकारी हृदय लेकर उपस्थित होगा ।90।

وَاُزۡلِفَتِ الۡجَـنَّةُ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ۙ﴿٩١﴾

और स्वर्ग को मुत्तक़ियों के निकट कर दिया जाएगा ।91।

وَبُرِّزَتِ الۡجَحِيۡمُ لِلۡغٰوِيۡنَ ۙ﴿٩٢﴾

और नरक को पथभ्रष्टों के सामने ला खड़ा किया जाएगा ।92।

وَقِيۡلَ لَهُمۡ اَيۡنَمَا كُنۡتُمۡ تَعۡبُدُوۡنَ ۙ﴿٩٣﴾

और उनसे कहा जाएगा, वे कहाँ हैं जिनकी तुम उपासना किया करते थे ? ।93।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ؕ ﴿٩٤﴾

अल्लाह के सिवा, क्या वे तुम्हारी सहायता कर सकते हैं अथवा (अपना) प्रतिशोध ले सकते हैं ? ।94।

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ۙ ﴿٩٥﴾

अतः वे और अवज्ञाकारी लोग भी उसमें औंधे गिरा दिए जाएँगे ।95।

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ؕ ﴿٩٦﴾

और इब्लीस की समस्त सेना भी ।96।

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۙ ﴿٩٧﴾

जबकि वे उसमें परस्पर झगड़ रहे होंगे, वे कहेंगे, ।97।

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ ﴿٩٨﴾

अल्लाह की क़सम ! हम तो निःसन्देह खुली-खुली पथभ्रष्टता में थे।98।

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٩﴾

जब हम तुम्हें समस्त लोकों के रब्ब के समकक्ष ठहराते थे ।99।

وَمَاۤ اَضَلَّنَاۤ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٠٠﴾

और हमें अपराधियों के सिवा किसी ने पथभ्रष्ट नहीं किया ।100।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ۙ ﴿١٠١﴾

अतः हमारे लिए (अब) कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं है ।101।

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠٢﴾

और न कोई अंतरंग मित्र है ।102।

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

काश ! हमारे लिए एक बार लौट कर जाना (संभव) होता तो हम ईमान लाने वालों में से हो जाते ।103।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

इसमें निःसन्देह एक बड़ा चिह्न है । और उनमें से अधिकांश मोमिन नहीं थे ।104।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٥﴾ ع ٣٦ ٩

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।105। (रुकू $\frac{5}{9}$)

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِالْمُرْسَلِيْنَ ۚ ﴿١٠٦﴾

नूह की जाति ने भी पैग़म्बरों को झुठला दिया था ।106।

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٧﴾

जब उनके भाई नूह ने उनसे कहा था, क्या तुम तक़्वा से काम नहीं लोगे ? ।107।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٨﴾

नि:सन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैग़म्बर हूँ ।108।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٩﴾

अत: अल्लाह का तक़्वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।109।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١١٠﴾

और मैं इस पर तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है ।110।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١١﴾

अत: अल्लाह का तक़्वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।111।

قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١٢﴾

उन्होंने कहा, क्या हम तेरी बात मान लें ? जबकि सबसे निम्न वर्ग के लोगों ने तेरा अनुसरण किया है ।112।

قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٣﴾

उसने कहा, जो कार्य वे किया करते थे मुझे उस बारे में क्या मालूम ? ।113।

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٤﴾

उनका हिसाब केवल मेरे रब्ब के ज़िम्मे है । काश ! तुम समझ रखते।114।

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٥﴾

और मैं तो ईमान लाने वालों को धुतकारने वाला नहीं हूँ ।115।

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٦﴾

मैं तो केवल एक खुला-खुला सतर्ककारी हूँ ।116।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ
مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٧﴾

उन्होंने कहा, हे नूह ! यदि तू न रुका तो अवश्य तू संगसार किए जाने वालों में से हो जाएगा ।117।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٨﴾ النصف

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया है ।118।

فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي

अत: मेरे और इनके मध्य स्पष्ट निर्णय कर दे और मुझे मुक्ति प्रदान कर ।

وَمَنْ مَّعِىَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٩﴾

और उनको भी जो मोमिनों में से मेरे साथ हैं ।119।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٢٠﴾

अत: हमने उसे और उनको जो उसके साथ थे एक भरी हुई नौका के द्वारा मुक्ति दी ।120।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ﴿١٢١﴾

फिर हमने बाद में शेष रहने वालों को डुबो दिया ।121।

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾

नि:सन्देह इसमें एक बड़ा चिह्न है और उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे ।122।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٣﴾ ع ١٨ ١٠

और नि:सन्देह तेरा रब्ब ही है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।123। (रुकू $\frac{6}{10}$)

كَذَّبَتْ عَادُ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾

आद (जाति) ने (भी) पैग़म्बरों को झुठला दिया ।124।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٥﴾

जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा, क्या तुम तक़वा धारण नहीं करोगे ? ।125।

اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٦﴾

नि:सन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैग़म्बर हूँ ।126।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٧﴾

अत: अल्लाह का तक़वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।127।

وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٨﴾

और मैं तुम से इस पर कोई प्रतिफल नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है ।128।

اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٩﴾

क्या तुम प्रत्येक ऊँचे स्थान पर (केवल) निरर्थक (अपनी बड़ाई का) स्मारक निर्माण करते हो ? ।129।

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٣٠﴾

और तुम (भाँति-भाँति के) कारख़ाने लगाते हो ताकि तुम सदा (अमर) रहो ।130।

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۚ﴿۱۳۱﴾

और जब तुम पकड़ करते हो तो कठोर बन कर पकड़ करते हो ।131।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۚ﴿۱۳۲﴾

अत: अल्लाह का तक़वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।132।

وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۚ﴿۱۳۳﴾

और उससे डरो जिसने ऐसी वस्तुओं से तुम्हारी सहायता की जिन्हें तुम जानते हो ।133।

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۙ﴿۱۳۴﴾

उसने चौपाय और संतान (प्रदान कर) तुम्हारी सहायता की ।134।

وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۚ﴿۱۳۵﴾

और बाग़ों तथा झरनों के रूप में भी।135।

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ؕ﴿۱۳۶﴾

नि:सन्देह मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ ।136।

قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ۙ﴿۱۳۷﴾

उन्होंने कहा, चाहे तू हमें उपदेश दे अथवा न दे, हमारे लिए बराबर है ।137।

اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿۱۳۸﴾

(जो तुम हमें सिखाते हो) यह केवल पुराने लोगों के आचरण हैं ।138।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۚ﴿۱۳۹﴾

और हमे अज़ाब नहीं दिया जाएगा।139।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴۰﴾

अत: उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने उनको विनष्ट कर दिया । नि:सन्देह इसमें एक बहुत बड़ा चिह्न है । और उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे ।140।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۴۱﴾ ع

और नि:सन्देह तेरा रब्ब ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।141। (रुकू $\frac{7}{11}$)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ۚ﴿۱۴۲﴾

समूद (जाति) ने भी पैग़म्बरों को झुठला दिया था ।142।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٣﴾

जब उनको उनके भाई सालेह ने कहा, क्या तुम तक़वा धारण नहीं करोगे ? ।143।

اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿١٤٤﴾

मैं नि:सन्देह तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैग़म्बर हूँ ।144।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿١٤٥﴾

अत: अल्लाह का तक़वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।145।

وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٤٦﴾

और मैं इस पर तुमसे कोई प्रतिफल नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है ।146।

اَتُتْرَكُوْنَ فِیْ مَا هٰهُنَاۤ اٰمِنِیْنَ ﴿١٤٧﴾

क्या तुम इसी प्रकार यहाँ शांति में रहते हुए छोड़ दिए जाओगे ? ।147।

فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿١٤٨﴾

बाग़ों और झरनों में ।148।

وَّ زُرُوْعٍ وَّ نَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِیْمٌ ﴿١٤٩﴾

और खेतियों में और ऐसी खजूरों में जिनके गुच्छे (फल के बोझ से) टूट रहे हों ।149।

وَ تَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا فٰرِهِیْنَ ﴿١٥٠﴾

और तुम कुशलता से काम करते हुए पर्वतों में घर तराशते हो ।150।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿١٥١﴾

अत: अल्लाह का तक़वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।151।

وَ لَا تُطِیْعُوْۤا اَمْرَ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿١٥٢﴾

और सीमा का उल्लंघन करने वालों के आदेश का पालन न करो ।152।

الَّذِیْنَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ وَ لَا یُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٣﴾

जो धरती में उपद्रव करते हैं और सुधार नहीं करते ।153।

قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِیْنَ ﴿١٥٤﴾

उन्होंने कहा, नि:सन्देह तू उनमें से है जो जादू से सम्मोहित कर दिए जाते हैं ।154।

مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖۚ فَاْتِ بِاٰیَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿١٥٥﴾

तू हमारी भाँति एक मनुष्य के सिवा और कुछ नहीं । अत: यदि तू सच्चों में से है तो कोई चिह्न ले आ ।155।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۚ﴿١٥٥﴾

उसने कहा, यह एक ऊँटनी है जिसके पानी पीने का एक समय निश्चित किया जाता है। और तुम्हारे लिए भी निश्चित दिन को ही पानी लेने की बारी हुआ करेगी।156।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

अत: उसे हानि पहुँचाने के उद्देश्य से छुओ तक नहीं। अन्यथा तुम्हें एक बड़े दिन का अज़ाब आ पकड़ेगा।157।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ۙ﴿١٥٧﴾

फिर भी उन्होंने उसकी कूँचें काट दीं। फिर वे अत्यंत लज्जित हो गये।158।

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

अत: उन्हें अज़ाब ने आ पकड़ा। नि:सन्देह इसमें एक बहुत बड़ा चिह्न है। और उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे।159।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۧ﴿١٥٩﴾

और नि:सन्देह तेरा रब्ब ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।160। (रुकू $\frac{8}{12}$)

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ۚ﴿١٦٠﴾

लूत की जाति ने भी पैग़म्बरों को झुठला दिया था।161।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۚ﴿١٦١﴾

जब उनसे उनके भाई लूत ने कहा, क्या तुम तक़्वा धारण नहीं करोगे?।162।

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۙ﴿١٦٢﴾

नि:सन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैग़म्बर हूँ।163।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۚ﴿١٦٣﴾

अत: अल्लाह का तक़्वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो।164।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۭ﴿١٦٤﴾

और मैं इस पर तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता। मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है।165।

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿١٦٥﴾

क्या तुम संसार भर में पुरुषों के ही पास आते हो?।166।

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٧﴾

और उसे छोड़ देते हो जो तुम्हारे रब्ब ने तुम्हारे लिए तुम्हारे साथी पैदा किए हैं। वास्तविकता यह है कि तुम सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग हो।167।

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٨﴾

उन्होंने कहा, हे लूत ! यदि तू न रुका तो निःसन्देह तू (इस बस्ती से) निकाले जाने वालों में से हो जाएगा।168।

قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ؕ ﴿١٦٩﴾

उसने कहा, निःसन्देह मैं तुम्हारे कर्म से अत्यन्त विमुख हूँ।169।

رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧٠﴾

हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरे परिवार को उससे मुक्ति प्रदान कर जो वे करते हैं।170।

فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۙ ﴿١٧١﴾

अतः हमने उसे और उसके परिवार (में) सब को मुक्ति प्रदान की।171।

اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ۚ ﴿١٧٢﴾

सिवाए एक बुढ़िया के जो पीछे रहने वालों में थी।172।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۚ ﴿١٧٣﴾

फिर हमने दूसरों का सर्वनाश कर दिया।173।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٤﴾

और उन पर हमने एक वर्षा बरसाई। अतः सतर्क किये गये लोगों पर (बरसाई गई) वर्षा बहुत बुरी थी।174।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

निःसन्देह इसमें एक बड़ा चिह्न था। और उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे।175।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۧ ﴿١٧٦﴾ ع

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।176। (रुकू $\frac{9}{13}$)

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ۚۖ ﴿١٧٧﴾

वन में निवास करने वालों ने भी पैग़म्बरों को झुठला दिया था।177।

اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۚ ﴿١٧٨﴾

जब शुऐब ने उनसे कहा, क्या तुम तक़्वा धारण नहीं करोगे ?।178।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٩﴾

नि:सन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैग़म्बर हूँ ।179।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٨٠﴾

अत: अल्लाह का तक़्वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।180।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨١﴾

और मैं इस पर तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है ।181।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨٢﴾

पूरा-पूरा तौलो और उनमें से न बनो जो कम करके देते हैं ।182।

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٣﴾

और सीधी डंडी से तौला करो ।183।

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿١٨٤﴾

और लोगों के सामान उनको कम करके न दिया करो । और धरती में उपद्रवी बनकर अशांति न फैलाते फिरो ।184।

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٨٥﴾

और उससे डरो जिसने तुम्हें पैदा किया और प्रथम सृष्टि को भी ।185।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٦﴾

उन्होंने कहा, नि:सन्देह तू उनमें से है जो जादू से सम्मोहित कर दिए जाते हैं ।186।

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿١٨٧﴾

और तू हमारी भाँति एक मानव के अतिरिक्त और कुछ नहीं और हम तुझे अवश्य झूठों में से समझते हैं ।187।

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٨٨﴾

अत: यदि तू सच्चों में से है तो तू हम पर आकाश से कुछ टुकड़े गिरा ।188।

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٩﴾

उसने कहा, मेरा रब्ब उसे भली-भाँति जानता है जो तुम करते हो ।189।

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ

अत: उन्होंने उसे झुठला दिया और उनको एक छाया कर देने वाले विनाशकारी बादल युक्त दिन के अज़ाब

الظُّلَّةِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝۱۹۰

ने आ पकड़ा । वास्तव में वह एक बहुत बड़े दिन का अज़ाब था ।190।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۱۹۱

नि:सन्देह उसमें एक बड़ा चिह्न था । और उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे ।191।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝۱۹۲ ع

और नि:सन्देह तेरा रब्ब ही है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।192। (रुकू $\frac{10}{14}$)

وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۱۹۳

और नि:सन्देह यह समस्त लोकों के रब्ब की ओर से उतारी गई (वाणी) है ।193।

نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝۱۹۴

जिसे रूह-उल-अमीन लेकर उतरा है, ।194।

عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝۱۹۵

तेरे हृदय पर । ताकि तू सतर्ककारियों में से हो जाए ।195।*

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ۝۱۹۶

खुली-खुली अरबी भाषा में (है) ।196।

وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ۝۱۹۷

और नि:सन्देह यह पूर्ववर्तियों के धर्म-ग्रन्थों में (उल्लेखित) था ।197।

اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰۗؤُا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۝۱۹۸

क्या उनके लिए यह बात एक बड़ा चिह्न नहीं है कि बनी-इस्राईल के विद्वान इसको जानते हैं ? ।198।

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝۱۹۹

और यदि हम इसे अजमियों (अर्थात अस्पष्ट भाषियों) में से किसी पर उतारते ।199।

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝۲۰۰

और वह उन्हें इसे पढ़ कर सुनाता तो कदापि ये उस पर ईमान लाने वाले न होते ।200।

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝۲۰۱

इसी प्रकार हमने अपराधियों के दिलों में इस (बात) को प्रविष्ट कर दिया है ।201।

---

* आयत 193 से 195 : पवित्र क़ुरआन हज़रत जिब्रील अलै. के द्वारा अवतरित किया गया । जिनका दूसरा नाम **रूह-उल-अमीन** भी है और इसे हज़रत मुहम्मद सल्ल. के दिल पर जारी किया गया ।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠٢﴾

(कि) वे उस पर ईमान नहीं लाएँगे यहाँ तक कि पीड़ाजनक अज़ाब को देख लें ।202।

فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٣﴾

अत: वह उनके पास सहसा आ जाएगा और वे कोई समझ न रखते होंगे ।203।

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٤﴾

फिर वे कहेंगे कि क्या हमें ढील दी जाएगी ? ।204।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٥﴾

अत: क्या वे हमारे अज़ाब को शीघ्रतापूर्वक माँगते हैं ? ।205।

أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٦﴾

क्या तूने ध्यान दिया कि यदि हम उन्हें कुछ वर्ष के लिए लाभ पहुँचा दें ।206।

ثُمَّ جَاءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٧﴾

फिर वह उनके पास आ जाए जिससे वे डराए जाते थे ।207।

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٨﴾

तो जो अस्थायी लाभ उन्हें पहुँचाया जाता था, वह उनके कुछ काम न आ सकेगा ।208।

معانقة ٩ عند المتقدمين

وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٩﴾

और हमने जो कोई भी बस्ती ध्वस्त की उसके लिए सतर्ककारी अवश्य (भेजे जा चुके) थे ।209।

ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢١٠﴾

(यह) एक अत्यन्त शिक्षाप्रद अनुस्मृति (है) । और हम कदापि अत्याचार करने वाले नहीं थे ।210।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١١﴾

और शैतान यह (वह्इ) लिए हुए नहीं उतरे ।211।

وَمَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١٢﴾

और न उनका यह साहस है । और न ही वे (इसका) सामर्थ्य रखते हैं ।212।

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٣﴾

नि:सन्देह वे (ईश्वरीय वाणी) सुनने से वंचित कर दिए गए हैं ।213।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٤﴾

अत: तू अल्लाह के साथ किसी (अन्य) उपास्य को न पुकार अन्यथा तू अज़ाब दिए जाने वालों में से हो जाएगा ।214।

وَاَنۡذِرۡ عَشِيۡرَتَكَ الۡاَقۡرَبِيۡنَ ۙ‏ ﴿۲۱۵﴾

और अपने परिवार वालों अर्थात् निकट सम्बन्धियों को सतर्क कर ।215।

وَاخۡفِضۡ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ‌ۚ‏ ﴿۲۱۶﴾

और अपना पंख मोमिनों में से उनके लिए जो तेरा अनुसरण करते हैं, झुका दे ।216।

فَاِنۡ عَصَوۡكَ فَقُلۡ اِنِّىۡ بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُوۡنَ‌ۚ‏ ﴿۲۱۷﴾

अत: यदि वे तेरी अवज्ञा करें तो कह दे कि जो तुम करते हो नि:सन्देह मैं उससे मुक्त हूँ ।217।

وَتَوَكَّلۡ عَلَى الۡعَزِيۡزِ الرَّحِيۡمِ ۙ‏ ﴿۲۱۸﴾

और पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) पर भरोसा कर ।218।

الَّذِىۡ يَرٰٮكَ حِيۡنَ تَقُوۡمُ ۙ‏ ﴿۲۱۹﴾

जो तुझे देख रहा होता है, जब तू खड़ा होता है ।219।

وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيۡنَ‏ ﴿۲۲۰﴾

और सजद: करने वालों में तेरी व्याकुलता को भी ।220।

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ‏ ﴿۲۲۱﴾

नि:सन्देह वही है जो बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।221।

هَلۡ اُنَبِّئُكُمۡ عَلٰى مَنۡ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيۡنُ ؕ‏ ﴿۲۲۲﴾

क्या मैं तुम्हें उसकी ख़बर दूँ जिस पर शैतान अधिकता के साथ उतरते हैं ? ।222।

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيۡمٍ ۙ‏ ﴿۲۲۳﴾

वे हर पक्के झूठे (और) महापापी पर अधिकता के साथ उतरते हैं ।223।

يُّلۡقُوۡنَ السَّمۡعَ وَاَكۡثَرُهُمۡ كٰذِبُوۡنَ ؕ‏ ﴿۲۲۴﴾

वे (उनकी बातों पर) कान धरते हैं और उनमें से अधिकतर झूठे हैं ।224।

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الۡغَاوٗنَ ؕ‏ ﴿۲۲۵﴾

और रहे कवि, तो केवल भटके हुए (लोग) ही उनका अनुसरण करते हैं ।225।

اَلَمۡ تَرَ اَنَّهُمۡ فِىۡ كُلِّ وَادٍ يَّهِيۡمُوۡنَ ۙ‏ ﴿۲۲۶﴾

क्या तूने नहीं देखा कि वे प्रत्येक घाटी में (उद्देश्यहीन) फिरते रहते हैं ? ।226।

وَاَنَّهُمۡ يَقُوۡلُوۡنَ مَا لَا يَفۡعَلُوۡنَ ۙ‏ ﴿۲۲۷﴾

और नि:सन्देह वे जो कहते हैं, वह करते नहीं ।227।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۟

सिवाय उनके, (उनमें से) जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किये और अधिकता के साथ अल्लाह को याद किये और अत्याचार सहने के पश्चात् उसका बदला लिया। और वे जिन्होंने अत्याचार किया शीघ्र ही जान लेंगे कि वे किस लौटने के स्थान पर लौट जाएँगे।228। (रुकू $\frac{11}{15}$)

27– सूर: अन–नम्ल

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 94 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरंभ **ता, सीन** खण्डाक्षरों से होता है । अल्लाह तआला की भाँति हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी पवित्र हैं और पवित्र व्यक्ति पर शैतान नहीं उतरा करते । इस कारण अवश्यमेव यह ऐसे पवित्र अल्लाह की वाणी है जो परम विवेकशील है । और जिसने अपने पवित्र भक्त पर पवित्र और तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण वह्इ अवतरित की है ।

इसके बाद हज़रत मूसा अलै. के वर्णन की पुनरावृत्ति की गयी है और बताया गया है कि अल्लाह तआला अपने पवित्र भक्तों को वह्इ के द्वारा मंगलमय बना देता है । अत: आयत संख्या 9 में उल्लेख किया गया है कि अल्लाह के वे नेक भक्त जो ईश्वरीय ज्योति की खोज में रहते हैं उनको अल्लाह तआला अपनी ज्योति की झलक दिखा कर बरकतों की ओर बुलाता है ।

इसके पश्चात हज़रत दाऊद अलै. और हज़रत सुलैमान अलै. का वर्णन किया गया है, जो बहुत सी ऐसी बातों पर आधारित हैं, जो क़ुरआनी मुहावरों पर से पर्दा उठाते हैं । तथा मनुष्य को अन्धकारों से प्रकाश की ओर ले जाते हैं । परन्तु इस विवरण में बहुत सी ऐसी अनेकार्थ बोधक आयतें हैं जिनसे कुटिल हृदय वाले व्यक्ति और भी अधिक भटक जाते हैं और वे वास्तविक विषय वस्तु की तह तक नहीं पहुँच सकते । इस में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात **पक्षियों की भाषा** है । पवित्र क़ुरआन के अनुसार पक्षियों की भाषा से अभिप्राय उन लोगों की भाषा है जो पक्षियों की भाँति आकाश में उड़ते हैं, अर्थात आकाशीय भाषा में बात करते हैं । यह धारणा ठीक नहीं है कि हज़रत सुलैमान अलै. को वह भाषा सिखाई गई थी जिसे पक्षी आपस में बोलते हैं । इस सूर: की बहुत सी आयतें इस भ्रांत-धारणा की निराकरण करती हैं । उदाहरणस्वरूप यह कहा गया कि नम्ल (चींटियों) का समुदाय परस्पर बातें कर रहा था और हज़रत सुलैमान अलै. ने उसको समझ लिया । यदि नम्ल से अभिप्राय नम्ल जाति के स्थान पर कुछ व्याख्याकारों के अनुसार चींटियाँ ही ली जाएँ, तो चींटियाँ तो पक्षी नहीं होतीं । फिर हज़रत सुलैमान अलै. जिनको पक्षियों की भाषा की जानकारी दी गई थी, चींटियों की भाषा कैसे समझ गए ?

फिर यह कहा जाता है कि हज़रत सुलैमान अलै. की सेना में एक पक्षियों की सेना भी सम्मिलित थी, जिस का मुखिया महारानी सबा की खोज लगाते हुए उसके दरबार तक जा पहुँचा था । जब उसने वापस आकर अपनी अनुपस्थिति का कारण बताया तब

वह सारी बातें बताईं जो महारानी के दरबार में कही जा रही थीं, मानों वह उनको समझ रहा था । हालाँकि महारानी और उसके दरबारियों की भाषा तो पक्षियों की भाषा नहीं थी । फिर जब उसने हज़रत सुलैमान अलै. का पत्र महारानी के समक्ष रखा, तब भी महारानी और उसके दरबारियों के मध्य जो बातें हुईं, उस सारी बातचीत को जो मनुष्य की भाषा में हो रही थी, वह पक्षी समझ गया । सारांश यह है कि इस सूर: में पक्षियों की भाषा सम्बन्धित काल्पनिक कथाओं का खण्डन कर के इसका यही अर्थ किया गया है कि वस्तुत: अल्लाह के भक्त आकाशीय भाषा में वार्तालाप किया करते हैं ।

इसके पश्चात वह महारानी सबा जो राजनीतिक रूप से हज़रत सुलैमान अलै. की श्रेष्ठता स्वीकार कर चुकी थी परन्तु अभी अपने धर्म से अलग हो कर हज़रत सुलैमान अलै. के एकेश्वरवादी धर्म में सम्मिलित नहीं हुई थी, उसको समझाने के लिए हज़रत सुलैमान अलै. के शिल्पकारों ने आप के महल में एक ऐसा फ़र्श बनाया जो शीशे की भाँति चमक रहा था । और ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह फ़र्श नहीं बल्कि पानी है । उस पर चलते हुए महारानी सबा ने पानी से बचने के लिए अपने वस्त्र को अपनी पिंडलियों से ऊपर उठा लिया । तब हज़रत सुलैमान अलै. ने उसको समझाया कि सूर्य का भी ऐसा ही उदाहरण है कि वह स्वयं प्रकाश का स्रोत प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में अल्लाह तआला के प्रकाश से ही वह उपकृत हो रहा होता है । और सूर्य को प्रकाश का स्रोत समझने वाले उसी प्रकार धोखा खा जाते हैं जैसे महारानी सबा की दृष्टि धोखा खा गई । यह बात समझने के पश्चात वह महारानी इस वास्तविकता को समझ गई कि हर ओर अल्लाह ही की दीप्ति है और शेष सभी दीप्तियाँ नज़र के धोखे हैं ।

इसके पश्चात क्रमश: ऐसे नबियों का वर्णन है जिन्होंने एकेश्वरवाद का प्रचार किया तो मुश्रिक जातियों ने जैसा कि महारानी सबा की जाति मुश्रिक थी, उनको बार-बार नकार दिया । और यद्यपि महारानी सबा की जाति को हिदायत पाने के कारण अल्लाह तआला ने क्षमा कर दिया परन्तु वे लोग बार-बार अनेकेश्वरवाद का मार्ग अपनाने के कारण बाद में तबाह कर दिए गए ।

इसके बाद फिर यह कहा गया है कि अल्लाह तआला के अद्वितीय होने का विषय नबियों पर वर्षा की भाँति अवतरित होता है जो जीवन का स्रोत है । भौतिक जीवन भी इस आकाशीय पानी से प्राप्त होता है और आध्यात्मिक जीवन भी नबियों को इसी आकाशीय वर्षा के वरदान से प्राप्त होता है ।

इसके बाद यह प्रश्न उठाया गया है कि धरती पर स्वच्छ जल बरसाने की जो प्रक्रिया है क्या उसे अल्लाह के सिवा अन्य कोई काल्पनिक उपास्य बना सकता था ? और इस विषय को इस बात पर समाप्त किया गया कि अल्लाह तआला ने समुद्रों के मध्य

एक रोक बनाई हुई है । यह वह विषय है जो अल्लाह तआला की ओर से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आकाशीय जल की भाँति उतरा । अन्यथा आपके युग में कदापि ऐसी वैज्ञानिक अथवा भौगोलिक जानकारी मौजूद न थी । पवित्र क़ुरआन ने दो समुद्रों के मध्य रोक का जो विषय वर्णन किया, वास्तव में इसमें एक भविष्यवाणी निहित थी जिसके प्रकट होने पर ज्ञान रखने वालों का ईमान-वर्धन होना था । अर्थात् जिन समुद्रों के मध्य एक अलंघ्य रोक बना दी गई थी, अल्लाह तआला उन समुद्रों को मिला देगा । इस विषय की स्पष्ट भविष्यवाणी अन्य दो आयतों में उल्लेखित है ।

अब वही दुआ का विषय जो पिछली कुछ सूरतों में क्रमशः जारी है, पुनः उसे छेड़ते हुए कहा गया है कि जब एक आतुर व्यक्ति दुआ करता है तो अल्लाह तआला उसे स्वीकार कर लेता है । अद्भुत बात यह है कि इस विषय का भी समुद्रों से सम्बन्ध है । जैसा कि दूसरी आयतों में वर्णन किया गया है कि जब समुद्री तूफ़ान में घिर कर कुछ लोग निराश हो जाते हैं और अत्यंत व्याकुल और विचलित होकर अल्लाह तआला को पुकारते हैं तो वह उनको भयंकर तूफ़ानों से बचा कर स्थलभाग तक पहुँचा देता है । परन्तु इस प्रकार मुक्ति पाकर भी जब उन में से कुछ फिर से अनेकेश्वरवाद की ओर लौट आते हैं तो अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ है कि स्थलभाग में ही उनका विनाश कर दे । इस विषय को विस्तारपूर्वक कुछ दूसरी आयतों में वर्णन किया गया है । सूखी धरती में धंसाए जाने वालों का विवरण भी पवित्र क़ुरआन में मिलता है जैसा कि आजकल हम भूकम्प के रूप में देखते हैं कि कई बार मनुष्यों की बड़ी-बड़ी आबादी धरती फटने से उसमें समा जाती हैं ।

इस विषय को जारी रखते हुए बताया गया है कि मनुष्य को चाहिए कि विचार करे कि समुद्र और स्थल भाग के अन्धकारों में कौन है जो उसे प्रत्येक प्रकार के ख़तरों से मुक्ति देता है । क्या अल्लाह के सिवा भी कोई उपास्य है ? इसी प्रकार कहा गया कि कौन है जो पहली बार सृष्टि करता है फिर इस सृष्टि की पुनरावृत्ति करता चला जाता है। क्या अल्लाह के सिवा भी कोई उपास्य है ? इसमें यह शिक्षा है कि जब कि वे देखते हैं, पहली बार भी अल्लाह तआला ही उत्पन्न करता है (अन्यथा उत्पत्ति के आरम्भ का कोई समाधान नहीं) और फिर प्रतिदिन इसी क्रिया की पुनरावृत्ति करता चला जाता है कि हर समय, समस्त संसार में पानी के द्वारा मिट्टी से भाँति-भाँति के जीवन उत्पन्न करता है । तो वह मनुष्य को उसके मृत्योपरान्त जिस प्रकार चाहे फिर दोबारा जीवन प्रदान करने से किस प्रकार असमर्थ हो सकता है ? परन्तु क्योंकि इन लोगों को परलोक का कोई ज्ञान नहीं । इस कारण अपने पुनर्जीवन के सम्बन्ध में सदैव शंका में पड़े रहते हैं। अतः इस पृष्ठभूमि में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा गया कि

काफ़िरों और मुश्रिकों के उदाहरण तो मुर्दों की भाँति है । और मुर्दों तक तेरी पुकार नहीं पहुँच सकती । अतः जब तू उनको सन्मार्ग की ओर बुलाता है तो उन बुद्धिहीनों को तेरी पुकार सुनाई ही नहीं देती । इसी प्रकार अंधों को भी तेरा प्रकाश कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता क्योंकि प्रकाश का अनुसरण करने के लिए आँखों में भी दृष्टिशक्ति होनी चाहिए ।

फिर आयत संख्या 83 में धरती पर पशुओं की भाँति जीवन व्यतीत करने वालों को बहुत गम्भीर रूप से सतर्क किया गया है कि धरती पर चलने फिरने वाला ही एक जानवर उनको दण्ड देने के लिए नियुक्त किया जाएगा । अरबी शब्द **तुकल्लिमुहुम** के दोनों अर्थ यहाँ लागू होते हैं । एक अर्थ तो यह है कि वह उनसे बातचीत करेगा । अर्थात् अपनी स्थिति के अनुसार उनसे बात करेगा । और दूसरा अर्थ यह है कि वह उनको काटेगा जिसके कारण वे अत्यंत भयानक रोग का शिकार हो जाएँगे । इस पवित्र आयत में **दाब्बतुल अर्ज़** (धरती का जीव) अर्थात चूहों का वर्णन है जो जीव भी हैं और धरती में प्लेग फैलाने के कारण बनते हैं । उनकी पीठ पर ऐसे कीड़े सवार होते हैं जिनके काटने से प्लेग फैलता है ।

हज़रत मुहम्मद सल्ल. के युग में लोग पर्वतों को स्थिर समझते थे परन्तु इस सूरः की आयत संख्या 89 वर्णन करती है कि वे बादलों की भाँति लगातार उड़ रहे हैं हालाँकि दृढ़तापूर्वक धरती में गड़े हुए भी हैं । इसके अतिरिक्त इसका अन्य कोई अर्थ निकल नहीं सकता कि धरती सहित वे बादलों की भाँति घूम रहे हैं । इस आयत के अन्तिम टुकड़े ने निश्चित रूप से सिद्ध कर दिया है कि अल्लाह तआला की शिल्पकारी को जिसने दृढ़ता पूर्वक इन पर्वतों को धरती में गाड़ा हुआ है कैसे आलोचना का पात्र बनाया जा सकता है ? यहाँ इस भ्रांति का निराकरण कर दिया गया कि यह घटना क़यामत के दिन घटेगी । क़यामत के दिन तो कोई आँख इन पर्वतों को उड़ता हुआ नहीं देखेगी । और यदि पर्वत उड़े भी तो यह **अत क न कुल्लु शैइन** (उस अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया) दावा के विपरीत होगा । इस कारण इसके सिवा कोई उपाय नहीं रहता कि मनुष्य यह स्वीकार करे कि पर्वत धरती में ऐसे गतिशील हैं जैसे आकाश पर बादल गतिशील हैं । यह बातें इस लिए वर्णन की गई हैं कि ज्ञान रखने वालों को पूर्ण विश्वास हो जाए कि अल्लाह तआला, उनका रब्ब एक महान शिल्पकार है ।

इस सूरः की अन्तिम आयत में यह वादा कर दिया गया है कि जिन चिह्नों का वर्णन किया गया है वे अवश्य मानवजाति को दिखा दिए जाएँगे । जिसमें धरती के चिह्न और आकाशीय चिह्न भी हैं । तथा भविष्य के विद्वान इस बात की गवाही देंगे कि जैसा पवित्र क़ुरआन ने कहा था बिल्कुल वैसा ही घटित हुआ ।

☆☆☆

سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعٌ وَّ تِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّ سَبْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ②

तय्यिबुन, समीऊन : पवित्र, बहुत सुनने वाला, यह क़ुरआन की और एक सुस्पष्ट पुस्तक की आयतें हैं ।2।

هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ③

मोमिनों के लिए हिदायत और शुभ-सामाचार हैं ।3।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ④

वे जो नमाज़ को क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और वही हैं जो परलोक पर विश्वास रखते हैं ।4।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۭ⑤

नि:सन्देह वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते हमने उनके कर्म उनके लिए सुन्दर कर दिखाए हैं । अत: वे भटकते रहते हैं ।5।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْۗءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ⑥

यही वे लोग हैं जिनके लिए बहुत बुरा अज़ाब (निश्चित) है । और वे ही परलोक में सर्वाधिक घाटा उठाने वाले होंगे ।6।

وَ اِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ⑦

और नि:सन्देह परम विवेकशील (और) सर्वज्ञ (अल्लाह) की ओर से तुझे क़ुरआन प्रदान किया जाता है ।7।

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۭ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ⑧

(याद कर) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि नि:सन्देह मैं एक आग देख रहा हूँ । अत: मैं या तो उस (के निकट) से तुम्हारे लिए कोई समाचार लाऊँगा अथवा तुम्हारे पास कोई सुलगता हुआ अंगारा ले आऊँगा ताकि तुम आग तापो ।8।

فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِیَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِی النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹﴾

अतः जब वह उसके पास आया तो आवाज़ दी गई कि जो इस अग्नि में है और जो उसके इर्द गिर्द है, उसे भी बरकत दिया गया है । समस्त लोगों का रब्ब अल्लाह ही पवित्र है ।9।

یٰمُوْسٰۤی اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۙ﴿۱۰﴾

हे मूसा ! निःसन्देह (यह बातचीत करने वाला) मैं ही अल्लाह हूँ, (जो) पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील (है) ।10।*

وَ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰی مُدْبِرًا وَّلَمْ یُعَقِّبْ ؕ یٰمُوْسٰی لَا تَخَفْ ۫ اِنِّیْ لَا یَخَافُ لَدَیَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۖۗ﴿۱۱﴾

और अपनी लाठी फेंक । अतः जब उसने उसे देखा कि ऐसे हिल रही है कि मानो वह एक साँप है । तो वह पीठ फेरते हुए मुड़ गया और पलट कर भी न देखा । हे मूसा ! डर नहीं । निःसन्देह मैं वह हूँ कि मेरे निकट पैग़म्बर डरा नहीं करते ।11।

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲﴾

परन्तु वह जिसने कोई अत्याचार किया हो फिर वह बुराई के बाद (उसे) नेकी में परिवर्तित कर दे तो निःसन्देह मैं बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला हूँ ।12।

وَ اَدْخِلْ یَدَكَ فِیْ جَیْبِكَ تَخْرُجْ بَیْضَآءَ مِنْ غَیْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِیْ تِسْعِ اٰیٰتٍ اِلٰی فِرْعَوْنَ وَ قَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِیْنَ ﴿۱۳﴾

और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल वह बिना किसी दोष के चमकता हुआ निकलेगा । (यह दोनों) फ़िरऔन और उसकी जाति की ओर (भेजे जाने वाले) नौ चिह्नों में से हैं । निःसन्देह वे बहुत ही दुराचारी लोग हैं ।13।

* आयत संख्या 8 से 10 : इन तीन आयतों में हज़रत मूसा अलै. पर वहइ उतरने की घटना का वर्णन किया गया है । जब आप अपने परिवार के साथ मद्‌यन से हिजरत करके मिस्र की ओर वापस जा रहे थे, उस समय शीत ऋतु थी और आपको अग्नि की आवश्यकता थी । तूर के पर्वत पर आपने आग की भाँति एक प्रज्वलित अग्निशिखा देखी । परन्तु जब वहाँ पहुँचे तो कोई अग्नि नहीं थी बल्कि वृक्ष का एक भाग असाधारण रूप से चमकता दिखाई दे रहा था । उस समय अल्लाह तआला ने आप अलै. पर यह वहइ की, कि जिस को तुम अग्नि के रूप में चमकता देख रहे हो वह अग्नि नहीं बल्कि मेरा प्रकाश चमक रहा है । यह एक दृष्टान्त है ।

فَلَمَّا جَآءَتۡهُمۡ اٰيٰتُنَا مُبۡصِرَةً قَالُوۡا هٰذَا سِحۡرٌ مُّبِيۡنٌ ۚ‏ ﴿۱۴﴾

अतः जब उनके पास हमारे ज्ञानदृष्टि प्रदान करने वाले चिह्न आए तो उन्होंने कहा, यह तो खुला-खुला जादू है ।14।

وَجَحَدُوۡا بِهَا وَاسۡتَيۡقَنَتۡهَاۤ اَنۡفُسُهُمۡ ظُلۡمًا وَّعُلُوًّا ‌ؕ فَانْظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ‏﴿۱۵﴾

और उन्होंने अत्याचार और उद्दण्डता करते हुए उनका इनकार कर दिया, हालाँकि उनके दिल उन पर ईमान ला चुके थे । अतः देख ! उपद्रव करने वालों का कैसा परिणाम होता है ।15।

(रुकू $\frac{1}{16}$)

وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا دَاوٗدَ وَسُلَيۡمٰنَ عِلۡمًا‌ ۚ وَقَالَا الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيۡرٍ مِّنۡ عِبَادِهِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ‏ ﴿۱۶﴾

और हमने निःसन्देह दाऊद और सुलैमान को बड़ा ज्ञान प्रदान किया था । और दोनों ने कहा, समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जिसने हमें अपने बहुत से मोमिन भक्तों पर प्रधानता दी है ।16।

وَوَرِثَ سُلَيۡمٰنُ دَاوٗدَ‌ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمۡنَا مَنۡطِقَ الطَّيۡرِ وَاُوۡتِيۡنَا مِنۡ كُلِّ شَىۡءٍ‌ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الۡفَضۡلُ الۡمُبِيۡنُ‏ ﴿۱۷﴾

और सुलैमान दाऊद का उत्तराधिकारी हुआ और उसने कहा, हे लोगो ! हमें पक्षियों की भाषा सिखाई गई है और हर चीज़ में से हमें कुछ प्रदान किया गया है। निःसन्देह यह खुली-खुली कृपा ही है ।17।

وَحُشِرَ لِسُلَيۡمٰنَ جُنُوۡدُهٗ مِنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ وَالطَّيۡرِ فَهُمۡ يُوۡزَعُوۡنَ‏ ﴿۱۸﴾

और सुलैमान के लिए जिन्न और मनुष्य एवं पक्षियों में से उसकी सेना इकट्ठी की गई और उन्हें अलग-अलग पंक्तियों में क्रमबद्ध किया गया ।18।

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوۡا عَلٰى وَادِ النَّمۡلِ ۙ قَالَتۡ نَمۡلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمۡلُ ادۡخُلُوۡا مَسٰكِنَكُمۡ‌ ۚ لَا يَحۡطِمَنَّكُمۡ سُلَيۡمٰنُ وَجُنُوۡدُهٗ ۙ وَهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ‏ ﴿۱۹﴾

यहाँ तक कि जब वे नम्ल की घाटी पर पहुँचे तो नम्ल (जाति) की एक स्त्री ने कहा, हे नम्ल जाति ! अपने अपने घरों में घुस जाओ । सुलैमान और उसकी सेना कहीं बेख़बरी में तुम्हें रौंद न डालें ।19।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٢٠

वह (अर्थात् सुलैमान) उसकी इस बात पर मुस्कराया और कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी नेमत का आभार व्यक्त करूँ जो तूने मुझ पर की और मेरे माता पिता पर की । और ऐसे पुण्य कर्म करूँ जो तुझे पसन्द हों । और तू मुझे अपनी कृपा से अपने सदाचारी भक्तों में सम्मिलित कर ।20।

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ۝٢١

और उसने एक उच्च विचार वाले मनुष्य को अनुपस्थित पाया तो उसने कहा कि मुझे क्या हुआ है कि मैं हुद-हुद को नहीं देख रहा । क्या वह अनुपस्थितों में से है ? ।21।*

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٢

मैं अवश्य उसे अत्यन्त कठोर दण्ड दूँगा अथवा अवश्य उसकी हत्या कर दूँगा या वह (अपने बचाव में) मेरे पास कोई खुली-खुली दलील लेकर आए ।22।

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ۝٢٣

अतः वह (अर्थात् सुलैमान) अधिक देर नहीं ठहरा था कि (हुद-हुद आ गया और) उसने कहा, मैंने वह बात जान ली है जो आपको मालूम नहीं और मैं सबा (के देश) से आपके पास एक पक्की खबर लाया हूँ ।23।

اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ۝٢٤

निःसन्देह मैंने एक स्त्री को उनपर शासन करते पाया और उसे हर चीज़ में से कुछ प्रदान किया गया है और उसका एक बड़ा सिंहासन है ।24।

---

* **तैर** उच्च-विचार वाले मनुष्य के अर्थ में । (शब्दकोश 'ग़रीबुल क़ुरआन')
हुद-हुद इब्रानी भाषा में **हुदद** हज़रत सुलैमान अलै. के एक सेनापति का नाम है ।
(जीविश इन्साइक्लोपीड़िया)

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۙ﴿٢٥﴾

मैंने उसे और उसकी जाति को अल्लाह के बदले सूर्य को सजद: करते हुए पाया । और शैतान ने उनके कर्म उनको सुन्दर करके दिखाए हैं । अत: उसने सच्चे मार्ग से उनको रोक दिया है । इसलिए वे हिदायत नहीं पाते ।25।

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٦﴾

(शैतान ने उनको उकसाया) कि वे अल्लाह को सजद: न करें जो आकाशों और धरती में से गुप्त बातों को प्रकट करता है । और उसे जानता है जिसे तुम छिपाते हो और जिसे तुम प्रकट करते हो ।26।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۩﴿٢٧﴾

السجدة

अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई उपास्य नहीं । महान अर्श का वही स्वामी है ।27।

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٨﴾

उसने कहा, हम देखेंगे कि क्या तूने सच्च कहा है अथवा तू झूठों में से है ।28।

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٩﴾

यह मेरा पत्र ले जा और उसे उन लोगों के सामने रख दे । फिर उनसे एक तरफ हट जा । फिर देख कि वे क्या उत्तर देते हैं ।29।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٣٠﴾

(यह पत्र देख कर) उस (महारानी) ने कहा, हे सरदारो ! मेरी ओर एक सम्मानजनक पत्र भेजा गया है ।30।

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿٣١﴾

नि:सन्देह वह सुलैमान की ओर से है और वह यह है : अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।31।

اَلَّا تَعۡلُوۡا عَلَیَّ وَاۡتُوۡنِیۡ مُسۡلِمِیۡنَ ﴿۳۲﴾ ع

(संदेश यह है) कि तुम मेरे विरुद्ध उद्दंडता न करो और मेरे पास आज्ञाकारी हो कर चले आओ ।32।

(रुकू $\frac{2}{17}$)

قَالَتۡ یٰۤاَیُّهَا الۡمَلَؤُا اَفۡتُوۡنِیۡ فِیۡۤ اَمۡرِیۡ ۚ مَا کُنۡتُ قَاطِعَةً اَمۡرًا حَتّٰی تَشۡهَدُوۡنِ ﴿۳۳﴾

उसने कहा, हे सरदारो ! मुझे मेरे मामले में परामर्श दो । मैं कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं करती जब तक तुम मेरे पास उपस्थित न हो ।33।

قَالُوۡا نَحۡنُ اُولُوۡا قُوَّةٍ وَّ اُولُوۡا بَاۡسٍ شَدِیۡدٍ ۬ۙ وَّ الۡاَمۡرُ اِلَیۡكِ فَانۡظُرِیۡ مَاذَا تَاۡمُرِیۡنَ ﴿۳۴﴾

उन्होंने कहा, हम बड़े शक्तिशाली लोग हैं और बड़े योद्धा हैं । वास्तव में निर्णय करना तेरा ही कार्य है । अत: तू स्वयं ही विचार कर ले कि तुझे (हम को) क्या आदेश देना चाहिए ।34।

قَالَتۡ اِنَّ الۡمُلُوۡكَ اِذَا دَخَلُوۡا قَرۡیَةً اَفۡسَدُوۡهَا وَ جَعَلُوۡۤا اَعِزَّةَ اَهۡلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَ کَذٰلِكَ یَفۡعَلُوۡنَ ﴿۳۵﴾

उसने कहा, नि:सन्देह जब सम्राट किसी बस्ती में प्रवेश करते हैं तो उसमें उत्पात मचा देते हैं । और उसके निवासियों में से सम्माननीय लोगों को अपमानित कर देते हैं और वे इसी प्रकार किया करते हैं ।35।

وَ اِنِّیۡ مُرۡسِلَةٌ اِلَیۡهِمۡ بِهَدِیَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ یَرۡجِعُ الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿۳۶﴾

और अवश्य मैं उनकी ओर एक उपहार भेजने लगी हूँ । फिर मैं देखूँगी कि दूत क्या उत्तर लाते हैं ।36।

فَلَمَّا جَآءَ سُلَیۡمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوۡنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَاۤ اٰتٰنِۦَ اللّٰهُ خَیۡرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰکُمۡ ۚ بَلۡ اَنۡتُمۡ بِهَدِیَّتِکُمۡ تَفۡرَحُوۡنَ ﴿۳۷﴾

अत: जब वह (शिष्टमण्डल) सुलैमान के पास आया तो उसने कहा, क्या तुम मुझे धन के द्वारा सहायता देना चाहते हो जबकि अल्लाह ने जो मुझे प्रदान किया है उससे उत्तम है जो तुम्हें प्रदान किया है । परन्तु तुम अपने उपहार पर ही इतरा रहे हो ।37।

اِرۡجِعۡ اِلَیۡهِمۡ فَلَنَاۡتِیَنَّهُمۡ بِجُنُوۡدٍ لَّا قِبَلَ

उनकी ओर लौट जा । अत: हम अवश्य उनके पास ऐसी सेनाओं के साथ आएँगे

لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٨﴾

जिनका मुक़ाबला करना उनके लिए संभव नहीं । और हम उन्हें अवश्य इस (बस्ती) से अपमानित करते हुए निकाल देंगे और वे लाचार होंगे ।38।

قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾

उसने कहा, हे सरदारो ! कौन है तुम में से जो उसका सिंहासन मेरे पास ले आए इससे पहले कि वे मेरे पास आज्ञाकारी हो कर पहुँचें ? ।39।

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٤٠﴾

जिन्नों में से **इफ़्रीत** ने कहा, मैं उसे तेरे पास ले आऊँगा, इससे पूर्व कि तू अपने स्थान से पड़ाव उठा ले । और नि:सन्देह मैं इस (कार्य) पर खूब समर्थ (और) विश्वसनीय हूँ ।40।*

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿٤١﴾

वह व्यक्ति जिसके पास पुस्तक का ज्ञान था उसने कहा, मैं उसे तेरे पास ले आऊँगा इससे पूर्व कि तेरा सुरक्षा दस्ता तेरी ओर लौट आए । अत: जब उसने उसे अपने पास पड़ा पाया तो कहा, यह केवल मेरे रब्ब की कृपा से है ताकि वह मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ अथवा कृतघ्नता । और जो भी कृतज्ञता प्रकट करता है तो अपने ही लाभ के लिए करता है । और जो कृतघ्नता करता है तो मेरा रब्ब नि:सन्देह नि:स्पृह और अत्यन्त दानशील है ।41।**

---

* **इफ़्रीत** जिस को जिन्न समझा गया है, कोई ऐसा जिन्न नहीं था जिसको लोक-प्रचलन में जिन्न कहा जाता है । पर्वतीय जातियों के सशक्त सरदारों को भी जिन्न कहा जाता है जो हज़रत सुलैमान अलै. के अधीन किए गए थे ।

** इस आयत में पुस्तक के ज्ञान से अभिप्राय बाइबिल का ज्ञान नहीं बल्कि विज्ञान-शास्त्र है । जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि ज्ञान दो प्रकार के हैं । **इल्मुल अद्‌यानि व इल्मुल अब्दानि** (धार्मिक ज्ञान और सांसारिक ज्ञान) यह उसका एक उदाहरण है । वह व्यक्ति विज्ञान का बहुत बड़ा विशेषज्ञ था और अपने ज्ञान के बल पर कठिन से कठिन वस्तु की भी नक़ल→

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۴۲﴾

उसने कहा, उसका सिंहासन उसके लिए एक साधारण वस्तु सदृश बना दो । हम देखते हैं कि क्या वह वास्तविकता को समझ जाती है अथवा ऐसे लोगों में से हो जाती है जो हिदायत नहीं पाते ।42।*

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿۴۳﴾

अत: जब वह आई तो उससे पूछा गया कि क्या तेरा सिंहासन इसी प्रकार का है ? तो उसने उत्तर दिया, मानो यह वही है और इससे पहले ही हमें ज्ञान दे दिया गया था और हम आज्ञाकारी हो चुके थे ।43।**

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۴۴﴾

और उस (अर्थात सुलैमान) ने उसे, उससे रोका जिसकी वह अल्लाह के सिवा उपासना किया करती थी । नि:सन्देह वह काफ़िर लोगों में से थी ।44।

قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ۬ قَالَتْ

उसे कहा गया, महल में प्रविष्ट हो जा । अत: जब उसने उसे देखा तो उसे गहरा पानी समझा और अपनी दोनों पिंडलियों से कपड़ा उठा लिया । उस (अर्थात् सुलैमान) ने कहा, यह तो एक ऐसा महल है जो शीशों से जड़ा हुआ है । उस (महारानी) ने कहा, हे मेरे रब्ब !

←उतार सकता था । महारानी सबा के सिंहासन जैसा सिंहासन बनाना भी एक बहुत कठिन कार्य था परन्तु उसने दावा किया कि मैं यह सिंहासन बना दूँगा इससे पूर्व कि तेरा सुरक्षा दस्ता सरहदों से वापस तुझ तक आ पहुँचे ।

* यह बात सुनकर हज़रत सुलैमान अलै. ने आदेश दिया कि उसका सिंहासन उसके लिए एक साधारण सी वस्तु बना कर दिखा दो । यह नहीं कहा कि उसका सिंहासन वहाँ से उठा कर ले आओ । इसका अर्थ यह था कि बिल्कुल वैसा ही सिंहासन बना दो ताकि जिस सिंहासन पर वह गर्व कर रही है वह साधारण सी वस्तु दिखाई दे ।

** इस आयत से सारी बात खुल जाती है । महारानी को यह नहीं कहा गया था कि क्या यही तेरा सिंहासन है, बल्कि यह कहा गया कि क्या तेरा सिंहासन इसी प्रकार का है ? इसके उत्तर में महारानी सबा ने यह नहीं कहा कि वही है बल्कि यह कहा कि इतनी समानता है कि मानो वही है ।

رَبِّ اِنِّیۡ ظَلَمۡتُ نَفۡسِیۡ وَاَسۡلَمۡتُ مَعَ سُلَیۡمٰنَ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۴۵﴾

नि:सन्देह मैंने अपनी जान पर अत्याचार किया। और (अब) मैं सुलैमान के साथ अल्लाह, समस्त लोकों के रब्ब की आज्ञाकारीणी बनती हूँ।45।*

(रुकू $\frac{3}{18}$)

وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی ثَمُوۡدَ اَخَاہُمۡ صٰلِحًا اَنِ اعۡبُدُوا اللّٰہَ فَاِذَا ہُمۡ فَرِیۡقٰنِ یَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿۴۶﴾

और हमने नि:सन्देह समूद (जाति) की ओर उनके भाई सालेह को (यह कहते हुए) भेजा था कि अल्लाह की उपासना करो। अत: सहसा वे दो दल बन कर झगड़ने लगे।46।

قَالَ یٰقَوۡمِ لِمَ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ بِالسَّیِّئَۃِ قَبۡلَ الۡحَسَنَۃِ ۚ لَوۡلَا تَسۡتَغۡفِرُوۡنَ اللّٰہَ لَعَلَّکُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۴۷﴾

उसने कहा, हे मेरी जाति ! तुम क्यों अच्छी बात से पहले बुरी बात के लिए जल्दी करते हो। तुम क्यों अल्लाह से क्षमा नहीं माँगते ताकि तुम पर दया की जाए।47।

قَالُوا اطَّیَّرۡنَا بِکَ وَبِمَنۡ مَّعَکَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُکُمۡ عِنۡدَ اللّٰہِ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ تُفۡتَنُوۡنَ ﴿۴۸﴾

उन्होंने कहा, हम तुझ से और तेरे साथियों से अपशकुन लेते हैं। उसने कहा, तुम्हारा शकुन तो अल्लाह के पास है। बल्कि तुम तो ऐसे लोग हो जिन्हें परीक्षा में डाला जाएगा।48।

وَکَانَ فِی الۡمَدِیۡنَۃِ تِسۡعَۃُ رَہۡطٍ یُّفۡسِدُوۡنَ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا یُصۡلِحُوۡنَ ﴿۴۹﴾

और (उसके) प्रमुख नगर में नौ व्यक्ति थे जो देश में उपद्रव किया करते थे और सुधार नहीं करते थे।49।

قَالُوۡا تَقَاسَمُوۡا بِاللّٰہِ لَنُبَیِّتَنَّہٗ وَاَہۡلَہٗ ثُمَّ

उन्होंने कहा, परस्पर अल्लाह की कसमें खाओ कि हम अवश्य उस पर और

---

* महारानी सबा को महल में प्रवेश करने की आज्ञा दी गई। उसका फ़र्श अत्यन्त स्वच्छ शीशों के टुकड़ों का बना हुआ था और अपनी चमक-दमक में पानी स्वरूप दिखाई दे रहा था। हालाँकि साधारण फ़र्श था, कोई पानी वहाँ नहीं था। महारानी ने पानी समझ कर अपना वस्त्र समेट लिया ताकि गीला न हो जाए। उस समय हज़रत सुलैमान अलै. ने उसको बताया कि यह भी एक दृष्टि का धोखा है। जिस प्रकार तुम सूर्य को उज्ज्वल समझ कर यही समझती हो कि सूर्य ही प्रकाश का स्रोत है हालाँकि वास्तव में तो अल्लाह तआला का प्रकाश उसमें प्रकाशित हो रहा होता है। इस पर वह समझ गई कि हम सूर्य की अनुचित उपासना किया करते थे।

لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝٥٠

उसके घर वालों पर रात्रि के समय आक्रमण करेंगे । फिर हम अवश्य उसके अभिभावक से कहेंगे कि हमने तो उसके घर वालों के विनाश को देखा नहीं और अवश्य हम सच्चे हैं ।50।

وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝٥١

और उन्होंने बहुत बड़ा षड़यन्त्र रचा और हमने भी एक (जवाबी) योजना बनाई और वे कुछ समझ न सके ।51।

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ أَنَّا دَمَّرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ۝٥٢

अत: देख कि उनके षड़यन्त्र का कैसा अन्त हुआ कि हमने उनको और उनकी समस्त जाति को नष्ट कर दिया ।52।

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝٥٣

अत: ये उनके घर हैं जो उस अत्याचार के कारण वीरान पड़े हैं, जो उन्होंने किया । नि:सन्देह इसमें उन लोगों के लिए एक बड़ा चिह्न है जो ज्ञान रखते हैं ।53।

وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝٥٤

और हमने उनको जो ईमान लाए और वे जो तक़वा धारण करने वाले थे, मुक्ति प्रदान की ।54।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ۝٥٥

और लूत को भी (मुक्ति दी) । जब उसने अपनी जाति से कहा कि क्या तुम अश्लीलता में लिप्त हो ? जबकि तुम भली-भाँति समझ रहे हो (कि क्या करते हो) ।55।

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ۝٥٦

क्या तुम अवश्य काम वासना मिटाने के लिए स्त्रियों को छोड़ कर पुरुषों के पास आते हो ? बल्कि तुम तो ना समझ लोग हो ।56।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ

अत: उसकी जाति का सिवाय इसके कोई उत्तर न था कि उन्होंने कहा कि लूत के परिवार को अपनी बस्ती से

اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٥٧

निकाल दो । नि:सन्देह ये ऐसे लोग हैं जो बड़े पवित्र बनते हैं ।57।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٥٨

अत: हमने उसको मुक्ति प्रदान की और उसके घर वालों को भी, सिवाय उसकी पत्नी के, जिसे हमने पीछे रह जानों वालों में गिन रखा था ।58।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝٥٩ ع ١٤ ١٩

और हमने उन पर एक बारिश बरसाई । अत: कितनी भयानक होती है सतर्क किए जाने वालों पर (होने वाली) बारिश ।59। (रुकू $\frac{4}{19}$)

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٠

कह दे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है । और सलाम हो उसके भक्तों पर जिन्हें उसने चुन लिया । क्या अल्लाह श्रेष्ठ है अथवा वे जिन्हें वे (उसके) साझीदार ठहराते हैं ? ।60।

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ
لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ
ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا
شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ
يَّعْدِلُوْنَ ؕ﴿٦١﴾

अथवा (यह बताओ कि) कौन है वह जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा । और उसके द्वारा हमने सुशोभित बाग़ उगाए । तुम्हारे वश में तो न था कि तुम उनके वृक्षों को उगाते । (अतः) क्या अल्लाह के साथ कोई (और) उपास्य है ? (नहीं, नहीं) बल्कि वे अन्याय करने वाले लोग हैं ।61।

اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ
اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ
الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ﴿٦٢﴾

अथवा (फिर) वह कौन है जिसने धरती को ठहरने का स्थान बनाया और उसके बीच में नदियाँ जारी कर दीं । और जिसने उसके पर्वत बनाए और दो समुद्रों के मध्य एक रोक बना दी । क्या अल्लाह के साथ कोई (और) उपास्य है ? (नहीं) बल्कि उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।62।

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ
وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ
الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ؕ﴿٦٣﴾

अथवा (फिर) वह कौन है जो व्याकुल व्यक्ति की दुआ स्वीकार करता है जब वह उसे पुकारे । और कष्ट को दूर कर देता है और तुम्हें धरती के उत्तराधिकारी बनाता है । क्या अल्लाह के साथ कोई (और) उपास्य है ? बहुत कम है जो तुम शिक्षा ग्रहण करते हो ।63।

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِىْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ
رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا

अथवा (फिर) वह कौन है जो स्थल भाग और जल भाग के अन्धकारों में तुम्हारा मार्गदर्शन करता है और कौन है वह जो अपनी कृपा (वर्षण) से पूर्व शुभ-समाचार के रूप में हवाएँ चलाता है । क्या अल्लाह के साथ कोई (और)

يُشْرِكُونَ ﴿٦٤﴾

उपास्य है ? बहुत ऊँचा है अल्लाह उससे जो वे शिर्क करते हैं ।64।

أَمَّنْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ ءَ إِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٦٥﴾

अथवा वह कौन है जो सृष्टि का आरम्भ करता है फिर वह उसकी पुनरावृत्ति करता है । और कौन है जो तुम्हें आसमान और धरती में से जीविका प्रदान करता है। क्या अल्लाह के साथ कोई (और) उपास्य है ? तू कह दे कि अपने ठोस प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे हो ।65।

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٦﴾

तू कह दे कि कोई भी जो आसमानों और धरती में है, अदृश्य को नहीं जानता, परन्तु अल्लाह । वे तो यह भी समझ नहीं रखते कि वे कब उठाए जाएँगे ।66।

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِنْهَا عَمُونَ ﴿٦٧﴾ ع

बल्कि परलोक के सम्बन्ध में उनका ज्ञान अन्त को पहुँचा । बल्कि वे तो उसके बारे में शंका में हैं । बल्कि वे तो उसके बारे में अन्धे हो चुके हैं ।67। (रुकू $\frac{5}{1}$)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ءَإِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَاؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٨﴾

और उन लोगों ने कहा, जिन्होंने अस्वीकार किया कि क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे और हमारे पूर्वज भी, तो क्या फिर भी हम अवश्य (पुनर्जीवित करके) निकाले जाने वाले हैं ? ।68।

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ إِنْ هٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٩﴾

नि:सन्देह यह वादा हमें और हमारे पूर्वजों को पहले भी दिया गया था । यह तो पहले लोगों की कथाओं के अतिरिक्त कुछ नहीं ।69।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٧٠﴾

तू कह दे, धरती में ख़ूब भ्रमण करो और फिर देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा था ।70।

وَلَا تَحۡزَنۡ عَلَيۡهِمۡ وَلَا تَكُنۡ فِيۡ ضَيۡقٍ مِّمَّا يَمۡكُرُوۡنَ ﴿۷۱﴾

और उन पर शोक न कर और जो वे षड़्यन्त्र रचते हैं उसके कारण किसी तंगी में न पड़ ।71।

وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۷۲﴾

और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो ।72।

قُلۡ عَسٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنَ رَدِفَ لَكُمۡ بَعۡضُ الَّذِىۡ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ﴿۷۳﴾

तू कह दे संभव है कि उन बातों में से कुछ जिनको तुम शीघ्रता पूर्वक चाहते हो तुम्हारे पीछे लगी हुई हों ।73।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوۡ فَضۡلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿۷۴﴾

और (यह कि) तेरा रब्ब नि:सन्देह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है । परन्तु उनमें से अधिकतर कृतज्ञता प्रकट नहीं करते ।74।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعۡلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوۡرُهُمۡ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ﴿۷۵﴾

और नि:सन्देह तेरा रब्ब भली-भाँति जानता है जो उनके सीने छिपाते हैं और जो कुछ वे (स्वयं) प्रकट करते हैं ।75।

وَمَا مِنۡ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ اِلَّا فِىۡ كِتٰبٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۷۶﴾

और आकाश और धरती में कोई छुपी हुई वस्तु नहीं (जिसका वर्णन) खुली-खुली पुस्तक में मौजूद न हो ।76।

اِنَّ هٰذَا الۡقُرۡاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ اَكۡثَرَ الَّذِىۡ هُمۡ فِيۡهِ يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۷۷﴾

नि:सन्देह यह क़ुरआन बनी इस्राईल के समक्ष अधिकतर ऐसी बातें वर्णन करता है जिनमें वे मतभेद रखते हैं ।77।*

وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحۡمَةٌ لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۷۸﴾

और नि:सन्देह यह मोमिनों के लिए हिदायत और कृपा है ।78।

اِنَّ رَبَّكَ يَقۡضِىۡ بَيۡنَهُمۡ بِحُكۡمِهٖ ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۷۹﴾

अवश्य तेरा रब्ब उनके बीच अपने विवेक के साथ निर्णय कर देगा । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।79।

---

* इससे पूर्व बीती हुई जो आश्चर्यजनक बातें हुई हैं उनके सम्बन्ध में बाइबिल में अद्‌भुत कथाएँ वर्णन की गई हैं । पवित्र क़ुरआन ने वास्तविक घटनाओं पर से पर्दा उठाकर उन कथाओं की वास्तविकता वर्णन कर दी है जिनको बनी-इस्राईल प्रत्यक्ष पर आधारित समझते थे ।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ۝٨٠

अत: अल्लाह पर भरोसा कर । नि:सन्देह तू खुले-खुले सत्य पर क़ायम है ।80।

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٨١

तू कदापि मुर्दों को नहीं सुना सकता और न ही बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकता है जब वे पीठ दिखाते हुए मुँह फेर लेते हैं ।81।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۗ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝٨٢

और नि:सन्देह तू अंधों को उनकी पथभ्रष्टता से हिदायत की ओर नहीं ला सकता । तू तो केवल उनको सुना सकता है जो हमारे चिह्नों पर ईमान लाते हैं और वे आज्ञाकारी हैं ।82।

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ۝٨٣ ع

और जब उन पर आदेश लागू हो जाएगा तो हम उनके लिए धरती में से एक जीव निकालेंगे जो उनको काटेगा (इस कारण से) कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे ।83।

(रुकू $\frac{6}{2}$)

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝٨٤

और (याद करो) जिस दिन हम प्रत्येक जाति में से जिसने हमारी आयतों को झुठलाया, एक समूह इकट्ठा करेंगे और फिर वे अलग-अलग पंक्तिबद्ध किए जाएँगे ।84।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨٥

यहाँ तक कि जब वे (अल्लाह के समक्ष) आ जाएँगे वह कहेगा, क्या तुमने मेरी आयतों को झुठला दिया था, जबकि तुम उनकी पूरी जानकारी प्राप्त नहीं कर सके थे ? अथवा फिर और क्या था जो तुम करते रहे हो ।85।

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ

और उन पर उस अत्याचार के कारण आदेश लागू हो जाएगा जो उन्होंने

لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٦﴾

किया । फिर वे (जवाब में) कुछ न बोलेंगे ।86।

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٧﴾

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात्रि को बनाया ताकि वे उसमें आराम प्राप्त करें और दिन को प्रकाशकर बनाया । नि:सन्देह इसमें ईमान लाने वाले लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं ।87।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٨﴾

और जिस दिन बिगुल फूंका जाएगा तो जो भी आसमानों में है और जो भी धरती में है भय से बेचैन हो जाएगा । सिवाए उसके जिसे अल्लाह (बचाना) चाहे और सब उसके समक्ष विनम्रतापूर्वक उपस्थित होंगे ।88।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٩﴾

और तू पर्वतों को इस अवस्था में देखता है कि उन्हें स्थिर और गतिहीन समझता है, हालाँकि वे बादलों की भाँति चल रहे हैं । (यह) अल्लाह की कारीगरी है जिसने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया । नि:सन्देह वह उससे जो तुम करते हो सदा अवगत रहता है ।89।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٩٠﴾

जो भी कोई पुण्य लेकर आएगा तो उसके लिए उससे उत्तम (प्रतिफल) होगा । और वे लोग उस दिन अत्यन्त घबराहट से बचे रहेंगे ।90।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩١﴾

और जो बुराई लेकर आएगा तो उनके चेहरे अग्नि में झोंके जाएँगे । (और कहा जाएगा) क्या जो तुम करते रहे हो (उसके सिवा) तुम्हें कोई प्रतिफल दिया जाएगा ? ।91।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ

मुझे केवल यही आदेश दिया गया है कि मैं इस नगर के रब्ब की उपासना करूँ

الَّذِىۡ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَىۡءٍ وَّاُمِرۡتُ اَنۡ اَكُوۡنَ مِنَ الۡمُسۡلِمِيۡنَۙ ﴿۹۲﴾

जिसने इसको सम्मान प्रदान किया है। और प्रत्येक वस्तु उसी की है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में से हो जाऊँ।92।

وَاَنۡ اَتۡلُوَا الۡقُرۡاٰنَ ۚ فَمَنِ اهۡتَدٰى فَاِنَّمَا يَهۡتَدِىۡ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَقُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُنۡذِرِيۡنَ ﴿۹۳﴾

और यह कि मैं क़ुरआन का पाठ करूँ। अतः जिसने हिदायत पाई तो वह अपने ही लिए हिदायत पाता है। और जो पथभ्रष्ट हुआ, तो कह दे कि मैं तो केवल सतर्ककारियों में से हूँ।93।

وَقُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ سَيُرِيۡكُمۡ اٰيٰتِهٖ فَتَعۡرِفُوۡنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹۴﴾ ع

और कह दे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है। वह शीघ्र ही तुम्हें अपने चिह्न दिखाएगा। अतः तुम उन्हें पहचान लोगे। और तेरा रब्ब कदापि उस से अनजान नहीं जो तुम लोग करते हो।94। (रुकू $\frac{7}{3}$)

28– सूरः अल–क़सस

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 89 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी **ता–सीन–मीम** खण्डाक्षरों से हुआ है जिस से प्रमाणित होता है कि अल्लाह तआला के पवित्र, सुनने वाला और सर्वज्ञ होने के विषयवस्तु को इस सूरः में भी जारी रखा जा रहा है, जिसकी व्याख्या इससे पूर्व कर दी गई है ।

पिछली सूरः में जिस प्रकार भविष्य में पूरे होने वाले वृहद चिह्नों का वर्णन है । इसी प्रकार इस सूरः में वर्णन किया जा रहा है कि अल्लाह तआला अतीत का भी वैसा ही ज्ञान रखता है जिस प्रकार भविष्य का ज्ञान रखता है । इस प्रकरण में हज़रत मूसा अलै. के सम्बन्ध में वह जानकारी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रदान की गई जो बहुत से चमत्कारों पर आधारित है । संक्षेप में यह कि वह पानी जो एक छोटे से अबोध बालक हज़रत मूसा अलै. को डुबो न सका वही पानी फ़िरऔन और उसकी सेनाओं को डुबोने का कारण बन गया ।

इसके पश्चात यह वर्णन है कि इस युग के यहूदी तेरा इनकार करते हुए कहते हैं कि यदि मूसा अलै. की भाँति तुझ पर चिह्न उतरें तो हम इनकार नहीं करेंगे । परन्तु वे इस बात को भूल जाते हैं कि मूसा के समय प्रकट होने वाले चिह्नों को भी तो यहूदी जाति ने झुठला दिया था । अन्यथा ये सब चिह्न देख कर वे मूर्तिपूजा की ओर आकर्षित न होते । सब इनकार करने वाले चाहे वे अतीत के हों अथवा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के हों, सबकी एक ही प्रकार की टेढ़ी चाल होती है कि पहलों के चिह्नों पर ईमान लाते हुए भी उसी प्रकार के चिह्नों को जब आँखों के सामने उतरते हुए देखते हैं तो उनका इनकार कर देते हैं ।

इसके पश्चात् उन अहले किताब का वर्णन है जो पहले भी हज़रत मूसा अलै. पर सच्चा ईमान लाए थे और जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित होने वाले चमत्कारों को उन्होंने देखा तो अपने पवित्र स्वभाव के कारण उन पर भी ईमान ले आए । इस प्रकर वे दोहरे प्रतिफल के पात्र बन गए । हज़रत मूसा अलै. पर ईमान लाने का उनको प्रतिफल मिलेगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने का भी उनको प्रतिफल प्रदान किया जाएगा ।

इस पूरे प्रसंग से यह सिद्ध हुआ कि हिदायत को मनुष्य बलपूर्वक प्राप्त नहीं कर सकता बल्कि नेक प्रवृत्ति के लोगों को अल्लाह तआला स्वयं हिदायत देता है । इस सूरः में यह भी वर्णन कर दिया गया कि इससे पहले जो बहुसंख्यक विनष्ट होने वाली जातियों का विवरण मिलता है वह इस कारण नहीं कि अल्लाह तआला ने उन पर अत्याचार

किया बल्कि वे अपनी जानों पर और अपने समय के नबियों पर जो अत्याचार किया करते थे वे उसके दुष्परिणाम के शिकार बन गए ।

इसके पश्चात् पवित्र क़ुरआन यह वर्णन करता है कि अंधेरों को सदा के लिए मनुष्य पर आच्छादित नहीं किया जाता जैसा कि धरती में भी रात और दिन परस्पर बदलते रहते हैं । और एक उच्चकोटि, सरल और शुद्ध वाणी में सचेत किया गया कि यदि रात सदा के लिए आच्छादित होती तो उन अन्धेरों में तुम देख तो नहीं सकते थे परन्तु सुनने के कान होते तो सुन तो सकते थे । अत: उनको अन्धकारों के ख़तरों से सावधान किया जा रहा है । फिर यदि दिन सदा के लिए आच्छादित होता तो न सुनने वालों को भी दिन के प्रकाश में तो मार्ग दिखाई देना चाहिए था, फिर वे क्यों देखते नहीं ?

इसके पश्चात् **क़ारून** का उल्लेख किया गया है जिसे अपार धन प्रदान किया गया था और लोग लालायित होकर उसे देखते थे कि काश ! उनको भी वैसा ही धन मिल जाता । परन्तु उसका अंत यह हुआ कि वह अपने ख़ज़ानों सहित धरती में दफ़न हो गया । इसी सूर: के आरम्भ में यह चेतावनी दी गई थी कि अल्लाह तआला केवल समुद्रों में डुबोने का ही सामर्थ्य नहीं रखता बल्कि यदि अल्लाह चाहे तो कुछ अभिमानी अपने धन-सम्पत्ति सहित सदा के लिए धरती में दफन कर दिए जाएँ । जैसा कि इस युग में भी हम यही देखते हैं कि भूकम्प से धरती फटती है और घनी आबादियाँ और इस युग के बड़े-बड़े भारी आविष्कार धरती में समा जाते हैं और फिर उनका कोई नामो निशान नहीं मिलता ।

इन आयतों के बाद एक ऐसी आयत (सं. 86) है जो शत्रुओं पर निश्चित रूप से यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त थी कि यह अल्लाह की वाणी है, इसने अवश्य पूरी होकर रहनी है । और वह यह थी कि तुझे हम दोबारा **मआद** (लौटने का स्थान) अर्थात् मक्का में प्रविष्ट करेंगे । अत: उन्होंने अपनी आँखों के सामने इस चमत्कार को पूरा होते हुए देख लिया । फिर अतीत या भविष्य की भविष्यवाणियों में शंका का कौन सा अवसर रह जाता है ? फिर परिणाम यही निकाला गया कि अल्लाह तआला के अद्वितीय होने के अतिरिक्त कुछ भी सिद्ध नहीं । जो विनाश की घटनाओं का उल्लेख हुआ है उनसे पता चलता है कि प्रत्येक वस्तु विनष्ट होने वाली है चाहे वह अल्लाह के प्रकोप के नीचे आकर विनष्ट हो अथवा प्राकृतिक विधान के अन्तर्गत अपने अन्त को पहुँचे । केवल एक अल्लाह की सत्ता है जो चिरस्थायी है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَّ ثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّ تِسْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

طٰسٓمّٓ ۝٢

तय्यिबुन, समीउन, अलीमुन : पवित्र, बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला ।2।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٣

यह एक सुस्पष्ट पुस्तक की आयतें हैं।3।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٤

हम तेरे सामने मूसा और फ़िरऔन के वृत्तांत में से सत्य के साथ कुछ पढ़ते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं ।4।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْاَرْضِ وَ جَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ يَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٥

फ़िरऔन ने नि:सन्देह धरती में उद्दण्डता की और उसके निवासियों को गुटों में विभाजित कर दिया । वह उनमें से किसी एक गुट को असहाय कर देता था। उनके पुत्रों का वध करता था और उनकी स्त्रियों को जीवित रखता था । नि:सन्देह वह उपद्रव करने वालों में से था ।5।

وَ نُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَ نَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّ نَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۝٦

और हमने इरादा किया कि जो लोग देश में दुर्बल समझे गए उन पर उपकार करें । और उन्हें अगुआ बना दें और उन्हें उत्तराधिकारी बना दें ।6।

وَ نُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَ نُرِيَ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝٧

और उन्हें धरती में दृढ़ता प्रदान करें और फ़िर्औन और हामान और उन दोनों की सेनाओं को उन (बनी-इस्राईल) की ओर से वह कुछ दिखा दें जिस से वे डरते थे ।7।

وَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰٓى اُمِّ مُوۡسٰٓى اَنۡ اَرۡضِعِيۡهِ ۚ فَاِذَا خِفۡتِ عَلَيۡهِ فَاَلۡقِيۡهِ فِى الۡيَمِّ وَلَا تَخَافِىۡ وَلَا تَحۡزَنِىۡ ۚ اِنَّا رَآدُّوۡهُ اِلَيۡكِ وَجَاعِلُوۡهُ مِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۞٨

और हमने मूसा की माँ की ओर वह्इ की, कि उसे दूध पिला । अतः जब तू उसके बारे में भय अनुभव करे तो उसे नदी में डाल दे और कोई भय न कर और कोई शोक न कर । हम अवश्य उसे तेरी ओर पुनः लाने वाले हैं । और उसे रसूलों में से (एक रसूल) बनाने वाले हैं ।8।

فَالۡتَقَطَهٗۤ اٰلُ فِرۡعَوۡنَ لِيَكُوۡنَ لَهُمۡ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرۡعَوۡنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوۡدَهُمَا كَانُوۡا خٰطِـِٕيۡنَ ۞٩

अतः फ़िरऔन के परिवार ने (अल्लाह की इच्छानुसार) उसे उठा लिया ताकि वह उनके लिए शत्रु (सिद्ध हो) और शोक का कारण बन जाए । निःसन्देह फ़िरऔन और हामान और उन दोनों की सेनाएँ दोषी थीं ।9।

وَقَالَتِ امۡرَاَتُ فِرۡعَوۡنَ قُرَّتُ عَيۡنٍ لِّىۡ وَلَكَ ؕ لَا تَقۡتُلُوۡهُ ۖ عَسٰٓى اَنۡ يَّنۡفَعَنَاۤ اَوۡ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ۞١٠

और फ़िरऔन की पत्नी ने कहा कि (यह) मेरे लिए और तेरे लिए आँखों की ठंडक (सिद्ध) होगा, इसका वध न करो। हो सकता है कि हमें यह लाभ पहुँचाए अथवा हम इसे पुत्र बना लें । जबकि वे कुछ समझ नहीं रखते थे ।10।

وَاَصۡبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوۡسٰى فٰرِغًا ؕ اِنۡ كَادَتۡ لَتُبۡدِىۡ بِهٖ لَوۡلَاۤ اَنۡ رَّبَطۡنَا عَلٰى قَلۡبِهَا لِتَكُوۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۞١١

और मूसा की माँ का दिल (चिंताओं से) मुक्त हो गया । बिल्कुल संभव था कि वह इस (रहस्य) को प्रकट कर देती यदि हम उसके दिल को संभाले न रखते । (हमने ऐसा किया) ताकि वह मोमिनों में से हो जाये ।11।

وَقَالَتۡ لِاُخۡتِهٖ قُصِّيۡهِ ۫ فَبَصُرَتۡ بِهٖ عَنۡ جُنُبٍ وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ۙ۞١٢

और उस (अर्थात् मूसा की माँ) ने उसकी बहन से कहा कि उसके पीछे-पीछे जा । अतः वह दूर से उसे देखती रही और उन्हें कुछ पता न था ।12।

وَحَرَّمۡنَا عَلَيۡهِ الۡمَرَاضِعَ مِنۡ قَبۡلُ فَقَالَتۡ

और पहले ही से हमने उस (अर्थात् मूसा) पर दूध पिलाने वालियाँ हराम

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ﴿١٣﴾

कर दी थीं। अतः उस (की बहन) ने कहा कि क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता दूँ जो तुम्हारे लिए इसका पालन-पोषण कर सकें और वे इसके शुभ-चिंतक हों।13।

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾ ع

अतः हमने उसे उसकी माँ की ओर लौटा दिया ताकि उसकी आँखे ठंडी हो जाएँ और वह शोक न करे और वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है। परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते थे।14।

(रुकू $\frac{1}{4}$)

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٥﴾

और जब वह परिपक्व आयु को पहुँचा और सुदृढ़ हो गया तो हमने उसे विवेकशीलता और ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम उपकार करने वालों को प्रतिफल देते हैं।15।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦﴾

और वह शहर में उसके रहने वालों की बेखबरी की अवस्था में (उनसे छिपता हुआ) प्रविष्ट हुआ तो वहाँ उसने दो पुरुषों को देखा जो एक दूसरे से लड़ रहे थे। यह (एक) उसके समुदाय का था और वह (दूसरा) उसके शत्रु समुदाय का था। अतः वह जो उसके समुदाय का था उसने उसको विरोधी समुदाय वाले के विरुद्ध सहायता के लिए आवाज़ दी। अतः मूसा ने उसे मुक्का मारा और उसका काम तमाम कर दिया। उसने (दिल में) कहा कि यह (जो कुछ हुआ) यह तो शैतान का काम था। निःसन्देह वह खुला-खुला पथभ्रष्ट करने वाला शत्रु है।16।

قَالَ رَبِّ اِنِّیۡ ظَلَمۡتُ نَفۡسِیۡ فَاغۡفِرۡ لِیۡ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِیۡمُ ﴿۱۷﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! निःसन्देह मैंने अपनी जान पर अत्याचार किया । अतः मुझे क्षमा कर दे । तो उसने उसे क्षमा कर दिया । निःसन्देह वही है जो बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।17।

قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنۡعَمۡتَ عَلَیَّ فَلَنۡ اَكُوۡنَ ظَهِیۡرًا لِّلۡمُجۡرِمِیۡنَ ﴿۱۸﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! इस कारण से कि तूने मुझे पुरस्कृत किया मैं भविष्य में कदापि अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा ।18।

فَاَصۡبَحَ فِی الۡمَدِیۡنَةِ خَآئِفًا یَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِی اسۡتَنۡصَرَهٗ بِالۡاَمۡسِ یَسۡتَصۡرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوۡسٰۤی اِنَّكَ لَغَوِیٌّ مُّبِیۡنٌ ﴿۱۹﴾

अतः वह प्रातःकाल शहर में डरता हुआ इधर उधर दृष्टि डालता हुआ प्रविष्ट हुआ तो सहसा (देखा कि) वही व्यक्ति जिसने उसे पिछले दिन सहायता के लिए बुलाया था फिर उससे चिल्ला-चिल्ला कर सहायता माँग रहा है । मूसा ने उससे कहा, निःसन्देह तू ही स्पष्ट रूप से पथभ्रष्ट है ।19।

فَلَمَّاۤ اَنۡ اَرَادَ اَنۡ یَّبۡطِشَ بِالَّذِیۡ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ یٰمُوۡسٰۤی اَتُرِیۡدُ اَنۡ تَقۡتُلَنِیۡ كَمَا قَتَلۡتَ نَفۡسًۢا بِالۡاَمۡسِ ٭ۖ اِنۡ تُرِیۡدُ اِلَّاۤ اَنۡ تَكُوۡنَ جَبَّارًا فِی الۡاَرۡضِ وَمَا تُرِیۡدُ اَنۡ تَكُوۡنَ مِنَ الۡمُصۡلِحِیۡنَ ﴿۲۰﴾

फिर जब उसने इरादा किया कि उसे पकड़े जो उन दोनों का शत्रु है तो उसने कहा, हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि मेरा भी वध कर दे जैसा तूने एक व्यक्ति का कल वध किया था । इसके सिवा तू कुछ नहीं चाहता कि देश में धौंस जमाता फिरे और तू नहीं चाहता कि सुधार करने वालों में से बने ।20।

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنۡ اَقۡصَا الۡمَدِیۡنَةِ یَسۡعٰی ۫ قَالَ یٰمُوۡسٰۤی اِنَّ الۡمَلَاَ یَاۡتَمِرُوۡنَ بِكَ

और एक व्यक्ति शहर के परले किनारे से दौड़ता हुआ आया । उसने कहा, हे मूसा ! निःसन्देह सरदार तेरे विरुद्ध योजना बना रहे हैं कि तेरा

لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾

वध कर दें । अत: निकल भाग । नि:सन्देह मैं तेरी भलाई चाहने वालों में से हूँ ।21।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ ع

अत: वह वहाँ से भयभीत और इधर-उधर दृष्टि डालता हुआ निकल भागा । उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे अत्याचारी लोगों से मुक्ति प्रदान कर ।22।*

(रुकू $\frac{2}{5}$)

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٣﴾

अत: जब उसने मदयन का रुख किया, उसने कहा, संभव है कि मेरा रब्ब मुझे सही मार्ग की ओर हिदायत दे दे ।23।

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٤﴾

अत: जब वह मदयन के पानी के घाट पर उतरा । उसने वहाँ लोगों के एक समुदाय को (अपने पशुओं को) पानी पिलाते हुए देखा और उनसे परे दो स्त्रियों को भी उपस्थित पाया जो अपने पशुओं को पीछे हटा रही थीं । उसने पूछा कि तुम दोनों की क्या समस्या है ? उन्होंने उत्तर दिया, जबतक चरवाहे लौट न जाएँ हम पानी पिला नहीं सकतीं और हमारा पिता बहुत बूढ़ा है ।24।

---

* आयत संख्या 16 से 23 : मालूम होता है कि हज़रत मूसा अलै. नुबुव्वत प्राप्ति से पूर्व अपने घर सुबह के अंधेरे में आया करते थे । एक दिन रास्ते में उन्होंने एक इस्राईली को फ़िरऔन की जाति के एक व्यक्ति से लड़ते हुए देखा । जब उसने हज़रत मूसा को सहायता के लिए पुकारा तो उनके मुक्के से फ़िरऔन की जाति का व्यक्ति मर गया ।

दूसरे दिन सुबह मुँह अंधेरे हज़रत मुसा अलै. फिर गुज़र रहे थे तो उनकी जाति के उसी लड़ाकु व्यक्ति ने फ़िरऔन की जाति के एक और व्यक्ति से लड़ाई शुरू की । जब मूसा अपनी जाति वाले की सहायता के लिए बढ़े तो फ़िरऔन की जाति के व्यक्ति ने विरोध करते हुए हज़रत मूसा से कहा कि क्या मुझ से भी वैसा ही करोगे जिस प्रकार कल तुम ने हमारा एक व्यक्ति मार दिया था ? इन दो घटनाओं के उल्लेख के पश्चात वह आयत आती है जिसमें बताया गया है कि फ़िरऔन की जाति के सरदारों ने यह निर्णय कर लिया कि मूसा को मृत्युदण्ड दिया जाएगा । इस पर हज़रत मूसा को एक जानकार व्यक्ति ने पहले से सचेत कर दिया और आप वहाँ से मद्‌यन की ओर चले गए ।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٥﴾

तो उसने उन दोनों के लिए (उनके पशुओं को) पानी पिलाया । फिर वह एक छाया की ओर मुड गया और कहा कि हे मेरे रब्ब ! हर अच्छी चीज़ जो तू मेरी ओर उतारे उसके लिए मैं एक याचक हूँ ।25।

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ٞ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٦﴾

अतः उन दोनों में से एक उसके पास लजाती हुई आई । उसने कहा, निःसन्देह मेरे पिता तुझे बुलाते हैं ताकि तुझे उसका प्रतिफल दें जो तूने हमारे लिए पानी पिलाया । अतः जब वह उसके (पिता के) पास आया और सारी घटना उस के सामने वर्णन की, उसने कहा भय न कर तू अत्याचारी लोगों से मुक्ति पा चुका है ।26।

قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٧﴾

उन दोनों में से एक ने कहा, हे मेरे पिता! इसे नौकर रख लें । निःसन्देह जिन्हें भी आप नौकर रखें उनमें वही उत्तम (सिद्ध) होगा जो शक्तिशाली (और) विश्वस्त हो ।27।

قَالَ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَاْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٨﴾

उसने (मूसा से) कहा, मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का तुझ से इस शर्त पर विवाह का दूँ कि तू आठ वर्ष मेरी सेवा करे । फिर यदि तू दस (वर्ष) पूरे कर दे तो यह तेरी ओर से (स्वेच्छिक) होगा । और मैं तुझ पर किसी प्रकार की सख़्ती नहीं करना चाहता । अल्लाह चाहे तो तू मुझे नेक लोगों में से पाएगा ।28।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ

उसने कहा, यह मेरे और आपके बीच तय हो गया । दोनों में से जो अवधि भी

قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝۲۹ ع

मैं पूरी करूँ तो मेरे विरुद्ध कोई ज़्यादती नहीं होनी चाहिए। और जो हम कह रहे हैं, अल्लाह उस पर निरीक्षक है।29।

(रुकू $\frac{3}{6}$)

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝۳۰

अतः जब मूसा ने निर्धारित अवधि पूरी कर दी और अपने घर वालों को लेकर चला, उसने तूर की ओर एक आग सी देखी। उसने अपने घर वालों से कहा, ज़रा ठहरो! मुझे एक आग सी दिखाई दे रही है। हो सकता है कि मैं उस (के पास) से कोई ख़बर तुम्हारे पास ले आऊँ अथवा कोई आग का अंगारा ले आऊँ ताकि तुम आग ताप सको।30।

فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۳۱

फिर जब वह उसके पास आया तो (उस) मंगलमय घाटी के किनारे से, वृक्ष के एक मंगलमय भाग में से आवाज़ दी गई, हे मूसा! निःसन्देह मैं ही अल्लाह हूँ, समस्त लोकों का रब्ब।31।

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝۳۲

और (कहा गया) कि अपनी लाठी फेंक। फिर जब उसने उस (लाठी) को देखा कि वह हिल-डोल रही है मानो साँप हो, तो वह पीठ फेर कर मुड़ गया और पलट कर भी नहीं देखा। (कहा गया) हे मूसा! आगे बढ़ और डर नहीं। निःसन्देह तू सुरक्षित रहने वालों में से है।32।

اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ

अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल वह बिना किसी दोष के चमकता हुआ निकलेगा। फिर भय से (बचने के लिए) अपनी भुजा को अपने साथ चिमटा ले।

جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٣٣

अत: तेरे रब्ब की ओर से ये दो चिह्न फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर (भेजे जा रहे) हैं । नि:सन्देह वे दुराचारी लोग हैं ।33।

قَالَ رَبِّ اِنِّىْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝٣٤

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! नि:सन्देह मैं ने उनके एक व्यक्ति का वध किया हुआ है। अत: मैं डरता हूँ कि वे मेरा वध कर देंगे ।34।

وَاَخِىْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّىْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِىَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِىْٓ ۖ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝٣٥

और मेरा भाई हारून भाषा की दृष्टि से मुझ से अधिक शुद्ध-वक्ता है । अत: मेरे सहायक के रूप में उसे मेरे साथ भेज दे । वह मेरी पुष्टि करेगा । नि:सन्देह मुझे (यह भी) डर है कि वे मुझे झुठला देंगे ।35।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَآ ۚۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ۝٣٦

उसने कहा, हम अवश्य तेरे भाई के द्वारा तेरा हाथ मज़बूत करेंगे और तुम दोनों को एक भारी चिह्न प्रदान करेंगे । अत: हमारे चिह्नों के होते हुए वे तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे । तुम दोनों भी और वे भी जो तुम्हारा अनुसरण करेंगे विजयी होने वाले हैं ।36।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝٣٧

अत: जब मूसा उनके पास हमारे खुले-खुले चिह्न ले कर आया तो उन्होंने कहा, यह तो एक गढ़ा हुआ जादू है और हमने अपने पूर्वजों में ऐसा नहीं सुना ।37।

وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّىْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ

और मूसा ने कहा, मेरा रब्ब सबसे अधिक जानता है कि कौन उसकी ओर से हिदायत ले कर आया है और कौन है जिसको परलोक का घर प्राप्त होगा ।

عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٣٨

नि:सन्देह अत्याचारी सफल नहीं हुआ करते ।38।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٣٩

और फ़िरऔन ने कहा, हे सरदारो ! मैं अपने सिवा तुम्हारे लिए किसी अन्य उपास्य को नहीं जानता । अत: हे हामान ! मेरे लिए मिट्टी (की ईंटों) पर आग भड़का । फिर मुझे एक महल बना कर दे ताकि मैं मूसा के उपास्य को झांक कर देखूँ तो सही । और नि:सन्देह मैं यही धारणा रखता हूँ कि वह झूठा है ।39।

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝٤٠

और उसने और उस की सेनाओं ने धरती में अकारण अभिमान किया । और यह विचार किया कि वे हमारी ओर नहीं लौटाए जाएँगे ।40।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤١

अत: हमने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ में ले लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया । अत: देख कि अत्याचारियों का कैसा अन्त हुआ ।41।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝٤٢

और हमने उन्हें ऐसे अगुआ बनाया था जो आग की ओर बुलाते थे । और क़यामत के दिन उन्हें सहायता नहीं दी जाएगी ।42।

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ۝٤٣ ع

और हमने इस संसार में भी उनके पीछे ला'नत लगा दी और क़यामत के दिन भी वे दुर्दशाग्रस्तों में से होंगे ।43।

(रुकू $\frac{4}{7}$)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَاۗىِٕرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤٤

और नि:सन्देह हमने पहली जातियों को विनष्ट कर देने के पश्चात् ही मूसा को पुस्तक प्रदान की । यह लोगों के लिए आँखे खोलने वाली और हिदायत और कृपा स्वरूप थी ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें ।44।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٥﴾

और तू (तूर पर्वत के) पश्चिमी ओर नहीं था जब हमने मूसा की ओर आदेश भेजा। और तू (प्रत्यक्षदर्शी) गवाहों में से नहीं था।45।

وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٦﴾

परन्तु हमने कई जातियों को उन्नति प्रदान की यहाँ तक कि उन पर आयु दीर्घ हो गई। और तू मद्यन निवासियों में भी उन पर हमारी आयतें पढ़ता हुआ नहीं ठहरा। परन्तु यह हम ही हैं जो पैग़म्बर भेजने वाले थे।46।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٧﴾

और तू तूर के किनारे पर नहीं था जब हमने (मूसा को) आवाज़ दी। परन्तु (तू) अपने रब्ब की ओर से एक महान कृपा स्वरूप (भेजा गया है)। ताकि तू ऐसे लोगों को सतर्क करे जिनके पास तुझ से पहले कोई सतर्ककारी नहीं आया। ताकि वे उपदेश ग्रहण करें।47।

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٨﴾

और ऐसा न हो कि उन्हें इस कारण कोई संकट पहुँचे जो उनके हाथों ने आगे भेजा, तो वे कहें कि हे हमारे रब्ब! क्यों न तूने हमारी ओर कोई रसूल भेजा, ताकि हम तेरी आयतों का अनुसरण करते और मोमिनों में से बन जाते।48।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا

अतः जब हमारी ओर से उनके पास सत्य आ गया तो उन्होंने कहा कि इसे वैसा ही क्यों न दिया गया जैसा मूसा को दिया गया था। क्या वे इससे पूर्व उसका इनकार नहीं कर चुके जो मूसा को दिया गया था ? उन्होंने यह कहा

سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۗ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

था कि ये दो बहुत बड़े जादूगर हैं जो एक दूसरे के सहायक हुए । और उन्होंने कहा, हम तो अवश्य हर एक का इनकार करने वाले हैं ।49।

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٥٠﴾

तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह की ओर से कोई ऐसी पुस्तक तो लाओ जो इन दोनों (अर्थात तौरात और क़ुरआन) से अधिक हिदायत देने वाली हो तो मैं उसी का अनुसरण करूँगा ।50।

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۭ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ ع ٥/٨

अत: यदि वे तेरे इस निमन्त्रण को स्वीकार न करें तो जान ले कि वे केवल अपनी अभिलाषाओं ही का अनुसरण कर रहे हैं । और उससे अधिक पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत को छोड़ कर अपनी अभिलाषाओं का अनुसरण करे । अल्लाह कदापि अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।51। (रुकू $\frac{5}{8}$)

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٢﴾

और नि:सन्देह हमने भली-भाँति उन तक बात पहुँचा दी थी ताकि वे उपदेश ग्रहण करें ।52।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٣﴾ النصف

जिन्हें हमने इससे पहले पुस्तक दी थी (उनमें से कई) इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं ।53।

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

और जब उन पर (क़ुरआन) पढ़ा जाता है तो वे कहते हैं, हम इस पर ईमान ले आए । नि:सन्देह यह हमारे रब्ब की ओर से सत्य है । नि:सन्देह हम इससे पूर्व ही आज्ञाकारी थे ।54।

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا

यही वे लोग हैं जिन्हे दो बार अपना प्रतिफल दिया जाएगा क्योंकि उन्होंने

صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٥﴾

धैर्य किया और वे भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं । और जो कुछ हम उन्हें प्रदान करते हैं वे उसमें से खर्च करते हैं ।55।

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؗ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ؗ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٦﴾

और जब वे किसी निरर्थक बात को सुनते हैं तो उससे विमुख हो जाते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म । तुम पर सलाम हो । हम अज्ञानों की ओर झुकाव नहीं रखते ।56।

اِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٧﴾

नि:सन्देह तू जिसे चाहे हिदायत नहीं दे सकता परन्तु अल्लाह जिसे चाहे हिदायत दे सकता है । और वह हिदायत पाने योग्य लोगों को ख़ूब जानता है ।57।

وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ؕ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَىْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٨﴾

और उन्होंने कहा कि यदि हम तेरे संग हिदायत का अनुसरण करेंगे तो हम अपने देश से निकाल दिये जाएँगे । क्या हमने उन्हें शान्तिदायक हरम (मक्का क्षेत्र) में ठिकाना प्रदान नहीं किया, जिसकी ओर प्रत्येक प्रकार के फल लाए जाते हैं (ये) हमारी ओर से जीविका स्वरूप (हैं) । परन्तु उनमें से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते ।58।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ؕ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٩﴾

और हमने कितनी ही बस्तियों को विनष्ट किया जो अपने जीवन-साधनों पर इतराती थीं । अत: ये उनके निवास स्थान हैं जिन्हें उनके पश्चात अल्प समय के अतिरिक्त आबाद न रखा गया । और नि:सन्देह (उनके) हम ही उत्तराधिकारी हुए ।59।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝٦٠

और तेरा रब्ब बस्तियों को तबाह नहीं करता जब तक कि उन (बस्तियों) के केन्द्रस्थल में रसूल भेज न चुका हो जो उन पर हमारी आयतें पढ़ता है । और हम इसके सिवा बस्तियों को ध्वंस नहीं करते जब तक कि उनके निवासी अत्याचारी न हो चुके हों ।60।

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦١

और जो कुछ भी तुम्हें दिया जाता है यह सांसारिक जीवन का अस्थायी लाभ और इस (संसार) की शोभा है । और जो अल्लाह के पास है वह उत्तम और बाक़ी रहने वाला है । अतः क्या तुम बद्धि से काम नहीं लोगे ? ।61। (रुकू $\frac{6}{9}$)

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝٦٢

अतः क्या वह जिससे हमने अच्छा वादा किया और वह उसे प्राप्त करने वाला है, उस जैसा हो सकता है जिसे हमने सांसारिक जीवन का अस्थायी लाभ पहुँचाया हो । फिर वह क़यामत के दिन (उत्तर देने के लिए) उपस्थित किए जाने वालों में से हो ।62।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝٦٣

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा, कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिनको तुम (मेरे साझीदार) समझा करते थे ? ।63।

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ۡ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ۝٦٤

वे जिन पर आदेश लागू हो चुका होगा कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! ये वे लोग हैं जिन्हें हमने पथभ्रष्ट किया । हमने उनको (वैसे ही) पथभ्रष्ट किया जैसे हम स्वयं पथभ्रष्ट हुए । (इनसे) विमुखता प्रदर्शन करते हुए (अब) हम तेरी ओर आते हैं । ये कदापि हमारी उपासना नहीं किया करते थे ।64।

وَقِيۡلَ ادۡعُوۡا شُرَكَآءَكُمۡ فَدَعَوۡهُمۡ فَلَمۡ يَسۡتَجِيۡبُوۡا لَهُمۡ وَرَاَوُا الۡعَذَابَ ۚ لَوۡ اَنَّهُمۡ كَانُوۡا يَهۡتَدُوۡنَ ﴿٦٥﴾

और उनसे कहा जाएगा कि अपने (बनाए हुए) उपास्यों को पुकारो । फिर वे उन्हें पुकारेंगे तो वे उनको कोई उत्तर न देंगे और वे अज़ाब को देखेंगे । काश कि वे हिदायत पा जाते ।65।

وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ فَيَقُوۡلُ مَاذَاۤ اَجَبۡتُمُ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿٦٦﴾

(और याद रखो) वह दिन जब वह (अल्लाह) उन्हें पुकारेगा और पूछेगा कि तुमने रसूलों को क्या उत्तर दिया ? ।66।

فَعَمِيَتۡ عَلَيۡهِمُ الۡاَنۡۢبَآءُ يَوۡمَئِذٍ فَهُمۡ لَا يَتَسَآءَلُوۡنَ ﴿٦٧﴾

अत: उस दिन उन पर खबरें संदिग्ध हो जाएँगी । फिर वे एक-दूसरे से भी कोई प्रश्न पूछ नहीं पायेंगे ।67।

فَاَمَّا مَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰۤى اَنۡ يَّكُوۡنَ مِنَ الۡمُفۡلِحِيۡنَ ﴿٦٨﴾

अत: जहाँ तक उस का सम्बंध है जिसने प्रायश्चित किया और ईमान लाया और पुण्य कर्म किए तो संभव है कि वह सफल होने वालों में से हो जाए ।68।

وَرَبُّكَ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخۡتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الۡخِيَرَةُ ؕ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿٦٩﴾

और तेरा रब्ब जो चाहता है पैदा करता है और (उसमें से) ग्रहण करता है और उनको कोई अधिकार प्राप्त नहीं । पवित्र है अल्लाह और बहुत ऊँचा है उससे जो वे (उसका) साझीदार ठहराते हैं ।69।

وَرَبُّكَ يَعۡلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوۡرُهُمۡ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ﴿٧٠﴾

और तेरा रब्ब जानता है जो उनके सीने छिपाते हैं और जो वे (लोग) प्रकट करते हैं ।70।

وَهُوَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الۡحَمۡدُ فِى الۡاُوۡلٰى وَالۡاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الۡحُكۡمُ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٧١﴾

और वही है अल्लाह, उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । आदि और अन्त (दोनों) में प्रशंसा उसी की है । उसी का आदेश चलता है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।71।

قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيۡكُمُ الَّيۡلَ

तू कह दे कि मुझे बताओ तो सही कि यदि अल्लाह तुम पर रात्रि को क़यामत के दिन तक लम्बी कर दे तो अल्लाह के

سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿۷۲﴾

सिवा तुम्हारा कौन उपास्य है जो तुम्हारे पास कोई प्रकाश ला सके ? अत: क्या तुम सुनोगे नहीं ? ।72।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۷۳﴾

तू कह दे कि बताओ तो सही यदि अल्लाह तुम पर दिन को क़यामत के दिन तक लम्बा कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन उपास्य है जो तुम्हारे पास रात को ला सके, जिसमें तुम आराम पाते हो ? क्या तुम बुद्धिमानी से काम नहीं लोगे ? ।73।

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۴﴾

और उसने अपनी कृपा से तुम्हारे लिए रात और दिन को इस कारण बनाया कि तुम इसमें आराम प्राप्त करो और उसकी कृपाओं की खोज करो और ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो ।74।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۷۵﴾

और (वह दिन याद रखो) जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा, कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन्हें तुम (मेरा साझीदार) समझा करते थे ? ।75।

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْۤا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۷۶﴾ ع

और हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी निकाल लाएँगे और कहेंगे कि अपना प्रमाण लाओ । अत: वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह के वश में है और जो कुछ वे झूठ रचा करते थे उनसे जाता रहेगा ।76। (रुकू $\frac{7}{10}$)

اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَاۤ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ

नि:सन्देह क़ारून मूसा की जाति में से था । अत: उसने उनके विरुद्ध विद्रोह किया और हमने उसे ऐसे ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी चाबियाँ (अपने भार से) एक शक्तिशाली समूह को भी थका देती थीं। (फिर) जब उसकी जाति ने उससे कहा,

لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٧﴾

शेख़ी न बघार । निःसन्देह अल्लाह अहंकार करने वालों को पसन्द नहीं करता ।77।

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٨﴾

और जो कुछ अल्लाह ने तुझे प्रदान किया है उसके द्वारा परलोक का घर कमाने की इच्छा कर । और संसार में से भी अपने निश्चित भाग की उपेक्षा न कर । और उपकारपूर्ण व्यवहार कर जैसा कि अल्लाह ने तुझ से उपकारपूर्ण व्यवहार किया । और धरती में उपद्रव (फैलाने) की इच्छा न कर । निःसन्देह अल्लाह उपद्रवियों को पसन्द नहीं करता ।78।

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

उसने कहा, मुझे तो यह उस ज्ञान के कारण दिया गया है जो मुझे प्राप्त है । फिर क्या उसे ज्ञान नहीं हुआ कि निःसन्देह अल्लाह उससे पूर्व कितनी ही पीढ़ियों को तबाह कर चुका है जो उससे अधिक शक्तिशाली और अधिक संख्या थीं ? और अपराधियों से उनके अपराधों के बारे में पूछा नहीं जाएगा ।79।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٨٠﴾

अतः वह अपनी जाति के समक्ष अपने ठाट-बाट के साथ निकला । उन लोगों ने जो संसारिक जीवन की इच्छा रखते थे कहा, काश ! हमारे लिए भी वैसा ही होता जो क़ारून को दिया गया । निःसन्देह वह बड़ा भाग्यवान है ।80।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ

और उन लोगों ने जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया था कहा, हाय, खेद है तुम पर! अल्लाह का (दिया हुआ) प्रतिफल उसके लिए अत्युत्तम है जो ईमान लाया और

وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ۝٨١

पुण्य कर्म किया । परन्तु धैर्य करने वालों के अतिरिक्त (ऐसा) कोई नहीं जिसे यह (ज्ञान) प्रदान किया जाए ।81।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۣ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۤ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ۝٨٢

अतः हमने उसे और उसके घर को धरती में धंसा दिया । फिर उसका कोई समूह न था जो अल्लाह के विरुद्ध उसकी सहायता करता । और वह प्रतिशोध लेने वालों में से बन न सका ।82।

وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۭ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨٣ ع ٨

और उन लोगों ने, जिन्होंने एक दिन पहले तक उसके स्थान (को प्राप्त करने) की अभिलाषा की थी, इस दशा में सुबह की कि वे कह रहे थे, हाय अफसोस ! अल्लाह अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहे जीविका को बढ़ा देता है और (जिस के लिए चाहे) तंग भी कर देता है । यदि हम पर अल्लाह ने उपकार न किया होता तो वह हमें भी धंसा देता। हाय अफसोस ! इनकार करने वाले सफल नहीं हुआ करते ।83।

(रुकू $\frac{8}{11}$)

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٨٤

यह परलोक का घर है जिसे हम उन लोगों के लिए बनाते हैं जो धरती में न (अपनी) बड़ाई चाहते हैं और न उपद्रव। और अंत तो मुत्तक़ियों का ही (अच्छा) है ।84।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٨٥

जो भी कोई पुण्यकर्म लेकर आएगा तो उसके लिए उससे उत्तम (प्रतिफल) होगा । और जो कुकर्म लेकर आएगा तो वे जिन्होंने कुकर्म किया, (उन्हें) वैसा ही प्रतिफल दिया जाएगा जैसा वे किया करते थे ।85।

اِنَّ الَّذِیۡ فَرَضَ عَلَیۡکَ الۡقُرۡاٰنَ لَرَآدُّکَ اِلٰی مَعَادٍ ؕ قُلۡ رَّبِّیۡۤ اَعۡلَمُ مَنۡ جَآءَ بِالۡهُدٰی وَمَنۡ هُوَ فِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ﴿۸۶﴾

नि:सन्देह वह जिसने तुझ पर क़ुरआन को अनिवार्य किया है तुझे अवश्य एक लौट कर आने के स्थान की ओर वापस ले आएगा । तू कह दे, मेरा रब्ब उसे अधिक जानता है जो हिदायत लेकर आता है । और उसे भी जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में है ।86।

وَمَا کُنۡتَ تَرۡجُوۡۤا اَنۡ یُّلۡقٰۤی اِلَیۡکَ الۡکِتٰبُ اِلَّا رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّکَ فَلَا تَکُوۡنَنَّ ظَهِیۡرًا لِّلۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۫۸۷﴾

और तू कोई अभिलाषा नहीं रखता था कि तुझे पुस्तक दी जाए । परन्तु (यह) तेरे रब्ब की ओर से दया स्वरूप है । अत: काफ़िरों का कदापि सहायक न बन ।87।

وَلَا یَصُدُّنَّکَ عَنۡ اٰیٰتِ اللّٰهِ بَعۡدَ اِذۡ اُنۡزِلَتۡ اِلَیۡکَ وَادۡعُ اِلٰی رَبِّکَ وَلَا تَکُوۡنَنَّ مِنَ الۡمُشۡرِکِیۡنَ ﴿ۚ۸۸﴾

और वे कदापि तुझे अल्लाह की आयतों (के अनुसरण) से न रोक सकें, जब कि वे तेरी ओर उतारी जा चुकी हों । और अपने रब्ब की ओर बुलाता रह और शिर्क करने वालों में से कदापि न बन ।88।

وَلَا تَدۡعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ کُلُّ شَیۡءٍ هَالِکٌ اِلَّا وَجۡهَهٗ ؕ لَهُ الۡحُکۡمُ وَاِلَیۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۸۹﴾

और अल्लाह के साथ किसी और उपास्य को न पुकार । उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । उसकी दीप्ति के सिवा प्रत्येक वस्तु नष्ट होने वाली है । उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे ।89। (रुकू $\frac{9}{12}$)

29– सूर: अल–अन्कबूत

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 70 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरंभ एक बार फिर **अलिफ़–लाम–मीम** खण्डाक्षरों से किया गया है जिसमें यह संकेत है कि एक बार फिर अल्लाह तआला सूर: अल् बक़र: के विषयवस्तुओं को नए ढ़ंग से दोहराएगा । अत: जैसा कि सूर: अल बक़र: में यहूदियों का वर्णन था कि उनका ईमान लाना उस समय तक अल्लाह तआला को स्वीकार न हुआ जब तक वे परीक्षाओं पर खरा नहीं उतरे । अब इस सूर: में भी उसी विषयवस्तु की पुनरावृत्ति है । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में भी पहले लोगों की भाँति केवल ईमान का दावा करना पर्याप्त नहीं होगा बल्कि समस्त परीक्षाओं में से अवश्य गुज़रना होगा जिनसे पहली जातियों को गुज़ारा गया ।

उसके बाद अल्लाह तआला कहता है कि कुछ लोगों को अपने माता-पिता की ओर से भी कड़ी परीक्षा का सामना होता है जो मुश्रिक होने के कारण अपने बच्चों को शिर्क की ओर बुलाते हैं । परन्तु मनुष्य को याद रखना चाहिए कि माता-पिता जिनके प्रति अल्लाह तआला ने दयापूर्ण बर्ताव करने की शिक्षा दी है, उनसे बहुत बढ़ कर अल्लाह का अपने भक्तों पर दया भाव है । इसलिए किसी मोल पर भी वे माता-पिता के लिए शिर्क को स्वीकार न करें ।

जिस प्रकार सूर: अल बक़र: के आरंभ में ही मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) का उल्लेख मिलता है और उनके आंतरिक रोगों पर से पर्दा उठाया गया है, उसी प्रकार इस सूर: में भी मुनाफ़िक़ों का वर्णन हुआ है और उनके भाँति-भाँति के आध्यात्मिक रोगों का विश्लेषण किया गया है ।

ईमान लाने का दावा करने वाले इस परीक्षा में से भी गुज़रते हैं कि उनके बड़े लोग उनको कहते हैं कि हमारे पीछे लग जाओ । यदि हमारा धर्म ग़लत भी हुआ तो हम तुम्हारे बोझ उठा लेंगे । हालाँकि यह दावा करने वाले तो न केवल अपना बोझ उठाएँगे बल्कि अपने अनुयायिओं को पथभ्रष्ट करने का बोझ भी उठाएँगे । और इस मामले का निर्णय क़यामत के दिन ही होगा कि वे अल्लाह तआला पर कैसे कैसे झूठ गढ़ा करते थे ।

इसके पश्चात् हज़रत नूह अलै., हज़रत इब्राहीम अलै., हज़रत लूत अलै. और बहुत से ऐसे पूर्व कालीन नबियों की जातियों का वर्णन है जिन्हें अपने समय के रसूलों का विरोध करने के कारण विनष्ट कर दिया गया और उनके चिह्न इस धरती में आज तक मौजूद हैं । पुरातत्त्वविद् बहुत सी जातियों की खोज लगा चुके हैं और बहुत सी जातियों की खोज लगाना अभी शेष है । यहाँ तक कि नूह अलै. की नौका के सम्बन्ध में भी कहा

जाता है कि पुरातत्त्ववेत्ता इसकी खोज में जुटे हैं और अवश्य एक दिन उसे ढूँढ निकालेंगे।

इसके पश्चात् इस सूर: की प्रमुख आयत (संख्या 42) में, जिसका इस सूर: के शीर्षक **अल अन्कबूत** से सम्बन्ध है, यह वर्णन किया गया है कि जो लोग अल्लाह के सिवा किसी और को उपास्य ठहराते हैं उनका उदाहरण एक मकड़ी के सदृश है जो एक बहुत पेचदार जाला बुनती है । इसी प्रकार उन लोगों के तर्क भी अत्यन्त पेचदार परन्तु वास्तव में मूर्खता पूर्ण हैं । उनमें फंसने वालों का उदाहरण भी उन मूर्ख मक्खियों की भाँति है जो मकड़ी के जाले में फँस कर उसका शिकार हो जाती हैं और उन्हें ज्ञान नहीं कि मकड़ी के जाले से कमज़ोर और कोई फँदा नहीं ।

मकड़ी के जाले में यह बात पायी जाती है कि यद्यपि उसकी लार से उत्पन्न होने वाले धागे में इतनी शक्ति होती है कि इस मोटाई और वज़न के लोहे के धागे में भी वैसी शक्ति नहीं होती परन्तु इस पर भी वह एक कमज़ोर फंदा प्रमाणित होता है । अत: शत्रुओं के लिए एक चुनौती है कि वे मज़बूत फंदे भी बना कर देख लें । उनका अन्त भी मकड़ी के बनाए हुए फंदे के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा जो देखने में मज़बूत है परन्तु वास्तव में अत्यन्त कमज़ोर सिद्ध होता है ।

इस सूर: की अन्तिम आयत में अल्लाह तआला उन लोगों को जो उसे निष्ठापूर्वक ढूँढ़ते हैं यह शुभ-समाचार देता है कि उनका कोई भी धर्म हो, यदि अल्लाह चाहे तो उन्हें अन्तत: सन्मार्ग तक पहुँचा देगा । और संसार के प्रत्येक धर्म में वह सच्चाइयाँ मौजूद हैं कि उन पर ध्यान देने के फलस्वरूप यदि अल्लाह चाहे तो अन्तत: इस्लाम की सच्चाई और सन्मार्ग की ओर उन धर्मों के अनुयायियों का मार्गदर्शन संभव हो सकता है।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّ سَبْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓمّٓ ۝٢

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ ।2।

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝٣

क्या लोग यह धारणा कर बैठे हैं कि यह कहने पर कि हम ईमान ले आए, वे छोड़ दिए जाएँगे और परीक्षा में नहीं डाले जाएँगे ? ।3।

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ۝٤

और हम निःसन्देह उन लोगों को जो उनसे पहले थे परीक्षा में डाल चुके हैं । अतः वे लोग जो सच्चे हैं अल्लाह उनकी अवश्य पहचान कर लेगा और झूठों को भी अवश्य पहचान जाएगा ।4।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٥

क्या वे लोग जो बुरे कर्म करते हैं, धारणा कर बैठे हैं कि वे (दण्ड से भाग कर) हम से आगे निकल जाएँगे ? बहुत बुरा है जो वे निर्णय करते हैं ।5।

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦

जो भी अल्लाह से मिलना चाहता है तो (उसके लिए) अल्लाह का निर्धारित समय अवश्य आने वाला है । और वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।6।

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٧

और जो जिहाद करे तो वह अपने ही लिए जिहाद करता है । निःसन्देह अल्लाह समस्त जगत से बेपरवाह है ।7।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए हम अवश्य उनकी बुराइयाँ

لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٨

उनसे दूर कर देंगे । और अवश्य उन्हें उनके उत्तम कर्मों के अनुसार प्रतिफल देंगे जो वे किया करते थे ।8।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِىْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٩

और हमने मनुष्य को पक्की नसीहत की कि अपने माता-पिता से सद्-व्यवहार करे । और (कहा कि) यदि वे तुझ से झगड़ें कि तू मेरा साझीदार ठहराए, जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो फिर उन दोनों की आज्ञा का पालन न कर । मेरी ही ओर तुम्हारा लौट कर आना है । फिर मैं तुम्हें उन बातों से सूचित करूँगा जो तुम करते थे ।9।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِى الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠

और वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए हम उन्हें अवश्य पुण्यवान व्यक्तियों में सम्मिलित करेंगे ।10।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِىَ فِى اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِىْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ۝١١

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान ले आए । परन्तु जब उन्हें अल्लाह के मार्ग में दु:ख दिया जाता है तो वे लोगों की परीक्षा को अल्लाह के अज़ाब की भाँति समझ लेते हैं । और यदि तेरे रब्ब की ओर से कोई सहायता आई तो वे अवश्य कहेंगे कि हम तो नि:सन्देह तुम लोगों के साथ थे । क्या अल्लाह सबसे बढ़ कर उसे नहीं जानता जो समस्त लोकों (में बसने वालों) के दिलों में है ।11।

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ۝١٢

और अल्लाह नि:सन्देह मोमिनों को भी पहचान लेगा और मुनाफ़िक़ों को भी पहचान लेगा ।12।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا

और इनकार करने वालों ने ईमान लाने वालों से कहा कि हमारे पथ का

سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾

अनुसरण करो और हम तुम्हारे दोषों को (स्वयं) उठा लेंगे । हालाँकि वे उनके दोषों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं होंगे । नि:सन्देह वे झूठे हैं।13।

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ؗ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۴﴾ ع

और वे अवश्य अपने बोझ उठाएँगे और अपने बोझों के अतिरिक्त कुछ और बोझ भी (उठाएँगे) । और क़यामत के दिन वे अवश्य उसके सम्बन्ध में पूछे जाएँगे जो वे झूठ घड़ा करते थे ।14।

(रुकू $\frac{1}{13}$)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۵﴾

और नि:सन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा था । अत: वह उनमें नौ सौ पचास वर्ष रहा । फिर उनको तूफ़ान ने आ पकड़ा और वे अत्याचार करने वाले थे ।15।*

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶﴾

अत: हमने उसको और (उसके साथ) नौका में सवार होने वालों को मुक्ति प्रदान की और उस (नौका) को समस्त लोकों के लिए एक चिह्न बना दिया ।16।

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۷﴾

और इब्राहीम (को भी भेजा था) । जब उसने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह की उपासना करो और उसी का तक़वा धारण करो । यह तुम्हारे लिए उत्तम है । (बेहतर होता) यदि तुम ज्ञान रखते ।17।

اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ

नि:सन्देह तुम अल्लाह को छोड़ कर केवल मूर्तियों की उपासना करते हो और झूठ गढ़ते हो । नि:सन्देह वे लोग

* हज़रत नूह अलै. की आयु जो 950 वर्ष वर्णन की गई है इससे अभिप्राय भौतिक आयु नहीं बल्कि आपकी शरीयत (धर्म-विधान) की आयु है ।

دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١٨

जिनकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो तुम्हारे लिए किसी जीविका का सामर्थ्य नहीं रखते । अत: अल्लाह के निकट से ही जीविका चाहो और उसकी उपासना करो और उसका कृतज्ञ बनो । उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।18।

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٩

और यदि तुम झुठलाओ तो तुम से पहले भी कई जातियाँ झुठला चुकी हैं । और रसूल पर खुला-खुला संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त कुछ ज़िम्मेदारी नहीं ।19।

اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٢٠

क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह किस प्रकार उत्पत्ति का आरम्भ करता है और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है? नि:सन्देह यह अल्लाह के लिए सरल है ।20।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢١

तू कह दे कि धरती में भ्रमण करो फिर ध्यान दो कि कैसे उसने सृष्टि का आरम्भ किया । फिर अल्लाह उसे परकालीन उत्थान के रूप में उठाएगा । नि:सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।21।

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ۝٢٢

वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिस पर चाहे कृपा करता है । और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।22।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٢٣ ع

और न तुम धरती में (अल्लाह को) विवश करने वाले हो और न आकाश में। और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई मित्र है न कोई सहायक ।23।

(रुकू $\frac{2}{14}$)

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ لِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٤﴾

और वे लोग जिन्होंने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इनकार किया, यही लोग हैं जो मेरी दया से निराश हो चुके हैं । और यही लोग हैं जिनके लिए दु:खदायक अज़ाब (निश्चित) है ।24।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٥﴾

अत: उसकी जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उन्होंने कहा, इसे वध कर दो अथवा जला दो । फिर अल्लाह ने उसे आग से मुक्ति प्रदान की । नि:सन्देह इसमें उन लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो ईमान लाते हैं ।25।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

और उसने कहा, तुम तो सांसारिक जीवन में परस्पर प्रेम के कारण अल्लाह को छोड़ कर केवल मूर्तियों को पकड़े बैठे हो । फिर क़यामत के दिन तुम में से कुछ, कुछ का इनकार करेंगे और कुछ, कुछ पर ला'नत डालेंगे । और तुम्हारा ठिकाना आग होगा और तुम्हारे कोई सहायक नहीं होंगे ।26।

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾

अत: लूत उस (अर्थात इब्राहीम) पर ईमान ले आया और उसने कहा कि नि:सन्देह मैं अपने रब्ब की ओर हिजरत करके जाने वाला हूँ । नि:सन्देह वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।27।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي

और हमने उसे (अर्थात इब्राहीम को) इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए । और उसकी संतान में भी नुबुव्वत और पुस्तक (के पुरस्कार) रख दिए । और

الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٨﴾

उसे हमने उसका प्रतिफल संसार में भी दिया और परलोक में तो नि:सन्देह वह सदाचारियों में गिना जाएगा ।28।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾

और लूत को भी (भेजा) जब उसने अपनी जाति से कहा कि तुम नि:सन्देह निर्लज्जता की ओर (दौड़े) आते हो । समस्त जगत में कभी कोई इसमें तुम से आगे नहीं बढ़ सका ।29।

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٠﴾

क्या तुम (कामवासना के साथ) पुरुषों की ओर आते हो और रास्ते में लूटमार करते हो । और अपनी बैठकों में अत्यन्त अप्रिय बातें करते हो । अत: उसकी जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उन्होंने कहा, यदि तू सच्चों में से है तो हमारे पास अल्लाह का अज़ाब ले आ ।30।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣١﴾ ع

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! इन उपद्रव करने वाले लोगों के विरुद्ध मेरी सहायता कर ।31। (रुकू $\frac{3}{15}$)

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

और जब हमारे दूत इब्राहीम के पास शुभ-समाचार लेकर आए, उन्होंने यह भी कहा कि नि:सन्देह हम (लूत की) इस बस्ती के रहने वालों को तबाह करने वाले हैं । नि:सन्देह इसके निवासी अत्याचारी लोग हैं ।32।*

قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۫ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫

उसने कहा कि उसमें तो लूत भी है । उन्होंने (उत्तर में) कहा कि हम खूब जानते हैं कि उसमें कौन है । हम

---

* हज़रत लूत अलै. की जाति को तबाह करने के लिए जो फ़रिश्ते आए थे वे उससे पहले हज़रत इब्राहीम अलै. के समक्ष प्रकट हुए थे और हज़रत इब्राहीम अलै. चूँकि कोमल-हृदयी थे इस कारण उन्होंने उस जाति को क्षमा करने के लिए अल्लाह तआला से बहुत आग्रह किया ।

كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٣٣

नि:सन्देह उसे और उसके समस्त घर वालों को बचा लेंगे सिवाए उसकी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है ।33।

وَلَمَّآ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۗ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٣٤

और जब हमारे दूत लूत के पास आए तो वह उनके कारण अप्रसन्न हुआ और मन ही मन में उनसे बहुत घुटन अनुभव की तो उन्होंने कहा कि डर नहीं और कोई शोक न कर । हम नि:सन्देह तुझे और तेरे सब घर वालों को बचा लेंगे, सिवाए तेरी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है ।34।

اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٣٥

नि:सन्देह हम इस बस्ती के रहने वालों पर आकाश से एक अज़ाब उतारने वाले हैं क्योंकि वे दुराचार करते हैं ।35।

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةً ۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٣٦

और नि:सन्देह हमने उसमें उन लोगों के लिए केवल एक उज्ज्वल चिह्न शेष छोड़ा जो बुद्धि से काम लेते हैं ।36।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٣٧

और (हमने) मद्यन (जाति) की ओर उनके भाई शुऐब को (भेजा) । तो उसने कहा कि हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो और अन्तिम दिन की आशा रखो और धरती में उपद्रवी बन कर अशांति न फैलाओ ।37।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝٣٨

अत: (जब) उन्होंने उसको झुठला दिया तो उन्हें एक भूकम्प ने आ पकड़ा । अत: वे ऐसे हो गये कि मानों अपने घरों में घुटनों के बल गिरे हुए थे ।38।

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۗ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ

और आद और समूद (जाति) को भी (हमने भूकम्पों से तबाह कर दिया) । और तुम पर यह बात उनके निवास स्थलों (के खण्डहरों) से ख़ूब खुल चुकी

أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٩﴾

है। और शैतान ने उन्हें उनके कर्मों को अच्छा बना कर दिखाया और उसने उन्हें (सीधे) मार्ग से रोक दिया। हालाँकि वे अच्छा भला देख रहे थे।39।

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ﴿٤٠﴾

और क़ारून और फिरऔन और हामान को भी (हमने उनकी पथभ्रष्टता का दण्ड दिया)। और मूसा उनके पास निःसन्देह खुले-खुले चिह्न ला चुका था और फिर भी उन्होंने धरती में अहंकार किया और वे (हमारी पकड़ से) आगे निकल जाने वाले बन न सके।40।

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤١﴾

अतः हमने प्रत्येक को उसके पाप के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें ऐसा गिरोह भी था जिन पर हमने कंकर बरसाने वाला एक अंधड़ भेजा। और उनमें ऐसा गिरोह भी था जिसको एक भयानक गरज ने पकड़ लिया। और उनमें से ऐसा गिरोह भी था जिसे हमने धरती में धंसा दिया। और उन में से ऐसा भी एक गिरोह था जिसे हमने डुबो दिया। और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वे स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करने वाले थे।41।*

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ

उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मित्र

✲ नबियों की विरोधी जातियों के अन्त का विवरण इस आयत में मिलता है कि किस-किस साधन से वे नष्ट की गईं। कुछ पर बहुत कंकर बरसाने वाली आंधी चली जिनसे वे नष्ट हो गईं। कुछ को भयंकर गरज ने आ पकड़ा। कुछ भूकम्पों के परिणामस्वरूप धरती में गाड़ दी गईं और कुछ डुबो दी गईं। साधारणतः यही चार साधन हैं जो नबियों के विरोधियों को तबाह करने के लिए प्रयोग होते रहे हैं।

كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۖ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ؕ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾

बनाया, मकड़ी की भाँति है । उसने भी एक घर बनाया और समस्त घरों में नि:सन्देह मकड़ी ही का घर सर्वाधिक कमज़ोर होता है । काश वे यह जानते ।42।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٣﴾

नि:सन्देह अल्लाह प्रत्येक उस वस्तु को जानता है जिसे वे उसके सिवा पुकारते हैं । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।43।

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

और ये उदाहरण हैं जो हम लोगों के समक्ष वर्णन करते हैं परन्तु बुद्धिमानों के अतिरिक्त इनको कोई नहीं समझता ।44।

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٥﴾ ع

अल्लाह ने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है । नि:सन्देह इसमें मोमिनों के लिए एक बहुत बड़ा चिह्न है ।45। (रुकू $\frac{4}{16}$)

اُتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ۝٤٦

पुस्तक में से जो तेरी ओर वह्इ किया जाता है, तू (उसे) पढ़ कर सुना और नमाज़ को क़ायम कर । नि:सन्देह नमाज़ निर्लज्जता और प्रत्येक अप्रिय बात से रोकती है । और अल्लाह का स्मरण नि:सन्देह समस्त (स्मरणों) से श्रेष्ठ है । और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो ।46।

وَلَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۖۗ اِلَّا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَاُنْزِلَ اِلَیْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝٤٧

और अहले किताब से बहस न करो परन्तु उस (दलील) के साथ जो उत्तम हो । सिवाय उन के जिन्होंने अत्याचार किया और (उनसे) कहो कि हम उस पर ईमान ले आए हैं जो हमारी ओर उतारा गया और उस पर (भी) जो तुम्हारी ओर उतारा गया । और हमारा उपास्य और तुम्हारा उपास्य एक ही है और हम उसी के आज्ञाकारी हैं ।47।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰۤؤُلَآءِ مَنْ یُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝٤٨

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर पुस्तक उतारी । अत: वे लोग जिनको हमने पुस्तक दी है, वे उस पर ईमान लाते हैं और इन (अहले किताब) में से भी (ऐसा गिरोह) है जो उस पर ईमान लाता है । और हमारी आयतों का इनकार काफ़िरों के सिवा कोई नहीं करता ।48।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِیَمِیْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝٤٩

और तू इससे पहले कोई पुस्तक नहीं पढ़ता था और न तू अपने दाहिने हाथ से उसे लिखता था । यदि ऐसा होता तो झुठलाने वाले (तेरे बारे में) अवश्य शंका में पड़ जाते ।49।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝٥٠

बल्कि ये वे खुली-खुली आयतें हैं जो उनके सीनों में (दर्ज) हैं जिनको ज्ञान दिया गया । और हमारी आयतों का इनकार अत्याचारियों के अतिरिक्त और कोई नहीं करता ।50।

وَقَالُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٥١

और वे कहते हैं, क्यों न उस पर उसके रब्ब की ओर से चिह्न उतारे गए । तू कह दे कि चिह्न तो केवल अल्लाह के निकट हैं । और मैं तो केवल एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ ।51।

اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢ ع

क्या (यही) उनके लिए पर्याप्त नहीं कि हमने तुझ पर एक पुस्तक उतारी है जो उन के समक्ष पढ़ी जाती है । और नि:सन्देह इस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए एक बड़ी कृपा भी है और बहुत बड़ा उपदेश भी ।52। (रुकू $\frac{5}{1}$)

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٥٣

तू कह दे कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह साक्षी के रूप में पर्याप्त है । वह जानता है जो आसमानों और धरती में है । और वे लोग जो असत्य पर ईमान ले आए और अल्लाह का इनकार कर दिया यही वे लोग हैं जो हानि उठाने वाले हैं ।53।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَاۤ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٥٤

और वे तुझ से शीघ्र अज़ाब लाने की माँग करते हैं । और यदि निश्चित अवधि तय न होती तो अवश्य उनके पास अज़ाब आ जाता । और वह उनके पास नि:सन्देह (इस प्रकार) अचानक आएगा कि वे (उसको) समझ नहीं सकेंगे ।54।

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝٥٥ ۙ

वे तुझ से अज़ाब को मांगने में जल्दी करते हैं । जबकि नरक काफ़िरों को अवश्य घेर लेने वाला है ।55।

يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٥٦

जिस दिन अज़ाब ऊपर से भी और उनके पाँव के नीचे से भी उनको ढाँप लेगा । और (अल्लाह) कहेगा कि जो कुछ तुम किया करते थे उसे चखो ।56।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ۝٥٧

हे मेरे भक्तो जो ईमान लाए हो ! मेरी धरती निश्चित रूप से विस्तृत है । अतः केवल मेरी ही उपासना करो ।57।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝٥٨

प्रत्येक जान मृत्यु का स्वाद चखने वाली है । फिर हमारी ही ओर तुम लौटाए जाओगे ।58।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝٥٩

और वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए हम उनको स्वर्ग में अवश्य ऐसे अटारियों में स्थान प्रदान करेंगे जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । वे सदा उनमें रहेंगे । कर्म करने वालों का क्या ही उत्तम प्रतिफल है ।59।

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٦٠

(ये वे लोग हैं) जिन्होंने धैर्य किया और अपने रब्ब पर भरोसा करते रहे ।60।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦١

और कितने ही धरती पर चलने वाले जीवधारी हैं कि वे अपनी जीविका उठाए नहीं फिरते । अल्लाह ही है जो उन्हें और तुम्हें भी जीविका प्रदान करता है । और वह ख़ूब सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।61।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٦٢

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमानों और धरती को उत्पन्न किया और सूर्य एवं चन्द्रमा को सेवा में लगा दिया ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने। तो फिर (वे) किस ओर उल्टे फिराए जाते हैं ? ।62।

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

अल्लाह ही है जो अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहता है जीविका को बढ़ा देता है और उसके लिए (जीविका) तंग भी कर देता है । नि:सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु को ख़ूब जानने वाला है ।63।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٤﴾

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमान से पानी उतारा ? फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर दिया ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने । तू कह, समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए हैं । परन्तु अधिकतर उनमें से बुद्धि नहीं रखते ।64।

(रुकू $\frac{6}{2}$)

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۗ وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٥﴾

और यह सांसारिक जीवन लापरवाही और खेल-तमाशे के अतिरिक्त कुछ नहीं । और नि:सन्देह परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है । काश कि वे जानते ।65।

فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٦﴾

अत: जब वे नौका में सवार होते हैं तो वे अल्लाह के लिए अपनी श्रद्धा को विशिष्ट करते हुए उसी को पुकारते हैं । फिर जब वह उन्हें स्थल भाग की ओर बचा कर ले जाता है तो सहसा वे शिर्क करने लगते हैं ।66।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَ لِيَتَمَتَّعُوْا ۗ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

ताकि जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है वे उसकी कृतघ्नता करें और ताकि वे कुछ अस्थायी लाभ उठा लें । फिर वे शीघ्र ही (इसका परिणाम) जान लेंगे ।67।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने एक शांतिपूर्ण हरम (अर्थात मक्का क्षेत्र)

وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٨﴾

बनाया है। जबकि उनके इर्द-गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं। तो फिर क्या वे झूठ पर ईमान लाएँगे और अल्लाह की नेमत का इनकार कर देंगे? ।68।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ۚ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٩﴾

और उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर एक बड़ा झूठ गढ़े अथवा सत्य को झुठला दे जब वह उसके पास आए। क्या काफ़िरों के लिए नरक में ठिकाना नहीं? ।69।

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٠﴾ ع

और वे लोग जो हमारे बारे में प्रयत्न करते हैं हम अवश्य उन्हें अपनी राहों की ओर मार्गदर्शित करेंगे। और नि:सन्देह अल्लाह उपकार करने वालों के साथ है ।70। (रुकू $\frac{7}{3}$)

30– सूर: अर–रूम

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 61 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरंभ भी खण्डाक्षर **अलिफ़–लाम–मीम** से हुआ है । **अलिफ़–लाम–मीम** खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली सूरतों में यह उल्लेख है कि अल्लाह तआला सबसे अधिक जानता है कि क्या हुआ और क्या होने वाला है ।

इससे पूर्ववर्ती सूर: के अंत पर यह दावा था कि अल्लाह तआला नि:सन्देह उपकार करने वालों के साथ है । और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे बड़े उपकार करने वाले थे । अत: आपको और भी विजयों का शुभ-समाचार दिया गया जिनका वर्णन इस सूर: में अनेक स्थान पर मिलता है । सबसे पहले भविष्यवाणी के रंग में यह वर्णन किया गया कि ईरान के मुश्रिकों को रोम की ईसाई सरकार के विरुद्ध (जो एकेश्वरवादी होने का दावा तो करते थे) थोड़े से क्षेत्र पर विजय प्राप्त हुई तो उससे मुश्रिकों ने यह शकुन निकाला कि वे अल्लाह तआला के साथ स्वयं को जोड़ने वालों पर अंतिम विजय भी प्राप्त कर लेंगे । इस सूर: में यह घोषणा की गई है कि ऐसा कदापि नहीं होगा । रोमवासी निश्चित रूप से अपने खोए हुए भू-भाग को ईरान के मुश्रिकों से दोबारा छुड़वा लेंगे और इस पर मुसलमान यह आशा रखते हुए खुशियाँ मनाएँगे कि अब अल्लाह ने चाहा तो मुसलमानों को भी मुश्रिकों पर भारी विजय प्राप्त होगी ।

यह भविष्यवाणी उन दिनों की है जब मुसलमान बहुत कमज़ोर थे और कोई उनकी विजय का दावा नहीं कर सकता था । इस प्रकरण में यह भविष्यवाणी भी इस विजय के वादे में निहित थी कि मुसलमानों को मुश्रिकों की वैभवशाली साम्राज्य अर्थात ईरान की सत्ता पर भी विजय प्राप्ति होगी । अत: बिल्कुल ऐसा ही हुआ । इतने स्पष्ट प्रमाण को देखते हुए भी लोग अल्लाह तआला का इनकार करते चले जाते हैं । अत: उनको एक बार फिर इस वास्तविकता की ओर ध्यान दिलाया गया कि क्या वे धरती और आकाश अथवा स्वयं अपने आप पर ध्यान नहीं देते ताकि उनको अल्लाह तआला की सत्ता के प्रमाण स्वयं अपने अन्दर और धरती व आकाश के क्षितिजों में दिखाई देने लगें । इसी प्रकार उनका ध्यान पहली जातियों के अवशेषों की ओर आकर्षित करवाया गया कि यदि ये काफ़िर अपनी अवस्था से अनजान हैं तो फिर पहली जातियों के परिणाम को देख लें । सांसारिक दृष्टि से वे कितनी बलवान जातियाँ थीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में उपस्थित जातियों से कहीं अधिक उन्होंने धरती को आबाद किया परन्तु जब उनके पास रसूल आए और उन्होंने इनकार कर दिया तो उनकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिला दी गई ।

इसके पश्चात् विभिन्न उदाहरणों के द्वारा यह विषय लागातार जारी है कि जिधर भी तुम नज़र दौड़ाओगे उधर तुम्हें जीवन के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात जीवन का विषय व्याप्त दिखाई देगा। परन्तु खेद है कि मनुष्य इस पर विचार नहीं करता कि इस सारी व्यवस्था का अन्तिम लक्ष्य यह तो नहीं हो सकता कि मनुष्य को बार-बार इसी संसार के लिए जीवित किया जाए। अन्तिम जीवन वही होगा जिसमें उसे हिसाब देने के लिए अल्लाह के समक्ष उपस्थित किया जाएगा।

अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक बार फिर इस बात की नसीहत की गई है कि तू धैर्य से काम ले। अल्लाह का वादा निस्सन्देह सत्य है और वे लोग जो विश्वास नहीं करते, तुझे अपनी आस्था से उखाड़ न सकें। यहाँ धैर्य से काम लेने का अर्थ यह है कि नेकियों से चिमटे रहो और किसी क़ीमत पर भी सत्य को न छोड़ो।

☆☆☆

سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّ سِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓمّٓ ۝٢

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ ।2।

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۝٣

रोम वासी पराजित किए गए ।3।

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۝٤

निकट वर्ती धरती में और वे पराजित होने के पश्चात फिर अवश्य विजयी होंगे ।4।

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝٥

तीन से नौ वर्ष की अवधि तक । आदेश अल्लाह ही का (चलता) है, पहले भी और बाद में भी । और उस दिन मोमिन (भी अपनी विजयों से) बहुत ख़ुश होंगे ।5।

بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦

(जो) अल्लाह की सहायता से (होंगी) वह जिसकी चाहता है सहायता करता है और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।6।

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٧

(यह) अल्लाह का वादा (है और) अल्लाह अपने वादे नहीं तोड़ता । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।7।*

---

* आयात 3 से 7 : सूर: अर-रूम की इन आरम्भिक आयतों में रोमन साम्राज्य का अग्नि उपासक ईरानी साम्राज्य के साथ युद्ध में निकट की धरती में पराजित होने का उल्लेख है । परन्तु साथ ही यह भविष्यवाणी की गई है कि दोबारा उन को ईरान पर विजयी किया जाएगा और ऐसा नौ वर्षों के अन्दर-अन्दर होगा । यह भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई की एक बड़ी दलील है कि अवश्य सर्वज्ञ अल्लाह ने ही आपको यह सूचना दी थी ।

फिर इन्हीं आयतों में अन्ततोगत्वा मुसलमानों की विजय प्राप्ति की भविष्यवाणी भी है जो इसी प्रकार बड़ी शान से पूरी हुई । यह विजय भी कुछ वर्षों के अन्दर बद्र-युद्ध के समय प्राप्त हुई ।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٨

वे सांसारिक जीवन के ज़ाहिरी (रूप) को जानते हैं और परलोक के बारे में वे असावधान हैं ।8।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝٩

क्या उन्होंने अपने दिलों में विचार नहीं किया (कि) अल्लाह ने आसमानों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सत्य के साथ और एक निश्चित अवधि के लिए पैदा किया है । और नि:सन्देह लोगों में से अधिकतर अपने रब्ब की भेंट से अवश्य इनकार करने वाले हैं ।9।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۗ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝١٠

और क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया ताकि वे विचार कर सकते कि उन लोगों का अंत कैसा हुआ जो उनसे पहले थे । वे उनसे अधिक शक्तिशाली थे और उन्होंने धरती को फाड़ा और उसे उससे अधिक आबाद किया था जैसा इन्होंने उसे आबाद किया है । और उनके पास भी उनके रसूल खुल-खुले चिह्न लेकर आए थे । अत: अल्लाह ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करता बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार करते थे ।10।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١ ع

फिर वे लोग जिन्होंने बुराई की, उनका बहुत बुरा अन्त हुआ क्योंकि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते थे और उनसे उपहास करते थे ।11।

(रुकू $\frac{1}{4}$)

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١٢

अल्लाह सृष्टि का आरंभ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है । फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।12।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٣﴾

और जिस दिन क़यामत प्रकट होगी अपराधी निराश हो जाएँगे ।13।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٤﴾

और उनके (कल्पित) साझीदारों (अर्थात उपास्यों) में से उनके लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले नहीं होंगे और वे अपने (बनाए हुए) साझीदारों का (स्वयं ही) इनकार करने वाले होंगे ।14।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٥﴾

और जिस दिन क़यामत प्रकट होगी उस दिन (लोग) अलग-अलग बिखर जाएँगे ।15।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٦﴾

अत: वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए, एक बाग़ में उन्हें प्रसन्नता के साधन उपलब्ध किए जाएँगे ।16।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٧﴾

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को और परलोक की भेंट को झुठलाया । अत: यही वे लोग हैं जो अज़ाब में उपस्थित किए जाएँगे ।17।

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٨﴾

अत: अल्लाह (प्रत्येक अवस्था में) पवित्र है । उस समय भी जब तुम सायँकाल में प्रविष्ट होते हो और उस समय भी जब तुम प्रात:काल (में प्रवेश) करते हो ।18।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٩﴾

और आसमानों में भी और धरती में भी, और रात को भी और उस समय भी जब तुम दोपहर गुज़ारते हो, समस्त स्तुति उसी के लिए है ।19।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ط

वह निर्जीव से सजीव को निकालता है और सजीव से निर्जीव को निकालता है और धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात

وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٠﴾ ع

जीवित कर देता है और इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे ।20। (रुकू $\frac{2}{5}$)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

और उसके चिह्नों में से (एक चिह्न यह भी) है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया । फिर (मानो) सहसा तुम मनुष्य बन कर फैलते चले गए ।21।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٢﴾

और उसके चिह्नों में से (यह चिह्न भी) है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही वर्ग में से जोड़े बनाए ताकि तुम सन्तुष्टि (प्राप्त करने) के लिए उनकी ओर जाओ और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया पैदा कर दिया । नि:सन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं बहुत से चिह्न हैं ।22।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٣﴾

और उसके चिह्नों में से आसमानों और धरती की उत्पत्ति है । और तुम्हारी भाषाओं और रंगों के भेद भी । नि:सन्देह इसमें ज्ञानियों के लिए बहुत से चिह्न हैं ।23।*

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٤﴾

और उसके चिह्नों में से तुम्हारा रात को और दिन को सोना और तुम्हारा उसकी कृपा का तलाश करना भी है । नि:सन्देह इसमें उन लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो (बात) सुनते हैं ।24।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ

और उसके चिह्नों में से है कि वह तुम्हें भय और आशा की अवस्था में बिजली दिखाता है और बादलों से

---

* इस आयत में यह भी संकेत है कि आरम्भ में एक ही भाषा थी जो ईश्वरीय भाषा थी । फिर मानव जाति के विभिन्न क्षेत्रों में फैल जाने के फलस्वरूप क्षेत्रीय परिवर्तनों के साथ-साथ भाषा भी परिवर्तित होती रही । इसी प्रकार आरम्भ में सब मनुष्यों का रंग भी एक ही था फिर वह भी उष्ण, शीत और शीतोष्ण क्षेत्रों के अनुसार परिवर्तित होता रहा ।

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۵﴾

पानी उतारता है । फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर देता है । निःसन्देह इसमें बुद्धि रखने वालों के लिए बहुत से चिह्न हैं ।25।

وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖۗ اِذَاۤ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۶﴾

और उसके चिह्नों में से (यह भी) है कि आसमान और धरती उसके आदेश के साथ क़ायम हैं । फिर जब वह तुम्हें धरती से एक आवाज़ देगा तो सहसा तुम निकल खड़े होगे ।26।

وَ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۷﴾

और उसी का है जो आसमानों और धरती में है । सब उसी के आज्ञाकारी हैं ।27।

وَهُوَ الَّذِیْ یَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَیْهِ ؕ وَ لَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰی فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۸﴾ ع

और वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है और उस के लिए यह बहुत सरल है। और आसमानों और धरती में उसका उदाहरण सर्वोपरि है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।28। (रुकू $\frac{3}{6}$)

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِیْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِیْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِیْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۹﴾

वह तुम्हारे लिए तुम्हारा अपना ही उदाहरण देता है । क्या उन लोगों में से जो तुम्हारे अधीन हैं ऐसे भी हैं जो उस जीविका में साझीदार बनें हों जो हमने तुम्हें प्रदान की है । फिर तुम उसमें एक समान हो जाओ (और) उनसे उसी प्रकार डरो जैसे तुम अपनो से डरते हो ? इसी प्रकार हम उन लोगों के लिए आयतें ख़ूब खोल-खोल कर वर्णन करते हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं ।29।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٣٠

वास्तविकता यह है कि वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया उन्होंने बिना किसी ज्ञान के अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया । अत: कौन उसे हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने पथभ्रष्ट ठहरा दिया । और उन (जैसों) के कोई सहायक नहीं होंगे ।30।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣١

अत: (अल्लाह की ओर) सदा झुकाव रखते हुए अपना ध्यान धर्म पर केन्द्रित रख । यह अल्लाह की प्रकृति है जिस के अनुरूप उसने मनुष्यों की सृष्टि की। अल्लाह की सृष्टि में कोई परिवर्तन नहीं । यह क़ायम रखने और क़ायम रहने वाला धर्म है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।31।*

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝٣٢

सदा उसी की ओर झुकते हुए (चलो) और उसका तक़वा धारण करो और नमाज़ को क़ायम करो और मुश्रिकों में से न बनो ।32।

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝٣٣

(अर्थात्) उनमें से (न बनो) जिन्होंने अपने धर्म को विभाजित कर दिया और वे सम्प्रदायों (में बट चुके) थे । प्रत्येक सम्प्रदाय (वाले) जो उनके पास था उस पर इतरा रहे थे ।33।

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ

और जब लोगों को कोई कष्ट पहुँचे तो वे अपने रब्ब को उसके समक्ष विनम्रतापूर्वक झुकते हुए पुकारते हैं ।

✼ अर्थात् अल्लाह तआला ने भक्तों को प्रकृति के अनुरूप पैदा किया है और प्रत्येक मनुष्य इसी एक धर्म पर पैदा होता है । अर्थात् पवित्र, स्वच्छ प्रकृति लेकर । बाद में बड़े होकर विभिन्न प्रभावों के परिणामस्वरूप वह भटक जाता है । इस आयत के अनुसार चाहे हिन्दू, ईसाई, यहूदी अथवा मुश्रिक का बच्चा हो जन्म लेते समय निष्पाप ही होता है ।

مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٤﴾

फिर जब वह उन्हें अपनी ओर से कृपा (का स्वाद) चखाता है तो सहसा उनमें से एक गिरोह (वाले) अपने रब्ब का साझीदार ठहराने लगते हैं ।34।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٥﴾

ताकि जो हमने उन्हें प्रदान किया है वे उसकी कृतघ्नता करें । अत: अस्थायी लाभ उठा लो, शीघ्र तुम (इसका परिणाम) जान लोगे ।35।

اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٦﴾

क्या हमने उन पर कोई भारी दलील उतारी है फिर वह उनसे उसके बारे में वार्तालाप करती है जो वे उस (अल्लाह) का साझीदार ठहराते हैं? ।36।

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٧﴾

और जब हम लोगों को कोई कृपा (का स्वाद) चखाते हैं तो उस पर वे इतराने लगते हैं । और यदि उन्हें कोई बुराई पहुँच जाए जो (स्वयं) उनके हाथों ने आगे भेजी हो तो वे सहसा निराश हो जाते हैं ।37।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٨﴾

क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है जीविका को बढ़ा देता है और तंग भी करता है । नि:सन्देह इसमें ईमान लाने वाले लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं ।38।

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٩﴾

अत: अपने निकट सम्बन्धियों को और निर्धन को और यात्री को उसका अधिकार दो । यह बात उन लोगों के लिए अच्छी है जो अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हैं । और यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं ।39।

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَاۡ فِىْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٤٠﴾

और जो तुम ब्याज के रूप में देते हो ताकि लोगों के धन में मिल कर वह बढ़ने लगे तो अल्लाह के निकट वह नहीं बढ़ता। और अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए तुम जो कुछ ज़कात देते हो तो यही वे लोग हैं जो (उसे) बढ़ाने वाले हैं ।40।

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَىْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾ ع

अल्लाह वह है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें जीविका प्रदान की । फिर वह तुम्हें मारेगा और वही तुम्हें फिर जीवित करेगा । क्या तुम्हारे उपास्यों में से भी कोई है जो इन बातों में से कुछ करता हो ? वह बहुत पवित्र है और उससे बहुत ऊँचा है जो वे शिर्क करते हैं ।41।

(रुकू $\frac{4}{7}$)

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِى النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِىْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٢﴾

लोगों ने जो अपने हाथों बुराइयाँ कमाईं उनके परिणामस्वरूप स्थल भाग में भी और जल भाग में भी उपद्रव छा गया ताकि वह उन्हें उनके कुछ कर्मों का प्रतिफल चखाए । ताकि संभवत: वे लौटें ।42।

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٣﴾

तू कह दे कि धरती में ख़ूब भ्रमण करो और ध्यान दो कि पहले लोगों का कैसा अंत हुआ । उनमें से अधिकतर मुश्रिक थे ।43।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٤﴾

अत: तू अपना ध्यान मज़बूत और क़ायम रहने वाले धर्म की ओर केन्द्रित रख । इससे पूर्व कि वह दिन आ जाए जिसका किसी रूप में टलना अल्लाह की ओर से संभव न होगा । उस दिन वे तितर-बितर हो जाएँगे ।44।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٥﴾

जो इनकार करे उसका इनकार उसी पर पड़ेगा । और जो नेक कर्म करे तो वे (लोग) अपनी ही भलाई की तैयारी करते हैं ।45।

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٦﴾

ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक कर्म किए अपनी कृपा से प्रतिफल प्रदान करे । नि:सन्देह वह काफ़िरों को पसन्द नहीं करता ।46।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٧﴾

और उसके चिह्नों में से (यह भी) है कि वह शुभ-समाचार देती हुई हवाओं को भेजता है और (ऐसा वह इस लिए करता है) ताकि वह तुम्हें अपनी कृपा में से कुछ चखाए । और नौकाएँ उसके आदेश से चलने लगें और ताकि तुम उसकी कृपा की खोज करो । और ऐसा हो कि संभवत: तुम कृतज्ञ बन जाओ ।47।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٨﴾

और नि:सन्देह हमने तुझ से पहले कई रसूलों को उनकी जातियों की ओर भेजा। अत: वे उनके पास खुले-खुले चिह्न ले कर आए तो हमने उनसे जिन्होंने अपराध किया प्रतिशोध लिया । और हम पर मोमिनों की सहायता करना अनिवार्य ठहरता था ।48।

اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादल को उठाती हैं । फिर वह उसे आसमान में जैसे चाहे फैला देता है और फिर वह उसे विभिन्न टुकड़ों में परिवर्तित कर देता है । फिर तू देखता है कि उसके बीच में से बारिश निकलती है। फिर जब वह अपने भक्तों में से जिसको चाहे यह (भलाई)

اِذَا هُمۡ یَسۡتَبۡشِرُوۡنَ ﴿۴۹﴾

पहुँचाता है तो तुरंत वे ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं ।49।

وَ اِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ یُّنَزَّلَ عَلَیۡہِمۡ مِّنۡ قَبۡلِہٖ لَمُبۡلِسِیۡنَ ﴿۵۰﴾

हालाँकि इससे पूर्व कि वह (पानी) उन पर उतारा जाता, वे उसके आने से निराश हो चुके थे ।50।*

فَانۡظُرۡ اِلٰۤی اٰثٰرِ رَحۡمَتِ اللّٰہِ کَیۡفَ یُحۡیِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِہَا ؕ اِنَّ ذٰلِکَ لَمُحۡیِ الۡمَوۡتٰی ۚ وَ ہُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۵۱﴾

अतः तू अल्लाह की कृपा के चिह्नों पर दृष्टि डाल । कैसे वह धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित करता है । निःसन्देह वही है जो मुर्दों को जीवित करने वाला है । और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे, स्थायी सामर्थ्य रखता है ।51।**

وَ لَئِنۡ اَرۡسَلۡنَا رِیۡحًا فَرَاَوۡہُ مُصۡفَرًّا لَّظَلُّوۡا مِنۡۢ بَعۡدِہٖ یَکۡفُرُوۡنَ ﴿۵۲﴾

और यदि हम कोई ऐसी हवा भेजें जिसके परिणामस्वरूप वे उस (हरियाली) को पीला होता हुआ देखें तो उसके पश्चात वे अवश्य कृतघ्नता करने लगेंगे ।52।

فَاِنَّکَ لَا تُسۡمِعُ الۡمَوۡتٰی وَ لَا تُسۡمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوۡا مُدۡبِرِیۡنَ ﴿۵۳﴾

अतः तू निःसन्देह मुर्दों को नहीं सुना सकता । और न बहरों को (अपनी) बात सुना सकता है जब वे पीठ फेरते हुए चले जाएँ ।53।

وَ مَاۤ اَنۡتَ بِہٰدِ الۡعُمۡیِ عَنۡ ضَلٰلَتِہِمۡ ؕ اِنۡ تُسۡمِعُ اِلَّا مَنۡ یُّؤۡمِنُ بِاٰیٰتِنَا فَہُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ﴿۵۴﴾ ع ۱۳ ۸

और न तू अन्धों को उनके भटक जाने के पश्चात् मार्ग दिखा सकता है । तू केवल उसे सुना सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान ले आए । अतः वही आज्ञाकारी लोग हैं ।54। (रुकू $\frac{5}{8}$)

---

* अरबी शब्द **क़ब्लिही** के इस अर्थ के लिए देखें - अल-मुन्जिद और अल मु'जमुल वसीत ।

** आयत सं. 49 से 51 : यहाँ समुद्र से स्वच्छ पानी के वाष्प के रूप में उठने और फिर ऊँचे पर्वतों से टकरा कर स्वच्छ जल के रूप में निचली धरती की ओर बहने का वर्णन है जिससे धरती जीवित होती है । यदि अल्लाह तआला की ओर से इस प्रकार की व्यवस्था जारी नहीं की जाती तो धरती पर किसी प्रकार के जीवन के चिह्नों का पाया जाना असंभव था ।

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿۵۵﴾

قرئ حفص بضم الضاد وفتحها في الثلثة لكن الضم مختارة

अल्लाह वह है जिसने तुम्हें एक दुर्बल (अवस्था) से पैदा किया । फिर दुर्बलता के पश्चात् (उसने) शक्ति प्रदान की । फिर शक्ति के पश्चात (पुन:) दुर्बलता और वृद्धावस्था पैदा कर दी । वह जो चाहता है पैदा करता है । और वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है ।55।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ﴿۵۶﴾

और जिस दिन क़यामत प्रकट होगी अपराधी लोग क़समें खाएँगे कि (संसार में) वे एक घड़ी से अधिक नहीं रहे । इसी प्रकार वे (पहले भी) भटका दिए जाते थे ।56।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۫ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۷﴾

और जिन लोगों को ज्ञान और ईमान दिया गया, कहेंगे कि नि:सन्देह तुम अल्लाह की पुस्तक के अनुसार पुनरुत्थान के दिन तक रहे हो । और यही है पुनरुत्थान का दिन । परन्तु तुम ज्ञान नहीं रखते ।57।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۵۸﴾

अत: उस दिन जिन लोगों ने अत्याचार किया उनको उनकी क्षमायाचना कोई लाभ नहीं देगी । और न ही उनसे बहाना स्वीकार किया जाएगा ।58।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿۵۹﴾

और नि:सन्देह हमने मनुष्यों के लिए इस क़ुरआन में प्रत्येक प्रकार के उदाहरण वर्णन कर दिए हैं । और यदि तू उनके पास कोई चिह्न ले कर आए तो जिन लोगों ने इनकार किया, नि:सन्देह वे कहेंगे कि तुम (लोग) तो केवल झुठे हो ।59।

كَذٰلِكَ يَطۡبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِ الَّذِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٦٠

इसी प्रकार अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है जो ज्ञान नहीं रखते ।60।

فَاصۡبِرۡ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسۡتَخِفَّنَّكَ الَّذِيۡنَ لَا يُوۡقِنُوۡنَ ۝٦١ ع ٦/٩

अतः धैर्य धर । अल्लाह का वादा निःसन्देह सच्चा है । और वे लोग जो विश्वास नहीं रखते वे कदापि तुझे महत्वहीन न समझें ।61। (रुकू $\frac{6}{9}$)

31– सूरः लुक़मान

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 35 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी **अलिफ़–लाम–मीम** से होता है और इन खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली सबसे पहली सूरः अल बकरः के विषयवस्तुओं की इस में नये ढंग से पुनरावृत्ति की गई है । **अल किताब** (अर्थात् एक विशेष पुस्तक) के अवतरण का जिस प्रकार सूरः अल्-बक़रः के आरम्भ में वर्णन है इस सूरः के आरम्भ में भी उस पुस्तक में निहित अल्लाह तआला की ओर से उतरने वाली हिदायत का वर्णन है । परन्तु यहाँ इस विषयवस्तु को इस पहलू से बहुत आगे बढ़ा दिया गया है कि वहाँ तक़वा के आरम्भिक भाव के अनुसार इस पुस्तक ने उन लोगों के लिए हिदायत बनना था जो सत्य को सत्य कहने का सहास रखते हों । परन्तु यहाँ इस पुस्तक से उनको हिदायत प्रदान करने का दावा किया गया है जो तक़वा के दर्जा में बहुत आगे बढ़ कर **मुहसिन** (परोपकारी) बन चुके हों । इससे आगे हिदायत के जितने भी अनगिनत पड़ाव हैं हिदायत का यह अक्षय स्रोत उनको भी सींचता रहेगा ।

इस सूरः में एक बार फिर इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि अल्लाह तआला की बहुत सी शक्तियाँ हैं जिनको तुम अपनी आँखों से देख नहीं सकते । जैसा कि गुरुत्वाकर्षण शक्ति । तो फिर खाली आँखों से इन शक्तियों के उत्पन्न करने वाले को कैसे देख सकोगे ?

हज़रत लुक़मान अलै. लोगों में बड़े विवेकशील प्रसिद्ध थे । इस सूरः में **अलिफ़–लाम–मीम** शब्द के पश्चात् **अल किताब** के साथ **अल हकीम** शब्द है जिस से ज्ञात होता है कि अब विवेकशील लुक़मान के हवाले से विवेकपूर्ण बातों को विभिन्न चरणों में वर्णन किया जाएगा । उनकी विवेकपूर्ण बातों में से सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि वह कभी अल्लाह के साथ किसी को समकक्ष न ठहराए । फिर इस सूरः में माता पिता के साथ सद्-व्यवहार करने की शिक्षा दी गई है । क्योंकि वे बच्चों के पैदा होने का एक प्रत्यक्ष माध्यम बनने के कारण प्रतिबिंब स्वरूप रब्ब से समानता रखते हैं । इसके पश्चात् यह ताकीद की गई कि यदि शिर्क के मामूली से मामूली विचार भी तुम्हारे दिल में उत्पन्न हुए तो उस सर्वज्ञ और तत्त्वज्ञ अल्लाह को उनका ज्ञान हो जाएगा जो धरती और चट्टानों में छिपे हुए राई के बराबर दानों का भी ज्ञान रखता है और ख़बीर (अर्थात् खूब जानकार) भी है । यहाँ शब्द ख़बीर से इस ओर संकेत है कि वह उनके भविष्य की भी ख़बर रखता है कि उनका अन्त कैसा होगा ।

इसके पश्चात् नमाज़ को क़ायम करने का वह प्रमुख्य आदेश दिया गया है जो

सूर: अल् बक़र: के आदेशों में से सबसे पहला आदेश है । मोमिन के जीवन का आधार पूर्णतया नमाज़ के क़ायम करने पर ही है । और सत्कर्म करने और असत्कर्म से रुकने का सामर्थ्य नमाज़ को क़ायम करने के परिणाम स्वरूप ही मिलता है । परन्तु मनुष्य की यह अवस्था है कि उसे नेकी करने का सामर्थ्य अल्लाह ही की ओर से मिलता है । फिर भी वह दूसरे मनुष्यों पर छोटी-छोटी बड़ाइयों के कारण अहंकार से अपने गाल फुलाने लगता है । अत: उसको विनम्रता की शिक्षा दी गई कि धरती में विनम्रता के साथ चलो और अपनी आवाज़ को भी धीमा रखो ।

इसके पश्चात् मनुष्य को कृतज्ञता प्रकट करने की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस सूर: में सर्वाधिक महत्व रखता है । बार-बार हज़रत लुक़मान अलै. अपने पुत्र को कृतज्ञ बनने का उपदेश करते हैं । अत: हज़रत लुक़मान अलै. को जो तत्त्वज्ञान प्रदान हुआ उसका केन्द्रबिन्दु **अल्लाह की कृतज्ञता** है जिससे उनके उपदेश का आरम्भ होता है ।

अल्लाह तआला की नेमतों का तो कोई अंत ही नहीं, जिसने धरती और आकाश और उसमें छिपी समस्त शक्तियों को मनुष्य के विकास के लिए सेवा पर लगा दिया । यहाँ तक कि ब्रह्माण्ड के छोर पर स्थित गेलेक्सीज़ (आकाश गंगाएँ) भी मनुष्य में छिपी शक्तियों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य डाल रही हैं । परन्तु फिर भी लोगों में से ऐसे भी हैं जो इस ब्रह्माण्ड के बारे में कोई ज्ञान नहीं रखते । अपनी अज्ञानता के बावजूद बढ़-बढ़ कर अल्लाह तआला पर बातें बनाते हैं । उनके पास न कोई हिदायत है और न कोई उज्ज्वल पुस्तक है जिसमें शिर्क की शिक्षा दी गई हो ।

यहाँ पर **उज्ज्वल पुस्तक** कह कर इस भ्रांति का निराकरण कर दिया गया कि मूर्तिपूजक अपनी बिगड़ी हुई आस्था को प्रमाणित करने में कुछ पुस्तकें प्रस्तुत करते हैं जैसा कि वेदों का हवाला दिया जाता है । परन्तु वेद तो कोई भी उज्ज्वल प्रमाण नहीं रखते बल्कि और भी अधिक अन्धकारों की ओर मनुष्य को धकेल देते हैं ।

ब्रह्माण्ड में अल्लाह तआला की विवेकशीलता और क़ुदरत के जो रहस्य फैले पड़े हैं उन को कोई लिपिबद्ध नहीं कर सकता । यहाँ तक कि समस्त समुद्र यदि स्याही बन जाएँ और सारे वृक्ष लेखनी बन जाएँ तो समुद्र शुष्क हो जाएँगे और लेखनी समाप्त हो जाएँगी परन्तु अल्लाह तआला के रहस्यों का वर्णन अभी बचा रहेगा ।

इसके पश्चात एक ऐसी आयत (संख्या 29) आती है जो मनुष्य जन्म के रहस्यों पर से अद्‌भुत रंग में पर्दा उठाती है । मनुष्य को बताया गया है कि यदि वह माँ की कोख में बनने वाले भ्रूण पर विचार करे कि वह उत्पत्ति के किन-किन पड़ावों में से गुज़रता है तो उसे अपने जन्म के आरम्भ के रहस्यों का कुछ ज्ञान हो सकता है । अत: वैज्ञानिक

विश्वसनीय ढंग से यह वर्णन करते हैं कि गर्भ के आरम्भ से लेकर भ्रूण की परिपक्वता तक उसमें वह सारे परिवर्तन होते रहते हैं जो जीवन के आरम्भ से लेकर विकास के सारे चरणों की पुनरावृत्ति करते हैं । यह एक बहुत ही विस्तृत और गहरा विषयवस्तु है जिस पर सभी जानकार वैज्ञानिक सहमत हैं । अल्लाह ने कहा कि यह तुम्हारा पहला जन्म है । जिस प्रकार एक तुच्छ कीड़े से उन्नति करते हुए तुम मानवीय योग्यताओं की चरम सीमा तक पहुँचे । इसी प्रकार तुम अपने नए जन्म में क़यामत तक इतनी उन्नति कर चुके होगे कि उस पूर्णांग आकृति के समक्ष मनुष्य की वही हैसीयत होगी जैसे मनुष्य के मुक़ाबले पर उस तुच्छ कीट की थी जिससे जीवन का आरम्भ किया गया।

इस सूर: का अंत इस घोषणा पर हुआ है कि वह घड़ी जिसका उल्लेख किया गया है कि जब मनुष्य मृतावस्था से उस पूर्णावस्था रूप में दोबारा उठाया जाएगा, जिसका ज्ञान केवल अल्लाह ही को है, वह कब और कैसे होगी । और इसी प्रकरण में उन दूसरी बातों का भी वर्णन किया गया जिनका केवल अल्लाह तआला को ही ज्ञान है और मनुष्य को इस ज्ञान में से कुछ भी प्राप्त नहीं । वह बातें ये हैं कि आकाश से जल कब और कैसे बरसेगा और माताओं के कोख में क्या चीज़ है जो पल रही है । और मनुष्य आने वाले कल में क्या कमाएगा और धरती में उसकी मृत्यु किस स्थान पर होगी ।

यहाँ एक सन्देह का निराकरण आवश्यक है । आज कल के विकसित युग में यह दावा किया जा रहा है कि नए उपकरणों की सहायता से ज्ञात हो सकता है कि माँ के पेट में क्या है । यहाँ तक कि अब यह भी ज्ञात हो सकता है कि वह माँ के पेट में पलने वाला बच्चा स्वस्थ है या जन्मजात रोगी है । लड़का है अथवा लड़की । परन्तु सटीकता के इस दावा के बावजूद वे कदापि विश्वास पूर्वक नहीं कह सकते कि माँ के पेट में पलने वाला बच्चा अपंग है या नहीं । केवल एक भारी संभावना की बात करते हैं । इस प्रकार उनकी यह भविष्यवाणी भी कई बार ग़लत प्रमाणित हुई है कि पैदा होने वाला बच्चा बेटा है या बेटी । कई बार लोगों के देखने में यह बात आ रही है कि प्रसूति-विज्ञान के जानकार एक बच्चे के जन्मजात दोष का बड़े विश्वासपूर्वक वर्णन करते हैं परन्तु जब बच्चा पैदा होता है तो उस दोष से रहित होता है । इसी प्रकार कई बार बड़े विश्वास के साथ कहा जाता कि लड़की पैदा होगी परन्तु लड़का पैदा हो जाता है । इसी प्रकार लड़के का दावा किया जाता है और लड़की पैदा होती है । यह बात आए दिन देखने में आती है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ لُقْمَانَ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَّ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ اَرْبَعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓمّٓ ②

अनल्लाहु आ’लमु : मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ ।2।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ③

ये ज्ञानपरक पुस्तक की आयतें हैं ।3।

هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ④

सत्कर्म करने वालों के लिए हिदायत और करूणा हैं ।4।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ⑤

वे लोग जो नमाज़ को क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और वे परलोक पर भी अवश्य विश्वास रखते हैं ।5।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑥

यही वे लोग हैं जो अपने रब्ब की ओर से हिदायत पर (स्थित) हैं । और यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं ।6।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ يَتَّخِذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑦

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो व्यर्थ बात का सौदा करते हैं ताकि बिना किसी ज्ञान के अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) पथभ्रष्ट कर दें । और उसे हास्यास्पद बना लें । यही वे लोग हैं जिनके लिए अपमानित कर देने वाला अज़ाब (निश्चित) है ।7।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا

और जब उस पर हमारी आयतों का पाठ किया जाता है तो वह अहंकार करते हुए पीठ फेर लेता है । मानो उसने उन्हें सुना ही न हो । जैसे उसके दोनों कानों में (बहरा कर देने वाला) एक बोझ हो । अत: उसे

فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٨

पीड़ाजनक अज़ाब का शुभ-समाचार दे दे ।8।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝٩

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए नेमत वाले स्वर्ग हैं ।9।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١٠

वे सदा उनमें रहेंगे । (यह) अल्लाह का सच्चा वादा है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।10।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝١١

उसने आसमानों को बिना ऐसे स्तम्भों के बनाया जिन्हें तुम देख सको और धरती में पर्वत बनाए ताकि तुम्हें ख़ुराक उपलब्ध करें और उसमें प्रत्येक प्रकार के चलने वाले प्राणी उत्पन्न किए । और आसमान से हमने पानी उतारा और इस (धरती) में प्रत्येक प्रकार के उत्तम जोड़े उगाए ।11।

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝١٢ ع

यह है अल्लाह की सृष्टि । अत: मुझे दिखाओ कि वह है क्या जिसे उसके सिवा दूसरों ने उत्पन्न किया है ? वास्तविकता यह है कि अत्याचार करने वाले खुली-खुली पथभ्रष्टता में हैं ।12।

(रुकू $\frac{1}{10}$)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيْدٌ ۝١٣

और नि:सन्देह हमने लुक़मान को तत्त्वज्ञान प्रदान किया था (यह कहते हुए) कि अल्लाह का कृतज्ञता प्रकट कर और जो भी कृतज्ञता प्रकट करे तो वह केवल स्वयं की भलाई के लिए ही कृतज्ञता प्रकट करता है । और जो कृतघ्नता करे तो नि:सन्देह अल्लाह निस्पृह है (और) बहुत स्तुति योग्य है ।13।

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۴﴾

और जब लुक़मान ने अपने पुत्र से कहा, जब वह उसे नसीहत कर रहा था कि हे मेरे प्यारे पुत्र ! अल्लाह के साथ (किसी को) साझीदार न बना । नि:सन्देह शिर्क एक बहुत बड़ा अत्याचार है ।14।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾

और हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के पक्ष में पक्की नसीहत की । उसकी माँ ने उसे कमज़ोरी पर कमज़ोरी (की अवस्था) में उठाए रखा । और उसका दूध छुड़ाना दो वर्षों में (पूर्ण) हुआ । (उसे हमने यह पक्की नसीहत की) कि मेरी कृतज्ञता प्रकट कर और अपने माता-पिता की भी । मेरी ओर ही (तुम्हें) लौट कर आना है ।15।

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾

और यदि वे दोनों भी तुझ से झगड़ा करें कि तू मेरा साझीदार ठहरा जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं तो उन दोनों की आज्ञा का पालन न कर । और उन दोनों के साथ सांसारिक रीति के अनुसार मेलजोल जारी रख । और उस के मार्ग का अनुसरण कर जो मेरी ओर झुका । फिर मेरी ओर ही तुम्हारा लौट कर आना है । फिर मैं तुम्हें उससे अवगत कराऊँगा जो तुम करते रहे हो ।16।

يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ

हे मेरे प्यारे पुत्र ! नि:सन्देह यदि राई के दाने के समान भी कोई वस्तु हो, फिर वह किसी चट्टान में (दबी हुई) हो अथवा आसमानों या धरती में कहीं भी हो, अल्लाह उसे अवश्य ले आएगा ।

اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۷﴾

नि:सन्देह अल्लाह बहुत सूक्ष्मद्रष्टा (और) ख़बर रखने वाला है ।17।

يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۚ﴿۱۸﴾

हे मेरे प्यारे पुत्र ! नमाज़ को क़ायम कर और अच्छी बातों का आदेश दे और अप्रिय बातों से मना कर और उस (विपत्ति) पर धैर्य धर जो तुझे पहुँचे । नि:सन्देह यह बहुत महत्वपूर्ण बातों में से है ।18।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۚ﴿۱۹﴾

और (अहंकार पूर्वक) लोगों के लिए अपने गाल न फुला । और धरती में यूँ ही अकड़ते हुए न फिर । अल्लाह किसी अहंकारी (और) घमण्ड करने वाले को पसन्द नहीं करता ।19।

وَاقْصِدْ فِىْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ۧ﴿۲۰﴾ ع

और अपनी चाल को संतुलित कर और अपनी आवाज़ को धीमा रख । नि:सन्देह सब से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है ।20। (रुकू $\frac{2}{11}$)

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿۲۱﴾

क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि जो भी आसमानों और धरती में है (उसे) अल्लाह ने तुम्हारे लिए सेवा पर लगा दिया है । और उसने अपनी नेमतें तुम पर प्रकट रूप में और अप्रकट रूप में भी पूरी की । और मनुष्यों में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान या हिदायत अथवा उज्ज्वल पुस्तक के झगड़ते हैं ।21।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ

और जब उनसे कहा जाता है कि उसका अनुसरण करो जो अल्लाह ने उतारा है तो कहते हैं कि इसके बदले हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिस पर

الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٢٢

हमने अपने पूर्वजों को पाया । क्या इस पर भी (वे ऐसा करेंगे) यदि शैतान उन्हें भड़कती हुई अग्नि के अज़ाब की ओर बुलाए ? ।22।

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۭ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝٢٣

और जो भी अपना सारा ध्यान अल्लाह की ओर फेर दे और वह उपकार करने वाला हो तो उसने नि:सन्देह एक मज़बूत कड़े को पकड़ लिया । और मामले अन्ततः अल्लाह ही की ओर (लौटते) हैं ।23।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ۭ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٢٤

और जो इनकार करे तो उसका इनकार करना तुझे दु:ख में न डाल दे । हमारी ओर ही उनका लौट कर आना है । अत: हम उन्हें बताएँगे कि वे क्या करते रहे हैं। नि:सन्देह अल्लाह सीनों की बातों का ख़ूब ज्ञान रखने वाला है ।24।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝٢٥

हम उन्हें थोड़ा सा अस्थायी लाभ पहुँचाएँगे । फिर उन्हें एक अत्यन्त कठोर अज़ाब की ओर विवश करके ले जाएँगे ।25।

وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٢٦

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमानों और धरती को पैदा किया है? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने । तू कह दे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है । परन्तु उनमें से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते ।26।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٢٧

अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और धरती में है । नि:सन्देह अल्लाह ही निस्पृह (और) प्रशंसा का पात्र है ।27।

وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ

और धरती में जितने वृक्ष हैं यदि सब लेखनी बन जाएँ और समुद्र (स्याही बन

اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۸﴾

जाए और) इसके अतिरिक्त सात समुद्र भी उसकी सहायता करें तब भी अल्लाह के वाक्य समाप्त नहीं होंगे । नि:सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।28।

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۹﴾

तुम्हारा जन्म और तुम्हारा दोबारा उठाया जाना केवल एक जीव (के जन्म और उठाए जाने) के समान है । नि:सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।29।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖؗ كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۳۰﴾

क्या तूने ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उसने सूर्य और चन्द्रमा को सेवा पर लगा दिया है । हर कोई अपनी निर्धारित अवधि की ओर अग्रसर है । और (याद रखो) कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।30।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿۳۱﴾ ع

यह इस कारण है कि नि:सन्देह अल्लाह ही है जो सत्य है और जिसे वे उसके सिवा पुकारते हैं वह असत्य है । और अल्लाह ही बहुत ऊँची शान वाला (और) बहुत बड़ा है ।31। (रुकू $\frac{3}{12}$)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۲﴾

क्या तूने ध्यान नहीं दिया कि समुद्र में नौकाएँ अल्लाह की नेमत के साथ चलती हैं ताकि वह अपने चिह्नों में से तुम्हें कुछ दिखाए । इसमें नि:सन्देह प्रत्येक बहुत धैर्यशील (और) बहुत कृतज्ञ के लिए चिह्न हैं ।32।

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ

और जब उन्हें लहर छावों की भाँति ढाँप लेती है, वे (अपनी) आस्था को अल्लाह

مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴿٣٣﴾

के लिए विशुद्ध करते हुए उसे पुकारते हैं। फिर जब वह उन्हें बचाकर स्थल भाग की ओर ले जाता है तो उनमें से कुछ (ऐसे भी होते) हैं जो मध्यमार्ग अपनाने वाले हैं । और हमारी चिह्नों का इनकार केवल वही करता है जो खूब धोखेबाज़ (और) बड़ा कृतघ्न है ।33।*

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَن وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَن وَالِدِهِ شَيْئًا ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ﴿٣٤﴾

हे लोगो ! अपने रब्ब का तक़्वा धारण करो और उस दिन से डरो जिस दिन पिता अपने पुत्र के काम नहीं आएगा, न पुत्र अपने पिता के कुछ काम आएगा । नि:सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । अत: तुम्हें सांसारिक जीवन कदापि धोखे में न डाले । और तुम्हें अल्लाह के विषय में धोखेबाज़ (शैतान) कदापि धोखा न दे सके ।34।

إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٣٥﴾ ع ٤/١٣

नि:सन्देह अल्लाह ही है जिसके पास क़यामत का ज्ञान है । और वह बारिश को उतारता है । और जानता है कि गर्भाशयों में क्या है । और कोई जीवधारी नहीं जानता कि वह कल क्या कमाएगा । और कोई जीवधारी नहीं जानता कि किस धरती में वह मरेगा । नि:सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सदा अवगत रहने वाला है ।35। (रुकू $\frac{4}{13}$)

---

* इस आयत में मनुष्यस्वभाव का यह महत्वपूर्ण विषय उल्लेख हुआ है कि जब समुद्र के तूफ़ान में फंस जायें तो चाहे नास्तिक हों अथवा अनेकेश्वरवादी, उस समय सब एक अल्लाह (आराध्य) ही को पुकारते हैं । और जब वह उन्हें बचा लेता है तो फिर वे अपनी पहली अवस्था की ओर लौट जाते हैं । ऐसे तूफ़ानों में फंसे हुए जिन लोगों का यहाँ वर्णन है उनमें मध्यमार्ग अपनाने वाले अपवाद हैं । वे स्थल भाग पर पहुँच कर भी अल्लाह को नहीं भुलाते ।

32– सूरः अस–सज्दः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ पर खण्डाक्षर **अलिफ़–लाम–मीम** (अर्थात मैं अल्लाह ख़ूब जानने वाला हूँ) पिछली सूरः की अन्तिम आयतों से इस सूरः के सम्बन्ध को स्पष्ट कर रहे हैं । पिछली सूरः की अन्तिम आयतों में यह उल्लेख किया गया था कि बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनका ज्ञान सिवाए अल्लाह के किसी की नहीं और **मैं अल्लाह खूब जानने वाला हूँ** के दावे में बिल्कुल वही बात दोहराई गई है ।

इसके पश्चात् धरती और आकाश के रहस्यों का एक बार फिर वर्णन किया गया है जिनको अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई नहीं जानता । फिर एक ऐसी आयत है जो आश्चर्यजनक रूप में ब्रह्माण्ड की आयु का राज़ खोल रही है । अल्लाह तआला का कथन है कि अल्लाह का एक दिन तुम्हारी गणनानुसार एक हज़ार वर्ष के समान है । मनुष्य की गणना के अनुसार यदि एक वर्ष के दिनों को एक हज़ार वर्षों से गुणा किया जाए तो जो आंकड़ा बनता है इस पवित्र आयत में उसका वर्णन मौजूद है । एक और आयत (सूरः अल मआरिज आयत : 5) में अल्लाह तआला ने कहा है कि अल्लाह का दिन पचास हज़ार वर्ष के समान है । अतः इस दिन को यदि एक हज़ार वर्ष वाले दिन के साथ गणितीय आधार पर गुणा किया जाए तो लगभग बीस अरब वर्ष बनते हैं । और वैज्ञानिकों के मतानुसार भी इस ब्रह्माण्ड की आयु अठ्ठारह से बीस अरब वर्ष तक है । इसी आधार पर अल्लाह तआला ने एक बार फिर घोषणा की है कि अदृश्य और दृश्य विषय का ज्ञान रखने वाला वही अल्लाह है जिसने प्रत्येक वस्तु की सर्वोत्तम ढंग से उत्पत्ति की है । आश्चर्यजनक बात यह है कि यह सारी उत्पत्ति साधारण मिट्टी से की गई । इसके पश्चात् फिर उत्पत्ति के अन्य चरणों का उल्लेख हुआ है जिनमें से भ्रूण को माँ की कोख में गुज़रना पड़ता है ।

इसके पश्चात फिर दोबारा जी उठने पर लोगों की शंका का उल्लेख करके एक नई बात वर्णन की गई कि प्रत्येक मनुष्य का मलकुल मौत (मृत्यु का फ़रिश्ता) अलग है जो उसके रोगों और सूक्ष्म शारीरिक दोषों का ज्ञान रखते हुए बिल्कुल सही निर्णय करता है कि इसकी जान कब ली जानी चाहिए ? यहाँ फिर पिछली सूरः की अन्तिम आयत वाली विषयवस्तु को ही एक नए रंग में वर्णन कर दिया गया है ।

इस सूरः के अन्तिम रुकू में हज़रत मूसा अलै. के प्रसंग के साथ एक बार फिर **अलिफ़–लाम–मीम** वाली विषयवस्तु की पुनरावृत्ति करते हुए यह कहा गया कि उस (अल्लाह) की भेंट के विषय में संदेह में न पड़ । कुछ व्याख्याकारों के अनुसार यहाँ

अल्लाह तआला से भेंट करने का वर्णन नहीं है बल्कि हज़रत मूसा अलै. से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भेंट का वर्णन है । यदि यह अर्थ मान भी लिए जाएँ तो ज़ाहिर है कि यह वह भेंट नहीं जो क़यामत के दिन सब नबियों से होगी बल्कि यहाँ पर विशेष रूप से उस भेंट का वर्णन है जो मे'राज के समय हज़रत मूसा अलै. से हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हुई और नमाज़ों के बारे में हज़रत मूसा अलै. ने एक परामर्श दिया जिसका विवरण मे'राज वाली घटना में उल्लेख है ।

इस सूरः की अन्तिम आयत में हज़रत मुहमम्द सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शत्रुओं और कष्ट देने वालों से विमुख हो जाने का आदेश दिया गया है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

الٓمّٓ ②

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ ।2।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ③

सर्वथा सम्पूर्ण ग्रंथ का उतारा जाना, इसमें कोई संदेह नहीं कि, समस्त लोकों के रब्ब की ओर से है ।3।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ④

क्या वे कहते हैं कि उसने उसे असत्य रूप से गढ़ लिया है ? बल्कि वह तो तेरे रब्ब की ओर से सत्य है । ताकि तू ऐसे लोगों को सतर्क करे जिन की ओर तुझ से पूर्व कोई सतर्ककारी नहीं आया । हो सकता है कि वे हिदायत पाएँ ।4।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ⑤

अल्लाह वह है जिसने आसमानों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के मध्य है छः युगों में पैदा किया । फिर वह अर्श पर आसीन हुआ । उसे छोड़ कर न तुम्हारा कोई मित्र है न कोई सिफ़ारिश करने वाला । फिर क्या तुम सीख नहीं लेते ? ।5।

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ⑥

वह (अपने) निर्णय को योजना के साथ आकाश से धरती की ओर उतारता है । फिर वह एक ऐसे दिन में उसकी ओर उठता है जो तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष के समान होता है ।6।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ

यह वह है जो अदृश्य और दृश्य को जानने वाला है, जो पूर्ण प्रभुत्व

الرَّحِيْمُ ۙ﴿۷﴾

वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।7।

الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۚ﴿۸﴾

वही जिसने प्रत्येक वस्तु को जिसे उसने पैदा किया, बहुत अच्छा बनाया और उसने मनुष्य की उत्पत्ति का आरम्भ गीली मिट्टी से किया ।8।

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۚ﴿۹﴾

फिर उसने उसकी नस्ल को एक तुच्छ जल के निचोड़ से तैयार किया ।9।

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۰﴾

फिर उसने उसे ठीक-ठाक किया और उसमें अपनी रूह फूँकी और तुम्हारे लिए उसने कान और आँखें और दिल बनाए । बहुत थोड़ा है जो तुम कृतज्ञता प्रकट करते हो ।10।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۱﴾

और वे कहते हैं कि क्या जब हम धरती में लुप्त हो जाएँगे तो क्या फिर भी हम अवश्य एक नई उत्पत्ति में (डाले) जाएँगे । वास्तविकता यह है कि वे तो अपने रब्ब की भेंट से ही इनकार करने वाले हैं ।11।

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۧ﴿۱۲﴾

तू कह दे कि मृत्यु का वह फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है तुम्हें मृत्यु देगा । फिर तुम अपने रब्ब की ओर लौटाए जाओगे ।12। (रुकू $\frac{1}{14}$)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿۱۳﴾

और यदि तू देख ले जब अपराधी अपने रब्ब के समक्ष अपने शीश झुकाए हुए होंगे (और कहेंगे) हे हमारे रब्ब ! हमने देखा और सुन लिया । अत: हमें लौटा दे ताकि हम नेक कर्म करें । हम अवश्य विश्वास करने वाले (सिद्ध) होंगे ।13।

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ

और यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को उसके (उपयुक्त) हिदायत प्रदान

حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٤﴾

कर देते परन्तु मेरी ओर से आदेश लागू हो चुका है कि मैं नरक को अवश्य सब जिन्नों और मनुष्यों से भर दूँगा ।14।

فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

अत: (अज़ाब) को इस कारण चखो कि तुम अपने आज के दिन की भेंट को भुला बैठे थे । नि:सन्देह हमने (भी) तुम्हें भुला दिया है । इसके अतिरिक्त जो तुम किया करते थे उसके कारण स्थायी अज़ाब को चखो ।15।

اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۩ ﴿١٦﴾

नि:सन्देह हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं जिनको जब उन (आयतों) के द्वारा उपदेश दिया जाता है तो वे सजद: करते हुए गिर जाते हैं । और अपने रब्ब की स्तुति के साथ (उसका) गुणगान करते हैं और वे अहंकार नहीं करते ।16।

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٧﴾

उनके पहलू बिस्तरों से अलग हो जाते हैं (जबकि) वे अपने रब्ब को भय और लालसा की अवस्था में पुकार रहे होते हैं। और जो कुछ हमने उनको प्रदान किया वे उसमें से ख़र्च करते हैं ।17।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾

अत: कोई जीवधारी नहीं जानता कि जो कुछ वे किया करते थे, उसके प्रतिफल के रूप में उनके लिए आँखों की ठंडक स्वरूप क्या कुछ छिपा कर रखा गया है ।18।

اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٩﴾

अत: क्या जो मोमिन हो उस जैसा हो सकता है जो दुराचारी हो ? वे कभी एक समान नहीं हो सकते ।19।

اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो जो वे किया

فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۫ نُزُلًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٠

करते थे उसके कारण उनके लिए (उनकी शान के अनुरूप) आतिथ्य स्वरूप ठहरने के उद्यान होंगे ।20।

وَ اَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَ قِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝٢١

और जहाँ तक उन लोगों का सम्बन्ध है जिन्होंने अवज्ञा की तो उनका ठिकाना आग है । जब कभी वे इरादा करेंगे कि उससे निकल जाएँ तो उसी में लौटा दिए जाएँगे । और उनसे कहा जाएगा कि उस अग्नि के अज़ाब को चखो जिसे तुम झुठलाया करते थे ।21।

وَ لَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٢٢

और हम नि:सन्देह उन्हें बड़े अज़ाब से पहले छोटे अज़ाब में से कुछ चखाएँगे ताकि हो सके तो वे (हिदायत की ओर) लौट आएँ ।22।

وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ۝٢٣ ع

और उससे बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अपने रब्ब की आयतों के द्वारा अच्छी प्रकार से उपदेशित किया जाए, फिर भी (वह) उनसे मुख मोड़ ले? नि:सन्देह हम अपराधियों से प्रतिशोध लेने वाले हैं ।23। (रुकू $\frac{2}{15}$)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآىِٕهٖ وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۝٢٤ ج

और नि:सन्देह हमने मूसा को भी पुस्तक प्रदान की । अत: तू उस (अर्थात् अल्लाह) की भेंट के विषय में शंका में न रह । और उसको हमने बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया था ।24।*

---

* इस आयत का एक अर्थ यह बनता है कि हज़रत मूसा अलै. के साथ भेंट करने के विषय में शंका में न रह । सम्भवत: इसमें मे'राज की उस घटना की ओर संकेत है जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत मूसा अलै. से मिले और फिर बार-बार मिलने का अवसर मिला । यहाँ हज़रत मूसा अलै. के प्रसंग में अल्लाह से मिलने का उल्लेख इस लिए किया गया है कि जैसे हज़रत मूसा अलै. को तूर पर्वत पर अल्लाह तआला से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उससे कई गुना अधिक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला का दर्शन प्राप्त हुआ ।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٥﴾

अत: जब उन्होंने धैर्य से काम लिया तो उनमें से हमने ऐसे इमाम बनाए जो हमारे आदेश से हिदायत देते थे । और वे हमारे चिह्नों पर विश्वास रखते थे ।25।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٦﴾

नि:सन्देह तेरा रब्ब ही क़यामत के दिन उनके मध्य उन बातों का फ़ैसला करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे ।26।

اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٧﴾

अत: क्या इस बात ने उन्हें हिदायत नहीं दी कि हमने उनसे पहले कितनी ही जातियाँ तबाह कर दीं जिनके (छोड़े हुए) घरों में वे चलते फिरते हैं । नि:सन्देह इसमें बहुत से चिह्न हैं । फिर क्या वे सुनते नहीं ? ।27।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٨﴾

क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम बंजर धरती की ओर पानी को बहाए लिए आते हैं । फिर उस (पानी) के द्वारा हरियाली उत्पन्न करते हैं जिससे उनके पशु भी और वे स्वयं भी खाते हैं । फिर क्या वे देखते नहीं ? ।28।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾

और वे पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह विजय कब मिलेगी ? ।29।

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٣٠﴾

तू कह दे कि जिन लोगों ने इनकार किया विजय के दिन उनका इमान लाना उनको कोई लाभ न देगा और न वे छूट दिए जाएँगे ।30।

فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣١﴾

अत: उनसे मुँह मोड़ ले और (अल्लाह के निर्णय की) प्रतीक्षा कर । नि:सन्देह वे भी किसी प्रतीक्षा में बैठे हैं ।31।

(रुकू 3/16)

33– सूरः अल–अह्ज़ाब

यह सूरः मदीना में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 74 आयतें हैं ।

पिछली सूरः की अन्तिम आयत की विषयवस्तु को इस सूरः के आरम्भ में ही प्रस्तुत किया गया है अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया है कि काफ़िर और मुनाफ़िक़ तुझे अपनने धर्म से हटाने की चेष्टा करेंगे । तू उनसे मुँह मोड़ ले और उन की बात न मान तथा जो कुछ तेरी ओर वह्इ की जाती है उसका अनुसरण कर ।

आयत संख्या 5 में यह स्थायी सिद्धान्त वर्णन कर दिया गया कि मनुष्य एक ही समय में दो भिन्न-भिन्न सत्ता के साथ एक जैसा प्रेम नहीं कर सकता । इस में इस ओर संकेत है कि हे नबी ! तेरे दिल में अल्लाह तआला का प्रेम ही अधिक बसा है और दुनिया में जिन से तू प्रेम करता है वह केवल अल्लाह के प्रेम के कारण ही करता है । अतएव वह हदीस इस विषयवस्तु को स्पष्ट कर रही है जिस में कहा गया है कि यदि तू अल्लाह के प्रेम के कारण अपनी पत्नी के मुँह में एक निवाला भी डाले तो यह भी अल्लाह की उपासना होगी ।

इसके बाद अरब वासियों की उस कु-रीति का उल्लेख है जो अपने मुँह से अपनी पत्नियों को माँ कह दिया करते थे । इस कु-रीति का उच्छेद करते हुए ध्यान दिलाया गया है कि माँ और बेटे का सम्बन्ध तो अल्लाह के बनाये विधान के अनुसार ही होता है, तुम अपने मुँह से इस सम्बन्ध को कैसे बदल सकते हो । इसी प्रकार यदि किसी को बेटा कह कर पुकारा जाए तो वह बेटा नहीं बन सकता । बेटा वही है जो खूनी रिश्ते में बेटा हो । बेटा कह कर पुकारना प्यार को प्रकट करना मात्र है इससे अधिक कुछ नहीं ।

फिर इसी विषयवस्तु की पुनरावृत्ति करते हुए कहा कि दिलों में एक ही **औला** अर्थात् सर्वाधिक प्रेमपात्र होता है । जहाँ तक मोमिनों का सम्बन्ध है तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे **औला** होने चाहिएँ । इसके बाद क्रमशः अन्य निकट सम्बन्धियों का वर्णन है कि तुमसे निकटता की दृष्टि से वे एक दूसरे से ऊपर हैं ।

इसी सूरः में आयत **खातमुन्नबिय्यीन** भी है । तत्त्वज्ञान से वञ्चित कुछ विद्वान इस का यह अर्थ करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन अर्थों में अन्तिम नबी हैं कि आप सल्ल. के बाद कभी किसी प्रकार का कोई नबी नहीं आएगा । यहाँ इस गलत विचारधारा का खण्डन किया गया और उस **प्रतिज्ञा** का उल्लेख किया गया जो प्रत्येक नबी से ली जाती रही है कि यदि तुम्हारे बाद कोई ऐसा नबी आये जो तुम्हारी बातों की पुष्टि करता हो तो तुम्हारी उम्मत का दायित्व है कि वह उस नबी का

इनकार करने की बजाय उसका समर्थन करने वाली सिद्ध हो । इस सूर: में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बारे में कहा गया **व मिन् क** अर्थात् हम ने तुझ से भी यह प्रतिज्ञा ली है । अत: यदि कोई इस शर्त के साथ नुबुव्वत का दावा करने वाला हो जो शत प्रतिशत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञाकारी हो तथा मुहम्मदी अनुकम्पा के द्वारा ही नुबुव्वत का पुरस्कार उसने पाया हो और वह आप सल्ल. की शिक्षा को ही बिना किसी परिवर्तन के पेश करने वाला हो एवं उसी के लिए जिहाद कर रहा हो, तो फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के लिए न केवल उसका विरोध करना हराम है अपितु उसकी सहायता करना अनिवार्य है ।

इसके बाद अह्ज़ाब (अर्थात् समूह) के मौलिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए इस प्रकरण में खंदक के युद्ध का उल्लेख किया गया है, जिस में सारे अरब के समूह मदीना पर आक्रमण करने के लिए उमड़ पड़े थे और देखने में उनसे बचाव का कोई उपाय दिख नहीं रहा था । उस समय अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह चमत्कार दिखाया कि एक भयानक आँधी के द्वारा आप सल्ल. की सहायता की, जिस ने काफिरों की आँखों को अंधा कर दिया और वे अफरा-तफरी में भाग खड़े हुए और बहुत सी सवारी के जानवर जो बंधे हुए थे उनको खोलने तक का उन्हें समय नहीं मिला । अत: अपनी सवारी के जानवरों सहित वे अनेक साज़ो-सामान पीछे छोड़ गये, और वह खुराक की भारी कमी जिस से मुसलमान दो चार थे इस घटना के कारण वह दूर हो गई ।

इस घटना से पूर्व मदीना वासियों की जो अवस्था थी उसका भी वर्णन किया गया है कि इतनी भयानक मुसीबत और तबाही उन्हें दिखाई दे रही थी कि भय के कारण उन की आँखें पथरा गई थीं और मुनाफ़िक़ मदीना के मुसलमानों से कह रहे थे कि अब तुम्हारे लिए कोई आश्रयस्थल नहीं रहा । उस समय मोमिनों ने उन्हें यह उत्तर दिया कि हमारा ईमान तो पहले से भी अधिक मज़बूत हो गया है, क्योंकि अरब समूहों के इस भयानक आक्रमण की तो हमें इससे पहले ही सूचना दे दी गई थी । उनका इशारा सूर: अल्-क़मर की ओर था जिसमें यह आयत आती है कि **इस विशाल जन-समूह को अवश्य पराजित किया जाएगा और वे पीठ फेर जाएँगे** (आयत सं. 46) । अतएव इस युद्ध में मोमिनों ने अपने वचन को पूरा कर दिखाया । उनमें कुछ ऐसे लोग भी थे जो उस समय साथ शामिल नहीं थे परन्तु प्रतीक्षा कर रहे थे कि काश उनको भी अहज़ाब युद्ध में शामिल होने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की भाँति दृढ़ता दिखाने और क़ुर्बानियाँ करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता ।

इस सूर: की आयत संख्या 38 में अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम को अपने मुँह बोले बेटे की तलाक़शुदा पत्नी के साथ निकाह करने का आदेश दिया है । यह आदेश हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर बहुत नागवार गुज़र रहा था और इस पर मुनाफ़िक़ लोग आपत्ति कर सकते थे, उसका भी कुछ भय था । इसलिए इस शादी के लिए आप सल्ल. बड़े असमंजस में पड़ गये थे । परन्तु अल्लाह के आदेश का पालन करना बहरहाल आवश्यक था ।

इस के बाद एक ऐसी आयत (संख्या 41) है जिसे इस सूर: का उत्कर्ष कहना चाहिए और इसका संबंध हजरत ज़ैद रज़ि. की घटना से भी है । यह सार्वजनिक घोषणा की गई कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वास्तव में न तो ज़ैद रजि. के पिता थे और न तुम जैसे लोगों के पिता हैं बल्कि वे तो **ख़ातमुन्नबिय्यीन** (नबियों के मुहर) हैं । अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबियों का आध्यात्मिक पितृत्व पद प्रदान किया गया । विषयवस्तु की वर्णन शैली से तो यही अर्थ निकलता है । परन्तु **ख़ातमुन्नबिय्यीन** के और बहुत से अर्थ हैं जो सबके सब इस क़ुरआनी आयत के अभिप्रेत हैं और प्रत्येक अर्थ की दृष्टि से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **ख़ातमुन्नबिय्यीन** सिद्ध होते हैं । उदाहरण स्वरूप **ख़ातम** शब्द का एक अर्थ **मुसद्दिक़** (सत्यापक) भी है । समस्त धर्म-विधानों में से केवल एक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का धर्म-विधान (शरीअत) ही है जिसमें पिछले प्रत्येक युग के नबियों का सत्यापन किया गया है । दुनिया की कोई धार्मिक पुस्तक इस शान की आयत प्रस्तुत नहीं कर सकती ।

इसके बाद की आयत हज़रत ज़करिया अलै. की उस दुआ की याद दिलाती है जिस में उन्हें पुत्र-प्राप्ति की खुशख़बरी देने के बाद अल्लाह तआला ने उन पर वह्इ की कि सुबह और शाम अल्लाह तआला का गुणगान करो ।

इसके बाद आयत संख्या 46-47 में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के **शाहिद**, **मुबश्शिर** और **नज़ीर** (गवाह, शुभसमाचार दाता और सतर्ककारी) होने का उल्लेख कर दिया गया । आप सल्ल. अपने से पूर्व महान नबी मूसा अलै. की सच्चाई के गवाह थे और अपने बाद आने वाले अपने दास (इमाम महदी) की सच्चाई के भी गवाह थे । आप सल्ल. की शान की उपमा सूर्य से दी गई है जो समग्र जगत को प्रकाशित करता है तथा चन्द्रमा भी उसी से प्रकाश पाता है । अत: यह नियत है कि जब रात का अंधकार छा चुका हो तब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रकाश ही को कोई चन्द्रमा फिर मानव समाज तक पहुँचाए । अत: इस में यह भविष्यवाणी है कि भविष्य के अंधकार पूर्ण युगों में ऐसा अवश्य होगा ।

इसके बाद मोमिनों को तक़वा के नियम सिखाए गये हैं और हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो उच्च महिमा वर्णन की गई थी, उस को दृष्टि में रखते हुए उन पर अनिवार्य कर दिया गया है कि वे अत्यन्त शिष्टाचार पूर्वक काम लें। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कई अवसर पर अपने प्रियजनों और सहाबियों को अपने घर में भोजन करने का निमंत्रण देते थे। इन आयतों में सहाबियों को नसीहत की गई है कि जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा निमंत्रण दें तो उसे साधारण निमंत्रण विचार करके समय से पूर्व उन के घर पहुँच कर भोजन पकने की प्रतीक्षा में न बैठो। बल्कि जब भोजन तैयार हो और तुम्हें बुलाया जाए तभी जाया करो और भोजन के पश्चात अनुमति प्राप्त करके वापस अपने घरों को जाओ। यदि भोजन के बीच तुम्हें किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो पर्दे के पीछे से **उम्महातुल मुमेनीन** (अर्थात् मोमिनों की माताओं, हज़रत मुहम्मद सल्ल. की पत्नियों) को सूचित करो। यहाँ पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियों को अन्य मुसलमान स्त्रियों की तुलना में पवित्रता अपनाने की अधिक ताक़ीद की गई है। क्योंकि उनकी मर्यादानुकूल यह आवश्यक है कि उनके कारण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मामूली सी आरोप की बात भी न सुननी पड़े।

जिस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुनाफ़िक़ लोग मिथ्यारोप के द्वारा कष्ट पहुँचाते थे उसी प्रकार हज़रत मूसा अलै. को भी मिथ्यारोप के द्वारा कष्ट पहुँचाया गया था। इस सूर: के अन्त पर इस बात को दोहराया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. को उन से पूर्व के प्रतापी नबी हज़रत मूसा अलै. से अधिकतापूर्वक समानताएँ हैं। जिस प्रकार मूसा अलै. को बताया गया था कि अल्लाह के निकट वे सम्मानित चहेते हैं इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली दी गई कि इन मिथ्यारोपों के कारण तुझे कोई हानि नहीं होगी। क्योंकि तू अल्लाह तआला के निकट इहलोक और परलोक में चहेता है।

इस सूर: की अन्तिम दो आयतों में एक बार फिर हज़रत मूसा अलै. की ओर इशारा करते हुए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहा गया कि अमानत (अर्थात पवित्र क़ुरआन) का जो बोझ तुझ पर डाला गया वह मूसा अलै. पर डाले जाने वाले अमानत के बोझ से बहुत भारी है। पहाड़ भी इसके प्रताप से टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, परन्तु तू इस अमानत के बोझ को उठाने के लिए आगे बढ़ा, जिसके फलस्वरूप तुझे अपने आप पर अत्यधिक अत्याचार करना पड़ा। परन्तु तूने इसके परिणाम की कोई परवाह नहीं की।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعٌ وَّ سَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّ تِسْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝٢

हे नबी ! अल्लाह का तक़वा धारण कर और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मान । निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝٣

और उसका अनुसरण कर जो तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से वह्इ किया जाता है। जो तुम करते हो निःसन्देह अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है ।3।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝٤

और अल्लाह पर भरोसा कर और अल्लाह ही कार्यसाधक के रूप में पर्याप्त है ।4।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاۗءَكُمْ اَبْنَاۗءَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝٥

अल्लाह ने किसी मनुष्य के सीने में दो दिल नहीं बनाए । इसी प्रकार उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिन्हें तुम माँ कह कर अपने ऊपर हराम कर लेते हो तुम्हारी माँ नहीं बनाया । न ही तुम्हारे मुँह बोले (पुत्रों) को तुम्हारे पुत्र बनाया है। यह केवल तुम्हारे मुँह की बातें हैं । और अल्लाह सच्ची (बात) वर्णन करता है और वही है जो (सीधे) मार्ग की ओर हिदायत देता है ।5।

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَاۗىِٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَاۗءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي

उनको उनके पिताओं के नाम के साथ पुकारा करो, यह अल्लाह के निकट अधिक न्यायपूर्ण है । और यदि तुम उनके

الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۭ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٦

पिताओं को न जानते हो तो फिर वे धार्मिक मामलों में तुम्हारे भाई और तुम्हारे मित्र हैं । और इस विषय में जो तुम ग़लती कर चुके हो उसका तुम पर कोई पाप नहीं । हाँ जो तुम्हारे दिलों ने जान-बूझ कर कमाया वह (पाप) है । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।6।

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ۭ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰۗىِٕكُمْ مَّعْرُوْفًا ۭ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝٧

नबी मोमिनों पर उनकी अपनी जानों से भी अधिक हक़ रखता है और उसकी पत्नियाँ उनकी माताएँ हैं । और जहाँ तक रक्त संबंधियों की बात है तो अल्लाह की पुस्तक में (उल्लेखित आदेशानुसार) उनमें से कुछ दूसरे मोमिनों और मुहाजिरों की अपेक्षा एक-दूसरे से अधिक प्राथमिकता रखते हैं । सिवाए इसके कि तुम अपने मित्रों से (उपकार स्वरूप) कोई अच्छा बर्ताव करो । यह सब बातें पुस्तक में लिखी हुई मौजूद हैं ।7।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝٨ۙ

और जब हमने नबियों से उनकी प्रतिज्ञा और तुझ से भी और नूह से और इब्राहीम और मूसा और मरियम के पुत्र ईसा से । और हमने उनसे बहुत दृढ़ प्रतिज्ञा ली थी ।8।

لِّيَسْــَٔـلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝٩ۧ ع ١٧

ताकि वह सच्चों से उनकी सच्चाई के संबंध में प्रश्न करे । और काफ़िरों के लिए उसने पीड़ाजनक अज़ाब तैयार किया है ।9। (रुकू $\frac{1}{17}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब

عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۚ﴿۱۰﴾

तुम्हारे पास सेनाएँ आई थीं तो हमने उनके विरुद्ध एक हवा भेजी और ऐसी सेनाएँ भेजीं जिनको तुम देख नहीं रहे थे। और जो तुम करते हो नि:सन्देह अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।10।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ﴿۱۱﴾

जब वे तुम्हारे पास तुम्हारे ऊपर की ओर से भी और तुम्हारे नीचे की ओर से भी चढ़ आए और जब आँखें पथरा गईं और दिल (उछलते हुए) हंसलियों तक जा पहुँचे और तुम लोग अल्लाह पर भाँति-भाँति की धारणा कर रहे थे ।11।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿۱۲﴾

वहाँ मोमिन परीक्षा में डाले गए और कठिन (परीक्षा के) झटके दिए गए ।12।

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۳﴾

और जब मुनाफ़िक़ों ने और उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग था, कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ने हम से धोखे के अतिरिक्त कोई वादा नहीं किया ।13।

وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ؕۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿۱۴﴾

और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा, हे यस्रिब (मदीना) वासियो ! तुम्हारे टिके रहने का कोई अवसर नहीं रहा अत: वापस चले जाओ । और उनमें से एक समूह ने नबी से यह कहते हुए आज्ञा माँगनी शुरू की कि नि:सन्देह हमारे घर असुरक्षित हैं । हालाँकि वे असुरक्षित नहीं थे । वे केवल भागने का इरादा किए हुए थे ।14।*

* अरबी शब्द **और:** का अर्थ जानने के लिए देखें अरबी शब्दकोश अल-मुफ़रदात लि ग़रीबिल क़ुरआन ।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ
سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ
اِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٥﴾

और यदि उन पर उस (बस्ती) की प्रत्येक ओर से चढ़ाई कर दी जाती, फिर उनसे उपद्रव करने को कहा जाता तो वे अवश्य उसे करते । और उस पर मामूली समय के अतिरिक्त अधिक विलम्ब न करते ।15।

وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ
لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ۭ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ
مَسْئُوْلًا ﴿١٦﴾

हालाँकि इससे पूर्व नि:सन्देह वे अल्लाह से प्रतिज्ञा कर चुके थे कि वे पीठें नहीं दिखाएँगे । और अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा अवश्य पूछी जाएगी ।16।

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ
مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٧﴾

तू कह दे कि यदि तुम मृत्यु से अथवा वध किये जाने से भागोगे तो भागना तुम्हें कदापि लाभ नहीं देगा । और इस दशा में तुम्हें अल्पमात्र के अतिरिक्त कुछ भी लाभ नहीं मिलेगा ।17।

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْۗءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۭ
وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا
وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٨﴾

तू पूछ कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है यदि वह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाने का इरादा करे या तुम्हारे हक़ में दया का फ़ैसला करे ? और वे अपने लिए अल्लाह के अतिरिक्त न कोई संरक्षक पाएँगे और न कोई सहायक ।18।

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَاۗىِٕلِيْنَ
لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ
الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ﴿١٩﴾

अल्लाह तुम में से उनको भली-भाँति जानता है जो (जिहाद से) रोकने वाले हैं । और अपने भाइयों को कहते हैं कि हमारी ओर आ जाओ । और वे लड़ाई के लिए बहुत कम आते हैं ।19।

اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ښ فَاِذَا جَاۗءَ الْخَوْفُ
رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ

तुम्हारे विरुद्ध बहुत कंजूसी से काम लेते हैं । अत: जब कोई भय (का अवसर) आता है तू उन्हें देखेगा कि वे

كَالَّذِىۡ يُغۡشٰى عَلَيۡهِ مِنَ الۡمَوۡتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الۡخَوۡفُ سَلَقُوۡكُمۡ بِاَلۡسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الۡخَيۡرِ ؕ اُولٰٓٮِٕكَ لَمۡ يُؤۡمِنُوۡا فَاَحۡبَطَ اللّٰهُ اَعۡمَالَهُمۡ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرًا ﴿۲۰﴾

तेरी ओर इस प्रकार देखते हैं कि उनकी आँखें उस व्यक्ति की भाँति (भय से) घूम रही होती हैं जिस पर मृत्यु की बेहोशी छा गई हो । अत: जब भय जाता रहता है तो भलाई के बारे में कंजूसी करते हुए वे (अपनी) तेज़ ज़बानों से तुम्हें दु:ख पहुँचाते हैं । ये वे लोग हैं जो (वास्तव में) ईमान नहीं लाए। अत: अल्लाह ने उनके कर्म नष्ट कर दिए और यह बात अल्लाह के लिए बहुत सरल है ।20।

يَحۡسَبُوۡنَ الۡاَحۡزَابَ لَمۡ يَذۡهَبُوۡا ۚ وَاِنۡ يَّاۡتِ الۡاَحۡزَابُ يَوَدُّوۡا لَوۡ اَنَّهُمۡ بَادُوۡنَ فِى الۡاَعۡرَابِ يَسۡاَلُوۡنَ عَنۡ اَنۡۢبَآٮِٕكُمۡ ؕ وَلَوۡ كَانُوۡا فِيۡكُمۡ مَّا قٰتَلُوۡۤا اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿۲۱﴾ ع

वे धारणा करते हैं कि सेनाएँ अभी तक नहीं गईं । और यदि सेनाएँ (वापस) आजाएँ तो वे (पछतावा करते हुए) चाहेंगे कि काश वे वीरान स्थलों में बद्दुओं के बीच रहते होते (और) तुम्हारे बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे होते । और यदि वे तुम्हारे बीच होते भी तो बहुत कम ही युद्ध करते ।21। (रुकू $\frac{2}{18}$)

لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِىۡ رَسُوۡلِ اللّٰهِ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنۡ كَانَ يَرۡجُوا اللّٰهَ وَالۡيَوۡمَ الۡاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيۡرًا ﴿۲۲﴾ؕ

नि:सन्देह तुम में से प्रत्येक व्यक्ति जो अल्लाह और परलोक के दिन की आशा रखता है और अल्लाह को बहुत याद करता है, उस के लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है ।22।

وَلَمَّا رَاَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الۡاَحۡزَابَ ۙ قَالُوۡا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمۡ اِلَّاۤ اِيۡمَانًا وَّتَسۡلِيۡمًا ﴿۲۳﴾ؕ

और जब मोमिनों ने सेनाओं को देखा तो उन्होंने कहा, यही तो है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था । और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था और इस (घटना) ने उनको ईमान और आज्ञापालन में ही आगे बढ़ाया ।23।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۙ﴿٢٤﴾

मोमिनों में ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने जिस बात पर अल्लाह से प्रण किया था उसे सच्चा कर दिखाया । अत: उनमें से वह भी है जिसने अपनी मन्नत को पुरा कर दिया । और उनमें से वह भी है जो अभी प्रतीक्षा कर रहा है । और उन्होंने कदापि (अपने आचरण में) कोई परिवर्तन नहीं किया ।24।

لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۚ﴿٢٥﴾

(यह इस कारण है) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का प्रतिफल दे और मुनाफ़िक़ों को यदि चाहे तो अज़ाब दे अथवा प्रायश्चित को स्वीकार करते हुए उन पर झुके । नि:सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।25।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۗ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۚ﴿٢٦﴾

और जिन्होंने इनकार किया अल्लाह ने उन लोगों को उनके क्रोध सहित इस प्रकार लौटा दिया कि वे कोई भलाई प्राप्त न कर सके । और युद्ध में अल्लाह मोमिनों के पक्ष में पर्याप्त हो गया । और अल्लाह बहुत शक्तिशाली और पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।26।

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۚ﴿٢٧﴾

और अहले किताब में से जिन्होंने उनकी सहायता की थी उसने उन लोगों को उनके दुर्गों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में रोब डाल दिया । उनमें से एक गिरोह की तुम हत्या कर रहे थे और एक गिरोह को बन्दी बना रहे थे ।27।*

* इसमें अहज़ाब युद्ध के समय धोखाबाज़ी करने वाले यहूदियों का उल्लेख है । यद्यपि उन्होंने बहुत मज़बूत प्रतिरक्षात्मक दुर्ग बनाए हुए थे परन्तु जब अल्लाह तआला ने उन पर मोमिनों को विजयी→

وَ اَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَ دِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَ اَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۸﴾

और तुम्हें उनकी धरती और उनके मकानों और उनके धन का उत्तराधिकारी बना दिया और ऐसी धरती का भी जिसे तुमने (उस समय तक) पैरों तले रौंदा नहीं था। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है।28।*

(रुकू $\frac{3}{19}$)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۲۹﴾

हे नबी ! अपनी पत्नियों से कह दे, कि यदि तुम संसार का जीवन और उसकी सुन्दरता को चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें आर्थिक लाभ पहुँचाऊँ। और उत्तम ढंग से तुम्हें विदा करूँ।29।

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۰﴾

और यदि तुम अल्लाह को और उसके रसूल को और परलोक के घर को चाहती हो तो निःसन्देह अल्लाह ने तुम में से अच्छे कर्म करने वालियों के लिए बहुत बड़ा प्रतिफल तैयार किया है।30।

يٰنِسَآءَ النَّبِىِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۱﴾

हे नबी की पत्नियो ! जो भी तुम में से खुली-खुली अश्लीलता में पड़ेगी उसके लिए अज़ाब को दोगुना बढ़ा दिया जाएगा और यह बात अल्लाह के लिए सरल है।31।

←बनाने का निर्णय कर लिया तो वे दुर्ग उनके कुछ काम न आए बल्कि वे स्वयं अपने हाथों से उनको ध्वस्त करने लगे।

* इसमें ऐसे इलाकों पर विजय पाने की भविष्यवाणी है जहाँ अभी तक मुसलमानों को पैर रखने का अवसर नहीं मिला। वास्तव में इसमें भविष्यवाणियों का एक लम्बा क्रम है।

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगी और पुण्यकर्म करेगी हम उसे उसका प्रतिफल दो बार देंगे । और उसके लिए हमने बहुत सम्मानजनक जीविका तैयार की है ।32।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾

हे नबी की पत्नियो ! तुम कदापि साधारण स्त्रियों जैसी नहीं हो बशर्ते कि तुम तक़वा धारण करो । अत: हाव भाव के साथ बात न किया करो अन्यथा वह व्यक्ति जिस के मन में रोग है, (अनुचित) लालसा करने लगेगा । और अच्छी बात कहा करो ।33।

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾

और अपने घरों में ही रहा करो और बीती हुई अज्ञानता-युगीन श्रृंगार की भाँति श्रृंगार को प्रदर्शित न किया करो । और नमाज़ को क़ायम करो और ज़क़ात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो । हे (नबी) के घर वालो ! नि:सन्देह अल्लाह चाहता है कि तुम से प्रत्येक प्रकार की गंदगी को दूर कर दे और तुम्हें अच्छी प्रकार से पवित्र कर दे ।34।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾ ع

और अल्लाह की आयतों और विवेकपूर्ण बातों को याद रखो जिनकी तुम्हारे घरों में चर्चा की जाती है । नि:सन्देह अल्लाह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी (और) ज्ञान रखने वाला है ।35। (रुकू $\frac{4}{1}$)

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ

नि:सन्देह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ और मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ और आज्ञाकारी पुरुष

وَالصّٰدِقِيْنَ وَ الصّٰدِقٰتِ وَ الصّٰبِرِيْنَ
وَالصّٰبِرٰتِ وَ الْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ
وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ
وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ
وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا
وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً
وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝٣٦

और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ और सत्यवादी पुरुष और सत्यवादिनी स्त्रियाँ और धैर्यशील पुरुष और धैर्यशीला स्त्रियाँ और विनम्रता अपनाने वाले पुरुष और विनम्रता अपनाने वाली स्त्रियाँ और दान करने वाले पुरुष और दान करने वाली स्त्रियाँ और रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ और अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करने वाले पुरुष और स्त्रियाँ और अल्लाह को अधिकता से याद करने वाले पुरुष और अधिकता से याद करने वाली स्त्रियाँ, अल्लाह ने इन सब के लिए क्षमादान और महान प्रतिफल तैयार किए हुए हैं ।36।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ
الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝٣٧ؕ

और किसी मोमिन पुरुष और किसी मोमिन स्त्री के लिए उचित नहीं कि जब अल्लाह और उसके रसूल किसी बात का निर्णय कर दें तो अपने मामले में उनको (स्वयं) निर्णय करने का अधिकार शेष रहे और जो अल्लाह और उसके रसूल की अवमानना करे वह बहुत खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ता है ।37।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ
وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ
مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ
تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا

और जब तू उसे, जिसको अल्लाह ने पुरस्कृत किया और तूने भी उसे पुरस्कृत किया, कह रहा था कि अपनी पत्नी को रोके रख (अर्थात् तलाक़ न दे) और अल्लाह का तक़्वा धारण कर । और तू अपने मन में वह बात छुपा रहा था जिसे अल्लाह प्रकट करने वाला था । और तू लोगों से भयभीत था जबकि अल्लाह इस बात का अधिक अधिकार रखता है कि

زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝٣٨

तू उससे भय करे । अत: जब ज़ैद ने उस (स्त्री) के विषय में अपनी इच्छा पूरी कर ली (और उसे तलाक़ दे दी), हमने उसे तुझ से ब्याह दिया ताकि मोमिनों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के विषय में कोई उलझन और दुविधा न रहे, जब वे (अर्थात मुँह बोले बेटे) उनसे अपनी आवश्यकता पूरी कर चुके हों (अर्थात उन्हें तलाक़ दे चुके हों) । और अल्लाह का निर्णय हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला है ।38।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ۭ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَۨا ۝٣٩

अल्लाह ने नबी के लिए जो अनिवार्य कर दिया है, उस के विषय में उस पर कोई उलझन नहीं होनी चाहिए । अल्लाह के उस नियम के रूप में जो पहले लोगों में भी जारी किया गया । और अल्लाह का निर्णय एक जचे-तुले अंदाज़ में हुआ करता है ।39।

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٤٠

(यह अल्लाह का नियम उन लोगों के पक्ष में बीत चुका है) जो अल्लाह के संदेश को पहुँचाया करते थे और उससे डरते रहते थे और अल्लाह के सिवा किसी और से नहीं डरते थे । और अल्लाह हिसाब लेने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है ।40।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝٤١ ع

मुहम्मद तुम्हारे (जैसे) पुरुषों में से किसी का पिता नहीं बल्कि वह अल्लाह का रसूल है और सब नबियों का ख़ातम (अर्थात मुहर) है। और अल्लाह प्रत्येक विषय का ख़ूब ज्ञान रखने वाला है ।41। (रुकू $\frac{5}{2}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿٤٢﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का अधिकतापूर्वक स्मरण किया करो ।42।

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٣﴾

और प्रात: भी और सायं भी उसका गुणगान करो ।43।

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٤﴾

वही है जो तुम पर कृपा भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी, ताकि वह तुम्हें अन्धकारों से प्रकाश की ओर ले जाए । और वह मोमिनों के हक़ में बार-बार कृपा करने वाला है ।44।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٥﴾

जिस दिन वे उससे मिलेंगे उनका अभिवादन सलाम होगा । और उस (अल्लाह) ने उनके लिए बहुत सम्मान-जनक प्रतिफल तैयार कर रखा है ।45।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٦﴾

हे नबी ! नि:सन्देह हमने तुझे एक गवाह और एक शुभ-समाचार दाता और एक सतर्ककारी के रूप में भेजा है ।46।

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٧﴾

और अल्लाह की ओर उसके आदेश से बुलाने वाले और एक प्रकाशकर सूर्य के रूप में ।47।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٨﴾

और मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे कि (यह) उनके लिए अल्लाह की ओर से बहुत बड़ी कृपा है ।48।

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٩﴾

और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मान और उनके कष्ट पहुँचाने की ओर ध्यान न दे । और अल्लाह पर भरोसा कर और अल्लाह ही कार्यसाधक के रूप में पर्याप्त है ।49।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम मोमिन स्त्रियों से निकाह करो फिर

ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا
لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ
فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٥٠﴾

उनको छूने से पूर्व ही उन्हें तलाक़ दे दो तो उनके ऊपर तुम्हारी ओर से कोई इद्दत नहीं जिसकी तुम गिनती रखो । अत: उन्हें कुछ धन दो और उन्हें अच्छे ढंग से विदा करो ।50।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ
الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَ مَا مَلَكَتْ
يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ
عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَ بَنٰتِ خَالِكَ
وَ بَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫
وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ
اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۚ خَالِصَةً لَّكَ
مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا
عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥١﴾

हे नबी ! नि:सन्देह हमने तेरे लिए तेरी वह पत्नियाँ वैध ठहरा दी हैं जिनके महर तू उन्हें दे चुका है और वे स्त्रियाँ भी जो तेरे अधीन हैं । अर्थात् जो अल्लाह ने तुझे ग़नीमत के रूप में प्रदान की हैं । और तेरे चाचा की पुत्रियाँ और तेरी बुआओं की पुत्रियाँ और तेरे मामुओं की पुत्रियाँ और तेरी मौसियों की पुत्रियाँ जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की है । और प्रत्येक मोमिन स्त्री यदि वह अपने आप को नबी के लिए समर्पित कर दे, इस शर्त के साथ कि नबी उससे निकाह करना पसंद करे । (यह आदेश) मोमिनों से हट कर केवल तेरे लिए है । हमने उन की पत्नियों के बारे में और उनके अधीनस्थ स्त्रियों के बारे में जो उन पर अनिवार्य किया है उसका हमें ज्ञान है । (यह स्पष्ट किया जा रहा है) ताकि (उनके बारे में) तुझ पर कोई तंगी न रहे । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाले है ।51।

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَ تُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ
مَنْ تَشَآءُ ؕ وَ مَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ

तू उनमें से जिन्हें चाहे छोड़ दे और जिन्हें चाहे अपने पास रख । और जिन्हें तू छोड़ चुका है उनमें से किसी को यदि फिर (वापस लेना) चाहे तो तुझ पर

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَاۤ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥٢﴾

कोई पाप नहीं । यह इस बात के बहुत निकट है कि उनकी आँखें ठण्डी हों और वे शोक में न पड़ें और वे सब उस पर संतुष्ट हो जाएँ जो तू उन्हें दे । और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) बहुत सहनशील है ।52।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَاۤ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ﴿٥٣﴾

इसके पश्चात तेरे लिए (और) स्त्रियाँ वैध नहीं और न यह वैध है कि इन (पत्नियों) को बदल कर तू और पत्नियाँ कर ले चाहे उनकी सुन्दरता तुझे कितना ही पसन्द क्यों न आए । परन्तु जो तेरे अधीन हैं वे अपवाद हैं । और अल्लाह हर बात का निरीक्षक है ।53।

(रुकू $\frac{6}{3}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ۚ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۫ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ۚ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ۚ

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! नबी के घरों में प्रवेश न किया करो, सिवाए इसके कि तुम्हें भोजन करने का निमंत्रण दिया जाए । परन्तु इस प्रकार नहीं कि उसके पकने की प्रतीक्षा करते रहो । परन्तु (भोजन तैयार होने पर) जब तुम्हें बुलाया जाए तो प्रवेश करो और जब तुम भोजन कर चुको तो वहाँ से चले जाओ और वहाँ (बैठे) बातों में न लगे रहो । यह (बात) नि:सन्देह नबी के लिए कष्टदायक है परन्तु वह तुम से (इसको कहने से) झिझकता है परन्तु अल्लाह सच बात से नहीं झिझकता । और यदि तुम उन (अर्थात नबी की पत्नियों) से कोई वस्तु माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगा करो । यह तुम्हारे और

ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ۗ وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ۗ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿۵۴﴾

उनके दिलों के लिए अधिक पवित्र (अचारण शैली) है । और तुम्हारे लिए उचित नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को दुःख पहुँचाओ । और न ही यह वैध है कि उसके पश्चात कभी उसकी पत्नियों (में से किसी) से विवाह करो । निःसन्देह अल्लाह के निकट यह बहुत गम्भीर बात है ।54।

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۵۵﴾

यदि तुम कोई बात प्रकट करो अथवा उसे छिपाओ तो निःसन्देह अल्लाह हर एक बात का ख़ूब ज्ञान रखने वाला है ।55।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿۵۶﴾

इन (नबी की पत्नियों) पर अपने पिताओं के समक्ष आने में कोई पाप नहीं न अपने पुत्रों के, न अपने भाइयों के, न अपने भतीजों के, न अपने भाँजों के, न अपनी (जैसी मोमिन) स्त्रियों के, न ही उनके (समक्ष आने में कोई पाप है) जो उनके अधीन हैं । और (हे नबी की पत्नियो !) अल्लाह का तक़्वा धारण करो । निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु का निरीक्षक है ।56।

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۗ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۷﴾

निःसन्देह अल्लाह और उसके फ़रिश्ते (इस) नबी पर कृपा भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम भी उस पर दरूद और बहुत-बहुत सलाम भेजो ।57।*

---

* हज़रत मसीह मौऊद अलै. इस पवित्र आयत के बारे में फ़र्माते हैं :-
''इस आयत से स्पष्ट होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कर्म ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उनकी प्रशंसा अथवा गुणों को सीमाबद्ध करने के लिए किसी शब्द को विशेष नहीं किया । शब्द तो मिल सकते थे परन्तु स्वयं उल्लेख नहीं किया । अर्थात आप सल्ल. के सत्कर्मों की प्रशंसा असीमित थी । इस प्रकार की आयत किसी और नबी की शान में प्रयोग नहीं की । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आत्मा में वह सत्य और निष्ठा थी कि आप सल्ल. के→

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ۝٥٨

नि:सन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उन पर इह लोक में भी और परलोक में भी ला'नत डाली है । और उसने उनके लिए अपमान जनक अज़ाब तैयार किया है ।58।

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَّإِثْمًا مُّبِينًا ۝٥٩ ع

और वे लोग जो मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को बिना उस (अपराध) के जो उन्होंने किया हो कष्ट पहुँचाते हैं तो (मानो) उन्होंने एक बड़े दोषारोपण और खुल्लम-खुल्ला पाप का बोझ (अपने ऊपर) उठा लिया ।59।

(रुकू $\frac{7}{4}$)

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ۚ ذٰلِكَ أَدْنٰٓى أَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝٦٠

हे नबी ! तू अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और मोमिनों की स्त्रियों से कह दे कि वे अपनी चादरों को अपने ऊपर झुका दिया करें । यह इस बात के अधिक निकट है कि वे पहचानी जायँ और उन्हें कष्ट न दिया जाए । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।60।*

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَآ

यदि मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और वे लोग जो मदीना में झूठी ख़बरें उड़ाते फिरते हैं, (इससे) नहीं रुकेंगे तो हम अवश्य तुझे (उनके बुरे अन्त के लिए) उनके पीछे लगा देंगे ।

←कर्म अल्लाह की दृष्टि में इतने प्रिय थे कि अल्लाह तआला ने सदा के लिए यह आदेश दिया कि भविष्य में लोग कृतज्ञता स्वरूप दरूद भेजें ।'' (मल्फ़ूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलै. प्रथम भाग, पृष्ठ 24, रब्वा प्रकाशन)

* इस आयत में पर्दे का जो आदेश दिया गया है इससे मालूम होता है कि पर्दे के द्वारा ग़ैर मुस्लिम स्त्रियों की तुलना में मुसलमान स्त्रियों की एक पहचान रखी गई है । अन्यथा यहूदी शरारत से कह सकते थे कि हमें पता नहीं था कि यह मुसलमान स्त्री है इस लिए हमने इसे छेड़ दिया ।

اِلَّا قَلِيْلًا ۞

फिर वे इस (शहर) में तेरे पड़ोस में थोड़े समय से अधिक नहीं ठहर सकेंगे ।61।

مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ۞

(ये) धुतकारे हुए, जहाँ कहीं भी पाएँ जाएँ पकड़ लिए जाएँ और अच्छी प्रकार से वध किए जाएँ ।62।*

سُنَّةَ اللّٰهِ فِى الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۞

(यह) अल्लाह का नियम उन लोगों के साथ भी था जो पहले गुज़र चुके हैं । और तू अल्लाह के नियम में कदापि कोई परितवर्तन नहीं पाएगा ।63।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ۞

लोग तुझ से निश्चित घड़ी के विषय में पूछते हैं । तू कह दे कि उसका ज्ञान केवल अल्लाह के पास है । और तुझे क्या पता कि सम्भवत: (वह) घड़ी निकट ही हो ! ।64।

اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ۞

नि:सन्देह अल्लाह ने काफ़िरों पर ला'नत डाली है और उनके लिए भड़कती हुई अग्नि तैयार की है ।65।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۞

उसमें वे दीर्घ अवधि तक रहने वाले होंगे। न (उसमें अपने लिए) वे कोई संरक्षक पाएँगे और न कोई सहायक ।66।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۞

जिस दिन उनके चेहरे नरक में औंधे किए जाएँगे वे कहेंगे काश ! हम अल्लाह का आज्ञापालन करते और रसूल का आज्ञापालन करते ।67।

وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا

और वे कहेंगे हे हमारे रब्ब ! नि:सन्देह हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का

* आयत 61-62 इन आयतों में मुनाफ़िक़ों और यहूदियों में से उन उपद्रवियों का उल्लेख है जो मदीना में मुसलमानों के विरुद्ध झूठी मनगढ़ंत बातें फैलाते रहते थे । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह ने वादा किया है कि तू उन पर विजयी होगा और वे तेरे नगर को छोड़ कर चले जाएँगे । उस समय ये अल्लाह की ला'नत से ग्रसित होंगे और ऐसे हालात होंगे कि जहाँ कहीं भी वे पाए जाएँ उनकी पकड़-धकड़ करना और उनका वध करना उचित होगा ।

فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ۝٦٨

आज्ञापालन किया था । अतः उन्होंने हमें पथभ्रष्ट कर दिया ।68।

رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ۝٦٩ ع

हे हमारे रब्ब ! उन्हें दुगना अज़ाब दे और उन पर बहुत बड़ी ला'नत डाल।69। (रुकू $\frac{8}{5}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ۝٧٠

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! उन लोगों की भाँति न बनो जिन्होंने मूसा को दुःख पहुँचाया । फिर जो उन्होंने कहा उससे अल्लाह ने उसे बरी कर दिया और अल्लाह के निकट वह सम्माननीय था ।70।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٧١

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक़्वा धारण करो और साफ़-सीधी बात किया करो ।71।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٧٢

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्मों का सुधार कर देगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा । और जो भी अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे तो निःसन्देह उसने एक बड़ी सफलता को प्राप्त कर लिया ।72।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۝٧٣

निःसन्देह हमने अमानत को आसमानों और धरती और पर्वतों के समक्ष रखा, तो उन्होंने उसे उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए जबकि सर्वगुण सम्पन्न मानव ने उसे उठा लिया । निःसन्देह वह (अपने आप पर) बहुत अत्याचार करने वाला (और इस उत्तरदायित्व के परिणाम से) बिल्कुल परवाह न करने वाला था ।73।*

---

* इस पवित्र आयत में अन्य समस्त नबियों पर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़ाई का वर्णन है । क्योंकि क़ुरआनी शिक्षा स्वरूप जो अमानत अवतरित की जानी थी हज़रत→

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٧٤ ع

ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों तथा मुश्रिक़ पुरुषों और मुश्रिक़ स्त्रियों को अज़ाब दे । और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुके । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।74। (रुकू $\frac{9}{6}$)

←मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले किसी नबी को यह सामर्थ्य नहीं था कि इस अमानत का बोझ उठा सके । अत: अमानत से अभिप्राय पवित्र क़ुरआन है । अरबी वाक्य **ज़लूमन जहूलन्** (स्वयं पर अत्याचार करने वाला और परिणाम से बेपरवाह) का कुछ व्याख्याकार बिल्कुल ग़लत अनुवाद करते हैं । **ज़लूमन** से अभिप्राय किसी अन्य पर नहीं बल्कि स्वयं अपनी जान पर अत्याचार करने वाला है जिसने इतना बड़ा बोझ उठा लिया । और **जहूलन** से अभिप्राय बहुत बड़ा अज्ञानी नहीं, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ यह है कि जिसने इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी संभाली और फिर इसके परिणाम से बे-परवाह हो गया । अत: हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर जितने भी अत्याचार हुए हैं क़ुरआन के अवतरण के पश्चात ही आरम्भ हुए हैं ।

34– सूर: सबा

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 55 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरम्भ इस आयत से होता है कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों का स्वामी है और धरती भी उसी की स्तुति के गीत गाती है । और परलोक में भी उसी की स्तुति के गीत गाए जाएँगे । यहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर स्पष्ट संकेत है कि आपके युग में आपके सच्चे सेवक धरती और आकाश को अल्लाह की स्तुति और उसके गुणगान से भर देंगे ।

इसके पश्चात पर्वतों की व्याख्या करते हुए यह भी बताया गया है कि पर्वतों से अभिप्राय कठिन परिश्रमी पर्वतीय जातियाँ भी होती हैं जैसा कि हज़रत दाऊद अलै. के लिए प्रत्यक्ष रूप में पहाड़ों को काम पर नहीं लगाया गया बल्कि पहाड़ों पर बसने वाली परिश्रमी जातियों को सेवा में लगा दिया गया था । अत: पिछली सूर: के अंत पर जिन पर्वतों का उल्लेख है उनकी व्याख्या यहाँ कर दी गई ।

इस वर्णन के पश्चात् वे **जिन्न** जो हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अलै. के लिए सेवा पर लगाए गए थे और उनसे वह बहुत भारी काम लिया करते थे, उनकी व्याख्या की गई कि ये **जिन्न** मनुष्य रूपी जिन्न थे । ऐसे जिन्न नहीं थे जिनको साधारणत: आग के शोलों से बना हुआ समझा जाता है । आग तो पानी में प्रवेश करते ही भस्म हो जाती है परन्तु इन जिन्नों के बारे में क़ुरआन में दूसरे स्थल पर कहा गया है कि ये जिन्न ज़ंज़ीरों से बंधे हुए थे । हालाँकि आग के जिन्न तो ज़ंज़ीरों से बांधे नहीं जा सकते । और वे समुद्र में डुबकी लगा कर मोती निकालने का काम करते थे । हालाँकि आग के बने हुए जिन्न तो समुद्र में डुबकी नहीं मार सकते । ये सारी बातें दाऊद अलै. के वंशज के लिए कृतज्ञता प्रकट करना आवश्यक बनाती थीं । अत: हज़रत सुलैमान अलै. ने जो शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से मूलत: दाऊद के वंशज थे, इस कृतज्ञता का हक़ अदा किया । परन्तु जब हज़रत सुलैमान अलै. को यह सूचना दी गई कि उनका पुत्र जो उनके पश्चात सिंहासन पर आसीन होगा एक ऐसे शरीर की भाँति होगा जिसमें कोई आध्यात्मिक जीवन नहीं होगा । तो उस समय उन्होंने यह दुआ की कि हे अल्लाह ! इस दशा में उस समय इस शासन को समाप्त कर दे । मुझे इस भौतिक साम्राज्य से कोई मतलब नहीं । अत: बिल्कुल ऐसा ही हुआ । हज़रत सुलैमान अलै. के पश्चात जब उनका पुत्र उनका उत्तराधिकारी हुआ तो धीरे-धीरे इन्हीं पर्वतीय जातियों ने यह जानकर कि एक बुद्धिहीन व्यक्ति उन पर शासन कर रहा है उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और हज़रत सुलैमान अलै. का भौतिक साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया ।

जब बड़े-बड़े साम्राज्य टूटा करते हैं तो उस साम्राज्य के नागरिक परस्पर प्रेम के कारण यह दुआ करने के स्थान पर कि हे अल्लाह ! हमें एक दूसरे के निकट रख, वे इसके विपरीत घृणावश एक दूसरे से दूर हटने की दुआएँ करते हैं । तो ऐसी दशा में वे किस्सा-कहानी स्वरूप बना दिए जाते हैं । और अल्लाह के क्रोध की चक्की तले पीसे जाते हैं । और फिर उनकी बस्तियों में इतनी दूरी डाल दी जाती है कि उनके बीच एक अद्‌भुत वीरानी का दृश्य दिखाई देता है जिसमें झाऊ आदि झाड़ियाँ उगती हैं । हालाँकि इससे पूर्व उनको वैभवपूर्ण बाग़ान और खेतियाँ प्रदान की गई थीं ।

पिछली सूर: के अन्त पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस धैर्य की शिक्षा दी गई थी अब फिर उसी की पुनरावृत्ति की गई है कि तू प्रत्येक दशा में धैर्य करता चला जा । फिर एक बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी देकर आप सल्ल. के दिल को दृढ़ता प्रदान की गई कि पहले के बड़े बड़े साम्राज्य तो छोटी-छोटी जातियों की भाँति हैं परन्तु तुझे अल्लाह तआला ने समस्त संसार की आध्यात्मिक राजसत्ता प्रदान की है ।

इसके बाद विरोधियों को दुआ के द्वारा अल्लाह तआला से निर्णय चाहने की ओर प्रेरित किया गया है कि वे अकेले-अकेले अथवा दो-दो होकर अल्लाह के समक्ष खड़े होकर दुआएँ करें और फिर विचार करें कि ज्ञान और बुद्धि का यह राजकुमार जिसको क़ुरआन प्रदान किया गया है कदापि पागल नहीं है ।

फिर फ़र्माया, तू इस बात पर विचार कर कि जब वे अत्यन्त बेचैन होंगे और वह बेचैनी दूर होने वाली नहीं होगी तो वे निकट के स्थान से पकड़े जाएँगे । निकट का स्थान तो प्राणस्नायु है । अर्थात् उनकी जान के अन्दर से उनको कठोर अज़ाब में डाला जाएगा । अगली आयत में दूर के मकान से इस ओर संकेत मिलता है कि ऐसे लोगों के लिए प्रायश्चित करना बहुत दूर की बात है । जब अपने साथ घटने वाली घटनाओं पर भी उनको प्रायश्चित करने की प्रेरणा नहीं मिली तो अल्लाह की पकड़ के भय से, जिसे वे बहुत दूर देख रहे हैं उन्हें सम्यक् रूप से प्रायश्चित करने का सामर्थ्य कैसे मिल सकता है। ऐसे इनकार करने वालों और उनकी अनुचित इच्छाओं की प्राप्ति के बीच सदैव एक रोक डाल दी जाती है । जैसा कि उनसे पूर्व युगीन इनकार करने वालों के साथ होता रहा है परन्तु वे अभागे सदा शंकाओं में ही पड़े रहते हैं ।

☆☆☆

سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَّ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ سِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ②

समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है । जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो धरती में है । और परलोक में भी सारी की सारी प्रशंसा उसी की होगी और वह बहुत विवेकशील (और) सदा ख़बर रखता है ।2।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ③

वह जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता है और जो उससे निकलता है और जो आकाश से उतरता है और जो उसमें चढ़ जाता है । और वह बार-बार दया करने वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।3।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَ رَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ④ۙ

जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं, निर्धारित घड़ी हम पर नहीं आएगी । तू कह दे, क्यों नहीं ? मेरे रब्ब की क़सम! जो अदृश्य विषय का ज्ञाता है, वह (घड़ी) अवश्य तुम पर आएगी । उस (अर्थात मेरे रब्ब) से आसमानों और धरती में कण भर भी अथवा उससे छोटी और न उससे बड़ी कोई वस्तु छिपी नहीं रहती, परन्तु वह एक सुस्पष्ट पुस्तक में (लिपिबद्ध) है ।4।

لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

ताकि वह उन लोगों को प्रतिफल दे जो ईमान लाए और नेक कर्म किये । यही वे

أُولَٰٓئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ٥

लोग हैं कि उनके लिए क्षमादान और सम्मानजनक जीविका है ।5।

وَالَّذِينَ سَعَوْ فِيٓ ءَايَٰتِنَا مُعَٰجِزِينَ أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ٦

और वे लोग जो हमारे चिह्नों के विषय में (हमें) असमर्थ करने का प्रयत्न करते हुए दौड़े फिरते हैं, यही वे लोग हैं जिनके लिए दिल दहला देने वाले अज़ाब में से एक पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।6।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِيٓ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيٓ إِلَىٰ صِرَٰطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ٧

और वे लोग जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है वे देख लेंगे कि जो कुछ तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से उतारा गया है वही सत्य है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाले, प्रशंसा के योग्य (अल्लाह) के मार्ग की ओर मार्गप्रदर्शन करता है ।7।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ٨

और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति की सूचना दें जो तुम्हें बताएगा कि जब तुम (मरने के बाद) पूर्णतया चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जाओगे तो फिर तुम अवश्य एक नवीन उत्पत्ति के रूप में (प्रविष्ट) किए जाओगे ।8।

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَم بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْءَاخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَٰلِ الْبَعِيدِ ٩

क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है अथवा उसे पागलपन हो गया है ? नहीं, वास्तविकता यह है कि वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते अज़ाब में पड़े हैं । और बहुत दूर की पथभ्रष्टता में (पड़कर भटक रहे) हैं ।9।

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُم مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِن نَّشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ

क्या उन्होंने आकाश और धरती (में प्रकट होने वाले चिह्नों) की ओर नहीं देखा जो उनके समक्ष हैं अथवा उनसे पहले गुज़र चुके हैं । यदि हम चाहें तो उन्हें धरती में धंसा दें अथवा उनपर

عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝١٠ ع

आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दें। नि:सन्देह इसमें हर उस भक्त के लिए जो झुकने वाला है, एक बहुत बड़ा चिह्न है।10। (रुकू $\frac{1}{7}$)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۗ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۝١١

और नि:सन्देह हमने दाऊद को अपनी ओर से एक बड़ी कृपा प्रदान की थी। (जब यह आदेश दिया कि) हे पर्वतो ! इसके साथ झुक जाओ और हे पक्षियो ! तुम भी। और हमने उसके लिए लोहे को नरम कर दिया।11।

اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۗ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝١٢

(और दाऊद से कहा) कि तू शरीर को पूर्ण रूप से ढाँपने वाले कवच बना और (उनके) घेरे तंग रख। और तुम सब पुण्यकर्म करो। नि:सन्देह जो कुछ तुम करते हो मैं उस पर गहन दृष्टि रखने वाला हूँ।12।*

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ۗ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ

और (हमने) सुलैमान के लिए हवा (को काम पर लगा दिया)। उसकी प्रात:कालीन यात्रा महीने भर (की यात्रा) के बराबर थी और सांयकालीन यात्रा भी महीने भर (की यात्रा) के बराबर थी। और हमने उसके लिए तांबे का स्रोत बहा दिया। और जिन्नों

---

* आयत 11-12 : इन आयतों में पर्वतों को सेवाधीन करने से अभिप्राय वे परिश्रमी पहाड़ी जातियाँ हैं जिन पर हज़रत दाऊद अलै. को विजय प्राप्त हुई और उसके परिणाम स्वरूप उन्होंने बहुत भारी भरकम काम आप के लिए किया। पक्षियों से अभिप्राय सम्भवत: वे नेक मनुष्य हैं जो आप पर ईमान लाए। उन्हें आध्यात्मिक रूप में पक्षी कहा गया है।

एक और वरदान आप को यह प्रदान किया गया कि आपको लोहा पिघलाने और उससे लाभजनक कार्य साधने की कला प्रदान की गई। युद्ध में लोहे के छल्लों से निर्मित कवच आप ही के समय से प्रचलित हुए हैं। हज़रत दाऊद अलै. को यह भी निर्देश दिया गया था कि कवच बड़े घेरों वाले न हों बल्कि छोटे-छोटे घेरों वाले हों। यदि उन के युग से पहले लौह-कवच बनाए भी जाते थे तो ये विशेष तंग घेरों वाले कवचों का निर्माण तो केवल हज़रत दाऊद अलै. के युग से ही आरम्भ हआ था।

بِاِذۡنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنۡ یَّزِغۡ مِنۡهُمۡ عَنۡ اَمۡرِنَا نُذِقۡهُ مِنۡ عَذَابِ السَّعِیۡرِ ﴿۱۳﴾

(अर्थात कठोर परिश्रमी पहाड़ी जातियों) में से कुछ को (सेवाधीन कर दिया) जो उसके सामने उसके रब्ब की आदेश से परिश्रम पूर्वक काम करते थे । और उनमें से जो भी हमारी आज्ञा का उल्लंघन करेगा उसे हम धधकती हुई अग्नि का अज़ाब चखाएँगे ।13।*

یَعۡمَلُوۡنَ لَهٗ مَا یَشَآءُ مِنۡ مَّحَارِیۡبَ وَتَمَاثِیۡلَ وَجِفَانٍ کَالۡجَوَابِ وَقُدُوۡرٍ رّٰسِیٰتٍ ؕ اِعۡمَلُوۡۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُکۡرًا ؕ وَقَلِیۡلٌ مِّنۡ عِبَادِیَ الشَّکُوۡرُ ﴿۱۴﴾

वह जो चाहता था वे उसके लिए बनाते थे (अर्थात्) बड़े-बड़े दुर्ग और मूर्तियाँ और तालाबों की भाँति बड़े-बड़े परात और एक ही जगह पड़ी रहने वाली (भारी) देगें । हे दाऊद के वंशज ! (अल्लाह की) कृतज्ञता प्रकट करते हुए (कृतज्ञता की मर्यादानुरूप) काम करो । और मेरे भक्तों में से थोड़े हैं जो (वास्तव में) कृतज्ञता प्रकट करने वाले हैं ।14।

---

* आयत संख्या 13-14 : हवाओं को हज़रत सुलैमान अलै. के अधीन करने का यह अर्थ नहीं है कि आपने कोई उड़न-खटोला अविष्कार किया था, जैसा कि कुछ व्याख्याकार यह कथा वर्णन करते हैं। बल्कि वस्तुत: यहाँ समुद्र के तट पर चलने वाली तेज़ हवाओं का वर्णन है जो एक महीने के पश्चात दिशा बदल लेती थीं । उन हवाओं की शक्ति से बादबानी जहाज़ों का तेज़ी से चलना और फिर वापिस लौटना ही इस आयत का अभिप्राय है ।

हज़रत दाऊद अलै. को लोहे पर प्रभुत्व प्रदान किया गया था । जबकि हजरत सुलैमान अलै. को एक उच्च कोटि की धातु अर्थात तांबे के खान खोदने और उसको विभिन्न प्रकार से प्रयोग करने की कला सिखाई गई । जिन जिन्नों का यहाँ उल्लेख है उनका इससे पहले हज़रत दाऊद अलै. के प्रकरण में भी उल्लेख हो चुका है । इससे कठोर परिश्रमी पहाड़ी जातियाँ भाव हैं । अगली आयत में यह वर्णन है कि ये इतने बड़े-बड़े श्रमसाध्य काम करते थे जो साधारण उन्नतिशील जातियों के लिए संभव न थे । इसकी व्याख्या करते हुए पहले बड़े-बड़े दुर्गों का वर्णन है फिर मूर्तियों का । फिर तालाबों की भाँति बड़े बड़े परातों और इतनी भारी और बड़ी-बड़ी देगों का उल्लेख है जो एक ही स्थान पर पड़ी रहती थीं । और उनको बार-बार एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाना सरल नहीं होता । इन देगों में सम्भवत: आपकी विशाल सेना के लिए भोजन तैयार होता होगा ।

इन नेमतों का वर्णन करने के पश्चात् हज़रत दाऊद अलै. को ही नहीं बल्कि आपके वंशज को भी कृतज्ञ होने की ताकीद की गयी है । अर्थात् जब तक कृतज्ञ रहोगे ये नेमतें छीनी नहीं जाएँगी । फिर हज़रत सुलैमान अलै. के पुत्र के समय में ये नेमतें समाप्त होती गईं । क्योंकि उसमें कोई आध्यात्मिकता और प्रशासनिक योग्यता नहीं थी ।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِى الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٥﴾

अत: जब हमने उस पर मृत्यु का निर्णय लागू कर दिया तो उसकी मृत्यु पर एक धरती के कीड़े (अर्थात उसके अवज्ञाकारी पुत्र) के अतिरिक्त किसी ने उनको सूचित नहीं किया जो उस (के साम्राज्य) की लाठी को खा रहा था । फिर जब वह (शासन तन्त्र) ध्वस्त हो गया तब जिन्न (अर्थात पहाड़ी जातियों) पर यह बात खुल गई कि यदि वे अदृश्य विषय का ज्ञान रखते तो इस अपमानजनक अज़ाब में न पड़े रहते ।15।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِىْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّ شِمَالٍ ۬ؕ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿١٦﴾

नि:सन्देह सबा (जाति) के लिए भी उनके निवास स्थल में एक बड़ा चिह्न था। (जिसके) दाँए और बाएँ दो बाग़ थे । (हे सबा की जाति !) अपने रब्ब की प्रदत्त जीविका में से खाओ और उसकी कृतज्ञता प्रकट करो । (सबा का केन्द्र) एक बहुत अच्छा नगर था और (उस नगर का) एक बहुत क्षमा करने वाला रब्ब था ।16।

فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَىْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَىْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٧﴾

फिर उन्होंने मुँह मोड़ लिया तो हमने उन पर टूटे हुए बाँध से (लहरें मारती हुई) बाढ़ भेजी । और हमने उनके लिए उनके दोनों बाग़ानों को दो ऐसे बाग़ों में परिवर्तित कर दिया जो दोनों ही स्वादहीन फल और झाउ के पौधों वाले तथा कुछ थोड़ी सी बेरियों वाले थे ।17।

ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَهَلْ نُجٰزِىٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٨﴾

यह प्रतिफल हमने उनको इस कारण दिया कि उन्होंने कृतघ्नता की । और क्या अत्यन्त कृतघ्न के अतिरिक्त हम किसी को भी (ऐसा) प्रतिफल देते हैं ? ।18।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بٰرَكْنَا
فِيهَا قُرًى ظٰهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ؕ
سِيْرُوْا فِيهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٩﴾

और हमने उनके और उन बस्तियों के मध्य जिनमें हमने बरकत डाली थी पृथक दिखाई देने वाली बस्तियाँ बनाई थीं । और उनके मध्य (सरलता पूर्वक) चलना फिरना सम्भव बना दिया था । (उद्देश्य यह था कि) उनमें तुम रातों को और दिनों को निश्चिंत होकर चलते फिरते रहो ।19।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ
كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُوْرٍ ﴿٢٠﴾

फिर (जब वे कृतघ्न हो गए तो) उन्होंने कहा, हे हमारे रब्ब ! हमारी यात्राओं की दूरी बढ़ा दे । और उन्होंने स्वयं अपने आप पर अत्याचार किया । तब हमने उनको कथा-कहानी बना दिया और उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर दिया । नि:सन्देह इसमें प्रत्येक बहुत धैर्य करने वाले (और) बहुत कृतज्ञता प्रकट करने वाले के लिए चिह्न हैं ।20।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ
فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢١﴾

और नि:सन्देह इब्लीस ने उनके विरुद्ध अपना विचार सच्चा कर दिखाया । अत: उन्होंने उसका अनुसरण किया सिवाए मोमिनों में से एक गिरोह के ।21।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ
مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ
شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢٢﴾ ع

और उसे उन पर कोई प्रभुत्व प्राप्त नहीं था । परन्तु हम यह चाहते थे कि जो परलोक पर ईमान लाता है उसे उससे अलग कर दें जो उस के बारे में शंका में (पड़ा) है । और तेरा रब्ब प्रत्येक विषय का निरीक्षक है ।22। (रुकू $\frac{2}{8}$)

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ

तू कह दे कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने अल्लाह के सिवा (कुछ) समझ रखा है। वे तो आसमानों और धरती में से

لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿۲۳﴾

एक कण के समान भी किसी वस्तु के स्वामी नहीं । और न ही उन दोनों में उनका कोई भाग है । और उनमें से कोई भी उस (अर्थात अल्लाह) का सहायक नहीं ।23।

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿۲۴﴾

और उसके समक्ष किसी के पक्ष में सिफ़ारिश काम नहीं आएगी सिवाए उसके, जिसके लिए उसने आज्ञा दी हो । यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी तो वे (अपनी सिफ़ारिश करने वालों से) पूछेंगे (अभी) तुम्हारे रब्ब ने क्या कहा था ? वे कहेंगे : सत्य (कहा था) । और वह बहुत ऊँची शान वाला (और) बहुत बड़ा है ।24।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۵﴾

तू (काफ़िरों से) पूछ कि कौन है जो तुम्हें आसमानों और धरती में से जीविका प्रदान करता है ? (स्वयं ही) कह दे कि अल्लाह और (यह भी कह दे कि) नि:सन्देह हम या तुम हिदायत पर हैं अथवा खुली-खुली पथभ्रष्टता में ।25।

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۶﴾

तू कह दे कि तुम उन अपराधों के बारे में नहीं पूछे जाओगे जो हम ने किये । और न ही हम उसके बारे में पूछे जाएँगे जो तुम करते हो ।26।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۷﴾

तू कह दे कि हमारा रब्ब हमें एकत्रित करेगा । फिर हमारे बीच सत्य के साथ निर्णय करेगा । और वह बहुत स्पष्ट निर्णय करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।27।

قُلْ اَرُوْنِیَ الَّذِیْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۸﴾

तू कह दे कि मुझे वह दिखाओ तो सही जिन्हें तुमने साझीदारों के रूप में उसके साथ मिला दिया है । ऐसा कदापि नहीं बल्कि वही अल्लाह है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।28।

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۲۹﴾

और हमने तुझे सब लोगों के लिए शुभ संदेश वाहक और सतर्ककारी बनाकर ही भेजा है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।29।

وَیَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۰﴾

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब (पूरा) होगा ? ।30।

قُلْ لَّكُمْ مِّیْعَادُ یَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۱﴾ ع

तू कह दे कि तुम्हारे लिए एक (निर्धारित) दिन का वादा है जिससे तुम एक क्षण भी न पीछे रह सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो ।31। (रुकू $\frac{3}{9}$)

وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِیْ بَیْنَ یَدَیْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤی اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚۖ یَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰی بَعْضِ نِ الْقَوْلَ ۚ یَقُوْلُ الَّذِیْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِیْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِیْنَ ﴿۳۲﴾

और उन लोगों ने कहा जिन्होंने इनकार किया कि हम कदापि इस क़ुरआन पर ईमान नहीं लाएँगे और न उन (भविष्यवाणियों) पर जो उसके सामने हैं । काश ! तू देख सकता कि जब अत्याचारी लोग अपने रब्ब के समक्ष ठहराए गए होंगे । उनमें से कुछ-कुछ (दूसरों) की ओर बात लौटा रहे होंगे । जिन्हें दुर्बल बना दिया गया था वे उनसे जिन्होंने अहंकार किया, कहेंगे कि यदि तुम न होते तो हम अवश्य मोमिन हो जाते ।32।

قَالَ الَّذِیْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِیْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰی بَعْدَ اِذْ

जिन लोगों ने अहंकार किया वे उनसे जो दुर्बल बना दिए गए थे कहेंगे : क्या हमने तुम्हें हिदायत से जब वह तुम्हारे पास

جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۳﴾

आई, रोका था ? (नहीं) बल्कि तुम स्वयं ही अपराधी थे ।33।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۴﴾

और वे लोग जो दुर्बल बना दिए गए थे, उन अहंकारियों से कहेंगे, वस्तुत: यह तो रात-दिन किया जाने वाला एक छल था । जब तुम हमें इस बात का आदेश देते थे कि हम अल्लाह का इनकार कर दें और उसके साझीदार ठहराएँ । और वे अपने पश्चाताप को छिपाते फिरेंगे जब अज़ाब को देखेंगे और हम उन लोगों की गर्दनों में तौक़ डालेंगे जिन्होंने इनकार किया । क्या जो वे किया करते थे उसके अतिरिक्त भी कोई प्रतिफल दिए जाएँगे ? ।34।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۵﴾

और हमने जब कभी किसी बस्ती में कोई सतर्ककारी भेजा तो उसके संपन्न लोगों ने कहा कि जिस संदेश के साथ तुम भेजे गए हो हम उसका पुरज़ोर इनकार करने वाले हैं ।35।

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۳۶﴾

और उन्होंने कहा, हम धन और संतान में बहुत अधिक हैं और हमें अज़ाब नहीं दिया जाएगा ।36।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾ ع

तू कह दे, नि:सन्देह मेरा रब्ब जिसके लिए चाहता है जीविका को विस्तृत कर देता है और तंग भी करता है । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।37।

(रुकू $\frac{4}{10}$)

وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ

और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी वस्तु नहीं जो तुम्हें हमारे समक्ष निकटता के पद तक ला सकें । सिवाए उसके जो ईमान लाया और नेक कर्म

صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِى الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ۝٣٨

करता रहा । अतः यही वे लोग हैं जिनको उनके कर्मों के बदले जो वे करते थे दोहरा प्रतिफल दिया जाएगा । और वे अट्टालिकाओं में शांतिपूर्वक रहने वाले हैं ।38।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝٣٩

और वे लोग जो हमारे चिह्नों को असमर्थ करने का प्रयत्न करते हुए दौड़े फिरते हैं, यही लोग अज़ाब में डाले जाने वाले हैं ।39।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝٤٠

तू कह दे कि निःसन्देह मेरा रब्ब अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहे जीविका को विस्तृत कर देता है । और (कभी) उसके लिए (जीविका) को संकुचित भी करता है । और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करते हो तो वही है जो उसका प्रतिफल देता है । और वह जीविका प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है ।40।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝٤١

और जिस दिन वह उन सब को एकत्रित करेगा फिर फ़रिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी ही उपासना किया करते थे ? ।41।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ۝٤٢

वे कहेंगे, पवित्र है तू । उनके बदले तू हमारा मित्र है । बल्कि वे तो जिन्नों की उपासना किया करते थे (और) इनमें से अधिकतर उन्हीं पर ईमान लाने वाले थे ।42।*

---

* आयत संख्या 41-42 इन आयतों में उन मुश्रिकों का वर्णन है जो वस्तुतः अपने बड़े-बड़े सरदारों को उपास्य बना बैठे थे । यहाँ जिन्न से अभिप्राय यही सरदार हैं । मुश्रिक लोग कुछ फ़रिश्तों के नाम भी लिया करते हैं कि वे उनकी उपासना करते हैं । यह फ़रिश्तों पर केवल मिथ्यारोप है और फ़रिश्ते क़यामत के दिन इन बातों से स्वयं के पवित्र होने की घोषणा करेंगे ।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٣﴾

अत: आज तुम में से कोई किसी अन्य को किसी प्रकार के लाभ पहुँचाने पर समर्थ होगा न हानि पहुँचाने का । और हम उन लोगों से जिन्होंने अत्याचार किया, कहेंगे, इस अग्नि के अज़ाब को चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे ।43।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٤﴾

और जब उन के समक्ष हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती हैं, वे कहते हैं कि यह केवल एक साधारण व्यक्ति है जो तुम्हें उससे रोकना चाहता है जिसकी तुम्हारे पूर्वज उपासना किया करते थे । और वे कहते हैं यह एक बड़े झूठ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है जो गढ़ लिया गया है । और उन लोगों ने जिन्होंने सत्य का इनकार किया जब वह उनके पास आया, कहा कि यह एक खुला-खुला जादू के अतिरिक्त कुछ नहीं ।44।

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ؕ ﴿٤٥﴾

और हमने उन्हें कोई पुस्तकें नहीं दी जिन्हें वे पढ़ते और उनका उपदेश देते । और न ही तुझ से पहले हमने उनकी ओर कोई सतर्ककारी भेजा ।45।

وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۗ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٦﴾

और उन लोगों ने भी झुठला दिया था जो उनसे पहले थे । और ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे जो हमने उन लोगों को प्रदान किया था । अत: उन्होंने (भी जब) मेरे रसूलों को झुठलाया तो कैसी (कठोर) थी मेरी पकड़ ! ।46। (रुकू $\frac{5}{11}$)

قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا

तू कह दे कि मैं केवल तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूँ कि तुम दो दो और एक एक करके अल्लाह के लिए खड़े हो जाओ।

بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ۝٤٧

फिर ख़ूब विचार करो। तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं। वह तो केवल एक कठोर अज़ाब से पूर्व तुम्हें सतर्क करने वाला (बन कर आया) है।47।

قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٤٨

तू कह दे, जो भी मैं तुम से बदला माँगता हूँ वह तुम्हारे ही लिए है। मेरा बदला तो अल्लाह के सिवा किसी पर नहीं। और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।48।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝٤٩

तू कह दे कि निःसन्देह मेरा रब्ब सत्य के द्वारा (झूठ पर) प्रहार करता है। (वह) अदृश्य विषयों का बहुत जानने वाला (है)।49।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ۝٥٠

तू कह दे कि सत्य आ चुका है और मिथ्या न तो (कुछ) आरम्भ कर सकता है और न (उसे) दोहरा सकता है।50।

قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ۝٥١

तू कह दे कि यदि मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँ तो मैं स्वयं अपने (हित के) विरुद्ध पथभ्रष्ट हूँगा। और यदि मैं हिदायत पा जाऊँ तो (ऐसा केवल) इस लिए (होगा) कि मेरा रब्ब मेरी ओर वह्इ करता है। निःसन्देह वह बहुत सुनने वाला (और) निकट रहने वाला है।51।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝٥٢

और काश ! तू देख सके जब वे अत्यन्त घबराहट का आभास करेंगे और (उसका) समाप्त होना किसी प्रकार संभव न होगा और वे समीप के स्थान से (अर्थात् शीघ्रता पूर्वक) पकड़े जाएँगे।52।

وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ

और वे कहेंगे, हम उस पर ईमान ले आए परन्तु एक दूर के स्थान से उनका (ईमान

مِنۡ مَّكَانٍۭ بَعِيۡدٍ ۚ۝٥٣

को) पकड़ लेना कैसे सम्भव हो सकता है ।53।

وَّقَدۡ كَفَرُوۡا بِهٖ مِنۡ قَبۡلُ ۚ وَيَقۡذِفُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ مِنۡ مَّكَانٍۭ بَعِيۡدٍ ۝٥٤

हालाँकि वे इससे पूर्व उसका इनकार कर चुके थे । और वे एक दूर के स्थान से अदृश्य (विषयों) में अटकल पच्चू के तीर चलाएँगे ।54।

وَحِيۡلَ بَيۡنَهُمۡ وَبَيۡنَ مَا يَشۡتَهُوۡنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشۡيَاعِهِمۡ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا فِىۡ شَكٍّ مُّرِيۡبٍ ۝٥٥ ع ٦/١٢

और उनके और जो वे चाहेंगे उसके बीच एक रोक डाल दी जाएगी जैसा कि उससे पहले उनके जैसे लोगों के साथ किया गया । निःसन्देह वे सदा एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े रहे ।55।

(रुकू $\frac{6}{12}$)

35- सूरः फ़ातिर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 46 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी इससे पूर्ववर्ती सूरः की भाँति **अल्हम्दु** शब्द से हुआ है । पिछली सूरः में धरती व आकाश पर अल्लाह तआला की बादशाही और समस्त ब्रह्माण्ड का अल्लाह तआला की स्तुति में लीन रहने का वर्णन है । अल्लाह तआला ने जब धरती और आकाश को पहली बार उत्पन्न किया तो इस पर हमें उसकी स्तुति करने का आदेश दिया गया है । क्योंकि धरती और आकाश को आरम्भ में उत्पन्न करना उद्देश्यहीन नहीं हो सकता । यहाँ धरती और आकाश के अस्तित्व से पूर्व एक सृष्टिकर्ता रब्ब की कृपा का उल्लेख किया गया है ।

आयत सं. 2 में उन फ़रिश्तों का वर्णन है जो दो-दो और तीन-तीन तथा चार-चार पंख रखते हैं । इससे कदापि यह तात्पर्य नहीं कि फ़रिश्तों के भौतिक पंख भी होते हैं । बल्कि यहाँ पदार्थ के चार मौलिक रासायनिक संयोजन का वर्णन है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त रासायनिक चमत्कार प्रकट होते हैं । विशेषकर आस्तिक वैज्ञानिक इस ओर हमारा ध्यान खींचते हैं कि कार्बन के चार रासायनिक संयोजन का अन्य पदार्थों के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया के परिणाम-स्वरूप वह जीवन अस्तित्व में आया है जिसे वैज्ञानिक Carbon based life (कार्बन आधारित जीवन) कहते हैं । पवित्र क़ुरआन की इस आयत में यह वर्णन कर दिया गया कि इससे अधिक पंख वाले फ़रिश्ते भी हैं । जिनको तुम अब तक नहीं जानते और उनके प्रभाव से बहुत से महत्वपूर्ण रासायनिक परिवर्तन होंगे, जिनकी इस समय मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता ।

इस सूरः में एक बार फिर दो ऐसे समुद्रों का वर्णन किया गया है जिनमें से एक का पानी खारा और एक का मीठा है । परन्तु अल्लाह तआला की आश्चर्यजनक उत्पत्ति है कि खारे पानी में पलने वाले जीवों का माँस भी मीठा ही रहता है और मीठे पानी में पलने वाले जीवों का माँस भी मीठा ही होता है । यह कैसे संभव हुआ कि खारा जल लगातार पीने वाली मछलियों का माँस उस जल के खारे प्रभावों से पूर्णतया मुक्त है ।

इसके पश्चात ऐसी आयतें (सं. 17, 18) आती हैं जो मानवजाति को सावधान कर रही हैं कि यदि तुमने अल्लाह तआला की नेमतों पर कृतज्ञता प्रकट नहीं की और उसके इनकार पर डटे रहे तो यदि अल्लाह चाहे तो तुम्हें धरती पर से समाप्त कर दे और तुम्हारे स्थान पर एक और सृष्टि को ले आए और ऐसा करना अल्लाह के सामर्थ्य से बाहर नहीं है ।

इसके पश्चात फिर मनुष्य को ध्यान दिलाया गया कि धरती पर जीवन का प्रत्येक

रूप आकाश से बरसने वाले जल पर ही निर्भर है । इस जल से विभिन्न प्रकार के फल उगते हैं । उनके रंग भिन्न-भिन्न हैं । यह रंगों की विभिन्नता इस बात की ओर संकेत करती है कि जिस प्रकार एक ही रंग की मिट्टी से उत्पन्न फलों के तुम विभिन्न रंग देखते हो, इसी प्रकार यद्यपि मनुष्य एक ही आदम की संतान हैं परन्तु उनके रंग भी भिन्न-भिन्न हैं और उनकी भाषाएँ भी भिन्न भिन्न हैं । हालाँकि उनकी भाषाएँ एक ही भाषा से निकलीं और अब उनके मध्य कोई भी समानता दिखाई नहीं देती सिवाए उन सूक्ष्मदर्शियों के जिनको अल्लाह तआला ज्ञान प्रदान करे ।

ये लोग जो अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं, धरती में उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के प्रसंग से तो उसका कोई साझीदार ठहरा नहीं सकते । तो क्या फिर उनकी कल्पना उन आसमानों में अल्लाह के साझीदार ठहराती है जिन आसमानों का उनको कुछ भी ज्ञान नहीं ।

इसके पश्चात मानव-जाति को सावधान किया गया है कि धरती और आकाश अपने आप अपनी धुरियों पर स्थित नहीं हैं बल्कि यदि अल्लाह तआला की शक्ति के हाथ उनको लगातार थामे न रखें और यदि एक बार ये अपनी धुरियों से हट जाएँ तो धरती और आकाश में महाप्रलय आ जाएगा और कभी फिर दोबारा आकाशीय पिण्ड किसी धुरी पर स्थित नहीं हो सकेंगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّ خَمْسَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿۱﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ جَاعِلِ الۡمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيۡۤ اَجۡنِحَةٍ مَّثۡنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيۡدُ فِى الۡخَلۡقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۲﴾

सम्पूर्ण स्तुति अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों और धरती का पैदा करने वाला है । फ़रिश्तों को दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पंखों (अर्थात् शक्तियों) वाले दूत बनाने वाला । वह सृष्टि में जो चाहता है बढ़ोत्तरी करता है । नि:सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।2।

مَا يَفۡتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنۡ رَّحۡمَةٍ فَلَا مُمۡسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمۡسِكۡ ۙ فَلَا مُرۡسِلَ لَهٗ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۳﴾

अल्लाह मनुष्यों के लिए जो कृपा जारी कर दे उसे कोई रोकने वाला नहीं । और जिस वस्तु को वह रोक दे उसे उसके (रोकने) के पश्चात कोई जारी करने वाला नहीं और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।3।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ ؕ هَلۡ مِنۡ خَالِقٍ غَيۡرُ اللّٰهِ يَرۡزُقُكُمۡ مِّنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤۡفَكُوۡنَ ﴿۴﴾

हे लोगो ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो । क्या अल्लाह के सिवा भी कोई स्रष्टा है जो तुम्हें आकाश और धरती से जीविका प्रदान करता है ? उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । अत: तुम कहाँ उल्टे फिराए जाते हो ।4।

وَاِنۡ يُّكَذِّبُوۡكَ فَقَدۡ كُذِّبَتۡ رُسُلٌ مِّنۡ قَبۡلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرۡجَعُ الۡاُمُوۡرُ ﴿۵﴾

और यदि वे तुझे झुठला दें तो तुझ से पहले भी कई रसूल झुठलाए गए । और अल्लाह ही की ओर सब मामले लौटाए जाएँगे ।5।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۗ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٦

हे लोगो ! अल्लाह का वादा नि:सन्देह सच्चा है । अत: तुम्हें सांसारिक जीवन कदापि किसी धोखे में न डाले और अल्लाह के विषय में तुम्हें बड़ा धोखेबाज़ (अर्थात् शैतान) कदापि धोखा न दे सके ।6।

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝٧ ۭ

नि:सन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है । अत: उसे शत्रु ही बनाए रखो । वह अपने गिरोह को केवल इस उद्देश्य से बुलाता है ताकि वे धधकती हुई अग्नि में पड़ने वालों में से हो जाएँ ।7।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ڛ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٨ ع ٨ ١٣

जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए कठोर अज़ाब है । और जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए क्षमादान है और बहुत बड़ा प्रतिफल है ।8। (रुकू $\frac{1}{13}$)

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝٩

अत: क्या जिसे उसका कु-कर्म सुन्दर करके दिखाया जाए और वह उसे सुन्दर देखने लगे (उससे अधिक धोखा खाया हुआ और कौन होगा ?) अत: नि:सन्देह अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है । अत: तेरा दिल उन पर पछतावा करते-करते (बैठ) न जाये । नि:सन्देह अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वे करते हैं ।9।

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ

और अल्लाह वह है जिसने हवाओं को भेजा । अत: वे बादलों को उठाती हैं । फिर हम उसे एक मृत बस्ती की ओर हाँक ले जाते हैं फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृतावस्था के पश्चात जीवित

الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝١٠

कर देते हैं । इसी प्रकार दोबारा जी उठना है ।10।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ۭ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ۭ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَمَكْرُ اُولٰۗىِٕكَ هُوَ يَبُوْرُ ۝١١

जो भी सम्मान का इच्छुक है तो अल्लाह ही के अधीन सब सम्मान है । उसी की ओर पवित्र बात उठती है और उसे नेक कर्म ऊँचाई की ओर ले जाता है और वे लोग जो बुरी योजनाएँ बनाते हैं उनके लिए कठोर अज़ाब (निश्चित) है और उनकी योजना अवश्य व्यर्थ जाएगी ।11।*

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۭ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝١٢

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया । फिर वीर्य से, फिर तुम्हें जोड़े बनाया । और कोई स्त्री गर्भवती नहीं होती और न ही वह बच्चा जनती है परन्तु उस के ज्ञान के अनुसार । और कोई वृद्ध (मनुष्य) दीर्घायु नहीं पाता और न उसकी आयु से कुछ कम किया जाता है, परन्तु वह (एक) ग्रंथ में मौजूद है । निःसन्देह यह (बात) अल्लाह के लिए सरल है ।12।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ڰ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَاۗىِٕغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۭ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ

और दो समुद्र एक ही जैसे नहीं हो सकते। यह अत्यन्त मीठे पानी वाला है । इसका पीना स्वादिष्ट और रुचिकर है और यह (दूसरा) खूब नमकीन (और) खारा है और तुम इन सभी से ताज़ा माँस खाते हो और सौन्दर्य के वे सामान निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो और तू उसमें नौकाओं को देखेगा कि वे

---

* कुछ लोग दुनिया के बड़े लोगों से मेल-मिलाप रखने में अपना सम्मान समझते हैं । परन्तु मोमिनों को यह विश्वास दिलाया गया है कि सम्मान अल्लाह ही की ओर से प्रदान होता है और विरोधी उनको दुनिया में अपमानित करने का जो भी प्रयास करेगा वे व्यर्थ जाएगा ।

مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٣﴾

(पानी को) चीरते हुए चलती हैं (यह व्यवस्था इस लिए है) ताकि तुम उसकी कृपा में से कुछ ढूँढो और तुम कृतज्ञता प्रकट करो ।13।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۭ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٤﴾ ۭ

वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उसने सूर्य और चन्द्रमा को सेवा में लगा दिया है । प्रत्येक अपने निर्धारित समय की ओर चल रहा है । यह है अल्लाह, तुम्हारा रब्ब । उसी की बादशाहत है । और जिन लोगों को तुम उसके सिवा पुकारते हो वे खजूर की गुठली की झिल्ली के भी स्वामी नहीं ।14।

اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَاۗءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۭ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ۭ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿١٥﴾ ع

यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे और यदि सुन भी लें तो तुम्हें उत्तर नहीं देंगे । और क़यामत के दिन तुम्हारे उपास्य ठहराने का इनकार कर देंगे । और तुझे एक महान सूचना देने वाले की भाँति कोई और सतर्क नहीं कर सकता ।15। (रुकू $\frac{2}{14}$)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَاۗءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿١٦﴾

हे लोगो ! तुम ही हो जो अल्लाह पर निर्भर हो और अल्लाह नि:स्पृह (और) समस्त प्रकार की स्तुति का स्वामी है ।16।

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٧﴾ ۚ

यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई सृष्टि ले आए ।17।

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿١٨﴾

और यह अल्लाह के लिए कदापि कठिन नहीं ।18।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ

और कोई बोझ उठाने वाली (जान) किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी । और यदि कोई बोझ से लदी हुई अपने

وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٩﴾

बोझ की ओर बुलाएगी तो उस (के बोझ में) से कुछ भी न उठाया जाएगा चाहे वह निकट संबंधी ही क्यों न हो । तू केवल उन लोगों को सतर्क कर सकता है जो अपने रब्ब से उसके अदृश्य होने पर भी भयभीत रहते हैं । और नमाज़ को क़ायम करते हैं । और जो भी पवित्रता धारण करे तो अपनी ही जान के लिए पवित्रता धारण करता है । और अल्लाह की ओर ही अन्तिम ठिकाना है ।19।

وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ﴿٢٠﴾

और अंधा और आँखों वाला एक जैसे नहीं होते ।20।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۙ﴿٢١﴾

और न अन्धकार और आलोक ।21।

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۚ﴿٢٢﴾

और न छाया और धूप ।22।

وَمَا يَسْتَوِى الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِى الْقُبُوْرِ ﴿٢٣﴾

इसी प्रकार जीवित और मृत भी बराबर नहीं होते । नि:सन्देह अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है । और जो क़ब्रों में पड़े हैं तू उन्हें कदापि नहीं सुना सकता ।23।

اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

तू तो केवल एक सावधान करने वाला है ।24।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٥﴾

नि:सन्देह हमने तुझे सत्य के साथ शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी बना कर भेजा है । और कोई समुदाय (ऐसा) नहीं जिसकी ओर कोई सतर्ककारी न आया हो ।25।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ

और यदि वे तुझे झुठला दें तो नि:सन्देह जो लोग उनसे पहले थे वे भी झुठला

مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٦﴾

चुके हैं । उनके पास भी उनके रसूल स्पष्ट चिह्न और अलग-अलग ग्रन्थ तथा उज्ज्वल पुस्तक लेकर आए थे ।26।

ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٧﴾ ع

फिर जिन्होंने इनकार किया, मैंने उन्हें पकड़ लिया । अत: कैसा कठोर थी मेरी पकड़ ! ।27। (रुकू $\frac{3}{15}$)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ
فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ
وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ
مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٨﴾

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से पानी उतारता है । फिर हम भाँति-भाँति के फल उससे पैदा करते हैं जिनके रंग भिन्न भिन्न हैं । और पहाड़ों में कुछ सफेद टुकड़े हैं और कुछ लाल हैं । उनके रंग भिन्न-भिन्न हैं और (उनमें) काले स्याह रंगों वाले भी हैं ।28।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ
مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
غَفُوْرٌ ﴿٢٩﴾

और इसी प्रकार लोगों में और धरती पर चलने फिरने वाले प्राणियों में और चौपायों में से ऐसे हैं कि प्रत्येक के रंग भिन्न-भिन्न हैं । नि:सन्देह अल्लाह के भक्तों में से वे ही उससे डरते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं । नि:सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।29।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا
وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٣٠﴾ۙ

नि:सन्देह वे लोग जो अल्लाह की पुस्तक को पढ़ते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं । और जो हमने उनको प्रदान किया है उसमें से गुप्त रूप से भी खर्च करते हैं और व्यक्त रूप से भी । वे ऐसे व्यापार की आशा लगाए हुए हैं जो कभी नष्ट नहीं होगा ।30।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ

ताकि वह उनको उनके प्रतिफल (उनके सामर्थ्य के अनुसार) भरपूर दे बल्कि अपनी कृपा से उन्हें उससे भी अधिक

فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝٣١

बढ़ाए । नि:सन्देह वह क्षमा करने वाला (और) अत्यन्त गुणग्राही है ।31।

وَالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝٣٢

और जो हमने तेरी ओर पुस्तक में से वह्इ किया है वही सत्य है । (वह) उसकी पुष्टि करने वाला है जो उसके सामने है । नि:सन्देह अल्लाह अपने भक्तों से सदा अवगत रहने वाला (और उन पर) गहन दृष्टि रखने वाला है ।32।

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝٣٣

फिर हमने अपने भक्तों में से जिन्हें चुन लिया उन्हें पुस्तक का उत्तराधिकारी बना दिया । अत: उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी जान के पक्ष में अत्याचारी हैं और ऐसे भी हैं जो मध्यमार्गी हैं और उनमें ऐसे भी हैं जो नेकियों में अल्लाह की आज्ञा से आगे बढ़ जाने वाले हैं । यही है जो बहुत बड़ी कृपा है ।33।*

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝٣٤

चिरस्थायी स्वर्ग हैं जिनमें वे प्रविष्ट होंगे। वे उनमें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे और उनमें उनका वस्त्र रेशम होगा ।34।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْۤ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۙ ۝٣٥

और वे कहेंगे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने हम से शोक दूर कर दिया । नि:सन्देह हमारा रब्ब बहुत ही क्षमा करने वाला (और) गुणग्राही है ।35।

الَّذِيْۤ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

जिसने अपनी कृपा से हमें एक विशेष दर्जा वाले घर में उतारा है । इसमें हमें न

* यहाँ मोमिनों की क्रमश: तीन अवस्थाओं का वर्णन है । एक वे जिन में पाप की गंदगी होती है और वे ज़ोर-ज़बरदस्ती से अपनी तामसिक प्रवृत्ति को अल्लाह तआला के मार्ग की ओर मोड़ते हैं । दूसरे वे जो मध्यमार्गी हैं । और तीसरे वे जो पुण्य कर्म में सबसे आगे बढ़ने वाले हैं ।

لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝٣٦

कोई कठिनाई पहुँचेगी और न कोई थकावट छुएगी।36।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۝٣٧

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके लिए नरक की आग है। न तो उनका फ़ैसला निपटाया जाएगा कि वे मर जाएँ। और न ही उस (अग्नि) के अज़ाब में उनसे कमी की जाएगी। इसी प्रकार हम प्रत्येक कृतघ्न को प्रतिफल दिया करते हैं।37।

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ۚ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۗ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۗ فَذُوقُوا فَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ نَّصِيرٍ ۝٣٨ ع ١١/١٦

और वे उसमें चीख़ रहे होंगे, हे हमारे रब्ब! हमें निकाल ले। हम नेक-कर्म करेंगे जो हम किया करते थे वे उनसे भिन्न होंगे। क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी थी कि जिसमें कोई उपदेश ग्रहण करने वाला उपदेश ग्रहण कर सके? इसी प्रकार तुम्हारे पास एक सतर्क करने वाला भी आया था। अतः (अपने अत्याचार का प्रतिफल) चखो और अत्याचार करने वालों के पक्ष में कोई सहायक नहीं।38। (रुकू $\frac{4}{16}$)

إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝٣٩

अल्लाह निःसन्देह आकाशों और धरती के अदृश्य को जानने वाला है। वह निःसन्देह उसका ज्ञान रखता है जो कुछ सीनों में है।39।

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ ۗ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۗ وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۚ

वही है जिसने तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाया। अतः जो इनकार करे उसका इनकार उसी पर पड़ेगा। और काफ़िरों को उनका कुफ़्र उनके रब्ब के निकट सिवाए (उसकी) नाराज़गी के किसी चीज़ में नहीं बढ़ाता। और

وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٤٠﴾

काफ़िरों को उनका कुफ़्र घाटे के अतिरिक्त और किसी चीज़ में नहीं बढ़ाता ।40।

قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۗ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ﴿٤١﴾

तू पूछ, क्या तुमने अपने वे (काल्पनिक) साझीदार देखे हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो ? मुझे दिखाओ तो सही कि उन्होंने धरती में से क्या पैदा किया है अथवा उनके लिए (केवल) आसमानों में साझीदारी है । या क्या हमने उन्हें कोई पुस्तक दी थी, फिर वे उसके आधार पर एक स्पष्ट तर्क पर स्थित हैं ? नहीं, बल्कि अत्याचारियों में से उनके कुछ, कुछ दूसरों से केवल धोखे का वादा करते हैं ।41।

إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهِ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٢﴾

नि:सन्देह अल्लाह आकाशों और धरती को रोके हुए है कि वे टल न जायँ । और यदि वे दोनों (एक बार) टल गए तो उसके पश्चात कोई नहीं जो फिर उन्हें थाम सके । नि:सन्देह वह बहुत सहनशील (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।42।

وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدٰى مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٣﴾

और उन्होंने अल्लाह की पक्की क़समें खाईं कि यदि उनके पास कोई सतर्ककारी आया तो अवश्य वे प्रत्येक समुदाय से बढ़ कर हिदायत पा जाएँगे। अत: जब उनके पास कोई सतर्ककारी आया तो (उसका आना) उन्हें घृणा के अतिरिक्त किसी चीज़ में न बढ़ा सका।43।

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۗ

(उनके) धरती में अहंकार करने और बुरी योजना बनाने के कारण से (ऐसा

وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿۴۴﴾

हुआ)। और बुरी योजना केवल योजना बनाने वाले को ही घेरती है। अतः क्या वे पहले लोगों (पर जारी होने वाले अल्लाह) के विधान के सिवा कुछ और की प्रतीक्षा कर रहे हैं? अतः तू कदापि अल्लाह के विधान में कोई परिवर्तन नहीं पाएगा तथा तू कदापि अल्लाह के विधान को टलते हुए नहीं पाएगा।44।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿۴۵﴾

क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का क्या अन्त हुआ जो उनसे पहले थे? हालाँकि वे शक्ति में उनसे बढ़ कर थे। और अल्लाह ऐसा नहीं कि आकाशों अथवा धरती में कोई चीज़ भी उसे विवश कर सके। निःसन्देह वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सामर्थ्य रखने वाला है।45।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿۴۶﴾ ع

और यदि अल्लाह लोगों की उसके परिणाम स्वरूप धर-पकड़ करता जो उन्होंने कमाया, तो इस (धरती) की पीठ पर कोई चलने फिरने वाला प्राणी बाक़ी न छोड़ता। परन्तु वह उनको (अन्तिम) निर्धारित समय तक ढील देता है। फिर जब उनका (निर्धारित) समय आ जाएगा तो (ख़ूब खुल जाएगा कि) निःसन्देह अल्लाह अपने भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है।46।* (रुकू $\frac{5}{17}$)

* इस आयत में पाप को तो मनुष्य की ओर संबंधित किया गया परन्तु इसके परिणाम में पशुओं के विनाश का वर्णन किया गया !? जिसका यह अर्थ नहीं कि करे कोई और भरे कोई। बल्कि वास्तविकता यह है कि पशुओं के विनाश की स्थिति में यह दण्ड वस्तुतः मनुष्यों को ही मिलता है क्योंकि मनुष्य जीवन पशुओं पर निर्भर है। यदि पशु समाप्त हो जाएँ तो मनुष्यों का जीवित रहना संभव नहीं। यहाँ अरबी शब्द **दाब्बतुन** से अभिप्राय धरती पर चलने फिरने और रेंगने वाले प्रत्येक प्रकार के जीव हैं।

36- सूर: यासीन

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 84 आयतें हैं ।

पिछली सूर: के अन्त पर काफ़िरों की उस दृढ़ प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है कि यदि उनके पास कोई सतर्ककारी आता तो वे पूर्ववर्ती सभी धर्मानुयायिओं से बढ़ कर उसकी लाई हुई हिदायत पर ईमान ले आते । सूर: यासीन की प्रारम्भिक आयतों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए अल्लाह तआला कहता है कि तुझे हमने एक ऐसी जाति की ओर भेजा है जिसके पूर्वजों के निकट एक लम्बे समय से कोई सतर्ककारी नहीं आया था । परन्तु इस पर भी उनमें से अधिकतर के सम्बन्ध में अल्लाह तआला का यह कथन सत्य सिद्ध हुआ कि वे ईमान नहीं लाएँगे । अत: पिछली सूर: के अन्त पर काफ़िरों का यह दावा कि उनके पास यदि कोई सतर्ककारी आता तो वे अवश्य ईमान ले आते, इस सूर: में उसका खण्डन कर दिया गया है ।

इसके पश्चात नबियों के शत्रुओं का एक उदाहरण वर्णन किया गया है कि वास्तव में उनका अहंकार ही है जो उनको हिदायत स्वीकार करने से वंचित रखता है । जैसे किसी व्यक्ति की गर्दन में तौक़ डाला हुआ हो तो उसकी गर्दन अकड़ी रहती है ऐसे ही एक अहंकारी की गर्दन अकड़ी रहती है । अत: ईमान लाने का सौभाग्य केवल उनको प्राप्त होता है जिनके अंदर कोई अहंकार नहीं पाया जाता ।

आयत सं. 14 से जो वर्णन आरम्भ होता है व्याख्याकारों ने इसके सम्बन्ध में अनेकों कल्पनाएँ की हैं । परन्तु इसके सम्बन्ध में हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक व्याख्या की है जो मन को भाती है और वह यह है कि पहले दो नबी तो हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम थे । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका समर्थन करके उनको सम्मान दिया । परन्तु काफ़िरों के लगातार इनकार करने के पश्चात एक दूर की बस्ती से एक चौथा व्यक्ति उठा जिसने काफ़िरों को सावधान किया कि वह महान व्यक्ति जो तुम्हारे लिए हिदायत के असंख्य साधन उपलब्ध करता है और तुम से कोई बदला माँगता नहीं, उस पर ईमान ले आओ ।

क़ुरआन के अवतरण के समय तो अरब वासियों की जानकारी के अनुसार वनस्पतियों में नर और मादा के रूप में केवल खजूरों के जोड़े हुआ करते थे । और किसी की कल्पना में भी नहीं आ सकता था कि अल्लाह तआला ने न केवल प्रत्येक प्रकार के फलों के पौधों को जोड़ा-जोड़ा बनाया है बल्कि आयत सं. 37 यह दावा करती है कि

ब्रह्माण्ड की हर चीज़ जोड़ा-जोड़ा है । आज के विज्ञान ने इसी वास्तविकता पर से पर्दा उठाया है । यहाँ तक कि पदार्थ तथा अणु और परमाणु के कणों के भी जोड़े-जोड़े हैं । अतः जोड़ों का यह विषय एक असीमित विषय है । एकेश्वरवाद को समझने के लिए इस विषय को समझना आवश्यक है । केवल ब्रह्माण्ड का स्रष्टा ही है जिस को जोड़े की आवश्यकता नहीं, अन्यथा समस्त सृष्टि को जोड़े की आवश्यकता है ।

इसके बाद एक आयत में पुनर्जीवन का विषय नए सिरे से वर्णन करते हुए उन मुर्दों को जो परकालीन उत्थान के समय उठाए जाएँगे, इस प्रकार आश्चर्य प्रकट करते हुए दिखाया गया है, जब वे कहेंगे कि वह कौन है जिसने हमें दोबारा जीवित कर दिया है । इसके उत्तर में कहा गया कि अल्लाह के समस्त रसूल सच ही कहा करते थे ।

आयत सं. 81 में हरे वृक्ष से आग निकालने का जो अर्थ वर्णन किया गया है इससे लोग समझते हैं कि हरा वृक्ष जब शुष्क हो जाता है तो फिर उससे अग्नि उत्पन्न होती है। यह विषय अपने स्थान पर ठीक है । परन्तु वास्तव में हरे वृक्षों से भी जबकि वे हरे-भरे हों अग्नि पैदा हो सकती है और होती रहती है । अतः वनस्पति-विज्ञान के विशेषज्ञ बताते हैं कि चीड़ के वृक्षों के पत्ते जब तेज़ हवाओं के कारण एक दूसरे से टकराते हैं तो इस प्रकार लगातार टकराने से उनमें आग लग जाती है और बहुत बड़े-बड़े जंगल इस आग के कारण नष्ट हो जाते हैं ।

इस सूरः की अन्तिम आयत भी परकालीन उत्थान के वर्णन पर समाप्त होती है जिसमें यह घोषणा की गई है कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु का स्वामी अल्लाह ही है । और उसी की ओर हे मानव समाज ! तुम लौटाए जाओगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعٌ وَّ ثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّ خَمْسَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰسٓ ②

या सय्यिदु : हे सरदार ! ।2।

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ③

गूढ़ ज्ञान-पूर्ण क़ुरआन की क़सम ।3।

اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ④

(कि) नि:सन्देह तू रसूलों में से है ।4।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ⑤

सन्मार्ग पर (अग्रसर है) ।5।

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ⑥

(यह) पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर से अवतरित (है) ।6।

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ⑦

ताकि तू ऐसे लोगों को सतर्क करे जिनके पूर्वज सतर्क नहीं किये गए । अत: वे असावधान पड़े हैं ।7।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑧

नि:सन्देह उनमें से अधिकांश पर (अल्लाह का) कथन सत्य सिद्ध हो गया है । अत: वे ईमान नहीं लाएँगे।8।

اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ⑨

नि:सन्देह हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं और वे ठुड्डियों तक पहुँचे हुए हैं । इस कारण वे सिर ऊँचा उठाए हुए हैं ।9।

وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ

और हमने उनके सामने भी एक रोक बना दी है और उनके पीछे भी एक रोक बना दी है । और उन पर पर्दा

خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٠﴾

डाल दिया है इस कारण वे देख नहीं सकते ।10।*

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

और चाहे तू उन्हें सतर्क करे अथवा न करे उन के लिए बराबर है, वे ईमान नहीं लाएँगे ।11।

اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿١٢﴾

तू केवल उसे सतर्क कर सकता है जो उपदेश का अनुसरण करता है और रहमान (अल्लाह) से एकान्त में भी डरता है । अत: उसे एक बड़ी क्षमादान और सम्मानजनक प्रतिफल का शुभ-समाचार दे दे ।12।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٣﴾

नि:सन्देह हम हैं जो मुर्दों को जीवित करते हैं और हम उसे लिख लेते हैं जो वे आगे भेजते हैं और उनके चिह्नों को भी । और प्रत्येक वस्तु को हमने एक प्रमुख राजमार्ग में (धरती के नीचे) सुरक्षित कर रखा है ।13। (रुकू $\frac{1}{18}$)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾

और उनके सामने (एक विशेष) बस्ती वासियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर । जब उस (बस्ती) में (अल्लाह की ओर से) रसूल आए ।14।

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٥﴾

जब हमने उनकी ओर दो (रसूल) भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठला दिया । अत: हमने तीसरे के द्वारा (उन्हें) दृढ़ता प्रदान की । फिर उन्होंने कहा, नि:सन्देह हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं ।15।

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ

उन्होंने (अर्थात बस्ती वासियों ने) कहा, तुम हमारे जैसे मनुष्य के

---

* आयत सं. 9-10 : काफ़िरों के गर्दनों पर यूँ तो कोई तौक़ नहीं होते और सब काफ़िर अंधे भी नहीं होते । अवश्य ये आलंकारिक वर्णन है अर्थात् पुण्यकर्मों से रोकने वाले तौक़ उनकी गर्दनों में पड़े हुए हैं और वे अंतर्दृष्टि से वंचित हैं ।

الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ۝١٦

अतिरिक्त कुछ नहीं और रहमान ने कोई चीज़ नहीं उतारी । तुम तो केवल झूठ बोलते हो ।16।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ۝١٧

उन्होंने कहा, हमारा रब्ब जानता है कि नि:सन्देह हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं ।17।

وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٨

और हम पर खोल-खोल कर बात पहुँचाने के अतिरिक्त कोई उत्तरदायित्व नहीं ।18।

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٩

उन्होंने कहा, हम नि:सन्देह तुमसे अपशकुन लेते हैं । यदि तुम न रुके तो हम अवश्य तुम्हें संगसार कर देंगे और अवश्य हमारी ओर से तुम्हें पीड़ाजनक अज़ाब पहुँचेगा ।19।

قَالُوْا طَاۗىِٕرُكُمْ مَّعَكُمْ ۭ اَىِٕنْ ذُكِّرْتُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝٢٠

उन्होंने कहा, तुम्हारा अपशकुन तो तुम्हारे ही साथ है । क्या यदि तुम्हें भली-भाँति उपदेश दे दिया जाए (तो फिर भी इनकार कर दोगे ?) वास्तविकता यह है कि तुम तो सीमा लांघ जाने वाले लोग हो ।20।

وَجَاۗءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝٢١ ۙ

और नगर के दूर के किनारे से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया । उसने कहा, हे मेरी जाति ! (इन) भेजे हुओं का आज्ञापालन करो ।21।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٢٢

इनका आज्ञापालन करो जो तुमसे कोई प्रतिफल नहीं माँगते और वे हिदायत पा चुके हैं ।22।

وَمَا لِيَ لَآ اَعۡبُدُ الَّذِىۡ فَطَرَنِىۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٢٣﴾

और मुझे (भला) क्या हुआ है कि मैं उसकी उपासना न करूँ जिसने मुझे पैदा किया और उसी की ओर तुम (भी) लौटाए जाओगे ।23।

ءَاَتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنۡ يُّرِدۡنِ الرَّحۡمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغۡنِ عَنِّىۡ شَفَاعَتُهُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا يُنۡقِذُوۡنِ ﴿٢٤﴾

क्या मैं उसको छोड़ कर ऐसे उपास्य अपना लूँ कि यदि रहमान (अल्लाह) मुझे कोई दु:ख पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और न वे मुझे छुड़ा सकेंगे ।24।

اِنِّىۡۤ اِذًا لَّفِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٢٥﴾

नि:सन्देह ऐसी अवस्था में तुरन्त ही मैं खुली-खुली पथभ्रष्टता में (पड़) जाऊँगा ।25।

اِنِّىۡۤ اٰمَنۡتُ بِرَبِّكُمۡ فَاسۡمَعُوۡنِ ﴿٢٦﴾

नि:सन्देह मैं तुम्हारे रब्ब पर ईमान लाया हूँ । अत: मेरी सुनो ।26।

قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيۡتَ قَوۡمِىۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٢٧﴾

(उसे) कहा गया कि स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा । उसने कहा, काश मेरी जाति जानती ! ।27।

بِمَا غَفَرَ لِىۡ رَبِّىۡ وَجَعَلَنِىۡ مِنَ الۡمُكۡرَمِيۡنَ ﴿٢٨﴾

जो मेरे रब्ब ने मुझ से क्षमापूर्ण व्यवहार किया और मुझे सम्माननीय लोगों में सम्मिलित कर दिया ।28।

وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰى قَوۡمِهٖ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنۡزِلِيۡنَ ﴿٢٩﴾

और उसके पश्चात् हमने उसकी जाति के विरुद्ध आकाश से कोई सेना नहीं उतारी और न ही हम उतारने वाले थे ।29।

اِنۡ كَانَتۡ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ خٰمِدُوۡنَ ﴿٣٠﴾

वह तो केवल एक भयानक ध्वनि थी, अत: सहसा वे बुझ (कर राख हो) गए ।30।

يٰحَسۡرَةً عَلَى الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٣١﴾

खेद है भक्तों पर ! जब भी उनके पास कोई रसूल आता तो वे उससे उपहास करने लगते हैं ।31।

اَلَمۡ يَرَوۡا كَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنَ

क्या उन्होंने नहीं देखा कि कितनी ही पीढ़ियाँ हमने उनसे पूर्व नष्ट कर दीं ।

الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝٣٢

नि:सन्देह वे उनकी ओर लौट कर नहीं आएँगी ।32।

وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝٣٣ ع

और हमारे समक्ष वे सब के सब अवश्य पेश किए जाने वाले हैं ।33।*

(रुकू $\frac{2}{1}$)

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ۝٣٤

और उनके लिए मृत धरती एक चिह्न है। हमने उसे जीवित किया और उससे (भाँति-भाँति के) अनाज उगाये । अत: उसी में से वे खाते हैं ।34।

وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ۝٣٥

और हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ बनाए और हमने उसमें जलस्रोत फाड़ निकाले ।35।

لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝٣٦

ताकि वे उस (अर्थात् अल्लाह) के (दिये हुए) फलों में से खायें और उसे भी खायें जो उनके हाथों ने कमाया है । अत: क्या वे कृतज्ञता प्रकट नहीं करेंगे ? ।36।

سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٧

पवित्र है वह जिसने प्रत्येक प्रकार के जोड़े पैदा किए, उसमें से भी जो धरती उगाती है और स्वयं उनकी जानों में से भी और उन चीज़ों में से भी जिनका वे कोई ज्ञान नहीं रखते ।37।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۝٣٨

और उनके लिए रात्रि भी एक चिह्न है । उससे हम दिन को खींच निकालते हैं । फिर सहसा वे पुन: अंधकारों में डूब जाते हैं ।38।

وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝٣٩

और सूर्य (सदा) अपने निश्चित पड़ाव की ओर अग्रसर है । यह पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) ज्ञान रखने वाले (अल्लाह) का (निश्चित किया हुआ) विधान है ।39।

* यह अनुवाद क़ुरआन भाष्य ग्रंथ 'इम्ला मा मन्न बिहिर्रहमान' के अनुसार किया गया है ।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝٤٠

और चन्द्रमा के लिए भी हमने पड़ाव निश्चित कर दिए हैं । यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख की भाँति बन जाता है ।40।

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝٤١

सूर्य के वश में नहीं कि चन्द्रमा को पकड़ सके और न ही रात दिन से आगे बढ़ सकती है और सब के सब (अपनी-अपनी) धुरियों पर अग्रसर हैं।41।*

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝٤٢

और उनके लिए यह भी एक चिह्न है कि हमने उनकी संतान को एक भरी हुई नौका में सवार किया ।42।

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ۝٤٣

और हम उनके लिए वैसे ही और (साधन) बनाएँगे जिन पर वे सवार हुआ करेंगे ।43।

وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۝٤٤

और यदि हम चाहें तो उन्हें डुबो दें । फिर उनका कोई फ़रियाद सुनने वाला नहीं होगा और न वे बचाए जाएँगे ।44।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝٤٥

सिवाए हमारी ओर से कृपा के रूप में और एक समय तक अस्थायी लाभ पाने के उद्देश्य से ।45।

---

* आयत संख्या 39 से 41 : इन आयतों में आकाशीय पिण्डों के संबंध में ऐसी बातें वर्णन की गई हैं जिन तक अरब के एक निरक्षर की कल्पना भी नहीं पहुँच सकती थी । सूर्य और चन्द्रमा का परस्पर न मिल सकना तो प्रतिदिन देखने में आता है । परन्तु चन्द्रमा छोटा क्यों हो जाता है और फिर छोटे से बड़ा भी होता रहता है । यह उसकी परिक्रमा से संबंध रखता है । फिर यह बात वर्णन की है कि सूर्य भी एक निश्चित घड़ी की ओर गति कर रहा है । इसका एक अर्थ तो यह है कि सूर्य भी एक समय अपनी निश्चित आयु को पहुँच कर समाप्त हो जाएगा । और एक अर्थ जो आजकल अन्तरिक्ष विशेषज्ञों ने ज्ञात किया है, वह यह है कि सूर्य अपने सारे ग्रहों के साथ एक दिशा की ओर गति कर रहा है । इसका अर्थ यह है कि समस्त ब्रह्माण्ड सामूहिक रूप से गति कर रहा है । अन्यथा एक ग्रह का दूसरे से टकराव हो जाना चाहिए था । पूरा ब्रह्माण्ड गतिशील होने पर भी इन आकाशीय पिण्डों की पारस्परिक दूरियाँ उतनी ही रहती हैं । यह अन्तरिक्ष विशेषज्ञों के नवीन आविष्कारों में से है जिससे यह भी प्रमाणित होता है कि कोई और अज्ञात ब्रह्माण्ड भी है जिसके गुरुत्वाकर्षण से यह ब्रह्माण्ड उसकी ओर अग्रसर है ।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

और जब उन्हें कहा जाता है कि उन विषयों में तक़वा धारण करो जो तुम्हारे सामने हैं और उन (विषयों) में भी जो तुम्हारे पीछे हैं ताकि तुम पर कृपा की जाये (तो वे ध्यान नहीं देते) ।46।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٧﴾

और उनके पास उनके रब्ब के चिह्नों में से जब भी कोई चिह्न आता तो वे उससे विमुख होने वाले होते हैं ।47।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٨﴾

और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो जीविका तुम्हें प्रदान की है उसमें से खर्च करो तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उन लोगों से जो ईमान लाए हैं, कहते हैं क्या हम उन्हें खिलाएँ जिनको यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं खिलाता ? तुम तो केवल एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े हुए हो ।48।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾

और वे पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा ? ।49।

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٥٠﴾

वे एक भयानक ध्वनि के सिवा किसी चीज़ की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं जो उन्हें (उस समय) आ पकड़ेगी जब वे झगड़ रहे होंगे ।50।

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥١﴾

फिर वे वसीयत करने का भी सामर्थ्य नहीं पाएँगे और न अपने घर वालों की ओर लौट सकेंगे ।51। (रुकू $\frac{3}{2}$)

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥٢﴾

और बिगुल फूँका जाएगा तो सहसा वे क़ब्रों में से निकल कर अपने रब्ब की ओर दौड़ने लगेंगे ।52।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا

वे कहेंगे, हाय ! किसने हमें हमारे विश्रामस्थल से उठाया । यही तो है

مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٣﴾

जिसका रहमान (अल्लाह) ने वादा किया था और रसूल सच ही कहते थे ।53।

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٤﴾

यह केवल एक ही भयानक ध्वनि होगी । फिर सहसा वे सब के सब हमारे सामने उपस्थित कर दिए जाएँगे ।54।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

अत: आज के दिन किसी जान पर कुछ अत्याचार नहीं किया जाएगा और जो तुम किया करते थे तुम्हें केवल उसी का प्रतिफल दिया जायेगा ।55।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٦﴾

नि:सन्देह स्वर्ग निवासी आज के दिन विभिन्न प्रकार की दिलचस्पियों से आनन्दित हो रहे होंगे ।56।

هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٧﴾

वे और उनके साथी छायों में पलंगों पर तकिए लगाए होंगे ।57।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٨﴾

उनके लिए उसमें फल होगा और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे माँगेंगे ।58।

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٩﴾

बार-बार दया करने वाले रब्ब की ओर से 'सलाम' कहा जाएगा ।59।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٦٠﴾

और हे अपराधियो ! आज के दिन बिल्कुल अलग हो जाओ ।60।

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦١﴾

हे आदम की संतान ! क्या मैंने तुम्हें पक्का आदेश नहीं दिया था कि तुम शैतान की उपासना न करो । नि:सन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ।61।

وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وقف غفران

और यह कि तुम मेरी उपासना करो । यह सीधा मार्ग है ।62।

وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا اَفَلَمْ

परन्तु उसने नि:सन्देह तुम में से एक बड़े समूह को पथभ्रष्ट कर दिया ।

تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٣

अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते थे ? ।63।

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝٦٤

यही वह नरक है जिसका तुम को वादा दिया जाता था ।64।

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝٦٥

आज इसमें प्रविष्ट हो जाओ क्योंकि तुम इनकार किया करते थे ।65।

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٦٦

आज के दिन हम उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हम से वार्तालाप करेंगे और उनके पाँव उसकी गवाही देंगे जो वे कमाया करते थे ।66।*

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۝٦٧

और यदि हम चाहते तो उनकी आँखों को अवश्य विकृत कर देते । फिर वे रास्ते पर आगे बढ़ते परन्तु वे (उसे) देख कैसे सकते थे ? ।67।

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۝٦٨ ع

और यदि हम चाहते तो उन्हें उनके ठिकानों पर ही मिटा डालते । फिर न वे चलने का सामर्थ्य रखते और न लौट सकते ।68। (रुकू $\frac{4}{3}$)

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۭ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ۝٦٩

और जिसे हम लम्बी आयु देते हैं उसको शारीरिक शक्तियों की दृष्टि से कम करते चले जाते हैं । अतः क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।69।

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ۭ

और हमने उसे कविता कहना नहीं सिखाया और न ही ऐसा उसके लिए

---

* क़यामत के दिन मनुष्य की जो पूछ-ताछ होगी वह केवल फ़रिश्तों की गवाही के अनुसार नहीं होगी बल्कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर के अंग भी अपने अपराधों को स्वीकार (Confession) करेंगे । इसमें ग़ालिब की इस काव्यकल्पना का भी उत्तर आ गया :-

पकड़े जाते हैं फ़रिश्तों के लिखे पर नाहक़
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था ?

उस दिन मनुष्य स्वयं अपराध स्वीकार कर रहा होगा । पवित्र क़ुरआन की न्यायिक व्यवस्था बहुत मज़बूत है । गवाहियाँ भी होंगी और पाप-स्वीकरण भी होंगे ।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾

शोभनीय था । यह तो केवल एक उपदेश है और सुस्पष्ट क़ुरआन है ।70।

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّ يَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾

ताकि वह उसे सतर्क करे जो जीवित हो और काफ़िरों पर आदेश सत्य सिद्ध हो जाए ।71।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧٢﴾

क्या उन्होंने नहीं देखा कि जो हमारी शक्ति ने बनाया, उसमें से हमने उनके लिए पशु पैदा किए । फिर वे उनके स्वामी बन गए हैं ।72।

وَ ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ مِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾

और हमने उन्हें (अर्थात पशुओं को) उनके अधीन कर दिया । अत: उन ही में से उनकी सवारियाँ हैं । और उन्हीं में से (कुछ को) वे खाते हैं ।73।

وَ لَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَ مَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٤﴾

और उनके लिए उनमें बहुत से लाभ हैं और पेय पदार्थ भी । अत: क्या वे कृतज्ञता प्रकट नहीं करेंगे ? ।74।

وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ؕ

और उन्होंने अल्लाह के सिवा उपास्य अपना रखे हैं । संभवत: उन्हें (उनकी ओर से) सहायता मिले ।75।

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَ هُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٦﴾

वे उनकी सहायता करने का कोई सामर्थ्य नहीं रखेंगे जबकि वे तो उनके विरुद्ध (गवाही देने के लिए) उपस्थित की गई सेनाएँ होंगी ।76।

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾

अत: तुझे उनकी बात शोक में न डाले । नि:सन्देह हम जानते हैं जो वे छिपाते हैं और जो वे प्रकट करते हैं ।77।

اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٨﴾

क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया तो फिर यह कौन सी क्रांति आ गई कि वह एक खुला-खुला झगड़ालू बन गया ।78।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿۷۹﴾

और हम पर बातें बनाने लगा और अपनी उत्पत्ति को भूल गया । कहने लगा, कौन है जो हड्डियों को जीवित करेगा जबकि वह गल सड़ चुकी होंगी ? ।79।

قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿۸۰﴾

तू कह दे, उन्हें वह जीवित करेगा जिसने उन्हें पहली बार उत्पन्न किया था । और वह प्रत्येक प्रकार की सृष्टि का भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है ।80।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿۸۱﴾

वह जिसने हरे-भरे वृक्षों से तुम्हारे लिए आग बना दी । फिर तुम उन्हीं में से कुछ को जलाने लगे ।81।

اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۲﴾

क्या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है इस बात पर समर्थ नहीं कि उन जैसे (और) पैदा कर दे ? क्यों नहीं । जबकि वह तो बहुत महान स्रष्टा (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।82।

اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۸۳﴾

उसका केवल यह आदेश पर्याप्त है, जब वह किसी चीज़ का इरादा करे तो वह उसे कहता है 'हो जा' फिर वह होने लगती है और हो कर रहती है ।83।

فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۴﴾

अतः पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।84।

(रुकू $\frac{5}{4}$)

37– सूरः अस–साफ़्फ़ात

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 183 आयतें हैं ।

इससे पहले कि सूरः अस्-साफ़्फ़ात की प्रारम्भिक आयतों की व्याख्या की जाए यह वर्णन करना आवश्यक है कि इन आयतों में यह बताया गया है कि इनमें उल्लेखित भविष्यवाणियाँ जब पूरी होंगी तो यह भी अवश्य सिद्ध हो जाएगा कि जिस पुनर्जीवन की बड़े ज़ोर के साथ घोषणा की गई है वह भी अवश्य हो कर रहेगा । जैसे कि आयत सं. 12 में अल्लाह तआला कहता है कि तू उनसे पूछ कि क्या तुम अपनी सृष्टि में अधिक शक्तिशाली हो अथवा वे जिनकी अल्लाह तआला ने सृष्टि की है । इस प्रश्न के पश्चात जो बात काफ़िरों को चकित करने वाली है, यह घोषणा की गई है कि स्रष्टा की दृष्टि से नि:सन्देह अल्लाह तआला तुम्हारी सृजन शक्ति से बहुत ऊँचा स्थान रखता है और इस बात पर समर्थ है कि जब तुम मर कर मिट्टी हो जाओगे तो फिर तुम्हें वह नए सिरे से जीवित कर दे । और साथ यह चेतावनी भी है कि जब तुम दोबारा जीवित किए जाओगे तो तुम अपमानित भी किए जाओगे । अर्थात् वे लोग जो अपनी सृष्टि के बारे में ऊँचे-ऊँचे दावे किया करते थे उन पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि उनकी सृष्टि का तो कोई महत्व ही नहीं और सर्वश्रेष्ठ स्रष्टा केवल अल्लाह तआला ही है ।

अब हम प्रारम्भिक आयतों की ओर फिर ध्यान देते हैं । आयत **वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न** (क्रमानुसार पंक्तिबद्ध सेनाओं की सौगंध) में वस्तुतः उन लड़ाकू विमानों की ख़बर दी गई है जिन्हें मनुष्य बनाएगा और वे पंक्तिबद्ध हो कर शत्रुओं पर आक्रमण करेंगे और बार-बार उनको सावधान करेंगे और ऐसे परचे प्रचुर मात्रा में उन पर गिराएँगे जिनमें उनके लिए यह संदेश होगा कि अपनी गर्दनें हमारे समक्ष झुका दो अन्यथा तुम तबाह कर दिए जाओगे ।

इसके पश्चात् अल्लाह तआला कहता है कि उनकी क्या हैसियत है कि वे अपनी ज़ाहिरी शक्ति के द्वारा अपने ईश्वरत्व का दावा करें । वस्तुतः अल्लाह एक ही है ।

फिर कहा कि वह पूर्वी दिशाओं का रब्ब है । यह आयत भी एक भविष्यवाणी का रंग रखती है अन्यथा उस युग में तो कई पूर्वी दिशाओं की कोई कल्पना ही नहीं थी जो वर्तमान युग में पैदा हुई है । यह वह समय होगा जब मनुष्य विभिन्न प्रकार के नवीन अविष्कारों के द्वारा जो बहुत ऊँची उड़ान भरने के सामर्थ्य रखते होंगे जैसे कि रॉकेट इत्यादि के द्वारा प्रयत्न करेगा कि मला-ए-आ'ला (अर्थात् फ़रिश्तों) के रहस्य को ज्ञात करे, जिस प्रकार वर्तमान युग में प्रयास हो रहे हैं । परन्तु प्रत्येक ओर से उन पर पथराव होगा । अर्थात् वे आकाशीय पिण्डों से बरसने वाले अत्यन्त भयानक पत्थरों का निशाना

बनाए जाएँगे और सिवाए इसके कि वे निकट के आकाश के कुछ रहस्य जान लें वे अपने प्रयास में सफल नहीं होंगे । ये वे विषय हैं जिन पर वर्तमान युग और इस के नए अविष्कार साक्षी हैं कि बिल्कुल यही कुछ हो रहा है ।

इस सूर: के आरम्भ में चूँकि युद्धों का वर्णन है जो सांसारिक विजय प्राप्ति के लिए अनेक जातियों के बीच लड़े जाएँगे । इस लिए इस प्रकरण में हज़रत मुहम्मद सल्ल. और उनके सहाबियों के उस युद्ध का भी वर्णन किया गया जो केवल अल्लाह के लिए लड़ा गया था, और जिसमें दूसरों के रक्त बहाने के लिए तलवार नहीं उठाई गई थी । बल्कि क़ुर्बानियों की भाँति सहाबियों का समूह को ज़िबह किया जाना था और इस विषय का सम्बन्ध हज़रत इब्राहीम अलै. की उस क़ुर्बानी से था जिसमें वह अपने पुत्र को ज़िबह करने के लिए तत्पर हो गये थे । व्याख्याकारों का यह विचार कि कोई मेढ़ा झाड़ी में फंस गया था और हज़रत इस्माईल अलै. को इस महान ज़िबह के बदले में छोड़ दिया गया था, यह बड़ा बोदा विचार है जिसका न क़ुरआन में वर्णन है, न हदीस में । हज़रत इस्माईल अलै. के बदले एक मेढ़ा कैसे महान हो सकता है ? वस्तुत: हज़रत इस्माईल को इस लिए जीवित रखा गया ताकि संसार उस महान ज़िबह के दृश्य को देख ले जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के समय में घटित हुआ ।

सूर: अस्-साफ़्फ़ात के संदर्भ से जहाँ इससे पूर्व बहुत से पंक्तिबद्ध आक्रमणकारियों का वर्णन हुआ है, इस सूर: के अन्त पर पवित्र क़ुरआन यह वर्णन करता है कि वास्तविक पंक्तिबद्ध सेनाएँ तो हमारी हैं । इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पंक्तिबद्ध सेनाओं का भी वर्णन कर दिया गया और उन फ़रिश्तों का भी जो आप सल्ल. के समर्थन के लिए पंक्तिबद्ध रूप में आकाश से उतारे गए । जिसका अन्तिम परिणाम यही होना था कि देखने में ये शक्तिहीन पंक्तिबद्ध युद्ध करने वाले, जिनका शत्रु उनसे बहुत अधिक शक्तिशाली था पराजित हो जाते, परन्तु अल्लाह की नियति भारी पड़ी और अल्लाह और अल्लाह वाले ही विजयी हुए ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَّ ثَلَاثٌ وَّ ثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ②

क्रमानुसार पंक्तिबद्ध होने वाली (सेनाओं) की सौगन्ध ।2।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ③

फिर उनकी, जो ललकारते हुए डपट ने वालियाँ हैं ।3।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ④

फिर (अल्लाह को) बहुत याद करने वालिओं की ।4।

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ⑤

नि:सन्देह तुम्हारा उपास्य एक ही है।5।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ⑥

अकाशों का भी (वह) रब्ब है और धरती का भी और उसका भी जो उन दोनों के बीच है । और समस्त पूर्वी दिशाओं का रब्ब है ।6।

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِالْكَوَاكِبِ ⑦

नि:सन्देह हमने निकट के आकाश को सितारों के द्वारा एक शोभा प्रदान की ।7।

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ⑧

और (यह) प्रत्येक धुतकारे हुए शैतान से सुरक्षा स्वरूप है ।8।

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ⑨

वे मला-ए-आ'ला (अर्थात फ़रिश्तों) की बातें नहीं सुन सकेंगे और प्रत्येक ओर से पथराव किए जाएँगे ।9।*

* आयत सं. 7 से 9 :- इन आयतों में ब्रह्माण्ड की प्रत्यक्ष व्यवस्था का भी वर्णन है कि किस प्रकार धरती का वायुमण्डल धरती पर सदा बरसने वाले उल्का पिण्डों को वायुमण्डल में ही जला कर भस्म कर देता है और उसके जलने से पीछे की ओर एक अग्निशिखा दूर तक लपकती हुई प्रतीत होती है । इसी प्रकार यह भी कहा गया कि एक समय आएगा जब मनुष्य ब्रह्माण्ड की ख़बरों को प्राप्त करने का प्रयास करेगा जिसकी कोई कल्पना भी उस युग में नहीं हो सकती थी । परन्तु सुरक्षित राकेटों→

دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿۱۰﴾

इस अवस्था में कि (वे) धिक्कारे हुए हैं और उनके लिए चिमट जाने वाला अज़ाब (निश्चित) है ।10।

اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿۱۱﴾

सिवाय उसके जो कोई एक-आध बात उचक ले तो उसका भी एक प्रज्वलित अग्निशिखा पीछा करेगी ।11।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿۱۲﴾

अतः तू उनसे पूछ क्या सृष्टि करने की दृष्टि से वे अधिक सबल हैं अथवा वे जिन्हें हमने पैदा किया (सृष्टि के रूप में अधिक शक्तिशाली हैं) ? निःसन्देह हमने उन्हें एक चिमट जाने वाली मिट्टी से पैदा किया ।12।

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ﴿۱۳﴾

वास्तविकता यह है कि तू तो (सृष्टि पर) आश्चर्य चकित हो उठा है जबकि वे खिल्ली उड़ाते हैं ।13।

وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾

और जब उन्हें उपदेश दिया जाता है तो वे उपदेश ग्रहण नहीं करते ।14।

وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ﴿۱۵﴾

और जब भी वे कोई चिह्न देखें तो उपहास करने लगते हैं ।15।

وَقَالُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶﴾

और कहते हैं यह तो केवल एक खुला-खुला जादू है ।16।

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿۱۷﴾

क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम अवश्य उठाए जाने वाले हैं ? ।17।

اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ﴿۱۸﴾

और क्या हमारे पिछले पूर्वज भी ।18।

←में यात्रा करने वाले उन मनुष्यों पर प्रत्येक ओर से पथराव किया जाएगा और वे निचले आकाश से आगे नहीं बढ़ सकते । केवल निकट के आकाश तक पहुँचने में किसी सीमा तक सफल हो सकते हैं । आध्यात्मिक दृष्टि से इस से अभिप्राय बुरे विचार के साथ वह्इ का पीछा करने वाले और अनुमान लगाने वाले मनुष्य रूपी शैतान हैं । शैतान तो वह्इ के अवतरण के निकट तक भी नहीं पहुँच सकता परन्तु मनुष्य रूपी शैतान जैसे सामरी था, कुछ अनुमान लगा सका कि वह्इ के कारण लोगों पर क्यों रोब पड़ता है ।

قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ﴿١٩﴾

तू कह दे, हाँ ! इस अवस्था में कि तुम अपमानित होगे ।19।

فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٠﴾

अत: नि:सन्देह यह एक ही डपट होगी । तो सहसा वे देखते रह जाएँगे ।20।

وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢١﴾

और वे कहेंगे, हाय हमारा सर्वनाश ! यह तो प्रतिफल का दिन है ।21।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع

यह (वह) निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठलाया करते थे ।22। (रुकू $\frac{1}{5}$)

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٣﴾

उन लोगों को इकट्ठा करो जिन्होंने अत्याचार किया और उनके साथियों को भी । और उनको भी जिनकी वे उपासना किया करते थे, ।23।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٤﴾

अल्लाह के सिवा । अत: उन्हें नरक के मार्ग पर डाल दो ।24।

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿٢٥﴾

और उन्हें थोड़ा ठहराओ, नि:सन्देह वे पूछे जाने वाले हैं ।25।

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٦﴾

(अब) तुम्हें क्या हो गया है कि (आज) तुम एक दूसरे की सहायता नहीं करते ।26।

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٧﴾

बल्कि वे तो आज (प्रत्येक अपराध) को स्वीकार करने वाले हैं ।27।

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

और उनमें से कुछ-कुछ की ओर प्रश्न करते हुए ध्यान देंगे ।28।

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٩﴾

वे कहेंगे कि नि:सन्देह तुम दाहिनी ओर से (अर्थात धर्म की आड में हमें भटकाने के लिए) हमारे पास आया करते थे ।29।

قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٠﴾

वे (उत्तर में) कहेंगे कि तुम भी तो किसी प्रकार ईमान लाने वाले नहीं थे ।30।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَٰنٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَٰغِينَ ﴿٣١﴾

हमें तो तुम पर किसी प्रकार की दृढ़ तर्क की दृष्टि से बढ़ोत्तरी प्राप्त नहीं थी । बल्कि तुम स्वयं ही सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग थे ।31।

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ إِنَّا لَذَآئِقُونَ ﴿٣٢﴾

अतः हम पर हमारे रब्ब का कथन सत्य सिद्ध हो गया । हम निःसन्देह (अज़ाब का स्वाद) चखने वाले हैं ।32।

فَأَغْوَيْنَٰكُمْ إِنَّا كُنَّا غَٰوِينَ ﴿٣٣﴾

अतः हमने तुम्हें पथभ्रष्ट किया । निःसन्देह हम स्वयं भी पथभ्रष्ट थे ।33।

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى ٱلْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٤﴾

निःसन्देह वे (सब) उस दिन अज़ाब में बराबर भागीदार होंगे ।34।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾

निःसन्देह हम अपराधियों से ऐसा ही व्यवहार करते हैं ।35।

إِنَّهُمْ كَانُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ ۙ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٦﴾

निःसन्देह वे ऐसे थे, कि जब उन्हें कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं तो वे अहंकार करते थे ।36।

وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوٓا۟ ءَالِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍۭ ﴿٣٧﴾

और कहते थे क्या हम एक पागल कवि के लिए अपने उपास्यों को छोड़ देंगे ? ।37।

بَلْ جَآءَ بِٱلْحَقِّ وَصَدَّقَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٣٨﴾

वास्तविकता यह है कि वह (नबी) तो सत्य लेकर आया था और सब रसूलों का सत्यापन करता था ।38।

إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا۟ ٱلْعَذَابِ ٱلْأَلِيمِ ﴿٣٩﴾

निःसन्देह तुम पीड़ाजनक अज़ाब अवश्य चखने वाले हो ।39।

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٠﴾

और जो तुम किया करते थे उसी का प्रतिफल तुम्हें दिया जा रहा है ।40।

إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٤١﴾

अल्लाह के निष्ठावान भक्तों का मामला भिन्न है ।41।

أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤٢﴾

यही वे लोग हैं जिनके लिए जानी-पहचानी जीविका (निश्चित) है ।42।

فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿٤٣﴾

भाँति-भाँति के फल । इस अवस्था में कि वे खूब सम्मान दिए जाएँगे ।43।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۙ﴿٤٤﴾

नेमतों वाले बाग़ों में ।44।

عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٥﴾

तख़्तों पर आमने-सामने बैठे हुए होंगे ।45।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ﴿٤٦﴾

उन के समक्ष जलस्रोतों के बहते जल से भरे कटोरे परोसे जाएँगे ।46।

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ﴿٤٧﴾

अत्यन्त स्वच्छ, पीने वालों के लिए पूर्णत: स्वादिष्ट (होंगे) ।47।

لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٨﴾

उन (पेय पदार्थों) में न कोई नशा होगा और न वे उनके प्रभाव से बुद्धि खो बैठेंगे ।48।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ۙ﴿٤٩﴾

और उनके पास नीची दृष्टि रखने वाली, बड़ी आँखों वाली (कुँवारी कन्याएँ) होंगी ।49।

كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٥٠﴾

(वे दमक रही होंगी) मानो वे ढाँप कर रखे हुए अंडे हैं ।50।*

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥١﴾

तो उनमें से कुछ, कुछ दूसरों से प्रश्न करते हुए ध्यान देंगे ।51।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ۙ﴿٥٢﴾

उनमें से एक कहने वाला कहेगा, नि:सन्देह मेरा एक साथी हुआ करता था ।52।

يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٣﴾

वह कहा करता था, क्या तुम (इस बात की) पुष्टि करने वाले हो ? ।53।

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٤﴾

कि क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे और हड्डियाँ रह जाएँगे तो क्या हमें फिर भी प्रतिफल दिया जाएगा ? ।54।

---

* आयत सं. 49 से 50 : ये अवश्य उपमाएँ हैं अन्यथा अप्सराओं के संबंध में यह कहना कि मानो वे ढ़के हुए अंडे हैं यूँ तो कोई अर्थ नहीं रखता । जिस प्रकार ढके हुए अंडे साफ़ और स्वच्छ होते हैं इसी प्रकार उनके आध्यात्मिक साथी भी अंत:करण की दृष्टि से पवित्र एवं स्वच्छ होंगे ।

قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٥﴾

वह कहेगा, क्या तुम झांक कर देख सकते हो ? ।55।

فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾

अतः उसने झांक कर देखा तो उस (साथी) को नरक के बीचों-बीच पाया ।56।

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٧﴾

उसने कहा, अल्लाह की सौगन्ध ! सम्भव था कि तू मुझे भी तबाह कर देता ।57।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٨﴾

और यदि मेरे रब्ब की नेमत न होती तो मैं अवश्य पेश किए जाने वालों में से होता ।58।

اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٩﴾

अतः क्या हम मरने वाले नहीं थे ? ।59।

اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٦٠﴾

सिवाए हमारी पहली मृत्यु के और हमें कदापि अज़ाब नहीं दिया जाएगा ।60।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦١﴾

निःसन्देह यही (ईमान लाने वाले की) एक बहुत बड़ी सफलता है ।61।

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦٢﴾

अतः चाहिए कि ऐसे ही स्थान (की प्राप्ति) के लिए सब कर्म करने वाले कर्म करें ।62।

اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٣﴾

क्या आतिथ्य स्वरूप यह उत्तम है अथवा थूहर का पौधा ।63।

اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٤﴾

निःसन्देह हमने उसे अत्याचारियों के लिए परीक्षा (स्वरूप) बनाया है।64।

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٥﴾

निःसन्देह यह एक पौधा है जो नरक की गहराई में उगता है ।65।

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٦﴾

उसकी कलियाँ ऐसी हैं जैसे शैतानों के सिर ।66।

فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۟ؕ ٦٧

अत: नि:सन्देह वे उसी में से खाने वाले हैं । फिर उसी से पेट भरने वाले हैं ।67।

ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۟ۚ ٦٨

फिर नि:सन्देह उनके लिए उस (खाने) के पश्चात अत्यन्त गर्म पानी मिला हुआ पेय होगा ।68।

ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاْاِلَى الْجَحِيْمِ ٦٩

फिर नि:सन्देह नरक की ओर उनको लौट कर जाना होगा ।69।

اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ۟ۙ ٧٠

नि:सन्देह उन्होंने अपने पूर्वजों को पथभ्रष्ट पाया था ।70।

فَهُمْ عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ٧١

अत: उन्हीं के पदचिह्नों पर वे भी दौड़ाए जा रहे हैं ।71।

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۟ۙ ٧٢

और नि:सन्देह उनसे पूर्व पहली जातियों में से भी अधिकतर (लोग) पथभ्रष्ट हो चुके थे ।72।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ٧٣

जबकि निश्चित रूप से हम उनमें सतर्ककारी भेज चुके थे ।73।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۟ۙ ٧٤

अत: देख कि सतर्क किये जाने वालों का अंत कैसा हुआ ।74।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۟ع ٧٥

सिवाए अल्लाह के द्वारा विशिष्ट किये गये भक्तों के ।75। (रुकू $\frac{2}{6}$)

وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۟ؗ ٧٦

और नि:सन्देह हमें नूह ने पुकारा तो (देखो) हम कैसा अच्छा उत्तर देने वाले हैं ।76।

وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۟ؗ ٧٧

और हमने उसको और उसके परिवार को बड़ी बेचैनी से मुक्ति प्रदान की ।77।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۟ؗ ٧٨

और हमने उसकी संतान को ही शेष रहने वाला बना दिया ।78।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۟ؗ ٧٩

और हमने बाद में आने वालों में उसका सु-स्मरण शेष रखा ।79।

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾

सलाम हो नूह पर समस्त लोकों में ।80।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨١﴾

नि:सन्देह हम इसी प्रकार अच्छे काम करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।81।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

नि:सन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था ।82।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٣﴾

फिर दूसरों को हमने डुबो दिया ।83।

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٤﴾ وقف لازم

और नि:सन्देह उसी के समूह में से इब्राहीम भी था ।84।

اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٥﴾

(याद कर) जब वह अपने रब्ब के समक्ष निष्कपट हृदय लेकर उपस्थित हुआ ।85।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٦﴾ج

(फिर) जब उसने अपने पिता से और उसकी जाति से कहा, वह है क्या जिसकी आप उपासना करते हो? ।86।

اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٧﴾ط

क्या अल्लाह के सिवा आप संपूर्ण मिथ्या (अर्थात) दूसरे उपास्य चाहते हो ? ।87।

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٨﴾

अत: आपने समस्त लोकों के रब्ब को क्या समझ रखा है ।88।

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿٨٩﴾لا

फिर उसने सितारों पर एक दृष्टि डाली ।89।

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿٩٠﴾

और कहा, नि:सन्देह मैं तो विरक्त हो गया हूँ ।90।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩١﴾

अत: वे उससे पीठ फेरते हुए चले गए ।91।

فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩٢﴾ج

फिर उसने नज़र बचा कर उनके उपास्यों की ओर ध्यान दिया । फिर पूछा, क्या

तुम भोजन करते नहीं ?।92।*

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٣﴾

तुम्हें क्या हुआ क्या है कि तुम बोलते नहीं ? ।93।

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٤﴾

फिर उसने दाहिने हाथ से एक गहरी चोट लगाते हुए उनके विरुद्ध गुप्त कार्यवाही की ।94।

فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٥﴾

फिर वे (लोग) उसकी ओर दौड़ते हुए आए ।95।

قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ۙ﴿٩٦﴾

उसने (उन से) कहा, क्या तुम उनकी उपासना करते हो जिनको तुम (स्वयं) तराशते हो ? ।96।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾

हालाँकि अल्लाह ने तुम्हें और उसे भी पैदा किया है जो तुम बनाते हो ।97।

قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ﴿٩٨﴾

उन्होंने कहा, उस (इब्राहीम) के लिए एक चिता बनाओ, फिर उसे धधकती हुई अग्नि में झोंक दो ।98।

فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٩﴾

अतः उन्होंने उसके संबंध में एक (अत्याचार पूर्ण) षड्यन्त्र किया तो हमने उन्हें खूब अपमानित कर दिया।99।

وَقَالَ اِنِّيْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿١٠٠﴾

और उसने कहा, निःसन्देह मैं अपने रब्ब की ओर जाने वाला हूँ। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा ।100।

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾

हे मेरे रब्ब ! मुझे सदाचारियों में से (उत्तराधिकारी) प्रदान कर ।101।

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠٢﴾

अतः हमने उसे एक सहनशील पुत्र का शुभ-समाचार दिया ।102।

---

* आयत सं. 88 से 92 : यहाँ अरबी शब्द **सक़ीम** से अभिप्राय रोगी नहीं है क्योंकि इसके पश्चात इतना बड़ा काम अर्थात् उनके मूर्तियों को तोड़ना रोगी व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं होता। **सक़ीम** शब्द का एक अर्थ विरक्त होना भी है। हज़रत इब्राहीम अलै. ने यह कहा था कि मैं तुम से और तुम्हारी मुर्तियों से विरक्त हूँ। इसके पश्चात आपने उन मूर्तियों के तोड़ने का मन बनाया।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٣﴾

अत: जब वह (पुत्र) उसके साथ दौड़ने-फिरने की आयु को पहुँचा (तो) उसने कहा, हे मेरे प्रिय पुत्र ! नि:सन्देह मैं निद्रावस्था में देखा करता हूँ कि मैं तुझे ज़िबह कर रहा हूँ । अत: विचार कर तेरी क्या राय है ? उसने कहा, हे मेरे पिता ! वही करें जो आपको आदेश दिया जाता है। नि:सन्देह यदि अल्लाह चाहेगा तो मुझे आप धैर्य धरने वालों में से पाएँगे ।103।*

فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٤﴾ ۚ

जब वे दोनों सहमत हो गए और उस (पिता) ने उस (पुत्र) को माथे के बल लिटा दिया ।104।

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٥﴾ ۙ

तब हमने उसे पुकारा कि हे इब्राहीम! ।105।

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٦﴾

निश्चित रूप से तू अपना स्वप्न पूरा कर चुका है । नि:सन्देह इसी प्रकार हम नेकी करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।106।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٧﴾

नि:सन्देह यह एक बड़ी खुली-खुली परीक्षा थी ।107।

---

* इस आयत में हज़रत इब्राहीम अलै. के अपने पुत्र इस्माईल को प्रत्यक्ष रूप से ज़िबह करने के लिए तैयार होने की घटना का उल्लेख किया गया है । हज़रत इब्राहीम अलै. ने एक बार स्वप्न नहीं देखा था बल्कि बार-बार स्वप्न देखा करते थे कि मैं अपने पुत्र को ज़िबह कर रहा हूँ । परन्तु प्रत्यक्ष रूप से ज़िबह करने का अर्थ आप के विचार में आने के बावजूद आपने उस समय तक अपने पुत्र की जान लेने की इच्छा व्यक्त नहीं की जब तक कि वह स्वयं अपनी इच्छा से इसके लिए तैयार नहीं हुआ । जैसा कि उपरोक्त आयत में उल्लेख है कि जब वह दौड़ने भागने की आयु को पहुँचा और अपने पिता के साथ भारी काम करने लगा । परन्तु इस स्वप्न का अर्थ यह था कि इस्माईल अलै. को निर्जल चटियल घाटी में छोड़ दिया जाए । अत: अल्लाह तआला ने इस स्वप्न को प्रत्यक्ष रूप से पूरा करने से हज़रत इब्राहीम अलै. को रोके रखा और फिर बता दिया कि तू पहले ही इस स्वप्न को पूरा कर चुका है ।

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ۝١٠٨

और हमने एक ज़िब्हे-अज़ीम (महान बलिदान) के बदले उसे बचा लिया ।108।*

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝١٠٩

और हमने बाद में आने वालों में उस के शुभ-स्मरण को शेष रखा ।109।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝١١٠

इब्राहीम पर सलाम हो ।110।

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١١١

इसी प्रकार हम नेकी करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।111।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١١٢

नि:सन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था ।112।

وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١١٣

और हमने उसे इसहाक़ का नबी के रूप में शुभ समाचार दिया जो सदाचारियों में से था ।113।

وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ۭ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ۝١١٤ ع

और उस पर और इसहाक़ पर हमने बरकत भेजी । और उन दोनों की संतान में परोपकार करने वाले भी थे और अपने ऊपर खुल्लम-खुल्ला अत्याचार करने वाले भी थे ।114। (रुकू $\frac{3}{7}$)

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝١١٥

और नि:सन्देह हमने मूसा और हारून पर भी कृपा की थी ।115।

وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝١١٦

और उन दोनों को और उनकी जाति को हमने बहुत बड़ी बेचैनी से मुक्ति प्रदान की थी ।116।

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝١١٧

और हमने उनकी सहायता की । अत: वे ही विजयी होने वाले बने ।117।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ۝١١٨

और हमने उन दोनों को एक सुस्पष्ट करने वाली पुस्तक प्रदान की ।118।

---

* **ज़िब्हे-अज़ीम** से अभिप्राय अल्लाह के मार्ग में क़ुर्बान होने वाले सब नबियों में श्रेष्ठ अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं । जिनका आगमन हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बच जाने के कारण ही संभव था ।

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٩﴾

और दोनों को हमने सीधे मार्ग पर चलाया था ।119।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٠﴾

और हमने बाद में आने वालों में उन दोनों के सु-स्मरण को शेष रखा ।120।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢١﴾

सलाम हो मूसा और हारून पर ।121।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾

निःसन्देह हम इसी प्रकार परोपकार करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।122।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٣﴾

निःसन्देह वे दोनों हमारे मोमिन भक्तों में से थे ।123।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾

और निःसन्देह इलियास भी रसूलों में से था ।124।

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٥﴾

जब उसने अपनी जाति से कहा, क्या तुम तक़वा धारण नहीं करोगे ? ।125।

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿١٢٦﴾

क्या तुम बअल* को पुकारते हो और सर्वश्रेष्ठ पैदा करने वाले को छोड़ देते हो ? ।126।

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٧﴾

अल्लाह को, जो तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी ।127।

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٨﴾

अतः उन्होंने उसको झुठला दिया । और निःसन्देह वे पेश किए जाने वाले हैं ।128।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٩﴾

सिवाए अल्लाह के निर्वाचित भक्तों के ।129।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾

और हमने पीछे आने वालों में उसके सु-स्मरण को शेष रखा ।130।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣١﴾

सलाम हो इल्यासीन पर ।131।**

---

* बअल - वह मूर्ति जिसकी इस्लाम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे ।

** इस आयत में इल्यास के बदले **इल्यासीन** कहा गया है । व्याख्याकार इसका एक अर्थ तो यह किया करते हैं कि तीन इल्यास थे । क्योंकि तीन से कम की संख्या पर **इल्यासीन** शब्द बहुवचन के रूप में→

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٢﴾

नि:सन्देह हम इसी प्रकार परोपकार करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।132।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٣﴾

नि:सन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था ।133।

وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٤﴾

और लूत भी अवश्य रसूलों में से था।134।

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٥﴾

जब हमने उसे और उसके सारे परिवार को मुक्ति प्रदान की ।135।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٣٦﴾

सिवाए पीछे रह जाने वालों में (सम्मिलित) एक बुढ़िया के ।136।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٧﴾

फिर हमने दूसरों को तबाह कर दिया ।137।

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ﴿١٣٨﴾

और नि:सन्देह तुम सुबह को उन (की क़ब्रों) पर से गुज़रते हो ।138।

وَبِاللَّيْلِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٩﴾ ع

और रात को भी । अत: क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।139। (रुकू $\frac{4}{8}$)

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤٠﴾

और नि:सन्देह यूनुस (भी) रसूलों में से था ।140।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١٤١﴾

जब वह (सवार होने के लिए) भरी हुई नौका की ओर भागते हुए गया ।141।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿١٤٢﴾

फिर उसने क़ुर्आ (पर्ची) निकाला तो वह बाहर धकेल दिए जाने वालों में से बन गया ।142।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٣﴾

फिर मछली ने उसे निगल लिया । जबकि वह (अपने आप को) कोस रहा था ।143।

←प्रयुक्त नहीं हो सकता । परन्तु इब्रानी भाषा शैली में एकवचन के लिए भी सम्मान देने के उद्देश्य से बहुवचन का रूप प्रयोग किया जाता है । जैसा कि उनकी ग्रन्थों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद के बदले 'मुहम्मदीम' लिखा हुआ है । क्योंकि एलिया (इल्यास) ने भी असाधारण क़ुर्बानी दी थी । इस लिए उन के नाम का भी बहुवचन के रूप में उल्लेख किया गया ।

فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٤﴾

अतः यदि वह (अल्लाह की) स्तुति करने वालों में से न होता ।144।

لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٥﴾

तो अवश्य वह उसके पेट में उस दिन तक रहता जब वे (लोग) उठाए जाएँगे ।145।

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٦﴾

अतः हमने उसे एक खुले मैदान में उछाल फेंका जबकि वह अत्यन्त बीमार था ।146।

وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٧﴾

और हमने उसे ढाँपने के लिए एक कद्दू जैसी लता उगा दी ।147।

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٨﴾

और हमने उसे एक लाख (लोगों) की ओर भेजा बल्कि वे (संख्या में) बढ़ रहे थे ।148।

فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٩﴾

अतः वे ईमान ले आए और हमने उन्हें एक अवधि तक कुछ लाभ पहुँचाया ।149।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٥٠﴾

अतः तू उनसे पूछ क्या तेरे रब्ब के लिए तो पुत्रियाँ हैं और उनके लिए पुत्र हैं ? ।150।

اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥١﴾

या फिर हमने फ़रिश्तों को स्त्रियाँ बनाया है, और वे इस पर साक्षी हैं ? ।151।

اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥٢﴾

सावधान ! नि:सन्देह वे अपनी ओर से झूठ गढ़ते हुए (यह) कहते हैं ।152।

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٣﴾

(कि) अल्लाह ने पुत्र पैदा किया है । और नि:सन्देह ये झूठे लोग हैं ।153।

اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٤﴾

क्या उसने पुत्रों पर पुत्रियों को प्रधानता दी है ? ।154।

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٥﴾

तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो ? ।155।

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٦﴾

अतः क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करते ? ।156।

اَمۡ لَكُمۡ سُلۡطٰنٌ مُّبِيۡنٌ ۙ﴿۱۵۷﴾

अथवा तुम्हारे पास कोई अकाट्य (और) स्पष्ट तर्क है ? ।157।

فَاۡتُوۡا بِكِتٰبِكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۱۵۸﴾

अतः यदि तुम सच्चे हो तो अपनी पुस्तक लाओ ।158।

وَجَعَلُوۡا بَيۡنَهٗ وَبَيۡنَ الۡجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدۡ عَلِمَتِ الۡجِنَّةُ اِنَّهُمۡ لَمُحۡضَرُوۡنَ ۙ﴿۱۵۹﴾

और उन्होंने उसके और जिन्नों के मध्य एक संबंध गढ़ लिया । हालाँकि निःसन्देह जिन्न जानते हैं कि वे भी अवश्य पेश किए जाने वाले हैं ।159।

سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۙ﴿۱۶۰﴾

पवित्र है अल्लाह उससे जो वे वर्णन करते हैं ।160।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿۱۶۱﴾

अल्लाह के चुने हुए भक्त (इन बातों से) भिन्न हैं ।161।

فَاِنَّكُمۡ وَمَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ﴿۱۶۲﴾

अतः निःसन्देह तुम और वे जिनकी तुम उपासना करते हो ।162।

مَاۤ اَنۡتُمۡ عَلَيۡهِ بِفٰتِنِيۡنَ ۙ﴿۱۶۳﴾

तुम उसके विरुद्ध (किसी को) पथभ्रष्ट नहीं कर सकोगे ।163।

اِلَّا مَنۡ هُوَ صَالِ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۶۴﴾

सिवाए उसके जिसने नरक में प्रविष्ट होना ही है ।164।

وَمَا مِنَّاۤ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعۡلُوۡمٌ ۙ﴿۱۶۵﴾

और (फ़रिश्ते कहेंगे कि) हम में से प्रत्येक के लिए एक निर्धारित स्थान निश्चित है ।165।

وَّاِنَّا لَنَحۡنُ الصَّآفُّوۡنَ ۚ﴿۱۶۶﴾

और निःसन्देह हम पंक्तिबद्ध हैं ।166।

وَاِنَّا لَنَحۡنُ الۡمُسَبِّحُوۡنَ ﴿۱۶۷﴾

और निःसन्देह हम स्तुति कर रहे हैं।167।

وَاِنۡ كَانُوۡا لَيَقُوۡلُوۡنَ ۙ﴿۱۶۸﴾

और वे (काफ़िर) तो कहा करते थे,।168।

لَوۡ اَنَّ عِنۡدَنَا ذِكۡرًا مِّنَ الۡاَوَّلِيۡنَ ۙ﴿۱۶۹﴾

यदि हमारे पास पहले लोगों का कोई अनुस्मरण (पहुँचा) होता ।169।

لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿۱۷۰﴾

तो निःसन्देह हम अल्लाह के चुने हुए भक्त हो जाते ।170।

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝١٧١

अत: (अब जबकि) उन्होंने उस (अर्थात् अल्लाह) का इनकार कर दिया तो अवश्य वे (उसका परिणाम) जान लेंगे ।171।

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٧٢

और नि:सन्देह हमारे भेजे हुए भक्तों के पक्ष में हमारा (यह) आदेश बीत चुका है ।172।

اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ۝١٧٣

(कि) नि:सन्देह वे ही हैं जिन्हें सहायता प्रदान की जाएगी ।173।

وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝١٧٤

और नि:सन्देह हमारी सेना ही अवश्य विजयी होने वाली है ।174।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝١٧٥

अत: उनसे कुछ समय तक विमुख रह।175।

وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۝١٧٦

और उन्हें देखता रह । फिर वे भी शीघ्र ही देख लेंगे ।176।

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝١٧٧

फिर क्या वे हमारे अज़ाब की मांग में जल्दी करते हैं ? ।177।

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝١٧٨

अत: जब वह उनके आंगन में उतरेगा तो सतर्क किये जाने वालों की सुबह बहुत बुरी होगी ।178।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝١٧٩

और कुछ देर के लिए उनसे विमुख हो जा ।179।

وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۝١٨٠

और देख ! फिर वे भी अवश्य देख लेंगे ।180।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝١٨١

तेरा रब्ब, सम्पूर्ण सम्मान का स्वामी पवित्र है उससे जो वे वर्णन करते हैं।181।

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٨٢

और सलाम हो सब रसूलों पर ।182।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٨٣

और समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जो समस्त लोकों का रब्ब है ।183।

(रुकू $\frac{5}{9}$)

38- सूरः साद

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 89 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी खण्डाक्षरों में से एक अक्षर **साद** से किया गया है । व्याख्याकार इसकी एक व्याख्या यह करते हैं कि **साद** से तात्पर्य **सत्यवादी** है । अर्थात वह अल्लाह जिसकी बातें अवश्य पूरी हो कर रहेंगी । और क़ुरआन को जो महान उपदेशों पर आधारित है, इस बात पर साक्षी ठहराया गया है कि इस क़ुरआन का इनकार केवल झूठी प्रतिष्ठा के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाले विरोध के कारण है ।

इसी सूरः में हज़रत दाऊद अलै. के कश्फ़ (दिव्य-दर्शन) का दृश्य प्रस्तुत किया गया है जिससे मनुष्य प्रवृत्ति की लालसा दिखाई पड़ती है कि यदि उसे निनान्वे प्रतिशत भाग पर भी प्रभुत्व मिल जाए तो फिर वह शत-प्रतिशत पर प्रभुत्व पाने की इच्छा करता है। और दुर्बलों और निर्धनों के लिए एक प्रतिशत भी नहीं छोड़ता । पिछली सूरः में जो बड़ी-बड़ी शक्तियों के युद्धों का वर्णन मिलता है उनका भी केवल यही उद्देश्य है कि समस्त निर्धन देशों से शासनतन्त्र के समस्त अधिकार छीन लें और किसी अन्य की भागीदारी के बिना समग्र संसार पर शासन करें । दूसरे शब्दों में यह ईश्वरत्व का दावा है। इसके पश्चात मानव जाति को हज़रत दाऊद अलै. के हवाले से यह उपदेश दिया गया है कि परस्पर झगड़ों का निर्णय न्याय के साथ करना चाहिए, अत्याचार और बल प्रयोग से नहीं ।

इसी सूरः में हज़रत सुलैमान अलै. से सम्बंधित यह वर्णन मिलता है कि आप को घोड़ों से बहुत प्रेम था । इस बात की अशुद्ध व्याख्या करते हुए कुछ विद्वान यह वर्णन करते हैं कि एक बार वह घोड़ों को थपकियाँ दे रहे थे और उनकी टांगों पर हाथ फेर रहे थे कि नमाज़ का समय निकल गया । इस पर हज़रत सुलैमान ने अपनी इस लापरवाही का क्रोध उन निरीह घोड़ों पर उतारा और उनको वध करने का आदेश दिया । परन्तु इस अत्यन्त हास्यास्पद व्याख्या को वह आयत पूर्णतया झुठला रही है जिसमें हज़रत सुलैमान अलै. कहते हैं कि उनको मेरी ओर वापस ले आओ । इससे पता चलता है कि नबियों को अल्लाह तआला के लिए जिहाद करने के लिए जो सवारियाँ प्रदान होती हैं वे उनसे बहुत प्रेम करते हैं और बार-बार उनको देखना चाहते हैं । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी कहा है कि मेरी उम्मत के लिए ऐसे घोड़ों के मस्तकों में क़यामत तक के लिए बरकत रख दी गई है जो जिहाद के लिए तैयार किए जाते हैं ।

इस सूरः में हज़रत अय्यूब अलै. को एक महान धैर्यवान नबी के रूप में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है और वह वास्तविकताएँ प्रस्तुत की गई हैं जो बाइबिल में कई प्रकार की अद्भुत कथाओं के रूप में मिलती हैं ।

سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَّ ثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

صٓ وَالۡقُرۡاٰنِ ذِى الذِّكۡرِؕ ۝٢

सादिक़ुल क़ौलि : सत्यवादी । उपदेश से परिपूर्ण क़ुरआन की क़सम! ।2।

بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ۝٣

वास्तविकता यह है कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया (झूठे) सम्मान और विरोध में (पड़े) हैं ।3।

كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ فَنَادَوۡا وَّلَاتَ حِيۡنَ مَنَاصٍ ۝٤

उनसे पूर्व कितनी ही जातियाँ हमने तबाह कर दीं । अत: उन्होंने (सहायता के लिए) पुकारा जबकि मुक्ति का कोई मार्ग शेष न था ।4।

وَعَجِبُوۡۤا اَنۡ جَآءَهُمۡ مُّنۡذِرٌ مِّنۡهُمۡ وَقَالَ الۡكٰفِرُوۡنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝٥

और उन्होंने आश्चर्य किया कि उनके पास उन्हीं में से कोई सतर्ककारी आया । और काफ़िरों ने कहा, यह अत्यन्त झूठा जादूगर है ।5।

اَجَعَلَ الۡاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىۡءٌ عُجَابٌ ۝٦

क्या इसने बहुत से उपास्यों को एक ही उपास्य बना लिया है । नि:सन्देह यह (बात) तो बड़ी विचित्र है ।6।

وَانۡطَلَقَ الۡمَلَاُ مِنۡهُمۡ اَنِ امۡشُوۡا وَاصۡبِرُوۡا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمۡ ۖۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىۡءٌ يُّرَادُ ۝٧

और उनमें से बड़े लोग (यह कहते हुए) चले गए कि जाओ और अपने ही उपास्यों पर धैर्य करो । नि:सन्देह यह एक ऐसी बात है जिसका (किसी विशेष उद्देश्य से) इरादा किया गया है ।7।

مَا سَمِعۡنَا بِهٰذَا فِى الۡمِلَّةِ الۡاٰخِرَةِ ۖۚ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا اخۡتِلَاقٌ ۝٨

हमने तो ऐसी बात किसी आने वाले धर्म (के बारे) में भी नहीं सुनी । यह मनगढ़ंत बात के अतिरिक्त कुछ नहीं ।8।

ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ؕ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ؕ﴿٩﴾

क्या हम में से इसी पर अनुस्मारक-ग्रन्थ उतारा गया है ? वास्तविकता यह है कि वे मेरे उपदेश के बारे में ही शंका में पड़े हैं (और) वास्तविकता यह है कि अभी उन्होंने मेरा अज़ाब नहीं चखा ।9।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۚ﴿١٠﴾

क्या उनके पास तेरे पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) महादानी रब्ब की कृपा के ख़ज़ाने हैं ? ।10।

اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۫ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿١١﴾

अथवा क्या उन्हें आसमानों और धरती का तथा जो उन दोनों के मध्य है (उसका) राजत्व प्राप्त है ? अतः वे सब उपाय कर डालें ।11।

جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ﴿١٢﴾

(यह भी) सैन्य समूहों में से एक समूह (है) जो वहाँ पराजित किया जाने वाला है ।12।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۙ﴿١٣﴾

इनसे पहले (भी) नूह की जाति ने और आद (जाति) ने और खूँटों वाले फ़िरऔन ने झुठला दिया था ।13।

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ ؕ اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٤﴾

और समूद (जाति) ने भी और लूत की जाति ने भी और घने वृक्ष वालों ने भी । यही हैं वे सैन्य समूह (जिनका वर्णन गुज़रा है) ।14।

اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٥﴾ ع

(इनमें से) प्रत्येक ने रसूलों को झुठलाया। अतः (उन पर) मेरा दण्ड अनिवार्य हो गया ।15। (रुकू $\frac{1}{10}$)

وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٦﴾

और ये लोग एक भयानक गूँज के अतिरिक्त किसी चीज़ की प्रतीक्षा नहीं कर रहे जिसमें कोई अंतराल नहीं होगा ।16।

وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

और उन्होंने कहा, हे हमारे रब्ब ! हमें हमारा भाग हिसाब-किताब के दिन से पूर्व ही शीघ्र दे दे ।17।

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا
دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿١٨﴾

जो वे कहते हैं उस पर धैर्य धर । और हमारे भक्त दाऊद को याद कर जो बहुत शक्तिशाली था । नि:सन्देह वह विनम्रता पूर्वक बार-बार झुकने वाला था ।18।

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ
وَالْاِشْرَاقِ ۙ﴿١٩﴾

नि:सन्देह हमने उसके साथ पहाड़ों को सेवाधीन कर दिया । वे ढलती हुई शाम और फूटती हुई सुबह के समय स्तुति करते थे ।19।

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٢٠﴾

और इकट्ठे किए हुए पक्षियों को भी (उसके लिए सेवाधीन कर दिया था) । सब उस (अर्थात रब्ब) के समक्ष झुकने वाले थे ।20।

وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ
وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢١﴾

और उसके राज्य को हमने दृढ़ कर दिया और उसे बुद्धिमानी और निर्णायक वाक्‌शक्ति प्रदान की ।21।

وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا
الْمِحْرَابَ ۙ﴿٢٢﴾

और क्या तेरे पास झगड़ने वालों का समाचार पहुँचा है, जब उन्होंने महल के प्राचीर को फलाँगा ? ।22।

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا
لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى
بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ
وَاهْدِنَاۤ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٣﴾

जब वे दाऊद के सामने आए तो वह उनके कारण अत्यन्त घबराया । उन्होंने कहा, कोई भय न कर । (हम) दो झगड़ने वाले (हैं) । हम में से एक दूसरे पर अत्याचार कर रहा है । अत: हमारे बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर और कोई अत्याचार न कर । और हमें सीधे-मार्ग की ओर रहनुमाई कर ।23।

اِنَّ هٰذَاۤ اَخِيْ ۗ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً
وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۗ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا

नि:सन्देह यह मेरा भाई है । इसकी निनान्वे दुन्बियाँ हैं और मेरी केवल एक दुन्बी है । फिर भी यह कहता है कि उसे भी मेरी संपत्ति में सम्मिलित कर दे ।

وَعَزَّنِىْ فِى الْخِطَابِ ۝٢٤

और बहस करने में मुझ पर भारी पड़ता है ।24।

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِىْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ؕ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩ ۝٢٥

السجدة

उस ने कहा, उसने तेरी एक दुंबी अपनी दुन्बियों में सम्मिलित करने की माँग करके नि:सन्देह तुझ पर अत्याचार किया है । और नि:सन्देह बहुत से भागीदार (ऐसे) हैं कि उनमें से कुछ, कुछ अन्यों पर अत्याचार करते हैं । सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं । और दाऊद ने समझ लिया कि हमने उसकी परीक्षा ली थी । अत: उसने अपने रब्ब से क्षमा याचना की और वह विनम्रता पूर्वक गिर पड़ा और प्रायश्चित किया ।25।

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝٢٦

अत: हमने उसका यह (दोष) क्षमा कर दिया । और नि:सन्देह उसे हमारे हाँ एक निकटता और उत्तम स्थान प्राप्त था ।26।

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝٢٧ ع

हे दाऊद ! नि:सन्देह हमने तुझे धरती में उत्तराधिकारी बनाया है । अत: लोगों के बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर और मनोवेग के झुकाव का अनुसरण न कर अन्यथा वह (झुकाव) तुझे अल्लाह के मार्ग से भटका देगा । नि:सन्देह वे लोग जो अल्लाह के मार्ग से भटक जाते हैं उनके लिए कठोर अज़ाब (निश्चित) है । क्यों कि वे हिसाब का दिन भूल गए थे ।27।

(रुकू $\frac{2}{11}$)

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

और हमने आकाश और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है उद्देश्यहीन पैदा

بَاطِلًا ۭ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ۭ ۝٢٨

नहीं किया । यह उन लोगों की केवल धारणा मात्र है जिन्होंने इनकार किया । अत: जिन्होंने इनकार किया अग्नि (के अज़ाब के) द्वारा उनका विनाश हो ।28।

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝٢٩

क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक-कर्म किए वैसा ही ठहरा देंगे जैसे धरती में उपद्रव करने वाले हैं ? अथवा क्या हम तक़्वा धारण करने वालों को दुराचारियों के समान समझ लेंगे ? ।29।

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٣٠

महान पुस्तक, जिसे हमने तेरी ओर उतारा, बरकत दी गई है । ताकि ये (लोग) उसकी आयतों पर चिन्तन करें और ताकि बुद्धिमान उपदेश प्राप्त करें ।30।

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۭ ۝٣١

और हमने दाऊद को सुलैमान प्रदान किया । (वह) क्या ही अच्छा भक्त था। नि:सन्देह वह बार-बार विनम्रतापूर्वक झुकने वाला था ।31।

اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۙ ۝٣٢

जब साँय काल उसके सामने तीव्र गति से दौड़ने वाले घोड़े लाए गए ।32।

فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝٣٣

तो उसने कहा, नि:सन्देह मैं अपने रब्ब की याद के कारण धन से प्रेम करता हूँ । यहाँ तक कि वे ओट में चले गए ।33।

رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ۝٣٤

(उसने कहा) उन्हें दोबारा मेरे सामने लाओ । अत: वह (उनकी) पिंडलियों और गर्दनों पर (प्रेम से) हाथ फेरने लगा ।34।*

---

* आयत सं. 32 से34 : इससे अधिकतर व्याख्याकार यह अर्थ निकालते हैं कि हज़रत सुलैमान अलै. को अपने घोड़ों से इतना प्रेम था कि उनको देखने में खोकर आप की नमाज़ छूट गई । अत: इस→

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٥﴾

और नि:सन्देह हमने सुलैमान की परीक्षा ली और हमने उस (के राज्य) के सिंहासन पर (बुद्धि व समझ विहीन) एक शरीर को रख दिया । तब वह (अल्लाह ही की ओर) झुका ।35।*

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٦﴾

(और) कहा हे मेरे रब्ब ! मुझे क्षमा कर दे और मुझे एक ऐसा राज्य प्रदान कर कि मेरे पश्चात उस पर कोई और न जचे । नि:सन्देह तू ही अपार दानशील है ।36।**

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٧﴾

अत: हमने उसके लिए हवा को भी सेवाधीन कर दिया जो उसके आदेश पर धीमी गति से जिधर वह (ले) जाना चाहता था, चलती थी ।37।

←क्रोध में उन्होंने उन सब की कूँचें काट डालीं और गर्दनों को शरीर से पृथक कर दिया । यह अत्यन्त मूर्खतापूर्ण व्याख्या है जिसे पवित्र क़ुरआन से जोड़ना वास्तव में उसका अपमान है । यदि नमाज़ छूट गई थी तो फिर पहले नमाज़ पढ़ने का उल्लेख आना चाहिए था । घोड़ों को देखने का काम तो उन्होंने अपनी इच्छा से किया था । घोड़ों बेचारों का क्या अपराध था कि उनका वध किया जाता । वास्तविकता यह है कि चूँकि अल्लाह तआला के लिए जिहाद करने के उद्देश्य से ये घोड़े रखे गये थे इस कारण उनसे प्रेम को प्रकट करने के लिए उन्होंने उनकी पिंडलियों और जाँघों पर हाथ फेरा, जैसा कि आजकल भी घोड़ों से प्रेम करने वाला यही व्यवहार करता है ।

* इस आयत का अर्थ यह है कि उनका उत्तराधिकारी न आध्यात्मिक गुण रखता था न ही शासन चलाने की योग्यता रखता था । इसलिए एक बेकार शरीर की भाँति था । **और हमने उसके सिंहासन पर एक शरीर को रख दिया** से अभिप्राय उसका सिंहासन पर विराजमान होना है । इस आयत के अर्थ के साथ भी कुछ विद्वानों ने बहुत ही अन्याय किया है और हज़रत सुलैमान अलै. को मानो दुराचारी तक घोषित किया है । उनके कथनानुसार एक सुन्दर स्त्री को जो उन की पत्नी नहीं थी, वह उस सिंहासन पर विराजमान हुई । और उन्होंने उससे दुष्कर्म का मन बना लिया, फिर ध्यान आया कि यह तो अल्लाह की ओर से मेरे लिए एक परीक्षा थी । अत: यह कहानी उस कहानी से मिलती जुलती है जो हज़रत यूसुफ़ अलै. के बारे में भी व्याख्याकारों ने घड़ी हुई है ।

** इस आयत में पिछली सारी आयतों का अन्तिम परिणाम निकाल दिया गया है । जब सुलैमान अलै. को ज्ञात हुआ कि उन का पुत्र न आध्यात्मिक ज्ञान रखता है और न शासन के योग्य है तो उन्होंने स्वयं उसके विरुद्ध दुआ की । और अल्लाह तआला से प्रार्थना की, कि मेरे पश्चात फिर इतना बड़ा सम्राज्य किसी और को न मिले । अत: इतिहास से प्रमाणित है कि हज़रत सुलैमान अलै. के पश्चात वह साम्राज्य उत्तरोत्तर पतनोन्मुखी होता गया ।

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ۙ﴿۳۸﴾

और शैतानों को भी । (अर्थात्) निर्माण-कला के हर माहिर और ग़ोताख़ोर को ।38।

وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿۳۹﴾

और (कुछ) दूसरों को भी जिन्हें ज़ंजीरों में जकड़ा गया था ।39।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۴۰﴾

यह हमारा अपार दान है । अतः (चाहे) उपकार पूर्ण व्यवहार कर अथवा रोके रख ।40।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۱﴾ ع

और निःसन्देह उसे हमारे हाँ एक निकटता और उत्तम स्थान प्राप्त था।41। (रुकू $\frac{3}{12}$)

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ؕ﴿۴۲﴾

और हमारे भक्त अय्यूब को भी याद कर जब उसने अपने रब्ब को पुकारा कि निःसन्देह मुझे शैतान ने बहुत दुःख और कष्ट दिया है ।42।

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿۴۳﴾

(हमने उसे कहा) अपनी सवारी को एड़ लगा । यह (निकट ही) नहाने और पीने के लिए ठंडा पानी है।43।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۴۴﴾

और फिर हमने उसे उसके परिवार और उनके अतिरिक्त उन जैसे और भी अपनी कृपा स्वरूप प्रदान कर दिए । और (यह) बुद्धिमानों के लिए एक शिक्षाप्रद अनुस्मरण के रूप में (है) ।44।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ

और (उससे कहा कि) सूखी और हरी टहनियों का गुच्छा अपने हाथ में ले और उसी से प्रहार कर । और (अपनी) क़सम को झूठी न होने दे । निःसन्देह हमने उसे बहुत धैर्य धरने वाला पाया । (वह) क्या ही अच्छा भक्त था ।

نि:सन्देह वह बार-बार विनम्रतापूर्वक झुकने वाला था ।45।*	اِنَّہٗۤ اَوَّابٌ ﴿۴۵﴾
और याद कर हमारे भक्त इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब को जो बहुत शक्तिशाली और दूरदर्शी थे।46।	وَاذۡکُرۡ عِبٰدَنَاۤ اِبۡرٰہِیۡمَ وَاِسۡحٰقَ وَیَعۡقُوۡبَ اُولِی الۡاَیۡدِیۡ وَالۡاَبۡصَارِ ﴿۴۶﴾
नि:सन्देह हमने उन्हें विशेष रूप से परकालीन घर के स्मरण करने के कारण चुन लिया ।47।	اِنَّاۤ اَخۡلَصۡنٰہُمۡ بِخَالِصَۃٍ ذِکۡرَی الدَّارِ ﴿۴۷﴾
और नि:सन्देह वे हमारे निकट अवश्य चुने हुए (और) बहुत से गुणों वाले लोगों में से थे ।48।	وَاِنَّہُمۡ عِنۡدَنَا لَمِنَ الۡمُصۡطَفَیۡنَ الۡاَخۡیَارِ ﴿۴۸﴾
और इस्माईल को भी याद कर और अल् यसअ् को और ज़ुल किफ़ल को । और वे सब श्रेष्ठ लोगों में से थे ।49।	وَاذۡکُرۡ اِسۡمٰعِیۡلَ وَالۡیَسَعَ وَذَاالۡکِفۡلِ ؕ وَکُلٌّ مِّنَ الۡاَخۡیَارِ ﴿۴۹﴾
यह एक महान अनुस्मरण है और नि:सन्देह मुत्तक़ियों के लिए बहुत अच्छा ठिकाना होगा ।50।	ہٰذَا ذِکۡرٌ ؕ وَاِنَّ لِلۡمُتَّقِیۡنَ لَحُسۡنَ مَاٰبٍ ﴿۵۰﴾

* आयत सं. 42 से 45 : हज़रत अय्यूब अलै. को शैतान ने जो दु:ख पहुँचाया था वह बहुत ही पीड़ादायक था । बाइबिल के अनुसार उनको बहुत ही भयंकर चर्म-रोग लग गया था जिसके कारण घर वाले भी घृणा करते हुए उनको कूड़े के ढेर पर छोड़ गए थे । पवित्र क़ुरआन ने ऐसा कोई वर्णन नहीं किया ।

क़ुरआन के अनुसार हज़रत अय्यूब अलै. को अल्लाह तआला ने शाख़ों वाली एक टहनी से अपनी सवारी को हाँकने का आदेश दिया और निर्देश दिया कि अपनी क़सम को न तोड़ । इसके बारे में यह विचित्र कहानी वर्णन की जाती है कि यहाँ पर सवारी से अभिप्राय घोड़ी नहीं बल्कि पत्नी है । उन्होंने अपनी पत्नी को सौ लाठी मारने की क़सम खाई थी । इस कारण अल्लाह तआला ने कहा कि झाड़ू से मार लो । उसमें सौ तिनके होते होंगे तो क़सम पूरी हो जाएगी । परन्तु यह कहानी बिल्कुल काल्पनिक है । जिन नबियों की पत्नियों ने उनसे विद्रोह किया था उनमें हज़रत अय्यूब अलै. की पत्नी का कहीं उल्लेख नहीं मिलता । अत: अरबी शब्द ''ज़िग्सन्'' (सूखी और हरी शाखों के गुच्छे) से सवारी को हाँकने का आदेश है, जो उनको उस पानी तक पहुँचा देगी जिसके प्रयोग से उन को आरोग्य लाभ होगा । अल्लाह तआला ने जब हज़रत अय्यूब अलै. को आरोग्य प्रदान कर दिया तो न केवल उन की देख-भाल के लिए उनको घर वाले प्रदान किए बल्कि उन जैसे सर्वस्व न्योछावर करने वाला एक समुदाय भी प्रदान कर दिया गया ।

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥١﴾

अर्थात स्थायी बाग़ान होंगे । उनके लिए द्वार भली-भाँति खुले रखे जाएँगे।51।

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥٢﴾

उनमें वे तकियों पर टेक लगाए हुए होंगे (और) वहाँ अधिकतापूर्वक भाँति-भाँति के फल और पेय पदार्थ मांग रहे होंगे ।52।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٣﴾

और उनके पास (लाजवंती) नीची दृष्टि रखने वाली हमजोलियाँ होंगी ।53।*

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٤﴾

यह है वह, जिसका हिसाब-किताब के दिन के लिए तुम्हें वादा दिया जाता है ।54।

اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٥﴾

नि:सन्देह यह हमारी (ओर से) जीविका है । इसका समाप्त हो जाना संभव नहीं ।55।

هٰذَا ۭ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٦﴾

यही होगा । और नि:सन्देह विद्रोहियों के लिए अवश्य सबसे बुरा लौटने का स्थान है ।56।

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٧﴾

(अर्थात) नरक । वे उसमें प्रविष्ट होंगे । अत: क्या ही बुरा बिछौना है ।57।

هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٨﴾

यह अवश्य होगा । अत: वे उसे चखें (अर्थात) खौलता हुआ और बर्फीला पानी ।58।

وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ ﴿٥٩﴾

और उससे मिलती जुलती और भी वस्तुएँ होंगी ।59।

هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ۭ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٦٠﴾

यह वह समूह है जो तुम्हारे साथ (उसमें) प्रविष्ट होने वाला है । उनके लिए कोई अभिवादन नहीं । नि:सन्देह वे अग्नि में प्रविष्ट होने वाले हैं ।60।

* उनके पास नीची दृष्टि रखने वाली कुवाँरी कन्यायें होंगी । यह भी एक उपमा है जिससे उनकी विनम्रता और लज्जाशीलता अभिप्रेत है ।

قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ٚ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦١﴾

वे (ला'नत डालने वाले गिरोह से) कहेंगे, बल्कि तुम ही (ला'नत किये गये) हो । तुम्हारे लिए कोई अभिवादन नहीं । तुम ही हो जिन्होंने हमारे लिए यह कुछ आगे भेजा है । अत: क्या ही बुरा ठहरने का स्थान है ।61।

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦٢﴾

वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! जिसने हमारे लिए यह आगे भेजा उसे अग्नि में दोहरा अज़ाब दे ।62।

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ؕ﴿٦٣﴾

और वे कहेंगे, हमें क्या हुआ है कि हम उन लोगों को नहीं देख रहे जिन्हें हम दुष्टों में गिना करते थे ।63।

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٤﴾

क्या हमने उन्हें तुच्छ समझ रखा था अथवा उन (की पहचान) से हमारी नज़रें चूक गईं ? ।64।

اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٥﴾ ع

नि:सन्देह यह अग्नि (में पड़ने) वालों का परस्पर झगड़ना सत्य है ।65।

(रुकू $\frac{4}{13}$)

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۚ﴿٦٦﴾

तू कह दे, मैं तो केवल एक सतर्क करने वाला हूँ । और अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं जो अकेला (और) पराक्रमी है ।66।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٧﴾

आकाशों और धरती का रब्ब और उसका जो उन दोनों के मध्य है । पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।67।

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ۙ﴿٦٨﴾

तू कह दे, यह एक बहुत बड़ा समाचार है ।68।

اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٩﴾

तुम इससे विमुख हो रहे हो ।69।

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍۭ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰۤى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝٧٠

मुझे फ़रिश्तों का कोई ज्ञान नहीं था जब वे बहस कर रहे थे ।70।

اِنْ يُّوْحٰۤى اِلَيَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧١

मुझे तो केवल यह वह्इ की जाती है कि मैं एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ ।71।

اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ۝٧٢

जब तेरे रब्ब ने फ़रिश्तों से कहा, नि:सन्देह मैं मिट्टी से मनुष्य पैदा करने वाला हूँ ।72।

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝٧٣

अत: जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ और उसमें अपनी रूह में से कुछ फूँक दूँ तो उसके सामने सजद: करते हुए गिर पड़ो ।73।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۙ۝٧٤

इस पर सब के सब फ़रिश्तों ने सजद: किया ।74।

اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٧٥

सिवाय इब्लीस के । उसने अहंकार किया और वह था ही क़ाफ़िरों में से।75।

قَالَ يٰۤاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ۝٧٦

उस (अल्लाह) ने कहा हे इब्लीस ! तुझे किस चीज़ ने उसे सजद: करने से मना किया जिसे मैंने अपनी (क़ुदरत के) दोनों हाथों से सृजित किया था ? क्या तूने अहंकार किया है अथवा तू बहुत ऊँचे लोगों में से है ? ।76।

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝٧٧

उसने कहा, मैं उससे श्रेष्ठ हूँ । तूने मुझे अग्नि से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया ।77।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ۚۖ٧٨

उसने कहा, फिर यहाँ से निकल जा । नि:सन्देह तू धिक्कारा हुआ है ।78।

وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْۤ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٧٩

और नि:सन्देह तुझ पर प्रतिफल दिवस तक मेरी ला'नत पड़ेगी ।79।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِيْٓ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٠﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! इस परिस्थिति में मुझे उस दिन तक ढील दे दे जिस दिन (लोग) उठाए जाएँगे ।80।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨١﴾

उसने कहा, नि:सन्देह तू ढील दिए जाने वालों में से है ।81।

إِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨٢﴾

एक निश्चित समय के दिन तक ।82।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ ﴿٨٣﴾

उसने कहा, तो फिर तेरी प्रतिष्ठा की क़सम ! मैं अवश्य उन सब को पथभ्रष्ट करूँगा ।83।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٤﴾

सिवाए उनमें से तेरे उन भक्तों के जो (तेरे) चुने हुए होंगे ।84।*

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُوْلُ ﴿٨٥﴾

उसने कहा, अत: सच तो यह है और मैं अवश्य सच ही कहता हूँ ।85।

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِيْنَ ﴿٨٦﴾

मैं नरक को अवश्य तुझ से और उन सबसे भर दूँगा जो उनमें से तेरा अनुसरण करेंगे ।86।

قُلْ مَآ أَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٧﴾

तू कह दे कि इस (बात) पर मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । और न ही मैं दिखावा करने वालों में से हूँ ।87।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٨﴾

यह तो समस्त लोकों के लिए एक महान उपदेश के अतिरिक्त कछ नहीं ।88।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٩﴾

और कुछ समय के पश्चात तुम लोग उसकी वास्तविकता को अवश्य जान लोगे ।89। (रुकू 5/14)

---

* आयत सं. 83-84 : शैतान को जब अल्लाह तआला ने धुतकार दिया तो उसने अपनी ढिठाई में अल्लाह तआला से छूट माँगी कि जिन भक्तों को तूने मुझ पर प्रधानता दी है यदि मुझे छूट मिले तो उनको मैं प्रत्येक प्रकार का धोखा देकर तुझ से छीन लूँगा और वे तेरे बदले मेरी उपासना करेंगे । सिवाए तेरे उन भक्तों के जो तेरे लिए विशिष्ट हो चुके हों । उन पर मेरा कोई अधिकार नहीं चलेगा।

39– सूर: अज़–ज़ुमर

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 76 आयतें हैं ।

इससे पहली सूर: के अंत में धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करने वाले ऐसे भक्तों का विवरण है जिन्होंने शैतान की उपासना का इनकार किया और पूर्णरूपेण अल्लाह तआला की उपासना करने में शीश झुकाए रखा । इस सूर: के आरम्भ ही में यह घोषणा की गई है कि हे रसूल ! धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करते हुए उसी की उपासना कर। नि:सन्देह अल्लाह तआला विशुद्ध धर्म को ही स्वीकार करता है । इसके बाद मुश्रिकों के एक तर्क का खण्डन किया गया है । वे मुर्तिपूजा के पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि ये कृत्रिम उपास्य हमें अल्लाह से निकट करने का माध्यम बनते हैं । अल्लाह ने कहा, कदापि ऐसा नहीं । बल्कि माध्यम तो वही बनेगा जिसका धर्म हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भाँति विशुद्ध है और इसमें शिर्क का किंचिन्मात्र अंश भी नहीं है ।

इसके पश्चात इस वास्तविकता को दोहराया गया है कि मनुष्य जीवन का आरम्भ एक ही जान से हुआ था । फिर जब मनुष्य माँ के गर्भ में भ्रूण के रूप में विकास के पड़ाव तय करने लगा तो वह भ्रूण तीन अन्धेरों में छिपा हुआ था । पहला अन्धेरा माँ के पेट का अन्धेरा है जिसने गर्भाशय को ढांका हुआ है । दूसरा अन्धेरा स्वयं गर्भाशय का अन्धेरा है, जिसमें भ्रूण पलता है और तीसरा अन्धेरा जरायु (Placenta) का अंधेरा है जो माँ के गर्भाशय के अंदर भ्रूण को समेटे हुए होता है ।

फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह घोषणा करने का आदेश दिया गया है कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि मैं उपासना को उसी के लिए विशेष कर दूँ । उसके पश्चात आदेश दिया गया है कि तू कह दे कि अल्लाह ही है जिसके लिए मैं अपने धर्म को विशुद्ध करते हुए उपासना करता रहूँगा । तुम अपनी जगह उसके सिवा जिसकी चाहे उपासना करते फिरो । फिर आप सल्ल. को यह कहा गया कि उनको बता दे कि यदि वे ऐसा करेंगे तो यह बहुत घाटे वाला सौदा होगा क्योंकि वे अपने आप को भी और अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों को भी इस कुटिलता के द्वारा पथभ्रष्ट करने का कारण बनेंगे । इसके पश्चात यह प्रश्न उठाया गया है कि क्या वह व्यक्ति जिसका सीना अल्लाह तआला ने अपनी याद के लिए खोल दिया हो अथवा दूसरे शब्दों में जिसे पूर्ण विश्वास प्रदान कर दिया गया हो । इसके उत्तर का यूँ तो स्पष्टत: उल्लेख नहीं परन्तु इस प्रश्न में ही निहित है और वह यह है कि ऐसे व्यक्ति से उत्तम और कोई नहीं हो सकता । अत: बहुत ही अभागे हैं वे लोग जो अपने रब्ब का स्मरण करने से लापर्वाह रहते हैं ।

इस सूर: की आयत सं. 24 में यह घोषणा की गई है कि अल्लाह तुझ से एक बहुत

ही मनमोहक बात वर्णन करता है जो यह है कि अल्लाह ने तुझ पर एक बार-बार पढ़ी जाने वाली पुस्तक उतारी है जिसमें कुछ ऐसी आयतें भी हैं जिनके अर्थ अस्पष्ट हैं और वे जोड़ा-जोड़ा हैं । परन्तु उनकी व्याख्या स्वरूप बिल्कुल उनसे मिलती जुलती और भी आयतें उपस्थित हैं जो सत्य की खोज करने वालों को अस्पष्ट आयतों को समझने का सामर्थ्य प्रदान करेंगी । यह वही विषय है जो **कुछ–कुछ की व्याख्या करती हैं** उक्ति के अनुरूप है । एक दूसरे स्थान पर कहा कि जो ज्ञान में पैठ रखते हैं उनके लिए तो कोई आयत भी अस्पष्ट नहीं रहती ।

इस सूर: में वह आयत भी है जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. को वह्इ हुई थी और हुज़ूर अलै. ने एक अंगूठी तैयार करवा कर उसके नगीने में उसे खुदवा लिया था । अर्थात **अलै सल्लाहु बिकाफ़िन अब्दहू** (क्या अल्लाह अपने भक्त के लिए पर्याप्त नहीं) इसी कारण अहमदी ऐसी अंगूठियाँ मंगलमय जानकर और शुभ-शकुन के रूप में अपनी उंगलियों में पहनते हैं ।

इस सूर: की आयत सं. 43 में एक बड़े रहस्य पर से पर्दा उठाया गया है कि नींद भी एक प्रकार की मृत्यु है जिसमें आत्मा या चेतनशक्ति बार-बार डूबती है । फिर अल्लाह तआला ने ऐसी व्यवस्था जारी कर दी है कि ठीक निर्धारित समय पर दिमाग़ की तह से टकरा कर फिर वापस उभर आती है । वैज्ञानिकों ने इस पर खोज की है और बताया है कि यह प्रक्रिया निर्धारित समय में एक सोए हुए व्यक्ति से बार-बार पेश आती रहती है । इस निश्चित समय को एक आणविक घड़ी से भी नापा जा सकता है और इस अवधि में किसी प्रकार का कोई अंतर दिखाई नहीं देगा । फिर जब अल्लाह तआला उस जान को डूबने के पश्चात दोबारा वापस नहीं भेजता तो इसी का नाम मृत्यु है ।

क्योंकि यहाँ अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित होने का और इस संसार से सदा की जुदाई का वर्णन आ रहा है इस कारण वे जो जवाबदेही का भय रखते हैं उनको यह शुभ-समाचार भी दे दिया गया है कि अल्लाह तआला प्रत्येक प्रकार के पापों को क्षमा करने का सामर्थ्य रखता है । क्योंकि वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है । अत: अल्लाह के समक्ष झुको और उसी के सुपुर्द हो जाओ इस से पूर्व कि वह अज़ाब तुम्हें आ पकड़े । और फिर प्रायश्चित करने से पूर्व तुम्हारी मृत्यु हो जाए और मनुष्य पश्चाताप करते हुए यह कहे कि काश ! मैं अल्लाह तआला के पहलू में अर्थात् उसकी दृष्टि के सामने इतने पाप करने की धृष्टता न करता ।

इस सूर: का नाम **अज़–ज़ुमर** है और अंत पर दो आयतों में **ज़ुमर** (समूहों) को दो भागों में विभाजित किया गया है । एक वे हैं जो समूहबद्ध रूप में नरक की ओर ले जाए जाएँगे और एक वे जो समूहबद्ध रूप में स्वर्ग की ओर ले जाए जाएँगे ।

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ سَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَمَانِيَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

इस सम्पूर्ण ग्रन्थ का अवतरण पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह की ओर से हुआ है ।2।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ③

नि:सन्देह हमने तेरी ओर (इस) पुस्तक को सत्य के साथ उतारा है । अत: अल्लाह के लिए धर्म को विशिष्ट करते हुए उसी की उपासना कर ।3।

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۬ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ④

सावधान ! विशुद्ध धर्म ही अल्लाह की प्रतिष्ठानुकूल है । और वे लोग जो उस के सिवा (दूसरों को) मित्र बना लिए हैं (कहते हैं कि) हम केवल इस उद्देश्य के लिए ही उनकी उपासना करते कि वे हमें अल्लाह के निकट करते हुए निकटता के ऊँचे स्थान तक पहुँचा दें । नि:सन्देह अल्लाह उनके मध्य उसका निर्णय करेगा जिसमें वे मतभेद किया करते थे । अल्लाह कदापि उसे हिदायत नहीं देता जो झूठा (और) बड़ा कृतघ्न हो ।4।

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑤

यदि अल्लाह चाहता कि वह कोई पुत्र अपनाए तो उसी में से जो उसने पैदा किया है, जिसे चाहता अपना लेता । वह बहुत पवित्र है । वही अल्लाह अकेला (और) प्रभुत्वशाली है ।5।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ

उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है । वह दिन पर रात

الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٦

का खोल चढ़ा देता है और रात पर दिन का खोल चढ़ा देता है । और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को सेवाधीन किया। प्रत्येक अपने निश्चित समय की ओर गतिशील है । सावधान वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।6।

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۗ يَخْلُقُكُمْ فِىْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِىْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۗ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٧

उसने तुम्हें एक जान से पैदा किया । फिर उसी में से उस ने उसका जोड़ा बनाया । और उसने तुम्हारे लिए पशुओं में से आठ जोड़े उतारे । वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों में तीन अन्धेरों में एक उत्पत्ति के पश्चात दूसरी उत्पत्ति में परिवर्तित करते हुए पैदा करता है । यह है अल्लाह, तुम्हारा रब्ब । उसी का साम्राज्य है, उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अत: तुम कहाँ उल्टे फिराए जाते हो ? ।7।*

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنْكُمْ ۟ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا

यदि तुम इनकार करो तो नि:सन्देह अल्लाह तुम से बे-परवाह है और वह अपने भक्तों के लिए कुफ्र को पसन्द नहीं करता । और यदि तुम कृतज्ञता प्रकट

* अरबी शब्द **अन ज़ ल** यद्यपि उतारने का अर्थ देता है परन्तु यहाँ इन असाधारण लाभदायक वस्तुओं को पैदा करने के अर्थो में प्रयुक्त हुआ है । न कि सशरीर आकाश से उतारने के अर्थो में । समग्र जगत को ज्ञात है कि पशु आकाश से बारिश की भाँति नहीं गिरा करते । इसके बावजूद उनके लिए **नुज़ूल** (उतारने) का शब्द इस लिए प्रयुक्त किया गया है कि वे मानव जाति के लिए अनगिनत लाभ रखते हैं । यही शब्द **नुज़ूल** हज़रत ईसा अलै. के दोबारा आगमन के लिए प्रयुक्त हुआ है । परन्तु सबसे बढ़कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के संबंध में भी **नुज़ूल** शब्द का प्रयोग हुआ है जैसा कि फ़र्माया क़**द अन ज़लल्लाहु इलैकुम ज़िक्रर्रसूलन** (तुम्हारी ओर अल्लाह ने एक उपदेशक रसूल उतारा है ।) (सूर: अत्-तलाक़, आयत 11-12) सभी उलेमा स्वीकार करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सशरीर आकाश से नहीं उतरे थे । उनको चाहिए कि हज़रत ईसा अलै. के उतरने के संबंध में भी अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार करें ।

يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٨

करो तो वह इसे तुम्हारे लिए पसन्द करता है । और कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी । फिर तुम सब को अपने रब्ब की ओर लौटना है । अत: वह तुम्हें उन कर्मों से सूचित करेगा जो तुम किया करते थे । नि:सन्देह वह सीनों के रहस्यों को भली-भाँति जानता है ।8।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝٩

और जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो वह अपने रब्ब को उसकी ओर झुकते हुए पुकारता है । फिर जब वह उसे अपनी ओर से कोई नेमत प्रदान करता है तो वह उस बात को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले दुआ किया करता था । और वह अल्लाह के साझीदार ठहराने लगता है ताकि उसके मार्ग से (लोगों को) पथभ्रष्ट कर दे । तू कह दे कि अपने कुफ़्र से कुछ थोड़ा सा अस्थायी लाभ उठा ले नि:सन्देह तू अग्नि में पड़ने वालों में से है ।9।

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۗ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝١٠ ع

क्या वह जो रात की घड़ियों में उपासना करने वाला है (कभी) सजद: की अवस्था में, और (कभी) खड़े होने की अवस्था में, परलोक के प्रति डरता है और अपने रब्ब की कृपा की आशा रखता है (ज्ञानी व्यक्ति नहीं होता ?) तू पूछ कि क्या वे लोग जो ज्ञान रखते हैं और वे जो ज्ञान नहीं रखते, समान हो सकते हैं? नि:सन्देह बुद्धिमान ही उपदेश प्राप्त करते हैं ।10। (रुकू $\frac{1}{15}$)

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ
لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ
وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى
الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١١﴾

तू कह दे कि हे मेरे भक्तो जो ईमान लाए हो ! अपने रब्ब का तक़्वा धारण करो । उन लोगों के लिए जो उपकार करते हैं, इस संसार में भी भलाई होगी और अल्लाह की धरती विस्तृत है । नि:सन्देह धैर्य करने वालों को ही बिना हिसाब के उनका भरपूर प्रतिफल दिया जाएगा ।11।

قُلْ اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا
لَّهُ الدِّيْنَ ﴿١٢﴾

तू कह दे कि मुझे तो आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की उपासना उसी के लिए धर्म के प्रति निष्ठावान होकर करूँ ।12।

وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٣﴾

और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सब आज्ञाकारियों में से प्रथम हो जाऊँ ।13।

قُلْ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٤﴾

तू कह दे कि यदि मैं अपने रब्ब की अवज्ञा करूँ तो नि:सन्देह एक बहुत बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ ।14।

قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ﴿١٥﴾

तू कह दे कि मैं अल्लाह ही की उपासना करता हूँ उसी के लिए अपने धर्म के प्रति निष्ठावान होते हुए ।15।

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ
الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

अत: तुम उसे छोड़ कर जिस की चाहो उपासना करते फिरो । तू कह दे कि नि:सन्देह वास्तविक घाटा पाने वाले वे हैं जिन्होंने अपनी जानों और अपने परिजनों को क़यामत के दिन घाटे में डाला । सावधान ! यही बहुत खुला-खुला घाटा है ।16।

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ
تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ

उनके लिए उनके ऊपर से अग्नि की छाया होंगी और नीचे भी छाया होंगी । (अर्थात अग्नि उनको प्रत्येक ओर से अपनी लपेट में ले लेगी) यह वह बात है

عِبَادَهٗ ۭ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ⑰

जिससे अल्लाह अपने भक्तों को डराता है । अत: हे मेरे भक्तजनो ! मेरा ही तक़वा धारण करो ।17।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ⑱

और वे लोग जो मूर्तियों की उपासना करने से बचे और अल्लाह की ओर झुके उनके लिए बड़ा शुभ-समाचार है। अत: मेरे भक्तों को शुभ-समाचार दे दे ।18।

الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ⑲

वे लोग जो बात को सुनते हैं तो उसमें से बेहतरीन (बात) का पालन करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और यही वे लोग हैं जो बुद्धिमान हैं ।19।

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۭ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ⑳ۚ

अत: क्या वह जिस पर अज़ाब का आदेश सिद्ध हो गया (बच सकता है ?) क्या तू उसे भी छुड़ा सकता है जो पूर्णतया अग्नि में (पड़ा) है ? ।20।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ڛ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ㉑

परन्तु वे लोग जो अपने रब्ब का तक़वा धारण करते हैं उनके लिए अटारियाँ हैं जिनके ऊपर और अटारियाँ बनाई गई होंगी । उनके दामन में नहरें बहेंगी । (यह) अल्लाह ने वादा किया है । अल्लाह वादों को टाला नहीं करता ।21।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से जल उतारा फिर उसे धरती में स्रोतों के रूप में जारी कर दिया । फिर वह उससे खेती निकालता है । उसके रंग भिन्न-भिन्न होते हैं । फिर वह शुष्क हो जाती है (अर्थात् पक कर अथवा बिना पके) । फिर तू उसे पीला होता हुआ

مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٢٢﴾ ع

देखता है । फिर वह उसे चूर-चूर कर देता है । निःसन्देह इसमें बुद्धिमानों के लिए एक बड़ी शिक्षा है ।22।

(रुकू $\frac{2}{16}$)

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾

अतः क्या वह जिसका सीना अल्लाह इस्लाम के लिए खोल दे, फिर वह अपने रब्ब की ओर से एक प्रकाश पर (भी) क़ायम हो (वह अल्लाह के स्मरण से वंचित लोगों की भाँति हो सकता है ?) अतः सर्वनाश हो उनका जिनके दिल अल्लाह के स्मरण से (वंचित रहते हुए) कठोर हैं । यही वे लोग हैं जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में हैं ।23।

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٤﴾

अल्लाह ने सर्वश्रेष्ठ वर्णन एक मिलती-जुलती (और) बार-बार दोहराई जाने वाली पुस्तक के रूप में उतारा है । जिससे उन लोगों की त्वचाएँ जो अपने रब्ब का भय रखते है, कांपने लगती हैं । फिर उनकी त्वचाएँ और उनके दिल अल्लाह के स्मरण की ओर (झुकते हुए) नरम पड़ जाते हैं । यह अल्लाह की हिदायत है, वह इसके द्वारा जिसे चाहता है हिदायत देता है । और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं ।24।

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْۗءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٥﴾

अतः क्या वह जो क़यामत के दिन कठोर अज़ाब से बचने के लिए अपने चेहरे को ही ढाल बनाएगा (बच सकता है ?) और अत्याचारियों से कहा जाएगा कि चखो, जो तुम कमाया करते थे ।25।

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

उनसे पहले भी लोगों ने झुठलाया था तो उन्हें अज़ाब ने उस दिशा से आ पकड़ा जिस (दिशा) की वे कोई कल्पना भी नहीं कर सकते थे ।26।

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

अत: अल्लाह ने उन्हें इस संसार के जीवन में भी अपमान का स्वाद चखाया, जबकि परलोक का अज़ाब बहुत बढ़ कर है । काश ! वे जानते ।27।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۚ ﴿٢٨﴾

और नि:सन्देह हमने इस क़ुर्आन में लोगों के लिए प्रत्येक प्रकार का उदाहरण वर्णन कर दिया है ताकि वे उपदेश प्राप्त करें ।28।

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٩﴾

एक अत्यन्त सरल और शुद्ध भाषा सम्पन्न क़ुर्आन जिसमें कोई कुटिलता नहीं, ताकि वे तक़वा धारण करें ।29।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

अल्लाह एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण वर्णन करता है जिसके कई स्वामी हों जो परस्पर एक दूसरे के विरोधी हों । और एक ऐसे व्यक्ति का भी (उदाहरण वर्णन करता है) जो पूर्णतया एक ही व्यक्ति का हो । क्या वे दोनों अपनी परिस्थिति की दृष्टि से एक समान हो सकते हैं ? समस्त स्तुति अल्लाह ही की है । (परन्तु) वास्तविकता यह है कि उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।30।

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣١﴾

नि:सन्देह तू भी मरने वाला है और वे भी मरने वाले हैं ।31।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ۧ ﴿٣٢﴾

नि:सन्देह फिर तुम क़यामत के दिन अपने रब्ब के समक्ष एक दूसरे से बहस करोगे ।32। (रुकू $\frac{3}{17}$)

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ
وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَآءَهُۥ ۚ أَلَيْسَ
فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِينَ ﴿٣٣﴾

अतः उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े और सच्चाई को झुठला दे, जब वह उसके पास आए । क्या नरक में काफ़िरों के लिए ठिकाना नहीं है ? ।33।

وَالَّذِي جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِۦٓ
أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٤﴾

और वह व्यक्ति जो सच्चाई लेकर आए और (वह जो) उस (सच्चाई) की पुष्टि करे, यही वे लोग हैं जो मुत्तक़ी हैं ।34।

لَهُم مَّا يَشَآءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ
جَزَٰٓؤُا الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٥﴾

उनके लिए उनके रब्ब के पास वह कुछ होगा जो वे चाहेंगे । यह होगा पुण्य-कर्म करने वालों का प्रतिफल ।35।

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا
وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ الَّذِي
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٦﴾

ताकि जो बुरे कर्म उन्होंने किए (उनके दुष्प्रभाव) अल्लाह उनसे दूर कर दे । और जो अच्छे कर्म वे किया करते थे, उनके अनुसार उन्हें उनका प्रतिफल प्रदान करे ।36।

أَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهُۥ ۚ وَيُخَوِّفُونَكَ
بِالَّذِينَ مِن دُونِهِۦ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهُۥ مِنْ هَادٍ ﴿٣٧﴾

क्या अल्लाह अपने भक्त के लिए पर्याप्त नहीं ? और वे तुझे उनसे डराते हैं, जो उस के सिवा हैं । और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं ।37।

وَمَن يَهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهُۥ مِن مُّضِلٍّ ۚ أَلَيْسَ
اللّٰهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ﴿٣٨﴾

और जिसे अल्लाह हिदायत दे दे तो उसे कोई पथभ्रष्ट करने वाला नहीं । क्या अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) प्रतिशोध लेने वाला नहीं है ? ।38।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلْ أَفَرَءَيْتُم مَّا
تَدْعُونَ مِن دُونِ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللّٰهُ

और यदि तू उनसे पूछे कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया तो वे अवश्य कहेंगे, अल्लाह ने । तू उनसे कह दे कि सोचो तो सही यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो क्या जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते

بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝٣٩

हो, वे उसके (द्वारा उत्पन्न) हानि को दूर कर सकते हैं ? अथवा यदि वह मेरे पक्ष में दया करने का इरादा करे तो क्या वे उसकी दया को रोक सकते हैं ? तू कह दे कि मेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है । उसी पर सब भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं ।39।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤٠

तू कह दे कि हे मेरी जाति ! तुमने अपने स्थान पर जो करना है करते फिरो, मैं भी (अपने स्थान पर) करता रहूँगा । अत: तुम शीघ्र ही जान लोगे ।40।

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٤١

(कि) किस तक वह अज़ाब आ पहुँचता है जो उसे अपमानित कर दे । और कौन है जिस पर आकर ठहर जाने वाला अज़ाब उतरता है ।41।

اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٤٢ ع

नि:सन्देह हमने लोगों के लाभ के लिए तुझ पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी है । अत: जो कोई हिदायत पाता है तो (वह) अपनी ही जान के हित के लिए हिदायत पाता है । और जो कोई पथभ्रष्ट होता है तो वह (अपनी जान) के विरुद्ध पथभ्रष्ट होता है । तू उन पर दारोग़ा नहीं है ।42। (रुकू $\frac{4}{1}$)

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

अल्लाह जानों को उनकी मृत्यु के समय कब्ज़ कर लेता है । और जो मरी नहीं होतीं (उन्हें) उनकी नींद की अवस्था में (कब्ज़ करता है ।) अत: जिसके लिए मृत्यु का निर्णय कर देता है उसे रोक रखता है और अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिए (वापस) भेज देता है । नि:सन्देह इसमें

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

चिन्तन-मनन करने वालों के लिए बहुत से चिह्न हैं ।43।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلْ اَوَ لَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٤﴾

क्या उन्होंने अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध कोई सिफ़ारिशी अपना रखे हैं ? तू कह दे कि क्या इस पर भी कि वे किसी वस्तु के स्वामी नहीं हैं और न ही कोई बुद्धि रखते हैं ? ।44।

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ؕ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٥﴾

तू कह दे सिफ़ारिश (का मामला) पूर्णतया अल्लाह ही के अधिकार में है । आकाशों और धरती का सम्राज्य उसी का है । फिर उसी की ओर तुम लैटाए जाओगे ।45।

وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٦﴾

और जब अकेले अल्लाह का वर्णन किया जाए तो उन लोगों के दिल जो परलोक पर ईमान नहीं रखते, बुरा मानते हैं । और जब उसे छोड़ कर दूसरों का वर्णन किया जाए तो वे बहुत प्रसन्न होते हैं ।46।

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٧﴾

तू कह दे, हे अल्लाह ! आकाशों और धरती के पैदा करने वाले ! परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानने वाले ! तू ही अपने भक्तों के बीच (प्रत्येक) उस मामले में निर्णय करेगा जिसमें वे मतभेद करते हैं ।47।

وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

और जो कुछ धरती में है यदि वह सब का सब उनका होता जिन्होंने अत्याचार किया और वैसा ही और भी (होता) तब भी अवश्य वे उसे क़यामत के दिन भयानक अज़ाब से बचने के लिए मुक्तिमूल्य स्वरूप दे देते । और उनके लिए अल्लाह की ओर से वह (कुछ)

مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٨﴾

प्रकट होगा जिसकी वे कल्पना नहीं किया करते थे ।48।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٩﴾

और जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयाँ उनके लिए प्रकट होंगीं । और उन्हें वह घेर लेगा जिस की वे खिल्ली उड़ाया करते थे ।49।

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا
خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ
عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٠﴾

अत: जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो (वह) हमें पुकारता है । फिर जब हम उसे अपनी ओर से कोई नेमत प्रदान करते हैं तो वह कहता है कि यह मुझे केवल एक ज्ञान के आधार पर दिया गया है । वास्तव में यह तो एक बड़ी परीक्षा है । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।50।

قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥١﴾

नि:सन्देह उन लोगों ने जो उनसे पहले थे, यही बात कही थी । अत: जो वे कमाते थे (वह) उनके किसी काम न आ सका ।51।

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ
مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٢﴾

अत: जो उन्होंने कमाया उन्हें उसकी बुराइयाँ ही पहुँची । और इन लोगों में से जिन्होंने अत्याचार किया इनको भी उनके कर्मों के बुरे-परिणाम अवश्य पहुँचेंगे और वे (अल्लाह को) असमर्थ नहीं कर सकेंगे ।52।

اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٣﴾ ع

क्या उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है जीविका विस्तृत कर देता है और संकुचित भी करता है । नि:सन्देह उन लोगों के लिए बड़े चिह्न हैं जो ईमान लाते हैं ।53। (रुकू $\frac{5}{2}$)

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ

तू कह दे, हे मेरे भक्तो ! जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया है

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾

अल्लाह की दया से निराश न हो । निःसन्देह अल्लाह समस्त पापों को क्षमा कर सकता है । निःसन्देह वही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।54।

وَاَنِيْبُوْۤا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٥﴾

और अपने रब्ब की ओर झुको और उसके आज्ञाकारी हो जाओ । इसके पूर्व कि तुम तक एक अज़ाब आ जाए। फिर तुम्हें कोई सहायता नहीं दी जाएगी ।55।

وَاتَّبِعُوْۤا اَحْسَنَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۙ﴿٥٦﴾

और तुम्हारी ओर तुम्हारे रब्ब की ओर से जो उतारा गया है उसके उत्कृष्ट भाग का अनुसरण करो । इसके पूर्व कि सहसा तुम्हें अज़ाब आ पकड़े जबकि तुम्हें (उसकी) समझ न आ सके ।56।

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۙ﴿٥٧﴾

ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति यह कहे : हाय खेद मुझ पर ! उस लापरवाही के कारण जो मैं अल्लाह के पहलू में (अर्थात उसकी दृष्टि के समक्ष) करता रहा । और मैं तो केवल उपहास करने वालों में से था ।57।

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿٥٨﴾

अथवा यह कहे कि यदि अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं अवश्य मुत्तक़ियों में से हो जाता ।58।

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٩﴾

अथवा जब वह अज़ाब को देखे तो यह कहे, काश ! एक बार मेरे लिए लौट कर जाना संभव होता तो मैं अवश्य नेकी करने वालों में से हो जाता ।59।

بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا

क्यों नहीं, निःसन्देह तेरे पास मेरे चिह्न आए और तूने उनको झुठला दिया

وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٠﴾

और अहंकार किया और तू काफ़िरों में से था ।60।

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦١﴾

और क़यामत के दिन तू उन लोगों को देखेगा जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला । उनके चेहरे काले होंगे । क्या नरक में अहंकार करने वालों के लिए ठिकाना नहीं ? ।61।

وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۘ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

और अल्लाह उन लोगों को जिन्होंने तक़वा धारण किया, उनकी सफलता के साथ मुक्ति प्रदान करेगा । उन्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा और न वे शोकग्रस्त होंगे ।62।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٣﴾

अल्लाह प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला है और वह प्रत्येक वस्तु पर निरीक्षक है ।63।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٤﴾ ع

आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी की हैं । और वे लोग जिन्होंने अल्लाह के चिह्नों का इनकार किया वही हैं जो घाटा पाने वाले हैं ।64। (रुकू $\frac{6}{3}$)

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٥﴾

तू कह दे, हे अज्ञानियो ! क्या तुम मुझे आदेश देते हो कि मैं अल्लाह के सिवा दूसरों की उपासना करूँ ? ।65।

وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

और निःसन्देह तेरी ओर और उनकी ओर भी जो तुझ से पहले थे, वह्इ की जा चुकी है कि यदि तूने शिर्क किया तो अवश्य तेरा कर्म नष्ट हो जाएगा । और अवश्य तू घाटा पाने वालों में से हो जाएगा ।66।

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

बल्कि अल्लाह ही की उपासना कर और कृतज्ञों में से हो जा ।67।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٨

और उन्होंने अल्लाह का मान नहीं किया जैसा कि उसके मान का अधिकार था। और क़यामत के दिन धरती सब की सब उसी के अधीन होगी। और आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे। वह पवित्र है और बहुत ऊँचा है उससे जो वे शिर्क करते हैं।68।*

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝٦٩

और बिगुल में फूँका जाएगा तो जो कोई आसमानों में है और जो कोई धरती में है मूर्च्छित होकर गिर पड़ेगा। सिवाए उसके जिसे अल्लाह चाहे। फिर उसमें दोबारा फूँका जाएगा तो सहसा वे खड़े हुए देख रहे होंगे।69।

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٧٠

और धरती अपने रब्ब की ज्योति से चमक उठेगी और कर्म-पत्र (सामने) रख दिया जाएगा और सब नबियों और गवाही देने वालों को लाया जाएगा। और उनके बीच सत्य के साथ निर्णय कर दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा।70।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٧١ ع

और प्रत्येक जान को जो उसने कर्म किया उसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा। और वह (अल्लाह) सबसे अधिक जानता है जो वे करते हैं।71।

(रुकू $\frac{7}{4}$)

---

* इस आयत में क़यामत का जो चित्रण किया गया है कि : (1) क़यामत के दिन धरती पूर्णतया अल्लाह तआला के अधीन होगी और (2) समस्त आकाश अर्थात समस्त ब्रह्माण्ड उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे। दाहिने हाथ से अभिप्राय शक्ति का हाथ है न कि भौतिक रूप से दाहिना हाथ। और लिपटे जाने का जो वर्णन मिलता है यह वर्तमान युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से पूर्णतया प्रमाणित होता है। अर्थात् धरती और आकाश एक विनाश के ब्लैकहोल (Black Hole) में इस प्रकार प्रविष्ट कर दिए जाएँगे जैसे वे लपेटे जा चुके हों। दूसरी कई आयतों में अधिक स्पष्ट रूप से बताया गया है कि लपेटने के उदाहरण से क्या अभिप्राय है।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٢﴾

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया गिरोह के गिरोह नरक की ओर हाँके जाएँगे । यहाँ तक कि जब वे उसके पास आ जाएँगे उसके द्वार खोल दिए जाएँगे। और उसके दारोग़े उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब्ब की आयतों का पाठ करते थे और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की भेंट से डराया करते थे ? वे कहेंगे, क्यों नहीं । परन्तु अज़ाब का आदेश काफ़िरों पर नि:सन्देह सत्य सिद्ध हो गया ।72।

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٣﴾

कहा जाएगा कि नरक के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ । (तुम) उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हो । अत: अहंकार करने वालों का क्या ही बुरा ठिकाना है ।73।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٤﴾

और वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब का तक़्वा धारण किया वे भी गिरोह के गिरोह स्वर्ग की ओर ले जाए जाएँगे । यहाँ तक कि जब वे उस तक पहुँचेंगे और उसके द्वार खोल दिए जाएँगे, तब उसके दारोग़े उनसे कहेंगे, तुम पर सलामती हो । तुम बहुत अच्छी दशा को पहुँचे । अत: इसमें सदा रहने वाले बन कर प्रविष्ट हो जाओ ।74।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ

और वे कहेंगे, समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिस ने अपना वादा हमसे पूरा कर दिखाया । और हमें (इस प्रतिश्रुत) धरती का उत्तराधिकारी बना दिया । स्वर्ग में जहाँ चाहें हम स्थान

نَشَآءُ ۚ فَنِعۡمَ اَجۡرُ الۡعٰمِلِيۡنَ ۝٧٥

बना सकते हैं । अत: कर्म करने वालों का प्रतिफल कितना उत्तम है ।75।

وَتَرَى الۡمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيۡنَ مِنۡ حَوۡلِ الۡعَرۡشِ يُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ ۚ وَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ بِالۡحَقِّ وَقِيۡلَ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝٧٦

और तू फ़रिश्तों को देखेगा कि अर्श के वातावरण को घेरे में लिए हुए होंगे । वे अपने रब्ब की स्तुति के साथ गुणगान कर रहे होंगे । और उनके बीच सत्य के साथ निर्णय किया जाएगा और कहा जाएगा कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है ।76।

(रुकू $\frac{8}{5}$)

40- सूर: अल-मु'मिन

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 86 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरम्भ **हा मीम** खण्डाक्षरों से होता है और इस सूर: के पश्चात छ: सूरतों का आरम्भ भी इन्हीं खण्डाक्षरों से होता है । अर्थात् इसके समेत कुल सात सूर: हैं जिनका आरम्भ **हा मीम** से होता है । अल्लाह अधिक जानता है कि इन सूरतों का सूर: अल-फ़ातिह: की सात आयतों से कोई सम्बन्ध है तो क्या है ।

पिछली सूर: में मनुष्य को उपदेश दिया गया था कि अल्लाह की दया से निराश नहीं होना चाहिए । वास्तव में निराशा इब्लीस की विशेषता है । और जो सच्चे दिल से अल्लाह की कृपा पर भरोसा करेगा और अपने पापों का सच्चे मन से प्रायश्चित करेगा तो अल्लाह तआला सब पाप क्षमा करने का सामर्थ्य रखता है ।

इसी प्रकार पिछली सूर: में फ़रिश्तों के बारे में वर्णन था कि वे अर्श के वातावरण को घेरे में लिए हुए हैं । परन्तु इस सूर: में और अधिक यह कहा गया कि तुम्हारी क्षमा का सम्बन्ध फ़रिश्तों की दुआओं से भी है, जिन्होंने अल्लाह के अर्श को उठाया हुआ है। अल्लाह तआला तो कोई भौतिक वस्तु नहीं है कि वह किसी सिंहासन पर बैठा हुआ हो और उसे फ़रिश्तों ने उठाया हुआ हो । अल्लाह तो प्रत्येक स्थान में उपस्थित है और उसने ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु को उठाया हुआ है । इस लिए यहाँ पर उसके अनुपमेय गुणों का वर्णन है और अर्श से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निर्मल हृदय है जो अल्लाह का सिंहासन है और उनके दिल को शक्ति प्रदान करने के लिए फ़रिश्ते उसे चारों ओर से घेरे रहते हैं और अल्लाह तआला के पापी भक्तों के लिए भी दुआएँ करते हैं । इसके अतिरिक्त उनकी सन्तान के लिए भी दुआएँ करते हैं । अत: मुझे विश्वास है कि इससे अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल के अर्श से उठने वाली वह दुआएँ हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़यामत तक आने वाले नेक भक्तों और उनकी संतान के लिए की हैं ।

इसी सूर: में एक ऐसे राजकुमार का वर्णन मिलता है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आया था पर उसे छिपाता था । परन्तु जब फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वध करने का इरादा किया और उस राजकुमार के सामने मूसा की हत्या के लिए षड़यन्त्र रचे गये तो वह उस समय उसको प्रकट करने से रुक न सका और अपनी जाति को सावधान किया कि यदि मूसा झूठा है तो उसे छोड़ दो । झूठे स्वयं तबाह हो जाया करते हैं । परन्तु यदि वह सच्चा हुआ तो फिर जिन बातों से वह तुम्हें सतर्क करता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ घेरेंगी ।

यहाँ पर लोगों को सदा के लिए यह उपदेश दिया गया है कि नुबुव्वत का दावा करने वालों का मामला अल्लाह पर छोड़ दिया करो। यदि वे झूठे हैं तो अल्लाह स्वयं उनको तबाह करेगा। परन्तु यदि वे सच्चे निकले और तुमने उनका इनकार कर दिया तो तुम उनके द्वारा दी गई अज़ाब की चेतावनियों में से कुछ को अपने विरुद्ध अवश्य पूरी होते देखोगे। चूँकि इन आयतों का सम्बन्ध हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात् नुबुव्वत का दावा करने वालों से भी है, इस लिए ऐसे दावेदारों का इतिहास बताता है कि बिल्कुल इसी प्रकार उनके साथ घटित हुआ। सारे झूठे नबी तबाह कर दिए गए और उनका नामो-निशान भी इतिहास में नहीं मिलता।

इस प्रसंग में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में भी लोगों के इस दावे का उल्लेख है कि उन के बाद कोई नबी नहीं आएगा। यदि यह बात सच्ची होती तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आगमन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पश्चात कैसे होता ? अतः यह केवल उन लोगों के दावे हैं जिनको अल्लाह के विधान का कुछ भी ज्ञान नहीं। सब कुछ बन्द हो सकता है परन्तु अल्लाह की कृपाओं का मार्ग कदापि बन्द नहीं हो सकता। अल्लाह झूठों को तबाह करता है इस प्रसंग में यह भी चेतावनी दी गई कि वह सच्चों की अवश्य सहायता करता है। इसलिए जो चाहे ज़ोर लगा लो, तुम अल्लाह तआला के सच्चे नबियों को कभी भी असफल नहीं कर सकोगे।

आयत सं. 66 में धर्म को विशिष्ट करने का फिर से विशेष आदेश दिया गया है कि जीवित अल्लाह के सिवा और कोई उपास्य नहीं। अतः उसी के लिए धर्म को विशिष्ट करते हुए उसे पुकारो।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ ثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّ تِسْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

حٰمٓ ②

हमीदुन् मजीदुन : अर्थात प्रशंसा योग्य, अति गौरवशाली ।2।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ③

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से है ।3।

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ④

जो पापों को क्षमा करने वाला और प्रायश्चित स्वीकार करने वाला, पकड़ करने में कठोर और परम दानशील है । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । उसी की ओर लौट कर जाना है ।4।

مَا يُجَادِلُ فِىْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى الْبِلَادِ ⑤

अल्लाह के चिह्नों के बारे में उन लोगों के अतिरिक्त कोई झगड़ा नहीं करता जिन्होंने इनकार किया । अत: उनका खुला-खुला देश में फिरना तुझे किसी धोखे में न डाले ।5।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ⑥

उनसे पहले नूह की जाति ने भी झुठलाया था और उनके पश्चात् विभिन्न समूहों ने भी । और प्रत्येक जाति ने अपने रसूल के सम्बन्ध में यह दृढ़ संकल्प किया था कि वे उसे पकड़ लें और उन्होंने झूठ के सहारे झगड़ा किया ताकि उसके द्वारा सत्य को झुठला दें । तब मैंने उन्हें पकड़ लिया । अत: (देखो) मेरा दण्ड कैसा था ।6।

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝٧

और इसी प्रकार तेरे रब्ब का यह आदेश उन लोगों के विरुद्ध जिन्होंने इनकार किया, अवश्य पूरा उतरता है कि वे आग में पड़ने वाले हैं ।7।

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٨

वे जो अर्श को उठाए हुए हैं और वे जो उसके आस-पास हैं, वे अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ गुणगान करते हैं और उस पर ईमान लाते हैं और उन लोगों के लिए क्षमा माँगते हैं, जो ईमान लाए । हे हमारे रब्ब ! तू हर चीज़ पर दया और ज्ञान के साथ छाया हुआ है । अत: वे लोग जिन्होंने प्रायश्चित किया और तेरे मार्ग का अनुसरण किया उनको क्षमा कर दे और उनको नरक के अज़ाब से बचा ।8।

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩

और हे हमारे रब्ब ! उन्हें और उनके पूर्वज और उनके साथियों और उनकी संतान में से जो नेकी को अपनाने वाले हैं, उन सब को स्थायी स्वर्गों में प्रविष्ट कर दे जिनका तूने उनसे वादा कर रखा है । नि:सन्देह तू ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।9।

وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٠

और उन्हें बुराइयों से बचा । और जिसे तूने उस दिन बुराइयों (के परिणामों) से बचाया तो नि:सन्देह तूने उस पर बहुत कृपा की और यही बहुत बड़ी सफलता है ।10। (रुकू $\frac{1}{6}$)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ

नि:सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया उन्हें पुकारा जाएगा कि अल्लाह की नाराज़गी तुम्हारी पारस्परिक नाराज़गियों के मुक़ाबले पर अधिक बड़ी

اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿١١﴾

थी, जिस समय तुम ईमान की ओर बुलाए जाते थे फिर भी इनकार कर देते थे ।11।

قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿١٢﴾

वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! तूने हमें दो बार मृत्यु दी और दो ही बार जीवन प्रदान किया । अतः हम अपने पापों का स्वीकार करते हैं । तो क्या (इससे बच) निकलने का कोई मार्ग है ? ।12।*

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿١٣﴾

तुम्हारी यह दशा इस लिए हुई है कि जब भी अकेले अल्लाह को पुकारा जाता था तुम उसका इनकार कर देते थे । और यदि उसका साझीदार ठहराया जाता था तो तुम मान लेते थे । अतः निर्णय का अधिकार अल्लाह ही को है जो सर्वोच्च (और) सर्वश्रेष्ठ है ।13।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ رِزْقًا ۭ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٤﴾

वही है जो तुम्हें अपने चिह्न दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से जीविका उतारता है । और वही उपदेश प्राप्त करता है जो झुकता है ।14।

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٥﴾

अतः अल्लाह के लिए आज्ञाकारिता को विशुद्ध करते हुए उसी को पुकारो चाहे काफ़िर नापसंद करें ।15।

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٦﴾

वह ऊँचे दर्जों वाला, अर्श का स्वामी है । अपने भक्तों में से जिस पर चाहे अपने आदेश से रूह को उतारता है ताकि वह साक्षातकार के दिन से डराए ।16।

---

* प्रत्यक्ष रूप में तो एक ही बार मनुष्य मरता है, हाँ उसका दो बार जीवित होना समझ में आ जाता है। एक यह जीवन और एक परकालीन जीवन । आयत **तूने हमें दो बार मृत्यु दी** में पहली मृत्यु से अभिप्राय पूर्णरूपेण अनस्तित्वता है । अर्थात तूने हमें पहली बार अनस्तित्व से अस्तित्व में लाया ।

يَوْمَ هُم بَارِزُونَ ۚ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٧﴾

जिस दिन वे निकल खड़े होंगे । उनकी कोई बात अल्लाह से छिपी न होगी । आज के दिन साम्राज्य किसका है ? अल्लाह ही का है जो अकेला (और) परम पराक्रमी है ।17।

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٨﴾

आज प्रत्येक जान को उसका प्रतिफल दिया जाएगा जो उसने कमाया । आज कोई अत्याचार नहीं होगा । नि:सन्देह अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है ।18।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٩﴾

और उन्हें समीप आ जाने वाली पकड़ के दिन से डरा जब दिल शोक और भय से गले तक आ पहुँचेंगे । अत्याचारियों के लिए न कोई घनिष्ट मित्र होगा और न कोई ऐसा सिफ़ारिश करने वाला जिसकी बात मानी जाए ।19।

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿٢٠﴾

वह आँखों की ख़यानत को भी जानता है और उसे भी (जानता है) जो सीने छिपाते हैं ।20।

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٢١﴾ ع

और अल्लाह सत्य के साथ निर्णय करता है और जिन को वे लोग उसके सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का भी निर्णय नहीं करते । नि:सन्देह अल्लाह ही है जो बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।21। (रुकू $\frac{2}{7}$)

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ

क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का अन्त कैसा हुआ जो उन से पहले थे ? वे उनसे शक्ति में और धरती में (अपनी) छाप छोड़ने की दृष्टि से उनसे अधिक सशक्त थे । अत: अल्लाह ने उनको भी

بِذُنُوْبِهِمْ ۗ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٢٢﴾

उनके पापों के कारण पकड़ लिया । और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न था ।22।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ۗ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٣﴾

यह इस कारण हुआ कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्न लेकर आते रहे फिर भी उन्होंने इनकार कर दिया । अत: अल्लाह ने उनको पकड़ लिया । नि:सन्देह वह बहुत शक्तिशाली (और) दण्ड देने में कठोर है ।23।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٢٤﴾

और नि:सन्देह हमने मूसा को भी अपने चिह्नों और सुस्पष्ट प्रबल प्रमाण के साथ भेजा था ।24।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٥﴾

फ़िरऔन और हामान और क़ारून की ओर । फिर उन्होंने कहा, यह तो जादूगर (और) बहुत झूठा है ।25।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ۗ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٦﴾

अत: जब वह (मूसा) हमारी ओर से सत्य लेकर उनके पास आया तो उन्होंने कहा, उन लोगों के पुत्रों का वध करो जो उसके साथ ईमान लाए और उनकी स्त्रियों को जीवित रखो । और काफ़िरों की योजना विफल होने के अतिरिक्त कोई महत्व नहीं रखती ।26।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٧﴾

और फ़िरऔन ने कहा, मुझे तनिक छोड़ो कि मैं मूसा का वध करूँ और वह अपने रब्ब को पुकारे । नि:सन्देह मैं डरता हूँ कि वह तुम्हारा धर्म परिवर्तित कर देगा अथवा धरती में फ़साद फैला देगा ।27।

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ

और मूसा ने कहा, नि:सन्देह मैं अपने रब्ब और तुम्हारे रब्ब की शरण में आता हूँ प्रत्येक ऐसे अहंकारी से जो

مِّنۡ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤۡمِنُ بِيَوۡمِ الۡحِسَابِ ﴿٢٨﴾

हिसाब-किताब के दिन पर ईमान नहीं रखता ।28। (रुकू $\frac{3}{8}$)

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤۡمِنٌ ۖ مِّنۡ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ يَكۡتُمُ اِيۡمَانَهٗۤ اَتَقۡتُلُوۡنَ رَجُلًا اَنۡ يَّقُوۡلَ رَبِّىَ اللّٰهُ وَقَدۡ جَآءَكُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ مِنۡ رَّبِّكُمۡ ؕ وَاِنۡ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيۡهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنۡ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبۡكُمۡ بَعۡضُ الَّذِىۡ يَعِدُكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِىۡ مَنۡ هُوَ مُسۡرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٩﴾

और फ़िरऔन की संतान में से एक मोमिन पुरुष ने जो अपने ईमान को छिपाए हुए था कहा, कि क्या तुम केवल इस लिए एक व्यक्ति का वध करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब्ब अल्लाह है। और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से स्पष्ट चिह्न लेकर आया है। यदि वह झूठा निकला तो नि:सन्देह उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और यदि वह सच्चा हुआ तो जिन बातों से वह तुम्हें डराता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ पकड़ेंगी। नि:सन्देह अल्लाह उसे हिदायत नहीं दिया करता जो सीमा से बढ़ा हुआ (और) अत्यन्त झूठा हो ।29।*

يٰقَوۡمِ لَكُمُ الۡمُلۡكُ الۡيَوۡمَ ظٰهِرِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ ۡ فَمَنۡ يَّنۡصُرُنَا مِنۡۢ بَاۡسِ اللّٰهِ اِنۡ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرۡعَوۡنُ مَاۤ اُرِيۡكُمۡ اِلَّا

हे मेरी जाति ! आज तो तुम्हारा साम्राज्य इस अवस्था में है कि तुम धरती पर विजय प्राप्त करते जा रहे हो। परन्तु अल्लाह के अज़ाब की पकड़ से कौन हमारी सहायता करेगा यदि वह हम तक आ पहुँचे ? फ़िरऔन ने कहा, मैं जो

* जिस मोमिन पुरुष का इस आयत में वर्णन है वह फ़िरऔन के निकट-सम्बन्धियों तथा बड़े सरदारों में से था। और हज़रत आसिया की भाँति वह भी हज़रत मूसा अलै. पर ईमान ले आया था। परन्तु अपना ईमान गुप्त रखा हुआ था। इस आयत से पता चलता है कि जब फ़िरऔन और उसके सरदार हज़रत मूसा के वध का निर्णय कर रहे थे तो उस समय उसने अपने इस गुप्त ईमान को प्रकट कर दिया। और उनको समझाया कि वे अपनी इस हरकत से रुक जाएँ और यह तर्क दिया कि यदि वह झूठा है तो झूठे का झूठ केवल उसी पर पड़ा करता है। जिस पर उसने झूठ बांधा है वह आप ही उसे पकड़ेगा। परन्तु यदि वह सच्चा निकला तो ऐसी विपत्तियाँ जिनकी वह भविष्यवाणी करता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हारे पीछे लग जाएँगी यहाँ तक कि तुम तबाह कर दिए जाओगे। सच्चे नबियों की सदा से यह एक पहचान है। और जिन लोगों की ओर नबी भेजे जाते हैं उनके लिए भी एक स्थायी उपदेश है।

مَآ اَرٰى وَمَآ اَهۡدِيۡكُمۡ اِلَّا سَبِيۡلَ الرَّشَادِ ﴿۳۰﴾

कुछ समझता हूँ ऐसा ही तुम्हें समझा रहा हूँ । और मैं हिदायत के पथ के अतिरिक्त किसी दूसरी ओर तुम्हारा मार्गदर्शन नहीं करता ।30।

وَقَالَ الَّذِىۡۤ اٰمَنَ يٰقَوۡمِ اِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ مِّثۡلَ يَوۡمِ الۡاَحۡزَابِ ﴿۳۱﴾

और उसने जो ईमान लाया था कहा : हे मेरी जाति ! नि:सन्देह मैं तुम पर (बीती हुई) जातियों के युग जैसा युग आने से डरता हूँ ।31।

مِثۡلَ دَاۡبِ قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوۡدَ وَالَّذِيۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ‌ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيۡدُ ظُلۡمًا لِّلۡعِبَادِ ﴿۳۲﴾

नूह की जाति की डगर जैसा युग तथा आद और समूद जैसा एवं उन लोगों जैसा जो उनके पश्चात आए । और अल्लाह भक्तों पर अत्याचार का कोई इरादा नहीं रखता ।32।

وَيٰقَوۡمِ اِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ يَوۡمَ التَّنَادِ ﴿۳۳﴾

और हे मेरी जाति ! मैं तुम पर ऐसा समय आने से डरता हूँ जब ऊँची आवाज़ से एक दूसरे को पुकारा जाएगा ।33।

يَوۡمَ تُوَلُّوۡنَ مُدۡبِرِيۡنَ‌ۚ مَا لَـكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ عَاصِمٍ‌ۚ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ﴿۳۴﴾

जिस दिन तुम पीठ फेर कर भाग खड़े होगे । तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं होगा । और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे फिर उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं होता ।34।

وَلَقَدۡ جَآءَكُمۡ يُوۡسُفُ مِنۡ قَبۡلُ بِالۡبَيِّنٰتِ فَمَا زِلۡتُمۡ فِىۡ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمۡ بِهٖ‌ؕ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلۡتُمۡ لَنۡ يَّبۡعَثَ اللّٰهُ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ رَسُوۡلًا‌ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنۡ هُوَ مُسۡرِفٌ مُّرۡتَابُ ۚ ۖ ﴿۳۵﴾

और नि:सन्देह तुम्हारे पास इससे पूर्व यूसुफ़ भी सुस्पष्ट चिह्न ले कर आ चुका है । परन्तु तुम उस के विषय में सदैव शंका में रहे हो जो वह तुम्हारे पास लाया । यहाँ तक कि जब वह मर गया तो तुम कहने लगे कि अब इसके पश्चात अल्लाह कदापि कोई रसूल नहीं भेजेगा । इसी प्रकार अल्लाह सीमा से बढ़ने वाले (और) शंकाओं में पड़े रहने वाले को पथभ्रष्ट ठहराता है ।35।

उन लोगों को, जो अल्लाह की आयतों के बारे में बिना किसी प्रबल प्रमाण के जो उनके पास आया हो, झगड़ते हैं। अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा पाप है और उनके निकट भी जो ईमान लाए हैं। इसी प्रकार अल्लाह प्रत्येक अहंकारी (और) निर्दयी के दिल पर मुहर लगा देता है।36।	الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝36
और फ़िरऔन ने कहा, हे हामान ! मेरे लिए महल बना ताकि मैं उन रास्तों तक जा पहुँचूं।37।	وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝37
जो आकाश के रास्ते हैं ताकि मैं मूसा के उपास्य को झांक कर देखूँ। परन्तु वास्तव में मैं तो उसे झूठा समझता हूँ। और इसी प्रकार फ़िरऔन के लिए उसके कुकर्म सुन्दर करके दिखाए गए। और वह (सीधे) रास्ते से रोक दिया गया। और फ़िर्औन की योजना असफलता में डूबने के अतिरिक्त कुछ भी न थी।38। (रुकू $\frac{4}{9}$)	اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّىْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۝38 ع
और वह व्यक्ति जो ईमान लाया था उसने कहा, हे मेरी जाति ! मेरा अनुसरण करो मैं तुम्हें हिदायत का मार्ग दिखाऊँगा।39।	وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۝39
हे मेरी जाति ! यह सांसारिक जीवन तो केवल अस्थायी सामान है। और निःसन्देह परलोक ही है जो ठहरने के योग्य स्थान है।40।	يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِىَ دَارُ الْقَرَارِ ۝40
जो भी बुराई करेगा उसे उसी के समान दण्ड दिया जाएगा। और पुरुष और स्त्री में से जो भी नेकी करेगा और वह मोमिन	مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ

مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤١﴾

होगा, तो यही वे लोग हैं जो स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे । उसमें उन्हें बेहिसाब जीविका प्रदान की जाएगी ।41।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤٢﴾

النصف

और हे मेरी जाति ! मुझे क्या हुआ है कि मैं तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ जबकि तुम मुझे अग्नि की ओर बुला रहे हो ।42।

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٣﴾

तुम मुझे (इसलिए) बुला रहे हो कि मैं अल्लाह का इनकार कर दूँ और उसका साझीदार उसे ठहराऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं । और मैं पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) अपार क्षमा करने वाले की ओर बुलाता हूँ ।43।

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٤﴾

इसमें कोई संदेह नहीं कि जिसकी ओर तुम मुझे बुलाते हो उसे पुकारने का कोई औचित्य न इहलोक में है और न परलोक में । और निःसन्देह हमारा लौट कर जाना तो अल्लाह की ओर है । और निःसन्देह सीमा से बढ़ने वाले ही अग्नि वाले होंगे ।44।

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٥﴾

अतः तुम अवश्य उन बातों को याद करोगे जो मैं तुमसे कहता हूँ । और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। निःसन्देह अल्लाह अपने भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।45।

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

अतः अल्लाह ने उसे उनके षड्यन्त्रों के दुष्परिणामों से बचा लिया । और फ़िरऔन के वंशज को बहुत बुरे अज़ाब ने घेर लिया ।46।

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ

अग्नि, जिस के समक्ष वे सुबह और शाम पेश किए जाते हैं । और जिस दिन

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ ۫ أَدْخِلُوٓا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٧﴾

क़यामत घटित होगी (कहा जाएगा कि) फ़िरऔन के वंशज को कठोरतम अज़ाब में झोंक दो ।47।

وَإِذْ يَتَحَآجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَٰٓؤُا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٨﴾

और जब वे अग्नि में पड़े झगड़ रहे होंगे तो दुर्बल लोग अहंकार करने वालों से कहेंगे, हम नि:सन्देह तुम्हारे अनुयायी थे। अत: क्या तुम अग्नि का कोई अंश हम से दूर कर सकते हो ? ।48।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُلٌّ فِيهَآ ۙ إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٩﴾

जिन लोगों ने अहंकार किया वे कहेंगे, नि:सन्देह हम सब के सब इसमें हैं । नि:सन्देह अल्लाह भक्तों के मध्य निर्णय कर चुका है ।49।

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٥٠﴾

और वे लोग जो अग्नि में होंगे, नरक के दारोग़ाओं से कहेंगे कि अपने रब्ब से दुआ करो कि हमसे किसी दिन तो कुछ अज़ाब हल्का कर दे ।50।

قَالُوٓا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَٰتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۚ قَالُوا فَادْعُوا ۗ وَمَا دُعَٰٓؤُا الْكَٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَٰلٍ ﴿٥١﴾ ع

वे कहेंगे, तो फिर क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल स्पष्ट चिह्नों के साथ नहीं आते रहे ? वे कहेंगे, हाँ ! क्यों नहीं । वे उत्तर देंगे कि दुआ करो । परन्तु काफ़िरों की दुआ व्यर्थ जाने के अतिरिक्त कोई महत्व नहीं रखती ।51।

(रुकू $\frac{5}{10}$)

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ ءَامَنُوا فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَٰدُ ﴿٥٢﴾

नि:सन्देह हम अपने रसूलों की और उनकी जो ईमान लाए, इस संसार के जीवन में भी सहायता करेंगे और उस दिन भी जब गवाह खड़े होंगे ।52।*

---

* अल्लाह तआला अपने नबियों को निश्चित रूप से अपनी ओर से सहायता प्रदान करता है । आयतांश **उस दिन भी जब गवाह खड़े होंगे** से अभिप्राय क़यामत अर्थात निर्णय का दिन है । जिस दिन अपराधियों के विरुद्ध असंख्य अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किए जाएँगे ।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٣﴾

जिस दिन अत्याचारियों को उनकी क्षमा-याचना कोई लाभ नहीं देगी। और उनके लिए ला'नत होगी और उनका बहुत बुरा घर होगा।53।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٤﴾

और नि:सन्देह हमने मूसा को हिदायत प्रदान की और बनी-इस्राईल को पुस्तक का उत्तराधिकारी बना दिया।54।

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٥﴾

जो बुद्धिमानों के लिए हिदायत थी और उपदेश भी।55।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٦﴾

अत: धैर्य धर। नि:सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। और अपनी भूल-चूक के सम्बन्ध में क्षमायाचना कर। और अपने रब्ब की स्तुति करने के साथ शाम को और सुबह को भी (उसका) गुणगान कर।56।*

اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٥٧﴾

नि:सन्देह वे लोग जो अल्लाह की आयतों के बारे में ऐसी किसी ठोस दलील के बिना झगड़ते हैं जो उनके पास आई हो, उनके दिलों में ऐसी बड़ाई के अतिरिक्त कुछ नहीं जिसे वे कभी भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अत: अल्लाह की शरण मांग। नि:सन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है।57।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٨﴾

नि:सन्देह आकाशों और धरती की उत्पत्ति मनुष्य की उत्पत्ति से बहुत बढ़ कर है। परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।58।

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में ''जम्बुन'' शब्द प्रयुक्त किया गया है इससे भूल-चूक अभिप्राय है, न कि कोई पाप।

وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٩﴾

और अंधा और देखने वाला समान नहीं हो सकते । इसी प्रकार वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए वे और बुराई करने वाले एक समान नहीं हो सकते । बहुत कम है जो तुम उपदेश ग्रहण करते हो ।59।

اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦٠﴾

नि:सन्देह निर्धारित घड़ी अवश्य आकर रहेगी । इसमें कोई संदेह नहीं परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते ।60।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ﴿٦١﴾

और तुम्हारे रब्ब ने कहा, मुझे पुकारो मैं तुम्हें उत्तर दूँगा । नि:सन्देह वे लोग जो मेरी उपासना करने से अपने आप को ऊँचा समझते हैं (वे) अवश्य नरक में अपमानित होकर प्रविष्ट होंगे ।61।

(रुकू $\frac{6}{11}$)

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٢﴾

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए रात को बनाया ताकि तुम उसमें आराम पाओ और दिन को दिखाने वाला बनाया। नि:सन्देह अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है । परन्तु अधिकतर मनुष्य कृतज्ञता प्रकट नहीं करते ।62।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۡ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٣﴾

यह है अल्लाह, तुम्हारा रब्ब, प्रत्येक वस्तु का सृष्टिकर्ता । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । फिर तुम किधर बहकाए जाते हो ? ।63।

كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٤﴾

इसी प्रकार वे लोग बहकाए जाते हैं जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं ।64।

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने का स्थान बनाया । और

وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّ صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾

आकाश को (तुम्हारे) जीवन का आधार बनाया। और उसने तुम्हें आकृति प्रदान की और तुम्हारी आकृतियों को बहुत अच्छा बनाया। और तुम्हें पवित्र वस्तुओं में से जीविका प्रदान किया। यह है अल्लाह, तुम्हारा रब्ब। अतः एक वही अल्लाह बरकत वाला सिद्ध हुआ जो समस्त लोकों का रब्ब है।65।

هُوَ الْحَیُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

वही जीवित है। उसके सिवा कोई उपास्य नहीं। अतः उसी के लिए धर्म को विशिष्ट करते हुए उसे पुकारो। समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है।66।

قُلْ اِنِّیْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّیْ ؗ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

तू कह दे कि निःसन्देह मुझे मना किया गया है कि मैं उनकी उपासना करूँ जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। जबकि मेरे पास मेरे रब्ब की ओर से स्पष्ट चिह्न आ चुके हैं। और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं समस्त लोकों के रब्ब का पूर्ण आज्ञाकारी हो जाऊँ।67।

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰی مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّی وَّ لَعَلَّكُمْ

वही है जिसने (पहली बार) तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर तुम्हें शिशु के रूप में बाहर निकालता है। और फिर यह सामर्थ्य प्रदान करता है कि तुम अपनी परिपक्व आयु को पहँचो ताकि फिर यह संभावना हो कि तुम बूढ़े हो जाओ। और ताकि तुम अन्तिम निर्धारित समय तक पहुँच जाओ। हाँ कुछ तुम में से ऐसे भी हैं जिन्हें पहले

تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۸﴾

ही मृत्यु दे दी जाती है और (यह व्यवस्था इस कारण है) ताकि तुम बुद्धि से काम लो ।68।

هُوَ الَّذِیۡ یُحۡیٖ وَ یُمِیۡتُ ۚ فَاِذَا قَضٰۤی اَمۡرًا فَاِنَّمَا یَقُوۡلُ لَهٗ کُنۡ فَیَکُوۡنُ ﴿۶۹﴾

वही है जो जीवित करता है और मारता है । अतः जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो केवल उसे यह कहता है कि ''हो जा'' तो वह होने लगती है और होकर रहती है ।69। (रुकू $\frac{7}{12}$)

اَلَمۡ تَرَ اِلَی الَّذِیۡنَ یُجَادِلُوۡنَ فِیۡۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰی یُصۡرَفُوۡنَ ﴿۷۰﴾

क्या तूने ऐसे लोग नहीं देखे जो अल्लाह के चिह्नों के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क करते हैं ? वे कहाँ फिराए जा रहे हैं ? ।70।

الَّذِیۡنَ کَذَّبُوۡا بِالۡکِتٰبِ وَ بِمَاۤ اَرۡسَلۡنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ۟ فَسَوۡفَ یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۷۱﴾

वे लोग जिन्होंने पुस्तक का और उन बातों का इनकार कर दिया जिनके साथ हम अपने रसूल भेजते रहे । अतः वे शीघ्र जान लेंगे ।71।

اِذِ الۡاَغۡلٰلُ فِیۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ وَ السَّلٰسِلُ ؕ یُسۡحَبُوۡنَ ﴿۷۲﴾

जब तौक़ उनकी गर्दनों में होंगे और ज़ंजीरें भी, (जिनसे) वे घसीटे जाएँगे ।72।

فِی الۡحَمِیۡمِ ۬ۙ ثُمَّ فِی النَّارِ یُسۡجَرُوۡنَ ﴿۷۳﴾

खौलते हुए पानी में, उसके पश्चात वे अग्नि में झोंक दिए जाएँगे ।73।

ثُمَّ قِیۡلَ لَهُمۡ اَیۡنَ مَا کُنۡتُمۡ تُشۡرِکُوۡنَ ﴿۷۴﴾

फिर उनसे पूछा जाएगा, कहाँ हैं वे जिनको तुम उपास्य ठहराया करते थे ।74।

مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوۡا ضَلُّوۡا عَنَّا بَلۡ لَّمۡ نَکُنۡ نَّدۡعُوۡا مِنۡ قَبۡلُ شَیۡئًا ؕ کَذٰلِکَ یُضِلُّ اللّٰهُ الۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۷۵﴾

अल्लाह के सिवा ? वे कहेंगे हमसे वे गुम हो गए हैं । बल्कि हम तो इससे पहले किसी चीज़ को भी नहीं पुकारते थे। इसी प्रकार अल्लाह काफ़िरों को पथभ्रष्ट ठहराता है ।75।

ذٰلِکُمۡ بِمَا کُنۡتُمۡ تَفۡرَحُوۡنَ فِی الۡاَرۡضِ

यह इस लिए है कि तुम धरती में अनुचित रूप से ख़ुशियाँ मनाया करते

بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝٧٦

थे। और इसलिए (भी) कि तुम इतराते फिरते थे ।76।

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٧٧

नरक के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ । (तुम) इसमें एक लम्बे समय तक रहने वाले हो । अत: अहंकार करने वालों का ठिकाना बहुत बुरा है ।77।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝٧٨

अत: तू धैर्य धर । नि:सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । हम चाहें तो तुझे उस चेतावनी में से कुछ दिखादें जिससे हम उन्हें डराया करते थे अथवा तुझे मृत्यु दे दें । तो हर हाल में वे हमारी ओर ही लौटाए जाएँगे ।78।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝٧٩ ع

और नि:सन्देह हमने तुझ से पहले भी रसूल भेजे थे । कुछ उनमें से ऐसे थे जिनका वर्णन हमने तुझ से कर दिया है और कुछ उनमें से ऐसे थे जिनका हमने तुझसे वर्णन नहीं किया । और किसी रसूल के लिए संभव नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई चिह्न ले आए । अत: जब अल्लाह का आदेश आ जाएगा तो सत्य के साथ निर्णय कर दिया जाएगा । और उस समय झुठलाने वाले घाटा उठाएँगे ।79।* (रुकू $\frac{8}{13}$)

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाय बनाए ताकि तुम उनमें से

* इस आयत में पहली उल्लेखनीय बात यह है कि असंख्य नबियों में से केवल कुछ का वर्णन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा किया गया है । परन्तु नबियों की कुल संख्या यह नहीं है । प्रत्येक प्रकार के नबियों में से ये कुछ नमूने के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं । और इन सब के सामूहिक नमूने के रूप में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वर्णन है । पवित्र क़ुरआन में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समेत कुल पच्चीस नबियों का वर्णन है जैसा कि बाइबिल के नये-नियम की पुस्तक 'प्रकाशितवाक्य' अध्याय-4 की भविष्यवाणी में वर्णन किया गया था।

مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ ﴿٨٠﴾

कुछ पर सवारी करो और उन्हीं में से कुछ को तुम भोजन के लिए प्रयोग में लाते हो ।80।

وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨١﴾

और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से लाभ हैं । और यह कि तुम उन पर सवार हो कर अपनी उस मनोरथ को प्राप्त करो जो तुम्हारे सीनों में है । और उन पर तथा नौकाओं पर तुम सवार किये जाते हो ।81।

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

और तुम्हें वह अपने चिह्न दिखाता है । अत: अल्लाह के किन-किन चिह्नों का तुम इनकार करोगे ? ।82।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٣﴾

अत: क्या उन्होंने धरती पर भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का अंत कैसा हुआ जो उनसे पहले थे ? वे उनसे संख्या में अधिक थे और शक्ति में भी । तथा धरती में (बड़ाई के) चिह्न छोड़ने की दृष्टि से भी अधिक सशक्त थे। फिर भी जो वे कमाया करते थे, वह उनके कुछ काम न आए ।83।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٤﴾

अत: जब उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्न लेकर आए तो वे उसी ज्ञान पर खुश रहे जो उनके पास था । और उनको उसी बात ने घेर लिया जिससे वे उपहास किया करते थे ।84।

فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

अत: जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा तो कहा, हम अल्लाह पर जो अद्वितीय है ईमान ले आए हैं और उन सब बातों का इनकार करते हैं । जिनसे हम उसका साझीदार ठहराया करते थे ।85।

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۟

अतः उनका ईमान उस समय उन्हें कुछ लाभ न दे सका जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया । अल्लाह के उस नियम के अनुसार जो उसके भक्तों के सम्बन्ध में बीत चुका है और उस समय काफ़िरों ने बड़ा घाटा उठाया ।86। (रुकू $\frac{9}{14}$)

41- सूर: हा मीम अस-सज्द:

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 55 आयतें हैं ।

सूर: अल मु'मिन के पश्चात सूर: हा मीम अस सज्द: आती है जिसका आरम्भ **हा मीम** खण्डाक्षरों से ही किया गया है ।

इस सूर: के आरम्भ ही में यह दावा किया गया है कि क़ुरआन एक ऐसी सरल और शुद्ध भाषा में अवतरित हुआ है जिसने विषयवस्तुओं को खोल-खोल कर वर्णन किया है। परन्तु इसके उत्तर में इनकार करने वाले कहते हैं कि हमारे दिल पर्दे में हैं । हमारे कानों में बहरापन है और तुम्हारे और हमारे बीच एक ओट है । और रसूल को सम्बोधित कर के यह चुनौति देते हैं कि तू भले ही जो चाहता है करता रह, हम भी एक संकल्प लेकर अपने कामों में व्यस्त हैं । यहाँ यह नहीं सोचना चाहिए कि नबियों को शत्रु खुली छुट्टी दे देता है कि जो चाहें करें बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि तू अपने स्थान पर काम कर और हम इन कामों को असफल बनाने का सदा प्रयत्न करते रहेंगे ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसका यह उत्तर सिखाया गया कि तू उनसे कह दे कि यद्यपि मैं तुम्हारे जैसा ही मनुष्य हूँ परन्तु मुझ पर जो वह्इ उतरी है उसके परिणाम स्वरूप तुम्हारे और मेरे बीच धरती और आकाश के समान अन्तर पड़ चुका है ।

इस सूर: में कुछ ऐसी आयतें हैं जिन्हें ना समझने के कारण कुछ लोग उन पर आपत्ति करते हैं । उदाहरणत: आयत सं. 11 से 13 के विषय में वे समझते हैं कि सृष्टि के आरम्भ में सारा ब्रह्माण्ड एक धुंध की भाँति वातावरण में फैल गया था, उसी का वर्णन किया जा रहा है हालाँकि धरती की उत्पत्ति तो उसके बहुत बाद हुई है ।

वास्तव में यहाँ यह विषय वर्णन हो रहा है कि धरती में ख़ुराक की जो व्यवस्था है उसे चार युगों में संपूर्ण किया गया है । और पर्वतों की उत्पत्ति ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई है । फिर इसके पश्चात यह कहा गया कि इसके ऊपर का आकाश एक धुँए के रूप में था । यह धुँआ वास्तव में ऐसे वाष्पकणों के रूप में था जो धरती के निकटवर्ती सात आकाशों से भी बहुत ऊँचा था और बार-बार जब वह वाष्पकण धरती पर बरसते थे तो गर्मी की अधिकता के कारण फिर धुआँ बनकर आकाश की ऊँचाइयों में उठ जाते थे । एक बहुत लम्बे समय तक धरती की यही अवस्था रही । और अन्तत: वह पानी धरती पर बरस कर समुद्रों के रूप में धरती में फैल गया जहाँ से वाष्पकणों के रूप में उठ कर पर्वतों से टकरा कर फिर वापिस धरती पर बरसने लगा । इसके बाद दो युगों में धरती के निकटवर्ती सप्त आकाश संपूर्ण किए गए । और आकाश की प्रत्येक परत को मानो

निश्चित आदेश दे दिया गया कि तुमने यह कार्य करना है । आज वैज्ञानिक धरती के आस-पास सात परतों में बंटे हुए आकाश का वर्णन करते हैं । तो उसकी प्रत्येक परत की एक निश्चित कार्य का वर्णन करते हैं जिसके बिना धरती पर मनुष्य का जीवन संभव नहीं था । आकाश की ये सारी परतें धरती और धरती वासियों की सुरक्षा पर ही लगी हुई हैं ।

जिस दृढ़ता की हज़रत मुहम्मद सल्ल. को शिक्षा दी गई इसकी व्याख्या और फिर उसके महान प्रतिफल का दो भागों में वर्णन है । पहले भाग में तो समस्त मोमिनों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि यदि वे शत्रु के अत्याचारों के विरुद्ध दृढ़ता दिखाएँगे तो अल्लाह तआला ऐसे फ़रिश्ते उन पर उतारेगा जो उनके दिल की ढाढस बंधाएँगे और उनसे वार्तालाप करते हुए उन्हें सांत्वना देंगे कि हम इस संसार में भी तुम्हारे साथ हैं और परलोक में भी तुम्हारे साथ होंगे ।

इसके पश्चात उन आयतों में जिनका आरम्भ **और बात कहने में उससे श्रेष्ठ कौन है जो अल्लाह की ओर बुलाये** से होता है, इस विषय को और आगे बढ़ाते हुए कहा कि यदि दृढ़ता के साथ अपनी सुरक्षा के अतिरिक्त अल्लाह पर भरोसा करते हुए तुम उनको धैर्य और बुद्धिमानी पूर्वक संदेश पहुँचाने में सुस्ती नहीं करोगे तो वे जो तुम्हारी जान के प्यासे शत्रु हैं वे एक समय तुम पर जान न्योछावर करने वाले मित्र बन जाएँगे । परन्तु यह चमत्कार सबसे शानदार रूप में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पूरा हुआ जो सब धैर्य धरने वालों से अधिक धैर्य धरने वाले थे । और आप सल्ल. को धैर्य धरने की एक महान शक्ति प्रदान की गई थी और वास्तव में आप सल्ल. के जीवन में ही आप के जानी दुश्मन बहुसंख्या में आप पर जान न्योछावर करने वाले मित्रों में परिवर्तित हो गए ।

इस सूर: के अन्त पर यह वर्णन किया गया है कि हम उन लोगों को जो अल्लाह से भेंट करने के इनकारी हैं, बहुत से चिह्न दिखाएँगे जिनका सम्बन्ध क्षितिजों पर प्रकट होने वाले चिह्नों से भी होगा । और उस आश्चर्यजनक जीवन व्यवस्था से भी होगा जो अल्लाह तआला ने उनके शरीरों के अन्दर रचा है । अत: जिनको क्षितिजों पर और अपने अन्तर में दृष्टि डालने का सौभाग्य मिलेगा, उनकी यही घोषणा होगी कि **हे हमारे रब्ब ! तू ने इस (ब्रह्माण्ड) को व्यर्थ उत्पन्न नहीं किया । तू पवित्र है । अत: हमें आग के अज़ाब से बचा ।**

☆☆☆

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ سِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

حٰمٓ ②

हमीदुन मजीदुन : स्तुति के योग्य और अति गौरवशाली ।2।

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ③

इसका अवतरण अनन्त कृपा करने वाले (और) बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर से है ।3।

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ④

यह एक ऐसी पुस्तक है जिसकी आयतें एक ऐसे क़ुरआन के रूप में है जो अत्यन्त सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है, उन लोगों के लाभार्थ खोल-खोलकर वर्णन कर दी गई हैं जो ज्ञान रखते हैं ।4।

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ⑤

शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी के रूप में । अतः उनमें से अधिकतर ने मुख मोड़ लिया और वे सुनते नहीं ।5।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ⑥

और उन्होंने कहा कि जिन बातों की ओर तू हमें बुलाता है उनसे हमारे दिल पर्दों में हैं । और हमारे कानों में एक बहरापन है और हमारे और तुम्हारे बीच एक ओट है । अतः तू जो चाहे कर, निःसन्देह हम भी कुछ करने वाले हैं ।6।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ⑦

तू कह दे, मैं केवल तुम्हारी भाँति एक मनुष्य हूँ । मेरी ओर वह्इ की जाती है कि तुम्हारा उपास्य केवल एक उपास्य है। अतः उसके समक्ष दृढ़तापूर्वक खड़े हो जाओ और उससे क्षमा याचना करो । और शिर्क करने वालों का सर्वनाश हो ।7।

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾

जो ज़कात नहीं देते और वही हैं जो परलोक का इनकार करने वाले हैं ।8।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٩﴾ ع

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए अक्षय प्रतिफल है ।9। (रुकू $\frac{1}{15}$)

قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾

तू कह दे, क्या तुम उसका इनकार करते हो जिसने धरती को दो युगों में पैदा किया और तुम उसके साझीदार ठहराते हो ? यह वही है समस्त लोकों का रब्ब ।10।

وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَاۤ اَقْوَاتَهَا فِيْۤ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿١١﴾

और उसने उसके ऊँचे क्षेत्रों में पर्वत बनाए और उनमें उसने बरकत रख दी । और उन में उन्हीं से उत्पन्न होने वाले खाने-पीने के सामान चार युगों में इस प्रकार सुव्यवस्थित किये कि वे (सब आवश्यकता पूर्ति की) चाहत रखने वालों के लिए समान हैं ।11।

ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَاۤ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١٢﴾

फिर उसने आकाश की ओर ध्यान दिया और वह (आकाश) धुआँ-धुआँ था । और उस (अल्लाह) ने उससे और धरती से कहा कि तुम दोनों इच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक चले आओ । उन दोनों ने कहा, हम इच्छापूर्वक उपस्थित हैं ।12।

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖۗ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ

अत: उसने उनको दो युगों में सात आकाशों के रूप में विभाजित कर दिया। और प्रत्येक आकाश के नियम उसमें वह्‌इ किये । और हमने संसार के (समीपवर्ती) आकाश को दीपमालाओं और सुरक्षा के सामानों के साथ सुशोभित किया । यह पूर्ण

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿١٣﴾

प्रभुत्व वाले (और) सर्वज्ञ (अल्लाह) का विधान है ।13।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً
مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٤﴾

अतः यदि वे मुख मोड़ लें तो तू कह दे मैं तुम्हें आद और समूद (जाति) को दिये गये अज़ाब के समान अज़ाब से डराता हूँ ।14।

اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ
وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ
قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا
بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٥﴾

जब उनके पास उनके सामने भी और उनसे पूर्ववर्ती युगों में भी रसूल (यह कहते हुए) आते रहे कि अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो । उन्होंने कहा, यदि हमारा रब्ब चाहता तो अवश्य फ़रिश्ते उतार देता । अतः जिस संदेश के साथ तुम भेजे गए हो, निःसन्देह हम उसका इनकार करने वाले हैं ।15।

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ
يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ
مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٦﴾

फिर रहे आद (जाति के लोग), तो उन्होंने धरती में अनुचित रूप से अहंकार किया और कहा, हमसे बढ़कर शक्तिशाली कौन है ? क्या उन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह जिसने उन्हें पैदा किया उनसे बहुत अधिक शक्तिशाली है ? और वे निरन्तर हमारे चिह्नों का इनकार करते रहे ।16।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْٓ
اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ
الْخِزْىِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٧﴾

अतः हमने बड़े अशुभ दिनों में उन पर एक तेज़ आँधी चलाई ताकि हम उन्हें (इस) सांसारिक जीवन में अपमान रूपी अज़ाब चखाएँ । और निःसन्देह परलोक का अज़ाब अधिक अपमानजनक है । और उन्हें सहायता नहीं दी जाएगी ।17।

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى

और जहाँ तक समूद (जाति) का सम्बन्ध है तो हमने उनका भी मार्गदर्शन किया । परन्तु उन्होंने अन्धेपन को पसन्द

عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۸﴾

करते हुए (उसे) हिदायत पर प्राथमिकता दी । अत: उन्हें अपमानजनक अज़ाब के रूप में बिजली ने उस कमाई के कारण पकड़ लिया जो वे किया करते थे ।18।

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۱۹﴾ ع ۲/۱۶

और जो ईमान लाए और तक़्वा से काम लेते रहे, हमने उन्हें मुक्ति प्रदान की ।19। (रुकू $\frac{2}{16}$)

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۲۰﴾

और जिस दिन अल्लाह के शत्रुओं को अग्नि की ओर घेर कर ले जाया जाएगा और वे समूहों में विभाजित किए जाएँगे ।20।

حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۱﴾

यहाँ तक कि जब वे उस (अग्नि) तक पहुँचेंगे उनके कान और उनकी आँखें और उनके चमड़े उनके विरुद्ध गवाही देंगे कि वे कैसे कैसे कर्म किया करते थे ।21।

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ۗ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۲﴾

और वे अपने चमड़ों से कहेंगे, तुमने क्यों हमारे विरुद्ध गवाही दी ? वे उत्तर देंगे कि अल्लाह ने हमें बोलने की शक्ति दी, जिसने प्रत्येक वस्तु को वाक्शक्ति प्रदान की है । और वही है जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।22।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا

और तुम (इस बात से) छिप नहीं सकते थे कि तुम्हारे विरुद्ध तुम्हारी श्रवण-शक्ति गवाही दे । और न तुम्हारी दृष्टि-शक्ति और न तुम्हारे चमड़े (गवाही दें) । परन्तु तुम यह धारणा कर बैठे थे कि अल्लाह को

مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

तुम्हारे बहुत से कर्मों का ज्ञान ही नहीं ।23।*

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِیْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿٢٤﴾

और तुम्हारी वह धारणा जो तुम अपने रब्ब के विषय में किया करते थे, उसने तुम्हें नष्ट कर दिया और तुम हानि उठाने वालों में से हो गए ।24।

فَاِنْ یَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ یَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِیْنَ ﴿٢٥﴾

अत: यदि वे धैर्य धरें तो उनका ठिकाना अग्नि है । और यदि वे सफाई पेश करें तो उनकी सफाई स्वीकृत नहीं की जाएगी ।25।

وَقَیَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَیَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَیْهِمُ الْقَوْلُ فِیْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِیْنَ ﴿٢٦﴾ ع

और हमने उनके लिए कुछ साथी नियुक्त कर दिए । अत: उन्होंने उनके लिए उसे ख़ूब सजा कर प्रस्तुत किया जो उनके सामने था, अथवा (जो) उनसे पहले था । अत: उन पर वही आदेश सत्य सिद्ध हो गया जो उन जातियों पर सिद्ध हुआ था जो उनसे पूर्व जिन्नों और मनुष्यों में से बीत चुकी थीं । नि:सन्देह वे लोग घाटा पाने वालों में से थे ।26।

(रुकू $\frac{3}{17}$)

وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا

और जिन्होंने इनकार किया उन लोगों ने कहा कि इस क़ुरआन पर कान न धरो और उसके पाठ करने के समय

---

* आयत सं. 21 से 23 : इन आयतों में क़यामत के दिन अपराधियों के विरुद्ध जिन गवाहियों का वर्णन किया गया है उनमें सर्वप्रथम आश्चर्यजनक गवाही त्वचा की गवाही है । उस युग में तो त्वचा की गवाही समझ में नहीं आ सकती थी परन्तु वर्तमान युग में प्राणी-विज्ञान के जानकारों ने निश्चित रूप से सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य की बाह्य और आन्तरिक बनावट को सबसे अधिक त्वचा की प्रत्येक कोशिका में अंकित कर दी गई है । यहाँ तक कि यदि करोड़ों वर्ष पहले का कोई प्राणी इस प्रकार धरती में दबा हो कि उसकी त्वचा की कोशिकायें सुरक्षित हों तो उनमें से केवल एक कोशिका से ही बिल्कुल वैसे ही प्राणी की नए सिरे से उत्पत्ति की जा सकती है । आनुवंशिकी इंजीनियरिंग (Genetic Engineering) के द्वारा त्वचा की कोशिकाओं से भेड़ों अथवा मनुष्यों की उत्पत्ति क्रिया भी इसी क़ुरआनी गवाही को प्रमाणित करती है ।

الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝٢٧

शोर किया करो ताकि तुम विजयी हो जाओ ।27।

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٨

अतः हम निःसन्देह उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया कठोर अज़ाब का स्वाद चखाएँगे और उन्हें उनके कुकर्मों का अवश्य प्रतिफल देंगे ।28।

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝٢٩

यह हो कर रहने वाली बात है कि अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिफल अग्नि है। उनके लिए उसमें देर तक रहने का घर है । यह प्रतिफल है उस (बात) का जो हमारी आयतों का जानबूझ कर इनकार किया करते थे ।29।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ۝٣٠

और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! हमें जिन्न और मनुष्य में से वे दोनों दिखा जिन्होंने हमें पथभ्रष्ट किया । इस लिए कि हम उन्हें अपने पैरों के नीचे कुचल डालें ताकि वे घोर अपमानित हो जाएँ ।30।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝٣١

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने कहा कि अल्लाह हमारा रब्ब है, फिर (इस पर) अडिग रहे, उन पर बार-बार फ़रिश्ते (यह कहते हुए) उतरते हैं कि भय न करो और शोक न करो और उस स्वर्ग (के मिलने) से प्रसन्न हो जाओ जिसका तुम्हें वचन दिया जाता है ।31।

نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىٓ

हम इस सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे साथी हैं और परलोक में भी। और उसमें तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा जिसकी तुम्हारे मन इच्छा करते हैं । और उसमें तुम्हारे लिए

اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣٢﴾

वह सब कुछ होगा जो तुम माँगा करते हो ।32।*

نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٣﴾ ع ٧/١٨

यह बहुत क्षमा करने वाले (और) बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर से आतिथ्य स्वरूप है ।33। (रुकू $\frac{4}{18}$)

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

और बात कहने में उससे उत्तम कौन हो सकता है जो अल्लाह की ओर बुलाए और नेक कर्म करे और कहे कि नि:सन्देह मैं पूर्ण आज्ञाकारियों में से हूँ ।34।

وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۗ اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِىْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾

न अच्छाई बुराई के समान हो सकती है और न बुराई अच्छाई के (समान) । ऐसी बात से निवारण कर कि जो सर्वोत्तम हो । तब ऐसा व्यक्ति जिसके और तेरे बीच शत्रुता थी मानो वह सहसा एक प्राण न्योछावर करने वाला मित्र बन जाएगा ।35।

وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٦﴾

और यह दर्जा केवल उन्हीं लोगों को ही प्रदान किया जाता है जिन्होंने धैर्य धारण किया । और यह दर्जा केवल उसे ही प्रदान किया जाता है जो बड़े भाग्य वाला हो ।36।

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٧﴾

और यदि तुझे शैतान की ओर से कोई बहका देने वाली बात पहुँचे तो अल्लाह की शरण माँग । नि:सन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।37।

---

* आयत सं. 31, 32 : इन आयतों में वह्इ के सदा जारी रहने का वर्णन है । जो उन लोगों पर उतारी जाएगी जो अल्लाह तआला के लिए दृढ़ता अपनाएँ और परीक्षाओं में अडिग रहें । जो फ़रिश्ते उन पर उतरेंगे वे उनसे कहेंगे कि हम इस संसार में भी तुम्हारे साथ हैं और अगले संसार में भी तुम्हारे साथ रहेंगे । और तुम्हारी सब शुभ कामनाएँ पूरी की जाएँगी ।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۳۸﴾

और उसके चिह्नों में से रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा हैं । न सूर्य को सजद: करो और न चन्द्रमा को । और अल्लाह को सजद: करो जिसने उन्हें पैदा किया यदि तुम केवल उसी की उपासना करते हो ।38।

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿۳۹﴾ السجدة

अत: यदि वे अहंकार करें तो (जान लें कि) वे लोग जो तेरे रब्ब के समक्ष रहते हैं, रात और दिन उसकी स्तुति करते हैं और वे थकते नहीं ।39।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِىْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْىِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۰﴾

और उसके चिह्नों में से यह भी है कि तू धरती को गिरी हुई अवस्था में देखता है। फिर जब हम उस पर पानी उतारते हैं तो वह (उपज की दृष्टि से) सक्रिय हो जाती है और फूलने लगती है । नि:सन्देह वह जिसने उसे जीवित किया अवश्य मुर्दों को जीवित करने वाला है । नि:सन्देह वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।40।*

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِى النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِىْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ

नि:सन्देह वे लोग जो हमारी आयतों के बारे में कुटिलता अपनाते हैं, हम से छिपे नहीं रहते । अत: क्या वह जो अग्नि में डाला जाएगा बेहतर है अथवा वह जो क़यामत के दिन शांति की अवस्था में आएगा ? तुम जो चाहो

* यहाँ आकाश से पानी बरसने के पश्चात मृत धरती के जीवित होने का वर्णन है । अत: मृत्यु के पश्चात का जीवन भी इसी विषयवस्तु से सम्बन्ध रखता है । पुनरुत्थान तो सब का होगा परन्तु वास्तविक आध्यात्मिक जीवन उनको मिलेगा जो आकाशीय (आध्यात्मिक) जल के उतरने पर उससे लाभ उठाते हैं । अर्थात नबियों को स्वीकार करते और उनकी शिक्षा का पालन करते हैं । आकाशीय जल धरती में भी तो प्रत्येक स्थान पर बरसता है परन्तु शुष्क चट्टानों और बंजर धरतियों को कोई लाभ नहीं पहुँचाता । केवल उस धरती को जीवित करता है जिसमें जीवन शक्ति हो ।

اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤١﴾

करते फिरो, नि:सन्देह जो कुछ भी तुम करते हो वह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।41।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۙ﴿٤٢﴾

नि:सन्देह वे लोग (दण्ड भोग करेंगे) जिन्होंने उपदेश का (तब) इनकार कर दिया जब वह उनके पास आया । हालाँकि वह एक बड़ी प्रभुत्व वाली और सम्माननीय पुस्तक के रूप में था ।42।

لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٣﴾

झूठ उस तक न सामने से पहुँच सकता है और न उसके पीछे से । परम विवेकशील, बहुत स्तुति योग्य (अल्लाह) की ओर से उसका अवतरण हुआ है ।43।

مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٤٤﴾

तुझे केवल वही कहा जाता है जो तुझ से पूर्ववर्ती रसूलों से कहा गया । नि:सन्देह तेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला और पीड़ाजनक अज़ाब देने वाला है ।44।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَ اَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٤٥﴾

قرء حفص بتسهيل الهمزة الثانية

ع ١٢ ١٩

और यदि हमने उसे अजमी (अर्थात अस्पष्ट भाषा युक्त) क़ुरआन बनाया होता तो वे अवश्य कहते कि क्यों न इसकी आयतें खुली-खुली (अर्थात् समझ आने योग्य) बनाई गईं ? क्या अजमी और अरबी (समान हो सकते हैं?) तू कह दे कि वह तो उन लोगों के लिए जो ईमान लाये हैं हिदायत और आरोग्य कारी है । और वे लोग जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में बहरापन है जिसके परिणाम स्वरूप वह उन पर अस्पष्ट है । और यही वे लोग हैं जिन्हें एक दूर के स्थान से बुलाया जाता है ।45। (रुकू $\frac{5}{19}$)

وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ فَاخۡتُلِفَ فِيۡهِ ؕ وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّهُمۡ لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ مُرِيۡبٍ ﴿۴۶﴾

और निःसन्देह हमने मूसा को भी पुस्तक प्रदान की थी। फिर उसमें मतभेद किया गया। और यदि तेरे रब्ब की ओर से आदेश जारी न हो चुका होता तो अवश्य उनके बीच निर्णय कर दिया जाता। और निःसन्देह वे उसके बारे में एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े हैं।46।

مَنۡ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفۡسِهٖ وَمَنۡ اَسَآءَ فَعَلَيۡهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلۡعَبِيۡدِ ﴿۴۷﴾

जो भी नेक कर्म करे तो अपनी ही जान के लिए ऐसा करता है। और जो कोई बुराई करे तो उसी के विरुद्ध करता है। और तेरा रब्ब निरीह भक्तों पर लेश मात्र भी अत्याचार करने वाला नहीं।47।

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٨﴾

निश्चित घड़ी का ज्ञान उसी की ओर लौटाया जाता है । और कई प्रकार के फल अपने आवरणों से नहीं निकलते, न ही कोई मादा गर्भवती होती है और न बच्चा जनती है परन्तु उस (अल्लाह) को ज्ञात होता है । और याद करो उस दिन को जब वह ऊँची आवाज़ में उनसे पूछेगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं ? तो वे कहेंगे, हम तुझे सूचित करते हैं कि हम में से कोई भी (इस बात का) साक्षी नहीं ।48।

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٩﴾

और वह उनसे खो जाएगा जिसे वे उससे पहले पुकारा करते थे । और वे समझ जाएँगे कि उनके लिए भागने का कोई स्थान नहीं है ।49।

لَا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٥٠﴾

मनुष्य भलाई माँगने से थकता नहीं और यदि उसे कष्ट पहुँचे तो बहुत निराश (और) हताश हो जाता है ।50।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥١﴾

और उसे कोई कष्ट पहुँचने के पश्चात यदि हम उसे अपनी कोई कृपा चखाएँ तो वह अवश्य कहता है, यह मेरे लिए है और मैं नहीं समझता कि निश्चित घड़ी आ जाएगी । और यदि मैं अपने रब्ब की ओर लौटाया भी गया तो नि:सन्देह मेरे लिए उसके पास उच्च कोटि की भलाई होगी । अत: उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, हम उन बातों से अवश्य सूचित करेंगे जो वे किया करते थे । और हम उन्हें अवश्य कठोर अज़ाब का स्वाद चखाएँगे ।51।

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ

और जब हम मनुष्य को पुरस्कृत करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है और कन्नी

وَنَا بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ۝٥٢

काटते हुए दूर हट जाता है । और जब उसे कष्ट पहुँचे तो लम्बी चौड़ी दुआ करने वाला बन जाता है ।52।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ۝٥٣

तू कह दे बताओ तो सही कि यदि वह अल्लाह की ओर से हो और फिर भी तुम उसका इनकार कर बैठे हो तो उससे अधिक पथभ्रष्ट और कौन हो सकता है जो परले दर्जे के विरोध करने में लगा हो ? ।53।

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ۗ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٥٤

अतः हम अवश्य उन्हें क्षितिज में भी और उनकी जानों के अन्दर भी अपने चिह्न दिखाएँगे यहाँ तक कि उन पर ख़ूब खुल जाए कि वह सत्य है । क्या तेरे रब्ब के लिए यह पर्याप्त नहीं कि वह प्रत्येक वस्तु पर निरीक्षक है ? ।54।

اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ۗ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ۝٥٥ ع

सावधान ! वे अपने रब्ब की भेंट के बारे में शंका में पड़े हैं । सावधान ! निःसन्देह वह हर चीज़ को घेरे हुए है ।55।

(रुकू $\frac{6}{1}$)

42– सूर: अश–शूरा

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 54 आयतें हैं ।

पिछली सूर: की अन्तिम आयतों में एक तो यह चेतावनी दी गई थी कि जब नुबुव्वत की नेमत उतरती है तो लोग इसको स्वीकार करने से विमुख हो जाते हैं । परन्तु इसके परिणाम स्वरूप जब उनको कष्ट पहुँचता है तो फिर लम्बी चौड़ी दुआएँ करते हैं कि वह कष्ट टल जाए । अत: उनको चेतावनी दी गई है कि अल्लाह तआला उनको अपने वह चिह्न भी दिखाएगा जो क्षितिजों पर प्रकट होते हैं तथा जो प्रकृति विधान के महान द्योतक हैं । और वह चिह्न भी दिखाएगा जो प्रत्येक मनुष्य के भीतर अल्लाह तआला की सत्ता की गवाही देने के लिए विद्यमान हैं ।

इस सूर: में खण्डाक्षरों के पश्चात कहा गया है कि जिस प्रकार इससे पहले वह्इ की गई और उसे पहले लोगों ने अनदेखा कर दिया, इसी प्रकार अब तुझ पर भी वह्इ उतारी जा रही है जो एक महान नेमत है । परन्तु सांसारिक लोग इस आकाशीय नेमत को स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि उनको केवल संसार की नेमतों की लालसा होती है ।

इसके पश्चात आयत संख्या 8 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को समस्त जगत के लिए सतर्ककारी घोषित किया गया है । क्योंकि समस्त बस्तियों की जननी अर्थात मक्का, जिसे अल्लाह ने सब दुनिया का केन्द्र निश्चित किया है । यदि उसे सतर्क किया जाए तो मानो समस्त संसार को सतर्क किया गया । और **वमन हौलहा** (जो उसके चारों ओर हैं) के शब्दों में तो मानो समस्त जगत की बस्तियाँ समाहित हो जाती हैं। फिर **यौमुल जम्इ** (इकट्ठे होने के दिन) का वर्णन भी कर दिया गया कि जिस प्रकार मक्का को समस्त मानव जाति के एकत्रित होने का स्थान बताया गया इसी प्रकार एक एकत्रिकरण परलोक में भी होगा जिसमें समस्त मानव जाति को एकत्रित किया जाएगा ।

अत: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के द्वारा समस्त मानव जाति को एक बनाने का प्रयास किया गया । परन्तु इसके बावजूद अल्लाह तआला जानता है कि दुनिया वाले इस नेमत का अनादर करके पहले की भाँति परस्पर बंटे रहेंगे । क्योंकि अल्लाह तआला किसी को ज़बरदस्ती करके हिदायत पर इकट्ठा नहीं करता । अन्यथा समस्त मानवजाति को एक ही धर्म का अनुयायी बना देता ।

इसके पश्चात पिछले नबियों पर वह्इ के उतरने का यही उद्देश्य वर्णन किया गया कि वे लोगों को एकताबद्ध करें । परन्तु जब भी वे आए दुर्भाग्य से लोग इस नेमत का इनकार करके और भी अधिक फूट का शिकार हो गए । उन के मतभेद का मूल कारण यह वर्णन किया गया है कि वास्तव में वे एक दूसरे से द्वेष रखते थे । अत: प्रश्न यह है कि

उनका इस प्रकार लगातार अवज्ञा करने पर भी क्यों झगड़े का निपटारा नहीं किया जाता? इसका उत्तर यह दिया जा रहा है कि जब तक धरती पर मनुष्यों की परीक्षा का क्रम निश्चित है, उससे पूर्व उनका झगड़ा यहाँ निपटाया नहीं जाएगा। यद्यपि सामयिक रूप से प्रत्येक जाति का झगड़ा उसकी निर्धारित घड़ी के अन्दर तय किया गया। परन्तु उसके पश्चात एक और जाति और फिर एक और जाति संसार में आती चली गई और कुल मिला कर मनुष्य का झगड़ा अन्तिम निश्चित घड़ी के समय तय किया जाएगा।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ताक़ीद की गई है कि इनकार करने वालों के मतभेदों और अवज्ञाओं पर किसी प्रकार असमंजस में पड़ने की आवश्यकता नहीं। जब अल्लाह निर्णय करेगा कि उनको इकट्ठा किया जाए तो अवश्य इकट्ठा कर देगा। इस एकत्रिकरण की एक महान भविष्यवाणी सूर: अल-जुमुअ: में भी है।

इस सूर: की आयत सं. 24 का शीया व्याख्याकार विषयवस्तु की वर्णन शैली से हट कर एक क्रूरता पूर्ण अनुवाद करते हैं। उनके अनुसार मानो हज़रत मुहम्मद सल्ल. को यह कहने का आदेश दिया जा रहा है कि लोगो ! मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता। परन्तु मेरे निकट सम्बन्धियों को इसके बदले में प्रतिफल दो। इस आयत का कदापि यह अर्थ नहीं हो सकता। क्योंकि अपने सगे सम्बन्धियों के लिए प्रतिफल माँगना वास्तव में अपने लिए ही प्रतिफल माँगना होता है। इसका वास्तविक भावार्थ यह है कि मैं तो तुम से अपने लिए और अपने सगे सम्बन्धियों के लिए भी कोई प्रतिफल नहीं माँगता। जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट रूप से कहा कि मेरे सगे सम्बन्धियों और आगे उनकी संतान को कभी दान न दिया जाए। परन्तु तुम अपने सगे-सम्बन्धियों की अनदेखा न करो, उनकी आवश्यकताओं पर व्यय करना तुम्हारा कर्तव्य है।

यह जो विषयवस्तु छेड़ा गया था कि निर्धनों और अभावग्रस्तों पर व्यय करो, विशेषकर अपने सगे-सम्बन्धियों पर। इस पर प्रश्न उठता है कि अल्लाह तआला क्यों उन्हें सीधे-सीधे स्वयं ही प्रदान कर नहीं देता ? इसका उत्तर यह दिया गया है कि जीविका के विस्तृत अथवा संकुचित होने का विषय अन्य कारणों से सम्बन्ध रखता है। कई बार लोग जीविका में बढ़ोत्तरी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं और कई बार जीविका में तंगी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं। जो बढ़ोत्तरी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं उन्हीं का वर्णन पहले हुआ है कि वे जीविका में बढ़ोत्तरी होने पर भी दुर्बलों का, यहाँ तक कि सगे सम्बन्धियों का भी ध्यान नहीं रखते। इसके पश्चात आयत सं. 30 एक आश्चर्यजनक विषय को उजागर कर रही है जिसकी कल्पना भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के किसी मनुष्य को नहीं हो सकती थी। उस युग में तो आकाशों को प्लास्टिक की परतों की भाँति सात परतों पर आधारित समझा जाता था जिसमें चन्द्रमा,

सितारे इस प्रकार जड़े हुए हैं जिस प्रकार कपड़ों में मोती टांके जाते हैं । कौन कह सकता था कि धरती की भाँति वहाँ भी चलने फिरने वाली सृष्टि विद्यमान है । न केवल आकाशों में ऐसी सृष्टि की ठोस रूप से सूचना दी गई बल्कि एकत्रिकरण के अर्थ को यह कह कर आकाश तक पहुँचा दिया गया कि धरती पर बसने वाली सृष्टि और यह आकाश पर बसने वाली सृष्टि एक दिन अवश्य एकत्रित कर दी जाएगी । यह **एकत्रिकरण** भौतिक रूप से होगा अथवा संचार प्रणाली के माध्यम से होगा इसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है । परन्तु आज वैज्ञानिक इस प्रयास में हैं कि किसी प्रकार आकाश पर बसने वाली सृष्टि के साथ उनका कोई संपर्क स्थापित हो जाए । मानो वे यह सोचने पर विवश हो गए हैं कि धरती के अतिरिक्त अन्य आकाशीय पिण्डों पर भी चलने-फिरने वाली सृष्टि विद्यमान होगी ।

इसी सूर: में जिसका शीर्षक **शूरा** (अर्थात विचार-विमर्श) है एक और एकत्रिकरण का भी वर्णन कर दिया गया । अर्थात मुसलमानों का यह सिद्धान्त निरूपित कर दिया गया कि जब कभी महत्वपूर्ण विषयों से उनका सामना हो तो वे एकत्रित हो कर उन पर चिन्तन-मनन किया करें ।

इस सूर: में एक और छोटी सी आयत सं. 41 क़ुरआन की शिक्षा को पहले की समस्त शिक्षाओं पर श्रेष्ठ सिद्ध करती है । कहा जा रहा है कि यदि कोई मनुष्य किसी प्रकार के अत्याचार का शिकार हो तो उसी सीमा तक उसे प्रतिशोध लेने का अधिकार है जिस सीमा तक अत्याचार किया गया हो, न कि प्रतिशोध के आवेग में आकर स्वयं अत्याचारी बन जाए । परन्तु यह अत्योत्तम है कि ऐसी क्षमा से काम ले जिसके परिणाम स्वरूप सुधार हो । कई बार क्षमा के परिणामस्वरूप लोग और भी अधिक बुराई करने में निडर हो जाते हैं । अत: ऐसी क्षमा की अनुमति नहीं है बल्कि इस प्रकार की क्षमा करने का आदेश है जो परिस्थिति के सुधार का कारण बने ।

आयत सं. 52 में **वह्इ** की विभिन्न प्रकारों का वर्णन है । जो यह है कि मनुष्य से अल्लाह तआला केवल वह्इ के माध्यम से ही वार्तालाप करता है । कई बार यह वह्इ ओट के पीछे से होती है अर्थात बोलने वाला दिखाई नहीं देता । परन्तु मनुष्य का मन उसे स्पष्ट रूप से प्राप्त करता है । और कई बार एक फ़रिश्ते के रूप में अल्लाह का दूत उस के समक्ष उतरता है और वह जो वह्इ उस पर करता है वह पूर्णरूप से वैसा ही है जिसका अल्लाह ने उसे आदेश दिया होता है । फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमने भी इसी प्रकार तुझ पर वह्इ उतारी और अपने आदेश से तुझे एक जीवनदायिनी वाणी प्रदान की । इस सूर: की अन्तिम आयतों में एक बार फिर इस विषय को दोहराया गया है कि धरती और आकाश और जो कुछ उनके बीच है, सब अल्लाह ही की मिल्कीयत है और अल्लाह ही की ओर समस्त विषय लौटाए जाने वाले हैं।

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعٌ وَّ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ خَمْسَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

حٰمٓ ②

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

عٓسٓقٓ ③

अलीमुन समीउन क़दीरुन : बहुत जानने वाला, बहुत सुनने वाला, सर्वशक्तिमान ।3।

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ④

इसी प्रकार पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील अल्लाह तेरी ओर वह्इ करता है और उनकी ओर भी करता रहा है जो तुझ से पहले थे ।4।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ⑤

उसी का है जो आसमानों में है और जो धरती में है और वह बहुत ऊँचे पद वाला (और) महान है ।5।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⑥

संभव है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़े और फ़रिश्ते अपने रब्ब की स्तुति के साथ (उसका) गुणगान कर रहे हों । और वे उनके लिए जो धरती में हैं, क्षमा माँग रहे हों । सावधान ! नि:सन्देह अल्लाह ही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।6।*

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ⑦

और उन पर भी अल्लाह ही निरीक्षक है जिन्होंने उसके सिवा मित्र बना रखे हैं । जबकि तू उन पर दारोग़ा नहीं ।7।

* संसार वासियों पर जब आकाश से बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ पड़ती हैं उस समय अल्लाह के पवित्र भक्तों के लिए आकाश के फ़रिश्ते भी क्षमायाचना करते हैं । फ़रिश्ते अपने आप में तो निर्दोष होते हैं । परन्तु अल्लाह के भक्तों के लिये क्षमायाचना करते हैं ।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِى الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِى السَّعِيْرِ ۝٨

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर अरबी क़ुरआन वह्इ किया ताकि तू बस्तियों की जननी (अर्थात मक्का) को और जो उसके चारों ओर हैं सतर्क करे । और तू ऐसे एकत्रिकरण के दिन से सतर्क करे जिसमें कोई संदेह नहीं । एक समूह स्वर्ग में होगा तो एक समूह धधकती हुई अग्नि में ।8।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٩

और यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही समुदाय बना देता । परन्तु वह जिसे चाहता है अपनी दया में प्रविष्ट करता है। और जहाँ तक अत्याचारियों का सम्बन्ध है तो उनके लिए न कोई मित्र है और न कोई सहायक ।9।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِىُّ وَهُوَ يُحْىِ الْمَوْتٰى ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٠ ع

क्या उन्होंने उसके सिवा मित्र बना रखे हैं ? अतः अल्लाह ही है जो सर्वोत्तम मित्र है और वही है जो मुर्दों को जीवित करता है । और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।10। (रुकू $\frac{1}{2}$)

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَىْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّىْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖۗ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝١١

और जिस विषय में भी तुम मतभेद करो तो उसका निर्णय अल्लाह ही के हाथ में है । यह है अल्लाह, जो मेरा रब्ब है । उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर मैं झुकता हूँ ।11।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ

वह आकाशों और धरती को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला है । उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए और चौपायों के भी जोड़े (बनाए) । वह उसमें तुम्हारी बढ़ोत्तरी करता है । उस जैसा कोई नहीं । वह

شَيْءٍ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١٢﴾

बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।12।[*]

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٣﴾

आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के अधीन हैं। वह जीविका को जिसके लिए चाहे वृद्धि करता है और घटा भी देता है। नि:सन्देह वह प्रत्येक विषय का भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है ।13।

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّينِ مَا وَصّٰى بِهِ نُوحًا وَّالَّذِيٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِٓ إِبْرٰهِيمَ وَمُوسٰى وَعِيسٰٓى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۚ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۚ اَللّٰهُ يَجْتَبِيٓ إِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيٓ إِلَيْهِ مَنْ يُّنِيبُ ﴿١٤﴾

उसने तुम्हारे लिए धर्म में से वही आदेश दिये हैं जिनका उसने नूह को भी ताकीद के साथ आदेश दिया था, और जो हमने तेरी ओर वह्इ किया है और जिसका हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को भी ताकीदी आदेश दिया था, वह यही था कि तुम धर्म को दृढ़ता पूर्वक स्थापित करो और इस विषय में कोई मतभेद न करो । मुश्रिकों पर वह बात बहुत भारी है जिसकी ओर तू उन्हें बुलाता है । अल्लाह जिसे चाहता है अपेन लिए चुन लेता है और अपनी ओर उसे हिदायत देता है जो (उसकी ओर) झुकता है ।14।

وَمَا تَفَرَّقُوٓا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ

और जबकि उनके पास ज्ञान आ चुका था उन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध विद्रोह करते हुए मतभेद किया । और यदि तेरे

[*] हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में लोगों को पशुओं के जोड़ा-जोड़ा होने का तो ज्ञान था और वृक्षों में से कुछ के जोड़ा-जोड़ा होने का भी ज्ञान था । परन्तु यह ज्ञान नहीं था कि हर चीज़ को अल्लाह तआला ने जोड़ा-जोड़ा उत्पन्न किया है । इस युग में तो यह प्रमाणित हो चुका है कि पदार्थ का प्रत्येक कण तक जोड़ा-जोड़ा है । दूसरे, इस आयत में मनुष्य को उगाने का वर्णन है, जिससे प्रतीत होता है कि जीवन का आरम्भ वनस्पति से हुआ था और यह बिल्कुल ठीक है । यहाँ अरबी शब्द **ज़रअ** (बढ़ोत्तरी करना) प्रयोग किया गया है । दूसरी आयतों में यह विषय अधिक विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है । उदाहरणतः **हम ने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया।** (सूरः नूह : 18) अर्थात मनुष्य की अभिवृद्धि वनस्पति की भाँति हुई है ।

مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ⑮

रब्ब का यह आदेश निश्चित अवधि तक के लिए जारी न हो चुका होता तो अवश्य उनके बीच निर्णय कर दिया जा चुका होता । और नि:सन्देह वे लोग जिन्हें उनके पश्चात पुस्तक का उत्तराधिकारी बनाया गया, उसके बारे में एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े हुए हैं ।15।

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۭ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۭ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۭ⑯

अत: इसी आधार पर चाहिए कि तू उन्हें (अल्लाह की ओर) बुलाए । और दृढ़ता पूर्वक अपने सिद्धान्त पर डट जा जैसे तुझे आदेश दिया जाता है और उनकी इच्छाओं का अनुसरण न कर । और कह दे कि मैं उस पर ईमान ला चुका हूँ जो पुस्तक ही की बातों में से अल्लाह ने उतारा है । और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्यायपूर्ण (व्यवहार) करूँ । अल्लाह ही हमारा रब्ब और तुम्हारा भी रब्ब है । हमारे लिए हमारे कर्म और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म हैं । हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा (काम) नहीं (आ सकता) । अल्लाह हमें इकट्ठा करेगा और उसी की ओर लौट कर जाना है ।16।

وَالَّذِيْنَ يُحَاۗجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ⑰

और वे लोग जो अल्लाह के बारे में इसके बाद भी झगड़ते हैं कि उसे स्वीकार कर लिया गया है । उनका तर्क उनके रब्ब के समक्ष झूठा है । और उन पर ही प्रकोप होगा और उनके लिए कठोर अज़ाब (निश्चित) है ।17।

ٱللَّهُ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ وَٱلْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ ٱلسَّاعَةَ قَرِيبٌ ﴿١٨﴾	अल्लाह वह है जिसने सत्य के साथ पुस्तक और तुला को उतारा । और तुझे क्या मालूम कि सम्भवत: वह घड़ी निटक हो ।18।
يَسْتَعْجِلُ بِهَا ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۖ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا ٱلْحَقُّ ۗ أَلَآ إِنَّ ٱلَّذِينَ يُمَارُونَ فِى ٱلسَّاعَةِ لَفِى ضَلَٰلٍۭ بَعِيدٍ ﴿١٩﴾	उसके शीघ्र प्रकट होने की मांग वही करते हैं जो उस पर ईमान नहीं लाते । और वे लोग जो ईमान लाए उससे डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है । सावधान ! नि:सन्देह वे जो निश्चित घड़ी के विषय में झगड़ते हैं परले दर्जे की पथभ्रष्टता में पड़े हैं ।19।
ٱللَّهُ لَطِيفٌۢ بِعِبَادِهِۦ يَرْزُقُ مَن يَشَآءُ ۖ وَهُوَ ٱلْقَوِىُّ ٱلْعَزِيزُ ﴿٢٠﴾ ع	अल्लाह अपने भक्तों के साथ नम्रता पूर्ण व्यवहार करने वाला है । वह जिसे चाहता है जीविका प्रदान करता है । और वही बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।20। (रुकू $\frac{2}{3}$)
مَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ ٱلْءَاخِرَةِ نَزِدْ لَهُۥ فِى حَرْثِهِۦ ۖ وَمَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ ٱلدُّنْيَا نُؤْتِهِۦ مِنْهَا وَمَا لَهُۥ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِن نَّصِيبٍ ﴿٢١﴾	जो परलोक की खेती पसन्द करता है, हम उसके लिए उस की खेती में बढ़ोत्तरी कर देते हैं । और जो संसार की खेती चाहता है हम उसी में से उसे इस प्रकार देते हैं कि परलोक में उसके लिए कोई भाग नहीं होगा ।21।
أَمْ لَهُمْ شُرَكَٰٓؤُا۟ شَرَعُوا۟ لَهُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنۢ بِهِ ٱللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ ٱلْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾	क्या उनके समर्थक ऐसे उपास्य हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसे धार्मिक आदेश जारी किए जिनका अल्लाह ने कोई आदेश नहीं दिया था ? और यदि निर्णय की विधि का आदेश मौजूद न होता तो उनके बीच मामला तुरन्त निपटा दिया जाता । और नि:सन्देह अत्याचारियों के लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।22।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾

तू अत्याचारियों को उस कमाई के परिणाम स्वरूप डरता हुआ देखेगा जो उन्होंने कमाया । हालाँकि वह तो उनके साथ होकर रहने वाला है । और जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए वे स्वर्गों के बाग़ों में होंगे । उन्हें उनके रब्ब के समक्ष वह (कुछ) मिलेगा जो वे चाहा करते थे । यही है वह जो महान कृपा है ।23।

ذٰلِكَ الَّذِىْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٤﴾

यह वही है जिसका अल्लाह अपने उन भक्तों को शुभ-समाचार देता रहा है, जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । तू कह दे, मैं इस पर तुमसे कोई प्रतिफल नहीं माँगता, हाँ तुम परस्पर निकट सम्बन्धियों की भाँति प्रेम उत्पन्न करो । और जो किसी (विलुप्त) नेकी को उजागर करता है, हम उसमें उसके लिए और अधिक सुन्दरता उत्पन्न कर देंगे । नि:सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत ही कृतज्ञता स्वीकार करने वाला है ।24।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٥﴾

क्या वे कहते हैं कि उसने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है ? अत: यदि अल्लाह चाहता तो तेरे दिल पर मुहर लगा देता। और मिथ्या को अल्लाह मिटा दिया करता है । और सत्य को अपने वाक्यों से सिद्ध कर देता है । नि:सन्देह वह सीनों की बातों को ख़ूब जानने वाला है ।25।

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ

और वही है जो अपने भक्तों की ओर से प्रायश्चित स्वीकार करता है और

وَيَعْفُوا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۙ﴿۲۶﴾

बुराइयों को क्षमा करता है । और (उसे) जानता है जो तुम करते हो ।26।

وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۲۷﴾

और वह उनकी दुआएँ स्वीकार करता है जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । और अपनी कृपा से उन्हें बढ़ा देता है । जबकि काफ़िरों के लिए तो अत्यन्त कठोर अज़ाब (निश्चित) है ।27।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِى الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۸﴾

और यदि अल्लाह अपने भक्तों के लिए जीविका को विस्तृत कर देता तो वे धरती में अवश्य विद्रोह पूर्ण व्यवहार करते । परन्तु वह एक अनुमान के अनुसार जो चाहता है उतारता है । नि:सन्देह वह अपने भक्तों के बारे में सदा अवगत (और उन पर) गहन दृष्टि रखने वाला है ।28।*

وَهُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۹﴾

और वही है जो वर्षा को उनके निराश हो जाने के पश्चात उतारता है । और अपनी दया को फैला देता है । और वही है जो कार्यसाधक (और) स्तुति योग्य है ।29।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۳۰﴾ ع

और आकाशों और धरती की उत्पत्ति और जो उसने उन दोनों के बीच चलने फिरने वाले प्राणी फैला दिए हैं, (ये) उसके चिह्नों में से हैं । और वह जब चाहेगा उन्हें इकट्ठा करने पर पूरा समर्थ है ।30। (रुकू $\frac{3}{4}$)

* यदि अल्लाह चाहता तो जीविका में बढ़ोत्तरी पैदा कर देता और कोई निर्धन नहीं रहता । परन्तु जीविका का विभाजन कर के कुछ को अधिक और कुछ को कम प्रदान कर दिया । ये दोनों ही स्थितियाँ उनके लिए परीक्षा का कारण हैं । कुछ भक्त जीविका की अधिकता के कारण भटक जाते हैं और कुछ दरिद्रता के कारण । जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि **कादल फ़क्रु ऐं यकू न कुफ़्रन्** अर्थात संभव है कि दरिद्रता कुफ़्र तक पहुँचा दे । अत: इसमें साम्यवादी व्यवस्था की ओर भी संकेत मिलता है कि दरिद्रता अन्तत: अल्लाह तआला के इनकार का कारण बनेगी ।

وَمَآ اَصَابَكُمۡ مِّنۡ مُّصِيۡبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتۡ اَيۡدِيۡكُمۡ وَيَعۡفُوۡا عَنۡ كَثِيۡرٍ ؕ﴿۳۱﴾

और तुम्हें जो विपत्ति पहुँचती है तो वह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई के कारण से है। जबकि वह (अल्लाह) बहुत सी बातों को क्षमा करता है।31।

وَمَآ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ ۚۖ وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿۳۲﴾

और तुम (अल्लाह को) धरती में असमर्थ करने वाले नहीं बन सकते। और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक और सहायक नहीं।32।

وَمِنۡ اٰيٰتِهِ الۡجَوَارِ فِى الۡبَحۡرِ كَالۡاَعۡلَامِ ؕ﴿۳۳﴾

और उसके चिह्नों में से समुद्र में चलने वाली पर्वतों जैसी (ऊँची) नौकाएँ हैं।33।

اِنۡ يَّشَاۡ يُسۡكِنِ الرِّيۡحَ فَيَظۡلَلۡنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهۡرِهٖ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوۡرٍ ۙ﴿۳۴﴾

यदि वह चाहे तो हवा को स्थिर कर दे। फिर वे उस (समुद्र) के तल पर खड़ी की खड़ी रह जाएँ। नि:सन्देह इस बात में प्रत्येक धैर्यवान और बहुत कृतज्ञता अपनाने वाले के लिए चिह्न हैं।34।*

اَوۡ يُوۡبِقۡهُنَّ بِمَا كَسَبُوۡا وَيَعۡفُ عَنۡ كَثِيۡرٍ ﴿۳۵﴾

अथवा उन (नौकाओं) को उन के (सवारों) की कमाई के कारण जो वे करते रहे, विनष्ट कर दे। और बहुत सी बातों को वह क्षमा करता है।35।

وَّيَعۡلَمَ الَّذِيۡنَ يُجَادِلُوۡنَ فِىۡۤ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمۡ مِّنۡ مَّحِيۡصٍ ﴿۳۶﴾

और ताकि वे लोग जान लें जो हमारी आयतों के बारे में झगड़ते हैं (कि) उनके लिए भागने का कोई स्थान नहीं।36।

فَمَاۤ اُوۡتِيۡتُمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ فَمَتَاعُ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ وَمَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى لِلَّذِيۡنَ

अत: जो भी तुम्हें दिया गया है वह सांसारिक जीवन का अस्थायी सामान है। और जो अल्लाह के पास है वह अच्छा

* आयत सं. 33-34 : यहाँ अल्लाह तआला के चिह्नों में से ऐसे बड़े-बड़े समुद्री जहाज़ों का उल्लेख है जो पर्वतों के समान ऊँचे होंगे। स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में तो साधारण पाल वाली नौकाएँ चला करती थीं। इस लिए अवश्य यह आगे के लिए भविष्यवाणी थी जो आज के युग में पूरी हो चुकी है।

اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٧﴾

और उन लोगों के लिए सब से अधिक बाकी रहने वाला है जो ईमान लाए और अपने रब्ब पर भरोसा करते हैं ।37।

وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٨﴾

और जो बड़े पापों और अश्लीलता की बातों से बचते हैं और जब वे क्रोधित हों तो क्षमा करते हैं ।38।

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۠ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٩﴾

और जो अपने रब्ब के आदेश को करते हैं । और नमाज़ को क़ायम करते हैं और उनका मामला परस्पर विचार-विमर्श से तय होता है । और (वे) उसमें से जो हमने उन्हें प्रदान किया, खर्च करते हैं ।39।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٤٠﴾

और वे, जिन पर जब अत्याचार होता है तो वे प्रतिशोध लेते हैं ।40।

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾

और बुराई का बदला, की जाने वाली बुराई के समान होता है । अत: जो कोई क्षमा करे, इस शर्त के साथ कि वह सुधार करने वाला हो तो उसका प्रतिफल अल्लाह पर है । नि:सन्देह वह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता ।41।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٢﴾

और जो कोई अपने ऊपर अत्याचार होने के पश्चात प्रतिशोध लेता है तो यही वे लोग हैं जिन पर कोई आरोप नहीं ।42।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٣﴾

आरोप तो केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं और अनुचित ढंग से धरती में उद्दण्डता पूर्वक काम लेते हैं । यही वे लोग हैं जिनके लिए पीड़ादायक अज़ाब (निश्चित) है ।43।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٤﴾ ع

और जो धैर्य धरे और क्षमा कर दे तो निःसन्देह यह साहस पूर्ण बातों में से है ।44। (रुकू $\frac{4}{5}$)

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٥﴾ ج

और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए इसके बाद कोई सहायक नहीं । और तू अत्याचारियों को देखेगा कि जब वे अज़ाब का सामना करेंगे तो कहेंगे कि क्या (इसके) टाले जाने का कोई रास्ता है ? ।45।

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٦﴾

और तू उन्हें देखेगा कि वे उस (अज़ाब) के सामने अपमान के कारण अत्यन्त दयनीय अवस्था में पेश किये जाएँगे । वे नीची नज़रों से (उसे) देख रहे होंगे । और वे लोग जो ईमान लाए, कहेंगे कि निःसन्देह घाटा पाने वाले तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने परिवार को क़यामत के दिन घाटे में डाला । सावधान ! निःसन्देह अत्याचार करने वाले एक स्थायी अज़ाब में पड़े होंगे ।46।

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٧﴾ ؕ

और उनके कोई मित्र नहीं होंगे जो अल्लाह के सिवा उनकी सहायता करें। और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं रहेगा ।47।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٨﴾

अपने रब्ब के आदेश को स्वीकार करो । इससे पूर्व कि वह दिन आ जाए जिसका टलना अल्लाह की ओर से किसी भी प्रकार सम्भव न होगा । तुम्हारे लिए उस दिन कोई शरण नहीं है । और तुम्हारे लिए इनकार का कोई स्थान नहीं होगा ।48।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٩﴾

अतः यदि वे मुँह फेर लें तो हमने तुझे उनपर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा । संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त तेरा और कोई कर्त्तव्य नहीं । और निःसन्देह जब हम अपनी ओर से मनुष्य को कोई दया चखाते हैं तो वह इससे प्रसन्न हो जाता है । और यदि उन्हें स्वयं अपने हाथों की भेजी हुई (कमाई के कारण) कोई बुराई पहुँचती है तो निःसन्देह मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न सिद्ध होता है ।49।

لِّلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ﴿٥٠﴾

आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है । वह जो चाहता है पैदा करता है । जिसे चाहता है लड़कियाँ प्रदान करता है और जिसे चाहता है लड़के प्रदान करता है ।50।

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥١﴾

या कभी उन्हें परस्पर मिला-जुला देता है । कुछ नर और कुछ मादा । इसी प्रकार जिसे चाहे उसे बांझ बना देता है। निःसन्देह वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है ।51।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾

और किसी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं कि अल्लाह उससे वार्तालाप करे परन्तु वह्इ के माध्यम से । अथवा पर्दे के पीछे से अथवा कोई संदेशवाहक भेजे जो उसके आदेश से उसकी इच्छानुसार वह्इ करे । निःसन्देह वह बहुत ऊँची शान वाला (और) परम विवेकशील है ।52।

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर अपने आदेश से एक जीवनदायिनी वाणी वह्इ किया । तू जानता न था कि पुस्तक क्या

الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۙ﴿۵۳﴾

है और ईमान क्या है परन्तु हम ही ने उसे नूर बनाया जिस के द्वारा हम अपने भक्तों में से जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं । और नि:सन्देह तू सन्मार्ग की ओर चलाता है ।53।

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۴﴾

उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब कुछ है जो आकाशों में है और जो धरती में है । सावधान ! अल्लाह ही की ओर सब मामले लौटते हैं ।54।

(रुकू $\frac{5}{6}$)

43– सूरः अज़–ज़ुख़्रुफ़

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 90 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ ही में अरबी शब्द **उम्म** (अर्थात जननी, मूल) का बार-बार उल्लेख किया गया है । पिछली सूरः में **उम्मुल–क़ुरा** अर्थात बस्तियों की जननी का वर्णन था कि मक्का सब बस्तियों की जननी है और इस सूरः में **उम्मुल–किताब** अर्थात सूरः अल-फ़ातिहः का वर्णन है जो इस परम पवित्र वाणी की जननी (मूल) का स्थान रखती है । अर्थात सारे क़ुरआन के विषयवस्तु इसमें इस प्रकार समेट दिए गए हैं जैसे माँ के गर्भ में इस बात की व्यवस्था होती है कि मनुष्य को जन्म से पूर्व उन समस्त गुणों से सुसज्जित कर दिया जाए जो उसके लिए निश्चित हैं ।

फिर कहा गया कि जब तुम समुद्री पथ से अथवा धरती के पथ से यात्रा करते हो, तो याद कर लिया करो कि अल्लाह ही है जिसने समुद्र में चलने वाली नौकाओं को अथवा धरती में चलने वाले पशुओं को, जिन पर तुम सवारी करते हो, तुम्हारे लिए सेवाधीन कर दिया है । और तुम में से बहुत से ऐसे होंगे जो दुर्घटनाओं का शिकार हो कर उन गंतव्य स्थल को नहीं पा सकेंगे जिनके लिए वे रवाना हुए थे । परन्तु याद रखना कि अन्तिम गंतव्य स्थल वही है जिस में तुम अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने वाले हो ।

इस सूरः की प्रारम्भिक आयतें तो अहले-किताब का वर्णन करती हैं और बाद में आने वाली आयतें मुश्रिकों का । अतएव उसके पश्चात वे नबी जो विशेषकर मुश्रिक जातियों की ओर भेजे गये थे, उनका और उनके इनकार के परिणामों का वर्णन है जो इनकार करने वालों को भुगतने पड़े ।

अल्लाह तआला इससे पूर्व समस्त मानवजाति को एक हाथ पर एकत्रित करने का वर्णन कर रहा है । और कहता है कि यदि हमने ऐसा करना होता तो संसार के मोह में पड़े हुए इन लोगों को एकत्रित करने का केवल एक उपाय यह हो सकता था कि उनके घरों को सोने चाँदी और दूसरी नेमतों से भर देते । परन्तु यह तो केवल एक ऐसी भौतिक सुख-सुविधा का साधन होता जिसकी कोई भी वास्तविकता नहीं है । और केवल संसार की कुछ दिनों की अस्थायी धन-सम्पत्ति उनको मिलती । परन्तु परलोक तो केवल मुत्तक़ियों ही को प्राप्त हुआ करता है ।

इस स्थान पर हिदायत पर लोगों के एकत्रित न होने का एक कारण यह भी वर्णन किया गया कि उनके साथी नास्तिक होते हैं । और उनके प्रभाव से वे भी नास्तिकता का शिकार हो जाते हैं । परन्तु क़यामत के दिन उनमें से प्रत्येक व्यक्ति जिसके बुरे साथी ने उस पर दुष्प्रभाव डाला हो, अपने उस बुरे साथी को सम्बोधित करते हुए इस खेद को

प्रकट करेगा कि काश ! मेरे और तुम्हारे बीच पूर्व और पश्चिम के समान दूरी होती तो मैं इस बुरे अन्त को न पहुँचता ।

इस सूर: में एक और बहुत महत्वपूर्ण आयत हज़रत मसीह अलै. के उतरने की प्रक्रिया पर से पर्दा उठा रही है, जिसमें वर्णन किया गया है कि हज़रत मसीह तो एक उदाहरण स्वरूप थे । मुश्रिकों के सामने जब हज़रत मसीह अलै. का वर्णन किया जाता था तो वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित होकर यह कहते थे कि यदि ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा किसी अन्य) को ही उपास्य के रूप में स्वीकार करना है तो दूसरी जाति के ग़ैरुल्लाह को स्वीकार करने के बदले अपनी जाति के ही ग़ैरुल्लाह को क्यों स्वीकार नहीं कर लेते । वे इस बात को नहीं समझते थे कि मसीह अल्लाह नहीं थे बल्कि वह अल्लाह के एक पुरस्कृत भक्त थे । और उनके लिए केवल एक उदाहरण स्वरूप थे, जिनसे बहुत सारी शिक्षा प्राप्त की जा सकती थी ।

फिर इसी सूर: में यह भविष्यवाणी कर दी गई है कि भविष्य में भी उदाहरण के रूप में मसीह उतरेगा जो इस बात का चिह्न होगा कि महान क्रान्ति की घड़ी आ गई है ।

इस सूर: में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस महानता का वर्णन कर दिया गया है कि आप सल्ल. अल्लाह तआला की सबसे बढ़ कर उपासना करने वाले हैं । यदि वास्तव में अल्लाह तआला का कोई पुत्र होता तो आप सल्ल. कदापि उसकी उपासना करने से विमुख न होते । अत: आप सल्ल. का अल्लाह तआला के किसी काल्पनिक पुत्र की उपासना से इनकार करना स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित करता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस पूर्ण विश्वास पर अटल थे कि अल्लाह तआला का कोई पुत्र नहीं है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّ سَبْعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝١	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
حٰمٓ ۝٢	**हमीदुन मजीदुन** : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।
وَالۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ۝٣	खोल कर वर्णन करने वाली पुस्तक की क़सम ।3।
اِنَّا جَعَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ۝٤	निःसन्देह हमने इसे सरल और शुद्ध भाषा सम्पन्न क़ुरआन बनाया ताकि तुम समझो ।4।
وَاِنَّهٗ فِيۡۤ اُمِّ الۡكِتٰبِ لَدَيۡنَا لَعَلِيٌّ حَكِيۡمٌ ۝٥	और निःसन्देह यह (क़ुरआन) मूल पुस्तक में है (और) हमारे निकट अवश्य बहुत ऊँची शान वाला (और) तत्त्वज्ञान पूर्ण है ।5।
اَفَنَضۡرِبُ عَنۡكُمُ الذِّكۡرَ صَفۡحًا اَنۡ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا مُّسۡرِفِيۡنَ ۝٦	क्या हम तुम्हें उपदेश देने से केवल इस लिए रुक जाएँगे कि तुम सीमा से बढ़े हुए लोग हो ? ।6।
وَكَمۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ نَّبِيٍّ فِي الۡاَوَّلِيۡنَ ۝٧	और कितने ही नबी हमने पहले लोगों में भेजे थे ।7।
وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝٨	और जो भी नबी उनके पास आता था, उसके साथ वे उपहास किया करते थे ।8।
فَاَهۡلَكۡنَاۤ اَشَدَّ مِنۡهُمۡ بَطۡشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝٩	अतः हमने उनसे भी अधिक पकड़ रखने वालों को नष्ट कर दिया । और पहलों का उदाहरण बीत चुका है ।9।
وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ مَّنۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ	और तू यदि उनसे पूछे कि कौन है जिसने आकाशों और धरती को पैदा

وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۙ﴿١٠﴾

किया ? तो वे अवश्य कहेंगे कि उन्हें पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) सर्वज्ञ (अल्लाह) ने पैदा किया है ।10।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۚ﴿١١﴾

जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें रास्ते बनाए ताकि तुम हिदायत पाओ ।11।

وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٢﴾

और वह जिसने अनुमान के अनुसार आकाश से जल उतारा । फिर उससे हमने एक मृत धरती को जीवित कर दिया । उसी प्रकार तुम निकाले जाओगे ।12।

وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۙ﴿١٣﴾

और वह जिसने प्रत्येक प्रकार के जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए नाना प्रकार की नौकाएँ और चौपाये बनाए जिन पर तुम सवारी करते हो ।13।

لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۙ﴿١٤﴾

ताकि तुम उनकी पीठों पर जम कर बैठ सको । फिर जब तुम उन पर भली-भाँति बैठ जाओ तो अपने रब्ब की नेमत का बखान करो और कहो, पवित्र है वह जिसने इसे हमारे लिए सेवाधीन किया अन्यथा हम इसे अधीन करने का सामर्थ्य नहीं रखते थे ।14।

وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٥﴾

और निःसन्देह हम अपने रब्ब की ओर लौट कर जाने वाले हैं ।15।

وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ۧ﴿١٦﴾ ع

और उन्होंने उसके भक्तों में से कुछ को उसका अंश घोषित कर दिया । निःसन्देह मनुष्य खुला-खुला कृतघ्न है ।16। (रुकू $\frac{1}{7}$)

اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٧﴾

क्या वह जो पैदा करता है उसमें से उसने बस पुत्रियाँ ही अपना लीं हैं और तुम्हें पुत्रों के लिए चुन लिया ? ।17।

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿١٨﴾

और जब उनमें से किसी को इस का शुभ-समाचार दिया जाता है जिसे वह रहमान के सम्बन्ध में एक श्रेष्ठ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करता है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है जबकि वह गहरे शोक को सहन करने का प्रयास कर रहा होता है ।18।

اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿١٩﴾

और क्या वह जो आभूषणों में पाली जाती हो और वह झगड़े के समय स्पष्ट बात (तक) न कर सके (तुम उसे अल्लाह के भाग में डालते हो?) ।19।

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْئَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

और उन्होंने फ़रिश्तों को जो रहमान के भक्त हैं स्त्रियाँ (अर्थात् मूर्तियाँ) बना रखा है । क्या वे उनकी उत्पत्ति पर गवाह हैं ? नि:सन्देह उनकी गवाही लिखी जाएगी और वे पूछे जाएँगे ।20।

وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢١﴾

और वे कहते हैं यदि रहमान चाहता तो हम उनकी पूजा न करते । उन्हें इस बात का कुछ भी ज्ञान नहीं, वे तो केवल अटकल-पच्चू से काम लेते हैं ।21।

اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢٢﴾

क्या हमने इससे पहले उन्हें कोई पुस्तक दी थी जिससे वे दृढ़ता पूर्वक चिमटे हुए हैं ? ।22।

بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾

बल्कि वे तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को एक मत पर पाया और हम नि:सन्देह उन्हीं के पदचिह्नों पर (चल कर) हिदायत पाने वाले हैं ।23।

وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِىْ قَرْيَةٍ

और इसी प्रकार हमने तुझसे पहले जब भी किसी बस्ती में कोई सतर्ककारी

مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾

भेजा तो उसके संपन्न लोगों ने कहा कि नि:सन्देह हमने अपने पूर्वजों को एक विशेष मत पर पाया । और नि:सन्देह हम उन्हीं के पदचिह्नों पर चलने वाले हैं ।24।

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۗ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٥﴾

उसने कहा, क्या तब भी कि मैं उससे बेहतर चीज़ ले आऊँ जिस पर तुमने अपने पूर्वजों को पाया ? उन्होंने कहा, नि:सन्देह हम उन बातों का इनकार करते हैं जिनके साथ तुम भेजे गए हो ।25।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٦﴾ ع

तब हमने उनसे प्रतिशोध लिया । अत: देख कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम निकला ? ।26। (रुकू $\frac{2}{8}$)

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٧﴾ ۙ

और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पिता से और अपनी जाति से कहा कि नि:सन्देह मैं उससे बहुत विरक्त हूँ जिसकी तुम उपासना करते हो ।27।

اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٨﴾

परन्तु वह जिसने मुझे पैदा किया, अत: वही है जो मुझे अवश्य हिदायत देगा ।28।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٩﴾

और उसने इस (बात) को उसके बाद आने वाली पीढ़ियों में एक बाक़ी रहने वाला वृहद् चिह्न बना दिया ताकि वे लौट आयें ।29।

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٠﴾

वास्तविकता यह है कि मैंने उनको और उनके पूर्वजों को अस्थायी सुविधाएँ दीं, यहाँ तक कि उनके पास सत्य और खोल-खोल कर वर्णन करने वाला रसूल आ गया ।30।

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ

और जब अन्तत: उनके पास सत्य आ गया तो उन्होंने कहा, यह जादू है और

وَّ اِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣١﴾

नि:सन्देह हम इसका इनकार करने वाले हैं ।31।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣٢﴾

और उन्होंने कहा, क्यों न यह क़ुरआन दोनों प्रसिद्ध बस्तियों के किसी बड़े व्यक्ति पर उतारा गया ? ।32।

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٣﴾

क्या वे हैं जो तेरे रब्ब की कृपा को विभाजित करेंगे ? हम ही हैं जिस ने उनके रोज़गार के सामान उनके बीच इस सांसारिक जीवन में बाँटे हैं । और उनमें से कुछ लोगों को कुछ दूसरों पर हमने पद के अनुसार श्रेष्ठता प्रदान की है ताकि उनमें से कुछ, कुछ को वश में कर लें । और तेरे रब्ब की कृपा उससे उत्तम है जो वे इकट्ठा करते हैं ।33।

وَلَوْلَاۤ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّ مَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ۙ

और यदि यह सम्भावना न होती कि सब लोग एक ही मत के हो जाएँगे तो हम अवश्य उनके लिए, जो रहमान (अल्लाह) का इनकार करते हैं, उनके घरों की छतों को चाँदी का बना देते और (इसी प्रकार) सीढ़ियों को भी, जिन पर वे चढ़ते हैं ।34।

وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّ سُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٥﴾ۙ

और उनके घरों के द्वारों को भी और उन आसनों को भी (चाँदी के बना देते) जिन पर वे टेक लगाते हैं ।35।

وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٦﴾ع

ع ٣/٩

और ठाठ-बाट प्रदान करते । परन्तु यह सब कुछ तो निश्चित रूप से केवल सांसारिक जीवन का सामान है । और परलोक तेरे रब्ब के निकट मुत्तक़ियों के लिए होगा ।36। (रुकू $\frac{3}{9}$)

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ

और जो रहमान के स्मरण से विमुख हो हम उसके लिए एक शैतान नियुक्त कर

شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ۝٣٧

देते हैं । अतः वह उसका साथी बन जाता है ।37।

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٣٨

और निःसन्देह वे उन्हें सन्मार्ग से भटका देते हैं जबकि वे समझ रहे होते हैं कि वे हिदायत पा चुके हैं ।38।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ۝٣٩

यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो (अपने साथी को सम्बोधित करते हुए) कहेगा काश ! मेरे और तेरे बीच पूर्व और पश्चिम के समान दूरी होती । अतः वह क्या ही बुरा साथी सिद्ध होगा ।39।

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝٤٠

और आज तुम्हें जबकि तुम अत्याचार कर चुके हो, यह बात कुछ लाभ नहीं देगी । क्योंकि तुम सब अज़ाब में साझीदार हो ।40।

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٤١

अतः क्या तू बहरों को सुना सकता है अथवा अंधों को राह दिखा सकता है और उसे भी जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा हो ? ।41।

فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۙ۝٤٢

अतः यदि हम तुझे ले भी जाएँ तो उनसे हम अवश्य प्रतिशोध लेने वाले हैं ।42।

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ۝٤٣

अथवा तुझे अवश्य वह दिखा देंगे जिसका हम उनसे वादा कर चुके हैं । अतः निःसन्देह हम उन पर पूर्णरूप से सामर्थ्य रखते हैं ।43।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٤٤

अतः जो कुछ तेरी ओर वह्इ किया जाता है उसे दृढता पूर्वक पकड़ ले । निःसन्देह तू सीधे रास्ते पर है ।44।

وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ

और निश्चित रूप से यह तेरे लिए और तेरी जाति के लिए भी एक महान

تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٥﴾

अनुस्मरण है और तुम अवश्य पूछे जाओगे ।45।

وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٦﴾ ع

और उनसे पूछ जिन्हें हमने तुझसे पहले अपने रसूल बनाकर भेजा कि क्या हमने रहमान के सिवा कोई उपास्य बनाए थे जिनकी उपासना की जाती थी ? ।46।

(रुकू $\frac{4}{10}$)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّیْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٤٧﴾

और नि:सन्देह हमने मूसा को फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर अपने चिह्नों के साथ भेजा । अत: उसने कहा, नि:सन्देह मैं समस्त लोकों के रब्ब का रसूल हूँ ।47।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٨﴾

अत: जब वह उनके पास हमारे चिह्नों को लेकर आया तो वे झट-पट उनकी खिल्ली उड़ाने लगे ।48।

وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِیَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۫ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٩﴾

और हम उन्हें जो भी (स्पष्ट) चिह्न दिखाते थे वह अपने जैसे पहले चिह्न से बढ़ कर होता था । और हमने उन्हें अज़ाब के द्वारा पकड़ा ताकि वे लौट आयें ।49।

وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٥٠﴾

और उन्होंने कहा, हे जादूगर ! हमारे लिए अपने रब्ब से वह माँग जिसका उसने तुझ से वादा कर रखा है । नि:सन्देह हम हिदायत पाने वाले बन जाएँगे ।50।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿٥١﴾

अत: जब हमने उनसे अज़ाब को दूर कर दिया तो तुरन्त वे वचन-भंग करने लगे ।51।

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِیْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِیْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ

और फ़िरऔन ने अपनी जाति में घोषणा की (और) कहा, हे मेरी जाति ! क्या मिस्र देश और ये सब नहरें भी जो मेरे

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِىْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٢﴾

अधीन बहती हैं मेरी नहीं ? अतः क्या तुम ज्ञान प्राप्त नहीं करते ? ।52।

اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿٥٣﴾

वास्तविकता यह है कि मैं उस व्यक्ति से बेहतर हूँ जो बिल्कुल तुच्छ है । और विचार की अभिव्यक्ति का भी सामर्थ्य नहीं रखता ।53।

فَلَوْلَاۤ اُلْقِىَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٤﴾

अतः क्यों उस पर सोने के कंगन नहीं उतारे गए अथवा उसके साथ समूहबद्ध रूप में फ़रिश्ते नहीं आए ? ।54।

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٥﴾

अतः उसने अपनी जाति को कोई महत्व नहीं दिया और वे उसका आज्ञापालन करने लगे । निःसन्देह वे दुराचारी लोग थे ।55।

فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ ﴿٥٦﴾

अतः जब उन्होंने हमें क्रोध दिलाया हमने उनसे प्रतिशोध लिया । और उन सबको (दल-बल सहित) डुबो दिया ।56।

فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ ع

अतः हमने उन्हें अतीत की कहानी और बाद में आने वालों के लिए शिक्षा का साधन बना दिया ।57। (रुकू $\frac{5}{11}$)

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٨﴾

और जब मरियम के पुत्र को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है तो सहसा तेरी जाति इस पर शोर मचाने लगती है ।58।

وَقَالُوْۤا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۗ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

और वे कहते हैं : क्या हमारे उपास्य उत्तम हैं अथवा वह ? वे तुझ से यह बात केवल झगड़े के उद्देश्य से करते हैं बल्कि वे अत्यन्त झगड़ालू लोग हैं ।59।

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ

वह तो केवल एक भक्त था जिस को हमने पुरस्कृत किया और उसे बनी-

مَثَلًا لِّبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ ﴿۶۰﴾

इस्राईल के लिए एक (अनुकरणीय) आदर्श बना दिया ।60।

وَ لَوۡ نَشَآءُ لَجَعَلۡنَا مِنۡكُمۡ مَّلٰٓئِكَةً فِی الۡاَرۡضِ یَخۡلُفُوۡنَ ﴿۶۱﴾

और यदि हम चाहते तो तुम्हीं में से फ़रिश्ते बनाते जो धरती में प्रतिनिधित्व करते ।61।

وَ اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا وَ اتَّبِعُوۡنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِیۡمٌ ﴿۶۲﴾

और वह तो नि:सन्देह क्रांति की घड़ी की पहचान होगा । अत: तुम उस (घड़ी) पर कदापि कोई संदेह न करो और मेरा अनुसरण करो । यह सीधा मार्ग है ।62।

وَ لَا یَصُدَّنَّكُمُ الشَّیۡطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِیۡنٌ ﴿۶۳﴾

और शैतान तुम्हें कदापि न रोक सके । नि:सन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ।63।

وَ لَمَّا جَآءَ عِیۡسٰی بِالۡبَیِّنٰتِ قَالَ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِالۡحِكۡمَةِ وَ لِاُبَیِّنَ لَكُمۡ بَعۡضَ الَّذِیۡ تَخۡتَلِفُوۡنَ فِیۡهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیۡعُوۡنِ ﴿۶۴﴾

और जब ईसा खुले-खुले चिह्नों के साथ आ गया तो उसने कहा, नि:सन्देह मैं तुम्हारे पास तत्त्वज्ञान लाया हूँ । और इस कारण आया हूँ कि तुम्हारे सामने कुछ वह बातें खोल कर वर्णन करूँ जिनमें तुम मतभेद करते हो । अत: अल्लाह का तक़्वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।64।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّیۡ وَ رَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِیۡمٌ ﴿۶۵﴾

नि:सन्देह अल्लाह ही है जो मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । अत: उसकी उपासना करो । यह सीधा मार्ग है ।65।

فَاخۡتَلَفَ الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَیۡنِهِمۡ ۚ فَوَیۡلٌ لِّلَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡ عَذَابِ یَوۡمٍ اَلِیۡمٍ ﴿۶۶﴾

फिर उनके अंदर ही से समूहों ने मतभेद किया । अत: जिन लोगों ने अत्याचार किया कष्टदायक दिन के अज़ाब स्वरूप उनका सर्वनाश हो ।66।

هَلۡ یَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِیَهُمۡ بَغۡتَةً وَّ هُمۡ لَا یَشۡعُرُوۡنَ ﴿۶۷﴾

क्या वे उसके सिवा कुछ और की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि (क़यामत की) घड़ी उनके पास सहसा इस प्रकार आ जाए कि उन्हें पता भी न चले ।67।

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٨﴾ ع

उस दिन कई घनिष्ट मित्र एक दूसरे के शत्रु हो जाएँगे सिवाए मुत्तक़ियों के ।68। (रुकू $\frac{6}{12}$)

يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾

(अल्लाह कहेगा) हे मेरे भक्तो ! आज तुम पर न कोई भय होगा और न तुम शोकग्रस्त होगे ।69।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٧٠﴾

वे लोग जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और आज्ञाकारी बने रहे ।70।

اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧١﴾

तुम और तुम्हारे साथी इस अवस्था में स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ कि तुम्हें बहुत प्रसन्न किया जाएगा ।71।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧٢﴾

उन पर सोने के थालों और प्यालों के दौर चलाए जाएँगे । और उसमें उनके लिए वह सब कुछ होगा जिसकी उनके मन इच्छा करेंगे और जिस से आँखें तृप्त होंगी। और तुम उसमें सदा रहने वाले हो ।72।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٣﴾

और यह वह स्वर्ग है जिसके तुम उन कर्मों के कारण जो तुम करते रहे हो, उत्तराधिकारी बनाए गए हो ।73।

لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٤﴾

तुम्हारे लिए उसमें प्रचुर मात्रा में फल होंगे, जिनमें से तुम खाओगे ।74।

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿٧٥﴾

नि:सन्देह अपराध करने वाले नरक के अज़ाब में लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।75।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٦﴾

वह (अज़ाब) उनसे कम नहीं किया जाएगा और वे उसमें निराश होकर पड़े होंगे ।76।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٧﴾

और हमने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं ही अत्याचार करने वाले थे ।77।

وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ۝٧٨

और वे पुकारेंगे कि हे मालिक ! तेरा रब्ब हमें मृत्यु ही दे दे । वह कहेगा, तुम निश्चित रूप से यहीं ठहरने वाले हो ।78।

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝٧٩

निःसन्देह हम तुम्हारे पास सत्य के साथ आए थे परन्तु तुम में से अधिकतर सत्य को नापसन्द करने वाले थे ।79।

اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ۝٨٠

क्या उन्होंने कुछ करने का निर्णय कर लिया है ? तो अवश्य हमने भी कुछ करने का निर्णय कर लिया है ।80।

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ۖ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٨١

क्या वे यह धारणा करते हैं कि हम उनके भेद और गुप्त परामर्शों को नहीं सुनते ? क्यों नहीं ! हमारे दूत उनके पास ही लिख भी रहे होते हैं ।81।

قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ۝٨٢

तू कह दे कि यदि रहमान का कोई पुत्र होता तो मैं (उसकी) उपासना करने वालों में सबसे पहला होता ।82।

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٨٣

पवित्र है आकाशों और धरती का रब्ब अर्श का रब्ब उससे जो वे वर्णन करते हैं ।83।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝٨٤

अतः उन्हें छोड़ दे कि वे व्यर्थ बातें करते और खेलते रहें । यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लें जिसका उनसे वादा किया जाता है ।84।

وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ۖ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝٨٥

और वही है जो आकाश में उपास्य है और धरती में भी उपास्य है । और वही परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।85।

وَتَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

और एक ही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसके लिए आकाशों और धरती का

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٨٦

और जो कुछ उनके मध्य है, साम्राज्य है। और उसके पास उस विशेष घड़ी का ज्ञान है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।86।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝٨٧

और वे लोग, जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं, सिफ़ारिश का कोई अधिकार नहीं रखते, सिवाए उन लोगों के जो सच्ची बात की गवाही देते हैं और वे ज्ञान रखते हैं ।87।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝٨٨

और यदि तू उनसे पूछे कि उन्हें किसने पैदा किया है ? तो वे अवश्य कहेंगे अल्लाह ने । फिर वे किस ओर बहकाये जाते हैं ? ।88।

وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٨٩

وقف لازم

और उसके यह कहने के समय को याद करो कि हे मेरे रब्ब ! ये लोग कदापि ईमान नहीं लाएँगे ।89।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝٩٠

ع

अतः तू उनको क्षमा कर और कह : ‘‘सलाम’’ । अतः शीघ्र ही वे जान लेंगे ।90। (रुकू $\frac{7}{13}$)

44- सूरः अद-दुख़ान

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 60 आयतें हैं।

सूरः अद्-दुख़ान का आरम्भिक विषयवस्तु पवित्र क़ुरआन की एक छोटी सी सूरः **अल-क़द्र** के विषयवस्तु की ओर संकेत कर रहा है। जो इन आरम्भिक आयतों से स्पष्ट है, कि हमने इस पुस्तक को एक ऐसी अंधेरी रात में उतारा है जो बहुत मगंलमयी थी। क्योंकि इस अंधकार के पश्चात सदा के आलोक फूटने वाले थे। उस रात प्रत्येक तत्त्वपूर्ण विषय का निर्णय किया जाएगा।

पिछली सूरः के अन्त पर यह विषय वर्णन किया गया था कि विरोधियों को व्यर्थ बातों और खेल-तमाशा में भटकने दे और उनसे विमुख हो जा। वह समय निकट है जब स्पष्ट रूप से सत्य और असत्य में पार्थक्य कर दिया जाएगा। अतः इस सूरः की आरम्भिक आयतों में इस बात का उल्लेख कर दिया गया है।

इस सूरः का नाम **दुख़ान** (अर्थात् धुआँ) रखने का एक बड़ा कारण यह है कि जिन अंधकारों के वे शिकार हैं उनके पश्चात तो कृपा का कोई सवेरा नहीं होगा अपितु वे अंधेरे उनके लिए धुएँ की भाँति उनके अज़ाब को बढ़ाने का कारण बनेंगे। यहाँ धुआँ का तात्पर्य आणविक धुएँ की ओर भी संकेत हो सकता है, जिस की छाया के नीचे कोई चीज़ भी सुरक्षित नहीं रह सकती बल्कि विभिन्न प्रकार के विनाशों का शिकार हो जाती है।

अतएव आधुनिक वैज्ञानिकों की ओर से यह चेतावनी है कि आणविक धुएँ की छाया के नीचे प्रत्येक प्रकार का जीवन मिट जाएगा। यहाँ तक कि धरती के अन्दर दबे हुए कीटाणु भी नष्ट हो जाएँगे। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जब ऐसा होगा तब ये सब अल्लाह तआला से गुहार लगाएँगे कि हे अल्लाह ! इस अत्यन्त पीड़ादायक अज़ाब को हमसे टाल दे। यहाँ यह भविष्यवाणी भी कर दी कि इस प्रकार का अज़ाब ठहर-ठहर कर आएगा। अर्थात् एक विश्वयुद्ध की विनाशलीलाओं के पश्चात् कुछ समय ढील दी जाएगी, उसके पश्चात फिर अगला विश्वयुद्ध नए विनाशों को लेकर आएगा।

सूरः अद्-दुख़ान के सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बता दिया गया था कि इसकी भविष्यवाणियों के प्रकटन का समय **दज्जाल** के प्रकट होने से सम्बन्ध रखता है।

☆☆☆

سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

حٰمٓ ۝٢

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٣

क़सम है उस पुस्तक की जो खुली और सुस्पष्ट है ।3।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝٤

नि:सन्देह हमने इसे एक बड़ी मंगलमयी रात्रि में उतारा है । हम हर हाल में सतर्क करने वाले थे ।4।

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۝٥

इस (रात्रि) में प्रत्येक तत्त्वपूर्ण विषय का निर्णय किया जाता है ।5।

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝٦

एक ऐसे विषय के रूप में जो हमारी ओर से है । नि:सन्देह हम ही रसूल भेजने वाले हैं ।6।

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٧

कृपा स्वरूप तेरे रब्ब की ओर से । नि:सन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।7।

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٨

(जो) आकाशों और धरती के रब्ब की ओर से और (जो उसका भी रब्ब है) जो उन दोनों के बीच है । यदि तुम विश्वास करने वाले हो ।8।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٩

उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । वही जीवित करता है और मारता भी है । (वह) तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब्ब है ।9।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝١٠

वास्तविकता यह है कि वे तो एक शंका में पड़े खेल में लगे हुए हैं ।10।

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ﴿١١﴾

अतः प्रतीक्षा कर उस दिन की जब आकाश एक स्पष्ट धुआँ लाएगा ।11।

يَّغْشَى النَّاسَ ۖ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

जो लोगों को ढाँप लेगा । यह एक बहुत पीड़ाजनक अज़ाब होगा ।12।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾

हे हमारे रब्ब ! हमसे यह अज़ाब दूर कर दे। अवश्य हम ईमान ले आएँगे ।13।

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٤﴾

उनके लिए उपदेश प्राप्ति अब कहाँ संभव ? जबकि उनके पास एक सुस्पष्ट तर्कों वाला रसूल आ चुका था ।14।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ﴿١٥﴾

फिर भी वे उससे विमुख हुए और कहा, (यह तो) सिखाया पढ़ाया हुआ (बल्कि) पागल है ।15।

اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ﴿١٦﴾

निःसन्देह हम अज़ाब को थोड़ी देर के लिए दूर कर देंगे । तुम अवश्य (इन्हीं बातों को) दोहराने वाले हो ।16।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿١٧﴾

जिस दिन हम बड़ी कठोरता पूर्वक (तुम पर) हाथ डालेंगे । निश्चित रूप से हम प्रतिशोध लेने वाले हैं ।17।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾

और निःसन्देह हम उनसे पहले फ़िरऔन की जाति की भी परीक्षा ले चुके हैं जब उनके पास एक सम्मानित रसूल आया था ।18।

اَنْ اَدُّوْا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۖ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٩﴾

(यह कहते हुए) कि अल्लाह के भक्तों को मेरे हवाले कर दो । निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय रसूल हूँ ।19।

وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٠﴾

और अल्लाह के विरुद्ध उद्दण्डता न करो । निःसन्देह मैं तुम्हारे पास एक सुस्पष्ट (और) प्रवल तर्क लाने वाला हूँ ।20।

وَ اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَ رَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢١﴾

और निःसन्देह मैं अपने रब्ब और तुम्हारे रब्ब की (इस बात से) शरण में आता हूँ कि तुम मुझे संगसार न कर दो ।21।

وَ اِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِیْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢٢﴾

और यदि तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझे अकेला छोड़ दो ।22।

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ الثلثة

अतः उसने अपने रब्ब को पुकारा कि ये अपराधी लोग हैं ।23।

فَاَسْرِ بِعِبَادِیْ لَیْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٤﴾

अतः (अल्लाह ने कहा) तू मेरे भक्तों को साथ लेकर रात्रि के समय प्रस्थान कर । अवश्य तुम्हारा पीछा किया जाएगा ।24।

وَ اتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٥﴾

और समुद्र को (इस अवस्था में) छोड़ दे कि वह शांत हो । निःसन्देह वह एक ऐसी सेना है जो डुबो दी जाएगी ।25।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿٢٦﴾

कितने ही बाग़ान और जलस्रोत हैं जो वे (पीछे) छोड़े ।26।

وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِیْمٍ ﴿٢٧﴾

और खेतियाँ और प्रतिष्ठा युक्त स्थान भी ।27।

وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِیْهَا فٰكِهِیْنَ ﴿٢٨﴾

और (ऐसी) सुख-समृद्धि जिसमें वे मज़े उड़ाया करते थे ।28।

كَذٰلِكَ ۫ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِیْنَ ﴿٢٩﴾

इसी प्रकार हुआ । और हमने एक दूसरी जाति को इस (नेमत) का उत्तराधिकारी बना दिया ।29।

فَمَا بَكَتْ عَلَیْهِمُ السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا مُنْظَرِیْنَ ﴿٣٠﴾ ع

अतः उन पर आकाश और धरती नहीं रोए और उन्हें ढील नहीं दी गई ।30।

(रुकू $\frac{1}{14}$)

وَ لَقَدْ نَجَّیْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِیْنِ ﴿٣١﴾

और निःसन्देह हमने बनी-इस्राईल को एक अपमानजनक अज़ाब से मुक्ति प्रदान की ।31।

مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٣٢

जो फ़िरऔन की ओर से था। नि:सन्देह वह सीमा का उल्लघंन करने वालों में से एक बहुत उद्दण्डी व्यक्ति था।32।

وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٣

और नि:सन्देह हमने उनको किसी ज्ञान के कारण समस्त जगत पर वरीयता प्रदान की थी।33।

وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ۝٣٤

और हमने उन्हें कुछ चिह्न प्रदान किए, जिनमें खुली-खुली परीक्षा थी।34।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۝٣٥

नि:सन्देह ये लोग कहते हैं :।35।

اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۝٣٦

हमारी इस पहली मृत्यु के अतिरिक्त और कोई मृत्यु नहीं और हम उठाए जाने वाले नहीं।36।

فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٣٧

अत: हमारे पूर्वजों को तो वापस लाओ, यदि तुम सच्चे हो ?।37।

اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ اَهْلَكْنٰهُمْ ۡ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٣٨

क्या ये लोग उत्तम हैं अथवा तुब्बा की जाति और वे लोग जो उनसे पहले थे ? हमने उनको विनष्ट कर दिया। नि:सन्देह वे (सब) अपराधी थे।38।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝٣٩

और हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, यूँ ही खेल-खेलते हुए पैदा नहीं किया।39।

مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٠

हमने उनको सत्य के साथ ही पैदा किया। परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते।40।

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٤١

नि:सन्देह निर्णय का दिन उन सब के लिए एक निर्धारित समय है।41।

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝٤٢

जिस दिन कोई मित्र किसी मित्र के कुछ काम नहीं आएगा। और न ही उनकी सहायता की जाएगी।42।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۴۳﴾

सिवाए उसके जिस पर अल्लाह ने दया की । निःसन्देह वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।43। (रुकू $\frac{2}{15}$)

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ۙ﴿۴۴﴾

निःसन्देह थूहर का पौधा ।44।

طَعَامُ الْاَثِيْمِ ۚۖ﴿۴۵﴾

पापी का भोजन है ।45।

كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ۙ﴿۴۶﴾

(वह) पिघले हुए ताँबे की भाँति है । (जो) पेटों में खौलता है ।46।

كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿۴۷﴾

गर्म पानी के खौलने की भाँति ।47।

خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ۖۗ﴿۴۸﴾

उस (पापी) को पकड़ो और फिर घसीटते हुए नरक के बीच में ले जाओ ।48।

ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ؕ﴿۴۹﴾

फिर उसके सिर पर अज़ाब स्वरूप खौलता हुए कुछ पानी उंडेलो ।49।

ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿۵۰﴾

(उसे कहा जाएगा) चख । निःसन्देह तू बहुत बुज़ुर्ग (और) सम्मान वाला (बनता) था ।50।

اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ﴿۵۱﴾

निःसन्देह यही है वह, जिसके विषय में तुम संदेह किया करते थे ।51।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ۙ﴿۵۲﴾

निश्चित रूप से मुत्तक़ी शांतिमय स्थान में होंगे ।52।

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۚۖ﴿۵۳﴾

बाग़ों और जलस्रोतों में ।53।

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۚۖ﴿۵۴﴾

बारीक और मोटे रेशम के वस्त्र पहने हुए एक दूसरे के सामने बैठे होंगे ।54।

كَذٰلِكَ ۟ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ؕ﴿۵۵﴾

इसी प्रकार होगा । और हम उन्हें बड़ी आँखों वाली कुँवारी कन्याओं के साथी

बना देंगे ।55।*

يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ۙ﴿٥٦﴾

वे उसमें शांतिपूर्वक प्रत्येक प्रकार के फलों को मंगवा रहे होंगे ।56।

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۙ﴿٥٧﴾

वे उसमें पहली मृत्यु के अतिरिक्त किसी और मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे । और वह (अल्लाह) उन्हें नरक के अज़ाब से बचाएगा ।57।

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٨﴾

यह तेरे रब्ब की ओर से कृपा स्वरूप होगा । यही बहुत बड़ी सफलता है ।58।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٩﴾

अतः निश्चित रूप से हमने इसे तेरी ज़ुबान पर सरल बना दिया है ताकि वे उपदेश ग्रहण करें ।59।

فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

अतः तू प्रतीक्षा कर निःसन्देह वे भी प्रतीक्षा में हैं ।60। (रुकू $\frac{3}{16}$)

---

* आयत सं. 54, 55 : जो चीज़ें इस संसार में लोग पसन्द करते हैं, केवल उपमा स्वरूप उनका यहाँ वर्णन किया गया है जबकि उनकी वास्तविकता का किसी को ज्ञान नहीं ।

45- सूर: अल-जासिय:

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 38 आयतें हैं ।

इस सूर: में आयत सं. 14 एक ऐसी आयत है जो धरती और आकाश के गुप्त रहस्यों पर से इस रंग में पर्दा उठा रही है कि पूर्ववर्ती किसी भी ग्रंथ में इससे मिलती जुलती आयत अवतरित नहीं हुई । वर्णन किया कि सब कुछ जो धरती और आकाश में है वह मनुष्य के लिए सेवाधीन किया गया है । अत: वे लोग जो चिन्तन-मनन करते हैं यह जान लेंगे कि समस्त नक्षत्रों के प्रभाव मनुष्यों पर पड़ रहे हैं । मानो मनुष्य एक लघु ब्रह्माण्ड (Micro Universe) है और इस विशाल ब्रह्माण्ड का सारांश है ।

फिर इस चर्चा के पश्चात कि क़यामत अवश्य आने वाली है, कहा कि क़यामत के भयानक चिह्नों को देख कर और अपने बुरे अन्त को अपनी आँखों के समक्ष पाते हुए वे घुटनों के बल धरती पर गिर पड़ेंगे । अर्थात् अल्लाह तआला के प्रताप के समक्ष सजद: में गिर कर यह इच्छा करेंगे कि काश ! वे इस बड़े अज़ाब से बचाए जा सकते !

फिर वर्णन किया कि प्रत्येक संप्रदाय का निर्णय उसकी अपनी पुस्तक अर्थात् धर्मविधान के अनुसार किया जाएगा ।

इस सूर: की अन्तिम आयत मनुष्य की दृष्टि को फिर उस विषय की ओर आकर्षित करती है कि सारी सृष्टि अपनी स्थिति से अल्लाह की स्तुति को प्रकट कर रही है । और यह बता रही है कि सारी बड़ाई उसी की है और वही पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانٍ وَّ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ اَرْبَعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

حٰمٓ ۚ ۝٢

हमीदुन्, मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝٣

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह की ओर से है ।3।

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٤

नि:सन्देह आकाशों और धरती में मोमिनों के लिए प्रचुर संख्या में चिह्न हैं ।4।

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٥

और तुम्हारी उत्पत्ति में, और जो कुछ चलने फिरने वाले प्राणियों में से वह (अल्लाह) फैलाता है, उनमें एक विश्वास करने वाले लोगों के लिए वृहद चिह्न हैं ।5।

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٦

और रात और दिन के अदलने-बदलने में और इस बात में कि अल्लाह आकाश से एक जीविका उतारता है, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है। और हवाओं की दिशा बदल-बदल कर चलाने में (भी) बुद्धि से काम लेने वाले लोगों के लिए अनेक चिह्न हैं ।6।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ

ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तेरे समक्ष सत्य के साथ पढ़ कर सुनाते हैं । अत: अल्लाह और उसकी आयतों के

حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٧

बाद फिर और किस बात पर वे ईमान लाएँगे ? ।7।

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٨

सर्वनाश हो प्रत्येक घोर मिथ्यावादी और महा पापी का ।8।

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٩

वह अल्लाह की आयतों को सुनता है जो उस के समक्ष पढ़ी जाती हैं फिर भी अहंकार करते हुए (अपने हठ पर) अड़ा रहता है, मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं। अत: उसे पीड़ाजनक अज़ाब का शुभ-समाचार दे दे ।9।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا ۨاتَّخَذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝١٠ۭ

और जब वह हमारे चिह्नों में से कुछ की जानकारी पाता है तो उन्हें उपहास का पात्र बनाता है । यही वे लोग हैं जिन के लिए अपमानजनक अज़ाब है ।10।

مِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَاۗءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١١ۭ

(और) उनसे परे नरक है । और जो कुछ उन्होंने कमाया वह कुछ भी उनके काम नहीं आएगा और न ही वे (उनके काम आएँगे) जिनको उन्होंने अल्लाह के सिवा मित्र बना रखा है । जबकि उनके लिए एक बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।11।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝١٢ۧ ع

यह एक बड़ी हिदायत है । और वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब की आयतों का इनकार किया उनके लिए थर्रा देने वाले अज़ाब में से एक पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।12। (रुकू $\frac{1}{17}$)

اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝١٣ۚ

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को सेवाधीन किया ताकि उसके आदेश से उसमें नौकाएँ चलें । और इसके परिणामस्वरूप तुम उसकी कृपा की तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ।13।

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٤﴾

और आकाशों में और धरती में जो कुछ भी है, उसमें से सब उसने तुम्हारे लिए सेवाधीन कर दिया । इसमें सोच-विचार करने वालों के लिए निश्चित रूप से खुले-खुले चिह्न हैं ।14।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٥﴾

जो ईमान लाए हैं, तू उनसे कह दे कि उन लोगों से क्षमापूर्ण व्यवहार करें जो अल्लाह के दिनों की आशा नहीं रखते ताकि वह (अल्लाह) स्वयं ऐसे लोगों को उनकी कमाई के अनुसार प्रतिफल प्रदान करे ।15।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٦﴾

जो नेक कर्म करता है तो (वह) अपने लिए ही ऐसा करता है । और जो कोई बुराई करता है तो (वह) स्वयं अपने विरुद्ध (ऐसा करता है) । फिर तुम अपने रब्ब की ओर लौटाए जाओगे ।16।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٧﴾ۚ

और निःसन्देह हमने बनी इस्राईल को पुस्तक और तत्त्वज्ञान और नुबुव्वत प्रदान की । और पवित्र वस्तुओं में से उन्हें जीविका प्रदान की और उनको समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की ।17।*

وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ

और हमने उन्हें शरीअत (अर्थात धर्म विधान) की खुली-खुली शिक्षाएँ प्रदान कीं । फिर उन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध उद्दण्डता करते हुए मतभेद किया जब कि उनके पास ज्ञान आ चुका था । निःसन्देह तेरा रब्ब उनके बीच क़यामत

---

* बनी इस्राईल को समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान करने का अभिप्राय यह है कि उस युग के ज्ञात जगत पर उन्हें श्रेष्ठता प्राप्त थी । संसार इतने भागों में बंटा हुआ था जिनका कोई ज्ञान बनी इस्राईल को नहीं था । फिर भी जो भी जगत बनी-इस्राईल की जानकारी में आए उन सब पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की गई ।

الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝١٨

के दिन उन विषयों में निर्णय करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे ।18।

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٩

फिर हमने तुझे शरीअत के एक महत्वपूर्ण विषय पर क़ायम कर दिया । अत: उसका अनुसरण कर । और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न कर जो ज्ञान नहीं रखते ।19।*

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٢٠

नि:सन्देह वे अल्लाह के मुक़ाबले पर तेरे किसी काम नहीं आ सकेंगे । और निश्चित रूप से अत्याचारी परस्पर एक दूसरे के मित्र होते हैं जब कि अल्लाह मुत्तक़ियों का मित्र होता है ।20।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٢١

लोगों के लिए ये ज्ञान-वर्धक बातें हैं और विश्वास करने वाले लोगों के लिए हिदायत और करुणा स्वरूप हैं ।21।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٢٢ ع

क्या वे लोग जो भिन्न-भिन्न प्रकार के पाप अर्जित करते हैं, उन्होंने यह सोच लिया है कि हम उन्हें उन लोगों की भाँति बना देंगे जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । (मानो) उनका जीना और मरना एक जैसा होगा ? बहुत ही बुरा है जो वे निर्णय करते हैं ।22। (रुकू $\frac{2}{18}$)

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٢٣

और अल्लाह ने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया, ताकि प्रत्येक जान को उसकी कमाई के अनुसार प्रतिफल दिया जाए और उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।23।

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ

क्या तूने उसे देखा है, जो अपनी इच्छा को ही उपास्य बना बैठा हो और

* फिर उनके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शरीअत दी गई । क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सार्वभौम नबी थे इस कारण उनकी शरीअत भी सार्वभौमिक है ।

اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

अल्लाह ने उसे किसी जानकारी के आधार पर पथभ्रष्ट घोषित किया हो । और उसकी सुनने की शक्ति पर और उसके दिल पर मुहर लगा दी हो और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया हो ? अतः अल्लाह के बाद उसे कौन हिदायत दे सकता है ? क्या फिर भी तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? ।24।

وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٥﴾

और वे कहते हैं, यह (जीवन) हमारे सांसारिक जीवन के अतिरिक्त कुछ नहीं । हम मरते भी हैं और जीवित भी होते हैं और काल के अतिरिक्त और कोई नहीं जो हमें विनष्ट करता हो । हालाँकि उनको इस विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं । वे तो केवल काल्पनिक बातें करते हैं ।25।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन के समक्ष पढ़ी जाती हैं तो उनका तर्क यह कहने के सिवा कुछ नहीं होता कि हमारे पूर्वजों को वापस ले आओ, यदि तुम सच्चे हो ।26।

قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾ ع ٣/١٩

तू कह दे कि अल्लाह ही तुम्हें जीवित करता है, फिर तुम्हें मारता है । फिर क़यामत के दिन की ओर जिसमें कोई संदेह नहीं, तुम्हें इकट्ठा करके ले जाएगा । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।27। (रुकू $\frac{3}{19}$)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

और आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है । और जिस दिन क़यामत होगी उस दिन झूठ बोलने वाले हानि उठाएँगे ।28।

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى
اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝٢٩

और तू प्रत्येक सम्प्रदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ देखेगा । प्रत्येक सम्प्रदाय को अपनी पुस्तक की ओर बुलाया जाएगा । (और कहा जाएगा) आज के दिन तुम्हें उसका प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम किया करते थे ।29।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ
اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٣٠

यह हमारी पुस्तक है जो तुम्हारे विरुद्ध सत्य के साथ बात करेगी । तुम जो कुछ करते थे हम नि:सन्देह उसे लिखित में ले आते थे ।30।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝٣١

अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो उनका रब्ब उन्हें अपनी दया में प्रविष्ट करेगा । यही खुली-खुली सफलता है ।31।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ
تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝٣٢

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया (उनसे कहा जाएगा कि) क्या तुम्हारे समक्ष मेरी आयतें नहीं पढ़ी जाती थीं ? फिर भी तुमने अहंकार किया और तुम अपराधी लोग बन गए ।32।

وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا
رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ
اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ
بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝٣٣

और जब कहा जाता है, नि:सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । और निश्चित घड़ी में कोई संदेह नहीं तो तुम कहते हो कि हम नहीं जानते कि निश्चित घड़ी क्या चीज़ है । हम (इसे) एक अटकल से बढ़ कर कुछ नहीं सोचते और हम कदापि विश्वास करने वाले नहीं ।33।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ

और उन पर उन कर्मों के दुष्परिणाम प्रकट हो जाएँगे जो उन्होंने किए । और

مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾

उन्हें वह चीज़ घेर लेगी जिसकी वे खिल्ली उड़ाया करते थे ।34।

وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٥﴾

और कहा जाएगा, आज हम तुम्हें भूल जाएँगे जैसा कि तुम अपने इस दिन की भेंट को भूल गए थे । और तुम्हारा ठिकाना नरक होगा और तुम्हारे कोई सहायक नहीं होंगे ।35।

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٦﴾

यह इस कारण होगा कि तुमने अल्लाह के चिह्नों को उपहास का पात्र बना लिया और सांसारिक जीवन ने तुम्हें धोखे में डाल दिया था । अत: आज वे उस (अग्नि) से निकाले नहीं जाएँगे और न ही उनका कोई बहाना स्वीकार किया जाएगा ।36।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

अत: समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जो आकाशों का रब्ब है और धरती का रब्ब है (अर्थात् वही) जो समस्त लोकों का रब्ब है ।37।

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٨﴾

और आकाशों में और धरती में भी हर बड़ाई उसी की है । और वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।38।

(रुकू $\frac{4}{20}$)

46– सूरः अल–अहक़ाफ़

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 36 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में ही उस वास्तविकता को दोबारा प्रकट किया गया है जो पिछली सूरः की अन्तिम आयतों में वर्णन की गई है कि धरती और आकाश की हर चीज़ और जो कुछ उसमें है वह सब अल्लाह ही की स्तुति कर रहा है । इस सूरः के आरम्भ में उल्लेख किया गया है कि धरती और आकाश तथा जो कुछ इनमें है वह इसी सच्चाई पर क़ायम है, जिसका इससे पूर्व वर्णन किया गया है । मानो सारा ब्रह्माण्ड अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और की गवाही नहीं दे रहा । इसके तुरंत पश्चात मुश्रिकों को सम्बोधित करते हुए कहा है कि यह समस्त धरती और आकाश और जो कुछ इनके अन्दर है अल्लाह ही की सृष्टि है । अपने काल्पनिक उपास्यों की कोई सृष्टि भी तो दिखाओ । वास्तव में इसमें निहित तर्क यह है कि प्रत्येक सृष्टि पर एक ही स्रष्टा की छाप है ।

यद्यपि इस सूरः में अतीत की जाति आद के विनाश का वर्णन किया गया है जिन्हें अहक़ाफ़ (बालू के टीलों) के द्वारा सतर्क किया गया । परन्तु पवित्र क़ुरआन की इस शैली की अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि उसमें अतीत की जातियों के वर्णन के साथ उससे मिलते-जुलते भविष्य में घटित होने वाली परिस्थितियों की ओर भी संकेत कर दिया जाता है । इस सूरः में पुनः एक बार दुख़ान (धुआँ) वाले विषय की ओर संकेत किया गया है कि जब भी उन पर बादल छाया करते हैं तो वे समझते हैं कि आकाश से उन पर नेमतें बरसेंगी । परन्तु जब वह बादल उन तक पहुँचेगा तो उस समय उन को ज्ञात होगा कि उसके साथ ऐसी रेडियो-धर्मी हवाएँ आ रही हैं जो प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर देती हैं। अतः वे अपने आवासों से बाहर निकलने का भी सामर्थ्य नहीं पाएँगे और उनके निर्जन आवासों के अतिरिक्त उनके अस्तित्व की ओर कोई गवाही नहीं मिलेगी । नागासाकी और हीरोशीमा शहर दोनों इसी की पुष्टि करते हैं ।

आयत संख्या 34 में यह विषय वर्णन किया जा रहा है कि क्या वे देखते नहीं कि धरती और आकाश की उत्पत्ति से अल्लाह थकता नहीं । उस युग का मनुष्य कैसे देख सकता था ? परन्तु वर्तमान युग का मनुष्य जो धरती और आकाश के रहस्य को जानने का प्रयास कर रहा है, वह जानता है कि धरती और आकाश लगातार अनस्तित्वता में डूबते और फिर एक नई सृष्टि के रूप में उभर आते हैं । धरती और आकाश को बार-बार समाप्त करके पुनः उत्पन्न करना अल्लाह तआला की एक ऐसी क्रिया है जो बता रही है कि वह कभी भी उत्पत्ति-क्रिया से थका नहीं । अतएव मनुष्य को कैसे यह मालूम हुआ कि जब वह मर जाएगा तो उसको नए सिरे से जीवित करने पर अल्लाह तआला समर्थ नहीं होगा ?

سُوْرَةُ الاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ ثَلَا ثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

حٰمٓ ②

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ③

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह की ओर से है ।3।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ④

हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है सत्य के साथ और एक निर्धारित अवधि के लिए ही पैदा किया । और जिन लोगों ने इनकार किया, वे उससे मुँह मोड़ते हैं, जिससे उन्हें सतर्क किया जाता है ।4।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِىْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⑤

तू पूछ, क्या तुमने उसे देखा है जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो ? मुझे दिखाओ तो सही कि उन्होंने धरती से क्या पैदा किया है ? अथवा (अल्लाह के साथ) उनका साझीदार होना केवल आकाशों ही में है ? यदि तुम सच्चे हो तो इससे पूर्ववर्ती कोई पुस्तक अथवा ज्ञान का कोई मामूली सा चिह्न मेरे पास लाओ ।5।

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ⑥

और उससे अधिक पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता है जो क़यामत तक उसे उत्तर नहीं दे सकता और वे तो उनकी पुकार ही से अनजान हैं ।6।

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ۝٧

और जब लोग इकट्ठे किए जाएँगे तो वे (काल्पनिक उपास्य) उनके शत्रु होंगे और उनकी उपासना का इनकार कर देंगे ।7।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝٨

और जब उन के निकट हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे लोग, जिन्होंने सत्य का इनकार कर दिया जब वह उनके पास आया, कहते हैं, यह तो खुला-खुला जादू है ।8।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝٩

क्या वे यह कहते हैं कि इसने उसे झूठे रूप से गढ़ लिया है ? तू कह दे कि यदि मैंने यह झूठ गढ़ा होता तो तुम अल्लाह के मुक़ाबले पर मुझे बचाने की कोई शक्ति न रखते । जिन बातों में तुम पड़े हुए हो वह उन्हें सबसे अधिक जानता है । वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के रूप में पर्याप्त है । और वही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।9।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝١٠

तू कह दे, मैं रसूलों में से पहला तो नहीं हूँ और मैं नहीं जानता कि मुझ से और तुम से क्या व्यवहार किया जाएगा । मैं तो केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर वह्इ किया जाता है । और एक सुस्पष्ट सतर्ककारी के अतिरिक्त मैं और कुछ भी नहीं हूँ ।10।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ

तू पूछ कि क्या तुमने (उसके परिणाम पर) ध्यान दिया कि यदि वह अल्लाह की ओर से ही हो और तुम उसका इनकार कर चुके हो, हालाँकि बनी इस्राईल में से भी एक गवाही देने वाले

وَ اسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۱﴾ ع

ने अपने समरूप के पक्ष में गवाही दी थी। अतः वह तो ईमान ले आया और तुमने अहंकार किया। निःसन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।11।* (रुकू $\frac{1}{1}$)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَ اِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿۱۲﴾

और उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया, उनके सम्बन्ध में कहा जो ईमान लाए, कि यदि यह अच्छी बात होती तो उसे प्राप्त करने में ये हम से आगे न निकलते। और अब जबकि वे हिदायत पाने में असफल रहे हैं तो अवश्य कहेंगे कि यह तो एक पुराना झूठ है ।12।

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖۗ وَ بُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳﴾

और इससे पूर्व मूसा की पुस्तक एक पथप्रदर्शक और कृपा स्वरूप थी और यह (अर्थात क़ुरआन) एक सत्यापन करने वाली पुस्तक है जो सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है ताकि उन लोगों को सतर्क करे जिन्होंने अत्याचार किया। और जो उपकार करने वाले हैं उनके लिए शुभ-समाचार स्वरूप हो ।13।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने कहा, अल्लाह हमारा रब्ब है फिर (इस बात

---

* इस स्थान पर अरबी शब्द **शाहिद** (गवाही देने वाला) से अभिप्राय हज़रत मूसा अलै. हैं। और उनके ईमान लाने का अर्थ आने वाले नबी अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना है। जिनके आगमन की उन्हों ने गवाही दी थी। जैसा कि बाइबिल में लिखा है ''मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा और अपना वचन उसके मुँह में डालूँगा और जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उनको कह सुनाएगा।'' (व्यवस्थाविवरण 18:18)

यहाँ पर **तुम ने अहंकार किया** से अभिप्राय बनी-इस्राईल का वह सम्प्रदाय है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इनकार करने वाला था। उन्हें समझाया गया है कि तुम्हारे धर्म का संस्थापक तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाता था परन्तु तुम उसके अस्वीकारी हो। अर्थात सदा से ही तुम्हारा आचरण इनकार करना है जो अहंकार के कारण उत्पन्न होता है।

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٤﴾

पर) अडिग रहे तो न उन को कोई भय होगा और न वे शोकग्रस्त होंगे ।14।

أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

ये ही स्वर्ग निवासी हैं, उसमें सदा रहने वाले हैं, उन कर्मों के प्रतिफल स्वरूप जो वे किया करते थे ।15।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسٰنًا ۖ
حَمَلَتْهُ أُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ
وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ۖ حَتّٰٓى إِذَا
بَلَغَ أَشُدَّهٗ وَبَلَغَ أَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ
رَبِّ أَوْزِعْنِيْٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَأَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ
إِنِّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦﴾

और हमने मनुष्य को ताकीद के साथ आदेश दिया कि अपने माता-पिता से सद-व्यवहार करे । उसे उसकी माँ ने कष्ट के साथ (गर्भ में) उठाए रखा और कष्ट ही के साथ उसे जन्म दिया । और उसके गर्भ-धारण और दूध छुड़ाने का समय तीस महीना है । यहाँ तक कि जब वह अपनी परिपक्व आयु को पहुँचा और चालीस वर्ष का हो गया तो उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी इस नेमत पर कृतज्ञता प्रकट कर सकूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर की। और ऐसे नेक कर्म करूँ जिन से तू प्रसन्न हो । और मेरे लिए मेरी संतान का भी सुधार कर दे । निश्चित रूप से मैं तेरी ही ओर लौटता हूँ और नि:सन्देह मैं आज्ञाकारियों में से हूँ ।16।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا
عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ
أَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ
كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿١٧﴾

यही वे लोग हैं कि जो कुछ उन्होंने किया उसमें से उत्कृष्ट कर्म को हम उनकी ओर से स्वीकार करेंगे । और उनकी बुराइयों को क्षमा करेंगे । वे स्वर्ग निवासियों में से होंगे । यह सच्चा वादा है जो उनसे किया जाता था ।17।*

* **जो कुछ उन्होंने किया उस में से उत्कृष्ट कर्म** से तात्पर्य यह है कि अल्लाह तआला मोमिनों के कुछ कम अच्छे कर्मों के अनुसार नहीं अपितु उनके कर्मों के उत्कृष्ट भाग के अनुसार उनको प्रतिफल देगा ।

وَالَّذِىۡ قَالَ لِـوَالِدَيۡهِ اُفٍّ لَّـكُمَاۤ اَتَعِدٰنِنِىۡۤ اَنۡ اُخۡرَجَ وَقَدۡ خَلَتِ الۡقُرُوۡنُ مِنۡ قَبۡلِىۡ‌ ۚ وَهُمَا يَسۡتَغِيۡثٰنِ اللّٰهَ وَيۡلَكَ اٰمِنۡ ‌ۖ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ ‌ۚ فَيَقُوۡلُ مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۱۸﴾

और वह जिसने अपने माता-पिता से कहा, खेद है तुम दोनों पर । क्या तुम मुझे इस बात से डराते हो कि मैं (मृत्योपरान्त पुन:) निकाला जाऊँगा ! हालाँकि मुझ से पहले कितनी ही जातियाँ गुज़र चुकी हैं । और उन दोनों ने अल्लाह से फ़रियाद करते हुए कहा : सर्वनाश हो तेरा । ईमान ले आ । नि:सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । तब वह कहने लगा, ये केवल पहले लोगों की कहानियाँ हैं ।18।

اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ حَقَّ عَلَيۡهِمُ الۡقَوۡلُ فِىۡۤ اُمَمٍ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ‌ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا خٰسِرِيۡنَ ﴿۱۹﴾

यही वे लोग हैं जिन पर वह आदेश सत्य सिद्ध हो गया जो उनसे पूर्व जिन्नों और मनुष्यों की बीती हुई जातियों पर सत्य सिद्ध हुआ था । निश्चित रूप से ये सब घाटा पाने वाले लोग हैं ।19।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوۡا‌ ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمۡ اَعۡمَالَهُمۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۲۰﴾

और सबके लिए जो वे करते रहे उसके अनुसार दर्जे हैं । ताकि (अल्लाह) उनके कर्मों का उन्हें पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करे और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।20।

وَيَوۡمَ يُعۡرَضُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا عَلَى النَّارِ ؕ اَذۡهَبۡتُمۡ طَيِّبٰتِكُمۡ فِىۡ حَيَاتِكُمُ الدُّنۡيَا وَاسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِهَا‌ ۚ فَالۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ عَذَابَ الۡهُوۡنِ بِمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَـقِّ وَبِمَا كُنۡتُمۡ

और उस दिन को याद करो जब वे लोग जिन्होंने इनकार किया अग्नि के सामने पेश किए जाएँगे । (और कहा जाएगा) तुम अपनी सब अच्छी चीज़ें अपने सांसारिक जीवन में ही समाप्त कर बैठे हो और उनसे अस्थायी लाभ उठा चुके हो । अत: आज के दिन तुम इस कारण अपमानजनक अज़ाब दिए जाओगे कि तुम धरती में अनुचित रूप से अहंकार करते थे । और इस

تَفْسُقُوْنَ ﴿٢١﴾ ع

कारण (भी) कि तुम दुष्कर्म किया करते थे ।21। (रुकू $\frac{2}{2}$)

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ۭ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢٢﴾

और आद (जाति) के भाई को याद कर । जब उसने अपनी जाति को रेत के टीलों के पास सतर्क किया, जबकि उसके सामने भी और उससे पूर्व भी बहुत सी सतर्कवाणियाँ बीत चुकी थीं, कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो । नि:सन्देह मैं तुम पर एक बहुत बड़े दिन के दण्ड से अज़ाब हूँ ।22।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

उन्होंने कहा, क्या तू हमारे पास इस कारण आया है कि हमें अपने उपास्यों से हटा दे । अत: यदि तू सच्चा है तो उसे ले आ जिसका तू हमें डरावा देता है ।23।

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

उसने कहा, नि:सन्देह ज्ञान तो केवल अल्लाह ही के पास है । और मैं तो तुम्हें वह संदेश पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ मुझे भेजा गया है । परन्तु मैं तुम्हें बड़े मूर्ख लोग देख रहा हूँ ।24।

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ۙ

अत: जब उन्होंने उसे एक बादल के रूप में देखा जो उनकी घाटियों की ओर बढ़ रहा था तो कहा, यह एक ऐसा बादल है जो हम पर बारिश बरसाने वाला है । नहीं ! बल्कि यह तो वही है जिसे तुम शीघ्रता से मांगा करते थे । यह एक ऐसा झक्कड़ है जिसमें पीड़ाजनक अज़ाब है ।25।

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا

(जो) प्रत्येक वस्तु को अपने रब्ब के आदेश से नष्ट कर देता है । अत: वे ऐसे

لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۭ كَذٰلِكَ
نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝۲۶

(नष्ट) हो गए कि उनके घरों के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता था । इसी प्रकार हम अपराधी लोगों को प्रतिफल दिया करते हैं ।26।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ
وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ڮ
فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ
اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ
اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۲۷ ع

और नि:सन्देह हमने उन्हें वह दृढ़ता प्रदान की थी जो दृढ़ता तुम्हें प्रदान नहीं की । और हमने उनके कान और आँखें और उनके दिल बनाए थे । फिर उनके कान और उनकी आँखें और उनके दिल कुछ भी उनके काम न आ सके, जब उन्होंने अल्लाह की आयतों का हठधर्मिता के साथ इनकार किया । और जिस बात की वे खिल्ली उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें घेर लिया ।27। (रुकू $\frac{3}{3}$)

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى
وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝۲۸

और नि:सन्देह हम तुम्हारे इर्द-गिर्द की बस्तियों को भी तबाह कर चुके हैं । और हमने चिह्नों को फेर-फेर कर वर्णन किया ताकि वे लौट आयें ।28।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ
وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝۲۹

फिर क्यों न उन लोगों ने उनकी सहायता की जिनको उन्होंने (अल्लाह की) निकटता प्राप्ति के उद्देश्य से अल्लाह के सिवा उपास्य बना रखा था ? बल्कि वे तो उनसे खोये गये । और यह उनके झूठ का परिणाम था और उसका जो वे झूठ गढ़ा करते थे ।29।

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ
يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ
قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى

और जब हमने जिन्नों में से एक समूह का ध्यान तेरी ओर फेर दिया जो कुरआन सुना करते थे । जब वे उसके समक्ष उपस्थित हुए तो उन्होंने कहा, चुप हो जाओ । फिर जब बात समाप्त

قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝٣٠

हो गई तो (वे) अपनी जाति को सतर्क करते हुए लौट गए ।30।*

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٣١

उन्होंने कहा, हे हमारी जाति ! नि:सन्देह हमने एक ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चात उतारी गयी । वह उसकी पुष्टि कर रही थी जो उस से पहले था । वह सत्य की ओर और सन्मार्ग की ओर हिदायत दे रही थी ।31।**

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣٢

हे हमारी जाति ! अल्लाह की ओर आह्वान करने वाले को स्वीकार करो और उस पर ईमान ले आओ । वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें पीड़ाजनक अज़ाब से बचाएगा ।32।***

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٣

और जो अल्लाह की ओर आह्वान करने वाले को स्वीकार नहीं करता तो वह धरती में (उसे) असमर्थ करने वाला नहीं बन सकता । और उसके विरुद्ध उसके कोई संरक्षक नहीं होते । यही वे लोग हैं जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में हैं ।33।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ

और क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और वह उनकी उत्पत्ति से थका नहीं, इस बात पर समर्थ है कि मृतकों

---

* इस आयत में जिन **जिन्नों** का उल्लेख है वे लोक-प्रचलित काल्पनिक जिन्न नहीं थे बल्कि एक महान जाति के सरदार थे जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सूचना पा कर स्वयं जाकर देखने और निर्णय करने का इरादा किया । अत: जब वे अपनी जाति की ओर लौटे तो उन्हें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का शुभ-समाचार सुनाया ।

** इस आयत में यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी गई है कि वह नबी आ गया है जिसने हज़रत मूसा अलै. के पश्चात एक सम्पूर्ण शरीअत (धर्म विधान) लानी थी ।

*** उन्होंने अपनी जाति की ओर वापसी पर उपरोक्त वर्णन के पश्चात उनको उपदेश दिया कि यह सच्चा नबी है । इस कारण इस पर ईमान ले आओ, इसी में तुम्हारी भलाई है और सावधान किया कि जो भी अल्लाह की ओर बुलाने वाले का इनकार करता है वह उसे असफल नहीं कर सकता ।

عَلٰٓى اَنۡ يُّحۡیِۦَ الۡمَوۡتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۳۴﴾

को जीवित करे ? क्यों नहीं ! निःसन्देह वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।34।*

وَيَوۡمَ يُعۡرَضُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيۡسَ هٰذَا بِالۡحَـقِّ ؕ قَالُوۡا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوۡقُوا الۡعَذَابَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡفُرُوۡنَ ﴿۳۵﴾

और याद रखो उस दिन को जिस दिन वे लोग जिन्होंने इनकार किया अग्नि के सामने पेश किए जाएँगे । (उन्हें कहा जाएगा) क्या यह सच नहीं था ? वे कहेंगे, क्यों नहीं । हमारे रब्ब की सौगन्ध ! (यह सच था) । वह उनसे कहेगा, तो फिर अज़ाब को चखो । इस कारण कि तुम इनकार किया करते थे ।35।

فَاصۡبِرۡ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الۡعَزۡمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسۡتَعۡجِلْ لَّهُمۡ ؕ كَاَنَّهُمۡ يَوۡمَ يَرَوۡنَ مَا يُوۡعَدُوۡنَ ۙ لَمۡ يَلۡبَثُوۡۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنۡ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلۡ يُهۡلَكُ اِلَّا الۡقَوۡمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿۳۶﴾ ع

अतः धैर्य धर जैसे दृढ़-संकल्प रसूलों ने धैर्य धारण किया । और उनके विषय में शीघ्रता न कर । जिस दिन वे उसे देखेंगे जिससे उन्हें डराया जाता है तो यूँ लगेगा जैसे दिन की एक घड़ी से अधिक वे (प्रतीक्षा में) नहीं रहे । संदेश पहुँचाया जा चुका है । अतः क्या दुराचारियों के अतिरिक्त भी कोई नष्ट की किया जाता है ? ।36। (रुकू $\frac{4}{4}$)

---

* इस उपदेश के पश्चात इस शाश्वत सत्य की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जिसकी ओर प्रत्येक नबी अपनी जाति को बुलाता है कि वह मृत्यु के पश्चात पुनरुत्थान पर ईमान लाएँ जिसके बिना ईमान सम्पूर्ण नहीं होता ।

47– सूरः मुहम्मद

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 39 आयतें हैं ।

यद्यपि यह सूरः आयतों की गिनती की दृष्टि से बहुत छोटी है, इसमें व्यवहारिक रूप से क़ुरआन की पिछली समस्त सूरतों का सारांश वर्णन कर दिया गया है । जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु व सल्लम सब नबियों के द्योतक थे ।

इस सूरः की आयत सं. 19 में यह कहा गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस वृहद आध्यात्मिक क़यामत के लिए भेजे गए उसके निकट होने के समस्त लक्षण प्रकट हो चुके हैं । अत: उस समय उन लोगों का उपदेश ग्रहण करना किस काम आएगा जब वह क़यामत उपस्थित हो जाएगी ।

☆☆☆

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَّ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ اَرْبَعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٢

वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका, उसने उनके कर्मों को नष्ट कर दिया ।2।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٣

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और उस पर ईमान लाए जो **मुहम्मद** पर उतारा गया, और वही उनके रब्ब की ओर से सम्पूर्ण सत्य है । उनके दोषों को वह दूर कर देगा और उनकी अवस्था को ठीक कर देगा ।3।

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٤

यह इस कारण होगा कि वे जिन्होंने इनकार किया उन्होंने झूठ का अनुसरण किया । और वे जो ईमान लाए उन्होंने अपने रब्ब की ओर से आने वाले सत्य का अनुसरण किया । इसी प्रकार अल्लाह लोगों के सामने उनके उदाहरण वर्णन करता है ।4।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛ

अत: जब तुम उन लोगों से भिड़ जाओ जिन्होंने इनकार किया तो (उनकी) गर्दनों पर प्रहार करना । यहाँ तक कि जब तुम उनका अधिक मात्रा में रक्त बहा लो तो दृढ़तापूर्वक बंधन कसो । फिर इसके पश्चात उपकार स्वरूप अथवा मुक्तिमूल्य लेकर मुक्त करना । यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार डाल दे। ऐसा ही होना चाहिए । और यदि

ذٰلِكَ ۛ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَاۡ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٥

अल्लाह चाहता तो स्वयं उनसे प्रतिशोध लेता परन्तु (उसका) उद्देश्य यह है कि वह तुम में से कुछ को कुछ के द्वारा परीक्षा में डाले । और वे लोग जिन्हें अल्लाह के मार्ग में घोर कष्ट पहुँचाया गया, उनके कर्मों को वह कदापि नष्ट नहीं करेगा ।5।*

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٦

वह उन्हें हिदायत देगा और उनकी अवस्था ठीक कर देगा ।6।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٧

और उन्हें उस स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा जिसे उनके लिए उसने बहुत उत्तम बनाया है ।7।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٨

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! यदि तुम अल्लाह की सहायता करो तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पैरों को दृढ़ता प्रदान करेगा ।8।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٩

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनका सर्वनाश हो और (अल्लाह ने) उनके कर्मों को नष्ट कर दिया ।9।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝١٠

यह इस लिए था कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा उन्होंने उसे नापसन्द किया । अत: उसने उनके कर्मों को नष्ट कर दिया ।10।

---

* इस आयत में अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने के प्रमुख उद्देश्य वर्णन कर दिए गए हैं । पहले तो यह कि जिन लोगों ने मोमिनों के विरुद्ध शस्त्र उठाए उन को पराजित करके उस समय तक अवश्य दृढ़तापूर्वक बांधे रखो जब तक युद्ध समाप्त न हो जाए । इसके पश्चात या तो मुक्तिमूल्य लेकर छोड़ दिया जाए अन्यथा बिना मुक्तिमूल्य लिए दया पूर्वक छोड़ दिया जाए तो यह भी बहुत अच्छा है । जो लोग इस्लाम के प्रतिरक्षात्मक युद्धों को बलपूर्वक मुसलमान बनाने के लिए किये गये युद्ध कहते हैं, उनका यह आयत प्रबल रूप से खण्डन करती है । क्योंकि यही सबसे अच्छा अवसर हो सकता था कि उन क़ैदियों को मुसलमान बना लिया जाता । परन्तु मुसलमान बनाना तो दूर, उनके ईमान न लाने पर भी उन्हें स्वतन्त्र करने का आदेश दिया गया है । यहाँ तक कि यदि मुक्तिमूल्य भी न लो तो यह भी उत्तम है ।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ﴿١١﴾

अत: क्या वे धरती में नहीं फिरे जिसके परिणामस्वरूप वे देख लेते कि उनसे पहले लोगों का अन्त कैसा था ? अल्लाह ने उन पर विनाश की मार डाली और (इन) काफ़िरों से भी उन जैसा ही व्यवहार किया जाएगा ।11।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ﴿١٢﴾ ع

यह इस लिए है कि अल्लाह उन लोगों का संरक्षक होता है जो ईमान लाए और काफ़िरों का निश्चित रूप से कोई संरक्षक नहीं होता ।12। (रुकू $\frac{1}{5}$)

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿١٣﴾

नि:सन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक कर्म किए, ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बह रही होंगी । जबकि वे लोग जिन्होंने इनकार किया अस्थायी लाभ उठा रहे हैं और वे इस प्रकार खाते हैं जैसे पशु खाते हैं । हालाँकि अग्नि उन का ठिकाना है ।13।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِىْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٤﴾

और कितनी ही बस्तियाँ थीं जो तेरी (इस) बस्ती से अधिक शक्तिशाली थीं, जिसने तुझे निकाल दिया । हमने उनको नष्ट कर दिया तब कोई उनका सहायक नहीं निकला ।14।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٥﴾

अत: जो अपने रब्ब की ओर से खुली-खुली हिदायत पर हो, क्या उस जैसा हो सकता है जिसे उसके कुकर्म सुन्दर करके दिखाए गए हों और उन्होंने अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया हो ? ।15।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ

उस स्वर्ग का उदाहरण जिसका मुत्तक़ियों को वादा दिया जाता है, (यह है कि) उसमें कभी प्रदूषित न होने वाले

لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿١٦﴾

पानी की नहरें और दूध की नहरें हैं जिसका स्वाद नहीं बिगड़ता । और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए खूब स्वादिष्ट है । और ऐसे शहद की नहरें हैं जो विशुद्ध है । और उनके लिए उसमें प्रत्येक प्रकार के फल होंगे और उनके रब्ब की ओर से बड़ा क्षमादान भी (होगा) । क्या (ऐसे लोग) उस जैसे हो सकते हैं जो अग्नि में लम्बे समय तक रहने वाला हो और खौलता हुआ पानी उन्हें पिलाया जाए जो उनकी अन्तड़ियाँ काट कर रख दे ।16।*

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۟ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٧﴾

और उनमें वे भी हैं जो (प्रत्यक्ष रूप से) तेरी ओर कान धरते हैं । यहाँ तक कि जब वे तेरे पास से चले जाते हैं तो उन लोगों से जिन्हें ज्ञान दिया गया है पूछते हैं कि अभी अभी उसने क्या कहा था ? यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी और उन्होंने अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया ।17।

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٨﴾

और वे लोग जिन्होंने हिदायत पाई उनको उसने हिदायत में बढ़ा दिया और उनको उनका तक़्वा प्रदान किया ।18।

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ

अत: क्या वे केवल निश्चित घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह सहसा उनके

---

* यह आयत लगातार उपमाओं का वर्णन कर रही है । क्योंकि इस भौतिक संसार में तो न पानी खड़ा रहने पर प्रदूषित होने से बच सकता है, न दूध ख़राब होने से बच सकता है, न शराब ऐसी हो सकती है जो केवल स्वादिष्ट हो परन्तु नशा न दे । और इस संसार में तो मनुष्य को यदि केवल यही वस्तुएँ उपलब्ध हों तो कभी इन्हीं वस्तुओं पर ही संतुष्ट नहीं हो सकता । अत: स्पष्ट रूप से ये उपमाएँ हैं । जो लोग संसार में इन वस्तुओं को अच्छा समझते हैं अथवा उनसे लाभ जुड़ा हुआ देखते हैं, उनको शुभ-समाचार दिया जा रहा है कि स्वर्ग में उनको उनके लाभ की सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ प्रदान की जाएँगी ।

بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٩﴾

पास आ जाए ? अतः उसके लक्षण तो प्रकट हो चुके हैं । फिर जब वह भी उनके पास आ जाएगी तो उस समय उनका उपदेश ग्रहण करना उनके किस काम आएगा ? ।19।

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿٢٠﴾ ع

अतः जान ले कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और अपनी भूल-चूक के प्रति तथा मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के लिए भी क्षमा याचना कर । और अल्लाह तुम्हारे यात्रा कालीन ठिकानों को ख़ूब जानता है और स्थायी ठिकानों को भी ।20। (रुकू $\frac{2}{6}$)

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢١﴾

और वे लोग जो ईमान लाए हैं, कहेंगे कि क्यों न कोई सूरः उतारी गई ? अतः जब कोई निर्णायक सूरः उतारी जाएगी और उसमें युद्ध का वर्णन किया जाएगा तो वे लोग जिनके दिलों में रोग है तू उन्हें देखेगा कि वे तेरी ओर इस प्रकार देखते हैं जैसे वह व्यक्ति देखता है जिस पर मृत्यु की मूर्च्छा छा गई हो । अतः सर्वनाश हो उनका ।21।

طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢٢﴾

आज्ञापालन और अच्छी बात चाहिए । अतः अब जबकि यह बात पक्की हो चुकी है, यदि वे अल्लाह के प्रति निष्ठावान होते तो अवश्य उनके लिए उत्तम होता ।22।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٣﴾

क्या तुम्हारे लिए संभव है कि यदि तुम प्रबंधक बन जाओ तो धरती में उपद्रव करते फिरो और अपने निकट-सम्बन्धों को काट दो ? (कदापि नहीं) ।23।

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمٰىٓ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٤﴾

यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने ला'नत की और उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अंधा कर दिया ।24।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْاٰنَ أَمْ عَلٰى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٥﴾

अतः क्या वे क़ुरआन पर चिंतन-मनन नहीं करते अथवा उनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं ? ।25।

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلٰىٓ أَدْبَارِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۗ وَأَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٦﴾

निःसन्देह वे लोग जो अपनी पीठ दिखाते हुए धर्म से फिर गए, जब कि उन पर हिदायत स्पष्ट हो चुकी थी । शैतान ने उन्हें (उनके कर्म) सुन्दर करके दिखाए और उन्हें झूठी आशाएँ दिलाईं ।26।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

यह इसलिए हुआ कि जो अल्लाह ने उतारा, उस से जिन लोगों ने घृणा की उनसे उन लोगों ने (यह) कहा कि हम अवश्य कुछ बातों में तुम्हारा आज्ञापालन करेंगे । और अल्लाह उनकी गोपनीयता को जानता है ।27।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٨﴾

अतः (उनकी) क्या दशा होगी जब फ़रिश्ते उन्हें मृत्यु देंगे ? वह उनके चेहरों और पीठों पर आघात लगाएँगे ।28।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَآ أَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٩﴾ ع ٣/٩

यह परिणाम है उसका कि उन्होंने उस बात का अनुसरण किया जो अल्लाह को अप्रसन्न करती है और उसकी प्रसन्नता को नापसन्द किया । अतः उसने उनके कर्म नष्ट कर दिए ।29। (रुकू $\frac{3}{7}$)

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٣٠﴾

क्या वे लोग जिन के दिलों में रोग है धारणा करते हैं कि अल्लाह उनके द्वेषों को बाहर नहीं निकालेगा ? ।30।

وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣١﴾

और यदि हम चाहें तो तुझे अवश्य वे लोग दिखा देंगे । और तू उनको अवश्य उनके लक्षणों से जान लेगा और उनको उनकी बोल-चाल से अवश्य पहचान लेगा और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है ।31।*

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَاْ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣٢﴾

और हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेंगे । यहाँ तक कि तुम में से जिहाद करने वाले और धैर्य धरने वाले को सुस्पष्ट कर दें और तुम्हारी अवस्था को परख लें ।32।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٣﴾

नि:सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोका और रसूल का विरोध किया, जबकि हिदायत उन पर स्पष्ट हो चुकी थी, वे कदापि अल्लाह को कुछ हानि पहुँचा नहीं सकेंगे । और वह अवश्य उनके कर्मों को नष्ट कर देगा ।33।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٤﴾

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो और अपने कर्मों को बर्बाद न करो ।34।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٥﴾

नि:सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोका, फिर वे इस अवस्था में मर गए कि वे काफ़िर थे तो अल्लाह कदापि उनको क्षमा नहीं करेगा ।35।

---

* आयत सं. 30-31 : इन आयतों में मुनाफ़िकों को सावधान किया गया है कि यदि वे यह समझते हैं कि वे अपने सीनों में ईर्ष्या और द्वेष को छिपाए रहेंगे और किसी को पता नहीं चलेगा तो यह नहीं हो सकता । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कहा कि उनको तू उनके चेहरों और बोल-चाल से ही पहचान लेता है । अत: मुनाफ़िक़ संभवत: सीधे सादे लोगों से छिपे रह सकते हों परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी अवस्था के बारे में भली-भाँति अवगत थे ।

فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝٣٦

अतः कमज़ोरी न दिखाओ कि संधि की ओर बुलाने लगो जबकि तुम ही विजयी होने वाले हो । और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह कदापि तुम्हें तुम्हारे कर्मों (का बदला) कम नहीं देगा ।36।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۗ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْئَلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝٣٧

निःसन्देह संसार का जीवन केवल खेल-कूद और आत्मलिप्साओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो परम उद्देश्य से असावधान कर दे । और यदि तुम ईमान लाओ और तक़वा धारण करो तो वह तुम्हें तुम्हारे प्रतिफल प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी धन-सम्पत्ति नहीं माँगेगा ।37।

اِنْ يَّسْئَلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ۝٣٨

यदि वह तुमसे वह (धन) माँगे और तुम्हारे पीछे पड़ जाए तो तुम कंजूसी करोगे और वह तुम्हारी ईर्ष्या को बाहर निकाल देगा ।38।

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ۝٣٩

देखो ! तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह के पथ में खर्च करने के लिए बुलाया जाता है । फिर तुम में से वह भी है जो कंजूसी से काम लेता है । हालाँकि जो कंजूसी से काम लेता है तो वह निश्चित रूप से अपनी ही जान के विरुद्ध कंजूसी करता है । अल्लाह धनवान् है और तुम कंगाल हो । यदि तुम फिर जाओ तो वह तुम्हारे बदले अन्य लोगों को ले आएगा । फिर वे तुम्हारी भाँति नहीं होंगे ।39।

(रुकू $\frac{4}{8}$)

48– सूरः अल–फ़त्ह

यह सूरः हुदैबिया नामक स्थान पर मक्का के काफ़िरों के साथ ऐतिहासिक संधि करके वापसी पर उतरी। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं।

सूरः मुहम्मद के बाद सूरः अल्-फ़त्ह आती है, जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल. के ऊँचे रुत्बे का उल्लेख किया गया है जो आयत सं. 11 में वर्णित है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रुत्बा इतना ऊँचा था कि पूर्ण रूप से वह अल्लाह तआला के हो गए थे और इसी कारण उनका आगमन मानो अल्लाह तआला का आगमन था। उन के हाथ पर बैअत करना मानो अल्लाह तआला के हाथ पर बैअत करना था। जैसा कि फ़र्माया **निःसन्देह वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे अल्लाह ही की बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ है जो उनके हाथ पर है**। (आयत सं. 11)

आयत सं. 19 में अल्लाह तआला की बैअत वाली विषयवस्तु की पुनरावृत्ति की गई है। जब हुदैबिया संधि के अवसर पर एक वृक्ष के नीचे मोमिन हज़रत मुहम्मद सल्ल. के हाथ पर बैअत की प्रतिज्ञा की पुनरावृत्ति कर रहे थे। इसके साथ ही यह वादा कर दिया गया कि सहाबा रजि. के दिल में हज्ज न करने के कारण जो भी कसक थी वह इस बैअत के पश्चात पूर्ण रूप से दूर कर दी गई और संपूर्ण संतुष्टि प्राप्त हुई और जिस बात को पराजय समझा जाता था अर्थात मक्का में प्रविष्ट न हो पाना, उसने भविष्य में समस्त प्रकार के विजय की नींव डाल दी। जिनमें निकट की विजय भी शामिल थी और बाद में आने वाली विजय भी।

अन्त में मोमिनों से वादा किया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो स्वप्न दिखाया गया था वह निश्चित रूप से सत्य के साथ पूरा होगा। और सहाबा रजि. उस पर साक्षी ठहरेंगे कि वे हज्ज के धार्मिक कृत्यों को पूरा करते हुए मक्का नगरी में प्रवेश करेंगे। और यह मक्का विजय समग्र मानव जाति पर विजय प्राप्ति का आधार बनेगी।

सूरः मुहम्मद के पश्चात इस सूरः में फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल. के नाम का उल्लेख किया गया और स्पष्ट रूप से हज़रत मूसा अलै. की उस भविष्यवाणी का उल्लेख कर दिया गया जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन का उन के 'मुहम्मद' नाम के साथ प्रकट किया गया था और उन समस्त सद्‌गुणों का उल्लेख किया गया जो उस महान प्रतापी नबी और उसके साहाबियों के लिए निश्चित थे। फिर बाइबिल की एक भविष्यवाणी का वर्णन किया गया। अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आगमन की भविष्यवाणी केवल बाइबिल के 'पुराने नियम' में ही नहीं बल्कि 'नये

नियम' में भी हज़रत ईसा अलै. के द्वारा की गई थी जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सौम्य रूप का द्योतक है । और एक ऐसी खेती से उसका उदाहरण दिया गया है जिसे कोई अहंकारी अपने बुरे इरादों के बावजूद कुचलने में सफल नहीं होगा और एक नहीं बल्कि कई कृषिकार ऐसे होंगे जो वह खेती लगाएँगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلاَ ثُوْنَ اٰيَةً وَّ اَرْبَعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ②

नि:सन्देह हमने तुझे खुली-खुली विजय प्रदान की है ।2।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ③

ताकि अल्लाह तुझे तेरी अतीत की और भविष्य में होने वाली प्रत्येक भूल-चूक को क्षमा कर दे । और तुझ पर अपनी नेमत को पूरा करे और सन्मार्ग पर परिचालित करे ।3।*

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ④

और अल्लाह तेरी वह सहायता करे जो सम्मान जनक और प्रभुत्व वाली सहायता हो ।4।

هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْۤا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ⑤

वही है जिसने मोमिनों के दिलों में प्रशान्ति उतारी ताकि वे अपने ईमान के साथ ईमान में अधिक बढ़ें । और आकाशों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की सम्पत्ति हैं । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।5।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ

ताकि वह मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करे

* आयत संख्या 2-3 : इन आरम्भिक आयतों में मोमिनों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि उनको शानदार विजय प्राप्त होंगी ।
आयत सं. 3 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अरबी शब्द **ज़ंब** प्रयुक्त हुआ है जिससे अभिप्राय पाप नहीं है । इसका यह अर्थ नहीं है कि जिस प्रकार तू पहले पाप किया करता था इसी प्रकार आगे भी करता चला जा तो सब पाप क्षमा कर दिए जाएँगे । वास्तविक अर्थ यह है कि जिस प्रकार तू पहले भी पाप से पवित्र था, जिस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सारा जीवन साक्षी है इसी प्रकार भविष्य में भी अल्लाह तआला सुरक्षा का वादा करता है। यहाँ तक कि नेमत संपूर्ण हो जाए । यहाँ नेमत से अभिप्राय नुबुव्वत है ।

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا
وَیُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ
عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِیْمًا ۙ۝٦

जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदा रहने वाले होंगे । और वह उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दे । और अल्लाह के निकट यह एक बहुत बड़ी सफलता है ।6।

وَّ یُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِیْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ
وَ الْمُشْرِكِیْنَ وَ الْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّیْنَ
بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَیْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ
وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ وَ لَعَنَهُمْ وَ اَعَدَّ
لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَ سَآءَتْ مَصِیْرًا ۝٧

और ताकि वह मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों को और मुश्रिक पुरुषों और मुश्रिक स्त्रियों को अज़ाब दे जो अल्लाह पर कु-धारणा रखते हैं । विपत्तियों का चक्र स्वयं उन्हीं पर पड़ेगा और अल्लाह उन पर क्रोधित है । और उन पर ला'नत करता है और उसने उनके लिए नरक तैयार किया है और वह बहुत बुरा ठिकाना है ।7।

وَ لِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ
اللّٰهُ عَزِیْزًا حَكِیْمًا ۝٨

और आकाशों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की हैं । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।8।

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا
وَّ نَذِیْرًا ۙ۝٩

नि:सन्देह हमने तुझे एक गवाह तथा शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी के रूप में भेजा ।9।

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ
وَ تُوَقِّرُوْهُ ؕ وَ تُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً
وَّ اَصِیْلًا ۝١٠

ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी सहायता करो और उसका सम्मान करो और सुबह और शाम उसका गुणगान करो ।10।

اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ
یَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَیْدِیْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا

नि:सन्देह वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे अल्लाह ही की बैअत करते हैं । अल्लाह का हाथ है जो उनके हाथ पर है। अत: जो कोई प्रतिज्ञाभंग करे तो वह अपने ही हित के विरुद्ध प्रतिज्ञाभंग

يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۱﴾ ع

करता है । और जो उस प्रतिज्ञा को पूरा करे जो उसने अल्लाह से की है, तो नि:सन्देह वह उसे बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा ।11। (रुकू $\frac{1}{9}$)

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۗ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۲﴾

मरुभूमि निवासियों में से पीछे छोड़ दिए जाने वाले तुझ से अवश्य कहेंगे कि हमें हमारी धन-सम्पत्तियों और हमारे घर वालों ने व्यस्त रखा । अत: हमारे लिए (अल्लाह के निकट) क्षमा याचना कर। वे अपनी जिह्वा से वह कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है । तू कह दे कि यदि वह (अल्लाह) तुम्हें कष्ट पहुँचाना चाहे अथवा लाभ पहुँचाने का विचार करे, तो कौन है जो अल्लाह के मुक़ाबले पर तुम्हारे पक्ष में कुछ भी क्षमता रखता है ? सच यह है कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से ख़ूब अवगत रहता है ।12।

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًاۢ بُوْرًا ﴿۱۳﴾

बल्कि तुम धारणा करते रहे कि रसूल और ईमान लाने वाले अपने घर वालों की ओर कभी लौट कर नहीं आएँगे । और यह बात तुम्हारे दिलों को सुन्दर करके दिखाई गई । और तुम दुर्विचार करते रहे और तबाह होने वाले लोग बन गए ।13।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿۱۴﴾

और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान नहीं लाया तो नि:सन्देह हमने काफ़िरों के लिए भड़कने वाली अग्नि तैयार कर रखी है ।14।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ

और आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है । वह जिसे चाहता है

لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵﴾

क्षमा कर देता है । और जिसे चाहता है अज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।15।

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى
مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَّنْ
تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۗ بَلْ كَانُوْا
لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۶﴾

जब तुम युद्धलब्ध धन को प्राप्त करने के लिए जाओगे तो वे लोग जो पीछे छोड़ दिए गए, अवश्य कहेंगे कि हमें भी अपने पीछे आने दो । वे चाहते हैं कि अल्लाह के वाक्य को बदल दें । तू कह दे कि तुम कदापि हमारे पीछे नहीं आओगे । इसी प्रकार अल्लाह ने पहले ही कह दिया था। इस पर वे कहेंगे, वस्तुतः तुम तो हम से ईर्ष्या रखते हो । सच यह है कि वह बहुत ही कम समझते हैं ।16।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ
اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ
اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ
اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ
مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾

मरुभूमि निवासियों में से पीछे छोड़ दिए जाने वालों से कह दे कि तुम शीघ्र ही ऐसे लोगों की ओर बुलाए जाओगे जो बड़े जंगजू होंगे । तुम उनसे युद्ध करोगे अथवा वे मुसलमान हो जाएँगे । अतः यदि तुम आज्ञापालन करोगे तो अल्लाह तुम्हें बहुत अच्छा प्रतिफल प्रदान करेगा। और यदि तुम पीठ फेर जाओगे जैसा कि पहले पीठ फेर गए थे तो वह तुम्हें बहुत पीड़ाजनक अज़ाब देगा ।17।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى
الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ
حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ

अंधे पर कोई दोष नहीं और न लंगड़े पर कोई दोष है और न रोगी पर कोई दोष है । और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगा वह उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । और जो पीठ दिखा जाएगा वह उसे

يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۧ ١٨ ع ٢/١٠

बहुत पीड़ाजनक अज़ाब देगा ।18।
(रुकू $\frac{2}{10}$)

لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۙ ١٩

निःसन्देह अल्लाह मोमिनों से संतुष्ट हो गया जब वे वृक्ष के नीचे तेरी बैअत कर रहे थे । वह जानता है जो उनके दिलों में था । अतः उसने उन पर प्रशांति उतारी और उन्हें एक निकटवर्ती विजय प्रदान की ।19।

وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ٢٠

और भारी मात्रा में युद्धलब्ध धन प्रदान किया जो वे संग्रह कर रहे थे । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।20।

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِىَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ ٢١

अल्लाह ने तुमसे भारी मात्रा में युद्धलब्ध धन का वादा किया है जो तुम प्राप्त करोगे । अतएव यह तुम्हें उसने तुरन्त प्रदान कर दिया और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए ताकि यह मोमिनों के लिए एक बड़ा चिह्न बन जाए और वह तुम्हें सीधे रास्ते की ओर हिदायत दे ।21।

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ٢٢

इसी प्रकार कुछ और भी (विजय) हैं जो अभी तुम्हें प्राप्त नहीं हुईं । निःसन्देह अल्लाह ने उनको आयत्ताधीन कर रखा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।22।

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ٢٣

और यदि वे लोग तुम से युद्ध करेंगे जिन्होंने इनकार किया तो अवश्य पीठ फेर कर (भाग) जाएँगे । फिर वे न कोई मित्र पाएँगे और न कोई सहायक ।23।

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِىْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚۖ وَلَنْ

यह अल्लाह का नियम है जो पहले भी बीत चुका है और तू अल्लाह के

تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٤﴾

नियम में कदापि कोई परिवर्तन नहीं पाएगा ।24।

وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ
وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ
اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٥﴾

और वही है जिसने तुम्हें उन पर विजय प्रदान करने के पश्चात उनके हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उनसे मक्का की घाटी में रोक दिए थे । और जो कुछ तुम करते हो उस पर अल्लाह गहन दृष्टि रखता है ।25।

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ
مَحِلَّهٗ ۭ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَاۗءٌ
مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ
فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ
لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ
لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٦﴾

यही वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया था और तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोक दिया था और क़ुर्बानी को भी, जबकि वह अपने क़ुर्बानी स्थल तक पहुँचने से रोक दी गई थी । और यदि ऐसे मोमिन पुरुष और ऐसी मोमिन स्त्रियाँ न होतीं जिन्हें न जानने के कारण तुम अपने पाँवों तले कुचल डालते तो तुम्हें उनकी ओर से अनजाने में कोई हानि पहुँच जाती । यह इस लिए हुआ ताकि अल्लाह जिसे चाहे उसे अपनी कृपा में प्रविष्ट करे । यदि वे निथर कर अलग हो चुके होते तो अवश्य हम उनमें से इनकार करने वालों को पीड़ाजनक अज़ाब देते ।26।

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ
سَكِيْنَتَهٗ عَلٰي رَسُوْلِهٖ وَعَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ
وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ
بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

जब वे लोग जिन्होंने इनकार किया, अपने दिलों में आत्मसम्मान अर्थात् अज्ञानतापूर्ण आत्मसम्मान का मुद्दा बना बैठे तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी प्रशांति उतारी और उन्हें तक़्वा के वाक्य से चिमटाए रखा और वे ही उसके सबसे बड़े हक़दार और योग्य थे । और अल्लाह

عَلِيْمًا ۝٢٧ ع

हर चीज़ को ख़ूब जानता है ।27।

(रुकू $\frac{3}{11}$)

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ۗ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝٢٨

निश्चित रूप से अल्लाह ने अपने रसूल को (उसका) स्वप्न सत्य के साथ पूरा कर दिखाया कि यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम अवश्यमेव मस्जिद-ए-हराम में शांतिपूर्वक प्रवेश करोगे, अपने सिरों को मुंडवाते हुए और बाल कतरवाते हुए । ऐसी अवस्था में कि तुम भय नहीं करोगे। अत: वह (अल्लाह) उसका ज्ञान रखता था जो तुम नहीं जानते थे । फिर उसने इसके अतिरिक्त निकट-भविष्य में ही एक और विजय निश्चित कर दी है ।28।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝٢٩

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्य-धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (की प्रत्येक शाखा) पर पूर्णतया विजयी कर दे । और साक्षी के रूप में अल्लाह बहुत पर्याप्त है ।29।*

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۗ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي

अल्लाह के रसूल **मुहम्मद** और वे लोग जो उसके साथ हैं, काफ़िरों के विरुद्ध बहुत कठोर (और) आपस में अत्यन्त कृपा करने वाले हैं । तू उन्हें रुकू करते हुए और सजद: करते हुए देखेगा । वे अल्लाह ही से (उसकी) अनुकम्पा और प्रसन्नता चाहते हैं । सजदों के प्रभाव से उनके चेहरों पर उनके चिह्न हैं । ये उनकी उपमा है जो तौरात में है । और

---

* इस आयत में संसार के सब धर्मों पर इस्लाम के विजयी होने की भविष्यवाणी की गई है । इस आयत के उतरने के समय तो मक्का वासियों पर ही विजय प्राप्ति नहीं हुई थी । फिर उस युग में यह भविष्यवाणी करना कि इस्लाम को संसार के सब धर्मों पर विजयी किया जाएगा, अनुपम महत्ता का परिचायक है ।

التَّوْرٰىةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِی الْاِنْجِیْلِ ۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰی عَلٰی سُوْقِهٖ یُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِیَغِیْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ﴿۳۰﴾

इंजील में उनकी उपमा एक खेती की भाँति है जो अपनी कोंपल निकाले, फिर उसे सुदृढ़ करे। फिर वह मोटी हो जाए और अपने डंठल पर खड़ी हो जाए, कृषिकारों को प्रसन्न कर दे ताकि उनके कारण काफ़िरों को क्रोधित करे। अल्लाह ने उनमें से उनसे जो ईमान लाए और नेक कर्म किए क्षमा और महान प्रतिफल का वादा किया हुआ है।30।*

(रुकू 4/12)

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो गुण वर्णन किये गये हैं उनको उन तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि तुरन्त ही कहा **वल्लज़ी न मअहू** अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सद्‌गुण उन लोगों में भी प्रवेश करेंगे जो आप सल्ल. के साथ हैं। गुणों में सर्वप्रथम तो यह है कि **वे काफ़िरों के विरुद्ध बहुत कठोर हैं।** इसका यह अर्थ नहीं कि वे काफ़िरों पर अपनी कठोर-हृदयता के कारण कठोर होंगे बल्कि कुफ़्र का प्रभाव स्वीकार न करने की दृष्टि से उन्हें कठोर कहा गया है। अन्यथा उनके दिल दया से भरे हुए होंगे जिसके कारण मोमिन एक दूसरे से कृपा और नम्रतापूर्वक व्यवहार करने वाले होंगे। और उनके जिहाद का उद्देश्य केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति है न कि सांसारिक धन अर्जित करना। अतएव वे अल्लाह के समक्ष रुकू करते हुए और सजदः करते हुए झुकेंगे और उससे उसकी अनुकम्पा अर्थात् ऐसा सांसारिक धन माँगेगे जिसके साथ अल्लाह तआला की प्रसन्नता भी हो। यह उनके जिहाद के वे प्रमुख पक्ष हैं जो तौरात में उनके सम्बन्ध में वर्णन किए गए थे।

जहाँ तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुगामियों में अंत्ययुग में आने वाले मसीह और उसके मानने वालों का प्रसंग है, उनका उदाहरण इंजील में ऐसे अंकुरण के साथ दिया गया है जो क्रमशः बढ़ता है और अपने डंठल पर दृढ़ हो जाता है और उसको देख कर उसको बोने वाले अर्थात् धर्म सेवा में भाग लेने वाले बहुत प्रसन्न होंगे। और इसके परिणाम स्वरूप काफ़िरों को उन पर और भी अधिक क्रोध आएगा। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने उनको भी जो अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान लाएँगे और उससे क्षमा याचना करेंगे, बड़े क्षमा और अच्छा प्रतिफल प्रदान करने का शुभ-समाचार दिया है।

49– सूरः अल–हुजुरात

यह सूरः मक्का विजय के पश्चात मदीना में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 19 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौद्र और सौम्य रूप के जो दर्जे वर्णन हुए हैं, उसके पश्चात यहाँ सहाबा रजि. की यह ज़िम्मेदारी वर्णन की गई है कि इस महान रसूल के सामने न तो नज़र उठा कर बात करना तुम्हें शोभा देता है न ऊँची आवाज़ में । अत: वे लोग जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूर से आवाज़ें देते हुए अपने घर से बाहर निकलने का कष्ट देते थे उन पर अत्यन्त अप्रसन्नता प्रकट की गई है ।

इसके पश्चात आयत सं. 10 में भविष्य में मुस्लिम शासनों के परस्पर मतभेद की परिस्थिति में सर्वोत्तम उपाय का उल्लेख किया गया है । ध्यान देने योग्य बात यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में तो मुस्लिम शासनों का परस्पर लड़ने का कोई प्रश्न नहीं था । इस कारण वास्तव में इस पवित्र आयत में एक महान चार्टर (राजकीय दिशानिर्देश) प्रस्तुत किया गया है जो केवल मुसलमानों ही के लिए नहीं अपितु ग़ैर मुस्लिमों के लिए भी जातीय मतभेद की परस्थिति में उनमें परस्पर संधि कराने से सम्बन्ध रखता है । इसके मौलिक आधार यह हैं कि :-

1. यदि दो मुस्लिम शासन परस्पर लड़ पड़ें, तो शेष मुस्लिम शासनों का कर्त्तव्य है कि वे मिलकर दोनों को युद्ध से रोकें । और यदि उनमें से कोई उपदेश ग्रहण न करे तो सैन्य कार्रवाई के द्वारा उसको विवश कर दें ।

2. अत: जब वे युद्ध से रुक जाएँ तो फिर उनके बीच संधि करवाने का प्रयत्न करो।

3. परन्तु जब संधि करवाने का प्रयत्न करो तो पूर्ण रूप से न्याय के साथ करो और दोनों पक्ष के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करो । क्योंकि अन्तिम परिणाम इसका यही है कि अल्लाह तआला न्याय करने वालों से प्रेम करता है और जिनसे अल्लाह तआला प्रेम करे उनको वह कदापि असफल नहीं होने देता ।

एक बार फिर ध्यान दिलाया गया है कि यद्यपि यहाँ मुसलमानों को सम्बोधित किया गया है, परन्तु जो कार्य-शैली उनको समझाई गई है वह समस्त मानव जाति के लिए अनुकरणीय है ।

इसके पश्चात विभिन्न जातियों में फूट और मतभेद का मौलिक कारण वर्णन कर दिया गया जो वास्तव में वंशवाद है । प्रत्येक जाति जब दूसरी जाति से उपहास करती है

तो मानो अपने आप को उनसे भिन्न और उत्कृष्ट वंशज मानते हुए ऐसा करती है ।

इसके पश्चात विभिन्न ऐसी सामाजिक बुराइयाँ वर्णन कर दी गईं जिनके परिणाम स्वरूप अलगाववाद उत्पन्न होते हैं । इसके पश्चात यह स्पष्ट किया गया कि अल्लाह तआला ने लोगों को विभिन्न रंगों और वंशों में बांटा क्यों है ? इसका उद्देश्य यह वर्णन किया गया कि एक दूसरे पर श्रेष्ठता जताने के लिए नहीं, बल्कि एक दूसरे की पहचान में आसानी के लिए ऐसा किया गया है । उदाहरणार्थ जब कहा जाए कि अमुक व्यक्ति अमेरिकन है अथवा अमुक जर्मन है तो इस लिए नहीं कहा जाता कि अमेरिकन जाति को सब पर श्रेष्ठता प्राप्त है अथवा जर्मन जाति को सब जातियों पर श्रेष्ठता प्राप्त है । बल्कि केवल पहचान के लिए ऐसा कहा जाता है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْحُجُرَاتِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ②

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह का तक़्वा धारण करो । नि:सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।2।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ③

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! नबी की आवाज़ से अपनी आवाज़ें ऊँची न किया करो । और जिस प्रकार तुम में से कुछ लोग कुछ दूसरे लोगों के सामने ऊँची आवाज़ में बातें करते हैं, उसके सामने ऊँची बात न किया करो । ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म नष्ट हो जाएँ और तुम्हें पता तक न चले ।3।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ④

नि:सन्देह वे लोग जो अल्लाह के रसूल के समक्ष अपनी आवाज़ें धीमी रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़्वा के लिए परख लिया है । उनके लिए एक महान क्षमादान और बड़ा प्रतिफल है ।4।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ⑤

नि:सन्देह वे लोग जो तुझे घरों के बाहर से आवाज़ें देते हैं अधिकतर उनमें से बुद्धि नहीं रखते ।5।

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ

यदि वे धैर्य करते यहाँ तक कि तू स्वयं ही उनकी ओर बाहर निकल आता तो यह

لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٦

अवश्य उनके लिए उत्तम होता । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला है ।6।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٧

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम्हारे पास यदि कोई दुराचारी कोई समाचार लाए तो (उसकी) छान-बीन कर लिया करो । ऐसा न हो कि तुम अज्ञानता वश किसी जाति को हानि पहुँचा बैठो । फिर तुम्हें अपने किए पर पश्चाताप करना पड़े ।7।*

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٨

और जान लो कि तुम में अल्लाह का रसूल मौजूद है । यदि वह तुम्हारी अधिकतर बातें मान ले तो तुम अवश्य कष्ट में पड़ जाओ । परन्तु अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को प्रिय बना दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में सुसज्जित कर दिया है और तुम्हारे लिए कुफ्र और कुकर्म तथा अवज्ञा के प्रति अत्यन्त घृणा उत्पन्न कर दी है । यही वे लोग हैं जो हिदायत प्राप्त हैं ।8।

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٩

अल्लाह की ओर से यह एक वृहद अनुकम्पा और नेमत के रूप में है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।9।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا

और यदि मोमिनों में से दो समुदाय परस्पर लड़ पड़ें तो उनके बीच संधि

---

* मदीना में बहुत से अफ़वाहें फैलाने वाले लोग ऐसी अफ़वाहें फैलाते थे कि उनको सच्च मान कर केवल संदेह के आधार पर कुछ लोगों के दिलों में कुछ दूसरों से युद्ध करने का विचार उत्पन्न होता था । अत: उनको इस प्रकार जल्दबाज़ी करने से कड़े शब्दों में मना किया गया है । क्योंकि संभव है कि इस प्रकार की अफ़वाहों के परिणामस्वरूप कुछ निर्दोष लोगों पर भी अत्याचार हो जाए और इसके परिणाम स्वरूप मोमिनों को लज्जित होना पड़े ।

فَاَصۡلِحُوۡا بَيۡنَهُمَا ۚ فَاِنۡۢ بَغَتۡ اِحۡدٰٮهُمَا
عَلَى الۡاُخۡرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِىۡ تَبۡغِىۡ حَتّٰى
تَفِىۡٓءَ اِلٰٓى اَمۡرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنۡ فَآءَتۡ
فَاَصۡلِحُوۡا بَيۡنَهُمَا بِالۡعَدۡلِ وَاَقۡسِطُوۡا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُقۡسِطِيۡنَ ۝١٠

करवाओ। फिर यदि उनमें से एक दूसरे के विरुद्ध उद्दण्डता करे तो जो अत्याचार कर रहा है उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के निर्णय की ओर लौट आए। अत: यदि वह लौट आए तो उन दोनों के बीच न्यायपूर्वक संधि करवाओ और न्याय करो। नि:सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।10।

اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ اِخۡوَةٌ فَاَصۡلِحُوۡا
بَيۡنَ اَخَوَيۡكُمۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ
تُرۡحَمُوۡنَ ۝١١ ع

मोमिन तो भाई-भाई ही होते हैं। अत: अपने दो भाइयों के बीच संधि करवाया करो। और अल्लाह का तक़्वा धारण करो ताकि तुम पर कृपा की जाए।11।

(रुकू $\frac{1}{13}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا يَسۡخَرۡ قَوۡمٌ مِّنۡ
قَوۡمٍ عَسٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا خَيۡرًا مِّنۡهُمۡ
وَلَا نِسَآءٌ مِّنۡ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنۡ يَّكُنَّ خَيۡرًا
مِّنۡهُنَّ ۚ وَلَا تَلۡمِزُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ
وَلَا تَنَابَزُوۡا بِالۡاَلۡقَابِ ؕ بِئۡسَ الِاسۡمُ
الۡفُسُوۡقُ بَعۡدَ الۡاِيۡمَانِ ۚ وَمَنۡ لَّمۡ يَتُبۡ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ۝١٢

हे लोगो जो ईमान लाए हो! (तुम में से) कोई जाति किसी जाति से उपहास न करे। संभव है कि वे उनसे उत्तम हो जाएँ। और न महिलायें महिलाओं से (उपहास करें)। हो सकता है कि वे उनसे उत्तम हो जाएँ। और अपने लोगों पर दोषारोपण न करो और एक दूसरे को नाम बिगाड़ कर न पुकारा करो। ईमान के पश्चात अवज्ञा करने का दाग़ लग जाना बहुत बुरी बात है। और जिसने प्रायश्चित नहीं किया तो यही वे लोग हैं जो अत्याचारी हैं।12।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اجۡتَنِبُوۡا كَثِيۡرًا مِّنَ
الظَّنِّ ۖ اِنَّ بَعۡضَ الظَّنِّ اِثۡمٌ وَّلَا
تَجَسَّسُوۡا وَلَا يَغۡتَبْ بَّعۡضُكُمۡ بَعۡضًا ؕ
اَيُحِبُّ اَحَدُكُمۡ اَنۡ يَّاۡكُلَ لَحۡمَ اَخِيۡهِ

हे लोगो जो ईमान लाए हो! संदेह (करने) से बहुत बचा करो। नि:सन्देह कुछ संदेह पाप होते हैं। और जासूसी न किया करो। और तुम में से कोई किसी दूसरे की चुगली न करे। क्या तुम में से कोई यह पसन्द करता है कि अपने मृत

مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝١٣

भाई का माँस खाए ? अतः तुम इससे अत्यन्त घृणा करते हो । और अल्लाह का तक़वा धारण करो । निःसन्देह अल्लाह बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।13।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَاۗىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ۭ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝١٤

हे लोगो ! निःसन्देह हमने तुम्हें पुरुष और स्त्री से पैदा किया । और तुम्हें जातियों और क़बीलों में विभाजित किया ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको । निःसन्देह अल्लाह के निकट तुम में सबसे अधिक सम्माननीय वह है जो सर्वाधिक मुत्तक़ी है । निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सदा अवगत है ।14।

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ۭ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَـيْـــًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٥

मरुभूमि निवासी कहते हैं कि हम ईमान ले आए । तू कह दे कि तुम ईमान नहीं लाए, परन्तु केवल इतना कहा करो कि हम मुसलमान हो चुके हैं । जबकि अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में प्रविष्ट नहीं हुआ । और यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो तो वह तुम्हारे कर्मों में कुछ भी कमी नहीं करेगा। निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।15।*

* इस पवित्र आयत में ईमान और इस्लाम की वह मौलिक परिभाषा बता दी गई है जो ईमान को इस्लाम से पृथक कर देती है । मुँह से तो प्रत्येक व्यक्ति यह कह सकता है कि हमारे दिल में ईमान है परन्तु उनको बताया गया है कि तुम अधिक से अधिक यह कह सकते हो कि हम मुसलमान हो गए हैं । अर्थात वे लोग जिनके दिलों में ईमान न भी हो अपने आपको मुसलमान कहने का अधिकार रखते हैं । उनमें से बहुत से हैं जो इनकार की अवस्था में ही मरेंगे और बहुत से ऐसे भी हैं जिनके दिल में अभी तक ईमान प्रविष्ट नहीं हुआ । परन्तु वे ज़ाहिरी रूप से इस्लाम स्वीकार करने के→

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿١٦﴾

मोमिन वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए। फिर उन्होंने कभी संदेह नहीं किया और अपनी धन-सम्पत्तियों और अपनी जानों के साथ अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया। यही वे लोग हैं जो सच्चे हैं।16।

قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾

पूछ, कि क्या तुम अल्लाह को अपना धर्म सिखाते हो ? जबकि अल्लाह जानता है जो आकाशों में है और जो धरती में है। और अल्लाह हर चीज़ का ख़ूब ज्ञान रखता है।17।

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا ۖ قُل لَّا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُم ۖ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨﴾

वे तुझ पर उपकार जतलाते हैं कि वे मुसलमान हो गए हैं। तू कह दे मुझ पर अपने इस्लाम का उपकार न जताया करो। बल्कि अल्लाह तुम पर उपकार करता है कि उसने तुम्हें ईमान की ओर हिदायत दी। यदि तुम सच्चे हो (तो उसको स्वीकार करो)।18।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ ع

नि:सन्देह अल्लाह आकाशों और धरती के अदृश्य तत्त्वों को जानता है। और तुम जो करते हो अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है।19। (रुकू $\frac{2}{14}$)

←पश्चात अन्तत: सच्चे दिल से मोमिन भी हो जाएँगे।

50– सूरः क़ाफ़

यह सूरः मक्का निवास काल के आरम्भिक दिनों में अवतरित हुई । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 46 आयतें हैं ।

यह सूरः खण्डाक्षरों में से **क़ाफ़** अक्षर से आरम्भ होती है । अरबी अक्षर **क़ाफ़** के सम्बन्ध में बड़े-बड़े विद्वानों का मत है कि **क़दीर** शब्द का यह संक्षिप्त रूप है । इस सूरः में इस शब्द के पश्चात पहला शब्द कुरआन आया है जो **क़ाफ़** ही से आरम्भ होता है । इसके पश्चात अल्लाह तआला की कुदरत (शक्ति) का इनकार करने वालों के इस वर्णन का उल्लेख है कि अल्लाह तआला के पास यह शक्ति कहाँ से आ गई कि हमारे मर कर मिट्टी हो जाने के पश्चात एक बार फिर क़यामत के दिन इकट्ठा करे । उनके निकट यह एक बहुत दूर की बात है अर्थात समझ से परे है । अल्लाह तआला फ़र्माता है कि हमें जानकारी है कि धरती उनमें से क्या कुछ कम करती चली जा रही है । परन्तु इस के बावजूद हम यह सामर्थ्य रखते हैं कि उनके बिखरे हुए कणों को इकट्ठा कर दें । उनका ध्यान आकाश के फैलाव की ओर फेरा गया है कि इतने विशाल ब्रह्माण्ड में कोई एक त्रुटि भी वे दिखा नहीं सकते, फिर उसके स्रष्टा की शक्तियों का वह कैसे इनकार कर सकते हैं ।

इसके पश्चात फर्माया कि जो शंका उनके मन में उठती हैं हम पूर्णतया उनसे अवगत हैं । क्योंकि हम मनुष्य के प्राणस्नायु से भी अधिक उसके निकट हैं । फिर यह भविष्यवाणी की गई कि अवश्य तुम लोग उठाए जाओगे और उठाए जाने वालों के साथ उनको एक हाँक कर ले जाने वाला होगा और एक साक्षी भी । नरक का वर्णन करते हुए कहा कि अधर्मी लोग एक के बाद एक समूहबद्ध रूप से नरक का ईंधन बनने वाले हैं । एक ऐसे नरक का जिसका पेट कभी नहीं भरेगा । जब उपमा स्वरूप अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि क्या तेरा पेट भर गया है तो वह अपनी यथा स्थिति प्रकट करेगा कि क्या और भी ऐसे अभागे हैं ? मेरे अन्दर उनके लिए भी स्थान है । और इसके विपरीत स्वर्ग मुत्तक़ियों के बहुत निकट कर दिया जाएगा । आयतांश **ग़ै र बयीद** (कुछ दूर नहीं) का यह अर्थ भी है कि यह बात कदापि कल्पना से दूर नहीं । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उपदेश दिया गया कि उनके व्यंग्य और कटाक्ष को धैर्य पूर्वक सहन करें । जो भविष्यवाणियाँ पवित्र कुरआन में की गई हैं वे अवश्य पूरी हो कर रहेंगी । अतः पवित्र कुरआन के द्वारा तू उस व्यक्ति को उपदेश देता चला जा जो मेरी चेतावनी से डरता हो ।

यहाँ यह अभिप्राय नहीं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुन-चुन कर केवल उसको उपदेश देंगे जो चेतावनी से डरता हो । वस्तुतः उपदेश तो आप समस्त मानव जाति को दे रहे हैं परन्तु लाभ वही उठाएगा जो चेतावनी से डरने वाला हो ।

سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ②

क़दीरुन : सर्वशक्तिमान । अति गौरवशाली क़ुरआन की क़सम ! ।2।

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۚ③

वास्तविकता यह है कि उन्होंने आश्चर्य किया कि स्वयं उन्हीं में से एक सतर्ककारी उनके पास आया है । अतः काफ़िर कहते हैं कि यह विचित्र बात है ।3।

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ④

क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे ? इस प्रकार लौटना एक दूर की बात है ।4।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ⑤

हम भली-भाँति जानते हैं कि धरती उनमें से क्या कम कर रही है । और हमारे पास (सब कुछ) सुरक्षित रखने वाली एक पुस्तक है ।5।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ⑥

बल्कि उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब वह उनके पास आया । अतः वे एक उलझाव वाली बात में पड़े हुए हैं ।6।

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ⑦

क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा कि हमने उसे कैसे बनाया और उसे सुन्दरता प्रदान की और उसमें कोई त्रुटि नहीं ? ।7।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۙ⑧

और धरती को हमने फैला दिया और उसमें दृढ़तापूर्वक गड़े हुए पर्वत बना दिए । और प्रत्येक प्रकार के तरो ताज़ा जोड़े उसमें उगाये ।8।

تَبۡصِرَةً وَّذِكۡرٰى لِكُلِّ عَبۡدٍ مُّنِيۡبٍ ۝٩

आँखें खोलने के लिए और प्रत्येक ऐसे भक्त के लिए शिक्षा स्वरूप जो बार-बार (अल्लाह की ओर) लौटने वाला है ।9।

وَنَزَّلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنۡۢبَتۡنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الۡحَصِيۡدِ ۝١٠

और हमने आकाश से मंगलकारी पानी उतारा और उसके द्वारा बाग़ों और कटाई की जाने वाली फसलों के बीज उगाए ।10।

وَالنَّخۡلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلۡعٌ نَّضِيۡدٌ ۝١١

और खजूरों के ऊँचे वृक्ष जिनके परत दर परत गुच्छे होते हैं ।11।

رِّزۡقًا لِّلۡعِبَادِ ۙ وَاَحۡيَيۡنَا بِهٖ بَلۡدَةً مَّيۡتًا ؕ كَذٰلِكَ الۡخُرُوۡجُ ۝١٢

भक्तों के लिए जीविका स्वरूप । और हमने उस (अर्थात वर्षा) के द्वारा एक मृत क्षेत्र को जीवित कर दिया । इसी प्रकार (क़ब्रों से) निकलना होगा ।12।

كَذَّبَتۡ قَبۡلَهُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّاَصۡحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوۡدُ ۝١٣

उनसे पूर्व नूह की जाति ने और खनिजपदार्थों के स्वामियों ने तथा समूद (जाति) ने भी झुठलाया था ।13।

وَعَادٌ وَّفِرۡعَوۡنُ وَاِخۡوَانُ لُوۡطٍ ۝١٤

और आद (जाति) और फ़िरऔन ने और लूत के भाइयों ने ।14।

وَّاَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ وَقَوۡمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيۡدِ ۝١٥

और घने वृक्षों के बीच बसने वालों ने और तुब्बा की जाति ने । सबने रसूलों को झुठला दिया । अत: मेरा सतर्क करना सच्चा सिद्ध हो गया।15।

اَفَعَيِيۡنَا بِالۡخَلۡقِ الۡاَوَّلِ ؕ بَلۡ هُمۡ فِىۡ لَبۡسٍ مِّنۡ خَلۡقٍ جَدِيۡدٍ ۝١٦ ع

क्या हम पहली उत्पत्ति से थक चुके हैं ? नहीं ! बल्कि वे तो नवीन उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी संदेह में पड़े हैं ।16।

(रुकू $\frac{1}{15}$)

وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ وَنَعۡلَمُ مَا تُوَسۡوِسُ بِهٖ نَفۡسُهٗ ۖۚ وَنَحۡنُ اَقۡرَبُ اِلَيۡهِ مِنۡ

और नि:सन्देह हमने मनुष्य को पैदा किया और हम जानते हैं कि उसका मन उसे कैसे कैसे भ्रम में डालता है । और

حَبۡلِ الۡوَرِيۡدِ ﴿١٧﴾

हम उससे (उसके) प्राणस्नायु से भी अधिक निकट हैं ।17।

اِذۡ يَتَلَقَّى الۡمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الۡيَمِيۡنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيۡدٌ ﴿١٨﴾

जब दाएँ और बाएँ बैठे हुए दो बात पकड़ने वाले बात पकड़ते हैं ।18।*

مَا يَلۡفِظُ مِنۡ قَوۡلٍ اِلَّا لَدَيۡهِ رَقِيۡبٌ عَتِيۡدٌ ﴿١٩﴾

वह जब भी कोई बात कहता है उसके पास ही (उसका) हर समय तत्पर निरीक्षक होता है ।19।

وَجَآءَتۡ سَكۡرَةُ الۡمَوۡتِ بِالۡحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنۡتَ مِنۡهُ تَحِيۡدُ ﴿٢٠﴾

और जब मृत्यु की मुर्छा आ जाएगी जो नितांत सत्य है । (तब उसे कहा जाएगा) यह वही है जिससे तू बचता रहा ।20।

وَنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ ؕ ذٰلِكَ يَوۡمُ الۡوَعِيۡدِ ﴿٢١﴾

और बिगुल फूंका जाएगा । यह है वह चेताया हुआ दिन ।21।

وَجَآءَتۡ كُلُّ نَفۡسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيۡدٌ ﴿٢٢﴾

और प्रत्येक जान इस अवस्था में आएगी कि उसके साथ एक हाँकने वाला और एक साक्षी होगा ।22।

لَقَدۡ كُنۡتَ فِىۡ غَفۡلَةٍ مِّنۡ هٰذَا فَكَشَفۡنَا عَنۡكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الۡيَوۡمَ حَدِيۡدٌ ﴿٢٣﴾

नि:सन्देह तू इस बारे में असावधान रहा । अत: हमने तुझ से तेरा पर्दा उठा दिया और आज तेरी दृष्टि बहुत तीव्र हो गई है ।23।

وَقَالَ قَرِيۡنُهٗ هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيۡدٌ ؕ ﴿٢٤﴾

और उसका साक्षी कहेगा यह है जो मेरे पास तैयार पड़ा है ।24।

اَلۡقِيَا فِىۡ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيۡدٍ ۙ ﴿٢٥﴾

(हे हाँकने वाले और हे साक्षी !) तुम दोनों प्रत्येक घोर कृतघ्न (और सत्य के) परम शत्रु को नरक में झोंक दो ।25।

---

* यहाँ मनुष्य के कर्मों का निरीक्षण करने वाले फ़रिश्तों की ओर संकेत है । अर्थात उनके दाहिनी ओर के फ़रिश्ते उनके नेक-कर्म को लिपिबद्ध करते हैं और बाईं ओर के फ़रिश्ते कुकर्मों को लिपिबद्ध करते हैं । ये भौतिक आँख से दिखाई देने वाले कोई फ़रिश्ते नहीं हैं, बल्कि अल्लाह तआला की एक साक्ष्य व्यवस्था है जिसकी ओर संकेत किया गया है ।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ۙ﴿٢٦﴾

प्रत्येक अच्छी बात से रोकने वाले, सीमा का उल्लंघन करने वाले और संदेह में डालने वाले को ।26।

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٧﴾

वह जिसने अल्लाह के साथ कोई दूसरा उपास्य बना रखा था । अत: तुम दोनों उसे कठोर अज़ाब में झोंक दो ।27।

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٨﴾

उसके साथी ने कहा, हे हमारे रब्ब ! मैंने तो उसे उद्दण्ड नहीं बनाया, परन्तु वह स्वयं ही एक परले दर्जे की पथभ्रष्टता में पड़ा था ।28।

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ﴿٢٩﴾

वह कहेगा, मेरे समक्ष झगड़ा न करो । मैं पहले ही तुम्हारी ओर चेतावनी भेज चुका हूँ ।29।

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۧ﴿٣٠﴾

मेरे निकट आदेश परिवर्तित नहीं किया जाता । मैं कदापि निरीह भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं ।30।

(रुकू $\frac{2}{16}$)

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣١﴾

(याद करो) वह दिन जब हम नरक से पूछेंगे, क्या तू भर गया है ? और वह उत्तर देगा, क्या कुछ और भी है ? ।31।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣٢﴾

और जब स्वर्ग मुत्तक़ियों के लिए निकट कर दिया जाएगा, कुछ दूर नहीं होगा ।32।

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۚ﴿٣٣﴾

यह है वह जिसका तुम में से प्रत्येक लौटने वाले, निगरान रहने वाले के लिए वचन दिया गया है ।33।

مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۙ﴿٣٤﴾

जो रहमान (अल्लाह) से परोक्ष में डरता रहा और एक झुकने वाला दिल लिए हुए आया है ।34।

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٥﴾

शांति पूर्वक उसमें प्रवेश कर जाओ । यही वह सदा रहने वाला दिन है ।35।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٦﴾

उनके लिए उसमें जो वे चाहेंगे होगा और हमारे पास और भी बहुत कुछ है ।36।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٧﴾

और कितनी ही जातियाँ हमने उनसे पहले नष्ट कर दीं जो पकड़ करने में उनसे अधिक सशक्त थीं । अतः उन्होंने धरती में गुफाएँ बना लीं । (परन्तु उनके लिए) क्या कोई शरण का स्थान था ? ।37।

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٨﴾

निःसन्देह इसमें बहुत बड़ी सीख है उसके लिए जो दिल रखता हो या कान धरे और वह देखने वाला हो ।38।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٩﴾

और निःसन्देह हमने आकाशों और धरती को और उसे भी जो उनके बीच है, छः दिनों में पैदा किया और हमें कोई थकान छुई तक नहीं ।39।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٤٠﴾

अतः धैर्य कर उस पर जो वे कहते हैं और सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त से पूर्व भी अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ (उसका) गुणगान कर ।40।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤١﴾

और रात के एक भाग में और सजदों के पश्चात् भी उसका गुणगान कर ।41।

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤٢﴾

और ध्यान से सुन ! जिस दिन एक पुकारने वाला निकट के स्थान से पुकारेगा ।42।

يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٣﴾

जिस दिन वे एक भयंकर सच्ची आवाज़ सुनेंगे । यह निकल खड़े होने का दिन है ।43।

اِنَّا نَحْنُ نُحْىٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٤﴾

निःसन्देह हम ही जीवित करते और मारते हैं और हमारी ओर ही लौट कर आना है ।44।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٥﴾

जिस दिन धरती उनके ऊपर से तीव्र हलचल के कारण फट जाएगी । यह वह महान एकत्रिकरण है जो हमारे लिए सरल है ।45।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٦﴾ ع

हम उसे सबसे अधिक जानते हैं जो वे कहते हैं । और तू उन पर बलपूर्वक सुधार करने वाला निरीक्षक नहीं है । अतः क़ुरआन के द्वारा उसे उपदेश देता चला जा जो मेरी चेतावनी से डरता है ।46। (रुकू $\frac{3}{17}$)

51- सूरः अज़-ज़ारियात

यह सूरः आरम्भिक मक्की सूरतों में से है । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 61 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ ही में पिछली सूरतों की भविष्यवाणियों को, जिनमें स्वर्ग और नरक आदि की भविष्यवाणियाँ हैं, इतनी विश्वसनीयता पूर्वक वर्णन किया गया है मानो जैसे क़ुरआन के सम्बोधित लोग परस्पर बातें करते हैं ।

इस सूरः में भविष्य में घटित होने वाले युद्धों को फिर से गवाह ठहराया गया है ताकि जब मानव जाति इन भविष्यवाणियों को निश्चित रूप से पूरा होता हुआ देख ले तो इस बात में कोई शंका न रहे कि जिस रसूल पर यह रहस्य खोला गया, मृत्यु के पश्चात के जीवन का विषय भी निश्चित रूप से उस को सर्वज्ञ अल्लाह ने ही बताया है ।

आयत संख्या 2 में आया है : ''क़सम है बीज बिख़ेरने वालियों की...।'' अब प्रत्यक्ष रूप से अक्षरशः यह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है क्योंकि वास्तव में आज कल हवाई जहाज़ों और हैलीकैप्टरों के द्वारा बीज बिखेरे जाते हैं और बड़े-बड़े भार उठाकर जहाज़ उड़ते हैं और इन भारों के बावजूद वे द्रुतगामी होते हैं । महत्वपूर्ण जानकारियाँ इन जहाज़ों के द्वारा विभिन्न विजयी, पराजित और प्रतिबंधित जातियों को भी पहुँचाई जाती है । इन सबको साक्षी ठहरा कर यह परिणाम निकाला गया कि जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है वह निःसन्देह होकर रहने वाला है । और प्रतिफल दिवस अर्थात निर्णय का दिन इहलोक में इहलोकिन जातियों के लिए होगा और परलोक में समस्त मानव जाति के लिए होगा ।

इसके पश्चात यह स्पष्ट कर दिया गया कि ये बीज बिखेरने वालियाँ और भार उठाने वालियाँ धरती पर भार उठाकर चलने वाली कोई चीज़ नहीं बल्कि आकाश पर उड़ने वाली चीज़ें हैं । अतएव उस आकाश को साक्षी ठहराया गया जो हवाई मार्गों वाला आकाश है । अतः आज दृष्टि उठा कर देखें तो प्रत्येक स्थान पर जहाज़ों के मार्गों के चिह्न मिलते हैं । अतः इन सब विषय का परिणाम यह निकाला गया कि तुम परलोक का इनकार करके घोर पथभ्रष्टता में पड़ चुके हो । यदि ये बातें जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वर्णन कर रहे हैं किसी अटकल-पच्चू करने वाले की बातें होतीं तो अटकल-पच्चू करने वाले तो सारे तबाह हो गए । परन्तु यह रसूल सल्ल. सदा के लिए अमर है ।

यह वाणी सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है । आकाश से बीज बिखेरने वालियों के वर्णन के पश्चात इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि तुम्हारी जीविका के सब साधन

आकाश से उतरते हैं । परन्तु एक आकाशीय जीविका वह भी होती है जिसके भेद को मनुष्य नहीं समझ सकता और फ़रिश्तों को भी वही जीविका दी जाती है । अतः हज़रत इब्राहीम अलै. के अतिथियों का वर्णन किया जो फ़रिश्ते थे और मनुष्य के रूप में उन के सम्मुख प्रकट हुए थे । जब उनके सामने हज़रत इब्राहीम अलै. ने वह उत्तम भोजन परोसा जो मनुष्य के जीवन का सहारा बनता है तो उन्होंने उसके खाने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनको प्राप्त होने वाला भोजन भिन्न प्रकार का था । हज़रत इब्राहीम अलै. के वर्णन के पश्चात और बहुत से पिछले नबियों का भी वर्णन किया गया ।

इसके पश्चात एक ऐसी आयत है जो आकाश के निरंतर विस्तार की ओर अग्रसर होने का वर्णन करती है जिस की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में कोई मनुष्य कल्पना तक नहीं कर सकता था । वर्तमान युग के खगोल शास्त्रियों ने यह वास्तविकता जान ली है कि आकाश सदा विस्तार की ओर अग्रसर रहता है । यहाँ तक कि एक निर्धारित समय तक पहुँचने के बाद फिर एक केन्द्र की ओर लौट आएगा ।

भोजन के विषयवस्तु को इस रंग में भी प्रस्तुत किया कि समस्त मनुष्य और फ़रिश्ते किसी न किसी प्रकार के भोजन पर निर्भर हैं । केवल एक सत्ता है जिसको किसी प्रकार के भोजन की आवश्यकता नहीं और वह अल्लाह की सत्ता है जो सब का अन्नदाता है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ②

क़सम है (बीज) बिखेरने वालियों की ।2।

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ③

फिर भार उठाने वालियों की ।3।

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ④

फिर द्रुत गति से चलने वालियों की ।4।

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ⑤

फिर कोई महत्वपूर्ण विषय को बाँटने वालियों की ।5।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ⑥

(वह) जिसका तुम को वचन दिया जाता है, नि:सन्देह वही सत्य है।6।

وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ⑦

और प्रतिफल दिवस अवश्य हो कर रहने वाला है ।7।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ⑧

क़सम है रास्तों वाले आकाश की ।8।

اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ⑨

नि:सन्देह तुम एक मतभेद वाली बात में पड़े हुए हो ।9।

يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ⑩

उस से वही फिरा दिया जाएगा जिसका फिरा दिया जाना (निश्चित हो चुका) होगा ।10।

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ⑪

अटकल पच्चू मारने वाले विनष्ट हो गए ।11।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ⑫

जो अपनी लापरवाही में भटक रहे हैं।12।

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ⑬

वे पूछते हैं कि प्रतिफल दिवस कब होगा ? ।13।

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٤﴾

जिस दिन वे आग पर भूने जा रहे होंगे ।14।

ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٥﴾

(उनसे कहा जाएगा) अपनी शरारत का स्वाद चखो । यही है वह जिसे तुम शीघ्रतापूर्वक मांगा करते थे ।15।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٦﴾

निःसन्देह मुत्तक़ी बाग़ों और जलस्रोतों के बीच होंगे ।16।

اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ﴿١٧﴾

वे (उसे) प्राप्त कर रहे होंगे जो उनका रब्ब उन्हें प्रदान करेगा । निःसन्देह इससे पूर्व वे बहुत अच्छे कर्म करने वाले थे ।17।

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿١٨﴾

वे रात को थोड़ा ही सोया करते थे ।18।

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

और प्रातः काल में भी वे क्षमायाचना में लगे रहते थे ।19।

وَفِىْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿٢٠﴾

और उनके धन में माँगने वालों और न माँगने वाले ज़रूरतमंदों के लिए एक हक़ था ।20।

وَفِى الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿٢١﴾

और धरती में विश्वास करने वालों के लिए कई चिह्न हैं ।21।

وَفِىْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٢٢﴾

और स्वयं तुम्हारी जानों के अन्दर भी । अतः क्या तुम देखते नहीं ? ।22।

وَفِى السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٢٣﴾

और आकाश में तुम्हारी जीविका है और वह भी है जिसका तुम को वचन दिया जाता है ।23।

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿٢٤﴾

अतः आकाश और धरती के रब्ब की क़सम ! यह निःसन्देह उसी प्रकार सत्य है जैसे तुम (परस्पर) बातें करते हो ।24। (रुकू $\frac{1}{18}$)

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٥﴾

क्या तुझ तक इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों का समाचार पहुँचा है ? ।25।

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٦﴾

जब वे उसके पास आए तो उन्होंने कहा, सलाम ! उसने भी कहा सलाम ! (और मन में कहा) अजनबी लोग (प्रतीत होते हैं) ।26।

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۙ﴿٢٧﴾

वह शीघ्रता पूर्वक अपने घर वालों की ओर गया और एक मोटा ताज़ा (भुना हुआ) बछड़ा ले आया ।27।

فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٨﴾

फिर उसे उनके सामने पेश किया (और) पूछा, क्या तुम खाओगे नहीं ? ।28।

فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٢٩﴾

तब उसने उनकी ओर से भय का आभास किया, उन्होंने कहा डर नहीं । और उन्होंने उसे एक ज्ञानवान पुत्र का शुभ-समाचार दिया ।29।

فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٣٠﴾

इस पर उसकी पत्नी आवाज़ ऊँची करती हुई आगे बढ़ी आर अपने चेहरे पर हाथ मारा और कहा, (मैं) एक बांझ बुढ़िया हूँ ।30।

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣١﴾

उन्होंने कहा, इसी प्रकार (होगा जो) तेरे रब्ब ने कहा है । निःसन्देह वही परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।31।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٢﴾

उस (अर्थात इब्राहीम) ने कहा, हे दूतो ! तुम्हारा क्या उद्देश्य है ? ।32।

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٣﴾

उन्होंने कहा, हमें नि:सन्देह एक अपराधी जाति की ओर भेजा गया है।33।

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٤﴾

ताकि हम मिट्टी के बने हुए कंकर उनकी ओर चलाएँ ।34।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٥﴾

जो चिह्नित किये गये हैं तेरे रब्ब के समक्ष, अपव्यय करने वालों के लिए।35।

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

फिर हमने जो उसमें मोमिन थे उन सबको निकाल लिया ।36।

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

अत: हमने उसमें आज्ञाकारियों का केवल एक घर पाया ।37।

وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٨﴾

और (शिक्षा स्वरूप) उन लोगों के लिए उसमें एक बड़ा चिह्न छोड़ दिया जो पीड़ाजनक अज़ाब से डरते हैं ।38।

وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٩﴾

और मूसा (की घटना) में भी (ऐसा ही चिह्न था) जब हमने उसे एक स्पष्ट प्रमाण के साथ फ़िरऔन की ओर भेजा ।39।

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٤٠﴾

अत: वह अपने सरदारों समेत विमुख हुआ और कहा, (यह व्यक्ति) केवल एक जादूगर अथवा पागल है ।40।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤١﴾

तब हमने उसे और उसकी सेना को पकड़ लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह धिक्कार के योग्य था ।41।

وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤٢﴾

और आद (जाति) में भी (एक चिह्न था) । जब हमने उन पर एक विनाशकारी हवा चलाई ।42।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٣﴾

जिस वस्तु पर से वह गुज़रती थी उसका कुछ शेष नहीं छोड़ती थी और उसे गली-सड़ी वस्तु की भाँति कर देती थी ।43।

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾

और समूद (जाति) में भी (एक चिह्न था) । जब उन्हें कहा गया कि एक समय तक लाभ उठा लो ।44।

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٥﴾

अत: उन्होंने अपने रब्ब के आदेश की अवमानना की तो उन्हें आकाशीय बिजली ने आ पकड़ा और वे देखते रह गए ।45।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ﴿٤٦﴾

तब उनमें खड़े होने का भी सामर्थ्य नहीं रहा । और न ही वे प्रतिशोध लेने की शक्ति रखते थे ।46।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فٰسِقِينَ ﴿٤٧﴾

और नूह की जाति भी इससे पूर्व (एक सीख भरी चिह्न थी) नि:सन्देह वे अवज्ञाकारी लोग थे ।47। (रुकू $\frac{2}{1}$)

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنٰهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٨﴾

और हमने आकाश को एक विशेष शक्ति से बनाया और नि:सन्देह हम (इसे) विस्तार देने वाले हैं ।48।*

وَالْأَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُونَ ﴿٤٩﴾

और धरती को हमने समतल बना दिया। अत: (हम) क्या ही अच्छा बिछौना बनाने वाले हैं ।49।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

और हर चीज़ में से हमने जोड़ा-जोड़ा पैदा किया ताकि तुम उपदेश प्राप्त कर सको ।50।

---

* इस आयत में अरबी शब्द **बिऐदिन** (विशेष शक्ति) इस ओर संकेत करता है कि अल्लाह तआला ने आकाश को बनाते हुए उसमें असंख्य लाभ रख दिए हैं । साथ ही यह वर्णन भी कर दिया कि इसे हम खूब विस्तृत करते चले जाएँगे । इस आयत का यह भाग कि ''हम उसे और विस्तार देते चले जाएँगे'' एक महान चमत्कारिक वाक्य है जिसे अरब का एक निरक्षर नबी अपनी ओर से कदापि वर्णन नहीं कर सकता था । यह विषय वैज्ञानिकों ने आधुनिक उपकरणों की सहायता से अब ज्ञात किया है कि यह ब्रह्मांड हर पल विस्तार की ओर अग्रसर है । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में तो प्रत्येक मनुष्य को यह ब्रह्मांड एक जड़ और स्थिर वस्तु प्रतीत होता था ।

فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۝۵۱

अतः शीघ्रता पूर्वक अल्लाह की ओर दौड़ो । निःसन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हें एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ ।51।

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۝۵۲

और अल्लाह के साथ कोई और उपास्य न बनाओ । निःसन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हें एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ ।52।

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝۵۳

इसी प्रकार इनसे पहले लोगों की ओर भी जब भी कोई रसूल आया तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर अथवा पागल है ।53।

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝۵۴

क्या इसी (बात) का वे एक दूसरे को उपदेश देते हैं ? बल्कि ये उद्दण्डी लोग हैं ।54।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۝۵۵

अतः इनसे मुँह फेर ले । तू कदापि किसी धिक्कार का पात्र नहीं ।55।

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝۵۶

और तू उपदेश करता चला जा । अतः निःसन्देह उपदेश मोमिनों को लाभ पहुँचाता है ।56।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ۝۵۷

और मैंने जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया कि वे मेरी उपासना करें ।57।*

مَآ اُرِیْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِیْدُ اَنْ یُّطْعِمُوْنِ ۝۵۸

मैं उनसे कोई जीविका नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे भोजन करायें ।58।

---

* इस आयत में जिन्नों व मनुष्यों से अभिप्राय बड़े और छोटे लोग तथा बड़ी और छोटी जातियाँ हैं । दोनों की उत्पत्ति का उद्देश्य अल्लाह तआला की उपासना करना है । यदि जिन्न से अभिप्राय सर्वसाधारण में समझे जाने वाले जिन्न हों तो फिर उनको भी तो उपासना का प्रतिफल मिलना चाहिए । अर्थात उनको स्वर्ग में जाने का शुभ-समाचार मिलना चाहिए । परन्तु जिन्नों के स्वर्ग में जाने का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता ।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝٥٩

नि:सन्देह अल्लाह ही है जो बहुत जीविका प्रदान करने वाला, बड़ा शक्तिशाली और उत्तम गुणों वाला है ।59।

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ۝٦٠

अतः उन लोगों के लिए जिन्होंने अत्याचार किया निश्चित रूप से अत्याचार के प्रतिफल का वैसा ही भाग है जैसा कि उनके समकर्मा व्यक्तियों का था । अतः चाहिए कि वे मुझ से (उसकी) मांग करने में शीघ्रता न करें ।60।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝٦١ ع ٣ ١٤ ٢

अतः जिन्होंने इनकार किया, उनका उस दिन सर्वनाश होगा जिसका उन्हें वचन दिया जाता है ।61। (रुकू $\frac{3}{2}$)

52- सूरः अत-तूर

यह सूरः आरम्भिक मक्की सूरतों में से है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 50 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी ईश्वरीय साक्ष्यों से किया गया है । सबसे पहले तो तूर पर्वत का साक्ष्य है, जिस के ऊपर हज़रत मूसा अलै. को उनसे श्रेष्ठतर रसूल अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़बर दी गई थी । फिर एक ऐसी लिखी हुई पुस्तक की क़सम खाई गई है जो चमड़े के खुले पन्नों पर लिखी हुई है । क्योंकि प्राचीन काल में चमड़े पर लिखने का प्रचलन था इसलिए वह पुस्तक चमड़े के पन्नों पर लिखी हुई बताई गई है । इस पुस्तक में ही बैतुल्लाह (खाना का'बा) के बारे में भविष्यवाणी उल्लेखित है जो मुत्तक़ी व्यक्तियों और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होगा । एक बार फिर ऊँची छत वाले आकाश को तथा ठाठें मारते हुए समुद्र को भी साक्षी ठहराया गया है, जिन दोनों के बीच पानी को सेवा पर लगा दिया गया है जो जीवन का सहारा बनता है ।

इन सब ईश्वरीय साक्ष्यों का उल्लेख करने के पश्चात अल्लाह तआला यह चेतावनी देता है कि जिस दिन आकाश में भारी कंपन होगी और पर्वतों समान बड़ी-बड़ी सांसारिक शक्तियाँ उखाड़ फेंकी जाएँगी और समग्र जगत में बिखर जाएँगी, उस दिन झुठलाने वालों का इस संसार ही में बहुत बड़ा विनाश होगा ।

इसके पश्चात अपराधियों को नरक की चेतावनी दी गई है और मुत्तक़ियों को स्वर्गों का शुभ-समाचार प्रदान किया गया है । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निरंतर उपदेश करते चले जाने का आदेश देते हुए अल्लाह तआला इस बात की गवाही देता है कि हे रसूल ! न तेरी बातें ज्योतिषियों की बातों की भाँति ढकोसले हैं और न तू पागल है क्योंकि तेरी अपनी वाणी और तुझ पर उतरने वाली वाणी इन दोनों बातों को पूर्णतया नकारती हैं । इस कारण अपने रब्ब का आदेश पहुँचाने हेतु उसी के लिए धैर्य धर । तू हमारी दृष्टि के सामने है अर्थात हर समय हमारी सुरक्षा में है । और अल्लाह तआला की प्रशंसा उसके गुणगान के साथ करता रह । चाहे तू दिन के समय उपासना के लिए खड़ा हो अथवा रात्रि के समय उपासना के लिए खड़ा हो और जब सितारे डूब चुके हों तब भी अपने रब्ब की उपासना में लीन रह ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَالطُّوْرِ ۝٢

तूर की क़सम ।2।

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۝٣

और एक लिखी हुई पुस्तक की ।3।

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۝٤

(जो) चमड़े के खुले पन्नों में (है) ।4।

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۝٥

और आबाद घर की (क़सम) ।5।

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۝٦

और ऊँची की हुई छत की ।6।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۝٧

और ठाठें मारते हुए समुद्र की ।7।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٨

नि:सन्देह तेरे रब्ब का अज़ाब आ कर रहने वाला है ।8।

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۝٩

कोई उसे टालने वाला नहीं ।9।

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۝١٠

जिस दिन आकाश भीषण रूप से कांपने लगेगा ।10।

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١١

और पर्वत बहुत अधिक चलने लगेंगे।11।

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٢

अत: सर्वनाश हो उस दिन झुठलाने वालों का ।12।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۝١٣ وقف لازم

जो निरर्थक बातों में पड़कर क्रीड़ामग्न रहते हैं ।13।

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٤

जिस दिन वे बलपूर्वक नरकाग्नि की ओर धकेल दिए जाएँगे ।14।

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِىۡ كُنۡتُمۡ بِهَا تُكَذِّبُوۡنَ ۞١٥

(उनसे कहा जाएगा) यही वह अग्नि है जिसे तुम झुठलाया करते थे ।15।

اَفَسِحۡرٌ هٰذَاۤ اَمۡ اَنۡتُمۡ لَا تُبۡصِرُوۡنَ‌ۚ ۞١٦

अतः क्या यह जादू है अथवा तुम सूझ-बूझ से काम नहीं लेते थे ? ।16।

اِصۡلَوۡهَا فَاصۡبِرُوۡۤا اَوۡ لَا تَصۡبِرُوۡا‌ ۚ سَوَآءٌ عَلَيۡكُمۡ‌ ؕ اِنَّمَا تُجۡزَوۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۞١٧

इसमें प्रविष्ट हो जाओ । फिर धैर्य करो अथवा न करो तुम्हारे लिए एक समान है। तुम को केवल उसी का प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम कर्म किया करते थे ।17।

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّنَعِيۡمٍۙ ۞١٨

निःसन्दह मुत्तक़ी स्वर्गों और नेमतों में होंगे ।18।

فٰكِهِيۡنَ بِمَاۤ اٰتٰهُمۡ رَبُّهُمۡ‌ ۚ وَوَقٰهُمۡ رَبُّهُمۡ عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ ۞١٩

उस पर प्रसन्न होते हुए जो उनके रब्ब ने उन्हें प्रदान किया । और उनका रब्ब उनको नरक के अज़ाब से बचाएगा ।19।

كُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا هَنِيۡٓـئًا ۢ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَۙ ۞٢٠

स्वाद ले ले कर खाओ और पीओ, उन कर्मों के फल स्वरूप जो तुम किया करते थे ।20।

مُتَّكِـــِٕيۡنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصۡفُوۡفَةٍ‌ ۚ وَزَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِيۡنٍ ۞٢١

वे पंक्तिबद्ध बिछाए हुए पलंगों पर टेक लगाए बैठे होंगे । और हम उन्हें बड़ी आँखों वाली कुँवारी कन्याओं के साथी बना देंगे ।21।

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَاتَّبَعَتۡهُمۡ ذُرِّيَّتُهُمۡ بِاِيۡمَانٍ اَلۡحَقۡنَا بِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ وَمَاۤ اَلَتۡنٰهُمۡ مِّنۡ عَمَلِهِمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ‌ ؕ كُلُّ امۡرِیءٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيۡنٌ ۞٢٢

और वे लोग जो ईमान लाए और उनकी संतान ने भी ईमान के फलस्वरूप उनका अनुसरण किया, उनके साथ हम उनकी संतान को भी मिला देंगे । जबकि उनके कर्मों में से उन्हें कुछ भी कम न देंगे । प्रत्येक व्यक्ति अपनी कमाए हुए का बंधक है ।22।

وَاَمۡدَدۡنٰهُمۡ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحۡمٍ مِّمَّا

और हम उनकी सहायता करेंगे । और हम उन्हें उसमें से एक प्रकार का फल

يَشْتَهُوْنَ ۝٢٣

और एक प्रकार का माँस प्रदान करेंगे जिसकी वे इच्छा करेंगे ।23।

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ۝٢٤

वे उस (स्वर्ग) में एक दूसरे से (नाज़ उठाते हुए) प्याले छीनेंगे । उस में न कोई अशिष्टता होगी और न ही पाप की बात होगी ।24।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ۝٢٥

और उनके नवयुवक जो मानो ढाँप कर रखे हुए मोतियों की भाँति (दमक रहे) होंगे, उनके गिर्द घूमेंगे ।25।*

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ۝٢٦

और उनमें से कुछ, कुछ दूसरों की ओर परस्पर एक-दूसरे का हाल-चाल पूछते हुए ध्यान केन्द्रित करेंगे ।26।

قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ۝٢٧

वे कहेंगे, नि:सन्देह हम तो इससे पूर्व अपने घर वालों में बहुत डरे-डरे रहते थे ।27।

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ۝٢٨

फिर अल्लाह ने हम पर कृपा की और हमें झुल्सा दने वाली लपटों के अज़ाब से बचाया ।28।

اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ۝٢٩ ع

नि:सन्देह हम पहले भी उसी को पुकारा करते थे । निश्चित रूप से वही बहुत सद्-व्यवहार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।29। (रुकू $\frac{1}{3}$)

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ۝٣٠

अतएव तू उपदेश करता चला जा । अत: अपने रब्ब की नेमत के फलस्वरूप तू न तो ज्योतिषी है और न पागल है ।30।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ۝٣١

क्या वे कहते हैं कि यह एक कवि है जिसके बारे में हम समय के उलटफेर की प्रतीक्षा कर रहे हैं ? ।31।

---

* इस आयत में भी स्वर्ग की नेमतों का उपमा के रूप में वर्णन है । उन स्वर्गनिवासियों की सेवा के लिए ऐसे किशोर नियुक्त होंगे जो ''मानो ढके हुए मोती'' हैं । इन शब्दों ने प्रमाणित कर दिया कि यह सारा वाक्य एक उपमा के रूप में है ।

قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِیْنَ ﴿٣٢﴾

तू कह दे कि प्रतीक्षा करते रहो। निश्चित रूप से मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ।32।

اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَاۤ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٣﴾

क्या उनके विक्षिप्त विचार उन्हें इस का आदेश देते हैं अथवा वे हैं ही उद्दण्डी लोग ?।33।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٤﴾

क्या वे कहते हैं कि उसने उसे मिथ्या रूप से गढ़ लिया है ? वास्तविकता यह है कि वे (किसी प्रकार) ईमान लाने वाले नहीं हैं।34।

فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖۤ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٣٥﴾

अतः यदि वे सच्चे हैं तो चाहिए कि इस जैसी कोई वाणी लाकर दिखाएँ।35।

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَیْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٦﴾

क्या वे बिना किसी चीज़ के (अपने आप) पैदा कर दिए गए अथवा वे ही स्रष्टा हैं।36।

اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

क्या उन्होंने ही आकाशों और धरती की सृष्टि की है ? वास्तविकता यह है कि वे (किसी प्रकार) विश्वास नहीं करेंगे।37।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٨﴾

क्या उनके पास तेरे रब्ब के ख़ज़ाने हैं अथवा वे (उन पर) दारोग़े हैं ?।38।

اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٩﴾

क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस में (चढ़ कर) वे बातें सुनते हैं ? अतः चाहिए कि उनमें से सुनने वाला कोई प्रबल (और) स्पष्ट प्रमाण तो पेश करे।39।

اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٤٠﴾

क्या उस (अर्थात् अल्लाह) के लिए तो पुत्रियाँ और तुम्हारे लिए पुत्र हैं?।40।

أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤١﴾

क्या तू उनसे कोई प्रतिफल मांगता है जिसके परिणाम स्वरूप वे चट्टी के बोझ तले दबा दिए गए हैं ? ।41।

أَمْ عِندَهُمُ ٱلْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤٢﴾

अथवा क्या उनके पास अदृश्य (का ज्ञान) है, जिसे वे लिखते हैं ? ।42।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ هُمُ ٱلْمَكِيدُونَ ﴿٤٣﴾

क्या वे कोई चाल चलना चाहते हैं? अतः जिन लोगों ने इनकार किया उन्हीं के विरुद्ध चाल चली जाएगी।43।

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ ٱللَّهِ ۚ سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٤﴾

क्या उनके लिए अल्लाह के सिवा भी कोई उपास्य है ? पवित्र है अल्लाह उससे जो वे शिर्क करते हैं ।44।

وَإِن يَرَوْا۟ كِسْفًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ سَاقِطًا يَقُولُوا۟ سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٥﴾

और यदि वे आकाश से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखेंगे तो कहेंगे कि (यह) एक परत दर परत बादल है।45।

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَٰقُوا۟ يَوْمَهُمُ ٱلَّذِى فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٦﴾

अतः तू उन्हें छोड़ दे । यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लेंगे जिसमें उन पर बिजली गिराई जाएगी ।46।

يَوْمَ لَا يُغْنِى عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٧﴾

जिस दिन उनका कोई उपाय उनके कुछ काम नहीं आएगा और न उन्हें सहायता दी जाएगी ।47।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٨﴾

और निःसन्देह वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया, उनके लिए उसके अतिरिक्त (और) भी अज़ाब होगा । परन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं।48।

وَٱصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا

और अपने रब्ब के आदेश के लिए धैर्य धर । निश्चित रूप से तू हमारी आँखों के सामने (रहता) है । और जब तू उठता है अपने रब्ब की

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۙ﴿٤٩﴾	प्रशंसा के साथ (उसका) गुणगान कर ।49।
وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٥٠﴾ ع	और रात को भी तथा सितारों के अस्त होने के बाद भी उसकी महिमागान कर ।50। (रुकू $\frac{2}{4}$)

53- सूर: अन-नज्म

यह सूर: हब्शा (पूर्वी अफ्रीकी देश) की ओर मुसलमानों की हिजरत के तुरंत पश्चात नुबुव्वत (प्राप्ति) के पांचवें वर्ष अवतरित हुई थी। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 63 आयतें हैं।

इस सूर: का नाम **अन-नज्म** (सितारा) है। पिछली सूर: के अन्त पर भी सितारों के अस्त होने का वर्णन है। इसके पश्चात सूर: के विषयवस्तु को मुश्रिकों की ओर फेरा गया है और जिस सितारा की मुश्रिक उपासना किया करते थे उसके गिर जाने की भविष्यवाणी की गई और वर्णन किया कि यह बात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ओर से नहीं गढ़ी, क्योंकि आप सल्ल. कभी भी अपने मनोवेग से कोई बात नहीं करते।

इससे पूर्व सूर: अज़-ज़ारियात के अन्त पर जिस अल्लाह को **बड़ा शक्तिशाली** और **बहुत जीविका प्रदान कारी** कहा गया, उसी अल्लाह के लिए इस सूर: में **शदीदुल कुवा** और **ज़ू मिर्रतिन** कहा गया। अर्थात जो उत्तम गुणों वाला और अनुपम विवेकशील है।

इसके पश्चात मे'राज की घटना का वर्णन आरम्भ हो जाता है जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब्ब के निकट हुए और अल्लाह तआला आप सल्ल. पर कृपा के साथ झुक गया और वह दो धनुषों की एक प्रत्यंचा की भाँति हो गया। ये बहुत असाधारण आयतें हैं जिनकी विभिन्न रंगों में व्याख्या का प्रयत्न किया गया है। नि:सन्देह इस घटना में किसी प्रत्यक्ष आकाश का उल्लेख नहीं है बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर बीतने वाली एक असाधारण घटना का वर्णन है। यह एक ऐसा क़श्फ़ (दिव्य-दर्शन) है जिसका कोई उदाहरण किसी अन्य नबी के जीवन में नहीं मिलता। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दिल अल्लाह के प्रेम में क्षितिज की ओर ऊँचा हुआ और अल्लाह अपने भक्त के प्रेम में उसके दिल पर उतर आया। आयतांश **क़ा ब क़ौसेन** (दो धनुष की प्रत्यंचा) से यह अभिप्राय है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह प्रत्यंचा बन गए जो अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धनुषों के मध्य एक ही था। अर्थात अल्लाह तआला के धनुष से चलने वाला वाण वही था जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धनुष से चलता था। यह व्याख्या पवित्र कुरआन की आयत **जब तूने (उनकी ओर कंकर) फेंके तो तूने नहीं फेंके बल्कि अल्लाह ने फेंके।** (सूर: अन्फ़ाल आयत : 18) के अनुरूप है। इस कारण इसे अपनी मतानुसार की गई व्याख्या कदापि

नहीं कही जा सकती ।

फिर मे'राज की यात्रा के सशरीर होने को पूर्णतया नकार दिया गया जब कहा **मा कज़बल फुआदु मा रअ** (आयत 12) अर्थात शारीरिक आँखों ने अल्लाह को नहीं देखा बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल की आँखों ने जिस अल्लाह को देखा उस दिल ने उसके वर्णन में कोई झूठ नहीं बोला ।

इसके बाद एक बेरी का उल्लेख है जो अल्लाह और उसके भक्तों के मध्य सीमाओं को पृथक करने वाली एक बाड़ की भाँति है । वास्तव में पहले भी अरबों में यही प्रचलन था और आज भी यह प्रचलन मिलता है कि जब एक ज़मीनदार के भू-क्षेत्र की सीमा समाप्त होती है तो दूसरे ज़मीनदार के भू-क्षेत्र और उसके भू-क्षेत्र के बीच सरहद के रूप में काँटेदार बेरियाँ लगा दी जाती हैं । अतः आकाश पर कदापि कोई बेरी का वृक्ष नहीं उगा हुआ था कि जिससे परे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं जा सकते थे । यह तो एक अत्यन्त हास्यास्पद व्याख्या है जो मध्यकाल के कुछ व्याख्याकारों ने की है । तात्पर्य केवल इतना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस उच्च दर्जा तक अल्लाह तआला की निकटता पा गए जिसके उपर किसी भक्त की पहुँच संभव नहीं थी । क्योंकि इसके बाद फिर अल्लाह तआला की तनज़िही सिफ़ात (वे गुण जो अल्लाह के सिवा किसी और को प्राप्त न हो सकें) का क्षेत्र आरम्भ हो जाता है ।

इसके पश्चात काफिरों के काल्पनिक उपास्यों का वर्णन करते हुए कहा कि उनके अस्तित्व का कोई प्रमाण उनके पास नहीं है । वे केवल अटकल पच्चू करते हैं । अतः यहीं तक उनका समस्त ज्ञान सीमित है ।

यहाँ अरबी शब्द **शिअरा** से अभिप्राय सितारा है, जिसे मुश्रिकों ने उपास्य बना रखा था ।

इसके बाद अतीत की मुश्रिक जातियाँ शिर्क के परिणामस्वरूप जिस बुरे अंत को पहुँचीं, शिक्षा स्वरूप उनका संक्षिप्त विवरण उल्लेख किया गया है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَّ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
وَالنَّجۡمِ اِذَا هَوٰى ②	क़सम है सितारे की, जब वह गिर जाएगा ।2।
مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمۡ وَمَا غَوٰى ③	तुम्हारा साथी न तो पथभ्रष्ट हुआ और न ही असफल रहा ।3।
وَمَا يَنۡطِقُ عَنِ الۡهَوٰى ④	और वह मन की इच्छा से बात नहीं करता ।4।
اِنۡ هُوَ اِلَّا وَحۡىٌ يُّوۡحٰى ⑤	यह तो केवल एक वह्इ है जो उतारी जा रही है ।5।
عَلَّمَهٗ شَدِيۡدُ الۡقُوٰى ⑥	उसे दृढ़ शक्तियों के स्वामी ने सिखाया है ।6।
ذُوۡ مِرَّةٍ ؕ فَاسۡتَوٰى ⑦	(जो) परम विवेकशील है । फिर वह अधिष्ठित हुआ ।7।
وَهُوَ بِالۡاُفُقِ الۡاَعۡلٰى ⑧	जबकि वह उच्चतम क्षितिज पर (स्थित) था ।8।
ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ⑨	फिर वह निकट हुआ । फिर वह नीचे उतर आया ।9।
فَكَانَ قَابَ قَوۡسَيۡنِ اَوۡ اَدۡنٰى ⑩	अत: वह दो धनुषों की प्रत्यंचा की भाँति अथवा उससे भी निकटतम हो गया ।10।
فَاَوۡحٰۤى اِلٰى عَبۡدِهٖ مَاۤ اَوۡحٰى ⑪	अत: उसने अपने भक्त की ओर वह वह्इ किया जो वह्इ करना (चाहता) था ।11।
مَا كَذَبَ الۡفُؤَادُ مَا رَاٰى ⑫	और (उसके) दिल ने झूठा वर्णन नहीं किया जो उसने देखा ।12।
اَفَتُمٰرُوۡنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ⑬	अत: क्या तुम उससे इस (बात) पर झगड़ते हो जो उसने देखा ? ।13।

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿۱۴﴾

जबकि वह उसे एक और अवस्था में भी देख चुका है ।14।

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿۱۵﴾

अन्तिम सीमा पर स्थित बेरी के पास।15।

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿۱۶﴾

उसके निकट ही शरण देने वाला स्वर्ग है ।16।

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿۱۷﴾

जब बेरी को उसने ढाँप लिया जो (ऐसे समय में) ढाँप लिया (करती है) ।17।

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿۱۸﴾

न दृष्टि भ्रान्त हुई और न सीमा से (आगे) बढ़ी ।18।

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿۱۹﴾

नि:सन्देह उसने अपने रब्ब के चिह्नों में से सबसे बड़ा चिह्न देखा ।19।

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿۲۰﴾

अत: क्या तुमने लात और उज़्ज़ा को देखा है ? ।20।

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿۲۱﴾

और तीसरी मनात को भी जो (उनके) अतिरिक्त है ? ।21।*

اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿۲۲﴾

क्या तुम्हारे लिए तो पुत्र हैं और उसके लिए पुत्रियाँ हैं ? ।22।

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿۲۳﴾

तब तो यह एक बहुत खोटा विभाजन हुआ ।23।

اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿۲۴﴾

यह तो केवल नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने उनको दे रखे हैं । अल्लाह ने उनके समर्थन में कोई प्रबल तर्क नहीं उतारा । वे केवल भ्रम का अनुसरण कर रहे हैं और उसका (भी) जो मन चाहते हैं । जबकि उनके रब्ब की ओर से निश्चित रूप से उनके पास हिदायत आ चुकी है ।24।

اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿۲۵﴾

क्या मनुष्य जो इच्छा करता है वह उसे मिल जाया करती है ? ।25।

* आयत 20, 21 : लात, उज़्ज़ा, मनात - वे मूर्तियाँ जिनकी इस्लाम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे ।

فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ۝٢٦ ع

अत: अन्त और आदि दोनों ही अल्लाह के वश में हैं ।26। (रुकू $\frac{1}{5}$)

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ۝٢٧

और आकाशों में कितने ही फ़रिश्ते हैं कि उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती । परन्तु सिवाए उसके कि जिसे अल्लाह अपनी इच्छा से अनुमति दे और उस पर प्रसन्न हो जाए ।27।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ۝٢٨

नि:सन्देह वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते (उन ही में से हैं जो) फ़रिश्तों को हठपूर्वक स्त्रियों वाले नाम देते हैं ।28।

وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۚ ۝٢٩

हालाँकि उन्हें उसका कुछ भी ज्ञान नहीं । वे भ्रम के अतिरिक्त किसी चीज़ का अनुसरण नहीं करते । और नि:सन्देह भ्रम सत्य के मुक़ाबले पर कुछ भी काम नहीं आता ।29।

فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ؕ ۝٣٠

अत: तू उससे मुँह फेर ले जो हमारे स्मरण से विमुख होता है और सांसारिक जीवन के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता ।30।

ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۝٣١

यही उनके ज्ञान की कुल पूँजी है । नि:सन्देह तेरा रब्ब ही है जो सबसे अधिक उसे जानता है जो उसके रास्ते से भटक गया । और वह सबसे अधिक उसे जानता है जो हिदायत पा गया ।31।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِىَ

और अल्लाह ही का है जो आकाशों में है और जो धरती में है । उसी का परिणाम होता है कि वह उन लोगों को जिन्होंने बुराइयाँ कीं उनके कर्म का प्रतिफल देता है और उनको उत्तम

اَلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۝٣٢

प्रतिफल देता है जो उत्तम कर्म करते थे ।32।

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝٣٣ ع

(ये अच्छे कर्मों वाले) वे लोग हैं जो सिवाए मामूली भूल-चूक के बड़े पापों और अश्लीलताओं से बचते हैं । नि:सन्देह तेरा रब्ब अत्यन्त क्षमाशील है। वह तुम्हें सबसे अधिक जानता था जब उसने धरती से तुम्हें विकसित किया और जब तुम अपनी माओं के गर्भ में केवल भ्रूण की अवस्था में थे । अत: अपने आपको को (यूँ ही) पवित्र न ठहराया करो। वही है जो सबसे अधिक जानता है कि मुत्तक़ी कौन है ।33। (रुकू $\frac{2}{6}$)

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ۝٣٤

क्या तूने ऐसे व्यक्ति पर ध्यान दिया है जिसने पीठ फेर ली ।34।

وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ۝٣٥

और थोड़ा सा दिया और हाथ रोक लिया ।35।

اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ۝٣٦

क्या उसके पास अदृश्य का ज्ञान है जिसके परिणाम स्वरूप वह वास्तविकता को देख रहा है ? ।36।

اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ۝٣٧

अथवा क्या उसे उसकी सूचना नहीं दी गई जो मूसा के ग्रन्थों में है ? ।37।

وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ۝٣٨

और इब्राहीम (के ग्रन्थों में भी) जिसने प्रतिज्ञा को पूरा किया ।38।

اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۝٣٩

कि कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी ।39।

وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ۝٤٠

और यह कि मनुष्य के लिए उसके अतिरिक्त कुछ नहीं जो उसने प्रयत्न किया हो ।40।

وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ۝٤١

और यह कि उसका प्रयत्न अवश्य दृष्टि में रखा जाएगा ।41।

ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۙ﴿٤٢﴾

फिर उसे उसका भरपूर प्रतिफल दिया जाएगा ।42।

وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۙ﴿٤٣﴾

और यह कि अन्ततः तेरे रब्ब की ओर ही पहुँचना है ।43।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۙ﴿٤٤﴾

और यह कि वही है जो हंसाता है और रुलाता भी है ।44।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۙ﴿٤٥﴾

और यह कि वही है जो मारता है और जीवित भी करता है ।45।

وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۙ﴿٤٦﴾

और यह कि वही है जिसने जोड़ा पैदा किया, अर्थात पुरुष और स्त्री ।46।

مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۠﴿٤٧﴾

वीर्य से, जब वह डाला जाता है ।47।

وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۙ﴿٤٨﴾

और यह कि दोबारा उठाना उसी के ज़िम्मे है ।48।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۙ﴿٤٩﴾

और यह कि वही है जो धनवान बनाता है और ख़ज़ाने प्रदान करता है ।49।

وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۙ﴿٥٠﴾

और यह कि वही है जो शिअ्रा (सितारे) का रब्ब है ।50।

وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادَا ۨ الْاُوْلٰى ۙ﴿٥١﴾

और यह कि वही है जिसने प्रथम आद (जाति) को विनष्ट किया ।51।

وَثَمُوْدَاۡ فَمَآ اَبْقٰى ۙ﴿٥٢﴾

और समूद (जाति) को भी । फिर (उनका) कुछ न छोड़ा ।52।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ؕ﴿٥٣﴾

और इससे पहले नूह की जाति को भी। नि:सन्देह वही लोग सबसे अधिक अत्याचारी और सबसे अधिक उद्दण्डी थे ।53।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۙ﴿٥٤﴾

और उलट-पुलट हो जाने वाली बस्तियों को भी उसने दे मारा ।54।

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۚ﴿٥٥﴾

फिर उन्हें उस चीज़ ने ढाँप लिया जो (ऐसे समय) ढाँप लिया (करती है) ।55।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ۝٥٦

अतः तू अपने रब्ब की किन-किन नेमतों के बारे में वाद-विवाद करेगा? ।56।

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ۝٥٧

यह पहले की सतर्कवाणियों की भाँति एक सतर्कवाणी है ।57।*

اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۝٥٨

निकट आने वाली निकट आ चुकी है ।58।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ۝٥٩

अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध उसे कोई टालने वाली नहीं है ।59।

اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۝٦٠

अतः क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो ? ।60।

وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۝٦١

और हंसते हो और रोते नहीं ? ।61।

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ۝٦٢

और तुम तो असावधान लोग हो ।62।

فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۝٦٣

अतः अल्लाह के समक्ष सजदः में गिर जाओ और (उसी की) उपासना करो ।63। (रुकू $\frac{3}{7}$)

* इस अर्थ के लिए देखें 'अल मुन्जिद'।

54- सूरः अल-क़मर

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 56 आयतें हैं ।

इससे पूर्ववर्ती सूरः में मुश्रिकों के कृत्रिम उपास्य **शिअरा** (सितारा) के गिरने का वर्णन है, मानो यह भविष्यवाणी की गई है कि शिर्क अपने काल्पनिक उपास्य सहित अवश्य नष्ट कर दिया जाएगा ।

अब सूरः अल् क़मर के आरम्भ ही में यह ख़बर दे दी गई कि वह घड़ी आ गई है और इस पर चन्द्रमा ने दो टुकड़े हो कर गवाही दे दी । चन्द्रमा से अभिप्राय अरब साम्राज्य-काल है । चन्द्रमा की यह व्याख्या भी स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है। अत: अब सदा के लिए मुश्रिकों का साम्राज्य-काल समाप्त हुआ और वह घड़ी आ गई जो क्रांति की घड़ी थी और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के साथ ही प्रकट होनी थी ।

इसके पश्चात एक ऐसी आयत है जिससे पूर्ण रूप से प्रमाणित होता है कि उस समय के मुश्रिकों ने कुछ क्षणों के लिए चन्द्रमा को नि:सन्देह दो भागों में बंटते हुए देखा था । इसके सम्बन्ध में व्याख्याकारों ने शुद्ध-अशुद्ध बुहत सी व्याख्याएँ की हैं । परन्तु उस वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि यदि मुश्रिकों ने चन्द्रमा के विभाजन का यह दृश्य न देखा होता तो वे तुरन्त इस घटना का इनकार कर देते । और मोमिन भी अपने ईमान से फिर जाते क्योंकि ईमान का पूरा आधार हज़रत मुहम्मद सल्ल. की सच्चाई पर था । **सिह्रुम मुस्तमिर** (चिरप्रचलित जादू) कह कर मुश्रिकों ने गवाही दे दी कि घटना तो अवश्य हुई है परन्तु जादू है । और इस प्रकार के जादू हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सदैव दिखाते रहते हैं ।

इसके पश्चात एक बार फिर अतीत की मुश्रिक जातियों का वर्णन है कि प्रत्येक ने अपने समय के रसूल को पागल ही घोषित किया था । वे एक के बाद एक अपने इनकार और अशिष्टता के परिणामस्वरूप विनष्ट कर दी गईं ।

इस सूरः में एक आयत को बार-बार दोहराया गया है कि उपदेश प्राप्त करने के लिए हमने क़ुरआन करीम को सरल बनाया है । अर्थात पिछली जातियों की दशा पर कोई किंचित विचार भी करता तो उसको सरलता पूर्वक यह बात समझ आ सकती थी कि संसार में सबसे बड़ा विनाश शिर्क ने फैलाया हुआ है । परन्तु कोई है जो उपदेश ग्रहण करने वाला हो । न पहले लोगों में से अधिकतर ने उपदेश ग्रहण किया और न बाद में आने वालों में से अधिकतर उपदेश ग्रहण करते हैं ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ②

निश्चित घड़ी निकट आ गई और चन्द्रमा फट गया ।2।

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ③

और यदि वे कोई चिह्न देखें तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, चिरप्रचलित जादू है ।3।

وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ④

और उन्होंने झुठला दिया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया (और जल्दबाजी की) हालाँकि प्रत्येक काम (अपने समय पर) होकर रहता है ।4।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ⑤

और उनके पास कुछ ख़बरें पहुँच चुकी थीं जिनमें कड़ी चेतावनी थी ।5।

حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ⑥

श्रेष्ठतम तत्वपूर्ण (बातें) थीं फिर भी चेतावनियाँ किसी काम न आयीं ।6।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ⑦ (وقف لازم)

अत: उनसे विमुख रह । (वे दख लेंगे) वह दिन जब बुलाने वाला एक अत्यन्त अप्रिय वस्तु की ओर बुलाएगा ।7।

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ⑧

उनकी दृष्टियाँ अपमानवश झुकी हुई होंगी । वे क़ब्रों से निकलेंगे मानो वे (हर ओर) बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं ।8।

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ⑨

वे बुलाने वाले की ओर दौड़ रहे होंगे । काफ़िर कह रहे होंगे कि यह बड़ा कठिन दिन है ।9।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا

उनसे पूर्व नूह की जाति ने भी झुठलाया था । अत: उन्होंने हमारे भक्त को

عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ۝١٠

झुठलाया और कहा कि एक पागल और धुतकारा हुआ है ।10।

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١١

तब उसने अपने रब्ब को पुकारा और कहा कि निश्चित रूप से में दबा हुआ हूँ। अतः मेरी सहायता कर ।11।

فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١٢

तब हमने लगातार बरसने वाले जल के रूप में आकाश के द्वार खोल दिए ।12।

وَّ فَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٣

और हमने धरती को जलस्रोतों के रूप में फाड़ दिया । अतः पानी एक ऐसी बात पर इकट्ठा हो गया जो पहले से निश्चित किया जा चुका था ।13।

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝١٤

और उसे (अर्थात नूह को) हमने तख़्तों और कीलों वाली (नौका) पर सवार किया ।14।

تَجْرِیْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝١٥

वह हमारी आँखों के सामने चलती थी । उस के प्रतिफल स्वरूप, जिसका इनकार किया गया था ।15।

وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٦

और निःसन्देह हमने उस (नौका) को एक बड़े चिह्न के रूप में छोड़ा । अतएव है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? ।16।*

---

* आयत सं. 13 से 16 : इन आयतों में हज़रत नूह अलै. की नौका की चर्चा की जा रही है, जो लकड़ी के तख़्तों और कीलों से बनी हुई थी । अर्थात हज़रत नूह अलै. के युग में सभ्यता इतनी उन्नति कर चुकी थी कि उन्हें लोहे के प्रयोग करने पर पूरी तरह निपुणता प्राप्त हो चुकी थी । और वे सम्भवतः लकड़ी के तख़्ते चीरने के लिए आरे भी बना सकते थे । इसी नौका के संबंध में कहा गया है कि यह एक चिह्न है जो उपदेश ग्रहण करने वालों के लिए ईमानवर्धक सिद्ध होगा । इससे यह सम्भावना भी उत्पन्न होती है कि हज़रत नूह अलै. की नौका को आने वाली पीढ़ियों के लिए एक चिह्न के रूप में सुरक्षित कर दिया गया है । जबकि ईसाइयों को क़ुरआन करीम के इस वर्णन की कोई जानकारी नहीं। वे फिर भी हज़रत नूह अलै. की नौका को कहीं न कहीं एक चिह्न के रूप में सुरक्षित समझते हैं और इसकी खोज हर जगह जारी है । जमाअत अहमदिय्या की ओर से भी कुछ लोग इस काम पर लगे हैं कि क़ुरआनी आयतों के संदर्भ में इस नौका को खोज निकालें । मेरी खोज के अनुसार यह नौका अन्ध महासागर की तल में सुरक्षित हो गई है और समय आने पर निकाल ली जाएगी ।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٧

अतः मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी कैसी थी ? ।17।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٨

और निःसन्देह हमने क़ुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया। अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? ।18।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٩

आद (जाति) ने भी झुठलाया था । फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी ? ।19।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۝٢٠

निःसन्देह हमने एक आकर ठहर जाने वाले अशुभ दिन में उन पर एक बहुत तीव्र गति से चलने वाली हवा भेजी ।20।

تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ۝٢١

जो लोगों को पछाड़ रही थी मानो वे जड़ों से उखड़े हुए खजूर के तने हों ।21।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝٢٢

अतः कैसा था मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी ? ।22।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٢٣ ع

और निःसन्देह हमने क़ुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया। अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? ।23। (रुकू $\frac{1}{8}$)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ۝٢٤

समूद (जाति) ने भी सतर्क करने वालों को झुठला दिया था ।24।

فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝٢٥

अतः उन्होंने कहा कि क्या हम अपने ही में से एक व्यक्ति का अनुसरण करें ? तब तो हम निःसन्देह पथभ्रष्टता और पागलपने में पड़ जाएँगे ।25।

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ۝٢٦

क्या हमारे बीच में से एक इसी व्यक्ति पर अनुस्मारक-ग्रन्थ उतारा गया ? नहीं ! बल्कि यह तो अत्यन्त झूठा (और) शेख़ी बघारने वाला है ? ।26।

سَيَعۡلَمُوۡنَ غَدًا مَّنِ الۡكَذَّابُ الۡاَشِرُ ﴿۲۷﴾

आने वाले कल को वे अवश्य जान लेंगे कि कौन है जो अत्यन्त झूठा और शेख़ी बघारने वाला है ? ।27।

اِنَّا مُرۡسِلُوا النَّاقَةِ فِتۡنَةً لَّهُمۡ فَارۡتَقِبۡهُمۡ وَاصۡطَبِرۡ ﴿۲۸﴾

नि:सन्देह उनकी परीक्षा स्वरूप हम एक ऊँटनी भेजने वाले हैं । अत: (हे सालेह !) तू उन पर दृष्टि रख और धैर्य धारण कर ।28।

وَنَبِّئۡهُمۡ اَنَّ الۡمَآءَ قِسۡمَةٌۢ بَيۡنَهُمۡ ۚ كُلُّ شِرۡبٍ مُّحۡتَضَرٌ ﴿۲۹﴾

और उन्हें बता दे कि पानी उनके बीच (समयानुसार) बांटा जा चुका है। पानी पीने की हर निर्धारित बारी के अंदर ही उपस्थित होना आवश्यक है ।29।

فَنَادَوۡا صَاحِبَهُمۡ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿۳۰﴾

तब उन्होंने अपने साथी को बुलाया । उसने (उस ऊँटनी को) पकड़ लिया और (उसकी) कूँचें काट दीं ।30।

فَكَيۡفَ كَانَ عَذَابِىۡ وَنُذُرِ ﴿۳۱﴾

फिर मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी कैसी थी ? ।31।

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوۡا كَهَشِيۡمِ الۡمُحۡتَظِرِ ﴿۳۲﴾

नि:सन्देह हमने उन पर एक ही ऊँची आवाज़ भेजी तो वे एक कटी हुई बाड़ की भाँति हो गए जो पाँवों के नीचे रौंदी जा चुकी हो ।32।

وَلَقَدۡ يَسَّرۡنَا الۡقُرۡاٰنَ لِلذِّكۡرِ فَهَلۡ مِنۡ مُّدَّكِرٍ ﴿۳۳﴾

और नि:सन्देह हमने क़ुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया। अत: क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? ।33।

كَذَّبَتۡ قَوۡمُ لُوۡطٍ بِالنُّذُرِ ﴿۳۴﴾

लूत की जाति ने भी सतर्ककारियों को झुठला दिया था ।34।

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ حَاصِبًا اِلَّاۤ اٰلَ لُوۡطٍ ؕ نَجَّيۡنٰهُمۡ بِسَحَرٍ ۙ﴿۳۵﴾

नि:सन्देह हमने उन पर पत्थरों की वर्षा बरसाई, सिवाए लूत के घर वालों के । उन्हें हमने प्रात: काल बचा लिया ।35।

نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ۝٣٦

अपनी ओर से एक नेमत के रूप में। इसी प्रकार हम उसे प्रतिफल दिया करते हैं जो कृतज्ञता प्रकट करे।36।

وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝٣٧

और उसने भी उनको हमारी पकड़ से डराया था। फिर भी वे चेतावनी के बारे में असमंजस में रहे।37।*

وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝٣٨

और उन्होंने उसे अपने अतिथियों के बारे में फुसलाना चाहा तो हमने उनकी आँखों को प्रकाशहीन कर दिया। अतः मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी का स्वाद चखो।38।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝٣٩

और निःसन्देह उनके पास सुबह सवेरे ही एक ठहर जाने वाला अज़ाब आ गया।39।

فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝٤٠

अतः मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी का स्वाद चखो।40।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٤١ ع

और निःसन्देह हमने क़ुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया। अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ?।41। (रुकू $\frac{2}{9}$)

وَلَقَدْ جَاۗءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝٤٢

और निःसन्देह फ़िरऔन के घर वालों के पास भी सतर्ककारी आए।42।

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝٤٣

उन्होंने हमारे समस्त चिह्नों का इनकार कर दिया। अतः हमने उन्हें इस प्रकार पकड़ लिया जैसे पूर्ण प्रभुत्व वाला सर्वशक्तिमान पकड़ता है।43।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰۗىِٕكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَاۗءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝٤٤

क्या तुम्हारे (युग के) काफ़िर उनसे श्रेष्ठ हैं अथवा तुम्हारे लिए ग्रन्थों में छुटकारे की कोई ज़मानत है ?।44।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ۝٤٥

क्या वे कहते हैं कि हम बदला लेने वाला गिरोह हैं ?।45।

* इस अर्थ के लिए देखें 'लिसान-उल-अरब'।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٦﴾

इस विशाल जन-समूह को अवश्य पराजित किया जाएगा और वे पीठ फेर जाएँगे ।46।*

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٧﴾

बल्कि उनसे क्रांति की घड़ी का वादा किया गया है और वह घड़ी बहुत कठोर और बहुत कड़वी होगी ।47।

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٨﴾

नि:सन्देह अपराधी लोग विनाश और पागलपन (की दशा) में होंगे ।48।

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٩﴾

जिस दिन वे अग्नि में अपने चेहरों के बल घसीटे जाएँगे । (उन्हें कहा जाएगा) नरक का स्वाद चखो ।49।

اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٥٠﴾

नि:सन्देह हमने हरेक चीज़ को एक अनुमान के अनुसार पैदा किया है।50।

وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥١﴾

और हमारा आदेश एक ही बार आँख झपकने की भाँति (आता) है ।51।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥٢﴾

और नि:सन्देह हम तुम्हारे समकर्मा लोगों को (पहले भी) विनष्ट कर चुके हैं। अत: क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? ।52।

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٣﴾

और प्रत्येक काम जो वे करते हैं, ग्रन्थों में (मौजूद) है ।53।

وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٤﴾

और प्रत्येक छोटा और बड़ा लिखा हुआ है ।54।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿٥٥﴾

नि:सन्देह मुत्तक़ी स्वर्गों में और समृद्धि की अवस्था में होंगे ।55।

فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٦﴾

सच्चाई के आसन पर, एक सर्व-शक्तिमान सम्राट के निकट ।56।

(रुकू $\frac{3}{10}$)

* आयत सं. 45-46 ये आयतें जो आरम्भिक मक्की आयतों में से हैं, इनमें अहज़ाब युद्ध की भविष्यवाणी की गई है कि काफ़िरों की विशाल सेना मुसलमानों को पीठ दिखा कर भाग खड़ी होगी ।

55- सूर: अर-रहमान

यह सूर: आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई थी । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 79 आयतें हैं ।

इस सूर: में मनुष्य और क़ुरआन करीम से संबंधित दो पृथक पृथक मुहावरे प्रयुक्त किये गए हैं । क़ुरआन के बारे में **ख़ल्क़** (सृष्टि) शब्द का कहीं कोई उल्लेख नहीं है परन्तु मनुष्य के लिए ख़ल्क़ शब्द का उल्लेख है । अत: इस सूर: पर विचार न करने के परिणाम स्वरूप मध्य काल में कुछ मुसलमान क़ुरआन को मख़्लूक़ (सृष्टि) मानते रहे और कुछ इसके विपरीत । इस कारण इन मुसलमानों में बहुत ही रक्तपात हुआ ।

इस सूर: में एक **मीज़ान** (तुला) का भी उल्लेख है और वर्णन किया गया है कि समग्र आकाश में एक संतुलन दिखाई देगा और वास्तव में हर ऊँचाई इसी संतुलन के अधीन होती है । अत: यदि अल्लाह तआला के मोमिन भक्त भी सदा इस संतुलन को बनाये रखेंगे और न्याय के विरुद्ध कभी कोई बात नहीं करेंगे तो अल्लाह तआला उनको भी बड़ी ऊँचाइयाँ प्रदान करेगा ।

इसके पश्चात जिन्न और मनुष्य को संबोधित करके इस बात की बार-बार पुनरावृत्ति की गई है कि तुम दोनों अन्तत: अल्लाह की किस किस नेमत का अस्वीकार करोगे । इसी प्रसंग में जिन्नों और मनुष्यों की उत्पत्ति का अन्तर भी वर्णन कर दिया कि जिन्न को आग के लपटों से पैदा किया गया है । वर्तमान युग में जिन्न शब्द की विभिन्न व्याख्याएँ की जाती हैं । परन्तु यहाँ जिन्न की एक व्याख्या यह है कि विषाणु (वायरस) और जीवाणु (बैक्टीरिया) भी जिन्न हैं जो सृष्टि के आरम्भ में आकाश से गिरने वाली अग्निमय रेडियो तरंगों के परिणामस्वरूप पैदा हुए । वर्तमान युग में इस बात पर सभी वैज्ञानिक सहमत हो चुके हैं कि बैक्टीरिया और वायरस सीधे-सीधे अग्नि से शक्ति प्राप्त कर के अस्तित्व में आते हैं ।

फिर मनुष्य के बारे में एक ऐसी भविष्यवाणी की गई है जो बहुत ही तत्त्वपूर्ण और सृष्टि के गहरे रहस्यों पर से पर्दा उठाती है । गीली मिट्टी से मनुष्य के पैदा करने की कल्पना तो पिछली सब पुस्तकों में मौजूद है परन्तु खनकती हुई ठीकरियों से मनुष्य का पैदा किया जाना एक ऐसी कल्पना है जो क़ुरआन मजीद से पूर्व किसी भी पुस्तक ने वर्णन नहीं किया । यहाँ विस्तार का अवसर नहीं, परन्तु वैज्ञानिक जानते हैं कि सृष्टि के बीच एक ऐसा पड़ाव भी आया जब आवश्यक था कि सृष्टि के तत्त्वों को बजने वाली ठीकरियों के रूप में शुष्क कर दिया जाता । फिर समुद्र ने इस शुष्क तत्त्व को वापस अपनी लहरों में समो लिया और मनुष्य की रासायनिक विकास की ऐसी यात्रा आरम्भ

हुई जिसमें मनुष्य की उत्पत्ति के लिए ये आवश्यक रसायन बार-बार अपने प्रारम्भिक अवस्था की ओर न लौट सकें ।

फिर यह भविष्यवाणी की गई कि अल्लाह तआला दो समुद्रों के बीच स्थित अन्तराल को समाप्त कर देगा और वे एक दूसरे से मिल जाएँगे ।

फिर एक और आयत ऐसी है जो क़ुरआन के अवतरण काल में किसी मनुष्य की कल्पना में नहीं आ सकती थी । मनुष्य में तो गज़ दो गज़ तक ऊँची छलांग मारने की भी शक्ति नहीं थी, कौन सोच सकता था कि बड़े लोग भी और छोटे लोग भी धरती और आकाश की सीमाओं को लाँघने का प्रयास करेंगे । इस प्रयास का आरम्भ मनुष्य के चन्द्रमा तक पहुँचने से हो चुका है । और उससे उच्चतर ग्रहों तक पहुँचने का प्रयास जारी है । परन्तु क़ुरआन करीम की भविष्यवाणी है कि मनुष्य **सुल्तान** अर्थात ठोस तर्कों के बिना सृष्टि की सीमाओं को नहीं लांघ सकता । और जब भी सशरीर लांघने का प्रयास करेगा उस पर आग और पिघला हुआ ताँबा बरसाया जाएगा । इसमें कोई संदेह नहीं कि जब तक वैज्ञानिक आकाशीय पिण्डों की शिलावृष्टि से बचने के लिए समस्त संभावित उपाय न अपनायें वे रॉकेट्स में बैठ कर अंतरिक्ष की यात्रा नहीं कर सकते ।

नरक के आलंकारिक वर्णन के पश्चात फिर स्वर्ग का आलंकारिक वर्णन आरम्भ होता है । पाठकों को सचेत रहना चाहिए कि कदापि इस वर्णन का ज़ाहिरी अर्थ करने का प्रयास न करें । यह सारी की सारी एक आलंकारिक भाषा है । इस पर विचार करने से विचारशील व्यक्तियों को ज्ञान के नए नए मोती प्राप्त हो सकते हैं । अन्यथा उनका दिमाग़ भटकता फिरेगा और कुछ भी प्राप्त न हो सकेगा । सिवाए स्वर्ग की एक भौतिक कल्पना के जिसमें बहुत सी बातों का कोई समाधान उन्हें ज्ञात न हो सकेगा । अत: अल्लाह तआला का नाम असीम बरकतों वाला है । उसकी बरकतों की गणना संभव नहीं है । वह प्रबल प्रतापी और परम सम्माननीय है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَّ سَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلرَّحْمٰنُ ②

अनंत कृपा करने वाला और बिन माँगे देने वाला ।2।

عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ③

उसने क़ुरआन की शिक्षा दी ।3।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ ④

मनुष्य को पैदा किया ।4।

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ⑤

उसे अभिव्यक्त करना सिखाया ।5।

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ⑥

सूर्य और चन्द्रमा एक गणना के अनुसार (कार्यरत) हैं ।6।*

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ⑦

और सितारे और वृक्ष दोनों (अल्लाह के समक्ष) नतमस्तक हैं ।7।**

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ⑧

और आकाश की क्या ही शान है । उसने उसे ऊँचाई प्रदान की और न्याय का नमूना बनाया ।8।***

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ⑨

ताकि तुम नाप-तौल में कमी-बेशी न करो ।9।

---

* यहाँ अरबी शब्द **बि हुस्बानिन** का एक अर्थ यह भी है कि यह गणना के साधन हैं । दुनिया में जितनी भी उन्नति हुई है वह गणना के द्वारा हुई है और वैज्ञानिकों को सूर्य और चन्द्रमा की परिक्रमा के फलस्वरूप गणना का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हुआ है ।

** इस स्थान पर **नज्म** शब्द से अभिप्राय सितारा भी हो सकता है जो पिछली आयत में उल्लेखित गणना से सम्बन्ध रखता है और जड़ी बूटियाँ भी हो सकती हैं । क्योंकि इसके पश्चात् वृक्ष का वर्णन है। यह क़ुरआन करीम की वर्णन शैली का चमत्कार है कि हर एक आयत हर प्रकार से (परस्पर) संबद्ध है ।

*** इसके पश्चात आकाश की ऊँचाइयों का वर्णन है जो वास्तव में पिछली आयतों के विषयवस्तु का सारांश है कि गणना ही के द्वारा संतुलन स्थापित किया जाता है और आकाश को जो ऊँचाइयाँ प्रदान की गईं हैं वे इतनी संतुलित हैं कि इससे अल्लाह के भक्त न्याय करने की विधि सीख सकते हैं ।

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝١٠

और तौल को न्याय के साथ क़ायम करो और तौल में कोई कमी न करो ।10।

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١١

और धरती की भी क्या शान है उसने उसे प्राणियों के लिए (सहारा) बनाया ।11।

فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝١٢

इसमें भाँति-भाँति के फल हैं और गुच्छेदार खजूरें भी ।12।

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝١٣

और भूसा युक्त अनाज और सुगन्धित पौधे ।13।

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٤

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।14।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝١٥

उसने मनुष्य को मिट्टी के पकाए हुए बर्तन की भाँति शुष्क खनकती हुई मिट्टी से पैदा किया ।15।*

وَخَلَقَ الْجَاۗنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝١٦

और जिन्न को आग की लपटों से पैदा किया ।16।

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٧

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।17।

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝١٨

दोनों पूर्व दिशाओं का रब्ब और दोनों पश्चिम दिशाओं का रब्ब (है) ।18।**

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٩

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।19।

---

* अरबी शब्द **सल्साल** का अर्थ : शुष्क खनकती हुई मिट्टी । देखें अरबी शब्दकोश ''अल्-मुन्जिद'' और ''ग़रीबुल क़ुरआन'' ।

** इस आयत में दो पूर्वी दिशाओं और दो पश्चिमी दिशाओं का वर्णन है । हालाँकि हज़रत मुहम्मद सल्ल. के युग के मनुष्य को केवल एक पूरब और एक पश्चिम का ही ज्ञान था । इस बहुत छोटी सी आयत में आगे आने वाले युग के महान आविष्कारों के बारे में भविष्यवाणी है ।

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿٢٠﴾

वह दो समुद्रों को मिला देगा जो बढ़-बढ़ कर एक दूसरे से मिलेंगे ।20।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢١﴾

(इस समय) उनके बीच एक रोक है (जिसका) वे अतिक्रमण नहीं कर सकते ।21।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٢﴾

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।22।

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٣﴾

दोनों में से मोती और मूंगे निकलते हैं ।23।*

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٤﴾

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।24।

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٥﴾

और उसी की (कारीगरी) वह नौकाएँ हैं जो समुद्र में पर्वतों के सदृश ऊँची की जाएँगी ।25।

النصف

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٦﴾

ع ٢٦

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।26। (रुकू $\frac{1}{11}$)

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٧﴾

हर चीज़ जो इस (धरती) पर है नश्वर है ।27।

وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٨﴾

परन्तु तेरे रब्ब की सत्ता अनश्वर रहेगी जो प्रबल प्रतापी और परम सम्माननीय है ।28।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٩﴾

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।29।

* आयत सं. 20 से 23 : इन आयतों में ऐसे दो समुद्रों का वर्णन है जिन में से लूअ्लूअ् और मरजान अर्थात मोती और मूँगे निकलते हैं और जिन दोनों को परस्पर मिला दिया जाएगा । अरबी शब्द **यल्तक़ियान** से भविष्य में उनका मिलना अभिप्राय है । हालाँकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में ऐसे दो समुद्रों के बारे में लोगों को न कोई ज्ञान था और न उनके परस्पर मिलने की कोई भविष्यवाणी की जा सकती थी । यहाँ लाल सागर और रूम सागर अभिप्राय है, जिनको→

يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ۚ۝٣٠

आकाशों में और धरती में जो भी है, उसी से याचना करता है । हर पल वह एक नई शान में होता है ।30।

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣١

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।31।

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۚ۝٣٢

हे दोनों महाशक्तियो ! हम अवश्य तुम से पूरी तरह निपटेंगे ।32।

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٣

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।33।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ۝٣٤

हे जिन्न और मनुष्य समाज ! यदि तुम सामर्थ्य रखते हो कि आकाशों और धरती की सीमाओं से बाहर निकल सको तो निकल जाओ । परन्तु एक ठोस तर्क के बिना तुम नहीं निकल सकोगे ।34।*

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٥

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।35।

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ڏ وَّنُحَاسٌ

तुम दोनों पर आग के शोले बरसाए जाएँगे और एक प्रकार का धुआँ भी।

←स्वैज़ नहर के द्वारा मिलाया गया है ।

* इस आयत में **हे जिन्न और मनुष्य समाज !** कह कर संबोधन किया गया है । **जिन्न** से जिस अद्भुत प्राणी की कल्पना की जाती थी उसके बारे में तो उस युग में यह कहा जा सकता था कि वे धरती और आकाश की सीमाओं से बाहर निकलने का प्रयत्न करेगा । परन्तु मनुष्य के विषय में तो यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि वे धरती और आकाश की सीमाओं से बाहर निकलने का प्रयास करेंगे । यहाँ विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात यह है कि केवल धरती की सीमाओं का उल्लेख नहीं किया गया बल्कि आकाश और धरती (दोनों) की सीमाओं का उल्लेख किया गया है । अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड को एक ही छलाँग में पार करने का प्रयत्न करेंगे । अरबी वाक्यांश **इल्ला बि सुल्तान** से यह अभिप्राय है कि वे प्रयत्न करेंगे परन्तु केवल ठोस तर्कों के साथ सफल हो सकेंगे। यही अवस्था इस युग में है । धरती और आकाश पर गवेषणा करने वाले वैज्ञानिक दो सौ खरब प्रकाश वर्ष तक दूर की ख़बरें केवल अपने ठोस तर्कों के आधार पर ज्ञात कर लेते हैं । सशरीर उनके लिए ऐसा कर पाना असंभव है ।

فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝٣٦	फिर तुम दोनों प्रतिशोध नहीं ले सकोगे ।36।*
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٧	अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।37।
فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝٣٨	अतः जब आकाश फट जाएगा और रंगे हुए चमड़े के सदृश लाल हो जाएगा ।38।**
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٩	अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।39।
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ۝٤٠	उस दिन जिन्न और मनुष्य में से किसी को अपनी भूल-चूक के बारे में पूछा नहीं जाएगा ।40।***
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤١	अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।41।
يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ۝٤٢	सारे अपराधी अपने चिह्नों से पहचाने जाएँगे । फिर वे माथे के बालों से और पाँव से पकड़ लिए जाएँगे ।42।
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٣	अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।43।

* अंतरिक्ष यात्री जब रॉकेटों में बैठ कर आकाश और धरती को लांघने का प्रयास करते हैं तो उन पर इसी प्रकार की लपटों और एक प्रकार के धुएँ की बौछार होती है ।

** यह केवल उपमा है । इसमें अंतरिक्ष विज्ञान की असाधारण रूप से उन्नति का वर्णन है । साथ ही भयानक हवाई युद्धों की ओर भी संकेत हो सकता है ।

*** इस आयत में यह कहा गया है कि उस दिन जिन्नों और मनुष्यों से उनकी भूल-चूक के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया जाएगा । क़यामत के दिन अपराधी अपने लक्षणों से ही पहचाने जाएँगे, इस लिए प्रश्न की आवश्यकता ही नहीं रहेगी । संसार के विश्वस्तरीय युद्धों में भी न बड़े लोग छोटों से कोई प्रश्न करते हैं न छोटी साम्यवादी जातियाँ बड़ी पूँजीपति जातियों से कोई प्रश्न करती हैं । भविष्यवाणी का यह भाग अभी और स्पष्ट होना शेष है ।

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ یُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝٤٤ وقف لازم

यही वह नरक है जिसका अपराधी इनकार किया करते थे ।44।

یَطُوْفُوْنَ بَیْنَهَا وَ بَیْنَ حَمِیْمٍ اٰنٍ ۝٤٥

वे उसके और खौलते हुए पानी के बीच घूमेंगे ।45।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٦ ع ٢/١٢

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।46। (रुकू $\frac{2}{12}$)

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۝٤٧

और जो भी अपने रब्ब के मुक़ाम से डरता है उसके लिए दो स्वर्ग हैं ।47।*

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٨

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।48।

ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ ۝٤٩

दोनों (स्वर्ग) अनेक शाख़ों युक्त हैं।49।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٠

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।50।

فِیْهِمَا عَیْنٰنِ تَجْرِیٰنِ ۝٥١

उन दोनों में दो जलस्रोत बहते हैं ।51।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٢

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।52।

فِیْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۝٥٣

उन दोनों में हर प्रकार के जोड़े-जोड़े फल हैं ।53।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٥٤

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।54।

---

* जो अल्लाह तआला का तक़वा धारण करे उसे संसार का स्वर्ग प्राप्त होगा और परलोक का भी । संसार के स्वर्ग से सम्भवत: अल्लाह के स्मरण से हार्दिक संतुष्टि प्राप्त करना अभिप्राय है । जिसकी ओर आयत **सुनो ! अल्लाह ही के स्मरण से दिल संतुष्टि प्राप्त करते हैं ।** (सूर: अर राद आयत : 29) संकेत करती है ।

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآٮِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ﴿۵۵﴾

वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए हुए होंगे जिनके अस्तर गाढ़े रेशम के हैं । और दोनों स्वर्गों के पके हुए फल भार से झुके हुए हैं ।55।

فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۶﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।56।

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۚ﴿۵۷﴾

उनमें नज़रें झुकाए रखने वाली कुवाँरी कन्याएँ हैं जिन्हें उन (स्वर्गवासियों) से पूर्व जिन्नों और मनुष्यों में से किसी ने नहीं छूआ ।57।

فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ﴿۵۸﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।58।

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۚ﴿۵۹﴾

मानो वे पद्मराग मणि और मूँगे हैं ।59।

فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۰﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।60।

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ﴿۶۱﴾

क्या उपकार का प्रतिफल उपकार के अतिरिक्त (कुछ और) भी हो सकता है ? ।61।

فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۲﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।62।

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ۚ﴿۶۳﴾

और इन दोनों के अतिरिक्त दो स्वर्ग और भी हैं ।63।

فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ﴿۶۴﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।64।

مُدْهَآمَّتٰنِ ۚ﴿۶۵﴾

दोनों ही बहुत हरे-भरे हैं ।65।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٦﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।66।

فِیْهِمَا عَیْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٧﴾

उन दोनों में जोश मारते हुए दो जलस्रोत हैं ।67।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٨﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।68।

فِیْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّ نَخْلٌ وَّ رُمَّانٌ ﴿٦٩﴾

इन दोनों में कई प्रकार के मेवे और खजूरें और अनार हैं ।69।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٠﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।70।

فِیْهِنَّ خَیْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧١﴾

उनमें अत्यन्त नेक स्वभाव कुवाँरी कन्याएँ हैं ।71।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٢﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।72।

حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِیَامِ ﴿٧٣﴾

महलों जैसे मकानों में जो ईंट पत्थर के नहीं,* ठहराई हुई अप्सराएँ हैं ।73।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٤﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।74।

لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٥﴾

उन्हें उन (स्वर्ग निवासियों) से पूर्व जिन्न व मनुष्य में से किसी ने नहीं छूआ ।75।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٦﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।76।

---

* इस अर्थ के लिए देखें अरबी शब्द कोश ''अल मुन्जिद'' ।

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۚ﴿۷۷﴾

वे हरे गलीचों पर तथा बढ़िया और बहुमूल्य बिछौनों पर तकिया लगाए हुए हैं।77।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۸﴾

अत: (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।78।

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۧ﴿۷۹﴾

तेरे प्रबल प्रतापी और अति सम्माननीय रब्ब का नाम ही बरकत वाला सिद्ध हुआ।79। (रुकू $\frac{3}{13}$)

56- सूर: अल-वाक़िअ:

यह सूर: आरम्भिक मक्की युग में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 97 आयतें हैं ।

इस सूर: के आरम्भ में वर्णन किया गया है कि पिछली सूर: जो महान भविष्यवाणियाँ कर रही है वे अवश्य पूरी हो कर रहने वाली हैं । विशेषकर मृत्यु के पश्चात पुन: जी उठने की ख़बरें जो इस सूर: में वर्णन की गई हैं वे अवश्य घटित होंगी ।

इसके पश्चात इस्लाम के पूर्ववर्ती युग में क़ुर्बानी करने वालों और उत्तरवर्ती युग में क़ुर्बानी करने वालों की तुलना की गई है । जिससे ज्ञात होता है कि वे लोग जो पूर्ववर्ती युग में धर्म के लिए क़ुर्बानी देंगे और उत्तरवर्ती युग में भी क़ुर्बानी प्रस्तुत करेंगे उनमें से अधिकांश क़ुर्बानी प्रस्तुत करने की दृष्टि से परस्पर एक समान होंगे और उन्हें एक जैसे स्थान प्रदान किए जाएँगे । परन्तु पूर्ववर्ती युग के बहुत से क़ुर्बानी करने वालों को क़ुर्बानी में और त्याग में बाद में आने वालों पर संख्या और पद की दृष्टि से श्रेष्ठता प्राप्त होगी । परन्तु बाद के दौर में भी कुछ ऐसे लोग अवश्य होंगे जिन्हें पद की दृष्टि से वह श्रेष्ठताएँ प्राप्त होंगी जो पहले युग के लोगों को दी गईं । फिर दोनों युगों के अभागों का भी वर्णन है जिनको बाँई दिशा वाले घोषित किया गया है । बाँई दिशा वालों से अभिप्राय बुरे लोग हैं और उनके वे गुण वर्णन किये गये हैं जो उनको नरकगामी बनाएँगे ।

फिर इस सूर: में उदाहरण स्वरूप नरक वासियों का और स्वर्ग निवासियों का भी वर्णन है और यह बात ख़ूब स्पष्ट कर दी गई है कि तुम कदापि इस भौतिक शरीर के साथ दोबारा नहीं उठाए जाओगे । बल्कि ऐसी परिवर्तित सृष्टि के रूप में उठाए जाओगे जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते ।

आयत सं. 61, 62 में यह भविष्यवाणी की गई है कि अल्लाह तआला तुम्हारे पुनरुत्थान के समय जिस दशा में तुम्हें नए सिरे से जीवित करेगा उसका तुम्हें कोई भी ज्ञान नहीं । ध्यान देने योग्य बात यह है कि देखने में तो इसका ज्ञान दिया जा रहा है, परन्तु वास्तव में यह चेतावनी है कि ज़ाहिरी शब्दों को बिल्कुल उसी प्रकार न समझ लेना । यह केवल आलंकारिक वर्णन हैं और वास्तव का तुम कोई ज्ञान नहीं रखते ।

फिर चार ऐसे विषय उल्लेखित हुए हैं जिन पर यदि विचार किया जाए तो हर निष्पक्ष व्यक्ति का दिल यह अवश्य पुकार उठेगा कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई ये चीज़ें बनाने पर समर्थ नहीं । प्रथम वह तत्त्व जिससे मनुष्य की उत्पत्ति का आरम्भ हुआ है और उसमें असंख्य पेचदार ऐसी बारीक से बारीक विशेषताओं को एकत्रित कर दिया गया है जिन्होंने बाद में प्रकट होना था । उदाहरणार्थ आँख, कान, नाक, मुँह, गला और स्वर

तंत्र इत्यादि को यहाँ तक आदेश दे दिया गया है कि किस सीमा तक एक अंग विकसित होगा और फिर किस समय यह विकास क्रम बन्द होना आवश्यक है । दाँतों ही को लीजिए, दूध के दाँत एक समय के बाद निकलते हैं फिर वे एक समय तक रह कर गिर जाते हैं । और बचपन में जो बच्चे दाँतों को स्वस्थ नहीं रख सकते, उसके दुष्प्रभाव से उनको सुरक्षित कर दिया जाता है । फिर युवावस्था के दाँत हैं, जिसके बाद मनुष्य ज़िम्मेदार है कि उनकी रक्षा करे । वे एक सीमा तक बढ़ कर रुक क्यों जाते हैं ? क्या चीज़ है जो उनको आगे बढ़ने से रोक देती है ? यह मनुष्य के डी.एन.ए. में एक कम्प्यूट्राईज़्ड प्रोग्राम है जिस पर अल्लाह तआला के विधानानुसार वे दाँत काम करते हैं । वैज्ञानिक बताते हैं कि जिस गति से वे घिस रहे होते हैं लगभग उसी गति से वे बढ़ भी रहे होते हैं । यदि बढ़ते चले जाते और रुकने की व्यवस्था न होती तो मनुष्य के नीचे के दाँत मस्तिष्क फाड कर सिर से बहुत ऊपर निकल सकते थे और ऊपर के दाँत जबड़े फाड़ कर छाती को हानि पहुँचा सकते थे । तो फ़र्माया, क्या तुमने यह आनुवंशिक योग्यताएँ स्वयं प्राप्त की हैं ? ज़ाहिर है कि उनका उत्तर नहीं में है ।

इसी प्रकार यूँ तो मनुष्य समझता है कि हमने धरती में बीज बोए हैं । परन्तु धरती से इन बीजों के वृक्षों और सब्ज़ियों और फलों के रूप में विकासित होने की प्रक्रिया भी एक अत्यन्त जटिल व्यवस्था है जो स्वत: जारी नहीं हो सकती ।

इसी प्रकार इस समग्र जीवन तंत्र को सहारा देने के लिए जो आकाश से पानी उतरता है उसकी प्रक्रिया पर भी मनुष्य का कोई हस्तक्षेप नहीं । इसी प्रकार आग से परिचालित वह यान जिस पर सवार हो कर मनुष्य आकाश पर जाने का प्रयास करते हैं यह भी अल्लाह के नियम के अधीन काम करता है, अन्यथा वही अग्नि उनको ऊँचाइयों तक पहुँचाने के स्थान पर भस्म कर सकती थी । इस प्रसंग में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आकाश पर उड़ने वाले जहाज़ों से सम्बन्धित भविष्यवाणी मौजूद है कि वे अग्नि से चलने वाली सवारियाँ होंगी परन्तु वह अग्नि उन यात्रियों को जो उनमें बैठेंगे कोई हानि नहीं पहुँचाएगी ।

फिर नक्षत्रों के झुरमुटों को साक्षी ठहराया गया । उस युग का मनुष्य तो समझता था कि नक्षत्र छोट-छोटे चमकने वाले मोती अथवा पत्थर हैं । परन्तु अल्लाह तआला कहता है कि यदि तुम्हें ज्ञान हो कि वे छोटे-छोटे दिखाई देने वाले नक्षत्र क्या चीज़ हैं ? तो तुम आश्चर्यचकित रह जाओ कि यह नक्षत्र तो इतने बड़े-बड़े हैं कि चन्द्रमा और सूर्य, धरती और ग्रहमंडल भी इन नक्षत्रों के एक किनारे में समा सकते हैं । अत: फ़र्माया, यह बहुत बड़ी गवाही है जो हम दे रहे हैं ।

इन गवाहियों के पश्चात यह कहा गया कि क़ुरआन करीम भी एक ऐसी पुस्तक है

जिसमें अथाह तत्त्व निहित है । जैसे नक्षत्र दूर होने के कारण तुम्हारी दृष्टि से ओझल हैं इसी प्रकार क़ुरआन करीम की ऊँचाइयों तक भी तुम्हारी दृष्टि नहीं पहुँच सकती और तुम उसे छोटी सी पुस्तक देखते हो । फिर यह भी कहा गया कि यूँ तो तुम इसे छू भी सकते हो अर्थात तुम इसके इतने निकट हो कि उसे हाथ भी लगा सकते हो, परन्तु अल्लाह तआला जिस के दिल को पवित्र करे उसके सिवा कोई इसके विषयवस्तु को नहीं छू सकता ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَّ تِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ②

जब घटित होने वाली (घटना) घटित हो जाएगी ।2।

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ③

उसके घटित होने को कोई (जान) झुठला नहीं सकेगी ।3।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ④

वह (कुछ को) नीचा करने वाली और (कुछ को) ऊँचा करने वाली होगी ।4।

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ⑤

जब धरती को खूब हिलाया जाएगा ।5।

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ⑥

और पर्वत चूर्ण-विचूर्ण कर दिए जाएँगे ।6।

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ⑦

अत: वे बिखरी हुई धूल की भाँति हो जाएँगे ।7।

وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ⑧

जबकि तुम तीन समूहों में बटे हुए होगे ।8।

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ⑨

अत: दाईं ओर वाले । क्या हैं दाईं ओर वाले ? ।9।

وَاَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ⑩

और बाईं ओर वाले । क्या हैं बाईं ओर वाले ? ।10।

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ⑪

और अग्रगामी सब पर श्रेष्ठता ले जाने वाले होंगे ।11।

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ⑫

यही (अल्लाह के) निकटस्थ हैं ।12।

فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ⑬

नेमतों वाले स्वर्गों में ।13।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ⑭

पूर्ववर्तियों में से एक बड़ा समूह ।14।

وَقَلِيلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٥﴾	और उत्तरवर्तियों में से थोड़े लोग ।15।
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٦﴾	रत्नजड़ित पलंगों पर ।16।
مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٧﴾	उन (पलंगों) पर आमने-सामने टेक लगाए हुए (होंगे) ।17।
يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿١٨﴾	उन के लिए (सेवा करने वाले) युवा लड़के घूम रहे होंगे, जिन्हें अमरत्व प्रदान किया गया है ।18।
بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿١٩﴾	कटौरे और सुराहियाँ और स्वच्छ जल से भरे हुए प्याले लिए हुए ।19।
لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿٢٠﴾	उसके प्रभाव से न वे सिर दर्द में डाले जाएँगे, न बहकी-बहकी बातें करेंगे ।20।
وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢١﴾	और भाँति-भाँति के फल लिए हुए, जिनमें से वे जो चाहेंगे पसन्द करेंगे।21।
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾	और पक्षियों का माँस, जिनमें से जिस की भी वे इच्छा करेंगे ।22।
وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٣﴾	और बड़ी-बड़ी आँखों वाली कुँवारी कन्याएँ ।23।
كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٤﴾	मानो ढके हुए मोतियों की भाँति हैं।24।
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾	उसके प्रतिफल स्वरूप जो वे कर्म किया करते थे ।25।
لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٦﴾	वे उसमें कोई व्यर्थ आलाप अथवा पाप की बात नहीं सुनते ।26।
اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٧﴾	परन्तु केवल ''सलाम-सलाम'' का वाक्य ।27।
وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾	और दाहिनी ओर वाले (लोग) । कौन हैं जो दाहिनी ओर वाले हैं ? ।28।

فِىْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍۙ ﴿٢٩﴾
ऐसी बेरियों में जो काँटेदार नहीं ।29।

وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍۙ ﴿٣٠﴾
और परत-परत (फलों युक्त) केलों (के बाग़ों) के बीच ।30।

وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍۙ ﴿٣١﴾
और दूर तक फैलाइ हुइ छायाओं में।31।

وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍۙ ﴿٣٢﴾
और बरसाए जान वाले पानी में ।32।

وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍۙ ﴿٣٣﴾
और अधिकांश फलों में ।33।

لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍۙ ﴿٣٤﴾
जो न तो काटे जाएँगे और न ही (उन्हें) उनसे रोका जाएगा ।34।

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍؕ ﴿٣٥﴾
और ऊँचे बिछाए हुए आसनों में ।35।

اِنَّاۤ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءًۙ ﴿٣٦﴾
नि:सन्देह हमने उन (के जोड़ों) को अत्यन्त उत्तम विधि से पैदा किया ।36।

فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًاۙ ﴿٣٧﴾
फिर हमने उन्हें अनुपम बनाया ।37।*

عُرُبًا اَتْرَابًاۙ ﴿٣٨﴾
मनमोहन, समवयस्क ।38।

لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِؕ ﴿٣٩﴾ ع
दाहिनी ओर वाले (लोगों) के लिए।39। (रुकू $\frac{1}{14}$)

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَۙ ﴿٤٠﴾
पूर्ववर्तियों में से एक बड़ा समूह है ।40।

وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَؕ ﴿٤١﴾
और उत्तरवर्तियों में से भी एक बड़ा समूह है ।41।

وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِؕ ﴿٤٢﴾
और बाईं ओर वाले (लोग) । कौन हैं बाईं ओर वाले ? ।42।

فِىْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍۙ ﴿٤٣﴾
झुलसाने वाली उत्तप्त वायु और खौलते हुए पानी में ।43।

---

* अरबी शब्द **अब्कारन** का अर्थ अनुपम (देखें शब्दकोश अल-मुन्जिद)

وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٤﴾

और ऐसी छाया में जो काले धुएँ से उत्पन्न होती है ।44।

لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٥﴾

(जो) न ठंडी है और न दयाशील ।45।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٦﴾

इससे पूर्व नि:सन्देह वे लोग बहुत सुख में थे ।46।

وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٧﴾

और बड़े पाप पर हठधर्मिता किया करते थे ।47।

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ اَىِٕذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٨﴾

और कहा करते थे, क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँगे, क्या हम फिर भी अवश्य उठाए जाएँगे ? ।48।

اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٩﴾

क्या हमारे बीते हुए पूर्वज भी ? ।49।

قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٠﴾

तू कह दे, अवश्य पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती सभी ।50।

لَمَجْمُوْعُوْنَ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥١﴾

एक निर्धारित युग के निश्चित समय की ओर अवश्य एकत्रित किए जाएँगे ।51।

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥٢﴾

फिर नि:सन्देह तुम हे अत्यन्त पथभ्रष्टो! बहुत झुठलाने वालो ! ।52।

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٣﴾

अवश्य (तुम) थूहर के पौधे में से खाने वाले हो ।53।

فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٤﴾

फिर उसी से पेट भरने वाले हो ।54।

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٥﴾

इसके अतिरिक्त खौलता हुआ पानी भी पीने वाले हो ।55।

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٦﴾

फिर खूब प्यासे ऊँटों के पीने की भाँति (पानी) पीने वाले हो ।56।

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٧﴾

प्रतिफल प्राप्ति के दिन यह होगा उनका आतिथ्य ।57।

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ۝٥٨

हमने ही तुम्हें पैदा किया है, फिर तुम क्यों सत्य को स्वीकार नहीं करते? ।58।

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۝٥٩

बताओ तो सही ! कि जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो ।59।

ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۝٦٠

क्या तुम हो जो उसे पैदा करते हो अथवा हम पैदा करने वाले हैं ? ।60।

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝٦١

हमने ही तुम्हारे बीच मृत्यु को निश्चित किया है और हमें रोका नहीं जा सकता ।61।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَ نُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦٢

कि तुम्हारे रूप परिवर्तित कर दें और तुम्हें ऐसे रूप में उठाएँ कि तुम उसे नहीं जानते ।62।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٦٣

और निःसन्देह प्रथम उत्पत्ति को तुम जान चुके हो । फिर क्यों उपदेश ग्रहण नहीं करते ? ।63।

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ۝٦٤

भला बताओ तो सही कि जो कुछ तुम खेती करते हो ।64।

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝٦٥

क्या तुम ही हो जो उसे उगाते हो अथवा हम उगाने वाले हैं ? ।65।

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝٦٦

यदि हम चाहते तो अवश्य उसे चूर्ण-विचूर्ण कर देते । फिर तुम बातें बनाते रह जाते ।66।

اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۝٦٧

कि निःसन्देह हम चट्टी तले दब गए हैं ।67।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝٦٨

नहीं ! बल्कि हम पूर्णतया वंचित कर दिए गये हैं ।68।

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ۝٦٩

क्या तुमने उस पानी पर विचार किया है जो तुम पीते हो ? ।69।

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝٧٠

क्या तुम ही ने उसे बादलों से उतारा है अथवा हम हैं जो उतारने वाले हैं ? ।70।

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧١﴾

यदि हम चाहते तो उसे खारा बना देते। अतः तुम कृतज्ञता क्यों प्रकट नहीं करते ? ।71।

اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِىْ تُوْرُوْنَ ﴿٧٢﴾

बताओ तो सही कि वह आग जो तुम जलाते हो ।72।

ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٣﴾

क्या तुम उसके वृक्ष (सदृश लपट) को उठाते हो अथवा हम हैं जो उसे उठाने वाले हैं ।73।*

نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّ مَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٤﴾

हमने उसे उपदेश का एक साधन और यात्रियों के लिए लाभदायक बनाया है ।74।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٥﴾

अतः अपने महान रब्ब के नाम का गुणगान कर ।75। (रुकू $\frac{2}{15}$)

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٦﴾

अतः में अवश्य नक्षत्रों के झुरमुटों को साक्षी के रूप में पेश करता हूँ ।76।

وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٧﴾

और निश्चित रूप से यह एक बहुत बड़ा साक्ष्य है । काश, तुम जानते ! ।77।

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٨﴾

निःसन्देह यह एक सम्मान वाला क़ुरआन है ।78।

فِىْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٩﴾

एक छुपी हुई पुस्तक में (सुरक्षित)।79।

لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾

कोई उसे छू नहीं सकता सिवाए पवित्र किए हुए लोगों के ।80।**

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨١﴾

(उसका) उतारा जाना समस्त लोकों के रब्ब की ओर से है ।81।

اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨٢﴾

अतः क्या इस वर्णन के सम्बन्ध में तुम चाटुकारिता पूर्ण बातें करते हो ? ।82।

---

* इस अर्थ के लिए देखें : तफ़सीर कबीर, इमाम राज़ी रहि.

** आयत सं. 78 से 80 : क़ुरआन करीम खुली हुई पुस्तक भी है और छुपी हुई पुस्तक भी है । यूँ तो इसका पाठ प्रत्येक पुण्य और पापी व्यक्ति कर सकता है, परन्तु इसके उच्च श्रेणी के छुपे हुए रहस्य केवल उन पर प्रकट किए जाते हैं जो अल्लाह तआला की ओर से पवित्र किए गए हों ।

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٣﴾

और (इसको) झुठलाना तुम अपनी जीविका बनाते हो ? ।83।

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٤﴾

अतः क्यों न हुआ कि जब (जान) गले तक आ पहुँची ।84।

وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٥﴾

और तुम उस समय हर ओर नज़रें दौड़ा रहे थे (कि तुम अपने लिए कुछ कर सकते) ।85।

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٦﴾

और (उस समय) हम तुम्हारी अपेक्षा उस (मरने वाले) के अधिक निकट थे परन्तु तुम ज्ञान नहीं रखते थे ।86।

فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٧﴾

यदि तुम वह नहीं, जिन्हें क़र्ज़ चुकाना हो तो फिर क्यों नहीं ।87।

تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٨﴾

तुम उस (जान) को लौटा सके ? यदि तुम सच्चे हो ।88।

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٩﴾

हाँ ! यदि वह (मरने वाला अल्लाह के) निकटस्थों में से हो ।89।

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٩٠﴾

तो (उसके लिए) आरामदायक और सुगन्धित वातावरण और बड़ी नेमत वाला स्वर्ग (है) ।90।

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾

और यदि वह दाहिनी ओर वालों में से हो ।91।

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٢﴾

तो (उसे कहा जाएगा) तुझ पर सलाम! हे वह व्यक्ति जो दाहिनी ओर वालों में से है ।92।

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٣﴾

और यदि वह झुठलाने वाले पथभ्रष्टों में से हो ।93।

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٤﴾

तो (उसके) उतरने का स्थान एक प्रकार का खौलता हुआ पानी होगा ।94।*

وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٥﴾

और (उसको) नरक की अग्नि में भूना जाना है ।95।

---

* इस अर्थ के लिए देखें 'अल मुन्जिद' ।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٦﴾ ج

नि:सन्देह निश्चयात्मकता तक पहुँचा हुआ विश्वास यही है ।96।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٧﴾ ع

ع ٣ ٢٢ ١٦

अतः अपने महान रब्ब के नाम का गुणगान कर ।97। (रुकू $\frac{3}{16}$)

57– सूर: अल–हदीद

यह सूर: मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं ।

इसका आरम्भ इस घोषणा के साथ होता है कि धरती और आकाश और जो कुछ उनमें है सब अल्लाह ही की स्तुति कर रहे हैं । आदि भी वही है और अन्त भी वही है और दृश्य भी वही है और अदृश्य भी वही है । अर्थात् उसकी चमक सुस्पष्ट हैं । परन्तु जो आँख उनको न देख सके उसके लिए वे सदा अदृश्य ही रहेंगी ।

इस सूर: की एक आयत में सांसारिक जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि यह तो केवल खेल कूद और व्यर्थ क्रीड़ा है । यह कोई शेष रहने वाली चीज़ नहीं । जब मनुष्य अपनी मृत्यु के निकट पहुँचेगा तो अवश्य स्वीकार करेगा कि वे तो अल्पकालिक सुख उपभोग के दिन थे ।

फिर इसी सूर: में यह महान आयत है जिससे प्रमाणित होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह तआला ने यह बात खोल दी थी कि स्वर्ग और नरक की भौतिक कल्पना ठीक नहीं । अत: आयत संख्या 22 में कहा गया कि अल्लाह तआला से क्षमायाचना करने तथा उसके उस स्वर्ग की ओर क़दम बढ़ाने में एक दूसरे से आगे निकलने का प्रयत्न करो, जिस स्वर्ग का विस्तार धरती और आकाश पर फैला हुआ है । जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत पाठ की तो एक सहाबी रज़ि. ने प्रश्न किया कि हे अल्लाह के नबी ! यदि स्वर्ग समस्त ब्रह्माण्ड पर फैला हुआ है तो नरक कहाँ है ? आप सल्ल. ने फ़र्माया, वह भी वहीं होगा । अर्थात उसी ब्रह्माण्ड के परिधि में मौजूद होगा जिसमें स्वर्ग है । परन्तु तुम्हें इस बात की समझ नहीं है कि यह कैसे होगा । एक ही स्थान पर स्वर्ग और नरक स्थित हैं पर एक का दूसरे से कोई भी सम्बन्ध नहीं है । इससे स्पष्ट रूप से प्रमाणित है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस युग में Relativity (सापेक्षतावाद) की कल्पना प्रदान की गई थी । अर्थात एक ही स्थान में होते हुए आयाम बदल जाने से दो वस्तुओं का परस्पर कोई संबन्ध नहीं रहता ।

सूर: अल् हदीद की प्रमुख आयत वह है जिसमें घोषणा की गई है कि हमने लोहे को उतारा । अरबी शब्द **नुज़ूल** का जो अनुवाद जनसाधारण करते हैं उसके अनुसार लोहा मानो आकाश से बरसा है हालाँकि वह धरती की गहराइयों से खोद कर निकाला जाता है । इस आयत से **नुज़ूल** शब्द की वास्तविकता ज्ञात हो जाती है कि वह वस्तु जो अपने आप में सबसे अधिक लाभदायक है उसके लिए क़ुरआन करीम में शब्द नुज़ूल प्रयुक्त हुआ है । अत: इसी दृष्टि से पशुओं के लिए भी नुज़ूल शब्द आया है । वस्त्र के

सम्बन्ध में भी नुज़ूल शब्द आया है । सबसे बढ़ कर यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए कहा गया, **क़द अन ज़लल्लाहु इलैकुम ज़िक्रर्रसूलन्** (अत-तलाक़ 11-12) अर्थात निःसन्देह अल्लाह ने तुम्हारी ओर साक्षात अल्लाह का स्मरण करने वाला रसूल उतारा है । सारे विद्वान सहमत हैं कि सशरीर आप सल्ल. आकाश से नहीं उतरे । अतः यहाँ पर इसके सिवा और कोई अर्थ नहीं कि समस्त रसूलों में मानव जाति को सबसे अधिक लाभ पहुँचाने वाले रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही थे ।

फिर इसी सूरः में सहाबा रज़ि. के सम्बन्ध में यह वर्णन है कि उनका नूर उनके आगे भी चलता था और उनके दाहिने भी । मानो वे अपने नूर से अपना मार्ग देख रहे थे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَا ثُوْنَ اٰيَةً وَّ اَرْبَعَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

आकाशों और धरती में जो है अल्लाह ही का गुणगान करता है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ③

आकाशों और धरती का साम्राज्य उसी का है । वह जीवित करता है और मारता है । और वह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।3।

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ④

वही आदि और वही अन्त, वही प्रकाश्य और वही अप्रकाश्य है । और वह हर चीज़ का स्थायी ज्ञान रखता है ।4।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ⑤

वही है जिसने आकाशों और धरती को छः युगों में पैदा किया । फिर वह अर्श पर विराजमान हो गया । वह (उसे) जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता है और जो उसमें से निकलता है और जो आकाश से उतरता है और जो उस की ओर चढ़ जाता है । और जहाँ कहीं भी तुम हो वह तुम्हारे साथ होता है । और जो तुम करते हो अल्लाह उस पर सदा गहन दृष्टि रखने वाला है ।5।*

---

* अल्लाह तआला के अर्श पर विराजमान होने का अभिप्राय यह है कि वह ब्रह्माण्ड के सारे काम पूरा करने के बाद ख़ाली नहीं बैठा बल्कि उनके निरीक्षण के लिए अर्श पर विराजमान हो गया । संसार में जितने काम हम देखते हैं कि दिखने में तो लगता है कि वे अपने आप हो रहे हैं परन्तु उन सब पर असंख्य फ़रिश्ते तैनात हैं जो अल्लाह के आदेश से उनकी निगरानी कर रहे हैं ।→

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٦

धरती और आकाश का साम्राज्य उसी का है और अल्लाह की ओर ही समस्त विषय लौटाए जाते हैं ।6।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है । और वह सीनों की बातों का भी सदा ज्ञान रखता है ।7।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٨

अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ और उसमें से खर्च करो जिसमें उसने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया । अत: तुम में से वे लोग जो ईमान ले आए और (अल्लाह के मार्ग में) खर्च किया उनके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है ।8।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٩

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते ? और रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब्ब पर ईमान ले आओ जबकि (हे आदम की संतान !) वह तुमसे दृढ़ वचन ले चुका है । यदि तुम ईमान लाने वाले होते (तो अच्छा होता) ।9।

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ

वही है जो अपने भक्त पर सुस्पष्ट आयतें उतारता है ताकि वह तुम्हें अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकाल

←आयतांश **वह उसे जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता है और जो उस में से निकलता है ।** धरती से हर समय कुछ न कुछ आकाश की ओर उठता रहता है और कुछ न कुछ नीचे उतरता रहता है । कुछ तो ऐसे वाष्पकण आदि हैं जिनको वापस धरती की ओर भेज दिया जाता है । परन्तु कुछ ऐसी रेडियो धर्मी और चुम्बकीय किरणें हैं जो ऊपर उठ कर धरती की सीमा से निकल जाती हैं । इसी प्रकार आकाश से उल्कापिण्डों और रेडियो धर्मी किरणों की धरती पर लगातार बौछार हो रही है । इसकी भी लगातार खोज जारी है और बहुत कुछ ज्ञात हो जाने पर भी आकाश से उतरने वाली अधिकतर किरणों का वैज्ञानिकों को ज्ञान नहीं हो सका है । यह विषयवस्तु भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में किसी मनुष्य की कल्पना में नहीं आ सकता था ।

وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠﴾

कर ले जाए । और नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बहुत कृपाशील (और) बार-बार दया करने वाला है ।10।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١﴾ ع

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते ? जबकि आकाशों और धरती का उत्तराधिकार अल्लाह ही का है । तुम में से कोई उसके बराबर नहीं हो सकता जिस ने विजय प्राप्ति से पूर्व खर्च किया और युद्ध किया । ये लोग दर्जों में उनसे बहुत बढ़ कर हैं जिन्होंने बाद में खर्च किया और युद्ध किया । और प्रत्येक से अल्लाह ने उत्तम (प्रतिफल का) वादा किया है। और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।11।

(रुकू $\frac{1}{17}$)

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٢﴾

कौन है जो अल्लाह को उत्तम ऋण दे । ताकि वह उसे उसके लिए बढ़ा दे । और उसके लिए एक बड़ा सम्मान वाला प्रतिफल भी है ।12।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾

जिस दिन तू मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को देखेगा कि उनका नूर उनके आगे आगे और उनके दाहिनी ओर तेज़ी से चल रहा है । (उन्हें कहा जाएगा) तुम्हें आज के दिन ऐसे स्वर्ग मुबारक हों जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदा रहने वाले होंगे । यही बहुत बड़ी सफलता है ।13।*

---

* मोमिनों को उनके हिदायत पाने के परिणामस्वरूप नूर प्राप्त होता है । और दाहिने हाथ से अभिप्राय हिदायत ही है ।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۗ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۗ ١٤

जिस दिन मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ उनसे जो ईमान लाए थे कहेंगे, हम पर भी दृष्टि डालो हम भी तुम्हारे नूर से कुछ लाभ उठा लें। कहा जाएगा, अपने पीछे की ओर लौट जाओ। फिर कोई नूर ढूँढो। तब उनके बीच एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसका एक द्वार होगा। उसका भीतरी (भाग) ऐसा है कि उसमें कृपा होगी और उसका बाहरी (भाग) ऐसा है कि उसके सामने अज़ाब होगा।14।

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ١٥

वे उन्हें ऊँची आवाज़ से पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे ? वे कहेंगे हाँ क्यों नहीं ! परन्तु तुमने स्वयं अपने आपको परीक्षा में डाल लिया और प्रतीक्षा करते रहे और शंका में पड़ गए और तुम्हें (तुम्हारी) कामनाओं ने धोखा दिया। यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ गया। जबकि तुम्हें शैतान ने अल्लाह के बारे में खूब धोखे में डाले रखा।15।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۗ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ١٦

अतः आज तुम से कोई मुक्तिमूल्य नहीं लिया जाएगा और न ही उन लोगों से जिन्होंने इनकार किया। तुम्हारा ठिकाना अग्नि है। यह है तुम्हारी मित्र और क्या ही बुरा ठिकाना है।16।

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ

क्या उन लोगों के लिए जो ईमान लाए समय नहीं आया कि अल्लाह के स्मरण से तथा उस सत्य (के रोब) से जो उतरा है, उनके दिल फट कर गिर जाएँ। और वे उन लोगों की भाँति न बनें जिन्हें

قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۷﴾

(इससे) पूर्व पुस्तक दी गई थी ? अतः उन पर समय लम्बा हो गया तो उनके दिल कठोर हो गए और उनमें से बहुत से वचन भंग करने वाले थे ।17।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۸﴾

जान लो कि अल्लाह धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात अवश्य जीवित करता है । हम आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर वर्णन कर चुके हैं ताकि तुम बुद्धि से काम लो ।18।

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۹﴾

निःसन्देह दानशील पुरुष और दानशील स्त्रियाँ और वे जिन्होंने अल्लाह को उत्तम ऋण दिया, उनके लिए उसे बढ़ा दिया जाएगा और उनके लिए एक सम्मानदायक प्रतिफल है ।19।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۲۰﴾ ع

और वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए, यही वे लोग हैं जो अपने रब्ब के समक्ष सिद्दीक़ और शहीद ठहरते हैं । उनके लिए उनका प्रतिफल और उनका नूर है । और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही नरकवासी हैं ।20। (रुकू $\frac{2}{18}$)

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ

जान लो कि सांसारिक जीवन केवल खेल-कूद और आत्मलिप्साओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो उच्च-उद्देश्य से बेपरवा कर दे और ठाटबाट और परस्पर एक दूसरे पर अहंकार करना है और धन और संतान में एक दूसरे से बढ़ने का प्रयास करना है । (यह जीवन) उस वर्षा के उदाहरण सदृश है जिसकी हरियाली काफ़िरों (के दिलों)

فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢١﴾

को लुभाती है। अतः वह शीघ्रता पूर्वक बढ़ती है। फिर तू उसे पीला पड़ता हुआ देखता है फिर वह चूर्ण-विचूर्ण हो जाती है। और परलोक में कठोर अज़ाब (निश्चित) है तथा अल्लाह की ओर से क्षमादान और प्रसन्नता भी है। जबकि सांसारिक जीवन तो केवल धोखे का एक अस्थायी सामान है।21।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٢﴾

अपने रब्ब की क्षमाप्राप्ति की ओर तथा उस स्वर्ग की ओर भी एक दूसरे से आगे बढ़ो, जिसका फैलाव आकाश और धरती के फैलाव की भाँति है, जिसे उन लोगों के लिए तैयार किया गया है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाते हैं। यह अल्लाह की कृपा है, वह इसको जिसे चाहता है देता है और अल्लाह महान कृपालु है।22।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٣﴾

धरती पर कोई विपत्ति नहीं आती और न स्वयं तुम्हारे ऊपर। परन्तु इस से पूर्व कि हम उसे प्रकट करें वह एक पुस्तक में (छिपी हुई) है। निःसन्देह यह अल्लाह के लिए बहुत सरल है।23।

لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِۨ ﴿٢٤﴾

(याद रहे यह अल्लाह का विधान है) ताकि जो तुम से खोया गया तुम उस पर खेद न करो और जो उसने तुम्हें दिया है, उस पर न इतराओ। और अल्लाह किसी अहंकारी, बढ़-बढ़ कर इतराने वाले को पसन्द नहीं करता।24।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ

(अर्थात) उन लोगों को जो कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी की शिक्षा देते हैं। और जो मुँह फेर ले तो

الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٢٥

(वह जान ले कि) निःसन्देह अल्लाह ही निस्पृह और प्रशंसा योग्य है ।25।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٢٦

हमने निःसन्देह अपने रसूल स्पष्ट चिह्नों के साथ भेजे और उनके साथ पुस्तक और न्याय की तुला भी उतारी ताकि लोग न्याय पर क़ायम रह सकें । और हमने लोहा उतारा जिसमें घोर युद्ध का सामान और मनुष्य के लिए बहुत से लाभ हैं । ताकि अल्लाह उसे जान ले जो उसकी और उसके रसूलों की परोक्ष में भी सहायता करता है । निःसन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।26। (रुकू $\frac{3}{19}$)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٢٧

और निःसन्देह हमने नूह और इब्राहीम को (भी) भेजा और दोनों की संतान में नुबुव्वत और पुस्तक (दान स्वरूप) रख दी । अतः उनमें वह भी था जो हिदायत पा गया जबकि एक बड़ी संख्या उनमें से पथभ्रष्टों की थी ।27।*

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۗ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ

फिर हमने उनके पद्चिह्नों पर लगातार अपने रसूल भेजे । और मरियम के पुत्र ईसा को भी पीछे लाए और उसे हमने इंजील प्रदान की । और उन लोगों के दिलों में जिन्होंने उसका अनुसरण किया नरमी और दयाशीलता रख दीं । और हमने उन पर वह ब्रह्मचर्य अनिवार्य नहीं किया था जिसे उन्होंने नई प्रथा गढ़ ली। परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति (अनिवार्य की थी) । फिर उन्होंने उस की छूट का हक़ अदा न किया । अतः

* अरबी शब्द **फ़ासिक़** का अर्थ पथभ्रष्ट । देखें शब्दकोश अल मुन्जिद ।

رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

हमने उनमें से उनको जो ईमान लाए (और नेक कर्म किए) उनका प्रतिफल दिया। जबकि एक बड़ी संख्या उनमें दुराचारियों की थी।28।*

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٩﴾

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक़वा धारण करो और उसके रसूल पर ईमान लाओ वह तुम्हें अपनी दया में से दोहरा भाग देगा। और तुम्हें एक नूर प्रदान करेगा जिसके साथ तुम चलोगे। और तुम्हें क्षमा करेगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।29।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٠﴾ ع

ताकि अहले किताब कहीं यह न समझ बैठें कि इन (मोमिनों) को अल्लाह की कृपा प्राप्ति का कुछ सामर्थ्य नहीं। जबकि निःसन्देह सारी कृपा अल्लाह ही के हाथ में है। वह उसको जिसे चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह बहुत बड़ा कृपालु है।30। (रुकू $\frac{4}{20}$)

---

* इस आयत में विशेष रूप से उस रहबानिय्यत (आजीवन ब्रह्मचर्य) का उल्लेख है जो आजकल ईसाई पादरियों और ब्रह्मचारिणियों में आजीवन अविवाहित रहने की नई प्रथा के रूप में जारी है। अल्लाह तआला का कदापि यह उद्देश्य नहीं था बल्कि उनको तक़वापूर्ण जीवन यापन करने का आदेश था जिस का आरम्भिक युगीन ईसाइयों ने यथोचित पालन किया। परन्तु बाद के समय में इसमें अतिशयोक्ति करते हुए आजीवन ब्रह्मचर्य धारण करने की नई प्रथा जारी कर दी गई।

58– सूरः अल–मुजादलः

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 23 आयतें हैं ।

सूरः अल-मुजादलः में प्रमुख विषयवस्तु यह वर्णन किया गया है कि अरबों की यह रीति अर्थहीन है कि नाराज़गी में पत्नियों को माँ कह कर अपने लिए अवैध ठहरा लिया जाय । माँ तो वही होती है जिसने जन्म दिया हो । फिर फ़र्माया कि इन व्यर्थ बातों का प्रायश्चित किया करो और इन व्यर्थ बातों से बचते हुए अपनी पत्नियों की ओर लौटो।

सूरः अल् हदीद में लोहे का वर्णन है और काटने और चीरने फाड़ने के लिए लोहे का ही प्रयोग किया जाता है । परन्तु यह इसका भौतिक प्रयोग है परन्तु सूरः अल् मुजादलः में जो बार-बार **युहाद्दू न** और **हाद्द** (वे विरोध करते हैं) शब्द आया है इससे अभिप्राय आध्यात्मिक रूप से एक दूसरे को फाड़ना है । और लगातार यह वर्णन है कि जो लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आध्यात्मिक रूप से आघात पहुँचाते हैं और सहाबा रज़ि. के बीच मतभेद उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं और इस उद्देश्य से छिप कर परामर्श करते हैं, वे सब अपने आप को विनष्ट करने वाली बातें करते हैं । फ़र्माया, जो भी अल्लाह और रसूल को अपनी छींटाकशियों से आघात पहुँचाते हैं वे असफल होंगे और अल्लाह तआला ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि वह और उसके रसूल अवश्य विजयी होंगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢﴾

निश्चित रूप से अल्लाह ने उसकी बात सुन ली है जो अपने पति के विषय में तुझ से बहस करती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, जबकि अल्लाह तुम दोनों की वार्तालाप को सुन रहा था। नि:सन्देह अल्लाह सदा सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।2।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٣﴾

तुम में से जो लोग अपनी पत्नियों को माँ कह देते हैं, वे उनकी माँ नहीं हो सकतीं, उनकी माएँ तो वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया । और नि:सन्देह वे एक अत्यन्त अप्रिय और झूठी बात कहते हैं । और अल्लाह नि:सन्देह बहुत माफ़ करने वाला (और) बहुत क्षमाशील है ।3।

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٤﴾

और वे लोग जो अपनी पत्नियों को माँ कह देते हैं, फिर अपनी कही हुई बात से पीछे हटते हैं, तो इसके पूर्व कि वे दोनों एक दूसरे को छूएँ एक गर्दन (दास) मुक्त करना (अनिवार्य) है । यह वह (बात) है जिसका तुम्हें उपदेश दिया जाता है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।4।

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ

अत: जो (इसका) सामर्थ्य न रखे तो लगातार दो महीने के रोज़े रखना है इससे

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ
فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۗ ذٰلِكَ
لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۗ وَتِلْكَ حُدُوْدُ
اللّٰهِ ۗ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

पूर्व कि वे दोनों एक दूसरे को छूएँ। फिर जो (इसका भी) सामर्थ्य न रखता हो तो साठ दरिद्रों को भोजन कराना है । यह इस कारण है कि तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर से संतुष्टि* प्राप्त हो । यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएँ हैं । और काफ़िरों के लिए बहुत ही पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।5।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا
كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۗ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٦ ۚ

नि:सन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, जबकि हम सुस्पष्ट चिह्न उतार चुके हैं । वे उसी प्रकार तबाह कर दिए जाएँगे जैसे उनसे पहले लोग तबाह कर दिए गए । और काफ़िरों के लिए एक बड़ा अपमान-जनक अज़ाब (निश्चित) है ।6।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا
عَمِلُوْا ۗ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٧ ع

जिस दिन अल्लाह उनको एक समूह के रूप में उठाएगा फिर उन्हें उसकी ख़बर देगा जो वे किया करते थे । अल्लाह ने उस (कर्म) को गिन रखा है जबकि वे उसे भूल चुके हैं । और अल्लाह हर चीज़ पर साक्षी है ।7। (रुकू $\frac{1}{1}$)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِى الْاَرْضِ ۗ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ
اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ
سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ
اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ
ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ

क्या तूने देखा नहीं कि अल्लाह उसे जानता है जो आकाशों में है और जो धरती में है ? कोई तीन (व्यक्ति) गुप्त मंत्रणा नहीं करते जबकि वह उनका चौथा न हो । और न ही कोई पाँच (मंत्रणाकारी) ऐसे होते हैं जबकि वह उनका छठा न हो और चाहे इससे कम अथवा अधिक (हों) परन्तु वह उनके साथ होता है, जहाँ कहीं भी वे हों । फिर

* इन अर्थों के लिए देखें शब्दकोश 'अल मुफ़रदात फ़ी ग़रीबिल क़ुरआन' ।

اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٨

वह उन्हें क़यामत के दिन उसकी सूचना देगा जो वे करते रहे । नि:सन्देह अल्लाह हर चीज़ का ख़ूब ज्ञान रखता है ।8।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ مَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَ اِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۭ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩

क्या तूने उनकी ओर दृष्टि नहीं दौड़ाई ? जिन्हें गुप्त मन्त्रणाओं से मना किया गया परन्तु वे फिर वही कुछ करने लगे जिससे उनको मना किया गया था । और वे पाप, उद्दण्डता और रसूल की अवमानना के बारे में परस्पर गुप्त मन्त्रणा करते हैं । और जब वे तेरे पास आते हैं तो वे इस प्रकार तुझसे शुभ-कामना प्रकट करते हैं जिस प्रकार अल्लाह ने तुझ पर सलाम नहीं भेजा । और वे अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें इस पर अज़ाब क्यों नहीं देता जो हम कहते हैं । उन (से निपटने) को नरक पर्याप्त होगा । वे उसमें प्रविष्ट होंगे । अत: क्या ही बुरा ठिकाना है।9।*

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝١٠

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम परस्पर गुप्त मन्त्रणा करो तो पाप, उद्दण्डता और रसूल की अवमानना पर आधारित मन्त्रणा न किया करो । हाँ नेकी और तक़वा के विषय में मन्त्रणा किया करो । और अल्लाह से डरो जिसके समक्ष तुम इकट्ठे किए जाओगे ।10।

---

* इस आयत में सबसे पहले अरबी शब्द **नज्वा** अर्थात गुप्त मन्त्रणा करने का उल्लेख है । गुप्त मन्त्रणा करना तो पाप की बात नहीं सिवाए इसके कि उन मन्त्रणाओं का विषयवस्तु अत्याचार करना हो और उनमें अल्लाह और उसके रसूल के विरुद्ध षड़यन्त्र रचे जा रहे हों । इन्हीं लोगों का और अधिक परिचय यह करवाया गया है कि जब वे रसूल की सेवा में उपस्थित होते हैं तो दिखावे का सलाम करके मन में बुरी भावना रखते हैं और फिर मन ही मन में समझते हैं कि हम पर तो इसके परिणाम स्वरूप कोई अज़ाब नहीं आया । अल्लाह तआला उनकी मनस्थिति को जानता है और नि:सन्देह वे नरक में डाले जाएँगे ।

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١

गुप्त षड़यन्त्र तो केवल शैतान की ओर से होते हैं ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए शोक में डाल दे । जबकि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना उन्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकता । अत: चाहिए कि मोमिन अल्लाह ही पर भरोसा करें ।11।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٢

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम्हें यह कहा जाए कि सभाओं में (दूसरों के लिए) जगह खुली कर दिया करो तो खुली कर दिया करो, अल्लाह तुम्हें खुलापन प्रदान करेगा । और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो उठ जाया करो । अल्लाह उन लोगों के दर्जों को ऊँचा करेगा जो तुम में से ईमान लाए हैं और विशेषकर उनके जिनको ज्ञान प्रदान किया गया है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।12।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَیْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٣

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम रसूल से (कोई व्यक्तिगत) परामर्श करना चाहो तो अपने परामर्श से पूर्व दान दिया करो । यह बात तुम्हारे लिए उत्तम और अधिक पवित्र है । अत: यदि तुम (दान के लिए अपने पास) कुछ न पाओ तो नि:सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।13।

ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَیْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا

क्या तुम (इस बात से) डर गए हो कि अपने (व्यक्तिगत) परामर्शों से पूर्व दान दिया करो । अत: जब तुम

وَ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۟۱۴ ع

ऐसा न कर सको जबकि अल्लाह ने तुम्हारा प्रायश्चित स्वीकार कर लिया है तो नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।14। (रुकू $\frac{2}{2}$)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۟۱۵

क्या तूने उनकी ओर नज़र नहीं दौड़ाई जिन्होंने ऐसे लोगों को मित्र बनाया जिन पर अल्लाह क्रोधित हुआ ? ये लोग न तुम्हारे हैं न उनके, और वे जानबूझ कर झूठ पर क़समें खाते हैं ।15।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۟۱۶

उनके लिए अल्लाह ने कठोर अज़ाब तैयार कर रखा है । जो वे करते हैं नि:सन्देह (वह) बहुत ही बुरा है ।16।

اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۟۱۷

उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है । अत: उन्होंने अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोक रखा है । परिणामस्वरूप उनके लिए अपमानजनक अज़ाब (निश्चित) है ।17।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۟۱۸

उनके धन और उनकी संतान अल्लाह के विरुद्ध उनके किसी काम नहीं आएँगे । यही आग (में पड़ने) वाले लोग हैं । वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं ।18।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ

जिस दिन अल्लाह उनको इकट्ठा उठाएगा तो वे उसके सामने भी उसी प्रकार क़समें खाएँगे जिस प्रकार तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं । और धारणा करेंगे कि वे किसी सिद्धान्त

عَلٰى شَىۡءٍ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمۡ هُمُ الۡكٰذِبُوۡنَ ۝١٩

पर (क़ायम) हैं । सावधान ! यही हैं जो झूठे हैं ।19।

اِسۡتَحۡوَذَ عَلَيۡهِمُ الشَّيۡطٰنُ فَاَنۡسٰهُمۡ ذِكۡرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓـئِكَ حِزۡبُ الشَّيۡطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزۡبَ الشَّيۡطٰنِ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ۝٢٠

शैतान उन पर विजयी हो गया । अत: उसने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी । यही शैतान के समुदाय हैं । सावधान ! शैतान ही का समुदाय ही अवश्य हानि उठाने वाला है ।20।

اِنَّ الَّذِيۡنَ يُحَآدُّوۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗۤ اُولٰٓـئِكَ فِى الۡاَذَلِّيۡنَ ۝٢١

नि:सन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं ये ही घोर अपमानित लोगों में से हैं ।21।

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِىۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيۡزٌ ۝٢٢

अल्लाह ने लिख रखा है कि अवश्य मैं और मेरे रसूल विजयी होंगे । नि:सन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।22।

لَا تَجِدُ قَوۡمًا يُّؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ يُوَآدُّوۡنَ مَنۡ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ وَلَوۡ كَانُوۡۤا اٰبَآءَهُمۡ اَوۡ اَبۡنَآءَهُمۡ اَوۡ اِخۡوَانَهُمۡ اَوۡ عَشِيۡرَتَهُمۡ ؕ اُولٰٓـئِكَ كَتَبَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمُ الۡاِيۡمَانَ وَاَيَّدَهُمۡ بِرُوۡحٍ مِّنۡهُ ؕ وَيُدۡخِلُهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡهُ ؕ اُولٰٓـئِكَ حِزۡبُ اللّٰهِ ؕ

तू कोई ऐसे लोग नहीं पाएगा जो अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान रखते हुए ऐसे लोगों से मित्रता करें जो अल्लाह और उसक रसूल से शत्रुता करते हों । चाहे वे उनके बाप-दादा हों अथवा उनके बेटे हों अथवा उनके भाई हों अथवा उनके समुदाय के लोग हों । यही वे (आत्मसम्मानी) लोग हैं जिन के दिल में अल्लाह ने ईमान लिख रखा है । और उनका वह अपने आदेश से समर्थन करता है । और वह उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिन के दामन में नहरें बहती हैं वे उनमें सदा रहते चले जाएँगे। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गए । यही अल्लाह का समुदाय है । सावधान !

اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٢٢ ع

अल्लाह ही का समुदाय है जिनमें सफल होने वाले लोग हैं ।23।*

(रुकू $\frac{3}{3}$)

✲ आयतांश : **अय्यदहुम बिरूहिम मिन हु** (उनका वह अपने आदेश से समर्थन करता है) में **हुम** (अर्थात उन) सर्वनाम सहाबा के लिए प्रयुक्त हुआ है और कहा गया है कि सहाबा रज़ि. पर **रूह-उल-क़ुदुस** उतरता था । इस दृष्टि से ईसाइयों के लिए गर्व करने का कोई स्थान नहीं रहता कि हज़रत ईसा अलै. पर **रूह-उल-क़ुदुस** उतरता था । वह तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सेवकों पर भी उतरता था और उनका सहायक होता था ।

59– सूरः अल–हश्र

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 25 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में एक हश्र (प्रतिफल दिवस) का उल्लेख है और इसके अन्त पर भी एक महान प्रतिफल दिवस का वर्णन है । प्रथम प्रतिफल दिवस जिसे **अव्वलुल हश्र** कहा गया है उस दिन यहूदियों को जो दण्ड दिये गये उससे मानो उनके लिए प्रथम प्रतिफल दिवस क़ायम हो गया और प्रत्येक को उसके पाप के अनुसार दण्ड दिया गया । कुछ के लिए निर्वासन निश्चित किया गया । कुछ के लिए अपने हाथों अपने ही घरों को नष्ट करने का दण्ड निर्धारित हुआ तथा कुछ को मृत्युदण्ड दिया गया । अतः यह प्रथम प्रतिफल दिवस है जिसमें दण्डों का विवरण है । इस सूरः के अंत पर जिस प्रतिफल दिवस का उल्लेख है उसमें यह वर्णन किया गया कि दण्ड उनको मिलते हैं जो अल्लाह की याद को भुला देते हैं और फिर अपनी आत्मा की अच्छाई और बुराई को भूल जाते हैं । परन्तु उनके अतिरिक्त वे भी हैं जो प्रत्यके अवस्था में अल्लाह को याद रखते हैं और दृष्टि रखते हैं कि वे अपने कैसे कर्म आगे भेज रहे हैं । उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान किया जाएगा ।

अल्लाह के गुणगान का जो विषयवस्तु पहली सूरतों में और इस सूरः के आरम्भ में वर्णित है, इस सूरः के अन्त पर उसी विषयवस्तु का उत्कर्ष है जो आयत संख्या 23 से आरम्भ होती है । इनमें अल्लाह तआला के कुछ महान गुणवाचक नाम उल्लेख किये गए हैं और आयत संख्या 25 में **समस्त सुन्दर नाम उसी के हैं** कह कर यह वर्णन कर दिया गया है कि केवल इतने ही नाम नहीं बल्कि समस्त सुन्दर नाम उसी के हैं ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ ثَلَاثَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

जो आकाशों और धरती में है वह अल्लाह का गुणगान करता है और वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

هُوَ الَّذِىْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِى الْاَبْصَارِ ③

वही है जिसने अहले किताब में से उनको जिन्होंने इनकार किया प्रथम प्रतिफल दिवस के अवसर पर उनके घरों से निकाला । तुम धारणा नहीं करते थे कि वे निकल जाएँगे जबकि वे यह समझते थे कि उनके दुर्ग अल्लाह से उनकी रक्षा करेंगे । फिर अल्लाह उन तक आ पहुँचा जहाँ से (आने की) वे कल्पना तक न कर सके । और उसने उनके दिलों में रोब डाल दिया । वे स्वयं अपने ही हाथों और मोमिनों के हाथों से भी अपने घरों को नष्ट करने लगे । अतः हे बुद्धिसंपन्न लोगो ! शिक्षा ग्रहण करो ।3।*

وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِى الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ④

और यदि अल्लाह ने उनके लिए निर्वासन निश्चित न किया होता तो उन्हें इसी लोक में अज़ाब देता जबकि परलोक में उन के लिए (अवश्यमेव) अग्नि का अज़ाब (निश्चित) है ।4।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ

यह इस कारण है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का घोर विरोध किया ।

* इस आयत में यहूदी क़बीला बनु नज़ीर के निर्वासित होने की घटना का उल्लेख है ।

يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

और जो अल्लाह का विरोध करता है तो नि:सन्देह अल्लाह दण्ड देने में बहुत कठोर है ।5।

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦

जो भी खजूर का वृक्ष तुमने काटा अथवा उसे अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो अल्लाह के आदेश पर ऐसा किया । और ऐसा करने का यह कारण था कि वह दुराचारियों को अपमानित कर दे ।6।

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٧

और अल्लाह ने उन (के धन-सम्पत्तियों में) से अपने रसूल को युद्धलब्ध धन स्वरूप जो प्रदान किया तो उस के लिए तुमने न घोड़े दौड़ाए और न ऊँट । परन्तु अल्लाह अपने रसूलों को जिन पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।7।

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٨

अल्लाह ने कुछ बस्तियों के निवासियों (के धन-सम्पत्तियों में) से अपने रसूल को जो कुछ युद्धलब्ध धन के रूप में प्रदान किया है तो वह अल्लाह के लिए और रसूल के लिए है और निकट सम्बन्धियों, अनाथों और दरिद्रों और यात्रियों के लिए है । ताकि ऐसा न हो कि यह (युद्धलब्ध धन) तुम्हारे धनवानों ही के बीच में चक्कर लगाता रहे । और रसूल जो तुम्हें प्रदान करे तो उसे ले लो और जिस से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह का तक़्वा धारण करो । नि:सन्देह अल्लाह दण्ड देने में बहुत कठोर है ।8।

(यह धन) उन दरिद्र मुहाजिरों के लिए भी है जो अपने घरों से निकाले गए और अपनी धन-सम्पत्तियों से (अलग किए गए) । वे अल्लाह ही से कृपा और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की सहायता करते हैं । यही वे हैं जो सच्चे हैं ।9।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا وَّ يَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ﴿۹﴾

और वे लोग जिन्होंने उनसे पूर्व ही घर तैयार कर रखे थे और ईमान को (दिलों में) स्थान दिया था । वे उनसे प्रेम करते थे जो हिजरत करके उनकी ओर आए और जो कुछ उन (मुहाजिरों) को दिया गया था (वे) उसकी कोई लालसा नहीं रखते थे । और स्वयं तंगी में होते हुए भी अपनी जानों पर दूसरों को प्राथमिकता देते थे । अत: जो कोई भी आत्मा की कृपणता से बचाया जाए तो यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं ।10।

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕۛ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۱۰﴾

और जो लोग उनके बाद आए वे कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें और हमारे उन भाइयों को भी क्षमा कर दे जो ईमान में हम से आगे निकल गए । और हमारे दिलों में उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, कोई द्वेष न रहने दे । हे हमारे रब्ब! नि:सन्देह तू बड़ा कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है ।11।*

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۧ﴿۱۱﴾

(रुकू $\frac{1}{4}$)

---

* आयत संख्या 9 से 11 : ये आयतें अन्सार और मुहाजिरों के ईमान और ऊँचे आध्यात्मिक दर्जों का वर्णन कर रही हैं । हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रहि. की सेवा में एक बार इराक़ के राफ़ज़ियों (शीया संप्रदाय का एक गुट) का एक शिष्ट मण्डल उपस्थित हुआ और उन्होंने हज़रत अबू बकर, उमर और उसमान रज़ि. के विरुद्ध बातें कीं । हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रहि. ने उनसे कहा कि क्या→

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَ لَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّ اِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾

क्या तूने उनकी ओर दृष्टि नहीं दौड़ाई जिन्होंने कपट किया । वे अह्ले किताब में से अपने उन भाइयों से जिन्होंने इनकार किया, कहते हैं कि यदि तुम निकाल दिए गए तो तुम्हारे साथ हम भी अवश्य निकलेंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी का आज्ञापालन नहीं करेंगे । और यदि तुम्हारे विरुद्ध लड़ाई की गई तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे । और अल्लाह गवाही देता है कि नि:सन्देह वे झूठे हैं ।12।

لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٣﴾

और यदि वे निकाल दिए गए तो उनके साथ ये नहीं निकलेंगे और यदि उनसे लड़ाई की गई तो ये कभी उनकी सहायता नहीं करेंगे । और यदि ये उनकी सहायता करेंगे भी तो अवश्य पीठ दिखा जाएँगे । फिर उनकी कोई सहायता न की जाएगी ।13।

لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٤﴾

उनके दिलों में भय उत्पन्न करने की दृष्टि से निश्चित रूप से तुम (उनके निकट) अल्लाह से अधिक कठोर (प्रतीत होते) हो । यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं ।14।

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى

वे क़िलाबन्द बस्तियों में अथवा प्राचीरों के ओट में रहकर युद्ध करने के अतिरिक्त तुमसे इकट्ठे होकर युद्ध नहीं

←तुम लोग मुहाजिरों में से हो ? (जिनका आयत सं. 9 में वर्णन है) उन्होंने कहा, नहीं । फिर उन्होंने पूछा, तो क्या तुम अन्सार में से हो ? (जिनका आयत सं 10 में वर्णन है) उन्होंने कहा, नहीं। उन्होंने कहा, तो फिर मैं गवाही देता हूँ कि तुम उन लोगों में से भी नहीं हो (जिनका वर्णन आयत सं. 11 में है और) जिनके बारे में आया है **और जो लोग उनके बाद आए वे....।**
(कश्फ़ुल गुम्मा, भाग 2, पृष्ठ 290, बैरूत प्रकाशन 1401 हिजरी)

مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ
بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّ قُلُوْبُهُمْ
شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۚ﴿۱۵﴾

करेंगे । उनकी लड़ाई परस्पर बहुत कठोर है । तू उन्हें इकट्ठा समझता है जबकि उनके दिल फटे हुए हैं । यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते ।15।*

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا
وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۚ﴿۱۶﴾

(ये) उन लोगों की भाँति (हैं) जो उनसे अल्प समय पूर्व अपने कर्मों का दुष्फल भोग चुके हैं । और उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।16।

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ
فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ
اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۷﴾

उन का उदाहरण शैतान की भाँति है, जब उसने मनुष्य से कहा, इनकार कर दे। अत: जब उसने इनकार कर दिया तो कहने लगा कि निश्चित रूप से मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ । नि:सन्देह मैं तो समस्त लोकों के रब्ब, अल्लाह से डरता हूँ ।17।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ
خٰلِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۸﴾ ع

अत: उन दोनों का अंत यह ठहरा कि वे दोनों ही आग में पड़ेंगे । दोनों उसमें लम्बे समय तक रहने वाले होंगे । अत्याचारियों का यही प्रतिफल हुआ करता है ।18। (रुकू $\frac{2}{5}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ
نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक़्वा धारण करो । और प्रत्येक जान यह ध्यान रखे कि वह कल के लिए क्या आगे भेज रही है । और अल्लाह का

* यह यहूदियों के सम्बन्ध में एक भविष्यवाणी है जो क़यामत तक इसी प्रकार पूरी होती रहेगी । जब तक यहूदियों को मज़बूत प्रतिरक्षात्मक दुर्ग उपलब्ध न हों, जो प्रत्येक युग में परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हों, और इसके परिणाम स्वरूप उनको अपनी श्रेष्ठता का विश्वास न हो, वे कभी भी प्रतिपक्ष से युद्ध नहीं करेंगे । परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उनके दिल परस्पर इकट्ठे हैं । प्रत्यक्ष रूप में तो वे अपने शत्रु के विरुद्ध इकट्ठे दिखाई देते हैं परन्तु परस्पर सदा उनके दिल एक दूसरे से फटे रहते हैं । वर्तमान काल में जिन लोगों को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों के समान ठहराया है उनकी भी बिल्कुल यही अवस्था है ।

إِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

तक़्वा धारण करो । निःसन्देह जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।19।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٢٠﴾

और उन लोगों के सदृश न बन जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें स्वयं अपने आप से विस्मृत करवा दिया । यही दुराचारी लोग हैं ।20।

لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢١﴾

अग्नि (अर्थात नरक) वाले और स्वर्ग वाले कभी समान नहीं हो सकते। स्वर्गगामी ही सफल होने वाले हैं ।21।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٢﴾

यदि हमने इस क़ुरआन को किसी पर्वत पर उतारा होता तो तू अवश्य देखता कि वह अल्लाह के भय से विनम्रता करते हुए टुकड़े-टुकड़े हो जाता । और ये उदाहरण हैं जिन्हें हम लोगों के लिए वर्णन करते हैं ताकि वे सोच-विचार करें ।22।*

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٣﴾

वही अल्लाह है जिसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अदृश्य और दृश्य का ज्ञाता है । वही है जो बिन मांगे देने वाला, अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।23।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

वही अल्लाह है जिसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । वह सम्राट है, पवित्र है, सलाम है, शांति देने वाला है, निरीक्षक है, पूर्ण प्रभुत्व वाला है, बिगड़े काम बनाने वाला है (और) महिमावान है ।

---

* इस आयत में जिन पर्वतों का वर्णन है उनसे अभिप्राय भौतिक पर्वत नहीं बल्कि पर्वतों की भांति बड़े-बड़े लोग हैं । जैसा कि इस आयत के अंत पर यह परिणाम निकाला गया है कि ये उदाहरण हैं जो इस लिए वर्णन किये जाते हैं ताकि लोग इन पर सोच-विचार करें ।

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٤﴾

अल्लाह उससे पवित्र है जो वे शिर्क करते हैं ।24।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٥﴾ ع

वही अल्लाह है जो सृष्टिकर्ता, सृष्टि का आरम्भ करने वाला और आकृति दाता है। सब सुन्दर नाम उसी के हैं । जो आकाशों और धरती में है (वह) उसी का गुणगान कर रहा है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।25। (रुकू $\frac{3}{6}$)

60– सूरः अल–मुम्तहिनः

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 14 आयतें हैं ।

इससे पूर्ववर्ती सूरः में यहूदियों के प्रतिफल दिवस का वर्णन किया गया है और इस सूरः में मुसलमानों को सावधान किया जा रहा है कि जो अल्लाह और रसूल से शत्रुता रखते हैं उनको कदापि मित्र न बनाओ । क्योंकि यदि वे मित्र बन भी जाएँ तब भी उनके सीनों में द्वेष भरा हुआ रहता है और वे हर समय तुम्हें नष्ट करने की योजनाएँ बनाते रहते हैं ।

इसके पश्चात हज़रत इब्राहीम अलै. के आदर्श का उल्लेख है कि उनकी सारी मित्रताएँ अल्लाह ही के लिए थीं और सारी शत्रुताएँ भी अल्लाह ही के लिए थीं । इस कारण तुम्हारे निकट सम्बन्धी, माता-पिता और बच्चे तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकेंगे । तुम्हें अवश्य ही अपने सम्बन्ध अल्लाह ही के लिए सुधारने होंगे और अल्लाह ही के लिए तोड़ने होंगे । परन्तु साथ ही मोमिनों को यह ताकीद कर दी कि तुम्हारे जो शत्रु दुःख देने में पहल नहीं करते तुम्हें कदापि अधिकार नहीं पहुँचता कि उनको दुःख देने में तुम पहल करो । उच्चकोटि के न्याय का यही मापदण्ड है कि जब तक वे तुमसे मित्रता निभाते रहें तुम भी उनसे मित्रता रखो ।

क्योंकि यह सूरः उस युग का उल्लेख कर रही है जबकि मुसलमानों को यहूदियों के अतिरिक्त दूसरे मुश्रिकों से भी अपने बचाव के लिए युद्ध करने की अनुमति दे दी गई थी । इस लिए युद्ध के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली बहुत सी समस्याओं का भी वर्णन कर दिया गया कि इस अवस्था में उचित उपाय क्या होगा । उदाहरणार्थ काफ़िरों की पत्नियाँ यदि ईमान लाकर हिजरत कर जाएँ तो उनके ईमान की पूरी तरह परीक्षा ले लिया करो और यदि वे वास्तव में अपनी इच्छा से ईमान लाई हैं तो फिर पहला कर्त्तव्य यह है कि उनको कदापि काफ़िरों की ओर वापस न लौटाओ क्योंकि वे दोनों एक दूसरे के लिए वैध नहीं रहे । हाँ उनके अभिभावकों को वह ख़र्च दे दिया करो जो वे उन पर कर चुके हैं ।

इसके पश्चात अन्त में उस बैअत की प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है जो उन सभी मोमिन स्त्रियों से भी लेनी चाहिए जो काफ़िरों के चुंगल से भाग कर हिजरत करके आई हैं । उनके अतिरिक्त दूसरी सभी मोमिन स्त्रियों से भी यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए जब वे बैअत करना चाहें ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ②

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! मेरे शत्रु और अपने शत्रु को कभी मित्र न बनाओ। तुम उनकी ओर प्रेम के संदेश भेजते हो जबकि वे उस सत्य का जो तुम्हारे पास आया है, इनकार कर चुके हैं । वे रसूल को और तुम्हें केवल इसलिए (देश से) निकालते हैं क्योंकि तुम अपने रब्ब, अल्लाह पर ईमान ले आए । यदि तुम मेरे मार्ग में और मेरी ही प्रसन्नता चाहते हुए जिहाद पर निकले हो और साथ ही उन्हें प्रेम के गुप्त संदेश भी भेज रहे हो जबकि मैं सबसे अधिक जानता हूँ जो तुम छिपाते और जो प्रकट करते हो (तो तुम्हारा यह छिपाना व्यर्थ है) । और जो भी तुम में से ऐसा करे तो वह सन्मार्ग से भटक चुका है ।2।

اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۗ③

यदि वे तुम्हें कहीं पाएँ तो तुम्हारे शत्रु ही रहेंगे और अपने हाथ और अपनी ज़ुबानें दुर्भावना रखते हुए तुम पर चलाएँगे और चाहेंगे कि काश ! तुम भी इनकार कर दो ।3।

معانقة ٢ عند المتاخرين

لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۛ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۛ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

तुम्हारे निकट सम्बन्धी और तुम्हारी संतान क़यामत के दिन कदापि तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकेंगे । वह (अल्लाह) तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा

بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ۝٤

और जो तुम करते हो अल्लाह उस पर सदा दृष्टि रखता है ।4।

قَدۡ كَانَتۡ لَـكُمۡ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ فِىۡۤ اِبۡرٰهِيۡمَ وَالَّذِيۡنَ مَعَهٗ‌ ۚ اِذۡ قَالُوۡا لِقَوۡمِهِمۡ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنۡكُمۡ وَمِمَّا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ كَفَرۡنَا بِكُمۡ وَبَدَا بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكُمُ الۡعَدَاوَةُ وَالۡبَغۡضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَحۡدَهٗۤ اِلَّا قَوۡلَ اِبۡرٰهِيۡمَ لِاَبِيۡهِ لَاَسۡتَغۡفِرَنَّ لَكَ وَمَاۤ اَمۡلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ‌ ؕ رَبَّنَا عَلَيۡكَ تَوَكَّلۡنَا وَاِلَيۡكَ اَنَبۡنَا وَاِلَيۡكَ الۡمَصِيۡرُ ۝٥

निश्चित रूप से इब्राहीम और उन लोगों में जो उसके साथ थे तुम्हारे लिए एक उत्तम आदर्श है । जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि हम तुमसे और उससे भी विरक्त हैं जिसकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो । हम तुम्हारा इनकार करते हैं और हमारे और तुम्हारे बीच सदा की शत्रुता और द्वेष प्रकट हो चुके हैं, जबतक कि तुम एक ही अल्लाह पर ईमान न ले आओ । सिवाए इब्राहीम के अपने पिता के लिए एक कथन के (जो एक अपवाद स्वरूप था) कि मैं अवश्य आप के लिए क्षमा की दुआ करूँगा । हालाँकि मैं अल्लाह की ओर से आपके बारे में कुछ भी अधिकार नहीं रखता । हे हमारे रब्ब ! तुझ पर ही हम भरोसा करते हैं और तेरी ओर ही हम झुकते हैं और तेरी ओर ही लौट कर जाना है ।5।

رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا فِتۡنَةً لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَاغۡفِرۡ لَنَا رَبَّنَا‌ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۝٦

हे हमारे रब्ब ! हमें उन लोगों के लिए परीक्षा का पात्र न बना जिन्होंने इनकार किया । और हे हमारे रब्ब ! हमें क्षमा कर दे निःसन्देह तू पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।6।

لَقَدۡ كَانَ لَـكُمۡ فِيۡهِمۡ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنۡ كَانَ يَرۡجُوا اللّٰهَ وَالۡيَوۡمَ الۡاٰخِرَ‌ ؕ وَمَنۡ

निःसन्देह तुम्हारे लिए उनमें एक उत्तम आदर्श है अर्थात उसके लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिवस की आशा रखता है । और जो विमुख हो जाए तो (जान ले कि) निःसन्देह वह अल्लाह ही है जो

يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٧

निस्पृह (और) प्रशंसा का पात्र है ।7।
(रुकू $\frac{1}{7}$)

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۭ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٨

संभव है कि अल्लाह तुम्हारे और उनमें से उन लोगों के बीच जिनसे तुम परस्पर शत्रुता रखते थे, प्रेम उत्पन्न कर दे । और अल्लाह सदा सामर्थ्य रखने वाला है । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।8।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩

अल्लाह तुम्हें उनसे भलाई और न्यायपूर्ण व्यवहार करने से मना नहीं करता जिन्होंने तुम से धार्मिक विषय में युद्ध नहीं किया । और न तुम्हें निर्वासित किया। नि:सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है ।9।*

اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝١٠

अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से मित्रता करने के बारे में मना करता है जिन्होंने धार्मिक विषय में तुमसे युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हें निकालने में एक दूसरे की सहायता की । और जो उन्हें मित्र बनाएगा तो यही हैं वे जो अत्याचारी हैं ।10।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम्हारे पास मोमिन स्त्रियाँ मुहाजिर होने की अवस्था में आएँ तो उनकी परीक्षा ले

* यह आयत अन्यायपूर्वक युद्ध करने की कल्पना का खण्डन करती है और उन लोगों से सद्‌व्यवहार और मित्रता करने से नहीं रोकती जिन्होंने मुसलमानों से धार्मिक मतभेद के कारण युद्ध नहीं किया और निर्दोष मुसलमानों को अपने घरों से नहीं निकाला । कुछ अन्य आयतों से कई लोग यह भूल व्याख्या करते हैं कि प्रत्येक प्रकार के ग़ैर मुस्लिमों से मित्रता करना अवैध है । परन्तु इस आयत से तो पता चलता है कि जिन्होंने मुसलमानों के विरुद्ध धार्मिक मतभेद के कारण बर्बरता नहीं अपनाई, उनसे न केवल मित्रता करना वैध है बल्कि उनसे तो सद्‌व्यवहार करने का आदेश दिया गया है ।

بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ
فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ
لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ
مَّآ اَنْفَقُوْا ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ
تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ
وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا
مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ
حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۱﴾

लिया करो । अल्लाह उनके ईमान को सबसे अधिक जानता है । अत: यदि तुम भली प्रकार ज्ञात कर लो कि वे मोमिन स्त्रियाँ हैं तो काफ़िरों की ओर उन्हें वापस न भेजो । न ये उनके लिए वैध हैं और न वे इनके लिए वैध हैं । और उन (के अभिभावकों) को जो वे खर्च कर चुके हैं अदा करो । उन्हें उनके महर देने के पश्चात तुम उनसे निकाह करो तो तुम पर कोई पाप नहीं । और काफ़िर स्त्रियों के निकाह का मामला अपने अधिकार में न लो । और जो तुमने उन पर खर्च किया है वह उनसे माँगो और जो उन्होंने खर्च किया है वे तुमसे माँगें । यह अल्लाह का आदेश है । वह तुम्हारे बीच निर्णय करता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।11।

وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى
الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ
اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲﴾

और यदि तुम्हारी पत्नियों में से कुछ काफ़िरों की ओर चली जायँ और तुम क्षतिपूर्ति ले चुके हो तो उन मोमिनों को जिनकी पत्नियाँ हाथ से जा चुकी हों उसके अनुसार दो जो उन्होंने खर्च किया था । और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाते हो ।12।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ
يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا

हे नबी ! जब मोमिन स्त्रियाँ तेरे पास आएँ (और) इस (बात) पर तेरी बैअत् करें कि वे किसी को अल्लाह का साझीदार नहीं ठहराएँगी । और न ही चोरी करेंगी और न व्यभिचार करेंगी और न अपनी संतान का वध करेंगी और

وَّلَا يَسۡرِقۡنَ وَلَا يَزۡنِيۡنَ وَلَا يَقۡتُلۡنَ اَوۡلَادَهُنَّ وَلَا يَاۡتِيۡنَ بِبُهۡتَانٍ يَّفۡتَرِيۡنَهٗ بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِنَّ وَاَرۡجُلِهِنَّ وَلَا يَعۡصِيۡنَكَ فِىۡ مَعۡرُوۡفٍ فَبَايِعۡهُنَّ وَاسۡتَغۡفِرۡ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۳﴾

न ही (किसी पर) कोई झूठा आरोप लगाएँगी, जिसे वे अपने हाथों और पाँवों के सामने गढ़ लें । और न ही उचित (बातों) में तेरी अवज्ञा करेंगी तो तू उनकी बैअत् स्वीकार कर और उनके लिए अल्लाह से क्षमा याचना कर । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।13।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَوَلَّوۡا قَوۡمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ قَدۡ يَئِسُوۡا مِنَ الۡاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الۡكُفَّارُ مِنۡ اَصۡحٰبِ الۡقُبُوۡرِ ﴿۱۴﴾ ع

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! ऐसे लोगों से मित्रता न करो जिन पर अल्लाह क्रोधित हुआ । वे परलोक से निराश हो चुके हैं जैसे काफ़िर क़ब्रों में पड़े व्यक्तियों से निराश हो चुके हैं ।14।

(रुकू $\frac{2}{8}$)

61– सूर: अस–सफ़्फ़

यह सूर: मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 15 आयतें हैं ।

पिछली सूर: के अन्त पर जिस बैअत् की प्रतिज्ञा का उल्लेख है उसमें केवल मोमिन स्त्रियों के उत्तरदायित्वों का वर्णन ही नहीं है अपितु मोमिन पुरुष भी बैअ्त की प्रतिज्ञा करके इस प्रकार की आध्यात्मिक रोगों से बचने की प्रतिज्ञा करते हैं । अत: दोनों को सूर: अस्- सफ़्फ़ के आरम्भ में यह आदेश दिया गया है कि अपनी बैअत की प्रतिज्ञा में कपट न करना और यह न हो कि दूसरों को तो उपदेश करते रहो और स्वयं उसके लिए प्रतिबद्ध न हो । यदि तुम निष्ठापरता के साथ बैअत् की प्रतिज्ञा पर अडिग रहोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे दिल एक दूसरे से इस प्रकार मिला देगा कि तुम्हें एक सीसा से ढली हुई दीवार के सदृश शत्रु के मुक़ाबले पर खड़ा कर देगा ।

इसी सूर: में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में हज़रत ईसा अलै. की भविष्यवाणी का भी वर्णन है जिसमें हज़रत **मुहम्मद** मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वितीय नाम अर्थात **अहमद** का उल्लेख किया गया है । जो आपके सौम्य रूप का द्योतक है । **अहमद** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में इसके बाद जो विवरण मिलता है उससे स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सौम्य रूप का द्योतक एक व्यक्ति अंत्ययुग में जन्म लेगा । उस समय उसको और उसके अनुयायियों को इस्लाम की जिस रंग में शांतिपूर्वक सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होगा वह रूप-रेखा साफ प्रकट कर रही है कि यह आने वाले युग की एक भविष्यवाणी है ।

क्योंकि इस सूर: के अन्त पर हज़रत ईसा अलै. और उनकी भविष्यवाणियों का उल्लेख हो रहा है, इस लिए जिस प्रकार उन्होंने यह घोषणा की थी कि कौन है जो अल्लाह के लिए मेरा सहायक बनेगा । उसी प्रकार आवश्यक है कि अंत्ययुग में जब दोबारा यह घोषणा हो तो वे सभी मुसलमान जो सच्चे दिल से इन भविष्यवाणियों पर ईमान लाए हैं वे भी यह घोषणा करते हुए मुहम्मदी मसीह के झंडे तले एकत्रित हो जाएँ कि हम प्रत्येक प्रकार से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म के समर्थन में मुहम्मदी मसीह की धर्मसेवा के कामों में उसके सहायक बनेंगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

अल्लाह ही का गुणगान करता है जो आकाशों में है और जो धरती में है । और वह (अल्लाह) पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ③

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! क्यों वह (बात) कहते हो जो तुम करते नहीं ? ।3।

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ④

अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा पाप है कि तुम वह (बात) कहो जो तुम करते नहीं ।4।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ⑤

नि:सन्देह अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है जो उसके मार्ग में पंक्तिबद्ध हो कर युद्ध करते हैं मानो वे एक सीसा से ढाली हुई दीवार हैं ।5।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۗ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ⑥

और (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा, हे मेरी जाति ! तुम मुझे क्यों कष्ट देते हो ? हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ । फिर जब वे टेढ़े हो गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।6।

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ

और (याद करो) जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा, हे बनी इस्राईल ! नि:सन्देह मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का

مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۷

रसूल बन कर उस बात की पुष्टि करते हुए आया हूँ जो तौरात में से मेरे सामने है । और एक महान रसूल का शुभ-सामाचार देते हुए जो मेरे बाद आएगा जिसका नाम **अहमद** होगा । फिर जब वह स्पष्ट चिह्नों के साथ उनके पास आया तो उन्होंने कहा, यह तो एक खुला-खुला जादू है ।7।*

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۸

और उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, हालाँकि उसे इस्लाम की ओर बुलाया जा रहा हो । और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।8।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝۹

वे चाहते हैं कि वे अपने मुँह की फूँकों से अल्लाह के नूर को बुझा दें हालाँकि अल्लाह अवश्यमेव अपना नूर पूरा करने वाला है चाहे काफ़िर बुरा मनायें ।9।**

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝۱۰ ع

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (के प्रत्येक क्षेत्र) पर पूर्णरूप से विजयी कर दे चाहे मुश्रिक बुरा मनाएँ ।10।*** (रुकू $\frac{1}{9}$)

---

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहमद रूपी महिमा (अर्थात सौम्य रूप) के प्रकट होने की भविष्यवाणी की गई है। आप सल्ल. **मुहम्मद** के रूप में भी प्रकट हुए जिसकी भविष्यवाणी हज़रत मूसा अलै. ने की और **अहमद** के रूपमें भी प्रकट हुए जिसकी भविष्यवाणी हज़रत ईसा अलै. ने की ।

** हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़र्माते हैं :- ''इस आयत में स्पष्ट रूप से समझाया गया है कि मसीह मौऊद चौदहवीं शताब्दी में पैदा होगा । क्योंकि नूर की पराकाष्ठा के लिए चौदहवीं रात्रि निश्चित है।'' (तोहफ़ा गोलड़विया रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 17, पृष्ठ 124 ।

*** इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सार्वभौम नबी होने का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है । अर्थात् आप सल्ल. किसी एक धर्म विशेष के मानने वालों की ओर नहीं→

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۱۱﴾

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार की जानकारी दूँ जो तुम्हें एक पीड़ाजनक अज़ाब से मुक्ति देगा ? ।11।

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۱۲﴾

तुम (जो) अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाते हो और अल्लाह के मार्ग में अपने धन और अपनी जानों के साथ जिहाद करते हो, यदि तुम ज्ञान रखते तो यह तुम्हारे लिए बहुत उत्तम है ।12।[*]

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۙ﴿۱۳﴾

वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट कर देगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । और ऐसे पवित्र घरों में भी (प्रविष्ट कर देगा) जो चिरस्थायी स्वर्गों में हैं । यह बहुत बड़ी सफलता है ।13।

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴﴾

एक दूसरा (शुभ समाचार भी) जिसे तुम बहुत चाहते हो, अल्लाह की ओर से सहायता और निकटस्थ विजय है । अत: तू मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे ।14।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के सहायक बन जाओ जैसा कि मरियम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था (कि) कौन हैं जो अल्लाह की ओर मार्गदर्शन करने में मेरे सहायक हैं ?

←आये बल्कि समस्त जगत में प्रकट होने वाले प्रत्येक धर्म के अनुयायियों की ओर आये हैं और उन पर प्रभुत्व पाएँगे ।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़र्माते हैं :-

''यह क़ुरआन शरीफ़ में एक महान भविष्यवाणी है जिसके बारे में अन्वेषी विद्वान एकमत हैं कि यह मसीह मौऊद के द्वारा पूरी होगी ।'' (तिरयाक़ुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 15, पृष्ठ 232)

✲ इस प्रकार का अनुवाद ''इम्ला मा मन्न बिहिर्रमान'' के अनुसार किया गया है ।

نَحۡنُ اَنۡصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡۢ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ وَ كَفَرَتۡ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَیَّدۡنَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا عَلٰی عَدُوِّهِمۡ فَاَصۡبَحُوۡا ظٰهِرِیۡنَ ﴿۱۵﴾

हवारियों ने कहा, हम अल्लाह के सहायक हैं । अत: बनी इस्राईल में से एक समुदाय ईमान ले आया और एक समुदाय ने इनकार कर दिया । फिर हमने उन लोगों की जो ईमान लाए उनके शत्रुओं के विरुद्ध सहायता की तो वे विजयी हो गये ।15। (रुकू $\frac{2}{10}$)

62– सूरः अल–जुमुअः

यह सूर: मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं ।

यह पिछली सूर: में उल्लेखित समस्त भविष्यवाणियों का संग्रह है । इसमें **जमअ** (एकत्रिकरण) के सभी अर्थ वर्णन कर दिये गये हैं । अर्थात् हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंत्ययुगीन मुसलमानों को आरंभिक युगीन मुसलमानों के साथ एकत्रित करने का कारण बनेंगे और अपने प्रताप और सौम्य गुणों की चमकार को भी एकत्रित करेंगे । जुम्अ: के दिन जो मुसलमानों को हर सप्ताह इकट्ठा किया जाता है, उसका भी इसी सूर: में वर्णन है ।

इस सूर: के अन्त पर यह भविष्यवाणी भी कर दी गई कि बाद के आने वाले मुसलमान धन कमाने और व्यापार में व्यस्त हो कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अकेला छोड़ देंगे । इस आयत के बारे में कुछ विद्वानों का यह कहना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में ऐसा हुआ करता था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अत्यन्त निष्ठावान सहाबा रज़ि. जिन्होंने कभी हज़रत मुहम्मद सल्ल. को भयानक युद्धों में भी अकेला नहीं छोड़ा, जब व्यापारी दलों के आने की ख़बरें सुना करते थे तो आपको छोड़ कर उनकी ओर भाग जाया करते थे, ऐसा कहना वास्तव में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के सहाबा पर एक लांछन है । निश्चित रूप से इसमें अंत्ययुग के मुसलमानों का वर्णन है जो अपने आचरण से अपने धर्म से बे-परवा हो चुके होंगे और हज़रत मुहम्मद सल्ल. के संदेश से कोई सरोकार नहीं रखेंगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝٢

जो अकाशों में है और जो धरती में है अल्लाह ही का गुणगान करता है । वह सम्राट है, पवित्र है, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

هُوَ الَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ۝٣

वही है जिसने निरक्षर लोगों में उन्हीं में से एक महान रसूल भेजा जो उन पर उसकी आयतों का पाठ करता है और उन्हें पवित्र करता है । और उन्हें पुस्तक की और विवेकशीलता की शिक्षा देता है जबकि इससे पूर्व वे निश्चितरूप से खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े थे ।3।*

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٤

और उन्हीं में से दूसरों की ओर भी (उसे भेजा है) जो अभी उनसे नहीं मिले । वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।4।**

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिस विशेष महिमा का उल्लेख किया गया है, वह यह है कि आप सल्ल. अपने ऊपर ईमान लाने वालों के सम्मुख क़ुरआनी आयतों के पाठ करने के साथ ही उन लोगों को पुस्तक का ज्ञान तथा विवेकशीलता सिखाने से पूर्व ही उनका शुद्धिकरण करते थे । क़ुरआन करीम का यह बड़ा चमत्कार है कि इससे पूर्व सूर: अल् बक़र: आयत 130 में हज़रत इब्राहीम अलै. की वह दुआ वर्णित है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आगमन से सम्बन्ध रखती है । उन्होंने ऐसे रसूल को भेजने की दुआ माँगी है जो अल्लाह की आयतें लोगों को पढ़ कर सुनाए, फिर उनको ज्ञान एवं विवेकशीलता की जानकारी दे और इस प्रकार उनका शुद्धिकरण करे । इस दुआ के स्वीकार किये जाने का तीन स्थान पर उल्लेख है परन्तु तीनों स्थल पर यही वर्णन है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. क़ुरआनी आयतों का पाठ करने के साथ ही उनका शुद्धिकरण किया करते थे । फिर पुस्तक और विवेकशीलता के सिखाने का वर्णन है । अत: यह क़ुरआन करीम का विशेष चमत्कार है जो तेईस वर्ष में अवतरित हुआ परन्तु उसकी आयतों में एक स्थान पर भी परस्पर कोई मतभेद नहीं पाया जाता ।

** इस आयत में जिन **आख़रीन** (अंत्ययुगीनों) का वर्णन किया गया है उनमें उसी रसूल के→

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

यह अल्लाह की कृपा है वह उसको जिसे चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह बड़ा कृपालु है ।5।*

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۭ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

वे लोग जिन पर तौरात का उत्तरदायित्व डाला गया, फिर उन्होंने उसे उठाए न रखा (जैसा कि उसके उठाने का हक़ था) उनका उदाहरण उस गधे के सदृश है जो पुस्तकों का बोझ उठाता है । क्या ही बुरा है उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया । और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।6।

←आगमन का उल्लेख है जिसका पिछली आयत **वही है जिसने निरक्षरों में एक रसूल भेजा** में वर्णन है । परन्तु इस आयत के अन्त पर अल्लाह के वे चार गुणवाचक नामों का वर्णन नहीं किया गया जो आयत सं. 2 के अन्त पर वर्णित हैं, बल्कि केवल ''अज़ीज़'' (पूर्ण प्रभुत्व वाला) और हकीम (परम विवेकशील) दो गुणवाचक नामों की पुनरावृत्ति की गई है । जिससे ज्ञात होता है कि जिस रसूल का आरम्भ में वर्णन है वह दोबारा स्वयं नहीं आएगा । बल्कि उसके किसी प्रतिरूप को भेजा जाएगा जो **शरीअत वाला** नबी नहीं होगा । दिलचस्प विषय यह है कि हज़रत ईसा अलै. के सम्बन्ध में भी अल्लाह के यही दो गुणवाचक नाम वर्णन हुए हैं जैसा कि फ़र्माया : **बल्कि अल्लाह ने अपनी ओर उसका उत्थान किया और नि:सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।** (अन निसा आयत 159)

* इस आयत से सिद्ध होता है कि यह बात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रथम आगमन से सम्बन्धित नहीं है । अन्यथा **वह जिसे चाहता है उसको प्रदान करता है** कहने की आवश्यकता नहीं थी । बल्कि इससे अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का द्वितीय आगमन है जो आप सल्ल. की दासता को स्वीकार करते हुए प्रकट होने वाले एक उम्मती नबी के रूप में होगा । यह सम्मान एक कृपा स्वरूप है अल्लाह जिसे चाहेगा उसे यह प्रदान कर देगा। वह बड़ा कृपालु और उपकार करने वाला है । इस अर्थ का समर्थन 'सही बुख़ारी' की इस हदीस से भी होता है कि इस आयत के पाठ करने पर सहाबा रज़ि. ने प्रश्न किया कि **हे अल्लाह के रसूल ! वे कौन होंगे ?** यह नहीं पूछा कि वह कौन उतरेगा ? बल्कि यह पूछा कि वह किन लोगों की ओर भेजा जाएगा । इस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. के कंधे पर हाथ रख कर फ़र्माया कि **यदि ईमान सुरय्या (सितारे) पर भी चला जाएगा तो इन लोगों में से एक पुरुष अथवा कुछ पुरुष होंगे जो उसे सुरय्या से वापस धरती पर ले आएँगे ।** इससे स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो जाता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं दोबारा नहीं आएँगे बल्कि आप सल्ल. का एक सेवक अवतरित होगा जो फ़ारसी मूल का व्यक्ति अर्थात अरब वासियों से भिन्न होगा ।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٧

तू कह दे कि हे लोगो जो यहूदी बने हो! यदि तुम यह विचार करते हो कि सब लोगों को छोड़ कर एक तुम ही अल्लाह के मित्र हो, यदि तुम सच्चे हो तो मृत्यु की इच्छा करो ।7।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٨

और वे उस कारण कदापि उसकी इच्छा नहीं करेंगे जो उनके हाथों ने आगे भेजा है । और अल्लाह अत्याचारियों को ख़ूब जानता है ।8।

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٩ ع

तू कह दे कि नि:सन्देह वह मृत्यु जिससे तुम भाग रहे हो वह तुम्हें अवश्य आ पकड़ेगी । फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष का स्थायी ज्ञान रखने वाले (अल्लाह) की ओर लौटाए जाओगे । फिर वह तुम्हें (उस की) सूचना देगा जो तुम किया करते थे ।9। (रुकू $\frac{1}{11}$)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١٠

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब जुम्अ: के दिन के एक भाग में नमाज़ के लिए बुलाया जाए तो अल्लाह के स्मरण की ओर शीघ्रता पूर्वक आया करो और व्यापार को छोड़ दिया करो । यदि तुम ज्ञान रखते हो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है ।10।

فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١١

फिर जब नमाज़ अदा की जा चुकी हो तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह की कृपा को ढूँढो । और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।11।

وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ِۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا

और जब वे कोई व्यापार अथवा मन बहलावे (की बात) देखेंगे तो उसकी

وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾

ओर दौड़ पड़ेंगे और तुझे अकेला खड़ा हुआ छोड़ देंगे । तू कह दे कि जो अल्लाह के पास है वह मन बहलावे और व्यापार से अत्युत्तम है । और अल्लाह जीविका प्रदान करने वालों में सर्वोत्तम है ।12। (रुकू $\frac{2}{12}$)

63- सूरः अल-मुनाफ़िक़ून

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं।

इसका आरम्भ ही इस बात से किया गया है कि जिस प्रकार इस युग में कुछ मुनाफ़िक़ क़समें खाते हैं कि तू अवश्य अल्लाह का रसूल है जबकि अल्लाह भली प्रकार जानता है कि वास्तव में तू अल्लाह का रसूल है परन्तु अल्लाह यह भी गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ झूठे हैं। इसी प्रकार अंत्य युगीनों के समय मुसलमानों की बड़ी संख्या की यही अवस्था हो चुकी होगी। वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अपने ईमान को प्रकट करने में क़समें तो खाएँगे परन्तु अल्लाह तआला इस बात पर गवाह होगा कि वे केवल मुँह की क़समें खाते हैं और ईमान की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरे नहीं करते।

इसी सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में उत्पन्न होने वाले मुनाफ़िक़ों के नेता अर्थात् अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सुलूल का उल्लेख हुआ है कि किस प्रकार उसने एक युद्ध से वापसी पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्पष्ट रूप से अत्यन्त तिरस्कार किया था। यहाँ तक कि अपने बारे में मदीना-वासियों में सबसे अधिक सम्माननीय होने का दावा किया और इसके विपरीत हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बारे में अपमान जनक शब्द बोलते हुए यह दावा किया कि मदीना जाने पर वह हज़रत मुहम्मद सल्ल. को मदीना से निकाल देगा। अल्लाह के विधान ने जो कुछ दिखाया वह इसके बिल्कुल विपरीत था। हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने क्षमा का महान आदर्श प्रदर्शित करते हुए सामर्थ्य रखते हुए भी उसको मदीने से बाहर नहीं निकाला और उसके अन्तिम श्वास तक उसके लिए अल्लाह से क्षमायाचना करते रहे, यहाँ तक कि अन्ततः अल्लाह तआला ने आदेश देकर मना कर दिया कि भविष्य में कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होकर उसके लिए क्षमा की दुआ न किया करें।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُنَافِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ②

जब मुनाफ़िक़ तेरे पास आते हैं तो कहते हैं, हम गवाही देते हैं कि तू अवश्य अल्लाह का रसूल है । जबकि अल्लाह जानता है कि तू नि:सन्देह उसका रसूल है । फिर भी अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ अवश्य झूठे हैं ।2।*

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ③

उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है । अत: वे अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। जो वे कर्म करते हैं निश्चित रूप से बहुत बुरा है ।3।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ④

यह इस कारण है कि वे ईमान लाए फिर इनकार कर दिया तो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई । अत: वे समझ नहीं रहे ।4।

وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ

और जब तू उन्हें देखता है तो उनके शरीर तेरा दिल लुभाते हैं और यदि वे कुछ बोलें तो तू उनकी बात सुनता है । वे ऐसे हैं जैसे एक दूसरे के सहारे चुनी हुई सूखी लकड़ियाँ । वे बिजली की हर कड़क को अपने ही ऊपर (कड़कता हुआ) समझते हैं । वही शत्रु हैं, अत:

---

* कुछ लोग मुँह से सच्चाई स्वीकार करते हैं जो वास्तव में ठीक होती है परन्तु इसके बावजूद उनके दिल में इनकार होता है इसलिये अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचित कर दिया कि वे बात सच्ची कर रहे हैं परन्तु उनका दिल झुठला रहा है ।

قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝

उन (के अनिष्ट) से बच । उन पर अल्लाह की ला'नत हो । वे किधर उल्टे फिराए जाते हैं ।5।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝

और जब उन्हें कहा जाता है कि आओ ! अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा याचना करे, वे अपने सिर मोड़ लेते हैं । और तू उन्हें देखता है कि वे अहंकार करते हुए (सच्चाई को स्वीकार करने) से रुक जाते हैं ।6।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

चाहे तू उनके लिए क्षमा याचना करे अथवा उनके लिए क्षमा याचना न करे उन के लिए बराबर है । अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा । नि:सन्देह अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।7।

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝

यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के निकट रहते हैं उन पर खर्च न करो, यहाँ तक कि वे भाग जाएँ । हालाँकि आकाशों और धरती के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, परन्तु मुनाफ़िक़ समझते नहीं ।8।

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ ع

वे कहते हैं यदि हम मदीना की ओर लौटेंगे तो अवश्य वह जो सबसे अधिक सम्माननीय है उस को जो सबसे अधिक नीच है, उसमें से निकाल बाहर करेगा । हालाँकि सम्मान सब का सब अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों का है, परन्तु मुनाफ़िक़ लोग जानते नहीं ।9। (रुकू $\frac{1}{13}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम्हें तुम्हारी धन-सम्पत्ति और तुम्हारी

وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۰﴾

संतान अल्लाह के स्मरण से विस्मृत न कर दें। और जो ऐसा करें तो यही हैं जो हानि उठाने वाले हैं।10।

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱﴾

और उसमें से खर्च करो जो हमने तुम्हें दिया है इससे पूर्व कि तुम में से किसी पर मृत्यु आ जाए तो वह कहे, हे मेरे रब्ब ! काश तूने मुझे थोड़े समय तक ढील दी होती तो मैं अवश्य दान देता और नेक कर्म करने वालों में से बन जाता।11।

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲﴾ ع

और अल्लाह किसी जान को जब उसका निश्चित समय आ पहुँचा हो कदापि ढील नहीं देगा। और अल्लाह उससे जो तुम करते हो सदा अवगत रहता है।12।

(रुकू $\frac{2}{14}$)

64– सूरः अत–तग़ाबुन

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 19 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी सूरः अल् जुमुअः की भाँति अरबी वाक्य **युसब्बिहू लिल्लाहि मा फ़िस्मावाति व मा फ़िल अर्ज़ि** (आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का गुणगान कर रहा है) से होता है । इस सूरः में भी अल्लाह तआला के गुणगान उल्लेख करते हुए यह वर्णन किया गया है कि धरती व आकाश और जो कुछ उनमें है, अल्लाह का गुणगान कर रहा है । जैसा कि सब गुणगान करने वालों से बढ़ कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला का गुणगान किया । अतः कैसे संभव है कि उस **महान गुणगायक** का कोई अपमान करे और अल्लाह उस व्यक्ति को अपने क्रोध का निशाना न बनाए ।

सूरः अल् जुमुअः में अंत्ययुग में जिस एकत्रिकरण का वर्णन है उसके बारे में यह भविष्यवाणी कर दी गई कि वह **तग़ाबुन** अर्थात खरे-खोटे के बीच प्रभेद कर देने वाला दिन होगा ।

उस समय जो कि धर्म की सहायता के लिए अधिकता पूर्वक अर्थदान का समय होगा, उन सभी अर्थदान करने वालों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जो कुछ भी वे निष्ठापूर्वक अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करेंगे उसको अल्लाह तआला स्वीकार करते हुए उसका बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢

आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का गुणगान कर रहा है । उसी का साम्राज्य है और उसी की सब स्तुति है । और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।2।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣

वही है जिसने तुम्हें पैदा किया । अत: तुम में से काफ़िर भी हैं और मोमिन भी। और जो तुम करते हो । उस पर अल्लाह गहन दृष्टि रखने वाला है ।3।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٤

उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया । और तुम्हारी आकृति बनाई और तुम्हारे रूप बहुत सुन्दर बनाए और उसी की ओर लौट कर जाना है ।4।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٥

वह जानता है जो आकाशों और धरती में है । और (उसे भी) जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम प्रकट करते हो । और अल्लाह सीनों की बातों को सदैव जानता है ।5।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۖ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٦

क्या तुम तक उन लोगों की सूचना नहीं पहुँची जिन्होंने पहले इनकार किया था। अत: उन्होंने अपने निर्णय का दुष्परिणाम भोग लिया । और उनके लिए बहुत पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।6।

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٧

यह इस कारण है कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्नों के साथ आया करते थे तो वे कहते थे कि क्या हमें मनुष्य हिदायत देंगे ? अत: उन्होंने इनकार किया और मुँह फेर लिया और अल्लाह भी बेपरवा हो गया । और अल्लाह निस्पृह (और) प्रशंसा का अधिकारी है ।7।

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٨

वे लोग जिन्होंने इनकार किया धारणा कर बैठे कि वे कदापि उठाए नहीं जाएँगे। तू कह दे, क्यों नहीं । मेरे रब्ब की क़सम ! तुम अवश्य उठाए जाओगे । फिर जो तुम करते थे उससे अवश्य सूचित किये जाओगे । और अल्लाह पर यह बहुत आसान है ।8।

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٩

अत: अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर पर ईमान ले आओ जो हमने उतारा है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।9।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٠

जिस दिन वह तुम्हें एकत्रित होने के दिन (उपस्थित करने) के लिए इकट्ठा करेगा। यह वही हार-जीत का दिन है । और जो अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदैव रहेंगे । यह बहुत बड़ी सफलता है ।10।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठला दिया, ये ही आग (में पड़ने) वाले हैं । वे लम्बे समय

وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١١﴾ ع

तक उसमें रहेंगे और (वह) बहुत ही बुरा ठिकाना है ।11। (रुकू $\frac{1}{15}$)

مَا أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٢﴾

अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई विपत्ति नहीं आती । और जो अल्लाह पर ईमान लाए वह उसके दिल को हिदायत प्रदान करता है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का स्थायी ज्ञान रखता है ।12।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٣﴾

और अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो, फिर यदि तुम मुँह मोड़ लो तो (जान लो कि) हमारे रसूल पर केवल संदेश को स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है ।13।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٤﴾

अल्लाह (वह है कि उस) के सिवा कोई उपास्य नहीं । अत: चाहिए कि मोमिन अल्लाह ही पर भरोसा करें ।14।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِن تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥﴾

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! नि:सन्देह तुम्हारी पत्नियों में से और तुम्हारी संतान में से कुछ तुम्हारे शत्रु हैं । अत: उनसे बच कर रहो । और यदि तुम माफ़ करो और दरगुज़र करो और क्षमा कर दो तो नि:सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।15।

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۗ وَاللَّهُ عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾

तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान केवल परीक्षा (स्वरूप) हैं । और वह अल्लाह ही है जिसके पास बहुत बड़ा प्रतिफल है ।16।*

---

* इस आयत में संतान की ओर से जिस विपत्ति का वर्णन है उसका यह अर्थ नहीं कि वे माता-पिता को खुल्लम-खुल्ला विपत्ति में डालेंगे बल्कि अपने परिजनों के द्वारा मनुष्य परीक्षा में डाला जाता है । और जो इस परीक्षा में असफल हो जाए वह विपत्ति में पड़ जाता है ।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٧

जहाँ तक तुम्हें, अल्लाह का तक़वा धारण करो और सुनो तथा आज्ञापालन करो और खर्च करो (यह) तुम्हारे लिए उत्तम होगा । और जो मन की कृपणता से बचाए जाएँ, तो वे लोग सफल होने वाले हैं ।17।

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝١٨ ۙ

और यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण दोगे (तो) वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा । और अल्लाह बड़ा गुणग्राही (और) सहनशील है ।18।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١٩ ع

(वह) अदृश्य और दृश्य का स्थायी ज्ञान रखने वाला, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।19। (रुकू $\frac{2}{16}$)

65- सूर: अत-तलाक़

यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 13 आयतें हैं ।

इसका नाम सूर: अत-तलाक़ है और इसमें आरम्भ से लेकर अन्त तक तलाक़ से संबंधित विभिन्न विषयों का वर्णन है ।

पिछली सूर: से इस सूर: का प्रमुख संबंध यह है कि इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक ऐसे नूर के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकालता है । यही वह नूर है जो अंत्ययुग में एक बार फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के उन लोगों को अंधेरों से निकालेगा जो सांसारिक अंधकारों में भटकते फिर रहे होंगे । अंधेरों से निकलने के विषयवस्तु में दुराचारपूर्ण जीवन से निकल कर पवित्रता पूर्ण जीवन में प्रविष्ट होने का भावार्थ बहुत महत्व रखता है । अर्थात् आस्था के अन्धकारों से भी वह बाहर निकालेगा और कर्म के अन्धकारों से भी निकालेगा । अतएव सूर: अत्-तलाक़ में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कहा गया कि यह रसूल तो सिर से पाँव तक अल्लाह के स्मरण का प्रतीक है और स्मरण ही के परिणाम स्वरूप नूर प्राप्त होता है । इसी स्मरण के परिणाम स्वरूप ही अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह महत्ता प्रदान की कि आप सल्ल. पूर्ण रूपेण नूर बन गए और अपने सच्चे सेवकों को भी प्रत्येक प्रकार के अन्धकार से प्रकाश की ओर निकाला ।

इस सूर: में एक और ऐसी आयत है जो धरती और आकाश के रहस्यों पर से आश्चर्यजनक रूप से पर्दा उठाती है । जिस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं अंधेरों से निकालने वाले थे, उसी प्रकार आप सल्ल. पर वह वाणी उतारी गई जो ब्रह्मांड के अन्धकारों और रहस्यों पर से पर्दे उठा रही है । जहाँ क़ुरआन करीम में बार-बार सात आकाशों का उल्लेख है वहाँ यह भी कह दिया गया कि सात आकाशों की भाँति सात धरतियाँ भी सृष्टि की गई हैं । परन्तु अल्लाह ही भली प्रकार जानता है कि किस प्रकार उन धरतियों पर बसने वालों पर वह्इ उतरी और किन किन अंधेरों से उनको मुक्ति प्रदान की गई । अभी तक ब्रह्मांड की खोज करने वाले वैज्ञानिकों को इस विषयवस्तु के आरम्भ तक भी पहुँच प्राप्त नहीं हुई । परन्तु जैसा कि बार-बार प्रमाणित हो चुका है कि क़ुरआन के ज्ञान एक अक्षय स्रोत की भाँति असीमित हैं और भविष्य के वैज्ञानिक इन विद्याओं की एक सीमा तक अवश्य जानकारी पाएँगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ②

हे नबी ! जब तुम (लोग) अपनी पत्नियों को तलाक़ दिया करो तो उनको उनकी (तलाक़ की) इद्दत के अनुसार दो और इद्दत की गणना रखो और अल्लाह, अपने रब्ब से डरो । उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वे स्वयं निकलें सिवाए इसके कि वे खुली-खुली अश्लीलता में पड़ जायँ । और यह अल्लाह की सीमाएँ हैं । और जो भी अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो नि:सन्देह उसने अपनी जान पर अत्याचार किया । तू नहीं जानता कि संभवत: इसके बाद अल्लाह कोई (नया) निर्णय प्रकट कर दे ।2।

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ③

अत: जब वे अपनी निर्धारित अवधि को पहुँच जाएँ तो उन्हें समुचित ढंग से रोक लो अथवा उन्हें समुचित ढंग से अलग कर दो । और अपने में से दो न्याय-परायण (व्यक्तियों) को साक्षी ठहरा लो और अल्लाह के लिए साक्ष्य स्थिर करो । यह वह विषय है जिसका प्रत्येक उस व्यक्ति को उपदेश दिया जाता है जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाता है । और जो अल्लाह से डरे उसके लिए वह मुक्ति का कोई मार्ग बना देता है ।3।

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۗ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۗ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ۝٤

और वह (अल्लाह) उसे वहाँ से जीविका प्रदान करता है जहाँ से वह सोच भी नहीं सकता । और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए पर्याप्त है। नि:सन्देह अल्लाह अपने निर्णय को पूरा करके रहता है । अल्लाह ने हर चीज़ की एक योजना बना रखी है ।4।

وَالّٰٓـِٔيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ۗ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝٥

और तुम्हारी स्त्रियों में से जो मासिक धर्म से निराश हो चुकी हों यदि तुम्हें शंका हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और उनकी भी जो रजवती नहीं हुईं । और जहाँ तक गर्भवतियों का संबंध है उनकी इद्दत प्रसव समय तक है । और जो अल्लाह का तक़वा धारण करे अल्लाह अपने आदेश से उसके लिए सरलता पैदा कर देगा ।5।

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ۝٦

यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा । और जो अल्लाह से डरता है वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देता है । और उसके प्रतिफल को बहुत बढ़ा देता है ।6।

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۗ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ

उनको (वहीं) रखो जहाँ तुम (स्वयं) अपने सामर्थ्य के अनुसार रहते हो । और उन्हें कष्ट न पहुँचाओ ताकि उन पर जीवन-निर्वाह कठिन कर दो । और यदि वे गर्भवती हों तो उन पर खर्च करते रहो जब तक कि वे अपने प्रसव से मुक्त न हो जाएँ । फिर यदि वे तुम्हारे लिए (तुम्हारी संतान को) दूध पिलाएँ तो उनका पारिश्रमिक उन्हें दो । और अपने बीच न्यायोचित ढंग से सहमति का

وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ﴿٧﴾

वातावरण उत्पन्न करो । और यदि तुम (समझौता करने में) एक दूसरे से परेशानी अनुभव करो तो उस (शिशु को पिता) की ओर से कोई अन्य (दूध पिलाने वाली) दूध पिलाए ।7।

لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ﴿٨﴾

चाहिए कि धनवान अपने सामर्थ्य के अनुसार खर्च करे और जिस की जीविका कम कर दी गई हो तो जो भी अल्लाह ने उसे दिया है वह उसमें से खर्च करे । अल्लाह कदापि किसी जान को उससे बढ़ कर जो उसने उसे दिया हो । कष्ट नहीं देता अल्लाह हर तंगी के पश्चात एक आसानी अवश्य पैदा कर देता है ।8। (रुकू $\frac{1}{17}$)

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٩﴾

और कितनी ही ऐसी बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब्ब के आदेश की और उसके रसूलों की भी अवज्ञा की तो हमने उनसे एक बहुत कड़ा हिसाब लिया और उन्हें बहुत कष्टदायक अज़ाब दिया ।9।

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ﴿١٠﴾

अत: उन्होंने अपने निर्णय का दुष्परिणाम भोग लिया और उनके कर्मों का परिणाम घाटा उठाना था ।10।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١١﴾

अल्लाह ने उनके लिए अत्यन्त कठोर अज़ाब तैयार कर रखा है । अत: अल्लाह का तक़वा धारण करो । हे बुद्धिमानो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह ने तुम्हारी ओर एक महान अनुस्मारक अवतरित किया है ।11।

رَّسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

एक रसूल के रूप में, जो तुम पर अल्लाह की स्पष्ट कर देने वाली आयतें पाठ करता है ताकि उन लोगों को जो ईमान

مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿۱۲﴾

लाए और नेक कर्म किए, अंधकारों से प्रकाश की ओर निकाले । और जो अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे वह उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदैव निवास करने वाले हैं । उसके लिए (जो नेक कर्म करता है) अल्लाह ने नि:सन्देह बहुत अच्छी जीविका बनाई है ।12।*

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىْءٍ عِلْمًا ﴿۱۳﴾ ع ۲/۱۸

अल्लाह वह है जिसने सात आकाश पैदा किए और उन के अनुरूप धरती भी (पैदा की) । (उसका) आदेश उन के बीच अधिकता पूर्वक उतरता है । ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर, जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । और अल्लाह ज्ञान की दृष्टि से हर चीज़ को घेरे हुए है ।13। (रुकू $\frac{2}{18}$)

---

* आयत सं. 11, 12 : इन आयतों से निश्चित रूप से यह प्रमाणित होता है कि अरबी शब्द **नुज़ूल** से यह अभिप्राय नहीं कि कोई भौतिक शरीर के साथ आकाश से उतरता है । **नुज़ूल** का अर्थ अल्लाह ताअला की ओर से उत्कृष्ट नेमत का प्रदान होना है । इस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साक्षात अल्लाह का स्मरण और रसूल कह कर आप सल्ल. की श्रेष्ठता दूसरे सब नबियों पर सिद्ध कर दी गई है ।

66- सूरः अत-तहरीम

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 13 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में ब्रह्माण्ड के जिन महत्वपूर्ण रहस्यों का वर्णन है कि वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरने वाली पुस्तक में खोले गए हैं । अब इस सूरः में कुछ छोटे-छोटे रहस्यों का भी उल्लेख है । इस प्रकार बड़े-बड़े रहस्य भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से खोले गए और छोटे-छोटे रहस्य भी उस सर्वज्ञ की ओर से आप सल्ल. पर खोले गए । अतः इन अर्थों में इस सूरः का पिछली सूरः से यह सम्बन्ध स्थापित होता है कि **यह अद्‌भुत पुस्तक है कि छोटे से छोटे रहस्य को भी और बड़े से बड़े रहस्य को भी अपने अन्दर समोए हुए है ।** यही आयतांश सूरः अल-कहफ़ आयत 50 में वर्णित है ।

इस सूरः में विशुद्ध प्रायश्चित का विषय वर्णन कर के हज़रत मुहम्मद सल्ल. के सेवकों को यह आदेश दिया गया है कि यदि वे सच्चे मन से प्रायश्चित करेंगे तो अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ है कि उनके सभी छोटे और बड़े पापों को क्षमा कर दे । इस प्रायश्चित के स्वीकृत होने का यह चिह्न बताया गया है कि ऐसे प्रायश्चित करने वालों के सुधार का आरम्भ हो जाएगा और दिन प्रति दिन वे पाप छोड़ने का सामर्थ्य प्राप्त करेंगे और उनकी सभी बुराइयाँ अल्लाह तआला उनसे दूर कर देगा । यह बुराइयों को दूर करने का समय वास्तव में उस नूर के कारण प्राप्त होगा जो उन्हें प्रदान किया जाएगा । जैसे अन्धकार में चलने वाला प्रकाश से ज्ञात कर लेता है कि क्या-क्या ख़तरे आने वाले हैं । अतः (आयत :9) **उनका नूर उनके आगे आगे तेज़ी से चलेगा** से यह अभिप्राय है कि वह अल्लाह उनका मार्ग दर्शन करता चला जाएगा । इसी प्रकार इस आयत के शब्द **(वह नूर) उनके दाहिनी ओर भी चलेगा** से यह संकेत प्रतीत होता है कि बुराई करने वाले लोगों को कोई नूर प्रदान नहीं किया जाता जो बायीं हाथ वाले लोग कहलाते हैं । केवल उन्हीं को नूर प्राप्त होता है जो सदा हर बुराई के मुक़ाबले पर नेकी को प्राथमिकता देते हैं और यही लोग हैं जिनको नेकी पर स्थिर रहने के लिए वह नूर मिलेगा जो उन्हें दृढ़ता प्रदान करेगा ।

इस सूरः के अंत में उन दो अभागिन स्त्रियों का दृष्टान्त उल्लेख किया गया है जो नबियों के परिवार में शामिल होने के बावजूद कर्मतः अपनी उत्तरदायित्व निभाने में सदाचारिणी न थीं । फिर उन दोनों के विपरीत दो अत्यन्त पुण्यवती स्त्रियों का भी उल्लेख है । उनमें से एक बड़े अत्याचारी और अल्लाह के घोर शत्रु की पत्नी थी । फिर भी उसने अपने ईमान की सुरक्षा की । और दूसरी स्त्री हज़रत मरियम अलैहा. का वर्णन

है जिनको अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह अलै. के रूप में एक चमत्कारी पुत्र प्रदान किया। यह पुत्र-लाभ किसी निजी कामना के कारण नहीं हुआ था । फिर अन्तिम आयत में वर्णन किया गया कि अल्लाह तआला मुहम्मदी उम्मत में पैदा होने वाले एक सच्चे और पवित्र व्यक्ति को भी यही चमत्कार दिखाएगा कि उसको आध्यात्मिक रूप से उच्च पद प्राप्त करने की कोई लालसा नहीं होगी बल्कि वह विनीतता का मूर्तिमान होगा, अल्लाह तआला उसमें अपनी रूह प्रविष्ट करेगा जिसके परिणामस्वरूप उसे एक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व में परिवर्तित कर दिया जाएगा । जो हज़रत ईसा अलै. के समरूप होगा । जैसा कि फ़र्माया **फ़ नफ़ख़ ना फ़ीहि मिर्रूहिना** अर्थात अल्लाह तआला उस मोमिन पुरुष में अपनी रूह अर्थात वाणी फूँकेगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢

हे नबी ! तू (उसे) क्यों अवैध ठहरा रहा है जिसे अल्लाह ने तेरे लिए वैध ठहराया है । तू अपनी पत्नियों की प्रसन्नता चाहता है और अल्लाह अत्यंत क्षमाशील (और) बार-बार दया करने वाला है ।2।*

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٣

अल्लाह ने तुम पर अपनी क़समें तोड़ना अनिवार्य कर दिया है । और अल्लाह तुम्हारा स्वामी है और वह सर्वज्ञ (और) परम विवेकशील है ।3।**

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ

और जब नबी ने अपनी पत्नियों में से किसी से गोपनीयता के साथ एक बात कही । फिर जब उसने वह बात (आगे) बता दी और अल्लाह ने उस (अर्थात् नबी) पर वह (विषय) प्रकट कर दिया

---

* इस विवाद में पड़ने की तो आवश्यकता नहीं कि कौन सी वस्तु पत्नियों को अप्रिय थी जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल. ने उनके लिए अपने ऊपर अवैध ठहराया । वह जो भी वस्तु थी अल्लाह तआला ने उसे वैध घोषित कर दिया है । इस प्रकार यह आदेश है कि अल्लाह तआला ने जिन वस्तुओं को स्पष्ट रूप से अवैध या वैध ठहरा दिया है उनको परिवर्तित करने का मनुष्य को अधिकार नहीं । जन-साधारण को तो यह अधिकार है कि वे अपनी पसन्द और नापसन्द के अनुसार कुछ वस्तुओं को अपने लिए अवैध वस्तु के समान ठहरा लें परन्तु वे दूसरों के लिए आदर्श नहीं होते । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को विशेष रूप से यह आदेश दिया गया है कि आप सल्ल. मुहम्मदी उम्मत के लिए आदर्श हैं।

** यहाँ क़समों को तोड़ने का यह अर्थ नहीं कि गंभीरता पूर्वक किसी वचन को पूरा करने के उद्देश्य से खाई गई उचित क़समों को भी अवश्य तोड़ दिया जाए । यहाँ केवल यह भाव है कि अल्लाह तआला के द्वारा निरूपित वैध और अवैध में से यदि तुम किसी को परिवर्तित करने की क़सम खा बैठो तो उसे तोड़ दिया करो, परन्तु उसका भी प्रायश्चित करना होगा ।

عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَٰذَا ۖ قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝٤

तो उसने (उस विषय के) कुछ भाग से तो उस (पत्नी) को अवगत करा दिया और कुछ को टाल गया। फिर जब उसने उस (पत्नी) को इसकी सूचना दी तो उसने पूछा कि आप को किस ने बताया है ? तो उसने कहा कि सर्वज्ञ और सर्व-अवगत (अल्लाह) ने मुझे बताया है ।4।

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۚ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَٰلِكَ ظَهِيرٌ ۝٥

यदि तुम दोनों प्रायश्चित करते हुए अल्लाह की ओर झुको तो (यही यथोचित है क्योंकि) तुम दोनों के दिल (पाप की ओर) झुक चुके थे। और यदि तुम दोनों उसके विरुद्ध एक दूसरे की सहायता करो तो निःसन्देह अल्लाह ही उसका संरक्षक है और जिब्रील भी और मोमिनों में से प्रत्येक सदाचारी व्यक्ति भी। और इसके अतिरिक्त फ़रिश्ते भी उसके पृष्ठपोषक हैं ।5।*

عَسَىٰ رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا ۝٦

संभव है कि यदि वह तुम्हें तलाक़ दे दे (तो) उसका रब्ब तुम्हारे बदले उसके लिए तुम से उत्तम पत्नियाँ ले आए, (जो) मुसलमान, ईमान वालियाँ आज्ञाकारिणी, प्रायश्चित करने वालियाँ, उपासना करने वालियाँ, रोज़े रखने वालियाँ, विधवाएँ और कुवाँरियाँ (हों) ।6।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने आप को और अपने घर वालों को

---

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उन दो पत्नियों का नाम उल्लेख नहीं किया गया जिनसे हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने एक राज़ की बात बताई थी जो उन्होंने आगे फैला दी। जिस बात को अल्लाह तआला ने गुप्त रखा है, मनुष्य का काम नहीं कि उस विषय में अटकल बाज़ियाँ करे।

وَاَهۡلِيۡكُمۡ نَارًا وَّقُوۡدُهَا النَّاسُ وَالۡحِجَارَةُ عَلَيۡهَا مَلٰٓـئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعۡصُوۡنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمۡ وَيَفۡعَلُوۡنَ مَا يُؤۡمَرُوۡنَ ۝٧

(उस) अग्नि से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं । उस पर बहुत कठोर, शक्तिशाली फ़रिश्ते (नियुक्त) हैं । अल्लाह उन्हें जो आदेश दे उस बारे में वे उसकी अवज्ञा नहीं करते और वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है ।7।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَا تَعۡتَذِرُوا الۡيَوۡمَ ؕ اِنَّمَا تُجۡزَوۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝٨

हे वे लोगो जिन्होंने इनकार किया ! आज बहाने मत बनाओ । निश्चित रूप से तुम्हें केवल उसी का प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम किया करते थे ।8।

(रुकू $\frac{1}{19}$)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا تُوۡبُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ تَوۡبَةً نَّصُوۡحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمۡ اَنۡ يُّكَفِّرَ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ وَيُدۡخِلَكُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ۙ يَوۡمَ لَا يُخۡزِى اللّٰهُ النَّبِىَّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ ۚ نُوۡرُهُمۡ يَسۡعٰى بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَبِاَيۡمَانِهِمۡ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَاۤ اَتۡمِمۡ لَنَا نُوۡرَنَا وَاغۡفِرۡ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝٩

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह की ओर विशुद्ध रूप से प्रायश्चित करते हुए झुको । सम्भव है कि तुम्हारा रब्ब तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर दे और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करे जिनके दामन में नहरें बहती हैं । जिस दिन अल्लाह नबी को और उनको अपमानित नहीं करेगा जो उसके साथ ईमान लाए । उनका नूर उनके आगे भी तीव्रता पूर्वक चलेगा और उनके दाएँ भी । वे कहेंगे हे हमारे रब्ब ! हमारे लिए हमारे नूर को सम्पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर दे । निःसन्देह तू हर चीज़ पर, जिसे तू चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।9।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الۡكُفَّارَ وَالۡمُنٰفِقِيۡنَ وَاغۡلُظۡ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَمَاۡوٰٮهُمۡ جَهَنَّمُ ؕ

हे नबी ! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कर और उनके विरुद्ध कठोरता अपना । और उनका

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠

ठिकाना नरक है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है ।10।*

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ۭ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١١

अल्लाह ने उन लोगों के लिए जिन्होंने इनकार किया, नूह की पत्नी और लूत की पत्नी का उदाहरण वर्णन किया है । वे दोनों हमारे दो सदाचारी भक्तों के अधीन थीं । फिर उन दोनों ने उनसे विश्वासघात किया तो वे उनको अल्लाह की पकड़ से लेश-मात्र भी बचा न सके । और कहा गया कि तुम दोनों अग्नि में प्रविष्ट होने वालों के साथ प्रविष्ट हो जाओ ।11।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٢

और अल्लाह ने उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, फ़िरऔन की पत्नी का उदाहरण दिया है । जब उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरे लिए अपने निकट स्वर्ग में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन से और उसके कर्म से बचा ले और मुझे इन अत्याचारी लोगों से मुक्ति प्रदान कर ।12।

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ

और इम्रान की बेटी मरियम (के साथ मोमिनों का उदाहरण दिया है) जिसने अपना सतीत्व सही ढंग से बचाए रखा तो हमने उस (बच्चे) में अपनी रूह में से कुछ फूँका और उस (की माँ) ने अपने रब्ब के वाक्यों और उसकी

* जो जिहाद निजी स्वार्थों के लिए नहीं, बल्कि केवल अल्लाह तआला के लिए किया जा रहा हो, उसमें शत्रुओं से युद्ध करते हुए कठोरता अपनाने का आदेश है चाहे दिल कितना ही कोमल हो । एक अन्य आयत से इस कठोरता का लाभ यह प्रतीत होता है कि इसके परिणाम स्वरूप जो युद्ध में सम्मिलित होने वाले लोग नहीं हैं, वे भी डर जाएँगे और अकारण मुसलमानों से युद्ध नहीं करेंगे जैसा कि सूरः अल अन्फ़ाल आयत 58 में आदेश दिया गया है कि **उनके पिछलों को भी तितर–बितर कर दे ।**

مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٣﴾ ع

पुस्तकों की भी पुष्टि की और वह आज्ञाकारिणी थी ।13।* (रुकू $\frac{2}{20}$)

✻ इसी विषय वस्तु पर आधारित एक और आयत (सूर: अल् अम्बिया 92) में फ़र्माया गया **फिर हम ने उसमें अपने आदेश में से कुछ फूँका ।** यहाँ **उसमें** कह कर इस ओर संकेत किया गया कि जो मोमिन आध्यात्मिक रूप से मरियम की स्थिति में पहुँचेंगे उनके भीतर भी **रूह फूँकी** जाएगी । अर्थात वे उपमा स्वरूप अपने समय के ईसा बनाए जाएँगे ।

67– सूर: अल–मुल्क

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरम्भ इस आयत से होता है कि **केवल वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसके अधिकार में समग्र साम्राज्य है ।** अर्थात् अल्लाह तआला सब का स्वामी है और वह जो चाहता है उस का सामर्थ्य रखता है । अत: पिछली सूर: में जिस आश्चर्यजनक विषयवस्तु का वर्णन हुआ है उसी की ओर यहाँ संकेत प्रतीत होता है । क्योंकि इसके पश्चात मृत्यु से जीवन उत्पन्न करने का विषय आरम्भ हुआ है और यह घोषणा की गई है कि जैसे अल्लाह तआला समर्थ है कि भौतिक मुर्दों को जीवित कर दे, उसी प्रकार आध्यात्मिक मुर्दों को भी फिर से जीवित करने पर समर्थ है । इसमें मुहम्मदी उम्मत के लिए एक महान शुभ-समाचार है ।

इसके तुरन्त पश्चात कहा कि सारी सृष्टि पर विचार करके देख लो वह एक ही स्रष्टा के होने की गवाही देगी और इसमें कोई त्रुटि दिखाई नहीं देगी । यदि यह सृष्टि स्वयं उत्पन्न हुई होती तो कहीं किसी त्रुटि के चिह्न दिखाई देने चाहिए थे । बल्कि अधिकतर त्रुटियाँ दिखाई देनी चाहिए थी । यदि अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी कल्पित साझीदार ने यह सृष्टि बनाई होती तो अवश्य उसके बनाए हुए नियमों का अल्लाह के बनाए हुए नियमों से टकराव होना चाहिए था । अत: इस दृष्टि से समस्त मानव जाति को विचार करने का आमंत्रण दिया गया है कि सृष्टि के रहस्यों पर बार-बार दृष्टि डालें तो उनकी दृष्टि थकी हारी पश्चाताप करती हुई उनकी ओर लौटेगी परन्तु वे सृष्टि में कहीं कोई त्रुटि ढूंढ नहीं सकेंगे ।

इस सूर: में ऐसे आध्यात्मिक पक्षियों का भी वर्णन है जो आकाश की विस्तृत वायुमण्डल में ऊँची उड़ान भरने का सौभाग्य पाते हैं । जिस प्रकार साधारण पक्षियों को अल्लाह तआला ने ही उड़ने की शक्ति प्रदान की है और धरती और आकाश के मध्य काम पर लगा दिया है इसी प्रकार वही अपने मोमिन भक्तों को भी उड़ने की शक्ति प्रदान करता है । इसके विपरीत नीचे मुँह लटकाए चलने वाले पशुओं को कोई आध्यात्मिक ऊँचाई प्राप्त नहीं होती, न सामान्य अर्थों में और न आध्यात्मिक अर्थों में ।

इस सूर: की अन्तिम आयत में कहा गया है कि जीवन का पानी जो आकाश से उतरता है जिससे तुम सदा लाभ उठाते हो, परन्तु कभी यह भी विचार किया कि यदि वह लगातार सूखे के कारण तुम्हारी पहुँच से दूर धरती की गहराइयों में चला जाए तो तुम स्वच्छ जल कहाँ से लाओगे ? अत: भौतिक जल की भाँति आध्यात्मिक जल भी अल्लाह तआला की विशेष कृपा से ही मनुष्य को प्राप्त होता है ।

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ ثَلاثُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ②

केवल एक वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसके अधिकार में समग्र साम्राज्य है और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।2।

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ③

वही जिसने मृत्यु और जीवन को पैदा किया ताकि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि कर्म की दृष्टि से तुम में से कौन उत्तम है और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।3।

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ④

वही जिसने सात आकाशों को कई परतों में पैदा किया । तू रहमान (अल्लाह) की सृष्टि में कोई विसंगति नहीं देखता । अतः नज़र दौड़ा, क्या तू कोई त्रुटि देख सकता है ? ।4।*

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ⑤

फिर दोबारा नज़र दौड़ा, तेरी ओर नज़र असफल लौट आएगी और वह थकी हारी होगी ।5।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ⑥

और निःसन्देह हमने निकट के आकाश को दीपकों से सुशोभित किया और उन्हें शैतानों को धिक्कारने का साधन बनाया और उन के लिए हमने धधकता हुआ अग्नि का अज़ाब तैयार किया ।6।

---

* इस आयत में मनुष्य को यह चुनौती दी गई है कि समग्र ब्रह्माण्ड पर जितनी चाहे गवेषणा कर ले उसे एक ही रचयिता की रचना होने के कारण इस में कोई विसंगति नहीं दिखेगी ।

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٧

और उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने रब्ब का इनकार किया, नरक का अज़ाब है और वह बहुत बुरा लौटने का स्थान है ।7।

اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝٨

जब वे उसमें झोंके जाएँगे, वे उसकी एक चीत्कार की सी आवाज़ सुनेंगे और वह भड़क रहा होगा ।8।

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۭ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ۝٩

सम्भव है कि वह क्रोध से फट जाए । जब भी उसमें कोई समूह झोंका जाएगा उस के प्रहरी उनसे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई सतर्ककारी नहीं आया था ? ।9।

قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَاۗءَنَا نَذِيْرٌ ڏ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ښ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝١٠

वे कहेंगे, क्यों नहीं । हमारे पास सतर्ककारी अवश्य आया था अत: हमने (उसे) झुठला दिया और हमने कहा, अल्लाह ने कोई वस्तु नहीं उतारी, तुम केवल एक बड़ी पथभ्रष्टता में (पड़े) हो ।10।

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١١

और वे कहेंगे, यदि हम (ध्यान पूर्वक) सुनते अथवा बुद्धि का प्रयोग करते तो हम अग्नि में पड़ने वालों में सम्मिलित न होते ।11।

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١٢

अत: उन्होंने अपने पाप का स्वीकार कर लिया । अतएव अग्नि में पड़ने वालों का सर्वनाश हो ।12।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝١٣

नि:सन्देह वे लोग जो अदृश्य में अपने रब्ब से डरते हैं, उनके लिए क्षमादान और बहुत बड़ा प्रतिफल है ।13।

وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝١٤

और तुम अपनी बात को छुपाओ अथवा उसे प्रकट करो, नि:सन्देह वह सीने की बातों का सदैव ज्ञान रखता है ।14।

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٥﴾ ع

क्या वह जिसने पैदा किया, नहीं जानता ? जबकि वह सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर दृष्टि रखने वाला (और) सदा अवगत है ।15। (रुकू $\frac{1}{1}$)

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِىْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٦﴾

वही है जिसने धरती को तुम्हारे अधीन कर दिया । अत: उसके रास्तों पर चलो और उस (अर्थात् अल्लाह) की जीविका में से खाओ और उसी की ओर उठाया जाना है ।16।

ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوْرُ ۙ﴿١٧﴾

क्या तुम उससे जो आकाश में है (इस बात से) सुरक्षित हो कि वह तुम्हें धरती में धंसा दे । फिर वे सहसा थर्राने लगे ।17।

اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٨﴾

अथवा क्या तुम उससे जो आकाश में है सुरक्षित हो कि वह तुम पर पत्थर बरसाने वाले झक्कड़ चला दे ? फिर तुम अवश्य जान लोगे कि मेरा सतर्क करना कैसा था ।18।

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٩﴾

और नि:सन्देह उन लोगों ने भी झुठला दिया था जो उनसे पूर्व थे । अत: कैसा कठोर था मेरा दण्ड ! ।19।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّ يَقْبِضْنَ ؕۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٠﴾

क्या उन्होंने पक्षियों को अपने ऊपर पंख फैलाते और समेटते हुए नहीं देखा ? रहमान (अल्लाह) के अतिरिक्त कोई नहीं जो उन्हें रोके रखे । नि:सन्देह वह प्रत्येक वस्तु पर गहन दृष्टि रखता है ।20।*

* पक्षियों के आकाश में उड़ने और वायुमंडल में काम पर लगने के सम्बन्ध में यह आयत गूढ़ अर्थ रखती है । पक्षियों की संरचना विशेषता के साथ ऐसे नियमों के अनुसार की गई है कि वे वायुमंडल में उड़ सकें । यह केवल संयोग की बात नहीं । कुछ शिकारी पक्षियों की गति वायु में दो सौ मील प्रति घंटा तक पहुँच जाती है और उनके शरीर की बनावट ऐसी है कि इस वेग से उनको कोई भी हानि नहीं पहुँचती । क्योंकि हवा चोंच और सिर से टकरा कर चारों और फैल जाती है और इसी वेग के साथ वे उड़ते हुए पक्षियों का शिकार भी कर लेते हैं ।

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ۚ﴿۲۱﴾

अथवा ये कौन होते हैं जो तुम्हारी सेना बन कर रहमान के मुक़ाबले पर तुम्हारी सहायता करें । काफ़िर केवल एक बड़े धोखे में हैं ।21।

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ یَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِیْ عُتُوٍّ وَّ نُفُوْرٍ ﴿۲۲﴾

अथवा यदि वह (अल्लाह) अपनी जीविका रोक ले तो ये हैं क्या चीज़ जो तुम्हें जीविका प्रदान करें ? बल्कि वे तो उद्दण्डता और घृणा में बढ़ते चले जाते हैं ।22।

اَفَمَنْ یَّمْشِیْ مُكِبًّا عَلٰی وَجْهِهٖۤ اَهْدٰۤی اَمَّنْ یَّمْشِیْ سَوِیًّا عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۲۳﴾

अतः क्या वह जो अपनी अज्ञानता और विस्मयता में भटकता फिरता है, अधिक हिदायत प्राप्त है अथवा वह जो सन्मार्ग पर सीधा चलता है ? ।23।

قُلْ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۴﴾

कह दे कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए । तुम बहुत ही कम कृतज्ञता प्रकट करते हो ।24।

قُلْ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۵﴾

कह दे कि वही है जिसने धरती में तुम्हारा बीजारोपण किया और उसी की ओर तुम इकट्ठे किए जाओगे ।25।

وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۶﴾

और वे पूछते हैं, यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब (पूरा) होगा ? ।26।

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۷﴾

तू कह दे कि पूर्ण ज्ञान तो अल्लाह के पास है । और मैं तो केवल खुला-खुला सतर्ककारी हूँ ।27।

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِیْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِیْنَ

अतः जब वे उसे निकट देखेंगे तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उनके

كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٨﴾

चेहरे मलिन हो जाएँगे और कहा जाएगा, यही है वह जिसे तुम माँगा करते थे ।28।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٩﴾

कह दे, बताओ तो सही कि यदि अल्लाह मुझे और उसे भी जो मेरे साथ है, तबाह कर दे अथवा हम पर दया करे तो काफ़िरों को पीड़ाजनक अज़ाब से कौन शरण देगा ? ।29।

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

तू कह दे वही रहमान है । हम उस पर ईमान ले आए और उस पर ही हमने भरोसा किया । अतः तुम शीघ्र ही जान लोगे कि कौन है जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा है ।30।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣١﴾ ع

तू कह दे कि यदि तुम्हारा पानी गहराई में चला जाए तो कौन है जो तुम्हारे पास स्रोतों का पानी लाएगा ? ।31।

(रुकू $\frac{2}{2}$)

68– सूरः अल–क़लम

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 53 आयतें हैं ।

यह सूरः खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली अन्तिम सूरः है । यह सूरः अरबी अक्षर **नून** से आरम्भ होती है जिसका एक अर्थ दवात है और लेखनी से लिखने वाले सभी इसके ज़रूरतमन्द रहते हैं । और मनुष्य की समस्त उन्नति का युग लेखनी के आधिपत्य से आरम्भ होता है । यदि मनुष्य उन्नति में से लेखन विद्या को निकाल दिया जाए तो मनुष्य अज्ञानता की ओर लौट जाएगा और फिर कभी उसे किसी प्रकार ज्ञान की उन्नति प्राप्त नहीं हो सकती ।

फिर **नून** अक्षर से अभिप्राय अल्लाह तआला के वह नबी हैं जिन्हें **ज़ुन नून** कहा जाता है अर्थात हज़रत यूनुस अलै. । उनका भी इसी सूरः में वर्णन मिलता है कि वह क्या घटना घटी थी जिसके परिणाम स्वरूप वह अपनी जाति पर अल्लाह तआला का अज़ाब न उतरने के कारण, जिसकी उन्हें चेतावनी दी गई थी, भारी मन से उस बस्ती को यह सोच कर छोड़ गए थे कि आगे कभी वह उस जाति को मुँह दिखाने के योग्य नहीं रहेंगे । तब अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस अलै. को यह शिक्षा दी कि उसकी चेतावनी कई बार प्रायश्चित और क्षमायाचना से टल जाती हैं । उनको यह दुआ भी सिखाई, **ला इला–ह इल्ला अन त सुब्हा न क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन** (सूरः अल अम्बिया, आयत 88) अर्थात तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं । तू तो प्रत्येक दुर्बलता से पवित्र है । मैं ही अत्याचारी था जो प्रायश्चित करने वाली एक जाति के लिए अज़ाब की कामना करता रहा।

इस सूरः में **नून** अक्षर का बार-बार उल्लेख है जो इस सूरः के विषयवस्तुओं के साथ पूर्णतया सामंजस्य रखता है और एक भी स्थान पर विषयवस्तु और **नून** अक्षर में कोई विसंगति दिखाई नहीं देती ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَّ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝٢

नून : क़सम है लेखनी की और उसकी जो वे लिखते हैं ।2।

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۝٣

तू अपने रब्ब की नेमत के फलस्वरूप पागल नहीं है ।3।

وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۝٤

और निश्चित रूप से तेरे लिए एक अनंत प्रतिफल है ।4।

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝٥

और निश्चित रूप से तू सुशीलता के शिखर पर स्थित है ।5।

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۝٦

अत: तू देख लेगा और वे भी देखेंगे ।6।

بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝٧

कि तुम में से कौन पागल है ।7।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝٨

नि:सन्देह तेरा रब्ब ही सबसे अधिक उसे जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया है और वही हिदायत पाने वाले लोगों को भी सबसे अधिक जानता है ।8।

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝٩

अत: तू झुठलाने वालों का आज्ञापालन न कर ।9।

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝١٠

वे चाहते हैं कि यदि तू लचक दिखाए तो वे भी लचक दिखाएँगे ।10।

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝١١

और तू बढ़-बढ़ कर क़समें खाने वाले किसी अपमानित व्यक्ति की बात कदापि न मान ।11।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ ۝١٢

(जो) बड़ा छिद्रान्वेषी (और) चुग़लियाँ करते हुए बहुत चलने वाला है ।12।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۙ﴿۱۳﴾

(जो) भलाई से बहुत रोकने वाला, सीमा का उल्लंघन करने वाला (और) महापापी है ।13।

عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۙ﴿۱۴﴾

बहुत कठोर हृदयी । इसके अतिरिक्त अवैध संतान है ।14।

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّ بَنِيْنَ ؕ﴿۱۵﴾

(क्या केवल इस कारण अकड़ता है) कि वह धनवान और (अनेक) संतान-सन्तति वाला है ।15।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۶﴾

जब उस के समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं कहता है, (ये) पहले लोगों की कहानियाँ हैं ।16।

سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ﴿۱۷﴾

नि:सन्देह हम उसे थूथनी पर दाग़ेंगे।17।*

اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَاۤ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۙ﴿۱۸﴾

हमने उनकी परीक्षा ली जिस प्रकार घने बाग़ वालों की परीक्षा ली थी । जब उन्होंने क़सम खाई थी कि वे अवश्य पौ फटते ही उसकी फसल काट लेंगे ।18।

وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ﴿۱۹﴾

और वे अल्लाह का नाम नहीं लेते थे (इन्शाअल्लाह अर्थात् यदि अल्लाह ने चाहा, नहीं कहते थे) ।19।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿۲۰﴾

अत: तेरे रब्ब की ओर से उस (बाग़) पर एक घूमने वाला (अज़ाब) फिर गया जबकि वे सोए हुए थे ।20।

فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ۙ﴿۲۱﴾

फिर वह (बाग़) ऐसा हो गया जैसे काट दिया गया हो ।21।

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۙ﴿۲۲﴾

अत: वह सुबह सवेरे एक दूसरे को पुकारने लगे ।22।

اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

कि यदि तुम फसल काटने वाले हो तो सवेरे-सवेर अपनी कृषि भूमि पर

* अरबी शब्द **ख़ुरतूम** का अर्थ 'थूथनी' है (लिसान उल अरब)

صٰرِمِيْنَ ﴿٢٣﴾

पहुँचो ।23।

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿٢٤﴾

अत: उन्होंने प्रस्थान किया और परस्पर कानाफूँसी करते जाते थे ।24।

اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٥﴾

कि आज इसमें तुम्हारे हित के विरुद्ध कोई दरिद्र (व्यक्ति) कदापि प्रवेश न कर पाए ।25।

وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

वे किसी को कुछ न देने की योजना बनाते हुए गए ।26।

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٧﴾

अत: जब उन्होंने उसको देखा (तो) कहा कि नि:सन्देह हम तो मारे गए।27।*

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٨﴾

बल्कि हम तो वंचित कर दिये गए हैं।28।

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٩﴾

उनमें से सब से अच्छे व्यक्ति ने कहा, क्या मैंने तुम्हें कहा नहीं था कि तुम क्यों (अल्लाह की) स्तुति नहीं करते ? ।29।

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣٠﴾

उन्होंने कहा, पवित्र है हमारा रब्ब । नि:सन्देह हम ही अत्याचारी थे ।30।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣١﴾

फिर वे एक दूसरे को भर्त्सना करते हुए चले ।31।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣٢﴾

कहने लगे, हाय हमारा सर्वनाश ! नि:सन्देह हम ही उद्दण्डी थे ।32।

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٣﴾

सम्भव है कि हमारा रब्ब बदले में हमें इससे उत्तम दे । नि:सन्देह हम अपने रब्ब की ओर ही उन्मुख होने वाले हैं ।33।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾

अज़ाब इसी प्रकार होता है और परलोक का अज़ाब निश्चित रूप से सबसे बड़ा होगा । काश वे जानते ! ।34। (रुकू $\frac{1}{3}$)

* इस अर्थ के लिए देखें शब्दकोष अल-मुन्जिद ।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتِ ٱلنَّعِيمِ ﴿٣٥﴾

नि:सन्देह मुत्तक़ियों के लिए उनके रब्ब के निकट नेमतों वाले स्वर्ग हैं ।35।

أَفَنَجْعَلُ ٱلْمُسْلِمِينَ كَٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٣٦﴾

अत: क्या हम आज्ञाकारियों को अपराधियों की भाँति बना लें ? ।36।

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٧﴾

तुम्हें क्या हो गया है, कैसे निर्णय करते हो ? ।37।

أَمْ لَكُمْ كِتَٰبٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٨﴾

क्या तुम्हारे लिए कोई पुस्तक है जिसमें तुम पढ़ते हो ? ।38।

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٩﴾

नि:सन्देह उसमें तुम्हारे लिए वह (कुछ) होगा जिसे तुम अधिक पसन्द करते हो ।39।

أَمْ لَكُمْ أَيْمَٰنٌ عَلَيْنَا بَٰلِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٤٠﴾

क्या तुम्हारे पक्ष में हम पर ऐसी क़समें हैं जो हमें क़यामत तक के लिए बाध्य करती हैं कि तुम्हें पूरा अधिकार है जो चाहो निर्णय करो ? ।40।

معانقة ١٥ عند المتقدمين

سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤١﴾

तू उनसे पूछ (कि) उनमें से कौन है जो इस बात का उत्तरदायी है ? ।41।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ فَلْيَأْتُوا۟ بِشُرَكَآئِهِمْ إِن كَانُوا۟ صَٰدِقِينَ ﴿٤٢﴾

क्या उनके पक्ष में कोई उपास्य हैं ? यदि वे सच्चे हैं तो अपने उपास्यों को ले आएँ ।42।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٣﴾

जिस दिन खूब घबराहट का सामना होगा और वे सजदः करने के लिए बुलाए जाएँगे परन्तु सामर्थ्य न रखते होंगे ।43।

خَٰشِعَةً أَبْصَٰرُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا۟ يُدْعَوْنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ وَهُمْ سَٰلِمُونَ ﴿٤٤﴾

इस अवस्था में कि उनकी आँखें झुकी हुई होंगी । उन पर अपमान छा रहा होगा । और नि:सन्देह उन्हें (इससे पूर्व) सजदों की ओर बुलाया जाता था, जब वे सही सलामत थे।44।

فَذَرْنِىْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۭ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٥

अतः तू मुझे और उसे जो इस वर्णन को झुठलाता है छोड़ दे । हम उन्हें धीरे-धीरे इस प्रकार पकड़ लेंगे कि उन्हें कुछ ज्ञान न हो सकेगा ।45।

وَاُمْلِىْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِىْ مَتِيْنٌ ۝٤٦

और मैं उन्हें ढील देता हूँ । मेरी योजना निश्चित ही बहुत पक्की है ।46।

اَمْ تَسْـَٔـلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝٤٧

क्या तू उनसे कोई प्रतिफल मांगता है कि वे चट्टी के बोझ तले दबे जा रहे हों ।47।

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٤٨

क्या उनके पास अदृश्य (का ज्ञान) है, फिर वे (उसे) लिखते हैं ? ।48।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۝٤٩

अतः अपने रब्ब के निर्णय की प्रतीक्षा में धैर्य धर और मछली वाले की भाँति न बन । जब उसने (अपने रब्ब को) पुकारा और वह शोक से भरा हुआ था ।49।

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَاۗءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ۝٥٠

यदि उसके रब्ब की ओर से एक विशेष नेमत उसे बचा न लेती तो वह चटियल मैदान में इस प्रकार फेंक दिया जाता कि वह अत्यन्त धिक्कारा हुआ होता ।50।

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٥١

फिर उसके रब्ब ने उसे चुन लिया और उसे नेक लोगों में गिन लिया ।51।

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۝٥٢

निश्चित रूप से काफ़िरों से यह असम्भव नहीं कि जब वे अनुस्मृति सुनते हैं तो तुझे अपनी दृष्टि (के प्रकोप) के द्वारा गिराने का प्रयत्न करें । और वे कहते हैं निःसन्देह यह तो एक पागल है ।52।

وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٥٣ ع

हालाँकि वह तो समस्त लोकों के लिए उपदेश के अतिरिक्त कुछ नहीं ।53।

(रुकू $\frac{2}{4}$)

69– सूरः अल–हाक़्क़ः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 53 आयतें हैं ।

सूरः अल-क़लम में यह विषय वर्णन हुआ था कि जब हम नबियों के शत्रुओं को ढील देते हैं तो इस लिए देते हैं ताकि उनके पापों का घड़ा भर जाए और फिर अल्लाह तआला की पकड़ से उनको कोई बचा नहीं सकता । इस सूरः में भी उन जातियों का वर्णन है जिनको अल्लाह तआला की ओर से बार-बार ढील दी गई । परन्तु जब उनके पापों का घड़ा भर गया तो उनकी पकड़ की घड़ी आ गई । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने मानव जाति को जिस बहुत बड़े अज़ाब से सतर्क करने का आदेश दिया है उसका संबंध संसार के किसी विशेष धार्मिक सम्प्रदाय से नहीं है बल्कि मनुष्य के रूप में प्रत्येक को सतर्क किया गया है । जब वह घटना घटेगी तो सांसारिक दृष्टि से भी मनुष्य समझेगा कि मानो धरती और आकाश उस पर फट पड़े हैं । मनुष्य के दोबारा उठाए जाने में भी यह चेतावनी एक बार फिर पूरी होगी कि न उसका कोई पार्थिव संपर्क और न ही आकाशीय संपर्क उसे बचा सकेगा और नरक् उसका अंत होगा ।

इसके पश्चात अल्लाह तआला उन बातों के पूरा होने के बारे में एक महान गवाही पेश कर रहा है जो मनुष्य को किसी सीमा तक दिखाई देते रहे हैं अथवा दिखाई देने लगते हैं और उन बातों के पूरा होने के बारे में भी जिन तक उसकी दृष्टि नहीं पहुँचती । अर्थात यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें एक सम्माननीय एवं विश्वसनीय रसूल की बातें हैं, न वह किसी कवि की बहकी हुई बातें हैं न किसी ज्योतिषी की अटकलें हैं । यह तो समस्त लोकों के रब्ब की ओर से अवतरित हुई है ।

इस सूरः की अन्तिम आयतों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का एक ऐसा मापदण्ड प्रस्तुत कर दिया गया जिसका शत्रु की ओर से कोई खण्डन नहीं हो सकता । शत्रु को सावधान किया कि तुम्हारे अनुसार तो इस सम्माननीय पुस्तक को इस रसूल ने अपनी ओर से ही गढ़ लिया है । हालाँकि यदि उसने अल्लाह तआला पर छोटे से छोटा झूठ भी गढ़ा होता तो निःसन्देह अल्लाह उसको और उसके सम्प्रदाय को नष्ट कर देता और यदि अल्लाह यह निर्णय करता तो तुम लोग किसी प्रकार उसको बचा न सकते । इस प्रकार तुम्हारी समस्त शक्तियों के मुक़ाबले पर अल्लाह तआला उसकी सहायता कर रहा है और उसको बचा रहा है जो निश्चित रूप से उसके अल्लाह का रसूल होने पर एक प्रमाण है । अर्थात अल्लाह तआला का यह वाक्य फिर बड़ी सफाई से उसके पक्ष में पूरा हुआ है कि : **अल्लाह ने लिख रखा है कि मैं और मेरे रसूल अवश्य विजयी होंगे ।** (सूरः अल मुजादलः आयत 22)

سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلاثٌ وَّ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلۡحَآقَّةُ ۙ②

अवश्यमेव घटित होने वाली ।2।

مَا الۡحَآقَّةُ ۚ③

अवश्यमेव घटित होने वाली क्या है? ।3।

وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡحَآقَّةُ ؕ④

और तुझे क्या मालूम कि अवश्यमेव घटित होने वाली क्या है ? ।4।

كَذَّبَتۡ ثَمُوۡدُ وَعَادٌۢ بِالۡقَارِعَةِ ⑤

समूद और आद जाति ने (दिलों को) चौंका देने वाली विपत्ति का इनकार कर दिया था ।5।

فَاَمَّا ثَمُوۡدُ فَاُهۡلِكُوۡا بِالطَّاغِيَةِ ⑥

अत: जहाँ तक समूद (जाति) का सम्बन्ध है तो वे सीमा से बढ़ी हुई विपत्ति से विनष्ट कर दिए गये ।6।

وَاَمَّا عَادٌ فَاُهۡلِكُوۡا بِرِيۡحٍ صَرۡصَرٍ عَاتِيَةٍ ۙ⑦

और जो आद (जाति के लोग) थे तो वे एक तेज़ हवा से तबाह किए गए जो बढ़ती चली जाती थी ।7।

سَخَّرَهَا عَلَيۡهِمۡ سَبۡعَ لَيَالٍ وَّ ثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوۡمًا ۙ فَتَرَى الۡقَوۡمَ فِيۡهَا صَرۡعٰى ۙ كَاَنَّهُمۡ اَعۡجَازُ نَخۡلٍ خَاوِيَةٍ ۚ⑧

उस (अल्लाह) ने उसे उन पर सात रातों और आठ दिनों तक इस प्रकार नियोजित कर रखा कि वह उन्हें जड़ों से उखाड़ कर फेंक रही थी । अत: लोगों को तू उसमें पछाड़ खा कर गिरे हुए देखता है जैसे वे खजूर के गिरे हुए वृक्षों के तने हों ।8।

فَهَلۡ تَرٰى لَهُمۡ مِّنۡۢ بَاقِيَةٍ ⑨

अत: क्या तू उनमें से किसी को शेष बचा हुआ देखता है ? ।9।

وَجَآءَ فِرۡعَوۡنُ وَمَنۡ قَبۡلَهٗ وَالۡمُؤۡتَفِكٰتُ

और फ़िरऔन भी आया और वे भी (आये) जो उससे पूर्व थे । और एक

بِالْخَاطِئَةِ ۚ ﴿١٠﴾

बहुत बड़े पाप के कारण उलट-पुलट होने वाली बस्तियाँ भी ।10।

فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١١﴾

अत: उन्होंने अपने रब्ब के रसूल की अवज्ञा की तो उसने उन्हें एक कठोर से कठोर होने वाली पकड़ में ले लिया ।11।

اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۙ ﴿١٢﴾

नि:सन्देह जब पानी ख़ूब उफान पर आ गया, हमने तुम्हें नौका में उठा लिया ।12।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٣﴾

ताकि हम उसे तुम्हारे लिए एक चर्चा के योग्य चिह्न बना दें और स्मरण रखने वाले कान उसे याद रखें ।13।

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ ﴿١٤﴾

फिर जब बिगुल में एक ज़ोरदार फूंक मारी जाएगी ।14।

وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۙ ﴿١٥﴾

और धरती और पर्वत उठाए जाएँगे और एक दम में कण-कण कर दिए जाएँगे ।15।

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ ﴿١٦﴾

अत: उस दिन अवश्य घटित होने वाली (घटना) घटित हो जाएगी ।16।

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۙ ﴿١٧﴾

और आकाश फट पड़ेगा । अत: उस दिन वह बोदा हो चुका होगा ।17।

وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ؕ ﴿١٨﴾

और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे और उस दिन तेरे रब्ब के अर्श को उन सबसे ऊपर आठ (गुण) उठाए हुए होंगे ।18।*

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٩﴾

उस दिन तुम पेश किए जाओगे । कोई छिपी रहने वाली (बात) तुम से छिपी नहीं रहेगी ।19।

* इस आयत से किसी को यह भ्रम न हो कि फ़रिश्तों को कोई भौतिक शक्ति प्राप्त है जिससे उन्होंने अल्लाह के अर्श को उठाया हुआ है । अर्श तो कोई भौतिक वस्तु नहीं है जिसे उठाने के लिए भौतिक शक्ति की आवश्यकता है । वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला ही प्रत्येक वस्तु को उठाए हुए है । अर्थात् प्रत्येक वस्तु उसी के सहारे स्थित है । हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़र्माया है कि अर्श तो अल्लाह तआला के विशुद्ध और पवित्रता पूर्ण स्थान का नाम है और उसके समग्र सृष्टि से परे होने की अवस्था है । सूर: अल-फ़ातिह: में वर्णित अल्लाह के चार गुणवाचक नाम यथा :- ➜

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۚ ﴿٢٠﴾

अत: जिसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा, आओ मेरा कर्म-पत्र पकड़ो और पढ़ो ।20।*

اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۚ ﴿٢١﴾

नि:सन्देह मैं आशा रखता हूँ कि मैं अपना हिसाब सामने देखने वाला हूँ।21।

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۙ ﴿٢٢﴾

अत: वह पसंदीदा जीवन में होगा ।22।

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ ﴿٢٣﴾

एक ऊँचे स्वर्ग में ।23।

قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٤﴾

उसके (फल के) गुच्छे झुके हुए होंगे ।24।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢ بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٥﴾

(कहा जाएगा) उन (कर्मों) के बदले में जो तुम बीते हुए दिनों में किया करते थे, मज़े से खाओ और पिओ ।25।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۚ ﴿٢٦﴾

और वह जिसे उसकी बायीं ओर से उसका कर्म-पत्र दिया जाएगा तो वह कहेगा, काश ! मुझे मेरा कर्म-पत्र न दिया जाता ।26।

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۚ ﴿٢٧﴾

और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है ? ।27।

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ ﴿٢٨﴾

काश ! वह (घड़ी) झगड़ा निपटाने वाली होती ।28।

مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۚ ﴿٢٩﴾

मेरा धन मेरे कुछ भी काम न आया।29।

←रब्ब, रहमान, रहीम, और मालिके यौमिद्दीन को चार फ़रिश्तों से नामित किया गया है । ''यह चारों गुणवाचक नाम हैं जो उसके अर्श को उठाए हुए हैं । अर्थात दुनिया में उसकी गुप्त सत्ता का ज्ञान इन गुणवाचक नामों के द्वारा होता है और यह ज्ञान परलोक में दोगुना हो जाएगा । अर्थात चार के बदले आठ फ़रिश्ते हो जाएँगे ।'' (चश्मा-ए-मअ्रिफ़त, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 23 पृष्ठ 279)

* अरबी शब्द **हाउमु** का अर्थ है ''पकड़ो'' (मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.)

هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ﴿۳۰﴾

मेरा प्रभुत्व मुझ से बर्बाद हो कर जाता रहा ।30।

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۙ﴿۳۱﴾

(तब फ़रिश्तों से कहा जाएगा) उसको पकड़ो और उसे तौक़ पहना दो ।31।

ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۙ﴿۳۲﴾

फिर उसको नरक में झोंक दो ।32।

ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ؕ﴿۳۳﴾

अंतत: फिर ऐसी ज़ंजीर में उसे जकड़ दो जिस की लम्बाई सत्तर हाथ है ।33।

اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۙ﴿۳۴﴾

नि:सन्देह वह महिमाशाली अल्लाह पर ईमान नहीं लाता था ।34।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ؕ﴿۳۵﴾

और दरिद्रों को भोजन कराने की प्रेरणा नहीं देता था ।35।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۙ﴿۳۶﴾

अत: आज यहाँ उसका कोई जान-न्योछावर करने वाला मित्र नहीं होगा ।36।

وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۙ﴿۳۷﴾

और घावों के धोवन के सिवा कोई भोजन नहीं मिलेगा ।37।*

لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ۧ﴿۳۸﴾ ع

जिसे अपराधियों के सिवा कोई नहीं खाता ।38। (रुकू $\frac{1}{5}$)

فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۙ﴿۳۹﴾

अत: सावधान ! मैं क़सम खाता हूँ उसकी जो तुम देखते हो ।39।

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۙ﴿۴۰﴾

और उसकी भी जो तुम नहीं देखते ।40।

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۚۙ﴿۴۱﴾

नि:सन्देह यह सम्माननीय रसूल का कथन है ।41।

وَّ مَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۴۲﴾

और यह किसी कवि की बात नहीं । बहुत कम है जो तुम ईमान लाते हो।42।

---

* What comes forth from any wound, or sore when it is washed. (E. W. lane)

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٤٣

और न (यह) किसी ज्यातिषी का कथन है । बहुत कम है जो तुम उपदेश ग्रहण करते हो ।43।

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٤

समस्त लोकों के रब्ब की ओर से (यह) अवतरित हुआ है ।44।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۝٤٥

और यदि वह कुछ बातें झूठ के रूप में हमारी ओर सम्बन्धित कर देता ।45।

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۝٤٦

तो हम उसे अवश्य दाहिने हाथ से पकड़ लेते ।46।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ۝٤٧

फिर हम नि:सन्देह उसकी प्राण-स्नायु को काट डालते ।47।

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ۝٤٨

फिर तुम में से कोई एक भी उससे (हमें) रोकने वाला न होता ।48।*

وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٩

और नि:सन्देह यह मुत्तक़ियों के लिए एक बड़ा उपदेश है ।49।

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ۝٥٠

और निश्चित रूप से हम जानते है कि तुम में झुठलाने वाले भी हैं ।50।

وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥١

और नि:सन्देह यह काफ़िरों के लिए एक बड़ा पछतावा है ।51।

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ۝٥٢

और नि:सन्देह यह निश्चयात्मकता को पहुँचा हुआ विश्वास है ।52।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝٥٣

अत: अपने महान रब्ब के नाम का गुणगान कर ।53। (रुकू $\frac{2}{6}$)

✻ आयत संख्या 45 से 48 : इन आयतों में उन भ्रान्त धारणाओं का खण्डन किया गया है कि झूठी वह्इ अल्लाह तआला की ओर सम्बन्धित करने वाले को कोई सांसारिक शक्ति बचा सकती है । वास्तविकता यह है कि झूठे दावेदारों के पीछे अवश्य कोई सांसारिक शक्ति होती है । इस के बावजूद वे और उनके साथी सहायक विनाश कर दिए जाते हैं । अत: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का यह ज्वलंत प्रमाण है । क्योंकि आपके दावे के पश्चात सारा अरब आप सल्ल. का विरोधी बन गया था । इस आयत में यह बहुत ही सूक्ष्म तथ्य वर्णन किया गया है कि यदि यह रसूल अल्लाह पर एक छोटा सा भी झूठ गढ़ता और सारा अरब इसका विरोधी न होकर समर्थन में खड़ा हो जाता तब भी इस रसूल को अल्लाह की पकड़ से बचा नहीं सकता था ।

70– सूर: अल–मआरिज

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 45 आयतें हैं ।

इसकी पहली आयत ही में अल्लाह तआला ने एक ऐसे अज़ाब से सतर्क किया है जिसे काफ़िर रोक नहीं सकते ।

फिर अल्लाह तआला को **ज़िल मआरिज** (ऊँचाइयों वाला) घोषित किया गया है अर्थात् उसकी ऊँचाई कई स्तरों युक्त आकाश पर ध्यान देने से किसी सीमा तक समझ में आ सकती है, अन्यथा उसकी ऊँचाइयों को कोई नहीं समझ सकता । यहाँ जिस ऊँचाई का वर्णन किया गया है, उस पर एक ऐसा विज्ञानिक प्रमाण मिलता है जिसका इस सूर: की आयत संख्या 5 में वर्णन है कि फ़रिश्ते उसकी ओर पचास हज़ार वर्षों में चढ़ते हैं । अब पचास हज़ार वर्षों में चढ़ने के दो अर्थ हो सकते हैं । प्रथम :- प्रचलित पचास हज़ार वर्ष । यदि यह अर्थ लिए जाएँ तो इसमें भी कोई संदेह नहीं कि संसार में प्रत्येक पचास हज़ार वर्ष के पश्चात ऐसा मौसमी परिवर्तन होता है कि सारी धरती बर्फ के ढ़ेरों से ढक जाती है और फिर नए सिरे से सृष्टि का आरम्भ होता है ।

द्वितीय :- यह ध्यान देने योग्य बात है कि यहाँ पर **मिम्मा तउद्दून** (जिसे तुम गिनते हो) नहीं कहा गया । पवित्र क़ुरआन की एक दूसरी आयत जिसमें एक हज़ार वर्ष का वर्णन है, उसे इसके साथ मिला कर पढ़ा जाए तो अर्थ यह बनेगा कि जो तुम लोगों की गिनती है, उसके यदि एक हज़ार वर्ष गिने जाएँ तो अल्लाह तआला का प्रत्येक दिन उस एक हज़ार वर्ष के समान होगा । और यदि प्रत्येक दिन को एक वर्ष के दिनों से गुणा किया जाए और फिर उसको पचास हज़ार वर्षों के दिनों से गुणा किया जाए तो जो अंक बनते हैं, वह अल्लाह के दिनों की अवधि को निश्चित करते हैं । अत: इस हिसाब से यदि पचास हज़ार वर्ष से जो अल्लाह तआला के दिन हैं उसे गुणा किया जाए तो अट्ठारह से बीस अरब वर्ष बन जाएँगे जो वैज्ञानिकों के निकट ब्रह्माण्ड की आयु है । (1000 × 50,000 × 365 = 18,250,000,000) अर्थात सृष्टि इस आयु को पहुँच कर अनस्तित्वता में समा जाती है और इसके बाद पुन: अनस्तित्व से अस्तित्व का निर्माण किया जाता है ।

यह इतनी दीर्घ अवधि है कि इसे मनुष्य बहुत दूर की बात समझता है परन्तु जब अज़ाब घटित होगा तो वह घड़ी बिल्कुल निकट दिखाई देगी । वह ऐसा अज़ाब होगा कि मनुष्य अपने सगे संबंधियों और अपने धन, जीवन तथा प्रत्येक वस्तु को उसके बदले में मुक्तिमूल्य स्वरूप दे कर उससे बचना चाहेगा, परन्तु ऐसा नहीं हो सकेगा । हाँ अज़ाब से पूर्व यदि मोमिनों में यह गुण हों कि वे अपनी नमाज़ पर डटे रहते हैं और सदा सोच समझ

कर अदा करते हैं और इसके अतिरिक्त अपनी पवित्रता की सुरक्षा के लिए उन सभी शर्तों को पूरा करते हैं जो उन पर लागू की गई हैं तो ये वे भाग्यवान हैं जो इस अज़ाब से पृथक रखे जाएँगे ।

आयत सं. 42 में फिर इस बात की चेतावनी दी गई कि अल्लाह तुम से बे परवाह है । अत: यदि तुम दुराचार से नहीं रुकोगे तो अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ है कि तुम्हारे स्थान पर नवीन सृष्टि ले आए । अत: जिस अज़ाब के घटित होने का समाचार दिया गया है उसी के वर्णन पर यह सूर: समाप्त होती है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَّ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

سَاَلَ سَآىِٕلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ②

किसी पूछने वाले ने एक अवश्य घटित होने वाले अज़ाब के बारे में पूछा है ।2।

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ③

उसे काफ़िरों से कोई चीज़ टालने वाली नहीं ।3।

مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ④

(वह) सभी ऊँचाइयों के स्वामी, अल्लाह की ओर से है ।4।

تَعْرُجُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ⑤

फ़रिश्ते और रूह उसकी ओर एक ऐसे दिन में चढ़ते हैं जिसकी गिनती पचास हज़ार वर्ष है ।5।

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ⑥

अत: सम्यक रूप से धैर्य धारण कर ।6।

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ⑦

निश्चित रूप से वे उसे बहुत दूर देख रहे हैं ।7।

وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ⑧

और हम उसे निकट देखते हैं ।8।

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ⑨

जिस दिन आकाश पिघले हुए ताँबे की भाँति हो जाएगा ।9।

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ⑩

और पर्वत धुनकी हुई ऊन की भाँति हो जाएँगे ।10।

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ⑪

और कोई घनिष्ट मित्र किसी घनिष्ट मित्र का (हाल-चाल) नहीं पूछेगा ।11।

يُّبَصَّرُوْنَهُمْ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِىِٕذٍۭ بِبَنِيْهِ ⑫

वे उन्हें अच्छी प्रकार दिखला दिए जाएँगे। अपराधी यह चाहेगा कि काश वह उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए मुक्तिमूल्य स्वरूप अपने पुत्रों को दे सके ।12।

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ﴿١٣﴾

और अपनी पत्नी को और अपने भाई को ।13।

وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ﴿١٤﴾

और अपने कुल को भी जो उसे शरण देता था ।14।

وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ﴿١٥﴾

और उन सब को जो धरती में हैं । फिर वह (मुक्तिमूल्य) उसे उस अज़ाब से बचा ले ।15।

كَلَّا ۭ اِنَّهَا لَظٰى ﴿١٦﴾

सावधान ! नि:सन्देह वह एक धुआँ विहीन आग की लपट है ।16।

نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿١٧﴾

चमड़ी को उधेड़ देने वाली ।17।

تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ﴿١٨﴾

वह हर उस व्यक्ति को बुलाती है जिसने पीठ फेर ली और मुँह मोड़ लिया ।18।

وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٩﴾

और (धन) इकट्ठा किया और संचय किया ।19।

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ﴿٢٠﴾

नि:सन्देह मनुष्य बहुत अधिक लालची पैदा किया गया है ।20।

اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿٢١﴾

जब उसे कोई कष्ट पहुँचता है तो अत्यन्त विलाप करने वाला होता है ।21।

وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ﴿٢٢﴾

और जब उसे कोई भलाई पहुँचती है तो बड़ा कंजूस हो जाता है ।22।

اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ﴿٢٣﴾

हाँ, नमाज़ पढ़ने वालों का मामला भिन्न है ।23।

الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰي صَلَاتِهِمْ دَاۗىِٕمُوْنَ ﴿٢٤﴾

वे लोग जो अपनी नमाज़ पर सदैव क़ायम रहते हैं ।24।

وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ﴿٢٥﴾

और वे लोग जिनके धन-सम्पत्ति में एक निश्चित अधिकार है ।25।

لِّلسَّاۗىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿٢٦﴾

माँगने वाले के लिए और वंचित रहने वाले के लिए ।26।

وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٢٧﴾

और वे लोग जो प्रतिफल दिवस की पुष्टि करते हैं ।27।

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۚ ﴿٢٨﴾

और वे लोग जो अपने रब्ब के अज़ाब से डरने वाले हैं ।28।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿٢٩﴾

नि:सन्देह उनके रब्ब का अज़ाब ऐसा है जिससे बचा नहीं जा सकता ।29।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ ﴿٣٠﴾

और वे लोग जो अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करने वाले होते हैं ।30।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ ﴿٣١﴾

सिवाए अपनी पत्नियों के अथवा उन (स्त्रियों) के जिनके स्वामी उनके दाहिने हाथ हुए । अत: नि:सन्देह वे धिक्कार योग्य नहीं हैं ।31।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ ﴿٣٢﴾

अत: जिसने इसके अतिरिक्त (कुछ और) चाहा तो यही वे हैं जो सीमा से बढ़ने वाले हैं ।32।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ ﴿٣٣﴾

और वे लोग जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञाओं की लाज रखने वाले हैं ।33।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۙ ﴿٣٤﴾

और वे लोग जो अपनी गवाहियों पर अटल रहने वाले हैं ।34।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ؕ ﴿٣٥﴾

और वे लोग जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं ।35।

اُولٰٓئِكَ فِىْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

यही वे हैं जिनसे स्वर्गों में सम्मानजनक व्यवहार किया जाएगा ।36। (रुकू $\frac{1}{7}$)

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۙ ﴿٣٧﴾

अत: उन लोगों को क्या हुआ था जिन्होंने इनकार किया कि वे तेरी ओर तेज़ी से दौड़े चले आते थे ।37।

عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿٣٨﴾

दाईं ओर से भी और बाईं ओर से भी, टोलियों में बंटे हुए ।38।

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ۙ ﴿٣٩﴾

क्या उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यह आस लगाए हुए है कि वह नेमतों वाले स्वर्ग में प्रविष्ट किया जाएगा ? ।39।

كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقۡنٰهُمۡ مِّمَّا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۰﴾

कदापि नहीं ! नि:सन्देह हमने उनको उस चीज़ से पैदा किया जिसे वे जानते हैं ।40।

فَلَاۤ اُقۡسِمُ بِرَبِّ الۡمَشٰرِقِ وَالۡمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوۡنَ ۙ﴿۴۱﴾

अत: सावधान ! मैं पूर्वी दिशाओं और पश्चिमी दिशाओं के रब्ब की क़सम खाता हूँ, निश्चित रूप से हम समर्थ हैं ।41।

عَلٰۤی اَنۡ نُّبَدِّلَ خَیۡرًا مِّنۡهُمۡ ۙ وَمَا نَحۡنُ بِمَسۡبُوۡقِیۡنَ ﴿۴۲﴾

इस पर कि, उन्हें परिवर्तित कर के हम उनसे श्रेष्ठ ले आएँ । और हम से आगे बढ़ा नहीं जा सकता ।42।*

فَذَرۡهُمۡ یَخُوۡضُوۡا وَیَلۡعَبُوۡا حَتّٰی یُلٰقُوۡا یَوۡمَهُمُ الَّذِیۡ یُوۡعَدُوۡنَ ۙ﴿۴۳﴾

अत: उन्हें छोड़ दे, वे व्यर्थ बातों में और खेल-कूद में लगे रहें, यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लें जिसका उन्हें वचन दिया जाता है ।43।

یَوۡمَ یَخۡرُجُوۡنَ مِنَ الۡاَجۡدَاثِ سِرَاعًا کَاَنَّهُمۡ اِلٰی نُصُبٍ یُّوۡفِضُوۡنَ ۙ﴿۴۴﴾

जिस दिन वे क़ब्रों से तीव्रता पूर्वक निकलेंगे, मानो वे क़ुर्बानगाहों की ओर दौड़े जा रहे हों ।44।

خَاشِعَةً اَبۡصَارُهُمۡ تَرۡهَقُهُمۡ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الۡیَوۡمُ الَّذِیۡ کَانُوۡا یُوۡعَدُوۡنَ ﴿۴۵﴾ ع

इस अवस्था में कि उनकी आँखें झुकी हुई होंगी । उन पर अपमान छा रहा होगा । यह वह दिन है जिसका उन्हें वादा दिया जाता था ।45। (रुकू $\frac{2}{8}$)

---

* आयत सं. 41 से 42 : इन आयतों में पूर्वी और पश्चिमी दिशाओं के रब्ब को साक्षी ठहराया गया है । अर्थात भविष्यवाणी है कि एक ऐसा युग आएगा जब कई प्रकार के पूर्व और पश्चिम मुहावरों में प्रयोग किये जाएँगे । जैसे मध्यपूर्व, निकटपूर्व और सुदूरपूर्व इत्यादि ।
दूसरा इसमें यह आश्चर्यजनक तथ्य का वर्णन है कि अल्लाह तआला इस बात पर पूर्ण रूप से समर्थ है कि यदि वह चाहे तो मनुष्यों से उत्तम जीव को इस संसार में ला सकता है ।

71– सूरः नूह

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक काल में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 29 आयतें हैं ।

पिछली सूरः के अंत में कहा गया था कि हम इस बात पर समर्थ हैं कि तुम से श्रेष्ठ लोग पैदा कर दें । अब इस सूरः में कहा गया है कि नूह की जाति को मिले अज़ाब में छोटे रूप में यही स्थिति पैदा हुई थी कि पूरी की पूरी जाति डुबो दी गई सिवाए कुछ एक के जिन्होंने नूह अलै. की नौका में शरण ली थी । फिर उन लोगों से जो हज़रत नूह अलै. के साथ थे, एक नई और उत्तम पीढ़ी का आरम्भ किया गया ।

आयत सं. 5 में अल्लाह की निश्चित किए हुए समय का वर्णन है कि जब वह आएगा तो फिर तुम उसे टाल नहीं सकोगे । यह पिछली सूरः के विषयवस्तु की पुनरावृत्ति है ।

इसके पश्चात हज़रत नूह अलै. के अनुनय-विनय और प्रचार कार्य का उल्लेख किया गया कि केवल संदेश पहुँचा देना पर्याप्त नहीं हुआ करता बल्कि उस संदेश को समझाने के लिए एक नबी को एक प्रकार से अपने प्राण को संकट में डालना पड़ता है । ऐसा कोई उपाय वह नहीं छोड़ता जिससे अपनी जाति के बड़ों और छोटों को समझाया जा सकता हो । वह कभी अनुनय-विनय करके और कभी छिप-छिप कर समझाता है ताकि जाति के ऊँचे लोग, जनसाधारण के सामने सत्य को स्वीकार करके लज्जा का अनुभव न करें । कभी खुल्लम-खुल्ला उद्घोषणा कर के प्रचार करता है ताकि जन-साधारण को भी नबी से सीधा संदेश पहुँचे । अन्यथा उनके नेता तो उस संदेश को परिवर्तित करके लोगों में प्रस्तुत करेंगे । फिर कभी उन्हें लालच दिलाता है कि देखो ! यदि तुम ईमान ले आओगे तो आकाश से तुम पर कृपा-वृष्टि होगी । और कभी भयभीत कराता है कि यदि ईमान नहीं लाओगे तो आकाश से कृपा-वृष्टि के बदले अत्यन्त विनाशकारी वर्षा होगी और धरती भी तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकेगी । बल्कि धरती से भी विनाश के स्रोत फूट पड़ेंगे । तब इस प्रकार बात पूरी हो जाने के पश्चात् अन्ततः उनको समाप्त कर दिया गया और एक नई जाति की नींव डाली गई ।

अतः हज़रत नूह अलै. ने जो यह दुआ की थी कि अल्लाह तआला काफ़िरों में से किसी को शेष न छोड़े और सभी को विनष्ट कर दे । यह दुआ इस आधार पर की थी कि अल्लाह तआला ने आप को यह बता दिया था कि अब यदि ये लोग जीवित रखे गए तो ये केवल अवज्ञाकारी और दुराचारी को पैदा करेंगे । इनकी संतानों से अब मोमिन पैदा होने की आशा समाप्त हो चुकी है । अतः जब अल्लाह के भक्तगण इस प्रकार बात पूरी

कर दिया करते हैं तब उनका यह अधिकार बनता है कि विरोधियों के विनाश की दुआ करें ।

इसके अतिरिक्त इस सूर: में यह भी वर्णन है कि हज़रत नूह अलै. ने अपनी जाति को ध्यान दिलाते हुए यह कहा कि तुम अल्लाह तआला को एक गरिमाशाली सत्ता के रूप में क्यों स्वीकार नहीं करते ? उसने तुम्हें भी तो कई स्तरों में आगे बढ़ाते हुए पूर्णता को पहुँचाया है । और यही बात आकाश के कई स्तरीय ऊँचाइयों से प्रमाणित होती है । यह विषय एक प्रकार से उस जाति की समझ से परे था । न उसे अपने अतीत का ज्ञान था कि कैसे कई स्तरों से होते हुए वे पैदा हुए, न अपने भविष्य का ज्ञान था । न वे आकाश की अनेक स्तरों वाली ऊँचाइयों का ज्ञान रखते थे । संभवत: यह एक भविष्यवाणी है कि भविष्य में जब एक नई **कश्ती–ए–नूह** बनाई जाएगी तो उस युग के लोगों को इन सब बातों का ज्ञान हो चुका होगा । फिर भी यदि वे अनेकेश्वरवाद के फैलाने से न रुके और उन पर प्रत्येक प्रकार से बात पूरी कर दी गई तो अन्तत: उनके लिए यह दुआ अवश्य पूरी हो कर रहेगी **:- 1. फ़ सह हिक हुम तस्हीकन 2. व ला तज़र अलल अर्ज़ि मिनल काफ़िरी न शरीरन ।** अर्थात् 1. हे अल्लाह ! तू इन्हें पीस कर रख दे । 2. हे अल्लाह ! धरती में किसी दुष्ट काफ़िर को मत छोड़ ।

☆☆☆

سُوْرَةُ نُوْحٍ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ②

नि:सन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा कि तू अपनी जाति को सतर्क कर, इससे पूर्व कि उनके पास पीड़ा जनक अज़ाब आ जाए ।2।

قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ③

उसने कहा, हे मेरी जाति ! नि:सन्देह मैं तुम्हारे लिए एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ ।3।

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ④

कि अल्लाह की उपासना करो और उसका तक़वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।4।

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑤

वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और एक निर्धारित समय तक ढील देगा । नि:सन्देह अल्लाह का (निश्चित किया हुआ) समय जब आ जाता है तो उसे टाला नहीं जा सकता । काश तुम जानते ! ।5।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ⑥

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मैंने अपनी जाति को रात को भी और दिन को भी आमंत्रित किया ।6।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ اِلَّا فِرَارًا ⑦

अत: मेरे निमंत्रण ने उन्हें भागने के सिवा किसी चीज़ में नहीं बढ़ाया ।7।

وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا

और नि:सन्देह जब कभी मैंने उन्हें निमंत्रण दिया, ताकि तू उन्हें क्षमा कर दे उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लीं । और अपने कपड़े

ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۚ﴿٨﴾

लपेट लिए और बहुत हठ किया और बड़े अहंकार का प्रदर्शन किया ।8।

ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ﴿٩﴾

फिर मैंने उन्हें ऊँची आवाज़ से भी निमंत्रण दिया ।9।

ثُمَّ اِنِّيْٓ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۙ﴿١٠﴾

फिर मैंने उनके लिए घोषणाएँ भी कीं और बहुत गुप्त रूप से भी काम लिया ।10।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿١١﴾

अत: मैंने कहा, अपने रब्ब से क्षमा माँगो नि:सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला है ।11।

يُّرْسِلِ السَّمَاۗءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿١٢﴾

वह तुम पर लगातार बरसने वाला बादल भेजेगा ।12।

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۭ﴿١٣﴾

और वह धन और संतान के साथ तुम्हारी सहायता करेगा । और तुम्हारे लिए बाग़ान बनाएगा और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा ।13।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ﴿١٤﴾

तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह से किसी गरिमा की आशा नहीं रखते ? ।14।

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٥﴾

हालाँकि उसने तुम्हें अनेक ढंगों से पैदा किया ।15।

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ﴿١٦﴾

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने सात आकाशों को किस प्रकार अनेक स्तरों में पैदा किया ? ।16।

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٧﴾

और उसने उनमें चन्द्रमा को एक प्रकाशमय और सूर्य को एक उज्ज्वल प्रदीप बनाया ।17।

وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۙ﴿١٨﴾

और अल्लाह ने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया ।18।

ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ

फिर वह तुम्हें उस में वापस कर देगा और तुम्हें एक नए रंग में

اِخْرَاجًا ﴿۱۹﴾

निकालेगा।19।*

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿۲۰﴾

और अल्लाह ने धरती को तुम्हारे लिए बिछाया हुआ बनाया ।20।

لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿۲۱﴾

ताकि तुम उसके खुले-खुले रास्तों पर चलो फिरो ।21। (रुकू $\frac{1}{9}$)

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ﴿۲۲﴾

नूह ने कहा, हे मेरे रब्ब ! नि:सन्देह उन्होंने मेरी अवज्ञा की और उसका अनुसरण किया जिसे उसके धन और संतान ने घाटे के अतिरिक्त और किसी चीज़ में नहीं बढ़ाया ।22।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿۲۳﴾

और उन्होंने बहुत बड़ा षड़यन्त्र किया ।23।

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ﴿۲۴﴾

और उन्होंने कहा, कदापि अपने उपास्यों को न छोड़ो और न वद्द को छोड़ो और न सुवा को और न ही यग़ूस और यऊक़ और नस्र को (छोड़ो) ।24।**

وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ

और उन्होंने बहुतों को पथभ्रष्ट कर दिया और तू अत्याचारियों को

---

* आयत सं. 14 से 19 में मनुष्य के क्रमबद्ध रूप से विकास के विभिन्न दौर से गुज़र कर पैदा होने का वर्णन है । वे लोग जो यह समझते हैं कि अल्लाह तआला ने तत्काल सब कुछ इसी प्रकार पैदा कर दिया, वे अल्लाह तआला के गरिमाशाली होने का इनकार करते हैं क्योंकि एक गरिमाशाली सत्ता को कोई हड़बड़ी नहीं होती । वह प्रत्येक वस्तु को क्रमबद्ध रूप से विकसित करके ऊँचाई प्रदान करता है। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने आकाशों को भी कई स्तरों में उत्पन्न किया । इन आयतों के अंत पर कहा **हमने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया ।** यह केवल मुहावरा नहीं बल्कि वास्तव में मनुष्य उत्पत्ति एक ऐसे समय से गुज़री कि वह केवल वनस्पति सदृश थी । और दूसरी आयत में इस दृश्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि **वह उल्लेखनीय वस्तु नहीं था ।** (अद् दहर, आयत : 2) अर्थात् मनुष्य अपनी उत्पत्ति में ऐसे पड़ाव से भी होकर गुज़रा है कि वह कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं था । इसमें सूक्ष्म रूप से इस ओर भी संकेत है कि जब मनुष्य की उत्पत्ति वनस्पति दौर में से गुज़र रही थी तो उसमें आवाज़ निकालने अथवा आवाज़ सुनने के इन्द्रिय उत्पन्न नहीं हुए थे । उस वनस्पति कालीन जीवन पर पूर्ण रूप से खामोशी छाई थी ।

** वद्द, सुवा, यग़ूस, यऊक़ और नस्र :- वे मूर्तियाँ जिनकी इस्लाम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे ।

اِلَّا ضَلٰلًا ﴿۲۵﴾

असफलता के अतिरिक्त और किसी चीज़ में न बढ़ाना ।25।

مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿۲۶﴾

वे अपने पापों के कारण डुबोए गए फिर अग्नि में प्रविष्ट किए गए । अत: उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर अपने लिए कोई सहायक न पाया ।26।

وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿۲۷﴾

और नूह ने कहा, हे मेरे रब्ब ! काफ़िरों में से किसी को धरती पर बसता हुआ न रहने दे ।27।

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿۲۸﴾

नि:सन्देह यदि तू उनको छोड़ देगा तो वे तेरे भक्तों को पथभ्रष्ठ कर देंगे । और कुकर्मी और बड़े कृतघ्नों के अतिरिक्त किसी को जन्म नहीं देंगे ।28।*

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿۲۹﴾ ع ۲ ۱۰

हे मेरे रब्ब ! मुझे क्षमा कर दे । और मेरे माता-पिता को भी । और उसे भी जो मोमिन बनकर मेरे घर में प्रविष्ट हुआ । और सब मोमिन पुरुषों को और सब मोमिन स्त्रियों को क्षमा कर दे । और तू अत्याचारियों को सर्वनाश के अतिरिक्त किसी चीज़ में न बढ़ाना ।29।

(रुकू $\frac{2}{10}$)

* आयत सं. 27-28 हज़रत नूह अलै. की अपनी जाति के लिए जिस अहित-कामना का वर्णन है वह इस लिए था कि अल्लाह तआला ने उन को सतर्क कर दिया था कि अब यह जाति अथवा इसकी आगे की पीढ़ियाँ कभी ईमान नहीं लाएँगी । हज़रत नूह अलै. को व्यक्तिगत रूप से तो इस बात का ज्ञान नहीं हो सकता था । अवश्य अल्लाह तआला की ओर से ज्ञान पाकर उन्हों ने यह अहित-कामना की थी ।

72- सूरः अल-जिन्न

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 29 आयतें हैं ।

इस सूरः का सूरः नूह से एक सम्बन्ध यह प्रतीत होता है कि इसमें भी लोगों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि तुम यदि इस संदेश को स्वीकार कर लोगे तो आकाश से तुम पर अधिकता के साथ कृपावृष्टि होगी और यदि नहीं करोगे तो तुम्हें सदा बढ़ते रहने वाले एक अज़ाब में डाल दिया जाएगा । सूरः नूह में जिस विनाशकारी बाढ़ का वर्णन है वह भी एक लगातार बढ़ते रहने वाली बाढ़ थी ।

अब हम इस सूरः के विषयवस्तु पर दृष्टि डालते हैं कि इसमें जिन्नों के सदंर्भ में कुछ बहुत महत्वपूर्ण विषयवस्तु छेड़े गए हैं । विद्वानों का विचार है कि यहाँ जिन्नों से अभिप्राय अग्नि से बने हुए कोई अदृश्य जीव थे । हालाँकि प्रामाणिक हदीसों से सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पास आये हुए एक शिष्ट मंडल से, जिसके सदस्य इन अर्थों में जिन्न थे कि वे अपनी जाति के बड़े लोग थे, जब उनकी भेंट हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुई तो उन्होंने अपना भोजन तैयार करने के लिए वहाँ आग जलाई थी । अतएव यहाँ पर कदापि किसी काल्पनिक जिन्न का वर्णन नहीं है ।

इसके अतिरिक्त उन्होंने जिन महत्वपूर्ण विषयों का वर्णन छेड़ा है उनमें से एक यह भी है कि हम में से कुछ मूर्ख लोग विचित्र प्रकार की अज्ञानता की बातें अल्लाह तआला के साथ जोड़ा करते थे । इसी प्रकार हम में यह विचारधारा भी प्रचलित हो गई थी कि अब अल्लाह तआला कभी किसी नबी को नहीं भेजेगा । उन्होंने इस विचारधारा को इस कारण ग़लत घोषित कर दिया क्योंकि वे अपनी आँखों से एक महान नबी का दर्शन कर चुके थे ।

इसके पश्चात मस्जिदों के सम्बन्ध में कहा कि वह विशुद्ध रूप से अल्लाह के लिए बनाई जाती हैं । उनमें किसी और की उपासना उचित नहीं । फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उपासना शैली का वर्णन है कि उपासना के बीच में आप सल्ल. को कई प्रकार के शोक और चिंताएँ घेर लिया करती थीं और बार बार ध्यान भंग करने का प्रयत्न करती थीं । परन्तु आपका ध्यान इस के बावजूद पूर्णतया अल्लाह ही के लिए हुआ करता था । जबकि मनुष्य हर दिन यह देखता है कि उसकी खुशियाँ और उसके दु:ख, उसके ध्यान को उपासना से हटाने में सफल हो जाया करते हैं ।

यहाँ एक बार फिर इस बात को दोहराया गया है कि जिस अज़ाब को तुम बहुत दूर देख रहे हो कोई नहीं कह सकता कि वह निकट है अथवा दूर । जब अज़ाब की घड़ी

आ जाए तो फिर चाहे उसे मनुष्य कितना ही दूर समझे उसे अवश्य निकट देखता है ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अदृश्य का ज्ञान अधिकता पूर्वक दिया गया । आप सल्ल. स्वयं अदृश्य द्रष्टा नहीं थे बल्कि अल्लाह तआला यह ज्ञान सदा अपने रसूलों को ही प्रदान किया करता है जो अपने आप में अदृश्य विषय का कोई ज्ञान नहीं रखते परन्तु जो अदृश्य विषय उनको बताया जाता है वह अवश्य पूरा हो कर रहता है । इसी प्रकार वे फ़रिश्ते जो रसूल की वह्इ ले कर आते हैं, वे आगे और पीछे उसकी सुरक्षा करते हुए चलते हैं ताकि शैतान उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न कर सकें । अत: अल्लाह के महान रसूलों के बाद भी कई उनके अधीनस्थ रसूल आया करते हैं जो उस वह्इ का सही अर्थ बताते हुए उसकी सुरक्षा करते हैं ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝٢

तू कह दे मेरी ओर वह्इ किया गया है कि जिन्नों के एक समूह ने (क़ुरआन को) ध्यान से सुना, तो उन्होंने कहा, नि:सन्देह हमने एक अद्‌भुत क़ुरआन सुना है ।2।

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝٣

जो भलाई की ओर मार्गदर्शन करता है। अत: हम उस पर ईमान ले आए । और हम कदापि किसी को अपने रब्ब का साझीदार नहीं ठहराएँगे ।3।

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝٤

और (कहा) कि नि:सन्देह हमारे रब्ब की शान ऊँची है । उसने न कोई पत्नी अपनाई और न कोई पुत्र ।4।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝٥

और निश्चित रूप से हम में से एक मूर्ख व्यक्ति अल्लाह पर बढ़-बढ़ कर बातें किया करता था ।5।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝٦

और नि:सन्देह हम सोचा करते थे कि मनुष्य और जिन्न अल्लाह पर कदापि झूठ नहीं बोलेंगे ।6।

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝٧

और नि:सन्देह जन-साधारण में से कई ऐसे थे जो बड़े लोगों की शरण में आ जाते थे । अत: उन्होंने उनको कुकर्मों और अज्ञानता में बढ़ा दिया ।7।

وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝٨

और उन्होंने भी धारण की थी जैसे तुम ने धारण कर ली कि अल्लाह कदापि किसी को नहीं भेजेगा ।8।

وَّ اَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّ شُهُبًا ۙ﴿۹﴾

और नि:सन्देह हमने आकाश को टटोला तो उसे सशक्त रक्षकों और आग की लपटों से भरा हुआ पाया ।9।

وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۱۰﴾

और नि:सन्देह हम सुनने के लिए उसकी वेधशालाओं पर बैठे रहते थे । अत: जो अब सुनने का प्रयत्न करता है, वह एक अग्निशिखा को अपनी घात में पाता है ।10।*

وَّ اَنَّا لَا نَدْرِيْۤ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۱﴾

और नि:सन्देह हम नहीं जानते थे कि क्या जो भी धरती में हैं उनके लिए बुरा चाहा गया है अथवा उनके रब्ब ने उनसे भलाई करने का इरादा किया है ? ।11।

وَّ اَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَ مِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۲﴾

और नि:सन्देह हम में कुछ नेक लोग थे और कुछ हम में से उनसे भिन्न भी थे । हम विभिन्न सम्प्रदायों में बटे हुए थे ।12।

وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَ لَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۳﴾

और अवश्य हमने विश्वास कर लिया था कि हम कदापि अल्लाह को धरती में असमर्थ नहीं कर सकेंगे । और हम भागते हुए भी उसे मात नहीं दे सकेंगे ।13।

وَّ اَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ

और निश्चित रूप से जब हमने हिदायत की बात सुनी, उस पर ईमान ले आए ।

* आयत सं 2 से 10 : इन आयतों में दो बातें विशेष रूप से स्पष्ट करने योग्य हैं । ये जिन्न जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए थे, ये अपनी जाति के बड़े लोग थे और वे उस प्रकार के काल्पनिक जिन्न नहीं थे जिनकी कल्पना की जाती है । फिर उन्होंने अपना भोजन पकाने के लिए वहाँ आग भी जलाई और सहाबा रज़ि. ने उसके बाद वहाँ उनके बुझे हुए कोयले और भोजन की तैयारी के चिह्न भी देखे । इनके बारे में दृढ़ विचार यह है कि ये अफ़ग़ानिस्तान में बसे बनी इस्राईल के एक प्रतिनिधि मण्डल का वर्णन है जो अपनी जाति के सरदार और बड़े लोग अर्थात जिन्न थे । उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन का समाचार सुन कर स्वयं जा कर देखने का निर्णय किया था । उन्होंने लम्बे तर्क-वितर्क के पश्चात न केवल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिल से सच्चा स्वीकार कर लिया बल्कि उस झूठे सिद्धान्त का भी इनकार किया कि हम मूर्खों की भाँति यह समझा करते थे कि अब अल्लाह कोई नबी नहीं भेजेगा । इसके बाद ये लोग अपनी जाति की ओर वापस गये और उस समय के समग्र→

فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿١٤﴾

अत: जो भी अपने रब्ब पर ईमान लाए तो वह न किसी कमी का भय रखेगा और न किसी अत्याचार का ।14।

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٥﴾

और नि:सन्देह हममें से आज्ञाकारी भी थे और हम ही में से अत्याचार करने वाले भी थे । अत: जिसने भी आज्ञापालन किया, तो यही वे हैं जिन्होंने हिदायत की खोज की ।15।

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٦﴾

और वे जो अत्याचारी थे, वे तो नरक का ईंधन बन गए ।16।

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّاۗءً غَدَقًا ﴿١٧﴾

और यदि वे (अर्थात मक्का वासी) सही विचारधारा पर अडिग रहते तो हम उन्हें अवश्य प्रचुर मात्रा में जल प्रदान करते ।17।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٨﴾

ताकि हम उस के द्वारा उनकी परीक्षा करें । और जो अपने रब्ब के स्मरण से मुँह मोड़े उसे वह सदा बढ़ते रहने वाले एक अज़ाब में झोंक देगा ।18।

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٩﴾

और निश्चित रूप से मस्जिदें अल्लाह ही के लिए हैं । अत: अल्लाह के साथ किसी (और) को न पुकारो ।19।

وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿٢٠﴾ ع

और नि:सन्देह जब भी अल्लाह का भक्त उसको पुकारते हुए खड़ा हुआ तो वे झुंड के झुंड उस पर टूट पड़ने के निकट होते हैं ।20।* (रुकू $\frac{1}{11}$)

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢١﴾

तू कह दे मैं केवल अपने रब्ब को पुकारूँगा और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराऊँगा ।21।

←अफ़ग़ानिस्तान को मुसलमान बना लिया ।

* इस अर्थ के लिए देखें मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.

قُلْ اِنِّىْ لَاۤ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢٢﴾

तू कह दे कि मैं तुम्हें न किसी प्रकार की हानी पहुँचाने की और न किसी प्रकार की भलाई पहुँचाने की शक्ति रखता हूँ ।22।

قُلْ اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِىْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٣﴾

तू कह दे कि मुझे अल्लाह के मुक़ाबले पर कदापि कोई आश्रय नहीं दे सकेगा । और मैं उसे छोड़ कर कदापि कोई आश्रय स्थल नहीं पाऊँगा ।23।

اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ﴿٢٤﴾

परन्तु अल्लाह की ओर से प्रचार करते हुए और उसके संदेशों को पहुँचाते हुए* और जो अल्लाह की और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा तो नि:सन्देह उसके लिए नरक की अग्नि होगी । वे दीर्घ काल तक उसमें रहने वाले होंगे ।24।

حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٥﴾

यहाँ तक कि जब वे उसे देख लेंगे । जिससे उन्हें डराया जाता है तो वे अवश्य जान लेंगे कि सहायक के रूप में कौन सबसे अधिक दुर्बल और संख्या की दृष्टि से सबसे कम था ।25।

قُلْ اِنْ اَدْرِىْۤ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّىْۤ اَمَدًا ﴿٢٦﴾

तू कह दे, मैं नहीं जानता कि जिससे तुम डराए जाते हो वह निकट है अथवा मेरा रब्ब उसकी अवधि को लम्बा कर देगा ।26।

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ۙ﴿٢٧﴾

वह अदृश्य का ज्ञाता है । अत: वह किसी को अपने अदृश्य (मामलों) पर प्रभुत्व प्रदान नहीं करता ।27।

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۙ﴿٢٨﴾

सिवाए अपने मनोनीत रसूल के । फिर निश्चित रूप से वह उसके आगे और उसके पीछे सुरक्षा करते हुए चलता है ।28।

---

* देखें तफ़सीर कबीर, इमाम राज़ी रहि.

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٩﴾

ताकि वह जान ले कि वे (रसूल) अपने रब्ब के संदेश को खूब स्पष्ट करके पहुँचा चुके हैं । और जो उन के पास है वह उसको घेरे हुए है और संख्या की दृष्टि से प्रत्येक वस्तु को उसने गिन रखा है ।29। (रुकू $\frac{2}{12}$)

73- सूरः अल-मुज़्ज़म्मिल

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी थी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 21 आयतें हैं ।

इससे पूर्ववर्ती सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उपासना करने की शैली का उल्लेख किया गया था । उसका विवरण इस सूरः के आरम्भ ही में मिलता है जो संक्षेप में इस प्रकार है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रातों का अधिकतर भाग जाग कर अनुनय पूर्वक उपासना करने में बिताते थे । इन्द्रियनिग्रह का इससे उत्तम और कोई उपाय नहीं कि मनुष्य रात्रि को उठ कर उपासना के द्वारा अपनी आत्मलिप्साओं को कुचल डाले ।

इस सूरः में एक बार फिर हज़रत मूसा अलै. के साथ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की समानता वर्णन की गई है कि आप सल्ल. भी एक शरीयत धारक और ओजस्वी रसूल हैं । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष उपस्थित लोगों को चेतावनी दी गई है कि हज़रत मूसा अलै. से बढ़ कर ओजस्वी रसूल प्रकट हो चुका है । इसका विरोध करने से तुम्हारे सर्वनाश के अतिरिक्त और कोई परिणाम नहीं निकलेगा । जैसा कि हज़रत मूसा अलै. का विरोध करके एक बहुत बड़े अत्याचारी ने उन के संदेश को नकारने का दुस्साहस किया था तब उसे विनष्ट कर दिया गया ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰۤاَيُّهَا الۡمُزَّمِّلُ ۙ۝٢

हे अच्छी प्रकार चादर में लिपटने वाले ! ।2।

قُمِ الَّيۡلَ اِلَّا قَلِيۡلًا ۙ۝٣

रात्रि को (उपासनार्थ) खड़ा हुआ कर, परन्तु थोड़ा ।3।

نِّصۡفَهٗۤ اَوِ انۡقُصۡ مِنۡهُ قَلِيۡلًا ۙ۝٤

उसका आधा अथवा उससे कुछ थोड़ा सा कम कर दे ।4।

اَوۡ زِدۡ عَلَيۡهِ وَرَتِّلِ الۡقُرۡاٰنَ تَرۡتِيۡلًا ؕ۝٥

अथवा उस पर (कुछ) बढ़ा दे और क़ुरआन को ख़ूब निखार कर पढ़ा कर।5।

اِنَّا سَنُلۡقِىۡ عَلَيۡكَ قَوۡلًا ثَقِيۡلًا ۝٦

नि:सन्देह हम तुझ पर एक भारी आदेश उतारेंगे ।6।

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيۡلِ هِىَ اَشَدُّ وَطۡـاً وَّاَقۡوَمُ قِيۡلًا ؕ۝٧

रात्रि को उठना नि:सन्देह (आत्मलिप्सा को) पाँव तले कुचलने के लिए अधिक प्रभावकारी और (साफ सीधी) बात करने में सर्वाधिक दृढ़ता (प्रदानकारी) है ।7।

اِنَّ لَكَ فِى النَّهَارِ سَبۡحًا طَوِيۡلًا ؕ۝٨

नि:सन्देह तेरे लिए दिन को बहुत लम्बा काम होता है ।8।

وَاذۡكُرِ اسۡمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلۡ اِلَيۡهِ تَبۡتِيۡلًا ؕ۝٩

अत: अपने रब्ब के नाम का स्मरण कर और पूर्ण रूपेण पृथक होकर उसकी ओर झुक जा ।9।

رَبُّ الۡمَشۡرِقِ وَالۡمَغۡرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذۡهُ وَكِيۡلًا ۝١٠

वह पूर्व और पश्चिम का रब्ब है । उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अत: कार्यसाधक के रूप में उसे अपना ले ।10।

وَاصۡبِرۡ عَلٰى مَا يَقُوۡلُوۡنَ وَاهۡجُرۡهُمۡ هَجۡرًا جَمِيۡلًا ﴿۱۱﴾

और जो वे कहते हैं उस पर धैर्य धर और उनसे अच्छे रंग में अलग हो जा ।11।

وَذَرۡنِىۡ وَالۡمُكَذِّبِيۡنَ اُولِى النَّعۡمَةِ وَمَهِّلۡهُمۡ قَلِيۡلًا ﴿۱۲﴾

और मुझे और ऐश्वर्य में पलने वाले झुठलाने वालों को (अलग) छोड़ दे और उन्हें कुछ ढील दे ।12।

اِنَّ لَدَيۡنَاۤ اَنۡكَالًا وَّجَحِيۡمًا ۙ﴿۱۳﴾

नि:सन्देह हमारे पास शिक्षाप्रद कई साधन हैं और नरक भी है ।13।

وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيۡمًا ۗ﴿۱۴﴾

और गले में फंस जाने वाला एक भोजन और पीड़ाजनक अज़ाब भी है ।14।

يَوۡمَ تَرۡجُفُ الۡاَرۡضُ وَالۡجِبَالُ وَكَانَتِ الۡجِبَالُ كَثِيۡبًا مَّهِيۡلًا ﴿۱۵﴾

जिस दिन धरती और पहाड़ खूब प्रकम्पित होंगे और पहाड़ भुरभुरे टीलों के समान हो जाएँगे ।15।

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا ؕ﴿۱۶﴾

नि:सन्देह हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है जो तुम्हारा निरीक्षक है । जैसा कि हमने फ़िरऔन की ओर भी एक रसूल भेजा था ।16।

فَعَصٰى فِرۡعَوۡنُ الرَّسُوۡلَ فَاَخَذۡنٰهُ اَخۡذًا وَّبِيۡلًا ﴿۱۷﴾

अत: फ़िरऔन ने उस रसूल की अवमानना की तो हमने उसे एक कठोर पकड़ में जकड़ लिया ।17।

فَكَيۡفَ تَتَّقُوۡنَ اِنۡ كَفَرۡتُمۡ يَوۡمًا يَّجۡعَلُ الۡوِلۡدَانَ شِيۡبًا ۖ﴿۱۸﴾

अत: यदि तुमने इनकार किया तो तुम उस दिन से कैसे बच सकोगे जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा ।18।

السَّمَآءُ مُنۡفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعۡدُهٗ مَفۡعُوۡلًا ﴿۱۹﴾

आकाश उस (के भय) से फट जाएगा । उसका (यह) वादा अवश्य पूरा होने वाला है ।19।

اِنَّ هٰذِهٖ تَذۡكِرَةٌ ۚ فَمَنۡ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيۡلًا ﴿۲۰﴾ ع

नि:सन्देह यह एक बड़ा शिक्षाप्रद उपदेश है । अत: जो चाहे अपने रब्ब की ओर (जाने वाला) रास्ता अपना ले ।20।

(रुकू $\frac{1}{13}$)

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُوْمُ أَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ
الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ
مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ أَنْ
لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا
تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ أَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ
مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ
يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ
مِنْهُ ۙ وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَأَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ
خَيْرًا وَّأَعْظَمَ أَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ
إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١﴾ ع ٢ ١٤

नि:सन्देह तेरा रब्ब जानता है कि तू रात का लगभग दो तिहाई भाग अथवा उसका आधा अथवा उसका तीसरा भाग (उपासनार्थ) खड़ा रहता है । और उन लोगों का एक दल भी जो तेरे साथ (खड़े रहते) हैं । और अल्लाह रात और दिन को घटाता बढ़ाता रहता है । और वह जानता है कि तुम कदापि इस (रीति) को निभा नहीं सकोगे । अत: वह तुम पर दयापूर्वक झुक गया है । अत: क़ुरआन में से जितना सम्भव हो पढ़ लिया करो । वह जानता है कि तुम में से रोगी भी होंगे । और दूसरे भी जो धरती में अल्लाह की कृपा चाहते हुए यात्रा करते हैं । और कुछ और भी जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेंगे । अत: उसमें से जो भी सम्भव हो पढ़ लिया करो । और नमाज़ को क़ायम करो । और ज़कात दिया करो और अल्लाह को उत्तम ऋण दान करो । और अच्छी चीज़ों में से जो भी तुम स्वयं अपने लिए आगे भेजोगे तो वही है जिसे तुम अल्लाह के समक्ष उत्तम और प्रतिफल की दृष्टि से श्रेष्ठ पाओगे । अत: अल्लाह से क्षमा याचना करो । नि:सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।21। (रुकू $\frac{2}{14}$)

74- सूरः अल-मुद्दस्सिर

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 57 आयतें हैं ।

जिस प्रकार पिछली सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को **मुज़्ज़म्मिल** कहा गया है । जैसे अपने आप को दृढ़ता पूर्वक एक कम्बल में लपेट लिया हो । इस सूरः में भी यही विषयवस्तु है और इस बात को स्पष्ट किया गया है कि वह कौन से कपड़े हैं जिन को नबी दृढ़ता पूर्वक अपने साथ लगा लेता है और जिनको स्वच्छ करता रहता है । यहाँ पर साधारण वस्त्र अभिप्राय नहीं है बल्कि सहाबा रज़ि. का उल्लेख है कि वे सहाबा रज़ि. जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समीप रहते थे आप सल्ल. की पवित्रकारी संगति से निरंतर पवित्र किए जाते हैं । और वे अपवित्रता को छोड़ते चले जाते हैं हालाँकि इससे पूर्व उनमें बहुत से ऐसे थे कि उनके लिए अपवित्रता से बचना संभव न था । इसके अतिरिक्त अपवित्रता से अभिप्राय मक्का के मुश्रिक भी हो सकते हैं और उनसे पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद करने का आदेश दिया गया है ।

इस सूरः में ऐसे उन्नीस कठोर फ़रिश्तों का वर्णन है जो अपराधियों को दंड देने में कोई नरमी नहीं दिखाएँगे । यहाँ उन्नीस का अंक कुछ ऐसी मनुष्य शक्तियों की ओर संकेत कर रहा है जिनके अनुचित प्रयोग के परिणाम स्वरूप उन के लिए नरक अनिवार्य हो सकता है । सिर से पाँव तक अल्लाह तआला ने जो अंग मनुष्य को प्रदान किए हैं, जिनसे यदि यथोचित ढंग से काम लिया जाए तो मनुष्य पापों और भूल-चूक से बच सकता है । इन अंगों की संख्या लगभग उन्नीस है । परन्तु जो भी संख्या हो, यह सूरः इस बात पर प्रकाश डाल रही है कि अल्लाह तआला की सेना असंख्य हैं और उन्नीस के अंक पर ठहर कर यह न समझना कि केवल उन्नीस फ़रिश्ते ही हैं । अल्लाह तआला के अज़ाब पर तैनात फ़रिश्ते भी असंख्य हैं जो परिस्थिति के अनुकूल मनुष्य को दंड देने के लिए नियुक्त किए जाते हैं ।

इसी सूरः में एक चन्द्रमा की भविष्यवाणी की गई है जो सूर्य के पश्चात उसका अनुगमन करते हुए प्रकट होगा । यह भी बहुत अर्थपूर्ण बात है । यही विषयवस्तु सूरः अश-शम्स में भी वर्णित है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَّ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ۝٢

हे कपड़ा ओढ़ने वाले ! ।2।

قُمْ فَاَنْذِرْ ۪ۙ۝٣

उठ खड़ा हो और सतर्क कर ।3।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۪ۙ۝٤

और अपने रब्ब की ही बड़ाई वर्णन कर ।4।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۪ۙ۝٥

और जहाँ तक तेरे कपड़ों (अर्थात निकटतम साथियों) का सम्बन्ध है, तू (उन्हें) बहुत पवित्र कर ।5।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۪ۙ۝٦

और जहाँ तक अपवित्रता का सम्बंध है तो उससे पूर्ण रूप से अलग रह ।6।

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۪ۙ۝٧

और अधिक पाने के उद्देश्य से परोपकार न किया कर ।7।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۭ۝٨

और अपने रब्ब ही के लिए धैर्य धर ।8।

فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۙ۝٩

अत: जब शंख फूंका जाएगा ।9।

فَذٰلِكَ يَوْمَىِٕذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۙ۝١٠

तो वही वह दिन होगा जो बहुत कठोर दिन होगा ।10।

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝١١

काफ़िरों के लिए दयाहीन ।11।

ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۙ۝١٢

मुझे और उसको जिसे मैं ने पैदा किया, अकेला छोड़ दे ।12।

وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ۝١٣

और मैंने उसके लिए प्रचुर मात्रा में धन बनाया था ।13।

وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ۝١٤

और दृष्टि के समक्ष रहने वाले पुत्र-पुत्रियाँ ।14।

وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ﴿١٥﴾ۙ

और मैंने उसके लिए (धरती को) सर्वोत्तम पालन-पोषण का पालना बनाया ।15।

ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ﴿١٦﴾ۙ

फिर भी वह लालच करता है कि मैं और अधिक बढ़ाऊँ ।16।

كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿١٧﴾ؕ

कदापि नहीं ! नि:सन्देह वह तो हमारे चिह्नों का शत्रु था ।17।

سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ﴿١٨﴾ؕ

मैं अवश्य उस पर एक बढ़ती चली जाने वाली विपत्ति चढ़ा लाऊँगा ।18।

اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٩﴾ۙ

निश्चित रूप से उसने भली प्रकार विचार किया और एक अनुमान लगाया ।19।

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ۙ

अत: सर्वनाश हो उसका, उसने कैसा अनुमान लगाया ।20।

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢١﴾ۙ

उस का फिर सर्वनाश हो, उसने कैसा अनुमान लगाया ।21।

ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢٢﴾ۙ

फिर उसने नज़र दौड़ाई ।22।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٣﴾ۙ

फिर त्योरी चढ़ाई और माथे पर बल डाल लिए ।23।

ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٤﴾ۙ

फिर पीठ फेर ली और अहंकार किया ।24।

فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﴿٢٥﴾ۙ

तब कहा, यह तो केवल एक जादू है जिसे अपनाया जा रहा है ।25।

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٦﴾ؕ

यह एक मनुष्य के कथन के अतिरिक्त कुछ नहीं ।26।

سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿٢٧﴾

मैं अवश्य ही उसे **सक़र** में डाल दूँगा।27।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٨﴾ؕ

और तुझे क्या पता कि **सक़र** क्या है? ।28।

لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٩﴾ۚ

न वह कुछ शेष रहने देती है, न (पीछा) छोड़ती है ।29।

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۚ ٣٠

चेहरे को झुलसा देने वाली है ।30।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۗ ٣١

उस पर उन्नीस (निरीक्षक) हैं ।31।

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۗ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ۗ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۚ ٣٢

और हमने फ़रिश्तों के अतिरिक्त किसी को नरक के दारोग़े नहीं बनाया । और हमने उनकी संख्या केवल उन लोगों की परीक्षा के लिए निश्चित की जिन्होंने इनकार किया । ताकि वे लोग जिन्हें पुस्तक दी गई वे विश्वास कर लें । और वे लोग जो ईमान लाए हैं ईमान में बढ़ जाएँ । और जिनको पुस्तक दी गई, वे और मोमिन किसी शंका में न रहें । और जिनके मन में रोग है वे और काफ़िर कहें कि अन्ततः इस उदाहरण से अल्लाह का क्या उद्देश्य है ? इसी प्रकार अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है उसे हिदायत देता है । और तेरे रब्ब की सेनाओं को उसके सिवा कोई नहीं जानता । और यह मनुष्य के लिए एक बड़े उपदेश के अतिरिक्त और कुछ नहीं ।32। (रुकू $\frac{1}{15}$)

كَلَّا وَالْقَمَرِ ۙ ٣٣

सावधान ! क़सम है चन्द्रमा की ।33।

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۙ ٣٤

और रात्रि की, जब वह पीठ फेर चुकी हो ।34।

وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۙ ٣٥

और प्रभात की, जब वह उज्ज्वलित हो जाए ।35।

اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۙ ٣٦

कि निश्चित रूप से वह बड़ी बातों में से एक है ।36।

نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۙ ٣٧

मनुष्य को डराने वाली ।37।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ؕ ﴿٣٨﴾

ताकि तुम में से जो चाहे आगे बढ़े और जो चाहे पीछे रह जाए ।38।

كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۙ ﴿٣٩﴾

प्रत्येक जान जो कमाई करती है उसी की गिरवी होती है ।39।

اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ؕ ﴿٤٠﴾

सिवाए दाहिनी ओर वालों के ।40।

فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ۙ ﴿٤١﴾

معانقة عند المتقدمين

जो स्वर्गों में होंगे । एक दूसरे से पूछ रहे होंगे ।41।

عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۙ ﴿٤٢﴾

अपराधियों के बारे में ।42।

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٣﴾

तुम्हें किस चीज़ ने नरक में प्रविष्ट किया ? ।43।

قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۙ ﴿٤٤﴾

वे कहेंगे, हम नमाज़ियों में से नहीं थे ।44।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۙ ﴿٤٥﴾

और हम दरिद्रों को भोजन नहीं कराते थे ।45।

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۙ ﴿٤٦﴾

और हम व्यर्थ बातों में लगे रहने वालों के साथ लगे रहा करते थे ।46।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ ﴿٤٧﴾

और हम प्रतिफल दिवस का इनकार किया करते थे ।47।

حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ؕ ﴿٤٨﴾

यहाँ तक कि मृत्यु हमारे निकट आ गई ।48।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ؕ ﴿٤٩﴾

अत: उनको सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कोई लाभ नहीं देगी ।49।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۙ ﴿٥٠﴾

अत: उन्हें क्या हुआ था कि वे शिक्षाप्रद बातों से पीठ फेर लिया करते थे ।50।

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۙ ﴿٥١﴾

मानो वे बिदके हुए गधे हों ।51।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ؕ ﴿٥٢﴾

बब्बर शेर से (डर कर) दौड़ रहे हों ।52।

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى

बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता था कि (अपनी विचार-धारा के प्रचार-प्रसार के लिए) सर्वाधिक

صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٣﴾

प्रसारित होने वाले ग्रन्थ उसे दिए जाते ।53।*

كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٤﴾

कदापि नहीं ! बल्कि वे परलोक से नहीं डरते ।54।

كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٥﴾

सावधान ! नि:सन्देह यह एक बड़ा उपदेश है ।55।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٦﴾

अत: जो चाहे उसे याद रखे ।56।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٧﴾ ع

और अल्लाह की इच्छा के बिना वे उपदेश ग्रहण नहीं करेंगे । वही तक़वा का अधिकारी और क्षमादान का भी अधिकारी है ।57। (रुकू $\frac{2}{16}$)

---

* इस विषयवस्तु का सम्बन्ध आयत **जब ग्रन्थ प्रसारित किये जाएँगे** (सूर: अत तक्वीर :11) से है।

75- सूर: अल-क़ियाम:

यह सूर: मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 41 आयतें हैं ।

पिछली सूर: में नरकगामियों की स्वीकारोक्ति है कि उनको नरक का दंड इस कारण मिला कि वे परलोक का इनकार किया करते थे । परलोक के इनकार के कारण ही असंख्य अपराध जन्म लेते हैं और सारा संसार पाप से भर जाता है । अत: इस सूर: के आरम्भ में क़यामत के दिन को ही साक्षी ठहराया गया है और उस जान को भी जो बार-बार अपने आपको धिक्कारती है । यदि मनुष्य इस धिक्कार से लाभ उठा ले तो हज़ारों प्रकार के पापों से बच सकता है ।

क़यामत के इनकार का कारण यह बताया गया कि वे यह समझते थे कि जब उनके सारे अंग प्रत्यंग सड़-गल कर बिखर जाएँगे तो अल्लाह तआला किस प्रकार उनको इकट्ठा करेगा । यह केवल उनकी नासमझी थी क्योंकि क़ुरआन करीम स्पष्ट रूप से यह बात कई बार पेश कर चुका है कि तुम्हारे भौतिक शरीर के अंग इकट्ठे नहीं किए जाएँगे बल्कि आध्यात्मिक शरीर के अंग-प्रत्यंग इकट्ठे किए जाएँगे । परन्तु शत्रु अपने इस हठ धर्मिता पर अटल रहा ताकि अपने समय के रसूल से उपहास कर सके और परकाल के इनकार का तर्कसंगत कारण अपनी धारणानुसार प्रस्तुत कर सके ।

आयत संख्या 8, 9, 10 में जिन बातों का उल्लेख है, उन्हें क़यामत पर लागू करना उचित नहीं । ये बातें क़यामत की निकटता के चिह्न हैं न कि क़यामत की घटनाएँ हैं । क्योंकि क़यामत के दिन तो यह ब्रह्माण्ड व्यवस्था पूर्णतया नाश हो जाएगी । न यह सूर्य होगा, न यह चन्द्रमा, न इनके परिक्रमण की व्यवस्था, न उनका ग्रहण, न उसे कोई देखने वाला होगा ।

आयत **जब आँखें पथरा जाएँगी** से यह अभिप्राय है कि उन दिनों संसार पर भयानक अज़ाब आएँगे । आगे की आयत में जो यह कहा कि उस समय झुठलाने वाले के लिए भागने का स्थान नहीं रहेगा तो इससे स्पष्ट होता है कि सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के चिह्न अल्लाह के एक प्रतिश्रुत पुरुष की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए प्रकट होंगे ताकि इनकार करने वालों पर बात पूरी हो जाए ।

सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण कब इकट्ठे होगा ? इसका विवरण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार यह है कि रमज़ान नामक एक ही महीना की निश्चित तिथियों में सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण होगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार यह घटना उनके महदी के सच्चा होने का चिह्न है ।

अत: यह घटना घट चुकी है । इसी विषयवस्तु पर आधारित एक भविष्यवाणी हज़रत ईसा मसीह अलै. ने भी की थी ।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक और चमत्कार का वर्णन है । इतनी बड़ी पुस्तक क़ुरआन करीम तेईस वर्षों में उतरी और उतरने के समय आप सल्ल. इस चिंता में कि मैं इसे भूल न जाऊँ, अपनी जिह्वा को तेज़ी से हिला कर उसे याद रखने का प्रयास करते थे । परन्तु अल्लाह तआला ने आपको विश्वास दिलाया कि हम ने ही यह क़ुरआन उतारा है और हम ही इसे इकट्ठा करने की शक्ति रखते हैं । अत: एक निरक्षर व्यक्ति पर तेईस वर्षों में उतरने वाला क़ुरआन सुरक्षापूर्वक इकट्ठा किया गया । हज़रत मसीह मौऊद अलै. इस बात को एक महान चमत्कार ठहराते हैं कि इस तेईस वर्ष के समय में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर शत्रुओं ने प्रत्येक प्रकार के आक्रमण किए और उनकी हत्या करने का प्रयत्न किया । यदि क़ुरआन के कुछ भाग उतरने के पश्चात ही नऊज़ुबिल्लाह (इस बात से हम अल्लाह की शरण चाहते हैं) आप सल्ल. को समाप्त करने में शत्रु सफल हो जाता तो क़ुरआन का एक सम्पूर्ण ग्रन्थ होने का दावा, मिथ्या और पूर्णतया अर्थहीन हो जाता ।

इस सूर: के अंत पर मनुष्य जन्म के विभिन्न चरणों का वर्णन करने के पश्चात कहा गया है कि वह निरंतर विकासशील है । अत: कैसे संभव है कि वह अन्ततोगत्वा अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित न हो और उसे अपने कर्मों का उत्तरदायी न ठहराया जाए ।

☆☆☆

سُوْرَةُالْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝١	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
لَاۤ اُقۡسِمُ بِيَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ ۝٢	सावधान ! मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूँ ।2।
وَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالنَّفۡسِ اللَّوَّامَةِ ۝٣	और सावधान ! मैं खूब धिक्कारने वाली आत्मा की भी क़सम खाता हूँ ।3।
اَيَحۡسَبُ الۡاِنۡسَانُ اَلَّنۡ نَّجۡمَعَ عِظَامَهٗ ۝٤	या मनुष्य (यह) विचार करता है कि हम कदापि उसकी हड्डियाँ इकट्ठा नहीं करेंगे ? ।4।
بَلٰى قٰدِرِيۡنَ عَلٰۤى اَنۡ نُّسَوِّىَ بَنَانَهٗ ۝٥	क्यों नहीं ! हम इस बात पर खूब समर्थ हैं कि उसकी पोर-पोर (तक) को ठीक कर दें ।5।
بَلۡ يُرِيۡدُ الۡاِنۡسَانُ لِيَفۡجُرَ اَمَامَهٗ ۝٦	वास्तविकता यह है कि मनुष्य यह चाहता है कि वह उसके सामने पाप करता रहे ।6।
يَسۡـَٔلُ اَيَّانَ يَوۡمُ الۡقِيٰمَةِ ۝٧	वह पूछता है कि क़यामत का दिन कब होगा ? ।7।
فَاِذَا بَرِقَ الۡبَصَرُ ۝٨	तू (उत्तर दे कि) जब नज़र चौंधिया जाएगी ।8।
وَخَسَفَ الۡقَمَرُ ۝٩	और चन्द्रमा को ग्रहण लगेगा ।9।
وَجُمِعَ الشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ ۝١٠	और सूर्य और चन्द्रमा इकट्ठे किए जाएँगे ।10।
يَقُوۡلُ الۡاِنۡسَانُ يَوۡمَئِذٍ اَيۡنَ الۡمَفَرُّ ۝١١	उस दिन मनुष्य कहेगा, भागने का रास्ता कहाँ है ? ।11।
كَلَّا لَا وَزَرَ ۝١٢	सावधान ! कोई आश्रयस्थल नहीं।12।

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ ﴿۱۳﴾

तेरे रब्ब ही के निकट उस दिन आश्रयस्थल है ।13।

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ﴿۱۴﴾

उस दिन मनुष्य को सूचित किया जाएगा कि उसने क्या आगे भेजा था और क्या पीछे छोड़ा ।14।

بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ﴿۱۵﴾

वास्तविकता यह है कि मनुष्य अपनी जान पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।15।

وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ﴿۱۶﴾

चाहे वह अपने बड़े-बड़े बहाने पेश करे ।16।

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿۱۷﴾

तू इस (कुरआन) के पढ़ने के समय अपनी जिह्वा को इस कारण तीव्रता पूर्वक न हिला कि तू इसे शीघ्र-शीघ्र याद करे ।17।

اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿۱۸﴾

निश्चित रूप से इसका इकट्ठा करना और इसका पाठ किया जाना हमारी ज़िम्मेदारी है ।18।

فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ﴿۱۹﴾

अत: जब हम उसे पढ़ लें तो तू उसके पाठ का अनुसरण कर ।19।

ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿۲۰﴾

फिर नि:सन्देह उसको स्पष्ट रूप से वर्णन करना भी हमारे ही ज़िम्मा है।20।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ﴿۲۱﴾

सावधान ! बल्कि तुम संसार को पसन्द करते हो ।21।*

وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿۲۲﴾

और परलोक का अनदेखा कर देते हो ।22।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿۲۳﴾

उस दिन कुछ चेहरे तरो-ताज़ा होंगे।23।

اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿۲۴﴾

अपने रब्ब की ओर दृष्टि लगाए हुए।24।

---

* अरबी शब्द **अल आजिल:** का अर्थ संसार है । (शब्दकोश अल मुन्जिद)

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍۭ بَاسِرَةٌ ۙ﴿۲۵﴾

जबकि कुछ चेहरे बहुत मलिन होंगे।25।

تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ؕ﴿۲۶﴾

वे विश्वास कर लेंगे कि उनसे कमरतोड़ व्यवहार किया जाएगा ।26।

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ﴿۲۷﴾

सावधान ! जब जान हंसलियों तक पहुँच चुकी होगी ।27।

وَقِيْلَ مَنْ ٚ رَاقٍ ۙ﴿۲۸﴾

और कहा जाएगा, कौन है झाड़-फूँक करने वाला ? ।28।

وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ﴿۲۹﴾

और वह अनुमान लगा लेगा कि अब जुदाई (का समय) है ।29।

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ﴿۳۰﴾

और पिंडली पिंडली से रगड़ खा रही होगी ।30।

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ الْمَسَاقُ ؕ﴿۳۱﴾ ع ۳۱ ۱۷

उस दिन तेरे रब्ब ही की ओर हंकाया जाना है ।31। (रुकू $\frac{1}{17}$)

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ﴿۳۲﴾

अतः उसने न पुष्टि की और न नमाज़ पढ़ी ।32।

وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۙ﴿۳۳﴾

बल्कि झुठलाया और मुँह फेर लिया।33।

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ؕ﴿۳۴﴾

फिर अपने घर वालों की ओर अकड़ता हुआ गया ।34।

اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۙ﴿۳۵﴾

तेरा सर्वनाश हो । फिर सर्वनाश हो।35।

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ؕ﴿۳۶﴾

फिर तेरा सर्वनाश हो । फिर सर्वनाश हो ।36।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ؕ﴿۳۷﴾

क्या मनुष्य यह विचार करता है कि उसे निरंकुश छोड़ दिया जाएगा ? ।37।

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۙ﴿۳۸﴾

क्या वह केवल वीर्य की एक बूंद नहीं था जो डाला गया ? ।38।

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۙ﴿۳۹﴾

तब वह एक लोथड़ा बन गया । फिर उस (अल्लाह) ने उसका सृजन किया, फिर उसे संतुलित किया ।39।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۝٤٠

फिर उसमें से जोड़ा बनाया अर्थात पुरुष और स्त्री ।40।

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۝٤١

क्या वह इस बात पर समर्थ नहीं कि वह मुर्दों को जीवित कर सके ? ।41।

(रुकू $\frac{2}{18}$)

76– सूरः अद–दह्र

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 32 आयतें हैं ।

इस सूरः में मनुष्य को उसकी उत्पत्ति की ओर ध्यान दिलाते हुए वर्णन किया गया है कि उस पर एक ऐसा भी समय आया है जब वह कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं था । हालाँकि मनुष्य जबसे अस्तित्व में आया है समग्र सृष्टि में वही सबसे अधिक उल्लेखनीय वस्तु था । यहाँ मनुष्य की आरम्भिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है कि मनुष्य ऐसे आरम्भिक, विकासोन्मुख दौर में से गुज़रा है जब वह किसी प्रकार उल्लेखनीय वस्तु नहीं था । यह वह समय जान पड़ता है जब पक्षियों को भी बोलने की क्षमता प्रदान नहीं की गई थी और धरती पर एक भारी सन्नाटा छाया हुआ था । इस दौर से गुज़ार कर मनुष्य को पैदा किया गया और फिर उसे सुनने और देखने वाला बना दिया गया । अतः जिस अल्लाह ने मिट्टी को सुनने और देखने की शक्ति प्रदान की वह इस बात पर भी समर्थ है कि उसे दोबारा पैदा कर दे और उसके सुनने और देखने की शक्ति का हिसाब लिया जाए ।

इसके बाद स्वर्गगामियों के विशेष गुणों का विवरण मिलता है कि वे किसी पर इस कारण उपकार नहीं करते कि उसके बदले उनके धन-सम्पत्ति बढ़ जाएँ । जब भी वे किसी से सद्-व्यवहार करते हैं तो यह कहते हैं कि हम तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ऐसा कर रहे हैं । इसके बदले में हम तुमसे किसी प्रतिफल अथवा धन्यवाद पाने की कदापि अभिलाषा नहीं रखते ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَانِ وَ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ②

क्या मनुष्य पर काल भर में से कोई ऐसा क्षण भी आया था जब कि वह कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं था ? ।2।

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ③

नि:सन्देह हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया जिसे हम विभिन्न प्रकार की आकृतियों में ढालते हैं । फिर उसे हमने सुनने (और) देखने वाला बना दिया ।3।

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا كَفُوْرًا ④

नि:सन्देह हमने उसे सीधे रास्ते की ओर निर्देशित किया । चाहे (वह) कृतज्ञ बनते हुए चाहे कृतघ्न बनते हुए (उस पर चले) ।4।

اِنَّا اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاْ وَ اَغْلٰلًا وَّ سَعِيْرًا ⑤

नि:सन्देह हमने काफ़िरों के लिए भाँति-भाँति की ज़ंजीरें और तौक़ और एक धधकती हुई अग्नि तैयार किए हैं ।5।

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۚ ⑥

नि:सन्देह नेक लोग एक ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें कर्पूर का गुण होगा।6।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ⑦

एक ऐसा स्रोत, जिससे अल्लाह के भक्त पिएँगे । जिसे वे फाड़-फाड़ कर विस्तृत करते चले जाएँगे ।7।

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَ يَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ⑧

वे (अपनी) मन्नत पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसका अनिष्ट फैल जाने वाला है ।8।

وَيُطۡعِمُوۡنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسۡكِيۡنًا وَّيَتِيۡمًا وَّاَسِيۡرًا ﴿۹﴾

और वे भोजन को, उसकी चाहत के होते हुए भी दरिद्रों और अनाथों और बन्दियों को खिलाते हैं ।9।

اِنَّمَا نُطۡعِمُكُمۡ لِوَجۡهِ اللّٰهِ لَا نُرِيۡدُ مِنۡكُمۡ جَزَآءً وَّلَا شُكُوۡرًا ﴿۱۰﴾

(और उनसे कहते हैं कि) हम तुम्हें केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए भोजन करा रहे हैं । हम कदापि तुमसे न कोई बदला और न कोई धन्यवाद चाहते हैं ।10।

اِنَّا نَخَافُ مِنۡ رَّبِّنَا يَوۡمًا عَبُوۡسًا قَمۡطَرِيۡرًا ﴿۱۱﴾

नि:सन्देह हम अपने रब्ब की ओर से (आने वाले) एक त्योरी चढ़ाए हुए, अत्यन्त कठिन दिन का भय रखते हैं ।11।

فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الۡيَوۡمِ وَلَقّٰهُمۡ نَضۡرَةً وَّسُرُوۡرًا ﴿۱۲﴾

अत: अल्लाह ने उन्हें उस दिन के अनिष्ट से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और आनन्द प्रदान किए ।12।

وَجَزٰىهُمۡ بِمَا صَبَرُوۡا جَنَّةً وَّحَرِيۡرًا ﴿۱۳﴾

और उसने उनको उनके धैर्य धारण के कारण एक स्वर्ग और एक प्रकार का रेशम प्रतिफल स्वरूप दिया ।13।

مُّتَّكِـِٕيۡنَ فِيۡهَا عَلَى الۡاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوۡنَ فِيۡهَا شَمۡسًا وَّلَا زَمۡهَرِيۡرًا ﴿۱۴﴾

वे उसमें पलंगों पर तकिया लगाए बैठे होंगे । न तो वे उसमें कड़ी धूप देखेंगे और न कड़ाके की सर्दी ।14।

وَدَانِيَةً عَلَيۡهِمۡ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتۡ قُطُوۡفُهَا تَذۡلِيۡلًا ﴿۱۵﴾

और उसकी छाहें उन पर झुकी हुई होंगी और उसके फल पूरी तरह झुका दिए जाएँगे ।15।

وَيُطَافُ عَلَيۡهِمۡ بِاٰنِيَةٍ مِّنۡ فِضَّةٍ وَّاَكۡوَابٍ كَانَتۡ قَوَارِيۡرَا۠ ﴿۱۶﴾

और उन के मध्य चाँदी के बर्तनों और ऐसे कटोरों का दौर चलाया जाएगा जो शीशे के होंगे ।16।

قَوَارِيۡرَا۠ مِنۡ فِضَّةٍ قَدَّرُوۡهَا تَقۡدِيۡرًا ﴿۱۷﴾

قرء حفص بغير الالف فى الوصل فيهما ووقف على الاول بالالف وعلى الثانى بغير الالف

ऐसे शीशे जो चाँदी से बने होंगे, उन्होंने उनको बड़ी कुशलतापूर्वक गढ़ा होगा ।17।

وَيُسۡقَوۡنَ فِيۡهَا كَاۡسًا كَانَ مِزَاجُهَا

और वे उसमें एक ऐसे प्याले से पिलाए जाएँगे जिसमें सोंठ का मिश्रण

زَنْجَبِيلًا ۝١٨

होगा ।18।

عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ۝١٩

उसमें एक ऐसा अद्‌भुत स्रोत होगा जो **सल्सबील** कहलाएगा ।19।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۚ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ۝٢٠

और उन (की सेवा) में अमरत्व को प्राप्त किये हुए बच्चे घूमेंगे । जब तू उन्हें देखेगा तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझेगा ।20।

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَّمُلْكًا كَبِيرًا ۝٢١

और जब तू नज़र दौड़ाएगा तो वहाँ एक बड़ी नेमत और एक बहुत बड़ा राज्य देखेगा ।21।

عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَّإِسْتَبْرَقٌ ۖ وَّحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ ۚ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۝٢٢

उन पर बारीक रेशम के और मोटे रेशम के हरे वस्त्र होंगे । और वे चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उन्हें उनका रब्ब पवित्र पेय पिलाएगा ।22।

إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَّكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ۝٢٣ ع

नि:सन्देह यह तुम्हारे लिए बदले के रूप में होगा । और तुम्हारे प्रयासों का सम्मान किया जाएगा ।23। (रुकू $\frac{1}{19}$)

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنزِيلًا ۝٢٤

नि:सन्देह हमने ही तुझ पर क़ुरआन को एक शानदार क्रम के साथ उतारा है ।24।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ۝٢٥

अत: अपने रब्ब के आदेश (का पालन करने) के लिए दृढ़ता पूर्वक डटे रह । और इनमें से किसी पापी और बड़े कृतघ्न का अनुसरण न कर ।25।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّأَصِيلًا ۝٢٦

और सुबह शाम अपने रब्ब के नाम का स्मरण कर ।26।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝٢٧

और रात्रि के एक भाग में उसके समक्ष सजद: में पड़ा रह और सारी-सारी रात उसका गुणगान करता रह ।27।

إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝٢٨

नि:सन्देह ये लोग संसार से प्रेम करते हैं। और अपने पीछे एक भारी दिन की अनदेखी कर रहे हैं ।28।

نَحْنُ خَلَقْنَٰهُمْ وَشَدَدْنَآ أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ أَمْثَٰلَهُمْ تَبْدِيلًا ۝٢٩

हमने ही उनको पैदा किया है और उनके जोड़बंद सशक्त बनाए हैं । और जब हम चाहेंगे उनकी आकृतियों को एकदम परिवर्तित कर देंगे ।29।

إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ۝٣٠

नि:सन्देह यह एक बड़ा शिक्षाप्रद उपदेश है । अत: जो चाहे अपने रब्ब की ओर (जाने वाला) मार्ग अपना ले ।30।

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝٣١

और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते (कि हो जाए) सिवाए इसके कि (वही) अल्लाह चाहे । नि:सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।31।

يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِى رَحْمَتِهِۦ ۚ وَالظَّٰلِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝٣٢ ع

वह जिसे चाहता है अपनी कृपा में प्रविष्ट करता है । और जहाँ तक अत्याचारियों का संबंध है, उनके लिए उसने पीड़ादायक अज़ाब तैयार कर रखा है ।32। (रुकू $\frac{2}{20}$)

77– सूरः अल–मुर्सलात

यह सूरः मक्का में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 51 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में ही फिर से भविष्य की वह घटनाएँ जो अंत्ययुगीनों के दौर से सम्बंध रखती हैं, वर्णन की गई हैं और उस युग की वैज्ञानिक प्रगतियों को गवाह ठहराया गया है, कि जिस अल्लाह ने इन अदृश्य विषयों की ख़बर दी है वह हर प्रकार की क्रांति पैदा करने का सामर्थ्य रखता है । इस प्रसंग में कुछ ऐसे उड़ने वालों का वर्णन है जो आरम्भ में धीरे-धीरे उड़ते हैं और फिर तूफ़ानी रफ़तार पकड़ लेते हैं । इस समय के तेज़ रफ़तार वायुयानों की भी यही अवस्था है कि पहले धीरे-धीरे उड़ना शुरू करते हैं और फिर उनकी गति में बहुत तेज़ी आ जाती है । और इन वायुयानों के द्वारा शत्रुओं से युद्ध करते हुए उन पर परचे फेंके जाते हैं और यह स्पष्ट किया जाता है कि यदि तुम हमारे साथ हो जाओ तो हम तुम्हारे सहायक होंगे अन्यथा हमारी पकड़ से तुम्हें कोई बचा नहीं सकेगा ।

फिर फ़र्माया, फिर जब आकाश के सितारे मलिन पड़ जाएँगे और जब आसमान पर चढ़ने के लिए मनुष्य विभिन्न उपाय अपनायेगा यहाँ सितारे मलिन पड़ने से यह अभिप्राय प्रतीत होता है कि जब सहाबा रज़ि. का युग बीत चुका होगा और वह प्रकाश जो इन सितारों से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत प्राप्त किया करती थी वह भी माँद पड़ चुका होगा ।

फिर फर्माया, जब बड़े-बड़े पर्वतों के समान शक्तियाँ जड़ों से उखेड़ दी जाएँगी और सभी रसूल भेजे जाएँगे । इस आयत के सम्बन्ध में विद्वान यह भ्रांति उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं कि यह क़यामत का दृश्य है । परन्तु क़यामत में तो कोई पर्वत उखेड़े नहीं जाएँगे और रसूल तो इस संसार में भेजे जाते हैं, क़यामत के दिन तो नहीं भेजे जाएँगे। अत: यहाँ निश्चित रूप से यही अभिप्राय है कि क़ुरआन करीम की भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दासता को पूर्ण रूपेण अपना कर और आप सल्ल. का आज्ञापालन करते हुए एक ऐसा नबी आएगा जिसका आना अतीत के सब रसूलों का आना होगा । अर्थात उसके प्रयासों से पिछली सभी रसूलों की उम्मत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में विलीन हो जाएगी ।

भविष्य में होने वाले जिन युद्धों का इस सूरः में वर्णन किया गया है उनका एक चिह्न यह है कि वे तीन प्रकार से होंगे । अर्थात ज़मीनी, समुद्री और हवाई । उस समय आकाश से ऐसी लपटें बरसेंगी जो दुर्गों की भाँति होंगी, मानो वे गेरुए रंग के ऊँट हैं । इन दोनों आयतों ने निश्चित रूप से प्रमाणित कर दिया कि ये बातें उपमा के रूप में कही जा

रही हैं । क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में किसी ऐसे युद्ध की कल्पना तक नहीं थी जिसमें आकाश से आग की लपटें बरसें । इस लिए अवश्य यह उस सर्वज्ञ और सर्व-अवगत सत्ता की ओर से एक भविष्यवाणी है जो भविष्य की परिस्थितियों को भी जानता है ।

क़यामत के दिन तो आकाश से आग की लपटें नहीं बरसाई जाएँगी । इस लिए यह धारणा भी भूल सिद्ध हुई कि यह क़यामत के दिन की ख़बर है । यहाँ एक आणविक युद्ध की भविष्यवाणी जान पड़ती है जिसका वर्णन सूर: अद-दुख़ान में भी मिलता है कि उस दिन आकाश उन पर ऐसी रेडियो तरंगों का विकिरण करेगा कि उसकी छाया तले वे हर प्रकार की शांति को खो बैठेंगे ।

इसके पश्चात फिर परकालीन जीवन की ओर संकेत किया गया है कि जब इन क़ुरआनी भविष्यवाणियों के अनुसार संसार में ये चिह्न प्रकट हो जाएँ तो इस बात पर भी विश्वास करो कि एक परकालीन जीवन भी है । यदि तुम इस लोक में अल्लाह तआला का आज्ञापालन नहीं करोगे तो उस लोक में दंड निश्चित है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُرْسَلَاتِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ②	क़सम है लगातार भेजी जाने वालियों की ।2।
فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ③	फिर बहुत तेज़ रफ़तार हो जाने वालियों की ।3।
وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ④	और (संदेश को) भली-भाँति प्रसारित करने वालियों की ।4।
فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ⑤	फिर स्पष्ट अंतर करने वालियों की ।5।
فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ⑥	फिर चेतावनी देते हुए (परचे) फेंकने वालियों की ।6।
عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ⑦	प्रमाण अथवा चेतावनी स्वरूप ।7।
اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ⑧	नि:सन्देह जिससे तुम सचेत कराए जा रहे हो (वह) अवश्य हो कर रहने वाला है ।8।
فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ⑨	अत: जब नक्षत्र मलिन हो जाएँगे ।9।
وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ⑩	और जब आकाश में (भांति-भांति के) छेद कर दिए जाएँगे ।10।
وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ⑪	और जब पर्वत जड़ों से उखेड़ दिए जाएँगे ।11।
وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ⑫	और जब रसूल निश्चित समय पर लाए जाएँगे ।12।
لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ⑬	किस दिन के लिए उनका समय निर्धारित था ? ।13।

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾	एक निर्णायक दिन के लिए ।14।
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٥﴾	और तुझे क्या पता कि निर्णायक दिन क्या है ? ।15।
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٦﴾	उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।16।
اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٧﴾	क्या हमने पहलों को विनष्ट नहीं किया ? ।17।
ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٨﴾	फिर बाद में आने वालों को हम उनके पीछे लाते हैं ।18।
كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٩﴾	इसी प्रकार हम अपराधियों से बर्ताव किया करते हैं ।19।
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٠﴾	उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।20।
اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢١﴾	क्या हमने तुम्हें एक तुच्छ पानी से पैदा नहीं किया ? ।21।
فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢٢﴾	फिर हमने उसे एक टिके रहने के सुरक्षित स्थान पर नहीं रखा ? ।22।
اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٣﴾	एक निर्धारित अवधि तक ।23।
فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٤﴾	फिर हमने (उसका) सृजन किया । अत: हम क्या ही उत्तम सृजनहार हैं ।24।
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾	उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।25।
اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٦﴾	क्या हमने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया ? ।26।
اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿٢٧﴾	जीवितों को भी और मृतकों को भी।27।
وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٨﴾	और हमने उसमें ऊँचे-ऊँचे पर्वत बनाए। और तुम्हें मीठे पानी से भली प्रकार तृप्त किया ।28।

وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ۝٢٩

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।29।

اِنۡطَلِقُوۡۤا اِلٰى مَا كُنۡتُمۡ بِهٖ تُكَذِّبُوۡنَ ۚ ۝٣٠

(उन से कहा जाएगा) उसकी ओर चलो जिसे तुम झुठलाया करते थे ।30।

اِنۡطَلِقُوۡۤا اِلٰى ظِلٍّ ذِىۡ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۙ ۝٣١

ऐसी छाया की ओर चलो जो तीन शाखाओं युक्त है ।31।

لَّا ظَلِيۡلٍ وَّلَا يُغۡنِىۡ مِنَ اللَّهَبِ ؕ ۝٣٢

न (वह) संतुष्टि देती है न आग की लपटों से बचाती है ।32।

اِنَّهَا تَرۡمِىۡ بِشَرَرٍ كَالۡقَصۡرِ ۚ ۝٣٣

नि:सन्देह वह एक दुर्ग सदृश आग की लपट फेंकती है ।33।

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفۡرٌ ؕ ۝٣٤

मानो वह गेरुआ रंग के ऊँटों की भाँति है ।34।

وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ۝٣٥

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।35।

هٰذَا يَوۡمُ لَا يَنۡطِقُوۡنَ ۙ ۝٣٦

यह है वह दिन, जब वे मूक बन जाएँगे ।36।

وَلَا يُؤۡذَنُ لَهُمۡ فَيَعۡتَذِرُوۡنَ ۝٣٧

और उनको आज्ञा नहीं दी जाएगी कि वे अपने बहाने पेश करें ।37।

وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ۝٣٨

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।38।

هٰذَا يَوۡمُ الۡفَصۡلِ ۚ جَمَعۡنٰكُمۡ وَالۡاَوَّلِيۡنَ ۝٣٩

यह है निर्णय का दिन, जिस के लिए हमने तुम्हें और पूर्ववर्ती लोगों को भी इकट्ठा किया ।39।

فَاِنۡ كَانَ لَكُمۡ كَيۡدٌ فَكِيۡدُوۡنِ ۝٤٠

अत: यदि तुम्हारे पास कोई उपाय है तो मुझ पर परीक्षण कर के देखो ।40।

وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ۝٤١ ع

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।41। (रुकू $\frac{1}{21}$)

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ ظِلٰلٍ وَّعُيُوۡنٍ ۙ ۝٤٢

नि:सन्देह मुत्तक़ी छावों और स्रोतों (वाले स्वर्गों) में होंगे ।42।

وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشۡتَهُوۡنَ ؕ ۝٤٣

और ऐसे फलों में जिनकी वे चाह रखते हैं ।43।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٤﴾

(उनसे कहा जाएगा) जो तुम कर्म करते थे उसके फलस्वरूप मज़े से खाओ और पिओ ।44।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٥﴾

निःसन्देह हम इसी प्रकार भलाई करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।45।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٦﴾

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।46।

كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٧﴾

खाओ और कुछ देर थोड़ा लाभ उठा लो। निःसन्देह तुम अपराधी हो ।47।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٨﴾

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।48।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٩﴾

और जब उनसे यह कहा जाता था कि झुक जाओ तो वे झुकते नहीं थे ।49।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٥٠﴾

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।50।

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ ع

फिर इसके बाद वे और किस कथन पर ईमान लाएँगे ? ।51। (रुकू $\frac{2}{22}$)

78– सूरः अन–नबा

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में उतरी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 41 आयतें हैं।

इससे पूर्व सूरः अल्-मुर्सलात में काफ़िरों की ओर से एक मौलिक प्रश्न यह उठाया गया था कि **यौम–उल–फ़स्ल** (निर्णय का दिन) कब आएगा जो खरे-खोटे में प्रभेद कर देगा। सूरः अन-नबा में इसके उत्तर में यह महान सु-समाचार दिया जा रहा है कि वह **यौम–उल–फ़स्ल** आ चुका। प्रस्तुत सूरः में कहा गया है कि **यौम–उल–फ़स्ल** एक अटल और निश्चित वादा था जिसे निर्धारित समय पर अवश्य पूरा होना था।

फिर **यौम–उल–फ़स्ल** के विभिन्न रूप इस सूरः में वर्णित हुए हैं। सब से पहले तो अल्लाह तआला की उस व्यवस्था के वर्णन की पुनरावृत्ति की गयी है जो आकाश से पानी बरसाती और धरती से खाद्यान्न निकालती है। फिर ध्यान आकर्षित कराया गया है कि इससे मनुष्य लाभ नहीं उठाते और यह नहीं सोचते कि वास्तविक आसमानी पानी तो आध्यात्मिक हिदायत का पानी है। इस इनकार के परिणामस्वरूप उन पर जो विपत्तियाँ पड़ती हैं अथवा पड़ेंगी उनका इस सूरः में वर्णन मिलता है।

इस सूरः के अंत पर एक बहुत बड़ी चेतावनी दी गई है कि यदि मनुष्य ने इसी प्रकार बेपरवाही में जीवन व्यतीत कर दिया तो अंततोगत्वा वह बहुत कष्ट के साथ पछतावा करेगा कि काश ! मैं इससे पहले ही मिट्टी बन जाता और मिट्टी से मनुष्य के रूप में उठाया न जाता।

☆☆☆

سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ① अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ② वे किसके बारे में एक दूसरे से प्रश्न करते हैं ? ।2।

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ③ एक बहुत बड़े समाचार के बारे में ।3।

الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ④ (यह) वही (समाचार) है जिसके सम्बंध में वे परस्पर मतभेद कर रहे हैं ।4।

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ⑤ सावधान ! वे अवश्य जान लेंगे ।5।

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ⑥ फिर सावधान ! वे अवश्य जान लेंगे ।6।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ⑦ क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया ? ।7।

وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ⑧ और पर्वतों को गड़े हुए खूँटों की भाँति (नहीं बनाया) ? ।8।

وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ⑨ और हमने तुम्हें जोड़ा-जोड़ा पैदा किया ।9।

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ⑩ और तुम्हारी नींद को हमने आराम प्राप्ति का साधन बनाया ।10।

وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ⑪ और रात्रि को हमने एक परिधान बनाया ।11।

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ⑫ और दिन को हमने जीविकोपार्जन का एक साधन बनाया है ।12।

وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ⑬ और हमने तुम्हारे ऊपर सात सुदृढ़ आकाश बनाए ।13।*

* यहाँ 'आकाश' शब्द विषयवस्तु में सम्मिलित है, जो अधिक प्रचलन के कारण स्वत: हट गया है ।→

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٤﴾

और हमने एक तेज़ चमकता हुआ दीपक बनाया।14।

وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٥﴾

और हमने घने बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया।15।

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿١٦﴾

ताकि हम उसके द्वारा अनाज और वनस्पतियाँ उगाएँ।16।

وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٧﴾

और घने बाग़ (उगाएँ)।17।

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٨﴾

नि:सन्देह निर्णय का दिन एक निर्धारित समय है।18।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٩﴾

जिस दिन बिगुल फूँका जाएगा और तुम झुँड के झुँड आओगे।19।

وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿٢٠﴾

और आकाश खोल दिया जाएगा। अत: वह कई द्वारों युक्त हो जाएगा।20।

وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢١﴾

और पर्वत चलाए जाएँगे और वे ढलान की ओर गतिशील हो जाएँगे।21।*

اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢٢﴾

निश्चित रूप से नरक घात में है।22।

لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٣﴾

उद्दण्डियों के लिए लौट कर जाने का स्थान।23।

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٤﴾

वे उसमें शताब्दियों (तक) रहने वाले होंगे।24।

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٥﴾

न वे उसमें कोई शीतल पदार्थ और न कोई पेय चखेंगे।25।

اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٦﴾

सिवाय एक खौलते हुए पानी और घावों के दुर्गंध युक्त धोवन के।26।**

←इसलिए अनुवाद में यदि इसे लिख दिया जाए तो किसी प्रकार के कोष्ठक की आवश्यकता नहीं है।

* अरबी शब्द **अस सराब** का अर्थ है किसी वस्तु का ढलान की ओर जाना। (मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.)

** अरबी शब्द **अल ग़स्साक़** का अर्थ है नरक वासियों की चमड़ियों से जो पीब टपकती है। (मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.)

جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٧﴾

यह एक यथोचित प्रतिफल है ।27।

اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٨﴾

वे कदापि किसी प्रकार के हिसाब की आशा नहीं रखते थे ।28।

وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٩﴾

और उन्होंने हमारी आयतों को सख़्ती से झुठला दिया था ।29।

وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٣٠﴾

और हर चीज़ को हमने एक पुस्तक के रूप में सुरक्षित कर रखा है ।30।

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣١﴾ ع

तो चखो । अतः हम तुम्हें अज़ाब के सिवा कदापि किसी और चीज़ में नहीं बढ़ाएँगे ।31। (रुकू $\frac{1}{1}$)

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣٢﴾

निःसन्देह मुत्तक़ियों के लिए बहुत बड़ी सफलता (निश्चित) है ।32।

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٣﴾

बाग़ हैं और अंगूरों की बेलें ।33।*

وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٤﴾

और समवयस्का कुवाँरी कन्याएँ ।34।

وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٥﴾

और छलकते हुए प्याले ।35।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٦﴾

वे उसमें न कोई व्यर्थ (बात) सुनेंगे और न कोई मामूली सा झूठ ।36।

جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٧﴾

(उनके लिए) तेरे रब्ब की ओर से एक प्रतिफल, एक जचा-तुला पुरस्कार है ।37।

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٨﴾

आसमानों और धरती तथा उन दोनों के बीच स्थित प्रत्येक वस्तु के रब्ब की ओर से अर्थात् रहमान की ओर से (होगा) । वे उससे किसी बातचीत का अधिकार नहीं रखेंगे ।38।

---

* इस प्रकार का अर्थ मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि. में वर्णित **इनब** शब्द के अनुसार किया गया है ।

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٩﴾

जिस दिन रूह-उल-क़ुदुस और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर खड़े होंगे, वे बातचीत नहीं करेंगे सिवाये उसके जिसे रहमान आज्ञा देगा और वह सटीक बात कहेगा ।39।*

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٤٠﴾

वह दिन सत्य है । अतः जो चाहे अपने रब्ब की ओर लौटने का स्थान बनाए ।40।

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤١﴾ ع

नि:सन्देह हमने तुम्हें एक निकट आने वाले अज़ाब से सतर्क कर दिया है । जिस दिन मनुष्य उसे देख लेगा जो उसके दोनों हाथों ने आगे भेजा, और काफ़िर कहेगा, काश ! मैं मिट्टी बन चुका होता ।41। (रुकू $\frac{2}{2}$)

---

* क़यामत के दिन किसी को अल्लाह की अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश करने की आज्ञा नहीं होगी। अल्लाह तआला के भय से पूरी तरह सन्नाटा छाया होगा और जो भी कोई बात करेगा वह सही होगी। अल्लाह के समक्ष झूठ बोलने का किसी को साहस नहीं होगा ।

79– सूर: अन–नाज़िआत

यह सूर: आरम्भिक मक्की युग में उतरी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 47 आयतें हैं ।

क़ुरआनी शैली के अनुसार एक बार फिर इस सूर: में सांसारिक अज़ाब और युद्धों का विवरण आया है और स्पष्ट रूप से ऐसे युद्धों का वर्णन है जिनमें पनडुब्बी नौकाओं का प्रयोग किया जाएगा । आयत **वन्नाज़िआति ग़र्क़न** (सं. 2) का एक अर्थ यह है कि वे युद्ध करने वालियाँ इस उद्देश्य से डूब कर आक्रमण करती हैं कि शत्रु को डुबो दें और फिर अपनी प्रत्येक सफलता पर खुशी अनुभव करती हैं । इसी प्रकार युद्ध और आक्रमण का यह दौड़ एक दूसरे से बढ़त ले जाने के प्रयासों में समाप्त हो जाता है और दोनों ओर से शत्रु बड़े-बड़े षड़यन्त्र रचता है ।

आयत **वस्साबिहाति सब हन** (सं. 4) से तैरने वालियाँ अभिप्रेत हैं चाहे वे समुद्र के अन्दर डूब कर तैरें अथवा समुद्र के तल पर तैरें । कई बार पनडुब्बी नौकाएँ अपनी विजय प्राप्ति के पश्चात समुद्र तल पर उभर आ निकलती हैं ।

इन युद्धों से ऐसा आतंक छा जाता है कि दिल उसके भय से धड़कने लगते हैं और नज़रें झुक जाती हैं । इस सांसारिक विनाश के पश्चात मनुष्य की अन्तरात्मा यह प्रश्न उठाती है कि क्या फिर हम मृतावस्था से पुन: जी उठेंगे, जबकि हमारी हड्डियाँ गल-सड़ चुकी होंगी ? अल्लाह ने कहा, नि:सन्देह ऐसा ही होगा और एक बहुत बड़ी चेतावनी देने वाली आवाज़ गूँजेगी तो सहसा वे अपने आप को क़यामत के मैदान में उपस्थित पाएँगे ।

इसके बाद हज़रत मूसा अलै. का वर्णन आरम्भ किया गया है, क्योंकि उनको फ़िरऔन की ओर भेजा गया था जो स्वयं ईश्वरत्व का दावेदार और परलोक का परम अस्वीकारी था । जब हज़रत मूसा अलै. ने उसे सत्यवार्ता पहुँचाई तो उसने उत्तर में यह डींग हाँकी कि तुम्हारा सर्वोच्च रब्ब तो मैं हूँ । अत: अल्लाह तआला ने उसे ऐसा पकड़ा कि वह पूर्ववर्तियों और परवर्तियों के लिए एक शिक्षाप्रद उदाहरण बन गया । पूर्ववर्तियों ने तो उसे और उसकी सेनाओं को डूबते हुए देखा और परवर्तियों ने उसके डूबे हुए शरीर को देखा, जिसे अल्लाह तआला ने शिक्षा प्रदान करने के लिए भौतिक मृत्यु से इस अवस्था में बचाया कि लम्बी आयु तक वह जीवन और मरण से संघर्ष करता हुआ इस दशा में मरा कि उसके शव को आने वाली पीढ़ियों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से ममी (Mummy) के रूप में सुरक्षित कर दिया गया ।

इसके बाद इस सूर: का अन्त इस प्रश्न के उल्लेख पर हुआ है कि वे पूछते हैं कि

आख़िर वह क़यामत की घड़ी कब और कैसे आएगी ? अल्लाह ने कहा, जब वह आएगी तो भली-भाँति स्पष्ट हो जाएगा कि प्रत्येक वस्तु का अंतिम गंतव्य उसके रब्ब ही की ओर है । और हे रसूल ! तू तो केवल उसी को डरा सकता है जो इस भयानक घड़ी से डरता हो और जिस दिन वे उसे देखेंगे तो संसार का जीवन यूँ प्रतीत होगा जैसे कुछ क्षणों से अधिक नहीं था ।

☆☆☆

سُوْرَةُ النّٰزِعَاتِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَّ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝٢

क़सम है डूब कर खींचने वालियों की (अथवा) डुबोने के उद्देश्य से खींचने वालियों की ।2।

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝٣

और बहुत ख़ुशी मनाने वालियों की ।3।

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝٤

और ख़ूब तैरने वालियों की ।4।

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۝٥

फिर एक दूसरी पर बढ़त ले जाने वालियों की ।5।

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝٦ وقف لازم

फिर किसी महत्वपूर्ण कार्य की योजना बनाने वालियों की ।6।

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝٧

जिस दिन कांपने वाली खूब कांपेगी।7।

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝٨

एक पीछे आने वाली उसके पीछे आएगी ।8।

قُلُوْبٌ يَّوْمَىِٕذٍ وَّاجِفَةٌ ۝٩

दिल उस दिन बहुत धड़क रहे होंगे ।9।

اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝١٠ وقف لازم

उनकी आँखें नीची होंगी ।10।

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ۝١١

वे (लोग) कहेंगे कि क्या हमें पूर्वावस्था की ओर अवश्य लौटा दिया जाएगा ? ।11।

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝١٢

क्या जब हम सड़ी-गली हड्डियाँ बन चुके होंगे ? ।12।

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝١٣ وقف لازم

वे कहेंगे, तब तो यह लौट कर जाना बहुत घाटे का होगा ।13।

فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٤

अत: (सुनो कि) यह तो केवल एक बड़ी डांट (की आवाज़) होगी ।14।

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٥﴾

तब वे सहसा एक खुले मैदान में होंगे ।15।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿١٦﴾

क्या तेरे पास मूसा का समाचार आया है ? ।16।

اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٧﴾

जब उसके रब्ब ने उसे पवित्र घाटी तुवा में पुकारा ।17।

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿١٨﴾

(कि) फ़िरऔन की ओर जा । निःसन्देह उसने उद्दण्डता की है ।18।

فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ﴿١٩﴾

फिर (उससे) पूछ, क्या तेरे लिए संभव है कि तू पवित्रता धारण करे? ।19।

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ﴿٢٠﴾

और मैं तुझे तेरे रब्ब की ओर मार्ग-दर्शित करूँ ताकि तू डरे ? ।20।

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ﴿٢١﴾

फिर उस (मूसा) ने उसे एक बहुत बड़ा चिह्न दिखाया ।21।

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢٢﴾

तो उसने झुठला दिया और अवज्ञा की ।22।

ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿٢٣﴾

फिर शीघ्रता पूर्वक पीठ फेर ली ।23।

فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿٢٤﴾

फिर उसने (लोगों को) एकत्रित किया और पुकारा ।24।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿٢٥﴾

फिर कहा कि मैं ही तुम्हारा सर्वोच्च रब्ब हूँ ।25।

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٦﴾

अतः अल्लाह ने उसे परलोक और इहलोक के एक शिक्षाप्रद दण्ड के द्वारा पकड़ लिया ।26।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿٢٧﴾

निःसन्देह इसमें उसके लिए जो डरता है अवश्य एक बड़ी सीख है ।27।

(रुकू $\frac{1}{3}$)

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ بَنٰىهَا ﴿٢٨﴾

क्या सृष्टि में तुम अधिक सशक्त हो अथवा आकाश, जिसे उसने बनाया

है? ।28।*

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ۙ ٢٩

उसकी ऊँचाई को उसने बहुत ऊँचा किया । फिर उसे सुव्यवस्थित किया।29।

وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۖ ٣٠

और उसकी रात को ढाँप दिया और उसके सुबह को उदित किया ।30।

وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ۗ ٣١

और धरती को उसके बाद समतल बना दिया ।31।

اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۖ ٣٢

उससे उसने उसका पानी और उसमें उगने वाला चारा निकाला ।32।**

وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ۙ ٣٣

और पर्वतों को उसने गहरा गाड़ दिया ।33।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۗ ٣٤

तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए जीवनयापन के सामान के रूप में ।34।***

فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ۖ ٣٥

अतः जब सबसे बड़ी विपत्ति आएगी।35।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ۙ ٣٦

उस दिन मनुष्य याद करेगा जो उसने प्रयास किया था ।36।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ٣٧

और नरक को उसके लिए प्रकट कर दिया जाएगा जो (उसे अभी केवल कल्पना की दृष्टि से) देखता है।37।

فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۙ ٣٨

अतः वह जिसने उद्दण्डता की ।38।

---

* अल्लाह तआला ने आकाश की सृष्टि की, जो इतनी आश्चर्यजनक और महान शक्तियों से परिपूर्ण है कि उसके मुक़ाबले पर मनुष्य का आविष्कार महत्वहीन है । चाहे वह रॉकेट बना ले, जहाज़ अथवा पनडुब्बियाँ बना ले । इसी प्रकार मनुष्य का अपना जन्म ऐसी आश्चर्यजनक कारीगरी पर आधारित है कि उस पर जितना चिंतन किया जाए उतना ही अल्लाह तआला की कारीगरी और शक्तियों के अनन्त दृश्य दिखते चले जाते हैं ।

** अरबी शब्द **मर्आ** के इन अर्थों के लिए देखिए मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि. ।

*** पर्वतों को दृढ़तापूर्वक धरती में गाड़ देने का जो वर्णन है, उसका एक कारण यह है कि इन पर्वतों ही से मनुष्य और पशुओं के जीवनयापन के साधन जुड़े हैं ।

وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۙ﴿۳۹﴾

और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी ।39।

فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ؕ﴿۴۰﴾

तो नि:सन्देह नरक ही (उसका) ठिकाना होगा ।40।

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۙ﴿۴۱﴾

और वह जो अपने रब्ब की महत्ता से डरा और उसने अपने मन को बुरी कामना से रोका ।41।

فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ؕ﴿۴۲﴾

तो नि:सन्देह स्वर्ग ही (उसका) ठिकाना होगा ।42।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ﴿۴۳﴾

वे क़यामत की घड़ी के सम्बन्ध में तुझ से पूछते हैं कि वह कब आयेगी ? ।43।

فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ؕ﴿۴۴﴾

उसके वर्णन से तू किस सोच में है ? ।44।

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ؕ﴿۴۵﴾

तेरे रब्ब ही की ओर उसकी पराकाष्ठा है।45।

اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ؕ﴿۴۶﴾

तू केवल उसे चेतावनी दे सकता है जो उससे डरता हो ।46।

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ۧ﴿۴۷﴾ ع

जब वे उसे देखेंगे (तो विचार करेंगे कि) मानो वे एक शाम अथवा उसकी सुबह के अतिरिक्त (इस संसार में) नहीं बसे ।47। (रुकू $\frac{2}{4}$)

80- सूर: अ ब स

यह सूर: आरम्भिक काल की मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 43 आयतें हैं।

इस सूर: में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय के एक अस्वीकारी का वर्णन है जो बड़ा अहंकारी था और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न करने के लिए आया था। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खूब इच्छा होती थी कि किसी प्रकार कोई हिदायत पा जाए। इस कारण उसके अहंकारपूर्ण बर्ताव पर भी अत्यन्त शांत चित्त के साथ उसकी बातों को सुनते रहे। यहाँ तक कि एक नेत्रहीन मोमिन आपसे कोई प्रश्न करने के लिए उपस्थित हुआ तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस समय उसके हस्तक्षेप को पसंद नहीं किया और उससे अपनी अप्रसन्नता इस प्रकार प्रकट की कि वह व्यक्ति जो बहस कर रहा था वह तो देख सकता था परन्तु उस नेत्रहीन का दिल दु:खी नहीं हो सकता था, क्योंकि उसे कुछ मालूम नहीं हो पाया था। इस विवरण के पश्चात अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया है कि जो व्यक्ति निष्ठा और उत्सुकता पूर्वक तेरे पास आए उससे कभी बेपरवाही न कर और जो अहंकार करने वाला जानकारी प्राप्त करने के लिए उपस्थित हो चाहे वह संसार का बड़ा व्यक्ति हो उसको किसी निर्धन परंतु निष्ठावान अनुयायी पर किसी प्रकार का महत्व न दे। इसके बाद कुरआन करीम की ऊँची शान का वर्णन आरम्भ हो जाता है कि यह पुस्तक किस प्रकार बह्माण्ड की प्रारम्भिक उत्पत्ति के रहस्यों पर से पर्दा उठाती है और इसके अंत और परकालीन दिवस में घटित होने वाली वृहद घटनाओं का भी वर्णन करती है।

☆☆☆

سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَّ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ②	उसने त्योरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया ।2।
اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ③	कि उसके पास एक नेत्रहीन आया ।3।
وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى ④	और तुझे क्या मालूम कि हो सकता था वह बहुत पवित्र हो जाता ।4।
اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ⑤	अथवा उपदेश पर विचार करता तो उपदेश उसे लाभ पहुँचाता ।5।
اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ⑥	वह जिसने बेपरवाही की ।6।
فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ⑦	तू उसकी ओर ध्यान दे रहा है ।7।
وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ⑧	हालाँकि यदि वह पवित्रता धारण न करे तो तुझ पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं ।8।*
وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ⑨	और वह जो तेरे पास बहुत प्रयास करके आया ।9।
وَهُوَ يَخْشٰى ⑩	और वह डर रहा था ।10।
فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ⑪	पर तू उससे बेपरवाह रहा ।11।
كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ⑫	सावधान ! नि:सन्देह यह एक बड़ा उपदेश है ।12।
فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ⑬ وقف لازم	अत: जो चाहे इसे याद रखे ।13।

* इस अर्थ के लिए देखें ''ग़रीबुल कुरआन''

فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ﴿١٤﴾

सम्माननीय पृष्ठों में है ।14।

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۙ﴿١٥﴾

जो उच्च प्रतिष्ठा संपन्न, बहुत पवित्र रखे गए हैं ।15।

بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ۙ﴿١٦﴾

लिखने वालों के हाथों में हैं ।16।

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ؕ﴿١٧﴾

(जो) बहुत सम्माननीय (और) बड़े नेक हैं ।17।

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ؕ﴿١٨﴾

सर्वनाश हो मनुष्य का ! वह कैसा कृतघ्न है ।18।

مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ؕ﴿١٩﴾

उसे उसने किस चीज़ से पैदा किया? ।19।

مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۙ﴿٢٠﴾

वीर्य से उसे पैदा किया, फिर उसे सुव्यवस्थित किया ।20।

ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۙ﴿٢١﴾

फिर उसके लिए रास्ते को आसान कर दिया ।21।

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۙ﴿٢٢﴾

फिर उसे मारा और क़ब्र में प्रविष्ट किया ।22।*

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ؕ﴿٢٣﴾

फिर वह जब चाहेगा उसे उठाएगा ।23।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ؕ﴿٢٤﴾

सावधान ! उसने उसे जो आदेश दिया था, वह अभी तक पूरा नहीं कर सका ।24।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۙ﴿٢٥﴾

अतः मनुष्य अपने भोजन की ओर देखे ।25।

اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۙ﴿٢٦﴾

कि हमने ख़ूब पानी बरसाया ।26।

ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ۙ﴿٢٧﴾

फिर हमने धरती को अच्छी प्रकार फाड़ा ।27।

---

* आवश्यक नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति की एक क़ब्र बने । बहुत से लोग डूब जाते हैं अथवा जंगली जानवरों की भेंट चढ़ जाते हैं । अतः यहाँ क़ब्र से अभिप्राय उसके पुनरुत्थान से पूर्व का समय है अर्थात प्रत्येक मनुष्य की आत्मा पर क़ब्र सदृश एक समय आएगा ।

फिर उसमें हमने अनाज उगाया ।28।	فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۙ﴿٢٨﴾
और अंगूर और सब्ज़ियाँ ।29।	وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۙ﴿٢٩﴾
और ज़ैतून और खजूर ।30।	وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۙ﴿٣٠﴾
और घने बाग़ ।31।	وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۙ﴿٣١﴾
और भाँति-भाँति के फल और चारा ।32।	وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ۙ﴿٣٢﴾
जो तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए लाभ का सामान हैं ।33।	مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ؕ﴿٣٣﴾
अतः जब एक कड़कदार आवाज़ आएगी ।34।	فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۫﴿٣٤﴾
जिस दिन मनुष्य अपने भाई से भी पलायन करेगा ।35।	يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۙ﴿٣٥﴾
और अपनी माता से भी और अपने पिता से भी ।36।	وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۙ﴿٣٦﴾
और अपनी पत्नी से भी और अपनी संतान से भी ।37।	وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ؕ﴿٣٧﴾
उस दिन उनमें से प्रत्येक व्यक्ति की एक ऐसी अवस्था होगी जो उसे (सबसे) निस्पृह कर देगी ।38।	لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ؕ﴿٣٨﴾
कुछ चेहरे उस दिन उज्ज्वल होंगे ।39।	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۙ﴿٣٩﴾
हंसते हुए, प्रसन्न चित्त ।40।	ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۚ﴿٤٠﴾
और कुछ चेहरे ऐसे होंगे कि उस दिन उन पर धूल पड़ी होगी ।41।	وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۙ﴿٤١﴾
उन पर कालिमा छा रही होगी ।42।	تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ؕ﴿٤٢﴾
यही वे कृतघ्न, दुराचारी लोग हैं ।43। (रुकू $\frac{1}{5}$)	ع اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٣﴾

81- सूर: अत-तक्वीर

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं ।

फिर एक बार क़ुरआन करीम संसार में घटित होने वाली वृहद घटनाओं की ख़बर देता है जो क़यामत की घड़ी पर साक्षी ठहरेंगी और सूर्य को साक्षी ठहराया गया है जब उसे ढाँप दिया जाएगा । अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रकाश को उस युग के शत्रु मानव-जाति की भलाई के लिए नहीं पहुँचने देंगे और उनका षड़यन्त्र और दुष्प्रचार बीच में बाधक बन जाएगा । और जब सहाबा रज़ि. के प्रकाश को भी शत्रु की ओर से मलिन कर दिया जाएगा और जिस प्रकार सूर्य के बाद सितारे किसी सीमा तक प्रकाश फैलाने का काम करते हैं, इसी प्रकार सहाबा का प्रकाश भी मनुष्य की दृष्टि से ओझल कर दिया जाएगा। यह वह युग होगा जबकि बड़े-बड़े पर्वत चलाए जाएँगे अर्थात पर्वतों की भाँति बड़े-बड़े समुद्री जहाज़ और हवाई जहाज़ भी यातायात करने और माल ढुलाई के लिए व्यवहृत होंगे और ऊँटनियाँ उनके मुक़ाबले पर बेकार वस्तु की भाँति परित्यक्त कर दी जाएँगी । यह वह युग होगा जब अधिकता से चिड़ियाघर बनाए जाएँगे । स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में इसका कोई अस्तित्व नहीं था । वर्तमान युग के चिड़ियाघर भी इस बात की गवाही दे रहे हैं कि इतने बड़े-बड़े जानवर समुद्री जहाज़ों और हवाई जहाज़ों के द्वारा उनमें स्थानान्तरित किए जाते हैं । उस युग का मनुष्य इसकी कल्पना तक नहीं कर सकता था ।

फिर सम्भवत: समुद्री युद्धों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कराया गया है, जब अधिकतापूर्वक समुद्रों में जहाज़ चलेंगे और इसके परिणाम स्वरूप दूर-दूर के लोग परस्पर मिलाए जाएँगे अर्थात केवल जानवर ही इकट्ठे नहीं किए जाएँगे अपितु मनुष्य भी परस्पर मिलाए जाएँगे । वह दौर क़ानून का दौर होगा अर्थात पूरे भू-मंडल पर क़ानून का राज होगा । यहाँ तक कि मनुष्य को यह भी अधिकार नहीं दिया जाएगा कि वह स्वयं अपनी संतान के साथ अत्याचार-पूर्ण व्यवहार कर सके । देखने में तो समग्र संसार पर क़ानून ही का राज है परन्तु अल्लाह तआला के क़ानून के इनकार के कारण संसार का क़ानून भी किसी देश से दंगा-उपद्रव को दूर नहीं कर सकता । यह दौर अधिक मात्रा में पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार का दौर होगा और आकाश के रहस्यों की तलाश करने वाले मानों आकाश की खाल उधेड़ देंगे । उस दिन नरक को भी धधकाया जाएगा जो युद्ध रूपी नरक भी होगा और आकाशीय प्रकोप रूपी नरक भी होगा । इस के बावजूद जो लोग अल्लाह तआला की शिक्षा का पालन करेंगे और उस पर अडिग रहेंगे, उनके लिए स्वर्ग को निकट कर दिया जाएगा । प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञात हो जाएगा कि उसने अपने

लिए आगे क्या भेजा है ।

आयत सं. 16 और 17 में गुप्त रूप से कार्यवाहियाँ करके पलट जाने वाली उन नौकाओं को साक्षी ठहराया गया है जो कार्यवाहियाँ करने के पश्चात अपने निश्चित अड्डों में जा छिपती हैं । इसको बार-बार इसलिए दोहराया गया है कि यहाँ अब आध्यात्मिक रूप से मनुष्य के मन पर आक्रमण करने वाले ऐसे शैतानी विचारों का वर्णन है जो आक्रमण करके फिर अदृश्य हो जाते हैं । और उस रात्रि को साक्षी ठहराया गया है कि जब वह अन्तिम स्वास ले रही होगी और प्रातोदय के लक्षण प्रकट हो जाएँगे और अन्ततः उस अंधेरी रात के बाद इस्लाम का सूर्योदय अवश्य होगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ②

जब सूर्य को लपेट दिया जाएगा ।2।

وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ③

और जब नक्षत्र मलिन पड़ जाएँगे ।3।

وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ④

जब पर्वत चलाए जाएँगे ।4।

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ⑤

और जब दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ बिना किसी निगरानी के छोड़ दी जाएँगी ।5।

وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ⑥

और जब जंगली जानवर इकट्ठे किए जाएँगे ।6।

وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ⑦

और जब समुद्र फाड़े जाएँगे ।7।

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ⑧

और जब जानें मिला दी जाएँगी ।8।

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ⑨

और जब जीवित गाड़ दी जाने वाली (अपने बारे में) पूछी जाएगी ।9।

بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ⑩

(कि) किस पाप के बदले में (वह) वध की गई है ? ।10।*

وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ⑪

और जब ग्रंथ प्रसारित किए जाएँगे ।11।

وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ⑫

और जब आकाश की खाल उधेड़ी जाएगी ।12।

---

* आयत सं. 9, 10 :- इन आयतों में भविष्य युगीन विकसित शासन तन्त्रों का वर्णन है जो अपने बच्चों पर भी माता-पिता के प्रभुत्व को नकारेंगे । अपने विस्तृत अर्थों की दृष्टि से यह आयत इस शान के साथ पूरी हुई है कि बच्चों का वध करना तो दूर, यदि यह प्रमाणित हो जाए कि माता-पिता अपने बच्चों पर किसी प्रकार की ज़्यादती करते हैं तो सरकारें उनके बच्चों को अपने संरक्षण में ले लेती हैं ।

وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ﴿١٣﴾

और जब नरक को भड़काया जाएगा।13।

وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ﴿١٤﴾

और जब स्वर्ग को निकट कर दिया जाएगा ।14।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ﴿١٥﴾

(तब) हर एक जान जो वह लाई होगी, जान लेगी ।15।

فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٦﴾

अतः सावधान ! मैं क़सम खाता हूँ गुप्त क़ार्यवाहियाँ करके पलट जाने वालियों की ।16।

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٧﴾

अर्थात नौकाओं की, जो छुपने के समय (अथवा छुपने के स्थानों में) छुप जाती हैं ।17।

وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ﴿١٨﴾

और रात की, जब वह आएगी और पीठ फेर जाएगी ।18।*

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٩﴾

और सुबह की, जब वह साँस लेने लगेगी ।19।

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٠﴾

निःसन्देह यह एक (ऐसे) सम्माननीय रसूल का कथन है ।20।

ذِيْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢١﴾

(जो) शक्ति वाला है । अर्श के अधिपति के निकट उच्च पदस्थ है ।21।

مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢٢﴾

बहुत अनुसरण करने योग्य (जो) वहाँ (अर्थात अर्श के अधिपति के समक्ष) विश्वस्त भी है ।22।

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٣﴾

और (निःसन्देह) तुम्हारा साथी पागल नहीं ।23।

وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٤﴾

और वह अवश्य उसे उज्ज्वल क्षितिज पर देख चुका है ।24।**

---

* अरबी में **अस असल लैलु** के अर्थ हैं : रात आई और पीठ फेर गई । मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.

** आयत सं. 23, 24 : इससे तात्पर्य यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ओर से बातें नहीं बनाईं बल्कि वास्तव में उन्होंने जिब्रील को एक उज्ज्वल क्षितिज पर देखा था ।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۚ﴿۲۵﴾

और वह अदृश्य के (वर्णन करने) में कंजूस नहीं ।25।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۙ﴿۲۶﴾

और वह किसी धुतकारे हुए शैतान का कथन नहीं ।26।

فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ؕ﴿۲۷﴾

अतः तुम किधर जा रहे हो ? ।27।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۲۸﴾

वह तो समस्त लोकों के लिए एक बड़े उपदेश के सिवा कुछ नहीं ।28।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ؕ﴿۲۹﴾

उसके लिए, जो तुम में से (सन्मार्ग पर) अडिग रहना चाहे ।29।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۧ﴿۳۰﴾

और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, परन्तु वही जो समस्त लोकों का रब्ब अल्लाह चाहे ।30। (रुकू $\frac{1}{6}$)

82- सूरः अल-इन्फ़ितार

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ पर भी सितारों का वर्णन है परन्तु उनके मलिन पड़ने का नहीं बल्कि टूट जाने का वर्णन है । अर्थात रात्रि के अंधकार में मनुष्य पूरी तरह सितारों के प्रकाश से भी वंचित कर दिया जाएगा । फिर समुद्र का वर्णन करते हुए यह बात दोहराई गई कि केवल समुद्रों में ही अधिकता पूर्वक जहाज़रानी नहीं होगी और उनके रहस्य को जानने के लिए उनको फाड़ा नहीं जाएगा बल्कि पुरातत्त्वविद भू-भाग पर भी गड़ी हुई अतीत युगीन सभ्यताओं की क़ब्रों को उखेड़ेंगे । उस दिन मनुष्य को ज्ञात हो जाएगा कि इससे पहले लोग अपने आगे क्या भेजते रहे हैं और परवर्ती समय में आने वाले भी क्या आगे भेजेंगे ।

इस सूरः के अन्त पर फिर परकालीन दिवस के वर्णन पर एक आयत में यह विषय वर्णन किया गया है कि संसार का वास्तविक स्वामित्व अस्थायी स्वामियों के पास नहीं है। बल्कि वास्तविक स्वामी तो अल्लाह तआला ही है जिसकी ओर परकालीन दिवस में प्रत्येक प्रकार का स्वामित्व लौट जाएगा और अन्य सभी को स्वामित्व विहीन कर दिया जाएगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِذَا السَّمَآءُ انۡفَطَرَتۡ ۝٢

जब आकाश फट जाएगा ।2।

وَاِذَا الۡكَوَاكِبُ انۡتَثَرَتۡ ۝٣

और जब सितारे झड़ जाएँगे ।3।

وَاِذَا الۡبِحَارُ فُجِّرَتۡ ۝٤

और जब समुद्र फाड़े जाएँगे ।4।

وَاِذَا الۡقُبُوۡرُ بُعۡثِرَتۡ ۝٥

और जब क़ब्रें उखेड़ी जाएँगी ।5।

عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ وَاَخَّرَتۡ ۝٦

हर एक जान को ज्ञात हो जाएगा कि उसने क्या आगे भेजा है और क्या पीछे छोड़ा है ।6।

يٰۤاَيُّهَا الۡاِنۡسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الۡكَرِيۡمِ ۝٧

हे मनुष्य ! तुझे अपने कृपाशील रब्ब के बारे में किस बात ने धोखे में डाला ? ।7।

الَّذِىۡ خَلَقَكَ فَسَوّٰٮكَ فَعَدَلَكَ ۝٨

वह जिसने तुझे पैदा किया । फिर तुझे ठीक-ठाक बनाया । फिर तुझे व्यवस्थित किया ।8।

فِىۡۤ اَىِّ صُوۡرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝٩

जिस आकृति में भी चाहा तेरा सृजन किया ।9।

كَلَّا بَلۡ تُكَذِّبُوۡنَ بِالدِّيۡنِ ۝١٠

सावधान ! तुम तो कर्मफल का ही इनकार कर रहे हो ।10।

وَاِنَّ عَلَيۡكُمۡ لَحٰفِظِيۡنَ ۝١١

जबकि निश्चित रूप से तुम पर निरीक्षक नियुक्त हैं ।11।

كِرَامًا كَاتِبِيۡنَ ۝١٢

सम्माननीय लिखने वाले ।12।

يَعۡلَمُوۡنَ مَا تَفۡعَلُوۡنَ ۝١٣

वे जानते हैं जो तुम करते हो ।13।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٤﴾

नि:सन्देह सदाचारी लोग अवश्य सुख-समृद्धि में होंगे ।14।

وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٥﴾

और नि:सन्देह दुराचारी अवश्य नरक में होंगे ।15।

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٦﴾

वे उसमें कर्मफल प्राप्ति के दिन प्रविष्ट होंगे ।16।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٧﴾

और वे कदापि उससे बच न सकेंगे ।17।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٨﴾

और तुझे क्या पता कि कर्मफल प्राप्ति का दिन क्या है ? ।18।

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٩﴾

फिर तुझे क्या पता कि कर्मफल प्राप्ति का दिन क्या है ? ।19।

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ﴿٢٠﴾ ع

जिस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिए किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखेगी । और उस दिन निर्णय करने का अधिकार पूर्णरूपेण अल्लाह ही का होगा ।20। (रुकू $\frac{1}{7}$)

83– सूरः अल–मुतफ़्फ़िफ़ीन

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 37 आयतें हैं।

इस सूरः में एक बार फिर से नाप-तौल की ओर मनुष्य को ध्यान दिलाया गया है कि तुम तभी सफल हो सकते हो यदि न्याय पर डटे रहो। यह न हो कि लेने के मापदंड और हों और देने के मापदंड और। यहाँ वर्तमान काल के व्यापार का भी विश्लेषण कर दिया गया है। बड़ी-बड़ी धनवान जातियाँ जब भी निर्धन जातियों से सौदा करती हैं तो सर्वथा उस सौदे में निर्धन जातियों की हानि अवश्य होती है। अल्लाह ने कहा, क्या ये लोग सोचते नहीं कि एक बहुत बड़े हिसाब-किताब के दिन वे एकत्रित किए जाएँगे जिसमें उनके सांसारिक सौदों का भी हिसाब होगा। यह वह कर्मफल दिवस है जिसका वर्णन पिछली सूरः के अंत में हुआ है।

इसके बाद की आयतों में स्पष्ट रूप से कर्मफल दिवस का वर्णन करके चेतावनी दी गई है कि कर्मफल दिवस के अस्वीकारी पिछले युगों में भी विनष्ट कर दिए गए थे और अंत्ययुग में भी बुरे अंत को प्राप्त होंगे।

इसके बाद की आयतों में नरक और स्वर्ग निवासियों का तुलनात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है और चेतावनी दी गई है कि वे लोग जिनसे ये संसार में उपहास करते हुए व्यंग कसते और आँखों के इशारों से उनका अपमान करते हुए उन्हें काफ़िर कहते थे, उस दिन वे उन काफ़िरों पर हंसेगे और उनसे पूछेंगे कि बताओ अब तुम्हारा क्या हाल है?

☆☆☆

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَّ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿٢﴾

सर्वनाश है नाप-तौल में अन्याय करने वालों के लिए ।2।

الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٣﴾

अर्थात वे लोग जो कि लोगों से जब तौल कर लेते हैं तो भरपूर (मापदंडों के साथ) लेते हैं ।3।

وَ اِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٤﴾

और जब उनको नाप कर अथवा तौल कर देते हैं तो कम देते हैं ।4।

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٥﴾

क्या ये लोग विश्वास नहीं करते कि वे अवश्य उठाए जाएँगे ।5।

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٦﴾

एक बहुत बड़े दिन में (पेशी) के लिए ।6।

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧﴾

जिस दिन लोग समस्त लोकों के रब्ब के समक्ष खड़े होंगे ।7।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿٨﴾

सावधान ! नि:सन्देह दुराचारियों का कर्मपत्र **सिज्जीन** में है ।8।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ﴿٩﴾

और तुझे क्या मालूम कि **सिज्जीन** क्या है ? ।9।

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿١٠﴾

एक लिखी हुई पुस्तक है ।10।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

सर्वनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए ।11।

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾

जो कर्मफल दिवस को झुठलाते हैं ।12।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٣﴾

और उसे कोई नहीं झुठलाता परन्तु वही जो सीमा से बढ़ा हुआ महापापी है ।13।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٤﴾

जब उस के समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, वह कहता है (ये) पहले लोगों की कहानियाँ हैं ।14।

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٥﴾

सावधान ! वास्तविकता यह है कि उन कमाइयों ने उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया है जिन्हें वे अर्जित किया करते थे ।15।

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٦﴾

सावधान ! नि:सन्देह उस दिन वे अपने रब्ब से पर्दे में कर दिए जाएँगे (अर्थात उसके दर्शन से वंचित कर दिए जाएँगे) ।16।

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٧﴾

फिर अवश्य वे नरक में प्रविष्ट होंगे।17।

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٨﴾

फिर कहा जाएगा कि यही वह है जिसको तुम झुठलाया करते थे ।18।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٩﴾

सावधान ! नि:सन्देह नेक लोगों का कर्मपत्र **इल्लिय्यीन** में अवश्य है।19।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿٢٠﴾

और तुझे क्या मालूम कि **इल्लिय्यीन** क्या है ? ।20।

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢١﴾

एक लिखी हुई पुस्तक है ।21।

يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٢﴾

सान्निध्य प्राप्त लोग उसे (अपनी आँखों से) देख लेंगे ।22।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٣﴾

नि:सन्देह नेक लोग सुख-समृद्धि में अवश्य होंगे ।23।

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٤﴾

सुसज्जित पलंगों पर बैठे अवलोकन कर रहे होंगे ।24।

تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٥﴾

तू उनके चेहरों में सुख-समृद्धि की ताज़गी पहचान लेगा ।25।

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٦﴾

उन्हें एक मुहरबंद शराब में से पिलाया जाएगा ।26।

خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٧﴾

उसकी मुहर कस्तूरी होगी । अत: इस (विषय) में चाहिए कि मुक़ाबले की इच्छा रखने वाले एक दूसरे से बढ़ कर इच्छा करें ।27।

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٨﴾

उसका गुण तस्नीम (मिश्रित) होगा ।28।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٩﴾

(जो) एक ऐसा स्रोत है, जिससे सान्निध्य प्राप्त लोग पिएँगे ।29।

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٠﴾

नि:सन्देह जिन्होंने अपराध किए वे उन लोगों से जो ईमान लाए, उपहास किया करते थे ।30।

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣١﴾

और जब उनके पास से गुज़रते थे तो परस्पर इशारे करते थे ।31।

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣٢﴾

और जब अपने घर वालों की ओर लौटते थे, व्यर्थ बातें बनाते हुए लौटते थे ।32।

وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٣﴾

और जब कभी उन्हें देखते थे कहते थे, नि:सन्देह यही हैं जो पक्के पथभ्रष्ट हैं ।33।

وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٤﴾

हालाँकि वे उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजे गए थे ।34।

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٥﴾

अत: वे लोग जो ईमान लाए आज काफ़िरों पर हँसेंगे ।35।

عَلَى الْاَرَآئِكِ ۙ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٦﴾

सुसज्जित पलंगों पर विराजित होकर अवलोकन कर रहे होंगे ।36।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٧﴾ ع

क्या काफ़िरों को उसका पूरा प्रतिफल दे दिया गया है जो वे किया करते थे ? ।37। (रुकू $\frac{1}{8}$)

84– सूरः अल–इन्शिक़ाक़

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 26 आयतें हैं ।

पिछली सूरतों की वर्णन शैली को जारी रखते हुए एक बार फिर संसार में प्रकट होने वाले महान परिवर्तनों को परलोक के लिए साक्षी ठहराया गया है । एक बार फिर आकाश के फट जाने का वर्णन है जिसका एक अर्थ यह है कि भाँति-भाँति की विपत्तियाँ आएँगी ।

इसके बाद धरती को फैला दिए जाने का वर्णन है । वैसे तो इस संसार में धरती फैलाई हुई दिखाई नहीं देती परन्तु क़ुरआन के समय में मनुष्य की जानकारी में केवल आधी धरती थी और आधी धरती अमेरिका इत्यादि की खोज से व्यवहारिक दृष्टि से फैला दी गई । और यही वह दौर है जिसमें धरती सबसे अधिक अपने दबे हुए रहस्यों को बाहर निकाल देगी, मानो खाली हो जाएगी । विज्ञान का यह नवीन विकास-काल अमेरिका की खोज से ही आरम्भ होता है ।

इसके बाद यह भविष्यवाणी है कि जब दिन अंधकार में परिवर्तित हो रहा होगा और फिर रात छा जाएगी तब एक बार फिर इस्लाम का चन्द्रमा उदय होगा, उस दिन तुम क्रमशः अपनी उन्नति के अंतिम पड़ाव तय कर रहे होगे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۝٢

जब आकाश फट जाएगा ।2।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٣

और अपने रब्ब की ओर कान धरेगा और यही उस पर अनिवार्य किया गया है ।3।

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۝٤

और जब धरती विस्तृत कर दी जाएगी ।4।

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۝٥

और जो कुछ उसमें है (उसे वह) निकाल फेंकेगी और खाली हो जाएगी ।5।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٦

और अपने रब्ब की ओर कान धरेगी । और यही उस पर अनिवार्य किया गया है ।6।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝٧

हे मनुष्य ! तुझे अवश्य अपने रब्ब की ओर कठोर परिश्रम (करके जाने) वाला बनना होगा । अत: (अवश्यमेव) तू उसे आमने-सामने मिलने वाला है ।7।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۝٨

अत: वह जिसे उसका कर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा ।8।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۝٩

तो नि:सन्देह उसका सरल हिसाब लिया जाएगा ।9।

وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝١٠

और वह अपने घरवालों की ओर प्रसन्नचित्त होकर लौटेगा ।10।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۝١١

और वह जिसे उसके गुप्त रूप से किए हुए कर्मों का हिसाब दिया जाएगा ।11।

فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۝١٢

वह अवश्य (अपने लिए) विनाश की दुआ माँगेगा ।12।

और भड़कती हुई अग्नि में प्रविष्ट होगा ।13।

وَّيَصۡلٰى سَعِيۡرًا ۝١٣

नि:सन्देह वह अपने घरवालों में प्रसन्न था ।14।

اِنَّهٗ كَانَ فِيۡۤ اَهۡلِهٖ مَسۡرُوۡرًا ۝١٤

नि:सन्देह उसने यह सोच रखा था कि वह कदापि उठाया नहीं जाएगा ।15।*

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنۡ لَّنۡ يَّحُوۡرَ ۝١٥

معانقة ١٧ عند المتأخرين

क्यों नहीं ! नि:सन्देह उसका रब्ब उस पर सदा गहन दृष्टि रखने वाला था ।16।

بَلٰٓى ۛۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيۡرًا ۝١٦

अत: सावधान ! मैं संध्या की लालिमा को साक्षी ठहराता हूँ ।17।

فَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالشَّفَقِ ۝١٧

और रात को और उसे जो वह समेटती है ।18।

وَالَّيۡلِ وَمَا وَسَقَ ۝١٨

और चन्द्रमा को जब वह प्रकाश से परिपूर्ण हो जाए ।19।

وَالۡقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۝١٩

नि:सन्देह तुम अवश्य क्रमश: उन्नति करोगे ।20।**

لَتَرۡكَبُنَّ طَبَقًا عَنۡ طَبَقٍ ۝٢٠

अत: उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते ? ।21।

فَمَا لَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝٢١

और जब उन के समक्ष क़ुरआन पढ़ा जाता है तो सजद: नहीं करते ।22।

وَاِذَا قُرِئَ عَلَيۡهِمُ الۡقُرۡاٰنُ لَا يَسۡجُدُوۡنَ ۝٢٢

السجدة ١٣

बल्कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया, झुठला देते हैं ।23।

بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُكَذِّبُوۡنَ ۝٢٣

---

* इस प्रकार के अर्थ के लिए देखें मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.

** आयत सं. 17-20 : अरबी शब्द **फ़ला** से यहाँ यह अभिप्राय नहीं है कि मैं क़सम नहीं खाता, बल्कि इससे तत्कालीन प्रचलित विचारधारा को नकारना है । अल्लाह तआला संध्या की लालिमा को साक्षी ठहराता है और फिर उसके पश्चात जब रात गहरी होने लगे उस समय भी अल्लाह तआला मनुष्य को प्रकाश से पूर्णतया वंचित नहीं करता बल्कि चन्द्रमा को सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने के लिए भेज देता है । और चन्द्रमा भी एक साथ पूरे प्रकाश के साथ नहीं चमकता अर्थात एक बार चौदहवीं का चाँद नहीं बन जाता बल्कि धीरे-धीरे उन्नति करता है । इसी प्रकार चौदहवीं शताब्दी में आने वाला मुजद्दिद (धर्म-सुधारक) भी तेरह शताब्दियों के सुधारकों के पश्चात क्रमश: उन्नति करते हुए पूर्ण चन्द्रमा की भाँति प्रकट होगा ।

وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يُوۡعُوۡنَ ۝٢٤

और अल्लाह सबसे अधिक जानता है जो वे इकट्ठा कर रहे हैं ।24।

فَبَشِّرۡهُمۡ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ۝٢٥

अत: उन्हें पीड़जनक अज़ाब का शुभ-समाचार दे दे ।25।

اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ۝٢٦

सिवाय उन लोगों के, जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, उनके लिए एक अनंत प्रतिफल है ।26। (रुकू $\frac{1}{9}$)

85- सूरः अल-बुरूज

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 23 आयतें हैं।

इस सूरः का पिछली सूरः से यह सम्बन्ध है कि उसमें नए सिरे से इस्लाम के चन्द्रमा के उदय होने का वर्णन था। यह घटना कब घटेगी और इसका उद्देश्य क्या होगा ? याद रहे कि आकाश के बारह नक्षत्र हैं अर्थात बारह सौ वर्षों के पश्चात इस भविष्यवाणी के प्रकट होने का समय आएगा और जिस प्रकार चन्द्रमा सूर्य की गवाही देता है इसी प्रकार एक आने वाला शाहिद (गवाही देने वाला) अपने महान मशहूद (जिसकी गवाही दी जाय) अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गवाही देगा और इस गवाही में उसके सच्चे अनुयायी भी सम्मिलित होंगे। उनका इसके अतिरिक्त कोई अपराध नहीं होगा कि वे आने वाले पर ईमान ले आए परन्तु इसके बावजूद उनको घोर अत्याचारपूर्ण दंड दिये जायेंगे, यहाँ तक कि उन्हें अग्नि में जलाया जाएगा और देखने वाले आराम से उसका तमाशा देखेंगे। बिल्कुल इसी प्रकार की घटनाएँ पाकिस्तान में निष्ठावान अहमदियों के विरुद्ध लगातार घटित हो रही हैं।

इस सूरः के अन्त पर इस बात की कड़ी चेतावनी दी गई है कि पहली जातियों ने भी जब इस प्रकार के अत्याचार किए थे तो उन्हें उनके अत्याचारों ने घेर लिया था। अतः उस क़ुरआन की क़सम है जो सुरक्षित पट्टिका में है कि तुम भी अपने अपराधों का दंड अवश्य पाओगे।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿٢﴾

क़सम है नक्षत्रों वाले आकाश की ।2।

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٣﴾

और प्रतिश्रुत दिवस की ।3।

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٤﴾

और एक गवाही देने वाले की और उसकी जिसकी गवाही दी जाएगी ।4।

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٥﴾

खाइयों वाले विनष्ट कर दिए जाएँगे ।5।

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿٦﴾

अर्थात उस अग्नि वाले जो बहुत ईंधन वाली है ।6।

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٧﴾

जब वे उसके गिर्द बैठे होंगे ।7।

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿٨﴾

और वे उस पर साक्षी होंगे जो वे मोमिनों से करेंगे ।8।*

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿٩﴾

और वे उनसे केवल इसलिए द्वेष रखते थे कि वे पूर्ण प्रभुत्व वाले, स्तुति योग्य अल्लाह पर ईमान ले आए ।9।

---

* आयत सं. 5 से 8 : इन आयतों में उन लोगों के विनाश की भविष्यवाणी की गई है जिन्होंने खाई में आग जलाई थी और उसमें मोमिनों को फेंक कर बैठे उनका तमाशा देखते थे । इन आयतों में यह भविष्यवाणी निहित है कि यह घटना आगे आने वाले समय में भी घटेगी और वह समय मसीह मौऊद का युग होगा । अत: निश्चित रूप से यह भविष्यवाणी उन निर्दोष अहमदियों के ऊपर पूरी हुई, जिनको घरों में ज़िंदा जलाने का प्रयास किया गया । अरबी शब्द **कुऊद** बताता है कि लोग बैठे तमाशा देखते रहे और अत्याचारियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई । अत: यह महान भविष्यवाणी इस रंग में कई बार पूरी हो चुकी है कि पुलिस की देख-रेख में दंगाइयों ने निर्दोष अहमदियों को ज़िंदा जलाने का प्रयास किया और कई बार सफल हो गए और कई बार असफल भी रहे।

الَّذِیۡ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ شَهِیۡدٌ ؕ﴿۱۰﴾

जिसका आकाशों और धरती में शासन है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है ।10।

اِنَّ الَّذِیۡنَ فَتَنُوا الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ ثُمَّ لَمۡ یَتُوۡبُوۡا فَلَهُمۡ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمۡ عَذَابُ الۡحَرِیۡقِ ؕ﴿۱۱﴾

नि:सन्देह वे लोग जिन्होंने मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को परीक्षा में डाला फिर प्रायश्चित नहीं किया तो उनके लिए नरक का अज़ाब है और उनके लिए अग्नि का अज़ाब (निश्चित) है ।11।

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ جَنّٰتٌ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ۬ؕ ذٰلِكَ الۡفَوۡزُ الۡكَبِیۡرُ ؕ﴿۱۲﴾

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए ऐसे स्वर्ग हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं । यह बहुत बड़ी सफलता है ।12।

اِنَّ بَطۡشَ رَبِّكَ لَشَدِیۡدٌ ؕ﴿۱۳﴾

नि:सन्देह तेरे रब्ब की पकड़ बहुत कठोर है ।13।

اِنَّهٗ هُوَ یُبۡدِئُ وَیُعِیۡدُ ۚ﴿۱۴﴾

नि:सन्देह वही आरम्भ करता है और दोहराता भी है ।14।

وَهُوَ الۡغَفُوۡرُ الۡوَدُوۡدُ ۙ﴿۱۵﴾

जब कि वह बहुत क्षमा करने वाला और बहुत प्रेम करने वाला है ।15।

ذُو الۡعَرۡشِ الۡمَجِیۡدُ ۙ﴿۱۶﴾

अर्श का स्वामी और परम पूजनीय है ।16।

فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیۡدُ ؕ﴿۱۷﴾

जो चाहता है उसे अवश्य करके रहता है ।17।

هَلۡ اَتٰىكَ حَدِیۡثُ الۡجُنُوۡدِ ۙ﴿۱۸﴾

क्या तुझ तक सेनाओं का समाचार पहुँचा है ? ।18।

فِرۡعَوۡنَ وَثَمُوۡدَ ؕ﴿۱۹﴾

फ़िरऔन और समूद का ।19।

بَلِ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا فِیۡ تَكۡذِیۡبٍ ۙ﴿۲۰﴾

बल्कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया वे झुठलाने में ही (लगे) रहते हैं ।20।

وَّاللّٰهُ مِنۡ وَّرَآئِهِمۡ مُّحِیۡطٌ ۚ﴿۲۱﴾

जबकि अल्लाह उनके आगे-पीछे से घेरा डाले हुए है ।21।

बल्कि वह तो एक गौरवशाली क़ुरआन है ।22।	بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۙ﴿٢٢﴾
और एक सुरक्षित पट्टिका में है ।23। (रुकू $\frac{1}{10}$)	فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٣﴾

86- सूरः अत-तारिक़

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 18 आयतें हैं ।

इसमें सूरः अल्-बुरूज के विषयवस्तु को ही आगे बढ़ाया गया है और यह भविष्यवाणी की गई है कि उस अंधेरी रात में अल्लाह तआला अपने आकाशीय प्रहरियों को नियुक्त करेगा जो उन पीड़ित भक्तों की सहायता करेंगे । मनुष्य इस बात पर क्यों विचार नहीं करता कि वह एक उछलने वाला और डींगे मारने वाला जीव ही तो है । अतः अन्ततोगत्वा वह अवश्य अपने दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप पकड़ा जाएगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के इस दौर के अनुयायिओं को यह आदेश है कि ये लोग कुछ देर और शरारतें कर लें, अन्ततः ये पकड़े जाएँगे । अतः प्रतीक्षा करो और इनको कुछ ढील दे दो ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانِيَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ②

क़सम है आकाश की और रात को प्रकट होने वाले की ।2।*

وَمَآ اَدۡرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ③

और तुझे क्या मालूम कि रात को प्रकट होने वाला क्या है ? ।3।

النَّجۡمُ الثَّاقِبُ ④

बहुत चमकता हुआ नक्षत्र ।4।

اِنۡ كُلُّ نَفۡسٍ لَّمَّا عَلَيۡهَا حَافِظٌ ⑤

कोई (एक) प्राणी भी नहीं जिस पर कोई प्रहरी न हो ।5।

فَلۡيَنۡظُرِ الۡاِنۡسَانُ مِمَّ خُلِقَ ⑥

अतः मनुष्य ध्यान दे कि उसे किस चीज़ से पैदा किया गया ।6।

خُلِقَ مِنۡ مَّآءٍ دَافِقٍ ⑦

उछलने वाले पानी से पैदा किया गया।7।

يَّخۡرُجُ مِنۡۢ بَيۡنِ الصُّلۡبِ وَالتَّرَآئِبِ ⑧

जो पीठ और पसलियों के बीच से निकलता है ।8।

اِنَّهٗ عَلٰى رَجۡعِهٖ لَقَادِرٌ ⑨

निःसन्देह वह उसके वापस ले जाने पर अवश्य समर्थ है ।9।

يَوۡمَ تُبۡلَى السَّرَآئِرُ ⑩

जिस दिन गुप्त बातें प्रकट की जाएँगी ।10।

فَمَا لَهٗ مِنۡ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ⑪

अतः न तो उसे कोई शक्ति प्राप्त होगी और न ही कोई सहायक होगा।11।

---

* इस सूरः के आरम्भ में ही रात को आने वाले चिह्न की गवाही दी गई है । इससे आगे की आयतों से यह स्पष्ट होता है कि वह चमकता हुआ नक्षत्र होगा । चमकते हुए नक्षत्र से यही प्रतीत होता है कि आग बरसाने वाली लपटें आसमान से बरसेंगी ।

क़सम है मूसलाधार वर्षा युक्त आकाश की ।12।*	وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجۡعِ ۙ﴿۱۲﴾
और हरियाली उगाने वाली धरती की।13।**	وَالۡاَرۡضِ ذَاتِ الصَّدۡعِ ۙ﴿۱۳﴾
नि:सन्देह वह एक निर्णायक वाणी है।14।	اِنَّهٗ لَقَوۡلٌ فَصۡلٌ ۙ﴿۱۴﴾
और वह कदापि कोई अशिष्ट वाणी नहीं है ।15।	وَّمَا هُوَ بِالۡهَزۡلِ ﴿ؕ۱۵﴾
नि:सन्देह वे कोई चाल चलेंगे ।16।	اِنَّهُمۡ يَكِيۡدُوۡنَ كَيۡدًا ۙ﴿۱۶﴾
और मैं भी एक चाल चलूँगा ।17।	وَّاَكِيۡدُ كَيۡدًا ۚ﴿ۖ۱۷﴾
अत: काफ़िरों को ढील दे । उन्हें एक समय तक ढील दे दे ।18। (रुकू $\frac{1}{11}$)	فَمَهِّلِ الۡكٰفِرِيۡنَ اَمۡهِلۡهُمۡ رُوَيۡدًا ﴿ع۱۸﴾

---

* अरबी शब्द **अर्रज्उ** का अर्थ मूसलाधार वर्षा है । (अल् मुन्जिद, अल अक़रब)

** अरबी शब्द **अस सद्उ** का अर्थ धरती की हरियाली है । (अल अक़रब)

87- सूरः अल-आ'ला

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ में ही यह शुभ-समाचार दे दिया गया है कि अल्लाह तआला का नाम और अल्लाह वालों का नाम ही सर्वोपरि सिद्ध होगा। अतः यह आदेश दिया गया है कि उपदेश करते चले जाओ। यद्यपि उपदेश आरम्भ में असफल होता दिखाई देगा परन्तु अन्ततोगत्वा लाभजनक सिद्ध होगा। फिर मनुष्य को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि तुम उपदेश से लाभहीन इस लिए होते हो कि तुम ने संसार के जीवन को परलोक के जीवन पर श्रेष्ठता दे दी है हालाँकि परलोक ही भलाई और चिरस्थायी घर है।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿٢﴾

अपने महामहिम रब्ब के नाम का प्रत्येक अवगुण से पवित्र होना वर्णन कर ।2।

الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣﴾

जिसने पैदा किया फिर ठीक-ठाक किया ।3।

وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى ﴿٤﴾

और जिसने (भिन्न-भिन्न तत्वों को) मिश्रित किया, फिर हिदायत दी ।4।

وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٥﴾

और जिसने जीवन रक्षा के लिए हरियाली उगाई ।5।*

فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ﴿٦﴾

फिर उसे (अनादर करने वालों) के लिए काला कूड़ा-कर्कट बना दिया ।6।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ﴿٧﴾

हम अवश्य तुझे पढ़ना सिखाएँगे फिर तू नहीं भूलेगा ।7।

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ﴿٨﴾

सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे । नि:सन्देह वह प्रकाश्य को जानता है और उसे भी जो अप्रकाश्य है ।8।**

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٩﴾

और हम तुझे सरलता प्रदान करेंगे ।9।

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿١٠﴾

अत: उपदेश कर । उपदेश अवश्य लाभ देता है ।10।

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿١١﴾

जो डरता है, वह अवश्य उपदेश ग्रहण करेगा ।11।

---

* इस प्रकार के अर्थ के लिए देखिए : मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि. ।

** आयत सं. 7, 8 यहाँ जिस भूलने का वर्णन है उस से यह तात्पर्य नहीं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुरआन भूल जाते थे । वस्तुत: इस से अभिप्राय वह भूल-चूक है जो नमाज़ में क़ुरआन पाठ करते हुए कई बार हो जाती है । जिसके लिए यह आदेश है कि यदि कोई शब्द अनजाने में भूल पढ़ा जाए तो पीछे खड़े हुए नमाज़ी उसे ठीक कर दें ।

وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝١٢

और बड़ा भाग्यहीन (व्यक्ति) उससे बचेगा ।12।

الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝١٣

जो सबसे बड़ी अग्नि में प्रविष्ट होगा।13।

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝١٤

फिर वह उसमें न मरेगा और न जिएगा ।14।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝١٥

जो पवित्र बना नि:सन्देह वह सफल हो गया ।15।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝١٦

और अपने रब्ब के नाम का स्मरण किया और नमाज़ पढ़ी ।16।

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝١٧

वास्तव में तुम तो सांसारिक जीवन को श्रेष्ठता देते हो ।17।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝١٨

हालाँकि परलोक उत्तम और चिरस्थायी है ।18।

اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝١٩

नि:सन्देह यह पूर्ववर्ती ग्रन्थों में भी है।19।

صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝٢٠

इब्राहीम और मूसा के ग्रन्थों में ।20।*

(रुकू $\frac{1}{12}$)

---

* आयत सं. 19-20 : यहाँ कुरआन करीम के सम्बन्ध में कहा गया है कि उसने पिछले ग्रन्थों की प्रत्येक उत्तम शिक्षा को अपने अन्दर एकत्रित कर लिया है । इब्राहीम अलै. के ग्रन्थ में से उत्तम शिक्षा इसमें मौजूद है और मूसा के ग्रन्थ में से भी ।

88– सूरः अल–ग़ाशियः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 27 आयतें हैं ।

इस सूरः में लगातार आने वाले ऐसे अज़ाबों का वर्णन है जो ढाँप देंगे और उस दिन कई चेहरे बहुत भयभीत होंगे और कठिन परिश्रम में पड़ेंगे और थक कर चूर हो जाएँगे । वे भड़कने वाली अग्नि में प्रविष्ट होंगे और उनका भोजन थूहर के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा जो न उन्हें हृष्ट-पुष्ट कर सकेगा न उनकी भूख मिटा सकेगा । यह एक आलंकारिक वर्णन है जो थूहर पर लगने वाले फल के प्रभाव की ओर संकेत कर रहा है जो दिखने में मीठे लगते हैं परंतु खाने वालों को अंततोगत्वा बहुत कष्ट पहुँचाते हैं ।

इसके बाद अवशिष्ट सूरः परकालीन जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन कर के अन्त पर उस हिसाब का उल्लेख करती है जिसके लिए मनुष्य को अवश्य अल्लाह तआला के समक्ष पेश होना होगा ।

इस सूरः की अन्तिम आयत पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का अनुसरण करते हुए सामुहिक नमाज़ में सम्मिलित सब नमाज़ी कुछ ऊँची आवाज़ में यह दुआ करते हैं कि ''हे अल्लाह ! हमसे आसान हिसाब लेना ।''

☆☆☆

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَّ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿٢﴾

क्या तुझे मतवाला कर देने वाली (घड़ी) का समाचार पहुँचा है ? ।2।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٣﴾

कुछ चेहरे उस दिन अत्यन्त भयभीत होंगे ।3।*

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٤﴾

(अर्थात इससे पूर्व संसार की तलाश में) कठोर परिश्रम करने वाले (और) थक कर चूर हो जाने वाले ।4।

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٥﴾

वह धधकती हुई अग्नि में प्रविष्ट होंगे ।5।

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٦﴾

एक खौलते हुए स्रोत से उन्हें पिलाया जाएगा ।6।

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٧﴾

उनके लिए थूहर से बने भोजन के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा ।7।

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٨﴾

न वह हृष्ट-पुष्ट करेगा और न भूख से मुक्ति दिलाएगा ।8।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٩﴾

कुछ चेहरे उस दिन तरो-ताज़ा होंगे ।9।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿١٠﴾

अपने प्रयासों पर बहुत प्रसन्न ।10।

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١١﴾

एक अत्युच्च स्वर्ग में ।11।

لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ﴿١٢﴾

तू उसमें कोई अशिष्ट बात नहीं सुनेगा ।12।

فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٣﴾

उसमें एक बहता हुआ स्रोत होगा ।13।

* अरबी शब्द **ख़ाशियतुन** के इन अर्थों के लिए देखिए : ताज-उल-उरूस ।

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٤﴾	उसमें ऊँचे बिछाए हुए पलंग होंगे ।14।
وَّأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٥﴾	और (ढंग से) चुने हुए प्याले ।15।
وَّنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ﴿١٦﴾	और पंक्तिबद्ध लगाए हुए तकिए ।16।
وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ﴿١٧﴾	और बिछाए हुए आसन ।17।
أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٨﴾	क्या वे ऊँटों की ओर नहीं देखते कि कैसे पैदा किए गए ? ।18।
وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٩﴾	और आकाश की ओर, कि उसे कैसे ऊँचाई दी गई ? ।19।
وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿٢٠﴾	और पर्वतों की ओर कि वे कैसे दृढ़ता पूर्वक गाड़े गए ? ।20।
وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢١﴾	और धरती की ओर कि वह कैसे समतल बनाई गई ? ।21।
فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢٢﴾	अत: बहुत अधिक उपदेश कर । तू केवल एक बार-बार उपदेश करने वाला है ।22।
لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٣﴾	तू उन पर दारोग़ा नहीं ।23।
إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٤﴾	हाँ वह जो पीठ फेर जाए और इनकार कर दे ।24।
فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٥﴾	तो उसे अल्लाह सबसे बड़ा अज़ाब देगा।25।
إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٦﴾	नि:सन्देह हमारी ओर ही उनका लौटना है ।26।
ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ﴿٢٧﴾	नि:सन्देह फिर हम पर ही उनका हिसाब है ।27। (रुकू $\frac{1}{13}$)

89- सूरः अल-फ़ज्र

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं ।

इस सूरः का नाम अल्-फ़ज्र (सवेरा) है और सवेरा के उदय होने पर दस रातों को साक्षी ठहराया गया है । फिर दो और एक को भी साक्षी ठहराया गया है जो कुल तेरह बनते हैं । ये तेरह वर्ष आरम्भिक मक्की दौर की ओर संकेत कर रहे हैं जिसके बाद हिजरत का सवेरा उदय होना था ।

इन आयतों की और भी बहुत सी व्याख्याएँ की गई हैं जिनमें अंत्ययुगीनों के समय उदय होने वाले एक सवेरा का भी संकेत मिलता है । परन्तु प्रथमोक्त सवेरा का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है । इस लिए उसी के वर्णन को पर्याप्त समझते हैं ।

इस सूरः की शेष आयतों में मानव जाति की सेवा करने की प्रेरणा दी गई है । वर्णन किया गया है कि निर्धनों और उत्पीड़ित जातियों को आज़ादी दिलाने के लिए जो भी प्रयास करेगा उसके लिए शुभ-समाचार है कि वह महान प्रतिफल पाएगा । सबसे बड़ा शुभ-समाचार अन्तिम आयत में यह दिया गया है कि वह इस अवस्था में मरेगा कि अल्लाह तआला उसकी आत्मा को यह कहते हुए अपनी ओर बुलाएगा कि हे वह आत्मा! जो मेरे बारे में पूर्णतया संतुष्ट हो चुकी थी, केवल संतुष्ट ही नहीं थी बल्कि मेरी प्रसन्नता भी उसको प्राप्त थी, अब मेरे भक्तों में शामिल हो जा और उस स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा जो मेरे भक्तों का स्वर्ग है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ ثَلَاثُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
وَالْفَجْرِ ﴿٢﴾	क़सम है सवेरा की ।2।
وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٣﴾	और दस रातों की ।3।
وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٤﴾	और युगल की और एकल की ।4।
وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ﴿٥﴾	और रात की जब वह चल पड़े ।5।
هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٦﴾	क्या इसमें किसी बुद्धिमान के लिए कोई क़सम है ? ।6।*
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٧﴾	क्या तूने देखा नहीं कि तेरे रब्ब ने आद (जाति) के साथ क्या किया ? ।7।
اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٨﴾	(अर्थात् आद की शाखा) इरम के साथ, जो बड़े-बड़े स्तम्भों वाले थे ।8।
الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٩﴾	जिन के जैसा निर्माण कुल देशों में कभी नहीं किया गया ।9।

* आयत सं. 2 से 6 : इन आयतों में बुद्धिमानों के लिए एक भविष्यवाणी प्रस्तुत की गई है । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने का दावा करने के पश्चात आपका मक्की जीवनकाल तेरह वर्ष तक फैला रहा । अन्तिम दस वर्ष जिनमें विपत्तियों के अंधेरे बढ़ते चले गए जिनके बाद सवेरा निकलने का शुभ-समाचार दिया गया था । यह वह समय था जिसमें मक्का के काफ़िर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अत्याचार करने में लगातार आगे बढ़ते रहे, यहाँ तक कि आप पर हिजरत का सवेरा प्रकट हो गया । इस विषयवस्तु को कुछ भाष्यकारों ने इस प्रकार भी वर्णन किया है कि युगल और एकल से अभिप्राय इस्लाम की प्रथम तीन शताब्दियाँ हैं । अर्थात सहाबा, ताबयीन और तबअ् ताबयीन का समय । इसके पश्चात दस रातें अर्थात नैतिक पतन के एक हज़ार वर्ष का समय इस्लाम पर बहुत अन्धकारमय युग आएगा और फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार इस्लाम का अनुयायी, शरीअत विहीन एक नबी ने प्रकट होना था । यह समय चौदहवीं शताब्दी हिजरी के आरम्भ तक फैला हुआ है जिसमें मसीह मौऊद का आविर्भाव हुआ ।

وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿١٠﴾	और समूद (जाति) के साथ, जिन्होंने घाटी में चट्टानें तराशी थीं ।10।
وَفِرْعَوْنَ ذِى الْاَوْتَادِ ﴿١١﴾	और फ़िरऔन के साथ, जो कील-काँटों से लेस था ।11।
الَّذِيْنَ طَغَوْا فِى الْبِلَادِ ﴿١٢﴾	(ये) वे लोग (थे) जिन्होंने देशों में उपद्रव किया ।12।
فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ﴿١٣﴾	और उनमें बहुत अधिक उपद्रव किया।13।
فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٤﴾	अतः तेरे रब्ब ने अज़ाब का कोड़ा उन पर बरसाया ।14।
اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٥﴾	निश्चित रूप से तेरा रब्ब घात में था।15।
فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَكْرَمَنِ ﴿١٦﴾	अतः मनुष्य का स्वभाव यह है कि जब उसका रब्ब उसकी परीक्षा करता है, फिर उसे सम्मान देता है । और उसे नेमत प्रदान करता है तो वह कहता है, मेरे रब्ब ने मेरा सम्मान किया है ।16।
وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَهَانَنِ ﴿١٧﴾	और इसके विपरीत जब वह उसकी परीक्षा करता और उसकी जीविका उस पर संकुचित कर देता है । तो वह कहता है, मेरे रब्ब ने मेरा अपमान किया है ।17।
كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٨﴾	सावधान ! वास्तव में तुम अनाथ का सम्मान नहीं करते ।18।
وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿١٩﴾	और न ही दरिद्र को भोजन कराने की एक दूसरे को प्रेरणा देते हो ।19।
وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ﴿٢٠﴾	और तुम सारे का सारा विर्सा (उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति) हड़प कर जाते हो ।20।
وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢١﴾	और धन से बहुत अधिक प्रेम करते हो ।21।

كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۙ﴿٢٢﴾

सावधान ! जब धरती कूट-कूट कर कण-कण कर दी जाएगी ।22।

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ﴿٢٣﴾

और तेरा रब्ब आएगा और पंक्तिबद्ध फ़रिश्ते भी ।23।

وَجِایْٓءَ يَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ۬ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ؕ﴿٢٤﴾

और उस दिन नरक को लाया जाएगा। उस दिन मनुष्य उपदेश ग्रहण करना चाहेगा, परन्तु अब उपदेश प्राप्त करना उसके लिए कहाँ संभव होगा ? ।24।

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِىْ ۚ﴿٢٥﴾

वह कहेगा, काश ! मैंने अपने जीवन के लिए (कुछ) आगे भेजा होता ।25।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗۤ اَحَدٌ ۙ﴿٢٦﴾

अत: उस दिन उस जैसा अज़ाब (उसे) कोई और न देगा ।26।

وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗۤ اَحَدٌ ؕ﴿٢٧﴾

और कोई उस जैसी मुश्कें नहीं बाँधेगा ।27।

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۖ﴿٢٨﴾

हे संतुष्ट आत्मा ! ।28।

ارْجِعِىْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۚ﴿٢٩﴾

अपने रब्ब की ओर प्रसन्न होते हुए और (उसकी) प्रसन्नता पाते हुए लौट जा ।29।

فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْ ۙ﴿٣٠﴾

अत: मेरे भक्तों में प्रविष्ट हो जा ।30।

وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ ع﴿٣١﴾

और मेरे स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा ।31।*

(रुकू $\frac{1}{14}$)

✲ आयत सं. 28-31 : इन आयतों में उन मोमिनों को शुभ-समाचार दिया गया है जिनको मृत्यु से पूर्व अल्लाह तआला की ओर से यह कहा जाएगा कि हे संतुष्ट आत्मा ! अपने रब्ब के समक्ष इस अवस्था में उपस्थित हो जाओ कि तुम उससे प्रसन्न हो और वह तुम से प्रसन्न हो । यद्यपि आयत सं. 28 में **आत्मा** के लिए **नफ़्स** प्रयुक्त किया गया है जो अरबी में स्त्री लिंग शब्दरूप है । परन्तु आयत सं. 30 में पुलिंग शब्द **इबादी** (मेरे भक्तों) उल्लेख करके यह बताया कि वस्तुत: आत्मा न तो स्त्री है न पुरुष । इसी बात को कहा कि मेरे भक्तों में प्रविष्ट हो जा और मेरे उस स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा जिसे मैंने अपने विशेष भक्तों के लिए तैयार किया हुआ है ।

90– सूरः अल–बलद

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 21 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में मक्का की जिन रातों को साक्षी ठहराया गया था उसी मक्का का वर्णन इस सूरः में फिर से दोबारा आरम्भ कर दिया गया है । अल्लाह तआला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहता है कि मैं इस नगर को उस समय तक साक्षी ठहराता हूँ जब तक तू इसमें है । जब तुझे इस नगर के निवासी यहाँ से निकाल देंगे तब यह नगर शांतिदायक नहीं रहेगा ।

इसके बाद आने वाली पीढ़ियों को साक्षी ठहराया गया है कि मनुष्य के भाग्य में लगातार परिश्रम करना लिखा है । जब उसे नुबुव्वत का प्रकाश प्रदान किया जाता है तो उसके सामने धार्मिक और सांसारिक उन्नति के दो मार्ग खोले जाते हैं । परन्तु मनुष्य परिश्रम का मार्ग अपना कर धार्मिक और सांसारिक ऊँचाइयों की ओर न चढ़कर ढलान का सरल मार्ग अपनाता है और पतन की ओर चला जाता है । यहाँ ऊँचाई पर चढ़ने के विषयवस्तु को खोल कर बता दिया गया कि इससे किसी पर्वत पर चढ़ना अभिप्राय नहीं बल्कि जब निर्धन जातियों को भूख सताए और कई जातियों को दास बना लिया जाए, उस समय यदि कोई उनको उस से मुक्त कराने के लिए प्रयास करे और भूख के मारों और निर्धनों को अपने पाँवों पर खड़ा करने के लिए प्रयत्न करे तो वही लोग ऊँचाइयों की ओर चढ़ने वाले हैं । परन्तु यह लक्ष्य ऐसा है कि एक दो दिन में प्राप्त होने वाला नहीं । उसके लिए निरन्तर धैर्य से काम लेते हुए धैर्य करने का उपदेश देना पड़ेगा और निरन्तर दया से काम लेते हुए दया का उपदेश देना पड़ेगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدٰى وَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿١﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

لَاۤ اُقۡسِمُ بِهٰذَا الۡبَلَدِ ۙ﴿٢﴾

सावधान ! मैं इस नगर की क़सम खाता हूँ ।2।

وَاَنۡتَ حِلٌّ ۢ بِهٰذَا الۡبَلَدِ ۙ﴿٣﴾

जबकि तू इस नगर में (एक दिन) उतरने वाला है ।3।

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۙ﴿٤﴾

और पिता की और जो उसने संतान पैदा की ।4।

لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِىۡ كَبَدٍ ؕ﴿٥﴾

निःसन्देह हमने मनुष्य को एक लगातार परिश्रम में (लगे रहने के लिए) पैदा किया ।5।

اَيَحۡسَبُ اَنۡ لَّنۡ يَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ اَحَدٌ ۘ﴿٦﴾

क्या वह धारणा करता है कि उस पर कदापि कोई प्रभुत्व नहीं पा सकेगा ।6।

يَقُوۡلُ اَهۡلَكۡتُ مَالًا لُّبَدًا ؕ﴿٧﴾

वह कहता है मैंने ढेरों धन लुटा दिया ।7।

اَيَحۡسَبُ اَنۡ لَّمۡ يَرَهٗۤ اَحَدٌ ؕ﴿٨﴾

क्या वह समझता है कि उसे किसी ने नहीं देखा ? ।8।

اَلَمۡ نَجۡعَلۡ لَّهٗ عَيۡنَيۡنِ ۙ﴿٩﴾

क्या हम ने उसके लिए दो आँखें नहीं बनाईं ? ।9।

وَلِسَانًا وَّشَفَتَيۡنِ ۙ﴿١٠﴾

और जिह्वा और दो होंठ ? ।10।

وَهَدَيۡنٰهُ النَّجۡدَيۡنِ ۚ﴿١١﴾

और हमने उसे दो ऊँचे मार्गों की ओर हिदायत दी ।11।

فَلَا اقۡتَحَمَ الۡعَقَبَةَ ۖ﴿١٢﴾

अतः वह **अक़बः** पर नहीं चढ़ा ।12।

وَمَاۤ اَدۡرٰٮكَ مَا الۡعَقَبَةُ ؕ﴿١٣﴾

और तुझे क्या मालूम कि **अक़बः** क्या है? ।13।

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٤﴾	गर्दन (अर्थात दास) मुक्त करना ।14।
اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٥﴾	अथवा एक साधारण भूख के दिन भोजन कराना ।15।
يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٦﴾	ऐसे अनाथ को जो निकट सम्पर्कीय हो ।16।
اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٧﴾	अथवा ऐसे दरिद्र को जो धूल-धूसरित हो ।17।
ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٨﴾	फिर वह उनमें से बन जाए जो ईमान ले आए और धैर्य पर डटे रहते हुए एक दूसरे को धैर्य का उपदेश करते हैं । और दया करने पर डटे रहते हुए एक दूसरे को दया का उपदेश देते हैं ।18।
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٩﴾	ये ही दाहिनी ओर वाले हैं ।19।
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿٢٠﴾	और वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार कर दिया वे बाईं ओर वाले हैं ।20।
عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢١﴾ ع	उन पर (लपकने के लिए) एक बन्द की हुई आग (निश्चित) है ।21।

(रुकू $\frac{1}{15}$)

91– सूर: अश–शम्स

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 16 आयतें हैं ।

इसमें एक बार फिर यह भविष्यवाणी की गई कि इस्लाम का सूर्य एक बार फिर उदय होगा और वह चन्द्रमा फिर चमकेगा जो इस सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होगा । फिर एक सवेरा उदय होगा और उसके पश्चात फिर एक अन्धेरी रात छा जाएगी । अर्थात कोई सवेरा ऐसा नहीं हुआ करता जिसके पश्चात अज्ञानता के अंधेरे मानवजाति को घेर न लें ।

फिर यह घोषणा की गई है कि प्रत्येक जान को अल्लाह तआला ने न्याय के साथ पैदा किया है और उसे अपने अच्छे बुरे की पहचान बता दी गई है । जिसने अपनी प्राप्त योग्यताओं को आगे बढ़ाया वह सफल हो जाएगा और जिसने अपनी प्राप्त योग्यताओं को मिट्टी में गाड़ दिया वह बर्बाद हो जाएगा ।

इसके बाद समूद जाति और उसके रसूल की ऊँटनी का वर्णन है । संभव है इसमें उस ओर संकेत हो कि हज़रत सालेह अलै. जिस ऊँटनी पर सवार होकर संदेश पहुँचाने के लिए यात्रा किया करते थे, जब उस संप्रदाय के लोगों ने उस ऊँटनी की कूँचें काट डालीं तो फिर उन पर बहुत बड़ी तबाही आई । अत: नबियों के शत्रु जब भी संदेश प्रसारण के इन साधनों को काटते हैं जिनके द्वारा हिदायत का संदेश पहुँचाया जाता है तो वे भी सदैव विनष्ट कर दिए जाते हैं ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتَّ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ②

क़सम है सूर्य की और उसकी धूप की ।2।

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ③

और चन्द्रमा की जब वह उसके पीछे आए ।3।

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ④

और दिन की जब वह उस (अर्थात सूर्य) को ख़ूब उज्ज्वल कर दे ।4।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ⑤

और रात की जब वह उसे ढाँप ले ।5।

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ⑥

और आसमान की और जैसे उसने उसे बनाया ।6।

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ⑦

और धरती की और जैसे उसने उसे बिछाया ।7।

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ⑧

और प्रत्येक जान की और जैसे उसने उसे ठीक-ठाक किया ।8।

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ⑨

अत: उसके दुराचारों और उसके सदाचारों (की पहचान करने की क्षमता) को उसकी प्रकृति में जमा दिया ।9।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ⑩

जिसने उस (तक़वा) को उन्नत किया, नि:सन्देह वह सफल हो गया ।10।

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ⑪

और जिसने उसे मिट्टी में गाड़ दिया वह असफल हो गया ।11।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ⑫

समूद (जाति) ने अपनी उद्दण्डता के कारण झुठला दिया ।12।

اِذِ انْبَعَثَ اَشْقٰىهَا ⑬

जब उनमें से सर्वाधिक भाग्यहीन व्यक्ति उठ खड़ा हुआ ।13।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۭ﴿١٤﴾

तब अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा, अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पीने का अधिकार (याद रखना) ।14।

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۽﴿١٥﴾

फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया और उस (ऊँटनी) की कूँचें काट डालीं । तब उनके पापों के कारण उनके रब्ब ने उन पर लगातार प्रहार किया और उस (बस्ती) को समतल कर दिया ।15।

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٦﴾ ع

जबकि वह उसके अंत की कोई परवाह नहीं कर रहा था ।16। (रुकू $\frac{1}{16}$)

92– सूरः अल–लैल

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 22 आयतें हैं ।

सूरः अश-शम्स के बाद सूरः अल्-लैल आती है जैसे दिन के बाद रात आया करती है । यह कोई साधारण रात नहीं बल्कि इस सूरः में रात के आध्यात्मिक पहलू को उत्तम ढंग से प्रस्तुत किया गया है । साथ ही यह भी शुभ-समाचार दिया गया है कि जब रात आएगी तो फिर दिन भी अवश्य चढ़ेगा । फ़र्माया, जैसे दिन और रात के प्रभाव भिन्न-भिन्न होते हैं इसी प्रकार मनुष्य के प्रयास भी या तो रात की भाँति अन्धकारमय होते हैं अथवा दिन की भाँति उज्ज्वल । प्रत्येक मनुष्य को उसके अपने कर्मों और दृष्टिकोण के अनुसार प्रतिफल दिया जाता है । अतः वे लोग जो अल्लाह का तक़्वा धारण करके उसके मार्ग पर और दरिद्र-कल्याण पर खर्च करते हैं और जब अच्छी बात उनके पास पहुँचे तो उसका समर्थन करते हैं, तो अल्लाह तआला उनके रास्ते सरल कर देगा । उसके मुक़ाबले पर वह व्यक्ति जो कंजूसी से काम ले और इस बात से बे-परवाह हो कि उसके क्या परिणाम निकलेंगे तथा जब भलाई की बात उसके पास पहुँचे तो उसको झुठला दे, तो हम उसकी जीवन-यात्रा कठिन बना देंगे ।

इसी प्रकार सूरः के अन्त में दुराचारी व्यक्ति को, जिसके अवगुण ऊपर वर्णित हैं धधकती हुई अग्नि में डाले जाने से डराया गया है । इसी प्रकार वह व्यक्ति उस अग्नि से अवश्य बचाया जाएगा जिसने अपना धन नेक-कर्मों पर खर्च किया और तक़्वा को अपनाया ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَانِ وَ عِشْرُوْنَ ايَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ②	क़सम है रात की जब वह ढाँप ले ।2।
وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ③	और दिन की जब वह उज्ज्वल हो जाए ।3।
وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ④	और उसकी, जो उसने पुरुष और स्त्री पैदा किए ।4।
اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ⑤	तुम्हारा प्रयास नि:सन्देह भिन्न-भिन्न है ।5।
فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ⑥	अत: वह जिसने (सन्मार्ग में) दान किया और तक़वा धारण किया ।6।
وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ⑦	और सर्वोत्तम नेकी की पुष्टि की ।7।
فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ⑧	तो हम उसे अवश्य बहुतायत प्रदान करेंगे ।8।
وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ⑨	और जहाँ तक उसका सम्बन्ध है, जिसने कंजूसी की और बे-परवाही की ।9।
وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ⑩	और सर्वोत्तम नेकी को झुठलाया ।10।
فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ⑪	तो हम उसे अवश्य तंगी में डाल देंगे।11।
وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ⑫	और जब उसका धन नष्ट हो जाएगा और (वह) उसके किसी काम न आएगा ।12।
اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ⑬	नि:सन्देह हिदायत देना हम पर हर हाल में अनिवार्य है ।13।

وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿١٤﴾

और नि:सन्देह अन्त और आदि भी अवश्यमेव हमारे अधिकार में है ।14।

فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ﴿١٥﴾

अत: मैं तुम्हें उस अग्नि से डराता हूँ जो तेज़ भड़कने वाली है ।15।

لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿١٦﴾

उसमें बड़े भाग्यहीन व्यक्ति के सिवा कोई प्रविष्ट नहीं होगा ।16।

الَّذِىْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٧﴾

वह जिसने झुठलाया और पीठ फेर ली ।17।

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٨﴾

जबकि सबसे बड़ा मुत्तक़ी व्यक्ति उससे अवश्य बचाया जाएगा ।18।

الَّذِىْ يُؤْتِىْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ﴿١٩﴾

जो पवित्रता चाहते हुए अपना धन देता है ।19।

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ﴿٢٠﴾

और जिसका (उसकी ओर से) प्रतिफल दिया जा रहा हो उस पर किसी का उपकार नहीं है ।20।

اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿٢١﴾

(यह) केवल अपने सर्वोच्च रब्ब की प्रसन्नता चाहते हुए (खर्च करता है) ।21।

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢٢﴾ ع

और वह अवश्य प्रसन्न हो जाएगा ।22।

(रुकू $\frac{1}{17}$)

93– सूरः अज़–ज़ुहा

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं।

इस सूरः में फिर एक ऐसे दिन का शुभ-समाचार दिया गया है जो अत्यन्त उज्ज्वल हो चुका होगा और फिर एक रात का जो उसके पश्चात फिर आएगी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके यह कहा गया है कि घोर अन्धकारों और कठिनाइयों के समय में अल्लाह तआला तुझे अकेला नहीं छोड़ेगा। और बाद में आने वाला तेरा हर पल पहले से बेहतर होगा और फिर यह शुभ-समाचार है कि तुझे अल्लाह तआला बहुत कुछ प्रदान करेगा। अतः अनाथों से सद्-व्यवहार कर और याचक को झिड़का न कर। और तुझे प्राप्त सुख-संपन्नता को समाप्त हो जाने की भय से मानव जाति से छुपा नहीं। जितना तू अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करता चला जाएगा अल्लाह तआला उसे और भी अधिक बढ़ाता चला जाएगा।

☆☆☆

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَالضُّحٰى ②

क़सम है दिन की जब वह अत्यंत उज्ज्वल हो चुका हो ।2।

وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ③

और रात की जब वह खूब अन्धकारमय हो जाए ।3।

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ④

तुझे तेरे रब्ब ने न परित्याग किया है और न घृणा की है ।4।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ⑤

और नि:सन्देह परवर्ती समय तेरे लिए (हर) पहली (अवस्था) से उत्तम है।5।*

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ⑥

और तेरा रब्ब अवश्य तुझे प्रदान करेगा। फिर तू संतुष्ट हो जाएगा ।6।

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ⑦

क्या उसने तुझे अनाथ नहीं पाया था ? फिर शरण दिया ।7।

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ⑧

और तुझे (सत्य की) तलाश में परेशान (नहीं) पाया ? फिर हिदायत दी ।8।**

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ⑨

और तुझे एक बड़े कुटुम्ब वाला (नहीं) पाया ? फिर धनवान बना दिया ।9।

فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ⑩

अत: जहाँ तक अनाथ का सम्बन्ध है, तू उस पर सख़्ती न कर ।10।

---

* यहाँ जिस परवर्ती समय का पूर्ववर्ती समय से उत्तम होने का वर्णन किया गया है, इससे अभिप्राय यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन का हर आने वाला क्षण है जो हर बीते हुए क्षण से उत्तम था । क्योंकि आप सल्ल. हर पल अल्लाह तआला की ओर अग्रसर थे ।

** आयत सं. 8-9 इन आयतों में अरबी शब्द **ज़ाल्लन्** का अर्थ पथभ्रष्टता नहीं है बल्कि इसका यह अर्थ है कि जो अल्लाह तआला के प्रेम में मानो खो गया हुआ है और शब्द **आइलन** (बड़े कुटुम्ब वाला) आप सल्ल. को आप के भारीसंख्यक अनुयायियों के कारण कहा गया है । किसी नबी को इतने भारीसंख्यक अनुयायी नहीं मिले जितने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिले ।

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنۡهَرۡ ؕ﴿۱۱﴾

और जहाँ तक याचक का प्रश्न है, तू उसे मत झिड़क ।11।

وَاَمَّا بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثۡ ﴿۱۲﴾ ع

और जहाँ तक तेरे रब्ब की नेमत का सम्बन्ध है, तू (उसकी) अधिकता के साथ चर्चा कर ।12।* (रुकू $\frac{1}{18}$)

---

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने जो उपकार और सांसारिक पुरस्कार आप सल्ल. को प्रदान किए थे उनको आपने मानव जाति से छुपाया नहीं बल्कि खुल कर प्रकट किया । जो आध्यात्मिक अनुकम्पा आप पर उतारी गई थी यदि अल्लाह का आप को यह आदेश न होता तो आप उसे अपने में ही गुप्त रखते । जो सांसारिक वरदान आप को दिये गए उसका वर्णन करना इस कारण आवश्यक था ताकि अभावग्रस्त लोग उसके वर्णन से आप सल्ल. की ओर लपकें और उनकी आवश्यकताएँ पूरी हो सकें । उनसे जो उपकारपूर्ण बर्ताव होगा वह ऐसा ही है जैसे अपने घरवालों से किया जाता है जिसके बदले में मनुष्य कोई आभार नहीं चाहता ।

94– सूरः अलम नश्रह

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

इस महान सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सद्‌गुणों के वर्णन करने के पश्चात आप सल्ल. से प्रश्न किया गया है कि क्या हमने तेरा दिल पूरी तरह खोल नहीं दिया ? और अमानत का जो बोझ तूने उठाया हुआ था, अल्लाह ने अपनी कृपा से उसे उतारने का सामर्थ्य प्रदान नहीं किया ? और तेरी चर्चा को उन्नत नहीं कर दिया ? अतः इस स्थायी सत्य को याद रख कि प्रत्येक कठिनाई के बाद एक सरलता उत्पन्न होती है । प्रत्येक कठिनाई के पश्चात एक सरलता उत्पन्न होती है । अर्थात सांसारिक दृष्टि से भी यही सिद्धान्त है और आध्यात्मिक दृष्टि से भी यही सिद्धान्त है । अतः जब तू दिन भर की व्यस्तता से मुक्त हो तो रात को अपने रब्ब के समक्ष खड़े हो जाया कर और उसके प्रेम से मन की शांति प्राप्त कर ।

☆☆☆

سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَكَ صَدۡرَكَ ۝٢

क्या हमने तेरे लिए तेरे सीने को खोल नहीं दिया ? ।2।

وَوَضَعۡنَا عَنۡكَ وِزۡرَكَ ۝٣

और तुझ पर से हमने तेरा बोझ उतार नहीं दिया ? ।3।

الَّذِيۡۤ اَنۡقَضَ ظَهۡرَكَ ۝٤

जिसने तेरी कमर तोड़ रखी थी ।4।

وَرَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ ۝٥

और हमने तेरे लिए तेरे स्मरण को उन्नत कर दिया ।5।

فَاِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۝٦

अत: नि:सन्देह तंगी के साथ सुख-संपन्नता है ।6।

اِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۝٧

निश्चित रूप से तंगी के साथ सुख-संपन्नता है ।7।

فَاِذَا فَرَغۡتَ فَانۡصَبۡ ۝٨

अत: जब तू निवृत्त हो जाए तो तत्पर हो जा ।8।

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارۡغَبۡ ۝٩ ع

और अपने रब्ब ही की ओर मनोनिवेश कर ।9। (रुकू $\frac{1}{19}$)

95- सूर: अत-तीन

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं।

सूर: अल-इन्शिराह (अलम् नश्रह) के पश्चात सूर: अत्-तीन आती है जो वास्तव में आयत **निस्सन्देह तंगी के साथ सुख-संपन्नता है। निश्चित रूप से तंगी के साथ सुख-संपन्नता है।** की व्याख्या है।

इस सूर: में एक असीमित उन्नति का समाचार दिया गया है। इसमें **अंजीर** और **ज़ैतून** को साक्षी ठहराया गया है। अर्थात् आदम और नूह अलै. को और **तूरे सीनीन** अर्थात् हज़रत मूसा अलै. के उस पर्वत को जिस पर अल्लाह तआला की दीप्ति प्रकट हुई और फिर उस **शांतिपूर्ण नगर** (मक्का) को साक्षी ठहराया गया, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लक्ष्यस्थल था। इस प्रकार क्रमबद्ध रूप से आध्यात्मिक उन्नति के साथ यह घोषणा कर दी गई कि इसी प्रकार हमने मनुष्य को निम्नावस्था से उन्नति देते हुए शिखर तक पहुँचाया है। परन्तु जो अभागा इससे लाभ न उठाये उसे हम निम्नावस्था की ओर लौटने वालों में सबसे अधिक नीचे की ओर लौटा दिया करते हैं। इस प्रकार एक अन्तहीन उत्थान-पतन का वर्णन है। परन्तु वे जो ईमान लाएँ और नेक कर्म करें उनकी आध्यात्मिक उन्नतियाँ असीमित होंगी। अत: जो इसके बाद भी धर्म के मामले में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाए तो अल्लाह तआला उसका सर्वोत्तम निर्णय करने वाला है।

☆☆☆

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۱﴾	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ﴿۲﴾	क़सम है अंजीर की और ज़ैतून की ।2।
وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿۳﴾	और सिनाइ पर्वत शृंखला की ।3।
وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ﴿۴﴾	और इस शांति पूर्ण नगर की ।4।
لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿۵﴾	नि:सन्देह हमने मनुष्य को समुन्नत अवस्था में पैदा किया ।5।*
ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ﴿۶﴾	फिर हमने उसे निचले दर्जे की ओर लौटने वालों में सबसे अधिक नीचे (की ओर) लौटा दिया ।6।**
اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿۷﴾	सिवाय उनके जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । अत: उनके लिए अक्षय प्रतिफल है ।7।

---

* **तक़्वीम** शब्द के इस अर्थ के लिए देखें : मुफ़रदात इमाम राग़िब और अल मुन्जिद ।

** आयत सं. 5, 6 : इन आयतों में मनुष्य के निरंतर विकास का वर्णन है कि किस प्रकार मनुष्य को निम्नावस्था से उठा कर सबसे उच्चतम पद पर आसीन किया गया । अरबी शब्द **तक़्वीम** का शब्दकोशीय अर्थ यही है कि किसी वस्तु को ठीक-ठाक करते हुए उत्कृष्ट से उत्कृष्ट करते चले जाना है । इसके बाद फ़र्माया कि फिर हमने उसको उस अत्यन्त निकृष्ट अवस्था की ओर लौटा दिया जहाँ से उसने उन्नति आरम्भ की थी । इससे अभिप्राय केवल कृतघ्न और दुराचारी लोग हैं । वे मनुष्य होते हुए भी सृष्टि में सब से बुरे हो जाते हैं । सिवाय मोमिनों के जिनके लिए इसी सूर: में असीमित उन्नतियों का शुभ-समाचार दिया गया है ।

मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ होने के बावजूद सब से अधिक निकृष्ट बनने की संभावना के बारे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस है कि आने वाले अत्यन्त बुरे युग में उन लोगों के धर्मज्ञ आकाश के नीचे सबसे बुरे जीव होंगे । (मिश्कात, किताबुल इल्म)

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٨

अत: इसके पश्चात वह क्या है जो तुझे धर्म के मामले में झुठलाए ? ।8।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٩

क्या अल्लाह सभी निर्णयकर्ताओं में सर्वोत्कृष्ट निर्णयकर्ता नहीं है ? ।9।

(रुकू $\frac{1}{20}$)

96– सूरः अल–अलक़्

यह सूरः मक्की है और सर्वप्रथम अवतरित होने वाली सूरः है । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं ।

वह्इ के अवतरण का आरम्भ इस सूरः से हुआ जिसमें अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने उस रब्ब के नाम के साथ पाठ करने का आदेश दिया है जिसने प्रत्येक वस्तु को सृष्टि किया और फिर दोबारा **इक़्रा** शब्द कह कर यह घोषणा की कि सबसे अधिक सम्माननीय उस रब्ब का नाम लेकर पाठ कर जिसने मनुष्य की समस्त उन्नति का रहस्य लेखनी में रख दिया है । यदि लेखनी और लेखन-कला का ज्ञान मनुष्य को नहीं दिया जाता तो किसी प्रकार की उन्नति संभव नहीं थी ।

इसके पश्चात प्रत्येक उस मनुष्य को सावधान किया गया है जो उपासना करने के मार्ग में रोकें डालता है । उसको उस अन्त से डराया गया है कि यदि वह न रुका तो हम उसे उसके झूठे, अपराधी मस्तक के बालों से पकड़ लेंगे । फिर वह अपने जिस सहायक को चाहे बुलाए । हमारे पास भी कठोर दण्ड देने वाले नरक के फ़रिश्ते हैं।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ②	अपने रब्ब के नाम के साथ पढ़, जिसने पैदा किया ।2।
خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ③	उसने मनुष्य को एक चिमट जाने वाले लोथड़े से पैदा किया ।3।
اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ④	पढ़, और तेरा रब्ब सबसे अधिक सम्माननीय है ।4।
الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ⑤	जिसने लेखनी के द्वारा सिखाया ।5।
عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ⑥	मनुष्य को वह कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था ।6।
كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ⑦	सावधान ! नि:सन्देह मनुष्य उद्दण्डता करता है ।7।
اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ⑧	(इस कारण) कि उसने अपने आप को बे-परवाह समझा ।8।
اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ⑨	नि:सन्देह तेरे रब्ब की ओर ही लौट कर जाना है ।9।
اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ⑩	क्या तूने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया जो रोकता है ? ।10।
عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ⑪	एक महान भक्त को, जब वह नमाज़ पढ़ता है ।11।*
اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ⑫	क्या तूने ध्यान दिया कि यदि वह (महान भक्त) हिदायत पर हो ? ।12।

* आयत सं. 10-11 :- इन आयतों में इस्लाम के आरम्भिक युग का वर्णन है कि किस प्रकार कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ने से रोका करते थे और आप सल्ल. पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार करते थे ।

اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ؕ﴿۱۳﴾	अथवा तक़वा का आदेश देता हो ? ।13।
اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ﴿۱۴﴾	क्या तूने ध्यान दिया कि यदि उस (नमाज़ से रोकने वाले) ने (फिर भी) झुठला दिया और पीठ फेर ली ? ।14।
اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ؕ﴿۱۵﴾	(तो) क्या वह नहीं जानता कि निःसन्देह अल्लाह देख रहा है ? ।15।
كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ۙ﴿۱۶﴾	सावधान ! यदि वह न रुका तो निःसन्देह हम उसे मस्तक के बालों से पकड़ कर खींचेंगे ।16।
نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ﴿۱۷﴾	झूठे अपराधी मस्तक के बालों से ।17।
فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۙ﴿۱۸﴾	अतः चाहिए कि वह अपनी सभा वालों को बुला कर देखे ।18।
سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ﴿۱۹﴾	हम नरक के फ़रिश्तों को अवश्य बुलाएँगे ।19।
كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩﴿۲۰﴾	सावधान ! उसका अनुसरण न कर और सजदः में गिर जा और निकटता (प्राप्त करने) का प्रयास कर ।20।

(रुकू $\frac{1}{21}$)

97– सूरः अल–क़द्र

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं ।

इस सूरः में यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जिस कुरआन की वह्इ का आरम्भ किया गया है वह प्रत्येक प्रकार की अंधेरी रातों को प्रकाशित करने का सामर्थ्य रखती है । अतः यहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग की अत्यन्त अंधेरी रात का वर्णन किया गया है, जिसमें जल, स्थल चारों ओर बुराई फैल चुकी थी । परन्तु अल्लाह में लीन उस व्यक्ति की अंधेरी रातों की दुआओं के परिणाम स्वरूप एक ऐसा सवेरा उदय हुआ, अर्थात कुरआन करीम का अवतरण हुआ जिसका प्रकाश क़यामत तक रहने वाला था । आयत **हि य हत्ता मत्लइल फ़ज्र** (यह क्रम उषाकाल के उदय होने तक जारी रहता है) का अभिप्राय यह है कि वह्इ उस समय तक अवतरित होती रहेगी जब तक पूर्णरूपेण फज्र (सवेरा) उदित न हो जाय । और फिर यह घोषणा की गई कि एक व्यक्ति के जीवन भर के संघर्ष से उत्तम यह एक **लैलतुल क़द्र** (सम्माननीय रात्रि) की घड़ी है, यदि किसी को प्राप्त हो जाए ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝٢

नि:सन्देह हमने इसे क़द्र की रात्रि में उतारा है ।2।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٣

और तुझे क्या मालूम कि क़द्र की रात्रि क्या है ? ।3।

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝٤

क़द्र की रात्रि हज़ार महीनों से श्रेष्ठ है ।4।

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝٥

उसमें फ़रिश्ते और रूह-उल-कुदुस अपने रब्ब के आदेश से हर मामले में बहुत अधिक उतरते हैं ।5।

سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٦

सलाम है । यह (क्रम) उषाकाल के उदय तक जारी रहता है ।6।

(रुकू $\frac{1}{22}$)

98– सूरः अल–बय्यिनः

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में वर्णन किया गया था कि लैलतुल क़द्र में उतरने वाली वह्इ प्रातोदय के समान प्रत्येक विषय को ख़ूब स्पष्ट कर देगी । अब इस सूरः में वर्णन है कि इसी प्रकार हमने पिछले नबियों को भी अपेक्षाकृत एक छोटी लैलतुल क़द्र प्रदान की थी अन्यथा वे केवल अपने प्रयासों के द्वारा समय के अंधकारों को सवेरा में परिवर्तित नहीं कर सकते थे ।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके कहा गया कि पिछले सब नबियों पर जो पुस्तकें उतारी गई थीं उन सभी का सारांश तेरी शिक्षा में सम्मिलित कर दिया गया है । उनकी शिक्षाओं का सारांश यह था कि वे अल्लाह तआला के लिए उसके धर्म को विशिष्ट करते हुए उसकी उपासना करें और नमाज़ को क़ायम करें और ज़कात दें । यह ऐसा धर्म है जो स्वयं सदा क़ायम रहेगा और मानवजाति को भी सन्मार्ग पर स्थित करता रहेगा ।

इसके पश्चात काफ़िरों और मोमिनों को दोनों के बुरे और भले अंत की सूचना दी गई है कि जब **दीन–ए–क़य्यिम** (अर्थात क़ायम रहने वाला और क़ायम रखने वाला धर्म) आ जाए तो फिर प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र है कि चाहे तो उसका अनुसरण करे और भले अंत को प्राप्त करे और चाहे तो उसका इनकार करके बुरे अंत को प्राप्त करे ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِیَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

لَمۡ يَكُنِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ مُنۡفَكِّيۡنَ حَتّٰى تَاۡتِيَهُمُ الۡبَيِّنَةُ ۝٢

अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन्होंने इनकार किया, उनके निकट स्पष्ट प्रमाण आ चुके थे, फिर भी वे कदापि रुकने वाले न थे ।2।

رَسُوۡلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتۡلُوۡا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٣

अल्लाह का रसूल **पवित्र** पृष्ठों का पाठ करता था ।3।

فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٤

उनमें क़ायम रहने वाली और क़ायम रखने वाली शिक्षाएँ थीं ।4।

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡهُمُ الۡبَيِّنَةُ ۝٥

और वे लोग जिन्हें पुस्तक दी गई, उनके निकट उज्ज्वल प्रमाण आने के पश्चात ही उन्होंने मतभेद किया ।5।

وَمَاۤ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِيَعۡبُدُوا اللّٰهَ مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ الدِّيۡنَ ۙ حُنَفَآءَ وَ يُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيۡنُ الۡقَيِّمَةِ ۝٦

और उन्हें इसके अतिरिक्त और कोई आदेश नहीं दिया गया कि वे धर्म को अल्लाह के लिए विशिष्ट करते हुए और सर्वदा उसकी ओर झुकते हुए, उसकी उपासना करें और नमाज़ को क़ायम करें और ज़कात दें । और यही क़ायम रहने वाली और क़ायम रखने वाली शिक्षाओं से परिपूर्ण धर्म है ।6।

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ فِىۡ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمۡ شَرُّ الۡبَرِيَّةِ ۝٧

नि:सन्देह अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन्होंने इनकार किया, नरक की अग्नि में होंगे । वे उसमें एक दीर्घ अवधि तक रहने वाले होंगे । ये ही अत्यन्त निकृष्तम सृष्टि हैं ।7।

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ أُولَٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿٨﴾

नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । ये ही श्रेष्ठतम सृष्टि हैं ।8।

جَزَآؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ رَّضِىَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِىَ رَبَّهُۥ ﴿٩﴾

उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास स्थायी स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे चिरकाल तक उनमें रहने वाले होंगे । अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे उससे प्रसन्न हो गए । यह उसके लिए है जो अपने रब्ब से डरता रहा ।9।

(रुकू $\frac{1}{23}$)

99- सूरः अज़-ज़िल्ज़ाल

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं।

इस सूरः में अन्तिम युग में प्रकट होने वाले परिवर्तनों का वर्णन है जिनके परिणाम स्वरूप मनुष्य समझेगा कि उसने प्रकृति के नियमों पर विजय प्राप्त कर ली है हालाँकि उस समय जो कुछ धरती अपना रहस्य उगलेगी वह तेरे रब्ब के आदेश से ऐसा करेगी। उस दिन लोगों के लिए सांसारिक कर्मफल-प्राप्ति का भी एक समय आएगा जब वे देखेंगे कि उनकी सांसारिक उन्नतियों ने उनको कुछ भी न दिया। सिवाय इसके कि वे पारस्परिक लड़ाई-झगड़े में पड़ कर तितर-बितर हो गए। अतः उस दिन प्रत्येक मनुष्य अपनी छोटी से छोटी भलाई का भी प्रतिफल पाएगा और छोटी से छोटी बुराई का भी प्रतिफल पाएगा।

इस सूरः के आरम्भ में वर्णन किया गया है कि धरती अपना बोझ बाहर निकाल फेंकेगी और इसी क्रम में अंत पर कहा कि केवल बड़ी-बड़ी भलाई अथवा बुराई का ही हिसाब नहीं लिया जाएगा बल्कि यदि किसी ने भलाई का छोटे से छोटा अंश भी किया होगा तो वह उसका प्रतिफल पाएगा और यदि छोटी से छोटी बुराई भी की हो तो वह उसका दंड भोग करेगा।

☆☆☆

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝٢

जब धरती अपने भूकंप से हिलाई जाएगी ।2।

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝٣

और धरती अपना बोझ निकाल फेंकेगी ।3।

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝٤

और मनुष्य कहेगा कि इसे क्या हो गया है ? ।4।

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝٥

उस दिन वह अपने समाचार वर्णन करेगी ।5।

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝٦

क्योंकि तेरे रब्ब ने उसे वह्इ की होगी ।6।

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝٧

उस दिन लोग तितर-बितर होकर निकल खड़े होंगे ताकि उन्हें उनके कर्म दिखा दिए जाएँ ।7।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝٨

अत: जो कोई लेश-मात्र भी भलाई करेगा वह उसे देख लेगा ।8।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝٩ ع

और जो कोई लेश-मात्र भी बुराई करेगा वह उसे देख लेगा ।9।* (रुकू $\frac{1}{24}$)

---

* आयत सं. 8-9 : इन दो आयतों से ज्ञात होता है कि जो कोई छोटी से छोटी भलाई अथवा छोटी से छोटी बुराई करेगा तो उसे उनका प्रतिफल दिया जाएगा । परन्तु अल्लाह तआला की क्षमा सर्वोपरि है । क़ुरआन करीम से पता चलता है कि यदि अल्लाह चाहे तो बड़े से बड़े पाप को भी क्षमा कर सकता है क्योंकि वह दिलों का हाल जानता है और यह भी जानता है कि कौन इस योग्य है कि उसके पाप क्षमा किए जाएँ।

100- सूर: अल-आदियात

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं ।

सांसारिक कारणों से लड़े जाने वाले युद्धों के विवरण के पश्चात इस सूर: में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि. के प्रतिरक्षात्मक युद्धों का वर्णन किया गया है जो प्रत्येक दृष्टि से सांसारिक युद्धों से भिन्न और सुखांत युक्त हैं । उन तेज़ रफ़तार घोड़ों को साक्षी ठहराया गया है जो तेज़ी से साँस लेते हुए इस प्रकार शत्रु पर झपटते हैं कि उनके खुरों से चिंगारियाँ निकलती हैं और वे सवेरे आक्रमण करते हैं, निशाक्रमण नहीं करते । यह उच्चकोटि के साहस का लक्षण है, अन्यथा भौतिकवादी जातियों की लड़ाई के प्रसंग में प्रत्येक स्थान पर यही वर्णन हुआ है कि वे छिप कर आक्रमण करते हैं ।

फिर कहा गया है कि मनुष्य अपने रब्ब की बड़ी कृतघ्नता करता है और वह स्वयं इस बात पर साक्षी है । धन के मोह में वह बहुत लिप्त होता है । यहाँ इस ओर संकेत किया गया है कि संसार के सभी युद्ध धन के लिए लड़े जाते हैं । अत: क्या वह नहीं जानता कि जब धरती के समस्त रहस्य उद्घाटित किए जाएँगे और लोगों के सीनों में जो कुछ छुपी हुई बातें हैं वे प्रकट हो जाएँगी, उस दिन अल्लाह तआला उनकी हालतों से भली प्रकार अवगत होगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْعَادِيَاتِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۱﴾	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ﴿۲﴾	हाँफते हुए तेज़ रफ़तार घोड़ों की क़सम ।2।
فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ﴿۳﴾	फिर चिंगारियाँ उड़ाते हुए आग उगलने वालों की ।3।
فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ﴿۴﴾	फिर उनकी जो प्रात:काल छापा मारते हैं ।4।
فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ﴿۵﴾	फिर वे इस (आक्रमण) के साथ धूल उड़ाते हैं ।5।
فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ﴿۶﴾	फिर वे इस (धूल) के साथ एक भीड़ के बीचों-बीच जा पहुँचते हैं ।6।
اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ﴿۷﴾	नि:सन्देह मनुष्य अपने रब्ब का बड़ा कृतघ्न है ।7।
وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ﴿۸﴾	और नि:सन्देह वह उस पर अवश्य साक्षी है ।8।
وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ﴿۹﴾	और नि:सन्देह वह धन के मोह में बहुत बढ़ा हुआ है ।9।
اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ﴿۱۰﴾	अत: क्या वह नहीं जानता कि जो क़ब्रों में है, जब उसे निकाला जाएगा ? ।10।
وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ﴿۱۱﴾	और जो सीनों में है उसे प्राप्त किया जाएगा ।11।*

* आयत सं. 10-11 :- इन आयतों में अन्तिम युग की उन्नतियों की भविष्यवाणियाँ हैं । **जो क़ब्रों में है, उसे निकाला जाएगा** से यह तात्पर्य है कि धरती के नीचे दबी हुई सभ्यताओं के बारे में जानकारी प्राप्त होगी । इस में पुरातत्त्व विज्ञान (Archaeology) में असाधारण उन्नति की भविष्यवाणी है जो इस समय हमारी आँखों के सामने पूरी हो रही है । पुरातत्त्वविद् हज़ारों वर्ष पूर्व गुज़र चुके लोगों के अवशेषों से उनके बारे में आश्चर्यजनक रूप से जानकारियाँ प्राप्त कर लेते हैं ।→

إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ﴿١١﴾ ع

नि:सन्देह उनका रब्ब उस दिन उनसे पूर्णरूप से अवगत होगा ।12।

(रुकू $\frac{1}{25}$)

←आयत संख्या 7 **और जो सीनों में है उसे प्राप्त कर लिया जाएगा** आजकल मनोरोग-विज्ञान में इस बात पर बहुत बल दिया गया है कि मानसिक रोगी तब तक ठीक नहीं हो सकता जब तक उसके मन की हालतों की जानकारी प्राप्त न की जाए । उसे नीम बेहोशी का टीका लगा कर डाक्टर जो प्रश्न करता है उससे उसके मन के समस्त रहस्य उगलवा लिए जाते हैं ।

101– सूरः अल–क़ारिअः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं।

यह सूरः पिछली सूरः की चेतावनी को ही दोहरा रही है कि कभी-कभी मनुष्य को लापरवाही से जगाने के लिए एक भयंकर ध्वनि उसका द्वार खटखटाएगी। यह खटखटाने वाली ध्वनि क्या है ? फिर विचार करो कि यह ध्वनि क्या है ? जब भयंकर युद्धों के विनाश के परिणाम स्वरूप मनुष्य टिड्डी दल की भाँति तितर-बितर हो जाएगा और मानो पर्वत भी धुनी हुई ऊन की भाँति कण-कण कर दिए जाएँगे। यहाँ पर्वतों से अभिप्राय बड़ी-बड़ी सांसारिक शक्तियाँ हैं। निश्चित रूप से यहाँ किसी परकालीन क़यामत का वर्णन नहीं है। क्योंकि तब तो पर्वत कण-कण नहीं किए जाएँगे। उस समय जिन जातियों के पास अधिक शक्तिशाली युद्ध-सामग्री होगी वे विजयी होंगी और जिनकी युद्ध-सामग्री प्रतिपक्ष की तुलना में कमज़ोर होंगी वे युद्ध के नरक में गिराई जाएँगी। यह एक भड़कती हुई अग्नि है।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلْقَارِعَةُ ②

(प्रमाद से जगाने वाली) भयंकर ध्वनि ।2।

مَا الْقَارِعَةُ ③

वह भयंकर ध्वनि क्या है ? ।3।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ④

और तुझे क्या मालूम कि वह भयंकर ध्वनि क्या है ? ।4।

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ⑤

जिस दिन लोग तितर-बितर की हुई टिड्डियों की भाँति हो जाएँगे ।5।

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ⑥

और पर्वत धुनकी हुई ऊन की भाँति हो जाएँगे ।6।

فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ⑦

अत: वह जिसके वज़न भारी होंगे ।7।

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ⑧

तो वह अवश्य एक मनभावन जीवन में होगा ।8।

وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ⑨

और वह जिसके वज़न हल्के होंगे ।9।

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ⑩

तो उसकी माँ नरक होगी ।10।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ⑪

और तुझे क्या मालूम कि यह क्या है? ।11।

(यह) एक धधकती हुई अग्नि है।12।* (रुकू $\frac{1}{26}$)

نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١٢﴾

* इस सूरः के विषयवस्तु इस संसार पर भी लागू होते हैं । युद्धों में युद्ध-सामग्री की दृष्टि से जिन जातियों का पलड़ा भारी हो वही विजयी होती हैं और अपनी जीत के द्वारा सुख-सम्पन्नता प्राप्त करती हैं । जिन जातियों का पलड़ा युद्ध-सामग्री की दृष्टि से हल्का हो उनका अन्त यह होता है कि उनको युद्ध की अग्नि में भून दिया जाता है ।

इस विषयवस्तु को क़यामत पर लागू करें तो भावार्थ यह होगा कि जिन लोगों के नेक कर्मों का पलड़ा भारी होगा वे स्वर्ग में आनंद उपभोग करेंगे और जिनके कुकर्मों का पलड़ा भारी होगा वे नरकाग्नि का कष्ट भोग करेंगे ।

102- सूरः अत-तकासुर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

इस सूरः में मनुष्य को सचेत किया गया है कि वह धन के मोह के परिणाम स्वरूप क़ब्रों तक पहुँच जाएगा । इसमें एक ओर तो बड़ी जातियों को सावधान किया गया है कि इस दौड़ का परिणाम सिवाए विनाश के और कुछ नहीं होगा और कुछ कमज़ोर लोगों की अवस्था भी वर्णन की गई है कि वे अपनी धन-सम्पत्ति की लालसा और इच्छाओं को पूरा करने के लिए क़ब्रों के परिभ्रमण करने से भी पीछे नहीं हटेंगे । इसके परिणाम स्वरूप मनुष्य अर्थात भौतिकवादी जातियों को और कु-धारणा के अनुगामी धार्मिक सम्प्रदायों को भी सचेत किया गया है कि इसका अन्तिम परिणाम यह होगा कि तुम उस अग्नि का ज्ञान प्राप्त कर लोगे जो तुम्हारे लिए भड़काई गई है और फिर तुम उसे अपनी आंखों के सामने देख लोगे । फिर जब तुम उसमें झोंके जाओगे तो तुमसे पूछा जाएगा कि अब बताओ कि सांसारिक सुख-सुविधाओं की अंधा-धुंध चाहत ने तुम्हें क्या दिया ?

☆☆☆

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ②	एक दूसरे से बढ़ जाने की होड़ ने तुम्हें लापरवाह बना दिया ।2।
حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ③	यहाँ तक कि तुमने क़ब्रगाहों का भी परिभ्रमण किया ।3।
كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ④	सावधान ! तुम अवश्य जान लोगे ।4।
ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ⑤	सावधान ! तुम अवश्य जान लोगे ।5।
كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ⑥	फिर सावधान ! यदि तुम विश्वासपूर्ण ज्ञान की सीमा तक जान लो ।6।
لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ⑦	तो अवश्य तुम नरक को देख लोगे ।7।
ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ⑧	फिर तुम अवश्य उसे आंखों देखे विश्वास की भाँति देखोगे ।8।
ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ⑨ ع ١ ٩ ٢٧	फिर उस दिन तुम सुख-समृद्धि के बारे में अवश्य पूछे जाओगे ।9। (रुकू $\frac{1}{27}$)

103- सूर: अल-अस्र

यह आरम्भिक मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं। इस सूर: में यह वर्णन किया गया है कि पिछली सूरतों में जिस प्रकार के लोगों का वर्णन है और जिस सांसारिक चाहत से डराया गया है उसके परिणाम स्वरूप एक ऐसा समय आएगा कि जब सारा जग साक्षी होगा कि वह मनुष्य घाटे में है सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और उन्होंने सत्य पर अटल रहते हुए सत्य की शिक्षा दी और धैर्य पर अटल रहते हुए धैर्य की शिक्षा दी।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।1।

وَالْعَصْرِ ②

काल की क़सम।2।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ③

निःसन्देह मनुष्य एक बड़े घाटे में है।3।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ④ ع

सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और सत्य पर अटल रहते हुए एक दूसरे को सत्य का उपदेश दिया और धैर्य पर अटल रहते हुए एक दूसरे को धैर्य का उपदेश दिया।4।

(रुकू $\frac{1}{28}$)

104– सूरः अल–हुमज़ः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 10 आयतें हैं ।

सूरः अल् अस्र के पश्चात सूरः अल् हुमज़ः आती है जो धन के लालायित जातियों के लिए अब तक दी गई चेतावनियों में सबसे बड़ी चेतावनी है । अल्लाह ने कहा, क्या उस युग का धनवान् व्यक्ति यह विचार करेगा कि उसके पास इस प्रकार अधिकता से धन इकट्ठा हो चुका है और वह उसे बेधड़क अपनी सुरक्षा पर खर्च कर रहा है, मानो अब उसे इस संसार में चिरस्थायी श्रेष्ठता प्राप्त हो गई है ? सावधान ! वह एक ऐसी अग्नि में झोंका जाएगा जो छोटे से छोटे कणों में बन्द की गई है और तुझे क्या पता कि वह कौन सी अग्नि है ?

यहाँ यह प्रश्न स्वभाविक रूप से उठता है कि छोटे से कण में अग्नि कैसे बंद की जा सकती है ? अवश्यमेव यहाँ उस अग्नि का वर्णन है जो परमाणु (Atom) के भीतर बन्द होती है । अरबी शब्द **हुतमः** और परमाणु में ध्वन्यात्मक समानता है । यह वह अग्नि है जो दिलों पर लपकेगी और उन पर आक्रमण करने के लिए उसे ऐसे स्तम्भों में बन्द की गई है जो खींच कर लम्बे हो जाएँगे ।

इस सूरः का विषयवस्तु मनुष्य को समझ आ ही नहीं सकता जब तक उस आणविक युग की परिस्थितियाँ उस पर उजागर न हों । वह आणविक तत्त्व जिसमें यह अग्नि बन्द है वह फटने से पहले **खींचकर लम्बे किए गए स्तम्भों** का रूप धारण करता है अर्थात बढ़ते हुए आन्तरिक दबाव के कारण फैलने लगता है और उसकी आग लोगों के शरीर को जलाने से पहले उनके दिलों पर लपकती है और हृदयगति बन्द हो जाती है । समस्त वैज्ञानिक साक्षी हैं कि परमाणु बम फटने से बिल्कुल इसी प्रकार के प्रभाव प्रकट होते हैं । परमाणु बम के ज्वलनशील तत्त्व मनुष्य तक पहुँचने से पूर्व ही अत्यन्त शक्तिशाली रेडियो तरंगें हृदय की गति को बन्द कर देती हैं ।

इसका एक और अर्थ यह भी है कि मनुष्य शरीर की कोशिकाओं में भी एक अग्नि छिपी है । जब वह प्रकट होगी तो फिर मनुष्य के हृदय पर लपकेगी और उसे नाकारा बना देगी ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عَشْرُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِۨ ۝٢

हर चुग़लखोर (और) छिद्रान्वेषी का सर्वनाश हो ।2।

الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٣

जिसने धन इकट्ठा किया और उसकी गणना करता रहा ।3।

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝٤

वह विचार किया करता था कि उसका धन उसे अमरत्व प्रदान करेगा ।4।

كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝٥

सावधान ! वह अवश्य **हुतम:** में गिराया जाएगा ।5।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٦

और तुझे क्या पता कि **हुतम:** क्या है? ।6।

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٧

वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है।7।

الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٨

जो दिलों पर लपकेगी ।8।

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٩

नि:सन्देह वह उनके विरुद्ध बन्द करके रखी गई है ।9।

فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝١٠

ع ١ / ٢٩

ऐसे स्तम्भों में, जो खींच कर लम्बे किए गए हैं ।10। (रुकू $\frac{1}{29}$)

105- सूरः अल-फ़ील

यह आरम्भिक मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं ।

सांसारिक जातियों की उन्नति अन्ततः उस चरम बिंदू पर समाप्त होगी कि वे सारी बड़ी शक्तियाँ इस्लाम को नष्ट-भ्रष्ट करने पर तुली होंगी । क़ुरआन करीम अतीत की एक घटना का वर्णन करते हुए कहता है कि इससे पूर्व भी **उम्मुल क़ुरा** अर्थात मक्का को बड़ी-बड़ी वैभवशाली जातियों ने नष्ट करने का प्रयास किया था । वे **अस्हाब-उल-फ़ील** अर्थात बड़े-बड़े हाथियों वाले थे । परन्तु इससे पूर्व कि वे उन बड़े-बड़े हाथियों पर सवार होकर मक्का तक पहुँचते उन पर अबाबील नामक चिड़ियों ने जो समुद्री चट्टानों की गुफाओं में घर बनाती हैं, ऐसे कंकर बरसाए जिन में चेचक रोग के कीटाणु थे और पूरी सेना में वह भयंकर रोग फैल गया और पल भर में वे शवों के ऐसे ढेर बन गए जैसे खाया हुआ भूसा हो । उनके शवों को शवभक्षी पक्षी पटक पटक कर धरती पर मारते थे । अतएव भविष्य में भी यदि किसी जाति ने शक्ति के बल पर इस्लाम को अथवा मक्का को अपमानित करने या तबाह करने का इरादा किया तो वह भी इसी प्रकार विनष्ट कर दी जाएगी ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝٢

क्या तू नहीं जानता कि तेरे रब्ब ने हाथी वालों के साथ कैसा बर्ताव किया ? ।2।

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٣

क्या उसने उनकी योजना को व्यर्थ नहीं कर दिया ? ।3।

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٤

और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी (नहीं) भेजे ? ।4।

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٥

वे उन पर कंकर मिश्रित शुष्क मिट्टी के ढेलों से पथराव कर रहे थे ।5।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٦ ع

अत: उसने उन्हें खाए हुए भूसे की भाँति बना दिया ।6। (रुकू $\frac{1}{30}$)

106– सूरः क़ुरैश

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 5 आयतें हैं।

सूरः अल्-फ़ील के तुरन्त पश्चात इस सूरः में यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जिस प्रकार इस घटना से पूर्व मक्का निवासियों के व्यापारिक दल गर्मियों और सर्दियों में यात्रा करते थे और प्रत्येक प्रकार के फलों के द्वारा उनको भूख और भय से मुक्त करते थे, यही क्रम आगे भी जारी रहेगा।

☆☆☆

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।1।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝٢

क़ुरैश में परस्पर मेल-जोल उत्पन्न करने के लिए।2।

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٣

(हाँ) उनमें मेल-जोल बढ़ाने के लिए (हमने) सर्दियों और गर्मियों की यात्राएँ बनाई हैं।3।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٤

अतः वे इस घर के रब्ब की उपासना करें।4।

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٥

जिसने उन्हें भूख से (मुक्ति देते हुए) भोजन कराया और उन्हें भय से शांति प्रदान की।5। (रुकू $\frac{1}{31}$)

107– सूर: अल–माऊन

यह आरम्भिक मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 8 आयतें हैं ।

इस सूर: का पिछली सूर: से यह सम्बन्ध प्रतीत होता है कि जब अल्लाह तआला मुसलमानों को बहुतात के साथ सुख-संपन्नता प्रदान करेगा तो वे उसके मार्ग में ख़र्च करने से पीछे नहीं हटेंगे और वह उपासना जिसे का'बा के रब्ब ने सिखाई उसमें कदापि दिखावे से काम नहीं लेंगे । अन्यथा उनकी नमाज़ें उनके लिए विनाश का कारण बन जाएँगी क्योंकि ऐसी नमाज़ें दिखावे की होंगी । इसी प्रकार उनका खर्च भी दिखावे का हुआ करेगा। दशा यह होगी कि वे बड़े-बड़े खर्च करेंगे जिसके परिणाम स्वरूप उनको ख्याति प्राप्त हो परन्तु निर्धनों को छोटी से छोटी आवश्यकता की वस्तु भी देने में टाल-मटोल करेंगे ।

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانِيَ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝٢

क्या तूने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया जो धर्म को झुठलाता है ? ।2।

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٣

अत: वही व्यक्ति है जो अनाथ को धुतकारता है ।3।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٤

और दरिद्र को भोजन कराने की प्रेरणा नहीं देता ।4।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٥

अत: उन नमाज़ पढ़ने वालों का सर्वनाश हो ।5।

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٦

जो अपनी नमाज़ से असावधान रहते हैं ।6।

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٧

वे लोग जो दिखावा करते हैं ।7।

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٨ ع ٨/٣٢

और दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं को भी (लोगों से) रोके रखते हैं ।8।

(रुकू $\frac{1}{32}$)

108- सूर: अल-कौसर

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं ।

सूर: अल-माऊन के तुरन्त पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी **कौसर** (हर चीज़ की बहुतात) प्रदान करने का शुभ-समाचार दिया गया है जो कभी समाप्त नहीं होगी । इसका एक अर्थ तो यह है कि वह धन जिसे वे अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करेंगे, यदि वे उसे बिना सोचे समझे भी खर्च करें तब भी अल्लाह तआला और अधिक धन प्रदान करता चला जाएगा । और सबसे बड़ा शुभ-समाचार यह है कि आप सल्ल. को क़ुरआन प्रदान हुआ जिसके विषयवस्तु कभी न समाप्त होने वाले ख़ज़ाने की भाँति क़यामत तक मानव जाति के हित के लिए जारी रहेंगे । उसके विषयवस्तुओं के अन्त तक कोई पहुँच नहीं सकेगा ।

इसके पश्चात यह कहा गया है कि तू इस महान पुरस्कार प्राप्ति पर आभार व्यक्त करने के लिए उपासना कर और क़ुर्बानी दे । नि:सन्देह तेरा शत्रु ही **अब्तर** रहेगा और तेरा उपकार कभी समाप्त होने वाला नहीं है ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ②

नि:सन्देह हमने तुझे कौसर प्रदान किया है ।2।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ③

अत: अपने रब्ब के लिए नमाज़ पढ़ और क़ुर्बानी दे ।3।

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ④ ع

नि:सन्देह तेरा शत्रु ही **अब्तर** रहेगा।4।* (रुकू $\frac{1}{33}$)

---

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मक्का के काफ़िर **अब्तर** होने का व्यंग कसते थे अर्थात ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई पुत्र-संतान नहीं । आप सल्ल. को यह शुभ-समाचार दिया गया कि वे जो पुत्र-संतान वाले हैं उनकी संतान भी आध्यात्मिक रूप से आपकी ओर सम्बन्धित होना अपने लिए गर्व समझेगी और अपने दुष्ट माता-पिता से अपना सम्बन्ध काट लेगी । अत: इस्लाम के शत्रु अबु-जहल के पुत्र इक्रमा रज़ि. के बारे में यह वर्णन उल्लेखित है कि उसके इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात किसी मुसलमान ने उस पर अबु-जहल के पुत्र होने का कटाक्ष किया तो उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास इसकी शिकायत की और आप सल्ल. ने उस मुसलमान को उसे आगे अबु-जहल का पुत्र कहने से मना किया । (असदुल ग़ाबा शब्द **इक्रमा** के अन्तर्गत) तो इस प्रकार अबु-जहल स्वयं अब्तर हो कर मरा और उसकी संतान आध्यात्मिक रूप से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सम्बन्धित होने लगी ।

109– सूर: अल–काफ़िरून

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 7 आयतें हैं ।

इस सूर: में काफ़िरों को फिर से चेतावनी दी गई है कि न कभी मैं तुम्हारे धर्म का अनुसरण करूँगा, न कभी तुम मेरे धर्म का अनुसरण करोगे । अतः तुम अपने धर्म पर चलते रहो और मैं अपने धर्म पर चलता रहूँगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْكَافِرُوْنِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ②	कह दे कि हे काफ़िरो ! ।2।
لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ③	मैं उसकी उपासना नहीं करूँगा जिसकी तुम उपासना करते हो ।3।
وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ④	और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो, जिसकी मैं उपासना करता हूँ ।4।
وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ⑤	और मैं कभी उसकी उपासना करने वाला नहीं बनूँगा, जिसकी तुमने उपासना की है ।5।
وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ⑥	और न तुम उसकी उपासना करने वाले बनोगे, जिसकी मैं उपासना करता हूँ ।6।
لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ⑦	तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म ।7। (रुकू $\frac{1}{34}$)

110- सूर: अन-नस्र

यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं ।

इस सूर: में वास्तव में कौसर ही का एक दूसरा रूप वर्णन किया गया है । अर्थात जैसा कि कुरआनी पुरस्कार कभी समाप्त होने वाले नहीं, इसी प्रकार इस्लामी विजय-यात्राओं का क्रम भी असीमित होगा और वह समय अवश्य आएगा जब गिरोह के गिरोह लोग इस्लाम में शामिल होंगे । यह समय विजय शंख बजाने का नहीं बल्कि अल्लाह से क्षमायाचना करने का होगा । क्योंकि इन विजयों के परिणाम स्वरूप अहंकार उत्पन्न होना नहीं चाहिए बल्कि और भी अधिक विनम्रता पूर्वक इस विश्वास पर दृढ़ होना चाहिए कि यह केवल अल्लाह की कृपा से ही प्राप्त हुआ है । अत: ऐसे अवसर पर पहले से बढ़ कर क्षमायाचना में लगे रहना चाहिए और पहले से बढ़ कर अल्लाह का प्रशंसागान करना चाहिए ।

☆☆☆

سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ②

जब अल्लाह की सहायता और विजय आएगी ।2।

وَ رَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ③

और तू लोगों को देखेगा कि वे अल्लाह के धर्म में गिरोह के गिरोह प्रवेश कर रहे हैं ।3।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ④

अत: अपने रब्ब की स्तुति के साथ (उसका) गुणगान कर और उससे क्षमायाचना कर । नि:सन्देह वह बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला है ।4।

(रुकू $\frac{1}{35}$)

111- सूरः अल-लहब

यह आरम्भिक मक्की सूरतों में से है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं ।

अबू-लहब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक चाचा का नाम था जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरुद्ध हर जगह घृणा फैलाता फिरता था और उसकी पत्नी भी इस काम में उसकी सहायक थी । अल्लाह ने फ़र्माया : उसके दोनों हाथ काटे जाएँगे अर्थात इस्लाम के विरुद्ध भविष्य में भी युद्ध के उन्माद भड़काने वालों को, चाहे वे दाहिने बाज़ू के हों अथवा बायें बाज़ू के हों, निन्दा, अपमान के अतिरिक्त उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होगा । और जो अधीनस्थ जातियाँ युद्ध का ईंधन जुटाने में उनकी सहायता करेंगी उनके भाग्य में तो फांसी के फंदे के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा ।
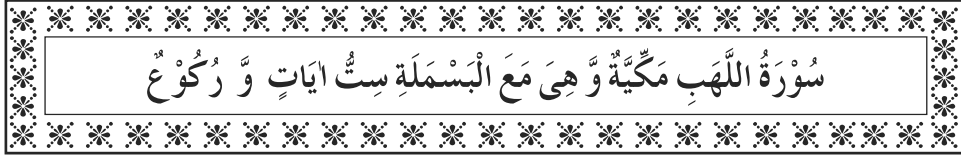
☆☆☆

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِىَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ﴿٢﴾

अबू लहब के दोनों हाथ विनष्ट हो गए और वह स्वयं भी विनष्ट हो गया ।2।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ﴿٣﴾

उसके धन और जो कुछ उसने कमाया, कुछ उसके काम न आया ।3।

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿٤﴾

वह अवश्य एक भड़कती हुई अग्नि में प्रविष्ट होगा ।4।

وَّامْرَاَتُهٗ ۭ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿٥﴾

और उसकी पत्नी भी, इस अवस्था में कि वह बहुत ईंधन उठाए हुए होगी ।5।

فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ﴿٦﴾

उसकी गर्दन में खजूर की छाल का बटा हुआ सशक्त रस्सा होगा ।6।

(रुकू $\frac{1}{36}$)

112– सूर: अल–इख़्लास

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 5 आयतें हैं ।

यह एक बहुत छोटी सी सूर: है परन्तु इसमें उन महत्वपूर्ण विजयों का वादा दिया गया है जो ईसाइयत के विरुद्ध इस्लाम को प्राप्त होंगी और यह सूचना दी गई है कि न अल्लाह का कोई पिता था न उसका कोई पुत्र होगा । इस एक वाक्य से ईसाइयत का समूचा ढाँचा धराशाई हो जाता है । अर्थात यदि अल्लाह का पिता नहीं तो उसमें पुत्र उत्पन्न करने के गुण कैसे आए ? और ईसा अलै. जिन्हें अल्लाह तआला का काल्पनिक पुत्र कहा जाता है, उन्होंने अपने पिता से उन गुणों का अंश क्यों न लिया ? और यदि पिता ने पुत्र पैदा किया था तो फिर आगे उनके पुत्र क्यों पैदा न हुए ? इसके बाद यह कहा गया कि अल्लाह तआला का कोई समकक्ष नहीं है । इसलिए इस प्रकार की व्यर्थ बातें परम प्रशंसनीय अल्लाह की गुस्ताख़ी के अतिरिक्त और कुछ नहीं होंगी ।
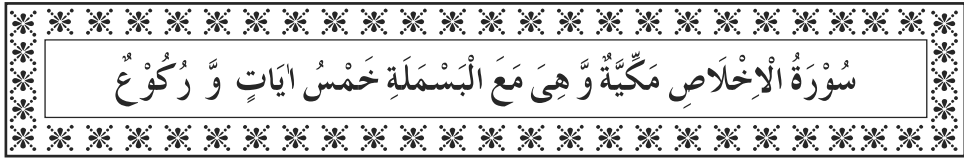
☆☆☆

سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ②	तू कह दे कि वह अल्लाह एक ही है ।2।
اَللّٰهُ الصَّمَدُ ③	अल्लाह को किसी की आवश्यकता नहीं है ।3।
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ④	न उसने किसी को जना और न वह जना गया ।4।
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ⑤ ع ٣٧	और उसका कभी कोई समकक्ष नहीं बना ।5। (रुकू $\frac{1}{37}$)

113- सूर: अल-फ़लक़

यह मदनी सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं ।

इस सूर: में सचेत किया गया है कि प्रत्येक सृष्टि के परिणाम स्वरूप भलाई के अतिरिक्त अनिष्टता भी उत्पन्न होती है । अत: उनके अनिष्ट से अल्लाह की शरण माँगते रहो और उस अंधेरी रात के अनिष्ट से भी अल्लाह तआला की शरण माँगो जो एक बार फिर संसार पर छा जाने वाली है और उन जातियों के अनिष्ट से शरण माँगो जो मनुष्य को मनुष्य से और जातियों से जातियों को काट कर पृथक कर देती हैं । अर्थात उनका सिद्धान्त ही यह है Divide and Rule कि यदि राज करना चाहते हो तो लोगों में फूट डाल दो । यह सब साम्राज्यवाद का सार है जिसने संसार पर क़ब्ज़ा करना था । इस के बावजूद इस्लाम अवश्य उन्नति करेगा । अन्यथा उसके नष्ट हो जाने पर तो उससे ईर्ष्या उत्पन्न नहीं हो सकती थी । ईर्ष्या का विषयवस्तु बताता है कि इस्लाम ने उन्नति करनी है और जब भी वह उन्नति करेगा, शत्रु उससे ईर्ष्या करेगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ②

तू कह दे कि मैं (चीज़ों को) फाड़ कर (नई चीज़) पैदा करने वाले रब्ब की शरण माँगता हूँ ।2।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ③

जो उसने पैदा किया, उसके अनिष्ट से।3।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ④

और अन्धेरा करने वाले के अनिष्ट से जब वह छा चुका हो ।4।

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ⑤

और गाँठों में फूंकने वालियों के अनिष्ट से ।5।*

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ⑥

और ईर्ष्या करने वाले के अनिष्ट से जब वह ईर्ष्या करे ।6। (रुकू $\frac{1}{38}$)

---

* इसका एक अर्थ तो यह किया जाता है कि जादू-टोनों के द्वारा आपसी सम्बन्धों की गाँठों में फूंकने वालियाँ । परन्तु वास्तव में यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी है और ऐसी जातियों से सम्बन्धित है जिनकी सत्ता Divide and Rule के सिद्धान्त पर होगी । अर्थात जिन जातियों पर उन्होंने विजय प्राप्त करनी हो उनको परस्पर लड़ा कर शक्तिहीन कर देंगी और स्वयं शासक बन बैठेंगी । विशेषकर पश्चिम वासियों ने सारे संसार पर इसी सिद्धान्त के द्वारा शासन किया है ।

114– सूर: अन–नास

यह मदनी सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 7 आयतें हैं ।

यह सूर: यहूदियों और ईसाइयों के उन सभी सामुहिक प्रयासों को सारांशत: प्रस्तुत करती है जिनकी रूप-रेखा यह होगी कि वे मानव जाति के पालनहार होने का दावा करेंगे अर्थात उनकी अर्थ-व्यवस्था के भी स्वामी बन बैठेंगे और उनकी राजनीति पर भी क़ब्ज़ा कर के उनके शासक बन बैठेंगे । इस प्रकार स्वयं उपास्य बन जाएँगे और जो उनकी उपासना करेगा उसको तो वे पुरस्कृत करेंगे और जो उनकी उपासना करने से इनकार करेगा वे उसको बर्बाद कर देंगे ।

उनका सबसे भयानक हथियार यह होगा कि वे ऐसे भ्रम उत्पन्न करने वाले की भाँति होंगे जो **ख़न्नास** होगा अर्थात लोगों के मन में भ्रम उत्पन्न करके स्वयं छुप जाएँगे । यही दशा इस युग की बड़ी शक्तियों अर्थात पूंजीवादियों की होगी और जन-शक्तियों अर्थात साम्यवादियों की भी होगी । अत: जो भी इन सभी मामलों से अल्लाह तआला की शरण में आएगा अल्लाह तआला उसे बचा लेगा ।

☆☆☆

سُوْرَةُ النَّاسِ مَدَنِيَّةٌ وَّ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعُ اٰيَاتٍ وَّ رُكُوْعٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।
قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ②	तू कह दे कि मैं मनुष्यों के रब्ब की शरण माँगता हूँ ।2।
مَلِكِ النَّاسِ ③	मनुष्यों के सम्राट की ।3।
اِلٰهِ النَّاسِ ④	मनुष्यों के उपास्य की ।4।
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ⑤	अत्यधिक भ्रम उत्पन्न करने वाले के अनिष्ट से, जो भ्रम डाल कर पीछे हट जाता है ।5।
الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ⑥	वह जो मनुष्यों के दिलों में भ्रम डालता है ।6।
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑦ ع	(चाहे) वह जिन्नों में से हो (अर्थात बड़े लोगों में से) अथवा जन-साधारण में से हो ।7।* (रुकू $\frac{1}{39}$)

* आयत सं. 5 से 7 : यहाँ अंत्ययुग में यहूदियों और ईसाइयों की ओर से दूसरों के दिलों में भ्रांतियाँ उत्पन्न करने की भविष्यवाणी की गई है । आयतांश **अल् जिन्नति वन नासि** से एक तो यह अभिप्राय है कि बड़े लोगों के दिलों में भी भ्रांतियाँ डाली जाएँगी और छोटे लोगों अर्थात जन-साधारण के दिलों में भी भ्रांतियाँ डाली जाएँगी । अत: पूंजीवादियों और साम्यवादियों के दिलों में शैतान ने जो भ्रम डाला उसके कारण दोनों ही जाति नास्तिकता की ओर चली गईं । दूसरा अभिप्राय यह है कि यहूदी और ईसाई दोनों भ्रम उत्पन्न करने वाले हैं । वे जिन लोगों पर शासन करते हैं उनके ईमान में भी भ्रम उत्पन्न करके उनको दुर्बल कर देते हैं ।

क़ुरआन पढ़ने के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِىْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِىْٓ اِمَامًا وَّ نُوْرًا وَّهُدًى وَّرَحْمَةً. اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِىْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِىْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِىْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِىْ حُجَّةً يَّارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ.

''अल्लाहुम्मर्हम्नी बिल क़ुर्आनिल् अज़ीम् । वज्अल्हु ली इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह्मतन् । अल्लाहु म्म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्ज़ुक़्नी तिलाव-तहू आना अल्लैलि व आना अन्नहारि वज्अल्हु ली हुज्जतंय्या रब्बल आलमीन ।''

हे मेरे अल्लाह ! महान क़ुरआन की बरकत से मुझ पर कृपा कर और इसे मेरे लिए पथ-प्रदर्शक, प्रकाश, सन्मार्ग और करुणा स्वरूप बना । हे मेरे अल्लाह ! पवित्र क़ुरआन में से जो कुछ मैं भूल चुका हूँ वह मुझे याद दिला दे और जो कुछ मुझे नहीं आता वह मुझे सिखा दे । और दिन-रात मुझे इसके पाठ करने की शक्ति प्रदान कर । और हे समस्त लोकों के प्रतिपालक ! इसे मेरे हित में युक्ति स्वरूप बना दे ।

पारिभाषिक शब्दावली

अल्लाह	-	उस परम सत्ता का निजी नाम है जो समग्र सृष्टि का स्रष्टा और प्रतिपालक है । वास्तविक उपास्य अर्थात ईश्वर । पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह के अनेक गुणवाचक नाम बताये गये हैं । अरबी भाषा में अल्लाह शब्द किसी अन्य वस्तु अथवा व्यक्ति के लिये तथा बहुवचन में कभी प्रयुक्त नहीं हुआ ।
अर्श	-	सिंहासन । वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है ।
अह्ले किताब	-	ग्रंथधारी, यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।
अज़ाब	-	अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड । ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।
अरबी	-	भाषाविशेष जो अरब प्रांत में बोली जाती है, जिसके शब्दावली अनेकार्थबोधक होते हैं ।
अजमी	-	अरबी से इतर भाषाएँ ।
अन्सार	-	सहयोगी । मदीना के वे लोग जिन्होंने मक्का से हिजरत करके आये हुये मुसलमानों की सहायता की थी ।
अरफ़ात	-	मक्का से लगभग नौ मील की दूरी पर एक मैदान जहां हज्ज के महीना की नवीं तिथि को सब हाजी एकत्रित होकर उपासना करते हैं । हर एक हाजी को यहाँ पहुँचना अनिवार्य है ।
अलैहिस्सलाम	-	उनपर अल्लाह की कृपा हो । नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है ।
अलैहस्सलाम	-	उनपर अल्लाह की कृपा हो । यह वाक्य किसी पुण्यवती स्त्री के नाम के बाद कहा जाता है ।
आयत	-	पवित्र क़ुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य । ईश्वरीय चि ।
आदम	-	मानव-जगत की सुधार के लिये अल्लाह की ओर से आये हुए सर्वप्रथम अवतार ।
इंजील	-	शुभ-समाचार । ईसाइयों का धर्मग्रंथ ।
इमाम	-	धार्मिक अगुआ । नबी, रसूल, पथ-प्रदर्शक तथा अनुकरणीय व्यक्ति ।
इद्दत	-	एक मुसलमान स्त्री के विधवा होने अथवा तलाक़ पाने पर किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह करने से पूर्व इस्लामी धर्मविधान के द्वारा निश्चित अवधि बिताने का नाम इद्दत है ।
इस्लाम	-	आज्ञा पालन करना । इस्लाम वह धर्म है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने

लोगों के समक्ष पेश किया, जो अमन और शांति की शिक्षा देता है ।

इस्राईल - अल्लाह का वीर या सैनिक । हज़रत याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को 'बनी इस्राईल' (अर्थात इस्राईल की संतान) कहा जाता है । फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्राईल रखा है ।

इज़्ज़त वाला महीना - हुर्मत अर्थात इज़्ज़त वाले चार महीने, जो हिज्री संवत के ज़ुल क़अदः, ज़ुल हज्जः, मुहर्रम और रजब हैं । इन महीनों में हज्जक्षेत्र में अनावश्यक रूप से किसी जीवधारी को मारना निषेध है ।

इब्लीस - जो अल्लाह की कृपा से निराश हो । शैतान ।

ईमान - अर्थात विश्वास और स्वीकार करना । जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना ।

उम्मत - संप्रदाय । किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है ।

उम्मती नबी - किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायिओं में से किसी का नबी पद प्राप्त करना ।

उम्रा - हज्ज के निश्चित दिनों के अतिरिक्त अन्य दिनों में हज्ज के निश्चित उपासना-कर्म करना ।

उलेमा - इस्लामी धर्मज्ञ ।

ए'तिकाफ़ - रमज़ान के महीना की इक्कीसवीं तिथि से अंतिम तिथि तक अल्लाह की उपासना करने के लिये मस्जिद में एकांतवास करना ।

एहराम - हज्ज या उम्रा करते समय दो अनसिला चादरों वाला विशेष परिधान ।

कलिमा - वचन । धर्मवाक्य । इस्लाम धर्म का मूलमंत्र :- 'ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'(अल्लाह के सिवा अन्य कोई उपास्य नहीं, हज़रत मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के रसूल हैं)

क़यामत - महाप्रलय । मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन ।

कश्फ़ - प्रकटित होना । जाग्रतावस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना । स्वप्न और कश्फ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कश्फ़ जागते में देखा जाता है । दिव्य-दर्शन । योगनिद्रा ।

काफ़िर - सच्चाई का इनकार करने वाला । इस्लाम धर्म का अस्वीकारी ।

क़ायम करना - खड़ा करना । संभाल और संवार कर कोई काम करना ।

क़ायम रहना - अडिग रहना । चिरस्थायी ।

क़िब्ला - आमने-सामने । जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं । ख़ाना का'बा मुसलमानों का क़िब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं ।

क़ुर्आन - अल्लाह की वाणी जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है ।

क़ुर्बानी - त्याग, बलिदान । ईदुज़्ज़ुहा के बाद तथा हज्ज करने के समय ज़िबह किया जाने वाला पशु ।

क़ुर्बान गाह - क़ुर्बानी के लिये निश्चित स्थान ।

कुफ़्र - सच्चाई का अस्वीकार । इस्लाम का इनकार करना ।

ख़लीफ़ा - उत्तराधिकारी । अधिनायक । नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला ।

ख़ाना का'बा - मक्का में स्थित एक चौकोर भवन । संसार में एक ईश्वर की उपासना-गृह के रूप में सर्वप्रथम इसका निर्माण हुआ था । हज़रत इब्राहीम अलै. और उनके पुत्र हज़रत इस्माईल अलै. ने इसका जीर्णोद्धार किया था । हज्ज के समय इस गृह की परिक्रमा की जाती है ।

ख़िलाफ़त - नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है ।

ग़नीमत - युद्ध-लब्ध धन ।

ज़कात - इस्लाम का वह आर्थिक कर जो धनवान मुसलमानों से निश्चित दर से लिया जाता है और निर्धनों में बाँट दिया जाता है । इसे राष्ट्रहित में भी ख़र्च किया जा सकता है ।

जनाज़ः - कफ़न में लपेटा हुआ शव । इस्लामी धर्मविधान के अनुसार मृतक के लिए जो नमाज़ पढ़ी जाती है उसे नमाज़ जनाज़ः कहते हैं ।

ज़बूर - हज़रत दाऊद अलै. को अल्लाह की ओर से दिया गया धर्मग्रंथ ।

जिज़्या - वह कर जिसे ग़ैर-मुस्लिम प्रजा से उनकी जान-माल और मान-सम्मान की सुरक्षा के लिए सैन्य सेवाओं के उद्देश्य से लिया जाता है ।

जिन्न - छिपी रहने वाली सृष्टि । बड़े लोग, धनपति जो द्वारपालों और पर्दों के पीछे छिपे रहते हैं । बैक्टीरिया, वायरस ।

ज़िबह - अल्लाह का नाम लेकर भोजन के उद्देश्य से किसी जीव का गला काट कर वध करना ।

जिब्रील - ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता ।

जिहाद - प्रबल उद्यम करना । अपने को सुधारने के लिये तथा धर्मप्रचार के लिये

प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।

जुंबी - वीर्यस्खलित अपवित्र व्यक्ति। स्नान करने के उपरांत जुंबी-व्यक्ति पवित्र होता है।

तक़वा - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।

तबअ ताबयीन - ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।

तयम्मुम - पानी न मिलने और बीमार होने के कारण वज़ू के बदले पवित्र मिट्टी पर हाथ मार कर उससे अपने मुँह और हाथों को मलना।

तरका - मृत व्यक्ति की सम्पत्ति।

तलाक़ - छुटकारा। पति का विवाह-बंधन को तोड़ कर पत्नी को छोड़ने की घोषणा करना।

तहज्जुद - अर्धरात्रि के पश्चात और प्रातःकालीन नमाज़ से पूर्व पढ़ी जाने वाली नमाज़

ताबयीन - अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।

तौरात - यहूदियों का धर्मग्रंथ।

दज्जाल - झूठा। धोखेबाज। अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाली एक शक्ति।

दुरूद व सलाम - हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।

नबी - लोगों को सन्मार्ग प्रदर्शित कराने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषय से अवगत कराया जाता है। अवतार।

नमाज़ - इस्लामी उपासना। दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ी जाती है। जिनके नाम फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और इशा।

निकाह - विवाह। कुछ निर्द्धिष्ट क़ुर्आनी आयतों का पाठ करके पुरुष और स्त्री की सम्मति से लोगों की उपस्थिति में उनके विवाह की घोषणा करना।

नुबुव्वत - नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।

नूर - प्रकाश, ज्योति।

नेक - सदाचारी।

नेमत - अल्लाह की देन।

पारः (सिपारः) - पवित्र क़ुर्आन का भाग। पवित्र क़ुर्आन को तीस भागों में बिभाजित किया गया है।

पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक। नबी। रसूल।

फ़तवा - धर्मादेश। किसी कर्म के उचित या अनुचित होने के संबंध में इस्लामी धर्माचार्य के द्वारा इस्लामी शास्त्रों के अनुसार दी गई व्यवस्था।

फ़रिश्ता - देवदूत जो पुण्यवान और पापमुक्त होते हैं, अल्लाह जो आदेश देता है वे उसका पालन करते हैं।

फ़िक़ः - इस्लामी-विधान शास्त्र।

फ़िरदौस - स्वर्ग। उद्यान।

फ़ुर्क़ान - सत्य और असत्य का प्रभेदक। पवित्र क़ुर्आन।

बरकत - बढ़ोत्तरी। समृद्धि।

बनी इस्राईल - इस्राईल की संतान। ('इस्राईल' शब्द भी देखें)

बैअत - बिक जाना। धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।

बैतुल मुक़द्दस - येरुशेलम में स्थित एक पवित्र उपासना स्थल जिसे मस्जिद-ए-अक़्सा भी कहा जाता है।

मन्न - तुरंजबीन। बिना परिश्रम के मिलने वाली चीज़। अल्लाह की ओर से बनी इस्राईल को उनके बे-घरबार होने की अवस्था में मिलने वाला खाद्यविशेष।

मश्अर–ए–हराम - मक्का का वह स्थान जहाँ पर हज्ज करने वालें क़ुर्बानी देते हैं, सिर मुंडवाते हैं और अल्लाह की उपासना करते हैं।

मसह् - मलना। तयम्मुम करते हुए पवित्र मिट्टी से हाथों और मुँह को मलना।

मस्जिद - मुसलमानों का उपासना गृह।

मस्जिद–ए–अक़्सा - दूरवर्ती मस्जिद। येरुशेलम में स्थित पवित्र उपासना स्थल।

मस्जिद–ए–हराम - सम्माननीय मस्जिद। ख़ाना का'बा जो मक्का में स्थित है।

मीकाईल - एक फ़रिश्ता, जिस का काम प्रायः सांसारिक उन्नति के साधन उपलब्ध करना है।

मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।

मुनाफ़िक़ - कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसका अस्वीकार करने वाला हो।

मुत्तक़ी - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति। धर्मपरायण।

मुबाहलः - एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की ला'नत हो।

मुहाजिर - स्वदेश को छोड़ कर अन्य स्थान में बसने वाला व्यक्ति। प्रवासी।

मे'राज - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।

मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।

यहूदी - हज़रत मूसा अलै. का अनुयायी।

याजूज-माजूज - अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।

रब्ब - प्रतिपालक। अल्लाह का गुणवाचक नाम।

रहमान - बिन मांगे देने वाला। अल्लाह का एक गुणवाचक नाम।

रहीम - बार बार दया करने वाला। अल्लाह एक गुणवाचक नाम।

रसूल - अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत। (देखें 'नबी' की परिभाषा भी)

रज़ियल्लाहु अन्हु/अन्हा - अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के नाम के बाद 'रज़ियल्लाहु अन्हु' और महिला सहाबियों के नाम के बाद 'रज़ियल्लाहु अन्हा' वाक्य प्रयुक्त होता है।

रहिमहुल्लाहु तआला - उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के बाद प्रयुक्त होता है।

राहिब - सन्यासी। वह ईसाई पुरुष जो सांसारिक सुखों से निवृत्त हो चुका हो।

रिसालत - अवतारत्व, दूतत्व, पैग़म्बरी।

रुकू - झुकना। नमाज़ में घुटनों पर हाथ रखकर झुकने की अवस्था।

रुकू - पवित्र कुर्आन की सूरतों के अंतर्गत आयत समूहों भाग। कुर्आन में कुल 540 रुकू हैं।

रूह - आत्मा।

रूह-उल-क़ुदुस - पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

रूह-उल-अमीन - जिब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।

रोज़ः - उपवास। इस्लामी धर्म विधान के अनुसार पौ फटने से लेकर सूर्यास्त होने तक बिना खाये-पिये और वासनाओं को त्याग करके प्रार्थनाओं में समय बिताना।

ला'नत - अभिशाप, अमंगल कामना।

वसीयत - इच्छापत्र, मृत्यु-लेख । आदेश ।

वह्इ - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश या सूक्ष्म इशारा । ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वह्ई के द्वारा होता है । पवित्र क़ुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वह्इ के द्वारा ही उतरा है ।

शरीयत - इस्लामी धर्मविधान ।

शहीद - साक्षी । अल्लाह के लिए जान देने वाला । हर एक बात का ज्ञान रखने वाला, निरिक्षक । अल्लाह का एक गुणवाचक नाम ।

शिर्क - अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना ।

शैतान - पापों की प्रेरणा देने वाला, अल्लाह से दूर ले जाने वाला ।

सब्त - शनिवार । यहूदियों के साप्ताहिक उपासना का दिन ।

सजद: - आज्ञापालन करना । नमाज़ पढ़ते समय धरती पर माथा रखकर उपासना करने की दशा ।

सफ़ा–मरवा - मक्का में ख़ाना का'बा के पास की दो पहाड़ियाँ । हज्ज और उमर: करते समय इन दो पहाड़ियों के बीच सात चक्कर लगाए जाते हैं ।

सलाम - शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन । मुसलमान परस्पर ''अस्सलामु अलैकुम'' कहकर अभिवादन करते हैं जिसका अर्थ यह है कि तुम पर शांति अवतरित हो ।

सलीब - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था ।

संगसार - मृत्युदंड देने की एक विधि, जिसमें अपराधी की पत्थर मार-मार कर हत्या की जाती थी ।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो । हज़रत मुहम्मद सल्ल. के लिए मंगलकामना करते हुए आपके नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है ।

सल्वा - शहद । बटेर प्रजाति की एक पक्षी जो अल्लाह की ओर से बनी इस्राईल को उनके बे-घरबार होने की अवस्था में भोजन के रूप में मिली थी ।

सहाबी - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई ।

साबी - नक्षत्र पूजक । धर्म का अस्वीकारी ।

सामरी - बनी इस्राईल को धर्मभ्रष्ट करने वाला एक व्यक्ति जिसे हज़रत मूसा अलै. ने अभिशाप दिया था ।

सिद्दीक़ - अपने कर्म से अपनी बात को सत्य सिद्ध करने वाला । सत्यभाषी ।

सूरः / सूरत - पवित्र क़ुर्आन का अध्याय। पवित्र क़ुर्आन में 114 अध्याय हैं।

हज़रत - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

हक़ महर / महर - स्त्रीधन। वह धन जिसे विवाह के समय पुरुष अपनी पत्नी को देने की प्रतिज्ञा करता है। यह धन स्त्री की निजी सम्पत्ति होती है। पुरुष की आय के अनुरूप हक़ महर तय होता है। निकाह के समय सार्वजनिक रूप से इसकी घोषणा की जाती है।

हराम - इस्लामी धर्मशास्त्रानुसार अवैध।

हलाल - इस्लामी धर्मशास्त्रानुसार वैध।

हज्ज - इस्लाम धर्म का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ और एक विशेष उपासना। जिसे ज़ुल्हज्ज महीना की निश्चित तिथियों में मक्का में जाकर ख़ाना का'बा की परिक्रमा तथा अरफ़ात मैदान आदि स्थानों में उपस्थित होकर पूरा किया जाता है।

हज्जे अकबर - मक्का विजय के उपरांत इस्लामी अनुशासन के अधीन होने वाला पहला हज्ज।

हवारी - सहायक, साथी। हज़रत ईसा अलै. के साथी।

हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. की उपदेशावली जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को 'सहा सित्ता' कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।

हिजरत - देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना आ जाने की घटना हिजरत के नाम से ख्यात है।

हिदायत - सन्मार्ग प्राप्ति।

संक्षिप्त रूप

अलै. - अलैहिस्सलाम

अलैहा. - अलैहस्सलाम

रज़ि. - रज़ियल्लाहु अन्हु

रज़ि. अन्हा - रज़ियल्लाहु अन्हा

रहि. - रहिमहुल्लाहु तआला

सल्ल. - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

विषय सूची

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
	अत तारिक़	12	1244
प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति के साथ ही उसकी क्षमताएँ भी निश्चित की गईं	अल फ़ुर्क़ान	3	672
समस्त जीवन का आधार पानी पर रखा गया है	हूद	8 टीका	395
अल्लाह के निकट महीनों की गिनती बारह हैं	अत तौबः	36	342
इतने विशाल ब्रह्मांड में कोई भी त्रुटि नहीं है	अल मुल्क	4	1144
	सूरः परिचय		1143
	सूरः परिचय		595
	सूरः परिचय		1020
सृष्टि के रहस्य वैज्ञानिकों पर उनकी खोज के परिणाम स्वरूप तथा नबियों पर ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा प्रकट किये जाते हैं	सूरः परिचय		223
सृष्टि के गुप्त रहस्यों पर से निश्चित रूप से सर्वज्ञ अल्लाह ही पर्दा उठा सकता है	सूरः परिचय		445
ब्रह्माण्ड का फैलाव	सूरः परिचय		1070
ब्रह्मांड के छोर पर स्थित आकाशगंगाएँ (Galaxies) भी मनुष्य पर प्रभाव डालती हैं	सूरः परिचय		780
ब्रह्मांड की आयु का रहस्य क़ुरआन में है	सूरः परिचय		789
वर्तमान उपस्थित ब्रह्मांड की आयु	सूरः परिचय		1161
सृष्टि की हर चीज़ नष्ट होने वाली है	अर रहमान	27	1062
यह सृष्टि एक बार अनस्तित्वता में समा जाएगी, फिर इस से नई सृष्टि उत्पन्न की जाएगी	सूरः परिचय		596
अल्लाह के दाहिने हाथ पर ब्रह्मांड को लपेटे जाने की वास्तविकता	अज़ ज़ुमर	68 टीका	904
धरती और आकाश अपने आप अपनी धुरियों पर स्थित नहीं हैं	सूरः परिचय		834
फ़रिश्तों के चार परों से तात्पर्य पदार्थ के चार मौलिक रासायनिक संयोजन	सूरः परिचय		833
सृष्टि की प्रत्येक वस्तु जोड़ा जोड़ा है	या सीन	37	851
पदार्थ के भी जोड़े होते हैं	सूरः परिचय		846
रासायनिक प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप वह जीवन अस्तित्व में आया जिसे वैज्ञानिक कार्बन आधारित जीवन कहते हैं	सूरः परिचय		833

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
क़ुरआन करीम की अनगिनत ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहांत के बाद पूरी होनी शुरू हुईं	यूनुस	47 टीका	379
हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हिजरत और सफल प्रत्यावर्त्तन	अल क़सस	86	748
	अल बलद	3	1256
	सूरः परिचय		1255
अहज़ाब युद्ध में विजय की भविष्यवाणी	अल अहज़ाब	23	804
	साद	12	878
	अल क़मर	46	1057
रोमवासी ईरान पर विजयी होंगे	अर रूम	3,4	767
रोमवासियों के विजय के साथ मोमिनों के लिए भी ख़ुशी का सामान (अर्थात बद्र युद्ध में विजय प्राप्ति)	अर रूम	5,6	767
'क़ैसर' और 'किस्रा' (अर्थात रोम और ईरान) के साम्राज्यों का रेत की भाँति हो जाने का अर्थ	सूरः परिचय		574
अंत्ययुग में बिखरे हुए यहूदियों को फिलिस्तीन में एकत्रित किया जाएगा	बनी इस्राईल	105	534
क़यामत तक ऐसे लोग पैदा होते रहेंगे जो यहूदियों को दंडित करते रहेंगे	अल आ'राफ़	168	303
यहूदी धरती पर दो बार उपद्रव करेंगे	बनी इस्राईल	5	516
भविष्य में मुसलमानों की विजयप्राप्ति की भविष्यवाणी	अल अहज़ाब	28	806
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का अंत्ययुगीनों में पुनरागमन	अल जुमुअः	4 टीका	1118
एक चन्द्रमा की भविष्यवाणी जो सूर्य के पश्चात्	अश शम्स	3	1259
उसका अनुगमन करते हुए निकलेगा	सूरः परिचय		1184
समस्त नबियों का द्योतक आविर्भूत होगा	अल मुर्सलात	12	1203
	सूरः परिचय		1201
'याजूज' और 'माजूज' का प्रभुत्व	अल अम्बिया	97	611
	अल कहफ़	95	556
Genetic Engineering (आनुवंशिकी इंजीनियरिंग) के आविष्कार की भविष्यवाणी	अन निसा	120 टीका	168
आने वाले युग में पुरातत्त्वज्ञान की महत्वपूर्ण उन्नति और मनोविज्ञान की जानकारी पर ज़ोर	अल आदियात	10-11 टीका	1283

नाम सूची

स्थान सूची